

GOVERNMENT OF INDIA

DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY

**CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY**

CALL No. 091.49143 N.P.S.

D.G.A. 79,

X ✓

X B.S





The Twelfth Report on the Search
OF

Hindi Manuscripts

FOR THE YEARS

1923, 1924 and 1925

BY

The Late Rai Bahadur DR. HIRALAL, B.A., D.Litt., M.R.A.S.

VOLUME II

Prepared under the auspices of and published by the Nagari
Pracharini Sabha, Benares, under the patronage of the
Government of the United Provinces

8755

091.49/43
N.P.S.



SOLEMNLY PRINTED AND STATIONERY, UNITED PROVINCES, LUCKNOW

1944

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 8755

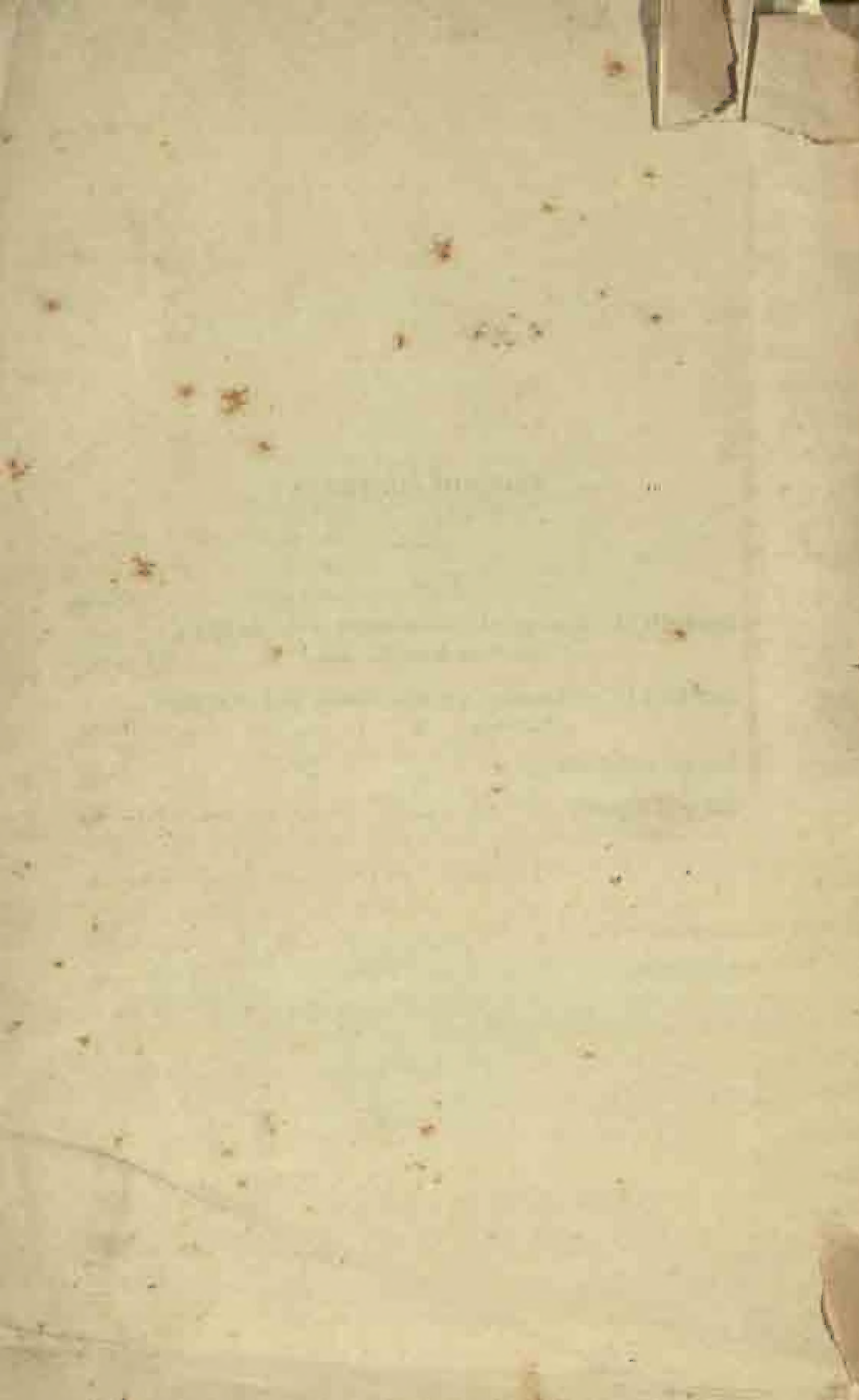
Date 18.4.57

Call No. 091.49143

N. P. S.

TABLE OF CONTENTS

	PAGES
Appendix II—Notices of Manuscripts and Extracts therefrom from Volume I	...977—1609
Appendix III—Extracts from the Works of Unknown Authors 	1—176
Index I—Authors	i—vi
Index II—Books	vii—xix



2(a) Śivapurāṇa Pūrvārdha by Mahānanda Vājpeyī
 nau (Rae Bareilly). Substance—Foreign blue paper.
 —720. Size— $12\frac{1}{2} \times 8$ inches. Lines per page—28.
 —18,900 Anuṣṭup Ślokas. Appearance Old. Char-
 itagari. Date of manuscript—Samvat 1927 or A. D.
 Place of deposit—Thākura Naunihāla Simha,
 Kanpha, District Unao (U. P.).

ning.—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ श्रीगौरी शंकरायनमः ॥ श्री गुरु
 भ्यान्नमः ॥ अथ शिवपुराण भाषा लिख्यते ॥ यन्मायाजगत्कर्म
 आदि यद्विध्वतस्संबन्धे तत्तत्तथैवित्स्वल्पमस्तेनैव्युता यावित्स्वल्पं ।
 यदि पुरुषो यत्स्वल्पं दृश्यते । मित्या भूतमयी दमत्र च जगद्वै-
 ॥ वामांगे यस्य गौरी विलसति रवि विध्वग्नि नैत्रं ललाटे ।
 त्रिशूलं शिरसि शुभ्रकरी जन्मुकन्याध्वहंती ॥ यत्करं दृश्यते मुखं
 देहं महेशं ॥ वपुर्गानंद दत्तं स्वजन सुखकरं पश्यतां प्राणि-
 नं पुरहितं चकल्य कुरुहं मे शत्रु नाशी शक्ति । विद्या वर्धन एव
 यं सुरैः ॥ नाना भूषण भूषितं सुखकरं शर्वा विभु सर्वदे-
 न शरणं शमोन्व धा नो नति ॥ ३ यदे विधि हरो देवो
 यत्कृपा तो निजां तस्यं पश्यन्ति पुरषा दिशवं ॥ ४

शिव उति करि सब मुनि देवा । कोनेहु बहुविधि प्रभु को
 निजको उति सुनि । दोन्हें तिन कहं वर वर हित सुनि ॥

सेवा ॥ मे प्रसन्न ॥ लहि वरने निज घर तेहि सेह ॥ काशी जनहु मये
 शिव निज पुर मे सब सुर तेहि लहि परम सकामा ॥ तहं छित रह शिव लिंगहु
 निज धामा । सेह शिवहि हेरै ॥ कंदुकेश सोह लिंग वसाना । जेहि सेवत
 सोहै । तेहि सेवत इत उत सुख त कहा हम गारै । सब विधि सब को पर सुख
 मति पद निर्वाणा ॥ हमि शिव चरै वै । सो इत उत परमानंद पावै ॥ सुख बंद
 धारै ॥ जो यहि चरितहि सुनहि सुना । सब सुख करणा ॥ यहि पढ़ि यिनसहि
 यह हम मुनि वरणा । शिव अस गुफिलापा ॥ लहहि सकल सुखइत उत भूरी ।
 सब पापा । यापहि कबहुं न जिविधहु दुष्ट सत्रावहि ताहो । लहहि मुक्ति जग
 प्रविष्टन रहहि सुसंपति पुरो ॥ कबहुं न केविलासे मल्लानारद सेवादे पंचम बंधे
 नाहो ॥ इति श्री शिवपुराणे श्रीना नाम षड् पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥
 लला सुर वध शिव चमिस्तु ॥ लिखितो पं० महेश प्रसाद शुक्ल ॥ संवत्
 १९५० चंड समाप्त

Subject.—प्रथम ब्रह्म शिव महिमा नोमवार में सैनका
 कलि में कल्याण मार्ग पूरना, सत का कलि दशा वर्षेन, शंभु का
 विधि नारद संवाद शिवसमाधि, मदन जारन उल्लेख और नारद का
 ब्रह्म, शीलव्रत राजा की कन्या के विवाह में असफलता तथा शि
 विष्णु को श्राप देना । शिव का निर्गुण सगुण रूप व महिमा, शिव की
 विराट रूप कथन, शक्ति वर्णन, शिव-शक्ति विचार व सृष्टि रचना, ब्रह्म
 से उत्पत्ति, विष्णु को शिवा के वाम घंग से उत्पत्ति तथा
 नाम करण व कार्य वर्णन, विष्णु और ब्रह्मा संवाद, तेज समूह का
 विष्णु और ब्रह्मा का नीचे ऊपर क्रमशः उसका घेत लेने का
 का हंस रूप से तथा विष्णु का वाराह रूप से खोज करना, १०००
 उसका घेत न मिला तब दोनों का लौटना और शाकाशवाय
 करने का कहना, पूनः शब्द से अ, उ, म, की उत्पत्ति, उन्हीं से
 तथा मित्र मित्र सृष्टि का पैदा करना । शिव स्वरूप वर्णन
 व विष्णु से सृष्टि उत्पादन करने का कहना, लिंग पूजन का
 सृष्टि संचालन का कहना, ब्रह्मा का ऋषियों का पैदा कर
 रचना, शिव का ब्रह्मा के वहाँ अवतार लेना, शिव स्तुति
 नामः (मन्यु, मनुमहिनः महान शिवः ऋतुध्वजः उग्र, रेतः भय
 व्रत) रुद्राणो के ११ नाम (धोः धृति, उशना, उमा, मि
 इरावति, भवानो, सुधा, सुदोक्षा) और भद्र सेनानो
 वर्णन । राक्षस, विजग चादि योनियों का उत्पादन, याज्ञ
 का निरूपण, मानसिक व वैदिक सृष्टि वर्णन, स्त्री उत्पादन व ब्रह्मा का तप
 करना, अश्विनारोक्षर के रूप में दर्शन देना, स्तुति वर्णन, सतीरूप होने का वरदान
 देना, मैथुनो सृष्टि का होना, मनु का तप करना, शिव का वरदान देना, मनु के
 दो पुत्र व ३ कन्या होना, प्रियव्रत व उत्तानपाद पुत्र हुए जिनसे ऋषय और ध्रुव भक्त
 हुए, कन्याओं व उनको सन्तानों का वर्णन, लोकों का वर्णन, विष्णु रमा का
 वर्णन, विष्णु का शिव स्तुति करना, स्वामि कार्तिक व उनके लोक का वर्णन,
 शक्ति लोक का वर्णन, शिवा स्तुति वर्णन, दंपति धर्म वर्णन, शिव का कैलाश
 पर आना, दुष्यदपुत्री व कमिला का वर्णन, यज्ञदत्त का वर्णन, यज्ञदत्त के पुत्र
 गुणनिधि की उत्पत्ति, गुणनिधि का पुंसंग में विगड़ना, विवाह होना, धन लूट
 देना, शिव मंदिर में जाना, लौटते हुए भय से भागना व मारा जाना, ई
 का यमदुते से लुका कर लेजाना, दीपदान का फल, वैश्रवण भक्त
 मलकापति का तप कर वरदान पाना, तथा शिव का कैलास वा
 सब देवों का कैलास आना व शिव से सम्बन्धित

धूम बृंद भूमि पर गिरना, बृंद से बालक का होना, भूमि का स्त्री रूप से पालन करना, भौमनाम होना, पृथ्वी का अतायी नाम पहना, भौम का तप करना, शिव का घर देना व मंगल ग्रह होना, हिम गिरि के तप से मयना के गर्भ में पार्वती का भाना, देवताओं का स्तुति करना, पार्वती का जन्म होना, गिरि की शोभा अनुपम होना, पार्वती की बाललीला, विद्याध्ययन व पौड़ावस्था में सौंदर्य, मैना व हिमगिरि का विवाह चिंतन करना, देवताओं का आगमन व विवाह की इच्छा करना, विष्णु का भी आगमन, पार्वती के स्वयंवर में जाना, मैना पर यथा ध्यान बैठना, पर्वत, समुद्र, नदी आदि का भी नर रूप में उपस्थित होना, सखी का सब देवों व राजाओं के समीप जयमाल लेकर गिरिजा को लेजाना और सब का वशैन करना, विष्णु के भी समीप जाना, अन्त में शिव के मले में माला पहिनाना, शिव का बाल रूप होना, सब देवों का क्रोध करना व धमन होना, हरि, ब्रह्मा, शंकादि का स्तुति करना, बरात की तय्यारी, भगवान्नी आदि, शिव-शिवा विवाह वशैन, पुरोहित का पार्वती के लिये वर खोजना, सब ठाकों में जाना, अंत में शिव के पास जाना व विवाह खिर करना, विष्णु व पार्वती के कथन से पुरोहित का शिव के पास जाना और तिलक करना, नाई का प्रपसन्न होना, हिमांचल द्विज संवाद व संतोष वशैन, शिवा-शिव विवाह की तय्यारी, लग्न भेजने आदि का वशैन, बरात की तय्यारी, वृद्ध रूप सिंहादि भूत भेत का जाना, सब का दुःखित होना, पार्वती का विजया सखी का समझाना, हिमगिरि का विषाद वशैन, पार्वती का शिव के पास धन्य पत्रिका भेजना, शिव की महिमा वशैन, शक्ति परिचय, भोजन समय शुक्र-शनि शक्ति वशैन, हिमांचल असमंजस वशैन, पुरोहित का गिरिजा कथन वशैन, माता का संतोष होना, शिवा-शिव लीला व सती वशैन, अवभूत रूप का कारण कथन, सब का शिव का प्रताप जानना व स्तुति करना, शिव की बरात का वशैन, इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा सब का समाज वशैन, भगवान्नी, जेवनार आदि क्रियाओं का वशैन, गिरि मयना का कन्यादान देना, विवाह मंगल होना और कैलास गमन, ऋषियों से हिमगिरि का कन्या के लक्षण ज्ञात करना, गिरिजा की शुभ लक्षणों व प्रदेश से विवाह का उल्लेख करना, मैना-हिमगिरि को बाल न भा से पानन्द प्राप्त होना, गिरिजा का तप के लिये स्वप्न देखना, निरोश का निरोश सेवा में जाना, शिव का विवाह निषेध, अन्त में गौरी को स्वीकार करना, गौरी का तप करना, शिव का बखंड समाधि में होना, इन्द्र का कामदेव को शिव की समाधि जगाने की भेजना और उसका भस्म होना, दिति से ४९ पवनों की उत्पत्ति, इन्द्र का ४९ बंड करना, हिरन्याक्ष व हिरन्यकश्यप कथा, दिति का फिर तप करना व कश्यप से बोर पुत्र होने का वर मांगना, वच्चाङ्ग

को उत्पत्ति व इन्द्र को ताड़न देना, उसका तप कर राक्षस भाव त्याग का वर मांगना, वस्त्रांग की स्त्री का इन्द्र वर दीयन को आर्काशा करना, तप कर वर पाना, तारक का जन्म होना व तप करना, शिव का भजेय रहने का वर देना, तारक का असुर दल संघटित करना, कुंभ, कुंजम्, महिष, कुंजर, कालनेमि, निमिमेघ, कथन, आदि १० वीरों का पकड़ करना, तारक, नमुचि आदि का देवताओं से युद्ध करना व जीतना, विष्णु का देवताओं को समझाना व तारक को सेवा करने को कहना, तारक का तीनों लोक का राज्य करना, दुखी हो कर देवों का ब्रह्मलोक में जाना, असुरों का देवों पर अत्याचार बर्णन, ब्रह्मा का उपाय बतलाना कि शिव पुत्र इसे मारेगा, इन्द्र का कामदेव को शिव के समीप भेजना, काम प्रताप बर्णन, शिव को वाण मारना व नेत्र खोल कर क्रोध युक्त देखने से काम का भस्म होना, रति का विलाप बर्णन, देवों को शिव स्तुति करना। रति को भतनु पति देना और पार्वती से शिव विवाह बर्णन व नारद का तप करने को कहना, पार्वती का तप केलिये माता पिता से पाजा लेना व समाधान करना, शिवा का उग्र तप प्राणायाम आदि करना, भूतों का बाघा पट्टेचाना, गिरि वंश का भाग्य बर्णन, वन में सब का स्वामाधिक वर त्याग बर्णन, देवताओं को शिव समीप जाना व प्रार्थना करना, शिवा से विवाह करने को कहना। विष्णु का शिव प्रशंसा बर्णन कि समय समय पर उन्होंने गौतम इन्द्र आदि के दुःखों को दूर किया और राक्षसों का वध किया, देवों को विदा करना और सप्त ऋषियों को बुलाना और पार्वती को परोक्षा लेने भेजना, सप्त ऋषि पार्वती संवाद, शिवा का हड़ बत रहना, शिव का द्विज रूप में शिवा को परोक्षा लेना, विष्णु को प्रशंसा कर विवाह करने को कहना, पार्वती का हड़ बत रहना, शिव का साक्षात् रूप होना और शिवा को वर देना, देवताओं को शिवा को स्तुति करना व गृह को आना। शिव का हिमगिरि के द्वार पर जाकर शिवा को भिक्षा मांगना, उनके क्रुद्ध होने पर घपने रूप में विष्णु, ब्रह्मा, गणपति, शिव आदि रूप दिखलाना, देवों का बृहस्पति को हिमगिरि के समीप शिव निन्दार्थ भेजना व गुरु का समझाना, शिव का वैष्णव रूप में हिम शैल पर जाना, शिव निंदा व विष्णु प्रशंसा बर्णन, हिमगिरि को संभ्रम करना, शिव का सप्त ऋषियों को बुलाना, उनका स्तुति करना, शिव का तारक के वध का बर्णन करना, कुंजम् और अरुंधती का मैता से संवाद व शिव गुण बर्णन, ऋषियों को हिमगिरि को समझाना, सब देव, ऋषि, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि को निमेषण देना व सब को आगमन, शिव गणों का तय्यारो करना, विष्टम, कंदुक, पिप्पल आदि का ससैन्य भारी तय्यारो करना। विमलाक्षादि का बर्णन, वराह को तय्यारो, हिमगिरि का

निमंत्रण, नगर सजावट, गौरि पूजनादि वर्णन, बरात, घगवानो, हिमगिरि को राजमद होना; तब शिव का ब्रह्मा विष्णु से मिश्र मिश्र मंडल बना कर चलने को कहना; मंडल के विषय में मयना का नारद से ज्ञात करना और उनका प्रत्येक मंडल का वर्णन करना; सब देवों का मिश्र मिश्र वर्णन; शिव सेना देख कर मयना को मोह होना; व दूषित होना, ब्रह्मा का समझाना, हिमगिरि का भी समझाना, सब का शिव स्तुति करना, पार्वती का भी शिव वन्दना करना, विष्णु का मयना को समझाना, सब बरात में शिव की स्तुति गान व प्रभाव देख पड़ना, बरात का द्वार पर आना, मयना का भारती करना व शिव महिमा वर्णन, जनवासे का वर्णन, धनक प्रकार की जेवनार का वर्णन, शुभासन व चरण प्रक्षालन, विष्णु आदि समेत वर्णन, चढ़ावा वर्णन व विवाह आगमन, मंडप शोभा वर्णन, शाखोच्चार वर्णन, गिरि का शिव से गोत्र ज्ञात करना, संभ्रम होना, शिव की नाद से उत्पत्ति का वर्णन, कन्यादान होना, ध्रुव दर्शन, परिक्लन, मंगल, विनती आदि वर्णन, सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, सखी, लेखा-मुद्रा, पद्मवती, महत्या, तुलसी, रोहिणी; शतरूपा का शिव से हास्य करना, शिव का समझाना, रति का विनय करना, काम को प्रगट करना, शिव-शिवा वर्णन, शिव का जनवासे में आना, हिमगिरि का शिव से अपनी त्रुटियों के लिये निवेदन करना, देवताओं का हिमगिरि की प्रशंसा करना, कलेवा वर्णन, गाली वर्णन, चौथे दिन सर्वाहुति करना, संस्रव प्राशन करना, गिरिजा के सिर अभिषेक करना, लहकौरि करवाना, कंकन उतारना, पाँचवें दिन विदा मांगना और सानंद विदा करना, व प्रेम से विह्वल हो जाना, बरतानो होना, गिरिजा को विदा करना, मयना का विह्वल चित्त गिरिजा को विदा करना व उपदेश देना, नारि धर्म वर्णन, पतिव्रत भेद वर्णन, गिरिजा का प्रेम सहित विदा होना, शिव का कैलास जाना, व देवताओं का गृह प्रवेश कराना, आनन्द मनाना, शिव से विदा हो कर शिव स्तुति कर के निज घर को जाना ।

चतुर्थ खंड ।

शिव के पास विष्णु आदि का जाना, शिव का सुरत में निरत रहना, देवों का स्तुति करना, शुचि का शिव वीर्य को कपोत रूप में ग्रहण करना, पार्वती का देवों को बाँझ रहने से शाप देना, अग्नि को भी ध्राप देना, देवों को गर्म रहना व खबड़ाना, शिव स्तुति करना व रेतस को उलटवा देना, अग्नि से भी निकलवा देना, ऋषि पत्नी अग्नि तपने की गर्वी, अर्धवती ने मना किया पर कृतिका के धम से स्पर्श हो गया, उसने हिमगिरि में छोड़ा, फिर अमरनदी में डाला गया, देव नदी ने किनारे पर सरपट में डाल दिया, गिरिजा के कुलों में दूध का आ जाना, विश्वामित्र क बालक के समीप जाना, बालक का ऋषि से कर्म करने

को कहना, विश्वामित्र का ब्रह्मपुत्र न होने से निवेद्य करना, पुनः पुत्र मानना, कुमार को यज्ञि का सांग देना, कुमार का पर्वत में मारना और उसका कट जाना व बहुत से दैत्यों का मरना, शील के कथन पर इन्द्र का बालक को मारने के लिये उद्यत होना, एक दिव्य पुरुष का रक्षा करना, इन्द्र के वज्र मारने पर भी बालक को चोट न पाना, इन्द्र का शिवा को स्तुति करना, कृत्तिका का उस पुत्र को लेने की इच्छा करना, बालक ने स्वयं पटमुख कहा और बाद मिटाया, कुमार का इन्द्र के यहाँ जाना, इन्द्र का ज्ञात करना, तेज देव कर सभा का भयभीत होना, देवों का कार्तिक को गिरेश पर ले जाना, शिव-शिवा प्यार बघेन, देवों की स्तुति, विष्णु का शिव से भाजा दिलाना, कुमार को तारक मारने के लिये, ब्रह्मा का स्वामिकार्तिक का निवास बनवाना, देवों का माला इत्यादि देना, नारद का अश्वमेध करना, वरुण का कार्तिक को बकरा भेंट करना, नारद का यज्ञ के लिये पकड़ना, यज्ञ का सुल जाना और सातों द्वीपों को जीतना, नारद का कार्तिक को शरण जाना, और उनका यज्ञ को पकड़ कर ला देना, पुत्रार्थ भगड़ने पर कार्तिक का माताओं को समाधान करना, विवि-हरि हर को सात्वना देना, तारक का देवों पर चढ़ाई करना, नारद का समझाना, नारद का इन्द्र को समझाना, दोनों और युद्ध की तयारी होना, युद्ध बघेन, मुचुकन्द तारक युद्ध बघेन, वीरभद्र युद्ध बघेन, असुरों का हारना, तारक वीरभद्र युद्ध बघेन, कार्तिक का युद्ध के लिये सबद्ध होना, कार्तिक तारक युद्ध बघेन, तारक का मारा जाना, देवताओं का कार्तिक को स्तुति करना, वाण दैत्य का कौंच पर्वत में उपद्रव करना और युद्ध क्षेत्र से भाग जाना स्वामिकार्तिक द्वारा वाण का ससैन्य वध बघेन। कौंच का स्तुति करना। त्रिलोक को स्थापना करना, युद्ध से भाग कर पल्लव का १० करोड़ साथियों सहित शेष श्लोक में विध्वंस करना, शेष पुत्र कुमुद का स्वामिकार्तिक को शरण जाना, सांग द्वारा उसका वध करना, सब का स्तुति गान करना, कार्तिक का विमान पर चढ़ कर कैलास जाना और ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि का वाहनों पर चढ़ कर साथ साथ चलना, शिव शिवा का कुमार को प्यार करना और देवों का स्तुति करना, गिरिपति का दानादि देना और सब देवों का विदा होना, स्कन्द उत्पत्ति का पुनः बघेन, शिवा को कोषित देव सान्त्वना देना, पार्वती का पुत्र की याचना करना, शिव का गणपति पूजन बतलाना, गणपति महिमा बघेन, गणेश को मोटा देव चन्द्र का उपहास करना, गणेश का शाप देना, मोक्षार्थ चतुर्वीं व्रत बघेन, चौथ चन्द्रमा दौष निवारणार्थ द्वितीया दशम बघेन, पार्वती का व्रत करना, शिव का प्रसन्न हो विहार स्थल निर्माण करना, गणपति का द्विज रूप में जाना, पुत्र वर देना और स्वयं बाल रूप में शिवा के पलंग

पर घाना, शिव-शिवा का उत्सव मनाना, विष्णु आदि देवी देवताओं का आशिर्वाद देना, शनि का पागमन, कर्म महिमा वर्णन, निज स्त्री (चित्ररथ की कन्या) की कथा व श्राप वर्णन, शनिर्दृष्टि से गणेश का शिर छिन्न हो जाना, सब देवी आदि का विलाप करना, शिव के कहने से विष्णु का उत्तर पोर जाकर भक्त शिशु का शिर लाना, शिव का प्रणव मंत्र से बन्धे को जिलाना सब का आशीर्ष देना, शिवा का शनि को श्राप देना, रवि कश्यप का शिवा पर क्रोध करना, हरि का समझाना, गणेश नाम रख कर सब देवी का बालक को भेंट देना, पृथ्वी का चूहा देना, गणेश स्तोत्र वर्णन, कल्प भेद से गणेश की दूसरी कथा का वर्णन, शिवा के स्नान करते समय मंदी का द्वारपाल होना, शिव का जाना, शिवा को लांछित होना, फिर मैल का पुतला बना जीवदान दे द्वारपाल करना, शिव का पागमन, द्वारपाल का रोकना, शिव बल और गणेश युद्ध वर्णन, शिवगणों का भागना, शिव का ब्राह्मण को समझाने भोजना और गणेश का न मानना व युद्ध में देवी को हारना, विष्णु-गणेश युद्ध व विष्णु का हारना, शिव का विशूल से शिर काटना, सब देवी का स्तुति करना, शिवा का काल शक्तिवों द्वारा देवी का नाश करना व देवी का शिवा से प्रार्थना करना, शिव का भक्त शिर लाकर जिलाना और शिवा को शान्त करना, शिव का आशीर्ष देना, गणेश का शिव को प्रणाम करना, सब देवी का शिव को स्तुति करना, कुमार गणपति में श्रेष्ठता वर्णन, पृथ्वी के प्रदक्षिणार्थ देवी को भोजना, पूर्व घाने वालों का व्याह व सम्मान करने को कहना, गणपति का चिन्ता करना और माता पिता की पूजा कर प्रदक्षिणा देना, माता पिता पूजन महिमा वर्णन, शिव जो ने गणेश का विवाह किया और श्रेष्ठ माना, गणेश के दो पुत्र क्षम व लाभ का होना, गणेश पूजन महिमा व पूर्णिमा दर्शन महिमा वर्णन।

पंचम खंड ।

शिवादि स्तुति, तड़ितमाली, तारकाक्ष, कमलाक्ष राक्षसों का तप वर्णन, ब्रह्मा का वर देना, नगर रचना, विमानादि से पूरित होना और तीनों का चलन चलन राज करना, उनका आनन्द व वैभव वर्णन, देवताओं का ह्वे श पाना और त्रिपुर नाश की प्रार्थना करना, ब्रह्मा विष्णु और शिव के पास जाना, सब का शिव पूजन करना, सब गणों का त्रिपुर में जाना और शिवार्चन देख बैठ घाना, विष्णु का एक गण उत्पादन करना और उसे भिक्षा दे कर्मवाद परक सिद्धान्त रूपभा त्रिपुर में प्रचारार्थ भोजना और नास्तिकता फैलाना, नारद का शिष्य होना जिसे देव त्रिपुरासुर भी मोहित हो गया व प्रतिज्ञा कर शिष्य बन गया, बचक मत त्याग एक मत होने को कहना, जीव दया का प्रचार करना, चार दासों को

मुख्य बताना । रोगों को भौचर्य, भयभोत को समय, भूख को यज्ञ और विद्यार्थी को विद्या देना, शिवाचन छुड़ाना, वेद मार्ग पर चलाना, देवाचन आदि का छूटना, जैन मत का प्रचार होना, ब्रह्मा विष्णु सेवाद वर्णन, जैन मत उत्पत्ति व त्रिपुर मोह वर्णन, शिव का पुत्र को देव आनंद मानना, शिव का कुंभोदर को भेजना । देवताओं का भयभोत होना, विष्णु का भ्रमभाषना और शिव आराधना करने को कहना, शिवाचन होना, और त्रिपुर नाशन को चिन्तय करना, शिव का अमृत कूप पीने के लिये हरि को वत्स रूप और ब्रह्मा को गौ बना कर भेजना और अमृत कूप पीना । शिव गङ्गा, नंदा, गणेश, कुमार का प्रगट होना और शिव शासन बतलाना तथा देवों से उत्तम रथ तैयार करने को कहना, विश्वकर्मा का रथ व शस्त्रादि तय्यार करना, विष्णु का शिव से रथ पर चढ़ने को प्रार्थना करना, शिव का गणेश से प्यार करना व पूजना, पश्वान व विष्णु ब्रह्मादि का साथ चलना, शिव का नाद करना, त्रिपुर का एक साथ होना, देवों का प्रसन्न होना व शिव से त्रिपुर विनाश को प्रार्थना करना, शिव का बाण छोड़ना और त्रिपुर का विनाश होना, ब्रह्मा-विष्णु आदि देवों का स्तुति करना, शिव का शान्त होना, अरिहन्त का शिष्यों सहित आना और शिव को प्रणाम कर छल के पाप मोचन की प्रार्थना करना, शिव का कलि में प्रभाव दिखाने को कहना, मय का प्रार्थना करना और शिव का तलातल में रहने को कहना, कश्यप की स्त्री दनु से दानवों को उत्पत्ति, मयदानव का तप वर्णन, शिव का प्रसन्न होना, मय की स्तुति, शिव का वर देना, सुर-असुर को समान भाव से मानना, अपनी भक्ति रखने को कहना, विश्वकर्मा को उपाधि देना, जालंधर कथा वर्णन, शिव का भीम रूप धारण करना, हरि का शिव से ज्ञात करना, इन्द्र का भी ज्ञात करना, ब्रह्मा का बात करना, उत्तर न देने पर इन्द्र का क्रोध करना, वज्र मारना, शिव कंठ नीला होना और वज्र का जल कर मक्ष होना, रुद्र का अग्नि रूप होना, इन्द्रादि का भयभोत होना, बृहस्पति का प्रार्थना कर क्रोध शांत कराना, शिव-तेज को दूर फेंक देना जिससे जालंधर को उत्पत्ति होना, बालक के रुदन से सब का भयभोत होना, सिंधु का ब्रह्मा को पुत्र देना । जालंधर का तप करना और कालर्क्षि की कन्या वृन्दा से विवाह करना । उसका प्रताप वर्णन, जालंधर के यहाँ राहु का आना, शुक से छिन्न शिर कथा ज्ञात करना, शुक का समुद्र मंथन कथा वर्णन, शिव का विष को पान करना, उत्तम रत्न हरि ने लिये, सुरा राक्षसों को दौ, छल से अमृत देवों को पिलाया, राहु देवों के बीच में जा बैठा, अमृत पी लिया, परन्तु विष्णु ने शिर छिन्न कर दिया, जालंधर का इन्द्र के पास रत्न लेने को दूत भेजना और इन्द्र का पुरा राक्षस व पहाड़ों के पंख तोड़ने आदि की कथा कहना, विष्णु द्वारा शंखासुर का

वध, दूत का जालंधर प्रताप बघेन, इन्द्र का न मानना, जालंधर का सुरपुर पर चढ़ाई करना, मरे देवों को बृहस्पति का दिव्यौषधि द्वारा जिलाना, मृत राक्षसों को धुक का जिलाना, देवताओं का हारना व जालंधर विजय बघेन, देवों का विष्णु को शरण जाना, स्तुति बघेन, विष्णु का युद्ध के लिये प्रस्तुत होना, लक्ष्मो का भाई का पक्ष ले मना करना, विष्णु-जालंधर युद्ध बघेन, गरुड़ का घायल होना, विष्णु का युद्ध से प्रसन्न हो जालंधर को वर देना, उस के निज घर में विष्णु लक्ष्मो निवास होने को इच्छा करना, देवों से सब रत्नों का लेना, प्रजा का प्रीति से पालन करना, देवों का शिव स्तुति करना, शिव का आकाश वाणी द्वारा समय वर देना, नारद जालंधर सेवाद, शिवा को लेने के लिये शिव के पास राहु को भेजना, शिव का क्रोध करना व एक मण का उपग्रह होना, दूत का भयभीत हो भागना, शिव का लुढ़ाना, जालंधर का शिव पर चढ़ाई करना, वृंदा का समझाना, देवों का शिव से चढ़ाई का बघेन करना, शिव का निज प्रेक्ष होने से विशूल से न मारने को कहना, देवों का निज तेज देना व शिव का शस्त्र बनाना, जालंधर का शैल समीप जाना, शिव का भी ससैन्य उतरना, शिव जालंधर युद्ध बघेन, धुक का मृत राक्षसों को जीवित करना, देवों का शिवा से बघेन करना, रुद्र का वृत्ता उपग्रह करना, धुक को चुग कर ले जाना, असुरों का संहार होना, दूभ, निशूभ, कालनेमि आदि का युद्ध करना, नंदो, कुमार व गणेश का प्रबल युद्ध करना, असुर दल का विफल होना, बोरभद्र का असुर सेना नाश करना । शुभादि का घायल होना । जालंधर शिव युद्ध बघेन, नंदो का असुरों को मारना, जालंधर का शुभादि को संग्रह करना, शिव का जालंधर के रथ ध्वजादि जीवित करना, उसका माया करना शिव का मोहित होना, जालंधर का शिव रूप में गिरिजा के पास जाना व जड़ होना, शिवा का अन्तर्धान होना, शिवा का हरि को उसके पुर में भेजना, शिव का मोह दूर देना, वृन्दा का पति मृत्यु का स्वप्न देखना, हरि का जाना, वृन्दा का वन में जाना व दो राक्षसों का देखना, भयभीत होना, तपसों के कंठ से लिपट जाना, मुनि का क्रोध करना, राक्षसों को भगाना, दो बन्दरों का खाना, वृन्दा के सामने जालंधर का वध कर डालना, वृन्दा का रदन करना, तपसों का जीवित करना, वृन्दा व जालंधर संयोग होना, एक बार विष्णु रूप रखना और वृन्दा का तप भंग होना और श्राप देना, विष्णु का समझाना, शिव महिला बघेन करना, राक्षसों का माया करना, गिरिजा को शुभ निशूभ का मारना व तंग करना, शिव का श्राप देना कि गिरिजा के हाथ से तुम्हारा वध होगा, जालंधर शिव युद्ध बघेन, नंदो का मारना, शिव का चक्र से जालंधर का वध करना, देवों का स्तुति करना, सौमिनि, विमर्षण, चन्द्रसेन, आदि के उच्चार

का वधेन, वृन्दा को देव विष्णु को मोह होना, देवों का स्तुति करना, त्रिमय रूप को देव कर विष्णु का मोहित होना, विष्णु का शिव आराधना करना व तप में लीन होना, प्रसन्न हो कर शिव का विष्णु का चक्र सुदर्शन देना व उसकी महिमा का वधेन, कश्यप की स्त्री दनु से विषचित्त का होना, उससे वृषभ की उत्पत्ति, उसका तप करना व प्रबल पशु मारना, शंखचूड़ को उत्पत्ति, उसका तप करना व ब्रह्मा का घर देना, तुलसी का तप करना, शंखचूड़ संवाद व विवाह, देव-दानव युद्ध, देवताओं का पराक्रम, चन्द्रचूड़ का राज्य करना, चन्द्रचूड़ के पूव जन्म की कथा, राधा के श्राप से सुदामा का राक्षस होना, गोलोक वर्णन, सुदामा का राक्षिका को रोकने के कारण श्राप देना, विवाह वधेन, वैकुण्ठ वधेन व महेश महिमा कथन, कैलाश में देवों का जाना, शिव से शंखचूड़ को मारने की प्रार्थना करना, शिव का प्रसन्न हो वचन देना, शिव का पुष्पदन्त को शंखचूड़ के पास समझाने की भेजना, काल की महिमा का वधेन, पुष्पदन्त का छोटना, रुद्र का युद्ध की तैयारी व सैन्य प्रस्थान, घोरभद्र, नंदी, भृंगो आदि का चलना । भूत प्रेत सेना का विस्तृत विवरण, शंखचूड़ का युद्धार्थ गमन व द्रुत का शिव समीप भेजना, द्रुत शिव संवाद, शिव का समझाना, द्रुत का घसुरों के संहारकारी पूर्वं वधेन कहना, देव दानव युद्ध, वृषपर्वा इन्द्र, गोश्रुति गणेश, कालचक्र जटेश, कालकेय कुबेर, विषचित्त-दिनेश, राहु सपेश, काक्ष कुज, शुक्र बृहस्पति, मय विद्वज्जम्भो, वचस यमु, दीर्घिमान अश्वनीकुमार युद्ध, घोरभद्र, नंदी, गणेश आदि का युद्ध में प्रवृत्त होना, शंखचूड़ से युद्ध होना, देवों की निर्बल जान तेज देकर कुमार की भेजना व सौ अक्षोहिणी सेना का नष्ट करना, शंखचूड़ कुमार युद्ध वधेन, चन्द्रचूड़ घोरभद्र युद्ध, शिव का सेनाप प्रकट करना, पुनः युद्ध होना, काली का गर्जन करना, शंखचूड़-कुमार युद्ध वधेन, गरुडास्त्रादि चालन, शंखचूड़ का चक्र मारना, काली का रक्षा करना, काली-शंखचूड़ का युद्ध, पाकाशवाणी का होना व काली से युद्ध निषेध, शिव द्वारा सूर्य वधेन, शिव शंखचूड़ युद्ध वधेन, शूल का मारना, चन्द्रचूड़ का हृदय फटना व उससे एक पुष्प का निकलना व उसका सिर काटना, काली का घसुर सैन्य भक्षण करना, जोगिनो का रण में फैलना व घसुर सेना नष्ट होना, देवों का प्रसन्नता प्रकट करना, शंखचूड़ का माया करना, मातृदेवराज से शिव का नष्ट करना, पाकाश-वाणी होना कि कृष्ण कवच व सती स्त्री के कारण इसका नाश नहीं होता, शिव की द्वार को बुलाना और उन्हें कवच मारने की आग्रह रूप में भेजना व उससे मांग जाना, शंखचूड़ रूप से उसकी स्त्री का सतर्भंग करना, शिव का विशाल से शंखचूड़ का बध करना, देवों की स्तुति करना व उसका सुदामा रूप में

गोलोक को जाना, विष्णु का तुलसी छलन कथा बख़्तेन, विष्णु का शप
 से शालिग्राम रूप में होना, तुलसी का प्रतिव्रत भंग करना, विष्णु का समाधान
 करना, शंख कथा, दिति का तप कर कश्यप से बर लेना, शंख को उत्पत्ति,
 देवों का भयभीत होना व तप कर देवों को हराना, रत्नादि लेना, कश्यप का
 दैत्यों को समझाना व शंख का शिव भक्ति व उग्र तप करना, देवों का शिव
 स्तुति करना व बर देने को शंख को कहना, उसका शिव विन अवध्य बर
 मांगना, शंख का देवों को विजय करना व रत्न अप्सरादि देना, देवों का
 विष्णु से निवेदन करना, विष्णु का चक्र चलाना, शिव का रक्षा करना,
 विष्णु का शिव स्तुति करना, शिव का समझाना, विष्णु का शंख से बर
 मांगने को कहना, उसका शंकर भक्ति रहित होना और सब लोकों पर राज्य
 करना, देव-पुनि का दुःख पर विचार करना और मुनियों को शिव के पास
 भेजना, शिव स्तुति बख़्तेन, शिव का मंदार माला दे शंख के यहाँ नारद को
 भेजना, नारद से माला की महिमा सुन कर युद्धार्थ शंख का गमन, शैल का
 बाण को रक्षा करना, गणेश शंख युद्ध, शुक का पकड़ ले जाना, देव दानव
 युद्ध, दैत्यों का प्रमथ को भयभीत करना, शिव का रथ पर चढ़ कर युद्धार्थ
 गमन, दैत्यों के यहाँ शुक को भेजना। असुर शिव युद्ध व विशुल से शंख
 को मांगना, शंख को ज्ञान होना, स्तुति करना व गणों में सम्मिलित करना,
 वासामुर को उत्पत्ति का बख़्तेन, शिव भक्ति व तप से बरदान पाना व विजय
 करना, शिव विहार बख़्तेन, अप्सराओं का शिव गण व उषा का शिवा रूप में
 जाना, शिव का जानना और स्वप्न में पति मिलने को कहना। वाण का
 युद्धार्थ शिव से कहना व शिव का कृष्ण से होने का बख़्तेन कर ध्वजा चिन्ह देना,
 उषा का स्वप्न देखना, चित्रांखा का अनिरुद्ध को लाना व उषा-अनिरुद्ध विहार
 बख़्तेन, द्वारपाल का वाण से कहना, अनिरुद्ध से राक्षसों का युद्ध व बहुतें
 को मारना, वाण का पकड़ना व मारने को उद्यत होना, अनिरुद्ध का भर्त्सना
 करना, वाकाशवासी होना, नारद का कृष्ण को सूचना देना, कृष्ण का रुसैन्य
 वाण पर चढ़ाई करना, शिव का वाण को सहायता करना, शिवकृष्ण युद्ध
 बख़्तेन, हरि-वाण युद्ध बख़्तेन, कृष्ण का शिव स्मरण कर वाणामुर को ४ भुजा
 छोड़ शेष काट डालना, कृष्ण का शिव स्तुति करना, शिव का कृष्ण और वाण
 से संधि कराना, शिव का वाण को गणपति की पदवी देना, वाण का स्तुति
 करना, महिषामुर बध होने पर उसके पुत्र मज्जासुर का दुर्बल होना व और
 तप करना, देवों का भयभीत हो ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का मज्जासुर को
 बर देना, मज्जासुर का देव ब्राह्मणों को दुःख देना, देवों का शिव से प्रार्थना
 करना, शिव का युद्धार्थ सन्नद्ध होना व मज्जासुर बध बख़्तेन, मज्जासुर का

शिव स्तुति करना व इष्टगंधि वर पाना, मोक्ष होना, हुंदुमि निहादि का देव मुनियों पर अत्याचार करना, काशो में द्विजों को सताना, शिव का उसे बच करना ।

Note.—शिवपुराण का महानंद वाजपेयी ने भाषावद्ध कर्णों में अनुवाद किया है । इसके दो भाग हैं । पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध । इस पूर्वार्द्ध भाग में ५ खंड और २१९ अध्याय हैं । इसको भूमिका ठाकुर शिवसिंह सेनर ने अपने हाथ से लिखा है और उसमें उनका हस्ताक्षर भी है । भूमिका में रचयिता का नाम महानंद वाजपेयी लिखा है जो इलमऊ निवासी थे । सं० १९२६ से १०५ वर्ष पूर्व उनका देहान्त हुआ जैसा कि ठाकुर साहब ने उल्लेख किया है । ठाकुर साहब ने संशोधन करने का भी उल्लेख किया है जो शायद अन्य किसी प्रति में किया होगा । इसमें कोई चिन्ह संशोधन का नहीं है । ग्रंथ शिवपुराण बड़ा और काव्य रचना अच्छी है । काव्य रचना में भी महानंद का नाम पाया है तथा कहीं कहीं खंड की समाप्ति पर भी दिया है । सेनर जी का यह ग्रंथ सं० १९२६ में मिला था और प्रतिलिपि सं० १९२७ में कावायो थी । कांथा का भी वर्णन किया था । उनके पितादि का भी परिचय है । उन्होंने स्वयं वर्णन किया है:—

श्री वाजपेयि गुण गण निधान । विख्यात महानंद सब ज्ञान ॥

तिन्ह भाषा कौन्ही शिवस्मृति । दोहा चौपाई खंड कृति ॥

रोला खंड—वास मो कैलाश में नहि ग्रन्थ कौन्ह प्रकाश । विस्तार कृत्तिस सहस भाषा ग्रंथ है मतिरास ॥ यदपि चौबिस सहस हैं शिव कौ पुाण अनूप । तदपि भाषा हूँ गयौ कृत्तोस सहस स्वरूप ॥ उग्रोस सौ कृत्तोस संख्यत में लखौ हम ग्रंथ । दित सर्व जनकौ ठानि कै करि दोन सलिल सुपंध ॥ यथान् उर्दु प्रथम उल्था क्वापि दोन्ही पाहि । जो चहै लेवै ग्रंथ कौ तिन काहि दुर्लभ नाहि ॥ पुनः भाषा ग्रंथ में लखि छिद्र छुद्र अनेक । सुख कोन्ही तिन्हहि जिय में धारि भूरि विवेक ॥ पंड म्यारह संहिता है सप्त ग्रामे ग्राम । कथा जाको जान्हवो सम दंत मुकि ललाम ॥ लखनऊ ते कोस दस दक्षिन वसै एक ग्राम । महावीर विराजहौ जहं कहत कांथा नाम ॥ रंश भृंगोशान्ता जहं ऊर्ध्वपति साज । धर्मधर शत्रो विराजै बिधा से द्विजराज ॥ करत रक्षा जनत को जहं शूलपाणि महेश । मम पिता है तहं भूमिपति रनजीत सिंह नरेश ॥ धर्मकर्ता शत्रुहर्ता शास्त्रवेत्ता दानि । प्रजामर्त्ता दयाधर्ता विजय जश को चानि ॥ रिपु मप बनचारी सुवारा मित्र जाके सर्व । संग्राम में जिन शत्रु कौ सब दूरि हार्यो नर्ब ॥ मातंख द्वितीय छौ है प्रगट तेज अखंड । अनल से प्रखलित है भुजदंड चंड प्रचंड ॥ यदपि सेवक भुज नन बहु रहत नित दिन पास । तदपि शिव पर पुण्य

श्रीरुप दूरि अर्चत बास ॥ अवन वेद पुरान को स्मरन गौरी कस्त । रज व्यागि सत्यहि धरत निस दिन मनहुं योगी संत ॥ मक्ति भूसुर वृंद को गोविंद पद रांत भोज । गाय गाय सुनावहों जस गाय बंटो रोज ॥

कवित्त—मनसब दिलो ते लखनऊ ते खैरबाही लंदन ते खुलत विसाति बिना सकसे । भारभुज दंडन संभारे भुष मंडल को जाको धाक धाई घराघोश धकाधक से ॥ हांक सुने हालत हरोफ नाकदम होत कहै विश्वनाथ घरि गिरि जाके मकसे । कहाँ साराही तरे उरको उमाही भूप रनजीत सिंह तेरे पातसाही मकसे ॥ १ ॥ देवन अदेव भूत भैरवादि बचि जात बचि जात जस कृष्णाम्ब की कटक ते । बचि जात हुलह विशूलह से बचि जात बचि जात सरप शूल सल को सपट ते ॥ बचि जात आधि व्याधि घात हू से बचि जात पचि जात वर व्याल व्याघ्र को दपट ते ॥ बचि जात यमसो जमाति जोरि जमन को बचत न घरि रनजीत की भपट ते ॥ २ ॥

भुजङ्ग प्रयातः—प्रजा जासु फूलो फलो सुख भरी सी । मनो पाय रितु राज कानन हरी सी ॥ विराजे जहां शाखी शुक्ल बैनी । गुरु देव मम स्वर्ग को है नशनी ॥ समयजोय हैं हैं न रोगादि भोता । सुधा से लसै मित्र श्रीराम सीता ॥ बड़े ज्योतिषी राज मंत्री बली हैं । मनो भाष्यकर नग से संगली हैं ॥ महाराज श्रीमान से मान पायो । रह्यो मान बाके न जो मान लायो ॥ त्रिपाटी गणिकलाल मोहन विराजे । जको देखि जेहि ज्योतिषी की समाजे ॥ गणित जासु को जहू लिपि लैं सहो है । मनो देह मानुष्य धातें महो है ॥ ज्यलित ज्वाल जनु शेष दृष्टी विराजे । पुराणज श्री ईश्वरी शुक्ल भाजे ॥ पठे सर्व इतिहास अरु भागुर्वेदे । लहे सुक्ति सों काव्य कौशादि भेदे ॥ दिलो मित्र सब के अमो सौ कला में । मिथानाथ मोला महे युग्म वामें ॥ पठे संस्कृत आरको फारसी हैं । सबे इहम खंगरेज को पारसी हैं । रह्यो शेष जासों न विद्याश खंग । पचखी हैं अभि धान विख्यात गंगा ॥

राला—सर्व मन रंजन विभंजन दुःख सज्जन मित्र ।
दुष्ट दल गंजन गुणालय सर्व गुन को चित्र ॥
नरहर हरभक्त श्री गुरु वक्त मेरे चात ।
मृतिमान प्रदेव लैं है घरे मानुज गात ॥
श्रेष्ठ श्रेष्ठ दयाल मम भ्राता सहोदर तात ।
महोपति है नाम मानो महो रवि दरशात ॥
नाम मम शिष्य सिंह है शिबचरण रज को फात ।
भद्रायु लै सुख लहत निसुदिन पाय दिल को मौज ॥

(पद्या ३२) और कपिला तेहि पाधाना । जोह लखि होत बहुत सुखनामा ॥
 कपिलाश्रम जहं घष गण हारो । जपतहि मुनिवर सब सुखकारी ।
 तहं एक विप्र भयो मखकर्ता । सोम याजि कुन भव कुल मर्ता ॥
 दोसित सो परि पूरख कामा । यज्ञदत्त शुभ तेहि कर नामा ॥
 मख विद्या महं परम प्रवीना । राजमान्य बहु धन नहि दोना ॥

बंद—कछु काल बोले सु मुनि तिन के भयहु सुन शुभ कालही ।
 सब कोन जानक कर्म द्विज वर यज्ञदत्त स्ववालही ॥
 घष नाम धरेहु विचारि गुण निधि और चूड़ाकर्म हो ॥
 उपनयन कोन्हैउ निगम संमत दीन दान सुधर्म हो ॥

No. 252(b). Śivapurāṇa (Uttarārṇha) by Mahānanda Vājapeyī of Dālamāū (Rāc Bareli). Substance—Foreign blue paper. Leaves—688. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—32. Extent—17,200 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1928 or A. D. 1871. Place of deposit—Thākura Nannihāla Sindhya Sengara, Kānthā, District Unāo.

Beginning.—ओ गणेशायनमः ॥ ओ गौरीशंकरायनमः ॥ ओ गुरुचरण कमलाभ्यां नमः ॥

बंदे देवमुमापतिं गुणवतिं विष्णुपादि देवस्तुतं । मायाधोश मनोशमाकु-
 तिकरं मायापरं शंकरं । दोनोद्वार विहार कारमनिशं माया विदां मानदं ।
 ब्रह्मज्ञान विशारदं पशुपतिं भक्तप्रियं सत्किंयम् ॥ १ ॥ बंदे महानंद विदां महेशों
 दुर्गासु दुर्गाति हरां भवांश्वाम् । दोनोद्वारात्माकु निमाति संदां भक्तप्रियां स्कंद-
 प्रसुं सुरुषाम् ॥ २ ॥ बंदे स्कंदं च हरं च विष्णु ब्रह्माणमेव च । अन्यत्र
 शिवजनान् बंदे स्वकृतेः पूर्तिं हेतवे ॥ ३ ॥

दोहा—विनवहु गिरिजा शंभु पद परमुख गणपति पाद ।

हरि विधि मुख सुर मुनि सकल बंदहु नशहि विवाद ॥ ४ ॥

सुतउवाच—मुनि ग्रंथकामुर नाश संदर शैलगत शिव चरित हो । मुनिनाथ
 नारद धात सो तव ठानि ठर शंका कहो ॥ हे तात विधि मुनि ग्रंथकामुर नाश
 मम शंका भयो । सोइ पूछहुं सविबेक मायहु हरहु शंका जो जयो ॥

दोहा—कवहि नवौ शिव मदराचलहि त्यागि कैलाश ।

सोइ कहहु शिव चरित हो मोहि सुनवे को पाश ॥

End.—आह मये तव सुभग विमाना । तेन सति तीर्त्त दैनिक माना ॥ तव मे दंपति दिव्य सुरेहा । अहं विमाना लसे सुसंहा ॥ दिव्य भोग संयुक्त वना । शिव मंदिर मे गण भति पाई ॥ शिवगण तेहि कर नायक भयऊ । रहेहु मुदित निव दुख नसि गयऊ ॥ सोइ नारदा साखि गिजिा का । भै प्रदितहु शुभाकृति जायो ॥ यह हम कहै प्रमय पाक्याना । पढ़त सुनत कहं सुखत बखाना ॥ इह मुक्तिद उत मुक्ति दया है । सब बिधि नाशत हे दुखसा है ॥ यहि ते वाहुत बहु आयुर्वल । रोग न रहत लसत तन अ वक्ल ॥ सुर संपति धन धान्य विवर्द्धन । यह आख्यान सुमंगल साधन ॥ प्रिय मन को सोभाय्य बड़ावन । संतति प्रद बहु चेत जुड़ावन ॥ उमा महेश्वर सेजक यह धत । यहि ठाने सुख उपजत अखित ॥ यह मुनिवर वतराज करावत । यहि कोन्हें जन सब सुख पावत । यह व्रत हवहि शिवा शिव प्याग । यहि कान्हें सख नस्त विकारा ॥ यहि व्रत को महिमा रूपापरि । होति शिवा शिव रति यहि धत करि ॥

इति श्री बाजपेयि, वंशीज्जय श्री ठाकुर प्रसादात्मज श्री मध्महानंद विरचिते भाषा श्री शिवपुराणे शिव बिम्बे दशमस्कन्धे ब्रह्मानन्द संवाद समा सहस्रव शत माताम्य वंशेनानाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ समाप्तम् शुभं भूयात् ॥ अथ ब्रह्म १४ लिख्यते ॥ ललित किशोर बाजपेयिना ॥ राम राम शिव शिव राम इति

Subject.—पदार्थ—शिव का काशी जाना और सब देवों का भी पहुँचना व शिव दर्शनादि व माणिक्यिका कान करना । शिव—विश्वेश संवाद वंशेन, दिव का काशी निवास व शासन वंशेन । गिजिा का कदपुर्णा रूप में निवास । मैत्र मरिमा व विविध का पंचम शिर काटने का उल्लेख वंशेन व कपाल मोचन तीर्थ वंशेन । आनंद वन का वंशेन व हरिकेश का तप करते देखना । उसे दंडगणि बनाना और बर्दना । विघ्न से गुह व भगस्य का काशी से चले जाना, वश्य धनेजय का दंडगणि का शासन मानना । रत्नमद्र पुत्र हारिकेश का चरित्र वंशेन जो यक्ष मुनि और धनो था । वैभव वंशेन, शिव भक्ति कथन ।

हुमं घसुर का वंशेन, शिवा के मारने से दुर्गानाम होना । दिवादास कथा वंशेन, स्वर्गभुव वंश मे रिपुजय का होना । काशी में तप करना, अकाल से धर्मदाप होना । ब्रह्मा का रिपुजय से राज्य करने का कहना व वचन लेना कि देव व नाय क्षिति पर न पावे ।

मंदर गिरि का तप वंशेन, शिव का जाना और निज मूर्ति पर निज स्थापन करना, शिव का मंदराचल में निवास करना । अन्य देवों का भी जाना, रिपुजय का काशी में राज्य करना । देवों का विघ्न करना और अग्नि का कार्य

करने से निषेध करना । राजा का संतोष देना और दिवोदास का शान्ति पूर्वक राज्य करना । दिवोदास प्रभाव वर्धन । देवों का ब्रह्मा के पास पास उनका विष्णु के और विष्णु का सब के साथ शंकर के पास जाना ।

शिव का योगिनी गण को काशी में विद्यार्थ भेजना व उनका सम्फल होना । सूर्य को विद्यार्थ भेजना, काशी का प्रभाव वर्धन । १२ सूर्यों का चरित्र वर्धन और उनकी महिमा । काशी निवास वर्धन, कोई विघ्न न मिलना । शिव का ब्रह्मा को भेजना और राजा को यज्ञ करने को कहना । ब्रह्मेश्वर लिंग स्थापन कराना व ठहरना । शिव का कुम्भित होना शंक्रुकण महाकाल गणों को भेजना । उनका भी न टिकना । अन्य बहुत से गणों का भेजना व काशी का बसना । गणेश को भेजना और माया करना । विष रूप से सब को संतुष्ट करना । रानी लीलावती का विप्र को बुलाना और भविष्य ज्ञात करना, राजा को भयद कारण ज्ञात करना । गणेश का कारण बता कुछ दिन पीछे एक द्विज मिलने को कहना व राजा को कलना । गणेश का विलम्बना, विष्णु को भेजना, विष्णु के स्नान स्नान का पाशदक तीर्थ होना, आदि केशव, सौरादधि, कृतिका क्रिय, खंखतीर्थ, गरि तीर्थ, गदा पद्मतीर्थ, रमा, गरुड, नारद, प्रह्लाद तीर्थ वर्धन । गणेश का विजानोपदेश देना । राजा को निर्वेद होना और विप्र-राजा संवाद वर्धन । रणध्वज का राजत्याग का निश्चय और पुत्र स्त्री आदि को बुलाना और विमान पर बैठ कर शिवपुर को जाना ।

ज्येष्ठ पुत्र को राज देना । गणेश और विष्णु का कृतकार्य होना, गरुड को शिवजी के पास संदेशार्थ भेजना, शिव का काशी को प्रस्थान । हरि आदि का सादर लेना व स्तुति वर्धन । सब देवों से संशय में टिकने को काशी में कहना । शिव जी का दिव्य रथ पर काशी में प्रवेश वर्धन । जैगोषव्य योगी का समाधि वर्धन, गण भेज कर पास बुलाना । गुदा का वर्धन व शिव का वरदान देना ।

काशी से सुमेरु पर शिव के जाने पर ब्राह्मणों का सन्वस्त व्रत लेना और काशी के सम्पूर्ण तीर्थों में स्रमण करना, शिवजी के लौट आने पर ब्राह्मणों का स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना, वर देना और बहुत संतोष प्रकट करना । विश्वकर्मा का विश्वेश्वर भवन निर्माण वर्धन, उसका पेशवर्ष कथन, मयना का हिमालय से पार्वती से मिलने की इच्छा प्रकट करना । हिमालय का अपार सम्पत्ति व सामग्री लेकर जाना, काशी को सम्पत्ति देकर चकित होना । हिम का बांध समोप ठहरना, वरुणातट प्रासाद निर्माण, शिव-शिवा गमन । हिम का शिव स्थापन करना और लौट जाना, शिव-शिवा का वर देना, घनादि निम्न तीर्थ वर्धन जिसका शैलेश्वर रत्नेश्वर हुआ । त्रिलोचनादि तीर्थ वर्धन, शिव का

अभिप्रेक वर्णन, देव स्तुति कथन। शिव का विष्णु आदि को भक्ति कर देना, महाभद्र विप्र की कथा, चाण्डाल दान लेना, तिरङ्कार होना, ठगों का घेरना, जून से ठगों को भागना, उनका कुक्कुट होना और शिव भक्ति में रत हो मुक्त होना और कुक्कुट मंडप तीर्थ होना, घंटा रख होना, मंदो, शिव, गणप का जाना, शृंगार मंडप में विश्वनाथ लिंग स्थापन करना, वेदादि का स्तुति करना।
खंड सप्तम।

शिव वंदना, ब्रह्मा का १०० अवतार कथा वर्णन। निराकार स्वरूप वर्णन। रुद्र, ब्रह्मा के पुत्र, चार शिष्यों के साथ शिव को उत्पत्ति, वामदेव अघोर स्वरूप, ईशान; वसु, सूर्य, चन्द्र, अर्द्धनारोश्चर, योगरत्नचिन्ता, श्वेत तारदमन, होत्र कंकण, जैमिण्य, ऋषभ, भृंगो, अत्रि, वालि, गीतम, वेदशिर, धेनुकण्ठ, दासक, लांगुनि, विशूलो, नंदो और भैरव रूप होना। वारभद्र, शरभ, हर, महाकाल के दशरूप व दस देवों पति होना। एकादश रुद्ररूप, गृहपति, वृषेश्वर, पिप्पला, अवधूत, हनुमान, शंभु, वैश्य, द्वित्रेश, भिल्ल उद्धाराथ शंकररूप, हंस हो (नल-दमयंती को मिलाया) सत्याथ के पुत्र को जलाना। पावतो परोक्षार्थ (अरिलरूप) साधू, अश्वत्थामा, किरात, गोरक्ष, शंकराचार्य, मिहिरामित आदि रूप वर्णन।

सौमिनि रूप से शवरो का उद्धार करना, मद्रासुप का अभिमान तोड़ना, मस्मासुर व कालनेमि वध कर्ता। शिव के अन्य बाणों का उल्लेख, महिमा वर्णन। भूत प्रेतार्ति का प्रभाव। कैलाश वर्णन। लोहित शिशु व सुनंदादि ४ शिष्यों का वर्णन, कम्परक्त, वामदेव व विरजादि ४ पुत्र उत्पन्न करना। तत्पुरुष रूप होना, अघोर रूप धारण करना, पंचम ईशान रूप का वर्णन। इन सब रूपों ने सृष्टि उपादानार्थ ब्रह्मा को सहायता दी। कष्टावतार वर्णन शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपाल, ईशान और महादेव का वर्णन। स्वान-कर्मशः—पृथ्वी, जल, अग्निल, पवन, नभ, श्रेष्ठ, सूर्य, शशि, कार्य-उपादन, नारोश्चरावतार वर्णन, ईधुनो श्राष्ट करण, ब्रह्मा का स्तुति करना। शंकर, विजगोप, श्वेतादि, विशाकाटि, लोकाष्टि आदि २८ अवतारों का वर्णन, व्यास आदि का ज्ञान देने व योग सिखाने तथा साविता मंत्र देने के लिये दिवोदास व विजगोप तप वर्णन व शिव का काशी छोड़ सुमेरुगिर पर जाना, देवों को विदा करना, योगी आदि को भोजन का वर्णन, दिवोदास का शिवपुर गमन।

दधिवाहन रूप से व्यास को पुराण रचनार्थ ज्ञान देना। कपिल व वासुदेव रूप से ज्ञान विस्तार करना। त्रयभावतार से ४ शिष्यों के साथ व्यास को ज्ञान देना। ऋषभ अत्रि वर्णन, मद्रासुप रूप का उद्धार करना आदि। भृंग का अवतार ले भृगु को सहायता देना। भृंग के ४ पुत्रों का वर्णन। तप रूप से व्यास को कलियुग का मार्ग बतलाना। १२वें द्वापर में भरद्वाज का अत्रि रूप से रचनार्थ सहायता

देना । बालि व गौतम रूप से श्रुति रचना में व्यास के सहायक होना । वेद शिर से व्यास को बांध देना, विमलिरि देना को समझाना । गोकर्ण रूप से धर्मग्रन्थ को सहायता देना । गुहावासो अवतार से व्यास को सहायता देना ।

मठारहें द्वार से २७वें तक १० अवतार बनें । शिखंडी, जटामाली, कट्टास दासक, लाम्बको महाकाय, शूलो, दंडो मुहोश्वर, साहस्यु, सोमशर्मावतार बनें, प्रत्येक के चार चार पुत्र हो कर भिन्न भिन्न द्वार में भिन्न भिन्न व्यास को सहायता देना । २८वें द्वार में शिव अवतार में व्यास को सहायता देना । कुलावतार से द्वार में राक्षसों का बंध करना, फिर कृष्ण हयगर्भ व्यास को शिवाराधना करना, शंकर का अवतार से मृत देह को जीवित करना व श्रुतिमार्ग व योग प्रतिपादन करना । नंदिकेश्वर उम्म बनें—शिलाद का तप करना, इन्द्र से प्रयोजित घमर पुत्र मांगना, फिर तप करना और शिव का नंदी नाम से जन्म लेना । नंदी प्रादि प्रवाहित होना । नंदी का तप करना और शिव गण होना । स्कंध का मुनियों से भैरव कथा कहना, देवों का ब्रह्मा से सब से बड़ा देव (ब्रह्मा) का ज्ञात करना, विष्णु ब्रह्मा का विवाद होना और निज को परमेश मानना, क्रमादि वेदों से ज्ञात करना और उनका भिन्न भिन्न रूप में शिव का परमेश बताना करना । शिव का मोह दूर करना । देव समाज में जाति रूप प्रसूत होना व पक्ष की उपासित और शिव से सदेश मांगना । काल भैरव नाम देना और दुष्ट पक्षगत को शिक्षा देना तथा काशी का वातमान बनाना । ब्रह्मा का शिव को निन्दा करना और काल भैरव का पंचम शिर काटना, भैरव का ब्रह्म दोष निवारणार्थ कापालिक व्रत करना, शिव का वर देना, हत्या (भयंकर कन्या) को उपासित और काशी जाने पर भैरव से हत्या को दूर होने को कहना । भैरव का सब जाकों व तौरों में जाना । भैरव-विष्णु संवाद और काशी का बर्णन व काशी जाना और हत्या छूटना ।

वोभद्रावतार बनें—दक्ष यज्ञ में सती के भस्म होने पर गंधे की दक्ष विष्णु-हना, भृगु को रक्षा करना, गंधे का मारा जाना, शिव का १ बाल से वीरभद्र का उत्पन्न करना, उसका सैकड़ों गंधे के साथ भव विध्वंस करना, विष्णु प्रादि से युद्ध होना, विष्णु-वोभद्र युद्ध बनें, विष्णु का जल चलाना, वोभद्र का शम्भु करना । ब्रह्मा का विष्णु को समझाना । भृगु को डाढ़ी उखाड़ना, घर्म, प्रजापति, कश्यप प्रादि को ज्ञात पारना, यज्ञ का मृतक में मांगना, वीर भद्र का शिर काटना, दक्ष का शिर भी कुंड में होम देना । यह विध्वंस बनें ।

देवों का स्तुति करना । शिव का प्रसन्न होना वोभद्र को चाशोप देना, यज्ञ पूरे होना । प्रह्लाद को भक्ति और विष्णु कश्यप का वरोध बनें, विष्णु का नृसिंह अवतार होना । हिमवतकश्यप का बंध करना । नृसिंह का मोच

करना, देवी का भवमान हो शिव को स्मरण करना । शिव का योगन्द को बुलाना और नृसिंह का शांति करने का भोजना । नृसिंह योगन्द सेवाद । शिव का शम्भु अवतार ले नृसिंह तेज हरण । नृसिंह का शिव जी की स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना ।

वशावतार वर्णन—समुद्र मंथन पर देवी को अभिमान देना वक्ष रूप से शिव का देवी का बीच में जाना और तृण तोड़ने को कहना, न हारने पर प्रासाद वाणी होना और देवी का शिव प्रभाव विदित होने पर स्तुति करना ।

शिव के दशावतार का वर्णन—काल, तार, भूवनेश, विश्वेश, मैत्रव, विश्व मस्तक, वृमावत, वल्लभानुष, मार्तण्ड कालरूप प्रारण करना और शिवा के भी साथ साथ सो नाम स दस रूप होना ।

रुद्र के ११ अवतार का वर्णन—देवी पर विपत्ति पड़ने पर वक्ष्य का तप करना और शंभु का उनके यह ११ रुद्र रूप में अवतार लेना । देवी का स्तुति करना जिनके नाम—नपाली, पिगल, भोम, विहवाक्ष, विनाहट, वशास्त, प्रज-धाद, पट्टिधर्म, शंभु, भव, रुद्र ये ११ रुद्र रूप । इसुरी का मार कर देवी को सुख देना ।

दुर्वासावतार—पत्रि का तप करने जाना, त्रिदेव का जना और पुत्र नाम का वर देना, दत्तात्रय का अवतार होना, दुर्वासा शिव के अवतार रूप । वरुण को पीछा करना और सुमान पर होना । अमरगोप की पीछा वर्णन । राम व पांचाली की पीछा वर्णन । राम की पीछा काल से वातनीत करते । भव लक्ष्मण के हाथ पाल होने पर बिना के भीतर जाने का निवेदन । मंत्र धार दुर्वासा के पहुँचने पर शाप देने का भव लक्ष्मण को भोजना और उनका देहदान वर्णन । कृष्ण का पापस शरीर में नगवा कर रक्त हो खो सहित दुर्वासा के पास पहुँचने का कहना, दुर्वासा का प्रसन्न हो वर देना । मुनि का कान बरना व कोपीन नष्ट होने से जल में रटना, पाँचव खो का कान करने जाना और पंचल काड़ कर फेंक देना जिसे पहन कर दुर्वासा का निःश्रान्त और वर देना । दुर्वासा का वृक्ष हो कान करना, तीन मंथन कन्याओं का बहा जाना और हंसा तथा दुर्वासा का शाप देना । क चाखाल कन्या बने, स्तुति करने पर मलमास में पूजन से उद्धार होने का कथन ।

गृहगति वर्णन—नर्मदा तट पर नर्मपुर नगर में विश्वानर मुनि शिव भक्त था । उसकी स्त्री श्रुति का पात से शव समान भुव माँवना । विश्वानर का काया तथाई जाना और शिव तप करना । बारम्बार के मार्ग में शिव विगमे शिशु रूप में प्रकट होना और विप से प्रेम बचन कहना और प्रसन्न हो वर देना, विश्वानर का

स्तुति करना, शिव का शुचिष्णुओं के गर्भ से जन्म लेना, देवों का स्तुति करना व बानक का पालन तथा विद्याभ्यास करना । नारद को दिखाना तो १ वर्ष के भीतर गात्र पहने को कहना । गृहपति का माता-पिता को सेनाप दे मृत्युञ्जय जप करना । इन्द्र का वर देने जाना, उस का मना करना और इन्द्र का मारने को उद्यत होना, शिव का रक्षा करना, वर देना, दिकपाल को दूसरा गृहपति बनेन ।

वृषभावतार—१४ रत्नों का बनेन । देवासुर संपाद बनेन, हरि का नागि को देख मोहना और उनके बहुत से पुत्र उत्पन्न करना, उनका उपद्रव करना और लोगों को मताना, वृषभ रूप में शिव का कुतल में जाना और हरि पुत्रों का युद्ध को सज्ज होना, शृंगों से उनके मारना, विष्णु से युद्ध होना और विष्णु का हारना तथा स्तुति करना ।

पिप्पलाद अवतार बनेन—दधोचि का हरि को जोतना, सुर सहित हरि को शाप देना । सुवर्चा का देवों को शाप देना । उसने पिप्पलाद का जन्म । वृत्रासुर से देवों के हारने पर दधोचि के पास जाने को कहना, वज्र के लिये पार्श्व लाने को उस वज्र से वृत्र का मार्ग जाना । सुवर्चा के सती होने से पाकाश वाणी द्वारा रोका जाना और शिव का पिप्पलाद रूप में उसके गर्भ से अवतार लेना । देवों का स्तुति करना, तोय जाते पिप्पलाद का पद्मा का मिटना, उसका पिता से कह कर विवाह करना । पद्मा के पास धर्म का परीक्षार्थ जाना । पिप्पलाद को निंदा करना, पद्मा का शाप देना, धर्म का निज रूप में स्तुति करना, चार चरणों का युगों में विभाग बनेन । पिप्पलाद का १० पुत्र उत्पन्न करना । शनि पीड़ा से दुःखित होना व तब से शांति हो जाना ।

महेशावतार बनेन—शिव विहार, भैरव का गिरिजा को व्रभाव से देखना, शिवा का आप देना, शिवा को भी भैरव का आप देना । इन्द्र का समण शिव के साथ जाना । अवधूत रूप में शिव का इन्द्र से बातचीत करना । इन्द्र का वज्र मारना व उसका जलना । देवों का भयभीत हो स्तुति करना, बृहस्पति का आशोष दे वर देना । जीव नाश होना ।

हनुमन्त अवतार बनेन—राम को सहायता करना, सीता छोज, लंकादहन, सेतुबंध, सजीवन लाना, अहिगवण बध । मन्वादि का विष्णुनाक जाना, जय विजय के रोकने पर राक्षस होने का शाप देना । जय विजय के तीन जन्मों का बनेन । राम चरित्र बनेन । अमस्त्य—राम संवाद, शिव महिमा बनेन व माया का उद्घाटन । शिव मूर्ति से राम का कृतार्थ होना । राम का तप करना, शिव का परीक्षा लेना व शिव राघव संवाद व प्रसन्न हो वर देना, सब देवों का जाना । प्रमंजन-धंजना संवाद, हनुमान जन्म, बाल चरित्र

वर्षेन । बाल रवि भक्षण, इन्द्र का वज्र मारना, रुद्र कोष होना व देवी का शांत करना, हनुमत को वर देना । बाल समय में ध्रुव आदि को जाना, आकाश में उड़लना, ऋषियों का उपद्रव देख बल भूलने का शाप देना व राम के मिलने पर शाप मोचन होना, विद्या पठन व बालि सुग्रीव से मिलना व राम की सहायता देना ।

वैश्यनाथावतार—महानंदा वैश्या का वर्षेन, शिव भक्त होना, वैश्यनाथ महादेव का अवतार होना । महानंदा वैश्यनाथ संवाद वर्षेन, राज कंकण के छेने की इच्छा करने पर वैश्य राय का देना और शिव लिंग देना । कुक्कुट का अग्नि में भस्म होना जिस पर वैश्या का अपार प्रेम था, वैश्यनाथ-वैश्या विदार वर्षेन व अन्तर्धान होना । वैश्या का शिव पुर देना ।

द्विजनाथावतार वर्षेन—सुप्रताप राजा का वर्षेन, ऋषभ प्रसाद पाना, उसकी चन्द्रागद राना से कौतिमाली कन्या की उत्पत्ति, मद्रायुष से विवाह होना । शिव-शिवा का द्विज रूप में उसके पास जाना और बाध से रक्षा करने को कहना, राजा का वाण चलाना पर कुछ घसर न होना । द्विज की स्त्री को स्त्रा जाना । द्विज का राजा पर क्रोध करना, राजा का दुःखित होना । ब्राह्मण से जा चाहै मांगने को कहना, उसका स्त्री मांगना, राजा का देना, शिव का प्रगट होना । मद्रायुष को वर देना । पार्षद बनाना ।

पतिनाथ अवतार वर्षेन—आहुक-आहुकी भिछ भिल्लनि वर्षेन । भिल्ल के जाने पर शिव का पति रूप में भिल्लनि के पास जाना । वहाँ ठहरना । घर छोटा होने पर भिल्ल का बाहर रहना और हिसक जंतु द्वारा मारा जाना । भिल्लनि का सती होने के लिये चिता रचना, उसका शोथल होना, शिव का प्रगट होना, और वर देना व निज हंस रूप से नल दम्यन्ती का संयोग कराने की प्रतिज्ञा करना जोकि भिल्ल के अवतार थे ।

कृष्ण दर्शन अवतार वर्षेन—तम्र का गुठकुल पढ़ना और भाइयों का दाय भाग न देना । ज्ञात करने पर पिता के देने का उल्लंघन करना । पिता मनु के पास नम्र का जाना, पिता का शिव आराधना करने को कहना । आंगिरस के वज्र में जाना व दो सुक्त कर्म कथन करना, राज का पूर्ण होना और बहुत धन देना और शिव का कृष्ण दर्शन नाम से उसके पास फोक्षार्थ जाना । शिव का उस द्रव्य को अपना बतलाना । देने का विवाद होना और उससे पिता मनु को पंच बनाना । मनु का शिव का माल बतलाना और उनकी बिनती करने को कहना । तम्र का प्रार्थना करना और शिव का उसे राजा बनाना व धन देना ।

भिक्षुनाथ अवतार वर्षेन—एक विदर्भ देश में ससुर्य राजा का होना । शाक्य राजाओं का उसे रोकना । युद्ध होना व हारना, उसकी गर्भवती स्त्री का

भाग जाना । एक ताल पर पहुँचना । रानों के पुत्र होना व ताल में जल पीने जाना व घाह का भक्षण करना, शिव का भिक्षु रूप में पहुँचना । द्वि व स्त्री का पाना व पुत्र लेना । शिव का उसके पालने का आदेश करना । स्त्री का पुत्र के विषय में ज्ञात करना, शिव का कथन करना । शिव व्रत भंग करने से ससुरा का रात जाने का बर्णन । उसका पोषण बर्णन व स्वर्ण घट का पाना । नाम श्रुति व्रत रहना । शिव भक्त होना । राज पाना ।

निर्गरेश्वर अवतार बर्णन । अग्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु का शिव भक्त होना । उपमन्यु का दूध का लेभ होना व माँ से मर्गना । जननी का कर्महीन होने का बर्णन, उपमन्यु को ज्ञान होना, उग्र तप करना । ब्रह्मा विष्णु कथन से शिव का वरदान देना । इन्द्र का शिव निंदा करना, आर समझाना, व क्रोध कर भस्म डालना । सुरेश्वर रूप से शिव का वर देना व प्रसन्न होना ।

जटिलान्त अवतार बर्णन—गिरिजा का तप करना, पितु पाजा से शिव विवाहार्थे आर शिव का विप्र रूप से गिरिजा के पास जटाधारी हो कर जाना व शिव निंदा करना, शिवा का असन्तुष्ट होना व दर्शन देना ।

नर्तक नट अवतार बर्णन—हिमालय के समीप नर्तकी बन कर जाना और विवाह में सुगन्ध जान प्रसन्न होना व द्विजेश में उसे भड़काना, तब सत क्रुपि को समझाने का भेजना । द्रोणाचार्य के रूप में प्रसन्न हो कर शिव का वर देना, शम्बाधामा अवतार लेकर पुत्र होना, वाण लच लन में दक्षता प्राप्त, पाँचव पत्र बध व अर्जुन का पकड़ना । अर्जुन का तप करके पाशुपतास्त्र पाना । परीक्षित का गर्भ में नाश करने का अश्वधामा का वाण भेजना, दृष्ट का आक्षेप करना । द्रोणी को शरण में भेजना ।

किरातावतार—अर्जुन का वाण लेने के लिये तप करने जाना । पाँचव कौरव द्रोह बर्णन । लाक्षा गृह, जूप, समा आदि का बर्णन । पाँचव वनवास बर्णन । शिव का अर्जुन से किरात रूप में शूकर के शिकार करने पर सुख करना व अन्त में प्रसन्न हो कर पाशुपति अस्त्र देना ।

१२ ज्योतिर्लिंग अवतार बर्णन—सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, परमेश, केदार, भोमशंकर विद्वेश्वर, अंबक, वैद्यनाथ, रामेश्वर, नागेश, सुरेश्वर अवतारों का बर्णन ।

सुजरात में दक्ष का शाप देने से मोचनार्थ सोमनाथ को स्थापन करना, चन्द्र कुंडलार्थ का बर्णन, मल्लिकार्जुन—श्रीगिरि में, महाकाल—उज्जैन में दृषण राक्षस मारने के लिये । परमेश—विष्णुचल में प्रलवबल शंकरेश्वर में प्रणव व परमेश्वर बर्णन । केदार—हिमालय के केदारनाथ में नर नारायण रूप धारण

करना । भीम शंकर—भीम को मारने के कारण लिंग स्थापन होना, वहीं महानंद का स्थान था । (कम्पिला में) विश्वेश्वर—काशी में । श्रवक—गीतम के वहाँ अवतार रूप गौतमो तट पर लिंग रूप में स्थापन । वैद्यनाथ—विहार में । नागेश—दाढ़क बन में स्थापन । रामेश्वर—सेतुबंध पर राम ने स्थापना की । देव गिरि में शुष्मेश्वर शिव का लिंग है । मुचर्मा द्विज शुष्मा स्त्री का पुत्र शिव भक्त था; उसे सौतेलो मा ने मारा जिसे जिनाने से व उसके लिंग स्थापन से शुष्मेश्वर नाथ नाम हुआ ।

अष्टम खंड ।

१२ लिंगों का वर्णन—घासाम में भीम शंकर (डाकिनो थल में) महो-सागर पर सोमेश्वर; रुद्र भट्टाच में, शुचि मति दुग्धेश, कर्दमेश ताज में, भूतेश, भोमेश्वर, लोकनाथ, त्रिनयन, वैजनाथ, व्याघ्रेश, भूतेश्वर ये १२ उपलिंग हैं । अन्य पूर्व के शिवों के नाम वर्णन । चारो युगों के शिव स्थापन का वर्णन । चित्रकुट स्थान वर्णन । मत्त मयेन्द्र शिव वर्णन । चित्रकुट चारों दिशाओं में शिव स्थापन, चित्रकुट में अत्रीशा, कार्लिजर में नोलकंड, सं कर्पण गिरि में कोटेश्वर, तुंगारनय में पशुपति का स्थापन हुआ । अत्रि के तप से सब तीर्थों का पाना व जल लाना । शिव का घर देना व शिव स्थापन होना । अत्रीश्वर महेश महिमा वर्णन । नर्मदा किनारे के सब शैल शिव हैं, वहाँ के शिवों का वर्णन । नंदिकेश्वर महादेव का वर्णन ।

नौमसार में राम का लिंग स्थापन । हनुमान का रेवा तट पर शिव स्थापन करना और ब्रह्महत्या से छूटना । ब्रह्मा-विष्णु को मोह देना व अपने को सर्वोपरि मानना, शिव को तुच्छ समझना । ब्रह्मा-विष्णु के प्रागे वाला प्रगट होना; लिंग रूप से घनादि ज्ञाति का फैलना । सब का शिव लिंग की पूजा करना, किसी को उसका घादि भेत न मिलना । दोनों का अनेक देवो घाटिका दिखाना और गर्व दूर होना । पृष्ठ २९०—३१९ तक ।

द्रुपदपुरी में द्विजेश व कालेश्वर शिव स्थापन, पश्चिम घोर के शिव लिंगों का वर्णन व महावलेश्वर शिव वर्णन, मथुरा में गोपेश्वर का कथन, द्वारकेश्वर स्थापन और गोकर्ण में महागणेश्वर स्थापन होना । इक्ष्वाकु वंशी नृप को एक राक्षस द्वारा छलना और राक्षसी कर्म करना व द्विज वध से वंशनाश होना, महावल शिव के पूजन से हत्या का दूर होना ।

महावल शिव महिमा वर्णन—उत्तर में ललिता देवी का ललितेश्वर महादेव का स्थापित करना रावण का शिर चढ़ाना व बरदान पाना । २ शिव लिंग पाना, मार्ग में मूत्र वेग होना, ग्वाला को मूर्ति देना, दो घड़ों लेने की प्रतिज्ञा कर पृथ्वी पर रखने से अतल लोक को जाना और फिर रावण से न उठना । चन्द्रमाल शिव महिमा वर्णन—पृ० ३२०—३३४ ।

उत्तर दिशा में पंच प्रयाम दसेश्वर लिंग नौलेश्वर, भद्रेश्वर, शंकर, होत्रेश्वर, चन्द्रेश्वर, अग्रोश्वर, लक्ष्मणनाथ तीर्थ में लक्ष्मण का शय नष्ट होने का वर्णन । शिव का लिंग रूप कारण वर्णन । सती शोक विछोह में मदनेत्कंठा वर्णन । गिरिजा के श्रेणों के पड़ने से तीर्थ बनना । हिरण्याक्ष पुत्र अंधक वध ने बड़ा तप किया था । फिर वर पा देवों को कष्ट दिया तब मारा गया व मृत बनाया गया । यहीं अंधकेश्वर शिव लिंग स्थापित हुआ । दधोचि के पुत्रों का शिवव्रत भंग करने से शिव का शाप देना, दधोचि का तप करना और शाप छुड़ाना । बटुक होने का वर देना और विजयों बनाना । प्रजापति यज्ञ में भद्रक राजा की अज्ञा का गिरना, बटु का उसके भोज में उपस्थित होना और उनको महिमा का बखान करना ।

ज्योतिर्लिंग की कथा—दक्ष के पुत्रों को नारद का वैराग्य दिलाना । तब शाप देना और ६० कन्या उत्पादन करना, २७ कन्याओं से चन्द्र का विवाह होना । एक से प्यार करने और शेष को न चाहने से दक्ष की शयों होने का ध्राप देना । चन्द्र विनय पर ब्रह्मा का प्रभासक्षेत्र (गुजरात) में ज्योतिर्लिंग की धाराधना करना व सोमेश्वर कथा कहना ।

महिकार्जुन कथा—पट्टमुख का परिक्रमा कर छोटना । पर भगेश को प्रमुख बनाने से रष्ट होना व महिकार्जुन में जाना । सब देवों का उन्हें मनाना । शिवशिवों का जाना । सब देवों का शिवलिंग की स्थापित करना ।

महाकाल—उज्जैन में एक ब्राह्मण के ४ पुत्र शिव भक्त थे, एक दूषण नामक राक्षस का दुख देना व तप करना । उसे वर देना । अंत में उसे नष्ट करना ।

महाकाल स्थापन वर्णन । चन्द्रसेन की शिव भक्ति वर्णन व लिंग स्थापन करना, गोपी सुत की इच्छा पूर्ण करने का वर्णन । नर्मदा महिमा वर्णन, विष्णु का मद वर्णन व शिव का दूर करना, अमरेश्वर शिव स्थापन, शिव सोमा वर्णन । कंदारनाथ में नरनारायण का तप करना, शिव स्थापन । बदोवन वर्णन, कृष्ण का तप वर्णन तथा वर लेना । पृ० ३३५—३७३ तक ।

भोम शंकर लिंग वर्णन—सहायर्षत पर भोम का निवास जो विगाव राक्षस का पुत्र था जिसे राम ने मारा था, उसकी माता का रावण की कथा वर्णन करना जिसे पुष्कसी ने उससे कहा था । भोम का बदला लेने की तप करना, शिव स्थापन करना, ब्रह्मा का वरदान देना, भोम का देवों व विष्णु से युद्ध करना और विष्णु का हार कर छोटना, भोम की देवों का कष्ट देना भोम का शिव की भक्ति करना और शिव से युद्ध करके मरना होना । उस मरन से श्रापयियों की उत्पत्ति, देव स्तुति वर्णन, भोम शंकर का स्थापन, विश्वेश्वर लिंग वर्णन, शिव

ब्रह्मा विवाद बर्षेन और ज्योतिर्लिंग रूप में उत्पत्ति, काशी में शिव स्थापन, शिव शिर हिलने से कर्णों गिरने पर मणिकर्ण तोर्य होना, प्रलय में सब डूबना व काशी को त्रिशूल पर रक्षा करना, शिव का मुख्य स्थान काशी मानना, पति-व्रता का शिव दर्शन से अद्भुत फल प्राप्ति बर्षेन । पृ० ३७४—४०० तक ।

शैव कृपण संवाद बर्षेन: शिव भक्ति बर्षेन व विश्वेश्वर महिमा कथन व काशी के अनेक शिव लिंगों का बर्षेन, ब्रह्मदत्त को फल प्राप्त होना । अम्बकेश्वर माहात्म्य बर्षेन, गौतम का तप कथन व वरुण को आराधना करना, जल प्रक्षय-मंडार मांगना, निज स्थान के लिये शेर वर पाना ।

शिव महिमा लिंग स्थापन—गौतम को मद होना व शिव का दूर करना मणेश का उपदेश देना; शिव गंगा आविर्भाव बर्षेन । अम्बकेश्वर माहात्म्य बर्षेन । पृ० ४०१—४२१ तक ।

वैद्यनाथ माहात्म्य बर्षेन—रावण का तप करना, दो शिवलिंग स्थापनाथ लेना, मद होने पर लिंगों का ग्वाल के हाथ से पाताल जाना और रावण से न उठना व मद-चूर्ण करना; फिर शिव स्तुति करने पर उठ जाना, रावण का अत्याचार बर्षेन, देवों का दुःख व निवेदन, राम का जन्म बर्षेन, विवाह आदि व शिव कृपा से रावण बध बर्षेन पृ० ४२२—४३२ तक ।

नागेश लिंग बर्षेन—दासका राक्षसों का तप बर्षेन; भवानों का वर देना, उसका देवों को कष्ट देना, उर्व मुनि का शाप देना । वैश्यपति को प्रार्थना पर शिव का उद्यत होना । बोरसेन का बर्षेन, रामेश्वर बर्षेन, स्थापन, माहात्म्य आदि कथन ।

शुक्लेश्वर स्थापन, माहात्म्य बर्षेन । शुक्ला का तप भक्ति व पुत्र वध बर्षेन, शिव का उसको रक्षा करने का बर्षेन । पृ० ४३३—४४७ तक ।

नवम खंड

शिव ब्रह्मांड रूप बर्षेन व सप्त विवरण बर्षेन । सुतलादि तीन लोक बर्षेन, बलि पूर्व जन्म बर्षेन, इन्द्राणी का क्रोध कथन व चित्तामणि आदि का क्रोधियों का पाना । तलातलादि पाताल तक बर्षेन, उन लोकों में शिव प्रताप बर्षेन । लोकों का विस्तार आदि बर्षेन; नरक गति बर्षेन । सप्त द्वीप बर्षेन । भूगोल व जंबूद्वीप बर्षेन । ब्रह्मराक्षस सद्गति बर्षेन । चित्रा मत्स्य धारण फल, शबर, सत्रिप सद्गति बर्षेन । मत्स्य माहात्म्य व भद्रायुध चरित्र बर्षेन । दशार्ण देश के बल्लवाहु राजा को अनेक रानों थीं, बड़ी रानों के पुत्र होना व बहुत दुखित हो रोना, राजा का रानों व पुत्र को निकाल देना, पुत्र को मृत्यु, क्रयम

का उसको रक्षा करना, भद्रासुप्त का जीवित होना, शिव प्राराधना व तप करना । पृ० ४४८—४९३ तक ।

रुद्राक्ष महिमा वर्णन । त्रिपुंड्र व भस्म प्रताप कथन । श्रवण कोर्तन और मनन महिमा वर्णन, शिव का अन्य देवों से उत्तम होने का वर्णन । हरि-विधि विवाद वर्णन शिव अनुग्रह विवाद निवारण वर्णन पृ० ४९४—५२४ तक ।

दशम खंड ।

शिव नाम महिमा वर्णन, सौमिनि व इन्द्रसुप्त को कथा का वर्णन जिसने शिव नाम जप कर मुक्ति—मुक्ति पायी । यक्षाचक्षु साथैक नाम उज्जैन के ब्राह्मण की प्रयोगशक्ति का शिव नाम से दूर होना । पंचाक्षर 'नमः शिवाय' की महिमा वर्णन, भस्म के तीन भेद, भस्म धारण महिमा वर्णन व विधि तथा रुद्राक्ष विभूति कथन, भस्म लगाने से बहिराक्षस को सद्गति होने का वर्णन । भूलोक वर्णन व शिव प्राराधना कथन । पृ० ५२५—५५८ तक ।

भुवलोक में भूत प्रेत निवास व शिव प्राराधना वर्णन । विद्याधर आदि का कथन, रविलाक वर्णन । चन्द्र का शिव प्राराधना वर्णन, शक्ति आदि का कथन, नक्षत्रों का वर्णन । पंच ग्रह, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और मंगल ग्रह वर्णन । सप्त ऋषि का ऋषिलोक में प्राराधना वर्णन । भुवलोक का वर्णन । महर्लोक व सत्यलोक का वर्णन । चतुर्दश मन्वन्तर चरित्र वर्णन व शिव प्राराधन वर्णन । मनुवंश वर्णन, सृष्टि के २ पुत्र व कन्या होना, सार्वभौम का तप वर्णन । अश्विनो-कुमार उत्पत्ति वर्णन । मनुवंश के मित्रावसु का वर्णन, सोमवंश कथन, सगरवंश वर्णन, गंगा उत्पत्ति, मगोरथ आदि का तप आदि वर्णन, रघुवंश वर्णन । पितृलोक वर्णन, उनका माहात्म्य वर्णन, विश्राज वर्णन । शिव भक्ति व स्तुति तथा महिमा वर्णन पृ० ५५९—६१० तक ।

एकादश खंड ।

शिवरात्रि व्रत माहात्म्य वर्णन तथा शिवरात्रि व्रत विधि और उद्यापन का वर्णन । मृग-व्याध संवाद और मृग का शिव प्राराधना वर्णन, व्याध को ज्ञान होना व शिवरात्रि व्रत माहात्म्य कथन । शिवरात्रि व्रत से चाण्डालिनो को सद्गति का वर्णन । मित्र सहाराज और मदयन्ती रानी को कथा का वर्णन और शिवरात्रि व्रत का प्रभाव दिखलाना तथा सद्गति का वर्णन । शिवरात्रि व्रत से विमर्ष को सद्गति का वर्णन । पृ० ६११—६२८ तक ।

प्रदोष माहात्म्य वर्णन, चन्द्रसेन व श्रीकर का व्रत करने से उद्धार । चन्द्रसेन-श्रीकर प्रभाव वर्णन । प्रदोष व्रत से, सत्यरथ के पुत्र धर्मगुप्त का जन्म । धर्मगुप्त के व्रत से सुख वर्णन । प्रतिमास के प्रदोष की विधि का वर्णन ।

एकादशी माहात्म्य वचन । अष्टमी शिवव्रत माहात्म्य वचन । भैरवाष्टमी व प्रणव
वाक्य प्रभाव वचन तथा विधि कथन । सोमवार व्रत वचन व विधान कथन ।
सीमेतिनो विवाह—वैधव्य वचन ।

चंद्रांगद की कथा, तक्षक कथा । इन्दुसेन व उसके पुत्र चन्द्रांगद का
वचन । उसकी प्रिया का प्रभाव । शारदा व्रत व उमा महेश्वर माहात्म्य । उमा
माहेश्वर व्रत । स्तुति और प्रभाव कथन । पृ० ६२९—६८८ तक ।

No. 253. Rahasallā by Mahipati. Substance—Country-
made paper. Leaves—18. Size—9×4 inches. Lines per
page—16. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat
1810 or A.D. 1753. Date of Manuscript—Samvat 1910
or A.D. 1853. Place of deposit—Thākura Balabhadra
Simha, Vansa kā Purawā, P. O. Sianiyā, District Bahrāich
(Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रहस्य मंडल लिख्यते ॥ श्री कृष्ण
रहस्य लीला लिख्यते ॥ गणनायक गौरी सुवन विघ्न हरन भगवान् हैं प्रसन्न
पूरवहु सकल तुम्ह सरवज सुजान ॥ बानी ठकुरायनी जननि जन पर होहु दयाल ।
चरित कहौ जदुनाथ के दीजै बुद्धि विसाल ॥ ललिता मातु प्रसन्न हैं दोजिय
सब सुष मोहि । मन कम वचन बिनोत हैं महोपति जांचत तोहि ॥ सिखा सहित
सिव ध्याइये चरण कमल सिर नाइ । अभिमत फल सुभ तुरत दी संकर देत
बधाइ ॥ माफत सुत रघुवीर प्रिय तुम सम धन्य न कोइ । हैं प्रसन्न वर दीजिये
अहि ते सब सिद्धि होइ ॥ तुम कृपाल संकट हरन करन सकल सुषखानि । महि-
पत सेवक तोर हैं महाराज वरदानि ॥ रामदुलारे राम प्रिय राम दूत सुषकंद ।
महिपत सुमिरत तोहि अब दीजिय परमानंद । निर्गुण ब्रह्म सगुण भयो जदुबंसिन
कुल भाइ । सो प्रभु चरित विचित्र किय निज मति बरनौ ताहि ॥

End—तैं तो सषी निरलज भई मन मोहन को चकई सो फिराई । तोहि
कहा उनकी अब मोठि में केतो कहा बहुरौ फिरि भाई । मोहि अबै करि जानि परा
कछु दोन्ह स्वाम तुमको पहनाई ॥ सिंह के बीच जे स्वार परे तिनहु अपनी पति
जानि गंवाई ॥ सुन्दर स्वाम के है रतना अब राधे जो राधे जो कंठ लगाई । तोहि
बिना कछु नोक न लागी आँ बहू भोजन खान बिनाई । हैं जो बेहाल परे नन्दलाल
मिछौ तिनको चलि के सुषदाई । कैसो कठोर भई कब ते अब ऐसो कहौ दयमान
होहाई ॥ मानिनि मान तजो ठठि के सुनि दूति की बाति भजौ सोहाई । मंजन के

तन पोप कसो पैमरि भूषन पैरि पचाई । कंचन धार संवारि कै आरति ले जा
चलो पति को रिझवाई ॥ माथो मिले मुसकाइ मनोहर हँस से राखे को कंठ
लगाई । करि कौड़ा गोपाल राखे सो पूछत भये कोन्हेड बहुत बेहाल कहिय सो
सुष दानिय ॥ कौन सो बात कहो हम सुन्दरि जा पर मान कियो तुम पता ।
देखि बैठि रहे तुम्हरो अब सेरि सो राधिका आवै अनंद बढ़ै तौ ॥ देखि बिलंब
सयो पठ्यै बेर तोन्हक दोन्ह धुमाइ तिन्है तौ । बात हिय को सबे कहिय मन मे
जो चाउ भरो होइ जेतो ॥ सुनै राधिका के वचन कृष्ण रहे प्ररुगाइ । पेल हाँसी
में हारि कै धौरे बात चलाई ॥ मास मासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ राविवासरे शुभ
संवत् १८१० रहस लोला समाप्त महोपनि जन पायो लिखा ॥

Subject—इस रहस्य मंडली में श्री कृष्ण राधिका प्रति हास्य विलास
का बखन है अर्थात् दानलोला, मानलोला आदि ।

No. 254—Avatāragītā by Mādhavādāsa. Substance—
Old foreign paper. Leaves—41. Size— $7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches.
Lines per page—42. Extent—1,155 Anuṣṭup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript
—Samvat 1898 or A.D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita
Ayōdhyā Prasāda Miśra, Kāṭaila Chīlavaliā, Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अवतार गीता लिप्यते ॥ सालग-
राम चरित्र छंद ॥ हे लंबोदर विनायकं सिद्धि दायकं । सुख प्रदयाकं दंतदंतो
वदन वरनेत वेद वेदारिक सदा सुख कंद गिरिजानंद मम मात मंद तुम करुणा
धनो मोहि देहु बुद्धि बिसाल वरनु राम कल कीर्तत धनो वंदौ मुकुंद पदारविंद
मुनिंद मन मधुकर करे ॥ मंदाकिनो मकरंद चललाम संतत शिरधरे ॥ जे चरम
पंकज परस पावन उपल ते प्रमदा करो । जलजात संत सुजान कर भव सिंधु
विनु श्रम गहतरो ॥ गुण ऐन मर्दन मैं शंकर शूलपाणि त्रिशूल हा ॥ जगद्विका
पति जक पति योगेश पति निजर महा ॥ शाशु भाल ब्याल कृपाल माल विभूत
अंग सुहावनी ॥ मोहि देहु मत सबदात वरनौ राम कीर्तत पावनो ॥ करि
दाह सत गुरु वचन प्रायक दोष दुख दारिद्र्य हिय । अज्ञान तिमिर नशाइ
चरण सरोज रज अंजन दिय ॥

End—छंद—करिहैं अनेक प्रकार चरित उदार सुनि सुनि जन तरै ।
तुम वशहु अब मम धाम तन तजि सकल सुख निधि पग परै ॥ मन होहु सालिक
राम शरिता गंडकी मह जाइकै । तुम जगत् तुलसी बिटप होइ पुनि वसहु मम
शिर आइकै ॥ जे संत पूजाहि मोहि तोहि समेत अब अवगुन मरै ॥ ते जाइं बैकुंठ

मानहु कौटि जय तय मय करै ॥ यहि सुनित वृंदा अब रिपु पावक मई तुलसी
पाइकै । प्रभु भये सालिगराम सब जग तरै पद परिक्षा नापकै ॥ दो०—वोह
इतिहास कहै सुनै कल तजि माधोदास । बिन प्रयास भव निधि तरै करै विष्णु
पुरवास ॥ ५६ इति श्री चवतार गीता प्रथम खंडे माधोदास विरचितं सालिग-
राम चरित्रे शिव जलंधर संग्राम वर्णने नाम अष्टमोऽध्याय श्री कृष्णाराधाय नमः ॥

Subject—मेगला चरित्र व कवि परिचय पृ० १ से ६ तक—

वृद्ध व जीव का वर्णन अद्वैत वाद के रूप में—पृ० ६ से १२

जीव गति व भगवद्भजन से मोक्ष उपाय व नरकादि का वर्णन पृ० १३—१६

भगवान के चौबीस अवतारों का वर्णन पृ० १६ से २२ तक

शालिगराम चरित्र व केशव भोग वर्णन, वृंदा की कथा पृ० २२ से २५ तक

देव व दानव युद्ध वर्णन व शक का जलंधर से हारना, रुद्र व जलंधर का

युद्ध वर्णन—पृ० २६ से ३७ तक

विष्णु का देवताओं की रक्षा करना व वृंदा की वरदान देना । वृंदा का
श्राप देना—पृ० ३७ से ४० तक इति

No. 255. Kavitta by Mādhava Prasāda of Todā (Unāo).
Substance—Foolscap paper. Leaves—2. Size—7 × 4 $\frac{3}{4}$ inches.
Lines per page—32. Extent—32 Anushtup Ślokas. Incom-
plete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of
deposit—Pāṇḍita Vāṇibhūṣaṇājī, Rāo Bareilly.

Beginning—माधवप्रसाद के कवित्त ॥ गणेश ॥

नाम लेत जाके काम पूरन सकल होत गीत जुँ सिद्धि के दरत न टारे ते ।
सिंधु की तरंगन सी बुद्धि की तरंगी उठै सुख को समूह सखी सदन सिहारे ते ॥
माधव कहत महामंगल में राखै सदा पारयतो वेदन को वानि वहे वारे ते ।
दहत कलेस लेस रहत न दारिद को मदन कदन सुत वदन निहारे ते ॥ १
प्रथम मनावै जाके चार वेद गावै ताके तीन लोक ताके है पताके जस वेप को ।
कल्यतर कामधेनु कामना बिहारिन को बालक उमा को सुखदायक महेश को ॥
चार चंद भाल सोहै चन्दन विशाल माधो सरवस दायक सहायक सुरेश को ।
बर वरदाता विद्या बुद्धि को विद्याता दोभा सिद्धि को सदन सद वदन गणेश को ॥ २
सिद्धि निद्धि दानो चारि वेदन बखानी वृहो शंभु ठकुरानी गहे कठिन कृपानी है ।
जाहै निराधार ताके तैं ही है पधार एक मही में उदार तोसो दूसरो न जानो है ॥
काली कमला व माधो बानी विमला है सोस तारापति तारा तैं ही सारदा सयानी है ।
दादि सुनि लोके मोक्षा नैन करि दोजे सुनि पाथक पसीजे तूतो यादि महारानी है ॥ ३

End—प्रज्व प्रनेछे अनिघारे वड़े वाँके नए नौके नौकदार कर कहर करेरे हैं ।
 पै न बादशाह के सिपाहो सर बोर दाऊ सामना परे ते किए बायल घनेरे हैं ॥
 माधो मधबूल खुबसूरत सकलदार देखि नटनन्द बजबंद भए घेरे हैं ।
 कलमा कतल कर पड़ जाहिल जहूर भए माहिल मजेदार माह नैन तेरे हैं ॥ ७
 रसके उकौये ए नुकोले नैन तेरे वीर तोखे बिन घंजन हैं गंजन सरोज के ।
 मोन मनमोचन सकोचन को सोम माने सहज सिकारी भारी खंजन को फौज के ।
 माधो मनमोहन के मोहन को मोहनो ए कुटुंब कुरंग पै लेवैया मनोरंज के ।
 योज से भरे हैं दाऊ मोज के करनशारे नायब हैं नेह के मुसाहिव मनोज के ॥ ८

Subject—गणेश वर्णन के २ छंद

शक्ति के २ छंद

बसंत के २ "

माह नैन के २ "

Note—माधवप्रसाद—जाति के ब्राह्मण सुवंश के वंशज, टेड़ा जिला उद्याव के निवासी थे । मनसारांम, संगमलाल, शंभुनाथ और माधवप्रसाद सुवंश शुक्ल के वंशज थे । सुवंश और शंभुनाथ का कविता-काल श्राव हो चुका है परन्तु मनसारांम, संगमलाल और माधव प्रसाद का कविता-काल मालूम नहीं हुआ । माधवप्रसाद के केवल ८ छंद प्राप्त हुए ।

No. 256. Devīcharita Sārjā by Mādhava Sīrṇha Kachhāvāhā, Rājā of Amēṇhī. Substance—Foreign paper. Leaves—64. Size—12×6 inches. Lines per page—48. Extent—1,920 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1918 or A.D. 1861. Date of Manuscript—Samvat 1934 or A.D. 1877. Place of deposit—Thākura Digvijaya Sīrṇha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ देवी चरित सरोज लिख्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ मूल कवित्त ॥ कंजन अ्यों विरचे सुवास के वरन पै विचित्र चित्त रापे गनेस भाव भारे की ॥ रसना रसिक छितपाल हिये भूपन पनूपरुप वस्तु मापे प्रकृति विचारे की । सकति सुसंग संग लक्ष्मना हमेस भुनि इच्छित सुमन रोति पूरे प्रीति वारे की । चाहैं ठीक ठाठन ठिकाने वारे ठौर ताहि पाठी भुजा चाहैं छादै चार भुजावारे की ॥ कवि मंगला चरन करे है । सो मंगला चरन तोनि रोति को एक नमस्कारात्मक । (२) चाशीर्वादात्मक तीसरा वस्तु निर्देशात्मक ॥ सो वस्तु निर्देशात्मक कवि मंगलाचरन करे है ॥ श्री गणेश जू को

कै कंज जोहै सुगंधत दवतदास के हृदय में वरन जो है अक्षर सो बिरचे हैं ॥
चर्यासघनुपास सौ परमार्थजुक सौ विचित्र जे मन हैं ते चित में राखे हैं ॥ अर्थ
मगनादिक यह भारे भाल को रास बिभावादिक राखे हैं

End—छप्पै ॥ भूप जाय निज गेह नैह जुत घोर बुलाये । संबकर कर सनमान
देश पुन सुवस बसाये ॥ शत्रु घत्र घर जोति मोत अति पोषन कोने ॥ जो जेहि
लायक देश भेष तिनके तस चोने ॥ पाले पवित्र बहु पुत्र पुन अंतकाल सुरपुर
गये यह चरित देवदारे विमल सघ सलोहन लोकन छुये ॥ कविता ॥ वसु
लिखि वध यह रद गनेश माल जेठ सुठो दशमो छितिज वार जान कर ॥ पूरण
पुरान युक्ति जुक्ति के समेत रख्यो देवो को चरित्र पुरपुर भक्ति मानवर ॥ कछ कुल
धमल धमेठो राजधान चाय काशो में प्रकाश कोनो चोने महादेव धर ॥ माघो
सिंह महोपाय वाल अंबिका को सुष माल मान चाल भूर भजन प्रभाव वर ॥
सोमठा ॥ बिगरो यामे होय जो कविताई सो सुकवि दोष न एको जाय अपनो
जानि सुधारियो । इति श्री कच्छ कुल कमल कलश माघो सिंह महोप विरचिते
देवो चरित सरोजे देवो महात्मे मेघरिषि सुरथ नरेश समाधि वैश्य संवाद समय
वरदान भवति सोपाय राजा वसिक यह गमनने नामः प्रसंग संपूने शुभ
संवत् ॥ १८३४ शाके १७९९

Subject—इस पुस्तक में प्रथम देवो की महिमा पुनः श्रंगार नख सिख
बखन कर माहात्म कथा, सुरथ वैश्य संवाद विस्तार सहित वखन की गई है ।

No. 257. Ekādāśī Vrata Kathā by Mādhava Rāma.
Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—8×5
inches. Lines per page—18. Extent—87 Anushtup Ślokas.
Incomplete. Appearance—Delapidated. Character—Kaithi
and Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1907 or A.D. 1850.
Place of deposit—Pandita Sudarśana Pāṭhaka, Purā Gaṅgā-
dhara, Village Tikariā, Post Office Gorigañj (Sultānpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुवेनमो नमः श्री हनुमते नमस्ते ॥
रामसोमठा राम । देहे मोहि वरदान गौरी सुत भव भय हरन । माघो मति अज्ञान
एकादशो वरनन करै ॥ दोहा ॥ पुनि वंदौ तिपुरारि पद ससि सेपर बिकराल ।
पंचानन दस बाहु जुत मोपर होहु कृपाल ॥

पद्य करो भगवान सो धर्मपुत्र हरपाद ॥ एकादसो चरित कही मोहि समुझाई ॥

End—सुनहि जे नर घर नारि जान अज्ञान निदान अति अत फल
दायक चारि माधव तिन कह देत है माघो दास सुजान अग्निहोत्र कुलमो

भयो संस्कृत मत से जान भाषा प्रकटो हरी कथा ॥ इति श्रीमद् पद्मिहोत्री
माधवराम विरचितायां एकादशी व्रत कथा समाप्तं सुममस्तु ॥ दोहा ॥ सुकुल
पद्म वैसाव को पद्मी तिथि गुरुवार एकादशी उत्तम कथा पूरन में सुखसार
संवत् १९०७ साके १७७१ सन् १२५७ को साल मा

Subject—एकादशी व्रत की कथा ।

No. 258. Madhō Rāma ki Kuṇḍali by Madhō Rāma.
Substance—Country-made paper. Leaves—90. Size— $8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$
inches. Lines per page—28. Extent—1,269 Anuṣṭup
Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of Composition—1880 Samvat or A.D. 1823. Place of
deposit—Lālā Tulasī Rāmaji Srivāstava, Rae Bareilly.

Beginning—श्री गनेसायनमः श्री सरसुतेनमः श्री परमगुन्नेनमः पद्या
लिख्यते माधौ राम कुंडली ।

सारांश—करी गजानन ध्यान जा महिमा जग जगमगी । होत बुध्य चल
म्यान संपत सहिति सरोर सुप १ ।

दोहा—जाके सुमिरै होत है निर्गुन ते गुनमान
ऐसे छव गजवदन को करी नित्य श्री ध्यान २
है गनेस दायक अधिक देव गुठमति मोर
दया करी चित लायकै हेरो मेरो वोर ३
घन गिरज सिवनंद तुम जिहि पूजत सुरसंत
होत कामना सिध्य है वेद पुरान मनंत ४
माधौ मनपत ध्याइ कै ल्यावो मन चित सुध्य
वै सय कारज करन है देन हार बज बुध्य ५
हैं प्रबुझ धृष्टी नहीं तुम लग मेरो दौर
मन नारक वर देन कै कलमै है सिर मौर ६

End—सांगोत—भज गधुनंदन सहित जनक तन चलप निरंजन है भव
मंजन जन हित कारन देह धरी जिन पधम उधारन पतठन पावन नाथ पनाथ न
स्वामी प्रभुवन संकर के मन वसत निसौ दिन लंका दाहन पसुर सधारन हरन
भार महि सुरन उधारन कोन्ह महारन रावन से तिन त्रिय गौतम तारन विपत
विदारन कालो नाथन कंस निकंदन संतन के प्रिय तेन भजौ किन दोनन चंद
जरोब निवाजनि निरथन के घन रुच बिनामन ते सुमरे तन जात पाप क्षित माधौ
मन सुप जपत गजानन कहत वेद गुन सेस सहस फन सुफल न जीवन हर के

भजन बिन । प्रभावतो भजले मन राम नाम खुपत खुलाई । दोन के दयाल पैते
गनका गत पाई । पैदास सदन सौरो कुल कोन कुल बडाई । सुमरे ते राम नाम
कीरत जग छाई वानासुर रावन कंस कोन्ही भरताई श्वेतकाल तिनहु साजोअ
मुक्त पाई । जन लघुता मन भाई प्रह्लाद धवनाई तिहि मक्ति वल्लभ द्वारे बल
ठावे जहुराई । जिन साचो लगन माये हर पदन सौ लग्गई तिन पाई प्रभुताई
हर नाम सौ बडाई । १ राम राम राम

Subject—१—२ मधेश स्तुति और चित्र

देवी " " " पार्वती जी की स्तुति गंगा
स्तुति, इंद्र स्तुति और चित्र, चंद्र स्तुति और चित्र, जमुना स्तुति और चित्र,
तुलसा जी की स्तुति और चित्र, महादेव की वंदना और चित्र, महावीर-स्तुति
और चित्र, गुरु वंदना । सोठाराम की स्तुति और निर्माण संवत, सूर्य देव स्तुति
और चित्र, धर्मराज स्तुति और चित्र, चित्र प्रयाग राज्य का और स्तुति, चित्रगुप्त
की स्तुति और चित्र, ब्रह्मा जी का चित्र, नर्मदा स्तुति और चित्र, श्रयोध्या की
स्तुति और चित्र, मथुरा जी की स्तुति और चित्र, द्वारका जी की स्तुति, काशी
जी की वंदना, जगन्नाथ की वंदना, शेष जी की वंदना, चित्रकूट की वंदना,
काशी की वंदना और कवि का अपना निवास स्थान का परिचय, विष्णु की
वंदना, राम लक्ष्मण का विद्वामित्र के साथ वनेन, मत्स्य अवतार का चित्र,
कच्छप अवतार का वनेन, शूकर अवतार का वनेन, हिरण्यकश्यप और
प्रह्लाद का वनेन, बलि बावन का वनेन, परमुराम का वनेन और चित्र, रावण
और राम का वनेन, जैन अवतार का वनेन, श्री कृष्ण अवतार का वनेन,
निष्कलंक अवतार का वनेन, तीर्थों की महिमा वनेन, राम कृष्ण के अवतारों
की महिमा, मथुरा जी की वंदना, अंत में राम में भक्ति रखने के लिए आग्रह और
राम भजन की महिमा का वनेन ।

Note—निर्माण संवत और निर्माण कारण ।

No. 259—*Hari Rādhā Vilāsa* by Mana. Substance—
Country-made paper. Leaves—42. Size—7 × 6 inches. Lines
per page—11. Extent—210 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript
—1822 Samvat or 1765 A.D. Place of deposit—Thākura
Yadunātha Bābū Simhaji, Hariharapura, Post Office Chirwalia,
District Bahraich.

Beginning—नमो लसति पुरो प्रति चाह । दिन दिन सुख के सदन
को वनत मनो दुबार ॥ ५ ता हरि हरपुर नगर को कुसल सिंह भो भूप । जा सुत

संपत्ति से। सुचित कोनो राज प्रनुप ॥ श्री कुसुदेस नरेस के पण्ट भये सुत चारि । चारो भयन को जगति जग जाहिर तरवारि ॥ छंद हरिगोत-कुसुदेस के सुत चारि देह धरे मनो फल चारि हैं । सबु जोतवे को जगतु नर रूपो किधो तरवारि है । वे राम लखिन पुनि भरत सनुधन चारो भौतरे । कै चरन चारो धरम के नर वरन के मिस उदगरे ॥८॥

End—हरि राया के भेद को को कवि पावै पार । सकल जगत के तरन को भयो धाई प्रवतार ॥ रूपसिंह महिपाल के जय कारन कवि मान । सेा कोनो ग्रन्थ वह लखि जानि है सुजान । इति श्री हरिराया विलास ग्रंथ सम्पूर्ण भवतु मितो सावन सुदी सप्तमी ७ गुरौ संवत् १८२२ ॥

Subject—राजवंश वखन—२-५ पृष्ठ

सबा का राधिका वखन कृष्ण से वज्र में गोपियों का वखन ६-१२

गोसाइन का वखन, राधिका का भेष बदल कर जाना कृष्ण मिलन और छोट कर सब के साथ जाना तथा संयोग होना, १३-१८

रहस लौला करना, मथुरा गमन वज्र में ऊधो को भेजना ऊधो व गोपी संवाद व उनका छोटना १९-२९

वज्रवासियों का कुरुक्षेत्र जाना और कृष्ण का सपरिषद वहां आकर वसे मिलना सत्यभामा राधा संवाद और सबका छोटना—३०—४२ इति ।

Note—मान कवि हरिहरपुर (बहराइच) नरेश रूपसिंह रैकुवार क्षत्री के ध्यायत थे यह जाति के ब्राह्मण थे और वेसवारे के रहने वाले थे सं० १८२२ में वर्तमान थे, मिश्रबंधु बिनोद में इनका लिखा एक कृष्ण कल्लोल नामक ग्रन्थ बताया गया है । जिसका दूसरा नाम कृष्ण खन्ड भाषा है ।

No. 260. Vartamāna Chaubīsī Pāṭha by Manraṅgalāla of Kanauja. Substance—Country-made paper. Leaves—201. Size—9½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—2,311 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of composition—Samvat 1887 or A.D. 1830. Date of Manuscript—Samvat 1959 or A.D. 1902. Place of deposit—Śrī Jaina Maṇḍira (Badā), Bārābañkī (Oudh).

Beginning—यो नमः सिद्धेभ्यः । अथ वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा लिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रलब्ध लखत सब जगत के, रसवारे सिपि नाथ । नामि नदन पद पदम क्षिपि, तिनहैं नवाऊं माथ ॥ १ ॥ सिद्धार्थ कुल गगन के, पूरण निर्मल

चंद । असला प्राची दिग्गज ने, सूरज तिमिर निकंद ॥ २ चकळंकित चकित धरमः
भरम भजावन हार । परम शेष बाईस जिन, नमहुं करम खय कार ॥ ३ ॥ तुमसे
तुमही जगत में, उपमा काकी देउं । ज्ञान कला दोजै तनिक, पद पूजन करि
छेउं ॥ ४ वर्तमान प चौबोस सौ करुणालय जिन देव । तिनको पूजन करत हो
रहत न भव को ठेव । ५ तुम जैन पाल तुम जैन ईस । तुम जैन पतो विसुवाहि
बोस । तुम जयन पूज्य तुम जयन घन । तुम जैनात्मा जीता घनेंग । ६ तुम यक्ष
जोत तुम जोत काम । तुम जोत छोम आनंद धाम । तुम रागजित तुमजोत द्वेष ।
जित शत्रुनाथ निर ग्रंथ मेघ ॥ ७ ॥

End—इंद्र धके गणधर धके सरु भुजंगेस धकंत । अस वरनत जिन वरतने
नर किम पार लहत ॥ १८ ॥ सौ में मंद धिया कछु पिगल को अधिकार । ना जावौं
जिन भक्ति बस कोन्हों यह निरधार ॥ १९ ॥ भूल कहों यक्षर घमिल ग्रथे घनर्थ
जो कोय । ताहि सुधारौ चतुर जन तुम उपगारौ होय । २० ॥ नाक बिना बुधिया
चतुर ना व्याकरण पढ़ंत । अलप मतो मुझ जानिके क्षमौ सकल मतमंत ॥ २१ ॥

x x x x

विषम अल सम होय शत्रु मिश्रता विचारै । सुत घरथो सुत लहै निरधनी मरै
भैंडारै ॥ २२ ॥ रागो होय घराम्य सोम को भूमि विदारै । नाच कुलो कुल लहै
कुहपो रूप सम्हारै ॥ २३ ॥ मन बच काय जो यह पाठ पढ़ै सुणवै सुनै नित ।
मनरेग लाल ता पुरुष को देखि इन्द्र होवै चकित ॥ २४ ॥

x x x x

इति श्री वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजन संपूर्णम् । लिखतं रामदयाल धावन
पल्लोवार कर्षाज मितो मंगसर सुदी ५ संवत् १९५९ ॥ लिखयित लाल लक्ष्मण
राय के पुत्र कनहोलाल जैनो अमरवाल बारहबेकी नवाबगंज ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—समुच्चय पूजा तथा प्रथम तोर्थकर
आदिनाथ पूज्य का विधान तथा मंत्रादि वगैरे ।

(२) पृ० ११ से पृ० १८ तक—अजितनाथ द्वितीय तोर्थकर की पूजा ।

(३) पृ० १९ से पृष्ठ ६४ तक—संभवनाथ अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ, पद्म-
प्रभु पूजा तथा चन्द्रप्रभु पूजा वगैरे ।

(४) पृ० ६५ से १०० तक—पुष्पदंत पूजा, शीतलनाथ पूजा, श्रेयांशनाथ
पूजा, वास पूज्य पूजा ।

(५) पृ० १०१ से पृ० १५० तक—बिमलनाथ पूजा, अनंतनाथ पूजा, धर्मेनाथ
पूजा, कथनाथ पूजा, सरहनाथ पूजा, तथा मल्लिनाथ पूजा ।

(६) पृ० १५१ से पृ० १९२ तक—मुनि सुव्रतनाथ पूजा, नामिनाथ पूजा, नेमिनाथ पूजा, तथा पार्श्वनाथ पूजा ।

(७) पृ० १९३ से पृ० २०१ तक—महावीर स्वामी, अंतिम तीर्थंकर की पूजा का वर्णन ।

ग्रंथकार का परिचय—अंतरवेद माहशुभ देश । सुबस वसै अति आनंद भेस । तामे कमवज नगर बिरह्यात । तामे वसै लोग बहु छात ॥ १ ॥

सो जानौं सुम धान हमार । तहाँ आबगी पल्लोवार । वसै इक्ष्वाक वंशतिन तना । कासिव गोत्र महा सोहना । २ ॥ गिरागुरु धारो सब लोग । बलान्कार मल के संजोग । मूललंब धारो गुणवास । दिन धरार धारो के दोस ॥ ३ ॥

×

×

×

×

तेहि ठाँव बसत हुलासी राय । अमरैवा गोत्री सुखदाय । अछ गोत्र जानौं यह लेय । कासिव गोत्र ठेठ के होय । नंदन जुगल मये तिन तने । अग्रज लाल कनौजा गने । अनुज नाम गोविंद परसाद । निशदिन करत रहत पहलाद । तौन कनौजोलाल के नाम देवको नारि । दया मई मूरति मनौ विधना करो विचार । ता कुशा में उपजे तौन । पुत्र सदा जिन पद लवलोन । प्रथम पुत्र मनरंग कहाय । दूसर नाम केसरो पाव । आनंद धन तीसर कह कहै । निशदिन जैन पराधन रहै । इन बहुत मां मनरंगलाल । जेष्ठ पहुँ भाषा की चाल ।

पाठ के बनाने का हेतु—

अब सुनहु पाठ के बनवन हेतु । तेहि नगर माहि आनंद समेत । एक वसत सेठ खुशाल चंद । गोपालदास तिनके सुतय ॥ × × × ×

तिन हम सेां कही बात बुझाय । कीजै कछु जाकर पाप जाय । सुनकर तिनको बानो रसाल । चित धारि बड़त आनंद जाल । जिन वर्तमान चौधोस सार । तिन पावन की पूजा विचार । कीन्हो मैं नाना छन्दन लाय । आनंद सहित गुण गाय गाय ।

निर्माण काल :—

संवत् विक्रम राय की एक सहस्र सत पाठ । चौर सठासो अधिक मैं पूरन भौ यह पाठ ॥ मगसिर महिना चंद्रपस तिथि दसमो शुक्रवार । पड़ो पड़ावो अविक्कल जो पावौं मनपार ॥ इति ।

Note—ग्रंथकर्त्ता कञ्चौज निवासी मनरंग लाल कश्यप गोत्रीय, अमरैवा वैश्य लाला कञ्चौज लाल का पुत्र था ।

No. 261. Bahulā Vyāghra Samvāda by Māna (Simha) of Pawāra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size— $8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—16. Extent—288 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1835 or A.D. 1778. Place of deposit—Pandita Rām avatāra, Village Nogahān, Post Office Shahmau (Rae Bareilly).

Beginning—पृष्ठ १३ से प्रारम्भ ।

बहु विधि गोपिन्ह सपिन्ह सिपावा, बहुला हृदै बोध नहि पावा । गोपी सपी भेटि तब गाइ । बार बार उन वक्ष लमाइ । चलो येनु तब व्याघ्र समीपा देषत सब पुर दुषित महीपा । गोपन्ह गहे वक्ष दष पाइ । गिर गिरि परत विकल अफदार । बहुला हुंकरि हुंकरि तब हेरै । सहत सोक अति सख्य न फेरै । छंद ॥ क्षिति वहन अग्नि पकास मादत सुरन्ह नावत माथ है । मम पुत्र रछहु सकन दिग्गति जानि निपटि चनाथ है ॥ कैस वैठ चिता करहु भक्षहु व्याघ्र ते बहुलै कहा । पद देखि अद्भुत पतुल मृगपति परम चकित होइ रहा ॥ दोहा ॥ सख कोन्ह तुम्ह सपत देह मान मय त्वानि । धन्य धन्य धरमात्मा व्याघ्र बदत अनुरागि । पद अपुर्व कैतुक तुम्ह कोन्हा । मपठ प्रतारथ मै तोहि कोन्हा । धन्य भूमि सो राज्य भवानो । सखवादिनी जह कल्याणी ।

End—भोषम पद इतिहास सुनावा । भूप सुविष्टिर मुनि सुप पावा । बारहि बार पितामह वंदे । मिटे नाथ मम पातक भंदे । पावन परम कहैहु ब्रत यह । जासु कहे विनु सुप संदेह । भान सिंह कवि द्विज पमिलावा । देखि संसकत कोन्हे भाषा ॥ दोहा ॥ कान्ह बंस कवि सिंह है नगर पवारे वास । सुखी क्षितिपति मृग कुल आदिनाथ के दास । इति श्री भविष्योत्तर पुराने बहुला व्याघ्र संवादे इतिहास कथने सिंह विरचित भाषानुर्वच सुभमस्तु ॥ संवत् ॥ १८३५ भादे मासे सिते पक्षे दुतिया रवि वासरे ॥ लिपिते रूप विप्रेन कासये ग्राम वासिनः पर्यना कठवारस्थ अष्ट ग्रामस्थ मात्ररा । दक्षिणे सोमिने दुर्ग उत्तरे तु जलाश्रितः ॥ १ ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम राम ।

Subject—गोपियों को सखियों का समझाना, येनु का व्याघ्र के पास जाना और सबों का दुषित होना । बहुला का सख पर डङ्ग रहना और विनती कर व्याघ्र से क्षमा मांगना । व्याघ्र का अपना मुनि आप वशेन, येनु क्षीर महिमा व्याघ्र का गंधर्व रूप होना और परिक्रमा करके अपने लोके चले जाना । बहुला का अपने घर जाना । भोषम का बहुला गुण वर्णन, सुविष्टिर का भोषम से सख्य धर्म पूछना, गणेश चौध पूजन विधि, कवि को गणेश स्तुति, बहुला स्तुति ।

गो सिंह सम्वाद पढ़ने से संतान बुद्धि निरोप्यता और धन धान्य को बुद्धि का होना । क्षेत्र में पढ़ने से ध्यान सिद्धि, गोष्टो में पढ़ने से गो और दुग्ध को बुद्धि, गृह में पढ़ने से बालक को बुद्धि, युधिष्ठिर का भीष्म को वंदना करना और कवि परिचय ।

No. 262. Śrīṅgāra Latikā by Māna Simha (Dviṇa Deva) of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—103. Size—6×4 inches. Lines per page—28. Extent—3,570 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rajā Lalatā Baksha Simhaji Talukedāra, Nilagāon, Post Office Nilagāon, District Sitapur.

Beginning—श्री गणेशायनमः वसंत आगम वर्णन ॥ आलु सुष सावत सलेनो सजो सेज पै धरोक निसि बाको रहो पोछले पहर को । भड़कन लागो पौन दक्षिन चलछ चार चांदनो चहुंघा फिरि आई निसि करको । दिज देवको मो मोहिने कहै न जानि परयो पलट गई धौ कवै सुषमा नगर को ॥ और मैन गति जति रैन को सु औरै भई रति मति औरै भई नरको ॥ अचतरज प्रथम आप्रति घर स्वप्न को संधि में जो मयो हाल है ताहि कहि वसंत के प्रथम आगम में कछ कछ ललित मये पौन घर चांदनो तथा कछ कछ बाढ़े मनो विकार को कहै है ॥ टोका आलु सुष ॥ पद १ ॥ आलु सलेनो कहै पाछो साजो जो सेज है तापे सावत पोछले पहर को एक घरो निसि बाको रहि गई तो ॥ पद २ ॥ ताहो समय दक्षिन को जो पौन है सो चलछ हूँ भड़कन लागो कहै डोलिवे लागो तुरंत हो वसंत के आगम है ताते चलछ कहाँ तैसेई निसि कर कहै । चंद को चांदनो पिलि गई सावन समें कछ नाहि जानि परत हतो ॥ पै न जानि परयो कि कव कौन सो घरो का समें में नगर को सुषमा कहाँ परम सोभा लटि गई । रैन को जाति कहै और कछ औरै हूँ मयो घर मैन को कहै काम को गति हूँ कछ औरै हूँ गई ॥

End—चित्त चाहि अबूझ कहै कितने छवि छोनो गयंदन को टटको । कवि केते कहै निज बुद्धि उदै यहि सोषो मरालन को मटको । द्विज देव जो धौ कुतकैन मै सब की गति वोहो फिरै मटको । वह मंद चले किन मोरो भट्ट मग लावन को अपियाँ मटको ॥ (टोका) अब चलियो वरनै है ॥ टोका ॥ चित्त चाहि ॥ १ पद बाको मंद गति देखि कितने अबूझ कहे हैं । कि यहि गयंदन को कहै है हाथिन को छवि छोनि लोन्हो है ॥ २ पद घर केते कवि पापनो बुद्धि के उदै सो कहै हैं कि यह मरालन का कहै हैं हंसन को सोषो है अर्थ मरालन को गति यहि सोषो है ॥ ३ पद ॥ ऐसेई कुतरकन में सिंगरे कविन

को मति योंही भटको फिरें हैं ॥ जो कहो इनको गति नाहि सोषो ती चति
ललित मंदताई याको गति में कहाँ सो चाई । तापै कहै हैं वह भट् मंद कैसे
नाहि चले वाके पसन में तो लासन को चापैं भटको हैं । भाषिन के मार से
वाके पग मंद उठै चहैं । यासो व्यंजित भयो कि येसो जग में कौन है जो राधा
जु के चरन को ध्यान में नाहि देषो करै है ॥

Subject—इस पुस्तक में कवि द्विजदेव को कविता शृंगार रस टीका की
गई है इसमें वसंत आदि ऋतुओं का वर्णन है शृंगार रस वर्णन है ।

No. 263—Śālihotra, by Māna Śimha. Substance—
Country-made paper. Leaves—18. Size— $10\frac{1}{2} \times 5$ inches.
Lines per page—10. Extent—180 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—
Samvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Thākura
Naunihāla Śimha, Kanṭha (Una).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा शालिहोत्र संग्रह लिख्यते ॥
चौ० ॥ हरे वहेरो आवरो भानै । जेठो मधु फिर वैठ बखानै । हुइ दुइ पैसा भर सब
लोजै कूटि पोटी कपसौं सब कोजै ॥ वासो पानो दीजै सानि । सात रौज लो
कहो बखानि ॥ दोहा ॥ इतनो इतनो दीजिये सात रोज लैं प्रात । तुरतै लौह
मृतिवो मिटै कहो मुनि वात ॥ अन्य चौपाई ॥ हरट ईदौरिन पोपर लोजै । हुइ दुइ
पैसा भर इक कोजै । कूटि पोटी पानो में सानै । देहि भोर उठि वैठ बखानै ॥

End—ब्रह्म विष्णु शिव पादि दै जितने दृश्य शरीर । नासहि को धावत
सबै ज्यों बड़वानल नोर ॥ जित छै जेहै वासना तित छैहै मन लोन । जल कहौ कैसे
करै जोच बापुरो दोन । भुक्ति पुरी दरबार के चार चतुर प्रतिहार । साधन को
सत्संग अरु सम संतोष विचार । जब तब काछुह तुम रच्यो कज्जल कलित अपार
तामह पैठि जु नोसरै अकलंकित सो साथ ॥ भूलि गयो रूप निज विधि तन सौ
गयो । लोभ मद काम बस मोह जब हो भयो ॥

Subject—लोहू मूतने की दवा, कांवरि की दवा, सातिका इलाज, जप
चिकित्सा, सकरोट, मसाने की दवा, बेली, रसबेलि पौर सुख बहो की दवा ।
पृ० १—६ तक

निरोध की दवा, पेट फुलने की दवा, कुरकुरी, चांदनो, बमनो व मृगो,
विद्वधि, बदधम भरे की दवा, भने की दवा, गिरे की दवा, पृ० ७—१२

तेज करने की दवा, जोगी खेल गोमिरे की दवा, बरसात की दवा, मसा
की, फूलो की दवा, बत्तासा चूखें अन्त में फुटकर कविता पृ० १३—१८

No. 264—Śikhara Māhātmya by Māna Sudhāsāgara.
 Substance—Country-made paper. Leaves—285. Size—11½
 × 7½ inches. Lines per page—13. Extent—3,705 Anuṣṭup
 Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
 Manuscript—1914 Samvat or 1857 A.D. Place of deposit—
 Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—**पौ नमः सिद्धं ॥ श्री वोतराज जो सदा सहाय । यद्य
 शिखर महातम ग्रंथ लिख्यते मनसा सागर कृत ॥ कल्पे कल्प ॥**

श्री संसेवित चरण कमल जुग सब सुख लायक । श्री शिखरलोक विलोक
 ज्ञानमय होत सुनायक ॥ अनमित सुख उद्योत कर्म बैरी घन घायक । ज्ञान भाग
 प्रकास जासु पद सब सुख दायक ॥ ऐसे महंत परि हंत जिन सेवहु निसदिन
 माव सौ । पावै प्रमान अविचल सदन वोतराज गुण चाव सौ ॥ १ ॥ दोहरा—
 अहंत प्रभु को सुमिर कै, सिद्ध चरण चित लाय । अष्ट कर्म मल त्यागि कै, अष्ट
 महा गुण पाय ॥ २ ॥ सर्वैया—ज्ञानार्थनी कर्म के गये ते सब ज्ञान होत दर्शना
 वरणि गये षट् दृश्य पेखिये । वेदनी के नासै निरावाध गुण होत सार मोहनो
 कै नासै सुद्ध चारित्र विलेपिये ॥ आपु कर्म नासै आवागाहन सुथिर होय
 नामक कर्म नागै ते घामुरतीक देखिये । गौतकर्म नासै ते अगुर लघु गुन होत
 अंतराय नासै ते अनंत बिजे लेखिये ॥ ३ ॥ दोहरा—पंचाचार किया धरै गुण षट्
 तीस प्रमान । सो आचारज नमन तै, पावै पद निरवान ॥ ४ ॥

End—**सर्वैया—एक जिन राज शिव ध्यान मन बच काय भाव से तो
 बंदे तेई सिव पद लहै है । सिखिर सुमेर सीस जिन सिव पद लहौ पौर हु अंसख्य
 मुनि सुखमाय गहै हैं । ऐसा क्षेत्र नरक तिर्यचगति कौन नासै जाइ तेई जोब जे
 अचल पद जहे हैं । ताते इह जानि भव्य चित में विचारि अब सिखिर कौ बंध
 निज भव सुधार लोके हैं । दोहरा । सिखिर महागिरि बंदिवै जब लौं षट में प्रान ।
 नर भव को इहलाह है जानि सुयो मग आनि । सिखिर महातम चरित पर पुरन
 भयो रसाल । हिरदै हरष बहु धारि कै लिखी सु मुञ्जलाल ॥ एक सहस्र नव सतक
 में चौदह अधिक प्रमान । ज्येष्ठ शुक्ल तेरसि सुदिन शुक्रवार शुभ ज्ञान । अपने
 पढ़ने अर्थ को सिखिर महातम ग्रंथ । पढ़त सुनत आनंद बड़े सुख पावै अति
 संघ । अकन गिनतो धने में लिखियो यह जान । दोय सहस्र अह एक शत
 बत्तिस अधिक प्रमान ॥ इति श्री काष्ठासंघे लोह चार्य विरचिते सिखिर महातम
 ग्रंथ मन शुद्ध सागरता भाषा बखने संध्यायः ॥ सिखिर महातम ग्रंथ समाप्त ॥
 लिखित मुञ्जलाल आवक साहनलाल पात्र सुश्यालचंद तस्य पुत्र, मुञ्जलाल**

आपने पढ़न सर्थ लिखित ॥ गजावर लाल बेजादरे वाले इन्द्रजीत के बेटे तिनकी पोथी पर देखि के लिखा । मनसा—सागर छत ॥ श्री बीतराग जो सदा सहाय ॥

Subject—प्रथम पौठिकाचिकार, मंगलाचरण, जिनादि वन्दनाएँ, आग्रह के पदोपों का वर्णन, प्रेषन किया, सभा वर्णन, समोसरन वर्णन । तीर्थ माहात्म्य, कूटनाम, कुलकर नाम, स्वप्ननाम, स्वप्नफल, लौकांतिक स्तुति, प्रथम तीर्थकर का सर्व सिद्धकूट ऊपर मोक्ष गमन । सिद्धकूट द्वितीय तीर्थकर का मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट दत्त धवलोपरि संभव जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट आनंद नामोपरि अनिन्दन जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूटौ विचलोपरि सुमतिनाथ मोक्ष वर्णन । सिद्धकूट मदनो पर पद्म प्रभु के मोक्ष प्राप्त वर्णन । सिद्धकूट प्रभासा परि सुपार्श्वनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट ललित कुंभोपरि चंद्रप्रम मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट सुप्रभास पर पुष्पदंत जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट विष्णुनाथो पर शान्तल जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट सांकुलो नामोपरि श्रेवास नाथ जिनके मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट मंदावसो परि वसुपूज्य जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट छत्र भंजनोपरि विमलनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट स्वयंभू पर अनंतनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट दत्तवर धर्मनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट प्रभासोपरि शान्तिनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट ध्यान घोरोपरि कुंभनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । नाटक नामकूट पर परहनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । संवलकूट पर मल्लिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । मुनि सुव्रत चरित्र वर्णन । प्रमवकूट पर नेमिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । प्रकाश कूट पर नेमनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । प्रमवकूट पर पार्श्वनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । श्रीमहावीर स्वामी चरित्र वर्णन । शिखिर महानिरि की वन्दना का आदेश ।

No. 265—Śringāra Karitā? by Maṇḍana. Substance—Foolscap paper. Leaves—8. Size— $8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—192 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Kamalākānta, Jimāso, District Rae Bareilly.

Beginning—मानि सवै मनुहारि बधू मुसक्याइ हंसै येमिया न उतारै । मंडन डौरि के छोरत हों रिस के मिस हूँ संगुरी गहि डारै । लाल करै अपना मन भायो चुरी बनकै जब हाथनि भारै । कोकिल सो कुइकै वहकै ससकै सतराइ छुकै भिभकारै ॥ बातनि हों कछु पाछु सहेलितु स्वाम को रूप समो-लिक सांख्यो । पैंतें में मंडन बाणो बनाइ कहूँ ते पटा चड़ि पापुन भांको । उलहे सब संग दुरावति धारी रहै न दियो हटस्यो घर हांख्यो । उमै के हाथ उतै येमि-राति जंभाति इतै मुख चाहति डाख्यो ॥

End.—परी मेरी कौल की कलो सी बिकसति जब घुबरो बनाइ कै तूं डारो
 सो कसति है । उधरत लसत बिताजि रहै याँही छवि मंडन जराय की कुँहो सो
 बहसति है । सोरो ठार जानि मेरे जान कामदेव जू की प्यारी पत्तो निसि जानि
 जाही में बसति है । ऐसी कछू मोहो तेरो ठोहो है दहारि सो जु कबहुक पैठि दोठि
 नोठि निकसति है ॥ जौन घन देप्यो सो तो गढ़ि सो धरोरा है माई पैज पुरबनहार
 मंडन की साथ को ॥ घरम घरम दोसै ऊपर को घर नोचै धर सो रच्यो है मनमथ
 के सराव को ॥ मंडन सुकवि तेई उपमा बिचारि कहैं जिनको मरोसो मति अगम
 अगाध को । छाती में उंचाई गठघाई छे छे छाई सब छाटि छाटि किया तेरो
 लांक टांक पाधको । करो दो की सुंठि सा कहत घन देपे कवि एक कहैं कदलि
 के रूप है जेरे के । एक कहैं हाथ को हथेरो को उतारि जैसो मेरे जान जानिप
 सुजान पन थारे के ॥ मंडन कहत है कै सरोके उमड़ि गय मोरे है × × ×
 मनमथ गोरे के । हाँ पै कहैं मेरी प्यारी तेरो जाँघ देख करि सोन पंमा हैं दोऊ
 रति के हिंदारे के ।

Subject.—गर्विता, लज्जावती, प्रेम गर्विता, प्रेम खंडिता और रूप गर्विता
 का उदाहरण । मानतो मुग्धा, विरहिनी, मानिनो, और पतिव्रता का उदाहरण ।
 पतिव्रता का मान वखैन, सौमान्यवती का वखैन, शील वखैन, मुख रूप वखैन ।
 बाँध और मोह को शोभा वखैन, अभिमान वखैन, जोग वखैन । मोह वखैन,
 दानवीर वखैन, कोटि वखैन, दयावीर वखैन । कल्ला रस वखैन, बोर रस वखैन,
 बोलसरस वखैन, रौद्ररस वखैन । हास्य रस वखैन, भयानक रस वखैन, शांति
 रस वखैन । कुच वखैन, अज्ञात यौवना का वखैन, लंक वखैन, जंघा वखैन ।

No. 266. Baitāla Pachisi, by Manikāntha of Āzampur.
 Substance—Country-made paper. Leaves—59. Size—9 × 6½
 inches. Lines per page—20. Extent—1,500 Anushtup
 Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
 Composition—Samvat 1782 or A.D. 1725. Date of Manu-
 script—Samvat 1894 or A.D. 1837. Place of deposit—Rāja
 Pustakālaya, Bhingā, Bahraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पाथो बैतालपचोसो लिख्यते ॥
 गौरी गिरि गनपति गिरिस गुरु पद पंकज रेनु । विनय सीस धरि होत सब
 कारज सिद्धि सुखेन ॥ चौपैया छंद ॥ है याजमपुर विदित ग्राम । सुख संपति
 चानन्द धाम ॥ भूमि तिलक सम अति उदार । वेद विदित बाड़े पचार । अर्धा
 चारि वर्ग निज धर्म धारि । रथ नेमि चलत जो पथ विचारि । अप जोग जह नित

करत दान । नित हो सुनत घर घर पुरान ॥ दोहा ॥ अगरवार के गौत सुम तेहि
पुर वसै चनेक । गर्गवंश घर एक है चिदित धर्म को टेक ॥ २ ॥ धर्म धुरंघर
सोल सुत भय भवानो साहु । मुदित जगहि लखि हित सदा घरि उर उपजत
दाह ॥ ३ ॥ तिनके सुत तहं तीन भे लहुरे निरतन लाल । रूप काम सम काम
तर दाता दोन दयाल ॥ ४ ॥

End.—दो०—सात सोल के रुधिर को पिवत त्रिपित बैताल । उन
दोन्हों बसु सिद्ध तब पाद हरष भुपाल । इति श्री गर्गवंश अवतंस नीरतनलाल
कृता वेताल पचोसी ग्रंथे पंचविंशोऽध्याय ॥ २५ संमत १८९४ समै पापमासे
वृष्णपक्षे त्रये दसो गुरुवासरे समाप्तम् ॥

दो०—पुर बड़ावनों पतिरुचिर उदवंतसौंध जहं भूप । तहां बसत सेवक
पतिधि सुख सुत परम धनूप । यह दसखत सोई लिख्यो सुमिरि राम सुख
मूल । उत्तर दिसि गोमति निकट सी दक्षिने कूल ॥ श्रीराम इति

Subject.—कविवंश बलेन

राजा का जोगी से मिलन राजमय और वेश्याओं का भेजना, योग मंग
हाना, राजा से बातचीत, विक्रम का तेलिया को मारना, योगी का कर्म

तेली को लाश का कथा कहना, पद्मावती की कथा बलेन

मंदरावती की कथा

बोरवल की कथा

सुरसुंदरी कन्या की कथा

श्रीदत्त और जैश्री की कथा

हरिदास की कथा, रजक की कथा, त्रिभुवन सुंदरी की कथा, बोरमदेव
की कथा, सोमदत्त की कथा, सुकुमारियों की कथा, बल्लभदेव की कथा,
लावण्यवती की कथा, सुखोमिनी की कथा, शशिप्रभा की कथा, जीमूत वाहन
की कथा, उन्मादिनी की कथा, विप्रगुनाकर की कथा, धनवती की कथा,
रूपसेन राजा और विप्रकन्या की कथा, रूपमेजरी की कथा, ब्राह्मण के चार
पुत्रों और विप्रनारायण की कथा, हरिदत्त की कथा, चंद्रावती की कथा ।

No. 267. Chhanda Chhappani, by Mani Rāma Miśra.
Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—8×5
inches. Lines per page—17. Extent—220 Anuṣṭup Śloka.
Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1829 or
A.D. 1872. Place of deposit—Rāmadeoji Brahma Bhaṭṭa,
Village Nunara, Mauzā Lamhā, District Sultānpore (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छन्द छप्पनो लिख्यते मिश्र मनो-
राम कृत । छन्द मालती सवेया । कै परनाम फनीसुर कै मन चाट सरूप लगे
लहि गाऊं ।

मगन तोनि गुरु (५५) लघुनग्न (॥) मगन चादि ग० ५॥० पो लघु
०५५ लाऊं ॥

जगन वोच गु० ॥५० रगन लोकहि ०५५० सगन गो० ॥५० लघु तगन
०५५० पाऊं ।

चारि भले मनिराम मया मन ४ की रस तो ४ नहिनी कवताउ ॥ १ ॥

अथ मगनादि रूप वाम देवता फल कथनं । छन्द रंगोदक धर्वा कवली ॥
यथा ॥ तोनि गो मो धरा श्री मनोराम ला चांद पो अबुदे वृद्धि कै मानिये ।
वोच लारो सुनौ बहि है मोच को अंत जोसा वयारी सम जानिये ॥ अंत छैं तो
सु आकास सुने फले मध्यगा जारवो रोग को दानिये ॥ चादि गो मो शशी
कोर्ति को देला तोनि वानाम चानंद को दानिये ।

End.—२ स चाँट सै उनेवीस फागुन मास ते स चंद को । कहि छन्द को
यह छप्पनो कवि छप्पनो चानन्द को ॥ इति श्री खेवाराणा मिश्र कात्यायनी
इक्षाराम तनय मनोरामवर्न कला विरचिता छन्द छप्पनो समाप्ता शुभ मन्त्रु ॥
लिखितं दुबे शालिग्राम ।

Subject.—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—गण भेद, गण फलाफल तथा देवता,
गुरु लघु लक्षण, गुरु लघु संज्ञा छंदोभंग, दम्वाक्षर

(२) पृ० ६ से पृ० २४ तक—वर्गवृत्त वर्णन ।

(३) पृ० २४ से पृ० ३० तक—मात्रावृत्त वर्णन ।

No. 268. Śālihotra, by Mani Rāma Śukla. Substance—
Country-made paper. Leaves—18. Size—10 × 6 inches.
Lines per page—44. Extent—495 Anuṣṭup Ślokaś.
Appearance old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—
Samvat 1935 or A.D. 1878. Place of deposit—Mannū Miśra,
Village Nilagāon, Post Office Nilāgaon, District Sitāpur
(Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शालहोत्र लिख्यते ॥ दे० । जे जे जे
जम नवन रवि करौ कमल के बंधु । करो कह केसरो करुना मुरति सिंधु ॥ १ ॥
बिनतो मैं कर जोरि कै करीं परीं सिर नाइ । वसौ सदा मम हृदय मह बानो

होहु सहाइ । २ बिघन विदारन विपति के संपति के सुष दाय । मनोराम बिनती
करै चरन कमल सिर नाइ । पढ़त हृदय महु ज्ञान घन सुनत होत चित मोइ ।
मनोराम कहु करत है भाषा बाजि विनोद । प्रधादौ तुरंग नाम उपलब्धन माइ ॥
सवैया ॥ जेहि घस्य के रोच ललाट के ऊपर भंवरो बराबरि जानि बहावहु ।
साकह मेड़नि सिंगो कहैं घर पायहु तौ जब राज नसावहु । कोरति हानि करै
कुल ध्वंस नहौ कबहु सुरि जंग धसावहु । पूछै कोऊ कबहु कवि ते मनोराम
तहाँ ततकाल बतावहु ॥ जा बाजो के होत है परो चरन में दोइ । अपने स्वामो
को करै नाश प्रान को सोइ ।

End.—अथ तुरंगानांगति वरन । दोहा ॥ आवु जंगला जानिय टांघन
मैरौ गूड़ । आवु तुरंगी जानिय जंगला ताजो उड़ । पाखतो टांघन कसो गूड़
जराई होइ । देखो जुगला जानिय संकर वरनो सोइ । चौ० । पचर संकर वरनो
जानु । तैसा गोरौ गदहा मानि । दो० । प्रथम चाल सहगाम जो तेज गाम है
जुक । गाम गाम है तीसरी मढ़वाल् घति मुक्त । पाँचवा पंचई जानिये पर मा
छुई होइ । रव को सतई कहत हैं जानत है सब कोइ ॥ जवन देस के नाम ये
चानु बही ये सात । सालिहोत्र ते समृद्धि के भौर कहत हाँ पात । प्रथम मयूरो
नाकुश, दृजो तैतिरि तोनि । चौथा कहत कुरंग को पंचई कहत है चोनि । उष्ट्रो
मंया क्षाग को छठहो सतहो होइ । भौर मंडूको कहत गति घदि को जानौ सोइ ।
गति येती वरतन करी भालहोत्र मति पाइ । घति आदर कवि जन करे मनोराम
गुन भाव । सालिहोत्रानुमते शुक्ल मनोराम कृत पकादश विनोद ११ समाप्त
शुभपस्तु श्री संवत् १९३५ शके ॥ शके १८०० आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथी सप्तम
शनि वासर लिपितम् भोजानाथ पंडित ॥

Subject.—घोड़ों के भेद, उनके लक्षण और रोगों की औषधियाँ ।

No. 269. *Saguna Parikshā*, by Manī Rama of Kāṇṭhā.
Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—6 × 4½
inches. Lines per page—10. Extent—400 Anuṣṭup Ślokaś.
Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date
of Composition—Samvat 1814 or A.D. 1757. Date of
Manuscript—Samvat 1814 or A.D. 1757. Place of deposit
—Pāṇḍita Yāśodānandana Tiwārī, Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—कौ चोरु मरी घई ॥ कौ मरी सुत पेई । पथव घागो पनो
बपरो चले जा पुरव बतौ ॥ सनीचर के घरे बुधवार भावै ॥ सुभ होइ ॥ तौ भलो
खबर ले भावै कोई ॥ कौतन्हे के बेट होई ॥ जोब लाभु है ॥ रांगु टापरा जो

विगरे तौ नन्हें के बेट मरे ॥ को गत घरी सुनोये । को नन्हें को फोरी पादो आवै ।
वांगरे तौ कौडनी जारिक जुना कारो ॥ × × ×

End.—पंजो मोदास बोलई । देवान दास बोलई । १ सकाल बरब हाई ।
१ लमकुर न लहाई । २—लक्ष्मी आगम बतवहा । २ सरथ हनाक होइ ।
३ मीरन भोजन लया ३ कल बुच होइ । ४—चौत उपजावै । असबो मालप
होइ । ने इसो केने बोलई । घररे वो कोने बोले । १—मोत्रा दरसन होइ १
मनुषी यागाक देखे । २ सुख संतोष होइ २ चार आग्नि मई ३ पहुना आवई ३
राज पूर रद होइ । ४ सरथल मवारक हई । ४ घर मगोना मई । × ×

Subject.—ज्योतिष पर ग्रहों के संयोग से फल तथा शकुन परीक्षा ।

No. 270. Saundarya Laharī, by Maniyāra Simha of Kāśī.
Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—9. Extent—466. Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1843 or A.D. 1786. Place of Deposit—Thakura Naunihāla Simha Sengara, Village Kānphā, District Unāo.

Beginning.—श्री गणेशाय नमः ॥ पथ मंगलार्थे गणपतिम् प्रार्थयेत् । जोस्यै
जा त्रिपुर को रूपहर हरा हरा गर्वै रुचंदान बदराज को । कलौ बलि बली हली
चनुज कमल कलौ प्रभव प्रभाव भौ विभव भव साज को ॥ सिद्ध मनियार महि
मेहन प्रसेस सेस सोस घरौ कछो सिद्धि सिद्ध मुक्ति काव को । पाये देवता
नर समीप बदरान मुद मंगल विधान ध्यान गणाधिराज को ॥ १

मंगलार्थे भवानो शंकरो वंदे—शिवे शिवजाति की उद्देति को करनि
हाति तेरी कृपा दृष्टि सृष्टि रचना रचाय जाय । तो विनु सो सुमंत्र गुमते रांहत
यातें प्रार कहाँ होत तातें बातें न कहाय जाय । मनियार ताहि जपि प्रभा पालना
प्रलय करत त्रिदेव मेव तेरो न जनाय जाय । पुन्य कोन नति मति मेरे मंद प्रति
भव के सकै प्रनति कैसे गुन गति गाय जाय ॥ २

पथ श्री भवानोचरण रेखुका वस्यति—तेरे पद पंकज पराग राजे राजेश्वरी
वेद बंदनोय बिहदाबली बड़ी रहै । जाको किनुकाइ पाइ धाता ने धरत्रि कियो
जार्मि लाक लोकनि की रचना कड़ी रहै ॥ मनियार ताहि बिष्णु सेवै सर्व पोषण
सो होस है के सदा सोस सहस मंडो रहै । सोई सुरासुर के सिराभनि सदाशिव
के भसम के रूप है सरोरनि बड़ी रहै ॥ ३

End.—पथ श्री भवानो संशोवनामे वस्यति—निधे निधि सद्ने जै नित्य
स्मित बदने निरवधि गुन जै नीत निर्मल निधाने हैं । निःस्पृहे निजानंद निर्मरे

निरामये जै निरज नयनिनि सिनि राधात म्याने हैं ॥ मनियार निर्गत वचन निगम्य
निगमा गमामि मिबंदते निखिल सिद्धि दाने हैं । नित्ये निरात के निराकारे निर्वि-
कल्प जैति निश्चल निशंके निष्कलंके निष्प्रमाने हैं । १०१

अथ श्री भवानी विलसो कृत्वा स्तुति श्रवयति—जैसे वारि दीप दीप दीप को
प्रकास कर भासकर मेहल को चारतो ठनत है । बरसै मनंद समी बुंद चहुं चंद
ताहि मंजुलि जलनि अथै रचना गनत हैं ॥ सिंह मनियार भंवरासि ते निकासि
वारि वाहि सरपत निज भावना भनत हैं । तैसे जग जननी तिहारो वचनन हो तें
वचन रचन को बढ़ाई बरनत है ॥ १०२ ॥

अथ पुस्तकं पुरैषति—रुद्रनै सहित समुद्र वसु चन्द्रजुत संवत सुहात सुद्ध
सर्व सुख खानी को ।

जैठ तिथि पुरन संपुरन दिनेस दिन महिमा बखानी सर्व सिद्धि फलदानी को ॥
सामसिंह सुत मनियार सिंह नाम कासी नगर निवासो विश्वनाथ राजधानी को ।
कामना कल्पतठ फरो भरो वैभव ते ग्रंथ बखतरो श्री भवानी राज रानी को ॥ १०३ ॥

इति श्री मनियार सिंह विरचितायां सौंदर्य लहरो टीकार्या कवित्त निबंधे
भाषायां संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ शिव भवानी देहरा—सुंदरता लहरो भरो
सकल सुखन की खानि । पढ़त सुनत तगिहैं सदा श्री विद्या बरदानि ॥ १

श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ इति ॥

Subject.—

गणपति वन्दना, भवानो शंकरौ वंदना, भवानो चरण रेणु वणन, चतुर्वर्ण
फल साधनार्थ भवानो वणन, सब देवताओं के फलार्थ चरण वंदना, मोहार्थ
भवानो वंदना, कृपादृष्टि वणन, ध्यान वणन—छंद १ से ७ तक ।

मंदिर भवानी का वणन, अथक ध्यान रूपक वणन, कुंडली निष्कया ध्यान,
चकोटारं जंत्रराज वणन, सौंदर्य वणन, कृपाकटाक्ष वणन, मातृका व्यास कला
भेद वणन, सरस्वती रूप वणन, ललिता स्वरूपा ध्यान, कविता प्रदानार्थ ध्यान
वणन, छंद ८ से १७ तक ।

निर्वाण, गणिका वशीकरण ध्यान, श्रव्यनारोखर, सर्पादि विष निवारणार्थ
ध्यान, परमोदारता वणन, योग नम्य ध्यान, सौर प्रभाव वणन छंद १८—२४ तक
भवानी चरण पीठ पूजा वणन, महा प्रलय समय में एकांतस्थली वणन, कर्म
भक्ति भावे पूजा विधान, चरण कमल में क्षमर रूप मन का निवेदन, भवानो
अखंड सौभाग्य वणन, वैभव वणन, तंत्रराज प्रभाव कथन, मंत्र धारण कथन,
भवानी शंकर एक रूप वणन छंद २५—३४ तक ।

जगदात्मा रूप वर्णन, आयां चक्र भवानो शंकर वर्णन, विगुह चक्र देह में वर्णन, अनाहत चक्र में सब देह के भीतर दोनों का ध्यान, स्वाधिप्यान चक्र में वर्णन, मनिपुर चक्र देह में वर्णन, मूलाधारे चक्र देह में वर्णन, षट् चक्र भवानो शिख नख ध्यान वर्णन । कुंद ३५—४२ तक ।

केश पाश वर्णन, मांग, अलकों का अग्र भाग, ललाट, भौहें, नेत्र, और तीनों नेत्रों का वर्णन कुंद ४३ से ५१ तक ।

ह्रैनेत्र वर्णन, फिर नेत्रों का विस्तृत वर्णन, भवानो की कृपा दृष्टि वर्णन, दृष्टि वर्णन, कर्ण भूषण वर्णन, दोनों कानों का वर्णन, नासिका और ओष्ठों का वर्णन कुं० ५२—६२ तक ।

दांत वर्णन, महाप्रसाद वर्णन, बाणो चिबुक, मोया, कंठरेखा बाहु चतुष्टय, कराग्रभाग और स्तन मंडल का वर्णन, क्षीर धारा का वर्णन, त्रिवली वर्णन, रोमावलि, नाभि मंडल, कटि प्रदेश, नितंब, युगल उर, जंघ व दोनों चरणाविंद का वर्णन, कुंद ६३ से ८५ तक ।

नमस्कारार्थ चरणाविंद वर्णन, पद पीठ वर्णन, चरण नख वर्णन, चरणोदक कथन, भवानो की गति वर्णन, समस्त नखशिख ध्यान वर्णन, पर्यंक वर्णन, पान पात्र वर्णन, ध्यान वर्णन, प्रभाव वर्णन, पतिव्रत वर्णन कुंद ८६ से ९८ तक ।

सर्वोपर तुरीय रूप वर्णन, भजन फल वर्णन, नाम संबोधन फल, स्तुति वर्णन, पुस्तक संपूर्ण रचयिता का ध्यान, संवत्, वंश परिचय वर्णन शिव भवानो का दोहा वर्णन कुंद ९९—१०४ तक इति ।

No. 271. Dharma Parīkṣhā, by Manōhara Dāsa Kham-
delawāla of Dharmapura. Substance—Country-made paper.
Leaves—220. Size— $18\frac{1}{2} \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—11.
Extent—3,327 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Charac-
ter—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1705 or A.D.
1748. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place
of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Ondh).

Beginning.—**योग नमः सिद्धेभ्यः ।** अथ धर्म-परीक्षा भाषा मनोहरदास कृत
लिख्यते ॥ सारठा ॥ प्रथमो अग्रिहंत देव । गुरनि ग्रंथ दया धरम । भव दधि तारण
पथ ॥ अवर सकल मिथ्यात भणि ॥ १ । अग्रिहंत देव स्वरूप, जो नर जानि हमण
धरै ॥ सो नर मुक्ति अनूप ॥ बैर बेगि पंडित कहै ॥ २ । गुरनि ग्रंथ ग्रहंत । जो नरपद
पंकज नमै । सो नर करम दहंत ॥ मन बच कम संसो नहौं ॥ ३ ॥ जोय दया धर्म सार ।
द्वार धर्म दुर्गति धरण । यह विन करनो झार । विविधि विवध पर सो करै ॥ ४

देहाद्य ॥ देव गुरु सुचर्म वन्दिके जिन उपदेश कहंत । पढ़त सुगत उपजै सुबुधि ।
अनुक्रम मुक्ति लहंत ॥ ५ ॥ होनहार कारन मिथ्या । होरामनि उपदेश । कारन
विना न मय्य जन काज न है लवलेख ॥ ६ ॥ पंच सकल प्रेरक भये जानहुं मन बच
काय । सत्य पुरुष गणा भई श्री जिनराज सहाय । x x

End.—जानिबंत वही कुलवंत वही सोलवंत वही वृत्तधारो हो वही के वचन
मुसति है । वही धनधारो वही तपनो विवेक कारो वही भवतारी वही जगत को
पति है ॥ वही ब्रह्मचारो वही कौराति को अधिकारो वही सत वही शुद्धमती है ।
बाको बराबरिन कोऊ है जगत माहि ताको उर निरमल सुभग समकित है ॥ ५८ ॥
सकल समा धर्म सुन्यो विचार । मन में दुख पायो अधिकार ॥ पवन वेगि सुधि
करके दिया । श्रावक के वृत्त मन बच लिया ॥ ५९ ॥ भयो हर्ष पति संगन माहि ।
कहै मनोहर मन बच काय ॥ पवन वेगि जिन मारग भयो । झांझो मिथ्या सम-
कित लयो ॥ ६० ॥ भकहि लागै शुभ वचन प्रमथ्या नहीं सुहाइ । मृगन सोभे कोउ
ह सो मन कास जलाय ॥ ६१ ॥ रार सोखहु कहत हैं सो तुम कोजै याद । धत
फुरेगो माहिलो ऊपर सब बादि ॥ ६२ ॥ साराठा ॥ घाफट उमन हजार । बांभल
झांझि मिथ्यात्व को । भये सरावन सार मन बच काया शुद्ध करि ॥ ६२ x x

इति श्री चर्मपरोक्षा भाषा मनोहर दास खंडेलवाल कृतं सम्पूर्णं ॥ कंद
संख्या ३३०० मितो श्रावण वदो ७ संवत् १८७० पोथी लिखो जवाहिर सोभाचंद
के बेटे ॥

Subject.—पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण तथा वन्दनाएं ग्रंथ निर्माण
काल—सबह सै पंचात्तर, पौष दसै गुरुवार । शुभ वेला ग्रह शुभ लगन किया
महूरतसार ।

कवि वंशादि परिचय :—

कविता मनोहर खंडेलवाल सोनी जाति मूल सोनी मूल जाकी सागानेर वास
है । करम के उदैते धामपुर बसन भयो सबसो मिलाप पुनि सजन को दास है ।
व्याकरण कंद चलंकार कछु जाने नाहि भाषा में निपुन तुच्छ बुद्धि को प्रकाश है ।
बाई दाहनो न कछु समझे संतोष लिये जिनको दोहो ईजा एक जिनजो को
वास है । सजन तथा बुजन के लक्षण । मनोश्वर धर्म वखेन । वैजयंती नगरी को
शुभ शोभा का वर्णन । विद्याधर के वैभववादि के वर्णन के साथ उसके सुशोपत्ति ।
प्रियापुरी नगरी के राजा पवनवेग के वृत्ति कारि का होना, पवनवेग का वन में
जाना और वहां पर मनोवेग से मुलाकात होना । दोनों मिथों में पवनवेग का
मिथ्यातो होना और मनोवेग का उसके सुमार्ग में लाने का उद्योग । पवनवेग
का कारण बश अपने घर जाना और चिलम्ब हो जाना । मनोवेग का पढ़ाई
क्षोप में जिन पूजा करना ।

(२) पृ० १३ से पृ० २६ तक—ब्रह्मा में जीव संबंधी वादानुवाद सखदुख-विवेचन । जैन धर्म संबंधी अनेक सिद्धांतों का वर्णन । सम्यक् दृष्टि तथा मिथ्यात्व का भेद निरूपण, मोक्ष का वर्णन, अनेक प्रकार के धर्मोपदेश सुनकर मनोवेग का अपने मित्र के संबंध में भव्यामय का विचार कराना, मुनि द्वारा उसको परितोष देना और बताना कि यदि तू पुष्पपुर (पटने) में जाकर उसे धर्मोपदेश करेगा तो उसे सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा । मनोवेग का अपने घर जाना ।

(३) पृ० २७ से पृ० ३६ तक—दोनों मित्रों का सम्मेलन तथा पटना पहुँचना, पटने की शोभा और वशिष्ठ बालमौक्तिक के अनुवायियों की सभा, मनोवेग का अपने बहुमुख्य मणियों के मुकुट पर तृण और वटकर रख कर वाद समा में पहुँच जाना और वहाँ रखे हुए ढोल को बड़े जोर के साथ बजा देना और सिंहासनावृद्ध हो कर निश्चित बैठना । ब्राह्मणों का आश्चर्य विप्रों का सिंहासन पर बैठने का निषेध और मनोवेग का उतर पड़ना ।

(४) पृ० ३७ से पृ० ५२ तक—ब्राह्मणों से वाद करते हुए मनोवेग 'षोडश मुद्रों' न्याय की व्याख्या करना, उसकी न्याय संबंधी कुछ उक्तियाँ । मनुष्य और तिर्यच का भेद । मूर्ख निन्दन, दस प्रकार के मूर्खों की व्याख्या के लिये दश कथाएँ । रक्त पुरुष की कथा, मायाविनी स्त्री का चरित्र चित्रण और कामो पुरुष की दशा का दिग्दर्शन ।

(५) पृ० ५३ से पृ० ५७ तक—दुष्ट पुरुष की कथा दुष्ट चित्त मनुष्यों की पराई सम्पत्ति न देख सकने वाली कुबुद्धि और हित वचन को छोड़ कर विपरीतता को ग्रहण करने वाले दुष्टों की दशा ।

(६) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—मूढ़ पुरुष की कथा ।

(७) पृ० ६५ से पृ० ६६ तक—क्षुद्र घाटी मूढ़ की कथा ।

(८) पृ० ६७ से पृ० ८० तक—पित्त दूषित मूढ़ पुरुष की कथा, आस्र मूढ़ की कथा, क्षौर मूढ़ की कथा ।

(९) पृ० ८१ से पृ० १०२ तक—अगुरु मूढ़ की कथा, चन्दन त्यागी मूढ़ की कथा, चार मूर्खों की कथा । चारों मूर्खों की अन्तर्गत कथाएँ ।

(१०) पृ० १०३ से पृ० ११० तक—ब्राह्मणों का मनोवेग की बातों की अवहेलना करना, पुनः उसका पुंडरीक की कथा सुना कर एक दोष से सब गुण नष्ट होने का कथन करना, राम कृष्णदि अवतारों में दोषोद्भावना, ब्राह्मणों का हार मान लेना और निर्दोष देव के खोजने का अभिवचन देना । इस प्रकार पवनवेग का लौकिक सामान्य देव का विचार पूर्वक सुना कर संशय दूर करने के लिये छः कालों की कथा कम वर्णन सुनाना । वलि की सभी कथा

सुनाना । हिन्दू पुराणों का पूर्व विरोध से भरे हुए बताना, अन्य स्नान में व्याघ्र का हृष्य धारण कर के और अपने मित्र को मार्जार का स्वरूप देकर ब्राह्मणों से विवाद करना, और वस्तु का सत्यार्थ स्वरूप कथन करने का विचार प्रगट करना ।

(११) पृ० १११ से पृ० १२७ तक—ब्राह्मणों को मंडप कैशिक नाम के तपस्वी की कथा, उस तपस्वी का एक विधवा स्त्री से विवाह करके उससे एक अनन्य रूपा पुत्रो उत्पन्न कर सपत्नीक तीर्थ पर्यटन को जाना और शिव, इंद्रादि अन्य देवता तथा मनुष्यादि में किसी का भी विश्वास न करके यमदेव को सौंप कर चला जाना, यम का उस कन्या में अनुरक्त होना, पुनः अग्नि का भी उस पर मोहित होना, यम का छाया को अपने उदर में धारण करना और एक दिन संयोग वश यम के स्नान जाते समय पवन के साथ सम्मोग कर के छाया का उसे उदरस्थ कर लेना, ब्रह्मादि द्वारा अग्नि को खोज, पवन का उद्योग ।

(१२) पृ० १२८ से पृ० १३६ तक—पुराणों में से हो दोषों की कल्पना कर ब्राह्मणों की उन पर पश्चदा कराना, जिन धर्मानुसार रुद्रादि वर्णन मनेवेग का नम्र मुनि का हृष्य धारण करके तीसरी वाटशाला में जाना, ब्राह्मणों का विवाद के लिये उपस्थित होना मनेवेग को प्रस्तावना ।

(१३) पृ० १३७ से पृ० १५० तक—अर्जुन के गाँदोंव धनुष द्वारा पाताल छेद कर दश कोटि सेना सहित फणोद का निकाल लेना, कुम्भज का समुद्र शोषण, राम का सौता को खोजना इत्यादि को असंभव और तुच्छ बता कर वैष्णव धर्म का खंडन किया जाना, समस्त पुराणों का पूर्वापर विरोधों से भरा हुआ बतलाना ।

(१४) पृ० १५१ से पृ० १५६ तक—मनेवेग का ऋषि वैष धारण कर अन्य वाटशालाओं में जाना । पनस अलिग्न से पनस फल को उत्पत्ति और उसी से एक सौ पाँडवों का उत्पन्न होना, सुभद्रा की चक्राव्यूह संबंधी कथा । 'यम' नामा मुनि को लंगाटी का तालाब में घेरना और उसके मल को बुन्द पीने पर मेढको के गर्भ स्थिति की कथा, उस बालिका का भी पिता की लंगाटी के बीच गर्भ रहना, इन बातों से पुराणों में अनर्गल बातें दिखाना, व्यासेत्यभि रघुराजा को कन्या के गर्भ स्थापन की कथा ।

(१५) पृ० १५७ से पृ० १८० तक—वैदिक ब्राह्मणों को निरुत्तर कर, जैन मतानुसार कण्व राजा की उत्पत्ति की सच्ची कथा सुनाना, पाँचवे द्वार से पटना में प्रवेश कर मनेवेग का अन्य वाट-शाला में पहुँचना, रामायण संबंधी कुछ पाक्षेप, राक्षस और वानर वंशों की मोमांसा छठवें द्वार से प्रवेश कर अन्य वाट-

शाला में 'दधिमुख' बसने तथा रावण द्वारा शंख के किये गये दो टुकड़ों का हनुमान द्वारा जोड़ा जाना, इत्यादि कथाओं को संसमय सिद्ध करना ।

(१६) पृ० १८१ से १८८ तक—वेदी के अपौरुषेय होना में संदेह, यज्ञ का निषेध, दीक्षादि अन्य कार्यों का निषेध, श्राद्ध इत्यादि पर आक्षेप ।

(१७) पृ० १८९ से पृ० २०२ तक—अन्यमतों की दुष्टता श्रवण कर उनके प्रचार का कारण पवनवेग द्वारा पूछा जाना (सही कालों के इतिहास का सूक्ष्म वर्णन) ।

(१८) पृ० २०३ से पृ० २०५ तक—दोनों मित्रों का जिनमति नामा मुनि के पास बैठना, और मुनि का स्वयं उसका परिचय दे देना, तथा उसके मिथ्यात्व दूर हो जाने का कथन करना ।

(१९) पृ० २०७ से पृ० २१० तक—मुनि द्वारा श्रावकाचार में पांच षण्वत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षा व्रत इस प्रकार बारह व्रतों के ग्रहण का वर्णन ।

(२०) पृ० २११ से पृ० २१७ तक—द्वादश व्रतों के अतिरिक्त द्वा. भी कई प्रकार के नियम श्रावकों को भक्ति पूर्वक पालने का आदेश तथा वर्णन, श्राद्ध प्रतिमाओं का वर्णन, सम्यक्त की विशदता का वर्णन, पवनवेग के जैनवत धारण से मनोवेग का प्रसङ्ग होना ।

(२१) पृ० २१८ से पृ० २२० तक—ब्राह्मणों का श्रावक होजाना, मूलधर्म-कार का परिचयः—

मुनि अभिमत गति जान सहस्र छत पूरव कहौ । यामें बुद्धि प्रमान भाषा कोनो जोरिके । काल—बिक्रम राजा कूं भये सत अधिक सुहजार । वर्ष तवै यह संसकृत भई कथा सुम सार ।

ग्रंथकार के निवास स्थान तथा वहां के निवासियों के विषय में कुछ कथनः—देस दादुरो परबत तलो । तहां घामपुर सोमा मलो । × × × तहां सरावण नौके सुखो । करम उदै काई है दुखो ॥ × × × तिन मंचि परचै दरबि पासु जेठो साह । लेहि धन लाह ॥

दुर्जेत कोई धरिन धरै । करमन तैं सोई विधिकरै ।

धनो बात को करै बड़ाइ । नगर सेठि है मन बच काइ ।

दाहा—जेठ मल्ल सुत विचोचंद दाता दोन दयाल ।

सज्जन भगता गुण अधिक दुर्जेत छातो माल ॥

×

×

×

×

बनारसी जेठ मति सागर प्रथी प्रसिद्ध कोटिन को धनो ताको पाप उदै धायो धो । सदन सो निकसि अजोष्या को गमन कियो अजोष्या के सेठि बहु उद्यम करायो धो ॥ अपनो बराबरि करि नाना भांति सेतो दैकरि बड़ाई निज धानक बनायो धो । ऐसे हम अस्व साह सवै निज बाह दै कै कहै मनोहर हम पुन्य जोग पायो धो ॥

दो०—साँतै पहुँचै सुभगती याजे सुभग वजाय । विधोचंद सुख भोगवै धर्म ध्यान चित लाइ ॥

होरामनि उपदेश ते भयो शास्त्र शुभ सार । दुष्ट लोग कोऊ मति हसौ दिगदै धरिनु विकार ॥ रावत सालि बाहुन आगरे को बुधिवंत दिगदै सरल तिन ज्ञान रस पोयो है । जगदस मिश्र गौड हिसार को वासो सुभ विद्यावल जग में सार अस लोयो है । वेगराज पंडित बाब्रण भांदि जोतिष को पाठो सरस्वती घर दियो है । इतने सहायक भए दोहो जिन राज जु को तब ते विचार करि भाषा बुद्धि कियो है ।

Note.—यह 'धर्म परोक्षा' नामक ग्रंथ सेनो जाति के खंडेलवाल वैश्य 'मनोहर दास जी' की रचना है । यह मूल निवासो सांगानेर के थे और पोछे धामपुर में आकर रहने लगे और वहाँ उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की । यह मुख्य ग्रंथ संस्कृत में है और उसके रचयिता हैं मुनि 'अमित गति' इसकी रचना उन्होंने (विक्रम राजा है के भए सत अष्टिक सुहजार) १००७ वि० में की । कहा जाता है कि इस अनुवाद के अतिरिक्त इस ग्रंथ के तीन अनुवाद और भी हुए हैं—एक गद्यानुवाद जयपुर के चौधरी प्रसन्नलाल जी ने किया है, एक मराठी में श्रीकृष्ण नन्दराय जोशी ने किया है । और तीसरा गद्यानुवाद पञ्चालाल जी बाकलीवाल ने प्रचलित गद्य में किया है—इन महाशय ने भूमिका में प्रस्तुत ग्रंथ के संबंध में अपनी सम्मति दी है कि इसमें मनोहर दास जी ने अनुवाद करने में पूर्ण स्वतंत्रता से कार्य लिवा है और कहीं कहीं अपने और से भी घटा बढ़ा दिया है । ग्रंथ के अन्त में अनुवादक ने अपने मित्रों तथा सहायकों की भी एक सूची उपस्थित की है । जो यथा स्थान उद्धृत कर दो गई हैं । कविता साधारण श्रेणी की है । पञ्चालाल जी बाकलीवाल ने मूल संस्कृत ग्रंथ का निर्माण काल—१०७० वि० बताया है—जाँ हो, इस ग्रंथ के अन्तिम पृष्ठ पर दिये हुए पद्यांश से तो १००७ ही प्रगट होता है । सम्वत् १८७० वि० में श्यामलालात्मज 'जवाहर' नाम के किसी व्यक्ति ने इसे लिखा है । इति

No. 272(a) Jñāna Mañjarī, by Manohara Dāsa Nirāñjanī.
Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—18×7½

inches. Lines per page—17. Extent—413 Anushtup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1716 or A.D. 1659 Place of deposit—Thakura Nannihala Simha Senḡara, Kānḡha, Unāo.

Beginning.—श्री परमगुरुभ्योनमः अथ ज्ञान मंत्रो लिख्यते । दोहा ।
 आत्म के प्रज्ञान ते सबै उपजे जाण । ज्ञान भये ते लोन सब नमस्कार तेहि
 मान ॥ १ ॥ कवित्त ॥ प्रथम मुक्त कहि दूसरै मुमुक्षु सोई । तीसरो विपई चौथो
 पामर विचारो है । चार पुरुष संसार माझ कहै निरधार बंधन मुक्त द्वार
 मुक्त तो न्यारो है । बंधन ते छूट्यो चाहै मुक्त को जो उमा है । सोई तो
 मुमुक्षु चाहै मोक्ष निरधारो है ॥ भोग विषै सुख चाहै सोई तो विपई कहा है
 पामर सो पेट भरि मेहरा पियारो है ॥ २ ॥ प्रश्न दोहा ॥ वेद धामना कौन परि
 हम सो कहि सो भाष । बधा अर्थ है वेद को गोप कछु जिन राष ॥ ३ ॥ उत्तर ॥
 वेद सबै प्रकांड है कर्म उपासना ज्ञान । मुक्त परि कौउ कांड नहि सोहै ब्रह्म-
 मान ॥ ४ ॥ विपई परि नहि धामना । भोग को साधन नाहि । नासवंत सब भोग
 है । भूई सुषता माहि । तापर्य सब वेद वा एक मोक्ष परि जानु । भोग है
 लोक प्रलोक के तापरि नाहि ब्रपान ।

End.—गमाझ वा जो जिय ॥ १५ ॥ संवत सग्रह सै महो वर्ष सोरहे
 माहि । बैसाख मासे शुक्ल पक्ष तिथि पुनो है ताहि ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ भाषा ग्रंथ
 कहि यह सबै बैपरो बाक है । परापदंति जेह मधिमा पोछे पाइय । १७ ॥ कवित्त ॥
 अपौरुषो बानी वेद । अद्वैत है ब्रह्म जामे । द्वैत तामे भेद नाहो । एक रूप सब है ॥
 ताके है स्वरूप परापदंति है मध्यमा सो । बैपरो प्रतस्त रूप चारि वेद जय है ॥ तामे
 है सो काम तोन कर्म उपासना सोई ॥ ज्ञान कांडनी जो ज्ञान धारण को ठव है ।
 रिषि बानी लिये ज्ञान तेई तो अहै प्रमान ज्ञान लिये न बानी भेद कहा कब है ॥ १८ ॥
 दोहा ॥ त्वं पद देव त्रिज करिष ॥ नर किनर सब जान नत पद ईदवर देव सब ।
 त्वंतत्तत् त्वंममान ॥ १ ॥ मनोहरदास निरंजनो ॥ सो स्वामी सो दास स्वामी
 दास भयो एक सो महाकाश घटा काश ॥ १४०० ॥ इति श्री ज्ञानमंत्रो नाम
 भाषा ग्रंथ कथनं । पूर्ण समाप्तम् ॥ शुभं ॥

Subject.—वेदांत विषयक कर्म, उपासना, ज्ञान तरीके का वर्णन पृ० १
 उत्तम मुक्षु, मध्यम मुक्षु मंद मुक्षु का वर्णन—पृ० २
 जानो की श्रेष्ठता का वर्णन पृ० २—३

आत्मा की नित्यता, विविध आसनाओं का त्याग और उसकी अनित्यता
 का वर्णन प्रकृति वाक्य और वेदांत वाक्य का वर्णन अहंब्रह्म, तत्त्वमसि वाक्य
 का वर्णन पृ० ४—५

प्रकृति वाक्य का वर्णन, जीव, यज्ञ के एकत्व से मोक्ष का वर्णन, वैराग्य, विवेक पर संपत्ति और मोक्ष को इच्छा को साधना का वर्णन पृ० ५—६

अभ्यास का महत्व और उसका वर्णन, अभ्यास का दृष्टांत, शरावता का दृष्टांत, अर्थवाद उत्पत्ति, सिद्धान्त, संप्रज्ञात समाधि, असंप्रज्ञात समाधि, समाधि के पर भेद पृ० ६—१७

विकल्प अधिकल्प भेद, हृदय के तीन प्रकार, बाहर के तीन प्रकार पृ० १७—१९

समाधि का फल, वृत्ति का वर्णन, तीन प्रकार की वृत्तियाँ । अजहृत जहृत और जहृत अजहृत लक्षण का वर्णन । पृ० १९—२३

No. 272(b) Jñāna Vachana Chōrnikā, by Manōhara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—13×6½ inches. Lines per page—17. Extent—488 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thakura Nannihāla Sīmha Seṅgara, Kānṭhā, Unāo.

Beginning.—अथ ज्ञान वचन चूर्णिका लिख्यते ॥ दाहा ॥ रवि गुर दोष सम तुल्य पूज्य है तम अज्ञान करै दूरि । जग उर में प्रकास करि बंदन को निज-मूरि ॥ १ ॥ जीवेश्वर चैतन्य में कहिय है हैनाम ॥ सर्वम्यता अल्पम्यपुनि संसारो सुख धाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कह्यो जीव । संसारो ताते भयो रहित भयो सोई सोव ॥ ३ ॥ जीवेश्वर द्वे जगत में प्रगट कहै सब कोव । बाह्य दृष्टि विवेक विन अंतर दृष्टि न होय ॥ ४ ॥ वचनका । एक चैतन्य में अज्ञानो वास्तव मानै । जीव ईश्वर द्वै ज्ञानो उपाधि भेद ते मानै । जीव ईश्वर एक चैतन्य में द्वै ॥ दाहा ॥ उपाधि भेदते लघु दीर्घ । लघु दीर्घ मुख भास । दृष्टांत, चक्षु प्रतिविम्ब दर्पण महि मुख चैतन्य एक प्रकास ॥ ५ ॥ माया दर्पण सम भई । पविद्या चक्षुसाम जीव । चैतन्य मुख सम एक ज्यो भेद भास नहि होय ॥ ६ ॥ जीवेश्वर द्वेभास है माया पविद्या भेद भेद भास के बाधते । चैतन्य एक कहै वेद ॥ ७ ॥ एक मेवाहितोयं ब्रह्मेति श्रुतेः एक अनंत अपार है पूर्ण सुखा समुद्र ब्रह्म कह्यो । १६ आत्मा रह्यो न जननी उद् ।

End.—कणें नाहो ॥ वध्य ज्ञान को अधिकरण अंतःकणें है । स्वरूप ज्ञान अधिष्ठान सर्व को है । ता स्वरूप ज्ञान को कोउ अधिष्ठान नाहो । ताहो तै विद्या अधिद्या को प्रकाशो है । सो जीवन मुक्ति को स्वरूप है ॥ तातै स्वरूप में ज्ञान अज्ञान दोउ नाहो इति ॥ यह विद्या ज्ञान को अध्यकणें यह पविद्या अज्ञान को अध्यकणें है सु एक अंतःकणें मोहो मिल्यो है चैतन्यता को जीव कहिये सु

संतकसे प्रज्ञान को कार्य है । सोई प्रज्ञान स्वरूप प्रज्ञानी कहिये ॥ सु जा को स्वरूप को प्रज्ञान है ताही को विद्या जानवान चाहो जै । इति ॥ स्वरूप है सो विद्या प्रविद्या को विरोधो नाहो ॥ सुवद्व कहिये । यह प्रज्ञान तैं अतोपहत कह्ये प्रज्ञान तैं उपहत जोव कहिये ॥ सो जोव प्रज्ञानी । सो जोव अनौ पहतता जानि वै को जानो ।

Subject.—गुरु को वंदना, ईश्वर और जीव का भेद, ईश्वर और जीव को एकता, निर्दिचनोयता, शक्ति के विशेषण और उसके दृष्टांत, उत्पत्ति (माया का तैनों शक्तियों के साथ मिलने से), जीव का त्रिगुणात्मक होना, काय प्रवेश से आवृत्ति, संकलेश से संहार, ईश्वर कारण उपाधि जगत के करने का पृ० १—२

क्रियमाण कर्म का रूप, नित्य, नैमित्तिक और काम्य कर्म, प्रशिक्षित कर्म निषिद्ध कर्म, उपासना, संचित प्रारब्ध और क्रियमाण तीन कर्म निष्काम कर्म वसेन । पृ० ३—४

अष्टांग योग आसन, अष्टांग योग से ज्ञान और मुक्ति, पुण्य अपुण्य मिश्रित तीन कर्म जरायुज में चार प्रकार की प्रकृति अष्टांग अष्टांग में ईश्वरत्व पृ० ४—६

विद्या ज्ञान की उत्पत्ति, ईश्वरता की सिद्धि, कारण प्रविद्या, कार्य उपाधि, विद्या प्रविद्या का वसेन—पृ० ६—९

ज्ञान की उत्पत्ति, कार्य और कारण की वाच्यता और विशेषण, उत्पत्ति काल कार्य प्रवेश पृ० ९—१२

सत और असत, विश्ववादो, आरंभवाद, परिणामवाद, संघातवाद, पंचक्यात, आत्मक्यात असाधारणभूत अर्पको कृत कार्य, समष्टिवाद, विष्णु, शिव तैजस प्रज्ञात पृ० १२—१६

कार्य कारण उपाधि, ज्ञानी को जीवत मुक्ति चिदाभास, जीवाभास, वेदवृत्ते अभ्यास को निर्विवर्त्ति दृष्टांत आदि पृ० १७—२०

No. 272(c) Vedānta Bhāṣā, by Maṇohara Dāsa Nirāñ-janī. Substance—Country-made paper. Leaves—23. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—538 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1777 or A. D. 1720. Place of deposit—Thakura Naunihāla Sīmha Saṅgara Kāpṭhā, District Unāo.

Beginning.—सांचदानंदायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥ कर्ता ग्रंथ करिये मैं निविद्य सुप्र चाहिये ॥ दोहा ॥ मंगल दे मोहिदेव गणेश । मंगल दे मोहि सरस्वती ॥

मंगल दे मोहि देव महेस ॥ मंगल दे मोहि पारवती ॥ ग्रंथ का प्रयोजन यह विषय कहिय है । चौपाई । आत्मलाभ ते भोग न कोई । यह भाषत है मुनि सब सोई । लाभ ग्रंथे कार्य करे वंश । आत्म को ईश्वर करि जाण ॥ २ ॥ प्रद्वनद्वारा ग्रंथ को अधिकारी दिषाय है । प्रद्वन शिष्य मनहि संसैयों पाय । आत्म ईश्वर भिन्न सुभाय । आत्म यज्ञ ईश्वर सर्वज्ञ । कैसे एक है यज्ञ यह तज्ञ । नियंता जग कर्ता है ईश । जीव यज्ञार्थ सदा यनोश । क्यों आत्म परमात्म एक सो हमको कहि देउ विवेक ॥ ४ ॥ यज्ञ का यह सालुको विषय त्रिपे ज्योतिश्वर को भेद ग्रंथ ग्रहण करिके पासका करी सिध्यते । ताको लक्ष्यार्थ करिके समाधान करिये को उजर देते हैं गुरु उत्तर ॥ चौपाई ॥ समाधान करै गुरु देव । चैतन्य एक पर्वत अभेव । महावाक्य तहां करै वषण । आत्म को परमात्म जाण । वाक्य ग्रंथ अनुभवतहां होइ । जा अनुभव में नाहीं दोइ ।

End.—मनोहर दास निरंजनी करो सुभाषा सार । धोरो सो विस्तार नहि ग्रंथे सवै विस्तार ॥ ८५ ॥ सगुन करो कवोस्वरो कविन कलु नहि सोय । जाको बुद्धि विमल है समझे जानो होय ॥ ८६ ॥ साधन कहिय है । कबित ॥ बार बार वृक्ष मन ग्रंथे सज्ञै सवै याके । मृदुल होइ सोई पावै गुन गमते । निदा स्तुति तजे मानक बड़ाई छारि कपट लंपट मागे चितै पयै समते ॥ विवेक वैराग्य दोय सम दम पौर सोय उपरति तितिक्षा सुसरधा में रमते । समाधान मोक्ष में न पौर कलु समाधान ध्यान धरै रैन दिन रायै मन तमते ॥ दोहा ॥ संवत सत्तरासै महि सोरह वर्ष वोतोत । व्यूष सबहैमहि करो पट मास जाहि बितोत ॥ ८७ ॥ आसौज बट है चतुरदसो कृष्णपक्ष प्रतिवार । भाषा पुरन सब भई मान एक कृतकार ॥ ८८ ॥ २८८ ॥ इति श्री वेदांत महावाक्य भाषानाम ग्रंथ कथिते मनोहर दास निरंजनी । संपूर्ण समाप्तम् । श्रीरास्तु शुभम् श्रीपरमगुरुभ्योनमः ।

Subject.—वेदना. ग्रंथ का प्रयोजन और विषय ग्रंथ का अधिकारी, शिष्य का प्रद्वन और गुरु कृत उत्तर पद्यों में किया गया है ।

वेदान्त विषय बहुत स्पष्ट रूप से उद्घोष कर के समझाया है ग्रंथ छिप्ट जान पड़ता है । वाच बीच में वेदांत के सूत्र दे कर उसका वाच्यार्थ स्पष्ट किया गया है ।

No. 273. Kavitta by Manasā Rāma of Teḍā, District Unao. Substance—Foolscap paper. Leaves—6. Size—7×4½ inches. Lines per page—32. Extent—96 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bāmābhūṣaṇājī Śukla, Rae Bareilly.

Beginning.—अथ मनसा राम के कवित्त ॥

छाछे मोर पच्छन के मुवट घरे है सोस काछे कछनो को किर नोको भेष नट को ।
चंद सो वदन चारु चन्दन को दोन्हे खौरि तैसो उर गुंजन को हार चारु चटको ।
"मनसा" सुनत मंजु बांसुरी सबद मेरी दौरो मन जातरी रहै न नेक हटको ।
हरत दिये को हरि छेत हरि मोतिन सो बोर कहु को है वो अहोर पोतपट को ॥ १
नोरद नवोन स्याम तन अमिराम तापै बोजुरी सो छाजै छवि अंबर जगद को ।
सहज शृंगार गरे गुंजन को हार तैसो सुखमा अपार बड़ी चारु गो गरद को ।
इंदु मुख मनसा गुविंद अविद नैन कोन्ही गति मंद मंद गति सो दुरद को ।
मंद मंद हंसि कै अनंद हो सो नन्द नन्द हृद रद कोन्ही चन्द चंद्रिका सरद को ॥ २

End.—साजि गज बहल महल छुटत जब जीतवे परदल चहुत अवधेस है ।
छलकत छोर निधि धनकत जल थल हलकत स्वरग सकात अलकेस है ॥
सुंदन उछोर भारे धन से पुकारे कारे होत टिगर्दतिन के मनसा कलेस है ।
मसकत मही मूल कसकत कालकुल धसकत धराचर ससकत शेष है ॥ २१
बैठिन को नागरो नेवेली अलबेली मागी कंचन को वेलो सो सहेलो काऊ संग ना ।
महाराज राम जू के हर ते हरानो बिल्लानो जिन्हें धावत में पावत तुरंग ना ।
परे बिल्लुमान कतरे जे पग छाल बड़े मनसा बिलोकि तिन्हें को को भयो दंग ना ।
मानो कंज खंडन को पाखुरी अखंडन में खंडन समेत बैठो हंसन को संगना ॥ २२

Subject.—कृष्ण भगवान के ३ कवित्त, कुम्भा के २, देवीजी के ३, चंद्रिका के २, रायिका के नैन के २, हस्तालिका अनावलो पर २, नायिका बखैन के २, शृंगार रस के ३, होली का १ और वीर रस के २.

No. 274. Nānā Artha Nava Saṅgrahāvalī by Mātādhina Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size—8×6 inches. Lines per page—24. Extent—1,400 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1899 or A. D. 1842. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1847. Place of deposit—Thākura Dīgviyaya Simha, Talukodāra, Village Dikaulia, Post Office Biswān, District Sitāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संप्रदायलो कवित्व लिप्यते ॥ शान्त रसः ॥ बालवादा करै बादि रुदा पितु मातु तऊ मरै मोदन माहीं । कूर कसूर करै पयभूरि तजै । तऊ पालक पालिबो नाहीं । है रघुनाथ तिहारे हो हाथ अनाथ हो दोन कहौ केहि पाहीं ॥ मैं जड़िता वांछि तोहि तज्यो ताज मोहि बराबरि दोहु

बुधाहो ॥ १ ॥ पाहन ते तौ कठोर नहीं शबरो गुह ते कहु कौन कुजातो । वानर
गोध निशाचर तें जग में नहिं पान कोऊ जड़ जातो । देवि यहैतु दया इनै तजि
सायन बैठि यहौ दिन राती । दोन अनाथ तजौ ग्युनाथ तौ तो सम को बिसवास
को घाती ॥ छन भंगुर भंग भ्रमं सरै तिय संग अनंग के रंग मरे । करि जंग तुरंग
मर्तंग हरे रन जोति परे धन धाम धरे ॥ फिरि भेंट असंग निहंग मरे हित के न
कछु उपकार सरै । नहिं जानकी नाह का मेह करे जग में जनम्यों जन नाहक रे ॥

End.—अथ मात्रोदितः ॥ पृष्ठ रूपकलासत्र पूर्व युग्माङ्कमुल्लिखेत ।
लघुनाम परिप्राज्ञो गुरुणांचाप्य पर्ययः ॥ गुरुणामुपरित्यस्तैरकैर्यनान्वि-
चक्षणः कुर्यादस्याक्षरान्ताङ्गुन शेषे संख्यां विनिर्दिशेत् ॥ अथ मात्रामेकः
ऊर्द्धादधोस्तलं दृष्ट्वा कोष्टं युग्मद्वयतः प्रियुग्ममञ्च चतुर्गुणं यावत्स्वेष्ट
ऋमादधैः ॥ कोष्टेषु विषमे वादा वेकैमाहितः शिरोऽङ्गं तच्छिरोऽङ्गाभ्यां मध्ये
सर्वमप्युरयेत एकः सर्वं लघुमैदस्त्वेकवादि गमा परे इति मात्रोदितं विधिः ॥
ग्रह १ ग्रहे १ म ८ भू १ युक्ते वर्षे दौष सिते तरे पक्षे कुरु तिथौ सूर्ये निर्मिता
वृत्त दोषिका समादौ मंगल श्लोकं एकैकाक्षरं कान्तरात वाचवोयं समाश्रम
जातिर्दशोपि माषया । इति मात्रोदितं कृतावृत्तं दोषिका शुभमस्त्वग्रे संपूर्णम्
मितो द्वेजा प्रापाद् यदि ७ चंद संवत् १९३१ मुनीधर नागः बाह्यं शुभं भूयात् ।

Subject.—पृष्ठ १ से ३७ तक मिश्र मिश्र प्रकार के कथित और सवैयों
का संग्रह । ३८ से ७० तक रामायण माला में राम कथा का संक्षिप्त वर्णन ।
पृष्ठ ७१ से ७६ तक रामाष्टक । पृष्ठ ७७ से ९० तक ज्ञान के दोह । पृष्ठ ९० से
१०६ तक नायिका भेद वर्णन । पृष्ठ १०७ से १३० तक तिथि पक्ष का वर्णन ।
पृष्ठ १३१ से १७० तक पिंगल संस्कृत ।

No. 275. Angrezjaṅga by Mathureśa Kavi. Substance—
Country-made paper. Leaves—15. Size—8×5 inches. Lines
per page—38. Extent—285 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat
1915 or A. D. 1858. Date of Manuscript—Samvat 1942 or
A. D. 1885. Place of deposit—Bhaiyā Hanumāna Simha,
Village Vardahā, Post Office Khairī Ghāt, District
Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संवाम महाराज बलमद सिंह
जो बहादुर का लिख्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गौरी शंभु पद, बंदत हीं सिर नाइ ।
श्री बलमद महीप की वरलौ विजय बनाइ ॥ श्रीपाल महाराज को सुत भो श्री

बलभद्र । तुम विषे ऐसा भयो मानो मेरही रुद्र । बहरावच यो बापसो बैसमारो
के राज । पाये सजि सजि सैन सब बाटसाह के काज ॥ श्री हरिदत्त वंश को
बौहो बेगम बास । हुकुम चाप चाप सब बाटसाह के पाज ॥ नरत लखत घण्टेज सों
हरे हजुरो फौज । छूट नयो गढ़ लपनौ भिटो मान को मौज । सो अब ऐसो
कोजिये दोजे धान कराय । हुकुम हमारे मानि के सोई करौ उपाय ।

End.—सालि षष्ठ वालि रैकवार भै प्रसिद्धि बड़े रैका ते पाय करो
उत्तर को जोर है । हरि हरिदेव तरवार को प्रकास कोन्हा कोन्हा जमाशरो
सबे जोरि इकठार है । रैकवार वंश में सो भूप तौ घनेक भए भारो युद्ध
करो सब सो मरोर है । कहैं मधुरेस इन सब सों अधिक भयो राजा बलभद्र सिंह
कोन्हा जग जोर है । दोहा । साहब के अस वचन सुनि सुनि बलभद्र रिसान ।
माजि गये सब झगटि वो हम करि है मैदान ॥ हमरे कुल में ना मई कबहु ऐसो
बात । पांच न टारै पेट सों करि है बड़ा खयात । छविन को यह धर्म है धरैन
पाछ पांच । अत्र धरै हम समर में जगत धरावै नांव ॥ इति श्री महाराजा बलभद्र
सिंह चहलारो के प्रसन्न जंग नाम बर्णन समाप्तः । लिखा विष्णुदत्त पाठक संवत्
१७४२ कार्तिक मासे शुक्ल पंचे रविवारे ॥

Subject.—इस ग्रंथ में गढ़र के समय महाराजा बलभद्रसिंह तथा अन्य
राजाओं का ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से युद्ध करना और लखनऊ के नवाब को सहायता
करना जिसमें राजा चरदा, बौहो हरदत्त सिंह चहलारी व अकौना रेहुपा
रैकवार राजाओं आदि को बोरता का बर्णन है । निर्माण काल का दोहा—
संवत् से उनईस है वर्ष पन्द्रह परमान । जूझि गयो श्रीपाल सुत घण्टेजों मैदान ॥

No. 276 (a). Lalita-lalāma by Matirāma. Substance—
Country-made paper. Leaves—70. Size—9×7 inches.
Lines per page—17. Extent—800 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—
Samvat 1870 or A. D. 1813. Place of deposit—Pandita
Sukhanandanaaji Vājapayī Kutub Nagara, Sitapur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा—सुखद साधु जन कों सदा गज मुख दानि उदार । सेवनीय सब जगत को
जग भाया सुकुमार ॥ १ कवि मतिराम गणेश कों सुमिरत सुख सरसात ।
धौन पौन लारी विघन नून नून उद्दिजात ॥ २ मद रस मत्त मलिद गन गान
मुदित गन्नाथ । सुमिरत कवि मतिराम के कवि सिद्धि निधि छाव ॥ ३ ॥ सदैव ॥
सिद्धि बधु कच मंडल के मतिराम मनी सुकुता गन मोहै । पाखतो के प्योअर

के पय जौनि जगै अति उज्जन पोदै ॥ ईस के सौप ससौ सुर सिवु धमो जुत
पावन पाय विमोदै । साधुन की सुबसो करतार करो मुख के कर सो कर
सादै ॥ ४ ॥

End.—हचिर अल्प भूपल इते रचि जानत मतिराम । ताको बाणो जग
में बिलसै अति अमिराम ॥ ३१२ छन्द—जब लग कछप सेस सहस मुख धरनि
भार धर । अब लगि घाटौ दिसनि दिग्ग सेमित दिग्गज वर । अब लगि कवि
मतिराम सकल सागर महि मेढल । [अनिल अनल जब लगि जौति मेढल पार्ष-
दल ।] वृष सवुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि । जग चिरंजीव तब लगि
सुखद कहत सकल संसार बनि ॥ ३१३ । दोहा कंठ करै सो समनि में सोम
अति अमिराम । सकल सार संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३१४ । इति
श्री मतिराम विरचिते ललित ललाम अलंकार समाप्तः ॥

दोहा—संवत नय मुनि वसु शशो इनको करौ विचार । जेठ सुदो चौदस
मला सूरज सुत को वार । १८७० ज्येष्ठ सुदो १४ ॥

यो देसौ सोई लिखौ यथा योग्य व्यवहार । कस चुकी होर तीसो
सुम लेहु सभार ॥ टोकाराम के पहिने को ॥ इति ॥

Subject.—अलंकारों का सादाहरण वक्ते ।

No. 276 (b). Lalita-lalama by Matirāms of Banaspura
(Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—75.
Size—8×6 inches. Lines per page—20. Extent—800
Anushtup Śokas. Appearance—Old. Character—Nāgari.
Date of Manuscript—Samvat 1934 or A. D. 1877. Place of
deposit—Pandita Kṛishṇa Bihārī Miśra, Editor, Madhurī,
Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥

दोहा ॥ सुखद साधु अन को सदा गज मुख दानि उदार । वनेकीव सब
अमल को जग प्राया सुकुमार ॥ १ । कवि मतिराम गनेस को सुमिरत सुख दर-
सात । श्रीन पान लागि विखन तुल तुल दुरिजात ॥ २ ॥ अदरन मत मेनिद मन
नाम मुदित मननाथ । सुमिरत कवि मतिराम के रिदि सिदि निवि हाथ ॥ ३

End.—छन्द—जब लगि कछप कोल राखि सिर धरनि भार धरि ।
जब लगि घाटौ दिसनि यही सेमित दिग्गज वर ॥ अब लगि कवि मतिराम सकल
सागर महि मेढल । अनल अनिल जब लगि इति मेढल पार्षदल ॥ वृष सवुसाल
नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि । जग चिरंजीव तब लगि रई यो कहत सकल

संसार धनि ॥ ३१८ दोहा—कंठ करै सो सभानि में सोहै श्रुति यमिराम । सकल नियम संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३१९ इति श्री कवि मतिराम त्रिपाठी कृत ललित ललाम ग्रंथ अलंकार समाप्त सुभं भूयात् ॥ भाद्र कृष्ण प्रतिपदायां सुग्री संवत् १९३४ लिखितमिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ इति

No. 276 (c). *Lalita-lalāma* by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size— $9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—800 Anushtup Ślokas. Incomplete Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Village Maī, Post Office Bateswara, District Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ ग्रंथ अलंकार ग्रंथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा ॥ तामे प्रतिविवित मनो संपति जुत मुर लोक । घर घर नर नारो लसै दिव्य रूप के ओक ॥ चन्द्र मांखन के भौंह जुमकुटिल कठोर उरोज । वाननि सो मनको जहाँ मारत एक मनोज ॥ २ जहाँ चित्त चारो करै मधुर बदन मुसिक्यानि । रूप ठगत है इगनि कोपार न दृजो जानि ॥ ३ ता नगरो को प्रभु बड़ो दादा मुरजन राउ । रच्यो एक सब गुननि को घर चिरंजि समुदाय ॥

End.—जब लगि कच्छप कोल सहस मुख धरनि मार घर । जब लगि घाटीं दिसनि दिशि सोहत दिग्गजवर । जब लगि कवि मतिराम सगिर सागर महि मेडल । अनिल अनल जब लगि जोति मेडल आबंडल । नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि । जग चिरंजीव तब लगि सुखित कहत सकल संसार धनि ॥ ३६३ ॥ कंठ करै सो सभनि में सोहै श्रुति यमिराम । सकल भयो संसार हित कविता ललित ललाम । ३६४ इति मति कृत ललित ललाम अलंकार ग्रंथ समाप्तः सुभं भूयात् ॥

No. 276 (d). *Matirāma Satasai* by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size— $9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—18. Extent—719 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Maī, Bateswara, Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ ग्रंथ मतिराम कृत सतसैया लिख्यते ॥ मो मन तम सोमहि हरी राधा को मुबबंद । बड़े जाहि लपि सिधु लौ नंद नंदन आनंद ॥ १ ॥

मेनु गुंज के हार उर मुकुट मोर पर पुंज ।
 कुंज विहारो विहारिये मेरेई मन कुंज ॥ २ ॥
 रतिनायक सावक सुमन सब जग जोतन वार ।
 कुचलय दल मुकुमार तन मन कुमार जय मार ॥ ३ ॥
 राधा मोहनलाल को जाहि न भावत नेह ।
 परियो मुठी हजार दस ठा की आश्रित खेह ॥ ४ ॥

End.—भोगनाथ नरनाथ को रोभ्यो खोम घनुप ।
 होत भिखारो भूप हैं भूप भिखारो रूप ॥ ७०१ ॥
 मुगलोघर गिगिधरन प्रभु पोताम्बर धनश्याम ।
 बकी विदारन कंस और चौरहरन अभिराम ॥ ७०२ ॥
 पीत भगुनिया पहिरते लाल लकड़िया हाथ ।
 धूलि भरे खेलत रहे ब्रजवासिन्ह ब्रजनाथ ॥ ७०३ ॥
 तिरछी चितवनि श्याम को लसति राधिका घोर ।
 भोगनाथ कीं दोऊजये यह मन सुख वाजोर ॥ ७०४ ॥
 मेरे मति में राम हैं कवि मेरे मतिराम ।
 चित मेरो पाराम में जित मेरे पाराम ॥ ७०५ ॥
 इति मतिराम कृत सतसेया समाप्तः ॥

Subject.—विविध विषय के ७०५ दोहे का संग्रह ।

No. 276 (e). Barawā Nāyikā-bheda by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—10 × 4 inches. Lines per page—6. Extent—204 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1904 or A. D. 1847. Place of deposit—Paṇḍita Kṛishṇa Bihārī Miśra, 318 Mirjān Lane, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य नायका भेद बरवा कंद दोहा लिख्यते ॥ कवित कहा दोहा कहा तुलै न रूपे कंद । विरचै यहो विचारि के यह बरवा रसकंद ॥ १ ॥ वेधक अनिवारो बड़ौ समुहें चतुर सुजान । सुनत जात चित भाव ऐ यह बरवे के बान ॥ २ ॥ मंगलाचरण बरवा बंदो देवि सरदवा पद कर जोरि । चलत काव्य बरवा लगे न खोरि ॥ ३ ॥ स्वकीया लक्षन दोहा—लाजवती निसुदिन पगो निज पति के अनुराग । कहत स्वकीया सील में ताकी पति बह भाग ॥ ४ ॥ उठाहन बरवा—रहत नैन क कोरवा चितवनि काय । चलत न पगु पैजनिया प्रभु उहराय ॥ ५ ॥

End.—शिक्षा करन—थके बैठि गौडवरिषा मोहहुं पाइ ।

तपस्य न पोंछ गमिषा विजन डोलाइ ॥ १६३ ॥

उपालम—सुप हूँ रहसि संदेसवा सुनि मुमुकाय ।

विष निज हाथ बिरचना दोन्ह पठाय ॥ १६४ ॥

परिहास—विहंसत भौह चढ़ाय थनुप मनोज ।

लावत उर अपठनवा पैठि उराज ॥ १६५ ॥

दोहा—लक्षन दोहा जानिए उदाहरन बरवान ।

दूनो के संग्रह मय रस सिंगार । नय मान ॥ १६६ ॥

यह नवोन संग्रह सुनौ जो देखै चित देख ।

विविधि नायका नायकनि जानि मली विधि लेह ॥ १६७ ॥

इति श्री नायकादि भेट संपूर्णम् सम्बत् १९०४ जे० शुभम् ॥

Subject.—मंगलाचरण, स्वकीया, मुग्धा, प्रजात यौवना, ज्ञात यौवना, नवोद्गा, विधवा नवोद्गा, मध्या, प्रौढा, परकीया, ऊढा, क्रिया विदग्धा, बचन विदग्धा, लक्षिता, अनुशयना वचन पृ० १—९ तक ।

गुप्ता, मुदिता, कुलटा, सामान्या, अन्य संभोग दुःखिता, प्रेम गविता, रूप गविता, प्रोषित पतिका, खंडिता, कलहतरिता, विपलव्या, कलंकिता वचन पृ० १०—१९ तक ।

वासक सेज्जा, स्वाधीन पतिका, धमिसारिका, प्रवत्स्यपतिका, पागत पतिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा, नायका समेद, अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट, शठ, उपपति, वैसिक, प्रोषित नायक, बचन चतुर, क्रिया चतुर, दर्शन, मंडन, शिक्षा, उपालमादि वचन पृ० २०—३४ तक ।

276 (f). Rasarāja by Mātirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—938 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1780 or A. D. 1723. Place of deposit—Paṇḍita Śāsi Śekhara Śukla Kañjahi, Village Śivalālarāma, Paṇḍita-kā-purwā (Itanujā Pachhima), Post Office Gaurigañja, District Saltānpur.

Beginning.—श्री मलेशायनमः ॥ अथ रमराज अथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ हेतु नायका नायकहि चालेंवित भृंगर ॥ ताते बरनो नायका नायक मति अनुसार ॥ १ ॥ अथ नायका लक्षन ॥ दोहा ॥ उपजतु जाहि विष्टांक के चित्त बीच रस भाउ ॥ ताहि वचनत नायिका उ प्रबोन कबिराउ ॥ २ ॥ उदाहरन ॥ सवैया ॥

कुंदन को रंग फोको लगी भङ्ग के ऐसो संगान चार गाराई ॥ चाँपिन को धल-
सानि चितौनि में मंजु विलासन को सरसाई ॥ को विन मोल विकात नहीं
मतिराम लई मुसक्यानि मिठाई ॥ ज्यों ज्यों निहारिष नेरें हूँ नैननि त्यों त्यों घरी
निकसे सो निकाई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रंघ जाल मग हूँ कछौं तिय तन दोषति पुंज ।
किंभिया कैसां घट भयो दिनहो में वन कुंज ॥ ४ ॥ तरुन घरुन पद्मोन के किरिनि
समूह उदात ॥ खेनो मंडल मुकुट के पुंज गुंज रुचि होत ॥

End.—जड़ता लखन ॥ उतकठा ते होत है अचन चित्त अरु प्रेम । तासां
जड़ता कहत है कवि काव्यद रसरंग ॥ ४०५ ॥ उदाहरन ॥ सुधेव सुवासु रहै
रंगरागते बदास भूलि गई सुरत सकल पान पान को । कवि मतिराम एक धनमिष
नैन बुझै कहति न बात बौर सुनति न पान को ॥ धोरो सो हंसनि ताहि गोरो
ऐसो डारि करि भोगे करो गोरो तै किशोरो व्रपमान को । तबते निहारो वह
भई ॥ पपान कैसो जवते निहारो रुचि मार के पपान को ॥ ४०६ ॥ दोहा ॥
धनमिष लोचन बाल यह यातो नंद कुमार ॥ मोचु गई जरि बाँध ही धिरह धनल
को मार ॥ ४०७ ॥ समुक्ति समुक्ति सः राभि है, सज्जन सुकवि समाज ॥ रसकनि
के रस को कियो भयो सकल रसरान ॥ ४०८ ॥ इति श्री मतिराम कृत रसरान
समाप्त शुभ मस्तु ॥

Subject.—नायिका भेद वर्णन ।

No. 276 (g). Rasarāja by Matirāma. Substance—New
paper. Leaves—50. Size—9×7 inches. Lines per page—24.
Extent—900 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Charac-
ter—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1896 or A. D.
1839 Place of deposit—Paṇḍita Raghunātha Prasāda
Chaube, Etāwah.

Beginning.—ध्यावै सरसर सिद्ध समाज महेशहि यादि मदामुनि
जानो । योग में यंत्र में मंत्र में तंत्र में नाथ सदा कृति शेष भवानो ॥ सकट मात्रत
प्रानन को शांत सुंदर दंड उदंड सो जानो । ध्याय सदा पदपंकज को मतिराम
तबे रसरान बखानो ॥ १५ दोहा ॥ श्री मुखचरण मनाइ के मन्पात को उर
ध्याइ । रसिक हेत रसरान किय सुकावन को सुखदाइ ॥ २ कवितार्थ जानै
नहीं कलुक भयो स्वभाव । भूल्यो धन ते जो कलुक सुकवि पढ़ेंगे शोध ॥ ३ ॥
वरणि नायिका नायकनि रच्यो प्रथं मतिराम । लोला राधा रवन को सुंदर यश
धमिराम, ॥ ४ ॥

End.—दाहा ॥ देवि परै नहि ह्वरी सुनियेँ इयाम सुजान । जानि परै
परिचक मै संग पांच मतिमान ॥ २१ जड़ता लक्षण ॥ दाहा ॥ उत्कंडादिक ते जो
हो पचल चित्त घर संग । तासा जड़ता कहत है जे प्रवीण रसरंग ॥ २२
उदाहरण—कवित्त—सुघन सुवास रहे रंग रागते उदास भूल गई सुरति सकल
खान पान की । कवि मतिराम इकटक अनमिष नैन बुझे न कहत बात घर
सपने न घान को ॥ दोरी सी हंसनि घोट गोरी ऐसी डारि डग पैरी करी गौरी
तैं किशोरी वृषमान को ॥ तब ते विहारो वह है भई बखान कैसो जब ते निहारो
रॉच मेर के पखान को ॥ २३ ॥ दाहा ॥ अनमिष लोचन बाल के याते नंदकुमार ।
मोव गई जरि बोंच हो विहानल को मार ॥ २४ ॥ सगुम्ह सगुम्ह सब रोझि
सजन सुकवि समाज । रसिकन के रस को कियो नयो ग्रंथ रसरज ॥ २५ ॥
इति श्री रसरज ग्रंथ समाप्तः ॥ सन्वत् १८९६

No. 276 (h). *Rasarāja* by *Matirāma* of Banapura. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—168. Size—8×5 inches.
Lines per page—12. Extent—756 Anushtup ślokas. Appear-
ance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat
1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Paṇḍitā Kṛishnā
Bihārī Miśra, Sitāpur, Gandhaurī, Sidhaurī

No. 276 (i). *Rasarāja* by *Matirāma*. Substance—
Country-made paper. Leaves—32. Size—15×6 inches.
Lines per page—24. Extent—360 Anushtup Ślokas.
Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date
of Manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of
deposit—Lālā Bhāgawata Prasāda, Village Sadhuwāpur, Post
Office Sisaiya, District Bahraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ राधा कृष्णायनमः ॥ अथ रसरज
लिखते ॥ श्लोक ॥ श्री कृष्ण मुरलीधरं नितिधरं पृथ्वीधरं सुंदरं ॥ विष्णु दशा
सुवर्ण पोति वशान बुद्धावने कोइने ॥ कालिन्दी तट गायन मुनिवर गोपो
मनोरंजने ॥ श्री राधा बल्लभं ललितं वन्दे सदा सुन्दरम् ॥

No. 276 (j). *Rasarāja* by *Matirāma*. Substance—Country-
made paper. Leaves—51. Size—7×6½ inches. Lines per
page—26. Extent—1,989 Anushtup Ślokas. Incomplete.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—

Thākura Basanta Simha, Village Udawā, Post Office Shah-
man, District Rae Bareilly.

Beginning.—पृष्ठ २ से प्रारम्भ ।

पति प्रीति साहाई । तेरे सुसोल सुमाय मद्र कुल नागिन को कुल कानि सिपाई ।
तेही मनो पति देवता के गुन गौरि सवै गुन गौरि पठाई ॥ १२ ॥ दोहा ॥ जानत
सैगति अनीति है जानत सवो सुनीति । गुरजन जानत लाज है प्रीतम जानत
प्रीति ॥ १३ ॥ त्रिविधि सकिया बरनिये परमहि मुग्यानाम । मध्या पान प्रौढा
गनौ बरनत कवि मतिराम ॥ १४ ॥ मुग्या लक्षन वर्णन ॥ २ ॥ अमिनव योवन
आगमन जाके तन में होइ । तासा मुग्या कहत हैं कवि कोविद सब कोइ ॥ १५ ॥
जया ॥ नेक मंद मधुर कपोल मूसकान लागे नेक मंद गमन नईदान को चाल
भो । रंच ऊँची अंचल उरोजन के अंकुरनि बंक डोठि नैन लुग नेसुक बिसाल
भो ॥ मतिराम सुकवि रसोले कछु बेन भये वदन सिंगार रस बेलिष × ×
वान भो ॥ वाला तन जावन रसाल उलहत डाल सैतन के साल भो
निहाल नंदलाल भो ॥

No. 277. Antariyā ki Kathā by Medailāla Awasthi.
Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—7×4
inches. Lines per page—12. Extent—153 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—
Samvat 1905, or A. D. 1848 Place of deposit—Paṇḍita Tri-
bhuwanadatta, Village Fakharpur, Post Office Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अंतरिया कथा लिख्यते ॥
सांगठा ॥ गणपति कृपा निधान, हुजि रासि शुभ गुण सदन ॥ देहु मोहि वरदान
कथा अंतरिया को कहौ ॥ १ ॥ उमा शंभु सेवाद, परम रुचिर मेहन भवन,
जहि मुनि मिटै विषाद, दोष अंतरिया ना रहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ शंभु भवानी सर-
स्वतो, उर गौरि माइ प्रसाद, दोष निवारन जगत हित कहव सकल सेवाद ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ परम रम्य गिरवार कैलासा ॥ सदा जहां सिव उमा नेवासा । सिद्धि
परनिद्ध तप हित मुनि देवा । करै जोग अप तप हित सेवा ॥ वटमुख पादि
शंभु मन जेतै ॥ हरिपद सेवत प्रेम समेतै ॥ विपिन वाग मानस अति सौहै । वरनै
ह्वाँव यस कवि जग को है ॥

End.—इति श्री मेड़ई लाल अवस्थी विरचितार्वा उमा मंदस सेवाई में री
निमित्त प्रसाद कथा अंतरिया समाप्तम शुभमामेस्तु सबल भास कृष्ण पछे तियौ

बौद्धविद्या मणिबसरे श्री संमंतु १९०५ लेषाक दोनदयाल कयेस वसि सहिपुर येमे
नाई आताटे तस्यो पात्मज बप्तावर लाल लिपाते जो प्रति देषा से लिषा मम
देषा नाहि शुभ मस्तु राधा कथ की जै रामचन्द्र सावामी को जै ॥ राम राम
राम राम राम राम राम ।

Subject.—घटरिया यानो पतरा (इकतरा) रोग को कथा का बमोन ।
इसमें महादेव पारवती का संवाद है । एक व्यापारी बनिज को गया था उसको
लौ घर पर थी । उस व्यापारी का भेष बना कर एक भेत उसके घर में आकर
रहने लगा । जब वह व्यापारी घर आया, तो अपने रूप का अनुप्य देस कर दुखी
हुया, लौ भी घबड़ाई, भेत में राजा के यहाँ न्याय के लिये गये । राजा भी न्याय
न कर सका । तब न्याय के लिये गढ़रिया बुलाया, उसने कहा कि चमड़े के
छेद हाकर जो मसक में घुस जावे वहाँ स्वामी है । भेत तुरंत दो घुस गया और
गढ़रिया ने उसे बंद कर दिया । मुख्य स्वामी अपनी लौ को लेकर घर चला गया ।

No. 278. Megha-prakāśa Jyotish by Megha Muni of
Phaguwārā (Punjab). Substance—Country-made paper.
Leaves—20. Size— $8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines per page—40. Ex-
tent—870 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760.
Date of Manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of
deposit—Bābā Bhāgawatadāsa, Village and Post Office Jarwal,
District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मेघमाला लिप्यते ॥ दोहा ॥ गरम
पुरुष छट छट रम्यो ज्योति रूप भनवान । सकल रिद्धि सुख देत प्रभु नमत गंध
धरि ध्यान ॥ बाहन जाके हंससित और सिंह सिव तीय । सिधा भवानो
सारदा सकल एक नाहं वीय ॥ चरनन मो युग तासु के आगम वानो दाह ।
तिस पसाद इस अथ को रचै सकल सुख थाह ॥ चौ० ॥ गुरु समान जग में
नहि कोई । मुख पंडित करता सोई ॥ जिमि दीपक मंदिर तिमि नाम । गुरु
ज्ञान अज्ञान विनासै ॥ पटपट छंद ॥ सकल वस्तु को भेद जान अज्ञान बतावत ।
भरक स्वर्ग को वात और शिव पद दिखरावत ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश ताहि मांत
कोर न जानत । सो लहि है परसाद तु गुरु के वचन णिहानत ॥ तीन लोक
ब्रह्मा रच्यो मृत्यु स्वर्ग पाताल रूचि सो गुरु को छपा दिसै वदत मेघ त्रिव
काल कवि ॥ दोहा ॥ ज्योतिष अथ अपार मग जानत इक जगदीश । मानव सुर
जानत नहीं । ताते मोमति कीश ॥

End.—साँवल छंद ॥ मुनि शशि वसु को जान महो संवत इहु घायति
 कार्तिक शुद्धि गुरुवार मान पंचम तिथि भाषत ॥ उत्तराषाढ़ नक्षत्र दिवस में
 एकवि को जति । सो घटि अक्षर होइ ताहि कवि सुवि करि लोजति ॥
 लोलावती छंद ॥ प देश जलंदर सोमै सुन्दर नाम द्वावा ठौर कहियो । शुभदान
 पुन्य को ठौर यहां है मानौ सुर पुर घान रह्यो पंडित नर । सो मैं कवि ते भारी
 गीत वज्रि रंग सियो गृह गृह मंगलचार जु होवहि तामेपुर इक इहु वसियो ।
 सकल रिद कर सोम है फगुवारा शुभ धाम । तहां मेघ कविता करो पाछी
 विधि मत घान । चूड़मल ये चौधरो फनुवारे को राह । चतुर सैन्य करि सोम
 है जिमि उड़गन शशि थाइ । सब कविता सो जेतो कहत मेघ कर जोर । करौ
 सुदि इस ग्रंथ को प्रथिक कछो जिहि ठौर । बालक हठ ज्यो बात को पंडित
 करत विचार । कहौ प्रशुद्धि होइ कछु लोजौ कविन सुधार ॥ गोता छंद ॥
 कर सरव छंद मिलाइ इकठा कहौ संख्या यासको । द्वात्रिंश अक्षर कै हिसावै
 घाठ से उनचास को । इन्द्र छन्द पट सत अठ उनोसै कहौ कवि इहु भास को
 सजानु संख्या दोऊ जातै मेघ माल विलास को ॥ दो० ॥ कविजन कविता को
 सदा किन किन होइ पानंद । वसौ ग्रंथ जग चिर नैनौ हो रवि यिति चंद ॥
 इति श्री मेघ प्रकाश मुनि मेघराज विरचिते सगुन नाम चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥
 लिपितं मिथ गुलजागे पटियाले मध्ये पोथो उवाला गिरि येन्यः सं० १८९५
 पाश्चिम शुक्ल तृतीया भृगुवासरे समाप्तम् ॥

Subject.—परमात्मा को महिमा गुरु की महिमा, ग्रंथ रचने का कारण
 कार्तिक मास, दिवाली, पगहन, पून मास, माघ मास का फल, माघ, पून
 मास का फल, माघ वदो नौमी का फल, फालगुन मास का फल, होली विचार
 चैत्र मास का फल, चैत्र वदो पड़वा का फल, वैशाख मास का फल, जेठ मास
 का फल, जेठ वदो पड़वा का फल, आसाढ़ मास फल, आसाढ़ मास में कल्ला
 रोहनो का विचार, आषाढ़ पूर्णिमा का फल आषाढ़ सुदी पूनम को खजा की
 पवन का विचार, सावन, मादौ मास का फल, ग्रह नक्षत्र वर्षा लक्षण, चार
 धर्म समय का विचार, रोहणी चक्र, ग्रह राशि फल, मूसल जोग, संगारा
 जोग, मृत्यु जोग, ग्रह उदै फल, शुक्र उदय फल, शुक्र चन्द्र फल, पूस मास
 संक्रांति का फल, कर्क संक्रांति का फल, मीन संक्रांति का फल, संक्रांति सातों
 बैठों ठाढ़ी का फल, संक्रांति वर्षा का फल, मास क्षय का फल, तेरह दिन के
 पाष का फल, पक्ष क्षय का फल, तिथि क्षय का फल, तिथि अधिक का फल,
 अधिक मास का फल, एक मास में पंचवार का फल, रवि शशि कुंडल पारवा
 का फल, दुकाल लक्षण, चन्द्रमा उदय का फल, चन्द्र चढ़े के रंग का फल,
 मंडलों का फल वायव्य मंडल का फल, वाहणी मंडल का फल, महेन्द्र मंडल

का फल, चारो मंडल के फल, संक्रांति समय मंडल मध्य राशि का फल, समय के राजा का फल, मंगी का फल, ग्रहण विचार, भू कंपन लक्षण, ग्रह वक्र यती चार फल, ग्रहराशि विचार, गोल योग, वर्षा कुयोग, पक्षकांड, चर्च संक्रांति कांड, बृहस्पति कांड, शनि विचार, नक्षत्र शनि कुर्से चक्र विचार पारसो मतांत गुरेर के गुरे का विचार, वर्ष दिन बरते तिसका फल (इंगलिश में) । रविवारे गुरेर का फल, सोमवार, मंगलवार, बुध, गुरुवासरे, शुक्रवारे, शनिवारे गुरेर का फल, राशि स्वामी फल ग्रह स्थिति, उत्पात फल सगुन ध्याय, वर्षा लक्षण, इन्द्र धनुष का फल, चौक सगुन, धंग हफ्ता सगुन, रासम वाक फल, जंबू वाक फल, दक्षिण फल, शिवा वाक दिन प्रथम ग्राम फल, किराने सगुन का वर्णन, सातवार का फल, धंग फल, कविराज मेघ मुनि के ग्राम पादि का वर्णन ।

No. 249(a). Vyādhināśa Vaidyaka by Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 x 5 inches. Lines per page—18. Extent—1,140 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Written Prose and verse. Character—Nagari. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A. D. 1849. Place of deposit—Kumāra Bachechā Sāheb Raīs, Gūdhnāpur, Post Office Chulwāriyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning.—श्रोमते रामानुजायनमः अथ वैद्यक व्याधि नाश नाम ग्रंथ लिप्यते ॥ दोहा ॥ श्रो गुरु परमानंद प्रभु चरण कमल मन लाइ । मेहरवान दास प्रेरक परम परमात्महि मनाय । रक्षा मय सो जग रक्ष्यो त्रिगुन भयो विस्तार कम काल माया विवस करि राख्यो संसार ॥ सतगुरु वैद मिले विनु कोइ न होत अरोग व्याधि असाधि वचै कबहु हानि लाभ भय सोय ॥ त्रिगुण बिदाय लख्यो जगत भिषक मिले गुरु जाहि । नाम रसाइन बाषधी निहजम यो-निर्वाहि ॥ मंत्र अंत्र गुन गान प्रभु प्रगख्यो जीवन हेत ताहि विधि चौपद जरी पावत होत सचेत ॥ दैहिक दैविक भौतिकौ लगो ताप अय जीव । मेहरवान दास भगवान विन सुमिरन बिपति अतीव । संचित प्राग्व्यक कर्म क्रिया मान ये तोन । दूष सुष भोगवत जाव यह देह संग कतकोन ॥ आदि व्याधि लागो जगत जय जाको जाहेत । मेहरवान दास सेसै मिटै मिल गुरु करिजेत । आदि अथा हे मानसो व्याधि सरौर संजोग । सुमिरन ते मन दुष नसै बाषधि ते तन रोम ॥

End.—अथ दसमूल नाम कथन । उमय गुपक, पाइरी चरनी सरवन नाम विधवन वेलि कुम्हार सौनाबलो मूल ठस ठाम । पंचलान नाम ॥ सांभरि पारो

विडकहो सधा सोचर सोई, लवन पांज ये सांच हँ पर दोये कै होइ ॥ पथ करी देपै कै विधि । बड़े सवेरे घरो मरि रात्रि जब वाको रहै तब रोगी को एक वासन में मुतावै सो मृत जब घाम होइ तब घाम में धरै तब तेल में सोंक बारि के एक घुंद छोड़ै । जो तेल ऊपर रहै तो रोगी साध्य जानै जो घुंद हूय जाय तो रोगी मरै । धनुहो कार मूत्र बढ़ै तो मूत्र दोष जानिये छत्रकार होय तो दोष जायो । मृत छूटि कै कई घुंद होई तो घुंद गिनके मरे के दिन बताइ देउ । पीत वषे पित रोग सित वषे कफ रोग । कृष्ण वरग वात रोग, निला रंग त्रिदोष गंध आवै रोगी मरै निर्मल नोर सम मूतै रोग विमुक्ता जानै ॥ साध्य असध्य विचार । एक चौढ़े वासन में जल भरै घाम में धरै रोगी को सूर्ज दिषावै सूर्ज संपूर्ण देपै तो रोगी साध्य सूर्ज न देष परै तो रोगी मरै सूर्ज के बीच छेद बतावै रोगी छठवें दिन मरै संपूर्ण सूर्य प्रकास देपै तो दान देइ वैद को लुस करै रोगी चला होय ।

इति श्री व्याधि नास नाम ग्रंथ मेहरवान दास कृत संग्रह समाप्त ॥ लिखत रघुवर सभा मिर्जापुर निवासो संवत् १९०६ श्री राम जी को जै ॥

Subject.—नाड़ी परीक्षा, तैल प्रमाण, वातु शोथन मारण उपवातु शोथन आदि, ज्वर चिकित्सा काय आदि का वर्णन, रसों का मली प्रकार वर्णन चूखे गालो तैल आदि, घृतादि औषधियों का संग्रह करना उनको पहिचान, आदि का वर्णन

No. 279 (b). Vyādhināśa by Paṇḍita Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—121. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—1,320 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1851 or A.D. 1794. Date of manuscript—1248 Hijri or A.D. 1870. Place of deposit—Rājya-pustakālaya, Bhingārāja, District Baharaich.

Note.—विशेष No. 279 (a) में लिखा गया है ।

No. 280. Kavitta Saṅgraha by Mōhana kavī. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—22. Extent—60 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning.—अथ कविस मोहन के लिख्यते ॥

उससि उसामति है सौ सवे घवासु दहै बेरिन कौवासु दहै परीये ।
मानति सौहनि तनैयो कै कै मोहनि झुकति भार मोहनि हीं कैसे कै उबारिये ॥
नैननि लगनि हिरदै का हो लगनि तन बिहल यगनि सिनगत छति जरीये । देवे
किसेहो ते । शेष सब तोहि पिये तेरे हिष नाहीं पै परखीया हो मरीये ॥

End.—जियरोई जानत है जियरो रहत तन छिन छिन हियरो दरस दुख
दाहिये । पेम लपटाप वेन नैननि हो समझै छलि नैनान सुनै जो वार कोटि अव-
गाहिये । तुम कह्यो हिरदै सु हम कह्यो परगट लोइन न नेह के निहारि नेकु ता
हिष ॥ इकटक चाहत है याते न प्रगट होहि चाहको चाहनो मुख चाहे हन
चाहिष ॥ इति ।

Subject.—१७ भृंगार के कवित्तों का संग्रह ।

No. 281. Kapota—līlā by Mōhanadāsa. Substance—
Country-made paper. Leaves—10. Size—8½ × 5 inches.
Lines per page—9. Extent—51 Anushtup Ślokaś. Ap-
pearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of Manus-
cript—Samvat 1833 or A.D. 1776. Place of deposit—Paṇḍita
Śītala Prasāda, Village Fatehpur, District Barābanki (Oudh).

Beginning.—श्री मतेरामानुजाय नमः ॥ उदारावतो एकांत निवासा ।
हरि कौ पूछे उद । दासा । ज्ञान बिचार विवेक सुनावै । मेरे मन कौ तिमिर
नसावै । कौन पुरुष कैसे तेरो माया । कह्यो कृपा करि त्रिभुवन गया । कैसे
विधि प्राणा सुप पावै । काल ब्याल भय दुरि बसावै ॥ २ ॥ श्री भगवान कहे
निज ज्ञान । तत्त्व उपदेश सुनै दैकाना । सकल चराचर मो मैलेखा । मोते
मिश्र कछु नहि देखै ॥

End.—सब परिहरि हरिसौ रुचि कोनो । ताते मैं इनको बुधि लोनो ।
ज्यो सब नरपति त्यागेउ राजा । करि हरि भजन समारै काजा । अब मैं ज्ञान
कह्यो नाना विधि । निज मन को सौपों चपनी चपनी निधि । श्री भगवान जू
बोले घाणो । उदय को पंजरगत जानो । जो इह लीला सुनै पर गावै । ज्ञान
विरान भक्ति उपजावै । शेष महेश पार नहि पावै । मोहनदास रया मति गावै ।
इति श्री दत्तात्रेय कपोतलोला मोहनदास कृत संपुष्के ॥

Subject.—उदय का ईश्वर से प्रश्न, पुरुष कौन है, माया क्या है, और मनुष्य
सुख कैसे पा सकता है । ईश्वर का उत्तर, संपूर्ण संसार मुझ में है, जो प्रत्यक्ष माय
से मेरी सेवा करे वह संसार से तर जावे । यशु का एक मुनि को देख कर शंका
उपस्थित करना कि आप को संसार से विरक्ति कैसे हो गई, मुनि का अपने बंधोस

सुख करने का कथन और उनको सुख बनाने का कारण। उनको अपने सुखों के नाम इस प्रकार बताना (१) ध्वनि, (२) मारुत, (३) जल, (४) अग्नि, (५) आकाश, (६) शशि, (७) रवि, (८) कपेत्, (कपेत् कपेत्तो का प्रेम व्यवहार, दैत्यों का घर बनाना, सुत उत्पन्न होना, उसको बोली से प्रसन्न होना, बालक को भोजन के लिये कुछ लेने का जाने पर बालक का जाल में फँसना कपेत्तिनो का भी स्वयं फँस जाना, कपेत् का भी फँस जाना) (९) घञ्जगर, (१०) सागर, (११) भुंग, (१२) कुरंग, (१३) मर्तंग, (१४) पतंग, (१५) मोन, (१६) मधु मम्बो, (१७) विमलानारी, (१८) कुररो पक्षी, (१९) कुमारी की चुड़ो, (२०) बालक, (२१) भुंगो, (२२) सर, (२३) भुजंगम और (२४) सब सत्कारों को देख कर चरण कमल से प्रयुक्त न होना। उपसंहार में यानो ईश्वर भक्ति का यह कारण बताना।

No. 282(a). Ganeśa Chanthi ki Kathā by Motilāla. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extant—390 Anushtup Ślokaas. Incomplete. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Pandita Bhawānī Bakṣa, Village Utārā, Post office Musāfirkhānā, District Sultanpur.

Beginning.—पृष्ठ २—कृष्ण सिधु उर पंतक जामो × × × ×
जल कीन्हा जिरजोधन राजा ॥ जोति लोहउ मोहि राजि समाजा । तपुज सवेत
सुखी सध लाय ॥ कानन फिरहु दुहु सुख पाय ॥ तेहि ते प्रभु बिनवउ कर जोरी ॥
केहि विधि पाइ राखि बंदारी ॥ कृष्ण कहा सुनि वचन तरसा ॥ सुख हित लागि
कही उपदेसा ॥ पूजहु गणपति कह चितु लाइ ॥ जेहि पूजे सेकट ॥ संकट मिटि
जाइ ॥

End.—गणपदन चरित्रं बोद्धव्यं दंतं मुनि रंजन वरमत संतं । गणपति
वरदायक सब सुपलायक सुर मुनिभायक भानु ज्वलं । सबहा सुपकारी जम
उपकारी । सिद्धि सुधानो शिव नंदा । जे व्रत मन लावहि हरिपद पावहि सुनत
महामन सुपकंदा । गणपति उर दोऊ सब सुप कोऊ सुनहु धर्म सुत भूषा । तन मन
सुख सातसा । वरदाता गणपति को जे व्यावहि सो नर परहि भव कृपा । दौ० ।
गणपति को व्रत जे करहि ध्यान धरहि चित लाइ । ताके सर्व मनोसुख पूर्वहि धौ
जदुराह । ५२ इति श्री वेदव्यास बानी मोतीलाल भाषा कृते गणेश चोथिनो कथा
समाप्तं शुभ मस्तु संवत् १८६२ सव १२१३ कार शुक्ल पक्षा १५ लिपिवत वरवेहा
लिखा जो देया सो लिखा ।

Subject.—(१) पृ० १ से २ तक—धर्मराज का कृष्ण से वन से घर शीघ्र पहुँचने के निमित्त साधन पूछना

(२) पृष्ठ ३ से ४ तक—गणेश महिमा । पृ० ५ से १३ तक—उमा के घर नारद आगमन, उमा से नारद का कथन कि शिव मुंडमाल क्यों धारण किये हैं । जब उमा न बता सकी तो शिव से पूछने के लिये कथन । शिव के जाने पर उमा का उनसे उक्त शंका करना । शिव का बताना कि यह तुम्हारे उन मुँहों की माला है जब तुम्हारा शरीरपात होता है । शिवा का कथन कि आपके अनेक जन्म क्यों नष्टों, शिव कथन कि वीजमंत्र जानने के कारण । शिवा का भी वीज-मंत्र पूछना सब जीवों का भगना, १२ वर्ष तक वीज मंत्र कथन, बड़े से तेते का भवष, पार्वती का सा जाना शिव जी का जान कर शुक के पीछे घाना । उसका व्यासाश्रम में जाना, शुकाचार्य का जन्म ।

(३) पृ० १४ से २६ तक—शिव का उमा को निकाल देना, घडनन के पास पहुँचना तपस्या के लिये माता से प्रार्थना, गणेशोत्पत्ति ।

(४) शिव गणेश युद्ध, गणेश शिरच्छेदन, उमा को प्रार्थना पर हाथी का सिर लगाना गणेश का बुद्धिमान सिद्ध होना ।

(५) पृ० २७ से ४४ तक—गणेश पूजन करने वालों का इतिहास ।

(६) पृ० ४५ से ५० तक गणपति पूजन विधि ।

No. 282(b). Ganeśa Kathā by Motilāla. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—18×5 inches. Lines per page—24. Extent—450 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Thākura Chhatra Simha, Katailā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः प्रथम गणेश कथा लिख्यते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ देहा—बंदि चरण रवि दिङ्ग हार हर गिरि मनुलाइ । सैल सुता सुत की कथा कहै सुनी मनुलाइ ॥ रामकृष्ण आतन सहित सिय गकुमिनि तिय घाम । बुद्धि बढावै सकल मिलि पुनि पुनि करौ प्रनाम ॥ कथा कहौ गण-नाथ की पार उता बलधीर । बुद्धि होन निज जानि कै सुमिरौ तनै समोर । राख्यो बाच । एक समै ब्रूमत भये हरिहि बुधिधर राइ । घानि महा सेकट परे केहि उपाय ते जाइ । चौपाई ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा । निगम शेष विधि पावो

न भेवा ऐसे प्रभु तुम दीनदयाला । सदा करहु दासन प्रतिपाला ॥ विपति
हमारो बिलोकहु स्वामी । कृपासिंधु तुम चंतरजामो कुल कोन्हें जिरजोधन
राजा । जीति लियो महि राज समाजा ॥

End.—धृत सो होम करै चित लाई । ताके बुद्धि होय अधिकारी ॥ मास
पसाइ चौथ चंवियारो । कंवल फूल कर लेइ विचारो । सर्पिक सहित होम
चित लावै सो नर मन बांझित फल पावै । सावन कृष्ण चौथि अब पावै । कुसुम
सिंहारे केर मंगायै । सबलिहु सहित नैधृत सो मोहो । देव दैत्य ताके वसि होहो ।
दोहा । इहि विधि बारह मास करि कछो भूप समुझाई । विधि सो पूतहु गण-
पती सब संकट मिटि जाइ । चौपाई—यह सुनि धर्म तमय सिर नाये । हरि पद
को रज नयन लगाये । एहि विधि कछो कृष्ण वृत रोति । तेहि विधि राजे कोन्हो
प्रीति ॥ गणपति को महिमा अषाढ । मारि सत्रु कोन्हें वैषाढ । सुख सो राज
महोपत कोन्हा । गणपति को दाया लिपि लोन्हा । जो गणपति को वृत चित
लावै । रिद्धि सिद्धि अणमादिक पावै । नारो पुरुष करै वत जोई । सर्व सिद्धि
फल पावै सोई । जो यह कथा सुनै अथ गावै । ताके काल निकट रहि पावै ।
गणनायक को कथा यह संस्कृत मध्य भूपाल । जथा बुद्धि भाषा रचौ पंडित
मोतीलाल । इति श्री मोतीलाल पंडित विाचितायां गणेश कथा समाप्तम् संवत्
१९१० कार्तिक वद्यो ११ गणेश कथा लिख्यते देवोदीन गुजबली सुभ गुरुवासे ।

Subject.—गणेश की कथा

No. 282(c). Gaṇeśa Purāṇa Bhāṣā by Motilāla. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—19. Size—8 × 5 inches.
Lines per page—22. Extent—318 Anuṣṭup Ślokaś. Ap-
pearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—
1893 Samvat or 1836 A.D. Place of deposit—Thākura
Mahēśa Simha, Village Kohali Bichai Singh kā Puravā,
Post Office Kesargauja, District Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ वेद्यो गणेश पुराण प्रारम्भः ॥ दोहा ॥
एक रदन गज वदन को पगु वेदो कर जोरो । कृपा करहु सिव संकर बुद्धि बढ़ै
जेहि मोरि ॥ व्यास आदि कवि पुंगवा नारद पादो मुनोसा । दिनकर ब्रह्मा सेस
गुरु सब कहं नावो सोसा ॥ चौ० । राजा जुधोष्ठिर उवाच । सुनौ स्वामी तुम
मदन गोपाला । सदा करौ संतन प्रतिपाला । विपति हमारो बिलोकहु स्वामी ।
कृपासिंधु उर चंतरजामो कुल कोन्हो जिरजोधन राजा । जोती लोन्हो मोर राज
समाजा ॥ बन निकारि दोन्ह दुषदाई । कानन फिरौ दुसह दुष पाई । तेहि तौ

धनु विनवौ कर जारो । केहि विधि पावौ । राज बहोरी । कृष्ण कहा सुनु बचन
नरेसा । तुम रित लागि कहौ उपदेश । पुत्री मनपति मन चित लाई । केहि
पूजे सब दुख मिटि जाई । विघन हरन है अकरनामा । तेहि पूजे परहौ विधामा

End.—मास प्रसाह चौथि जब पावै । कमल फूल कर लेख मंगवै ।
लुगति समेत होम जो करई । सो प्रानी पुनि देह न धरई । सावन चौथो भुप जब
पावै । कुसुर सहस्रपा केर मंगवै । ब्राह्मण वाली होम भूत करई । दानो देव
ताके बस होई । दोहा० यहि विधि बारमास को कहौ भूप समसाई । बिधि सो
पूजे मनपतो सकल कष्ट मिटि जाय । चौ० ॥ तुनि कै धर्म तनय सिर नावा ।
धन्य गोपाल यह कथा सुनावा । जो बिधि कृष्ण कहा वत जेतो । तेहि बिधि सो
भूप कोन्ह प्रतोतो । मनपति भई जो कथा प्यारा । मारे जो सब लगे नहि बारा ॥
सुप समेत राज तब कोन्हा । मनपति को दाया लखि लोन्हा । मनपति केरो बात
चित पाई । जो मनसा कर सो फल पाई । सिद्धि रिद्धि संपति धन अपारा ।
धरनि धाम सुत संपतिदारा । नारो पुरुष करै वत कोई । सकल सिद्धि फल
पावै सोई । जो यह कथा सुनै सो गावै । संतकाल सुर पुर पहुंचावै । मनपत
की कथा यह संस्कृत मध्य बिसाल जथा बुधि भाषा रचेउ जड़ प्रति मेतीलाल ।
इति गणेश पुराण सम्पूर्णम् । लिपतं प्रताप सिंह ठाकुर संवत् १८९३ ॥

Subject.—पृष्ठ १ से १९ तक वंदना, पावैतो शंभु संवाद । एक समय
धर्मराज का राज्य जाता रहा । उन्होंने श्री कृष्ण भगवान से अपना राज्य प्राप्त
करने का उपाय पूछा, तो भगवान ने बताया कि गणेश जी को मन कम वचन से
पूजा करो । उदाहरण रूप से कहा है कि एक बार शिव जी अपने दोनों पुत्रों को
लेकर श्री विष्णु की समा की गयी वहां इंद्रादि ३३ कोटि देवता बैठे थे, भगवान
ने दोनों पुत्रों को बुला कर दो मोदक दिखाये और कहा कि जो पृथ्वी को
परिक्रमा पहिले कर पावेगा वह लड़ू पावेगा, एक पुत्र रथ पर बैठ गया और
मनपति जो ने भगवान को परिक्रमा कर मोदक मंगे अतः उन्ही का मोदक
मिले । इसी १२ मास की पूजा पृथक् पृथक् वर्णित है । संत में पूजा का फल
कवि का नाम और लिखने वाले का संवत् आदि है ।

No. 282(d). *Ganēśa Māhātmya Vrata* by Mōtilāla. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—28. Size 8 × 4 inches.
Lines per page—16. Extant—400 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—
Samvāt 1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Thākura
Mādhōrāma, Village Nautala, Post Office Sisaiyā,
District Bahawalpūr (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः देहा ॥ सुमित्त करि गणेश को गुह
चरनन सिर नाइ । सोकल चौथि को महिमा कहौ सुनहु चित लाइ । देहा राम
कृष्ण भ्रातन सहित सिय रुकिमिन । धिय धाम । बुधि बहावहु सकल मिलि प्रनि
पुनि करौ प्रनाम ॥ कथा कहौ गननाथ को पार उतारौ चोर । बुधि होन निज
जानि के सुमिरौ तनय समोर । युधिष्ठिरौ बाज । एक समय पूछत भये हरिहि
युधिष्ठिर ॥ सइ । पाह महा संकट परा जाइ सो कहिय उपा । सुनहु कृष्ण देवन
के देवा ॥ निगम सेष विविपावे न भेवा ॥ जैसे प्रभु तुम दोन दयाला । सदा बरौ
सेतन प्रतिपाला ॥ विपति हमारि चिह्न कहु स्वामी । कृपा सिबु उर धंतर जानी ।
कल कोन्हो दुरजोधन राजा । जोति लिये मोहि राज समाजा ॥ प्रभुज समेत
हुवति संग लाष । कानन फिरौ दुसह दुख पाये ॥ तेहि ते प्रभु बिनवौ कर
जोरो । केहि विधि पाइये राज बहोरो ॥ श्री कृष्णो वाच । कृष्ण कहा सुनहु
वाचन नरेसा । तब हित लागि कहौ उपदेसा । पूजहु गनपति कहं चित लाई ।
ओहि पूजे सब दुख मिटि जाई ॥

End:—यहि विधि बारह मास के पवत चाहि समुदाइ । विधि से पूजे
गनपति सकल व्याधि मिटि जाइ । यह सुनि धर्म तनै सिर नावा । धन्य कृष्ण यह
कथा सुनवा । यहि विधि कृष्ण कहा सो खेतो । तेहि विधि राजा कोन्हो धर्ति
प्रोतौ । गणपति को भइ कृपा अपारा । मारिसु कोन्हो पैकारा । सुप सो राज
महो पर कोन्हा । गणपति को महिमा लिखि दोन्हा । जो गणपति को वत चित
लावै । मन बांछित नह सेत फल पावै । रिधि सिधि धन धेनु अपारा । धरति धाम
सुत संपति दारा । जो यह कथा सुनै घर गावै । संतकाल सुपूर सुप पावै ॥
देहा ॥ गन नायक को कथा यह संस्कृत मध्य विमलता । जथा बुझि भाषा रचित
जइ मति मोतीलाल । इति श्री गणेश पूर्ण श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवाद गणेश
महात्मा वत कथा समाप्त ॥ शुभ मस्तु । संवत् १९०३ सत् १२५४ फसनी कार्तिक
मासे शुक्ल पक्षे तिथि पंचमी वार सनिवार दसवत भागोरध मुकाम चौपड़िया
पाथो रघुवर नाथ के श्री राम श्री जानुको सहाई गणेश जो सहाइ । श्री राम
श्री राम ॥

No. 283(a). Prarthana by Mōtirāma of Kāṭaila. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—3. Size—9½ x 5½
inches. Lines per page—16. Extent—25 Anuṣṭup Śloka.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Paṇḍita Gajādhara Maharāja, Village Nakajī, Post Office
Chulwāriā, District Bahārīch (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः

सर्वथा । गलिका गज गोध सजामिल भोर सधन रैदास धना कुवरो ।
 द्रुपदी भर दुल्ल कपोत सुगी नजराज को वार न देर करो ॥ जन मोतीराम
 कहै हरि सो हरि हो कहै ते सब को सुधरो । तब तो तुम देर करो न हरो अब
 काहे को देर करो हो हरो ॥ १ पहलाद को वार पिता सुत सो लखि बैर तुरंत
 भये नृहरो । ब्रज वासिन केरि पुकार सुनी नप धारि गोवर्धन दुख हरो ॥
 घघ वत्स बकासुर चोच धरो नृप कंस को मृत्यु न देर करो । तब तो तुम
 देर करो न हरो अब काहे को देर करो हो हरो ॥ अर्जुन के प्रभु साथी
 मय दुर्योधन सैन्य संघार करो ॥ मयुरा ममवाधिप गांठि लिए क्षण एक में
 सैन्य संघार करो ॥ द्विज दोन सुदामा को विपति हरी बलि सनुक बाहुक बृंद
 करो । तब तो तुम देर करो न हरो अब काहे को देर करो हो हरो ॥

End.—सिख चापक बण्ड करो क्षण में मिथिलाधिप को तनया यों
 वरो । मुगुराज को मान हरो नृहरो सब भूपन को सिर नख करो । कपि बालि
 को प्राण हरो कुल सो परद्रुपण को शत बंड करो । तब तो तुम देर करो न
 हरो अब काहे को देर करो हो हरो ॥ बलि भुप को भूमि हरो सगरी प्रभु वामन
 रूप तुरंत धरो । नप सो उकराइक भेद करो सब लोक कृतपित करो सुरसरो ।
 महि छोरि कै इन्द्रि दोन हरो उठि भारहि दर्शन को भगरी तब तो तुम
 देर..... ॥ बुध संकर नाथ को नास भयो वसुरंध कवित्त के जन्म भये से
 सब शत्रुन नाश करै पहवै हरिणी कृत संत सहाय पड़े से बंधुचा सब छूटि
 भये घर को जन मोतीराम को टेर कियते ॥ आठो सिद्धि नवौ निधि पावत
 पाठ कवित्त के पाठ कियते । इति श्री भट्टाचार्य मोतीराम नन्द रामात्मज जैन
 राम पुत्र मोतीराम कृत प्रार्थना संकट मोचन सम्पूर्णम् ॥

Subject.—विष्णु की स्तुति ।

No. 283(b). *Ramāṣṭaka* by Paṇḍita Mōtirāma Mībra.
 Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size— $5\frac{1}{4} \times 4$
 inches. Lines per page—12. Extent—25 Anuṣṭup Ślokas.
 Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition
 —Samvat 1894 or A. D. 1837. Date of Manuscript—Samvat
 1925 or A. D. 1868. Place of deposit—Paṇḍita Gokarna
 Nātha, Village Kudai, Post Office Fakarpur, District
 Bahraich (Oudh).

Beginning.—ओ गणेशायनमः हेराम राधव रमेश्वरदोन वधो ।
 लक्ष्मीपते दशरथात्मज सत्य संघ । ओ लक्ष्मणादि भरतादिक सेवितांघ्रे । सोता-
 पते अपि निधे कृपा कटाक्षम् ॥ १ ॥ हे गधि सुतु मम रक्षण ताड़कोर मारीच मर्दन

सुबाहु विनासि बाहौ । पापाण तारण विदारण राक्षसांना सोतापते मपि निवेदि
कृपा कटाक्षम् ॥ भनंत कंद जन कारन जानकोस प्रोचंष्ट शंभु धनुः मर्दन मूप-
तोक्ष । श्री जमदग्न्य मद भंजन हृष्ट जाते सोतापते मपि कृपा कटाक्षम् ।

End.—धातु पुष्पक सुपुष्प वृष्टे त्रलोक । मंगल सुभंग नाय कोत ।
संप्राप्त कौंसल सुकौंसल राज्य तीते । सोतापते मपि निवे कृपा कटाक्षम् श्री नन्द
नन्दन पद पव पुष्करीकं निर्धन्य रन्द मधु तुंदिनमात्रसेन रामाष्टक विरचितं
वामादरेण श्री योक्तिकेन कविना कवि नायकेन । इति श्री महाचार्य नन्दरामात्मज
चंदन राम पुत्र मोतोराम विरचिता रामाष्टकं सम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥

No. 284(c). Padmāvata by Malika Muhammad Jāyasi of Jāyas, District Rae Bareilly. Substance—Country-made paper. Leaves—318. Size—12½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—4,770 Anushtup Ślokaś. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1858 or A.D. 1801. Place of deposit—Mahanta Guru Prasāda, Hargaon, Post Office Parvatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning.—कोन्हेंसि पुरुष एक निरमला । नाम मुहम्मद पुरन कला ॥
प्रथम जोति विधि तेहि के साजो । उनहीं प्रथम सृष्टि उपराजो । दोपक लेसि
जनत कहं दोता । भानिरमल जगमारन चीन्हा । जो न सुहोत पुरुष उजियारा ।
सुम्नि न परत पंथ घंचियारा । और फिर घमल सुमारन लिपा । भय घरमो जिन
पारसा सिपा । जिन नहि लोन्ह जनम वर नाऊं । तिनकहं दोन्ह नरक मई ठाऊं ।
मति वसोत दोन दोइ कोन्हा । दोउ जग तरत नाम बहि लोन्हा ॥ दोहा ॥ गुन
बौगुन विधि पूछि हैं हुइ हैं लेपा जोष । पागे जे बिनबातिहि पावा गति मोष ॥
चोपाई ॥ चारिमति जो महमद ठाऊं । चारिहु के जग निरमल नाऊं । अवावक
सादोक सयाने । पहिले दोन पंथ के माने । दूजे उमर खिताब सुहाये । भा जग
अदल दोन जो आये । और उसमान भय पंडित गुनो । लिपा पुरान जो आपन
सुनो । चौथे अली सेर बरियाऊ । कांये घरती सरन पताऊ । चारों एक मते
इकवाता । एक और एक सेवाता । बचन एक एकन सुना जो सांचा । भा परि-
मान दुषो जग बांचा ॥ दो० ॥ जो पुरान विधि पठवा सोई पढ़त ग्रंथ । और जो
आवत भूले, सो सुनि पावत पंथ । सरन साह दिलो सुलतानू । चारिहु 'दे तपे
जस भानू । अस बहकाज काज घर पाठू । सब राजन मुंशिरा लिलाटू । जतो
सर और पांहे सरा । और बलिहीन मति सब विधि पुरा । सर घरर जो नौपड़
भाष । साठव दीप वोनइ वनप । जहं लगि राजपग बल लोन्हा । इस कंदर जुल

करन जु कोन्हा । हाथ सुलेमां केरि सेगुठी । जग को चोन्ह दोन्ह तेहि भूठी ।
 भूर पहार लहि सृष्टि सेवारी । अस वर साह पुहिम पतिमारी । देहि पमोस
 महम्मद जुग जुग भुजहुराज । पातसाइ तुम जग के जग तुम्हार मुहबाज । बरनहु
 सर पुहुम पतिराजा । भूमिन सहै भार जो साजा । x x सय्यद
 असरफ पोर पियारा । जिन मोहि दोन्ह पंथ उजियारा x x
 एक नयन कवि मुहमद गुनी । सो कवि मोहै जो कवि सुनी । x x
 चारि मोत कवि महमद पाये । जोरि मिताई सिर पहुँचाई । मलिक इसफ बड़
 पंडित भ्यानी । पहिले भेद बात उन जानी । पुनि सिलार काजो महिमाही ।
 खडग दान ऊम नित बाहा । मियां सलाने सिंह समानि । वोर खेत रन खरग
 जुभारे । सेप बड़े बड़ सिद्ध मठाना । करिषदेश सिद्ध बड़ माना । जारस नगर
 बरम प्रखानु । तब वासह कवि कोन्ह बखानु । कै.....

End.—एक पुरुष को एकहि थानु । एक चांद एकहि पुनि मानु । जो
 सब कर पर पुरुष यहै । एक ते एक रूप जा पुनि ताहीं । यह यह दीपक लेहु
 भ्याना । नाहीं तेल जरु अग्निमाना । पाँचहु मिलि के नाचहु ताहीं । आइ पुरान
 पूर्वतम जाहीं । जन्म मरन परहि जेहि थाता । वहि के रंग रहसि जो वाता ।
 नाहित जन्म जन्म पक्षिताहु । रहतिघरी अस फिरि फिरि जाहु । वास पाइ यह
 वाजनि भूलहु । करि करि कवधि देहि जन फूलहु ॥ दोहा ॥ सुख संवाद जनि
 भूलहु हृद है अन्त के कार । माहीं तो पक्षितार हैं वहि पाँचों करि द्वार । इति
 श्री पद्मावत कथा मलिक मुहम्मद कृत साधुरत शुभ मस्तु—जा इदं पुस्तकं
 पृष्ठाठावर्षं लिपि मया जदि शुद्धं शुद्धा वा मम दोषो न दीयते सम्वत् १८५८
 चैत्रमासे कृष्णपक्षे पंचमायाम् गुरु वासरे मद्वावत ग्रंथ सम्पूर्ण शुभमस्तु ।

Subject.—(१) पृ० १ से २४ तक—जन्म खंड । (२) पृष्ठ २५—२८ तक
 सरोवर खंड । (३) पृ० २९ से ३२ सूवा खंड । (४) पृ० ३३ से ४८ तक अंगार
 खंड । (५) पृ० ४९ से ६० तक जोगी खंड । (६) पृ० ६१ से ६४ तक पयान खंड ।
 (७) पृ० ६५ से ६६ तक गजपति खंड । (८) पृ० ६६ से ८६ तक वसंत खंड ।
 (९) पृ० ८७ से ९६ तक सेना खंड । (१०) पृ० ९६ से १०२ तक वसोत खंड ।
 (११) पृ० १०३ से १३० तक विवाह खंड । (१२) वीराहर खंड पृ० १३० से १३६
 तक । (१३) पृ० १३७—१५६ तक बारह मास पदुम । बारह मासा—१५६ से
 १६० तक—(१५) पृ० १६१ १७८ तक—जोगिनो चक्र खंड । १६० से २०८ रावौ
 चेतन खंड । (१७) पृ० २०८ से ३१८ तक सम्पूर्ण युद्धादि वखैन सहित पृ०
 ३१८ तक

No. 284(b). Padamāvati Kathā by Muhammad. Sub-
 stance—Country-made paper. Leaves—160. Size—11½ x 7

inches. Lines per page—40. Extant—5,600 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—1275 Fasali or 1858 A. D. Place of deposit—Kunja Bihari, Bihata, Rae Bareilly.

Beginning.—श्री गणेशायनमः यद्य पोथी पदुमावती लिख्यते ।

चौपाई ॥ सवरो चादि एक करताऊ—जेह जिवदीन्ह कोन्ह संसार कोन्हिसि वृथवी जाति प्रगास—कोन्हिसि नव पर्वत केलास कोन्हिसि धमिनि पवन जल पेहा—कोन्हिसि बहु तरंग पो रेहा कोन्हिसि धरनी सरग पतार—कोन्हिसि बरन बरन मोताऊ कोन्हिसि स्याम सेत वझाँडा—कोन्ह सुवन चौदह नव पंडा कोन्हिसि दिन दिनकर ससि रातो—कोन्हिसि नषत तराइन पांती कोन्हिसि धूप सोत भर झाडा—कोन्हिसि मेघ बीज जेहि मांहा कोन्ह सवै प्रस जाहिकर दुसरेह छात्र काइ पहिले दइउ नाँडलै कथा करौ परगाह ॥

End.—एक पुरुष के एकै धानू—एक चाँद एकै पुनि मानू जो सब कर पर पुरुष आही—एकते कर पूजा पुनि ताही ब्रह्मह दोपक लेसहु म्याना—नाहीं तेल जाउ अभिमाना पाँचहु मिलि कै नाचहु ताहाँ—आइ पुरान पुरुष तम जाहाँ जनम मरन परै जेहि वाता—बहि के रंग रहसि जो राता नाहि तो जन्म जन्म पक्षिताह—रह रह धरो धस फिरि फिरि जाहू बास पाइ इहु बाजनि भुलहु—करि करि कवच देहि जनि फूलहु सुष संवाद जलि भुलहु हो इहि संत वेकार—नाहीं तो पक्षिताउ है । बहि पाँचा कर कार । इति श्री कथा पदुमावती सप्तमं सुम मितो भादो वदो १३ सन १२७५ साल ।

No. 285, Bhāwara-gita by Mukunda. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—9. Extant—190 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1906 or A. D. 1849. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A. D. 1849. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaprapanna Malaviya Vaidya, Sultānpur (Oudh).

Beginning.—ऊँ श्री कौ उपदेश सुनहु ब्रजनामरी । रूप सोन लावन्य सवै गुन धामरी ॥ मेम सुबा रस रूपनी, उपजावत सुख पूज । सुंदर स्याम विलासिनी नव वृंदावन कुंज ॥ सुनौ ब्रज नामरी ॥ १ ॥ कहौ स्याम सदेस एक मै तुम प लायौ । कहन समै संकेत कहौ भोसरहि (न) पायौ ॥ सोचत हो मन मे रखाँ कव पाऊँ एक ठाउँ । दै संदेस नंदलाल कौ बहुरि मधुपुरी जाउँ ॥ सुनौ ब्रज

नागरी ॥ २ ॥ सुनत स्याम को नाम ग्राम ग्रह को सुधि भूलो । भरि सानन्द रस
हृदो प्रेम बेलो इग फूलो ॥ पुलकि रोम सब चङ्क भये भरि चाये जल नैन । कंठ
छुटे गठगठ गिरा बोले जात न बैन ॥ ३ ॥ विवस्था प्रेम की ॥

End.—सुनत सखा के बैन नैन भरि चाये दोऊ । विवध प्रेम आवेस रहा
नाहिन सुधि कोऊ ॥ रोम रोम प्रति गोपिका डूँ गई सामरे गात । कल्य तरोबर
सामरौ बज्र बनिता भई पात ॥ उलहि सब संग संग तै ॥ ७३ ॥ है सचेत कहि
भले सखा पठयो सुधि लावन औगुन हमरे प्राणि तहाँते लगे दिखावन ॥ मो मैं
उन में अंतराय एकौ छिन भर नहि । ज्यों देखो मो मांभि वे त्यो मैं उनहो मांहि ॥
तरंग बारि ज्यों ॥ ७४ ॥ गोपी भाव दिखाव एक करि कँ बनमाली । ऊँचो कौ
मर्म निवारि प्रामोद को जाली ॥ अपनौ रूप दिखाय के लीनौ बहुरि दुराय ।
जन मुकुंद पावन मयौ सो यह लोला बाय ॥ प्रेम रस पुंजनी ॥ ७५ ॥ इति श्री
भवर भोत संपूर्णम् ॥ संवत् १९०६ ॥ मिति कार वदि ॥ ६ ॥

Subject.—(१) पृ० १—८ तक—उद्धव तथा वृज बनिताद्यों के प्रभोत्तर-
उद्धव का जोग तथा निराकार वसन, सबियों का प्रेम ॥

(२) पृ० ९—१२ तक—गोपिकाओं का ध्यानावस्थित होकर उन्माद को
सो दशा दिखाना और कृष्ण को उपालम्भ देना ।

(३) पृ० १३—१६ तक—एक समर आगमन, उससे गोपियों का उलाहना
देना और डाट डपट करना ।

(४) पृ० १७—२० तक—गोपियों का एक दम मिल कर रुदन करना, उद्धव
का प्रेम में निमग्न होना तथा जाकर कृष्ण को समझाना । कृष्ण के प्रेम पूर्ण
नेत्रों से पशु निकलना । उद्धव को गोपियों का तथा अपना एक रूप दिखा कर
कृष्ण का प्रेम निवारण करना । ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 286. Raghunātha Śataka by Paṇḍita Munnālāla.
Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—9×6½
inches. Lines per page—16. Extent—580 Anuṣṭup Ślokaś.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—
Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Paṇḍita Rāma-
jīyāwanā Lāla, Village Daulatapura, Post Office Bilaharā,
(Bārā Bankī).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सानन्द कंद रघुनन्दनाय नमः ॥
देहा ॥ विधि हरि हर जाके सदा जपत रहत हैं नाम । बसहु निरंतर मोहि मैं
सिया सहित सो राम ॥ १ ॥ सिया राम के चरन हैं करन सकल सुद मूल ।

कंज बरन बसरन सरन सुपमा भरे अतूल ॥ २ ॥ ए मेरे मन मधुप तू तौ तिहि से
कर प्रेम । सो कर हित सब लोक में जो चाहत निज छेम ॥ ३ ॥ सरनागत
वत्सल नहीं ऐसो नायक और । ताते रघुनाथ कहि भजु सुखदायक सिर मौर ॥ ४ ॥
समाधान कवि कृत ललित लक्ष्मिन शतक निहारि । ताहि सोधि मुद्रित
कियो परम विचित्र विचारि ॥ ५ ॥ भई लालसा चित्त में ऐसई शक्तिराम ।
करहु शतक रघुनाथ को रसकनि को सुखधाम ॥ ६ ॥ जिन्हें सुनत रघुनाथ में
उपजै प्रावन प्रीति । सत कवित्त ऐसे धरों तामें सुगम सुरीति ॥ ७ ॥ तब कवित्त
सत कविन के लै द्विज मुन्नालाल । करत शतक रघुनाथ को सुखदायक सब
काल ॥ ८ ॥

End.—प्रथम सवैया—यह काजहि में पगिबो धतिहो यह तौन भले जनको
मगु है । सुत दारिनि में भरिबो धति नेह भुजंगम पै धरिबो पग है ॥ हनुमान कहै
भव सागर के तरिबे को या मेरो कहो डगहै । जपनो कर राम सिया घर को
घपनो न कोऊ सपनो जग है ॥ ५ ॥ सत संगति का कैरिके मन ते दूर बुद्धि के
भाव भगावने है । गुरु जे उपदेश कियो तिनको कहु बैठि इकंत जगावने हैं ॥
हनुमान जिते कहै बैन तिते झल छन्दन के नहि भावने हैं । विषयादिक सो रति
में न चहौ रघुवीर में प्रेम लगावने हैं ॥ ६ ॥ या जग जीवन का दे यहै फल जो
झल छांड़ि भजै रघुराई । सोधिको सतत संतन हू पदमाकर बात यहै ठहराई ॥
कै रहै होनो प्रयास विना अनहोनो न कै सकै कोटि उपाई ॥ जो विवि भाल में
लोक लिखी सु बड़ाई वढ़ै न घटै हू घटाई ॥ ७ ॥

वैस विसासिन जाति यही उमहो छिन हो छिन गंग को धार सो ।

ह्यो पदमाकर पैलनियां घजहू न भजै दसरथ कुमार सो ॥

वार पके थके भंग सबै मड़ि मोच गयेही परो इरि हार सो ।

देखै दशा किन आपनो तू प्रथ हाथ के कंकन को कहा धारसो ॥ ८ ॥

x

x

x

x

x

x

x

x

इति श्री हरनाथात्मज पंडित मन्नालाल कृत रघुनाथ शतक संपन्न समाप्त
प्राय कृष्ण दशम्या १० शनै संवत् १९३१ ।

Subject.—(१) पृ० १—१६ तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण हेतु तथा
उद्देश, रामजन्म, राम बाल कोड़ा, घृणया वनेन, धनुष यज्ञ, जनकपुर की
छियों के मुख से राम की सुंदरता तथा उनके समीप भाइयों की शरीर सुपमा
का वनेन—राजकुमारों के बस्त्राभूषण तथा भंगरागादि का वनेन । धनुष भंग
के समय राम की छवि का वनेन ।

(२) पृ० १७—३४ तक—रावण से वनुष न हट सकने का कथन, वनुष भंग होने का वखन : राम द्वारा की गई कुछ यश-वातायो का वखन । राम की विविध कवियों द्वारा गई हुई विरुदावली ॥

No. 287. Jñānachandrodāya (Dōhā Vishṇupada) by Śrī Murlidhara Jaduvamśi of Barasānā. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—6½ x 3½ inches. Lines per page—5. Extent—66 Anushtup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1812 Samvat or 1755 A.D. Place of deposit—Pandita Lakshman Prasādaī, Village Bhiyā Mau, Post Office Haidargarah, District Barabanki.

Beginning.—श्री लाड़ली जी सहाय । अथ बरसाने के विष्णु पद और दोहा लिख्यते । शीर समुद्र वैकुण्ठ में वेद कहत निज धाम । सो में देख्यो जाइ के बरसाने विग्राम ॥ १ ॥ राम सागरी-विष्णु पद । परवत पर राजत श्री ठकुरानी । नंद नंदन ललितादिक बनिता दरसन रहत लुमानो ॥ निदत सरदचंद मुख शोभा रतिहू रहत लज्जानो । नैक कोर की कृपा कोजिये मुरली करत बखानो ॥ २ ॥

End.—अथ ठाकुर ठकुरानी को सेज पर उठि बैठियो बखैन ॥ राम विभास ॥ विष्णु पद ॥ आबु दाउ शीमित है चलसाने ॥ कमल नैन पर मुकुलित देखियतु भ्रमर रहत भ्रमसाने ॥ काक पक्ष विगलित पलकावलि करि नहि सकत पयाने ॥ मुरलीधर मुखशोभा ऊपर मथो विभास हरबाने ॥ २० ॥ अथ पात बखैन । विष्णु पद ॥ पात समय राधा हरि राजत ॥ धूँधट में मन मध मनु बैठ्यो यान कटाक्षन साजत ॥ जंचल चारु नैन ता भीतर युबल मोन लागि लाजत ॥ मुरलीधर विभास पलाय्यो मंद मंद धुनि धाजत २२ ॥ अथ विष्णु पद दो दोहा बखैन ॥ दोहा ॥ प्रेम द्विविधति २२ मानु पति चित्त में होत प्रकाश । रोहि समुक्ति नर कहत हो अघ तम होत विनाश ॥ २३ ॥ इति श्री ग्राम बरसाने वासी यदुवंशावतंश श्री मुरलीधर विरचित्तायां ज्ञान चन्द्रोदय दोहा विष्णु पद समाप्त शुभ मस्तु ॥ अक्षि चन्द्र वसु चन्द्र १८१२ पुनि संवत्सर परिमान ॥ एकादशो कुजवार को कोन्हो प्रेम बखान ॥ २४ ॥

Subject.—(१) पृ० १—बरसाने की प्रशंसा और लाड़ली जी की वन्दना । (२) पृ० २ से पृ० ३ तक—कुंवर लड़ैतो के बरसाने का वखन । (३) पृ० ४—संकट से कदम खंडो और पाहर खंडो में होकर गह्वर में जाना—सखी का मनोरथ बखैन । (४) पृ० ५—अथ लाल की ललिता में सखी

भाव का लोला हाव बर्णन । (५) पृ० ६—७ तक—पूर्वाराधन से लेकर विमल तक ठाकुर और ठाकुरानो प्रकटे गहवर वन को गये तहाँ सबियों के जाने का बर्णन । (६) पृ० ७—९ तक—गहवर से राधा हरि के मंदिर के जाने का बर्णन । (७) पृ० ९—१० तक—बरसाने की घाटों का बर्णन । (८) पृ० ११—१३ तक—भगवान के मंदिर में सुशोभित होने का बर्णन । (९) पृ० १३—१४ तक—लाड़िली की प्रीति का बर्णन । (१०) पृ० १४—१५ तक—लाल, लाड़िली का शयन बर्णन । (११) पृ० १६—१७ तक—सखी ठाकुर के उठाने का बर्णन । (१२) पृ० १७—१८ तक—प्रभात बर्णन । (१३) पृ० १९—२० तक—देहा विष्णु पद ।

No. 288(a). Nakha-sikha by Muralidhara Miśra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size— $8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नमः शिष्य लिख्यते ॥ कोटि कोटि दामिन को दुर्गत देखि वारि पति संवराई वारि पत कोटि घन घोर को । जटित जराइ टोकै सोइतु लिलाट नौकै तैसे चारु चन्दिका विराजै माधे मोर को ॥ तिहु लोक धामा संग संगनि जगमगाति मुरलोधर तैसिये चित्तानि चित चोर को ॥ कुंज के सदन सुख सरस बरसावत हैं बलि बलि जैये पेसे जुगल किसोर को ॥ १ ॥

तीन लोक ठाकुर सदा दुलह नंद कुमार ।

दुलहिन रानी राधिका नमः शिष्य पोष खपार ॥ २ ॥

जाप रहै सब जगत् में जिनकौ जुगल स्वरूप ।

बुद्धावन कोड़ा करत सदा सनातन रूप ॥ ३ ॥

End.—धन्य भाग वज्र के जहाँ लोबै दुहिन पबतार ।

जगत् कृतारथ कौ कियौ जिनिके प्रेम प्रकार ॥ ६० ॥

यह नमः शिष्य पोष्यो रचौ मुरलोधर सुख कारि ।

भूल्यो हैंह जहाँ कछु लोको सुकवि सुधारि ॥ ६१ ॥

इति श्री मिश्र मुरलोधर विरचिते नमः शिष्य संग्रहम् ॥ संवत् १९०२ कार्तिक कृष्ण १३ भौमवार शुभम् भवतु लिपित गोविन्द राम पठनार्थम् ॥ शुभं ॥

Subject.—कं० १—७ तक सुंदरता बर्णन—कंद ८—१३ संयुली भू बर्णन । पड़ो, पिंडुरो, जंघा, नितंब, कटि बर्णन ॥ कं० १४—२७ तक पीठ, उदर,

उरोज, कंबुको, कर, कुच, मेहदोयुत कर भुज, घोव, चिबुक, ढोढो तिल, कपोल वखेत । कुं० २८—४१ तक—कपोल, घघर, दशन, रसना, मुसक्यान, मुख, नासिका, नय, नेत्र, बहनो वखेत, कुं०—४२—५२ भूकुटो, माल, अवल, केश, मांग, बंदन, पाटी, बेनी, सर्वांग, भूषण, कुं० ५३—६१ तक । शृंगार रस चेष्टा, सहज शृंगार, स्वरूप, ऐश्वर्य—

No. 288(b). Piṅgala Piyūsha by Muralidharā Mīśra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size— $8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—26. Extent—1,040 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1813 or A.D. 1756. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Paṇḍita Badarinātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥

रघुवर पद पंकज सुमिरि मनपति के गुन गाइ ।

कह्यो चहत पिंगल कहू सेसों को मत पाइ ॥ १ ॥

मत्त वरन के कुंद को सोहत सिंधु अपार ।

धांस सेस जिन पैरि के पायौ याको पार ॥ २ ॥

बड़े बड़े सरकविन के सुनि सुनि विविध विचार ।

मुरलोवर कुंदनि रचत अपनी मति अनुसार ॥ ३ ॥

विविध भांति के कुंद ते गुरु लखुही ते होत ।

याते लक्षन दुहुनि के पहिले करत उद्देत ॥ ४ ॥

वक देखते गुरु लखौ सुखी ते लखु जानि ।

इनिके कहतु स्वरूप अब पिंगल को मतु मानि ॥ ५ ॥

End.—विधि ससि वसु ससि में लपौ संवत पौष सुमास ।

शुक्लपक्ष नवमो गुरौ कोनी ग्रंथ प्रकाश ॥ ८५ ॥

बहुत करो मैं चाकरी अब सेवतु रघुनाथ ।

बड़े सुख सब लेत है पालत सब के साथ ॥ ८६ ॥

यह पियूष पिंगल रच्यौ कृपा पाइ रघुनाथ ।

लौजो सुकवि सुचारि के कहतु जोरि के हाथ ॥ ८७ ॥

इति श्री मिश्र मुरलोवर विरचितं पिंगल पियूष ग्रंथ समाप्तं ॥ संवत १९०३ ॥
कार्तिक कृष्ण नवमो ९ शुक्ल वासरे लिखो गोविंद राम शुभमस्तु ॥

Subject.—पृ० १-८ तक कंद को प्रशंसा, मात्रा, गण वर्णन, प्रस्ताव विधि, गणमैत्री, मेरु, मकंदो, पताका आदि वर्णन—पृ० ९—१७ गाढ़, गाढ़ा, गाढ़ा भेद, विगाढ़ा, गाढ़िनो, साढ़िनो, दोहा, दोला, समेद, कंद, चौपैवा, उड्डाला,—पृ० १८—३४ कृष्ण भेद, गंगनान आदि, मद्, मधुमार आदि पृ० ३५—७८ तक, बसंतवृत्त, चुरामणि, चित्रपदा, मानवक, दीपक माना आदि तक—वंश वर्णन, संवत् आदि पृ० ७९—८० तक ।

No. 288(c). *Rasa Saṅgraha* by Muralidhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size— $8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—1,120 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date. of Composition—Samvat 1819 or A.D. 1762. Date of Manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Thakura Jadunātha Baksha Simhaji, Hariharapura, District Baharāich.

Beginning—श्री मलेशायनमः ॥ अथ रस संग्रह लिख्यते ॥ सवैया ॥
संकर के सब लाइक है सुख दायक है सुमिरौ गुन तेरे । कोजै कृपा करिकै
इतनो बुधिधानो मैं होहि विलास घनेरे । विद्व विनासन है तुमहीं मुरलीधर
काजकरौ बहुतेरे । चाहत है रस ग्रंथ रच्यो गणनायक होहु सहायक मेरे ॥ १ ॥

दोहा ॥ पहिले मैं नव रसनि के गाने कवित बनाइ ।

तिनको अब संग्रह करतु मनपति सोस नवाइ ॥

रस कहियतु है वल्ल को व्यापि रहौ सख ठौर ।

नौ प्रकार सो जानियो कहत सुकवि सिर मौर ॥

प्रथम नाम सिंगार है दूजो हास गनाइ ।

तीजो कठना कहते हैं चौथो रुद्र सुमाइ ॥

पुनि है वीर सु पांचमो, षट् वीरस बखान ।

भय को सतषो समुझिये अठषो अद्भुत मान ॥ ५ ॥

End.—नौह रस के कवित को समुझि हिए समुदाय ।

रस संग्रह या ग्रंथ को धरौ नाम कविगाय ॥ ३३ ॥

जो काऊ या ग्रंथ को पढ़े सुनै चितलाइ ।

ताके मन में रस भलक भलकत है कलु आइ ॥ ३४ ॥

गुण वसु मसि भंकनि लखौ संवत फागुन मास ।

असित पक्ष दसमो होवौ कोनो ग्रंथ प्रकास ॥ ३५ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते रस संग्रह ग्रंथे सति सा सप्त संपूर्णैः चैव
मासिकेण पक्षे तिथौ एकादस्यां सोम वासरे संवत् १८६२ ॥ लिपि विडलायन
मुद्रा शुभं भूयात् ॥

Subject.—पृ० १—६ तक गणेशवन्दना, ग्रंथ निर्माण, रस वखैन, शृंगार
वखैन, इली, लीला वखैन ।

पृ० ७—८ तक विवाह समय वखैन । तोज लोहारी, दिवारी, वसंत, हारी,
चांदनी आशिर्वादादि, संयोग शृंगार

पृ० ९—२२ तक वियोग शृंगार, पूर्वानुराग, उपालंब मान, रसामास,
घोरा, घोराघोरा, सखीकर्म कथन, हास्य, दूतकर्म, कदण विरह, उत्कण्ठिता,
कलहंतरिता, वासकमजा, दशा, अभिलाष, भ्रूति, गुण, उद्देग, प्रलाप उन्माद,
व्याधि, जड़ता, पाती, संदेस, वात्सल्य ।

पृ० २३—२४ तक हान रस कथन, स्वनिष्ठ लक्षणादि, परनिष्ठ ।

पृ० २५—२६ तक कहणा रस कथन, स्वनिष्ठ पर निष्ठ कथन ।

पृ० २७—२९ तक रौद्र रस ।

पृ० ३०—३२ तक घोर रस वखैन, युद्धघोर, दानघोर, कीर्ति वखैन, जस,
देशरथ दान, दयाघोर

पृ० ३३—३४ तक भोगरस रस वखैन ।

पृ० ३५—३६ तक भगनरस रस वखैन पृ० ३७—३८, तक अदभुतरस वखैन ।

पृ० ३९—५६ तक शक्तिरस, स्तुति वखैन, अमुना, मधुरा, शिव, गंगा,
कयोध्या मवानो, सूर्य, काशी, सरयु, रचना वखैन ।

No. 288(d). *Rasa Saṅgraha* by Muralidhara Miśra. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—83. Size—13 x 6 inches.
Lines per page—12. Extent—1,000 Anuṣṭup Ślokas. Appear-
ance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—
Samvat 1820 or 1763 A.D. Date of Manuscript—Samvat
1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Mahārāja Rājendra
Bahādur Siṃha Bhingārāja, Bahrāich (Oudh).

Note.—ग्रंथ संव No. 288 (c) के अनुसार है ।

No. 289(a). *Aṣṭayāma* by Nābhā Dāsa. Substance—
Country-made paper. Leaves—175. Size— $\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches.
Lines per page—7. Extent—941 Anuṣṭup Ślokas. Appear-
ance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—

Samvat 1890 or A.D. 1833. Place of deposit—Lālā Rāmādhina Vaidya, Barābankī.

Beginning.—श्री ज्ञानकी ब्रह्मभयनमः ॥ सारठा ॥ राम कृपा को रूप
बंदै श्री अन्नपद ॥ जिनको सुजस अनूप दशधा सम्पति धनद जिमि ॥ १ ॥ दाहा ॥
सिय पिय को सन्धिक चरित कहत सुकवि सकुचात । तहं सम्पति अति अगम
लपि किन किन अधिक सकात ॥ २ ॥ नित्य श्री नृप मंदली अवधि अखंड विहार ॥
ज्येहि नैवत चहुंघोर नित प्रभुके सब अवतार ॥ ३ ॥ जानकि बहम लाल को
जीवनधन यहि धाम ॥ द्वादस रस लोला अमित गुन समूह विश्राम ॥ ४ ॥ कहै
प्रगट प्रामर्श अति कहुं संयोग वियोग ॥ जुगल संधि माधुके रति नित्य दिव्य
सुख भोग ॥ ५ ॥ सजन उर प्रेरित गिरा रघुवर पाशा दीन ॥ सोवल मन अवलम्ब
लहि वचन शोश धरि लोन ॥ ६ ॥

End.—(बरवा) सधि सुपना सुष सागर सुंदर सोह । राम कुंवर अनुहरि
या लपेट न कोइ ॥ १ ॥ मंद मंद मुख बिहसनि मधुर सुबोल ॥ राम कुंवर चित-
वनिर्वा लोन्हेउ माल ॥ २ ॥ बिनु देखे दोउ अषियां अति अकुलाहि । तलफट मोर
जियरवा निकसत नाहि ॥ ३ ॥ हा रघुनंदन चंदन सौतल भंग ॥ बिकल बाल
विरहिनियां बिन पिय संग ॥ ४ ॥ सधिमन मोहन सोहन जोहन जोग ॥ छोहन
जियत जियरवा भासिन भोग ॥ ५ ॥ ललित भंग सुष आमाहि नामहि देहु ॥
पोतमलाल पियरवा यह जसु लेहु ॥ ६ ॥

x	x	x	x	x
x	x	x	x	x

सधि हम राम कुंवर कहैं तन मन दीन ॥ सुर नर मुनि सब देखत हंसि हंसि
लोन ॥ १२ ॥ संवत् १८९० ॥ मिति अषाढ़ शुक्ल द्वितीयां ॥ बुध वासरे समाप्त ॥
दाहा ॥ श्री अन्न सागर सागर सुमनि नामा अलि रसलोन । अष्टजाम सिवनाम
गुन जलधि कोन मन मोन ॥

Subject.—(१) पृ० १—१९ तक—गुरु वन्दना प्रस्तावना, कवि का नाम
निर्देश—सारठा ॥ नामा श्री गुरुदान सहचर अन्न कृपाल को । विहार सकल
विलास, जगत विदित सिय सहचर ॥ सोठा जो की वन्दना, अवधि को शोभा
का वखन, उसके वैभव का वखन, चार दरवाजों का वखन, साकेत की सीमा,
द्वादश बन वखन, बने को शोभा, नगर के तीन चौर सूर्य का वरसन, परिखा
तथा कोट की शोभा, सिंह पौरादि शोभा, सिंह पौर के हाथी घोड़े इत्यादि
का वखन, मान वखन, कोट के भीतर के पांच चौको का वखन, रानियों के
महलों की शोभा, राज पुत्र तथा इनकी स्त्रियों के निवास अवरों का वखन ।

(२) पृ० २०—४० तक—रानियों के समाज में तिरहुत से आये हुए पत्र का
सानव पाठ । चार दंड रजनों अवशेष खनै पर बन्दोबस्तादि का आगमन । राम

को सखियों का माया कर जगाना, राम के पलंगदि को शोभा, जल पानों का बर्सेन, सखियों का मजरा तथा गंधादि पदार्थ लाना, स्नानागार इत्यादि को शोभा—एक अन्तरंग का जा कर राम को जगाना, जगने पर सति चिन्हों को मिटा कर प्रगट होना । नित्य कृत्य से निश्चित हो स्नान करना, हास्य विलास पश्चात् महलों से चल देना ।

(३) पृ० ४१—५६ तक—भारतों को दान देना । सखियों का भारती उतारना, सखायों का मिलन, नगर वासिनियों का घटारियों पर चढ़ कर राम को शोभा दिखाना । सब सातादि के साथ राम का बैठना, उधर ओ सीता जी के यहाँ सम्पूर्ण सखियों का आगमन, परस्पर का प्रेम व्यवहार । प्रातःकाल को भारती । सखियों का अपने इच्छानुसार राम के चंगा को देख कर संतुष्ट रहना, स्नान को गमन ।

(४) पृ० ५७—६६ तक—प्रत्येक राजकुमार का अपने अपने स्नान के स्थानों में जा कर स्नान करना, सखियों को केलि, स्नान पश्चात् मुनियों का आशिर्वाद देना, दान इत्यादि, महलों को जाना ।

(५) पृ० ६७—७० तक—महलों में आकर सखियों द्वारा शृंगार । सबरे के भोजन का बर्सेन । सखियों का नान । एक वाम गत लख कर प्रेतपुर के द्वार पर कुछ क्षण व्यतीत करना ।

(६) पृ० ७०—९१ तक—भोजन—नाना प्रकार के पुरी पकवान तथा अन्नादि का बर्सेन, दम्पति का भोजनों के साथ साथ हास विलास, चन्द्रकला का तिरहुत के पत्र का बर्सेन करना, सखियों का भोजन, पानों की बीड़ों परस्पर खिलाना । राम का शयन करने के लिये जाना । नाना भाँति के वाद्यादि सहित गान, सोना, सखियों की परस्पर को केलि, राम का उठना ।

(७) पृ० ९२—१३३ तक—राम समा गमन । पिता का माता, मंत्रियों इत्यादि के साथ व्यवहार के विषय में पूछना, खेलने को आज्ञा पा कर जाना, शिकार का बर्सेन, अवध की बौधिकाओं में राम के शुभागमन पर स्वागत, वान में जाकर फलादि पदार्थ भोजन, लक्ष्मणादि का घोड़ों को फेरना, घुमते आते सिंह द्वार पर आगमन, वहाँ से सभी को विदा करना, सब माताओं से मिलना, पतंग उड़ाना, संख्या सम्प्रदाय सबको विदा कर संख्या बंदन करना ।

(८) पृ० १३४—१५५ तक—सीता के यहाँ गुरु नारियों का आगमन, सीता का उनको सुधूषा करना, सीता का सासुरों के पास जाना, छोटते समय बीच में पड़ने वाले स्थानों को तथा पान को शोभा का बर्सेन, ऋतुओं का बर्सेन ।

रस मेजरी द्वारा दम्पति का शृंगार । अर्द्धरात्रि पश्चात् केलि बर्णन । द्वादश हाव बर्णन । नृत्यशाला का वर्णन ।

(९) पृ० १५६—१७० तक—हिंडोले का वर्णन । सोने के लिये पलंग का सजाया जाना । घंघ्रामरणादि का संभाला जाना । परदा डाल देना । सखियों का गान । गुरु का परिचय ।

(१) श्री अग्रदेव गुरु कृपातें बाढ़ी नवरास बेलि । चढ़ी लड़ै तो लाल कृवि फूलो नवन सुकेलि ॥

काल कुंज की शोभा—

(२) श्री अग्रदेव करना करी सिय पद नेह बढ़ाय × × × ×
ग्रंथ समाप्ति ।

(१०) पृ० १७१—१७२ तक—अग्रमुमति का वंश ।

(११) पृ० १७३—१७५ तक—उपसंहार ।

Note—गुरु वंश वर्णन ।

श्री रामनंद रघुनाथ ज्यो कियो सेतु विस्तार । तेहि चढ़ि नर भव सिंधु तरि पहुँचहि हरि दरवार । तामु शिष्य घंष्टांग विट नाम अनंतानंद । ज्ञान भक्ति वैराग्य निधि गुरुकुल कैरव चंद ।

चौ०—श्री कृष्णदास अवतार मुहावन । तेहि के घर मुमति जन पावन ॥ तेहि के विमल विनोदी जानौ ॥ तेहिते ज्ञान दास सनमानौ ॥ चरनदास मंगल गुनवानौ ॥ सिय पद वाल कृष्ण रति मानौ ॥ श्रीसुधरामदास तेहि करे ॥ रत्निक राम सेवक प्रभु करे ॥ केसव कुंज सिया वर दासा ॥ श्री ज्ञानकी शरण सिय आसा ॥ सहजराज सियराम दूजो । जुगलचरण रति मति प्रति पूरो ॥ अग्र मुमति को वंस उदार ॥ अली भाव रति जुगल विहार ॥ जानकि बहम देकनाल की ॥ जै जै जै सिय विदित बालकी ॥

No. 289(b). Bhaktamāla by Nārāyaṇadāsa (Nabhādāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—14×7 inches. Lines per page—24. Extent—1,620 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Sarjūprasāda, Village Mahra, Post Office Matera, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—अथ मूल भक्तमाल नारायण दास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥
भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुरनाम वप्र एक । इनके पद वंदन करत नासै चिन्तन
चनेक ॥ मंगल आदि विचारि कै वस्तुन और अनुप । हरिजन को जस गावते हरिजन
मंगल रूप ॥ सब संतन निरनै कियो मति भुति पुरान इतिहास । भजिवै को दोऊ
सुघर है कै हरि हरि के सोस ॥ श्री गुरु घनदेव आजा दर्द भक्तन को जस गाव ।
भवसागर के तरन को नाहिन आन उपाव ॥ कृप्य ॥ जय जय मोन बराह कमठ
नरहरि बलि बावन परसराम रघुवीर कृष्ण कोरति जगपावन ॥ बुध कलंक
आस प्रभु हरि हंस मध्वंतर । जय रायम भयप्रोव ध्रुव प्रदैन धनवंतर ॥ बद्री
पति हत कपिलदेव सनकादि कटना करै । चौबोस रूप लीला हरि ओ भक्त-
दास यह उरघरै ॥ चरन चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहाइका मंकुस खंवर
कुलिस कमल जय ध्वजा धेनु पद । संप चक्र स्वास्तिक जंबुफल कलस सुधाहृद ॥
अर्धचन्द्र षट्कोन मोनविंदु उर्ध्वरेषा ॥ षष्ट कोन त्रयकोन इन्द्र धनुष पुरुष विशेषा ॥
सोता पति पद नित वसत पतै मंगल दायका । चरन्ह चिन्ह रघुवीर के संतन
सदा सहायका ।

End.—फल अस्तुति साधो ॥ पादप पेड़हि सौंचते पावै संग संग पाप ।
पूरव जात्यो वरनते सब मानियो संतोष ॥ भक्त जिते भूलोक में कये कौन पै जाय ।
समुद्रपान श्रद्धा करै कहा तिरिया पेट समाय ॥ श्री मूरति सब वैष्णव जघु दीरघ
गुनन घगालु ॥ पागे पाछे वरनतै जिन मानौ अपराध ॥ फलको सोमा लाभतरु
सोमा फल होय गुरु सिष्य को कोरति में अचरज नाही कोय ॥ चारजुगन में
भक्त जे तिनको पद को धूरि सर्वसु सिर धरि राषिड़ां मेरो जीवन मूरि ॥ जग
कोरति मंगल उदै बीने वाष नसाय । हरि जन को गुन वरनते हरि हृदय फटल
वसाय ॥ हरिजन को गुन वरनते जो करै असुया भाव वहां उधार बाढ़ै विधा
अरु पालोक नसाय ॥ भक्तदास संघट करै कथन श्रवण अनुमोद सो प्रभु को
प्यारो पुत्र ज्यों बैठे हरि को गोद ॥ अच्युत कुल जस एक वेर है जाको मति
अनुरागो । उनको भक्ति भजन सुकृति को निश्चय होय विभागो ॥ भक्त दास जिन
जिन कथो तिनको जूठनि पाय । सो मति सासु पक्षर द्वै कोना सिलौ बनाय ॥
काहुँ को बल जोग जज्ञ कुल करनी को आस भक्त नाम माला शगर उर बस्यो
नारायणदास ॥ इति श्री भक्तमाल मूल श्री नारायणदास कृत समाप्त इति श्री मूल
भक्तमाल नारायणदास कृत लिख्यते प्रयोग्यापसाद महरू ग्राम संवत् १९१६
पमावस्या वैशाख मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे ।

Subject.—नामादास कृत मूल भक्तमाल का कंदानुवाद

No. 289(c). Rāmācharitra by Nārāyaṇadāsa (Nābhādāsa).

Substance.—Country-made paper. Leaves—21. Size—15 × 4

inches. Lines per page—20. Extent—472 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1914 or A.D. 1587. Place of deposit—Thākura Jagadeva Simha, Village Gujauli, Post Office Bauni, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—बहु प्रति कामल बिछे गलोचा सुमन को रचना बिच बोचा ॥ कहूँ वंचन को सोको धरो । श्री सरजु जल भारो भारो ॥ रतन अहित बहुधरे कटोरा । धनु मेवा जुत स्वादन थोरा ॥ पान दान यो न ते भारे । अगन्ति भाति सुरमि पय धरे ॥ धुनि ताहो पोछे परदा ठारे । तहें नुतन सोप ईठि सवारे ॥ प्रेम यवर नय सु मेजरो पुनिताह तीस सहचरो ॥ तीन पोछे ब्यालन बहुराजे । निज निज सौ लिये सब भ्राजे ॥ कोई लाम्यल लिये कोई भारो । कोई सुमन सिंगार सवारो रंग रंग के जगरा लोन्हें पोतम मन चितवत चित दोन्हें ॥ घेतहपुर को धुनि सुनि पाई । निज निज थल तिन सेज बनाई ॥ कोई एक समै परमातो लिये सुगंध घनेकन भांतो ॥

End.—चौपाई ॥ जाय पहंग बैठे रंग भीने । सैन करन की टिंश हथ कोन्हें ॥ पौडेलाल हवापद लालत । रस मेजरो चवर सिर डारत ॥ रस मेजरो चरण तब लागो । सोय रस शिर धरि अनुरागो ॥

॥ दोहा ॥ जब लगे दमपति सैन करि परदा दीन्ह झुकाय । निज निज यई पलो सकल भीने सब्य सुनाई ॥ यहि बिधि प्रभु घनेक चरित बंन्हें जया मति गाइ । चक छमा कीजा रुजन सुनिये प्रीति लगाइ ॥ इति श्री राम चरित्र नागचंदेदाश कृत् सुम समाप्त कातिक मासे कृष्ण पछेंति प्रभावस बिच धारा समत १९१४ ग्राम गुजबालि लिखिते देविदीन मुसदी समस्त ॥

Subject.—श्री रामचन्द्र और सीता जी का प्रेम व्यवहार ।

No. 290. Iskachamana by Nāgara (Sāmanta Simha). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—6×5 inches. Lines per page—14. Extent—55 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Manuscript—Samvat 1812 or A. D. 1785. Place of deposit—Thākura, Naunihala Simha Kanthā, Unao.

Beginning.—श्री इष्ट देवजी ॥ दोहा ।

इक उसी को भूलक है ज्यों सरज को धूप ॥

जहाँ इक तहें पाप है कादर नादर रूप ॥ १ ॥

कहूँ किया नहिँ इशक का इस्तामाल सँवार ।
 सो साहब सो इशक बढ क्या करि सकै गँवार ॥ २ ॥
 सरमिटा होई इशक सो सौ देवे सब कोइ ।
 निदा सह दनि सबै सोइ चुनिदा होइ ॥ ३ ॥
 दुनियादार फकोर क्या है सब जितनो जात ।
 विगर इशक मस्ती घरे सब की खिलो बात ॥ ४ ॥
 सादे जे प्याले सबै जद्यपि धन अपार ।
 इशक भमल मस्ती लिये सो हस्तो असवार ॥ ५ ॥
 सब मजहब सब भमल घर सबै पेश के स्वाद ।
 और इशक के असर विनु य सबहो बरवाद ॥ ६ ॥

End.—खलक न मानै एक भी अबस किये बकवाद ।
 खुब कमावै इशक को तब कछु पावै स्वाद ॥ ३९ ॥
 मजा बजब है हुसन का चखै चशम जुवान ।
 इशक चमन रखै सोई आवादान मुजान ॥ ४० ॥
 चशमों के चश्मा भरी भरना पावै फिराक ।
 इशक चमन तब सज रहै दिल जमीन हो पाक ॥ ४१ ॥
 इशक चमन आवाद कर इशक चमन का गांव ।
 नागर घर महबूब के इशक चमन में पाव ॥ ४२ ॥
 जिनर चश्म जारो जहाँ नित लोहू को कोच ।
 नागर आशिक लुट रहे इशक चमन के बीच ॥ ४३ ॥
 चले तेग नागर हरफ इशक तेज की धार ।
 और कटै नहिँ धार सो कटै करै रिक्कार ॥ ४४ ॥

इति श्री इशक चमनना दोहरा संपूर्णम् ॥ लिखितं गवेशो संकरेण स्वयं
 पठनार्थम् मुकाम खिरपाई मिति दुति चैत्र सुदि २ सोमै संवत् १८४२ मास ॥ इति ॥

Subject.—इशक सम्बन्धी पद्य ।

No. 291. Nāgaridāsajī kī bānī by Nāgaridāsa. Substance
 —Country-made paper. Leaves—24. Size—8×7 inches. Lines
 per page—44. Extent—924 Anushtup Ślokas. Appearance—
 Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābu Śyāma
 Kumāra Nigama, Rae Bareilly.

Beginning.—श्री राधा रसिक विहारो जो ॥ अथ श्री नागरोदास जी
 की बानी लिख्यते ॥ दोहा ॥ चरण कमल रज रंगहों मन बच काम बह भास ।

अपने सबैस जानि बलि जाइ नागरोदास ॥ १ ॥ छै कर[वो] कोपोन
कामरी कुंजनि कुल बिलासि । तब मिलहि मोत मन मुदित बिहारो बिहारिनि
दासि पवासि ॥ २ ॥ अति निरपेक्ष संगु संप्रह अनन्य धान गति नाहि । श्री
बिहारोदासि उपासि सुष संग बैति महल मन मोहि ॥ ३ ॥ नित्य बिहारि सार
सब को अति दुर्लभ अगम अपार । अनन्य धर्म संधि समझे विनु माया कठिन
किवार ॥ ४ ॥ यह उपदेश उपाइ श्री बिहारोदासि कृपा तें जानै । नित्य सिद्ध
विनु नागरोदास कहा कोऊ पहिचानै ॥ ५ ॥ गुन धनदोन सुदोन प्रेम उर
राखत गुन गंजोरा । श्री नागरोदास यो वस्तु क्षिपावत ज्यो गूदर में होरा ॥ ६ ॥
होरा को ललचात लिवासी परचो पंजो न ममी । श्री नागरोदास बिहारै चाहत
विनु अनन्य धन धर्मी ॥ ७ ॥

End—सबैया ॥ बजावत बोन प्रवीन पिया । मानो वृत्त है दस चंद नप
हुति छै कर काम प्रकास किया । चक चौधि रहे हरि हरि मनो तान तरंग के
रंग जिया ॥ दासि श्री नागरो के गहि पाय रिझाय रसिक सु श्रंक लिया ॥ अति
कोक कला गुन गांन सुजान बजावत बोन प्रवीन पिया ॥ ५ ॥

प्रानन के प्रान मेरे नैननि के तारे है । सहज समेह निजु धन धरि उर
अंतर अपने प्रान राखि रखवारे है । अलक पलक जिन अंतर अपने सुनहु सुजान
मुष जोवत निहारे है । अतिहो व्याकुल कित काई को कुंवर तुम तन मन मेरे
अति प्रीतम पियारे है ॥ दासि श्री नागरो हित तुहो मिया मानि चित प्रानन
के प्रान मेरे नैननि के तारे है ॥ इति श्री नागरोदास जो को सबैया ॥ संपूरण ॥
इति श्री नागरोदास जो को बानी संपूरण ।

Subject—पृ० १ राधाकृष्ण स्तुति । पृ० २ गुरुवर्दना चार स्तुति ॥ पृ० ३
नागरोदास जो को साखी । पृ० ४ बिहारिदास के अति नागरोदास को भक्ति
वर्णन । पृ० ५-१० सिद्धान्त के कवित्त वर्णन । पृ० ११-१५ राधाकृष्ण रहस्य वर्णन
पृ० १६-२०—राधाकृष्ण का विग्रह वर्णन । पृ० २१-२४—राधाकृष्ण शोभा
चार भक्ति के पद वर्णन ।

No. 292(a) Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind.
Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—9½ x 4½
inches. Lines per page—10. Extent—437 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old Character—Nāgarī. Date of Composition—
Samvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Samvat
1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Dewaki Nan-
dana, Village Rawariyā, Post Office Aligañja Bāzār, Sultānpur.

Beginning—श्री सद्गुरुभवनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः । श्री वोतरागाय
नमः ॥ श्रीरस्तु ॥ अथ वैद्य मनोत्सव लिख्यते द्वाहा ॥ शिव सुतपद् प्रणमौ
सदा । रिधि सिधि नित देह । कुमति विनासन सुमति करि मंगल सर्व करेह ॥१॥
प्रलय प्रमूरति प्रलय गति । किन दिन पायो पार । जैर जुगल कर कधि कहै, देहि
देव मति सार ॥२॥ प्रैर प्रंथ सब मथिकै । रचौज भाषा आनि दिषायो प्रगटि कर
प्रौषध रोग निदान ॥ ३ ॥ मममति प्रत्य जु कहैत हौ, कवि मति परम प्रमाथ,
सुगम चिकित्सा थित रचित पिमौ सबै प्रमाथ ॥ ४ ॥ वैद्य मनोत्सव नाम धरि ।
देधि प्रंथ सु प्रकाश । केसरराज हन नैनसुष । भाषा कियो विलास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा
लक्षण कहौ, देधि प्रंथि मति सोइ । पुनि पानौ प्रनुभाव हौ जैसो मममति होइ ॥६॥

End—केसरराज सुत नैनसुष कियो प्रमृत को कंद । सुम नगरो सरिहंद
में प्रकवर शाह नरिंद ॥ प्रकवेद रस मेदिनी सुकल पक्ष मधुमास-तिथि द्वितीया
शुगुवार पुनि पुहुपचन्द्र प्रसुकास ॥ मात्रा प्रंग सुवेध पुनि कह्यो प्रत्य मति सोय ।
कवि जन सबै सुधारियो होन जहां कहं होय ॥ वैद्य महोत्सव प्रंथ मह कह्यो
सकल निज आनि । दुषकन्द पुनि सुष करन आनदि परम निदान ॥ अथ सारठ ॥
कोयौ प्रगटि दधि मंथि, प्रौषध रोग निदान पुनि, सकल सुधा कर प्रंथि, करगो
समापित प्रादि प्रंत ॥ इति श्री नयनसुष विरचिते वैद्य मनोत्सवे प्रंथि विद्या
विनोद समाप्तम सम्वत् १८२५ माघ कृष्णपक्ष्याम् लेखक पाठक जो जयतु ॥

Subject—पृ० १—७ तक—वैद्य मनोत्सवनाम धरि देधि प्रंथ सुष-
कास । केसरराज तन नयनसुष भाषा कियो विलास ॥ प्रथम उद्देश्य, नाड्यो
परोक्षा, वात, पित्त, कफ निदान साध्यासाध्य लक्षण, काल चक्र । पृ० ८—२४
तक द्वितीय उद्देश्य—ज्वर, सन्निपात, प्रतिसार, संघट्टणी रोग प्रतिकार । पृ०
२५—३१ तृतीय उद्देश्य—रस, मंदर, गुल्म, आमवात कुमिरोग प्रतिकार । पृ०
३१—३५ चतुर्थ उद्देश्य—कापदिस्वास, कास मंदाग्नि विस्फुटिका रोग प्रतिकार
पृ० ३५—४४ पंचमोद्देश—कुंठ प्रमेहमूत्र, कृष्णमूत्र, चैराधन, प्रसारी कुंठ पामाव
चविकालूत योगहार वा सस्त्रघात प्रतिकार पृ० ४४—५६ षष्ठमोद्देश्य—सिर
रोगादि प्रतिकार पृ० ५७—७० सप्तमोद्देश्य—बगल गंधादि प्रतिकार

No. 292(b). Vaidya Manotsava by Nainasukha, of
Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—94.
Lines per page—8. Extent—658 Anushtup Ślokas. Appear-
ance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—
Samvat 1649 or A. D. 1692. Date of manuscript—Samvat
1827 or A. D. 1770. Place of deposit—Pandita Kavarapālaji,
Village Taramai, Post Office Śikohābād, District Mainpurī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः
 वैद्यमनोत्सव लिप्यते ॥ शिव सुत पद प्रणवीं सदा । रिद्धि सिद्धि नित देह ॥
 कुमति विनाशन सुमति कर मंगल मुदित करेह ॥ १ ॥ अलप चमुरति अलप गति
 नाहिन पायौ पार । जोरि युगल कर कवि कहे देहु देहु मति सार ॥ २ ॥ वैद्यक
 ग्रंथ सब मथन कै रख्यौ सुभाषा आन । अर्थ दिखार्यौ प्रगट कर औषध रोग
 निदान ॥ ३ ॥ मम मति अलप सु कहत हौ कवि मति परम अगाध । सुगम
 चिकित्सा चतुर चित किमौ सबै अपराध ॥ ४ ॥ वैद्य मनोत्सव नाम धरि देखि
 ग्रंथ सुप्रकाश । केशवराय सुत नैनमुख श्रावक धर्म निवास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षण
 कहौ देखि ग्रंथ मति सोइ । पुनि आनौ अतमाव हो जैसो मम मत होय ॥ ६ ॥

End—बगल गंध कौ उपाय ॥ मोथा वेल हरोत को वोज भंवलौ पाइ ।
 लेप करै नर नौर सों बगल गंध सुपराय ॥ ४६ ॥ मुख दुर्गंधता कहु गुटका ॥
 वेल काय पैलाइवी जाविप्रो तजु लेय । गजकैसरि अरु जायफल ये औषधि सम
 देय ॥ ४७ ॥ गोलौ करहु मषोर सों सैन समै मुख धार । आनन को दुर्गंधता नास
 होइ ततकार ॥ ४८ ॥ दुर्गंधता कहु लेप ॥ गजकैसर पन्हो जड़ पाइ ॥ सिंगस पत्र अरु
 लोड मिलाइ । जलसे मर्दन कौत्रै गात । अति दुर्गंधता छिन मर्दि जात ॥ ४९ ॥
 सिर को दुर्गंधता कौ लेप ॥ चन्दन मोथ चमावतो बल्लो रासु कचूर । जल से
 पावहु सोस महं होइ दुर्गंधता दूर ॥ ५० ॥ परमत ग्रंथ समुद्र सम मम मत
 खोज अपार । औषधि रत्न सुते गृहो किये प्रगट संसार ॥ ५१ ॥ वैद्य मनुत्सव ग्रंथ
 महं कह्यो सकल निजु आन । दुख कंदन पुन सुष करन आनंद परम
 निधान ॥ ५१ ॥

मात्रा एक सु छंद पुनि कह्यो अरु मम मत सोइ । गुन जन सबै संवारियहु होन जहाँ
 कह्यु होइ ॥ ५५ ॥ सारठा ॥ कियौ प्रगट दध ग्रंथ औषधि रोग निदान पुनि ।
 सकल सुधा सम ग्रंथ कह्यो सुष आद अंत ॥ इति श्री केशवदास पुत्रेन नैनमुख
 चिरांचिते वैद्य मनोत्सव स्त्री पुरुष रोग सम्पूर्णम् । लिखा कालिका दयाल नै
 सोमवार के दिन कार्तिक वदी ५ संवत् १८२७ वि० ॥

Subject—(१) पृ० १—१२ तक—प्रथम अध्याय ।

मंगलाचरण, गणेशादि वंदना, प्रस्तावना, ग्रंथकार के धर्मादि विषय का
 अति सूक्ष्म परिचयः—

वैद्यमनोत्सव नामधरि, देखि ग्रंथ सुप्रकाश ।

केशवराय सुत नैनमुख, श्रावक धर्म निवास ॥

नाड़ी परीक्षा, दृतादि शुभाशुभ लक्षण, शकुन, मुख परीक्षा, वात, पित्त
 और कफ का निदान, इन्हीं तीनों के लक्षण, इन तीनों का उपचार, काल ज्ञान
 साध्यासाध्य लक्षण, काल ज्ञान तथा काल चक्र ।

(२) पृ० १३—३२ तक—द्वितीयोऽध्याय ।

पित्तज्वर लक्षण, कफज्वर लक्षण, वायुज्वर लक्षण, काल ज्ञान तथा मलज्वर लक्षण, अजीर्णज्वर लक्षण, पेटज्वर लक्षण काल ज्ञानत लघु सुदर्शन चूर्ण, दृष्टज्वर लक्षण, काल ज्ञानात कालज्वर लक्षण, ज्वर पर पञ्चनाम दशा, ज्वर विमुक्त के लक्षण षोडशोऽंग चूर्ण, रस मेखरी मन्त्रात महाज्वराकुश । शीतज्वर का ज्वराकुश, अंजनज्वर, पित्तज्वर का प्रतीकार, पित्तदाघज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात कफज्वर का चूर्ण, वायुज्वर का चूर्ण, वृंद संघारात मलज्वर का काथ, काल ज्ञानात रसज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात पेटज्वर का लक्षण, काल ज्ञानात दृष्टज्वर का चूर्ण, वायु पित्त कफ का चूर्ण, शीतज्वर का चूर्ण, विषमज्वर का चूर्ण, बंद संघात त्रितोष स्वांस कास का काथ, चतुर्थज्वर को धूनी, अबलेह, सारंग धरात ज्वर को औषधि, लघु लाक्षादि तैल, आनंद भैरव रस, सन्नपात का चिन्तामणि रस, कनक सुन्दरी रस, अष्टदशांग काथ, सन्नपात का नास, उसी का घंजन, त्रिकटकादि काथ, उसको औषधि, अतिसार लोलावती, वृद्धगंगाधर चूर्ण, लघुगंगाधर चूर्ण, अतिसार का लेप नागरादि काथ, रक्त अतिसार का काथ, अतिसार का गुटका, दमांतसार का चूर्ण, संप्रहृणी रोग चिकित्सा, धानपंचक काथ, संप्रहृणी वायु-शून का चूर्ण, अहचिशून संप्रहृणी काथ ।

(३) पृ० ३२-४२ तक—तृतीय अध्याय ।

पशुरोग चिकित्सा रंग धरात सूरणि वाटिका, ववासोर का चूर्ण, धूनी ववासोर को औषधि, रक्त ववासोर को औषधि, ववासोर का चूर्ण, अन्य भगंदर रोग प्रतिकार, भगंदर का लेप, भगंदर को औषधि, गुहमरोग प्रतीकार, काष्ठेादर को औषधि, उग्र के सर्व रोगों को औषधि, आमवाद का चूर्ण, सर्व शोथ का काथ, कृमिरोग प्रतिकार, कृमि का चूर्ण, शूल रोग प्रतीकार, शूल का हिंवाष्टक चूर्ण, शूल के लिये पंचसम चूर्ण, तुंबरादि चूर्ण, अन्य चूर्ण शूल पर, पांडु रोग, कमलवाय का उपचार, इसी रोग का अबलेह, कमलवायु को पोटली, इसी रोग का घंजन तथा औषधि, क्षय रोग का प्रतीकार, क्षय रोग का चूर्ण ।

(४) पृ० ४३—४८ तक—चौथा अध्याय ।

हिचको रोग प्रतीकार, हिचको का मनोरमा धूनी, क्षय रोग प्रतीकार, क्षय रोग का अबलेह, स्वांस रोग प्रतीकार, स्वांस का चूर्ण, कास रोग प्रतीकार गाली पंचनी, गाली पंड खांसो को, बटो पंद को, बड़ी कफ खंड को, मेदाग्निरोग प्रतीकार, मेदाग्नि का चूर्ण, क्षुधाकरण गुटका, मेदाग्नि को, मज्ज-केसर चूर्ण विशूचिका रोग प्रतीकार, सूची बड़ी उपाय ।

(५) पृ० ४८—६१ तक—पंचमोऽध्याय ।

कुरंगवाय प्रतीकार, घंडरोम चूर्ण, शैषधि, घंड वृथ को हित उपदेशात् उपाय, लेप, प्रमेह प्रतीकार, प्रमेह का चूर्ण, तथा शैषधि, मूत्रकृच्छ्र प्रतीकार, प्लवि काय, मूत्रकृच्छ्र का चूर्ण, मूत्रशोथन प्रतीकार, मूत्ररोध का काय, चूर्ण पथरी रोग प्रतीकार, पथरी का काय, मृगो रोग प्रतीकार, पुष्परादि काय, मृगो का नास, ब्राह्मो घृत, कुष्ठ रोग प्रतीकार कुष्ठ का चूर्ण, लघु मंजिष्ठादि काय, श्वेत कुष्ठ लेप, श्वेत दाग का अन्य लेप, शैषधि वृन्द संप्रह से, कंठ का चूर्ण, लेप पांव का लेप पाम दादु, लेप शंभादि कंठ का, लेप लूत का धिम रोग प्रतीकार, लेप, नहरू प्रतीकार, शस्त्रघात का दारू ।

(६) पृ० ६२—८० तक—षष्ठमोऽध्याय ।

वायु का चूर्ण, गुटका, त्रिपुर भैरों रस, वायु पीड़ा का, लघु विषगर्भ तैल शकड़ वायु का प्रयत्न, त्रियोदशंग गुग्गुल, पित्त का प्रतिकार, दाघ विधा प्रतिकार, क्षुर्दि रोग प्रतीकार चूर्ण, लेप, कफ रोग प्रतीकार, कफ का चूर्ण, गंडमाल रोग प्रतिकार, गंडमाला को शैषधि, कचनार गुग्गुल, मुखरोग प्रतीकार, दंत पीड़ा रक्त प्रवाह को शैषधि, कोट पीड़ा दंत रक्त को शैषधि, मुख पाक शैषधि, मुखको लो को शैषधि, क्षुर्दि को शैषधि, लेप, नासिका रोग प्रतिकार, पीनस रोग को गुटका, पीनस को नास, नेत्र रोग प्रतीकार, नेत्र पीड़ा का रगड़ा, नेत्र पीड़ा का भंजन, रात्रि भंघ का, भंजन रतौघ का भंजन, पड़वाल को शैषधि, सबल वायु का भंजन, सबलवाय का रगड़ा, खोरा वायु का भंजन, शैषधि कण रोग को, कण शून पूर्व दुख पीड़ा को शैषधि, सिर रोग प्रतिकार वात सिर्वर्त का लेप, कफ सिर्वर्त का लेप, पित्त सिर्वर्त का लेप, लेप त्रिदोष सिर्वर्त को पाघा सोसो का लेप नास, घोर जंत्र, ऊलका नास, केश बढ़ने को शैषधि, सिर काकस को शैषधि, इन्द्रजुष का उपाय, केशकंठ लिख्यते ।

(७) पृ० ८१—९४ तक—सप्तमोऽध्याय ।

स्त्रो रोग प्रतिकार शैषधि, पुहुप होने को शैषधि, योनि शुद्ध होने को शैषधि, गर्भ होने को शैषधि, पुनश्च गर्भ धारिणी शैषधि, कप्री स्त्रो का उपाय, पुनश्च गर्भ जाता हो उसको शैषधि, भगसंकोचन प्रतिकार, भग संकोचन शैषधियां, इसकी गोली, योनि दुर्गंध विनाश, कुच कठिन करने को शैषधि, शैषधि थड़ होने को, पुनश्च, बाल रोग चिकित्सा, बालक को भवलेह, बालक प्रतोसार का काय, बालक को गुदा पके की शैषधि, पुहुप चिकित्सा, लिग स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, उंडे का लेप, स्वंभन विधि, पुनश्च, मदन प्रकाश चूर्ण, काम

विलास गुटका, धातु वृद्धि का गुटका, दुर्गन्धता हरण औषधि, दुर्गन्धिता हरण औषधि, बगलगंध का उपाय, मुख दुर्गंध की औषधि, लेप, सिर की दुर्गंध का लेप ॥

ग्रंथकार का सूक्ष्म परिचय—केशवराज सुत नैनमुख कछो ग्रंथ प्रभिकंद । शुभनगरी सिंह बंद मैंह, अकबर साह नरिंद ॥ ग्रंथ निर्माण कालः— संकवेद रस मेदनी (१६४१) शुक्लपक्ष शुचिमास । तिथि द्वितीया भृगुवार पुनि पुष चंद सुप्रभास ।

No. 292(c). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—10 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Thakura Basanta Simha, Village Urab, Post Office Śāhamau, District Rāe Bareli.

Beginning—(पृष्ठ ३ से प्रारम्भ)—भोर एक साठु पाइ कफ मिटे ॥ इच्छामेदो रस ॥ पारोटंक २॥ सुहागा टंक २॥ गंधक टंक २॥ मिरचै टंक २॥ जैपाल टंक १० आक के रस परछै ताते पानो सौ देइ ॥ अजमोटादि चुर्ने ॥

End—पथ संधिपात नाम जानिबो । संधिकः सांतिकश्चैवाः गुल्फाद चित्त विप्रमे ॥ सौतांगः तंद्रका प्रोका कंठ कुविज्ज कर्निका ॥ विष्पातो मग्न त्रेषध रक्तस्तटीवो प्रलापकः । जिभकश्चेतु भिन्यासो सन्यपातः त्रयोदशः ॥ १३ ॥ टोका ॥ पोर अफर दाह सून पेट कफु मलु पसै जगै बहुत पसोना पावै जोम सुवै तरुया सुवै जोम पै काटे होइ, गरोरु कै ॥ जथा प्रति तथा लिख्यते मम दोषो न दोष्यते ॥ वैशाख मासे शुक्ले पछे तिथौ दुतियायां चंद्रवासरे पोथी लिपितं पाहे मंसारामु नम्र उल्लिखितं ॥ परगने बदाउ ॥ पठनार्थे सुपलाल सिंह वैश भाले सुरतान नगर डोह संवत १८४६ सनि फसलो ११२६ हरर गुन । घोषे तुल्य गुहाश सेधव-जुता मेवाबनिधं वरे । शकैरया शरद्विमल मा सुख्यं तुषारामये । पिपल्या शिशिरे वसंत समये शौद्रेण संज्ञोज्यना राजन प्राप्य हरोत को मिदं गदानश्यं तितेऽभवः

ग्रीष्म	वर्षा	सरद	हेमंत	सितरे	वसंत समये
दाप	सेधोनेन	पाडकेसं	साठि	पोपरि	सदत सौ

Note—पं० केशवदास के पुत्र नैनसुख कृत वैद्यमनोत्सव नामक पुस्तक षष्ठ्यंश है पृ० १, २, ८, ९, १०, ११, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २७, २८, २९, ३१—३६ ३९—४३, ४८ नहीं है। देखने में पुस्तक पुरानी जान पड़ती है।

No. 292(d). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size— $10\frac{1}{2} \times 8$ inches. Lines per page—46. Extent—275 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Thakura Jagadmbikā Prasad Sinha, Gudawāpur, Post Office Chilwalyā, District Baharāich.

Beginning—श्री रामायनमः ॥ वंदौ लम्बादर चरन करहु सिद्धि सब काज । केलाराज सुत नैनसुख भाषा करो समाज ॥ १ ॥ पौषच रज सुते मई प्रगटि किये संसार । वैद्यमनोत्सव जगत में औपधि है निजसार ॥ २ ॥

अथ स्वराधिकारः—मोथा, लोंठि चिरायता पीत पापरा जानि । केरवार निडोय पियलो ये सम पोसहु जानि ॥ ३ ॥ यह चुरन प्रशस्त करि जलसौं पीजे प्रात ॥ बनल पित कफ दोषत्रय होइ सर्वज्वर घात ॥ ४ ॥

End—अथ तैल संज्ञा ॥ जवा चारि रत्तो है विमल चारि गुंज को बहि । षाठ गुंज मासा कड़ा सुनौ तैल को गहि ॥ मासे चारि टंक तू जानि । षट मासे तू नद बजानि । कर्प एक मासे दस होइ । कर्प चारि पल जानहु सोइ ॥ १६१ ॥

इति श्री वैद्यमनोत्सवेन उन समुदेसः सम्पूर्णं प्रैष्यतेम पंड कातिक मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यां गुरुवासरे संवत् १९१४ साके १७७९ पोस्तक प्रति भव उमाराव सिंह नकल प्रति द्वितीया लोपते मैरौप्रसाद ग्रामें गुडुवापुर सुममस्तु ॥ राम ॥ राम ॥

No. 292(e). Vaidya Śāstra by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size— $11 \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—1,188 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1894 or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Sinha, Rais, Payāga-pur, Post Office Payāga-pur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री मणेशावनमः ॥ अथ वैद्यशास्त्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ त्रियासंग अरु बीजना सोरे सलिल खान । भोजन मधु रस गंधिता करत कोष तई

हानि ॥ तत्त उदक चढ दर्व्य पुनि मर्दन तेल शरीर । मुरापानि सेके दहन इन्हते
जाइ सरीर ॥ यथ साध्य लक्षण ॥ सोरठा ॥ होइ त्रिषा जस हीन कर पद नाभी
तपत हो । सुमृदु सरना परवीन । सुम लक्षण ताके कहौ ॥ इन्द्रो अंगु नागि ॥ ३० नचे
६० निधि ९ नारिय १२० नमीक १५०, स्वासा उर्ध्वि दुवाह मिलाइ कै गावत ।
आदि अकास समीर सिषी अपकुंमनि मिश्र व मिश्र यतावत ॥ मेदनि ते
पुनि नोचहि धावत मोति हो मेधै तिनि ठामनि मै लव छावत ॥ हो कमले कदले
नन धापदु १०० मैतन रासि ७१,२०० दिनौ निसि पावत ॥ ६४ ॥

End—जो बाज का जोको लागे होइ ताका औषधि जो कैसेहुन मोच
होइ ॥ पिषरो गाइ का दूध औ पावा पानी मेरै कै देइ तौ अच्छा होइ । और जो
जानवर हुलतो काइत होइ ताका औषधि पिषरो गाइ का दूध पानी मिलाइ के
तावा धोरि देइ दैके चलता होइ चाहो कि जब पावा तावा पचवै तबहो चले
न हुलतो काइ ॥ जो जानवर कुरोच का बांधो तौ गाइ क मसका ताजा पानी
से धोइ कै जेहि माठा न लाग रहै तेहि से तावा धोरि कै देइ तौ पर अच्छे पावहि
और सिताव पर भारै कै जुगति वरै का छाता गाइ के घोंउ में घोटि के छाता
निकासि डारै वही घोंउ में तावा धोरि कै देइ तौ पर सिताव भारै ॥ इति श्री
नयनसुखेन चिरचिते वैद शास्त्र सम्पूर्णम् । मार्ग सुदी १ संवत् १८९४ ॥

Subject—पृ० १—६६ तक औषधियों और रोगों के लक्षण तथा मरु
आदि बनाने की रीति और रोग परीक्षा आदि का वर्णन है ।

No. 293(a). Japaji by Gurn Nanakaji Maharaja of Tila-
madi Nanakānā (Punjab). Substance—Country-made paper.
Leaves—21. Size—6½ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—
160 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of manuscript—Samvat 1820 or A. D. 1763. Place
of deposit—Śrī Mahanta Nānak Prakāśa, Baḍī Saṅgati,
Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सति गुरु प्रसाद सति नाम कर्ता पुरुष
निरमौ निरवैर अकाल मूर्ति प्रजुनो सै भंगुर परसाद जप । आदि सखु जुगादि
सखु । है मो सखु नानक होसो मो सखु ॥ १ सोचै सोचिन होवई जैसा चीजव
वार । जुपै जुपन होवई जे लाम रहालि बतार । भुषिया भुषन उतरो जेवनापुरो
आमार । सहस सिषाण पालप होहि ता एक न चहै नालि ॥ किय सचिचारा
होइ ये किय कूडै तुटै पालि । हुकमि रजाई चलता नानक लिखिया नालि । २

End—अमर तवेला सचुनाउं जपु जपो करि असनाथ । हितु करि जपु को जे पहुँ सो दरजे पावै मान ॥ जनम मरण भव कटिष जो जपु संग लावै चियाण । जियो जियो करि जपु को पहुँ पौसर जीत निदाण । जो मनसा मन में धरँ सो पूरण करै भगवान । अहिनिजि जपु जप तारि है दास नानक दोजे नाम दान । गुरु नानक निरंकारो । जिन सगलो कला धारो । डँडौत अनेक बार सर्व कला समर्थ ॥ डोलैंते राखौ प्रभु नानक देकर हृथ ॥ इति जप संपूर्णं शुभम् ॥

Subject—पृ० १—६ तक ईश्वर सत्य है उसी की आज्ञा मानना चाहिये वह निर्गुणादि गुण वाला है, उसका जप पाप नाशक है, वह दुख को दूर करता है ।

पृ० ७—११ तक ईश्वर के विशेषण, जप का फल और ज्ञान की मुख्यता ।

पृ० १२—१७ तक परमात्मा अनन्त है और चेतन्यमय है इन्द्रादि उसी की प्रशंसा करते हैं और वह सब का रचयिता है ।

पृ० १२—१७ तक जप की महिमा

No. 293 (b). Jñāna Swarodaya by Nānaka Dāsa (Ranjita) of Tilamadi. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—12×5 inches. Lines per page—18. Extent—324 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1908 or A.D. 1851. Place of deposit—Thakurā Balbhadra Simhaji, Raissa of Vansapurawā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—ओ गणेशायनमः परमोत्तम परमात्मा पूरण विस्वा धीस । आदि पुरुष अविचल तुहो तोहि नवावौ सोस ॥ क्षर ऊँ सो कहत हैं अक्षर सोहं जानि । निह अक्षर स्वासा भई तू ताको मन आनि ॥ राति दिन सुरति लगावो । आपा आपु बिसारी प्रह सोस नवावो ॥ नानिक मयि के कहत है अगम नियम को सोस । पदो बचन विज्ञान को मानो विस्वा धीस ॥ ऊँ सो काया भई सोहं सोहं मन होइ । निह अक्षर स्वासा भई कहि नानक भलि जोइ ॥ पैचि मनु अतह रावौ । अक्षर एक हुविद्ध अनन भावौ ॥ डार पात फल फूल मूल सो सबै निहारी । जब दूरसे एकाएक भेष पा सबै बिसारी ॥ स्वासा ते सोहं भयो सोहं ते उंकार । ऊँ सो रा रा भयो साधु करौ विचार ॥

End—भँवर गुफा त्रिकुटी नहीं ना अक्षर को जाप । नानिक दास समाज ते अग्र अर्पित आप ॥ भेद स्वरोदय बहुत है सुखम दियो बताय । ताको समुझि

विचारि कै खौ सुरति लौ लाय । धरति तरै गिबर तरै तरै ससौ यह भायु ।
 वचन स्वरोदय ना तरै कहि नानक परमान ॥ गुरु दाया यह राम की साधु दया
 सो जानि । नानिक दास रंजोत है कहौ सरोदय ज्ञान ॥ तिलावड़ी मेरा जन्म है
 नाम नानिका कहायो । कालु को सुत जानि जाति वेदो पहिचाने । बाल बचखा
 माहि बहुरि में भुलो लायो । कृपा करो जगदीस नाम नानिका धरायो । जोग
 जुगति हरि भगति करि ब्रह्म ज्ञान को डोढ । लहो.....राम मनोरथ सत्य है हृदय
 मकी जो होई । इति श्री शुभ संवत १९०८ पोथी लिखा महोपतसिह कंजामऊ
 निवासो साजू तौर कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अष्टमयाम सुक्रवासरे शुभ संवत १९०८
 साके १७७२ राम । पोस्तक लिखत आनंदित अति भायो संसापे सकल कैस
 दुरि बहायो ॥ श्रीराम लक्ष्मिन सुप्रबाम ॥

Subject—स्वरोदय का वचन ।

No. 293(c). Sukhamani by Guru Nānakajī of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—6 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—900 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1860 or A.D. 1803. Place of deposit—Paṇḍita Lallu Prasāda Dikshita, Village Mai, Post Office Baṭeśwara, District Āgrā.

Beginning—.....मन कामे भुलाई ॥ चमूत नाम हिदै माहि समाई ॥
 प्रभु लो वरी साधु को रसन । नानक सनकाद दशनु दशन ॥ प्रभु कौ शिमरहि शे
 धनवंते । प्रभु कौ शिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभु के शिमरहि शे सन परवान । प्रभु कौ
 शिमरहि शे पुरुष प्रधान । प्रभु का शिमरहि सेवै मुद तासे । प्रभु कौ शिमरहि शे
 शव के रासे । प्रभु का शिमरहि शे शुबवासो । प्रभु कौ शिमरहि शे शदा
 अविनाशो ॥ प्रभु शिमरन ते लागे लिन आप दयाला । नानक जनको मगहिर
 वाला । प्रभु का शिमरहि शे पर उपकारी । प्रभु का शिमरहि तिन सदा
 बलिहारी ।

End—धुर करम पाषातु धूलिन के शेना महिर के लागे कई नानक शुबहु
 आतित धर मनहद बाजै । आनंद शुनों बड़ भगिब शकल मनोरथ पूरे । पारप्रभ
 प्रभु पाषा उतरे शकल व शूरे । दुख रोग शंताप उतरिषा शुनि शापो बानो ॥
 शंत शाजन मये शर से पूरे गुस्ते जानो । कहंद पुनोत शुनिदे पांवत्र शत गुर रैहा
 भरिपूरे । विनिवंत नानक गुरु चरन लागे बाजै मनहद तरे ॥ आनंद सुनो बड़
 मागिषो शकल मनोरथ पूरे ॥ शंवत १८६० माशोतमे भाद्र वदी १४ भौमवाशरे

लिपि ग्रंथ सुखमनो शोदल संपूरन ॥ मनशाराम मिश्र राम जो सहाय बाबे
नानक बकाश लेने ॥

Subject—ईश्वर का स्वरूप, निराकार उपासना तथा भक्ति का बर्णन ।

No. 293(d). Sukhamani by Nānaka Guru. Substance—
Foolscap paper. Leaves—18. Size— $7 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines
per page—28. Extent—180 Anushtup Ślokas. Incomplete.
Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—
Gokula Prasāda, Rātapura, District Rāe Bareilly.

Beginning—पृष्ठ २ से चारम

नोन बाबै ॥ काषो येकै दरसु तुम्हारे । नानक उन संग मोहि उचारो ॥ १ सुखमनो
सुख प्रसूत प्रभु नाम । भगत जना के मन विघ्नम ॥ रखाव प्रभु कै सुमिरन
गरम ना बसै ॥ प्रभु कै सुमिरन दूष जन नसै ॥ प्रभु कै सुमिरन कालु पर हरै ॥
प्रभु कै सुमिरन दुसमन टरै ॥ प्रभु सुमिरन कछु विघन न लागै । प्रभु के सुमिरन
घन दिनु जागै ॥ प्रभु के सुमिरन भव ना व्यापै । प्रभु के सुमिरन दूष ना संतापै ॥
प्रभु कै सुमिरन साधु के संग । सरवनि घान नानक हरि रंग ॥

End—षष्ठपदी ।

जेहि प्रसाद छत्तिस प्रसूत पाय । तिस ठाकुर को राधु मन माहि ॥ जेहि
प्रसाद सुगंध तन लावै । तिसके सुमिरन परम गति पावै । जेहि प्रसाद बसहि
सुख मंदिर । तिसै ध्याइये सदा मन चंदर । जेहि प्रसाद ग्रह संग सुख बसना ॥
घाठ पहर सुमिरौ तिस रसना ॥ जेहि प्रसाद रंग रस भोग ॥ नानक सदा ध्याइये
ध्यावन जोग ॥ जेहि प्रसाद पाट परंवर बढ़ावै ॥ तिसै त्यागि कित्त घोर कै
मावै । जेहि प्रसाद सुष सेज सोइ जे ॥ मन घाठ पहर ताका जस गवजे ॥ जेहि
प्रसाद तुम्हे सुष को मानै ॥ सुष ताको जस रसना बपानै ॥ जेहि प्रसाद तेरो
रहित धर्म ॥ मन सदा ध्याइये केवल पार ब्रह्म ॥ प्रभु जो जपत दरगहि मान
पावै ॥ नानक पति सेती घर जावै ॥ २ जेहि प्रसाद प्रेरण्य कंचन देहो ॥ लिख
लावो तिसु राम सनेहो ॥ जेहि प्रसाद तेरा मोला रहत ॥ मन सुष पावो हरि...

No. 293(e). Sakhi Jñāna Kāṇḍa by Guru Nanakaji of
Tilamadi (Panjāb). Substance—Country-made paper.
Leaves—8. Size— $11 \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20.
Extent—180 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Written
in Prose and Verse. Character—Gurumukhī. Place of deposit
—Pandita Dhīraja Rāmaji Pujāri, Baḍi Sangati, Baharāich.

Beginning—साखी ज्ञान काख महला १ ॥

तब संगत श्रीगुरु बाबे नानक जो पास बोनती कोनो । गरीब निवाज सबवे पादशाह भगता के घराघने और संसार के घराघने का जो चत्तर है सो छपा करके समझाइये जो ॥ और संसार के घराघने और भगता के घराघने कर जो परमेश्वर याधोन होता है सो कारण क्या और संसार का घराघना मानता है कि नहीं जो ॥ और देव देवो के स्थान को पूजा जो करते हैं तिनको कौन मति है ॥

जो । ज्यों है त्यों समझाइये जो । तब गुरु बाबे नानक बोल्या सुनो संगति चपट सिद्धि जो है सो कामना को देने हारो है । सो श्री ठाकुर जो दबतियों के हवाले कोतो है । श्री महादेव देवो ने प्रादि लेके सो कामना के निमित्त संसारो जियाइन को पूजा करते हैं ।

End—सिर बिच रखनी लिख कर मनो को गति कहो न जाय । जे बेईदा ताप होई ता सो दरदो पौंडो पदो लिख कर मल बिच पाड़नो जो किसी ने प्रतोसार होइ तां मुंडा संतोष जो पौंडो लिख कर पियाउनी ॥

जो किसी दिवान पास जावे ता यह पौंडो लिख कर जनम सतगुरु सत पुरुष यहाँ पौंडो सिर बिच रखे । जो लो पड़ो होवे ता यह लिख कर देवो । काहे रे मन चितवहु उद्यम जा हर हर जिउ पड़िया यहाँ पौंडो लिख कर लक नाल बंधनो ॥ तुरत छूट जाय ऐसे गुण मुझ में हैं दूसरे संग । एक तो अप जो है गुरु का तिसको अप नित प्रति ध्यान करिके प्रीति करिके नेम के साथ ॥ और दूसरे तप करै तो क्या तप करै कामना को त्याग करिके तप करै ॥ कामना का त्याग करै और इन्द्रियों को जोतै ॥ तीसरे हौ मैं इन्द्रियां जो हैं दस तिनके प्रकृत हैं बुद्धि तिस को जोतै प्रज्ञानता तिसको ज्ञान के बडम कर प्रहारता रदै और ब्रह्मज्ञान के विषे हा मैं प्रादुति । ज्ञान काख सम्पूरे भया ।

Subject—पृ० १ ईश्वर व देव देवी को पूजा में भेद, पृ० २ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग, पृ० ३ धर्मराज व जीव को वार्ता, पृ० ४ नारद व धर्म संवाद, पृ० ५ से ७ तक लंगड़े व भंघे के मिलन की कथा, पृ० ८ पौंडो का विचार तथा फल ।

No. 293(f). Satanāma by Nānaka of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8×6 inches. Lines per page—16. Extent—200 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance.—Old. Character—Nāgarī Kaithī. Place of deposit—Bābu Amīra Chand Dākar, Manager, V. D. Gupta and Company, Chowk Bāzār, Baharāich.

Beginning—दोहा । सब सांचो पु नामक धरयो चरन पर सोस ।
नानक तुम गुर देव जी पूरन विस्वावोस ॥ आचारज जीवन जनम मरवो सांचो
जान । नानक प्रोसर जात है हर सो नाहि पहचान । जान सरै आजगपना ज
संग दानं प्रान । राम तजो जग सो रचो नानक नदचौ हान । भूटा नाता जगत
का भूठ है धरावास । पह जग भूटा देख कै नानक मये उदास ॥ जब लग चावल
धान में हुब लग उपजे चाप ॥ जग छिलके कंड तज करा मुकत रूप हुई नाप ।

End—कारा जोत कवल कलो बोच मवरा लो मइ । गरजं घना घोरा
घमंड घट बगयो जब प्राचीत देखा भो हाइ । कैतोक सुरु जड़गे तहां आव सरा
सिर प्रति रहे ध्यान लगाइ ॥ भूषन भवत विचित्र सोहावन भारी पीतांबर वेनु
बजाइ । को कोन क वह सुनता जग मोहात, हार जडात बहु भारो लइ । सन
समाज देखो जवते सुरालोक चले प्रभु को गुन गई । कैतोक कुदव बसे जग में
मगवंत वाना कै संत नासाइ ॥

Subject—संसार को अनन्यता, सत्य को महिमा, नाम महिमा,
सांसारिक ईश्वर को महत्ता आदि पर फुटकर दोहे ।

No. 293(g). Santa Sumirinī (Nāl) by Nānaka Guru.
Substance—Foolscap paper. Leaves—16. Size—7 × 4½ inches.
Lines per page—15. Extent—150 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Jugalakishora, Devanandapura, District Rāo Bareilly.

Beginning—सत्यनाम नाम करता पुरुष निरमय निरवैर भकाल मूर्ति
आजुनी सै भंगु गुर प्रसाद जप ॥ १ ॥ बाद सच्यु जुम्पद सच्यु है मो ॥ सच्यु नानक
होसो मो । सच्यु सोचै सोच न होवई जेसोचो लखवार । सुप्यै सुप्य न
होवई जो लाय रहा लिखतार ॥

भुष्यां भुष्य न उत्तरो जे बना पुरिषां भार । सहस सयान पूत लप्य होहीं एक
न चलै नाल ॥ क्या सचियारा होव वई क्या कूडै तुहैपाल । हुकुम रजाई चहन्ना
नानक लिखियां नाल ॥ १ हुकुमो होवन भाकार हुकुम न कहिषा जाई । हुकुमो
होव न जीयां हुकुम मिलै बहि पाई ॥ हुकुमो उत्तिम नीच हुकुमो लिखि हुम्न
सुप पाई ॥ एक ना हुकुम मिलै बकसोस एक हुकुमो सदा भवाइरे ॥ हुकुमै घंदर
सब को बाहेर हुकुम न कोय । नानक हुकुमै जो बुझै ताई मै कहै न कोय ॥ २ ॥

End—जतु पहारा घोरज सुनियारु । अहेरण संत वेद हथियार । भोपझा
अगिनी तज ताप । भांडा भाव अमृतु तनु धाल । घणो वे सब सांचो टकसाळ ।
जिनको न दर करम तिवकार ॥ नानक दरो न दर निहाल ॥ २५ श्लोक ॥

पवण गुह पाणो पिता माता धरती मईत । दोशु राति दुइदाई दाया पेडै
सरबस सकल जगतु । चंगिया पिया बुझिया पिया वाचै धरमह दूर । कर्मो आपु
आपुणी केनेइ के दूर । जिओ नामधि आइयां गये मशकति घाल ॥ नानक ते मुष
उज्जले कैंतो छुटो नाल ॥ ३९ ॥

Subject—सत्यनाम की स्तुति, सत्य की महिमा, प्रभु का दूकन हो सर्वो-
परि है । उसके गुण अकथनीय हैं । गुणवान के प्रति नानक की श्रद्धा, गुह
महिमा, गुह से ही सर्वे पदार्थ तथा ईश्वर का अनुभव प्राप्त करना, दोष पाप
नाशक वाणी का सुनना ही उचित है, मकों को वाणी से सब पदार्थ प्राप्त हो
सकते हैं, निरंजन नाम महिमा, पंच का महत्व, निराकार महिमा, अनेक मत-
मतांतर और अनेक ग्रंथों द्वारा अनेक भाँति की भक्ति मार्ग का वर्णन, प्रभु
कुदरत जानने में सर्वों की असमर्थता, प्राणोमात्र की अलग मति है और प्रभु के
जानने के सब अलग अलग उपाय रचते हैं परन्तु सब्जे प्रेम से कोई भी उस पर
बलिहारी नहीं जाता, कर्म की प्रधानता, जीव का विचार, प्रभु का बड़प्पन,
प्रभु ही सब बादशाहों का बादशाह है जो प्रभु के बड़प्पन को जानता है वही
बड़ा है, प्रभु का अनेक प्रकार से गुण गान होना संसार का रचना, मन को
बशीभूत करने से जय प्राप्ति ईश और प्रकृति की सत्यता, ऊँच और नीच का
अभेद वर्णन, पंचतत्व से सृष्टि की रचना, देवी देवताओं का बंधन और केवल
सच्चिदानन्द ही की सत्यता का वर्णन, प्रभु के अनेक रूप और कृपा का वर्णन
केवल पंचतत्व का ही संसार में सब खेल है । जिसने प्रभु से ध्यान लगाया उसी
का होना सफल है ।

No. 294(a). Anokārtha Bhāshā by Nanda Dāsa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—28. Size—10×5
inches. Lines per page—13. Extent—420 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manus-
cript—Samvat 1812 or A.D. 1755. Place of deposit—Paṇḍita
Deokinandanaji, Village Khaniā, Post Office Aligaūja Bazar
(Sultānpur.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः । दोहा । सु प्रभु जोति माया जगत कारन
करन अभेद । विप्र हरन प्रभु सुम करन नमो नमो गुरुदेव ॥ १ ॥ एकै वस्तु अनेक
है जग जगमगात जगधाम । जो कंचन ते किंकनो कंचन कुंडल कान ॥ २ ॥
उचरि सकत संसकृति नहि प्रकृत समरत्य ॥ तिन लनि नंद सुमति जया भाषने
कल्प ॥ ३ ॥ सुमनाम ॥ सुरभी चंदन सुरभी सुग सुरभी बहुरि बसंत ॥ सुरभि

चरावत वन सुनौ जो जग करता कल ॥ ५ ॥ मधुनाम । मधु वसेत मधु चेत नम
मधु मदिरा मकरंद । मधु जल मधु पय मधु सुदा मधुसदन ॥ गोविंद ॥ ६ ॥
कलिनाम । कल कलेस कलि सूरिया कलि निचंग संग्राम ॥ कलि कलियुग तहं
पौर नहि केवल केसव नाम ॥ ७ ॥ घनंजनाम । घनिनि घनंजै कवि कहत पवन
घनंजै चाहि । घनंजै बहुनि घनंजः कृष्ण सारथी जाहि ॥ ८ ॥

End—कालंदो नाम । जम अनुजा रवि जा जमो कोरु स्यामला चाप ॥
वह जमुना सम समद फिरि आवत तुष परलाप ॥ २४७ ॥ तरंग नाम । भग तरंग
कठाल पुनि विचो उमि सुभाइ । लहरि हथ पसार जनु जमुना पकरति पाइ
॥ २४८ ॥ उपकंठ नाम । फुल पुलिन उपकंठ पुनि निकट रीय घरवास तोरतो
चलिजाइ वलि भव चाये पिय पास ॥ २४९ ॥ वेतनाम । वेसर प्रबोद लख्यो अ
मध पुष्क वानोर ॥ बंजुल मंजुल कुंज तर बैठे है बलवोर ॥ २५० ॥ कोकिला
नाम । परभूत कलरव रक्त ईगपिक धुनिह हरस पुंज ॥ जानो पिय पारत
निरखि तोहि हेरति वलि कुंज ॥ २५१ ॥ इंद्रोनाम । गो मको कपूर करन गुन
इंद्रव जो रसु पाइ । जो राचा माघइ मिले परम प्रेम रसुपाइ ॥ २५२ ॥ माला
नाम । माला अक भव गुनवती इह जु नाम को दाम । जु नर कंठ करि है सुन
रहे है छवि को धाम ॥ २५३ ॥ जुगुल नाम । जम लग जुगुल जुगुल है उमय
मिथुन विवि वीय । जुगलकितोर वसहु सदा नंददास के होय ॥ २५४ ॥ इति
श्री नंददास छत नाम माला समाप्त ॥ का० शु० ११ भू० केसरो दुवे हित आपने
लिखे ॥ १ संवत् १८१२ ॥

Subject—वृष्ट १ से २८ तक—मिश्र शब्दों के अनेकार्थ, विष्णुनाम,
सुमौ, मधु, कलि, घनंजै, मन, घनंजुन, पत्र, पत्री, वरहो, धाम, हस्तो, सदन, सुवर्ण,
रूपा, सुक, कांति, मयूर, किरण सिद्धि, निधि, मुक्ति, राजा, इन्द्र, ईवता, सेवक,
दासो, अन्तःकर्ष, घंजन, होरा, मंगल, शुक्र, माता, नमस्कार, पैकारि, सेज,
उत्तमा, कुसुम, केश, लिलाट, नेत्र, वंशो, श्रवण, रदन, वृद्धस्पति, मुख, कर,
श्रोत्र, किकिनी, नूपुर, अमर, सुक, दर्पण, बोणा, तांबूल, समय, जल, चरख,
हरिदा, राचा, वचन छेम, नाम, लुबठो, कोय सुंदर, घनंजुन, सुविष्टिर, गंगा,
दोष, शरीर, कमल, चन्द्रमा, काम, अमर, दामिनी, सैन्य, मित्र, लता, प्रीतम,
पुत्र, मनुष्य, योगेश्वर, वेद, शेष, धर्म कुबेर, वरुण, दुर्गा, गणेश, धूर्त, कुंरंग, पाप,
पापांग, नौका, रुधिर, राक्षस, महादेव, सूर्य, मिथ्या, निकट, चंदन, मोन
सागर, वानर, बलमद्र, पृथ्वी, वाण, अग्नि, मुग्ध, अभिज्ञ, अपराध, प्रेम, पर्वत,
सर्प, वन, राक्षस, संख्या, विष, पपीहा, रात्रि, आकाश, संग्राम, नख, अल्प,
मकरो, माघ पत्र, पवन, दिशा, पिता, विवाह, मदिरा, स्वभाव, पंचकार, वृक्ष,

पत्र, पवन, ध्वनि, घतिसप, सह, सप, दुख, चर्घरात्रि, वज्र, लज्जा, चरसत्राण, घटारी, मकर, चांदनी, बाँधनी, वसेत, विहंग, पोपल, पाटल, शंख, माधुक, दाड़िम, केदली, ओफल, तमाल, कदम, किसुकी, बहेरा, नारि सुपारी, कबाळ, मिर्चि, पोपरि, हरे, सोठि, प्यारी, दाप, केसरि, राजबान्ह, चंवेली, पाहरिया, जूही, गंजा, लवंग, केतुकी, इलायची, सरोवर, नागलता, माधवी, कालिंदी, तरंग, उपकंठ, वेत, कोकिला, इन्द्रो, माला और जुगुल शब्दों के अनेकार्थ हैं ।

No. 294(b). *Anekārtha Mañjarī* by Nanda Dāsa of Mathurā. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size— $7\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—14. Extent—378 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Thākura Yadu Nātha Baksha Sindhaji, Raīs, Hariharapura.

Beginning—श्रीनमोऽशायनमः । अथ अनेकार्थं लिख्यते ॥

दोहा ॥ जो प्रभु मंगल जगमय कारण करन प्रमेव । विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव । १ एकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम । जिमि कंचन ते किकिनो कंकन कुंडल नाम ॥ २ उचरि सकत न संस्कृत और नहि समुक्ति समर्थ । तिन हित नंद सुमति अथा भाषा अनेका अर्थ ॥ ३ ॥

End—इति श्री नंददास विरचिते नाम माला समाप्त सुममस्तु कार मासे सुक्र पक्षे तिथी १४ संमत १८९८ सन १२४९ हस्ताक्षरे सेप महद्वज जो प्रति देखी तैसी लिखी ।

No. 294(c). *Anekārtha* by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size— 9×5 inches. Lines per page—40. Extent—210 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Satya-nārāyaṇa, Kāṭhagar, Rāe Bareli.

Beginning—श्री राधा कृष्णायनमः

जो प्रभु मंगल जगत मय कारण करन प्रमेव । विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव ॥ १ ॥ एकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम । उयो कंचन ते किकिनो कंकन कुंडल नाम ॥ २ उचर सकत नहि संस्कृत पाछत बिन समर्थ । तिन हित नंद सुमत यथा कथो अनेका अर्थ ॥ ३ शब्द एक नाना अर्थ भातिन को सो दाम जो नर करि है कंठ सो है हैरत को धाम ॥ ४ ॥

End—गुरु शब्द—गुरु गरिष्ठ गुरु विरहस्यति गुरु जो बहुत गुण जाहि ।
 सुखदाता माता पिता प सगरे गुरु आहि ॥ ४४ नंदन शब्द नंदन चंदन को
 कहत नंदन कहिये तात । नंदन वन पुनि इंद्र को नंद नंदन बिरयात । ४५ केतुको
 शब्द ॥ केतुको नम केतुको कुसुम केतुको सूर्य चंद । केतुको कहत मनोज को
 केतुको बहुरों छंद । ४६ पनिमिष शब्द—पनिमिष कहिये देवता पनिमिष मो
 कहंत । पनिमिष काल कराल यह जाको कछु न घेत ॥ ४७ कृष्णा शब्द—कृष्णा
 कालिंदो नदी कृष्णा पीपरि होय । कृष्णा बहुरों द्रौपदी हरि राखे पट गोय ॥ ४८
 स्नेह शब्द—तेल स्नेह स्नेह घृत बहुरों प्रेम स्नेह । सो निज चरनन गिरधरन नंददास
 को देह ॥ ४९ जो यह अर्थ अनेका पढ़्य सुनय नर कोय । ताहि अनेका अर्थ है
 पुनि परमारथ होय ॥ ५० इति श्री अनेका अर्थ संपूर्ण ।

No. 294(d). *Anekārtha Nāmamālā* by Nanda Dāsa of Vrindāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8×5 inches. Lines per page—8. Extent—50 Anushtup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Yadu Nātha Baksha Simha, Hariharapura, Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुचरणामांनमः

एक रदन गज वदन जु दोजे बुद्धि उदार । गजार्तेषा रस ग्रंथ को बनत न
 लगी बार ॥ १ जो पशु मंगल जक मय कारन करन अमेव । विघ्न हरन सब सुम
 करन मनो नमो तेहि देव । २ ऐकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम । त्रिमि
 कांचन तें किंकिनो कंकन कुंडल नाम । ३ कछो जात नहि संस्कृत औ समुहन
 सम हत्य । तिन्ह हित नंद सुमति जथा मापानेकाऽत्य ॥ ४

End—पतंग नाम । तरनि पतंग पतंग पग पावक बहुरि पतंग । सबज रंग
 पतंग है हरि येकै नव रंग । २६ । पलनाम । पल ग्रामिष को कहत कवि पद
 उन्जास पल होइ । पल जो पल कह रिधि ज परै गोविन्द जुग सत सोइ ।
 २७ दल नाम । दल कहियो नृप.....

No. 294(e). *Mānamājari* by Nanda Dāsa of Mathurā (Muttra.) Substance—Country-made paper. Leaves—39. Size—8½×5 inches. Lines per page—9. Extent—515 Anushtup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—San 1237 Hijarī or A. D. 1859. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ । मानमंजरी नाम संज्ञा जुक्त नन्ददास कृत लिख्यते ॥ दाहा ॥ जो प्रभु जोति मय जगत कारन करन भमेव । अशुभ हरन सम शुभ करन नमो नमो सो देव ॥ १ येकै वस्तु अनेक है जग मगात जग धाम । जिमि कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल नाम ॥ २ तं नमामिहं परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन । जग करता तारन जगत गोकुल जाको ऐन ॥ ३

End—माला नाम—माला अथ अज गुनवती माख्य नाम की दाम । जो नर करिहैं कंठ यह हूँ है गुन के धाम ॥ ४०१ जुगननाम । हुंहुमि सुगम विधि बंद है मिथुन उमै जम वीथ । जुगलकिसोर सदा बसहिं नंददास कह्योय । ४०२

इति श्री मानमंजरी पुस्तके नाम संज्ञा जुक्ते श्रीकृष्ण जू राधा जू मान वचन कवि नंददास विरचिते प्रेम पुस्तके समाप्तं शुभं मस्तु मि० भादौ शुदि १४ सन् १२३७ दसखत प्राग कुरमी के पाठार्थ अपने वास्ते ।

Subject—पार्थना १—६ छन्द तक, कृष्ण नाम ७—९, मान नाम १०, सखी ११, बुद्धि १२, सरस्वती १३, शीघ्र १४—१५, धाम १६—१७, सुवर्त १८—२०, रूप—२१, उज्ज्वल २२, शोभा—२३, दोसि—२४, किरण २५, मयूर २६—२७, सिंह २८—२९, अश्व ३०, हस्ती ३१—३२, सिद्धि ३३—३४, निधि ३५—३६, युक्ति ३७—३८, मनोरथ ३९, राजा ४०, इंद्र ४१—४६, देवता ४७—५०, असुत ५१, सेवक ५२, दासी ५३, भेंटःकरण ५४, भजन ५५, होरा ५६, मुक्ता ५७, मंगल ५८, बृहस्पति, ५९—६०, शुक्र ६१, लक्ष्मी ६२—६३, माता ६४, नमस्कार ६५, सोढो ६६, बैनी ७५, पुत्री ६७, शय्या ६८, बलिस्ति ६९, पुण्य ७०, केस ७१, मस्तक ७२—७३, नेत्र ७४, अवन ७६, अघर ७७, सिर ७८, दशन ७९, टोढो ८०, वदन ८१, घोवा ८२, इयामता ८३, कर ८४, उरोज ८५, किंकिनी ८६, नामि ८७, पंक्ति ८८, नूपुर ८९, बख ९०, शुक ९१, दर्पण ९२, घोणा ९३, नाद ९४, ताम्बूल ९५, उर ९६, उदर ९७, समय ९८, जल ९९—१०२, चरन १०३, हरिद्रा १०४, कुटिल १०५—६, मृकुटो १०७, लेम १०८, नम १०९, युवती ११०—११, कोथ ११२, राधा ११३—११५, प्रह्ला ११६—११९, सुंदरता १२२, अर्जुन १२५, युधिष्ठिर १२६, गंगा १२९, दोरख १३२, कमल १३७, कोई १३८, कौषा १३९, चंद्र १४३, कंदर्प १४६, समर १४८, मेघ १५०, दामिनी १५२, सेना १५४, प्रिया १५५, लता १५६, प्रोतम १५७, पुत्र १५८, मनुष्य १५९, मनोहर १६०, जोगी १६१, वेद १६२, शेष १६३, धर्मराज १६४—१६६, कुवेर १६९, वरुण १७०, दुर्गा १७३, गणेश १७६, धूर्त १७८, कुरंग १८२, पाषाण १८३, नाब १८४, कथिर १८५, राक्षस १८८, धूरि १८९, महादेव १९५, सूर्य २०१, मिथ्या २०३, निन्दा २०५, चंदन २०७, मोन २११, सागर २१४, वाटर २१६, बलिमद्र २१९, उदासीन २२०, पृथ्वी २२५,

धनुष २२६, तरकस २२७, तोर २३०, अग्नि २३५, अग्नि कणा २३७, मूर्ख २३८ बिन्न २३९, अपराध २४०, प्रेम २४१, परवत २४४, भुजंग २४९, घोड़ा २५०, बाटिका २५२, वन २५३, असुर २५५, संख्या २५६, विष २५८, द्रव्य २५९ गणिका २६१, प्रतिवता २६२, चातक २६३, रजनी २६६, आकाश २६९, मोच २७०, युद्ध २७४, नख २७५, सूक्ष्म २७६, मकरो २७७, मारग २८०, कृपा २८१, सङ्ग २८३, दिवा २८५, नदी २८८, पिता २८९, विवाह २९०, मदिरा, २९३, स्वभाव २९५, प्रेयकार २९६, वक्ष २९९, पल्लव ३००, पत्र ३०२, पवन ३०५, ध्वनि ३०७, आजा ३०८, अति ३०९, समूह ३१०—३१६, अल्प ३१७, दुःख ३१९, रात्रि ३२०, वज्र ३२२, लज्जा ३२३, पनही ३२४, लघुभाता ३२५, महल ३२६, चाँदनी ३२७, बोधो ३२८, उपवन ३२९, वसंत ३३०, खग ३३४, पोपर—३३५, आरक्त ३३६, पावर ३३८, आन्न, ३४०, महुआ ३४१, चंपक ३४२, दाढ़िम ३४३, कदली ३४४, बेल ३४५, तमाल ३४६, कर्द्व ३४७, किशुक ३४९, बहेड़ा ३५०, नारियल ३५१, सुपारी ३५२, केवाळ ३५५, मरिच ३५६, पोपर ३५९, हरे ३६१, सोठ ३६२, मूंगा ३६३, चकरंद ३६४, दास ३६७, केशर ३६९, लुहो ३७८, चमेली ३७३, सजीवनि ३७५, मालती ३७७, दुपहरिया ३७९, गुंजा ३८१, केतकी ३८२, लवंग ३८३, माधवी ३८४, इलायची ३८५, पान ३८६, सरवर ३८८, वरगद ३९०, जमुना ३९१, तरंग ३९२, उपकंद ३९४, कस्तूरी ३९५, कपूर ३९६, वेंत ३९७, कोपल ३९८, इन्द्रो ४००, माला ४०१ युगल ४०२ इति,

No. 294(f). Nāma Malā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—385 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1863 or A. D. 1796. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda, Village and Post Office Gaurigaūja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ नाम माला लिख्यते ॥ दोहा ॥ तं नमामि पद परम गुर कृष्ण कमल दल मनन ॥ जन कारज करुणा रचन गोकुल जाके यजन ॥ नाम रूप गुन भेद कह सो प्रगटत सब ठौर ॥ ताविन तत्व जो घान कछु कहै सो अति बड़ ठौर ॥ समुझि सकत नहि संसृष्ट जानो चाहत नाम ॥ तिन लग नंद सुमति जया रचत नाम कौ दाम ॥ ३ ॥ गुंथन नाना नाम को घमरकोस के भाइ ॥ मानवतो के मान पर मिलै अर्थ सब पाइ ॥ ४ ॥ छातो नाम । वत्स वक्ष उर पीय के निरखि आपना भाइ ॥ ताते बहौ लुमान अति अवर तोय के भाइ ॥ ५ ॥

End—माला नाम । माला श्रज स्य गुनवती यह जु नाम की दाम ॥ जो नर कारिहैं कंड जग हुइ है कृवि को घाम ॥ २५१ ॥ इति श्री नाम माला नंददास कृत समाप्तम् । संवत् १८५३ श्रावण शुक्लपक्षे तु भौमि नंदन संज्ञ के गंगा विष्णु मिश्रेण लिपित्वा । वांछि सुपो रहौ मित्र तुम पुस्तक लिपो बनाइ ॥ यह असोस हमरो फलै श्री गोपाल सहाय ॥ १ ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः

Subject—अनेक नाम—छाती, मान, सखी, प्रज्ञा, वागीश, शोभ, घाम, कंचन, रूप, उज्ज्वल, शोभा, किरण, मयूर, सिद्ध, अश्व, हस्तो' अष्टसिद्धि, सिद्धि मोक्ष, राजा, इन्द्र, देवता, अमृत, भृत्य, अंतर्धान, अंजन, दासो, होरा, मंगल, शुक्र, माता, बृहस्पति, मुक्ता, लक्ष्मी, नमस्कार, निःश्रेणी, सुता, शय्या, कुसुम, उसीसी, मुख, अलक, मस्तक, वक्र, लोचन, कर्ण, कर, वंशो, अघर, दशन, स्यामता, श्रोत्र, उरोज, रोमराजो, छुद्रघंटिका, तर्कस, नूपुर, वसन, आन, दर्पण, वीणा, शुक्र, नीर, भय, हरिदा, क्रोध, समय, कुशल, नाम, स्त्री, ब्रह्मा, दीर्घ, अर्जुन, गंगा, शरीर, कमल, चन्द्रमा, मनेज, मेघ, विह्वलता, सेना, धनुष, मधुव्रत, प्रिया, बल्लो, प्रीतम, पुत्र, नर, वेद, ईश्वर, योगेश्वर, धर्मराज, कुवेर, वरुण, शेष, विष्णेश, जन्म, वंचक, सुग, पाप, पापाण, नौका, कथिर, राक्षस, धूरि, महादेव, सुग, अतृप्त, निकर, चंदन, मोन, सागर, मकैट, संकरवर्ष, पृथ्वी, रत्न, अग्नि, अज्ञ, अपराध, पर्वत; भुजंग, पोद्दा, धन, सुरु, संध्या, विष, मनेाहर, सुन्दर, धन, गणिका, पतिव्रता, पार्वती, कृपा, चार, वर्ष, अङ्ग, रजनो, आकाश, नध, संध्याम, सुक्ष्म, मकरो, मार्ग, दिशा, नंदो, वृक्ष, पथ, पवन, दुःख, लज्जा, वज्र, पिता, मदिरा, स्वभाव, समूह, अति, आज्ञा, धोरे, पदत्राणि, उच्च, घाम, मकर, चांदनी, बोधो, अंधकार, वाग, वसंत, विहंगम, अरुण, पादर, आभ्र, चंपक, मधुप, दाडिम, कटलो, बेला, माल, कंदर्ब, किशुक, वहेरा, सुपारी, नारियल, कंबाळ, मरिच, पोपरि, हरे, सोठि, बिट्टुम, दास, केसरि, स्वर्ण, जूयिका, मालती, सजीवनो, कंद, खंदक, गुंजाफल, केतकी, लवंग, माधवी, नागलता, बट, सरोवर, कालिन्दी, तरंग, तीर, वेत, कोकिला, शब्द, इन्द्रो, ज़ुगल, रसनाम और मालानाम ।

No. 294(g). Nama Mala by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—661 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1863 or A. D. 1806. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Prasāda, Village Dhemani, Post Office Sisaia, District Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाम माला लिप्यते । प्रथमामि
परमं गुरं कृष्ण कमल दल नयन । जग कारन कहना जब मोकुल जाके अयन ।
नामरूप गुन भेटि कै प्रगट जो सब हो ठौर । ता विन तत्त्व जो ध्यान कछु रचै
सा प्रति बड़ बौर । उचरति सकित न संस्कृत जानो चाहत नाम तिन हित नंद
सुमति यथा रचत नाम के दाम ॥ अंयन नाना नाम को अमरकोष के भाइ ।
मानवतो के भाइ पर मिळे अर्थ सब पाइ । वत्स वज्र उर पीय तन निरपति यपनी
भाइ । बाके बाड़े मान यह ध्यानति जाके पाइ ॥ स्यामटपं अंकार मद गर्ब समै
अभिमान ॥ मान राधिका कुंवरि को सब को कर कल्याण ॥ वैशाखंधी जो सपी
हित सहचरी पाइ । चलो कुंवर नंदलाल को चलो मनावन ताहि ॥ हस्तो नाम ।
हस्तो दंतो दुरद दुप पयो वारन व्याल । कुंजर इमि कुंभो करति, वैरमजात
उडाल ॥ सिधुर नेकै नाम हरि गज समाज मातंग । अति गयंद भूमत रहत
राजन नाना रंग ।

End—इलायचो के नाम । चन्द्रकन्यका निःकुटी वक्रकुट पुलकीन बेलि ।
इत येले पग परति बलि यह रंचक मुख मेलि ॥ माधवी के नाम । वासंती पुद्रक
साइ अति मुक्ता फल नाडे । इत मधवी कहि पां परति तनिक चितै बलि जाके ॥
नागबेलि के नाम । तांबुल अहिबहुरो द्विज पानी की बेलि । सरस भई तुव दरस
ते बलि रंचक मुख मेलि ॥ सरोवर के नाम । हृद पुष्कर कासार सर सरसी ताल
वड़ाग । यह देपौ बलि मान सर फुल्यो तुव अनुराग ॥ बट के नाम । जटो कपदौ
रक्तफल वह पदम अथ्य मोध । यह बंसोवट देखि बलि सब सपि नर बधि रांध ।
जुगुल नाम । जमल जुगम जम हंद है उमय मिथिन बिबि वीय । जुगुलकितार
सदा बसा नंददास के होय ॥ माला नाम ॥ माला अकु अज गुनवती यह जु नाम
को दाम । जो नर कंड करिहै सुधर होइ है छवि को धाम । कल्पवृक्ष के नाम ।
हरि चंदन मंदार पुनि पारिजात संतास । कल्पवृक्ष कहि देवतर पुंसिपंच इत
जाणि ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला सम्पूर्णम् संवत् १८६३ माघे ।

No. 294(h). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—
Country-made paper. Leaves—38. Size—10 × 6½ inches.
Lines per page—20. Extent—360 Anuśṭup Śloka. Appearance
—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1918
or A. D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Śidhīnātha Vājapeyī-
Keli, Rāe Bareli.

Beginning—नाममाला । श्री गणेशायनमः । जयति जयति श्री मुखमान
नंदनी नंद को लाड़िली श्री वृंदावन कुंज बिहारी ।

तत्रमामि पर परम गुह कृष्ण कमल दल नयन । जग कारण कहना करन
गोकुल जिनको चैन ॥ नाम रूप गुण भेद करि सो प्रगटत सब डैर । ताबिन उत्तव
जो चान कह्यु कहै सो यति मति वैर ॥ समुझि सकत नहि संस्कृत जानो चाहत
नाम । तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम को दास ॥ ग्रंथत नाना नाम को
अमरकोश के माय । मानवतो के मान पर मिले ग्रंथ सब आय ॥ ज्ञातो के नाम ।
बत्स बच्छ उर पोय के निरयि पावनो छाव । ताते उपज्यो मान हिय चान तिया
के माय ॥ मान के नाम । ग्रहंकार मद दर्प पुनि गर्वसय अभिमान । मान
राधिका कुंवरि को सब को कर कल्यान ।

No. 294(i). *Nāma Mālā* by Nanda Dāsa Substance—
Country-made paper. Leaves—53. Size—5 × 4 inches. Lines
per page—17. Extent—424 Anushtup Ślokas. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1928
or A. D. 1870. Place of deposit—Thakura Dalajīta Simha,
Village Zalimapurawā, Post Office Kesargañja, District Bah-
raich (Oudh).

No. 294(j). *Nāmā Mālā* by Nanda Dāsa of Gokula. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 4½
inches. Lines per page—35. Extent—400 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit
—Babū Padma Baksha Simha, Lavedapur, Bhinagā Rāj,
Bahraich.

No. 295. *Kokaśāstra* by Nandakeswara Paṇḍita of Paṭnā.
Substance—New paper. Leaves—198. Size—9½ × 7½ inches.
Lines per page—17. Extent—1,262 Anushtup Ślokas. Ap-
pearance—New. Written in Prose and Verse. Character—
Kaithī. Date of Composition—Samvat 1675 or A. D. 1618.
Place of deposit—Paṇḍita Rāma Prapanna Mālaviya Vaidya,
Sultānpur (Oudh.)

Beginning—श्री सीताराम जो सहाय नम्हा । श्री गणेश जोव सहाय
नम्हा । श्री पोथी कोकलासत्र । यनौ मनपती बाघोनो बानासा । जेहो
सुमोरत मतो मतो प्रगासा ॥ सम दिन बंदो सरोसजो माता । वरनौ शंकर
सोचो बुधो दाता ॥ बंदो हरो ब्रह्मा के पाया । जन । आपिता जाकर माया ।

सम श्रोतु पतालहि देवा । दस द्रोगपाल करहो जे सेवा ॥ बंदौ पांड स्रज मन
 तारा । बंदौ मनपती जोती अपारा ॥ दोहा (खंडित) सम पंडीत के वेदी के बहु
 वोचो × × × × । काम साख कछु भाख्यौ : × × × × ॥ बंदौ फोल
 पछ रवोवारा । तेही दिन वोधी कथा अनुसार ॥ सोधी तीरोदसी हम होत
 पावा ॥ हस्त नख हमही मन लावा ॥ सोधी जोग फर उपमा होइ । पेही वोधी
 कथा सोधी पै होइ ॥ साह सलेम जगत सुलताना । तेही पाछे पटना नोज
 धाना ॥ दोहा ॥ साह सौ पचहतर : हम जो गीना दह दोस : । मन दफतर म
 हम देवा एक हजार बतीस : ॥ चौपाई ॥ नंदकेसर पंडीत ऐक भैठ । पहोले ग्रंथ
 के उन कहेउ ॥ गुनीक पुत्र कबो पती माना ॥ काम कलारस सम उन जाना ॥
 उन्ह के मते ग्रंथ हम देवा । कोछु छनछेप वोचारो बोसेवा ॥ कामकला कछु
 बरना सोइ । सुनत रसाल रसिक बस होइ ॥ रसोक कबो नबो नरनाहा ।
 कामकला रती रस बोगाहा ॥ दोहा ॥ बहुत ग्रंथ वोचारो ते : होऐ बहुत दीन
 खेव : । बाल बौध के कारने कोउ कथा छनछेप : ॥ चौपाई ॥ कामते तुमै कहौ
 वोचारो । लखन पुरुष जातो बौधारी ॥ सहसा शोभा वोरखम तुरंग पावही
 नागर रसोक सुरंगा । पहिले कहौ ससा का लखन । कामकला प्रम वोखन ॥
 रतोरस रसोक तरनी मन हरइ । गावत पठत बसु बस करइ ॥ सत्य वचन दाता
 गुनवंता । सुख सब रूप अपोक धनवंता ॥ दोहा ॥ षष्ट अंगुरो सरोस सुइ अंह
 सकल प्रधान : । वपेना ऐक पदुमिनी के : जाने रसिक सुजान ॥

End—इलाज प्रमेव वो मुजाक का ॥

घाम का टीकोरा, वो तालमखाना वो तज वो मेदा वो माजूफलः वो
 कुवार-कागुनी (माल) वो वरमंडो वो सम बराबर ले सबुल छटाक दाल-
 चीनी पइसा भर मुसली सोपाह पावः सतावर भायपाव चीजको भाचका
 पकर करावै सामर वो चाल खुरपा पैसा भर इन समो को जुदा जुदा पोसै
 साथ तीनों सेस कर तरी मिलावै बीच बमत सुबाह के एक तरह थो भर गाइका
 दवा साथ बाइः वो पानी ताजा साथ बाइः वो जब तक के साप तब तक
 नजदीक औरत के न जापैः वो तुरसी वो घटा वादो से परहेज करे जलदी से
 पाराम होइ । दुसरा दवा । रस कपूर घाठ मासाः करन फल सताइस रद
 जायफल इगारह इस तरह सब दवाइ ।

Subject—(१) पद्यात्म देवादि वन्दना, ग्रन्थ निर्माण काल और लेखक
 तथा उसके अभिभावक का नाम निर्देश पृ० १—२ । (२) पुरुष तथा स्त्री जाति
 के लक्षण, वसोकरण मंत्र सहित पृ० ३—२० तक । (३) काम निवास स्थान
 तिथियों के हिसाब से, मर्दन, चुंबन, नखस्पर्श तथा आलिमन विधि २१ पृ० ३४

पृ० तक—(४) भासन तथा गंध पदार्थादि वर्णन, मुख शोभा तथा कामोद्दीपक अन्य इच्छित कार्यों के साधन, पुष्टाङ्ग, विधि, आम्भनादि विधि । पृ० ३५—५५ तक—(५) तावोज, उवटन, तिलक अंजन, मोहनो, गहन का, बसकरना, गर्भ पलटन, गर्भ रहना, पुत्र होने इत्यादि का साधारण वर्णन, पृ० ५६—६५ तक । (६) मोहक जंत्र, समुद्र कल गुण पृ० ६६—७२ तक । (७) बाँझ की हिकायत, सात प्रकार की बाँझों के लक्षण, बाँझवन विनाश के उपाय । तावोज, दमे के इलाज, अन्य इलाज, सिर पौड़ा का तावोज, बाँझो का इलाज, दाद का इलाज, पृ० ७३—८५ तक । (८) समुनौती पृ० ८६—९० तक । (९) पुष्टादि की औषधियाँ, ताँबा, रत्नादि मारने की विधि और नाना प्रकार के मन्त्र हैं पुस्तक के अन्त तक अर्थात् ११ पृ० से लेकर १९८ तक कितनीही प्रकार की औषधियों का वर्णन ।

No. 296. *Bārāha Māsā Rādhā Kṛishṇa* by Nandalāla. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8×6 inches. Lines per page—28. Extent—336 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Thākura Jairama Simha, Mirzāpura, Post Office Mahamūdābād, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राधा कृष्ण का बारहमासा लिप्यते ॥ पति सुप्रप मुपदंत येकै कपिल बहु गुन नायक ॥ जन करन सब दुख हरन सुष करन दायक ॥ बिबन हरन विग्यान दायक सुर सहायक विकट प्रति लंबोदर । करिबर बदन सुष सदन बहु गुन भाल ससिबर सुन्दर ॥ धूमे ध्वज त्रिसूल करि रिपु सयने सकल नसायक । भुज चारि अद्भुत रूप सोहै विबुध पति सब लायक ॥ यह विनय मेरो सुनु विनायक देहु बुधिवर दायक । नंदलाल तुमरो सरन पायेो सुमति सहायक ॥ दोहा ॥ द्वादस नाम गनेस के सुने महा सुष होइ । सुफज करै मन कामना जो सुमिरे नर कोइ ॥ सुमिरि भवानो संकरहि श्री गुरु चरन मनाइ । बारहमासा कहत हैं मोको होउ सदाइ ॥ सारंग पानि सनेह बस सदा रहै अनुकूल ॥ विन कारन जो जगत मे ताहि न कवहुं भूल ॥ जडुपति श्री गोपी बिरह सो सब कहौं बघानि ॥ मिलि है सब कहं आनि प्रभु । बात लेहु पहिचानि ॥

End—छंद ॥ समुझाइ सब मृदु बात कहि पितु मातु को चिन्तौ करो । भये पुरक लोचन नीर वरपै ॥ मनहु सावन को भरो ॥ सुनु मातु मैं नहि उरिन

तुम से जलम कोटिन हौ धरो । अब जाउ तुम वज लोग लैकै कर जोरि तब
पावन परौ ॥ तब कहति जसुमति सुनौ जदुपति एक वर मोहि दोजिये ॥ यह
मधु मूरति वसै उर महं नाम निसु दिन लोजिये ॥ तब चाव पितु के चरन परसे
जोरि कर पुन पुन कछो । प्रतिपालि हमहि प्रबोन कौनो सुजस तुम्हरो होइ
रहो ॥ तुमरो अनुग्रह राय पायो भयो मैं त्रिभुवन बनी । करति दाया रहौ मोपर
कहौ यह जदुकुल मनो ॥ पितु विदा तुम सम होन भायो बेगि चासुसु दोजिये ।
गहि चरन हरि के नंद बोले तात यह सुनि लोजिये ॥ अन जानि मैं नहि चरन
परसे भूलि तब माया रह्यो । चरित प्रगम चपार तुमरो पार कवने लह्यो ॥ जाहु
बराहि कृपाल मेरे सुरति जनि विसराइयो । करि सुरति कबहुं चाह वज मंद फेरि
दरस दिपाइयो ॥ दोहा ॥ बार बार मिलि भेंटि कै विदा भये गोपाल । प्रभु
पहुंचे दारावती गोकुल चाये भाल ॥ इति श्री वाराहमासा राधाकृष्ण संवाद
नंद जु को संवाद सम्पूर्ण समाप्तः ॥ इति श्री कार्तिक मासे शुक्ल पछे तिथौ
अष्टम्यां चन्द्रवासरे संवत् १९२१ दसपत मोहनलाल गोचरो के ।

Subject—श्रीकृष्ण और राधिका का प्रेम, श्रीकृष्ण का गोपियों को
छोड़ मयुरा जाना, वहां से द्वारका जाना, गोपियों का विवाह फिर तीर्थ स्नान
हेतु श्रीकृष्ण का द्वारका से आना, इधर व्रजवनिता समेत नंद यशोदा जो का
भो जाना, वहां श्रीकृष्ण से राधिका का गोपियों को साथ ले कर मिलना और
नंद यशोदा का श्रीकृष्ण जो से मिलना आदि ।

No. 297(a). Hitōpadeśa Bhāṣhā by Nārāyaṇa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—58. Size—10½ × 5½
inches. Lines per page—19. Extent—1,275 Anuṣṭup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—
Bābū Padma Baksha Simha, Lavedpur (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पथ सुहृदभेद कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥
दिल दयाल कवि कोविदिनि मति प्रसाद सुखदानि । द्विद माथ गननाथ के
चरन सन जिय जानि ॥ १ ॥ चौ० ॥ राजपुत्र बोध्यौ इमि फेरो । मित्र लाम
माख्यौ द्विज टेरो । सुहृद भेद को कहौ कहानी । जाते राजनौति पहिचानी ॥
दोहा ॥ वृषभराज मृगराज कौ कहूं बंध्यौ अति प्यार । दगावाज दंभो लुबुध
सुख तोर्यो एक स्यार ॥ २ ॥ चौ० ॥ राजपुत्र बोले यह कैसी विष्णु समे भाषी
है जैसी ॥ हँ दक्षिण दिसि जग पांभिरामा । नगरी एक सुवर्णा नामा ॥

End—विष्णु शर्मावाच ॥ जे देवन्द के पाछे भोका । ते सारस को दोन्हे
लोका ॥ विद्याधरो घण्टरा साधा । चवर डोलावत घपने हाथा ॥ जे कृतज्ञ भरता
के भक्ता । सदा रहै प्रभु सो अनुरक्ता ॥ सूर समर को नोके मांडे । स्वामि हेत
बोवित को छाड़ै ॥ ते नर होत स्वर्ग के गामो । सुजस सकल पावै जग नामो ॥
मारि जाइ शत्रुन सो सारा । सुष परनेकु रहै पै नुरा ॥ कातर बोलन प्रापन भापैसा ।
घमरावति को रस चाखै ॥ घौर सकल सुख तुम कह होई । विग्रह करै न पावै
कोई ॥ नीति मंत्र रिपु मारे जाहो । वन वन फिरै मूल फल खाहो ॥

इति श्री हितोपदेश विग्रहो नाम तृतीय कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
सम्बत १८७७ ॥

इति ।

Subject—सुहृद भेद, पृ० १-२४ तक । विग्रह, पृ० २५-५८ तक ।

No. 297(b). Hitopadeśa (Rājanīti) by Nārāyaṇa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—232. Size—8 × 4
inches. Lines per page—16. Extent—2,704 Anuṣṭup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—
Samvat 1924 or A.D. 1867. Place of deposit—Thākura
Digvijaya Sīnha, Talukedāra, Village Dikanliyā, Post Office
Biswā, District Sitāpur (Ondh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हितुपदेश लिप्यते ॥ दोहा ॥
सिद्धि साधु के काज मे सो हू करौ कृपालु गंग फेन को लोक सो सिर ससि
कला विसाल ॥ १ ॥ सुनो सहित उपदेश देत बचन रचनानि वेदन को धानो
लहै राजनीति पहिचानि ॥ अजर अमर के हेत ते विद्या धनहि बढ़ाव । मोक्षु मनो
साटी गहे देत बिलंब न लाव ॥ विद्याधन सब धनन ते संत कहत सरदार । मोल
बढ़ो ना घटत घर किये न पैस्ये मार ॥ विद्या देत विनोत करि विनै बढ़ाई देत ।
बढ़े भये धन पाइये दान भोग धन हेत ॥ आश्र सख विद्याद विध धन और धर्म न
जाइ । विद्याई पहिले हंसो दुजो सदा सोहाइ ॥ दाऊन नृपति समुद्र सम विद्या
नदो समान ॥ छै पहुंचावै नोचहु लाम भाग परमान ॥ विद्यानदो नदोस नृप
नोचहु आमलवै हाल । दाऊन नृपति दया करै होइ जो भाग कृपाल ॥ प्रथमहि बाको
नाम जो धरै न घट मै धानि । बाल कथा सुल कहत हौ राजनीति पहिचानि ॥

End—दोनो गये आपने राजा । सुष सो करत आपनो काजा ॥ विष्णुशर्म
वालन सो कहो । आपसु करौ सुनौ जो चहो ॥ राजपुत्र बोले जिय जानो ।
विशुशर्म को सादर मानो ॥ हिज बर जो राजन को चहो । सोई कथा आप

यह कहो ॥ दृजो भयो जन्म प्रवतारा । सुनिये राज संग व्योहारा ॥ गयो बहोरि
फेरि प्रव भयो । सुष समूह पायो दुष गयो ॥ विश्वशर्म तब दई असोसा । संधि
करो शुभ घरो महोसा ॥ विपति दूरि साधन को जाई । दानन को रति सदा
सोहाई ॥ नोति नई नारो लो जगै । चुंवन करै मित्र सुष लगी ॥ मंत्री मंत्र सदा
मन धरौ । महाराज सुष आपुहि करौ ॥ दोहा ॥ जौलैं गिरि गौरोस को बहत
जात नित नेत । जौ लैं लक्ष्मि मुरारिधर प्रगट घरत चौ मेट ॥ जौ लैं सुर गुर
संग करि किरि सूरज चौ चंद । तौ लैं नारायन कथा सुनै सो मनहि प्रनंद ॥
हित कल बहु यामे अद्वै भूपन की बरनोति अरु उपाव बल बुद्धि की प्रिय चरित्र
रस रीति ॥ मंत्र भेद सूदेस के जोर व फेर व संधि अरु अनेक गुन भेद हैं बाहि
कथा सो बंधि ॥ इति श्री हितोपदेश नारायण कृत समतम् ॥ श्री संवत् १९२४
माघ मासे कृष्णपक्षे तिथौ ४ सप्ति दिन लिख्यते बह्मदेव पंडित पैदापुर ग्राम
निवासते ॥

No. 297(c). Hitōpadēśa Bhāṣhā by Nārāyaṇa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—41. Size—13 × 5
inches. Lines per page—12. Extent—600 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1927 or A.D. 1870. Place of deposit—
Thākura Dalajīta Simha, Village Jālimasīmha kā purwā, Post
Office Keśargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रीमते रामनुजायनमः अथ राजनोति
हितोपदेश माया लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि काज साधु में सो हर करै कृपाल ।
गंगा केतु कि लोक सिसिर ससि काल विलास ॥ सुनिहुत उपदेश यह देत वचन
रचनानि देवन्ह को वानी । लहे राजनोति पहिचानि । अजर अमर को भांति सो
विद्याधनहि बढ़ाव । मीछु मनो भोठो गहे देत न बार लगाउ ॥

End—राजकुमार कथा सुनि बोले । एकहि बार सहस मुख बोले ॥ प्रानंद
बड़ा हमारे भयो । उनको साथ छूटि नहि गयो । कुशल भांति अपने घर पायो
हमारे मन प्रानंद बढ़ाये ॥ विश्वशर्मा उवाच ॥ राजकुमार एक सुनिये बात ।
जो हैं तुम्है असोसत गाता ॥ पावे साधु मात सब लै काय । लक्ष्मीयंत देस निज
होय ॥ भूपति सब भूमिहि प्रतिपाले । धर्महि धरै न डोले हाँले । अर्जुन
चूड़ाग्रि जाके । सो कल्याण करै प्रभु ताके । इति श्री हितोपदेश प्रथम कथा
मित्र लाभ समाप्त । सुम मस्तु । समै नाम माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ नौमो
रविवारे संवत् १९२७ दसवत दलजीत सिंह के ।

No. 297(d). *Hitōpadēśa* by *Nārāyaṇa*. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—960 *Anuṣṭup Śloka*s. Incomplete. Appearance—Old. Character—*Nāgarī*. Place of deposit—*Thākura Mahipati Simha*, *Bhairampur*, *Rāe Bareli*.

Beginning—पृष्ठ २ से ।

दारुन नृपति समुद्र से विद्यानदी समान । लै पहुँचावै नोचहुँ लाम भाग परमान ॥ विद्यानदी नदीस नृप नोचहुँ मिलवै हाल दारुन दानि दया करै होइ जो भाग कपाल ॥ प्रथमाहि बाके नाम जो मरो नये घट डारि । बाल कथ कुल कहत हौ राजनीति सब भारि ॥ मित्र लाम फिरि सुहृद को भेद सो विग्रह संधि पंचतत्व सो प्रथ पहि चारि कथा में बंधि ॥

End—रोग सेक संताप यह घरो पहर को संग । तातन कारन कौन नर करै पाप परसंग ॥ चल जल में ससि विव ज्यों त्यो मन उन में प्राण समुझि इहै मन आपने कौन करै कल्याण ॥

ताते मेरे मन यह आई । तौसो बात कही मन भाई ॥
सत्य ये कहै भेदहजार । सत्यहि को दीजै फिरि मार ॥
जो लो गौरि गिरीस को वद्धत जात नित नेह ।
जो लो लखि मुरारि उर लागि तड़ित जो मेह ॥
जो लो सुर घर कनक गिरि फिरि सुरज अह चंद ।
जो लो नारायण कथा सुनै सुजान अनंद ॥
इति हितोपदेश भाषा नारायण कवि कृत समाप्तः ॥

No. 298. *Gopīsāgara* by *Nārāyaṇadāsa*. Substance—New paper. Leaves—38. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—48. Extent—1,140 *Anuṣṭup Śloka*s. Appearance—Old. Character—*Nāgarī*. Date of manuscript—*Samvat* 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—*Paṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra*, *Kaṭail*, *Post Office Chilwāliyā*, *District Bahrāich*.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वती मातु जो सहाई ॥ अथ गोपी सागर कथा लिख्यते ॥ देहा ॥ विप्र विनासन भव हरन बुद्धि होत परगास । सुमिरन करौ गणेश को होइ शत्रु को नाश ॥ चौपारि—श्रीगुरु श्रीगुरु श्रीगुरु देहु । जिनके मरम न जाने केहु ॥ जब उद्धव गोकुल कहं याये । गोपिन कह यह कथा सुनाये ॥

कुशल सिंह मूरख भजानो । सो चरित्र भाषा रसज्ञानो ॥ गुरु प्रसाद कहौ कछु
ज्ञानो । नाहौं तौ पशु हौ भजानो ॥ दुसरे साधु संगति बुद्धि पाई । सो कहा
नीति राखव गुमाई ॥ दोहा ॥ गोपिन सागे उडव कथा जो कोन्ह बखान । गुरु
दाया ते भायेउ हम पशु वा भजान ॥

End—श्रवण संदेशा सुना हरि चित दाया प्रभु कोन्ह । नारायण दास
प्रभु चरण कमल तन मन प्रीति दीन्ह ॥ चै—गोपी सागर संपूर्ण भयऊ ।
कहत सुनत पाठक सब गयऊ ॥ संत असंत सुनहि प्रापति होई । मोक्ष मुक्ति तेहि
प्रापति होई ॥ गुरु को दया भवोपि स्वासा । तब एक कथा कोन परगासा ॥
दुसरे साधु संगति बुद्धि पाई । बिष गौ उतरि सुरति चित भाई ॥ नहि तौ मैं
पशु वा भजानो । कत पाउं वरश प्रभूत बानो ॥ अघम कर्म कछु धर्म न पाहौ ।
भू को मार भंज जैहां बज मांहो ॥ दोहा ॥ गुरु दयाल भव कहा हम अघम
जिय जाति । अघम कथा हरि सुरस की नीति की है प व्याति ॥ २२५ ॥

इति श्री गोपी गोपी सागर कथा सम्पूर्ण समाप्त । जो देखा सो लिखा
मम दोषो न दीयते ॥ मितौ पूष षौद मास शुक्ल पक्ष तिथि ६ पष्ट संवत् १८९८
वि० लिखा देवोदीन छावनी कर्नाल रजमटि ९ बाहर शोम्बार ॥ राम राम ॥

Subject—स्तुति, कृष्ण का उडव को वृज में भेजना, उनका यशोदा और
गोपियों से मिलन, (पृ० १—३) । व्यास अगस्त और नारद सम्वाद, उडव का
गोपी को समझाना मारकण्डेय को कथा कहना, गंगा किनारे ऋषियों
का एकत्र होना और अगस्त्य द्वारा मारकण्डेय का प्रलय में कृष्ण का सहायक
होना, शृंगी ऋषि के व्रत का वर्णन, ध्रुव के विष्णु स्वरूप का वर्णन, गोपियों
का विरह वर्णन और उडव को चिक्कारना, कृष्ण का बाल चरित्र, उडव
के द्वारा कवि का कविता को प्रशंसा करना—(पृ० ४—१० तक) । उडव
का प्रह्लाद चरित्र वर्णन, एकादशी कथा वर्णन, प्रह्लाद का इन्द्र होना और
इन्द्र को परीक्षा लेना (पृ०—११—२२ तक) । द्विज की कथा, तुलसी
माला का प्रभाव, विष्णु दर्शन और उनका गहड़ पर सवार होकर लोको में
भ्रमण करना, लक्ष्मी का मोह और विष्णु का निवारण, नरक वर्णन, नाम महिमा,
गोवत्स कथा, शिव से कृष्ण भक्ति की अधिक महत्ता (पृ० २३—३१ तक) ।
केवट की कथा, शिव महिमा, शिव का शक्ति से विवाद, गोपियों का उडव
से विरह वर्णन, (पृ० ३२—३६ तक) । उडव का विदा होना और मधुरा
गमन, कृष्ण का प्रेम वर्णन (पृ० ३६—३८) ।

No. 299. Anurāga Rasa by Nārāyaṇa Swāmī. Substance
—Country-made paper. Leaves—8. Size—12 x 5 inches.

Lines per page—48. Extent—180 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Rāma Śaṅkara Vājpeyi, Village Bahori kā Vājpeyi kā Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ अनुराग रस लिप्यते श्री नारायण स्वामो कृत लिप्यते ॥ श्री वृन्दावन चन्द्र मध्ये ॥ अथ गुरु वंदना ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज वंदौ वारंवार । नारायण भवसिंधु हित जे नौका सुष सार ॥ कृपा करौ मो दोन पै हरौ तिमिरि अज्ञान । नारायण अनुराग रस निज मति कहे बषान ॥ अथ श्री राधा गोपाल वंदना ॥ श्री राधा गोपाल पन कर प्रलाम उर धार ॥ बरसों कछु अनुराग रस यथा बुद्धि अनुसार ॥ दयासिंधु अति सुष सदन सदा रहौ अनुकूल । नाथ न आनौ हृदय में मो पामर को भूल । श्री वृन्दावन वंदना ॥ धनि वृन्दावन बनधाम है धनि वृन्दावन नाम । धनि वृन्दावन रसिक जन धनि श्री राधा श्याम ॥ जे वृन्दावन वास करि शाक पात नित बात । तिन के भागन को निरपि ब्रह्मादिक ललचात ॥ हम न भये व्रज में प्रगट यहो रही मन आस । नित प्रति निरपति जुगुल कृवि करि वृन्दावन वास ॥ चेतावनो पुनि गुण दोष लक्षण ॥ बहुत गई थोरो रहौ नारायण अब चेत । काल चिरैया चुग रहौ निश दिन आसुष खेत ॥ नारायण सुष भोग में तू लंपट दिन रैन । खेत समय आयो निकट देखि खेलि के नैन ॥ धन योवन यों जायगो जा विधि उद्धत कपूर । नारायण गोपाल भजि क्यौ चाटै जग धूरि ॥

End—नारायण जाके हियो बिंध्यो श्याम हन बान । जग के भावै जोब तौ है यह मृतक समान ॥ सुख संपति, धन धाम को ताहि न मन में आस । नारायण जाके हिये निश दिन प्रेम प्रकाश ॥ नारायण जाके हिये प्रीति लगी अनश्याम ॥ जाति पाति कुल सों गये रहे न काहु काम ॥ नारायण तब जानिष लगन लगी यहि काल जित जित में हृष्टो परे दीवै मोहनलाल ॥ नारायण व्रजचंद के रूप पयोनिधि मांहि डूबत बहुतै एक जन उद्धरत रकौ नाहि । परा भक्ति अरु ज्ञान में तक नहों कछु भेद । नारायण सुष प्रेम है कहैं संत अरु वेद ॥ परा भक्ति बाको कहैं जित तित श्याम देषात ॥ नारायण सौ ज्ञान है पूरन ब्रह्म लषात ॥ मंदलाल दशरथ कुंवर उमय एक सरकार । नारायण जे दो कहैं ते नर बिना विचार ॥ जो धायल हरि हनन के परे प्रेम के खेत । नारायण सुनि श्याम गुण एक संग रो देत ॥ नारायण सब एक है रंग रूप तिल रेख उनके हन मंमोर है इसके चपल विशेष ॥ नारायण या बात सों अधिक और नहि बात । रसिकन

को सतसंग नित सुगल ध्यान दिन रात ॥ गुण मंदिर सुन्दर सुगल मंगल मोद
निधान । नारायण निज चरण रति यह दोऊ बरदान ॥ इति श्री प्रनुराम रस
नारायण स्वामी कृत सम्पूर्णम् ॥ संवत् १९३६ लिखा कालिका प्रसाद ॥

Subject—गुरु वंदना, श्री राधागोपाल वंदना, श्री वृंदावन वंदना,
चेतावनो, गुण दोष लक्षण, संत लक्षण, कृपा निधान की शोभा, प्रेम लक्षण
का वर्णन ।

No. 300(a). Sudāmā Charitra by Narottamadāsa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 5
inches. Lines per page—16. Extent—200 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—
Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Thākura
Naunihāla Simha, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री इष्टदेव तासु प्रसन्नास्तु ॥
सारठा—गणपति कृपा निधान विद्या बुद्धि विवेक जुत देहु मोहि बरदान प्रेम
सहित हरि गुण कहौ ॥ १ ॥ हरि चरित्र बहु माइ सेस महेस न कहि सकै ॥
प्रोति सहित चित लाइ सुनौ सुदामा की कथा ॥ २ ॥ दोहा ॥ विप्र सुदामा बसत
है सदा प्रापने ग्राम । मिखा करि भोजन करै हिम जपै हरि नाम ॥ ३ ॥ ताकी
धरनी पतिव्रता गहै वेद की रीति । सुबुधि सुसोल सुलज्ज प्रति पति सेवा सौं
प्रोति ॥ ४ ॥

End—कवित्त—कहु सुपनेहु सुवरण के महल हुते पौरि मनि मंडित कलस
कव धरते । नगन जडित कहां सिंहासन बैठिये को कव ये बवास करे मोपै
चौर हरते ॥ देखि राजा सामां निज वामा सौं सुदामा कह्यौ कव ये मंडार
स्तनन भार भरते । जो पै पतिव्रत तूं न देतो उपदेश कहु पती कृपा द्वारिकेस
मों पै कव करते ॥ ७५ ॥ दोहा—विप्र सुदामा की कथा कहै सुनै चितु लाइ ।
ताकीं श्री जदुगाइ जू सब दिन रहै सहाइ ॥ ७६ ॥ इति श्री नरोत्तम कृत सुदामा
परिचर सम्पूर्णम् लिखितं गवेषी शंकर ने स्वयं पठनार्थ श्री राधानगर बिपाइ मध्ये
स्व प्रत्यं ॥

इति ।

Subject—गणेश वंदना । सुदामा की दशा का वर्णन, सुदामा और
उनकी स्त्री का संवाद, स्त्री का सुदामा से द्वारिका जाने को कहना, सुदामा
का मिखा में संतोष मानने को कहना, (छं० १—९ तक) ।

दीनता को दीनता बखेन, भिक्षा मांगना निर्दोष कथन, वषं वषं कथन, खो का निज दुर्देशा बखेन, शोतादि के कारण कष्ट बखेन, सुदामा का फिर निवेद्य करना, खो का कृष्ण को उदारता बखेन, पहाद दोपदो आदि का उदाहरण देना । (खं० १०—१८) ।

सुदामा का द्वारिका जाना खोकार करना, खो का कृष्ण बंधुत्व को सुधि दिलाना, सुदामा का कृष्ण को भेट देने के लिये कुछ मांगना, खो का भेट के लिये तंदुल मांग लाना और सुदामा को प्रस्नान करना, सोते में गोमती तीर पर पहुंचना, द्वारावती में पहुंचना, पूछने पर एक व्यक्ति का कृष्ण पैरि पर पहुंचाना, नगर देख अचंचित होना (खं० १९—३१) ।

द्वारपाल का सुदामा को दशा का बखेन, कृष्ण का सुन कर जाना, प्रेम भाव से मिलना, आदर करना, चरण घाना, स्नानादि कराना, भेट मांगना, कृष्ण जी का चावल भेट का भोग लगाना, रुक्मिणी को तीसरी सुठो पर रोकना, सुदामा का भोजन करना—(खं० ३२—५३ तक) ।

सात दिन निवास करना, कृष्ण का संपत्ति देना और सुदामा से न कहना । महल आदि बन जाना, सुदामा का मन में कृष्ण प्रेम, आदर से कृष्ण का चिंता करना, सुदामा का नगर में घाना और भोपही न जान कर दुःखित होना, खो का छे जाना, कृष्ण महिमा बखेन, सुदामा का प्रसन्न होना, कृष्ण सुदामा को मित्रता, कृष्ण महिमा कथन । (खं० ५४—७६ तक) ।

No. 300(b). *Sudāmācharitra* by Narottamadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—312 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Saryū Prasādaḥ, Village Maharu, Post Office Matara, District Baharāich (Oudh).

Note—Other details as in no. 300(a).

No. 301(a). *Jñānasarovara* by Bābā Nawaladāsa of Dhanesā. Substance—Country-made paper. Leaves—326. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—2,916 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1818 or A. D. 1761.

Place of deposit—Lālā Mahavira Prasāda, Village and Post Office Gaurigañja, District Sultānpur.

Beginning—सम्बत् घठारह सौ घठारह, माघ पूरनमासिया । संकाति सुन्दर जानि कै रवि माशि कथा प्रकासिया ॥ निरमल सरोवर ज्ञान को असनान ओता जो करै, तरि जाइ पाप यगाह से, सुप मूल सागर में परै । ज्ञान सरोवर ज्ञान में ज्ञानी करत बिचार ॥ हिल मिल बाँचत सुनत नर उतरत भवजल पार ॥ पदिचम दिस है प्रबध से नवल रहे रतिनाम । दासन जोजन पाँच पर ग्राम घनेसा नाम ॥ सो०—प्रब कछु दोष न मोर । मै बाजन बाजेस तुम । गावौ प्रभु गुन तोर । प्रभु मोहि कछु क वानो मयौ ॥

End—दाहा—यह सब चरित पुरान के ज्ञान जानि प्रबहानि । दास नवल ओता तरै सुनै जो निश्चय मानि ॥ तरै करै फिरि नहिं भरै ओता वक्ता होइ । दास नवल सोइ पारहै और न पावहि कोइ ॥ २५८ ॥ सारठा ॥ धन्य जन्म तिन्ह कर । ओता वक्ता जक के । तिन्है न भवजल फेर । जे अस ज्ञान प्रमान करि ॥ इति श्री ऊचव माधव संवादे ज्ञान सरोवर भाषा कृते समाप्तम् ॥

Subject—(१) प्रथम अध्याय पृ० १८—ज्ञानकांड ऊचव माधव संवाद । (२) दूसरा पृ० २०—संत स्वभावादि । (३) तीसरा पृ० ५२—(१) एक भक्त हंस की कथा और (२) योग भोग समता । (४) चतुर्थ पृ० ६८—(१) दुर्वासा द्वारा द्रुपद मुता परीक्षा । (२) बालपत्नी की कथा । (५) पंचम अध्याय पृ० ८८—ईश्वर के नामों में रामनाम की श्रेष्ठता । (६) षष्ठम अध्याय—पृ० ११०—चन्द्रोदय राजा की कथा, कन्यादान की श्रेष्ठता, पातिव्रत्य माहात्म्य, कबुतर की कथा, मावी की प्रबलता, (७) सप्तम अध्याय, पृ० १३०—ब्राह्मण माहात्म्य तथा नाम की महिमा । (८) अष्टम अध्याय—पृ० १५६ कुन्तल नृप की कथा, कर्मानुसार जीवोत्पत्ति तथा वनपुरी वर्णन । (९) नवम अध्याय—पृ० १७४—रामचन्द्रजी का बाल चरित्र ।

(१०) दशम अध्याय—२००, काकभुशुंड की कथा । रामचन्द्र जी का बाल चरित्र । (११) एकादश अध्याय—पृ० २३०—(१) विभीषण हनुमान संवाद, मालादि ब्रथा कथन केवल रामनाम ही प्रधान, (२) अर्जुन, पवनसुत संवाद, कृष्ण राम की एकता । (१२) द्वादश अध्याय—पृ० २५४—भक्त मृग की रक्षा ईश्वर द्वारा मन्दोदरी उत्पत्ति । (१३) त्रयोदश अध्याय—२७६ हरिश्चन्द्र की कथा । (१४) चतुर्दश अध्याय—पृ० २९६ हरिश्चन्द्र की कथा । (१५) पंचदश अध्याय—३२६—एकादशी उत्पत्ति ।

No. 301(b). Ratna Jñāna by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—128. Size—15×6 inches. Lines per page—12. Extent—2,500 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1838 or A. D. 1781. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Mahanta Guruprasādaji, Hargāon, Post Office Parbatapura, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । सुमिरहुं प्रथम गणेश गोसाई । जो त्रिभुवन हित करत सहाई ॥ रिधि सिधि बुधि वकसत नहि बारा । श्रमिंत अपतन पार उतारा ॥ अति बड़ि लंबोदर प्रभुताई ॥ जासु उदर सब जगत समाई ॥ जिन कर अगम अनंत प्रभावा ॥ सुर मुनिवर कोउ मरम न पावा ॥ जय जग वदन सदन बुधि प्याना । जेहू कर शिव प्रति करत वधाना ॥ तुम त्रिभुवन पति गनपति नामा ॥ सुमिरत तुमहि सकल सिद्धि कामा ॥ मैं मति रहित नाम नहि जाना । होई प्रसन्न पिउ पुष्य पुराना ॥ दोहा ॥ कुमति हरण सिद्धि बुधि करन, सरन सम्हारनहार । दास नवल मतिमंद कदै कोजै भवजल पार ॥ सारठा ॥ सत गुरु सांचे राम, सतदिन कर समतम हरन । हृदय करिय विधाम, जग जीवन जग तारनौ ॥ । संवत अठारह सौ अड़तीसा । कहियत नाइ भक्त पदसोसा ॥ माघ मास सुभ पूरन मासा । कृपा समुक्ति हरि परित प्रकासा ॥

End—हिन्दु तुरकन भयो लराई । सो हमसन कछु बरनि न जाई ॥ प्रथमहि करि मथदान अपारा । जूमे तुरक भये क्षय कारा ॥ पुनि फिरि धरि गढ़ कोन लड़ाई । द्वादश दिवस कविहि कहि गारि ॥ तब तुरकनि चंद उर मारा । कोन्ह कबिन सोइ अस विस्तारा ॥ हिन्दु कथ्यो मिथ्यो हिन्दुवानो ॥ कुवरय कोन देस तुरकानो ॥ दोहा ॥ लोन धमल कर देश महं तुरक रहा सब छार ॥ जूझे राना देश के को सब सकत गनाइ ॥ २४३ ॥ इति श्री माधौ रत्न ज्ञान नवलदास ऊत समाप्त सुभ मस्तु, जाहशं पुस्तकं दृष्टा ता दशं लिपितं मया यदि शुद्धं अशुद्धं वा ममदोषो न दोषते ॥ सम्वत १८५२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां गुरुवासरे रत्नज्ञान समाप्तम् सुभम् भूयाद श्री जानुको वरु भोजति ॥

Subject—प्रज्ञाद, माधवानल इत्यादि भक्तों के उदाहरणों के साथ ज्ञानोपदेश ।

No. 301(c). Sukhasāgara Kathā by Bābā Nawalādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—200. Size—7×6 inches. Lines per page—12. Extent—1,800 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of manuscript—Samvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda Paṭwārī, Village Sarāi Khīmā, Post Office Rāmanagara, District Sultānpur.

Beginning—श्री गनेसाइनमः ॥ दो० गुर मनपति सिव सकि मुर बंदै रमा रमेस ॥ दास नवल हरि चरित रत करहु कृपा उपदेस ॥ सुख सागर सत जल विमल कलिमल दमन प्रमान, दास नवल अस्तान करु होइ सदा कल्याण ॥ बार बार बलि बलि गुरु चरना ॥ दास नवल के संकट हरना ॥ मे सनाथ 'दुलन' खेमा ॥ चेला समित नाम के छेमा ॥ दो० संबत् घटारह सै सत्रह यह मैं कहौ वषानि ॥ जेठ मास × × × बंदै चार मुक्ति श्रुति चारो ॥ पुनिबंदै गिरिराज कुमारी ॥ घमैराज पद गहौ सुम्हारे ॥ जे सब न्याव विचारन हारे ॥ बंदै मुरन समेत सुरेस ॥ बंदै जल धल कमठ जो सेस ॥ बंदै पवन सहित हनुमाना ॥ परम भक्ति निमुदिन जिन्ह जाना ॥ × × ×

End—छाति हरि चरित अगुढ़, को समरथ पारहि लयौ ॥ दासनवल मति मूढ़, तरतन प्रेम प्रतीत बिन ॥ कहत जुगल करि जोर, श्रोता वक्ता मित्र मम ॥ दह लोजिये जेरि, मोहि भरोसा छहै बड़ ॥ मोहिन लायहु पोरि, बाजन बाजत नाथ कर ॥ सो बाजन मति मोर, जानै वहै बजावना ॥ पाप हरनि पावन करनि श्रोता लेहु नहाइ ॥ सुखसागर भाषा किते मैं एकदसमोऽध्यायः ॥ इति श्री नवल दास कृत सुकसागर कथा संपूर्ण समाप्त ससै नाम जेठ मासे कृष्ण पक्षे गुरु वासरे संवत् १८९० सन् १९९० क० × × × ×

Subject—(१) प्रथम अध्याय । पृ० १—४ तक—प्रथम निर्माण कारण तथा समय (२) पृ० ४—७ तक—बंदनाएं—(३) द्वितीय अध्याय । पृ० ८—२१ तक—उमा की शिव से मौलि माला विषय शंका, शिव का समाधान करना, नाम का प्रभाव, शुक जन्मादि—(४) तृतीय अध्याय—पृ० २२—३३ तक—शुक व्यास आश्रम गमन । (५) तृतीय चतुर्थ और पंचम अध्याय पृ० ३४—६३ तक—शुक का जन्म, दर्शन इत्यादि वन गमन, शुक व्यास संवाद, शुक भजन—पृ० ४, ५, ६ (६) सप्तम अध्याय—पृ० ६४—७३ तक—व्यास विलाप, राम दर्शन, विनय । (७) अष्टम पृ० । पृ० ७४—८२ तक—शुक को

ईश्वर का उपदेश (८) नवम से त्रयोदश अध्याय पृ० ८३—१२१ तक—इन्द्र भय, शुक तपस्या मंग, उपाय, रत्ना का उद्योग मंग, नारदादि का काम मोहित होने का बखाने। शास से शुकदेव शुक उपदेश लेना तक। (९) चतुर्दश अध्याय। पृ० १२२—१३० तक—शुक का पिता से नाम उपदेश इच्छा, पिता का जनकपुर भेजना, उनका जाना, जनक का अपमान करके बारंबार उनके निकलवा देना तथा उनका फिर पानाना चौर दिन बचन कथन करना, सेवकों को इस अपमान का कारण समझा कर जनक का एक कटोरे में शुक को जल देकर यह कथन करना कि यदि एक बूंद भी जल गिरे तो दर्शन न पावांगे। (१०) पृ० १३१—२०० तक—नाम माहात्म्य बखाने। कृष्णार्जुन संवाद बखाने, चन्द्रहास इत्यादि बखाने, माता के पास शुक का आना, पिता का विवाह हेतु उपदेश, उनका भक्ति वर मांग कर विदा होना।

No. 301 (d). Śrīmad Bhāgavata Purāṇa by Nawaḷadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—846. Size—14 × 5½ inches. Lines per page—11. Extent—8,000 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Kaithi. Date of manuscript—Samvat 1831 or A. D. 1774. Place of deposit—Mahanta Gurusprasāda, Hargāon, Post Office Parbata-pur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ तोरठा ॥ सत गुरु सांचे राम तुम सुकति सत दरस प्रभु। हृदय करिय विश्राम जग जीवन जगतारो ॥ बरनौ सतगुरु रूप, दिन कर तम दुष दावनो। स्वाम कमल जिमि रूप ताकर दाम सुहावनो, सेतहु ते जो सेत, ताहि माहि अति सेत छवि, पुलि पुरान कहि देत, प्रगम प्रगोचर गगन रह ॥ वारिज वारिहि माहि पासानाक पतंग कै। सतगुरु गुर पडहि दै विशेष प्रमल उदै प्रचक भवन ॥ ५ ॥ बोल में कारह नाक तहं सतगुरु, सत मन तिलक। वह सत सुमिरन पाक, सो जग जीवन जक प्रभु ॥ दाहा ॥ जग जीवन जगमगत हैं गगन महल महं वास, तेसत गुरु जग विदित प्रभु। दास नवल कह वास ॥ हेरि भुवन दस चारि तौ रोके सुर सिधि मुनि, कहत विचारि विचारि। जे मनपति गुन म्यान घर ॥ ८ ॥ भक्ति ज्ञान गुन दान शीलबंत शिषुर बदन। जे जे नख निधि जानि, करुणा सागर बुधि सदन ॥ ९ ॥

End—प्रभु प्रस कहि निज वपु थल धापा। दरस हरत जग विविधि कुतापा ॥ कंद ॥ थल धापि निज वपु निज बचन हरि हरि बैकुंठहि मये। सुख-देष वरणत समुक्ति सब सुनि सुजन सब कारज भये। तरि मये परीक्षित राइ भाइ

समेत, जिन श्रवणहि सुना । कृति सुनहि जगत प्रतीति कर जनु धमर मन समृत सुना । तिहुं लोक घट घट वसत प्रभु परबोध दरसन सरगुना । प्रति सहज पावन अध नसावन करत हित को उन रमन ॥ दरसन प्रतिहित बोध करत जो नर मन लाइ । दास नवल परतीत कर, सकल दूरि दुष जाइ । सोरठा ॥ चरित समुद प्रौगाह, दस नवल कछु पार नहि, धन्य धन्य नरनाह जिन हित मुनि कछु प्रगट कलि ॥ इति श्री हरि चरित्रे दशन स्कन्धे महापुराणे श्री भागवते परायण कांडे हरि वैकुण्ठ गमन वखैनो नाम उत्तोसवां अध्याय समाप्तः संवत् १८३१ ॥

Subject—(१) पृ० १-२३० तक—आदि कांड (जन्म कांड) । (१-३०)-स्तुति वखैन प्रथम अध्या० द्वि० अ० तृतीय । श्रीपाति गर्भ वासन । चतुर्थ अध्याय—पृ० ४० कंस वृथा प्रबोध । पंचम अध्याय पृ० ५२ तक तुलावत व्याकरण कृतां पृ० ६०—गोरस कौड़ा । सातवां पृ० ७०—श्याम सत्य स्वरूप वखैन । आठवां अध्याय-८० यमलाञ्जुन वृक्ष उद्धार । नवां अ०—९० बाल कौड़ा । दसवां अ० १०४ । ग्यारहवां अ० ११४ । बारहवां अ० १२४ । तेरहवां अ० १४० ब्रह्मास्तुति । चौदहवां अ० १५० कालो सोच विमोचन । पन्द्रहवां अ० १६४ गोपी विरह । सोलहवां अ० १६४-नन्दागमन, म्हाल हर्ष । सत्रहवां अ० १८४ मधर्व सोच विमोचन । अठारहवां अ० १९४, जमुना प्रवेश । उन्नीसवां अ०, २०२ । बीसवां अ० २१४ व ६ मुनि प्रबोध । इक्कीसवां अ०, २२२ कंस विध्वंस । बाईसवां अ०, २३० मक्त चरित्र वखैन । (२) मध्यकांड २३१ से ३१७ तक । अ० अ० २४३—कृष्ण स्तुति गुरु दक्षिणा हेत । द्वि० अ० २५१ गोकुल तृ० अ० २६३—अकूर हस्तिनापुर गमन । च० अ० २७३—जरासिंधु समर । गमन । पं० अ० २८३—गोमत सिखर समर । अष्ट अ० २९१ रुक्मिणी भृंगार हवि वखैन । सप्तम अ० २९९ रुक्मिणी गिरजा महल गमन । अष्टम अ० ३०७ रुक्मिणी विवाह नवम अ० ३१७ सतगुरु विधि संवाद ।

(३) परायण कांड—३१८—६४६ तक

अ० अ० ३२८ । द्वि० अ० ३३८ रति प्रबोध । ३५० तृ० अ० मनमथ आगमन । चतुर्थ अ० ३५८ जामवंत समर । पंचम अ० ३६८ । अष्ट अ० ३८० जामवंत उद्धार । सप्तम अ० ३९० सतधन्वा समर । अष्टम अ० ३९८ यमुना कृष्ण विवाह । नवम अ० ४१० । दशम अ० ४२२ कृष्ण द्वारावती आगमन नर्कासर निपातन । एकादश अ० ४३४ मद्रवट वज्र प्रसन्न करना । ४४८ द्वादश रुक्म वंधन प्रयो० अ० ४६४ बलि विनय । चतुर्दश अ० ४७८ बाणासुर परदान । पंचदश अ० ४९२ अनरुद्ध समर । अष्टदश अ० ५०० नारद आगमन । सप्तदश अ० ५०८ बाणासुर समर । अष्टदश अ० ५१८ उषा अनरुद्ध विवाह ।

उत्तमोसवां अ० ५३०—राजा नृम उद्धार । नंद यशोदा प्रबोध..... । योसवां अध्याय ५४० शांजु विवाह । इकोसवां अ० ५५० पांडव निमंत्रण, प्रभु आगमन । वाईसवां अध्याय ५६० शिशुपाल वध । तेईसवां अध्याय ५७४ पांडव राजसूय यज्ञ, नारद व्यास सतसंग वनेन । चौबोसवां अ० ५८६ । पच्चीसवां अ० ६०४ द्रोपदी स्वयंवर कृष्णोसवां अ० ६१८ सुदामा चरित्र । सत्ताईसवां अ०, ६२६ पट बालक उद्धार । षट्ठाईसवां अ० ६३६ दत्तबालक आगमन, विप्र प्रबोध । उत्तमोसवां अ० ६४६ हरिवैकुण्ठ गमन ।

No. 302. Basanta Rajajyotisha by Pandita Nemadhara. Substance—Country-made paper. Leaves -75. Size—11 x 5½ inches. Lines per page—36. Extent—1.350 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1801 or A. D. 1744. Date of manuscript—Samvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Simha, Rais, Payāgapura, Post Office Payāgapura, District Fāhrāich (Ondh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ सुमिरौ आदि गणेश को पुनि प्रनवों सिरमाई । जाको कौर कटाक्ष से अद्भुत दुति डै जाई ॥ दोहा ॥ एक रदन दारिद्र्य हरन इन्द्र विराजत सोस । चारि पदारथ देत हैं निति प्रमा वकसोस ॥ लम्बोदर अस्त्ररत्न सरण दुषमंजन सुषमार । मदन कदन सुत गज वदन गखनायक सुभकार ॥ सोरठा ॥ मंगल रूप अपार सुषदायक धायक विघ्न । दाया इष्टि निहार । करौ क्रिया मोतन अमित ॥ छंद ॥ एक रदन कवि आजै इन्द्र भाल पै विराजै माल गृहप उर साजै सदा काटत कलेस हैं ॥ दोनन को रत्नपाल सोमित कंज कार सवाल दयार्थत कया आल गुन बुधि को धनेस है ॥ लंबोदर कला निधान सुष सागर ज्ञान दान गौरो जी को जीव प्रान नित गावत प्रवेश है ।

End—पूजा विधान स्वपन ॥ दोहा ॥ असुभ दरसै सुपन को भय प्रगटै बहुतासु ताकी पूजा विधि कहौ करै अमंगल नास ॥ पूजा विधि अब कहत हैं जाहि कटै सब पाप पापियों के सहस दन प्रथम करावै जाय प्रथम करावै जाय सहस आहुति पुनि कोजै कै विघ्न को बोलि करै लक्ष मंत्र सृज्यै । घृत सुरभी को आन अरुन चंदन पुनि पूजा ॥ छंद गीत ॥ पुनि गऊदान विधान ते महा भोज इच्छा कोजिये तब दक्षिणा एक एक मोहर कै पूट सास दोजिये । जेहि शक्ति ना कछु होइ वृत्तमान दान बताइये । यह ग्रंथ न पारस बीच पंडित नेमधर इम गाइये । नेमधर पंडित विचार ग्रंथ बनाइ जानियो माया करि बुध नेम सुन पंडित

सुष मानिये । कही सुमति अनुसार कवि कविद मोपर करि किया सुदास
विचार जेहि भाषा आदर लई । शुभ पोथी जगमह विदित सखत ताको जान
अष्टादस प्रतम तापर एक वषान । मधु मासे तिथि पुष्पमा भा पुरन इतिहास
ससि दिन सुम शान सौ परमेश्वरी निवास । मंगल उपजे मोदपद सुष को करै
प्रकास रघुपति नाम प्रताप ते दिन प्रति होत हुलास ॥ लिपा संवत १९०७
वैसाख मासे शुक्ल पक्षे अभावस्थां शुक्ल वासरे मन्नु शुक्ल रामानुज दास के
दास ।

Subject—पृ० १—७५ तक—विचार अधिक भास, विचार दर्शन पंजन,
विचार नाटक, मनुष्य धेनु आदि पशु, विचार कौक, विचार क्षिपकलो, गिर-
गिट, विचार बानी काक, विचार हाक और रोदन सियार, विचार मातम
पुरसो, विचार दर्शन नोलकंठ, विचार दर्शन चन्द्रमा चौधि, विचार कूप हम्माम
के बनाने का । विचार ममापो पोपर आदि वृक्ष, विचार नहर व होज व तड़ाग
बनाने का । विचार परयंक विधान विचार शयन करण, विचार उसीसे को,
विचार स्वास, विचार शयन करण, वर्षा ऋतु और बंधन पिरोजा, विचार
अवध को विचार सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण, विचार तुलादान, छायादान, भूपन
आदि का धारण, स्त्रियों का शौर सपे दर्शन, नक्षत्र तारादि, भंग फरकन, ग्रह
दानादि, शुक्र ग्रस्त, दीप बुझावन, पुरुष स्त्री कुम्हड़ा काटन, आयु मनुष्य, वृक्ष
रोपन पुरुष स्त्री, गुन दोष तिथि गुन दोष नक्षत्र, भद्रा गुन दोष, चन्द्रमा घातिक,
चन्द्रमा यात्रा समय, चन्द्रमा घाटि तिथि व नक्षत्र योग, स्वासा समय, वास रवि
आदि नक्षत्र, दिन रोगी स्नान, यात्रा विचार, विचार नक्षत्र, तिथि, वार, तारा
वाहन, रवि आदि, परिपंड चक्र सूर्य, चन्द्र उत्तरायन, दक्षिणायन, शुक्रास्त,
यात्रा चारो वान, तारोब मनहुस, विचार योग यात्रा, पूजा विधान यात्रा,
नास दिशा सूल गुन वाहन समय यात्रा त्यागन वस्तु विचार नकल मकान, विचार
पत्रा, विचार सगुन, विचार जल वृष्टि यात्रा समय, विचार स्वर यात्रा समय,
विचार गृह प्रवेश, विचार द्वादश रास विचार नौ राज विचार गुर्ग मोहर्गम,
विचार सूर्य चन्द्रमा मंडल, विचार स्वप्न आदि के विचार का वर्णन है । अंत
में तिथि आदि रचयिता लेखक के लिखे हैं ।

No. 303. Śakuntalā Nāṭaka by Nawāja of Āgrā. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—56. Size—8½ × 4½
inches. Lines per page—16. Extent—896 Anuṣṭup Ślokaś.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—
Samvat 1963 or A. D. 1906. Place of deposit—Bābū Padma-
baksha, Simha, Tālukedāra, Lavedpur (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पद्य शकुन्तला नाटक लिख्यते ॥
 कवित्त ॥ राखत न सूरज ससी की परवाहि नित.....कुछित रहत येक वानी
 के । पानह किये ते देत ज्ञान मकरंद वास.....कहैया जिनकी कहानी के ॥ कैसे
 और पानी के सरोज सरि करै सोचै.....जै शिव सीस सुरसरि पानी के ।
 सिद्धि की सुगंध पाइ मेरे मन मधुकर.....करन पद पंकज भवानी के ॥ १ ॥
 दोहा—नवल फिदाई खान का नंद मुसलेखान । फरब सेर को दै फतै मयो व
 आजम खान ॥ २ ॥ वनत विलंद महाबलो आजम खान घमौर । छाता छाता
 सुरमा माचौ सुन्दर घोर ॥ ३ ॥ देखि सम साहेब सकल जस जगते उठि भाइ ।
 हिममत आजम खान के हिय मे रही समाइ ॥ ४ ॥

End—कवित्त—ऐसे नेवाज कबीश्वर पाइ सकुन्तला नाटक की करी
 भासा । सो बिगरो बहु कालको पाइ जहाँ तहाँ याके भये पद नासा ॥ सोधि के
 सुख करि देखि को दुखी प्रसाद सो बुझि विलासा । याहि जो लै पढ़ि है सुनि
 है तिनके घर होइ है आनंद वासा ॥ १ ॥ दोहा । याके पढ़िवे ते कवौ हात न
 सजन वियोग । बिछुरेहु बहु काल को पावै बेगि संजोग ॥ २ ॥

इति श्री सुधा तरंगि न्यास सकुन्तला नाटक कथा प्रसंगे चतुर्थ स्तरंग ॥ ४ ॥
 दोहा ॥ आदौ जैपुर देस के अब काशी में धाम । है दुर्गा प्रसाद पुनि यहि
 साधक को नाम ॥ समाप्त ॥ शुभम् ॥ भाष शुक्ल १ पारंमे फागुन कृष्ण १३ रवि
 वासरे संपूर्णम् ॥ संवत् १९६३ शके १८२८ सत्र १३१४ फसलो ॥ ६ रविदत्त
 सिंह ॥

Subject—भवानी स्तुति, आजमखां वखैन, शकुन्तला बनाने का
 विधान वखैन—पृ० १—२ तक । विश्वामित्र का तप करना, मेनका चप्परा
 का घाना, शकुन्तला की उत्पत्ति, कण्व का पालन करना, अनुसूया, प्रियव्रदा
 और शकुन्तला की कोड़ा, राजा दुष्यन्त का शिकार खेलने के लिए घाना और
 मिलन वखैन । पृ० २—१५ तक । तीनों सखियों का हास्य रस वखैन, पुनः
 दुष्यन्त व शकुन्तला मिलन वखैन । पृ० १६—२५ तक । शकुन्तला को दुर्वासा
 का धाप, कण्व का शकुन्तला को उपदेश और दुष्यन्त के यहाँ मेजना, घंगूठा का
 खोजना, दुष्यन्त का शकुन्तला को सहन करने से इन्कार करना । पृ २६—४२
 तक । दुष्यन्त को शकुन्तला की याद घाना और विरह व्यथित होना । इन्द्र को
 सहायता के लिये जाना, छोटते समय पुत्र भरत और शकुन्तला से भेंट और साथ
 लाना । संशोधनकर्त्ता का निवेदन वखैन । पृ० ४३—५६ तक इति ।

No. 304(a). Śālihotra by Nidhāna Kavi. Substance—
 Country-made paper. Leaves—21. Size—12½ x 5½ inches.

Lines per page—12. Extent—480 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1800 or A. D. 1743. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Thākura Naunihāla Sīmha, Seṅgara, Kānthā, Unāo.

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विघन हरन सब सुख करन
लंबोदर वर दानि । करहु ठपा दोऊ सुमति कहौ जोरि युग पानि ॥ १ ॥ संवत
दस वसु सै जहां उत्तर जानौ मान । सालहोत्र भाषा रची नूतन सुकवि
निधान ॥ शुक्लपक्ष तिथि पंचमी सहित सुभग बुधवार । भावव भाष प्रनोत
अति भयो प्रय भवतार ॥ ३ ॥ अथ राज्य वर्णन ॥ दोहा । सैयद है समरत्न महि
मंडन वृद्धि निधान । अकबर चलो सभा चलो विद्या विदित विधान ॥ ४ ॥
एक दिना सब कविन सौ दोन्हों यह कुरमाय । सालिहोत्र जो संस्कृत भाषा
देहु सुनाय ॥ पठपदो—सरद जहां जग जानि सुजस भुव बीच समर्थौ । बलो
मुतिजा पान दान करि थल रथ धर्यौ । फिरि सैयद महमूद खोचि तरवार बरो
करो । मुकति धरनि दै पत्र को नैस सवाव धरि । पुरैमसु सैद साषा सवन
बाबुछा पां सुमन हुव । दैत सकल मन कामना अलि अरवर फल प्रगट तुव ॥

End—तैं क्षण्य—तेज वात अति प्रबल होइ शुभ सोल सुलसन । अति-
चंचल गतिचारु सारु सम सुमति विचसन ॥ कहै चहै रहिजाइ दोक दिन
चारि संग । आनन तिलक विसाल भूपन सोभा संग ॥ अति सोतल मान सुम
संग सरस ऐसे नृप बाजो चढ़त । भेजोति सकल खल दलन कौ तिनको जस
दिन दिन बढ़त ॥ २१ ॥ अथर एक अवन एक तीन अवन सासु के । होन दंत
अधिक दंत तीन अंड तासु के ॥ एक अंड युग्म जोभि दंड पोठि पेपिये । ताहि भूल
कै न लेहु बाजि जो विशेषिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यौ
सकल सिर मौर । ताते जाने बाजिके गुन भोगुन सब ठौर ॥ २३ ॥ मैं प्रबंध
कोन्हों कछु पाखंड मत अनुसार । मोमति अति लघु जानि कै लोचै सुकवि
विचार ॥ २५ ॥ इति ओ सुकवि निधान कृत भाषा सालिहोत्र चतुर्दशोध्याय ॥
१४ संवत् १९०० ॥

Subject—प्रार्थना, राजवर्णन, अश्व की श्रेष्ठता वर्णन । पृ० १—२ तक ।
अश्व के हाँसने आदि के लक्षण तथा शुभ चिह्न—पृ० २—४ । भौरी का चिह्न
वर्णन । पृ० ५—६ । अश्व स्वरूप वर्णन, रसादि वर्णन, असाध्य रोग लक्षण,
घातु परीक्षा । पृ० ७—१० । कधिर का जाँच वर्णन और आहारादि वर्णन पृ०
११—१३ । नासु विधि और पिंडाधिकार वर्णन और दवाई । पृ० १४—१७ मृत
विधान, काथ विधान, उदर छुमि, गौड़ी वाकनी, आदि की दवा पृ० १८—२१ ।

No. 304(b). Śālihotra by Nidhāna Dīkṣita. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size— $7 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—12. Extent—583 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Bhaiyā Mahipālā Sīmha, Raṣa, Payagpur, Post Office Payāgpur, District Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ सालिहोत्र लिख्यते । दोहा । पांडव
पति कुल कमल रवि धरम तात धरमज । सख सिधु धीरज धुरी जैत जुधिपर
सज ॥ १ ॥ भीमसेन अर्जुन धनुज सह सहदेव सुजान नकुल सकुल भूपन सकल
तुरंग तंत्र गुञ्जान ॥ २ ॥ अथ देषि सब मुनिन के कोन्हे नकुल विचार । सालि-
होत्र संछेप से रच्यो चार लहिसार ॥ ३ ॥ अथ नराच छंद ॥ सपच्छ चारि हय
सब तुरंग चार अंग से । यकास पंथ में फिरै से कियरादि संग से ॥ सचो
सजोग वाहने विचारि के सहो कहा मुनीस सालिहोत्र से सबै भडो मता
लहो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ मुनि तेको डुरलभ नहीं स्वरग उरग नरलोक । रय वाहन
कोन्हे तुरो । चले बेनि दिन शोक ॥ नेक न डोलै चलत ह्व दसन टोह को साल
जाहि दीप छोमित सदा परावत दिक्पाल ॥ ५ ॥ लहि सासन सुरराज को वात्री
किष विपक्ष । मुनि तिन्ह के वरनत कियो दीप अदीप प्रलक्ष ॥ ७ ॥

End—छंद होरा ॥ अथर एक अवन एक तीनि अवन जासुके हीन दंत
अधिक दंत तीनि छंद वासुके । एक छंद छुम्न जीम दंड पाठि पेयिये । ताहि भूलि
के न लेहु वाजि जो विलेपिये । दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यो सकल
सिर मौर । ताते जाने वाजिके गुन औगुन सब ठौर ॥ याको मनो विचारि के
कोन्हे सबै प्रमान । सालिहोत्र पूरन रच्यो दोक्षित सुकवि निधान ॥ मैं प्रबंध
कोन्हे कछु पंडव मत अनुसारि । से मति अति लघु जानवो लोको सुकवि
विचारि ॥ इति श्री नकुल मत भाषा सालिहोत्र नाम चतुर्थ दशोऽध्यायः इति श्री
सालिहोत्र सम्पूर्णम् शुभ मस्तु अथर्वनि मासे कृष्णपक्षे अकादश्या तिथौ शुक्रवासरौ
संवत् १९१६ शके १७८१ सन १९६७ श्रौराम श्रौराम ॥

No. 305. Bhāgavata Dasama skandha by Nihāladāsa of Mir-
zāpur. Substance—Country-made paper. Leaves—241. Size— $13 \times 9\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—15. Extent—9,000 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Gurumukhī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Mahanta Rādhakṛishṇa, Baḍī Saṅgat, Bahraich.

Beginning—रामजी ॥ रामजी सहाइ ॥ ॐ सति गुरु प्रसाद ॥ रामजी सहाइ ॥ रामजी ॥ अथ श्री भागवत दशमस्कंध लिप्यते ॥ देहरा ॥ दो मत घट से परस्पर बोलत एक समान । एक भावत गुन इयाम के एक बरजे सुरज्ञान ॥ सुनहु सखी मत जिस कहौ चुपकरि जाहुन बोल । निपट दीन तू दुखरी वह प्रभु बड़े अतीत ॥ कौन कोट मतहोन तू छिन छिन भूलनहार सेस न पावै पार को जाके बदन हजार ॥ चारवेद ब्रह्मा रते थक्यो न पायो अस्त । पौर बिबेको धक परे अति प्रपार भगवंत ॥ सागर ते चोटी कहौ केहि बिधि उतरं पार । अति असंख लहरैं उठ भूले प्रबल बवारि ॥ तू चोटी हरि जिस अमिट किनु न पायो पार । जप निस दिन हरनाम को यहि बिधि हिरदै धार ॥ दुजो मत बोलौ तब सुनो सखी एक बात । रहौ न हरिज कहंगो हृदै न प्रेम समात ॥

End—दान देउ जग साजन हार । तुम सो तन बड़ै पियार । जम की संगति ते छुटि काय । कृपा करो हे केशोराय । निपट चरन को देहु निवास । नित पग पूजै तुम्हरो दास ॥ पूजै सदा बनाय बनाय । गावै पढ़ै न नेक अघाय ॥ इष्टि अंगोचर होउ न इयाम । पूरन करौ हमारे काम । अन्तरजामी जो कर करतार । मानहुं सेवक करो पुकार । ऐसो कृपा कृपानिधि करो । सबै बात तन मन ते हरौ ॥ अंतर बाहिर तुमहों बसौ । अंत समय तुम हमसों रसौ ॥ जै जै जै कहणा भंडार । जन निहाल पग पर बलिहार ॥ १९१ ॥ इति श्री भागवते दशमस्कंधे महापुराणे नवे अध्याय सम्पूर्णम् समाप्तम् सम्बत १९०० दसम लिखी साहब दास ने ॥

Subject—भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद ।

No. 306. Śāntarasa Vedānta by Nipāṭa Nirañjana. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14×7 inches. Lines per page—11. Extent—350 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thakūra Naunihala Sindhā, Kānthā, Unāo.

Beginning—अथ निपट निरंजन को ग्रंथ लिप्यते शान्तरस वेदान्त ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वतीनमः सबैया ॥ जे उपजे ते विचारे परज्ञान हूँ परज्ञा निरधार समानो । पै प्रज्ञान भयो प्रज्ञानो महा प्रज्ञान सु प्रज्ञान जानो ॥ ज्ञान निपट निरंजन जानो न ज्ञान घने परज्ञान को जानो ॥ सो सरवज न सरवज सनी विज्ञान मोलै तो बिलै विज्ञानो ॥ १ ॥ मनहरन छंद ॥ मनन नमन मनोरथ को न उतपन मन मत नाहौ उन मन मनसा डुरी ॥ वाचा को न लेस वाच्यारथ

को न परवेस वचन को बोध पै न वाचकता है पुरो । निपट निरंजन सुमौन है
मौनो कोऊ महामुनि नाहिन मुनि सरता का पुरो ॥

बुधि को गनेस सुधि लेखै को विचाता जैसे चातुणे कौवा वानो धंमन
अफीम सो । जोग काजें रुद्र औ वियोग काजें रामचन्द्र भोग को कन्हैया सब
रोगन को मोम सो ॥ निपट निरंजन प विजया विज्ञान दाने बलिमान लेवे को
अतोम सो ध्यान लागिवे को ध्रुव जामिवे को गोरख ज्यों सोइवे को कुंभकरन
भोजन को मोम सो १४ ॥ तुमने पड़ोछे देव तो ताखानी नहि वृद्धिये तोशू तुम्हे
तरसा । अपराध अवश्य धरै समने अपराध बिना चमया फरसा ॥ मलिनाइहि
शेजा निपट निरंजन ठाकुरताई यांता उरशो । प्रथमै कि—

Subject—ज्ञान की विशेषता, संसार की असारता, आत्मनिर्भरता
वर्णन—पृ० १—४ तक । मनुष्य जन्म की महत्ता, ईश्वर की निरंजनता, मन की
चंचलता, देह धर्म, भोग की निस्सारता वर्णन पृ० ५—१४ । आत्मा और
परमात्मा की एकता ईश्वर की सर्व व्यापकता, संसार की माया । संस्कृत ग्रंथों
की कठिन्ता, ज्ञान की महत्ता वर्णन—१४-२४ । संसार से छूटने का उपाय और
विजय की प्रशंसा, पृ० २५—२७ तक ।

No. 307(a). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—
Country-made paper. Leaves—66. Size—9 × 5 inches. Lines
per page—40. Extent—1,980 Anushtup Ślokas. Appearance
—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat
1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Rāja Ramanāthabaksha
Simha Pustakālaya, Parseni Rāja, Post Office Parseni, Dis-
trict Sitāpur.

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ अथ जगतविनोद लिप्यते देवा ॥
सिद्धि सदन सुन्दर वदन नंद नदन मुद मून ॥ रसिक सिरोमणि सांघरे सदा रहौ
अनुकूल ॥ जय जय सक्ति सिला मई जय जय गढ़ घामेर । जय जय पुर सुर पुरु
सहस जो जाहिर चहुंफेर ॥ जय जग जाहिर जगतपति जगत सिंह नरनाह । ओ
प्रताप नंदनबलो । रविवंसो कछवाह ॥ जगत सिंह नरनाह को समुझि सवन को
ईस । कवि पदमाकर देत है कवित बनाइ असोस ॥ कवित ॥ कृत्रिन के कृत्र
कृत्र धारिन के कृत्रपति कृत्रज कृत्रान कृत्रि छेम के कृत्रेण है ॥ कहै पदमाकर
प्रभा के प्रमाकर टया के दरिघाव हिन्दि हृद के रघैषा है ॥ जागत जगत सिंह
साहिबो सवाई सो ओ प्रताप नृप नंद कुलचंद रघुरैया है ॥ पाछे रहौ राज
राज राजन के महाराज कच्छ कुल कलस हमारे तो कन्हैया है ॥

End—पथ सांत रस के दोहा ॥ सुरस सांत निखेद है जाको चाहि
भाव । सत संगत गुरु तपोवन मृतक समान विभाव ॥ प्रथम रोमांचादिक तहाँ
भाषत कवि अनुभाव । धृति मति हरषादिक कहे सुभ संचारो भाव ॥ सुख
सुकुल रंग देवता नारायन है ज्ञान । ताको कहत उदाहरन सुनहु सुमति दै कान ॥
दंडक सबैया ॥ बैठी सदा सत संगहि मैं विष मानि विषै रस कोनो सदाहों
त्यौ पदुमाकर झूठ जितो जग जानि सुजानहि के अवगाहों । नाक को नेक
में दोठि दिये नित चाहै न चोज कहूँ चित चाहों संतत संत सिरामनि है धन है
धन वे जन वे परवाहो ॥ दोहा ॥ नम बितान रवि ससि दिया फल भप सलिल
प्रवाह ॥ चरनि सेज पंखा पवन भव न कछु परवाह ॥ अवहित तै विरक्त रहत
कछु न दोस के त्रास । विहित करत मुनि हित समुझि सिमु हित जे हरिदास ॥
जगत सिद्ध रूप हुकुम ते पदुमाकर लहि मोद रसिकन के बस करन को कोन्हों
जगत विनोद ॥ इति श्री कूर्म वंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजा राजहन्द्र
श्री स्वर्वाई महाराज जगतसिद्ध ग्यात मथुरा खान मोहनलाल भट्टात्मज कवि
पदुमाकर विरचिते जगत विनोद नामक काव्य सम्पूर्णम् सुभमस्तु लेखक गंगासिद्ध
वैस परगने वैसवारे के भौड़िया खेड़ा ग्राम संवत् १९३१ तियाँ चठयाम
रविवासरे फागुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

Subject—रस निरूपण तथा नायक नायिका भेद उदाहरण सहित ।

No. 307(b). Jagat Vinoda by Padamākāra. Substance—
Country-made paper. Leaves—78. Size—7½ × 6 inches. Lines
per page—28. Extent—1,065 Anushtup Ślokas. In-
complete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—
Bābū Nārāyaṇadayaḷa, Rāe Bareilly.

Note—Details as in no. 307(a).

No. 307(c). Jagat Vinoda by Padamākāra. Substance—
Country-made paper. Leaves—27. Size—9 × 6 inches. Lines
per page—24. Extent—1,000 Anushtup Ślokas. Incom-
plete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of de-
posit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Bahraich.

Note—Details as in no. 307(a).

No. 307(d). Jagat Vinoda by Padamākāra. Substance—
Country-made paper. Leaves—124. Size—10½ × 6½ inches.

Lines per page—19. Extent—1,326 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāma Nātha Lāla (Sumana), Kāśī.

Note—Details as in no. 307(a).

No. 307(c). Padamābharāṇa by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—10×6 inches. Lines per page 44. Extent—220 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Thākura Rāma Sīnha, Village Rāma Kola, Post Office Sitāpur, District Sitāpur (Oudh).

* Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पद्माभरण लिप्यते ॥ राधा राधावर सुमिरि देखि कबितन को पंथ । कवि पदमाकर करत हैं पद्माभरण सुग्रंथ ॥ शब्दहुं ते कहुं अर्थते कहुं दुहुं तै उर पानि । अमिप्राइ जिहि भांति जहं अलंकार सो मानि ॥ अलंकार इक थलहि मैं समुझि परै जु अनेक । अमिप्राय कवि को जहां वहाँ मुप्यगन एक ॥ जा विधि एकै महलमें बहु मंदिर इक मान जो नृप के मन में रुचै अनियत वहु प्रधान ॥ वरनन कौजतु जाहि को सु उपमेय चितु लाइ । जाको समता दोजिष सो उपमान ननाइ ॥ सम अर्थहि जे पद कहत ते सब वाचक देखि । इक सौवर्ण्य पदार्थे मैं धर्म धर्म सो लेखि ॥ अथ उपमालंकार ॥ उपमेयहु उपमान को इक सम धरमु जु होइ । उपमा वाचक पद मिलै उपमा कहिये सोइ ॥ उपमा नदवाचक धरम उपमेयहु जो कोइ । ये चारिहु पर सिद्धि जहं पूरन उपमा सोइ ॥ सुमन सुधावर तुल्य मुख मधुर सुधा से वयन । कुच कटोर श्रीफल सहस अरुण कमल से नयन ॥

End—अर्थालंकार को संसृष्ट ॥ वाके नामहि को सुनत होत सौत मुख मंद ॥ चक चकोर कौजै सुषो लखि राधा मुख चंद ॥ त्रिविधि संकर ॥ अलि ये लङ्गन अग्नि कन अंक वृम अवधार मानो आवत दहन ससि छै निज संग दवार ॥ विहारो ॥ लप बड़ई बल करि धके करै न कुवत कुठार । आल बाल उर भालरो परी प्रेम तरु द्वार ॥ संदेहुत संकर भाषा भरखे ॥ यो भूलत कोऊ कछु राखै हिये समान । मजौ मधुप ठजि पद मनहि जान होत गत भान ॥ विहारो यथा ॥ कहौ हमारो चित धरौ तजौ लाल सब बात नैनन को मुखदेत यह इंदु विषं सरसात सम प्रधान संकर भाषा भरखे ॥ विमल प्रभा निज ससि तजौ मनी वाक्यो पाय यह कारो निसि अंक मिस राखो अंक लगाई ॥ पुनः

कथा विदारो ॥ उर लोन्हे पति चटपटो सुनि मुरलो धुनि धाइ । हौं हुलसो
निकसी सुती गयो हुलसो लाई ॥ इति सप्तम्यि संकर । राधा माधव कृपा लहि
लपि सुकविन को पंथ कवि पदमाकर ने कियो पदुमामरण सुबंध ॥ इति श्री
कवि पदुमाकर विरचित्तायां पदुमामरण संपूर्णम् माद्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ
षष्ठ्यां सोमवासरे श्री संवत् १९३५ श्री ठाकुर हेमचल सिंह लिखी दरबारो
लाल कायस्थ चुनहट वाले ॥

Subject—काव्य चलंकार ।

No. 308. Upākhyāna Vīveka by Pahalawānādāsa of Bhī-
khipur. Substance—New paper. Leaves—25. Size—x
inches. Lines per page—12. Extent—300 Anuṣṭup Ślokaś.
Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—
Munshi Bindeshwari Prasāda, clerk, Registration Department,
Barābanki.

Beginning—का तजि भजन प्रौर सोइ जाना । द्विज मौरौ कुरुर
सम्माना ॥ भीति पूजि यह दुनियां मरो । छूँछ कुपा पत कौरन मरो ॥ राम
झाड़ि कहु कहि को सुधरो । चले कितक दिन जलको चुपरो ॥ जो आवा सो
वेगई चला । भजन बिना सुरति कहत न भला ॥ नरतन पाइ ज्ञान नाइ पाई ।
पाथर पड़ा जो मूढ़ मुड़ाई ॥ पांच पचीस रात दिन घटका । सरन ते गिरा
खजुरन पटका । चेत चेतका गाफिल भरे । मैं मैं कहत देश सब मरे ॥ यस जन
जानि भूठ कछु भदा । सत्य बचन सतगुरु कर कहा ॥ जन्म पदारथ वादै खेई ।
बहुता पानी हाथ न धेई ॥

दाहा—सत संगत मैं बैठ जा । होइ जेहे मन सोभ ॥

सात पांच को लाकड़ी । एक जने का बोझ ॥

End—चादि संत रामहिं ते खैर । बसि दरियाव मगर ते बैर ॥

दाहा—भवहूँ भूँठी लोन्ही कर । चागे सब है नाइ ॥

हुड़ि है कौन परोजन । चोर भुसैले ठाड़ ॥

सत गुरु सिद्धा कर बांधा जो अब सत भान । पहलवान दास जाने है
सत गुरु परम सुभान ॥ नाम भनत्त भनत्त गुन, कोन्ही सोमति अनुहार । भोठा
बका सजन जन, चोरी लूटन हार ॥ गुरु प्रसाद गुरु कोटि गुन, गुरु सुमिरन
गुरु ध्यान । पहलवान दास गुरु वन्दना करे । सदा रहै कल्याण ॥

x x x x x

Subject—(१) पृ० १—२५ तक—नाम माहात्म्य, भजन करने का आदेश, भजन न करने वालों को निन्दा, भजन न करने से मनुष्य को हानि । भजन संबंधी अन्य उपदेश ।

No. 309. Śrīpāla-charitra by Paramalla of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—350. Size—11 × 3½ inches. Lines per page—11. Extent—3,146 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1851 or A. D. 1594. Date of manuscript—Samvat 1926 or A. D. 1869. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—घो नमः सिद्धेभ्यो ॥ घो श्री जिनायनमः ॥ घो श्री गणाधिपतेनमः ॥ अथ श्रीपाल चरित्र भाषा लिख्यते ॥ चौपाई ॥ प्रथमहि लोके घोमकार ॥ जो भव दुग्ध विनासन द्वार ॥ सिद्धि चक्र विवि केवल क्रद्धि ॥ गुन घनंत जाके फल सिद्धि ॥ १ ॥ प्रणवों परम सिद्धि गुरु सोई ॥ मय संग जो मंगल होई ॥ सिद्धि पुरी जाके सुम धान ॥ सिद्धि पुरी चानन्द निधान ॥ २ ॥ प्रगट ज्योति त्रिभुवन में चाहि ॥ फलप देव कोई लखै न ताहि ॥ घेवन रहित निरंजन मान ॥ हीन बुद्धि को सकै बखानि ॥ ३ ॥ जय जिनंद आदि सुरदेव । सुन नर कत पद पंकज सेव ॥ जै अजिते सुरगुनहि निधान ॥ मान रहित मिथ्या तम मान ॥ ४ ॥ जय जिन संभव हरन बिकार ॥ सुमिरत समय दान दातार ॥ जय अभिनेदन आदन वोर ॥ गुण गरिष्ठ भव भंजन भोर ॥ ५ ॥

End—श्लोक—उग्र गोप गिरि च दुर्गम गढ़े रजा वरभूषित ॥ जं घोरं कृत मध्वरं मद गलं पाषाण ऐरावतं ॥ तन्मदरे श्रीमान सिंघवि पतं भूलेक संवर्द्धितं ॥ तं द्राज्यं सुरनाथ वुल्य गदितं तत्केन सं वसर्षते ॥ ३३ ॥ विदग्धमंडल पूजिता च विसर्षा नामेन चन्द्र नवं । तत्पुत्रो गुरु राम दासं विप्लो मोकापि भोग्यं सदा ॥ तत्सुतो कुल दोषकस्तु प्रगटे नास्त्रास कर्जो मिया ॥ तत्पुत्रो परि मल्लधर्म सदनो ग्रंथ ईदं क्रोयते ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ गोवर गुरु गिरि उत्तम धान ॥ सुर वीरता राजा मान । तासुत है चंदन चौधारी ॥ कोरति सब जग में विस्तारी ॥ ३५ ॥ अति वरैया गुन नंभीर ॥ अति प्रताप कुल रंजन घोर ॥ ता सुत राम दास परवान ता सुत कुल मंडल गंभीर ॥ वसै चानरे परमल घोर ॥ ताको बुद्धि न उन धान ॥ तिन कीनो चौपाई बखान ॥ ३७ ॥ होई अशुद्ध जहां पद होन ॥ ताहि संभारो कवि मति लीन ॥ बारंवार जपौ करजारी ॥ बुधजन मोहि देहु मति खोरी ॥ ३८ ॥

इति श्रीपाल चरित्र समाप्तम् श्री संवत् १९२५ सावन शुद्ध १४ वार रवि दिने लिपितं ॥ लाला श्री के पुत्र हर्गिलाल के प्रति से उतारी यनपतिराइ भावक गोपालचंद के पुत्र पैतपुर के अपने पठन के हेतु संवत् विक्रमादित्ये १९२६ बैशाख मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ॥

Subject—पृ० १—६ तक—पंच परमेष्ठी की स्तुति (अरहंत सिध्, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु की स्तुति) (२) पृ० ६—२६ तक—ग्रंथार्थ, सरस्वती वन्दना, उसके गुणानुवाद के साथ । प्रति सूक्ष्म (ग्रंथ विवर्णित विषय संबंधी) सूची, ग्रंथ निर्माणकालः—संवत् सालह से उनचास मास असाढ्यो मासे मास । वर्षो क्रितु को कई बढ़ाई । दिवस बढ़ाई पहुंचा पाई ॥ पक्ष उजारीं घाटें जानि । शुक्रवार आगे परवानि ॥ कवि परमहंस शुद्ध कर चित्त । आरंभ्यौ श्रीपाल चरित्त ॥ राजा का वंश वर्णन :—

बबर बादसाह है मया ॥ तामुत साह हिमायुं मया ॥ तामुत चक्रवर शाह प्रवीन ॥ सो तपु तथ्यो मनहुं सो भीन ॥ × × × ×
ताके राज कथा यह करो ॥ कवि परमहंस कथा विस्तरो ॥ भरत क्षेत्र का वर्णन, राजा गरिमर्दन तथा रानी कुंदप्रभा का वर्णन । श्रीपाल के जन्म का वर्णन । रानी के स्वप्न दिखलाई पड़ना, राजा का फल स्वरूप यशस्वी पुत्र होने का कथन, गर्भ की दशा का वर्णन । बालकौत्पत्ति आनन्द प्रकाश ब्राह्मणादि वेद पठन पाठन वर्णन, दान वर्णन । आठ वर्ष को अवस्था में उसे गुरु के पास भेजे जाने का वर्णन । अनेक विद्या पढ़ जाने का कथन । जल में तैरना सीखना । इस बालक का नाम निमित्तो द्वारा श्रीपाल रखा गया, उसी को राजतिलक प्राप्त होना । राजा का देहान्त । पुत्र का माता को समझाना, श्रीपाल का अपने पराक्रम से चक्रवर्ती होना ।

(३) पृ० २७—३७ तक—पुर्व संस्कार के कारण राजा को कुष्ठ होना, उसके सहवासियों की भी यही दुर्दशा होना, दुर्गंध का सब घोर फैलना, नगर वासियों का दुःख, श्रीपाल का बोरदमन को राज्य देकर उद्यान को चला जाना, सात सौ साथियों का जो कुष्ठो थे, साथ जाना—प्रथम सन्धि समाप्त हुई ।

(४) पृ० ३८—५९ तक—मालव देशान्तरगत उज्जैन नगरी के राजा पटुपाळ को पुत्री मैना सुन्दरी का वर्णन—राजा को दो पुत्रियों का वर्णन, छोटी मैना सुन्दरी का गुणज्ञा होना, बड़ी सुर सुन्दरी का शिष्यगुरु (कुणस) के साथ विद्याध्यन को जाना, छोटी का जैन चैत्यालय जाना, जैन मुनि से उनका अठारहों विद्या पढ़ जाना, कौशाम्बीपुर के राजा के साथ उसकी बड़ी बेटो का

विवाह होना, छोटी बेटों से राजा का विवाह संबंध में वार्तालाप, मैना सुन्दरी का लज्जित होना, पिता के साथ कर्म के संबंध में विवाद होना, राजा का क्रोधित होना, पुत्री को निकाल देना, पुरुष—जिन्होंने उसे देखा—के मुख से उसका शृंगार बर्णन, कन्या का अपनी माता के पास पहुँचना, जैन धर्मानुसार सम्पूर्ण नित्य कृत्य करना । द्वितीय संधि । समाप्त ।

(५) पृ० ६०—९१ तक—राजा का शिकार को जंगल में जाना, कुप्टो श्रीपाल से उसको भेंट, उसको भोजन मिलना, मंत्रियों की धृष्टता, उससे राजा का पूछना कि माँगो क्या माँगते हो ? उसका पुत्री माँगना, राजा का प्रथम क्रोधित होना परन्तु फिर राजामन्द हो जाना, मंत्रियों का विरोध, राजा का कर्म परीक्षा करना और लड़कों से पुनः पूछना, उसका कर्म पर दृढ़ विश्वास दिखाना, राजा का उसी कुप्टो के साथ विवाह करना, विधिवत विवाह होना, लोगों का दिह्लगी करना, राजा का हठ पर मनही मन लज्जित होना, धन धान्य देकर विदा करना, श्रीपाल का पत्नी से पृथक् रहने का कथन, उसका निषेध और पति के सौंदर्य का वर्णन करना, जन्म पर्यन्त सेवा करने का वचन देना, कर्म पर दोषारोपण और उसका प्रवृत्ति का कथन, दोनों का दिव्य वस्त्र धारण कर तिनराज को पूजा करके पति के कुप्ट दूर होने की प्रार्थना, ग्रहंत को पूजा विधिवत करने पर उसका कुप्ट दूर होना, भूप का मकरव्यंज के समान रूप हो जाना—तृतीय संधि समाप्त हुई ।

(६) पृ० ९२—१२६ तक—श्रीपाल को माता का विकल चित्त होकर जिनेन्द्र से पुत्र संबंधी—विनोत भाव से उन्हें पूज कर प्रश्न करना, जिनेन्द्र का हाल कथन करना, माता का जाकर अपने पुत्र के महल को देख कर किसी से पूछना उससे सम्पूर्ण समाचार श्रवण कर वहाँ पहुँचना, पुत्र और माता के तथा सास और बहू के मिलन का अनुपम कथन, पुत्री से उसके माता पिता के मिलने का वर्णन, उससे पूर्व भली भाँति निश्चित करके उनकी और भी सेवा करना, धन धान्य देना, जिस प्रकार वह पच्छा हुआ उसका सम्पूर्ण समाचार जानना, एक दिन श्रीपाल का वहाँ से कहीं जाने का विचार करना, उसको खो की आपत्ति, माता का प्रलाप, भेंट में दोनों का संतोष, उसका समय निर्दिष्ट कर के उसी समय आ जाने का वचन, मार्ग के संबंध में सजग रहने का माता द्वारा उपदेश, श्रीपाल का गमन, विद्याधर से उसका मिलाप, विद्याधर से मंत्र न सिद्ध होता था, उसका उपाय श्रीपाल द्वारा बताया जाना, इस उपकार के प्रत्युपकार स्वरूप विद्याधर का श्रीपाल को जलतारिणी और शत्रु निवारिणी दो विद्याएँ देना । चतुर्थ संधि समाप्त ।

(७) पृ० १२७—१५६ तक—श्रीपाल का चलकर एक निर्जन स्थान में पहुँचना । कौशाम्बी के धवल सेठ का जहाज लाद कर चलना और एक स्थान पर घटक जाना, सेठ का शहर में आकर विद्वान से उसका कारण पूछना, उसका कथन कि एक बलि लेगा तब चलेगा, राजा से सेठ का बलि माँगना, राजा द्वारा बलि की खोज को सिपाहियों का जाना, श्रीपाल का पकड़ा जाना, सेठ तथा श्रीपाल का वार्तालाप, श्रीपाल के छूते ही जहाज का चल देना और सेठ का उनका बड़ा सम्मान कर अपने द्रव्य का दशवां प्रेश देकर पुत्रवत उनको मानना और साथ ले चलना । धवल सेठ को मार्ग में चोरों का मिलना और उनका सेठ जो को पकड़ लेना, श्रीपाल का चोरों को बाँधना और अपने धर्म पिता से दंड विधान पूछना, उनका दया करके उन्हें छुड़ा देना चोरों द्वारा श्रीपाल को सात जहाज रत्नों का देना और उसका उपकार मानना । पंचमसंधि समाप्त हुई ।

(८) पृ० १५७ से २५५ तक—हंसद्वीप का वर्णन । (वहाँ के राजा) कनककेतु की, छोटी कंचन माता के दो पुत्र चित्र विचित्र तथा रैन मंजूषा नाम तीसरी पुत्री का वर्णन । इस पुत्री के संबंध में राजा का मुनि से प्रश्न कि मेरी पुत्री का विवाह किससे होगा, ज्ञान द्वीप मुनि का कथन कि जो सहस्र कुटन चैत्यालय के फाटक को हाथ से खोल देगा उसी के साथ होगा । कालान्तर में श्रीपाल का वहाँ पहुँच कर उस छत को कर राजकन्या का पाना, रैन मंजूषा को लेकर श्रीपाल का अपने सेठ के साथ चल देना, सेठ का रैन मंजूषा पर मोहित होकर श्रीपाल को समुद्र में गिरा देना और रैन मंजूषा को तरह तरह के प्रलोभन देकर वशीभूत करने का प्रयत्न करना । रैन मंजूषा के प्रस्ताव पस्वीकार करने पर बलात्कार की चेष्टा, रैन मंजूषा का ईश्वर से प्रार्थना करना, चार देवियों का प्रगट होकर सेठ को दंड देना, अन्य महाजनों की प्रार्थना पर रैन मंजूषा का धवल सेठ को छुड़ा देना, श्रीपाल का तैरते हुए कुंकुम द्वीप में पहुँचना, वहाँ के राजा की पुत्री गुणमाला के साथ—जिसके संबंध में मुनि ने बताया था कि जो पुरुष समुद्र तैर कर पावेगा उसी के साथ तीरी पुत्री का विवाह होगा—विवाह होना । सेठ का भी उसी नगर में पहुँचना राजा को भेंट देने को जाना, वहाँ पर श्रीपाल को देखकर चिन्तित होना, श्रीपाल का कुछ न कहना । धवल सेठ का माँहों द्वारा तमाशा करा के उसे माँहों का लड़का सिद्ध कर के मरवाने की आज्ञा दिलवाना गुणमाता का अपने पति से वास्तविक समाचार जानने की प्रार्थना, उसका उसके जहाज पर भेज कर इस संबंध में रैनमंजूषा से वार्तालाप करने की कहना, रैनमंजूषा के पास जहाज पर पहुँच कर गुणमाता का शुद्ध समाचार जानने के लिये अपने

पिता के पास ले आना, राजा का शुद्ध समाचार जान कर उसको छोड़ना, सेठ को राजा का बुलाना और फाँसी को आज्ञा देना। श्रीपाल का दया कर उसको छोड़ा देना, तिस पर भी उसका हृदय फट कर मर जाना और श्रीपाल का सेठानी को सम्मानना, सेठानी का कहना कि उस पापात्मा के देहावसान होना ठीक ही हुआ। इस पर सेठानी को उसके घर पहुँचा देना।

(९) पृ० २५६—८९ तक—मुनिराज को भविष्यवाणी के अनुसार श्रीपाल का विवाह कुंडलपुर के राजा मकरकेतु की पुत्री चित्ररेखा के साथ होना। तत्पश्चात् कंचनपुर के राजा यक्षसेन की (९००) पुत्रियों से उनका विवाह होना। कुंकुमपट के राजा यशसेन की सारह सौ पुत्रियों के साथ उनका विवाह होना—इनमें प्रधान घाठ की दी हुई ग्रंथ में प्रस्तुत घाठ प्रज्ञा के पूर्ण करने पर विवाह सम्बन्ध होना—ग्रन्थ बहुत सी स्त्रियों से विवाह करके कुंकुमद्वीप में लौट कर आना। अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों को सब स्थानों से लेकर अपनी प्रथम स्त्री मैना सुंदरी से किये हुए वचन को पूर्ण करने के लिये उज्जैनी को छोड़ना, स्त्रियों को इस लिये मार्ग में छोड़ कर कि उनको अर्वाध का अंतिम दिन है यदि वे न पहुँचेंगे तो उनको पूर्व की तपस्वना हो जायगी अकेले ही घर पर रात्रि के अन्तिम पहर में पहुँचना और अपनी स्त्री का माता से दोषा करी आज्ञा मांगते हुए पाना। इनके प्रबोध पर और पहुँचने की प्रसन्नता पर उसका रुक जाना और प्रातः सब स्त्रियों को बुला लेना और मैना सुंदरी को सब से प्रथम पटरानी पद देना। भोग विलास करना।

(१०) मैना सुंदरी का अपने पति से कथन कि आप मेरे पिता की कंधे पर कुल्हाड़ी तथा कंधे पर गोद कर अत्यंत दीन दशा में बुलाइये जिससे वह कर्म के फल को समझे और अपने आग्रह को छोड़े। इस पर उसके पति का विरोध, पत्नी का पुनः धर्म की दृष्टि से ऐसा करने का अनुरोध, इस बात को अवकाश मान कर राजा के पास उसी प्रकार आने की आज्ञा दूत के द्वारा भिजवाना और उसका भयभीत होकर उसी दशा में आना। दम्पति का उसके पैरों पर गिर कर कर्म का प्रभाव कथन करना। राजा का लज्जित होना, आशिर्वाद देकर और कर्म के प्रभाव को समझ कर राजा का अपने नगर को छोड़ना। जैन धर्म को स्वीकार करना, श्रीपाल का सुख भोग करना—अष्टम प्रभाव समाप्त

(११) पृ० २९०—३११ श्रीपाल का आदर पूर्वक मैना सुंदरी के पिता द्वारा अपनी राजधानी में बुला ले जाना, प्रजा की ओर से उसका हादिक स्वागत, कुछ दिवस पश्चात् उसका राजा से अपनी जन्म भूमि तथा पैतृक राज्य के उपयोग की प्रमिलाषा प्रकट करना, राजा का कथन कि आपकी यदि राज्य

को ही इच्छा है तो मेरे राज्य को लीजिये और मुझे अपनी सेवा को राजा दीजिये । जामात्र का श्वसुर को धन्यवाद देकर उचित कारण बताते हुए अपने प्रस्ताव को स्वीकृति के लिये पुनः आग्रह करना । प्रस्ताव का स्वीकृत होना, श्रीपाल का गमन, उसकी सेना को बढ़ाई, कई राजाओं को वशीभूत करने के पश्चात् उसका चम्पावती में पहुंच नगर को घेर लेना, नगर निवासियों को चिन्ता, दूत का भेजा जाना और उसका राजा और दमन को समझाना, उसका न मानना, दूत द्वारा श्रीपाल के वैभव का कथन, उसको श्रवण कर वीरपाल का क्रोध, सुधारम, देनो और के योद्धाओं का विध्वंस, मंत्रियों की सम्मति से गुगल नृपतियों का मल्ल युद्ध, श्रीपाल की विजय, वीर दमन को उसे राज्य सौंप कर स्वयं जैन धर्म को दीक्षा लेकर वन को चला जाना । तबम् प्रभाव समाप्त ।

(१२) पृ० ३१२-३५० तक—श्रीपाल को राज्य व्यवस्था का वर्णन । उसकी स्त्री मैना सुन्दरी से एक पुत्र—जिसका नाम धन्यपाल रखा गया । इसके बारह सहस्र एक सौ आठ पुत्रों के होने का कथन । राजा का बहुत दिनों तक राज्य का आनन्द उठाना, प्रजा को सब मांति से सुखी रखते हुए राज काज निर्वाह करना, राजा द्वारा विद्याधर तथा वनदेव का सत्कार किया जाना, एक मुनीश्वर का आना, राजा द्वारा उसका सत्कार किया जाना, और उसका जप तपादि की प्रशंसा के साथ ही साथ कर्म की प्रधानता का कथन करना, राजा का आदर पूर्वक अपने पूर्व कर्मों के संबंध में यथा—मैं कुप्यो क्यों हुआ ? पातो मैं क्यों हुआ, इत्यादि—कुछ प्रश्न करना, मुनि का उसके पूर्व जन्म का संपूर्ण समाचार और उसमें किये गये कर्मों के अनुसार दुःख सुख होने का वर्णन सकारण समझा दिया । राजा का दीक्षित होकर वन को जाना, पुत्रों को राज्य देना, उसका अपने को असमर्थ बतलाने पर कुछ उपदेश देकर राजा मानने के लिये बाध्य करना, उसका राज्य स्वीकार कर लेना, राजा का वन गमन, रानियों इत्यादि का भी दीक्षित होना ।

(१३) मुनिराज से भेंट होना, राजा का उनसे उपदेश सुनने की अभिलाषा प्रकट करना, उनका उपदेश देना, उपवास, दान, इत्यादि की प्रशंसा करना, राजा का तप करना, श्रीपाल का केवल ज्ञान या मुक्ति को जाना । कवि का कुछ वर्णन । ग्रंथ समाप्तिः ।

No. 310(a). Dadhilihā by Parmānanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—7×4½ inches. Lines per page—22. Extant—55 Anuṣṭup Ślokās. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śiva Nārāyaṇa Lala, District Rāe Bareli.

Beginning—ॐ ॥ श्री गणेशाय नमोनमः ॥ यद्य दधिलीला लोपते ॥

ब्रौषमान सुता सुकुमारो । दधौ बेचन चलो ब्रज नारो ॥
जह छुड कदम को छाहो । बेठे प्रभु तेहो मगु माहो ॥
सपौ गेदुरो पेलत पाई । तव कोल जो मुरलो बजाई ॥
दधौ बेचन चलो ब्रजवाला । जहाँ बोच मोले नंद के लाला ॥
दे दे रो गुजरो दधौ दाना । नहो अंचल रोके हो ना ॥

End—चौपाई ॥ जब देन लगी हसी दाना । तब पती इतरानेउ काहा ॥
प्रभु मवन साधि के बैठेये । जोगी मुनो जंगम जैसे ॥

केतोक जुगतो अनेक मनावै । प्रभु नेक न चीत डोलावै
तव राधे नौकट चलो पाई । सुनो लोजै बोनव गोसाई ॥
हम दासो अइनो तुम्हारो । तुम चरन सरन बनवारो ॥
अनो जीवन जनम हमारो । जब पावा दरस तुम्हारो ॥
यको बैठी वधारो डोलावै । यक बोरो पेलो पोषावै ॥
जौ चाहोये सो बर लोजै । प्रभु कोपा आपनी कोलै ॥
हरो देषो गुजरो रतो मानो । हंसो बोले सारंग पानी ॥

कुंद ॥ हंसो बोले सारंग पानी सुंदरो मानो रतो रसा भौ रहो ।
करो केलो कुंज कलाल काहा सहस रंग रस भरो रहो ॥
कर्त कोड़ा मदन मोहन कवन लेचन राजहो ।
दास परमानंद सोभा सुनत कलामल भाजहो ॥ रतो श्री

दधिलीला संपूर्ण ॥ समाप्तम् ॥ श्री छोष्ण सहारै लोका ।

Subject—श्री कृष्णजी को दधिलीला ।

No. 310(b). Dānalīlā by Dāsa Parmānanda. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—6 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—110 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1899 or A. D. 1842. Place of deposit—Paṇḍita Śatrughnaji, Village Sikandarpur, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ दानलोला लिप्यते ॥ देहा ॥ एक
समै राखे जो बैठो सखिवन साथ । वेहा प्रेम उमगोहियो सुमिरि नाम वज्रनाथ
चलो सभी तहं जाइये जहं बैठे वज्रराज गोरस वेचन प्रेम रस एक पंथ दो काज ॥
चौ० करि मंजन और अंगारा । पहिरे मुक्तन को हारा ॥ कृषि वेदो माल विराजै
दसन दुति दामिनि राजै ॥ मट्टकी दाँधि से भरवाई । सपियों संग लोन लेवाई ॥

No. 311. Ushācharitra by Paraśu Rāma. Substance—
Country-made paper. Leaves—114. Size—5×4 inches. Lines
per page—10. Extent—962 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—
Old (letters spoiled by rain). Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—
Paṇḍita Bhavānī Baksha, Village Ularā, Post Office
Musāphirakhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—राम स्वस्ति श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिपतं उषा चरित्र ॥
चोपाही ॥ कश्च कवल लोचन सुषकारी ॥ अवधि भूप ईसर पैतारी ॥ जाको
नाम सुनत अथ जाहीं ॥ सो प्रभु वस सदा घट माहि ॥ घट घट वसै लपै नाहि
कोई । जल थल वसै सदा गोसाई ॥ जाको आदि अंत नहि जानी ॥ पंडित पढ़त
गुन गन वषानी ॥ प्रेम प्रीति निज सुष के दाता ॥ चहुंजुग येके कार विधाता ॥
दोहरा ॥ प्रभुवन पति नागर नवल ॥ जुगल कोसार कोसार । तिहि को जुगत
अपार है । कवि वरनुक वटौ ॥

End—परसराम कि विनती जो अवन धुन लेह ॥ प्रभु दयाल कृपा करै
प्रभु इतने फलेह ॥ इति श्री उषाचरित्र समाप्ति ॥ संपुरण ॥ मिति मार्गसौर
वदि ६ बुधवार लिपतं नंदन दास संवत् १८२५ ॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २ तक—वन्दन व कृष्ण महिमा । (२) पृष्ठ ३
से १४ तक—कृष्ण रुक्मिणी विवाह । अनरुद्ध जन्म, स्वप्न में १२ वर्ष की कन्या का
देखना । नख शिख । वाग्लासुर की पुत्री उषा का और अनरुद्ध का वियोगावस्था
में मनस्ताप, (३) पृ० १५ से ४० तक—चित्ररेखा का उषा को समझाना, अनेकों
चित्र बनाना, अनरुद्ध को उषा का पहिचानना, सभी का कुंवर को लाने के लिये
आज्ञा मांगना द्वारिका में अनेकों प्रयत्नों द्वारा भी प्रवेश न पाना, नारद मिलन,
नारद का गोधूलि समय में प्रवेश करने के लिये कहना नगर में जाना टरवाजे
पर सभी का मिलना चित्ररेखा को माया जिससे उसे कोई न देखे, कुंवर को
विरह दशा, कुंवर से वार्तालाप, उनके साथ लाना, उषा से मिलाना, प्रेमो तथा
प्रेयसी का प्रेम वार्तालाप । (४) पृ० ४१ से ६० तक—कृष्ण के यहाँ अनरुद्ध के

मायब हो जाने के कारण चिता बाणसुर को रानी का सब हाल जान कर अपने पति को बताना, उषा का गृह धेरा जाना, अनरुद्ध का सुद करना, उन का नाग फाँस फाँसा जाना । (५) पृ० ६१ से पृ० ११४ तक—अनरुद्ध का राजा से प्रमिमान युक्त वार्ते कहना रानी का उसे कन्या देने के निमित्त राजा से प्रार्थना करना, नारद आगमन, अनरुद्ध का उनसे कृष्ण के लिये, संदेश भेजना दूतों का राजा के निकट संदेश ले जाना, दूत का कुंवर से मिलना, दूत का लौट कर कृष्ण से सब वृत्तांत कहना, कृष्ण का क्रोध करना, दोनों दलों का युद्ध, हरहर मिलाप, बाणसुर का कृष्णराम को निर्मम्रित करना, बाणसुर को पुत्री का विदा करना, द्वारिकापुरो घाना, बघाई ।

No. 312(a). Rāma Kalāvā by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—6×4 inches. Lines per page—22. Extent—680 Anuṣṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda, Village Naipālapur, Post Office Sitāpur, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ श्री रामकलेवा रहस्य लिप्यते ॥
रामिनी काफ़ी । सुनिये रहस सिया सुष पानि । प्रातकाल रवि उदित भय
सति नौवा जनक पठाये । चारो कुंवर राइ दसरथ के तुरत बोलि है पाये ॥
आतुर नौवा गा जनवासे नृप दसरथ के ठाई । चारिउ कुंवर महां कौसलवर
चले कलेवा भाई ॥ सुनि नृप सभा अनुज छुत रामहिं आतुर लियो उर लाई ।
जाउ सकल मिलि पान कलेवा पठये जनक बोलार्थ । पितु अनुसासन पाइ कृपा-
निधि बलिमे चारिउ भाई । सम बै राजकुमार कुबोले ते सब चले लिवाई ॥ कोउ
स्वन्दन कोउ गज कोउ तुरंग आप रुचिर सुषपाला । अनुजन सहित लसत रघुनंदन
कोटि मदन मद बाला ॥ स्वंदनादि सह आजत अङ्गुति परम विचित्रित कोन्है ।
जममगत सब जरित जरायन दिनकर परत न कोन्है । गौ मुषादि दुंदुभी बजावत
कलित पांडव मुरनाई ॥ आवत जानि राम को सपियन गलो सुगंध सिंचाई ।
येकै चढ़ी अटारिन द्वै येकै सुमंग दुवारा । येकै छवति भरोपन भाकै दरसन
भास अपारा ॥

End—को बहु श्रुति सरबज कहै को सतानंद ते पायो कोऊ कहै परम
कौतुको नारद तिन वह भेद बतायो ॥ नपित कथा सुनि भूप कौतुको आतुर तिनहै
बोलायो ॥ चित्त चिन्ह ततकाल मिटै नहिं यद्यपि धोइ छुटायो ॥ रचना देषि नृप

हंसे समा सब मुनि सब सकल बरातो ॥ मन्व्या हास्य भानंद कुलाहल समुभि
परै नहि वाता । यह प्रकार भानंद दुहु दिसि परम विलास सोहावा ॥ सजन
समुभि लेहु अपने मन जया स्वमति में गावा ॥ अस मम हृदय प्रेरणा करि यह अस
मम मतिह लषाये । परवत दास सेत पद रज सिर रापि चरित यह गाये ।
दोहा । जे सुनिहैं करि प्रीति यह जे कहिहैं करि भाउ । तिनका राम विलास
यह करिहैं तुरत प्रसाद ॥ सीताराम रहस्य यह मक्त रसिक सुष मूल । ध्यान यह
मन करिहैं जेई तिन दंपति अनुकूल ॥ भक्ति हास्य शृंगार रस त्रय रस मिश्रित
स्वाद । जे परहैं अनिहैं तेई सिय रघुबोर प्रसाद । कहैं सुनै जे व्याह यह सावधान
करि भाउ । सीति होई सर्वो प्रसुम दिन दिन मंगल चाउ । इति श्री रामचंद्र
कलेवा रहस्य परम विलास परवत दास कृते सम्पूर्णम् । संवत् १९१६ श्रावण
मासे शुक्ल पक्षे तिथौ दशमयाम चंद्रबासरे लेख्य कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर
के लिपितं शिव शिव

Subject—राम व्याह में राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न इत्यादि का कलेवा
करने के लिए जनक महल में जाना और वहां लक्ष्मीनिधि और सिद्धि सरहज से
हास्य विलास के प्रयोजन ।

No. 312(b). *Rama Kalevā by Parvatadāsa*. Substance—
Country-made paper. Leaves—27. Size—12×5 inches. Lines
per page—16. Extent—482 Anushtup Ślokas. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1939
or A. D. 1882. Place of deposit—Thākura Śrīprakāsa Simhaji,
Raiss, Hariharpur, Post Office Chilawariā, District Bahraich
(Ondh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ रागिन काफो । परवतदास कृत ॥
प्रातकाल रवि उदित भय सत नौवा जनक पठावो । चारो कुंवर राव दसरथ
के तुरत बोलि जे भावो । घातुर नौवा ना जनबासे नृप दसरथ के ठाई । चारिउ
कुंवर महां कौसल वर चले कलेवा पाई । सुनि नृप सषा अनुज जूत रामहि
लियो उर घातुर लाई । जाव सकल मिलि पान कलेवा पठयो जनक बोलार्इ ॥

End—तेहि विवि कहैउ भरत रिपुसूदन भाइ भक्ति बिलेखो । सो सुनि सषा
रह्यो पुतरो सो लषनादिक मुष देखो । जो जो कहव करहु स्वै भारत तव
सुबायणो छाठो । ननु लहंगा पहिराई छाड़िहैं हम भवला मद मातो । सषा
सकल कर जोरि सपिन ते कहि अधोन सुदु वानो । राम सिया के दास पुत्र
करि छाड़हु पान सयानो । इति श्री परवतदास कृत राम कलेवा समाप्तं लिषा
सो रंगनाथ संवत् १९३९

No. 312(c). Shaṭ Rahasya by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—9×7 inches. Lines per page—32. Extent—580 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Nārāyaṇa Vājapeyī, Vājapeyī kū Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रोमते रामानुजाय नमः। अथ षट रहस्य लिख्यते ॥ प्रथम ज्योति रहस्य ॥ लाल इन देवो के लागी पाये। कर जोरौ पद जोरि लाड़िले बिनय कर सिर नाये ये हमरो कुल पूजि भवानो तुम्है उचित यहं पाये। परमानंद होय दोनौ दिसि इनके पूज्य पुजाये ॥ नहिं रोके अप तप संयम ना कछु गाये बजाये। केवल बिने मात्र कर जोरत द्रवती सरल सुभाये। सर्वो विघ्न प्रसान्त मोद प्रद कहति हवि सत भाये। बेमि पांय पर दीन भाव धरि करि हैं कोय विलावाये। प्रभु हंसि कह कैसी है देवी बैठी बदन दुराये। कोय प्रसन्न जानि कस पारि है विना स्वरूप लपाये। ई हमरो प्रह गोचर माया द्रवहि न संग दिंपाये। दूर रहौ अनि छुबेहु घोषेहु हौ तुम विना नहाये। बरबस राम मछो घुंघट पट हमरो पदप चाराये। इन देविन के भाग्य सराहौ द्रौपद लेत चढ़ाये। हमका काह ठगौ मृगैनो तुम्है ठगन हम पाये। जन पर्वत मुसकाय कहत मई लालन पड़े पढ़ाये ॥

End—विहाग—हे दशरथ को पुतहू ह्यो कछु नेग हमारा ॥ मैं तुम्हरे पुर-पन के बंदिन विदित सकल संसार ॥ जबते वशिष्ठ पुरोहित भे तब ते मैं लोन्ह भटाई। केवल तुम्हरे हेत लाड़िलो मैं यह वृत्त उठाई। यह इश्वाक वंश मम मेरा अन्य मोष नहि थाऊं। तेहि पर अवसि अवध गादो तजि और कह नहि जाऊं ॥ पिता तुम्हार बहुत कछु दोन्हो राउ बहुत कछु पावा। तुम सिद्ध रहो संपदा पाई अब यह कानन पावा ॥ और और के और नेग हैं हम पके यह पावै। फिरि कहहं न जाहि काहू के घर बैठे गुन नावै। व्याहि प्रथम पावै जब बुलहिन हमें नेग दे दासुन। तब भोगै सज्यादिक सौपिन पृच्छि लेव निज सासुन। सुनि परिहास अनर्गल पक्षर घुंघट विच मुसकानो। मनहु चार विधु भंषे घरन घन उपर प्रमा थहरानो ॥ तब तीस्यु रानो हंसि बेली मस्य कहै यह भाटनि ॥ जो मानी सो देव प्रीति जुत यह हमारि कुल पाटनि। अब मैं पाउ खुकीउं ठकुरैयू जो हमका इन चोन्हा ॥ सुन्दर बदन सुकोमल नैनन मोदि चितै हंसि दोन्हा ॥ अब चतिहौ तब मीनि लेहौ मैं मोर कहं नहि जाई। जस जस इनको बृद्धि होयगो तस बर बढ़ी सवाई ॥ सदा अचल अहिबात रहै अरु होई पुर धुर धारी। प्रास ते अधिक पतिन को प्यारो होइ असोस हमारी। जन पर्वत जो परम उपासक रसमाधुजैहि

जाना रहसि ध्यान ते जन्ति पाप सुख होइ परम गल ताना इति श्री चतुर भगिनी रहस्य समाप्त पट रहस्य संपूर्ण सुम मस्तु ।

Subject—श्री राम जी का देवियों के पैर लगने के लिये सखियों का कहना, बत्ती मिलाना, लहकौरि खिलाना, कलेषा करना, ज्योनार, सखियों और राम का संवाद, हास्य विलास, राम गूढ़ वचन, भरत शत्रुह्न लक्ष्मण का सखियों से संवाद, उर्मिला, मांडवो आदि चारों बहिनों का संवाद, सारिका संवाद, जनक राम संवाद, चतुर भगिनी व माटिनि संवाद आदि ।

No. 312(d). Shaṭ Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper, Leaves—30. Size—12×6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushtup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1848. Place of deposit—Thakūra Jagapala Simha, Village Birapur, Parganā Akonā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312(c).

No. 312(f). Shaṭ Chatura Bhagini Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Size—15×6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushtup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Lalatā Prasāda, Village Paṇḍita Puravā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312 (c).

No. 313. Śālihotra by Pāthaka Dāsa Dwija of Rukama Nagara. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12×5 inches. Lines for page—12. Extent—360 Anushtup Ślokaa. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1831 or A.D. 1774. Date of manuscript—Samvat 1879 or A.D. 1822. Place of deposit—Thakura Naunihāla Simha, Seṅgara, Kānthā, Unāo.

Beginning—श्री नखेशायनमः ॥ यथ सालिहोत्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ मनपति गिरिजा इस कौं प्रथमहि बन्दी पाइ । भापौं लखन बुरग के मोहि पर होइ सहाय ॥ सुमिरि राम के जलज पद विधि बंदी कर जोरि । दोरघ पक्ष तुम्हार

प्रभु बुद्धि अल्प मति मोरि । अस्वारिषि के सुवन इक सालिहोत्र तेहि नाम ।
तिनके चरन कमल जुग लाला करै प्रनाम । अरिषि कोन्हौं पारंग मख होम धूम
रही छाई । लाग्यो लोचन रिपय के सलिल बंद परे आय । वाम नेत्र ते अस्वनो
दाहिने मयो तुरंग । मध्ये रिषि सो सुवन है को कहै प्रसंग ।

End—अथ चासनो ॥ सुरभी दृघ सेर दस लोजै । टांक दोइ.....म तेहि
दोजै । खोर करै गुर संधै बात । अस्वा बहुत पुष्ट होइ जात । ४ अथ सालिहोत्र
समाप्त संपूर्ण शुभ मस्तु । मिति पौष सुदि शनिवार १ पुस्तक लिखी सुखनंद
मुकुल समाप्त संवत् १८७९ ॥ राम रचयिता—लाला पाठकदास द्विज यमुननगर
में वास । भाषा कोन्हो अथ्व हित सब कवि जन के दास । चन्द्रराम वसु चन्द्र
लिपि संवत्सर परिमाण । शुक्रमास वदि तीज को कान्हे अथ्व बखान । पूरव....
ति देखि कै भाषा कोन्हा येह । चुक होइ सो पूजिये जानि दास पै नेह । इति ।

Subject—अथ उत्पत्ति वर्णन, दात लक्षण, शुभाशुभ विचार, पृ० १—५

अथ लक्षण रंग व मोरों लक्षण, अशुभ सफेदी, अंजनो लक्षण, गोप, कंस,
घाटी, अमूसलो, कलमुर्खी, धनो, स्याम तालू लक्षण, पृ० ६—१०

असनशूल, बदशूल, मूत्र बदशूल गद व प्रशूल, लक्षण व उपाय, अन्यशूल
वर्णन, पृ० ११—१६

ज्वर, वायु, नक्षत्र, लक्षण व उपाय, कनारा व प्रमेह, उपाय, पृ० १७—२८

मूत्र रोग उपाय, जैमिराधयविरा उपाय, गर्मी, पित्त, सुखकपालो, घोड़े
के लिये रस वर्णन, अनुवार, खीवर, पोखि लगे को उपाय, पारोसी, फूली,
मेढुकी, सर्पारि तरवा तुकहारी, सिमुचा सुनी वर्णन पृ०—२३—३० तक

No. 314(a). Jñānayōga Tattvasāra by Patita Dāsa of
Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—72.
Size—5 × 3 inches. Lines per page—18. Extent—900 Anush-
tup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—
Śrī Kṛishnaji, Village Sakhuāpur, Post Office Bahrāich, Dis-
trict Bahrāich (Oudh).

Beginning—ओ नमोऽश्विनमः देवा । पतितदास कृत बहु विधि
लिखी विचारि विचारि । बुझि संमारे पथ को सो है गुरु हमार । ज्ञान जोग
उत्पत्ति सब पालन पर सत सार । इन्द्र देव ज्ञान गुण चारों पद के उबार ।
म्यानी कविद सब मिलि मयि लियो सादासार । भक्ति ध्यान घर त्याग बहु कुर

कर्म गेरि मार । सो० मन मद् वच्छ चपा ठोकर बहुत बचाइयो । मानो कहो हमार । सत्य शब्द गहि लोजियो ॥ दो० सत गुरु में पर कृपा करि दियो योग तत्त्वसार । पतितदास जग जानि कै जग में कियो पसार ॥ चौ० दास पतित पति मन बुधि होना । प्रभु रघुवर मोहि पावसु दोन्हा । सुम सुन्दर संवस मंग-बाई । तन मन धन हरि शरण लगाई । जाकर गुणानवाट पवगाहा । चारौ जुग कोइ पाव न थाहा । पहिले सुमिरौ श्रो गुरु ईशा । जो मोहि विद्या दियोपदेश । संकर सुवन भवानी के नंदन । गणपति देवनाथ जग बन्दन ।

End—लिख वह में लिप हारो कागद कलम सिरान । ऐंति पैचि कथनो करो नामै पर ठहराना ॥ चौ० ॥ पति वह कहैं कहों छैं गई । याहो में में पर्थ सुनाई । शहर लखनऊ बस्तो भारो । जन्म भूमि ता जाग्य हमारो । नाम चकौलौ ग्राम हमारा । भयो जन्म सब हेत गंवरा । रमत रमत रसूलपुर आई । तहां मिह्यो गुरु देव गोसाई । दास पति० सम रस जिभावा । गुरु दयाल निज दास बनावा । दोन्ह जोग सब तत्व लपाई । भर्म त्यागि निज रूप देपाई । गोंडा में गिरधर पुर गाऊं । नीत धर्म कोई जानत नहि भाऊ । रामदत्त पांडेन में भयऊ । कुल के धर्म नेति चलि गयऊ । हेतु ताहि तहं वास हमारा । करहु जोग तब तजि व्यावहारा । ताके देश भयो अविवेकी । तजि सुभ पंथ कुमारग टेकी । देखि अनोति तजेऊ वह देसा । अबध में आय कोन्ह परवेसा । दो०—पतित को मन गहिना मिले भागे पवन समान । मन इन्द्रो बस कोजियो हरि सो करि पहिचान । चंक ऊपर बिन्दो बड़े बड़त बड़ि जाय । तरै चंक विगरै नहि जीव पोख मिटि जाय । एकै प्राणायाम में कटै कोटि अपराध । जप नाद जो नाम सम रहै नहीं भव बाध । सो०—कटै कोटि अपराध, यहि विधि सुमिरन जो करै । दास पतित निज साध छूटि जाय भव दाप सब ॥ चतुराई में भुलिकै नाम न सुमिरन कोन्ह । दास पतित गति को कहै । जन्म अकारध लोन । तबसार यह जोग है आतम सार विचार । पढ़ै सुनै जो नेम सो होवे सकल उबार ॥ इति श्री ग्यान जोग तत्वसार साधन । श्री स्वामी पतितनंद कृत सम्पूर्ण । शुभमस्तु । लिखा शिवा-नंद संवत् १९२१ विजय दशमी ।

Subject—श्री गणपति की स्तुति, गुरु की महिमा, प्राणायाम द्वारा ईश्वराराधन आदि अन्त में ग्रन्थकर्ता की जन्मभूमि आदि का वृत्तान्त ।

No. 314(b). Mahavira Kawacha by Patita Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—8×5 inches. Lines per page—16. Extent—85 Anushṭup Ślokās. Appear-

ance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Paṇḍita Rāmāvatāra, Village Paṇḍita Purawā, Post Office Risiā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । श्रीमहावीरायनमः । ॐ हनुमताय नमः ।
 चौ० । जय महावीर धीर बलवता । जासु चरन सेवै सब संता । बली धीर तुम
 हो हनुमान । तुव गुन गावै चतुर सुजाना । सदा तुम्हारी जै हनुमंता । जापर कृपा
 करै भगवंता । बिन तुव कृपा पार नहि होवै । तुम्हरो आस सबै कोई जोवै । राम
 पियारे सिवा दुलारे । दास पतित का काहे बिसार । संकर सकौ केसरो नंदन ।
 दास भानि काटौ भव बंधन । तुम बिन खर कोइ नहि स्वामी । तू उदार छ
 चंतरजामो । अंजनि कुमार पवनसुत नायक । राम के दूत लखन के आयक ॥
 सुनहु न नाथ बजै कस मोरो । दास पति भाषौ कर जोरो । संकट हर मंगल के
 दाता । जो सुमिरे तुव नाम विधाता । हैं मैं कुटिल प्रथम अभिमानो । भाव
 भक्ति नेकहु नहि जानौ । तुम प्रभु जानहु सब छट केरो । काहे न सुनौ नाथ ख
 मोरो । अब कहावौ तुम्हरो दासा । तजि के काम जगत को आसा । दो० । हम
 पतित तुम समर्थ नाथ कहौ कर जोरि । पाई सरन मत त्यागहु देहु मोहि
 अनि पोरि ।

End—जब रघुनन्दन आम्हा कोन्हा । छै मुद्रिका सोय का दोन्हा । दधि
 नाथत भयऊ रूप अकासा । राक्षस मारि दैपत करि नासा । सो पौरुष कह
 गयऊ तुम्हारा । सुनौ न स्वामी बहुत पुकारा । अब मोरि लाज राषि प्रभु लोजे ।
 जनके काज हरषि हिय कोजे । एक बार नित पाठ पुकारै । वैरो दुसमन ये सब
 हारै । दुइ बार जो नित लावै सेवा । रोग छुड़ावै हनुमत देवा । बहु विधि रक्षा
 करै कृपाला । छूटि जाय दुष सब अंजाला । त्रितावार करै नित पूजा । जप तप
 ध्यान धीर नहि दृढा । सांभ सधेरे दौम ध्यान । हित से सुमिरे निर्मै हनुमान ।
 धीर जहां छै सधेरे भाई । दिन प्रति प्रीति करै मन लारै । सो महिमा सकौ न
 नाई । जेहि देवे जमदूत हेराई । ताको पाठ करै नित भाई । करि बिसवास पाठ
 करै कोई । चारि वरन में जो कोई होई । कापै जम के दूत सब, जम को कह्य
 बसाय । दास पतित गोहराय कहैं जेहि महावीर सहाय । कवि बिसवास पुकारै
 पाठ नेम नित कोई । रोग दोष सब नासे अनगिनतिन सुष होई । इति श्री
 महावीर कंवच मंत्र अस्तुति दास पतित वरनन जो पढ़ै सुनै चो पढ़ावै । संका
 निकट ताहि नहि आवै । दः रामघोतार कुरसदा बाळे ने लिषा जो प्रति देषा सो
 लिषा मम दोष नहीं श्री संवत १९४८ कार मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ पष्ट ॥ दः
 रामघोतार समासम् राम राम राम राम राम ।

Subject—हनुमान जी की महिमा ।

No. 314(c). Nakshatra Rāshi Charaṇa Kuṇḍali phalā-phala Jyotiṣha by Patita Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—10×6 inches. Lines per page—60. Extent—1,620 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1882. Place of deposit—Thakūra Digavijai Simha, Taluqedāra, Village Dikanliā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री नक्षत्रायनमः ॥ अथ पोथी नक्षत्र राशि चरण कुंडली फलाफल ज्योतिष लिख्यते ॥ दौ० ॥ इत ग्रंथ श्रावदा सरस्वती सब देव मनाय । नवौ नाथ सिद्धि चौरासी रिषि मुनि से मित्रा पाई । श्री गुरु व्यास जी सुषदेव वालमोक सिर नाई । भृगु आदि कालिदास तप गुण मो पर होहु सदाई । सोरठा ॥ दौ गुण बुद्धि म्यान से होन, करौ कृपा पावों वर यह । अक्षर ग्रंथ वनै प्रथम ग्रंथ लिख्यो जीवन सुष हित ॥ चौ० ॥ दास पतित अज्ञान गंवारा । भक्ति भाव न भजन विचारा । गुण जानो से अरजिय मोरी । लेउ बनाय भूल सब जोरो । अब नक्षत्र फल कहि थोरौ गाई । देउ गुण वरखे ग्रंथ सरसाई । चुबे चोला अश्वनी अथ पुनिः अश्वनी नौ देवता अक्षर आकारो वैश्य जातो हेमता अश्व स्यामा याहो में भयउ पचास । बड़ो के उर्य विष नाड़ो पायो तब जाजा करै माष छै पाई । सर्वे पोर जाय सुष सुभ पाई ।

End—अमृत सर्व अमृत बरसाई । चिता सोच के सब रोग बहाई । दिन सत बोसहो में गाई । लहमो ह वख सिद्धि कराई । मूसले कार्य देर दरसावै । अबसि तो हानि हो कार करावै । देव ससो सबो से दृष्ट भेटो । रोदन चिता भर्म सोच लपेटो । श्वगद योगे सर्व बहुत दुष टाई । जलदिहि हानि दुष व्याधि रोपाई । मतंगे श्री अंत हो मिलारै । विसहे दिन काज सिद्धि प्रगटारै । राक्षेस सो पोढ़ा उपजावै । दिन सत्ताईस अफलावै । चार जोग में फल थोरौ लाई । विद्या बानो लाभ सिद्धि गनारै ॥ स्थिर जोगे सब सिद्धि हो देई । दिन साठि अश्व लाभ कार्यहो । पशु लामे भलो बतावत । बुद्धि भति भले डेर देषावत । दिन अरसठ में बहु अदराई । आनंद जोग सब के फल ये गाई । दौ० । दास पतित मति याहो सुक्षिम सोई गाई । चुक हमारी भाफ के सवैया या लेव बनाई । इति श्री नक्षत्र राशि चरण कुंडली फला ज्योतिष ग्रंथ सम्पूर्ण समाप्त सुभमस्तु लिखत गौरीशंकर भट्ट पैदापुर निवासो संवत् १९४० ॥ इति श्री ग्रंथ समाप्त ॥

Subject—*ज्ञ्यातिष ।*

No. 314(d). *Śarīra-bhoga-sāra Gītā* by Patita Dāsa of Ayōdhya. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6×5 inches. Lines per page—24. Extent—120 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lāla Gaṅgā Dīna Bihārī Lāla, Village Ghulāmālī Purā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—*ओ ग्लेशायनमः अथ सरीर भोगसार गीता पतितदास कृत लिप्यते ॥ दो० ॥* सत संगी को वियग गुरु मेरी देस समाज । जोग भोग सुष हुष के त्याग मान सिरताज ॥ सारठा ॥ दास पतित कहि बैन धन्य धन्य गुरु म्यान को गहे सकल सुष बैन मुझ कहौ करि गुन बहु । दास पतित का लेष यह साधन करत विचार । यहि मति जो गहि अमल करि तेहि राय करतार ॥ बिना प्रेम साधन किष होत नहीं बैराग । चाह मान मद विन तजे । किमि पावै अनुराग ॥ भक्ति बिना अनुराग नहि ॥ विन अनुराग न त्याग ॥ त्याग बिना निर्द्वन्द नहि तौ कहि का बैराग । पूर्वं कमाई मई जो घर त्यागे कस मान ॥ दास पतित सतगुरु कृपा तजि केर गुमान ॥ कोश द्रव्य परिवार बहु लागी जहर समान ॥ गुरु वानी रट लग रही तन मन और न ध्यान ॥ सतसंग विद्या ज्ञान कछु परमहंस धरि रोति । पान पान अस्नान तजि अवधि मिलन को प्रीति ।

End—*समै समै को जुन को जो त्याग संग वनि आव । कोजे नहि सन्देह कछु दास पतित मत पाय ॥ सारठा ॥* भौन में है अस्थूल, अस्थूल में भौन दिषावहो ॥ बड़ो अहै यह भूल सुझी तौ प्रभु की कृपा ॥ चौ० ॥ गिरधरपुर का अस अहवाला । कहौ विचार विवेक सबाला ॥ जहाँ विवेक राज व्रतचारी । तहँ वह जागो जोग संभारी ॥ राउ अधमौ देस विचारी ॥ तहँ वा सुष संगे गुच भारी ॥ जहँ नृप देस अधमौ दोऊ ॥ म्यानी तहाँ न सपने कोऊ ॥ मूरुप संग उपजे दुख नाना ॥ म्यानी संग सुष सर्वस जाना ॥ तुलसीदास दोन परमाना । और अनेको ग्रंथ बषाना ॥ जोग विरोध भेद बहु होई ॥ वनै न एक कहै सब कोई ॥ भेद सोई तहँ वा दिषाना ॥ लपि न परै कोउ अपन विराना ॥ वरन विवेक रहित भे देसा । नरनारी मय कूर कुबेसा ॥ उच कर्म गहि चोर चमारा । उतम सब विधि गहे विकारा ॥ (यहाँ से आगे पृष्ठ कोरे हैं इस कारण अपूर्ण है) ।

Subject—*ज्ञान बैराग्य ।*

No. 315(a). Haridāsajī ke Padan ki Tika by Pitāmbarādāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8×7 inches. Lines per page—40. Extent—540 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nagari. Place of deposit—Bābū Śyamakumāra Nigama, Rāe Bareilly.

Beginning—ओ विहारो जो ॥ अथ ओमन् पीतांबर दास जी टीका ओमन् ओस्वामो हरिदास जी के पदन को लिख्यते ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय रसिक पद मम हिय करहु निवास । दुर्गम पद सुल्लभ करो ओ स्वामो हरिदास ॥ १ ॥ चोपाई—ओ हरि दासो करि चाराधि । ओ विपुल विहारिनि दासो साधि ॥ ओ सरस नरहरी के पद बंद । ओ रसिक छपा सँ लहि रस कंद ॥ २ ॥ दोहा ॥ निमित्त ओ हरिदास करि कठिन रसिक रस देस । संसे पंडन को करै हियरै बिना प्रवेस ॥ ३ ॥ चोपाई ॥ ओ गुरु के पद अतिसै गुढ़ । समुझत नाहि नमो मातमूढ़ ग्रहो ॥ कहै को अतिसै प्रौढ़ संत रसिक सब ध्याना इह ॥ ४ ॥ अति सकुलाति समझना परै समझ बिनाना कार्य सँ ॥ सुनत कहत रस हियरौ इरै इह संसे को निरन्य करै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय हंस सनक नाथ बंदु । ओ निवादिन्य प्रकास भाव रसिका आनंद ॥

End—भूलत डोल निकुंजवर दुतिय घोर नवबाल रावै रहत न हसति अति प्रिया प्रान प्रतिपाल ॥ १०७ ॥ पद ॥ ओकुंज विहारो भूलत डोल ॥ दुतिय घोर ओ रसिक स्वामिना दोऊ मिलि करत कलाल ॥ मंद मंद भूलतु बाल सौं सौ हास्य करत अति प्रिय इति बोल ॥ ओ हरिदास कहत रो प्यारी राषि लेहु पांत गहत कपोल ॥ ७ ॥ ६ ॥ राग नट ॥ दोहा ॥ रूप सघन बन डोलतें निकसे विच सुहुवार । तन मन धन ज्यों दामिनी सकल सुषम को सार ॥ १०८ ॥ पद डोल सघन बनतें जुग आयै । तन में तन मन में मन विलसत धन दामिनि उपमा छविछाये ॥ पीतम नित बरिषा रति चाहत मोरि चातकी पिक रट लाये ॥ ओ हरि दासि निरपि कित उपमा कुंज विहारो अपने पाये ॥ १०९ ॥ इति श्री अनन्य नृपति ओ स्वामो हरिदास जुके पदन के अर्थ संछेप मात्र लिखित पीतंबर दासस्य विरचित । ओ विहारिनि विहारी जू जयति ॥

Subject—पृ० १—ओ हरिदास जी तथा अन्य गुरुजन बंदना, सज्ज वखन, रूप वर्णन, आशों का सुख वर्णन । पृ० २—ओ कृष्ण के चदन को शोभा वर्णन, नूपुर ध्वनि वर्णन । पृ० ३—ओ कृष्ण के कौतुक वर्णन, ओ कृष्ण का मान वर्णन, ओ कृष्ण का गान वर्णन । पृ० ४—सखियों की विनय ओ कृष्ण प्रति, ओ राधा का मान वर्णन । पृ० ५—राधा का वैचन वर्णन

राजा का बशोकरन वसेन, युगल कृवि वसेन । पृ० ६—युगल कोड़ा वसेन, मुख शोभा वसेन, नैन बाण वसेन, युगल प्रेम वसेन । पृ० ७—श्री कृष्ण का वश वसेन, श्री राधा को कृष्ण का वसेन । पृ० ८—राधा का कंठ स्वर वसेन, युगल प्रताप वसेन, युगल हिंदोरा भूलन वसेन । पृ० ९—राधा को चुनरी का वसेन, चूड़ो का वसेन । पृ० १०—श्री कृष्ण की दरली की ध्वनि वसेन, श्री कृष्ण चरण शोभा वसेन । पृ० ११—राधा का कस्तूरी लेपन वसेन, श्री कृष्ण का राधा से मान न काने का वचन लेना, १२—श्री कृष्ण को दानलोला का वसेन । नैन कटाक्ष वसेन । पृ० १३—राधा को चतुरता वसेन, युगल गान वसेन । पृ० १४—श्री कृष्ण का राधा को मनाना । पृ० १५—श्री कृष्ण का राधा को बेनी गुंथना वसेन । राधा कृष्ण का अंतरंग खेलना वसेन । पृ० १६—प्रातः काल उठने पर कृवि वसेन, युगल रति वसेन, पावस का वसेन । पृ० १७—रास वसेन, वसंत वसेन, सहचरि का युगल स्वरूप देखना वसेन । पृ० १८—राधा को शोभा को श्री कृष्ण का देखना वसेन, हिंदोरा भूलना वसेन, वन भ्रमण और पावस का वसेन । समाप्ति ।

No. 315(b). *Pitāmbara dāsa ki Bānī* by *Pitāmbara dāsa* of *Brindābana*. Substance—Country-made paper. Leaves—64. Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—1,673 *Anuṣṭup Ślokas*. Appearance—Old. Character—Nagari. Place of deposit—Babu Śyāmakumāra Nigama, Rae Bareilly.

Beginning—श्री विहारी जो ॥ पद्य गुरु परंपराय नामावली लिख्यते ॥
 देहा ॥ श्री गुरु घर पर परम पद विवि हरि सिव सनकादि । सेवत सदाचार भाव
 नित नित्य विहार अनादि ॥ १ दिव्य धाम वृंदा विपिन दिव्य गौर तन स्याम ।
 दिव्य केलि कौकुट सदा दिव्य उपासिक वाम ॥ २ स्वयं प्रकास वृंदावन धाम
 सनत कुमार जामि निहकाम । महल टहलनो धर्म दहायो । सो नारद बहु भागन
 पायो ॥ ३ पाचारज नारद वपु धारयो । पंचरात्र करि मत विस्तारयो ॥ ताने
 गुरु पद राधा स्वाम दिव्य कपतन वन अभिराम ॥ ४ सोमंत श्री निवादिन नह्यो
 श्री निवासने सोई लह्यो विश्वाचारज जो मत धारयो पुरुषोत्तम विलास
 विस्तारयो स्वरूपाचारज बड़े जुजाता श्री माधव करि मत विख्याता पाचारज
 बलमद प्रचंड पद्माचारज पावन पंड ॥ ५ स्वामीचारज सब के स्वामी पाचारज
 गोपाल सुधामी प्रसद कृपाल कृपा पाचारज देवाचारज मत के धारज ॥ ७
 तिनके श्री ब्रजभूषन स्वामी श्री ब्रजजीवन तिनके सय नामो श्री जनार्दन बैरानो
 भूव श्री जनार्दन बंसोधर वंशोधर रूप ॥ ८ श्री हरिवल्लभ भूषदेव श्री मुकुंद

के गुरु हरि सेव श्री ललितमान तिनके पट राजें कन्हरदेव बहु संत समाज ॥ ९
 वामदेव भय तिनकी गादी सुरति मान जोते बहु वादी पितांबर राजें तिहि ठौर
 चितामनि संतन मिर मौर ॥ १० जुगलकिशोर जुगल रस मोनौ दामोदर हरि
 अपने कौनों कमल नयन तिनके मति धोर गोवर्द्धन तब भये संभोर ॥ ११

End—श्री पीतांबरदास भास इक रसिक उपासी ।

अविलोकत रस सार बिहार मु सुष को रासो ॥

महामुदते भय जोव तम जहां प्रकास्यौ ।

दयौ प्रेमरस हदै रसिक जन प्रभुत भास्यौ ।

श्री हरिदास कुल विपुल विहारिनि मुष कमल ।

श्री रसिक सिरोमनि कृपा छति मान उदै रस कौ समल ॥ ३

सवैया—प्रेम के मोद को मूरति सुरति आनंद में नित्य आनंददेना । श्री
 हरिदास के वंश उजागर आगर हय महा मृदु बैना ॥ लाडिलो लाल लड़ावत
 भावत गावत रंग सुरंग को सैना ॥ पोव कहै प्रिये पाऊ पितांबर प्रिया कहै
 पिय है निजु नैना ॥ ४ इति श्री स्वामी पितांबर दास जूको प्रसंसा संपूर्णम् ।

Subject—पृ० १—गुरु परंपरा नामावली । पृ० २—गुरु मंत्र वंदना ।
 पृ० ३—१५—सिद्धान्त के पद । पृ० १६—२० परम उज्ज्वल शृंगार रस के पद ।
 पृ० २१—२५ हिंदोला वगैरे । पृ० २६—वसंत वगैरे । पृ० २७—३० व्रज होली
 वगैरे । पृ० ३१—३४—माझ वगैरे । पृ० ३५—३९—सिद्धान्त की साखी
 (राधा बहमी संप्रदाय) पृ० ४०—शृंगार रस की साखी (रा० व०) पृ० ४१—
 स्वामी हरिदास जी की ब्याई । पृ० ४२—बिठूल जी का समुदाय वगैरे ।
 पृ० ४३—४४ बिठूल विपुल जी की ब्याई ॥ पृ० ४५—बिहारोदास जी की
 ब्याई । पृ० ४६—सरसदास जी की ब्याई ॥ पृ० ४७—४८—नरहरिदास जी
 की ब्याई । पृ० ४९—रसिकदास जी की ब्याई । पृ० ५०—श्री रसिक विहा-
 रिनि नव मंदिर में विराजे उस समय की ब्याई । पृ० ५१—५४ स्वामी नरसिंह
 देव जी की प्रसंसा । पृ० ५५—५७—श्री कृष्ण की भक्तजनों द्वारा स्तुति । पृ०
 ५८—६३—स्वामी रसिक दास जी की वंदना । पृ० ६४—पीतांबर दास जी
 की प्रसंसा वगैरे ।

No. 815(c). Samaya Prabandha by Pitāmbardāsa of Brindā-
 bana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—
 8 x 7 inches. Lines per page—38. Extent—475 Anusht-
 up Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1801 or A. D. 1744. Place of deposit—
Bābū Śyāmkumāra Nigama, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री विहारिनि विहारो जू जयति ॥ चौपाई ॥ नमो नमो
महा मंगल धाम । वृन्दा विपिन सुषुप्त विश्राम जैति प्रिया अति उत्तम डाम
(श्री) रसिक सिरोमनि तन अमिराम ॥ १ ॥ नमो जयति जमुना निजु प्रणे
नमो सहचरो प्रान सुरेणो महा मंगल जै श्री हरिदासि । (श्री) वोढुल विपुल
विहारनि पासि ॥ २ ॥ पुनि प्रनाम श्री सरस सहेली । (श्री) नरहरि रसि प्रेम की
बेलो ॥ धाम स्वामिनो मुरति मनौ । (श्री) रसिक विहारनि प्रमट वषानी ॥ ३ ॥
वारंवार वंदन कंच धरं रसिक होय ध्यान । अमम योचर चलप हे प्रमटे
रसिक सुजान ॥ ४ ॥ अति दुरल्लिखि दुरि ते दुरि । ते प्रमटे प्रभु निकरि हजुरि ॥
(श्री) रसिक सिरोमनि निर्नाट लपावै । निजु संगीते दरसन पावै ॥ ५ ॥ सोरठा ॥
(श्री) कुल अति विस्तार ध्यान करत बहु दिन चहै । तौ हू मिलत न पार नाउ लेत
जैते निकट ॥ ६ ॥ निकट वृत्ति एते रहे इन को मेरे ध्यान गरीबदास गोविंद जै
बहुम श्री भगवान ॥ ७ ॥

End—सहचरि के भागनि सुषो रूप लै चलत सुभाय । दंपति संपति सुष
सरस छिन छिन प्रति दुलराय ॥ १६ ॥ यहै ग्रंथ हिय ग्रंथ नसावै श्री गुरु कौ सुष
निश्चै पावै लंपट सह के हिये न आवै सत संगति मिलि निर्मै गावै ॥ १७ ॥ श्री
हरिदासि विपुल सिंगनावै विहारिनि दासो दिन दुलरावै । सरस नरहरी सुष
दरसावै श्री रसिक कृपा पोतावर पावै ॥ १८ ॥ समय प्रबंध ग्रंथ को नाय ।
कर विचार तासु बलि जाव है अचिरद सुख यह लहै चरण रसिक पोतावर
गहै ॥ १९१ ॥ विषै रहित रस रसिक उपासी तिनकी मति या मत मय भासो
नोरस अवन सुनत नहि आवै रसिकन के हिय रस उपजावै ॥ ३०० ॥ रसिक
कृपा पद जुग कमल मूरति जुगल किशोर पोतावर के प्रान सुष रसिक राय
सिर मार ॥ ३०१ ॥ इति श्री समय प्रबंध संपुष्णे ॥ दोहा ॥ विपन नित्य नवकुंज
में सहचरि के सुषदेत । (श्री) जुगल विहारो कीड हो रसिक प्रियाहि समेत
नवनिकुंज प्रकांत सुष कथा अवन मनमोद जो जो उपजत भाव रस रसिका
नंद विनोद ॥ २ ॥ प्रथम वाक्य (श्री) हरिदासि के पोछे विपुल विहार श्री गुरु
नागरि सरस जू (श्री) नरहरि रसिक अधार ॥ ३ ॥ धाम स्वामिनो सहचरो लयो
निरंतर स्वाट बिनु जानें मत कोजियौ गृह ग्रंथ विवाद ॥ ४ ॥ संमत सहचरि मिलि
कियो अष्टादस सत एक । दुतोया मंगल लाडिलो मजियौ सुखर विवेक ॥ ५ ॥
श्री वृन्दावन कंज में (श्री) रसिक विहारो पासि । पोतावर की पोति सौ
लिपतं सौ वज्र दासि ॥ ६ ॥ इति श्री ॥

Subject—पृ० १—वृन्दावन, श्री कृष्ण, यमुना और हरिदास जी तथा अन्य गुरुओं की स्तुति वंदना । गोविंद दास की वंदना और अन्य भक्तों की वंदना । पृ० २—गुरु महिमा वर्णन । सत्यता की महिमा । पृ० ३—विषय भोग की निंदा । पृ० ४—वैराग्य के लक्षण । सतसंग महिमा । पृ० ५—भक्ति की महिमा । पृ० ६—श्री कृष्ण का पावस में हिंडोला भूलना । पृ० ७—१०—गुरु उपदेश से ज्ञान की प्राप्ति और उसके अनुसार प्रेम से श्री कृष्ण की प्राप्ति वर्णन । संघ्या समय चारती का वर्णन । पृ० ११—दीपमालिका की शोभा का वर्णन । राधाकृष्ण का प्रेम वर्णन । पृ० १२—प्रातः समय विषय के गुरु वंदना का उपदेश । स्नान शृंगार करने का उपदेश । गान बरके श्री कृष्ण को रिमाने का उपदेश । भोजन कराने का उपदेश । पैड़ाने का उपदेश । पृ० १३—पतिव्रता स्त्री की भाँति श्री कृष्ण को पति समान सेवा करने का वर्णन । १४—शरद ऋतु में श्री कृष्ण का रास वर्णन । १५—राधा का नख शिष वर्णन । १६—राधाकृष्ण की केलि का वर्णन । प्रातःकाल की मंगल चारती । पृ० १७—१९—वसंत ऋतु में वृन्दावन शोभा और श्री कृष्ण राधा तथा अन्य सहोदरियों के साथ रहस्य वर्णन । २०—ग्रंथ की प्रशंसा उसका नाम और समाप्ति । निर्माण संवत् और प्रतिलिपि कर्ता का नाम वर्णन ।

No. 316(a). Bhramaragita by Prāgana kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—13. Extent—521 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Paṇḍita Śivadāni Lāla Miśra, Village Muhammadpur Khālā, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य मँवरगोत लिप्यते ॥ सिध निजु गाढ़ के गहियो पालागन दोऊ भेषा की मैसा सो कहियो ॥ हम हैं तिम्हारे पय के पोखे सुरति काति रहियो ॥ जोग संईस सुनार त्रियन की प्रीति रोति लहियो ॥ कहियो न कछु कटुक उनसे तुम कहैं सो सब सहियो ॥ सोतल बचन सोचियौ रसही दहो न फिरि दहियो ॥ देषि टसा उनको हम के तुम दोष दियौ चाहियो ॥ प्रागनि वृजवासिन के हिय के प्रेम सिधु रहियो ॥ १ ॥ राग चासावरी ॥ पायसु दोन्हे सबा सुजानहि स्वंदन चडे सिचारे वृज के सुधि रावरे जानहि कैसे है जसुदा जननी जिन पालि किये परकी माँहि अकृत वैतोत होहि ओ पर पूतन पायोन ॥ गहियो पाइ नंदबाबा के

कहियो यहै संदेसा जो तम कियो महाकुत हम को गनन सकल गुन सो समा-
धान कौजो गोपन को दोजो निमेल जान ॥ कहियो जोग जुगति सो प्रागन
नृकुटो संजम यान ॥ २ ॥

End—ऊँची तोसा कहै निरंतर निज मक्तन में रहनु हैं वेदातीत कोऊ
नहि जानत यहै हमारे मतु हैं हैं निरलोप निरंजन निर्गुन कारन ते वषु
धारे ॥ कर्म रहित अपनी इच्छा ते प्रगटनु हैं जुगचारे ॥ देह अदेह तकत है मेरो
जानि दृष्टि कार कोइ ॥ त्यागे देह बहुरि नहि पावै जन्म जगत में सोइ ॥ यह मत
है देवनि को दुर्लभ गुप्त हिये में राखि ॥ प्रागनि तोसों बहुरि कहैं गो देव यका-
दस सापि ॥ ५३ ॥

इति श्री प्रागन कृत खर गोत समाप्त सुम मस्तु संवत् १८८६ ॥ फाल्गुन
मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां सुक्र वासरे ॥ राम राम राम राम राम राम

Subject—(१) पृ० १—५ तक—उद्धव का कृष्ण जो का संदेश लेकर
प्रज को जाना, अपनी माता यशोदा तथा नंद को अभिवादन कथन परंत
गोपियों को खबर मंगाना, ऊँची का मिथारना, वृज में पहुँचना, गोधन का
दाढ़ का घाना, जसोदा दाग उद्धव का सत्कार और श्याम की सुधि पूछना,
नन्द बाबा का से घाना, नंद का भी दोनों पुरों की प्रसन्नता का समाचार
पूछना और उपालम्भ सुनाना (२) पृ० ६—१० तक—उद्धव का कृष्ण द्वारा माता
पिता का भेजा हुआ संदेश सुदयन् सुना देना, उन दोनों का कोरे शब्दों से
ही समाधान न होना और रति भर इसी चर्चा में बिता देना । प्रातःकाल होते
ही माता का उद्धव से कथन कि जग वृषभान के घर चल कर गोपियों का
समाधान तो कर आइये । उद्धव का गमन, गोपियों का मार्ग में हो मिल जाना,
गोपियों द्वारा इनका नामादि पूछा जाना, उद्धव का नामादि बताना, गोपियों
का प्रसन्न और प्रेम मद्मद् होकर अवधि तक जीवन रखने की बात कहना,
उद्धव का प्रसन्नजन, (३) पृ० ११—४४ तक—गोपियों की उक्तियों को सुन कर
मन में उद्धव का कथन कि “हरि को चुनौती है, वही पाकर इन से जीते” ।
गोपियों का कथन कि “हमारे ब्रज का तो मार्ग ही प्रथक है—हर्म तो कृष्ण के
देा गुण, (१) उनको साँवली बिमंगी सूरत और (२) उनको चार मुरलिका प्रसद
है और वही मूर्ति हमारे नेत्रों में बसी हुई है । कृष्ण कृप अनेक चरित्र सुना कर
गोपियों का प्रेम में मग्न हो जाना, उद्धव का गोपियों द्वारा यौन का खंडन सुनना
और प्रेम का पाठ पढ़ कर मथुरा को छोटना । मार्ग में चिन्तित होना कि आज
तीन दिन की थी और छोटता क मान में है । (४) पृ० ४१—५४ तक—कृष्ण के
पास उद्धव का पहुँचना, कृष्ण का उद्धव आगमन सुन कर किसी चादमी दाग

बुला भेजना, उसके पहुंचने के प्रथम ही दूसरे को भेजना उद्भव का आगमन, कृष्ण का माता पिता तथा गोपियों का समाचार पूछना, उद्भव का सब समाचार सुनाना, गोपियों का संवाद सुनाते सुनाते उनका मूर्ति होकर गिरना, कृष्ण का उनको सचेत करना और प्रेमवाणि बरसाना, उद्भव को मृत वज्र में जाने के लिये करना, कृष्ण का वृत्रवासियों का और अपना साम्य प्रदर्शित करना, कृष्ण द्वारा उद्भव को समझाया जाना, अपने में ही गोपियों को बसा कर उन्हें वेदों का ऋचाएँ प्रमाणित करना । ग्रंथ समाप्ति ।

No. 316(b). *Bhramaragita* by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size— $6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—18. Extent—270 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Raj Pustakalaya, Bhinagā (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ निश्चये भ्रमरगोत राज विलाचल ॥ कायसु दोन्हा सखा सुजान नहि । स्वेदन चहौ सिगारै वज्र रंग सिद्धि राखरे पानहि ॥ कैसे है जसुदा जननी जिनह पालि कियो परधीन । मोहि पाकृत चर हाति हाइगो परपूतन्ह पावोन ॥ गहियो योग नन्द बाबा के कहियो यह संदेश । जो तुम कियो महा कृत हम सौं गनि न सकत गुन सेसो ॥ समाधान कोजेहु गोपिन्ह कर दीजेहु निमल ज्ञान । कहियो जोग जोगति सो प्रागनि त्रिभुटो संजम ध्यान ॥ १ ॥ सिख निजु गाढ़े करि गहियो । पालागन ठाऊ भैया को भैया सौं कहियो ॥ हम हैं तिहरे पय कपोले सुरति करति रहियो ॥ योग संदेश सुनाइ प्रियन को प्राति नोति लहियो ॥

End—ऊषा सो ही बहुत निरंतर निज भगवन में रहतु है । वेद श्रुतों तकैं सुत का बहै हमारे मतु है ॥ ही निर्लेख निरंजन निरगुन कारन ता वपु-धारै ॥ कर्म रहित में अपना इच्छा प्रगटतु ही जुग चारै । देह प्रदेह तकैं मति काऊ ज्ञान दृष्टि काँ काऊ ॥ छाँड़े देह बहुरि नहि पै हैं जनमत जग में सोऊ ॥ यह मन है देवन काँ दुर्लभ गुप्त हिय में राखो । प्रागनि तो सौं फेरि मिलौतो द्ये एकादश साखी ॥

इति श्री प्रागनि कृत भ्रमरगोत समाप्तः ॥

बारवै कार्तिक शुक्ल एकादसि मंगलवार । बारह सौ चर छप्पन स्तन तब पार ॥ सुभ मस्तु लिखते प्रभुन सिंह दाड़ा पठनार्थ पाड़े नैपाल राम के ॥ इति ।

No. 316(c). Bhramara gita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—45. Size— $6\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—14. Extent—350 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1260 Fasli or 1852 A. D. Place of deposit—Śrī Thākura Guruprasāda Simhājī Bisen, Guṭhawā, District Bāhraiāch.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कृष्णे ना च मते नितान्त मधुना मुद
भक्षिता स्वेक्षया । सत्यं कृष्ण क एव माद मुशनी मिथ्याय पश्याननम ॥ व्या-
देहीति विदारिते च वदने दृष्टा समस्तं जगत् ॥ माता तत्र जगाम विस्मय पदं
पायोत्सवः केशवः ॥ १ ॥

No. 316(d). Bhāwaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size— 8×4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A. D. 1836. Place of deposit—Thākura Śiva Prasāda Simha, Village Kaṭailā, Post Odice Fakharpur, District Bāhraiāch (Oudh).

No. 316(e). Bhramaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size— $9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—252 Anuṣṭup Śloka. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Paṇḍita Kedāra Nātha, Uttarapārā, Rao Bareli.

Beginning—प्रथम के गुप्त नहीं हैं ।

रापत हो कुसुमन पर कुलिसन विहित विचारत नाहि ॥

यक तो हम पर विरह व्यापि भो प्रागनि अगम असुम्भ ।

तो मूढत हो जोग जंत्र दै वात तुम्हारी बुझ ॥ १८ ॥

मधुकर यह बिपरीत कहत हो ।

हो तुम चतुर चतुर मधुरा पुर चतुर समाज रहत हो ।

दोपक वरै बारि के नाये बुझि मनल श्रुत धार ।

तब कबहु वृज की लुबतिन लो परै जोग बूत पार ॥

जोगी जोग स्वामि रस भुगवै भोगी ममम लगवै ।
 तब हमहूँ जोगिनो वेष धरि चल्य निरंजन आवै ॥
 निबदै नहि निरगुण नारिन सो सुनी मती मत सोका ।
 दीपो सुनी कहूँ यह प्रागति चलत नीर बिन नौका ॥ १९ ॥

No. 317. Rāmāyana Nāṭaka by Prāṇabanda Chauhāna.
 Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—2 x 7
 inches. Lines per page—32. Extent—2,880 Anuṣṭup
 Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
 Place of deposit—Nāgarī Prachārīṇī Sabhā, Bahraich (Oudh).

Beginning—

लंका देखि पवन सुत आवहु । जियत जानको पानि सुनावहु ॥
 तेहि पाछे हम रचहि उपाई । सो करिदै सुग्राव सहाई ॥
 लंका दानौ अति बल बारा । क्रोध निवारि कियेहु चित घोरा ॥
 पापनि रक्ष्या कियेहु संभारो । बाद बेवाद करेहु जनि भारो ॥

दाहा—सौता सो अस भाखेहु मन जनि होहु अधीर ।

पाउ राम सयन रचि कै लक्ष्मिन रनवीर ॥ १३३ ॥

सो अस कहेउ पैज हम लोन्हा । रावन बध्या प्रतिजा कोन्हा ॥
 यह निति प्रान रहै भट माहो । नत तुव मिलन कहाँ हम काहो ॥
 तुम बिनु अस होँ भयो वियोगो । परम ताव अस चितवै जोगो ॥
 सोभा तजि गै घाटी बंगा । मान गवाई जस फिरै भुषंगो ॥
 अंधरे लकुटी मनहु विसारो । सो हूँत फिरि हाथ पसारो ॥
 धनिक गहस कै सब जग जाना । धनहि गये तुन तुल्य समाना ॥

End—हांक्यो रथ आगे कहा धनुक हाथ लै वान ।

सनमुख रहेन बाँदर देखिष काल समान ॥ ३३० ॥

आर गयो कपि दल सब पेलो । जैसे मंडू सिधु कर केलो ॥
 तब सुग्रीव दोन रन हाँका । क्रोधवत हूँ रावन ताका ॥
 रावन कोन्ह सो दिहूँ कै ठाना । कपि के हृदय लाग संधाना ॥
 अंगद हूँ लाग जब बाना । भेदेहु बोल बान हनुमाना ॥
 घाठ बान मारेसि जमवन्ता । सो मारेसि नलनील तुरंता ॥
 तब रघुपति कहूँ मारै ताका । आगे दोन्ह भूमोक्षन हाँका ॥
 देखि भूमोक्षन दैत रिसाना । बाल समान लोन्ह कर बाना ॥
 घाल्यो बान दइत परबंदा । लक्ष्मन काटि कोन्ह सतबंदा ॥

निफलवान भो दइत रिसाना । ब्रह्मक दत्त लोन्ह करवाना ॥

तोहन वान घाउ परवंडा । सो रघुनाथ कौन्ह सतवंडा ॥

दाहा ॥ जूझ भयेउ दूतहु दलन बरनत वरनि न जाव ।

प्रलेकाल जल कुत्तरै धन मरजे घहराइ ॥ ३३१ ॥

बर्षहि घुंदवान चहुँघोरा । चर्मकि पर्ब अनु बोजक जोगा ॥

Subject—हनुमान जी का सीता जी के खोजने के लिए समुद्रतट पर जाना और समुद्र का दोनों सिरों पर पहाड़ तयार कर देना, लंका निरीक्षण, सीता रावण संवाद । दाहा । १३२—१५३ तक । सीता हनुमान संवाद, और उनका पशीक वादिका उजाड़ कर, लंकादहन कर लौट पाना । दा० १५३—१७३ तक । हनुमान राम संवाद, विमोषण रावण संवाद, विमोषण का राम को शरण जाना, सेतुबंध बर्णन । दा० १७४—१९७ तक । सुकसारन का सेतु निरीक्षण, ध्वज रावण संवाद, दा०—१९२—२०२ मेघो और रावण संवाद, मेघादरी और रावण संवाद, शानरी को चढ़ाई, रावण का गुहचरों को राम की सेना को दशा देखने की भेजना, दोनों सेनाओं का युद्धारम्भ और मेघनाद का राम को सेना का नागफाँस में बांधना । दा० २०३—३१४ तक । इन्द्रादि का ध्वजा कर रावण को शरण जाना । मरुड़ का घाना और नागफाँस का काटना, प्रशस्त और नीलसुद्ध और प्रशस्त का मारा जाना । दा०—३१५—३२५ तक । मेघादरी रावण संवाद, मेघादर प्रकंपन और कुम्भकण का युद्ध करना, लक्ष्मण की शक्ति लगना, राम का विलाप और हनुमान का शोषार्थ लाना, फिर युद्ध होना और रावण का बालव होना, दा०—३३६—३५१ तक । कुम्भकण और राम युद्ध बर्णन । दा० ३५२—४०० तक, हनुमान द्वारा त्रिशिरा, प्रकंपनादि वध, लक्ष्मण द्वारा अतिकाय वध, मेघनाद का सब की मूर्छित करना, मेघनाद वध दा० ४०१—४२३ तक । अहिरावण वध । दा०—४२४—४५१ ॥ तक दोनों सेनाओं का युद्ध । दा० ४५२—४५८ दाहे तक ।

अपूर्ण ।

No. 318. *Anjira Rāsa* by Prāpanātha. Substance—Country-made paper. Leaves—452. Size—11 × 9½ inches. Lines per page—27. Extent—24,080 Anushtup Ślokas. Appearance—Clean. Written partly in verse and mostly in prose. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1751 or A. D. 1694. Place of deposit—Amiruddaulah Public Library, Kaisarbagh, Lucknow.

Beginning—नित नाम श्री कृष्ण जो ॥ घनाद पकुरातोत ॥ सो तो घब
जाहिर भये सब विधि बतन सहीत ॥ १ श्री देवचन्द जो सत छे ॥ सदा सब सुचना
दातार ॥ योन तही ए कवल मा भुज घनानो, अविधार ॥ १ ॥ बाणी वाला
जीतणी भलणो जे संसार । निराकार नेपारथी ॥ ते पारने वलो पार ॥ संग उतकंठा
उपनो मारे करवो एह विचार ॥ ए बाणी मथो माहे धो तेवाछे सब सार ॥ १ ॥
इनसार माहे कै सत सुख ॥ तेह निरने कहु निरधार ॥ ए सुख देउ साथ ने ॥ तोह
संगना नार ॥ ज्वारे ये सुख संगमा आवसे ॥ त्वारे छूटी जाय विकार ॥ आये
आनन्द अकंड घर तणे । श्री अकुरातोत भरतार ॥ ५ ॥ श्री श्री रास श्री कितार
पंजोर को लिखी है ॥ जो बानो प्रबोध पुरो हवसा में उतरो है सो सुरु ॥

Middle—हरद्वार ठाये रे उठाये तपसो तोरथ ॥ गौ घब कै सौ विघन ॥
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहिर ॥ जग में जाहिर ॥ तो भी कमर न बांधी किन ॥ सुर
ने कहे जापरे सेवा करें असुर को ॥ ज्यों दाह बाप उड़ावे देह ॥ हिन्दू ना मेरे
सिन्ध्यातिन को होए सड़ी ॥ ऐसा कुलोप कोषा के हेर ॥ १४ ॥ प्रभु प्रत मारे
गज पाउ बांध के ॥ असोट के अहित कराए ॥ करस बाँदी ताको करके तापर
खलक चलाए ॥ १५ ॥ असुरें लगायो रे हिन्दू पर जेजिया ॥ बाको मिले खान
पान जो गरोब न दे सकें जोजिया ॥ ताप मार करे मुसलमान ॥ साखों आवरदा
कहो कलियुग को ॥ चार लाख बत्तीस हजार ॥ काटे दिन पावें लिखा बांते
साखों ॥ सो पाइए अरथ के विचार ॥ १७ ॥ सोलेसै लगेरे साका साल बाहन
का ॥ संवत सत्र से पैंतीस बेठाने साकेर विजोयाभिनेदका ॥ यू कहे साख
पौर जातोस ॥ १८ ॥ (पन्ना १४२)

कलजुगे चेत घंत के सब कोए ॥ लोक बतावे अजर घंत ॥ अरथ भेदर का
कोई ना पावे ॥ वारे अरथ बाहिर के ले डुबत ॥ ए बात सुनी रे बुंदेले कुवसाल
ने ॥ आगे आये खड़ा ले तरवार ॥ सेवाने लईरे सारो सिर खेच के ॥ सारिपकोया
सिन्ध्यापती सिरदार ॥

End—ए गत साहिबे कुवसाल सो कही ॥ घर ईमाम विलंदो कृता कै
हुई ॥ १-॥२३। ५२५ ॥ नेमो आगे अफा ईड कही ॥ ले दसमो आगु सब लोला
भई ॥ मजलै सब आपार होमय ॥ सो कहे कुरान विवेक कै विधि ॥ ए आपारहो
बोच बड़ी विस्तार ॥ प्रगटे विलंद सब सिरदार ॥ सब न्यामतें सिफतें दुई सितार ॥
उतरो यां आप तें उस्तेवार ॥ क्षिप्रा था बुजुर्गक वसत ॥ जाहिर हुआ रोज
दिवाए क्यामत ॥

आपारहो सुख ले चले सिरदार ॥ पीछे वारें में जलेब बटकार ॥ जिन पाई
राह रोज क्यामत सो उठे फजर के नूर वसत ॥ फजर पीछे जब आया दिन तब

तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥ तब तो दरवाजे मंद के गया । पोछे तो नफा काड
को ना भया ॥ सब जले जलबा यजाजील जो प उठाया यसरफोल ॥ एक
सुरे उड़ा सके दोप ॥ दूसरे तेरे में काश्म कोप ॥ युं क्यामत हुई जाहिर दिन ॥
महमदे करा उयत रासन है ॥

६। २४ ॥ ५३१

Subject—इस ग्रन्थ में निम्नलिखित पुस्तकें सम्मिलित हैं :—

१—श्री रासलीला कितान खेजोर	पन्ना	१ से २४ तक	कुल	२१२
२—श्री प्रकाश (हिन्दुस्तानी जंभूर)	"	२४ से ५७ "	"	२१८४
३—पट ऋतु	"	५७ से ६१ "	"	१७७
४—बारामासो	"	६१ से ६४ "	"	५३
५—श्री कलस (तैरेन)	"	६४ से ८१ "	"	७६९
६—श्री सनेय	"	८२ से १२३ "	"	१६०३
७—श्री कीर्तन (पुरानी बानी)	"	१२४ से १८० "	"	२०६८
८—कितान खुलासा को	"	१८१ से २०७ "	"	१०१९
९—श्री झिलवत (गैब को सूरत)	"	२०८ से २३६ "	"	१०७४
१०—श्री परिकमा बहो (घर्स को)	"	२३६ से २९९ "	"	२४८०
११—घाठो सागर	"	३०० से ३२९ "	"	११२८
१२—बड़ा सिगार	"	३२९ से ३८७ "	"	२२१०
१३—सिधो बानी	"	३८७ से ४०१ "	"	५०४
१४—मारफत सागर	"	४०२ से ४२७ "	"	१०३४
१५—छोटा क्यामत नामा	"	४२७ से ४३४ "	"	२१७
१६—बड़ा क्यामत नामा	"	४३४ से ४४७ "	"	५३१

विशेष विवरण के लिये इस रिपोर्ट के पृ० ४ से ९ तक देखो ।

No 319 (a). Vaidyadarpana by Prāṇanātha. Substance—Country-made paper. Leaves—315. Size—13½ x 5½ inches. Lines per page—20. Extent—7,875 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1941. Place of deposit—Pandita Śivarama Śāstrī, Kharagapur Kusha, District Rae Bareilly.

Beginning—श्री गणेशायनमः नमस्कृत्य गणेशानं महेशानं महेश्वर्यं ॥
वैद्य दर्पणं नामस्यै वैद्यानां हित काम्यया । पित्रानुभूता ये योगा ये च सद्द्वैत
संमतः ॥ तपवात्र निर्गम्येते न शरै वैद्य दर्पणे ॥ स्वर्गाद्या धातवो येभ्युः तथा

तदुप धातवः रसाश्चो परसाश्चैव प्रावंतो जगतीतले ॥ रत्नानि चापरत्नानि
 'वषाण्युप विधा निध ॥ शोधनं मारणं तेषां वक्ष्याम्यादौ समासतः ॥ तैलपाक
 विधिश्चैव तथा तौ स प्रमानकं ॥ युक्तायुक्त विवेकानि खंडे प्रथम ए यदि ॥
 तदुत्तरं ज्वादीनां कथयामि चिकित्सितं ॥ तत्र धातूनां संख्या माह ॥ स्वर्णं
 रौप्यं च ताम्रं च रत्नं वसह मेघ च ॥ शिशं लौहं च सहेते धातवः कथिता बुधैः ॥
 अथ सप्त धातूनां शोधनं ॥ तैले तके च गोमूत्रे कांजि के च कुलच्छके ॥ त्रिधा
 त्रिधा विभुद्धिः स्यात्स्वर्णादीनां समासतः ॥ केचि हर्दति रंभाया मूलवारिणि
 सप्तधा । शुद्धं तिधातवाः सर्वे तप्त तप्त विषेचनात् ॥ टोका ॥ एक तोले सुवर्ण
 के पत्र कंटकावेधो पाठ पत्र करै ॥ पद्मो भांति रुपे के ॥ पद्मो भांति तावै के ॥
 घोर छोदे के टुकरे के लेइ ॥ सो भांगि मां घौकि घौकि बुझावै वार तीन
 प्रथम तिल के तेल मा फेरि माठा मा फिरि गोमूत्र मा फेरि कांजी मा ॥ फेरि
 कुरयो के काढ़ा याके चित केला के पानी मा बुघावै सात वार तौ सातौ धातु
 शुद्ध होइ ॥

End—न कुर्यात्तत्र कर्माणि रक्त धावात दाहनम् ॥ पाचनं स्निहनं स्वेदं
 वमन शोधनं कर्मात् ॥ इति श्री पाराशराय कृते वैद्यदर्पणे नाम ग्रन्थ समाप्तः शुभ
 मस्तु ॥ सम्वत् १८९८ ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीया वङ्ग भुवनासरे ॥ जस
 प्रति देष तसि लिप मम देषो न दियते ॥

Subject—पृ० १—सप्त धातु संख्या, सप्त धातु शोधन, सप्तधातु मारण ।
 पृ० २—सप्तधातु पृथक् पृथक् मारण, स्वर्णगुण, रौप्य मारण । पृ० ३—ताम्र
 मारण । वंग मारण, रंगे को निकाले मस किया । पृ० ५—जस्ता मारण, सोसा
 मारण, पृ० ६—लोहा मारण । पृ० ७—स्वर्णमांसिसार को किया । पृ० ८—लोह
 कोट शोधन मारण । पृ० ९—मैदूर करण । सप्त उपधातु नाम शोधन, पृ० १०—
 कांस पोतल मारण, स्वर्ण माक्षिक, रौप्य माक्षिक शोधन, स्वर्णमाक्षिक मारण,
 पृ० ११—तृतीया शोधन । पृ० १२—सैदुर शोधन, शिलाजीत शोधन, चपरिया
 शोधन । पृ० १३—पारद शोधन, ईगुर से पारा निकालने को किया, पृ० १४—
 पद्मगुण गंधक जारण विधि, घोर को पोठी बनाने को किया, पारद मारण,
 पृ० १५—रसकपूर को किया, पृ० १६—परसानाम शोधन मारण, गंधक उत्पत्ति
 शोधन । पृ० १७—गंधक चक्रे पातन, हिगुल शोधन, मारण, पृ० १८—हरताल
 शोधन मारण । पृ० १९—हृताल का सप्त पातन विधि । पृ० २०—२३ तक—
 मैन्शिल शोधन मारण । अम्लक शोधन मारण, पृ० २४—अम्लक से पारा निकालने
 को किया, चन्द्रोदय को किया, अम्लक सप्त पातन विधि । पृ० २५—कैमुषा
 का सप्त निकालने को विधि । पृ० २६—सब सप्त निकालने को विधि, सप्त
 मारण, चराटो शोधन, रत्नोपरत्न शोधन । पृ० २७—वज्र शोधन, मारण, मृणा

मातो मारण, वैकांत शोधन, विषोप विष शोधन मारण, सुमिल शोधन ।
 पृ० २८—चतुरा शोधन, कुचिला शोधन, अफोम शोधन, उपविष शोधन, उमाल-
 गोटा शोधन, नख शोधन । होंग कपूर शोधन, घृत शोधन, पृ० २९—पुराना
 घृत माह । पुराना गुड़ माह, तैल शोधन, तैल द्रव्य पाक विधि, तैल मोस निगैव ।
 पृ० ३०—तैलवाकैसायौ मूत्र निगैव, देशव्यवस्था माह । पृ० ३१—परिमापा तैल
 प्रमाण युक्तानुक्त विचार । पृ०—३२—मैषज्य काल माह, जोमनो मण, मजपुट
 प्रमाण, मध्य पट, लघु पट माह, पृ० ३३—यंत्र प्रकार वर्णन । अग्निकम वर्णन ।
 भावनाक्रम वर्णन, सूक्त बनाने को किया, कांजो कलहंस कांजो वर्णन । पृ० ३४—
 सरवत किया, पृ० ३५—पंचामृत वर्णन, त्रिसार वर्णन, क्षाराकै वर्णन, पंचवृष
 त्रिलवण वर्णन, त्रिजात चातुर्थ्यांत वर्णन, पंचपल्लव, पंचकक्कल, पंचकषाय
 वर्णन, दशमूल, पंच घसु वर्णन । मूल पंचाल पंचक वर्णन, पृ० ३५—होनवोली
 को चौपधि, होनवोली सेंदूर रस, नाग सेंदूर महा सेंदूर । पृ० ३६—स्वर्ण सेंदूर
 चन्द्रोदय, मकरध्वज रस, पृ० ३७—महाचन्द्रोदय, पृ० ३८—सगेश्वरी गुटिका,
 पृ० ३९—मृत वज्रस्य गुण । पृ० ४०—वज्रेश्वरी रस, पृ० ४०—वज्रधार रस पृ०
 ४१—होनवोली कामदेव वटी । पृ० ४२—कामदेव रस । पृ० ४३—पूष्ण चन्द्रोदय
 रस, पृ० ४४—धनंज सुंदरी वटी, मदन मंजरी वटी, पृ० ४५—कामदेव चुले ।
 पृ० ४६ ४७ ४८ होन वोर्योपाक । प्रथम खंड समाप्त ।

पृ० ४९—नाडी, मूत्र परीक्षा, पृ० ५०—साध्यासाध्य लक्षण । पृ० ५१—५२
 सर्व ज्वर सामान्य चिकित्सा । पृ० ६०—७४ तक । विशेष ज्वर चिकित्सा,
 वात, पित्त, कफ व्याधि चिकित्सा, पृ० ७५—८४ तक । विदोष सन्ध्यात
 चिकित्सा । पृ० ८५—८९ तक, विषमज्वर चिकित्सा । पृ० ९०—९६ तक,
 जालेज्वर चिकित्सा । पृ० ९७ प्रागंतुक रोग चिकित्सा । पृ० ९८ भूतज्वर
 चिकित्सा । पृ० ९९—१०९ तक, अतोसार चिकित्सा, पृ० ११०—११३ तक,
 संग्रहणी रोग चिकित्सा । पृ० ११४—१२० तक, अर्शरोग चिकित्सा । पृ०
 १२१—१२३ तक, मंदाग्निरोग । चिकित्सा, पृ० १२४—१२५ तक, भस्मक रोग
 चिकित्सा । अजोष रोग चिकित्सा । पृ० १२६—१२८ तक, विशूचिका रोग
 चिकित्सा । पृ० १२९ कुमिरोग चिकित्सा । पृ० १३० पांडुरोग चिकित्सा । पृ०
 १३१ कमनारोग चि० । पृ० १३२—१३५ तक, शोथ रोग चिकित्सा । पृ०
 १३६ मंदरोग चिकित्सा । पृ० १३७—१४० तक, कुशाङ्ग पुष्टि करण । पृ०
 १४१—१४५ तक, रक्तपित्त रोग चिकित्सा । पृ० १४६—१५१ तक, राजरोग
 चिकित्सा, पृ० १५२—१५३ तक । राजरोग भेद वर्णन । कासरोग चिकित्सा,
 पृ० १५४ स्वासरोग चिकित्सा, पृ० १५५ हिचको रोग चिकित्सा । पृ०
 १५६—१५७ तक । स्वाभ्रंज चिकित्सा, पृ० १५८ अदचि रोग चिकित्सा ।

पु० १५९ क्षयरोग चिकित्सा । पु० १६०—१६१ तक, तृपा रोग चिकित्सा, पु० १६२ मूर्च्छा रोग चिकित्सा । पु० १६३ भ्रमरोग चिकित्सा, तन्दारोग चिकित्सा, निद्रादाह रोग चिकित्सा । पु० १६४—१६७ तक, उन्माद रोग चिकित्सा । पु० १६८ सुगौरोग चिकित्सा । पु० १६९—१८० तक, बाल काधिरोग चिकित्सा । पु० १८१—१८५ तक, कंफरोग, चिकित्सा । पु० १८६ आमवात चिकित्सा । पु० १८७—१८८ तक । कफरोग चिकित्सा । पु० १८९ पित्तरोग चिकित्सा । पु० १९० चर्लापित्त रोग चिकित्सा । पु० १९१ रक्तपित्त रोग चिकित्सा, पु० १९२—१९५ तक । शूलरोग चिकित्सा । पु० १९६ उदावर्त रोग चिकित्सा । पु० १९७ गुल्मरोग चिकित्सा । पु० १९८ उदररोग चिकित्सा । पु० १९९ कृष्णान्द्र रोग । पु० २०० ग्रीह रोग चिकित्सा । पु० २०१ जलोदर चिकित्सा । पु० २०२ कौष्ठवेदरोग चिकित्सा । पु० २०३ नागार्जुन हरीत । पु० २०४ हृदिरोग चिकित्सा । पु० २०५—२१२ तक । मूत्र कण्ठ, मूत्राघात, स्मरौ घोर प्रमेह चि० । पु० २१३ कुरंड रोग चिकित्सा । पु० २१४ अन्न वृद्धि रोग चिकित्सा । पु० २१५—२१६ तक, गंडमाला रोग, चिकित्सा । पु० २१७ ग्रंथि रोग चिकित्सा । पु० २१८ अर्जुन रोग चि०, पु० २१९—श्लोपद रोग चि० । पु० २२० विद्रव्य रोग चिकित्सा । पु० २२१ सर्वव्रण पारदादि घृत । पु० २२२ सर्व फोड़ों को औषधि, शिर के फोड़ों, गमों यन्त्रोक्त रोग चिकित्सा, पु० २२३—२२४ तक । भगंदर रोग चि०, पु० २२५ शिश्र व्रण चि० । पु० २२६ भग्न व्रण चिकित्सा, पु० २२७ अग्नि से जलने को चिकित्सा । पु० २२८—२३२ तक । बलात गमों को चिकित्सा । पु० २३३—२३४ सुक रोग चि० । पु० २३५ तिनाशी प्रभृति नाम शुक्र दोष व्रण । पु० २३६ शीत पित्त रोग चि०, पु० २३७ उदर रोग चिकित्सा, विपादिका, विचर्षिका रोग चिकित्सा । पु० २३८ घोर कुष्ठ रोग चिकित्सा । पु० २३९ बहिरौ को दवा । पु० २४० कुष्ठ लक्षण चर्म रोग चिकित्सा । पु० २४१ कपाल कुष्ठ चिकित्सा । पु० २४२ सर्व कुष्ठ लक्षण चिकित्सा । पु० २४३—२५३ तक मांसगत कुष्ठ चिकित्सा । पु० २५४—२५५ तक । चित्र रोग चिकित्सा । पु० २५६ विस्फोट रोग चिकित्सा । पु० २२७ विस्फोट रोग चिकित्सा । पु० २५७ विस्फोट रोग चि० । पु० २५८ मसुरिका रोग चिकित्सा, मुष रोग, गज रोग चि० । पु० २५९ दंड पीडा चिकित्सा । मुष्पाक रोग चि० । पु० २६० मले को दाह रोग चि० । पु० २६१ उपजिह्वा चिकित्सा, भाई रोग चिकित्सा । पु० २६२ नासा रोग चिकित्सा । पु० २६३ प्रतिस्त्राव रोग चिकित्सा । पु० २६४—२६७ नासा, नेत्र रोग चिकित्सा । पु० २६८ तिमिर रोग चिकित्सा, सनपात रोग चिकित्सा, पु० २६९—२७० तक । नेत्र परिवार रोग चि० । कण्ठ रोग चिकित्सा । पु० २७१ ओवा रोग

चिकित्सा । पृ० २७२, कर्ण कोट चिकित्सा । पृ० २७३—२७५ तक । शिररोग चिकित्सा । पृ० २७६ मंडारोग चि०, घर्षिका रोग चि० । पृ० २७७—इन्द्रि दुःख रोग चि० । पलित रोग चि० । पृ० २७८—२८२ तक, प्रसूत रोग चि०, लक्षण । पृ० २८३ प्रदररोग चि०, पृ० २८४ सामरोग चि०, पृ० २८५ स्नपाक रोग चि० । पृ० २८६ स्तन दृढ़ी करन औषधि । पृ० २८७ योनिकामद चि० । पुष्प रोग चि० । पृ० २८८ गर्भपात चि०, गर्भस्थिति चि० । पृ० २८९ शुष्क गर्भ चि०, । गर्भ निरोध, दग्ध, नष्ट चि० । पृ० २९० जन्म बंध्या, काक बंध्या, मृत वासा को चिकित्सा । पृ० २९१ रोमनाशन औषधियां । पृ० २९२—२९६ तक, बाल रोग चिकित्सा । पृ० २९७—३०० तक । पूतना विधान वर्णन, पृ० ३०१ विष चिकित्सा, पृ० ३०२ उपविष चिकित्सा, सर्व विष पर औषधि । पृ० ३०३—३०६ तक । मद्यविकार चिकित्सा, सर्व विष चिकित्सा । पृ० ३०७ कनकजूर विष चिकित्सा । पृ० ३०८ मसा, मसिका, म्वान, शृगाल, व्याघ्र काटे को चिकित्सा । पृ० ३०९—३११ बाजो करण औषधियां । पृ० ३१२—स्थूल करण चिकित्सा । पृ० ३१३—छो द्राघन विधि । पृ० ३१३—३१५ तक । वमन, विरेचन, श्रावविधि समाप्त ।

No. 310(b). Vaidyadarpana by Prāṇanātha Bhaṭṭa. Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size— $8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—28. Extent—2,940 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Ishvari Nātha Vaidya, Uttarparā, Rāe Bareilly.

Note—शेष विवरण नं० ३१९ (ग) के अनुसार ।

No. 320. Kalakī Avatāra by Prāṇanātha Trivedī. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size— 10×5 inches. Lines per page—16. Extent—1,280 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1760 (1762 ?) or A.D. 1703 (1765 ?). Place of deposit—Paṇḍita Bhagavatī Prasādājī, Village Thailiyā, Post Office Khairighāt, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य कलकी अवतार कथायां ॥ दोहा ॥ एक रदन करिखर वदन सिद्धि सदन सिबलाल । विघ्न विनाशन विरद सिर मूषासन गुन माल ॥ वारक वारन वदन कांहि सभक्त जान त्रिकाल । जैसे

दोषक देहरो भोतर अजिर सुकाल ॥ छंद जल हरन ॥ भवानि विधवासनी उदंड
पाप नासिनो सुबुद्धि सिद्धि को भरे ॥ करै मद्योप रंकते प्रमान मेरु पंकते हरै कि
नास संकते कटाक्षते बहु ठरै ॥ जपै निसंक नाम को बड़े विनोदधाम को पूजे
समस्त काम को अगाध सिंधु हू तरै ॥ महागुमान गंजिनो विसाल सोक गंजिनो
नमामि प्रान रंजिनो कृपाल पाहि किकरै ॥ छंद ॥ भवानि तेज तारिनी अनेत
रूप कारनी महा विमोह दारिनी धरे कृपान पानि में ॥ प्रचंद रूप चंदका अदेव
वृन्द पंडिका शिकाल भेद मंडिका सुसिद्धि रिद्धि पान में करालरूप कालिका
अनेक रोग दालिका विसाल मोद मालिका दयाल मोक्ष दानि में ॥ अमंग
राति हंस सो विजै विभूति अंस सो सरोज जा प्रसंस सो नमामि प्रान जानि में ॥

End—वज्रत जोर महा भट मारे । परत मुंड करि रुंड निनारे ॥

हरि सनमुख वाजत करि रोषू । कटत जात पल पावत मोषू ॥

दोहा—कटत कटक भाड़त मद हरि सनमुख मिटि जात ।

जया न पावत सबनि लौ तारे गिरत विभात ॥

दोहा—रवि विरंच पल लोह सम पावक मिलि असिवान ।

जाय अतावत वात लपि जल सरूप भगवान ॥

सालि समर महा बलवाना । निज प्रभु सासन चलत सुजाना ॥

आइ गयो संमर मनि घोरा । परये घोर विसिष अन्न घोरा ॥

गहि वाल निकर पल वाजे । संभरेस के हरि सम गाजे ॥

केवल सालिम पान उबारो । अपर सोस काटे मलि छारी ॥

भट काटि साहि दिन मानि के भगवान सेव निमेष में कहि

बहुनि सालिम पान तद हरि चरित पलप पलेपि में ॥

साली मन तनु बिन काज तनु तोहि राखि हौं केसव कहो

पन कुन विनासन ता सहित तू सो निकट सगरो सही ॥ अमंग ॥

Subject—कलकी अवतार की कथा । देवी को प्रार्थना । भेच्छ घोर
कलकी भगवान का युद्ध ।

No. 321(a). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa. Substance
Country-made paper. Leaves—86. Size— $11\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches.
Lines per page—7. Extent 600—Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī.
Date of manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1857. Place of
deposit—Paṇḍita Rāmādeo Brahma Bhaṭṭa, Village Nunarā,
Mauza Lāmhā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कौमुदी १ ॥ ओ गणेशायनमः ॥ अथ व्यंग्यार्थे कौमुदी लिप्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गिरा मनाइ के सुमिरि गुरुन के पाँइ ॥ कचित रोति कछु करतु हौ व्यंग्य अर्थे चितलाई ॥ १ ॥ वाचक लक्षक व्यंज को सक तीन विधि मान ॥ वाच लक्ष अद व्यंग तहं अर्थ त्रिविधि पहिचान ॥ इनके लक्षण लक्षि बहु रस ग्रंथन ठहराइ ॥ ताते ह्यो वरने नहो वदे अर्थ समुदाइ ॥ जहं शब्द हो महं अर्थ को होइ जो अधिक प्रवृत्ति ॥ चमत्कार अतिशय जहां जानि व्यंजना वृत्ति ॥ व्यंग्य जीव है कवित में शब्द अर्थ गनि संग ॥ सोई उत्तम काव्य है वरने व्यंग्य प्रसंग ॥ करि कवितन सो वोनवी सुकवि प्रताप सहैत ॥ को व्यंग्यार्थ कौमुदी व्यंग्य जानिबे हेत ॥ सूचनिका ॥ कहो व्यंगते नाइ कर पुनि लक्षना विचारि । ता पोछे वरनन करौ अलंकार निरधार ॥ व्यंजना लक्षण ॥ यथा :— वाचक के समुच्च रहै अंतर औरै अर्थ ॥ चमत्कार निकरै जहां कहो सो व्यंग्य समर्थ ॥ तिय कटाक्ष हो व्यंजना कहत सकल कविराइ ॥ जहां शब्द ते अर्थ बहु अधिक अधिक दरसाइ ॥

End—अथ धृष्ट नायक-यथा-रितुराज के भागम लोग सबै सोमनै गरुवे बहु भागन में ॥ इनके मत लेके मलंद सदा चित चाइ के गुजत प्रांगन में ॥ जिनके सुखि सुन्दर बोल सुनै मन होहि नहो अनुरागन में ॥ कत कोकिल कोर किये विधि ने सखि बोलै वृथा वन वागन में ॥ व्यंग्य-नाइका को उक्ति कोकिल वन में बोलत है यह वृथा भूटे वचन बोलत है, ए भंवर समान है तितही प्रांगन में चाइ के खरे रहत है सो यह विधि नायक को धृष्टता जाहिर करो ताते धृष्ट नायक । नायक को निन्दा तिय कहै तहां धृष्ट नायक कवि कहै । कोकिल उपमान के वखन ते गौरी साध्यावसान अलंकार । कोकिल को निन्दा से नायक को निन्दा निकसो ताते व्याज निन्दा अथवा कोकिल को वखन प्रस्तुत ताते नायक को निन्दा प्रस्तुत प्रशंसा अलंकार ॥ दोहा ॥ सखि दुतो दरसन दश हाव भाव बहु और । याते नहि वरनन करै, वरनै कवि सब और ॥ व्यंग्य अर्थ अतिशय कठिन को कहि पावै पार । ममट मत कछु समुझि चित कोन्हों मति अनुसार यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़ै गुनै चितलाई । ताको मत साहित्य को कछु पंथ दरसाइ ॥ इति ॥

Subject—वंदना, वाचकादि का लक्षण, नायिका भेद, शक्ति लक्षणादि वखन, अलंकार । नायिकादि भेदों के साथ ही साथ व्यंग्यादि का वखन ।

No. 321(b). Vyāṅgārtha Kaumodī by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—12×8 inches. Lines per page—70. Extent—814 Anuśṭup Ślokaś. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Thākura Tribhuvana Simha, Village Saidapur, Post Office Nilagam, Tahsil Sidhauri, District Sitapur.

End.—इति व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कृत सम्पूर्णे ॥ अश्विन मासे कृष्णपक्षे तिथौ परिवाराय गुरुवासरे श्री संवत् १९३५ यह पुस्तक श्री ठाकुर हेमचल सिंह साहेब हेतु लिखी दरबारोलाल कायम निवासी चिन्हट ॥

No. 321(c). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—800 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Place of deposit—Thākura Lāyaka Simha, Village Bhagawānpur, Post Office Biswā, District Sitapur (Oadh).

End—प्रसेसा ॥ पय दोहा ॥ सपि दूती दरसन दसा हाव भाव बहु चोर याते नहि वरनन करे वरनै कवि सब ठौर ॥ व्यंग्य अर्थ अतिसै कठिन को कहि पावै पार ॥ ममट मत कहु समझि चित कोन्हो मति अनुसार ॥ यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़े सुनै चितलाप । ताको मत साहित्य को कलुक अर्थ दसाय ॥ संवत् ससि वसु वसु सुद्वे गनि अषाढ़ को मास किय व्यंग्यार्थ कौमुदी सुकावि प्रताप प्रकास ॥ विगरो देत सुचारि जे ते गनि सुकवि सुजान । बनो विगारत जे मुषनि ते कवि अथम समान ॥ इति श्री व्यंग्यार्थ कौमुदी समाप्त ॥ श्री संवत् १९५४ मार्ग शुक्ल प्रतिपदायां गुरुवासरे लिखित मिदं पुस्तक वरद्वे मिश्रजी बौना भारी वासवाने श्री राधा कृष्णमनसः श्री राधावल्लभा जयति राम रामायनमः ॥

No. 321(d). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—New paper. Leaves—16. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—28. Extent—168 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Simhaji, Lavedapur, District Baharāich.

Beginning—अनखानी रहै पाठै जाम वरन सनातन वरारै पानि भरतो । रचि रचि बचन अलोक बहु मांतिन के करि करि अनख पिवा को मन भरतो ॥ कहै प्रताप कैसे बसिप निकासिबे को भौन सुख कहिए तऊ न नेक हरतो ॥ निज निज मंदिर में सांझ ते सवेरे पीय मोरे केलि मंदिर में दीपक न

धरतो ॥ ३१ ॥ अपरंच ॥ सरस सुगंधनि सों घंगनि सिंचावै करपुर मय वातिनि
सों दीप उजियारतो । रचि रचि बानिक बनाय रोस रोसन की हौंसन परोसिन
के आनि जिय आरतो ॥ कहै परताप प्रति चतुर चवाइनी य चरचि चवाइनी के
चाजनि विचारतो । रेज करि सौतिनि मजेज सों निकेत भांभ परपति हेज सेज
सभि ते सवारतो ॥ ३२ ॥

End—अथ धृष्ट नायक यथा ॥ ऋतुराज से घागम लोग सबै सो गनै
गह्वर वद भागन में । इनको मतलैकें मलिद सदा नित बाइ के गुंजत घागन में ॥
जिनके सुचि सुंदर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन में । कत कोयल कूक
किए विचि ने सनो बोलै वृथा वन वागन में ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

सखि दूतो दरसन दसा हाव भाव बहु धौर ।

याते ना वखैन कियो वरने कवि सब ठौर ॥ ७९ ॥

विज्य अर्थ प्रतिसै कठिन को क..... ।

No. 322(a). Amṛita Sāgara by Mahārāja Sawāi Pratāpa
Siṃha. Substance—Country-made paper. Leaves—248.
Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—8,928
Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Charac-
ter—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Himmata Siṃha,
Mohallā Badā Kuwā, Rāe Bareli.

Beginning—पृ० ६० से प्रारम्भ ।

शस्त्र प्रहार से उपजो जो तृषा ताका जतन बकरा का रुधिर पीने से शस्त्र
प्रहार को तृषा जाय १६× अथवा बकरे के शोरखे में सहत मिलाय खाय तो
शस्त्र प्रहार को तृषा जाय १७ अथवा खोर में मिथो मिलाय के खाय तो यह तृषा
जाय १८ को ।

End—अथ इन ऋषों ऋतु में वायु पित्त कफ का संचय प्रकोप और शीत
लिखते ग्रोम ऋतु में वायु का संचय वर्षा ऋतु में वाय का कोप × × ऋतु
में वाय को शान्ति १ वर्षा ऋतु में पित्त की शान्ति × × × वसंत ऋतु
में कफ का कोप.....तप में वाय पित्त कफ के प्र.....में होय है और ये बिना
सम.....थवा वायु के कोप करने का.....र यह बिना समय हल को ।

Subject—पृ० ६०—६२ तक तृषा, मूर्च्छा, मोह भ्रम तन्द्रा को उत्पत्ति
लक्षण जतन । पृ० ६३—७२ तक मदास्थय, उन्माद और मृगो उ० ल० ज० । पृ०
७३—८६ तक वात व्याधि का सर्व रोग शिरोग्रह, अल्प केशी, जंभाई अनुग्रह,

जिह्वास्त्रंभ, हँसे वाळे, पांशुपन, जोम का रस ज्ञान, त्वचा शून्य, कर्दि रोग, वायुक रोग, उर्द बात रोग, अघ्यमान रोग, प्रत्याध्यमान रोग, बातप्लोला, प्रति त्नी रोग, लोड़ा पांगुला रोग, बल्लो रोग, अंतरा वाम रोग, पक्षाघात रोग, निद्रा नाशक रोग । पृ० ८७—९१ तक—ऊवस्त्रंभ घाम बात पित्त कफ व्याधि रोगों के भेद उत्पत्ति लक्षण जतन । पृ० ९२—९८ तक बात रक्त शूल परिणाम अघ्नद्व जवन पित्त की उत्पत्ति लक्षण यज्ञ निरूपण । पृ० ९९—१०८ तक—हृद्रोग की उत्पत्ति लक्षण यज्ञ । पृ० १०९—१२२ मूत्र कृच्छ्र मूत्राघात, अस्मरो शर्करा, प्रमेह के भेद ल० उ० यज्ञ । पृ० १२३—१२७ तक भेद रोग, कार्श्य रोग, क्षीण रोग के भेद उ० ल० यज्ञ । पृ० १२८—१३४ शोथ रोग, संमृद्धि, अघ्न-वृद्धि, गजगंड, कंठमाला अपचि ग्रंथि पर्वुद रोग के भेद उत्पत्ति ल० यज्ञ । पृ० १३५—१४८ तक—श्लोषद, विद्रधि, व्रण, शोथ, शरीर व्रण, वाय पित्त कफादिकों का पागंतुक व्रण शस्त्रादिकों का अग्निदग्ध व्रण ग्रंथि भग्न नाड़ों व्रण के भेद उ० ल० यज्ञ । पृ० १४९—१६१ तक भगंदर, उपदंश, लिंगश का रोग, कोढ़ के भेद उत्पत्ति ल० य० । पृ० १६२—१७२ शीत पित्त उदर कोढ़ उत्कोढ़, घमल पित्त, त्रिसर्पणा, वाला बोदरी भौरी रोगों के भेद उ० ल० यज्ञ । पृ० १७३—२१०—क्षुद्ररोग मस्तक रोग, नेत्र रोग कान, नाक मुख घाँठ, मसूढ़े, दाँत जोम तालू गला कंठ इन सब के रोग घोर भेद उत्पत्ति लक्षण यज्ञ । पृ० २११—२१५—खावर जंगम विष मात्र के भेद उत्पत्ति लक्षण यज्ञ । पृ० २१६—२२७ तक प्रदर रोग भेद उत्पत्ति लक्षण यज्ञ । पृ० २२५—२३२ तक बालकों के रोग भेद उ० ल० य० पृ० २३३—२३५ नपुंसकपने के दूर करने के ल० य० । पृ० २३६—२३९—पुष्टाई के यज्ञ पृ० २४०—२४८ तक सब घासवों की विधि शिलाजीत शोधन विधि स्नेह विधि स्वेद विधि वस्ति कर्म हुक्के की खादि घृषपान की विधि, कधिर छुड़ाने की विधि । छः ऋतु वर्णन ।

No. 322(b). Bharathari Śataka by Sawāi Pratāpa Simha of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—116. Size—9×5 inches. Lines per page—9. Extent—650 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ यद्य भरथरी सत नोति मंजरी लिख्यते
क्षय्य ॥ जाको मेरे चाह वह है मोलों बिरक्त मन । पुरुष घोर से प्रीति पुरुष
वह चाहत घोर धन ॥ मेरे कृत पर रोमि रदो कोई एक घोर हो । यह विचित्र

मति देखि चित ज्यो तजत न ठौरहो ॥ सब मोति राज पत्नी सुधिकु जार पुरुष
को परम धिक । धिक काम याहि धिक मोहि धिक सब व्रजनिधि को सरन
इक ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुख करि मूढ़ रिझाये अति सुख पंडित लोग । अर्थ दग्ध
जड़ जोब कहि विधिहु न रिझवन जोग ॥ २ ॥ कृपय-निकमत वाद तेल जतन करि
काढ़त काँऊ । मृग तृष्णा को नोर पिये प्यासो है साऊ ॥ लहत ससा को श्रृंग
प्राद मुख ते मणि काढ़त । होत जलधि के पार लहरि बाकी तब बाढ़त ॥ रिस
भरे सर्प की पुहुप ज्यों घपने सिर पर धरि सकत । हठ भरे महा सठ नरन को
काँऊ बस नहि कर सकत ॥ ३ ॥

End—छिन में बालक होत होत छिनही में जोवन । छिनही में धन होत
होत छिनही में निरधन ॥ होत छिनक में वृद्ध देह जंजरता पावत । नष्ट ज्यों पल्लव
संग स्वांग नित नये बनावत ॥ यह जीव नाच नाना तबत निचलै रहत न एक
दम । करिके कनात संसार को कैतुक निरधर रहत जम ॥ १९ ॥ बहु भोगन
को संग तहां इन रोगन को डर । धनहु को डर भूष अग्नि अरु त्योंही तस्कर ॥
सेवा में भय स्वामि समर में सजुन को भय, कुलहु में भय नारि देह को काल
करत क्षय ॥ अग्निमान डरत अपमान सौं गुन डरपत मुनि पल स्रष्ट । सब गिरत
परत भय सौं भरे समय एक वैराग्य पद ॥ १०० ॥ दोहा ॥ करो मर्तरोसतक पर
भाषा मली प्रताप । नोति मांदि रस गोष में बोलग प्रभु आप ॥ १ ॥ इति श्री
बन्महाराजाविराज श्री सवाई प्रताप सिध जो देव विरचितायो अर्थोरी सत
संपूर्णम् शुभं ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिपितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम
दोषं न दोषते ॥ लिखितं ब्राह्मण हरिदेव ॥ लिपायनं कौजदार जो साहब श्री
ब्रजवल्लभ जो मिति भाद्रपद वदो १३ संवत् १९०८ ॥ श्री राम जो ।

Subject—नोति पृ० १-२१ तक, श्रृंगार पृ० २१-३७ तक, वैराग्य पृ०
३७-५८ तक ।

No. 323(a). Bhaktarasa-bodhini (Bhaktamāla ki Tika)
by Priyāḍāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—
164. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—
4,602 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1867 or A. D. 1810.
Place of deposit—Thākura Lachhiman Sīnha, Village
Saidapur, Post Office Bhaṇḍihā Prānt, Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु गोविन्दो जयति ॥ श्री भक्त-
माल लिख्यते भक्त रस बोधिनी टीका ॥ स्वयंगत टीका करता को मंगलाचरण

तथा प्रजा निरूपन ॥ कवित्त ॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन मनहरनजु के चरन की ध्यान में नाम मुख गाइये ॥ ताहो समै नामाजू के पाशा दई छै धारो टोका विलार मकमाल वो सुनाइये । कोजिये कविता छंद बंद अति प्यारो लगी जगी जगी मही कहों वानीयवर माइये । जानौ निज मति अपे सुन्यौ भागवत सुक दमनि पवेस कोयो मैसई कहाइये ॥ टोका को स्वरूप बखैन ॥ स्वकविताई सुबटाई लगी निपट सुहाई पौर सचाई पुनरुक्त मिटाई है । अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति कवि काई मोद भरी लगी है ॥ काव्य को बड़ाई निज मयन मलाई होत नामाजू कहाई ठाते पौड़ के सुनाई है ॥ हृदय सरसाई जो पै सुनिये सदाई यह भक्ति रसवाधनी सुनाय दिग गाई है ।

End—रामानंद के अनंत नंद सदा प्रगटे पूरनचंद ॥ जाके कृष्णदास अधिकारी सब कोउ जानै दुख धारो ॥ ताको अथ आनरो प्रेम छै नामा यों सुमिरन को नेमु ॥ अथ के सोप बिनोद दिपाई । ताते दास अनंतहो गाई ॥ ताहो प्रसाद परचे भाषा । सुनौ संतजन सांचो साषा ॥ पै परचे कहै जो कोई । तासु सर्व सुष पावै सोई ॥ बकता श्रोता पावै सुष । नासै काम कर्म का दुष ॥ भगत को गीति छै सोजो भार । जीवन भुगत सदा सुषदाई ॥ इतनो कथा कहै पोषा को ॥ जानै कुछ संपति दोषा को तीरथ कंठि करै अस्माना जहां तहां विधि सो दैवै दाना ॥ जोग जय जप तप धर्म जेत । हरि को कथा नहि पूजे तेत । अर्थ नामते भयो पारा साधु संत कहत विस्तार ॥ एह मुक्ति को राह बताई । हरि को कथा सबहि सुषदाई । सुर नर मुनि ब्रह्मादिक गावै पारब्रह्म को अंत न पावै ॥ पोषा के गुन गाय सुनावै । सो वैकुण्ठ लोक निज पावै ॥ जो साधु जन गावै कोई निहचै सब सुष पावै सोई ॥ नानारो गावै जो कोई । मक मुक्त संसा नहि होई ॥ पोषा के गुन गावहीं सुनहि जो संत सुजाण । अर्थ धर्म काम मोक्षपद ताहि देइ भगवाना ॥ इति मकमाल समाप्त संपूर्णम् संवत् १८६७ भाद्रपामुदी २ भृगुवासरे ॥

Subject—मकों को महिमा, पौर उनके नाम तथा नगर सहित बखैन ।

No. 323(b). Bhaktarasa-bodhini (Bhaktamāla kī Tīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—113. Size—14 × 8 inches. Lines per page—26. Extent—3,673 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1918 or A. D. 1861. Place of deposit—Pandita Sarja Prasāda, Village Maharū, Post Office Metarā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—टोका करता को मंगलाचरण । अथ निरूपणम् कवित्त ॥
 महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जु के चरनन के ध्यान मेरे नाम रूप नाइये ।
 ताही समै नामा जु ने यज्ञा दई तेहि धरि टोका विस्तार भक्तिमाल को
 सुनाइये ॥ कोजिये कवित्त बंद कन्द प्रति प्यारो लगै जगै जन माहि वानो वोर
 माइये ॥ जानौ निज मति प्रेसे सुन्यो भागवत सुक भ्रुमोन प्रवेस कियो ऐसेहो
 कहाइये ॥ १ ॥ टोका को नाम स्वरूप बखेन ॥ रचि कविताई सुपदाई लगै निपट
 सुहाई यो सचाई पुनरुक्त छै मिटाई है । अक्षर मधुरताई अनुपास जमकाई प्रति
 छवि छाई मोह भगिसि लगाई है ॥ काव्य को बढ़ाई निज मुपन भलाई होत नामाजु
 कहाई ताते प्रौढ़ के सुनाइये ॥ हृदय सरसाई जो पै सुनिये सहाय यह भकरस
 बोधनो सुनाम टोका नाइ है ॥ भक्ति स्वरूप ॥ अझाड़ फुल्लेन यो उबटनो श्रवण
 कथा मैल अमिमान संगनि छुटाइये । मन वसुनोर अहंवाद संग छाई स्थान बनि
 बसत पन सौधो छै लगाइये ॥ अमरन नाम हरि साधु सेवा करनफल मानसी
 सुमय संग संगन बनाइये ॥ भक्ति महारानी को सिंगार चाह वीरो चाह रहै जो
 निहारि लई लाल प्यारो नाइये ॥

End—कोनो भक्तिमाल सुर साल नामा स्वामो जु ने जिये जोच जात
 जग जन मान पोहनी । भक्ति रस बोधनो सु टोका मति सोचनी है वाचत कहत
 पथे लागै प्रति सोहनी ॥ जो पै प्रेमलक्ष्मी वाको चाह अवगाह पालि मिटै उरदाह
 नेक नेतन हू जाहनी ॥ टोका घोर मूलनाम भूलिजात सुनै जब रसिक अनन्य
 मुष होत विस्वा मोहनी । नामाजु को अमिलाष पूरन छै कियो मैतो ठाको
 सापि प्रथम सुनाई नोके गाई कै भक्ति विस्वास जाके ठाहो सो प्रकास कोजै
 भोजै रंग हियो लोजै संतनि लड़ाई कै ॥ नारायण दास सुषरासि भक्तिमाल
 लैके प्रियादास दास उर बसौ रह्यो छाष कै । संवत प्रसिद्धि दस सात सत उन्है
 तरा फाल्गुण मास बदि सप्तमी विताय कै अग्नि जरावो लैके जन में बुढ़ावो
 भावै मूलिये चढ़ावो घोरि गगल पियववो ॥ विछू कटवावो कोटि सापल पठावो
 हाथी आगे डरवावो इति भोजि उपजाववो । सिंह पै पयावो चाही भूमि
 गढ़वावो तीर्थी अग्नि विधवावो मोहि दुख नहि पाववो । वज्रजन पान कान्ह
 बास बह कठिन कारौ भक्ति सो विमुष ताके मुपन दिसाववो ॥ इति श्री प्रिया
 दास जु कृत भक्ति माल टोका भक्ति रसबोधनो समाप्त सुम चैत्र मासे कृष्ण पक्षे
 तिथी अमास्या सोम वासो संवत १९१८ लीला मदन लिख्यते जानकी सरन
 अयोध्या महे रामकोट ॥

No. 323(c). Bhaktarasa-bodhini (Bhakta mālā ki Tīkā) by
 Priyāḍāsa. Substance—New paper. Leaves—137. Size—11½ ×
 6 inches. Extent—3,425 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—

New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Vidyārathi Jōgendra, Christian College, Lucknow.

Note—आदि पत्र No. 323 (b) के अनुसार

No. 323(d). Bhaktarasa-bōdhini by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size 12×6 inches. Lines per page—12. Extent—3,265 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1877 or A.D. 1820. Place of deposit—Thākura Viśvanātha Sīnha, Tāluqedār, Village Agaresar, Post Office Tirsāṇḍī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः प्रथम भक्तिमाल टोका सहित लिखने । कवित छप छंदः ॥ टोका को मंगलाचरन । राध आंस निरूपन । महाप्रभु कृष्ण चेतन्य मन हरन जू को चरन का ध्यान मेरे नाम मुप गाइये । ताहि समे नामाजू ने आज्ञा दी लई धारि टोका बिसतारि भक्तिमाल को सुनाइये । कोत्रिये कवित्त बंद छंद गति प्यारे लगै जगै जगमाहि कहि वार्ति बिरमाइये । जाने निव मति धारि सन्यो मगवत सक दुमति प्रवेश कियो बसेहि कहाइये ॥ १ ॥ टोका को नाम रूप वखेत । रचि कवितार्थ सुवदाइ लगै निपट सुहाइ या साचार पुनरुक्त छे मोटाइ है । पक्षर मधुरताई अनुपास जमा काई गति छवि छाई मोद भरोसो लगाई है । काव्य को बढ़ाई निज मुपन भलाई होत नामाजू कहाई ताते प्रौढ के सुनाई है । इहै सरसाई जो पे सुनिये सदाइ यह भक्ति रस बाधनो सुनाम टोका गाई है । २ ॥

End—कन स्तुति साधो । पाटप पेड़हि सोचिये पावे संग संग पोष । पू वत्सा ज्यो वरन ते सब मानियो संतोष ॥ २०३ ॥ भक्त जिन भूलाकर्म के कथे कान पे जाय । समुद्र पान धजा करै कहा चिरैया पेट समाय ॥ २०४ ॥ श्री मूल सब वैष्णव लघु दोख गुनति अगाध । प्रागे पीछे वरनत जिन मानो अपराध ॥ २०५ ॥
x x x काहुं के बन जोग जग कुल करनो को पास ॥ भक्त ॥
नाम माला अगर उर बसो नारायन दास ॥ २१४ ॥ इति श्री भक्तमाल श्री नारायन दास जो कृत मूल समाप्तः ॥ नामाजू को अमिलाप पूरन छे कियो मै ता ताको साधो प्रथम सुनाई नोकै गाइके । भक्ति विस्वास जाके तादा सो प्रकास कोज

भोजे रंग हियो लोजे संवनि लड़ाई के ॥ संवत पसिदस सात सत उग्हतारि
फाल्गुन मास । वादि सप्तमी वितारिके नाराचनदास सुपरसि भक्ति माल छेके
प्रियादास दास उर बसेा रहो छाये के ॥ ६२७ × इति भक्तिमान भक्ति रसबोधनो
टीक संपुर्ण शुभ भस्तु ॥ आरस्तु । लिपतं रामरुप बाह्यण संवत ॥ १८७३ ॥
अस्वन सुदि ॥ २ ॥ रविवासरे ।

No. 324. Ānanda Sāgara by Pāraṇapratāpaji of Jamāla-
pura, Parganā Hisāra (Punjab). Substance Country-made
paper. Leaves—28. Size—8 × 5 inches. Lines per page—11.
Extent—231 Anuṣṭūp Ślokas. Incomplete. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat
1824 or A. D. 1767. Place of deposit—Paṇḍita Śambhū
Dayala, Teacher, Vāzidapur, District Bārā Bankī.

Beginning—गुरु महिमा अनेन लिख्यते ॥ दाहरा ॥ अथमोचन अह
तिमि हरन दाता भव अमेव । परमम कर वाके सकल जै जै ओ सुखदेव ॥ १ ॥
चोपाई ॥ नमो नमो सत गुरु अविनाशो । चरण दास पूरण परगासो । भगवत
अमे पुनोत अपारा ताहि सुनत नासै भ्रम भारा । कलउ सतजुग कर दरसायो ।
भक्ति अपार बोज फैलायो । महिमा अगम अपार तुम्हारी । गुन गावत मम
रसना हागे ॥ निरालेख निरलिख निगारे । नाम रूप किरपा ते न्यारे । तुम किरपा
निरमे पद पायो । पोष तिमिर ज्ञान प्रगटायो । निरखिकार अथ गत दासायो ।
दिव्य दृष्टि दे भर्म मिटायो । काग हंस गत दाऊ ठाई । जोय ब्रह्म को गांवि
मिटायै ॥ २ ॥ दाहरा ॥ स्वात पलट मोतो भयो वह गये विषम कलाप । चरण
दास सतगुरु मिले हुवो पूरन परताप । ३ ॥ छन्द ॥ निराकार आकार एक पर
ब्रह्म कहायो । बाको लोला दुह जास को भेद बतायो । उहो रूप को तेज सुतो
यह ब्रह्म कहायो । वही भयो आकार सकल ब्रह्मंड रचायो । यदि पुरुष बातें
भयो प्रकृति रूप उपजाय । पूरन प्रताप चरणदास ने दातो ये समुझाय ॥ ४ ॥

End—दाहा—या जग में नहि काम जो मोह दरस्त है नाहि । सकल
चाह भ्रम रूप है मैं सब चाहन माहि ॥ ७५ ॥ तैं विवेक मंत्री सुने ताके मानो भै ।
अथ हमरे मंत्री सुनो भे होवै सब छै ॥ ७६ ॥ चोपाई—पहले मंत्री हमरो नारो । जाये
तोड़न नैन कटारो ॥ तावे घायल करे सब जोधा । कहा सुरमा यो कह बोधा ।
आर एक बात ताहि समझाऊं । ताहूँ जग में खोलि दिखाऊं । विमल स्वरूप
नारि हो कोई । छवि उत्तम अति बाकी होई । काहु के मन यह जो भावै ॥ तन
मन से यह आगि लगावै । बाकी अग्नि नाश विन बुझै । जब वह मिले तमो

दुख तजै । जीव जंतु तो हेत बताऊं । नारो तिनके संग दरसाऊं । सो बंधुषा मेरे तुम जानो । पुरन प्रताप सांच पहिचानो ॥ ७७ ॥ दोहरा—अब मनो सुन मोह के, क्रीव कोम मन मान । दिम मूठ पर गव्य हरि, प्रसर अति बलवान ॥ ७८ ॥ चौपाई—तब हम सब इकठे हो चढ़ें । निहचै जान न हमसुं लड़ें ।

Subject—(१) पृ० १ से ४ तक—गुरु महिमा ।

(२) पृ० ५ से ७ तक—विनतो तथा ग्रंथ प्रतिज्ञा और ग्रंथ अनुष्ठान संबंधी कुछ बात चीत ।

(३) पृ० ८ से ८ तक—कवि वंश परिचय :—

रामचन्द्र जू के भये पुत्र सु बालमुकंद ।
पुरन प्रताप तिनको भयो लुपा करो नंदनंद ॥
चरनदास गुरुदेव धरयो कर ताके ऊपर ।
है जमालपुर नाम ठाम निज उत्तम भूपर ॥
सो हिसार को परगनो सबी दानो जानचितु ।
रख्यो ग्रंथ अति प्रीति सो मथुरा मोहि वसेत रितु ॥

ग्रंथ निर्माण काल :—

ठारह सै संवत कहे, बीस चारि और जान ।
आनंद सागर नाम जिहि षट तरंग पहिचान ॥

(४) पृ० ९ से पृ० २८ तक—प्रथम तरंग, राजाकोसि, ब्रह्म के आगे नट नटी काम और विवेक का स्वांग खेलना, निर्गुण स्वरूप, अवतार वर्णन, भक्त सहायक रूप, आकाशवाणी वर्णन, विवेकादि वर्णन । ग्रंथ समाप्ति ।

No. 325(a). Jaimini Aswamedha by Puruṣottama Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—18 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—483 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Thakura Dalajita Simha, Village Zālīmasimha kā Purawā. Post Office Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः पुरुषोत्तम जन चात्रिक राम कथा जलपान चवरहि काहि न लेपत तब श्री भगवान ॥ चलेउ तुरंगम बाजन बाजा । पहुंचा जहाँ हंसवज्र राजा । पुरि चंडिका निर्मल देसा । चारिउ वरल मनोहर मेधा । तात जननि जस वाला पाळा ॥ तैसे कृपति देस प्रतिपाला । होम अग्य निज दान पुराणा । राम कौंहि नहि जानहि आना । घर घर राज मंदिर अस लेषा । नारि

सकल पद्मिनी विसेषा । रोगी दुषो न दीयिष्य लेखा । मनहि न देई इन्द्रासन
भोगा । तहां तुरंगम पहुंचा जाई । दृढन नृप सन बात जनाई । अस हय देस
कवहुं नहि आवा । चन्द्र विमल ठन अधिक सुहावा । कंचन पाठ लिखित कछ
माला । अति सुन्दर गज मोतिन माला । नृप तिन कंठ लौ आये तुरंगा । बाचिन
पत्र पंथ हैं संग । राजहि कहा कहाँ तुम पावा । देखव हरि जिय करब बधावा ।

End—सैपि पंथ कहां आय सिधाये । जहां सुधिष्टिर तहं हरि आवा ।
राजा कर संतोष करावा । समाचार प्रभु सबहि सुनावा । हंसाध्वज पौ अर्जुन
वोग । आये सबै तगर रखयोरा । राजहि सब सन कहा बुझाई । जो राखे तेहि
राम दुहाई । सय मिलि करहु पंथ कै सेवा । कर गहि सैपि गये हरि देवा ।
कुंभर युद्ध सबहो मल भावा । सुग्य सुखवा हरिपद पावा । राजा वचन सुनत
रनिवास । गयो शोक त्रिभ भयो हुलासा । सब वीरन के चरण पषारा । हो
लाग पसृत जेवनारा । भाव मक्ति सब हो का कोना । हरि राजा सिर उपर
लोना । धन गज पुर बंध दीन्ह पटाई । दिन पांच लगि भै पहुंचाई । कहा बाहि
को जोतै पारा जेहि के कृष्ण सदा रखचारा । तस वियोग नृपत विसारा
अर्जुन मनहि आनंद । कहत दास पुण्योत्तम सुनत कटै दुखफंद । इति श्री महा-
भारते पञ्चमेल को पर्वणी चंडिकापुरी विजयनो नाम एक विंशतमोऽध्याय ।

Subject—घोड़ा का चंडिकापुरी में पहुंचना यहां के राजा हंसाध्वज
का अश्व को पकड़वाना फिर अर्जुन और सधन्वा आदि का युद्ध होना पश्चान
श्री कृष्ण का अपनी लीला से मेल मिलाप करा देना राजा का सब सेना समेत
अर्जुन आदि को पहुंचाई करना और भेट आदि देना इत्यादि केवल एक
अध्याय ।

No. 325(b). Sudhanvā Kathā by Purnashottma. Substance—
Country-made paper. Leaves—32. Size—7 × 5½ inches. Lines
per page—13. Extent—442 Anuṣṭup Śloka. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1887
or A.D. 1830. Place of deposit—Thākura Jadunātha Baksha
Simha, Hariharpur, Village Chilandīā, Tahsil Rēsargauja,
District Bahārāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः पथ सुधन्वा कथा लिख्यते ॥ दोहा ।
गजनायक के चरन चरन सिद्धि वंदौ बारहि बार । कर जोरे विनती करौं.....
अनुसार । चौ० ॥ चला तुरंगम वाजिन बाजा ।

नोट—शेष No. 325 (a) के अनुसार ।

Subject—पार्थिव, सुधन्वा की घोड़ा, सुधन्वा पांडव युद्ध सुधन्वा वध
सुरथ युद्ध, शिव विष्णु युद्ध, सुरथ वध, हंसध्वज का कृष्ण से मिलन, सब का
विवृत होना ।

No. 325(c). Sudhanwā Kathā by Purushottama Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—37. Size— $7\frac{1}{2} \times 6$ inches.
Lines per page—16. Extent—444 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—
1259 Fasli or A. D. 1842. Place of deposit—Nāgēswara,
Vaishya, Mathura Bazar, Post Office Khāsa, District Bah-
raich.

No. 326(a). Dūshapā Bhūshapā by Raghnātha Baṇḍi-
jana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—
16. Size— $7\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—300
Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Sīnha of
Bhinagā, Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दूषण दूषण निरूप्यते ।

दोहा । अलंकार सब काव्य के कहे शास्त्र परिमाण । अथ दूषण गुण लक्षण
सब कहियतु है सुखदान । १ । ज्यो मनुष्य के देह में हैं सुखोदिक दोष । त्यों भुक्ति
कटु कहैं आदि है कस्त काव्य में दोष ॥ २ । अथ दूषण वर्णन—दोहा—दूषण
सहित कवित्त में दोष सुरस को हानि । ताते वर्णन कीजियतु इन्हें लेहु पहि-
चानि । ३ । दोष लक्षण—अर्थ मिलि चित्त को मुख डारत हैं सोइ । भुक्ति कटु
आदि कवित्त में दूषण कहियतु सोइ ॥ ४ । दूषण नाम । भुक्ति कटु अथ संस्कार हत
अप्रयुक्त असमर्थ । निहितार्थ अनुचित अर्थ वर्णन और निरर्थ । ५ । विविध भेद
अस नाल के सुकविन दिये बताय । जोड़ा एकत्रगुप्ता एक अमंगल आय । ६ ।

End—कारज लक्षण ॥ प्रस्तुत के व्यापार तें कारज को फल प्राप्त ।
तासों कारज कहत हैं सकल सुमति के रास । १२ । उदाहरण—अन घटा गज
तापै विजय के छटा निसान गरज नगारे भारे वाजयत अचैन हैं । देखि रघुनाथ को
दुहाई न खबर तोहि जगनून जागै जायगो जगार्त ऐन है । कोकिला कलापो
भिल्लो दादुर पपोहा सोर इन्हें मति बुझै और सुभट के वैन हैं । तेरो मान
कोट ताके तोरै कौन खोट घेरि हल्ला किया चाहत मोहल्ला लेत मैन है ॥ १३ ॥
इति लक्षण श्रीकवि रघुनाथ बंदो जय कासो वासो विरचिते जगत मोहने
अप्याक्षरादि लक्षण वर्णने लघुमेखः ॥

Subject—दृषण वर्णन, दोष लक्षण, दृषण नाम, पद दृषण, वाक्य दोष, अर्थ दोष, धृति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहितार्थ, अनुचित, निगर्थ, अश्लील, अमंगल, श्लान, अवाचक १—३ पृष्ठ

संदेह, निकाय, क्लृष्ट, सामोण, अविमृष्ट, विरुद्ध मति ४—५ पृष्ठ

न्यून पद, अधिक पद, कथित पद पतप्रकर्ष, प्रसिद्ध इत, अभयन पुनरात लक्षण, क्रमभंग, शान स्थेयपद, ५—७ पृष्ठ

अपुष्ट, कष्ट, व्याहत, पुनरुक्त, दुकम, सामोण, निरहेत, अयुक्त, संप्रदाय विरुद्ध, शास्त्र विरुद्ध, अष्टा विक्रित, सहचर मित्र, चाह युत ८—९ पृष्ठ

अविशेष, नेम अनेम, त्यक्त पुनः स्वीकृत, विधि अनुवाद, अर्थदोष, अश्लील निवारण, पुनरुक्त निवारण, १०—११

गुण वर्णन, मधुर, पोन्न, प्रसाद, संगति, अभिमान, हेत, प्रतिवेद, मिथ्याध्य वासित सिद्ध युक्ति, कारण १२—१५ पृष्ठ

No. 326(b). Jagata Mohana by Raghunātha Bandijana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—204. Size— $10\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—12. Extent—3,213 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Chhedī Lāla Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargadhb, District Barā Banki (Oudh).

Beginning—वरन वृत्त के छन्द को इनते रचना होत । नामरत्न को पार मत कहे सुमति के पोत ॥ ११ ॥ म य र स त ज भ न चादि दे इनको कम लखि लेउ । कृति जल अग्निने चाह नम रवि ससि पनि इन देउ ॥ १२ ॥ मगन नगन ता मित्र है यमन भगन है भुक्त । रगन सगन परिष तगन जगन उदासो कृत ॥ १३ ॥ मगन तीन गुरु तीन लघु नगन यमन लघु आदि । भगन आदि गुरु कहत है पिंगल मत निरवादि ॥ १४ ॥ रगन मध्य लघु मध्य गुरु जगन कहत बुधिवंत । सगन अल गुरु कहत है कहत तगन लघु अंत ॥ १५ ॥ यस्तार विधि ॥ पहिले गुरु के निग्य लघु फिरि विधि ऊपर पाति । उबरे ऊपर दोत्रिये गुरु लघु रचि इहि भाति ॥ १६ ॥ पर पुरुष दोउ इष्ट है मित्र भित सुख दान । उदासोन ते मृत्यु सुभ सेस मते परमान ॥ १७ ॥ उदासोन परि ये दोऊ असुख अर्थ को दंत । यदि मानुषो कवित के मन धरै करि हेत ॥ १८ ॥

End—दोहा ॥ दोउ नगन फिरि रगन जेतिक वाढ़न जाइ । दंडक को यह भेद है स्यो स्यो नाम बताइ ॥ ५१८ ॥ सात रगन को चंडविष्टि समे पाठ को

जानि । सगे बाह्य नव रगन को दस को बाल बखानि ॥ ५१९ ॥ भारत को जीमूत कहि ह्रादस लिला कर भावि । तेरह को उदाम कहि चोदह को सख भावि ॥ ५२० ॥ पन्द्रह को धाराम कहि सारह को संग्राम । विदित नाम कनपति कहि सत्रह को सुराम ॥ ५२१ ॥ बैकुण्ठ अठारह रगन को कहत सबै मति धाम । रगन उनइस को कहत सोत कंठ यह नाम ॥ ५२३ ॥ बीस रगन को सार कहि एकइस को विस्तार ॥ बाइस को विस्तार है तेइस को संहार ॥ ५२४ ॥ चौबिस को गोहार कहि पचीस मेदार । कविस को कंदार है सत्ताइस साधार ॥ ५२५ ॥ सत्कार अष्टइस रगन को आनतिस को संस्कार । सेस कहै गढ़ई लहे छंदन के विस्तार ॥ ५२६ ॥ तीस रगन माकुंद है इकतिस को गाविन्द । बत्तिस को संदोह यह माखी नाउ फनिन्द ॥ ५२७ ॥ दोइ नगन गन तीन सै तेतिस रगन बखान । सेस कहै समपति लहे दंडक को परमान ॥ ५२८ × × × शुद्ध छंद के वरन को जो करता कवि होत । सुख सम्पति दिन दिन कात कवि के छन्द उदात ॥ ५२७ इति—श्री कवि रघुनाथ बंदोजन काशी विरचित जगत माहन ने छंद शास्त्रे मात्रा वृत्त, वगैरवृत्त, मालावृत्त, दंडक, पष्टमोजाम चतुर्थे लघु मंत्रः ४ ॥ शुभमस्तु

अष्टौ के सारह वगै संख्या भेद विचार—पद्मरूपा, गजतुरग, वानरी, आव-गनी, सुचित्र, चपला, पंचचामर, ललिता, जपानंद, चित्रकला, समाला, मंगल संगता, कामला, लतिका, वर विलसित, मदनलतिका, चकिता, गहड़ माधत, गंगाधर, लक्ष्मी पति, अचल धृति, सबै लघु उदाहरण, अति अष्टौ, पुष्पा, वसपत्र, मनहरिणी, मेदाकांठा, करिहरि, कांता, त्रिलेखा भाराकांठा, हारिणी, पद्मा, मालाधर, वसुधरा, धृति (१८ वगै); लघु धृति, नंदन, मुकामाला, बाचाल, कुसुमित लता, हरिणकुलता लक्षण, अश्वर्गात, देवस, देवमुनि शार्दूल, चपल, मणिमाला, पंकज, वक्र, शिववक्र, सिंहधोर, हरिनिपय, शार्दूलललित, मनहार, ललित पदा, कमलपदा, कमलधरा, श्रीकेश, मेजरा, कैलेशचंद्र, हरनी प्रिया, रसकेश, रस रांस, अतिधृति (१९ वगै); मेखस्फुरित, झापा, चमर विमल पुष्पदास, विद, मकरंदिका, मणिमेजरी, समुद्र, तरल लोला, भूपति मालती बाबुवैग, शाशिका, शंभू शाशिवर सुरसा, तुला, कृति (२० वगै) बंदना, मुक्तिवा, चित्रवृत्त, लोकराय, शोभा, सुनक्षण, मत्तमिरीहित जलवार, कामलता, उज्जलमुद्र, पुट, मत्तमठ, चित्रमाल मुतिशेखर

Subject—(१) पृ० १ पृ० ५ तक—गणानुस भेद वगै, द्विगण विचार, प्रस्तारविधि शुभाशुभवर्ण देवता आदि का वर्णन है ।

(२) पृ० ६ से पृ० १६ तक—पाठ्या प्रकरण । छंदों के लक्षणः—विणुला, जघन पथ, चपलगाड़, पाठ्या माहु, विषाहा, उषाहा, परजाय, मोती, उपमोती,

घाय्यां गोतो, घाय्यां गोतो गोतो, घाय्यांउद गोतोगोतो, गाहिनी, सिद्धिन, पेवा, गाथा, विगाथा, पवगाथा, उपगाथा, मालगाथा, बैतालोः उपकुन्दसिका, अपतालिका, दक्षिणोतिका, दक्षिणोतिकापरोति, दक्षिणोतिका तृतीय भेद उदोच वृत्ति, द्वितीय तथा तृतीय उदोचो भेद, प्राचवृत्ति, द्वितीय प्राच्य, वृत्ति, तृतीय प्राच्य वृत्ति, प्रवर्तक, द्वितीय, तृतीय, प्रवर्तक, बैतालिक, प्रौप कुन्दसिक, अपतालिक, अपरांतिका, परोतिक, द्वितीय परांतिक, तृतीय परांतिक प्रवृत्तक परांतिक, द्वितीय परांतिक, तृतीय प्रवर्तक परांतिका, इति बैतालो समाप्त ।

(३) पृ० १७ से ५३ तक—पथ वक्र लक्षण, पथ्या वक्र, विपरीतादि वक्र, चपला वक्र जुगम विपुला, सैतवो विपुला, भा विपुला, साता विपुला, मा विपुला, चरनाकुलक, उपचित्रा चित्रा, चिह्नलोक, वन वासिनोः मात्रा समक लक्षण, हाधृत, दुखंड समाज, प्रथम अनंत, उत्तरदल माला, चंता लक्षण, अनंत कोड़ा, रुचिरा, रुचरा समाज, चरना, अभिजात, इस्ववर्ष, जुलिशाला, सैराठा, पंचा, नंदा, वरहंसा, अपाढ़, श्रवणसुधा, सुधा, चैवोला, गमक, रसवाम, कांता, मधुहार, दीपक, यदोर, उकक्षा, दसहाकिल, हारिमुख, करी, जैकरी, पम्भलिया, अरिल्ल, सतांस, मठोल, रठोल, गंधान, करिल्ल लघुदीपक, पवगम, मदन दीपक, महादीपक, निसानील, होर कुंद, रोळा, काथ्य, गगनंग, रामगोतो, हरगोतो, अनुगोतो, मन्दगोतो, देवो, उल्लाला, मरहट्टा, चौपया, लघुपद्यावतो, सवैया, धत्ता, धत्तानंद, द्वितीय धत्तानंद, त्रिमंगो, पदुमावतो, दंडक, जनहरना, टुमिला, लोलावतो, वरवीर, वोरवान, पंचवदन, भुलना, मैनहरन, मदनहरन, छप्पय, कुडलिया, रदहाभेद, नंदारदडालक्षण, राडसेन, चारुसेन, भद्रा, तालेंकिन, माहना, द्वितीय माहनो, राजकुंहनो, घनाक्षरी, द्वितीय वति, चतुर्थ यति चरना घनाक्षरी ॥ इति मात्रा खान

(४) पृ० ५४ से पृ० ६ तक—नाम सर्व गुर सर्व लघु पर्यंत गाथा, दाहा, छप्पः मंत्र ।

(५) पृ० ५७ से ८२ तक—वर्णवृत्त, ओकुंद लक्षण, मुखो सार कुंद, मथ्या भेद, तालो सानारो, समा मनोप्या, मृगो प्रिया, प्रवर सेना, मृणेंद्र, हृदमंदिर, दिग कमल, कर्मपरजापवारी, गिरा क्रोड़ा, क्रोद्धि, सुमतो, सुगतो, सुमहो, मधु, वरलो, पन्न, कंदलो, जति, प्रतिष्ठा, समाहा, पंक्ति, हारो, सतो, त्रिपतो, नंदा समतो, नायत्रो, सुमतो, विजोहा, शशिवदन, मथानक, मुकुला, तनमप्या, सुमतो, डाण्णक, प्रथम गंधर्वाः, हरिना परिषाप, सगुन विजास, सुजस प्रकाश, करहंच, मदलेवा, सताकुमारलतिका, हंसमाला, समर माल, कलिका, चित्रा, श्रुति, डाण्णिक, अनुष्टुप, विधुमाला, मलिका, बितान, कमल, मानव कोड़ा, चित्रपदा, हंस उदय, नाराचिका, केतुमाला, क्षमा, मालतो सुदरो, रूपमाला, मुखविलासः

पास्ता, घमल कमल, भुजंग शशि मृता, भद्रकाय, वृद्धी, उत्सुक, अच्युता
सुगता, महती, सुवसा

सुलक्षण, पंक्ति, योगी, मयूरशालिनी, संयोगी, कन्नावती, मुकादोपक-
माला, वक्ता, उपस्थिता, मनरंगा, बंधुकाय, अमृतगती, समुपस्थित, मौक्तिकी,
पद्मिनी, सुसुमो, सुविरतो, मालती, अमृतगती, सुमुखी, चपला, त्रोटक, मोटक,
यादो, अच्युतसखा, दीपक, सुमती, मौक्तिकमाला, उपस्थिता, सैनिक,
भद्रिका, वृता,

(६) पृ० १८३ से पृ० ८६ तक—स्वागता, भ्रमर विलासिता, सुश्री, माया,
शालिनी, बंधुपासुमुखी, प्रेममाला, सदा उपस्थिता वरमति, उपचित्रा, इन्द्रवज्रा,
उपेन्द्रवज्रा । इति प्रस्तार विधि ।

उपजाति चतुर्दशनाम तथा उदाहरण—कोरति, बानी, माला, साला, हंसो,
माया, जाया, वाला, अदा, भद्रा प्रेमरामा, ऋद्धि, बुद्धि, जगतो भद्र—विद्याधर,
चंद्रवर्ण, सुबंधा, इन्द्रवंसिका, कांता जलधरमाला, मौक्तिक दाम, तारक, मोदक,
कमलविलासिनी, द्रुतविलंबित, कुसुमविचित्रा, भुषणप्रधात, स्याविणी,
रानोवली, प्रियंवदा, मणिमाला, ललिता, चेटिका, प्रमिता, पुंडरीक, महेंद्रवंशा,
वंशदेविका, पतिश्रुति, श्रुति, जलधार माला, नवमालिनी, मालती, गौरी, ललित,
सुचित्र, द्रुतपदास्थिता, प्रहर्षिणी, हर्षिता, माया, मेनुभाषिणी, मेनुलक्षण, चंद्रलेखा,
हर्षिमोदक, हर्षिलक्षण, नलिन लक्षण, निकुंड, नेमा, मनकनिका, विदुलता,
कौमुदी, तारक, कंद, पंकावलि, मृगन्द, चंडाल, कलहंस, मानवण, देवीपद,
सर्कारो, गौरीधर, वनलता, अनंदा, सुखचर्क, अलाला, मया, लक्ष्मी, असेवाधा,
वाधा, अपराजिता, पहर्नकलिका, वसेतलतिका, इन्द्रवदता, लोला, अलोला,
कल्लोला, मध्यक्षमा, कुमारी, प्रमदा, उपचित्रा, वांसती, सामंत, नंदी, लक्ष्मी,
भद्र, उचित, सुचित, चक्रपद, राजरमणी, मेजरी, चंद्रसाली, वसेत सुदर्शन,
मणि कटक, दरदुर, कवितका, सारंगिक, मेडुका, तुल चामर लक्षण पंचानन,
वित्तराज, निशुपाल, भ्रमरालसो, चन्द्रप्रभा, धरविदक, मणिपूषण, ऋषभ,
अमलिनी, मालिनी, चन्द्रलेखा, प्रमदकेश, पलाल, शुक्माला, सुदर्शन,

यत्किंति (२१ वचने) स्वधरा, मुनिधरा, चित्रलतिका, कांवात, वन मेजरी,
ललित तुल्य पद्म सद्य, ललितविक्रम, गति कंद, महेश्वरी, नरिद, पाकृति,
भद्रा, कला, मदिरा, महा श्रग्धरा, वनहंस, मदनसा-हंसो, केकनी, पदीपा,
प्रमो पकाशमहाफल, विकति (२३ वचने) वाजो वाहन, हंसगति, तारंगमालिका,
कालिका, सबोसुधा, कामकला, शाब्दा, सुंदरी, वागीश्वरी, कारिना,
मत्तकरी, पद्मि, सवगामी, दीपक संस्कृति ॥ २४ ॥

(७) पृ० १८७ से पृ० १९० तक—सुतन्वी, सुमिला, किरीटी, हंसपदा, मदनप्रावक, बैकुण्ठ धाम, लवंगलता, कुमार घनावन, भुजंगो, पति कांत, (२५) चंदिर कौचपदा, चंदिर विशदपद, सुरेश्वर, परविंदमुखी, कला कुशला, पला लक्षण, भारव्य लक्ष्मी पति, देव देवा, उत्कृति, (२६) भुजंग, विजृम्भित, बाह, ऊर्मिलिनी, बनलतिका, मकरंद, मौक्तिक, किशोर, रत्नकांची ।

(८) पृ० १९१ से अंत तक—विकसितकुसुमा, कर, ललिता, विभंगो, सिरारज सालू, मनि निकर, सुहित, भावविलास, ललितवित, कमिका, इन्दुगन, लहरिका, विहारो, मनिवर ललित, चित्रमय, लोलावतो, मालवृति सम्पूर्ण, पथ दंडक, घानी उदाहरण, घन वक्ष्या, दंडक विभेद लक्षण शुद्ध अन्द वचन को बड़ाई । अन्य समाप्ति ।

No 326(c). Jagata Vimohana by Raghunātha Bandijana of Kāsi. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—10. Extent—280 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinagā, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः प्रभु को पासिरवाद दे हरप भरी यह प्रीति । प्रभु भाग लाभो कहन राजनीति को रीति ॥ १

कौन देश है को सम को बैरो को मित ।

यह विचार सब दिन करै होत भार हो नित । २

सहसा काम न कछु करै करै तो करै विचार ।

सा सगरे पासर परे जीतै सकै न हार ॥ ३

साम दाम यह भेद जुध है ये चारि उपाय ।

पति अडैल के चित्त में राखै सब दिन छाड़ । ४

पति पाले कुल को धरम पाले द्विज यह दोन ।

कृपा सहित तिनसां मिले आवै जे परबान । ५

बिधा सुनै जन दोन को आपु भवन मन लाय ।

बाको करै सहाय सुम करिके चारि उपाय ॥ ६

End—त्यागिबो त्यागवै जाग परै यह संग्रह जाग तजो नहि जाई । प्रीति प्रतीति को भोति बढी कछु रीति सनातन को चलि पाई । पाहन पूरित देखि मराल चले तजि मानस होर राई । सा प्रगट्या मुकता किन आपने हंस जुगै चलि दूरि ते पाई । १ । मानस सदैव जाग सदा तुम सेव हंसन को समुदाई । जो हम दूरि बस बिधि के बस सा कछु भेद कयो नहि जाई । पाहन कंठ फंस

कबहुं वह सोचि सदा सब लौ डरपाई । सो प्रकटौ मुकता किन चापने हंस चुनै
चनि दूरते चाई । २ । चैन नहीं पल एक तजे नित मानस होत मराल को प्यारो ।
पौनस जोग विवोग में धोन्ता होत सदा जिघ मोह विचारो । दानि सिरोमन दे
मुकता हल चाञ्चित को विपदा हटि टारो । सेइवो हंसनि को जो चढौ तुम
पाहन चापने दूरि निवारो । राम राम राम—इति

Subject—पृष्ठ १ से १३ तक राजनीति वर्णन, पृ० १४ से २४ व्याघ्र बलेन,
पृ० २५ से २८ महाराज मानसिंह और द्वित्रैव के कवित्त ।

No. 926(d). Kāvya Kalādhara by Raghunātha Bandījāna
of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—131.
Size—8½ × 44 inches. Lines per page—10. Extent—2,600
Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Mahārājā Rājendra Prasāda Simha, Bhinagā
Rāja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सोतारामाभ्यांनमः ॥ कवित्त ॥
परथ धरम काम मोक्ष कहै रघुनाथ चारिदा पदार्थ सहज हो में लहिष । रिधि
सिधि बुधि को विरिध होत दिन दिन विद्या और बल वैवसाव जेतो चहिये ।
संतति बढ़ति जग कोरति पढ़त मुख पानिप बहुत चाह मोह महा गहिये । तरन
के सुत को विसाति है न कछु जहाँ गुरु के चरन को सरन जाइ रहिये ॥ १ ॥
देहा । प्रथम मंगलाचरन में गुरु को कोन्हो ध्यान । अब कोजत श्री कृष्ण को
करता सब कल्याण । २ कवित्त चन्दाइ के पाइ खरो मये तोर जौ कैलो समोर
संगघन भे ज्यै । गाइ न जात निकाई सरूप को पूरा प्रकास महो नम को
छै । और कहाँ सौं कहाँ रघुनाथ विलोक विलोकनि वामन को वै । इन्द्र सौ
आज गोविन्द बन्यो रो रह्यो सिंगरो घन चाञ्चि मई है । ३ काछ कछे पट पोत
को सुन्दर सोस घरे पनिया रंग रातो । हार गरे बिच गजन को जुलफ छुरो छोर
सौ छै हरो छातो । खेलत ग्वालन सौं रघुनाथ ज्यौं डोलै मलोन में रो उतपातो ।
ज्यौं रंग सांवरौ होता न ईठ तो काहू को दोठि कहू लग जातो । ४

End—चकित हाव के लक्षण—आगे पिय के मोत तें जहं मन भ्रम है
जाय । चकित हाव तामें कहत सकल कविन के राय । उदाहरण—देत
देहनी तौय कर गहत गहो हरि चाइ । चोकि छाँडि कर सौं दई चक टक रही
लपार । केलि हाव के लक्षण—जहं तिय खेलै पोय संग केलि हाव सो जानु । कहे
हाव भरतादि इमि कवि कुल बुद्धि निधान । उदाहरण—घनस्यामि घनस्याम है
राधा दामिनि रूप । बड़े हिडोले भूलत पावस किए चनूप । सोच क हाव लक्षण—

गुप्त भेद करि जाय जहं करै किया मन मांढ । बोधक तामें कहत है सकल
कषिन के नाह । उदाहरण—छै श्री फल कल धौत कर तियहि देखावै स्याम ।
भानु चित्र मसिबुंद दे रहौ मौन डै वाम । इति श्री कवि रघुनाथ बंदो जन
कासी वासी विरचिते काव्य कलाधरे हाव वर्नेन पोडसा मयूष यथ काव्य
कलाधर समाप्त शुभ मस्तु दस्तबत श्री भैया कालीप्रसाद सिंह

Subject—१—५ पृष्ठ वन्दना, राजवंश वर्णन, काशी वर्णन,

पृ० ६—३० रस वर्णन, दूती वर्णन, चालचरन, उद्दोषन, ओष्ठ, कनिष्ठा,
मुग्धा, मध्या प्रौढ़ादि वर्णन,

पृ० ३१—५२ नायिका भेद, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा भेद, किया विदग्धा, वचन
विदग्धा, ज्ञात यावना, सुरत आदि वर्णन,

पृ० ५३—६६ गविता वर्णन, खंडिता, अन्य संभोग दुःखिता, मानस भेद
वर्णन, स्वकीया धोरा, अघोरा, वर्णन,

पृ० ६७—७३ परकीया, धोरा अघोरा, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा वर्णन, सामान्या
वर्णन उपेक्षा अन्य संभोग दुःखिता वर्णन

पृ० ७४—९४ मुग्धा स्वाधीन पतिका, सामान्या, अभिलाष, मोहित
पतिका, चिन्ता, पलापदि आदि, उद्वेग, उन्माद, जड़ता, घामत पतिका,

पृ० ९५—१०० अनुकूल, दक्षिण, शठ धृष्ट वैसिक, धीर, ललित, धोरोदात्त,

पृ० १०१—१३१ रोसव, कियावचन, लक्षिता, विदग्ध नायिका भेद वर्णन,
भाव, अनुभाव, समेद, हाव वर्णन समेद ।

No. 326(e). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśī.
Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—8×4½
inches. Lines per page—16. Extent—960 Anuṣṭup Śloka.
Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
Composition—Samvat 1796 or A. D. 1739. Place of deposit—
Babu Padma Baksha Simha, Taluqedār, Lavedapur, Dis-
trict Bahraich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः । विश्वेश्वरो बीजते ॥ मनपतेनमः ॥

दोहा—सुफल होत मन कामना मिटत विघन के हुंद । गुन सरसत बरसत
हाथ सुमिरत लाल मुकुंद ॥ १ ॥ कवित्त-अर्थ धरम काम मोक्ष कहै कवि रघु-
नाथ चारित पदारथ स अ हो भैं लहिष । गिरि सिद्धि बुद्धि को विरधि होत
दिन दिन विद्या धार बल वेवसाव जेतो चहिष । संतति बढ़त जग कीरति पढ़त

मुख पानि चढ़त चह मोह महा रहिए । तन के सुत की बसाति है न कछ
गुरु के चरन की सारन जहाँ रहिए । २ दोहा—प्रथम मंगलाचरण में गुरु की
कोन्हों ध्यान । अब कोउत धो कृग को करना सब कथान । ३ कवित्त-दास
के संग खरो भयो तोर तो फौरो समीर सुसंगति में चवै । गार न जानो निकाई
सरूप को पूजो प्रकास मही नभ हो छै । पैर कदो लो कहीं रखना । विनोकि
बिलो कति यागति को छै । इंदु में घात गोविन्द बन्यो रो रह्यो सिंगरी संग
पाबि मई है । ४

End—प्रहर्षन लच्छन—उत्कंडा जो अर्थ है बिना जतन जो सिद्धि ।
सुकवि प्रहर्षन कहत है पलंकार में सिद्धि । १७१ उदाहरन—वासर वास के
तोरथ को रखुनाथ सुनौ परबो लखि भारो । गंड के लोगन संग सभी सिंगरी
परिवार छै सामु सिधारो । पात्र पकेलो एहो दुलरो कहिए प्रब भाग को बात
कहारो । जोच को भावतो देवर जो घर में रह्यो जो घर की रखवारो । २४६
द्वितीय प्रहर्षन लच्छन—जहं मन वांछित अर्थ सो अधिक परापति होइ । द्वितीय
प्रहर्षन कहत है बुद्धिमान सब कोइ । १७२ उदाहरन—पात्र अन्हात में देखी कहं
मन में महरंटो को रूप बसायो । प्रेम पगे पति पात्रु रख्यो घर चानुर एक बसीठ
पठायो । हे रखुनाथ कहा कहिए मनमोहन ह मनमोहन पायौ । बात लपायो
सपा लपिका उतसो मिलिबे को संदेसाई पायो ।

त्रितीय प्रहर्षन ॥ जतन कात जहं निद्धि को लाभ होइ सावकात् । कहत
प्रहर्षन तौसरो भेद सुमति सबदात । १७३

Subject—पृ० १ से ७ तक—प्रार्थना, श्रृंगार वर्णन, विषय पलंकार
वर्णन, राजा व कवि का वर्णन,

पृ० ८ से १६ तक—उपमा, अनन्य, उपमानोपमेय, प्रतीप, हयक, परि-
नामालंकार वर्णन,

पृ० १७ से ३३ तक—उल्लेख, स्मरण, भ्रान्ति, सन्देह, अपन्हुति, उपप्रेक्ष्य,
अपन्हुति, प्रतिशयोक्ति वर्णन,

पृ० ३४ से ४२ तक—तुल्य योगिता, दोषक, प्रतिवस्तूपमा, इष्टान्त,
पदार्थवृत्ति, निदर्शना, व्यतिरेक, सहोक्ति वर्णन,

पृ० ४३ से ५३ विनोक्ति, समासोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, श्लेष,
अप्रस्तुतप्रशंसा, प्रस्तुतांकुर, पर्यायोक्ति, व्याजाक्ति, आक्षेप वर्णन,

पृ० ५४ से ६५ तक—विरोधाभास, विभावना, विशेषोक्ति, असंभव, प्रसंग,
विषम, सम, विचित्र, अधिक वर्णन,

पृ० ६६ से ८१ तक—सूक्ष्म, अन्धोन्ध, विशेषोक्ति, आघात, कारमाला, एकावली, मालादोषक, सार कमिक, पर्याय, परवृत्त, परिसंख्या, विकल्प, समुच्चय, काव्यदोषक, समाधि, प्रत्यनोक, काव्यार्थोपक्ति, काव्यलिपि, पर्यान्तर न्यास, विकस्वर, प्रौढोक्ति, संभावना, मिथ्याध्ववासित, ललित और प्रहर्षण का वर्णन ।

No. 326(f). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—1,260 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A.D. 1746. Date of manuscript—Samvat 1834 or A.D. 1777. Place of deposit—Thakūra Digvijaya Simha, Tālnqedār, Village Dikanlia, Post Office Pisawq, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसिक मोहन ग्रंथ लिप्यते ॥ देहा ॥ विघ्न हरन दुर्मति दान करन सकल कल्याण । शिव शुभ श्री गणनाथ को सब सुपदायक ध्यान । श्री गुरुदेव मुकुंद को लहि कै कृपा सहाइ । करिबे को पाई सकति ग्रंथनि को समुदाइ । ब्रह्मा को सत मानसिक गौतम परम प्रमिद । ताके कुल को दूहि सिर प्रगट भयो तप निदि । वेद कंठ चारो करे छट्ठारहो पगान उपनिषदो छठ शास्त्र सब चौ सब कला निधान । बरनि कहाँ लनि कोजिये करामाति समुदाइ । घोती लिये चकास में जाको झुरवन बाय । कुल में कोट मिश्र के उपजे मेसाराम । जापे रापत निज कृपा आपु राम सुप-धाम । कवित । आजु महि मंडल में कहै कवि रघुनाथ जेते राजपूत राज पदवी धरत हैं । आपनो समा में आपु आपने मुसाहेब सेो बैठे छाठो जाम पेसो भति उखरत हैं ॥ वषत विलंद सेो कौन पदमो पै भूप गौतम गुमानो के जो समता करत हैं । चाहैं जेई राम सेो करै मेसाराम आजु चाहैं मेवाराम सेो रामजु करत हैं ।

End—हेतु चलंकार लखन । हेतु सहित जहं बरनिये हेतुवान महि रोति । हेतु चलंकृत सुकवि सब तहां कहैं नहि पोति । उदाहरण । महत महातिम को पंचकोशो जात्रा कहै रघुनाथ मुनि मनि बचन महासी के । हरष पागे अनुरागे बड़भागे लोग नगर बसैया सबै लोग भोग निर्भय विलासी के । गुंदसे तागुन में फिरत पास पास भये मालाकार गुवा वृद्ध बालाबाल काशी के ॥ अपरं ॥ परम असंकलंकप्रति मेरो विनै सुनौ पूरा पाराधार कोप हारिन भए भयो । आवत वसंत ज्यों ज्यों वन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फुलि के करो भयो । करिबे जो है सो सब कोजै मंत्रि मंत्रिन सो नगर बसैयन के पास को दूरो भयो । तोखिन छिपति के हरैया राम ताके पागे उबराइये खन भभौकन परो भयो । इति

श्रीरघुनाथ बंदोजन काशी वासी विरचिते काव्य रसिक मोहन उषमादिक
फलंकार धरननं संपूरनम् । किंता रसिक मोहन सुमन पंथ सुकां व रघुनाथ ।
विच विच काशी नृपति के कई विशद गुन गाय । फलंकार लखन सहित
लक्ष सहित सुविचार । करि कवित रसिकन लिये दये सुकल निरधारि । इति ॥

No. 327(a). *Mānasādīpikā* by Raghunāthadāsa Vaiṣṇava. Substance—Country-made paper. Leaves—118. Size—16 x 12 inches. Lines per page—44. Extent—6,490 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Rama Śhankara Vājapeyī, Village Bahorikā Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः यथ मानसदीपिका संकावली लिप्यते ॥
तत्रादा मेगनाचरणम् । देहा । परशुवरनि संपति भरन प्रथ दर डरन गनेश ।
विघन हरन मेगलकरन रापहु शरन हमेश ॥ एक रदन करिबर बदन सिद्धि सदन
मुद दानि । मदन कदन नंदन जपहु जगबंदन जिय जानि । सिद्धर सह सिद्धर
बदन रदन विशद दुति भाति । ईश्वर कवि कवि वो निररि रवि पवि छां व दवि
जाति ॥ यथ संक्षेप तो राजवंश वरुन ॥ हरिपद छंद ॥ परम तपस्वी तेजस्वी वर
किटहू मिश्र उजागर । हुते वेद वद बंदनीय शुभ सत्य सुवश के सागर ॥ गौतम गौत्र
सुपात्र पोषिपद पंकज में सिर धरिके । दये घामवसु विशति जिनके नृपवतार छल
करिके ॥ क्या छल कियो कौन थल कैसे कौन लह्यो फल भारो । बहुरि मिश्र जू
को प्रभाव प्ररु वंशावली सुपारी ॥ यह सब कथा कहाँ लगि कथिये सुनहु सुजन
सुषदानो ॥ काशिराज चंद्रिका ग्रंथ में सह विस्तार बयानो ॥

End—नाम प्रताप सर्वोदित जागा । जाके डर कलि को तम भागा ।
बाहुत देव चरन पनुरागा । जाको अस श्रुति गावा बहुत जन्म इत्यादि लिखि
पाये । जोव के जन्म नाही होत । सो चारि प्रवखा में जन्मरूप भेद पाया जाता
है ॥ जैसे बाल बृद्ध इत्यादि ॥ कोई केवल लड़िका देपे होइ फेर दूसरो प्रवखा
में जो देपे सो नहि पहिचानैना और जन्म संस्कार का नाम है और चारो जुग
का जो भेद करते हैं सो प्रमान तो समान जानव । यादो ते धर्मे में विरोध भासै
है जैसे सामान और विसेस सो सब मतन में सामान्य विसिंष्ट पाये जात है
और विसिंष्ट में अनेक विरुद्ध देपा परे है जैसे मोंस मच्छ में विष के दक्षिन बासोन
को प्राजा उत्तर वासी पतित होत है इनन धातु तो जोष में चरितार्थ नाही होत

जैसे घट मट्ट आकास का नास पावत है याही ते जीव व्यापक जान्यो जात है और जन्म मृक्षम स्थूल सरीर करके बहुत भासत है जैसे चौरासी लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संसार और काल को धर्मनि को मुख्य जानिवो साम आयो । दे० । मान जुक्त मानस सुषुप्त संका रहित उदार वाच रहित निज मोहवस संका करत अपार ॥ मानस मान अनेक जुत मानो मन नम नाहि मम साहस संकावलो छमव साधु महि माहि ॥ इति सप्त कांड संकावलो संक्षेप शुभ मस्तु ॥ लिखत नन्दकिशोर ॥

Subject—तुलसीकृत रामायण सातों कांडो पर संक्षेप से शंका का समाधान और अंत में कठिन शब्दों का कोष ।

No. 327(b). *Mānasadīpikā* by Raghunāthādāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—115. Size— $13\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—4,600 Anuṣṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1914 or A.D. 1857. Place of deposit—Bhaīyā Jadunātha Sīnha Rāisa, Rahmā, Post Office Baundi, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—No. 327 (a) के अनुसार ।

End—गुहने विचार कियो कि बैर भाव ते जातु हैं यानें ज्ञाति लोगन को बोलाइ कै कहत मयो भरत ते संग्राम करि चांदनी को नाई जस ते चौदहां भुवन सपेद करि हों ॥ वहां सगुनिचन कहाँ है कि रात्रि न डूँ है भरतजू रामचंद को मनावने जातु है तब गुह भरतादि ते मिलि परमानंद पायो । यह कौशिल्यादि मातु मसीस देय सत लाख वर्ष जीवे को भाव कि किरति जुग जुग रहै ॥ यह निषादहि लागु निषाद के कांधे पर हाथ धरे भरतजू गंगा तट पहुँचे कान सब सी कृत विस्तार वर्षे छंद श्री काशी पितु को राजा पाइ यो । गतराज कथनितम मेल मेलहि बोपाई सरल अर्थ आपर को ध्योरो । सहित प्रभाव सात रस बोरो दूर देस टरसावन वारी चैन कसम विभु विमल तमारी ॥ इति श्री जानकी पति पदार्पणद मकरंद मिलिदाय मान मानस रघुनाथदास कृत मानस दीपिका या विश्राम संग सप्तम प्रकाशः ॥ ७ ॥

No. 328(a). *Harināma Sumiranī* by Raghunāthādāsa Rama Sanāhi of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size— 12×5 inches. Lines per page—40. Extent—780 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—

Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma-Śaṅkara Vajapeyī. Village Bahorikā, Vajapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री महाराज महंत रघुनाथदास रामसनेहो कृत हरिनाम सुमिरनो ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम को वंदना करौ प्रथम सिर नाथ जासु कृपाते सिद्धि सब भये सुषद समुदाय ॥ श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माय । श्री हरिनाम सुमिरनो वरनत जन रघुनाथ ॥ कुंडलिया ॥ प्रथम जो हरि भक्त न करो वैष्णो ग्रंथ प्रकाश । सोई पकरो रघुनाथ के श्री गुरु देवादास ॥ श्री गुरु देवादास वास रख्यो अतिथि गंज में विप्र वपुष मद् त्यागि भये अच्युत चरन में । रंज परे नर बहुत होत त्यागी पुर मृत में । किरकत सोई सुष परइ तजै जो विभो के ग्रंथ में प्रथमहि रामप्रसाद के रहे सिष्य में सिष्य । रामसनेहो संत मिलि राम नाम दियो लिख्य । राम नाम दियो लिख्य नाम परभाउ दिहायो रहत बख्यो बिस्वास बस्तु सब ताते पायो । ताते तिनहै रघुनाथ गिन्यो सतगुरु संश्रित में । दत्तात्रे को रोति रहनि निज तजो न प्रथमै ॥

End—दोहा—सिफत करै कोई पांड को धरै न मुष अमिराम । लहै स्वाद रघुनाथ किमि तिमि सुमिरन बित राम ॥ संकेतन परिहांस गुत अस्तेमन हेलस जपे नाम रघुनाथ सोउ दहै पाय अमितन ॥ सोई भ्यानी ध्यानी सोई दाता सूर सुजान । प्रति पवित्र रघुनाथ सोइ जो सुमिरे मनवान ॥ सठ असिष्य विष पाठ को तिनहै न कहिये येह । राम उपासिक सो कहौ जो सुनि उर धरि लेह ॥ श्री हरिनाम सुमिरनो मधि कछु हरिका ध्यान । वरनत जन रघुनाथ निज उक्ति सहित अनुमान ॥ दीर्घ कुंडला कुंद ॥ सोस स्वाम गिरि श्रंग सम मुकुट सरिस द्रुम दिथ । मेचक कच उतरे मनहुं पहि के छौना सिष्य ॥ पहि के छौन सिष्य चन्द्रमुख समुत हेत । सिषि सम कुंडलीत रवि रहे मग सकुचि सचेता ॥ सहित पोति रघुनाथ दंत मनि मनहुं अकोरा अदम फूल जुत कियो कियो उर प्रभु दौरा ॥ प्रभु के लोचन चपल मनहुं जुग रंज न लरहौ । पीच ग्रान मुक सफ न बैठ जनु धर हरि करहौ ॥ बिबाधर कर लोम रख्यो तकि तेहि दिशि धोरा । कियो मुक्त सनि भौम भनत कछु उड़पति तोरा ॥ कमल कोस मुष मध्य रसन जुत दसन सोहावै । अनु वज्रन जुत तड़ित परत तलपि जव मुसक्यावै ॥

Subject—राम नाम की महिमा और राम जो के रूप का उपमा सहित वर्णन ।

No. 328(b). Dohā Kavittāśādi by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—54.

Size— $7\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—380 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1949 or A.D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Thākura Jadunātha Sindhā, Raissa of Behuā, Post Office Baundi, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री रामो जयतिः प्रथ श्री रघुनाथ दास जो कृत दोहा कवित्त आदि लिख्यते ॥ उँ तन मन ते रघुनाथ जन जानि लेहि रे नोच मोच रही मङ्गुराय शिर राम रहि हिय बीच ॥ १ ॥ अस सहजै बनि जात जस छंद प्रबंध कवित । तस न रहत रघुनाथ कश रामचरन वश चित्त ॥ २ ॥ मन हमार रस एक अस रहत रोज पर रोज । पद सरोज रघुनाथ जन जप तप घोर न प्रोज ॥ ३ ॥ जप तप संजम नेम व्रत जोन जाग वैराग । फल सब कर रघुनाथ मल रामचरन अनुराग ॥ ४ ॥ जन रघुनाथ हमार मन रहि रहि अति अकुलाय । पाय हाय ऐसेहु जनम राम भजन बिन जाय ॥ ५ ॥ राम नाम रसना रसनि फसति अपन करि लेति छन छन जन रघुनाथ मन मढ़त राम सन हेत ॥ ६ ॥

End—कलिकाल कराल में घाटौ जाम रहे पलते मन वो दहि रे । सिया राम कथा न जहाँ व तहाँ है सब शास्त्रन में बकवादाहि रे । रघुनाथ निरंतर काहे न लेत है राम के नाम के स्वादाहि रे ॥ कोसन जात पयादाइ पांव बिना पद जोल लिए सिर मोटे । रामकृपा गजवाजि अनेक खड़े अब द्वार पगारन लोटे । द्वारहु हात न देत खड़े सबते अब पाय के पायन लोटे ॥ जन रघुनाथ गरोवन संग करो लीँ करो दशत्य के डोटे ॥ सोय राम कथा का कदा करै ररे अपरे अपरे कहु घोर न भापै जो जौनु कहै सो तौनु कहै तौनु उठाय घरै सब ताखै सावत जागत के अपनेम सहहि रघुनाथ महहिं अमिलापै ॥ अबलोकत घाटौ जाम रहै करना कर राम कृपाल को पाखै ॥ इति श्री श्री महाराज रघुनाथदास जो कृत दोहा कवित्त सम्पूले लिखा संवत १९४९, जानकी शरण ग्राम मृजावलि ॥ इति ॥

Subject—राम भक्ति सम्बन्धो दोहे पौर कवित्त

No. 329. Karichikitsā by Raghunātha Sindhā. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size— 8×6 inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1883 or A. D. 1828. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Pāṇḍita Janārdana, Village Bhiṭānra, Post Office Biswā, District Sitāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ करो की चिकित्सा लिख्यते ॥
 दो० ॥ नमपति गुर गंगा गिरा गोविंद के पद ध्याय । कहाँ चिकित्सा करो की
 चौगुन चाउ चढ़ाई ॥ गुन वसु वसु ससि माद्र नित चतुर्दसो रविवार । करो
 चिकित्सा ग्रंथ को भयो तबहि चौतार ॥ प्रथम जाति को भेद कहि लखन रूप
 विचार । हज निदान चौपद सबै कहाँ नकुल अनुसार ॥ चौ० ॥ प्रथम जाति
 बंगाला जानौ । पेदा वारह तहाँ वषानौ । भातू गाऊ आदि में कहिये । सो
 सोलौत दूसरा लहिये ॥ चित कालुन तीसरो जानो पश्क चौथ कुक्षर
 मानौ ॥ मोरंग छोटो सातवाँ डाका । चीता नाम घाटवाँ भाषा ॥ नव वारंका
 माटो जानि । चौतिपाल दसशवाँ मनि मानि । कंदहू लागे रहो माला । है वर
 हौ माहौ बंगाला ॥ दोहा ॥ मलेबार घनासिरो पैगुँ सो सोलान । कोह मेदिवा
 जानिये दूगला कंद वषानि ॥ कहेउ नील नाम बहुरि सो गजपाल सो भाय । छै
 गज होय प्रधान मत वरनत है रघुनाथ ॥ द्वादश बंगाला विषे घाष्ट दक्षिण जानि ।
 कहाँ पठारह जाति ये ग्रंथन को मत मान ॥

End—हथिनो की भूष की दवा हरिगोता छंद ॥ कुटकी पपुदनि होंग
 होरा उनु सूतो के लहौ ॥ सो वाड़ पुंमा फुल मिर्च साँवरो इन्द्रजव कहाँ ॥
 छाछि पीरासार गंधक पाव पाव वती गनो प्रसंग्य नगौरो गुर मुलो मा पाव
 ये छंद द्वै मनौ ॥ दोहा ॥ येक सेर जल खोरि गुड़ डारि कराह चढ़ाई । तामें घाटा
 उर्द को साधु सेर चुरवाय । फिरि सब औषद पोस कै डारि कराह उताह ।
 गोलो मासे सात की करि बरतन में बाह ॥ हथिनो को यह नितहो निम्ने मुषहि
 पचाव । भूष वड़ै सो बलवडै रहै चढ़ाये चाव । हरि गोता छंद ॥ वत्तीस पहिले
 दूसरे छाछि तिजे चौवन गिनौ । चौतीस चौथे में कहै यकतालिस प्रंचये
 मनौ ॥ वनवास छठये सातये चौवन छठे पत्तालिसो घेतालिसो नवये प्रकाशो
 छंद हौ सुष जानिसो ॥ दोहा ॥ पिपि ससि विचि मुख छंद है नवप्रकास गुन
 गाथ करो चिकित्सा ग्रंथ में हरषि किये रघुनाथ ॥ इति श्री रघुनाथ सिंह उते
 करो चिकित्सा ग्रंथे हाथो के दंत का रोग बच्चा के पै भूष करन पण्डि करन
 ग्रंथ समाप्तः संवत् १९२० लिपतं गनेस पंडित कृष्ण पक्षे तिथौ नवम्यां शनिवासे
 समाप्त ॥

Subject—हाथियों के रोग और उनकी औषधियाँ ।

No. 330(a). Rukmini Paripaya by Mahārāja Raghurāja
 Simha of Rewah. Substance—Country-made paper. Leaves—
 314. Size—13½ × 6½ inches. Lines per page—60. Extent—
 3,533 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—New. Character—

Nagari. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Simha of Amethi, Post Office Rāmanagar, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रुक्मिणी वल्लभा विजयतेतराम् ॥ सारठा ॥ जय केसव कमनोय वेदिय मागध मद मयन ॥ जय रुक्मिणी सु पोय जदुकुल कुमुद मयंक जय ॥ १ ॥ पंगु चढ़ै गिरि थंग, जासु कृपा मूकहु वदहि । श्री मुख पंकज भुंग, सो माधव रक्षक रहै ॥ २ ॥ बसहि रमा उर जासु बाग्योसा सुष में रहै ॥ ध्यावत पूजहि आस जदुपति होहि प्रसन्न सो ॥ ३ ॥ कल्पय ॥ विघन हरन सुष करन दुष छन ताप धरि । बन्दौ श्री गननाथ जोरि जुग हाथ माय धरि । बन्दौ सरसुति सुमति देन कुलि कुमति विनासनि ॥ जगत जननि जन कृपा करनि परब्रह्म प्रकासनि ॥ यो बन्दौ वारम्बार में पद पंकज सुषदेव के ॥ जहि मुख निर्गत हरि चरित सब दुष काट्यो नर देव के ॥ ४ ॥ दुषित जगत के जननि लखि प्रगट्यो करन उधार ॥ श्री मुकुन्द हरि गुर चरन बन्दौ वारिवार ॥ ५ ॥ आसु कृपा पालहु मोह सम पायो परम विवेक ॥ हरि गुरु पितु विशनाथ पद बन्दौ वार चनेक ॥ ६ ॥ जो जग प्रगट पुरान बहु रच्यो करन जन पुत । आसकूप हरि को सदा बन्दन करौ प्रकृत ॥ ७ ॥ मम गति नहि प्रदान रचन पै कछु मति अनुसार ॥ वरन्यो रुक्मिन परिनयो लहि गुरु कृपा अपार ॥ ८ ॥ सारठा ॥ हरन हेत भुविमार प्रगट्यो हरि वसुदेव गृह ॥ कोन्दौ चरित अपार गाइ गार जिहि जन तरत ॥ ९ ॥ × × × × ×

End—आस हिय पाल बाल बोये बीज नारद जो ब्रह्म तत्त्व रूप पाय बाढ़ो यो सुहायो है ॥ अगम निगम शुद्ध संहिता पुरान पत्र द्वादश प्रशासन ते फेलि सिति कवि कायो है ॥ भाषै रघुराज ज्ञान जोग यदि फुले फूल प्रेम फल पाके पनि पक्षिब लुमायो है ॥ कामना पुजायन को हरि के मिलावन को जीवन को कल्पतरु भागवत मायो है ॥ २ ॥ चारिहु वेद पुरानन को मत संहिता यो पद शास्त्रन चासै ॥ ग्यान यो भक्ति विरागहु जोग जिते शुभ साधन को भूत चासै ॥ भाषत है रघुराज द्रुत सिंगरे उर आवत है अनचासै ॥ श्री मठ भागवतै सुनतै भगवान करै हियरे दृष्टि चासै ॥ मूढ़ विहाल परे जगजाल उख्यौ कलिकाल भुजङ्ग कराळे ॥ व्यापि विषे विषयो प्रतिरोम थके गुनि पाकरि बाधधि जाले ॥ भाषत है रघुराज सुनो न चले कछु अर्थनि मेध न माले ॥ गारुडो भागवतै सुनतै उतरै विष बोसविसे ततकाळे ॥ सारठा ॥ मैं निजमत अनुसार रुक्मिन परिनय को करयो सज्जन करि सुविचार समुझि सुखि दुद है सदा ॥ दोहा ॥ यदि संक्षेपत भागवत जो मैं कियो उचार ॥ कहाँ सुनै समुझइ जु कोइ तेहि नहि

यह संसार ॥ सोरठा ॥ उनाईस सौ चर सात भाईं सित गुरु सतगो ॥ रघो
ग्रंथ प्रवदात, रुक्मिण परिणय नाम जिहि ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री
युवराज बाबू साहब रघुराज सिंहजी देव कृत रुक्मिणी परिणय संक्षेप भागवत
वर्णनो नाम एक विशेषाध्याय ॥ समाप्त ॥ मिर्ती कुशर सुदो ६ सेबल १९१० ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम अध्याय । जरासिंह से युद्ध
करने के पश्चात् कृष्ण का मथुरा निवास । (२) पृ० १९—३२ तक—द्वितीय
अध्याय—कालयवन वध, सौर द्वारिका प्रवेश । (३) पृ० ३३—४८ तक—
तृतीय अध्याय—द्वारावती वधेन । (४) पृ० ४९—६१ तक—चतुर्थ अध्याय—
बलभद्र प्रणय । (५) पृ० ५२—७१ तक—पंचम अध्याय । रुक्मिणी विवाह
संक्रान्ता । नारद गमन । (६) पृ० ७१—८३ तक—षष्ठ्यध्याय—कृष्ण गुप्तकप
चरित्र वर्णन । (७) पृ० ८४—९४ तक सप्तमोऽध्याय—रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के
पास विप्र का संदेश देकर भेजना तथा उसके द्वारा चपनो स्थिति समझाना ।
(८) पृ० ९५—१०४ तक—अष्टमोऽध्याय—रुक्मिणी नवशिक्ष—(९) पृ० १०५—
११९ तक—नवमोऽध्याय—कृष्ण का कुंडनपुर आगमन । (१०) पृ० १२०—१३८
तक—दशमोऽध्याय—कुंडनपुर बलदेवानगमन—(११) पृ० १३९—१५७ तक—
एकादश अध्याय—रुक्मिणी हरण । (१२) पृ० १५८—१७० तक—द्वादश
अध्याय—संकुल युद्ध वर्णन । (१३) पृ० १७१—१९२ तक—त्रयोदश अध्याय—
द्वंद्वयुद्ध वर्णन । (१४) पृ० १९२—२०७ तक—चतुर्दश अध्याय—बलभद्र विजय
वर्णन । (१५) पृ० २०८—२३१ तक—पंचदश अध्याय—कृष्ण विजय वर्णन । (१६)
पृ० २३२—२४७ तक—षोडश अध्याय—द्वारका गमन, रुक्मिणी विवाह वर्णन—
(१७) पृ० २४८—२५८ तक—सप्तदश अध्याय—प्रथम रास वर्णन—(१८) पृ०
२५९—२६९ तक—अष्टादशोऽध्याय—महारास वर्णन । (१९) पृ० २७०—२९० तक—
एकानविंशत अध्याय—षट्त्रयुद्ध वर्णन । (२०) पृ० २९१—३०० तक—बीसवां अध्याय—
रुक्मिणी परिहास । (२१) पृ० ३०१—३१४ तक—इकोसवां अध्याय—संक्षेप
भागवत वर्णन ।

No. 330(b). Raghurāja Śimha ki Padāvali by Rājā Raghu-
rāja Śimha. Substance—Country-made paper. Leaves—50.
Size—12×6 inches. Lines per page—12. Extent—825
Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Śimha, State
Amethi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिख्यते हजूर कृत पदावली ॥
हेरी ॥ मोहत जोहत ज्ञान भयोरी खेलत हेरी ॥ बरिसाने वारी पकरि लई

वाकौ बीच सांको खोरो ॥ चलो नहि कछु बरजोरो ॥ कौनि प.त पट सारो
साजो दामिनि रचो मुकुट सिर छोरो ॥ ऐचि बुलाक नाक नथ दोनो मारन
रचो सिर सेहुर धोरो ॥ मल्यो मूप सुंदरि रोरो ॥ कैचि काकुनो विरचि कंचुको
पहिगयो बाधरो बधोरो ॥ सुंदर कंठ गुलदंद नयो करि के मुक्त मालको
चोरो ॥ दुहुं दिशि दै दै हथोरो ॥ श्री वृषभान हुलारो के ढिग ल्याय करो
घस विनय निहोरो । ठकुराइन यह दोनहि नवल देहु दया कर निज कर छोरो ॥
करो नहि घब बरजोरो ॥ ४ ॥ वेद पुरान विज्ञान विरति तप मेरो मन सिंगरो
विसरोरो ॥ श्री रघुराज सकल जग की कृति बारहु बाहि बहोरि बहोरो ॥
सांवरो नंदको छोरो ॥ ५ ॥

End—प्रबलोको सचि भूपति भवनम् ॥ चारु कुमार जनित सुप शालित
सघन नगर नर गगनम् ॥ लसित पताक कनक तोरण पट शीतल सुरभि सुपवनम् !
श्री रघुराज दान कृत मोदन महिसुर कारित हवनम् ॥ १२३ ॥

छेलन छाह छुपन नहि पैहै लोजै गोरिन जोरो ॥ श्री रघुराज पाज बलदाज
पाये पेलन होरो ॥ घब फागुन बोधो जात घाली कैसे करौ । मूढ़ मायके के
मोहि रोकत आँ कारिके निकरो ॥ श्री रघुराज कहौ करुये तो मैं तोरि पैयां
परो ॥ ल्याइ गुलाल लाल करतें लुकि मैं उर मांहि धरो ॥

Subject—विबिध मोती में राधाकृष्ण सम्बन्धो डाली आदि लीलाओं
का वर्णन ।

No. 331. Manasambōdha by Raghuvamśavallabhadēva.
Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—6½ × 5
inches. Lines per page—22. Extent—1,881 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composi-
tion—Samvat 1912 or A.D. 1855. Date of manuscript—
Samvat 1912 or A.D. 1855. Place of deposit—Lālā Lakshmi
Nārāyaṇa Mārwarī, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री सीतारामो जवति घब श्री मन संवोध लिख्यते
दाहा ॥ वंदौ श्री गुरुपद परस सोयराम हिय ध्याइ प्रेम भक्ति धान्य वत
परमानंद अचिकाइ ॥ १ ॥

श्री गुरुदेव वशिष्ठ जू तुम सब विधि समरथ्य ।

पुरवहु रुचि लखुवाल लयि सिध बहुधरि सिर हथ्य । २ ॥

वंदौ श्री मद्भरत पद नाम सत्य कह थाप ।

राम भक्ति दै पाल मोहि हरहु जगत संताप ॥ ३ ॥

नाम लेत चरि होत छै बहुत प्रताप सपंद ।

बंदो श्री रिपुदहन पद दहु मम सत्रु प्रचंड । ४

End—जो पदार्थ मनचाह जेहि करै रेष सोइ ध्यान ।

लहै सकल फल बांछि जो साधन कम लै मान । ३६

रेपरंग उतपत्ति सब साधन परम अधार्थ ।

स्वारथ मनदायक सुषद प्रेमभक्ति परमार्थ ३७ ॥

सोयराम पद ध्यान यह कह कहु मनहित सोध ।

संत मनो सद मत निरर्षि जो ध्यावै लहवोथ ३८ ॥

मन रैनन गंजन भमहि भंजन जगत् विकार ।

सुहृद् नेमवर प्रेमदा जीवन प्राण खवार ३९

द्रुम साँस पंड सु ब्रह्म मो फागुन सित रविवार ।

दशमो तिथि प्रथमो पहर रघुवो ध्यान पद सार १४० ।

इति श्री मन सेवाय चरन चिन्ह रंग उत्पत्ति बरननो दशमो विलासः

Subject—पृ० १—११ तक । गुरु पद वंदना और सीताराम की स्तुति । वशिष्ठ सहित चारो भाइयों का प्रताप वर्णन । पवनसुत की स्तुति महिमा, शंभु शिवा पद वंदना, मन की शिक्षा, मनुष्य तन की महत्ता और राम भक्ति की मन की शिक्षा । प्रथम विलास में ११६ दोहों में मन बोधार्थ, मनोदेश, (सीताराम की भक्ति से प्रेम वर्णन) पृ० ११—१२ तक द्वितीय विलास में ११६ दोहों में राम नाम अर्थ वर्णन । पृ० २२—३९ तक तृतीय विलास में १७७ दोहों में राम लक्ष्मण का नव सिख रूप शृंगार वर्णन और प्रयंक्तों की विनय । पृ० ३९—५६ चतुर्थ विलास में १९१ दोहों में लीला गुण संक्षेप से वर्णन । पृ० ५७—७० तक—पंचम विलास में १४१ दोहों में परम धाम की प्राप्ति और अर्चंड शिवा का वर्णन, गुण लक्षण नाम, प्रपन्नत्व गुण । पृ० ७१ से ८१ तक भेदति निष्ठकत्व गुण निर्भरत्व गुण, उपाय सुमत्त्व, परतंत्रत्वगुण, अपाकृतत्व गुण, परकांतकत्व, नित्यरंगित्व गुण, परमेकांतकत्व संबंधज्ञातत्व, शेषभूतत्व गुण, शेषप्रद परत्व गुण, समुद्धुत्व गुण, परकाष्ठा गुण, उपायादि स्वरूप बोधत्व, पात्मारामात्म, कृपालत्व, प्रकृत दोहत्व गुण, तितिक्षत्व गुण, सत्य सारत्व गुण, ममत्व गुण, सर्वोत्कारत्व, निर्दमत्व गुण, परकामत्व गुण, परमानित्व, अकिंचनत्व, अनोदय, अमित भोक्तृत्व, परित्यक्तत्व, मकरान्तत्व, अप्रमत्तत्व, गंभीरत्व, घोरजत्व, कलत्रत्व गुण, कठना गुण, मित्रत्व गुण, परमानित्व समुद्धनत्वता, षष्ठ विलास में ११८ दोहों में सेतुगुण महिमा वर्णन । पृ० ८२—९२ तक साठवें विलास में ११५ दोहों में ब्रह्म और जीव सजाति वर्णन । पृ० ९३—१०९ तक—नवम विलास में १४१ दोहों में अर्जो

पृ० १०३—११४ तक चरण रेखा वर्णन. स्वस्तिक, घट्टे घंघ्रि, घट्टकोण, महालक्ष्मी रेख, वज्र रेख, मुसलरेख, हलांघ्रि, सर्परेख, वानांघ्रि, नमरेख, कमल घंघ्रि, स्पंदनांघ्रि, वज्ररेख, जवरेख, कम्पवृक्ष, घंघुस रेख, ध्वजरेख, मुकुट रेख, चकरेख, दंडरेख, नररेख, चमररेख, सिंहासन रेख, जवमाल रेख, मोनांघ्रि, प्रयो रेख, गोपदरेख, सुधाकुंड रेख, त्रिपली रेख, पूर्णचन्द्र रेख, धर्षचन्द्र, सक्तिरेख, विदुरेखा, जवफल, पताका, संसरेखा, घट्टकोण, गदारेख, जोवात्मा रेख, वीनरेख, वेनुघंघ्रि, घनुपरेख, वृनरेख, सरजुरेख, हंसरेख, चन्द्रकांघ्रि, दसम विलास में १४० दोहों में चरण चिन्ह वर्णन ।

No. 332. Śighrabodha by Raghuvaradāsa of Ayōdhya. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—26. Extent—1,092 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1911 or A. D. 1854. Date of manuscript—Samvat 1937 or A. D. 1880. Place of deposit—Thākura Śiva Pratāpa Simha, Kabla, Post Office Jailā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ जेहि को भासा जगत सब भासि सहेउ रस एक । तिनहके पद वन्दन करौ नास्त विघन अनेक ॥ १ ॥ रोहसो तोनो उत्तरा रेवती मूल विचारि । स्वातो भृगुसिंहा मघा घट अनुराधा उरधारि ॥ २ ॥ हस्त सहित ये नषत सब ग्यारह मंगल मूल । समे विवाहे के कहे जाति सब अनुकूल ॥ ३ ॥ इति विवाह ॥ माघ मास में धनपती फागुन सुभगा दोह । वैसाधे शरु जेठ में पति को क्षय है सोइ ॥ ४ ॥ कहि असाह कुल बुद्धि सो अन्य मास नहि लोन । मार्गशीर्ष इच्छा सहित कोइ पाचार्य मत कोन । इति विवाद मास ॥ अमावस रिक्ता तिथी बेलवार विचारि ॥ जन्मभंग मंडात पुनि कूरवार निरधारि ॥ ६ ॥ जतन सहित परित्याग करि कहिगे पंडित ढोम । तब सब कारण के मिले सुन्दर यह संज्ञा ॥ ७ ॥ नन्दा मद्रा जया रिक्ता पूजा तिथि यह जानि । तोनि वृत्त यहि कमहि से प्रतिपद ते पहिचानि ॥ ८ ॥

End—वर्ष चढ़ाई शनि कह बड़े बड़े राहु सौ केतु । यह भुक्ति ये कहि गये पंडित जानन हेत ॥ सूर्य चंद्र एकत्र करि जो संख्या गनि ठीक पौंड देवदू आ कहत हस्त चारि मृत्यु नोक ॥ बाहु घाठ सुख प्रद कहे गर्भ पाच सुप नाश । भुज दो भोग विचित्र कहि चरण दोय है नास ॥ चूल्हो चक्र विचित्र यह वरन्यो रघुबर दास निज बुधबल करतव्य नहि गर्न उक्ति प्रकाश । ज्योतिष वक्ता विदुष अन तिन सो कहा बहोरि चूक चपलता मेदि के देव दाप नहि मोर ॥ नोच जात

अथ नौच मति कलपुग विनसत संग । नहि विद्या अभ्यास कहु जेहि ते होइ उमंग ॥ कोर मास विधि द्वादशी शुक्ल पक्ष सुख वंद १९११ संवत्सर कहे जन रघुवर प्रानंद ॥

इति श्री रघुवरदास विरचिते शीघ्रबोध भाषावर्गे रघुवर मनोरमाख्यं चतुर्थ प्रकरण समाप्तं शुभम् ॥ राम राम राम राम राम श्री हनुमान जी की जय ॥ श्री श्री श्री श्री श्री ।

Subject—Jyōtiṣa gr̥ha śādi ke śubha aśubha lakṣaṇa ।

No. 333(a). Dharamarāja Gīta by Raghavaradāsa of Mirzāpur, District Bahraich. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—170 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Bīṭṭhalādāsa Mahanta, Mirzāpur, Post Office District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः ॥ अथ धरमराज गीता लिख्यते ॥ सारठा ॥ गुरुपद पंकज भूरि वंदन जो चितधरि करै । लखै सुमंगल भूरि रघुवर दास विचारि कह ॥ वी० ॥ बंदौ गुरु गनेस गहुरासन । बंदौ सारद कुहुधि विनासन । बंदौ देवजक्ष अथ अहिपति हरहु कुमति अति देहु सुमति सति ॥ बंदौ सिवसंग उमा पितासिनि । जेहि सुमिरे मति होति सुभासिनि ॥ बंदौ कामभुसुहि उदासी । रहत सदा उत्तर दिसिवासो ॥ बालमोक नारद अट जानो । सुक सनकादि व्यास विवि छैनो । बंदौ संत चरन अघमोचन । जेहि रज परसत होत सुलोचन ॥ मात पिता कर वंदन करहु । तब प्रसाद भवसानर तरहु ॥ जहं लॉग अपर होहि जन जानो । सब कहं बंदत वचन प्रमानो ॥ दोहा ॥ बंदौ ससि उडगन विमल मानु सहित कर जोर । तब प्रताप महिमा सुजस हरै तिमिरि मति मोरि ॥

End—दोहा सम पुनि बिरत काटत गढ़त अति अघिकाइ । दोर्य सोच पंखो एक साइ नेत्र लिहिसि कहि साइ । कहत सब तुम सुनहु मूरुष कोन्ह तुम्हरे साइ ॥ साधु कह जो सांषि काहे सोई नेत्र कहि जाइ खरवा एक महानकं दै तेहि पर लै गये धिराय । रौरव तब कहत वार्ते सुनौ हो जमराइ । ये पापी बड़ पाप कीन्हो मोमे नाहि समाय । कारके सुख डार पाको कहत त्रौ सिरनाइ । अति कुंठ महं साधि ताको तततल नहवाइ । रौरव में डार दोन्हेसि कोइ न भयो सदाइ । सोस निकसत गोथ ठोकहि जन ऊपल मारहि धाइ । अति कठिन कृम

कराल घामे तब जांजर किादिनि गनाइ ॥ ठाल भारति संतजन कोउ सुनत मुरप
नाहि जोव धाहो महा पापो कहै न पतिपाइ । दोहा ॥ या बिधि जमपुर की कथा
कहेउ सुनेउ कबिराइ राम भजहि ते वचहि ते मंगल गुरु मोहि बनाउ ॥ जोजन
रघुवर नाम को जपै सदा हिय लाइ रघुवर ते मंगल कहेउ ते जमते धविजाइ ॥
इति श्री धरमराज गोता रघुवर दास समाप्तम संवत् १९०३ ॥

Subject—पापियों को दंड और धर्मात्माओं को आनंद प्राप्त होने का
वर्णन । उदाहरण दिया है कि एक पापी को खो पतिव्रता धो पति को आज्ञा
पालन अपना धर्म समझती धो, उसका पापी पति पाप कर्म करता और वह
उसको आज्ञा मान कर उसमें सम्मिलित होती रही जब पापी को यमराज लेने
गए तो पतिव्रता खो के सम्मुख उस पापी को न ले जा सके । पतिव्रत धर्म को
मुख्य बताया है ।

No. 332(b). Guruparamparā by Raghavaradāsa of Mirzā-
pur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper.
Leaves—3. Size—7 × 4 inches. Lines per page—24. Extent—
40 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of
manuscript—Samvat 1928 or A.D. 1871. Place of deposit—
Mahanta Bīṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pāhi Sūrjapur,
Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—ॐ श्रीरामायनमः ॥ ॐ स्रग्व्य स्रग्व्य के महास्रग्व्य महास्रग्व्य
के मूल प्रकृति । मूल प्रकृति के बीज षोकार । बीज षोकार के महातत्व ।
महातत्व के आदिमूल । आदिमूल के । नारायण । नारायण के महालक्ष्मी ।
महालक्ष्मी के इच्छा स्वरूप । इच्छा स्वरूप के भुभु जुग सयन । भुभु जुग सयन
के । उजास मुनि । उजास मुनि के जात मुनि । जात मुनि के लोक मुनि । लोक
मुनि के प्रगट मुनि । प्रगट मुनि के गंभीर मुनि । गंभीर मुनि के इग मुनि ।
इग मुनि के अचल मुनि । अचल मुनि के प्रकास मुनि । प्रकास मुनि के नारद
मुनि । नारद मुनि के कष्ट मुनि । कष्ट मुनि के जामुन मुनि । जामुनि मुनि के
हरिनाथ । हरिनाथ मुनि के पुंडरीकक्ष पुंडरीकक्ष के रूपाल मुनि रूपाल मुनि
के गोपाल मुनि । गोपाल मुनि के रत मुनि । रत मुनि के धीरे मुनि । धीरे मुनि
के संतोष मुनि । संतोष मुनि के दया मुनि । दया मुनि के तुलसी मुनि ॥

End—आचार्य । आव आचार्यों के गमासुर । गमासुर के डारा नंद ।
डारा नंद के सुतानंद । सुतानंद के अचुतानंद । अचुतानंद के सचिदानंद ।

सच्चिदानन्द के पुरानन्द । पुरानन्द के दयानन्द । दयानन्द के ध्यानन्द । ध्यानन्द के हरियानन्द । हरियानन्द के द्वियानन्द । द्वियानन्द जी के राघवानन्द । राघवानन्द जी के रामानन्द । रामानन्द के बनस्तानन्द । बनस्तानन्द के कृष्णदास कोहारी । कृष्णदास कोहारी के टोला जी महाराज टोला जी महाराज के शंभु परमानन्द दास जी । शंभु परमानन्द दास जी के गंगाधर रामदास जी भागोरत दास जी भागोरत दास जी के पेमदास । पेमदास जी रामदास जी राम दास के कुबोलदास कुबोलदास के गोवर्धन दास । गोवर्धन दास जी के जानकी दास जानकी दास के सज्जाम दास । सज्जाम दास जी के बाबा जी मंगलदास । बाबा जी मंगलदास के बाबा जी रघुवरदास । बाबा जी रघुवरदास जी के बाबा रघुवर दास मिर्जापुर निवासी लिखा बिद्वल दास संवत् १९२८ में । प्रकाश किया रघुवरदास हरि मंदिरे मिर्जापुर संवत् १९०७ ॥

Subject—रामानुज संप्रदाय के गुरुओं का वर्णन ।

No. 333(c). *Kṛishṇa-charitāṃpita Gītā* by Raghavaradāsa of Mirzāpur, District Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—15 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—406 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Samvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit.—Mahanta Bīṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pāhī Sūrjapur, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः कंद गजल पटपदी ॥ वचा माने या न माने कृष्ण नाम है सच्चा ॥ वेद और पुरान शास्त्र ग्रंथ में जवचा । कुंहुल किरोट मुकमाल सुमग सो । चटक मटक चालु देवि मेरो मन मोहै ॥ कुबरो के बार बन छोड़ि दोनो गोपिका ॥ रघुवर हरि नाम रटो राति दिवस उवो पिका ॥ १ ॥ वचा वेद की यह बात कृष्ण रूप है सच्चा । पूतना लगाइ मोद कहो मेरा वच्चा । कपट भक्ति कौन्हो हरि दोन्हो फल प्रेसा । जाचि मरे जागे मुक्ति पावै नहीं तैसा ॥ राधिका के बहो प्रीति छोड़ि दोन्हो कुल में । कुबरो है नोच जाति बसो कृष्ण टिल में ॥ २ ॥ वचा देविये विचारि कृष्ण नाम है पलोता । करौं दल भस्म मय भर्जुन ने जीता ॥ कृष्ण कृष्ण रटति भई गोपिका । पुनीता कृष्ण चरच प्रीति नहीं काह पठत मोता । भनक भनक भागे देवि पाप वीरनियां रघुवर के हिप लुके संतन सुप दनियां ॥ ३ ॥

End—हरे कृष्ण कहो कृष्ण जेते वृन्दावन वासी । ऊषो प्रनाम कोन सव के सुख रासी । हाथ जोरि बिदा मांगि मधुवन मैं जैहैं । महाराज कृष्ण जो ते जथा हाल कहिहैं ॥ मेरे कछु कहिवे में भेद नहीं जानिये । कृष्णचन्द मालिक है हिय आपु गनिये ॥ नैनन में गोर भरे नन्द विदी कीन्हों । रघुवर सखा परम मधुर जसुदा लै लोन्हों ॥ ३३ ॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊषो मधुवन में । पहुंचे देपे कृष्णचन्द सखा हिय में । अति सकुचे इमो कुसलता पिता मातु मेरी कैसी । गोपी सब प्रेम रूप कहो कुसल जैसी ॥ ऊषो पर मास तुम्है बिन्दावन बोतो । मेरे हिय सोच होइ पावे अधिक मोतो ॥ मधुकर के नैन में गोर डरकि थावा । रघुवर सखा जोग ध्यान मेरा प्रैहो पाया ॥ ३४ ॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊषो रोइ रोइ बोलै । गोपी सब दास भास मिलि हैं न जौलै ॥ हाइ लाल हाइ लाल प्यारे कहि छोटै । देपे पर मास नित्य ली मोहि चोटै ॥ आप की बताय वान जान बहुत भाषा । वे समझे न कोई बात स्याम रूप चाषा ॥ भक्ति को स्वरूप सखे प्रेम धार द्रवो । रघुवर सखा ऊषो सराहत है पूर्वी ॥ ३५ ॥ इति श्री कृष्ण चरिता-मृत गीता रघुवर सखा विरचित समाप्तः ।

Subject—जन्म से लेकर मृत तक कृष्ण का चरित्र ।

No. 333(d). Śrīkṛiṣṇācharitāmṛita Kuṇḍī by Baghuvara Śakhā of Mirzāpur (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—14×5 inches. Lines per page—18. Extent—802 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Mahanta Bīṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ राम जै धुनि ॥ जै जै गुरु देव तिहारी सरना ॥ दोन्हों संप चक्र गरे तुलसी को माला प्रभु ऊई पुंइ श्री तिलक मस्तक पे धरना । जन्म को वास छूटि गई सुनत धवन है सुमेरु हिय में बसा । दीन हरि चरना ॥ वेदइ पुरान शास्त्र सब को बात सुनो मैंने राम रूप गुरु मेरो शिष्य तरना ॥ पाहि पाहि रघुवर सखा सरन स्वामी तेरे हजिये दयाल नेक नजरि फेरना ॥ धरा गुरु वानो धरै नहि धीर वसुमति गई सरन बिधिना के पाहि पाहि हरि मेरो पीर कालनेमि करि मंस कंस पल प्रबल पातकी अधम सरीर ॥ चारि वदन लै सकल देव संग जोर समुद्र तरना गंधार । सब रूप में कक्षा महाप्रभु गोकुल जन्म होइ बनेो धर्मोर । जमुना तट वृन्दावन वासी बहुतक सुनहु बहो सरीर । रघुवर सखा गोलोक निवासो देवकी गर्भ बसे बलवीर ॥

End—कदन लागे ऊँघौ गरमणि छाये । जोग संदेस रावरे भेजे राखे
सुनित रिसाये । हाहाकार कोन हति उर सपियन कदन मचाये बसि पट मान
कहौ मैं बहु बिधि उलटि सो जान लयाये ॥ छै उपदेस राधिका जो को मैं हति
फिरि चलि छाये सुमिरन भजन बसो उर मुरति एक टक पलक न लाये ।
स्वासन सबे उठै हरि हरि बुनि लालन किन बिलमाये । मातु पिता घति दुखित
तुम्हारे नैन मलोन बताये । रखवर सषा प्रसित सब प्रस जन भावन आस
जिघाये ॥ १४० ॥ सुनतै हाल विकल मै लाल ॥ हा राधा राधा प्रिय लाड़िल
कंपित मात गिरे ततकाल । मुरझित होत अचेत छिनै एक मगत भय हिमवन
बेहाल । धरि धोरज कह हमैं राधिका तन दुइ प्रान एक कर ध्याल । तुम जनि
विलग जानियो उधो मो राखे हिय बसे बेसाल । जो राखे को सषो सकल मिलि
रास धलो जिन रचो इसाल । ते सब लौन होइगो मोमें ऊँघौ कछु कवितन ते
काल । नन्द जसोधा कोन्ह तपस्या सो पुरण कोनो बनियाल । रखवर सषा
अनंदित माथा प्रेम लक्षण कर यह ताल ॥ कृष्ण चरितामृत कुंदो रखवर सषा
विरंचति प्रेमधार सागर संपूर्ण संवत् १९०५ लिखी रंगनाथ ।

No. 333(e). Vaidyaka Chittahulāsa by Raghuvarādāsa
of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-
made paper. Leaves—124. Size—14 × 5 inches. Lines per
page—16. Extent—1,860 Anushtup Ślokas. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1903
or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1905 or
A. D. 1848. Place of deposit—Thakura Bīṭṭhaladāsa
Mahanta, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District
Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैदक चित्त हुलास लिख्यते ॥
दोहा ॥ नमस्कार गुरु देव जो तुव पट मुझे भरोस । आपद हिय में ध्याय के लखो
ग्यान को कोस ॥ १ ॥ सरस्वती पद व्यास के भयऊ अनेक सुजान । बाणो मातु
विचित्र कहसत ग्रंथन परमान ॥ रखवर दास विचारि कहै यह वैदक ग्रंथ हुलास ।
जाके पढ़वैवा अधिक जगमें करै विलास । देखि देखि बहु ग्रंथ इलोक अनेक
सुजास । सो भाषा या हुलास है सुनि मानौ विश्वास ॥ पित्त कहौ सर कफ
कहौ बहुरि कहौ जूबात । तोनौ के लक्षण सुनौ सद ग्रंथन विध्यात ॥ पित्तज्वर
के लक्षण ॥ दोहा ॥ कटुक वदन कृत प्यास घति भ्रम मुखी प्रलाप । पित्त कोष
ते जानिय आवत नर को ताप ॥ अथ अश्लेष्मा ज्वर के लक्षण ॥ मुख मोटा निद्रा
नहौ कास स्वांस घति होय । तुषति कह नहि ग्रंथि घति कफज्वर लक्षण सोय ॥

End—महा कल्पादि चुणें । इंगुर सोचा १।, सिलाजीत सुद १।, पारा मारा १।, सोना मायो १।, सोसा मारा १।, रांगा मारा १।, तविश्वर पुराना १।, लेहा मारा १।, चन्द्र गुलाबो १।, मरो चांदो १।, तोनि छार, जवापार, साजीपार, सोहागा मुना सुद, जुगछार, इमली को मुरच, रायो लट जीरा, को रायो छार पार चार चार तोला, सेधौ सांच रसा परोयांसा ये पट्ट पाचों चार चार तोले लेइ मट्टो के पात्र में करि दिया धरि के कपरोटो करै गजपुट मस्म करै । सोठि मिरच पोपरि चार चार तोला सब चुणें इक दिल कर परल में छोटे कपड़ छान करै जमीरी नोवू का रस गारी कपड़ छान लेइ जेना मरि मुगांक १ भाग ना तो चाहि चारि घंसे घंसे अधिक गुन करै । मट्टो को कराहो में चुणें घोरै चुल्हे पर धर सांच देइ । मंद मंद करछुलो काठ को चलावै जब रस सुखै तब निकारि के परल करै मिट्टी के पात में नोवू रस छोटे मंद सांच दे चुर्वै इसो तरह २१ बार चुर्वै ता पोछे चना को घेस माघ फागुन को लेवै चुणें कराहो में धारि मंद सांच देवै इसो प्रकार सात भावना देइ चुन जरने न पावै तब सिद्धि होइ । दुइ रत्तो चूरन दुइ रत्तो लेन भोजन किए पर पाइ भोजन पचे । इति समाप्त शुभ मस्तु ॥

Subject—वैद्यक । हर प्रकार के रोग, उन के लक्षण औ औषधियों का बर्णन तथा घातुओं के भस्म बनाने की रीति ।

No. 333(f). Vaidyaka Sadā by Raghavaradāsa of Mirzāpur, (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—15×6 inches. Lines per page—12. Extant—84 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Mahanta Bīṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामावनमः ॥ अथ वैद्यक सदा लिप्यते । (पक) वैद्यराज श्री चित्रकूट के काशी के पड़ने वाले द्वावड़ देश तोतादर नगरी (श्रीगुह) महाराज के धर्मसाले । साधु संत जहं बहुत विराजे पान पान घानंद करै राजा राव बहुत से चेले धन दै दै भंडार भरै ॥ (जे) विष्णु कांची में जन्म हुआ श्री रामानुज सब कोउ कहै ॥ साधु भक्त को जर उगहिन ते वेद साख सब सत्य लहै ॥ तिनके बंस उजागर जन्मे नाम व्यंकटाचार्य अहै तिनके चेले चेले हैं रघुवर दास कहैं सो कहैं कथा पुरान बहुत से जानै ज्ञानाज्ञान विचार करै परमहंस को विरति गहै हैं दरसन ते दुख दूर करै ॥ जो दुषिया हुप अपन बपानै

तिनको तस उपदेस करै । धरमसोल को बात वषाई दुष हरै सुष भूरि भरै ॥ वेद
बड़े ज्ञानी बड़ कविता टोना जादू दूरि करै । रोगी दोषो भूत संतोषो संमुख बैठ
जाय जरै ।

End—लाक्षादि तेल ॥ पञ्जरो फुरिया दूरि बहावै ॥ सिर को दरद तुरत
मिटि जावै ॥ गरमी पाई धुनि मिटि जावै । गिरत गर्भ नारो धम जावै । सबज
बात को दुख यह मेटै । विसफोटक डवर तुरत भणै ॥ बालक को उदवेग मिटावै
यह लाक्षादि तेल बतावै ॥ मस्तक पीर मिटावै भैया ॥ होय अनंद रामगुन गैया ॥
रघुवरदास का सच्चा खेल यह पड़विन्द नाम है तेल ॥ सोढ मिटाव वादो जावै
तन बुति आवै नारि सुहावै ॥ गरमी मेटै तेलहि मेटै ॥ रघुवर दास कहै सुनु भैया
सुगंधराज यह तेल बनैया ॥ भग संकोचन होयरे भाई लिंग बढ़ावन दवा बताई ॥
स्त्री के कुच ढीले होय ये ताको पुष्ट करेंगे गोय ॥ राधा होय राम मल गावै
गंधर्वा धुनि तान उठावै बिद्या पढ़ै अधिक अधिकाई । बालक मरष रहै न पाई
सरस्वती घर तेल बनावै बालक मरष वेद पढ़ावै ॥ स्त्री कहै वेद को बातें
सरस्वती चूरन के पातै रघुवर दास साधु सो भैया अनमौलिक जो बात बताया ॥
सेग करै सेवा मन लावै मनकी मनसा पूर करावै साधु गुरु घर वैद्यक विद्या है
गुनदायक लायक सदा ॥ इति श्री रघुवरदास विरचिते वैद्यक सदा सम्पूर्ण ॥
संवत् १९०१ ॥

Subject—कुछ औषधियों का वर्णन यथा लाक्षादि तेल, शंख द्रव चूर्ण,
मिरचादि तेल, सुगंधराज तेल, सरस्वती घर तेल जो बिद्या बर्यक है इत्यादि ।
एक एक औषधि कई रोगों में काम आ सकती है ।

No. 334. Śrī Rāma Ākheṭa Kavitta by Raghuvaraśaraṇa.
Substance—New paper. Leaves—5. Size—5 × 3½ inches.
Lines per page—24. Extent—120 Anuṣṭup Ślokaś. Ap-
pearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Bajaraṅgī Simha, Station Rupa Mau, District Rāe Bareilly.

Beginning—श्री मत्सोत्ताराम चरलै शरणं प्रपद्ये ॥ कवित्त ॥ केशरि सो
मोनी भंग भंगरी ललित सोहो झुलत दुसाले छोर मुका सुगाथ के । बनमाला
सुन्दर सुमाल मै तिलक रेख धनु शर विचित्र लोग्हे सखा सब साथ के ॥ नयन
चढ़गारे धुधुगारे केश कानन मै मुख सुखमा को मुख हेरत रतिनाथ के ॥ देखि
ये सबीरी मुख बारी खात साजत है राजत हरीरी पान सीस रघुनाथ के ॥ १ ॥
मद्र मृगमाते भंग बौरावत जोरजंग महापद्य संगन अनंत गजराज हों । पौकि
पौकि आवै मानै संकुशन जोर वारे मद मतवारे प्यारे पोलवान साजहों ॥ जलज

समारी भारी भालरि भक्तेरनि मै मनमै विचित्र घंग घंग कति भावहों । संत
 घराने कहराने चले भूमि भूमि रघुवंशी लाल के मयंद मन नावहों ॥ २४ ॥ कंसर
 की पार भाले वीरन सो मुख लाले सोई सोस पाव लाले लाले जरतारी के ।
 भृगुदो विशाल बांकी हेरन रसाले हाले कुंडल उदंड मारतइ दुतिकारी के ॥
 कर करवालें बंधो पोटन पर ठाले सोई ललित दुसाले उमाले मोल भारी के ।
 लपि लपि बार बार सपन समेत राम मगन विलोक छैल भरत ससवारी के ॥ २५ ॥

End—ललित लावायो हरि गुमरन जात कहो समर सकत जा मंद मंद
 बाल सों । हरित हमेल लसै जटित जवाहिर के रत्न मणि संजरी मरोर
 मणिमाल सों ॥ चूमि चुचकारै सकुलात वायु मंडल को चित उरभाते
 सो छबोली छवि जाल सों । घंग के उठावे राग रंग घंग घंग भापे
 मन मै मरोर रापे लघुवंसी लाल सों । २१ ॥ कर्म कीच काले माले भाग को न
 लेस कह कुमात कराले वाले कर तव पान है । केते घर छाले ते निराले साव
 सजन तें लोक बंद टाले जाले जानत जहाँन है ॥ मन के मगले ताले काम मन
 मोनन के करहित पाले वाले बल्लभ न घान है । छोड़ि रामलाल फिरै करत
 कसाले साले सब मतवाले मतवाले को समान है ॥ २२ ॥ इति श्री रघुवर सगन
 जु कृत श्री रामजु के सिकारी कवित्त ॥ श्री सोताराम सोताराम ॥

Subject—घाखेट समय श्री राम जो को शोभा का वखैन, उनके
 हाथियों का वखैन, राम भरत को सवारी, अख शख सुसज्जित घाखेट
 समय की शोभा का वखैन, अश्व का वखैन, लक्ष्मणजो को सवारी का वखैन,
 शत्रुघ्न को सवारी का वखैन, निमिवंश किशोरों को सवारी का वखैन, शिकारी
 जानघरों का वखैन, तिरहुत राज के राजाघरों का वखैन, देश देश के अश्व घोड़ों
 का वखैन, राम समाज देखने के लिये सखियों को भौड़ का सरयू तट पर खड़े
 रहना घोड़ों को किस और रंगों का वखैन, घोड़ों को गति का वखैन, और
 उनकी सजावट व गद्दों का वखैन, राम जो को शोभा का वखैन ।

No. 335(a). Chikitsāmpitārṇava by Thākura Raghuvāra
 Sīṁha of Alipura (Daraunā). Substance—Country-made
 paper. Leaves—402. Size—9 × 8 inches. Lines per page—
 40. Extent—17,000 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old.
 Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1690 or
 A. D. 1633. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853.
 Place of deposit—Thākura Pratapa Sīṁha, Umarava Sīṁha,
 Village Alipur, Jaitapur Bāzār, Post Office and District
 Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चिकित्सा मृताश्वैव लिप्यते ॥
 मोरठा ॥ गोरि सुवन गणपाल चरण कमल रज शोस धरि । हृजिय नाथ दयाल
 ज्ञान सैन गुण राशि शुभ ॥ हरिगोतिका ॥ एक रदन करियर बदन शुष के शदन
 दुःख विनाशन । पुनि ईश सुत मणईश शोशनि शोशपर्म प्रकाशन । निद्रि सिद्रि
 कारक वृमति हारक ज्योपि भजमन लार कै ॥ हरि चित्र कारक ग्रंथ के कर्क ग्रंथ
 पुरण पाइके । अथ दुर्मिला कुंद ॥ गणपति श्री गिरजा सुवन सकल गुणन के
 निद्रि । अमित तेज तुव रंग में सब विधि ज्ञान प्रसिद्ध ॥ सिद्रिद ज्ञानहि कथत्य
 कविजन मत्यत्य नमित्रहि इत्यत्य क्षुरिकरि मग्गमाजस जेहि दिग्गमतस तेहि
 पत्यत्य बल ॥

End—ग्रंथ छेजन सबल बायु तिमिरि धुंध आदि ॥ हरिगोतिका कुंद ।
 मिरम बोज मुचारि सुरमा स्वेत तोना दोइ सो । बंधारो सुरमा सोमु प्रथ के
 लेइ तोला दोइ सो ॥ चपनाहि तंदुल शुद्ध तुथहि मैन शोपो को गहै । प्रतेक
 मासे एक सो पुनि पत्र शोश कराइये । पुनि काटि सूक्ष्म सुखरिल धरि सो घम्ल
 तिपतौ लाइवे । गहि मरम सो महि विधि जब शोश सब गलि जावई ॥ दोहा ॥
 पुनि सब भेषज एक करि मर्दन करि दिन दोव । बटो बांधि सुबबाइ मेा वासी
 जल मिस लेइ । छेजन कोजे तुमल सो धुंध तिमिर सब लाइ । विथा दुरि दुति
 द्रमल को सोसा समसा प्रगटाहि ॥ इति श्री मम्महाराज कलह वंशावतावस
 ज्यसिदात्मज रघुवर सिंह भाषा विरचिते चिकित्साभूताश्वैव नामा आयुर्वेद
 सम्पूर्ण शुभम् ॥ संवत् १९१० राम राम राम राम राम ॥

Subject—घोषधियों का बखैन तथा यह रोगों की उत्पत्ति के कारण
 और उनको घोषधियां बनाने की विधि और अनुपान चौर फाड़ का कार्य भी
 भलो मांति समझाया गया है ।

No. 335(b). Tulasīharitra by Raghuvara Simha of Ali-
 pur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper.
 Leaves—120. Size—12 × 6 inches. Lines per page—36.
 Extent—2,016 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Char-
 acter—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1910 or
 A. D. 1853. Date of manuscript—Samvat 1955 or A. D.
 1898 Place of deposit—Thakura Harasārāya Simha, Village
 Sarāya Ali, Post Office Kesargāñja, District Bahrāich
 (Ondh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री तुलसी चरित्र प्रारंभा ॥ श्लोक ॥
महेशं रमेशं गणेशं दिनेशं निशेशं दिगेशं गुरुं मारुतं च ॥ सुभक्त्या प्रथयन्माय
भाषा सुगम्या रचेहं यथा धां तथा मोद दातात्मा ॥ १ ॥ अथ प्रदुःख पहरौ
सरस्वतो बुद्धि पदां कल्मष नाशिनोऽश माय पापमुमित्य सुखदां विधात्रीतानौ
मिमूर्द्धा शमबुद्धि हेतवे । तुलसी चरित्रं बहुवृत्ति युक्तं भक्तिप्रदं कल्मषशोध
नाशकं धायुःश्वहंसवरं संनिमिषं सिध्यान्ते सवास्ति गुरु प्रसादात् ॥ तुलसीदास
नमस्कृत्य रामाख्यं कारितं पुरः द्रुज वंशावतंशेन भक्तानां भूषणं सदा ॥ सारठा ॥
चारण मुष गणगाल सुमिर सिद्ध प्रगटावते गौरी सुवन कृपाल कृपा दृष्टि को
कोर करि ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ नमो यक्षतुंडे कहंतं गणेशं नमो मोह मञ्जना
नाशं दिनेशं नमो सुद्धि बुद्धि पतौ ईश जातं नमो कृष्ण पिगाक्ष बुद्धि पदार्त ॥ ६ ॥

End—इति श्री कलहंस वंशावतंस जयसिंहात्मज रघुवर सिंह विरचिते
भाषायां तुलसी चरितामृते नाम षोष्ठ पण्यमो चरित्र समाप्तम् ॥ राला छंद ॥
अधिक अथश्वनिपक्ष कृष्णदि तिथि पण्डीजान वार बुद्ध उदार भाषत यक्षरोहिणी
मान ॥ व्यतिपात सुयोग जानो करौते तिल होय । लग्न वृश्चिक उदय तेहि दिन
दिन पहर गत सोइ । कहौ बत्सर समुमिये अथ बात बात विचार ॥ बहुरि गे
विभु एक करिके मानि १९५५ बुद्धि उदार ॥ वसत बौंड़ी पास गुजबलि विदित
है सब तीर ॥ वसत ब्राह्मण बौर क्षत्री सकल से मति धोर ॥ बौंड़ी रजधानी
पूरब वसत गुजैली पास ॥ बिजै बहादुर सिंह नृप रजधानी प्रकाश कलहंस वंस
अवतंस मे रघुवर सिंह उदार तिनको सोताराम मम पहुंचे बागहिवार ॥ सारठा ॥
जगवंत सिंह यह नाम तिनकी आज्ञा पाइ कै तुलसी चरित ललाम पाठार्थ
तिनके लिपा पढ़ै गुणै मन लाइ भक्ति करै सिवराम की मुद मंगल सरसाइ
सोताराम प्रतापते ॥ दोहा ॥ लिखि रघुवर पूरन किया तुलसी चरित उदार ।
कृपा करत तिन पर सबै कवि पंडित सरदार ॥

Subject—मंगलाचरण गणेशादि वंदना । मारुत सुत मिलन, शिवदर्शन,
विध्याचल राजनक राजा की सुता सुतभा । मुरारीदास से विदा । हरियानंदन
संत, रामघाट मचान, द्विज दरिद्री को महानता प्रगट करना, सत्य ज्ञान, नामा
योगमन, दकन देश (दक्षिण,) चतुर्दश चरित्र नन्दलाल आदि का । श्री गुसाई
जी का कुल जीवन चरित्र छंद, सारठा, सबैरा, कवित्त आदि में बखैन किया
गया है ।

No. 336. Indrajāla by Rājārāma. Substance—Country-
made paper. Leaves—42. Size—13 × 8 inches. Lines per
page—16. Extent—210 Anushtup Ślokas. Incomplete.

Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Place of deposit—Pandita Bhawānī Baksha, Village Dalarā, Post Office Musāfirkhānā, District Saltānpur (Oudh).

Beginning—पृ० १—दोहा—कुमती मोती प्रबोध को नैन को घा घासागाम । सुमती साला सुलो के ता गुह के प्रनाम ॥ एक देवस प्रज्जोष करो राजाराम ने वस इंद जाल भाषा करी बौद्ध रोगनी दवा ।

पृष्ठ ४—दावल वांभ के—एक दोना हाजारातो सालमान ऐनमरा ताखत के ऊपर तब एक प्रबोरातो वांभने पाये के पराज की सकी ऐनमरा खोये सावा-ह्व हमरे लड़िका नाहो होता है सो इसका केम सावय है सो हमको बाठापो तब ऐनमर सेहव बोले की हमको मलुमा ऐह नाहो है तुम बैरेठो ती हम परोयो को बुलाय के पुछैयंग जैवसा होऐगा तैऐसा मालु मालुम होऐगा ।

End—कुसुम के फूल सुखा लेवे तोला एक १ बाहेरा लैके तोला एक, आनार कलो लेवे तोला एक १, समा दवा के पोसी के पानी के साथ नाभा लेइ दोना ७ ती नाक सो लेहु बंद होय जाय बट मोठा पिलावैये राह ॥

Subject—नं० १—३ तक—नाङ्गो परोक्षा (२) पृ० ४—१६ तक—वांभ होने के कारण, निस्त, घोषधि तथा जंत्र । (३) पृ० १७—२६ तक—दवा मसुंद फल की । (४) पृ० २७—२८ तक—दवाई ज्वर की । (५) पृ० २८—४२ तक—भूष को दवा तथा अन्य कई प्रकार की घोषधियां ॥

Note—इस पुस्तक के अन्त के पृष्ठ नष्ट झट्ट हो जाने के कारण सन् संभवत् का कुछ भी पता नहीं चलता, किन्तु पुस्तक के कागज़ चस्मों की बनावट इत्यादि से यह पुस्तक अठारहवीं शताब्दी से पीछे की लिखी हुई प्रतीत नहीं होती । वांभ के लक्षण तथा घोषधियां प्रायः सुनतानपुर में पं० रामप्रसाद मालवीय जी के वहाँ से प्राप्त हुई “काकशास्त्र” नामक पुस्तक से हो मिलती जुलती हैं । ज्ञात होता है कि पुस्तक का बहुत सा भाग नष्ट हो गया है—पुस्तक का वृहदर्श मध्य में है, कहीं कहीं दो एक दोहे भी लिखे गये हैं ।

No. 337(a). RāmaVinōda Bhāṣhā by Rāmachandra Jainī. Substance—Country-made paper. Leaves—73. Size—10 × 4 inches. Lines per page—10. Extent—1,460 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1809 or A. D. 1752. Place of deposit—Thākura Pratāpa Sindhā, Alīpur Darāunā, Post Office Jait-pura Bāzār, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामविनोद पुरुष लक्षण कथ्यते ॥ श्री धन्यन्तरि वरग जुग प्रथमहि धरि प्रानंद । रोगनसन सुमकरन सब जन सो सब सुखकंद ॥ विविध शास्त्र को देखि कै सुगम करहु अधिकार रामविनोद जो ग्रंथ यह सकल जोष अधिकार ॥ ग्रंथ पुरुष लक्षण कथ्यते ॥ दोहा ॥ चतुरवदन सुम लक्षण सुन्दर रूप सुजान वैद बोलवे जो आवे मिश्र वचन प्रमान ॥ दोह पुष संग वैद के सगुन जाग परभाइ । एक पुरुष संगै चले वैद बोलवे जाइ लक्षण इस विधि छ करहु चिकित्सा जाइ ॥ ग्रंथ सुम गुन कथ्यते ॥ चौ० ॥ कन्या अष्ट वर्ष परमान । वृषभा जोरि हस्ती परधान, मोन ऊराम दधिया के घोना । विप्र तिलक मुपबोले बेना ।

End—घरघ को डकैल के पतै चकवण के दूध मौ मेवे तेहि पोछे घटा को बूकी डारि देइ । पाछे एक माटी को तुर धारिये के बीच धरि देइ धरिया बंद क के फूँकि देइ ॥ घरघ जब बैजनी रंग आवे तब जानिये कि सुधा है ॥ नाहन ता दूसरि दफा फेरि खेल करै । द्वितीय प्रकारै तृतीय प्रकारै सिद्धि होइ ॥ इति श्रीराम विनोद वैद्यक शास्त्र सम्पूर्ण जेठ मासे सुकुल पक्षे तिथी हरि वासरे संवत् १८०९ सन् १२५९ जस पत्रा देशा तस लिषा ममदोषन द्वियेते ॥ सुध ग्रामुधि बुधजन लेहि विचारि । जगनाथ हरिचरन चित धरि वैदक लिषा बाचारि । सीताराम हनौमान स्वामी सदाइ सदै रहौ राम राम ।

Subject No. 337 (b) में देखो ।

No. 337(b). Rāmavinōda by Rāmachandra (Padmarāga Śiṣhya). Substance—Country-made paper. Leaves—212. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—3,014 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1859 or A. D. 1802. Place of deposit—Lālā Rāmādhina Vaidya, Nawabganja, District Bārā Ban̄ki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ ग्रंथ रामविनोद भाषा लिख्यते ॥ दो० ॥ सिद्धि बुद्धि लाइक सकल गारो पुत्र गणेश । विप्र विनासन सुषकरन हयधारि प्रणमस ॥ श्री धन्यंतर चरण जुग प्रणमोचरि प्रानन्द ॥ रोग नसै जा नाम सो सब जन को सुषकंद ॥ विविध शास्त्र को देखि कर सुगम करौ अधिकार ॥ रामविनोदहि ग्रंथ यह सकल जोष सुषकार ॥ चतुर विचक्षण देखि नर सुंदर रूप सुजान ॥ वैद बोलवैन आवहो मिष्ट वचन कहि वानि ॥ फल वस्त्रादिक छेद कर धरै जो वैद्य हजूर । रिक पानि नहि जाइये दल गारो लजि दुरि ॥

End—अथ मान प्रमान लिप्यते ॥ जुगुत मान जाने विना कवहु इव्य प्रमान । ता कारन यहु जो जान कहु मते अनुमान ॥ चौपाई ॥ जालंतरि गति दोस मान ॥ तिसमें सूक्ष्म रासु पिछान ॥ तिसका बपराती समाजान । म्यानी सोख कहौ प्रमान ॥ तिनु परिमानु का बंसी नाम ॥ पटवंसी इक मरी का नाम ॥ पटु मरीचो कराई कराई । त्रिहु राई इक रूपे पथाय ॥ दोहा ॥ कुडव भंजल इक नाम ॥ दोनु कुडवे ससरावक है ॥ सरावक मानि कसाम ॥ दोइ सराव के कहौ भंख ले ॥ भंजलो टंक चौसठो कहाई ॥ सरावक भाव बोस सौथाई ॥ दोसति पट पन प्रस जगोस ॥ आठक सहस एक चौबोस ॥ चिहु भावक दान प्रमान । दो सुप को दोनो इह भाषी ॥ चिहु द्राणी इक पारो टांषि ॥ छरा सहस्र पल छानो-नुपरि ॥ इतनो भार मान पुनि चित बरि ॥ शत पथ सथा तुल प्रान ॥ रामविनोद कियो बपान ॥ सारठा ॥ द्राणि मनक को चार दामन कहिये सुप को ॥ पारा साल मन भार ॥ सर एकतालिस द्राण भनि ॥ मापहु तारा जहु ॥ पारा परजंत लगिननु चतुगुण गिनलहु ॥ ज्योतरं तथा विधि ॥ रामानतनो परमान ॥ सारंगर सारखा कहा जोश अनुमान ॥ रामाविनोद विनोद सो ॥ इति श्री रामाविनोद समाप्त ॥ सबत १८५९ कार्तिक मास कृष्ण पक्ष दसमा तिथा वार गुरुवार लिप्यत रूपचंद पांडे ॥ कांसव गात्रे कलवार पाथम लाला पूणैमल तस्य पुत्र नंदलाल ने लिखवाई × × × ×

Subject—(१) प्रथम उद्देश्य—पृ० १—५ तक । पृष्ट संख्या—विवरण ।

गणेश वन्दना, धर्मंतरि वंदना, वैद्य को बुलाने को विधि । नाडो चंष्टा लक्षण, असाध्य लक्षण । मूत्र पराक्षा, पित्त कफ वायु क उत्पत्ति का कारण और निदान, ज्वरों के नाम और लक्षण, पित्तज्वर, पेटज्वर । वायुज्वर, कालज्वर, सांतज्वर, रक्तताप लक्षण, कामज्वर, ज्वर प्रमाण ।

(२) द्वितीय उद्देश्य—पृ० ६ पृ० २३ तक—

सर्वज्वर, पाचन, भोजन, आहार-ज्वर, पेट, वायु, श्फटिक, कफ, रक्त, शकादिक, दुतिय, तृतिय, नित्य, ज्वर, चतुर्थे ज्वर, सांतज्वर, जोरज्वर, विषम-ज्वर, हारिद्रक ज्वर, प्रमुखादि उपाय, चूने उपाय, गुटिका, बुरा भोजन भवलह, काय प्रमुख ।

(३) तृतीय उद्देश्य—पृ० २४—५३ तक ।

द्वितीय आधिकार, वात पित्त, कफ प्रमुखादि निदान, उपाय, वायु, कफ, लक्षण, वायु कफ उपाय, तरह सन्निपात, उत्पत्ति, उनके नाम, तरह सन्निपात को परम धातु, लक्षण, मोर्षा, उपाय, काय, गोली भोजन, चूने चौपथ उपाय लेप

प्रमुषादि सर्वात्रिदाय, घ्राणघ, धनुष वात, मृगोवात, चौरासो वात को काय सुधौरा लक्षण, घ्राणघ, उपाय, मंत्र, सर्वविधि, वृंथ, सुदर्शन चूर्ण ।

(४) चतुर्थ उद्देश्य—पृ० ५४—९२ तक ।

अतिसार निदान, लक्षण, वात पित्त वायु कफ इष्टेषमा, ग्राम, अतिसार निवाहो, सर्व अतिसार चिकित्सा, ग्रहणी रोग निदान, लक्षण, चिकित्सा, अजीर्ण लक्षण, उपाय, छिमि का लक्षण, घ्राणघ, रक्त, क्षुद्र, चिकित्सा, रक्त मुख नासा, रोगर पड़ता हो, रक्त श्रवें उसका उपाय, राज यक्ष्मा का लक्षण घ्राणघ, कास लक्षण, उपाय, स्वांस निदान, लक्षण, उपाय दिक्का उपाय, स्वर भेद लक्षण, उपाय, पक्षि उपाय, क्षुद्रि लक्षण, घ्राणघ उपाय, वात पित्त कफ क्षुद्रि तुष्णा लक्षण उपाय, क्षुद्रो के उपाय, मूर्च्छा निदान, उपाय, मद, विभ्रम उपाय, दाहल, उपाय, उन्माद निदान, अपस्मार उपाय, बंध केष्ट ।

(५) पंचम उद्देश्य—पृ० ९३—१३९ तक ।

वायु उत्पत्ति, लक्षण, उपाय, घ्राणघ, भंगहोन, कटि शूल, वायु उपाय, मस्तक, भ्रम, पीड़ा, अकडो, वायु की कांट शूल सेधान, उदर पीड़ा, उर्धवात, कंधन वायु, वायु गति, पुनः वात रक्त निदान, पुनः सुपतः मेढल कष्ट उपाय, गलित कुष्ट उपाय, स्वेत मेढल उपाय, कुष्ट उपाय, भर स्थंभनु उपाय, ग्रामवात निदान लक्षण, उपाय, पुनः, शूल निदान, वायु शूल उपाय, पित्त शूल, वायु गुल्म निदान लक्षण, उपाय मूत्रकृच्छ्र निदान, लक्षण, पुनः रिदै रोग निदान लक्षण, उपाय, पथरी, मुजाक, सर्व प्रमेह, निदान लक्षण उपाय, मेदा, लक्षण, उपाय, वातादर, पित्तादर, कफादर निदान, उपाय, पुनः साफादर, लक्षण, उपाय, ग्रीवा का उपाय, वातु सोज, पित्त सोज का उपाय, कफसोज निदान उपाय, त्रिदाय सोज उपाय, जलोदर, कठोदर, साफादर उपाय, उदर विनमास चिहट का उपाय, उदग्रद आडा का उपाय, कीडोः नागर विसकंट उपाय पुनः कंडू का उपाय, विस्फोटक बरुडो विसर्प श्रोपद उपाय पुनः क्षुद्र का उपाय, गंडमाला का उपाय, भूतदम का उपाय, अगरो उपाय, पिमास उपाय, कर्ष रोग, कर्ष पीड़ा का इलाज, सूय वात का उपाय—

(६) षष्ठ उद्देश्य—पृ० १४०—१७५ तक—

मृगो का उपाय, जानु या डमरू का उपाय, हड को खान प्रतिकार, सर्प विष उपाय, वृद्धिक विष उपाय, शास्त्र घातापाय, मेहन उपाय, बालक अतिसार चिकित्सा, नाल पीड़ा का उपाय, शंठवृद्धि का उपाय, घाव फोड़ा, पाका, उसका उपाय पुनः बंध का मुटिका, निद्रा घाने का प्रतिकार, मुख दुरगंध का उपाय, इंतारो मसो घ्राणघ, केश कल्य उपाय, केश वर्द्धन उपाय, केश होने का उपाय,

अग्निदग्ध का जल का उपाय, नारायण तैल, विषगर्भ तैल, वृद्धि विषगर्भ तैल, भाङ्गादि तैल, मिरचादि तैल, क्षार तैलादिकार रोमनास उपाय, कल्याण घृताधिकार, चिकनादि घृत, यमलादि घृत, सुंठी पाक, सुपारी पाक, नालेर पाक, गुवरु पाक, मूसली पाक, यमगंध पाक, लडपन पाक, चन्द्रहास रत्न, सर्वरोग निवारण ।

(७) सप्तम उद्देश्य—पृ० १७६—२०७ तक—

मदनमोद कामेश्वर गुटका, काम कौतूहल गुटिका, प्रत्तरीधं धर्म गुटिका पुनवल बंधेत्र कौ बलबोर नाम गुटका, सिद्ध वाहिनी गुटका, धातु क्षोण का उपाय, नामदत्त का उपाय, मतवोर्ये सबोर्ये गुटका, हन्तकर्म का उपाय, वोर्ये बंधेत्र का लेप, रूभन का लेप, लिग डड़ करण लेप, लिग पोड़ा का उपाय, भग संकोचन उपाय, कुछ विलास्य मेला खो पृथ्य घाने का उपाय, ऋतुगम माइन उपाय, सेतान उपाय, गर्भ रहने का उपाय^१।

ग्रंथ समाप्त ।

(८) अष्टम उद्देश्य पृ० २०८—२१२ तक ।

नाहो परीक्षा ।

No. 338. *Punyāśrava Kathā* by Rāmachandra (Keshavānanda Deva Muni ke Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—470. Size— $14\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Extent—11,780 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1793 or A. D. 1735. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागावनमः ॥ अथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिप्यन्ते ॥ श्री वीरंजिनमानम्य वस्तु तत्त्व प्रकासकं । वर्ये कथा मयं ग्रंथं पुण्याश्रव विधानकं ॥ १ ॥ दोहा—वर्धमान जिन वंछ कै तत्त्व प्रकासन सार । पुण्याश्रव भाषा कहं मय्य जीवन हितकार ॥ २ ॥ सुमजीवन को हित चाहत करत भासा काज । सो गुरु मम हिरदै वसौ तारन तरन जिहाज ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ प्रमोसादर माय स्वादवाद लखन सहित । जिहि सेवत अथ जाहि धर्म ध्यान वाडै अचिक ॥ ४ ॥ प्रथमहि पूजा को कथा कहौ अष्ट विधि ज्ञाय । ताके सुनत मुजान कूँ जिन पूजा रुचि होय । एत दर्ब जिन पूजिया मालिन सुता अपान । प्रथम स्वर्ग हरि की प्रिया भई पुन्य परवान ॥ ५ ॥ सकल बात ताको कहं पूरव उक्त प्रमान । हिये हरप उपजै अचिक सुनै मय्य धरि कान ॥ ७ ॥

End—ध्यान अमल पर ज्वाल सातिया कर्म काठ सब थाला । केवल ज्ञान उपाय भविक परमोध गये सिव साला । निराकार निरंजन पद धर अष्ट महागुन लाया ॥ बाधा रहित कहत नहि थावै सातमोक सुष साधा ॥ ६५ ॥ कवित्त छंद—इम उन अगिनि ल्याव भनेटो पराधोन उर धरउ कंत । एक अकुलता तिह चित्त सेनो दान दियौ पनियर इह भंत ॥ गिरसे गिर जिन धर्म अघिष्टा देवी है विमल हो अनंत ॥ जो स्वाधोन दान दै नित प्रति नहि संवध सरराज लहंत ॥ ६६ ॥ सारठा छंद ॥ पावन देवो दान सह दुषद लुधत जियत ॥ दया बुध हिय ध्यान ॥ दोनै जोग निगम मना ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ ऐसा जानि गानि जिनवान ॥ दया ठान धान उर धान ॥ दोजै दान कृपनता भान ॥ उत्तम मध्यम अध्व्य निदान ॥ ६८ ॥ दोहरा छंद ॥ दान तना अधिकार यह ॥ पूत भया सुजान ॥ चहु बिधि कौजै सक मम ॥ भौवह करै कल्याण ॥ ६९ ॥ इति श्री पुण्याश्रव विद्याने ग्रंथकर्ता केशवचंद्र दिव्य मुनि सिध्या रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्तम् ।

Subject—(१) पृ० १—८४ तक—प्रथम अधिकार । देव पूजन की आवश्यकता और उसका महत्त्व । आठ व्यक्तियों को पूजा करके उत्तम फल पाने के उदाहरण स्वरूप आठ कथाओं का संग्रह ।

(१) मालो की पुत्रियों का स्वयं प्राप्ति करने की कथा । (२) पीतांबर का एक राजा को देव पूजन करते हुए हर्ष मान कर उसका अनुमोदन करने के फल स्वरूप यक्ष होना । (३) नागदत्त का मेढ़क हो जाना और एक मुनि के आदेश से उसको रानी वरदत्ता का उसे ले घाना और समन शरण आगमन समय उसकी पूजा करने पर उसका वैकुण्ठ धाम पाना । (४) भरत नृप चरित्र कथन अर्थात् भूयण वैश्य के पुत्र के प्रभाव से भरत नृप होना । (५) रत्नशेखर चक्रवर्ती की कथा, पूजा के प्रभाव । (६) धनदत्त ग्वाल की कथा, जिन पद पर कमल चढ़ाने के प्रभाव से मर कर भूपाल होने का कथन । (७) वल्लदत्त चक्रवर्ती की कथा । (८) श्रेणिक की कथा ।

(२) ८५—पृ० १२८ तक—दूसरा अधिकार ।

नमस्कार मंत्रों की महिमा संबंधी ७ कथाएँ ।

(१) सुषोराय की कथा । (२) बंदर चामन भवधरि निर्वाण प्राप्ति कथा । (३) चाण्डाल सेठ की कथा । (४) धनिद तथा पद्मावती की कथा । एक नाम नागिनि के कान में नमोकार मंत्र पढ़ने के प्रभाव से उनका धनिद तथा पद्मावत होने का कथन । (५) हथिनो की कथा, भोकार के प्रभाव से उसका सोता होना । (६) नमोकार के उच्चारण करने से एक घोर का सुख पदवी पाना । (७) एक राजा ग्वाला का नमोकार उच्चारण द्वारा कामदेव की पदवी पाना ।

(३) पृ० १८२—पृ० २०६ तक—तीसरा अधिकार । श्रुति श्रवण फल संबंधी ७ कथाएँ ।

(१) आगम कथन मन से सुनने के कारण सुर सुख पाये हुए बाल राजा की कथा । (२) भा मंडल का आगम श्रवण करने के कारण चको समान हो जाना । (३) आगम के श्रवण से जमराजा का मुनि पद ग्रहण, (४) एक चंडाली का श्रुति श्रवण करने के उपलक्ष्य में चौथे जन्म में सुखमाल होकर स्वर्गपद पाना । (५) भोमकवली की कथा । (६) चंडाल कूकरी की कथा (७) सुकौशल की कथा ।

(४) पृ० २०६—२४४ तक—चौथा अधिकार । शोलाधिकार गुण वर्णन संबंधी कथाएँ ।

(१) मेघेश्वर के शोल की कथा । (२) कुमेर प्रिय शोल की कथा । (३) सीता के शोल की कथा । (४) प्रभावती के शोल की कथा । (५) वज्रदत्त की कथा । (६) नीलो बाई सेठि पुरी के शोल की कथा । (७) चंडाल के शोल की कथा ।

(५) पृ० २४५—३४५ तक—पाँचवाँ अधिकार । उपवास संबंधी ७ कथाओं का वर्णन ।

(१) नागकुमार, (२) भविष्यदत्त, (३) अशोक रोहिनी, (४) नंदमित्र (५) जामवती कृष्ण पटरानी । (६) ललित घटा (७) शौर यज्ञ चंडाल की कथाओं द्वारा बृत महात्म्य समझाना ।

(६) पृ० ३४६ से ४६७ तक—छठी अधिकार । दान कथा संबंधी कथाएँ ।

(१) शान्तिनाथ की कथा—एक जन्म में दान करने के प्रभाव से बारह जन्म तक सुख पाने और अंत में तीर्थंकर पद पर पहुँचने की कथा । (२) जय-कुमार तथा सुलोचना की कथा—दान के प्रभाव से ऋषभ के कैवल्य ज्ञान होने के समय जयकुमार का गणवर पद पाना और सुलोचना की स्त्री लिङ्ग छेदन कर सुर पद पाना । (३) वल्ल जंबू नृप की कथा । (४) सुकेत राय की कथा (५) आत्मक द्विज की कथा—दान के प्रभाव से मेडलोक पदवी पाना । (६) नल नील की कथा । (७) लौ बेकुश की कथा । (८) टशरथ राजा की कथा । (९) भा मंडल की दूसरी कथा । (१०) सुसीमा—कृष्ण पटरानी की कथा । (११) कृष्ण की पटरानी गंधारी भव की कथा । (१२) गौरी रानी-श्रीकृष्ण की पटरानी की कथा । (१३) श्रीकृष्ण की प्रभावती नाम धारिणी, पटरानी की कथा । (१४) धन्यकुमार का चरित्र वर्णन । (१५) सामशर्मा की स्त्री प्रमिला की कथा ।

Note—ग्रंथ निर्माणोद्देशादि ।

पाचारज त्रियधर मिललाप । कोन्हो तास संस्कृत भाष ॥ तासु वर्चनिका रूप सुधारि । दौलतिराम कथा बुध सारि ॥ तासैं भाव सिंह निज छन्द । पारंग कियो चौपाई बंद ॥ शील घधिकार ताई उन जेअ । भेजि दियौ लिखना हम पौर । मली कथा लषि के हम लिखौ । तेते काल सिंह वह भयौ ॥ भैरोंदास पुन्य परकास । देखा ग्रंथ अधूरा पास ॥ मोसैं बना संपुन करौ । भारत कहू न मन में चरौ ॥ मैं भाषा भाखूं सुख मान । जा कर लगै पुराण पुरान । तब उन कहूक समैं मैं खोज । मोपैं भेज दिया लहि चोज ॥ दोहरा—हूँ धौ कर्म संयोग सै, पर सेवा में लौन । जा किन धिरता नित गहो, बित जुत रचना कोन ॥ ग्रंथ बड़ौ मोमति ठनुक ऐसा बना नियोग । हंस निवार सुधारियो, बिनऊँ पंडित लोग ॥ ग्रंथ निर्माण कालः—एक हजार सात सौ बानवे मानिये । चैत सुदी द्वितीया दिन नोका मानिये ॥ तादिन पूरन कोन ग्रंथ जियराजने । मंगल करौ सकल समाज ने ॥

No. 339(a), Charaṇa Chinha by Rāmacharāṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—12×4 inches. Lines per page—18. Extent—252 Anuṣṭup Ślokaṣ. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Thākura Adita Simha, Village Saraiyā Ali (Mevāsīmha), Post Office Kaisarganj, District Bahraich (Oudh.)

Beginning—श्रीरामानुजायनमः ॥ चंचरो छंद ॥ रामचन्द्र चिन्ह चिन्नु सब विधि सब सुष साजै । रघुवर के चरण कमल धेकन जुत निरपु प्रमल धारे पद चिन्ह राम संतन हित काजै ॥ रामचरण दाहिन स्रै सोतापद वाम चिन्ह बिश चारि स्वास्त काष्ट कोकश्री विराजै ॥ हल मृगल सर्पवान चम्बरारष्ट पंचजान वज्र जब उर्द रेप कश्यप विर्य छाजै । शंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन दंड चमर छत्र पुरुष माल जब दक्षिण पद साजै ॥ गोपद छिति छट पताक जंबुफल घर्घ इन्दु शेष पटकोण लगदाजि विन्दुराजै ॥ सरजू शक्ति शुधा कुंड त्रिवली मीन पूरचन्द वीन धनु धनुष तन हंस चन्द्रिकाजै ॥ सोयराम चरणौ शुभ चिन्ह अष्ट चालोस नित चिन्तत शिवनारद शनकादिक सहिराजै रामचरण ध्यान करत गोपद हव जक निरत विरति ज्ञान भाँक भरत सज्जत संत समाजै ॥ १ ॥

End—चंचरोक छंद ॥ सोयराम चरण चिन्ह जिन्ह जिन्ह संतन मन भाई । जेते सब चिन्ह लसत जानकी के नयन बसत जासको कटाक्ष विनु न मिलत बंधु

गोसाई ॥ निम्नानाम विधि महेश नारद शुक्र सनक शेष रामचरण चिन्ह सदा
नेति नेति साई ॥ छोड़ि सोय रामचरण जो बत जो मोर सरन गुंजा को गहत
मुहु पारस बिहाई ॥ दंपति पद पदरूप होइ रहु चित बलि प्रभुप बक पापंड रहु
विवेक कह शनाई ॥ श्रुति उदार कहत तोहि दासो निज जानि मोहि जानको
विद्वान नैक चरण शरण लाई ॥ रामचरण मनबरोर मानत नहि कहा मोर मारतु
मोहि विनु गुनाह जानको दोहाई ॥ ५७ ॥ रामचरण सब भेक गुन एक साथे
फल होइ । चिचकूट चित में कसै जागि रहै कि सोय ॥ चिचकूट चित भेक प्रभु
लपत प्रेम को वाढ़ि । रामचरण तेहि संत को भक्ति गोद लिये ठाढ़ि ॥ इति श्री
चरण चिन्ह सम्पूर्ण शुभ मस्तु लिख्यते रघुवर शरण पाठार्थ महाबली के शुभ ॥

Subject—राम के चरणों की महिमा ।

No. 839(b). *Dṛiṣṭānta Bodhikā* by Rāmacharaṇa Dāsa.
Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—12
× 6 inches. Lines per page—16. Extent—336 Anuṣṭup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—
Santāna Murau, Village Airiyā, Post Office Pipari, District
Bahraich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण दृष्टति विनु
मन न लहै श्रुतबोध । सहस बात को बात एक कहौ प्रथ सत सोध ॥ रामचरण
श्रीराम को बंदत सब सुख पाय ॥ जैसे सोचि मूलको हारपात हरियाय ॥ राम-
चरण प्रभुरूप बहु राम भजे सब तुष्ट । यद्य प्रसन मुखमें लिय । हाथ पाव सब
पुष्ट ॥ रामनाम सुमिरत सकल राम मंत्र फल सोय । रामचरण जिन रहनते
सकल दृष्टि को बोध ॥ रामरूप धिर हूँ लपत ब्रह्मजोष लपिणाय । रामचरण
रवि लपत हो मंडल धाम सुभाय ॥ रामचरण रवि प्रभा ते रवि मूर्ति लपि जाय ।
तिमि निजरूप प्रकास से रामरूप दर्शाय ॥ रामचरण सतसंग विनु नहि जवाहिरी
होय ॥ तन मन बचन विलाय नहि रहत सदा सतसंग ॥ रामचरण फल एक में
जय छूट जल रंग ॥ रामचरण सतसंग में परा रहै नहि जाय । कबहुं कौ सुरसरि
बढ़ै जा जल लेय मिलाय ॥ रामचरण सेतन परसि तोनिताप भिटि जाय । जिमि
मलबा तनु परसने विष भुजंग सितलाइ ॥

End—रामचरण जिय सकुचि बढ़ि चहत मिलौ रघुराय । जिमि विमि-
चारि पति निकट पग पग चलत होराय ॥ रामचरण जग पांच दैव चतु पागे हरि
पानु । रामचंद्र की चंद्रिका निज स्वरूप पहिचान ॥ निज स्वरूप पर रूप लपि पग पग

चलत घनंद ॥ रामचन्द्र तब दूबहि प्रभु देखिचंद मनचंद ॥ जगत तजे प्रभु भजे
 विनु मिटहि न जिय को पीर । रामचरण विनु धनुष के तजे लगे किमि तोर ॥
 रामचरण जगवासना तब लागि सुख न होय ज्यों मद के घट मरे कछु पावन
 किहि विधि होय ॥ लोकलाज अमिमान सुख तब लागि हृदय न राम । रामचरण
 नूप क्यों वसै जहाँ मलोन लघुयाम ॥ लोक मान को अमिनि में धर्म कर्म जरि जाय ।
 रामचंद रघुनंद को कहना नारि बुझाइ ॥ यस कहना करिहौ कवहुँ रामचरण
 पर राम । तब स्वरूप जल मोनमय मरो विछोहत नाम । यह दृष्टांत सत बोधिक
 सतक विरह के संग । रामचरण तेहि समझ रहु राम न छोड़िहि संग ॥ इति श्री
 दृष्टांत बोधिक विरह संग वरननोनाम पंचमो सतक । माघकृष्ण पक्ष त्रिधौ
 चतुर्दश्याम मंगल चासरे संवत् १८९५ टसखत रामप्रसाद मुराऊ ग्राम बासी
 देवाय का पुरवा ॥

Subject—रामकृष्ण यादि की महिमा पर दृष्टान्त । पृ० १ से ५ तक
 विवेक लक्षण, पृ० ६—९ तक वैराग्य लक्षण, मर्यादा लक्षण, पृ० १०—१२ तक—
 शरण लक्षण, निश्चल, दया, सत्य, उदार, ऐश्वर्य, पशु, १३—१७ तक रामनाम
 लक्षण, १८—२१ तक, विरह के लक्षण ।

No. 339(c). *Drishtānta Bodhikā* by Rāmacharaṇa of Ayo-
 dhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—
 6½ × 5 inches. Lines per page—34. Extent—300 Anuṣṭup
 Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
 manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—
 Śrī Mahanta Bābā Rāmacharaṇadāsa, Chandra Bhawana,
 Payāgapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 339 (b).

No. 339(d). *Padāvali* by Rāmacharaṇa of Ayodhyā.
 Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—12½ × 6
 inches. Lines per page—20. Extent—1,485 Anuṣṭup Ślokas.
 Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
 Nāgarī Prachārīṇi Sabhā, Kāśī.

Beginning—श्री अवध सरजू सोतारामाभ्यांनमः । श्री गणेशायनमः ॥
 दोहा ॥ बाल विभूषन नील तन जग अथार कछु हाथ । रामचरण मोइ उर वसै
 बालरूप रघुनाथ ॥ १ ॥ महिसुर आरत देखि प्रभु कहौ विधिहि दै बोध । अब मरि
 हौ अवतार ले कोन्हेसि सेंट विरोध ॥ २ ॥ सत स्वरूप दशरथ अवध तहं पैहौ निज-
 रूप । रामचरण जय जय कहत गय निज भवन अनूप ॥ ३ ॥ राम राम ॥ हरिप्रिया

कंद ॥ राम रामकली ताल पकताला ॥ दूसरथ चितत नित सदोर्न । द्विप गवन
गुर भवन विलंबित नमित चसोर्व बोली गुर परचोन जै जै राम लला ॥ १ ॥
विधि हरि वंदन चंदन सिध सुप कंद ॥ निगमदस मुनि रसि नक्ष महि दृष्ट
निकंद ॥ सोइ सुत तव कुन चंद जै जै राम लला ॥ २ ॥ गुर रुप गक्षत्रि सुसिति
रंग बनाइ—धिष्ट जनने सद स्वजनसु शृंगो विविदि बाला ॥ सुत हित जज
कराइ जै जै राम लला ॥ ३ ॥

End—रघुनंदन की यह बानि परो ॥ गलिय चलत मुसुकात खबोला
नयन के वान ते प्रानहरो । अहं देपो तहं पडोइ रहनु है मैं सपी लोक की लाज
हरो । रामचरण सपि निरपु नयन भार काज लाज सब भार परो ॥ राम श्री ताल
चाताला धूपद ॥ परम पुरुष परमेश्वर परब्रह्म परेस शुंदर चति श्री सोता रवन
देपो नयन को फल निव के हृदय वासनानि सब विधि शुभान सुप कवि भवन
मुकसन कहनु मत ध्याइ जेहि न्वै नित पाय पय जोति इंदो दोइ भवन ऐसे रघुवर
के चरण परे रहय ते सकल गुन निधि रामचरण दुपदवन पुस्तक पदवलो समात
पोधि लिपी श्री सोठाराम राम पुस्तक पडावलो शृंगार श्री गोसांई रामचरण
किते ॥

Subject—श्री रामचन्द्रजी के भक्ति विषयक स्फुट कंद ॥

No. 339(e). Balakāṇḍa Rāmāyaṇa para Tika by Rāmacharapaṇḍāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—1,562. Size—13½ × 6½ inches. Lines per page—11. Extent—19,525 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1877 or A. D. 1820. Date of manuscript—Samvat 1917 or A. D. 1860. Place of deposit—Tālukedāra Balabhadra Sirmā Sengara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ विधेशा ब्रह्म पूर्ण निवत रसमयं
सच्चिदानंद सत्य । कल्याणांशनेत दिव्यात्मक गुण विलसत्सर्वतो मित्र रूप ॥
जोवानांमा निवता रमति गुण मयाचितव शक्ति परेश । राम कैदार मूर्ति विपुर
गुणनिधि जानकोश भजेम ॥ १ कृत्वा वै गुरु वंदनां श्रमते मया लक्ष्यवेद स्मृति
पौराणं स्वधिया यथार्थे भणितं चा वैश्य वै संहिता ॥ जोव यद्यमयं चिकांड
रचितं जिज्ञासु बोधोपनं ॥ सारं प्राप्य तपोभिराम चरणा वेदांत चुडामणिम् ॥
दादा—बंदी श्रीकर जानको रघुनंदन सुखदानि । रामचरण ससमाज युग सर्व
सुमंगल बानि ॥ ३ ॥

End—मर सतन की मनहंस जहाँ मुकुता गुणराम चुनै सुखसो । कवि
 काविद की विसरामयलौ सब शाख सुमंगल मय सुखसो ॥ रघुवीर स्वरूप सदा
 दरसो सुख की सुखसो दुख की दुखसो ॥ जगजाल की राम चरनसो असो
 रघुवीर कथा तुलसो उरवसो ॥ ४ ॥ सब को मत एक करो तुलसो सिवा-
 राम स्वरूप में मानि धरो ॥ तेहि प्रिय को अर्थ कियो भति जो यह सिधु सुधा रस
 भूरि भरो ॥ सर मानस राम चरित्र तहां गुण कोरति दिव्य उठै लहरी । सिव-
 राम समोपहि वास करै जोइ रामचरण स्नान करो ॥ ५ ॥ दोहा—पष्यपुरी
 पूरण भयो सुमग जानकी घाट । रामचरण गुम तिलक कृत सत समाज को
 ठाठ ॥ ६ ॥ सेवत अष्टादस सुमग सत्तरि अर्ध सपाख । १८७७ । रामचरण रितुराज
 तिथि पंच शुद्ध बैसाख ॥ ७ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि विष्वंसने
 बालकांडे श्री सीताराम विवाह श्री अयोध्या विश्राम परम उत्साहो परमानंद
 त्रेलोक्य मंगल बल्लन नाम सतपंचासत सारेणः ॥ बालकांड समाप्त रामचरण
 तिल कृत मूल तिलक की संख्या १९२० ॥ श्री मन्वृपति विक्रमादित्य राज्ये
 गताका १९१७ मार्गे शुद्ध पंचम्यां लिखित मिदं पुस्तकं चितामणि ॥

Subject—रामचन्द्र की बाल्य अवस्था, सीता जो के साथ विवाह होने तक ।

No. 339(j) Rāmāyaṇa Ayodhyā Kāṇḍa para Tikā by Rāma-
 charaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper.
 Leaves—696. Size—14×7 inches. Lines per page—12.
 Extent—10,440 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old.
 Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of
 Composition—Samvat 1881 or A. D. 1824. Date of manus-
 cript—Samvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—
 Tālukedāra Thākura Balbhadrā Sīma Sāgara, Village
 Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥ अनाक्षरी
 कवित्त ॥ तुलसीकृत मेष स्वाति जोग धर्म ज्ञान सारलि प्रेमनोर चातक मधुर
 चित्त मन है । कामधेनु दिव्य सोपि दुग्ध भाव प्रीति स्वाद तोष पुष्ट जोष वस
 देव रामजन हैं । धर्मिन्ह की धर्म सिद्धि जोगिन्ह की जोग सिद्धि ज्ञानन्ह की ज्ञान
 सिद्धि भक्त भक्तिधन है । रामचरण श्री मद्गमायण श्री राम ऐन रामनाम
 लोला श्री रामसोय तन हैं ॥ १ ॥ क्षीर सिधु पष्य कांड पूरण पे भरत भाव सस
 विज्ञान विष्णु रमा रामनाम है । विरह अथाह स्वरूप इंदु प्रेम सुधा राम रूप
 चिन्तामणि भक्ति धेनु काम है । भरत की जोग वैराग्य ज्ञान ध्यान तप आदि गुन

दिख भूरि जलचर को घाम है । रामचरण सरनागत सोय मोती कृपा राम भारत
तंगी सोच उमगै सुदाम है । २ ॥

End—भरत भजन रवि उदै लोक बस भुवन चारि दस । मोह धविधा
निसा नास जागि जोय एक रस । काम कोय मद होम चार निश्चर गति नासो ।
ज्ञान जोग वैराग्य धर्म सर कमल प्रकासो । श्रीराम धराऊं राजते पूरन नाति
धनोति गई । श्रीरामचरण अद्यापि लखु राम चरण जेहि प्रीति मई ॥ २ ॥

इति श्रीरामचरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने श्री अयोध्या कांडे
भारत के अवधि वैराग्य विवेक पट संपाति पट सरनागत भाव भक्ति अखण्ड एक
रस वर्नेन नाम एकानविंशति स्वरंग ॥ २९ ॥

दाहा—असौ एक सन आठ दस सेवत सावन पूर्व । अवधकांड के तिलक
मो रामचरण रति हर ॥ ३० ॥ सेवत १९२३ सिसिर रिती माहात्म्य फागुन
कृष्ण अष्टम्यां बुधवासरे लिखित मिर्द पुस्तक मातादीन पांडे अखान जोगी ।
पठनाथं गुरुप्रसाद राम त्रिवेदी ॥ स्वार्थे वा प्रमार्थे वा ॥ श्रीराम ॥

Subject—रामविवाह पश्चात् युवराज पद देने के समारोह से लेकर
चित्रकूट में निवास पार भरत का मनाने जाना पार निष्फल होट जाने तक ।

No 339(g) *Birabāṣataka* by Rāmacharaṇa. Sub-
stance—Leaves—12. Size—9 × 4½ inches. Lines per
page—16. Extent—144 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old.
Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasi Rāma
Śrīvastāva, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दाहा ॥ रामचरण पञ्चरक्तक राम
सरण रस देइ । होह नान्ह हूँ रज मिले अयो चूबक गहि लेइ ॥ १ ॥ रामचरण
हृष्टांत यह जो सगुन मन लाइ । बसाहि राम हिय मग्ननाइ मुक स्वाद जिमि
पाइ ॥ २ ॥ रामचरण बिनु विरह प्रभु मिलु न कस्य चलि जाइ । बलत सोहागा
प्रथम जिमि तव कंचन मिलि पाइ ॥ ३ ॥ विरह यमिनि निसि दिन जरै सहै वाज
असिधार । रामचरण खुबोर जन सती सर एक वार ॥ ४ ॥ राम विरह दिमि
मन जरै मूल बीज सब जाइ ॥ रामचरण जो ज्ञान जह दायागिनि हरि भाइ ॥ ५ ॥
चिंता विरह को अभिन हूइ रामचरण सो विचार । चिंता जगबै मृतक को
विरह जिप्रत नितजाह ॥ ६ ॥ रामचरण दुष मिटत है जो सर लगी शरीर । राम
विरह सर हिय लगे तन भर कसकत पोर ॥ ७ ॥

End—निजस्वरूप पर रूप लपि पल पल चलत अनन्द ।

रामचरण तब द्रवहि प्रभु देपि चन्द मनिचंद ॥ २६ ॥

जक्त तजे मभु भजे विनु मिटै न जिय की पीर ।
 रामचरण विनु धनुष के तजे लगे किमि तीर ॥ १७ ॥
 रामचरण जग यासना तव लागि सुख न होइ ।
 ज्यौ मर के घट भरी कछु पावन केहि विधि होइ ॥ १८ ॥
 लोक लाज अभिमान सुष तव लागि हृदय न राम ।
 रामचरण नृप क्यों वसै जइ मलीन लघुधाम ॥ १९ ॥
 लोक मान की अग्नि में धर्म कर्म जरि जाइ ।
 रामचरण रघुनंद की करुणा बेगि बुझाई ॥ २० ॥
 अस करुणा करि हो कबहुँ रामचरण पर राम ।
 तव स्वरूप जल मोन में मरी विछोहत नाम ॥ २०१ ॥
 यह दृष्टांत प्रबोधिका शतक विरह के संग ।
 रामचरण तेहि समुझि रहु राम न छोड़हि संग ॥ २०२ ॥

इति श्री दृष्टांत बोधिका का विरह संग संगेन नाम पंचमः शतकं ॥ राम
 राम राम राम राम राम राम ८

Subject—१—विरह शतक की महिमा, विरह शतक के दृष्टांतों की महिमा, राम विमुख रहने की क्षान्ति वगैरे । राम के भक्तों को उनके विरह में जो दशा हावों है उसका वगैरे । राम भक्ति से दुखों को निवृत्ति, मद का वगैरे, सुरति वगैरे । विरह संग का वगैरे । वरिह का वगैरे । धर्म सूर का वगैरे । धर्म की महिमा वगैरे । विरह की तीन दशाओं का वगैरे । राम के बिना रामचरण की दशा राम के प्रति कवि की विनती । राम विरह में मन का वगैरे । कुसंगति का फल वगैरे । राम के ध्यान का वगैरे । महंकार का वगैरे । बुद्धि सुधरने के लिये कवि की राम से विनती । मन शुद्धि के लिये राम से विनती । सुरति को बढ़ता का वगैरे । काम बोध और लोभ का भक्ति से रोकने का वगैरे । राम की शरण के लिए विनती । कानों को राम गुण गान सुनने में लगने के लिये विनती । राम स्पर्श के लिए विनती, राम स्वरूप देखने में आँखों के लगने के लिए विनती, राम कार्य में हाथों के लगने के लिए विनती, राम रूपो तोर्य में पैरों के चलने के लिए विनती, राम के चरणों में सिर लगने के लिए विनती, मन क्रम वचन से राम के प्रति भक्ति का वगैरे । विषय के त्यागने और राम भक्ति का उपदेश, राम का वचन सिधुतद पर शरणागत को तारने में हम को निदा । अपराधों की क्षमा के लिए प्रार्थना, राम विरह में कवि दशा का वगैरे, राम को लोना की महिमा वगैरे । राम की प्रतिमा का वगैरे । राम के मिलने की इच्छा का वगैरे । राम भक्ति बिना संसार में जीना व्यर्थ है । राम के बिना कवि की आकुलता का वगैरे । वसंत ऋतु में राम विरह में कवि

दशा का वर्णन। पति के बिना जो दशा पत्नी को होती है वही दशा राम बिन्दु में रामचरण की है। राम शरण में जाने में भय संचार का वर्णन। बिना राम भक्ति के शान्ति नहीं मिलती इसका वर्णन। राम के बिना जगवासनाओं की निवृत्ति नहीं होती। लोकलाज अभिमान और सुख की वासनाओं का तब तक जो हृदय में वास है जब तक राम विमुख हैं। रामचरण की राम के प्रति प्रार्थना, अन्य नाम वर्णन।

No. 240(a). Pānī Rāmācharaṇājī ki by Rāmācharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size— $4\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—18. Extent—1,260 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Harbansa Rai, Post Office Tikāri, District Rae Bareilly.

Beginning—अथ स्वामी जो ओ रामचरण जो को वांछी लियै । नमो राम रमती तन मे गुरदेव सुखामो ॥ नमो नमो सबसेत नव रति भये जुनामी ।। जन के चरणों हेठि रहे नित सास हरार ॥ तन मन धन घर प्राण कहे नवकावरी सारा ॥ राम सेत गुरदेव विनि नहीं मोर आधार ॥ रामचरण कर जोहि के बंदे बांखार ॥ १ नमो राम रमती सकल आपक सख नामों ॥ सब पाप प्रतपाल सुवन का सेवक स्वामी ॥ करुणो भई करतार करम सब दूरि निचारे भगति बिह्वलता बिह्वद भगति ततकाल उचारे ॥ रामचरण बंदन करै सब ईसन के ईस जगपालक तुम जगत गुर जग जीवन जगदोस ॥ २ ॥

End—राम पारतो ॥ पारति रमता राम तुमारे ॥ तुम सँ लागो सुरति हमारी । टेक ॥ रमता राम सकल भर पूरा । सुखि भूल तुमारा नूरा ॥ १ ॥ पारति सुमेरु सेवा कोजे । सब निरदोष ग्यान गढ़ लोजे ॥ २ ॥ पेहो पारति पेदा पूत । राम बिना दरसते नहीं हुआ ॥ ३ ॥ सिध मनकादिक सेस पुकारे । पेहो पारति मे सागर त्यारे ४ रामचरण पे पारति ताके । अठ सिधि नौ निधि सेरो जाके ॥ ५ ॥ पारतो ॥ पारति अलप पुरस अविनासो । पूरण मझ सकल प्रकासो ॥ टेक ॥ रमता राम सुरति के स्वामी । अनह अमूर्ति अंतर जामी ॥ १ ॥ सुरति मूर्ति आदि न अंतर । सर सुखि रति सब बरतता ॥ २ ॥ चौदा तीन लोक पतिसाही । सप्त दोन नव पंड हुहाई ॥ ३ ॥ बार बार कहै थाहा न आवै । सुमरि सुमरि जन मद्धि समाई ॥ ४ ॥ सेवा सावि पंचद मेरा । रामचरण चरणों का चेरा ॥ ५ ॥ पद ॥ ४७ हुतो पद संपूर्ण ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—२ ॥ राम स्तुति, गुरु और अन्य संतों को बंदना ।
 पृ० ३—६—राम को महिमा वर्णन । सूर वही जो इंद्रियों का दमन करे और
 काम, क्रोध, लोभ, मोह पर विजय प्राप्त करे तथा राम के चरनों में सदा भक्ति
 रखे ॥ ७—९ । धर्म में दृढ़ता का उपदेश हंस, चकोर, चात्रक के गुणों का उदा-
 हरण । और प्रह्लाद, नामा कबोरदास को दृढ़ता अर्थात् दुःख रूपी कसौटी पर
 कसने से जिसको दृढ़ता पूरी उतरै वही सच्चा भक्त है । १०—१२ ॥ जिस प्रकार
 पतिव्रता स्त्री विमचारियों के बोच में पड़ी हुई भी सदा पति प्रेम में ही रत रहती
 हैं और अन्य पुरुष को तरफ़ निगाह उठा कर भी नहीं देखती उसी प्रकार सच्चा
 भक्त अनेक मत मतांतर से घिरा हुआ भी केवल अपने इष्ट हो का स्मरण करता
 है । १३—१५ । जो लोग अनेक देवी देवताओं का पूजते हैं उनको तथा व्यभि-
 चारिणी स्त्री के समान है जिसको कभी शांति नहीं मिलती और जिस प्रकार
 व्यभिचारिणी को घुरी हालत होती है उसी प्रकार वह मनुष्य सदा भटकता
 रहता है । इस लिये अपने एक इष्ट हो में सदा लवलोन रहे ॥ १६ । उसी
 मनुष्य को बुद्धि सदबुद्धि है जो राम में सदा लवलोन रहता १७—१८ । दुर्बुद्ध
 मनुष्य वही है जो काम क्रोध लोभ मोह आदि संसार के भ्रमणों में पड़ा रहता
 है और राम से विमुख रहता है । १९—२१ । राम को सत्यता और उनसे सब
 वस्तुओं और परमपद की प्राप्ति तथा राम महिमा वर्णन ॥ २२—२४ प्रकृति
 और ब्रह्म का उपदेश इन गुण मायाजाल से प्रलग होकर केवल ब्रह्म में
 ही लवलोन रहना चाहिये । २५—२६ । जिज्ञासु के गुण लक्षण २७—२८ । साधु
 के लिए दया धर्म का उपदेश । २९—३५ । माया का विस्तार से वर्णन ।
 ३६—सुमिरण विधि ३७ । साधु लक्षण । रामभक्ति करने से लाभ ३८—और
 विमुख रहने से हानि का वर्णन । ३९—४३ । राम जपने का उपदेश । ४४—४५ ।
 दरिद्री, दुखों, निर्धन, निर्बल के केवल राम ही बल हैं—४६—५० । साधु संग
 का फल । राम की उपासना से ही जीवन लाभ है—५१—५३ गुरु महिमा
 वर्णन । ५४—६४ । राम नाम का प्रताप वर्णन । ६५—८० । चैतावनी के छंद—
 ८१—८४ । दश इंद्रियों और मन का सम्बन्ध वर्णन और उनका कर्तव्य—
 ८५—११४ भक्ति रस के गाने योग्य कुटुम्बर पद ।

No. 340(b). *Kārajāna* by Rāmacharanādāsa of Dīḍa-
 vānā, Jodhapura Rājya. Substance—Country-made paper.
 Leaves—4. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14.
 Extent—68 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Charac-
 ter—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1757.
 Place of deposit—Śrī Mahanta Gopālādāsa, Dīḍavānā, Jodha-
 pura Rājya, Post Office Dīḍavānā, Rājputanā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काल ज्ञान लिख्यते ॥ उत्तरेयउ
वाच ॥ सावधान हरिदास रहाई । जो रैन दिना हरिसो मिचाई । मृत्युकाल को
सदा विचारै । देखि उपद्रव बेगि समारै ॥ जानि मृत्यु को पहिले हो राई ।
जोगेश्वर न्यारा होइ रहई ॥ देह गेह ममतादिक त्यागे । निरालंब होइ कहीं न
लागे । लागे तहां जहां ते पाये । हो चलरक वेद भागवत गाये । पारब्रह्म
सरिले चलि जाई । जे परिष्ट देखि सावधान रहाई । सो परिष्ट तोहि कहि
समभावत । जिनते मृत्यु को समै लपावत । जो शुक, अरुंधती ध्रुव नहि देखै ।
तथा देव मारग नहि देखै ॥ अथवा ससि छाया ससि माहीं सो वरसते ऊपर जोवै
नाहीं ॥ जाहि किरण होन सुरज दरसावै ॥ अग्नि सर्व समान लपावै ॥ सोतो
जोवै एकादस मासा । विचारि पहले हो होइ उदासा ॥ जो छादै मृतै विष्टा-
कराई, सो वन रूपै वै मन जाई । प्रतच्छ अथवा सपने माहीं । सो मास दस जोवै
चागै नाहीं ।

End—इतो उपद्रव सदा विचारै । रात दिवस क्विन क्विन हि समारै । ये
घोर उपद्रव टरत जुनाहो ॥ मत कोई एक पुन्य करि टरि जाहो ॥ किसहो एक
टरि जाई ॥ परि हरि रति भूडो सत करि पुन्य केवल राई । कोई एक परिष्ट
जिस उपद्रव को जितनो परमाना । मास धावै । कालको गति लखो नाह जावै ।
रहै एक शुभ स्थाना ॥ निरालंब होइ साधै दिवस पय तीनौ निदाना ॥ जब लग
पावै । तब सावधान होइ वपु छिटकावै । ध्याना ॥ जब मृत्युकाल को पवसर
सब से ले उलटाय । प्रेम प्रीति सरधावत देहा । वपु छिटकावै सावधान होइ ।
ज्ञान भाषा ग्रंथ संवत् १७९४ कार्तिक मासे जोगी हरिसन हेत लगाय ॥ इति काल
लिपि जैपुर शुभ स्थाने लिपिकतायां गंगाराम शुक्ल पक्षे तिथि अष्टमी गुरु वासरे
निरंजनी वैष्णव । पवनार्थे उपदास जो महंत जायपुर राज्य ग्राम गद्दी डोडवाना
शुभ भवतु ॥

Subject—मृत्यु का समय और उसकी परीक्षा । देखो No. 340 (c).

No. 340(c). Kāla-jñāna by Rāmacharanpadāsa of Dīdā-
vānā. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—
8½ × 6½ inches. Lines per page—36. Extent—60 Anushtup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—
Papdita Nāgesarji, Post Office Fakharpur, Village Banaka-
pur, District Bahraich (Oudh).

Note—Details as in No. 340 (b).

Subject—पृ० १—३ तक—काल का ज्ञान कराया गया है कि मनुष्य अपनी मृत्यु को किस प्रकार जान सकता है। जो शुक ग्रहयतो—ध्रुव, देव मार्ग चन्द्रमा के काले चिह्न न देखे वह १ वर्ष से अधिक नहीं जी सकता। जिसको सूर्य में किरण न देख पड़े, अग्नि में गर्मी न जान पड़े वह ११ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो स्वप्न में मल मूत्र या क़ै करै सोने रुपये पर मन जावे वह दस महोने से अधिक नहीं जी सकता। जो भूत पिशाच आदि देखे वह ९ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो साधु असाधु न जाने जिसको प्रकृति पलट जावे वह ८ मास जीता है। कपोत, काक, उल्लू, गृध्र जिसके सिर पर बैठी या काक पर मारी वह ६ मास जीता है। शमर अपनी छाया उन्नीचे देखे तो ४ मास जिन्दा रहता है। जो बिना कारण दक्षिण दिश विजली देखता है, इन्द्र चक्र जल में देखे वह दो मास जिन्दा रहता है, जो घृत, तेल आरसी में अपना सिर कंधे पर न देखे वह १ मास जीता है। जिसका स्नान समय पर हिरदा पहिले सूखे वह दस दिन जीता है। जिसको हवा अथवा गर्मी अच्छी न लगे उसको मृत्यु तत्काल होती है। लाल वस्त्र पहिरे लो गातो बजातो दक्षिण दिशि ले जावे उसको मृत्यु निकट है। जो नम्र, स्वेताम्बर देखे अथवा हंसा देखे उसको मृत्यु तत्काल जानिये। दांत में दांत घिसै अथवा खाते खाते न लुप्त हो जल बिना नदी देखे दिन में तारे देखे उसका अल्प जीवन है जिसके नाक कान टेढ़े पड़ जावे अथवा बाया नेत्र बड़े ऊंट गदहे पर सवार हो कान न सुने उसको मृत्यु तत्काल है। जिसको पांख की जोति घट जावे या अग्नि में गिरे या तलवार से मारे सो सात रात जीता है। गुरु ब्राह्मण की निन्दा करे या माता पिता की निन्दा करे या अपने पूज्यों की निन्दा करे उसको मृत्यु आई समझना। जब मृत्यु निकट जाने तो दान पुण्य ईश्वरायन में लगे तो अरिष्ट दूर हो सकते हैं।

No. 341. *Dāna Lila* by Rāma Datta Brāhmaṇa of Guṣṭjaulī. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—10. Extent—70 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1855 or A.D. 1798. Place of deposit—Thākura Jagadeva Simha, Village Guṣṭjaulī, Post Office Baundi, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः

देहा ॥ ममपति जो शुभ करण है सुमिरत सब संसार। लोला गोपी कृष्ण को करोनाथ विस्तार। १। जेहि सुमिरे संसै मिटे होत सदा आनंद। देवन हित अवतार हरि नंद कइवाते नंद। २। भुजंग प्रयात कुंद। जेहि पात मो कान्ह

जसुवा जगाये । सबै गोप गोपी मनो द्वय पाये । मंत्रन किये ध्यान पूजा मगारी ।
वागेश जे संग सौ चाह भारी । धरे मोह के मुकुट धानंद कंदा । मली भांति
राजे मनो कोटि चंदा । मली भांति केशरि तिलक माल राजे । कहै लाल परो
सो लोकै विगाजे । अरुण लेल कुंडल विराजे दो करे । मनो जुग द्विवाकर सबै
भांति पूरे । पधर विष दाढ़िम दशन बोन सोहै । हंसनि लेत मोलै कते काम मोहै ।

End—कोई चीर त्यागे चलो नग्न वाला । बजै प्रेम वंसो मली चित्र
साला । कोउ मैन छाड़े न बालक निहारे । उगो सो तकै वे कदंबन को डारै ।
कोई लोटे भू पर गिरै हैं अघोरा । फिरै कूँज कानन न जानै सरोरा । भई मान
होनो सबै ब्रज को नारो । धरे ध्यान वंसो लगो तान भागे । जहां जाय मोहन ने
बंशो बजाई । तहां ग्वालनो वे फिरै पकु थाई । किये मंद सर्वासुरो वृज चंदा ।
धको सी निहारै परो काम फंदा । जाइ चित्त भावै । सोई कान्ह कोत्रे । हरित
बांसुरो को हमै शब्द दीजै । उतारो दहो दान दीन्हो सुकार । हंसो गुजरी
कान्ह वंशो बजाई । दोहा ॥ रामदत्त सुमिरत कदा गिरधारी वृजराज । चरन
कमल हृदै वसै दीजै विदुष समाज । स्मरता । पूरण पूर्ण इन्दु अर्ध गते नृप
विक्रमा । धान तक ख नग इन्दु । शाक मनित प्रवान मति । सम्पूर्ण शुभं

Subject—श्री कृष्ण का गोपियों से दान मांगना ।

No. 342(a). *Dayā Vilāsa* (*Sabbajīta*) by Rāmadayā.
Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size— $8\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—24. Extent—1,725 Anush-
tup Ślokas. Incomplete. Appearance—Good. Character—
Nāgarī. Place of deposit—Thākura Mahābīra Baksha
Simha, Talukedār, Village Koretharā Kalā, District Sultānpur
(Oadh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा । एकदन्त सुत कंत हरहरा
हरन दुष सोग । मेरो बुधि प्रजात शिशु वृद्ध करन तिहि योग । १ ॥ रामदया
जांचत तिन्है चरन कमल करि नेहु । कोविद के मन स्रवन को वाक अर्थ प्रिय
देहु । २ ॥ सकल ग्रंथ को अर्थ ले महा बुद्धि को धाम । रामदया संघह कियो
समाजोत धरि नाम । ३ । समाजोत जातैं कियो रामदया चित लाइ । मूख
पंडित होइ हैं कि कोन्है कंठ सुभाइ । ४ ॥ समाजोत यह ग्रंथ को नाम धर्यो इहि
रोति । समय समय के अर्थ कहि लेइ समा सब जोति । ५ । मधि के नाना ग्रंथ
को लहो जहां जो उक्ति । सो सब भाषा में धर्यो कह्यो अनुक्ता युक्ति । ६ । बुद्धि
ज्ञान चैतायनी धोरज धर्म सुदेश । नैति अनेति सबै कह्यो भूपति को उपदेश । ७ ॥

पुण्य प्रसार प्रसिद्ध वन दंड अनुग्रह जाहि । परि सासन नासन प्रजा प्रिय भूपति
सा चाहि । ८ ॥

End—(४) राग माला खंडः—अथ सप्त सुरनाम । यत्र ऋषभ गंधार औ
मध्यम पंचम जानि । धैवत बहुरि निषाद पुनि ये सुर सात वषानि । सात सुरन
को समुक्ति चित सुरति होत वार्डस । रामदया भाषा धरो जानि लेहु इकईस ।
अथ वार्डस सुरति के नाम—कवित्त—निषा कुडैतो मुद्रा कुंडोवनो रंजनो विचारि
बुधि रति का विशेषिये । जानिये रउद्रा कोधो वज्र औ प्रसारिनो है प्रीतिमज्ञा
भृति रिक्ता भृति चित लेषिये । संदोषनी घालापनी कहो रोहनी औ रग्या
मंदनी सुदृष्टा उमै रामदया पेषिये । सहित छोम निकाये भृति कहो वार्डस में
सात सुरमा हंन-बहो को गति देषिये ।

(५) वैदिक खंड—अथ नाटिका भेद चौबोला खंडः—दक्षिण कर घंगुठा
की जर पर घंगुरी तीन धरि जै । प्रथम पित्त फिर कफ पुनि वार्ड कम हो ते
लोष लोजै प्रादि घांगुरी लगे पित्त कफ दूजो घंगुरी कहिये । तीजो घंगुरी
बाह जानिये नारि लक्षण लहिये । मेढुक काम कुरंग चाल जो चले पित्त को
नारो । पंढुक मेर मराल नाटिका कफ को चले विचारो । बाह नाटिका
चित दै देखा सांप जोक गति जैसो तीतर लवा बटेर नाटिका सन्निपात को
ऐसो होइ नाटिका भति हो चंचल ताप जानि ये हो मै उपजै पित्त कम बाह
जान विधि सो सब भांति कहो मैं । १०

(६) शालिशोष खंड—श्लेष्मश्वर लक्षण । दोहा—तन तातो व्याकुल
अवन नाक स्थिरता नैन । अघर अघर से लो जल श्लेष्मश्वर को चैन । चौपाई ॥
उपचार । मिरचै जोरो सेधो नैन चौचा चाम सोठि छै तैन वज्र अतीस
पोपरामूल मधु सो सानि समै सम तुल पाव तीन बाज कहु देहु प्रश्लेष्मश्वर
छुटै तेहु ॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २१ तक—सर्वनीति प्रथम खंड ।

(२) पृष्ठ २२ से ४१ तक—ज्योतिष भाषा ।

(३) पृष्ठ ४२ से ५८ तक—सामुद्रिक खंड ।

(४) पृष्ठ ५९ से ६६ तक—रागमाला खंड ।

(५) पृष्ठ ६७ से ९९ तक—वैद्यक खंड ।

(६) १०० से १२६ तक—शालिशोष खंड ।

No. 342(b). *Sabhājita Sarvanīti* by Rāmadayā. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—11. Size—16 × 8 inches.
Lines per page—18. Extent—140 Anuṣṭup Śloka.

Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दाहा । एकदंत सुत कंत हरहरा हरल
दुप सोग । मेरा बुधि अज्ञान सिधु बुद्धि करन तेहि ज्ञान । १ ॥ रामदया जानत
तिन्है चरण कमल करि नेहु । केविद के मन अवन को एक पथे प्रिय देहु ।
सकल ग्रंथ को ग्रंथ ले महा बुधि को घाम । रामदया सेग्रह समाजोत धरि
नाम । समाजोति जाते कियो रामदया बित लाइ । मूरप पंडित होत जेहि काने
कंठ सुमाइ । समाजोति वा ग्रंथ को नाम धर्यो यहि रोति । समय समय के भेद
कहि लेइ समा सब जोति । मधि के नाना ग्रंथ सब लहि जहां जो उकि । सो
सब म था मे य गो कहि पशुका लुक । बुधि ज्ञान चेतावनो धोरन धरि सुदेष ।
नोति अनोति सबै कदा भूप । का उपदेश । उक्त पात रति को प्रवल प्रांत पालक
परिवार । मुरत नहि छुरि समर मे कुरकुट समर बिचार ।

End—कवहुं न निकरै जतन सो तेल पेरहु भूलि । मूरप को मन चोकनो
होय न कवहुं भूलि । एक वोज पर जाय रहु सहस पवन श्रुति चाक । भुजा देखि
पंडिताश्ये सुवा सेव मत जाक । मैं पहिले हो हो लप्यो निकरत मे चक फूल ।
चातप तोप तुसार को आन न बहुत समोर । सुप सुपमा स्वारथ कहा बसे करोल
हो कोर । मूरप सोपै सोप सो कुसल प्राप्पुहो जानि । तिहि सिपाय सकै यजो
मूक महा तनु ज्ञान । घटत अधिक सा पुरुष है धारित घटे ना देपु । उड़गन इक
सा रह शशी नसै बड़े परबेष । विषे परे पर पुरुष को विभा होय सुप जाल ।
अजुन सो पापने हुं फूले फले रसाल । भूषन भाजन मामिनी विभा न भूलाल ।
साचि सचि मरै अनेक जनु भुगवै लै भूपाल । संतत एक हरिचन्द्र नृप राधे ।
क्षितिज ससेत । सुर पुर मे नर नारि पसु सुकुर स्वान समेत । इति श्री सभा
जोति समय सारे सबै नोति बरनन रुमासह लिषा शिष्यचरण बाजपेई
संवत् १९२१ पूस मासे शुक्लपक्षे तिथौ पंच, वां मंगल वासरे लिपत सोतलमसाद
सधुवापुर के पठनाथे ।

Subject—राजनीति और समानोति ।

No. 342(c). Sabbajita Jyotisha by Dayarāma. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—10. Size—16 × 6
inches. Lines per page—18. Extent—220 Anuṣṭup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—
Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office
Sasāiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः अथ भाषा ज्योतिष लिख्यते । परम पुरुष
परमात्मा अथ अट जाको वास । पूरि रखो तिहुँ लोक मे जल थल भू आकास ।
तारे करत प्रनाम सौ लेत नाम मन काम । पूरन होत उदोत नित बाहुत आटे
जाम । रामदया जाचत तिन्है चरण कमल सिर नाथ । ज्योतिष भाषा मे रचे
दोजे जुगुति बताइ । ग्रंथ संस्कृत देवि के भाषा कोन्हा साथ । तिथि सौ बार
नक्षत्र सब योग करण गति लेथ । अथ तिथि नाम । परिवा दुतिया तुनोया
कहै । चौथो पंचमो षष्ठी लहै । सातै आठै नौमो बषातु । दशमो एका
द्वादशी बषातु । तेरसो चौदसो भावस गनै । कृष्ण पक्ष ऐसो विधि भनै ।
पक्ष उजैरे पूरणमासी । सोरह तिथि यहि भांति प्रकासो । अथ बार नाम ।
आदित सोम भौम बुधवार । जीव शुक्र शनि सातौ बार ।

End—अथ ग्रह भोग । एक मास रवि भोगवै नषत सवा जुइ चंद । डेढ़
मास कुज बुध करै एक मास चानंद । बेकै तेरह मास छै शुक्र महीना एक घोस मास
सो शनि रहै कहियो किये विवेक । रहै अठारह मास छै राहु केतु त्रिय जानि ।
रामदया नव ग्रहन को भोग रासि सुबषानि । अथ नषत जानिवो । कुंजलिया
कातिक सो दूना करै मास जिते गुनि छेइ । तिथि सब लोजै मास को एक
घांस भर देइ । एक घोस भर देइ सबै मिश्रित करि गनिष । जेते गनित होइ
नषा तेतो इमि भनिष । कहि रामदया यहि भांति होइ बुध बुद्धि अचतादिक ।
जानि लोजिये नषत मास दूने के कातिक । अथ रवि ग्रहन विचार । दोहा ॥ महा
नषत के सूर्य जेहि भावस लघु सुनु कब । परिवा कछु कछु संचरै सूर्य ग्रहन
गनि तंत्र । अथ चंद्रग्रहन विचार । पुन्यो कछु परिवा कलित होहि भानु जिति
रोसु । सति अतये तिहि रासि सो चन्द्रग्रहन सो प्रकासु । इति श्री सभाज्ञोत
रामदया कृत ज्योतिष सम्पूर्ण लिखित शिवचरण वाजपेई संवत् १९२१ जिषा
सोतला प्रसाद सधवापूर के पठनार्थ ।

Subject—ज्योतिष ।

No. 342(d). *Sabbajita Rāgamālā* by Rāmadaya. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—4. Size—16 x 6 inches.
Lines per page—18. Extant—40 Anuṣṭup Ślokas. Appear-
ance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat
1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat

Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ राग रागिनो लिख्यते । गुरु गणपति को मुमिरि पद लाय प्रोति हड़ चित्र । राग रागिनो सुर श्रुति भाषा कहौ कवित । अथ सत स्वरनाम । पदे ऋषगंधार सौ मधम पंचम जानि । धैवत बहुरि निषाद पुनि ये स्वर सात बषानि । सत स्वरन को समुक्ति चित सुरति होति बाइस । राम दया भाषा धरो जानि लेहु इकईस । अथ बाइस श्रुति के नाम । कवित—त्रिबाकु द्वौ मूढा कंडावतो रजनो विचारि बुधि रति का चिनेषिये । जानिये २ उद्गा कोयो बड़ और प्रसारनो है प्रोतिमजा धृति रिक्ता धृति चित लेषिये । संदीपनो यलापनो कहौ रोहनो सौ स्वाम दतो सु उघा उमै रामदया पेषिये सहित छोम निकाम श्रुति कहौ बाइस में सात् सुरमाह सब हो को गति देषिये । दोहा । जो न सुरन को लेह श्रुति मिलै और जोग राग । राम दया कम सो कहै जानहु कुसल सभाग ।

End—अथ पासावरो । अगर बरत मधु स्याम चंदन सो रचित सदी सो पासावरो वाम नाह नेह गतो रहै । मेघ राग लखन । स्याम रंग पठ पात बैस तरुन सुंदर सुधर । मेघ राग को रीति चित प्रसन्न व्यावत जगत । मेघ राग को रागिनो टेक लखन । बिकुरो संग सो नाह लेति सांस मय्या परो । अति कलेस मन माहि विरहत चेत नट कट के । अथ मल्लार । अति प्रवीन गहि वीन गान करत पिय गुन दुषित । यह मल्लार तन किन विरह भरो सुकुमार बहु । अथ गुजरो । शोभित दयाम शरीर बड़े बार सौ गुजरो पहिरे भूपन चौर गान करत सेव्या परो । अथ भूपाली । गोरव सो सुभ घन नष सिप सो क्रमक्रम रचित । दांत देह अनंग भूपाली पिय सुधि करत । अथ देशकार । नैन कमल मुप चंद कुच कठोर कचन बरन । दांत नाह दुषदं देशकार सुकुमार रत । अथ सर्व को कवित । प्रथमहि बाइन जो विचारि जो धरो श्रुति मिलो तीन सुर सोऊ कहौ में प्रमान है । पठ राग पंच रागिनो समेत चरे थोड़ बड़ न पादि जाको जो बषान है । सब हो के यह सुर लखन रहे निरूप वर्ण । मुनायेउ बुच जानत न मान है । सात सुर हो में सब हो को गति रामदया पेवो रीति कोऊ कवि जानत मुजान है । इति श्री समाजोत राग रागिनो सम्पूर्ण लिपितं शिवचरण वाजपेई संवत् १९२१ पठनार्थं दोबान सोतलप्रसाद सधवापुर के ।

Subject—राग रागिनो स्वर पादि का वर्णन ।

Nr. 342(c). *Sabha-jita Samudrika by Rāmadayā*. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—12. Size—16×6
inches. Lines per page—18. Extent—260 Anushtūp Śloka.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ समाजोत्त सामुद्रिक लिख्यते । करौ कृपा श्री सागदा हरौ कुमति मति देहु । सामुद्रिक लक्षण कहौ चरण कमल करि नेहु । लखन जेत सुभ असुभ सामुद्रिक के गुह । रामदया कोन्हे प्रगट पहिचाने भलि मूढ़ । रामदया भाषा किये सामुद्रिक यह जानि । बुरे भले नर नारि के लिए भंग पहिचानि । अथ पुरुष लखन ॥ आयु प्रमाने । वामन अंगुली मनुष वपु नृपति पृथ जो होय । आदर जग दिन दिन बहु भिच्छा तजै न सोय । आठ दहाई आंगुरी नाथ लेहु नर देह । कुर कुटिल कपटि महि भूलि न कीजै नेह । नखे अंगुर पुरुष को तीस वरष को आयु । पांच वरष प्रति अंगुरदिन नखे सो अधिकाय । ससौ वरष को आयु बल सौ अंगुर जो भंग । सात वरष सौ ते अधिक प्रति अंगुर के संग । सौ अरु दस आंगुर पुरुष वरष देह सौ आयु । आंगु पाछे वरष दस बीस सौ ले पाय । होय एक सौ बीस सौ ऊपर मनुष पतंग । चिरंजीव सौ जानिय होय न कबहु भंग ।

End—कपोल लखन । दोहा । होहि मसोले मंजु शुभ गोल गाल रंग लाल । सदा कृपो धन तासु के भाषत कुसल रसाल । मिथ बाध नज सम विवेक होहि जासु के गाल । भोगो सो सब रसनि को सेनापति ततकाल । माहु कपोलन में पड़े दंसत कहत जो वैन । हैत चैत विन दिन असमैन कछु पैन । अथ कान लक्षण । छोटे मोट कान ना दोरख पतरे नाहि नाहि । सुमिलि कान कहिय धनी सुजस लाभ जन माहि । सारठा । दोरख पतरे कान के राजा के सिद्धि सुभ । लखन होय न भान । छोटे मोटे कान दुष । अथ नास लखन । कोर करी सो नासिका ऊंचो सुमिल सुहार । सो नर भूपति को धनी कुंजर भूमहि द्वार । मोटी चपटी पोल लघु कंचित नासा होय । लटकि परै जो वदन पर दुषित जानिय सोय । दोरख छेद कपोल का निषे परै जो मासु । नीलो वासा पाप बहु करै जीव को नासु । मुख लघु दोरख नासिका कंठ आंचरे वैन । पापी कपटी दुष्ट बहु जानि लेहु निज नैन । इति श्री समाजोत्त सामुद्रिक सम्पूर्ण लिषा शिव-चरण बाजपेई दोवान सौतलप्रसाद के पठनार्थ संवत् १९२१ ।

Subject—सामुद्रिक के लक्षण और जो पुरुष के हर एक भंग के पृथक् पृथक् शुभ अशुभ गुणों का वर्णन ।

No. 342(f). *Sabhaṭīta Vaidyaka* by Rāmadayā.—Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—16 × 6

inches. Lines per page—18. Extent—95 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lala Bhagavat Prasāda, Village Sadhnaṭpura, Post Office Sisaiyā, District Baharaich (Ondh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः । यथ वैद्यक भाषा लिप्यते । दोहा ॥ कै परनाम परमात्मा सुमिरां दिदृ चितलाय । लोक मोह भ्रम कलुष दुष दुर्मति दूरि द्वै जाइ । मणपति के पद सुमिरि के मांगी यह बरदान । वैद्यक भाषा में रचा करो सुमति को जान । रामदया चितलाई कै सोछो वैदक ग्रंथ । सो विचारि भाषा कछो समुक्ति नाटिका पंथ । रामदया ने कहे भाषा नारो भेद । पढ़ै मूढ़ चित लाइ कै होइ दक्ष बुध वैद । नारो लक्षण तोनि है कम सो दियो बताइ । प्रथम पित्त कफ दूसरो तोजो कहियत बार । जहां जासु के वास है कहो तहां सो टार । प्रथम वैद्य बुध आपनो जानि लेहु तब चार । लक्षण साध्य अस ध्य के पहिले लोजै जानि । तब ताको उपचार कह सोप लोजिये मानि । रोग समुक्तिये सुम असुम जैसे करलै वीन । दक्षिण कर गहि नाटिका जानहु व्यथा पचीन ।

End—यथ इन्द्रो डोलो पाँ होय ताको इलाज । प्रथम चमेली के दल घानि । ताको कूट लेहु रस छानि । कुटि सोहागा तामें देहु । मानशिला सब सम करि लेहु । चारो डारो तिल को तेल । पांचो घाटि कराहो मेल । छानि तेल इन्द्रो पर लाइ । सात दिवस में नस छुरि जाइ । यथ गठिया बाइ का इलाज । मदार का दूध ५ । छकरो का दूध ५ ॥ तेल तिल का ५१ सेर ताको चुरै के मेउड़ो का रस ५ भरि घमिलो वा रस ५ । छै गुण चौरासो वासु नासै यथ बाई को दवा सिगरफ तोला १८ लोलायोथा परा तोला ६ गइ का छिड़ ५ ॥ मोम ५ ॥ कपड़ा मिहो गिरह १२ पहिले कराहो मो छिड़ डारै तब मोम डारै तब इगुर हुंकि तुलिया डारै हुंकि जस सब मिलै तब कपड़ा चौरै उतार लेइ मोम जमा होइ तौ बातो बनावै ६ एकान्त कोठरी में एक बातो तपावै सकारे वा सांझ रहते लार गिरै गहो हाथ पाव जे पसोना चले लासा अस जब जानव नौक मलावै रोज तोनि ऊपर से पिछोना घोटि कै घांच बाहेर ना जाय बाउ नोक होइ । इति वैदक समाप्तम सुम मस्तु संवत् १९२१ पौस मासे सुक्लपक्षे त्रिथौ पंचमयाम मंगलवासरे लिपितं पुस्तकं सोतलप्रसादे कायब्र ग्राम सधवापूर के ।

Subject—नाड़ी लक्षण, पित्त का उत्पत्ति, कफ, वायु की उत्पत्ति, पित्त लक्षण परोक्षा, कफ लक्षण परोक्षा वात पित्त कफ का उपचार, साध्य असाध्य

लक्षण और नारी परीक्षा । साठ प्रकार के ज्वरों के नाम, उनके लक्षण और उपचार व इनको औषधि, धातु भारण विधि, गुह्य रोगों की औषधियाँ और कुक्ष मंत्र आदि ॥

No. 342(g). Śālihōtra by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—525 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Viśvanātha Simha Raiṣa, Taluqédār, Village Aganosa, Post Office Tirasundī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः । दोहा ॥ प्रभु गुरु गणपति सारदा चतुर
चतुर के पाँच ॥ बंदन करि बंदन रच्यो सालहोत्र के भाई । १ गिरावान बाना
सुमन प्रथम कर्यो रिसिराज । वही न कुल न लोक में प्रगट कर्यो नर काज । २
नर भाषा सोई कह्यो रामदया वहि जानि । लखन हय के असुम सुम लेहि चज
पहिचान । ३ । गगन गीन सम पान बल जल दल भु आकास । तुरंग सुपक्ष सुइक्ष
सो फिरत अमोत हुलास । ४ । परम पराक्रम देषि के सुनासोर निज काज ।
आयो विन वाहन जहाँ सालहोत्र रिसिराज ५

End—अथ हडा की इलाज । मूलो एक बड़ी लम्बी सो बोता डेढ़ को,
भेड़ी को लोढ़ आधा मन तेहि के आनि करै तेहि में मूरो को भर्त्ता करै जब नरम
होय तब वैसे हडा के उपर बाँध देइ अगो दुइ लो अधिक रहै तो हाड़ गलि
जाइ तेहि से धरो दुइ राखै फिरि छोरि डारै । इलाज कम खुराको सुन को
भरि गा होइ धंग बेटा होय छातो बंद होइ बूमि भा होइ तेहि के औषधकारो
ओर आध सेर लहसुन आध सेर लाल मिरच आध सेर सब कूटै गोली बाँधे पिसा
दुइ मरे के देइ रोग ७ फिर तोनि रोज न देइ ऐसे तोन सात करै ।

Subject—१—३२ बकसराय दसौधो कृत सालिहोत्र ।

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक ग्रन्थ निर्माण कारण ।

(२) " ४ " ५ " चतुर्दश के हय वर्णन

(३) " ५ " ९ " उतात्ति, वर्णभेद लक्षण स्वभाव

(४) पृ० १० से पृ० १२ तक सात रंग के शुभ अश्व, मिश्रित रंग, पद्
अशुभ अश्व वर्णन, पचादश लक्षण ।

(५) " १२ " १४ " शुभाशुभ लक्षण

(६) " १४ " १८ " उत्तम अश्व वर्णन । भौरो शुभाशुभ लक्षण ।

- (७) पृ० १९ पृ० २० तक दंत पारिजान
 (८) „ २० „ २१ „ उत्तम दय, देह प्रमाण वर्णन, वाह वर्णन
 वाह को भूमि।
 (९) „ २१ „ २३ „ चातुर्क विधान, सवारो विधान, धातु
 परोक्षा।
 (१०) „ २३ „ ३२ „ रोग लक्षण, अग्नि परोक्षा, पित्तरक्त लक्षण
 औषधि, अन्य रोगों के लक्षण तथा उनको
 औषधियाँ।

[मथ] ३३—३६ पृ०—घोड़े के ३५ दोष, नकुल कृत प्रथम अध्याय।

३६—३८—द्विका लक्षण, अश्व के चार वर्ण।

३९—५०—अश्व के ७२ दोष १२ पैट में ६० देह में, पित्तदोष,
 उच्चार पद वस्तु।

५१—५८—नास-कुत्रियाँ चिकित्सा विधान।

५८—६२—वात की औषधि, असलेपमज्जर, कालज्वर, सर्पपात
 इत्यादि।

६३—७५—अन्यरोग तथा उनको चिकित्सा।

No. 343. Svarōdaya by Rāmadhāna Dāsara of Āgrā.
 Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—12 x 6
 inches. Lines per page—22. Extent 259 Anushtup Ślokas.
 Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—
 Samvat 1924 or A. D. 1877. Place of deposit—Thākura
 Rāma Simha, Village Ragunāthapur, Post Office Bisawā,
 District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। पथ सरोचा सार लिप्यते। सुंशो रामयन
 दूतर अकबराबादी ने बनाया ज्ञान मयुरा। वार्ता॥ प्रगट होय कि सरोचा
 ऐसी विद्या है जिसके द्वारा गुप्त मनोरथ प्रगट हो सके हैं और इस विद्या के
 जानने लोगों को बड़े लाभ होते हैं इस लिये अगले प्रयोगों से जिन बातों का
 ज्ञान और जिन साधन का साधन आवश्यक है उनको चुनि चुनि के यह छोटा
 सा ग्रंथ लोगों के हित विचार हमने बनाया जो लोग इस विद्या में निपुण हैं॥
 उनसे मेरो यह प्रार्थना है कि इस ग्रंथ में जहाँ कहीं भूल हो देवे उसको अपनी
 दयालुता से सुझावे जाया चाहिये।

तत्व नाम	तत्व का रंग	तत्व की चाल का प्रमाण	तत्व की सादृश्या	तत्व की प्रकृति	तत्व का स्थान	तत्व का दर्जा	तत्व का भोजन	एक एक तत्व में पाँचा तत्व में भुगत है और उनके प्रकृति के न्यारे न्यारे भेद है
१	२	३	४	५	६	७	८	९

End—श्री पहिला मानसी सेवा जो मन करिके जिस दिन अपने इष्ट देव के ध्यान में मगन रहे। और समग्र समय की सेवा में चित्त लगावै। जितनी साँची प्रीति से मन सुद्ध करके अर्थात् ईश्वर को सब जोवों में व्यापक जाने यह मानसी सेवा में मन लगावेगा उतनीही जल्दी दिव्य दृष्टि हो जावेगी। दूसरा प्रतिमा सेवा इसमें मूर्ति का भाव न जाने साक्षात् नंदकुमार जानके जैसे पाँच वर्ष के बालक को माता पिता लाड़ लड़ावै तैसेही श्री ठाकुर जी को लड़ावै। यह मन बच कर्म करिके सेवा करे सेवा में चित्त लगाय राखे। काल ज्ञान की राति प्रथम दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधिके मस्तक पे लगा के पहुँचा पे दृष्टि कर लिया करे छः महीना पहिले मुट्ठी यह हाथ न्यारे न्यारे दीखेगे दूसरे दाहिने हाथ की मध्यमा की मोड़े के अंगुली की जड़ में लगा के बाको रहो अंगुलियों का धरती पे जमा के एक एक उठा के फिर जहाँ को तहाँ प्रस्थित करे दोपहर पहिले मृतकाल से अनामिका उठेगी तीसरे दाहिने स्वर मृतकाल से पहिले दो राति दिन १ वर्ष पहिले ५ दिन ६ महीना पहिले १५ दिन ३ महीना पहिले २० दिन २ दिन पहिले ३० दिन राति बराबर चलना रहे और एक वर्ष पहिले आकश तत्व ३ राति दिन चलता है ॥ दो० स्वासन स्वासन कृष्ण कटु वृषा स्वांस मति होय। ना जानूँ या स्वांस को आवन होइ न होइ इति श्री सराचा समाप्त संवत् १९२४

Subject—स्वरोदय का वनेन अर्थात् उसके द्वारा हानि लाभ, गर्भ में पुत्र है अथवा बेटी, लड़ाई पर जाने से जय होगी या विजय, आदि का जानना।

No. 344. *Sahaja Rāmachandrikā* (Kavi Priyā kī tīkā) by Rāmakavi of Vikramangara. Substance—Country-made paper. Leaves—392 Size—12×6 inches. Lines per page—6. Extent—3,675 Anushtup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Deva Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauzā Lamahā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—प्रथम नृप वंश वंशेनम् ।

विष्णुराम विख्यात विष्णुपुर नगर बसायो । लौन कणै सरजकरन भनूप नृप सिंह
सुजान सुजानियै । तेहि कुल जोरावर सिंह नृप पर दुख हरन बखानिये । दोहा ।
सोजो राव पाठ सब राजन भूप गजेश । दिन दिन दान उदारमति विलसत
विभव वितेश । कवित्त ॥ गजै ना सकतु निखल को सबल कोऊ भंजि न सकत
बलो भानह सुतन को । देव दिज भाव मोहा सरल सुभाव कहियै पुरन प्रभा वर
है लक्ष्मी रमन को । कहै कवि राम जाको नाव नव खंडनि मै सुजस खंड
महिमंडन वरन को । विक्रम नगर गजसिंह जु करत राज शत्रुन को साल
प्रतिपाल है सरन को । दोहा । महाराज जग सिंह को नागर नजरि उदार ।
सहज राम जिहि नाम है सब बातनि रिझवार । कवित्त—दिन दिन तुनो
महाराज गज सिंह जु को सबतै सरस जिनि ऊपर महा है । नाजर सहजराम
बुद्धि को उजागर है अति हित सागर है चित्त को सुधर है । कविन दाता गुण
जाता बड़े ग्रंथनि को जिनको विद्याता दोनो धन नृप वर है । कहै कवि राम
भुव मंडल में ठाम सुजस को धाम कौन जाको सरवर है । ७ ॥ दोहा । नाजर
निगमल गंग सौ बसत हियै उपकार । कथा कृष्ण कोरति सुनत प्रीति रीति
निगधार । सहज राम चित सहज ही यह उपयो उपजोग । कवि प्रिया अति
कठिन है नहि समझत सर लोग । चतुर नरन के बचन ते बड़ो चहुँ चित
चाह । चित्र श्लेषनि के अर्थ नोके करो निवाह । १० । कवि स्मृति टीका
करी रही संत कवि पास । सहज राम नाजर सुधर कोन्हो जगत प्रकास । ११ ॥
संवत छठ दस सत वर्ष सैतोसे चित धार । रचो ग्रंथ रचना रुचिर विजैदशमि
शानियार । १२ सहज राम कृत चन्द्रिका ग्रंथ प्रथम को नाम । पढ़त सुनत
पंडित नरति उर उपजत विश्राम ॥

End—दोहा—इहि विधि केशव जानहु, चित्त कवित्त अपार ।

बखैत पंथ बताइ-मैं, दोनो बुद्धि असार । १९७

सुवरण जटित पदारथनि भूषन भूषित मानि । कविप्रिया है कवि प्रिया कवि
संजीवनि घनि । १९८ । पल पल प्रति पवलोकि कै सुनिबो गिनिबो
चित्त । कवि प्रिया में रक्षियो कवि प्रिया ज्यों मित्त । १९९ ॥ अनिल अनल जल
मलिन ते विकट खलन ते मित्त । कवि प्रिया यों रक्षियो कवि प्रिया ज्यों
मित्त । २०० ॥ केशव सोरह हाव शुभ सुवरनमय सुकुमार । कवि प्रिया के
जानियो सोरहई अंगार । २०१ ॥ सुगम । सहजराम कृत चन्द्रिका शशि चन्द्रिका
समान । देखत हो संसय तिमिर प्रति दिन करत पयान । २०२ इति श्री नाजर
सहजराम विरचितार्थ कवि प्रिया सटीका बोधसह प्रकाश । १६ ।

Subject—(१) पृ० १ से पृ० २९ तक—प्रथम प्रकाश—राजवंश वर्णन ।

(२)	पृ० २९ से पृ० ३३ तक—द्वितीय प्रकाश	कवि वंश वर्णन ।
(३)	३४ „ „ ६६ „	तृतीय „ कवित्त दोष वर्णन ।
(४)	६७ „ „ ७८ „	चतुर्थ „ कवि व्यवस्था ।
(५)	७९ „ „ ९६ „	पंचम „ शलंकार वर्णन ।
(६)	९७ „ „ १३८ „	षष्ठम „ वर्णालंकार ।
(७)	१३९ „ „ १६९ „	सप्तम „ सामान्यालंकार वर्णन ।
(८)	१७० „ „ १९५ „	षष्ठम „ भूषण वर्णन ।
(९)	१९६ „ „ २१० „	नवम „ विशेषालंकार वर्णन ।
(१०)	२११ „ „ २२५ „	दशम „ विशेषज्ञेयलंकार „
(११)	२२६ „ „ २७६ „	एकादश „ क्रमालंकार „
(१२)	२७७ „ „ २९४ „	द्वादश „ उक्तालंकार „
(१३)	२९५ „ „ ३०९ „	त्रयोदश „ समाहित दोषक परब्रुता- लंकार वर्णन ।
(१४)	३१० „ „ ३२५ „	चतुर्दश „ उपमालंकार „
(१५)	३२६ „ „ ३६२ „	पंचदश „ विशिष्टालंकार „
(१६)	३६३ „ „ ३९२ „	षोडश „ एकाक्षरादिकान्द वर्णन ।

No. 845. Guṇasāgara by Rāma Kavira of Nandagrāma. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—6×5 inches. Lines per page—16. Extent—120 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Thakura Naunihāla Siṃha, Kānthā, District Unao.

Beginning—ओ इष्टा देवता सुप्रसन्नमस्तु । अथ गुणसागर को कृप्य लिख्यते ।

जय जय जयदा नंद कंद नंदालय मेहन । जय जय.....रतनि कादिश कर चकानिल ॥ कर चकानिल । जय जय सुदुकर जानु चाह..... कम हास लालस । जय पाणि संजीव मेनु सिजित विमता ॥ वि.....ले शलालित चरण जय निज.....म विभिन्न भय । जय जय जनन्य दल सुव करल नयनीत प्रियानाथ प्रिय । १ ॥ जयसि वक्रो वक्र दनन जयसि पद सकट निवर्तक । सुखावर्त हर जयसि जयसि मल वल्ल निवर्तक ॥ अथ विष्णुसह जयसि जय सिंघर पुर पर दारण । शंख चुर जिजयसि जयसि वृषभामुर मारण । हय रूप दनुज

गंजन जयसि जयसि मत्तमय सुत हरण । गिरि धरण जयसि गिरिवर जयसि
जयसि जयसि गिरिवर धरण । २

End—जय युधि निर्जित दंतवक शिशुपाल जरासुत । जय रिपु रुक्मि
विह्वल करण जय नय्य वधू तुल । जय शक्तिदुःसहस्र युवति जन वल्लभ ।
जय शक्रो कृत रंक विप्र जय सर्व सुदुर्लभ । जय विप्र नष्ट तनया नयन निज गति
विस्मयित विजय । जय मधु महीश जम्बीश जम्बूद्वारा बभौश जय । २०
वामदशा भट मित्त वामरूप वाम श्रुति कुंडल । वामन स्पृह काम पाल
कामक पंडल । श्री दाम विप्र दाम विदुदाम यशस्कर । सौरियाम कृत
धाम भावपल धाम तिरस्कर । सद्यशाम सुखद संध्याम भट नंदशाम सुखानुभव ।
रमतेमिराम चरितेमिहच जिजा रामायपि तव २१ । श्री

Subject—२१ कृष्यों में श्रीकृष्ण की स्तुति ।

No. 346(a). Raja Niti Kavitta. by Pradhāna. Substance—
Country-made paper. Leaves—7. Size—12×4 inches.
Lines per page—36. Extent—158 Anushtup Ślokas. Incom-
plete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of
deposit—Paṇḍita Rāmaśaṅkara Vājapeyī, Village Bahorī kā
Vājapeyī kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bahraich
(Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः यद्य राजनोति के कवित्त लिख्यते ॥ भूप
लक्षन ॥ देव द्विज तोषै प्रजा प्रात सम पोषै चूक कोन्हे पर रोषै ना समोषै मान
प्यार है । काहु को न लपे न्याव गेल में परेसै काम काजो पै बिसेसै काम । छै बार
बार है ॥ भाषत प्रधान मान चाकर को राखै विना विगरेना भाषै कोऊ भाषै जो
हजार है ॥ साजिके समाजै करै ऐसो राज काजै ताहो जानो नर राजै यह राम
भवतार है । १ ॥ बाछन पै भाषै प्रीति मांडन सो राखै देत विरचन को लाखै नेत
भाषै यहो सार है ॥ प्राज द्वार रोषै घाप दोऊ जून सोखै विनै कोने गुना होखै
टेढ़ जोखै बार बार है । जाको नौक नारो जानै ताहो को संकोच मानै भयत
प्रधान जानै एकौ न विचार है । नीति नहि पाछे चले याहो रोति चाछे ताहो
जानो जम पाछे जान द्वार महिपाल है । अथ प्रधान लखन ॥ राजनोति जानै बड़ो
छोट पाँहचाने लाभ हानि अनुमानै काज ठानै सावधान है ॥ ताँजके गुना
बिनतो सुनै सब लोगन को दोन्हे दिन दोन्हे भूरि राखै सममान है । भाषै है प्रधान
सेवा सहै नहि सेवक को रोभि खोभि दोऊ करिवे में बड़ो जान है ॥ साखे
स्वामी काजो राखै दैवत रो राजो सदा ऐसै काम काजो पर राजी जहान है ।

End—फूटे फिरँ धेडे गात सूयो वात में रिसात मारे जात लात पै बतात
 पैड़ दारो को ॥ डोमते निकाम काम कै कै विठै लार्वे दाम ताहू में गुनाम सा
 मानै पानिहारी को ॥ भाषत प्रधान बैसी पाजिते को बाढ़ो सान कहाँ छै करौ
 बचानि तिन को गवारो को । फुटना कलंको धूत कोरहा कुकर्मो धूत कापर
 कुमूत तेऊ पेरे बडवारो को ॥ करनो चमारन को संगति गंवारन को चान
 मावान को ताहो में भुनान है । भाषे मजबूतो बात रोजै चारि जूतो सबै नीच
 करतनो पै सपूतो को गुमान है ॥ भाषत प्रधान पैसे गोंदर गुलाम जेऊ भाष्य
 बस पाय जात राज घर मान है । लालच के मारे चारि जूतिषा साहँ तिन्है
 सज्जन सुजान लेपे खान के समान है ॥ पादमो न चोन्है यह को है कौन लाबक
 को सबहो सो बाधे फिरँ गवहो को वाना है ॥ जानै न गवार जानिये को चारि
 बातें झारि नाहक बनाये फिरँ मूढ़े महताना है ॥ भाषत प्रधान रापे कपटै को
 हेल मेल ऊपर ते आपने और भीतर विराना है ॥ जेवँ जग जायै नर ऐसेहो सुभाय
 कहिये हो को मरद तिन्है जानिये जनाना है ॥ कौड़ो चारि पाँचै तो चमारह
 छाँड़ै जाति नाहि जाति को चोपाई चारो और निज गावहो ॥ मंगो मतवारे
 पास नंगा सरदार आगे पोछे न रुंभार द्वार द्वार नित धावहो ॥ भाषत प्रधान बैन
 नकटा निलजन को सज्जन सुजान सबै मांतिन बचावहो ॥ चलनो को चाम पै
 धारे को लगाम पैसे सदा के गुलाम काम काहू के बावहो ।

Subject—राजा, दोबान, सरदार, मुसहो, ब्यौहार, पंच, बैद, नारा, पापंडो, दंभो, पदैचा, गुलाम, सांच, लवार, मोत और टरवारो के लक्षण ।

No. 346(b). *Kavitta Rāja Nita* by Pradhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—9 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—128 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Lālā Narsimha Nārāyaṇa Shiwagarha, Rae Bareilly.

Note—Details as in No. 346 (a).

No. 346(c). *Rama Kalāwā* by Rāma Nātha Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—420 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—

Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ राम कलेवा लिख्यते ॥
 छंद ॥ चौपैया ॥ जय मनपति गिरजा गिरजा पति जयति सरस्वति माता । जय
 गुरुदेव केसरीनंदन चरण कमल सुपदाता ॥ उनइस सै दुइ के संवत मे जेठ
 दसहरा काहीं । प्रिय कियो चारम अनूपम बैठे पयोध्या माहीं ॥ अहै प्रीति की
 रीति प्रतपटो में के मांति बताऊं । ताते सानुज रामकुंवर को रहस कलेवा गाऊं ॥
 जेहि विधि जनक सदन रघुनंदन कौन्हें उ शंकर कलेऊ ॥ सुष दोन्हें सारिन
 सरहज कौं सो सब कहि हौं भेऊ ॥ व्याह उक्ताह सिया रघुवर को मैं बरौं केहि
 मांौ ॥ कल मह बोति गई सब रजनी रागे रंग बताते ॥ भोर भयो अपने कुमार
 के जनक बेगि बुलवाये । सुनि के पितु निदेश लक्ष्मीनिधि सचिन सहित तहं आये ॥

End—राय रजाय पाय रघुनंदन अति आनंद उर छाये । सब कहि गये
 महल की बातें रघुवर सहज सुभाये ॥ सुनि बिहसे महाराज समाजुत बरनि न
 जाय हुलास । पुनि नृप दिये रजाय सुतन कहं गे सब निज निज वास ॥ इमि
 आनंद जनक पुरवासो नित प्रति पालत लोग ॥ कोटिन इन्द्र नजारे नहिं पावत
 निरपत बहु सुष भोग ॥ राम कलेवा रहस चरित यह लघु मति कवि किन गावै ।
 सेस गवेष महेश सारदा तेऊ पार न पावै ॥ जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो
 ग्रंथहि यह वांचै, पुरन पावै प्रेम राम को पुनि जग नाच नचावै । राम कलेवा
 रहस ग्रंथ यह रसिक जवन अचिकारी । जाके अवन परत रस बातें हिए न उदत
 बिकारी ॥ जेठ दशहरा ते परम करि कार दशहरा काहीं । राम कलेवा रहस
 ग्रंथ यह पुरन भो मुद माहीं ॥ दाहा निज पैतालिस वरस को उमर जान परमान
 कियो कलेवा ग्रंथ यह रामनाथ प्रधान ॥ इति श्री रामनाथ प्रधान विरचित राम
 कलेवा समाप्त लिः रघुवरदास वैसाख कृष्ण ५ संवत १९२४ सोताराम मझु ॥

Subject—रामजी का अपने माइयों सहित कलेवा के लिये समुदाय में
 जाना और सालो सहजों से हास्य विलास करना ।

No. 346(d). Rāma Kalēwā by Rāma Natha Pradhāna
 of Ayodhyā. Substance—New paper. Leaves—16. Size—
 12×7 inches. Lines per page—4. Extent—480 Anushṭup
 Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
 Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of
 deposit—Pandita Bhagawāndīna, Inonā, Rāe Bareilly.

Note—Details as in No. 344 (c).

No. 346(c). Rāma Kalēwā by Pradhāna Rāma Nātha of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—9×6 inches. Lines per page—13. Extent—406 Anuashṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Simha, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Note—Details as in No. 346 (c).

No. 347(a). Arjuna Gītā by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—8×6 inches. Lines per page 18. Extent—731 Anuashṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1837 or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda Tiwārī, Dostapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री शोधो लिखो चर्जुन गीता ॥

मातु भवानो सुमिरौं तोहो । सुमिरत ग्यान बुद्धि देहु मोहो ॥ सुमिरौं चंद
सुरज दुः भाइ । जेहि को जालि रहो जग छाइ ॥ सुमिरौं पवन पुत्र हनिवत । जेहि
सुमिरे बल होइ बहुत ॥ सुमिरौं गनेस जेन्ह विधि संहार । जेहि कारज सों गावै
संसार । सुमिरौं सकल लोक मोहो मंद । सुमिरौं नदी पठारह गंद । सुमिरौं
प्रवता पवन पहार । सुमिरौं सकल लोक संसार ॥ सुमिरौं गुरु ब्रामन के पायां ।
जेहि सुमिरे मोरो निरमल काया ॥ सुमिरौं गुरु यंत्र जो दोन्हा । जेहि प्रसाद
में गोविन्दि चोन्हा ॥ धनो गुरु विद्या जो दोन्हा । जेहि प्रसाद में पधार
चोन्हा ॥ सुमिरौं सरस्वती अमृत पानी । जेहि एहि बान कोन्हा मनजानी ॥

End—जेतो का धरम तोहु लोक मो चाहो । गीता समान दूसरा कोइ
नाही ॥ रामरतन गीता प्रभु भाषा । प्रमातंतु के परचुन राषा ॥ श्री पुष गीता
संपूर्ण मरेऊ । परचुन के संसे छुटि गयेऊ ॥

देहा—श्री कृष्ण चर्जुन मिलि गुरु कोन्हा पेका नाम ।

सो चन्द के तारन को माखेय केवल नाम ॥

× × × ×

× × × ×

मदमातो जो पेही मारि कै मान मजै एक नाम ।

इतो सब लोक को माया माजहुना केवल नाम ॥

पतो श्री पोथी ऋजुन गीत संपूर्णना समापाता जो देख से लोख ममदीप दोजोये पंडोत जन से बोनती मोरो टुटो पछरा लेवे साव जोरो ॥ समाता १८३७ को साल मह पोथा उतारा ऋजुन गीता । प्रतपधरा सातो मात समै नाम मस बासोम सुदो ९ वार सुकवार का काथ उतरो जैसे पुरान दसपत सुभव सोच वपेसा भुमोवढेा सब रागवरामपुरा पोथो उतार गुजरात महा श्री वारन सहरे ।

Subject—(१) पृ० १—४ तक—बन्दनापे, ।

(२) पृ० ५—२५—तक—श्रीमद्भागवत का पद्यानुवाद ।

(३) पृ० २६—१०० तक—गीता पठन का फल ।

No. 347(b). Rāma Ratna Gitā by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—10½ × 7½ inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Muṣṭiyā. Date of manuscript—Samvat 1822 or A.D. 1765. Place of deposit—Thākura Naunihāla Sīmha Saṅgara, Village and Post Office Kānthā, District Unao.

Beginning—श्रीराम जो सहाई । श्री महादेव जो सहाई । श्री दुर्गा जो सहाई । श्री नरेश जो सहाई । श्री हनुमान जो सहाई । श्री नव देवता जो सहाई । श्री पोथी रामरतन गीता लोखते । श्री गुरायसन के चरन मनावे । जंही परशाद गोविंद गुन गावो । श्री कोसन ऋजुन रसवानो । गुर परशाद कहा केछु जानो । ऐक समा श्री जादेराई । ऋजुन संग मैह एक ठाई । धुप दीप ले पारतो कोन्हा । चरनोदक ले माथे दोन्हा । शंरी प्रभु पाहे चित मोरै । कहत यहा दुनो कर जोरै । तब हो कोसन बोले बोहसाइ । ऋजुन से कहा जदुराई ॥ दोहा । तनो लोक के ठाकुर दोनबंशु नंदलाल । बोनती करो पथोन होई प्रभु भाखो वचन रसाल ॥ रामरतन गीता कथ ऋजुन कोन्है प्रनुसार । संत सुनौ सुचोत होई मुकतो होत शंसार ।

End—पेही वोवो गुरु दैचाल जब को पड । शंरी छुटी सोमल बुधि भैपड । दोहा । गुरु दैचाल मै मोहोक छुटेज जोव के भ्रम । रामनाम चोत लापड पोर जानो भ्रम ॥ इति श्री रामरतन गीता श्री कोशन ऋजुन शमादने नाम उन्नयमो पथ्या ॥ १९ ॥ ईतो श्री रामरतन गीता समपुरन जो परतो देखा से लोखा मम देख नाहीं पने पंडोत जन से बोनती मोरो कटल पछर लेव सब जोरो मोतो पुन वदो ईकादसी रोज मगर पोथो लखा बाळे

सुखलाल राम सरदार का मोकाम आचानक में लोखवौ । संवत् १८२२ शाल
मोकाम है रामपुर का इंग्लोस में ।

Subject—अध्याय १—२पृ० १—१० । गुरुवन्दना, अर्जुन का भगवान
को भारती और पूजन कर मुक्ति के हेतु प्रश्न करना । भगवान का चारोपणे
और चारो पाश्र्व को श्रेष्ठता का वर्णन करना और सब के परे भक्ति का महत्व
और श्रेष्ठता का वर्णन करना तथा सब योगियों में मनुष्य की श्रेष्ठता का वर्णन
किया गया है । अ० ३ पृ० १०—१४ अर्जुन का भक्त और भगवान में अन्तर का
पूछना, भगवान का भक्त को बड़ाई और महिमा कहना तथा नाम जपने को
महिमा का वर्णन । अ० ४—पृ० १४—२२—अर्जुन का गुरु को महिमा और
गुरुमेव का पूछना, भगवान का गुरु को श्रेष्ठता और गुरुमेव को गुरुता का
वर्णन करना । अ० ५—पृ० २२—३० । अर्जुन का पाप के संबंध में पूछना भगवान
का नाना प्रकार के पापों के नाम और उससे होने वाले कुफलों का वर्णन ।
अर्जुन का उनसे उद्धार का प्रश्न करना और भगवान का उनके उद्धार का दत्त
कथन करना । अ० ६ पृ० ३०—३८ । अर्जुन का धर्मों के बारे में पूछना और कृष्ण
का धर्मों के संबंध में कथन करना, अर्जुन का अनेक प्रकार को हत्या जानित पाप
का प्रश्न करना और कृष्ण का उत्तर देना । ऋण मारने का दोष और उसका
समाधान करना—अ० ७—पृ० ३८—४४ । भगवान का सब में अपना व्यापकत्व
वर्णन करना । अर्जुन का धर्म और पाप को पैदाइश का प्रश्न करना तथा लोभ
और काम का प्रश्न करना, अ० ८ पृ० ४४—५० । अर्जुन का चांडाल होने का
पाप पूछना, भगवान का वर्णन करना तथा दान की विधि पूछना और उसका
विस्तृत वर्णन करना, नाम जपने के लिये आसन का प्रश्न और उसका उत्तर ।
अ० ९ पृ० ५०—५६ । माल की विधि और उसका फल तथा किसके देने से किस
प्रकार का दोष पूछना तथा भगवान का सब का उत्तर विस्तृत रूप से देना ।
अ० १० पृ० ५६—५८ पाप पुन्य का भेद पूछना और उसका उत्तर देना ।
अ० ११—१२ पृ० ५८—६३ । ठाकुर और स्त्री का धर्म पूछना और उसका वर्णन
अ० १३—पृ० ६३—६७ । अर्जुन का ज्ञान प्राप्ति का प्रश्न करना और उसका
उत्तर कहना । अर्जुन का नासिका द्वारा स्वांस घाने का प्रश्न पूछना और
उसका उत्तर कहना । अ० १४—पृ० ६७—७८ अर्जुन का व्यास के जन्म का
वृत्तान्त पूछना और भगवान का पूर्वजन्म से उसका वृत्तान्त कहना ।
अ० १५ पृ० ८३—८७ । भगवान का अपनी भक्तवत्सलता और उन भक्तों का
नाम वर्णन करना । अ० १७ पृ० ८७—९० अर्जुन का विराट रूप का पूछना और
भगवान का उसका वर्णन करना । अ० १८—पृ० ९०—९४ । भगवान की अनन्त
महिमा का वर्णन और भक्ति की श्रेष्ठता का वर्णन । अ० १९ पृ० ९४—१०० ।

घर्जन का घपना श्रेष्ठ मक स्वीकार करना और भजन तथा नाम जाप का उपदेश देना ।

No. 348. *Krishna-shataka* by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size— $6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—117 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Pandita Ayodhyā Prasāda, Deputy Inspector, Bikāner.

Beginning—भुज त्रिवली हचिर बनी सुषदन की । कटि किकिनो प्रीति पट छाजत चमकत तड़ित जथा जलदन की । जुगलजंघरां भावत राजत घति सोमा मतिजाल कदन की । राम रतन तजिलाज मद्रू मे हौन चहौ रज कुंजन पदन की ॥ ३ ॥ दोहा । श्री चंद्रवलि श्री प्रिया श्री ललिताटिक जुह । श्री विलोकि श्री स्याम की श्री रत सरख समूह ॥ देषि सषो छवि नामर नट की । मृदुल मनोर स्याम सुमगतन याहि विलोकि रई को हटकी । मोर मुकट मकराकत कुंदिल चंद्रवदन फलकावलि छटकी । माल बिसाल तिलक सकुटो वरवंक विलोकनि मोमन पटकी ।

End—हांस मुसिक्याय दगंचल फेरत श्रीवन कुंज दुरै चित दोहन कुम्हिलात वामलता सषि सोचत दरसन बारि हिवा हित जोहन हिनिमिलि करत बिहार सापनि महि मृतक सरार पान पुनि पोहन रामरतन लखुदास सरनि निज राषौ भांक गाउ रस दाहन ॥ दोहा ॥ २० ॥ श्री निवास प्रलक पढ़े श्री घनुराग समंत श्री वानो कोरति लई श्री घनस्याम निकेत ॥ २१ ॥ जुगल उपासिक नारि नर जे न लई रस पान जिनको जन सर्व ध्यान पुर विप्र सुनै नहि कान ॥ २२ ॥ श्री स्यामो सरखण्य श्री मयाराम महराज, श्री गुरु करना तै कहौ श्रीपति समा समाज ॥ २३ ॥ इतै श्री कृष्ण ध्याना प्रलक संपूर्ण सुम मस्तु श्री ।

Subject—श्रीकृष्ण और राधा के सुंदर स्वरूप का ध्यान ललित पदां में बख्शेन किया गया है । शृंगार में तबशिष भी बख्शेन किया गया है । तथा राधा कृष्ण के विहार का भी बख्शेन किया गया है ।

No. 349 (a). *Vṛitta Taraṅgiṇī* by Rāma Sabāyadāsa of Bhavanipura (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size— 2×4 inches. Lines per page—48. Extent—2,250 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1873 or A. D. 1816. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—

Pandita Nawala Bihari Misra, Braja Raja Pustakalaya, Village Gandhauri, Post Office Sidhauri, District Sitapur.

Beginning—श्री गणेशायनमः प्रथम ॥ वृत्तरंगिनी लिखते । मनहरन ॥
 सिंदूर वदन एक रदन सदन बुद्धि सुंदर मुसुंद मध्य सिंदूर प्रभा लसै ॥ मुंडा दंड
 उन्नत कै कुंडलो के परसत प्रनवस रूप लपि विधुन महा नसै ॥ जातनु के ध्यान
 कोने छूटे जमजातन ते माल बाछचंद दोष पाप ताप त्रै त्रसै ॥ सिव जगद्वय
 वारो उदर प्रलंब वारो तेरे हिय धाम राम लसिद्धि सदा वसै ॥ अपरंच ॥
 कनक कमल मध्य वनक कमल लसै तोनि चप चंचलासो सुपमा प्रकासिनो ।
 सष चक्र वरु वरु समय करनि दोच चंदकला कलित ललित कवि रासिनो ॥
 राम भुज पाभरन पंगद उर सिहार कुंडल श्रवन पग पावल विलासिनो ॥ अस्तुति
 सुरन्द पादि करहि मयंक मुषो दुहुवां मृगेंद्र सुषो ध्यावौ विध्यवासिनो ॥ दोहा ॥
 सिद्धि करहि सो देव वर नित निज जन मन काम । असत मंग सिर मंग वर
 चंदकला कविधाम ॥ सोरठा ॥ श्री गुरु ब्रह्म सख्य चित्तमन चित्ता हरन ।
 तिनके चरन अनूप नमो जेहि निज कर जुगल कविता को रचनानि को नेकु न
 जानौ भेद । श्री गुरुभद परबिंद को केवल मोहि उमेद । दायक नित्यानंद के श्री
 चित्तमनि चित्त सो मोपै अनुकूल प्रति पाते रच्यो कवित्त ॥ सोरठा ॥ श्री
 चित्तमनि पाय चित्तमनि पायहि जोत्यो । चित्तत चित्ता जाय जिहि सो नित
 मोचित वसै । संख्या सुधि सिधि विधु वरप १८ ३ नौरो तिथि सुदिउ जो सुरा-
 चार्य वासर सुपद वर धर्म गत सुजे ॥

End—कायस्थ रामसहाय सुत भवानोदास के नातो हुकुमचंद के वासो
 भवानोपुर कासो विषे वृत्तरंगिनी को रचना करी सोरठा ॥ वृत्तरंगिनी
 पूराचंद्र हरिता दुति गति सरल कामद परसु अहूर कारिन्दो छो को कहै ॥
 दोहा ॥ जब लगि रवि ससि सेस विधि सिव रमेस अमरसे तब लगि वृत्तरंगिनी
 उमगत रहै गनेस ॥ बानो सरबानो रमा विधि हर हरि मन राय वरु गुरु कृपा
 कटाक्ष सो निति वृत्त धुनि उमगाय ॥ कोस छंद रस पाभरन नारकादि
 साहित्य । या मे दोजो साधि कवि करि मोपै हित नित्य ॥ सोरठा ॥ रामसहाय
 बनाय अस हित वृत्तरंगिनिहि हृदय परम सुप पाय आपन किय विधेस्वरहि ॥
 सबैषा ॥ राम सहाय करै उनको नति जो गुन को तजि दोष निहारिहै ॥ सो
 सपनेहु जिन्है नहि ज्ञान अपान बने बरनानि विगारिहै । पावहि ते सुप सोर
 विसेषि मलि विधि जो इहि विचारिहै । है इतनो परतोति बनो भवनो कविता
 कवि साधु सुधारिहै । सोरठा । दोष रहित कविता न जो ये चित्ता को है
 छता । पाते कवि विद्वान मो उपहास न कोजियो ॥ दोहा ॥ सुमति रसिक कवि
 काव्य निधि अंबर वार सुगांक । भामिलि वामे वामगति जानेहु संख्या चांक ॥

निज धामा ॥ उदैराम हरिचंद पुरवासी । ऊभापुर प्रभु देवल निवानो ॥ वहरे
लाम भवानो दासा । घटवा मेहनदास प्रकासा ॥ ग्राम हथौधा माधो दासा ॥
वै द्विज गुरुचरन को पासा ॥ पुनि सिवदास मंत्र दिइ पाये । चलि पंजाब न
बढ़ी लाये ॥

End—साहब कायमदास पठाना । बसि रसूलपुर सब जग जाना ॥
प्रभु अनूप सत ग्रामहि पाए । इन्द्रजित अस नाम कहाए ॥ तिन्ह चौदह बहोचर
गाइन्ह ॥ भक्ति भजन सतसंग दिहाइन ॥ रामसहाय जन्म फल पावा । प्रगन दास
रस पारति गावा ॥ इति श्री पारती सम्पूर्णम् शुभ मस्तु संवत् १९४८ विक्रमी ।

Subject—बाबा जगजीवनदास को पारती और उनके चेलों के नाम
निवास स्थान सहित ।

No. 351. Nṛitya Rāghava milana by Rāma Sakho. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—76. Size—6 × 4 inches.
Lines per page—17. Extent—700 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Compo-
sition—Samvat 1804 or A.D. 1747. Date of manuscript—
Samvat 1949 or A.D. 1892. Place of deposit—Lālā Sūraja
Prasāda, Village Tulasipur, Post Office Millāpur, District
Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सौतावल्नभो जगति । अथ नृत्य राघव मिलन पारम्भः ॥
देहा ॥ करि उर ध्यान वनिष्ट गुर राम सखे छुटु शोल । भनौ नृत्य राघव मिलन
पदभुत रंग रंगोल ॥ विविध केलियुत प्रेमदा हन दृश्य भंडार । विमल नृत्य राघव
मिलन रसिकन को अधिकार ॥ श्रुति संवत अरु युक्ति करि और जगन उनमान
मुनि जिव ईश अखंड तेन तामे निज विज्ञान । चौपारि ॥ प्रथम कहा यह तत्व
विचार । ताकरि देय इष्ट प्रण भारा ॥ तब मसी श्रुति वाक्य प्रचाना । तब
सखे पटो ज्वाना । कहत झूठ जे जिव परिनामा । तिनके संग न करि विश्रामा
त्रिय वित ईश नाम नहि लहिये तो अनोशवादो वै कहिये वै जगरूप सेवा जाने
उनको कहि न कदाचिन मानौ ॥

End—प्रथम नृत्य राघव मिलन विना सुने त्रिय संघ त्रिय ईश्वर निजरूप
को जाने कहा निर्वंध । पठन नित्य राघव मिलन करै चौड नर नारि । प्रावत
तहां सब तियन युत राम रटन तेन धारि ॥ संवत अष्टादश चतुर शृङ्ग मधुर
सुधु तीज मन्यो नृत्य राघव मिलन देहा इकशत तीस और २० पुनि चौपारि
हेस दश क्यालीस इति श्री रामसखे विरचितं नृत्य राघव मिलन प्रथम रसिक

वैश्वर्य वर्नेनो नाम अष्टादशमो प्रसंगः कृष्णैः कन्द ॥ राघव संगे एक सेज रमन
नृप सखा एव सांत तदां देयत सुदुरूप वदत रघुनाथ मिलन रति ॥ वन प्रमोद
रसरास कृके रस कन्दन—सिद्धेत । जिय ईश्वर निज रूप पाइ नित वदत द्वैत मत
प्रभु है अदृष्ट जल कूप मधि तिनके हित प्रगटे निवट । सय रसिक मुकुट हरितन
अघट रामसखे रघुकुल प्रगट वि० ११४९ ।

Subject—पृ० १—१८ तक—जोव और ईश्वर के अखंड स्वरूप का वर्णन ।
पृ० १९—२३—बड़ा राम एकत्व वर्णन । पृ० २४—२४ तक—ज्ञान वैराग्य मक्ति
का वर्णन । पृ० २५—रसिक अनन्य रीति वर्णन । पृ० २६—२७—शरणागत
धर्म का वर्णन । पृ० २८—३१—राम नाम की महिमा । पृ० ३२—३३ राम रूप
गुण प्रताप धाम परत्व का वर्णन । पृ० ३४—३९ पादचर्य लीला का वर्णन ।
३९—४४ लोक अवय प्रमोद वन नित्य रास ध्यान का वर्णन । पृ० ४५—४७
राज माधुर्य ध्यान का वर्णन । पृ० ४८—राम यावर्ष ध्यान । पृ० ४९—अवय
यावर्ष । पृ० ५०—६७ अवय जोव ईश्वर तथा विविध केलि का वर्णन । पृ०
६९—७० नख सखा रहस्य का वर्णन । पृ० ७१ रसिक गुरु जिज्ञासु शिष्य
मिलन पृ० ७२—७४ रसिक लक्षण । पृ० ७५—७६ रसिक ऐश्वर्य वर्णन व देखक
का नाम संबत् आदि वर्णन ।

No. 352(a). Bhūshana Kaumudī by Rāṇadhīra Śiṃha of
Singarā Mañ. Substance—Country-made paper. Leaves—48.
Size—12×6 inches. Lines per page—44. Extent—1,320
Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and
Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat
1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Thākura Digvijaya
Śiṃha, Tālūqedār, Village Dikanliya, Post Office Biswā,
District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भूषण कौमुदी निष्पद्यते ॥ दोहा ॥
विघन हरन मनपति धरन भजन सुमेगल यानि ऐसे गजमुष को मजै सकल मनो-
रथ दानि ॥ कवित्त ॥ कृष्ण जू ॥ अति यरुनारे कृचि भारे भाल वंद नित मधि
है जवारे तारे अधिप सुधारै हैं ॥ बहत पनारे मदधारै गंड धाननि ते गंध मतवारै
भुंगु भुंजत किनारे हैं ॥ करन इसारे मखारै फल देन वारे वेद भुज धारे लंबोदर
सुधारै हैं ॥ अथ प्रियकारै हगहारै भव रनधोर एक रदधारै भारे विघन विदारै
हैं ॥ अथा ॥ मेजुल सुरेगवर सोमिंत अचित रेष फल मकरंद जन मोदित करन है ।
अमित विराग म्यान केसर अथक देस विरह असेस अस यो सु प्रसरन है ॥ सेवित

नृदेव मुनि मनुष्य समाधि हो कै रनधोर ध्यात दत ईद्वि मरन है ॥ ईस तृदि मानस प्रकासत सदाई लसै चमल सरोज वर स्वामा के चरन है ॥ दो० ॥ जन प्रन प्रतिपालो विसद भव धालो धवनाह धैसो कालो को सुजस धालो वरनै का३ ॥

End—सब्द चलंकृत बहुत है अक्षर के संज्ञा अनुपास षट विधि कहे जो है भाषा जोग ॥ टीका ॥ अक्षर के संयोग करिके शब्दालंकार बहुत है परंतु जो भाषा के जोग है षट विधि को अनुपास मोई कह्यो है ॥ मूल ॥ बाहो नर के हेत यह कोन्हो ग्रंथ नबोन । जो पंडित भाषा निपुन है अरु कविता विषे प्रबोन ॥ टीका ॥ जो पंडित भाषा में निपुन है अरु कविता विषे प्रबोन है ताहो नर के हेत यह नवीन ग्रंथ जो है भाषा भाषाभूषण सो कोन्हो है ॥ मूल ॥ लक्षण तिय अरु पुरुष के हाव भाव रसधाम चलंकार संज्ञा ते भाषाभूषण नाम ॥ टीका ॥ तिय अरु पुरुष के लक्षण हाव भाव जो है रस को धाम कहे यह अरु चलंकार इनके संज्ञा करिके भाषा भूषण नाम धर्यो है ॥ मूल ॥ भाषा भूषण ग्रंथ को जो देखै मनलाइ । विविधि साहित्य रस को अर्थ ताहि सकल दरसाय ॥ टीका ॥ भाषा भूषण जो है यह ग्रंथ ताको मनलाय कै जो देखै ताको विधि साहित्य रस को अर्थ सकल दरसाय कहे देखि परि है ॥ इति श्रीमन् महागज श्री सिरमौर वंसावतंस श्रीमन् नृपति रनधोर सिंह विरचिते भूषण कीमदो शब्दालंकार वरननम् पद्यम् प्रकाशः समाप्तः लिखतं गनेस सिंह जनवार मुकाम महिमापुर संवत् ॥ १९३१ ॥

Subject—राजा यशवंत के भाषा भूषण नामक चलङ्कार काव्य की टीका ।

No. 352(b). Kāvya Ratnākara by Rāṇadhīra Sīmha. Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—9½ × 7 inches. Lines per page—22. Extent—2,575 Anuṣṭup Śloka. Incomplete. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Nannihāla Sīmha, Village and Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—जो कहियै को चारिहो रस मूल ना एक कह्यो पांच को नहो कह्यो सो बोर, रौद्र, भृंगार, सान्त ये चारि सभोर को प्रकृति कहे स्वभाव है याते सरोर ते नित्य संबध है वै पांचो विषे संज्ञा करि स्फुरित होता है । ताते चारिहो रस मुख्य करि बन्धो ॥ दोहा—कह्यो सात विधि प्रकृति प भौर जितौ उहराय । प्रकृति विपर्यय दोष सो भौर भौर में व्याप ॥ ज्यो वरनत पितु मातु को नहि सिंगार रस लोग । ज्यो सुरतादिक दिव्य में वरनन लगै अज्ञा ॥ दोहा

विधि घोरौ जानवौ धनुचित वरनन रोति । प्रकृति विपर्यय जानिये है रसोप
विमोक्त ॥ (इति रसदोष कथन) । अथ दोषोद्धार वर्णनम्—

कहुं सन्दालंकार कहुं छंद कहुं तुक हेतु ।

कहुं प्रकृते वस दोष हूँ गनै अदोष सचेत ॥

End—अथ दोषोद्धार वर्णनम् ॥

दोहा—कहुं सन्दालंकार कहुं छंद कहुं तुक हेत ।

कहुं प्रकृते वस दोष हूँ गनै अदोष सचेत ॥

अहै अदोषे होत कहुं दोष होत गुन खानि ।

उदाहरन कलु कलु कहौ सरल रोति उर घनि ॥

यथा ॥ हरि श्रुति को कुंडल मुकुट द्वार हिय को स्वक्ष ।

नैननि देखो स्यो रहौ हिय मो छाड़ प्रत्यक्ष ॥

टीका—स्वच्छ शब्द श्रुति कटु हैं प्रत्यक्ष शब्द भाषा होत हैं । मुकुटद्वार अर्थांतर
पदापेक्षो के द्वार हैं ॥ सो वाक्य दोष है ॥ सो श्रुति को कुंडल हिय को द्वार
अर्थांतर को देखिवो अर्थदोष में अपृष्टार्थ है ॥ कुंडलद्वार देखिवो पतनोहो
कहिवो वाक्यार्थ को हो जाता है ॥ अथपि तुक वसते श्रुति कटु भाषा होत
घोर छंद वसते अर्थांतर पदापेक्षो सो छोकोकि वसते अपृष्टार्थ अदोष है ॥
पुनः यथा—कवित्त ॥ सिंह कटि मेखला सो कुंभ कुंभ मिथुन त्यों मुखवास अलि
गुंनै भौ है धनुलोक है ॥ वृषभानु कन्या मोन नैनो सुवरन संगी उर करक
कटाक्षन सो चाहिय ॥.....

Subject—पृ० ३—१० तक—प्रयोजन कवित्त, सामग्री रस रहस्य
वर्णन । व्यंग्य प्रधान उत्तम काव्य, मध्यम व्यंग्य, शब्दविश्र काव्य वर्णन, प्रस्तुत
प्रशंसा वर्णन । शब्द अर्थ भेद कथन, वाचक लक्षण, काव्य प्रकाश का उल्लेख ।
रुद्धि लक्षता का लक्षण, शुद्धा का भेद वर्णन, लक्ष-लक्षण कथन, शुद्ध सारोपा
वर्णन, गौणी सारोपा कथन, गौणी साव्यवसाना वर्णन, व्यंजक कथन । पृ०
११—१४ तक—अभिधा मूलक व्यंग्य । लक्षणा व गृह व्यंग्य वर्णन, अर्थ व्यञ्जक
(काव्य निर्वेय से) व्यक्ति विशेष वर्णन । प्रस्ताव, मिश्रित विशेषण, अभिधा—
लक्षण—व्यंजना वर्णन । पृ० १५—२४ तक—अथ ध्वनि लक्षण, कम लक्षण,
अनुमान वर्णन । सात्विक भाव कथन, संवारी भाव वर्णन, नव रस वर्णन, शृंगार
कथन, संयोग और वियोग शृंगार वर्णन, सामान्य शृंगार कथन, संयोग में वियोग
वर्णन, मिश्रित शृंगार वर्णन, हास्य, रौद्र, करुणा, भयानक, वीर भेद, वीरस्य,
अश्रुत शांत रस वर्णन ।

पृ० २५—३२ तक—नायिका भेद वर्येन । प्रवधा भेद—मुग्धा, मध्या, प्रौढा वर्येन । ज्ञात यौवना, अज्ञात यौवना, विधिव्य नवेढा, रथ्या, प्रगल्भा वर्येन । धोरादि भेद वर्येन । मध्या धोरा, अधोरा वर्येन । प्रौढाधोरा, अधोरा, धोरा-अधोरा वर्येन । ज्येष्ठा-कनिष्ठा वर्येन । दृष्टि चेष्टा परकीया वर्येन । साध्या, वृद्ध बालवधू, याम्यवधू, दुःसाध्या वर्येन, भूत-भविष्य-वर्तमान गुप्ता वाक्चिदग्या, कुलटा मुदिता, लक्षिता वर्येन । पृ० ४१—५० तक—सुरति लक्षिता, अनुसयना, तीन भेद वर्येन, कामवती, अनुरागिनी, प्रेम आसक्ता अन्य संभोग दुःखिता, रूप गविता, प्रेम गविता, मानवती पजारका भेद, स्वाद्योन पतिका वर्येन । खंडिता-धोरा भेद कथन, खंडिता, विप्रलम्भा, वासक-सज्जा वर्येन । परकीया वासकसज्जा, उत्कंडिता, कलहंतरिता, अभिसारिका, कृपा अभिसारिका, शुक्ला अभिसारिका, दिवाभिसारिका, प्रेषितपतिका, अपर नायिका वर्येन । आगतपतिका-परकीया आगच्छत पतिका, समवरि वर्येन । उत्तमा; मध्यमा, अग्रमा वर्येन, गणिका कथन । पृ० ३३-४० नायक-पति, उपपति, वैशिक वर्येन । अनुकूल दक्षिण, सठ, वृष्ट वर्येन, मानो, वाक चतुर, क्रिया चतुर, उत्तम, मध्यम, अधम वर्येन (नायक वर्येन) त्रिगुण, माधुर्य, भोज, प्रसाद वर्येन । उपमासमेद, लुप्ता वर्येन । अनन्वय, उपमेयोपमान, इष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, समेद वर्येन । तुल्ययोच्यता, निदर्शना, उत्प्रेक्षा ।

पृ० ५१—५८ तक उत्प्रेक्षा भेद, अपन्हुति समेद, स्मरण, प्रमा, अन्योन्या, संदेह, व्यतिरेक, तद्रूप, आधिकोक्ति, प्रमाक्ति तद्रूपक, प्रमेद रूपक, रूपक सामाक्ति, उल्लेख । पृ० ५९—६५ तक-अतिशयोक्ति, भेदक, संबंध, योगयोग । जयलता वर्येन । उपमा, अस्त्युक्ति, सापन्हुति, रूपक वर्येन । आधिक, अल्प, अपस्तुत प्रशंस, प्रस्तुतांकुर, समासोक्ति, निन्दाव्याज स्तुति, स्तुति व्याज, आक्षेप, निषेध पर्यायोक्ति, पर्यायोक्ति, अन्योक्ति वर्येन । विरोध—विरोधाभास, विभावना, व्याघात, असंगत, विषय वर्येन । पृ० ६६—७२ तक उल्लास, अनुज्ञा, विचित्र, तद्गुण, अतद्गुण अनुगुण, मोलित, सामान्य, मालित, उन्मोलित, साम, समाधि, भाविका, प्रहर्षण, विषाद, संभव, समुच्चय, अन्योन्य, विकल्प, सहाक्ति, विनोक्ति ।

पृ० ७३—८६ तक—विनोदोक्ति, प्रतिषेध, विधि, काव्यार्थोपपत्ति, विहित, लोका, गुहोत्तरा, गुहोक्ति, मिथ्याध्यवसित, ललित, विवृताक्ति, स्वभावोक्ति, हेतु व्याजोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, प्रमाण अनुमान, उपमान, आत्मतुष्टि, अर्थोपपत्ति षड्वैत दर्शन वर्येन । लोकोक्ति, लोकोक्ति, प्रश्नोत्तर, यथा संख्या एकावली, कारण माला, उत्तरोत्तर, रसनोपमा, रत्नावली, दीपक वर्येन ।

पृ० ८७—९८ तक—पावृत्ति देहरो दोरक, शंकरानेकर, संह. इलेप धनुप्रास वर्णेन । लाटानुप्रास, यमक, दोसा, चित्रालंकार वर्णेन । निरोष्ठ, माषा रहित, पदभुत, वर्णचित्र, अन्तर्लापिका, बाह्यलापिका, नागप्रास, शृंगला, मङ्गवध । पृ० ९९—१३४ तक—गजबन्ध, चमरबन्ध, चौरावन्ध, हारबन्ध, डमरबन्ध, सर्वतो मुख वर्णेन । दोष वर्णेन । श्रुति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, पसमर्थ, निहतार्थ, प्रवाचक, पक्षलोल, असंगल, घृणा, प्राश्य, अप्रतीत, नेघर्थ, क्लिष्ट अवमृष्ट, शब्ददोष दुतिकृत, विसंघि, न्यूनपद, अधिक, कथित शब्द, पतन प्रकर्षण, समाप्त पुनरावृत्ति, असंभव, अज्ञान सञ्ज, संकोच, रसविरोध, भाव परकम, अप्रपञ्चार्थ, कथार्थ, वाक्यदोष, दुकम, प्राप्यार्थ, सेदिग्य, निरहंत, अनविकृत, अनेक, विशेष, साम्य प्रवृत्ति, साक्षात्, अपक्त, विद्या-विग्रह प्रकाशित, विरुद्ध, सहस्रर मित्र, अक्षलोल, अमित्रारी, भाव व आयो भाव को सद्भाव्यता, वर्णेन । रसदोष, प्रकृति विपर्यय वर्णेन ।

अधुने ।

No. 352(c). Piṅgala Nāmārṇava by Rāṇadhira Siṃha. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—864 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1824 or A.D. 1767. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya of Thākura Maheswara Siṃha, Village Dikauliyā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—आमणेशायनमः ॥ यद्य पिङ्गल नामाख्यं लिप्यते ॥ कृष्णं कंदं ॥ समुप एक रद कपिल चारु गज कर्णं प्रकाशित । लम्बोदरं चरु विकट विघ्ननाशनं सुविर्काशित ॥ लसितं विनायक धूमं कंतुं ताम्रं गणाध्यक्ष गति ॥ मालचंद्र गजवदन द्विजस इमि नाम सुभद्रं भनि ॥ कृतं प्रथमं अस्मरन् श्रवणं जो अपारं मे विचारने ॥ जु विवाद प्रवेशो निर्गमे संकट विघ्नं ब्रह्म घने ॥ क्वचित् ॥ स्वामाजु तिहारे पद पंकज प्रभाव सुनि मल्यनि को काम दस दोह वेद गाये है ॥ ताहो ते जिठाई करि विनय सुनाऊं मात भाषा नाम अणैव सु चाहत बनाये है ॥ जानि निज सेवक निवाहै जु अविघ्न प्रथं दीनबंधु जानि निज दोनता सुनाये है । तेरो जस मंडित अर्पंड भव मंडल में ब्रह्म विष्णु ईस ब्रते तेरो जस गाये है ॥

End—धनुपनाम पद्मरो कंदं ॥ धनुकामं करि सतापरेषि अथावासं चाव भाषति विलेखि ॥ कांदं जबै लेतो प्रकुडं यल वल्ल मान त्यागे विकड ॥ जुगल

नाम मालिनो कंद ॥ नगन नगन करनौ नाप मानोप मानो । विरति रचिय घाटे घोर सातै बरानो ॥ सुमन गुनन छैके हूँ रहौ डालिनो है । सरस सुरस हेली पालिनो मालिनो है ॥ जघा ॥ मिथुन जमल जुग मै छंद को साध्य रौतै । जुग जम बिय धारै हूँ उमै चारु गोतै ॥ जुगुल चरन स्वामा घम तौ विशु ईसै ॥ विधि पति-तल से है ज्यों प्रियेनो सुदोसै । पुष्प रस नाम हरि लीला कंद ॥ सारंग ल्यो मधु गनै रस चारु भासै ल्यो पुष्प सार गनि पृथ रसै प्रकासै । स्वामा पदाज मकरंद सुबंद देवै । ध्यानस्थ चित्त पति ज्यों रलिनित्त सेवै ॥ मालानाम ॥ रूपमाला कंद ॥ राजो तौ झुक गुनवती रमि कोस रति प्रकास । दाम छत्र तिमि घोमतान पिपेयि करत प्रकास ॥ त्यागि जग आसार सार प्रकार माला ध्याइ । चिदानंद निरोह नित्या रूप माला टाढ़ ॥ इति श्री श्री मन्महाराजा श्री सिरमौर वंसवतंस श्री मन रत्नधोर सिंह विरचिते नामाखण्ड समाप्तं सुभमस्तु संवत् १९२१ लिपतं जवाहर लाल पंडित पैदापुरो आने चैत्र शुद्ध चतुर्थ्या ॥

Subject—घनेक कंदों के नाम तथा उन्हीं नाम के कंदों में सब ४५० नामों का वर्णन ।

No. 353. Saptā Vyāsana by Raṅgalāla. Substance—County-made paper. Leaves—277. Size—11×6½ inches. Lines per page—12. Extent—4,075 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Jaina Mandira, Daryābāda, District Bārā Bankī.

Beginning—ओ नमोसिद्धेभ्यः ॥ अथ मद्रवाहु चरित्र तथा सत विसन मापा लिख्यते ॥ सवैया—श्री जिनदेव सिद्धार्थ नंदन के जुष्पाद सरोज निहारे । पोट भवोदधि के सुधरे जगजीव घनेकन पार उतारे ॥ अंतम तोरध के करता मद मान महान विदारन वारे ॥ तो प्रभु सम्मति दायक (लायक ?) दूरि करौ दुख दोष हमारे ॥ १ ॥ राजत नामि नरेश्वर के घर में रंजनी कर श्रीकर नोके । नितंत नष्ट निहार तिलोत्तम जानि विषै सुख लागत फोके ॥ फेरि मिथ्यात कुला-चल निश्चल नाथ सयौ प्रैलोक महो के । आप तरे यह घोरान तारत पाद सरोज नमौं जिनहो के ॥ २ ॥ श्री विजयादिक पूरव मे गज चिन्ह धरे प्रगटे तिमि-रारो । जिन मिथ्यात महातक कैसिक क्षित भयै निज पौरुष हारो । देखि परयो शिव मारण सुंदर होत मये भवि जीव सुपारो । भूँधत हौं भव-सिद्ध परेग यह बाँह गहौ अजितेस हमारो ॥ ३ ॥

नंदन जाय घनेदित के पुनि नंदन घोर ज्यौ न सुनंदा ॥ कैटि कलंकन सात लखे कवि सौं प्रभु सीतल नाथ जिनंदा । तोरि महा भव पिजर मो यह

मेहि गरीब नेयाज कुंदा ॥ जा सम चन्द दिवाकर को हुति होति न पूरन
 आनंद कंदा ॥ १० ॥ तिनि सुग्यान लहे जनमे सिर सांस जिनेश्वर आनंद धारो ।
 जंगम धावर जोव सबै जगमें तिनके प्रभु रक्षक भारी । तोरधनाथ कहे सगरे
 अहं पाद परे तहं तोरध जारो । हे कदनानिधि आनंद की विधि हे भगवंत नमो
 दुख हारो ॥ ११ ॥

End—प्रहिल छन्द ॥ यह वृत्तान्त सुनि सकल मिया दस मुख तनो । मई
 विकल ता रूप मोह मद को सनो । दशमेगाय गिरि परत चलन इत आइके ।
 रावन मृतक सगैर वैषि दुष दायके ॥ आवत नारो दस मुख ऊपर गिरि परी ।
 हा हा करत पुकार नयन जलसी भरी ॥ कै एक नारो मुख आच पकार सी ।
 गिरो धरनि में जाय मई बिलल सी ॥ ११ ॥ कै एक नारो पति को गोद उठाव
 के । मुख चुंब करि बोलो वैन उचारि के ॥ अहो नाथ क्या पाड़े रन में पाव के ।
 सुनो सेज हमारो गे छुटकाय के ॥ १३ ॥ कै एक नारो पति के पाय पलोततो ।
 कंकन माल उतारि वदन को कूटतो ॥ कै एक नारो कूर गिरन को धारया ।
 तिन्ह सखी जन पकरि गोद बैठाव के ॥

× × × × × ×

इन्द्रजोत को वारे सिया पति दीषियों । मधु मधुर वच भाखत कहना
 पेक्षियों ॥ अहो दसानन—पुत्र राज्य करिये मिया ॥ हमे सिया सो काम जाय
 वन वासिया ॥ १७ ॥

× × × × × ×

इति सप्त त्रयसन शास्त्र सम्पूर्ण ॥ भादौ वदो ११ संवत् १९३७ शाके

Subject—(१) पृ० १—११ तक—मंगलाचरणादि । चतुर्थे विंशति
 तीर्थेकर स्तुति, महाराज स्तुति, उपन्याय स्तुति । जैन वचन स्तुति, गुरु महाराज
 स्तुति ।

(२) पृ० १२—२१ तक—दश लक्षण रूप मुनि धर्म वर्णन । प्रथम क्षमा
 धर्म वर्णन, उत्तम क्षमा वर्णन, उत्तम मार्दव धर्म कथन, उत्तम आश्रय धर्म
 कथन, उत्तम शांति धर्म, उत्तम सत्यधर्म, नाम सत्य कथन, रूप सत्य कथन,
 संस्मापन रूप सत्य, प्रतीत सत्य, संवत् सत्य, संयोजना सत्य, जिन पद सत्य, भाव
 सत्य, समय सत्य, उत्तम सत्य, उत्तम संयम धर्म कथन, ईर्ष्या सुमति, भाषा सुमति,
 वेषना सुमति ।

(३) पृ० २२—३० तक—छियालीस दोष वर्णन । षोडश उदगम दोष दाता
 के पाधोन, षोडश दोष दात के दोष वर्णन, वत्तीस भंतराय वर्णन, चौदह मलों
 का वर्णन, अज्ञान निक्षेपन समिति प्रतिष्ठापन समिति, पंच सुमतिपूर्ण भाव शुद्धि,
 काय शुद्धि, ईर्ष्या पथ शुद्ध कथन, मित्रता शुद्धि, मित्रता के पांच भेद, गोचरो भेद,

पक्ष भूचक्र भेद, उदराग्नि समन भेद, समगाहार भेद, गति पूछे भेद, प्रतिष्ठापन शुद्धि, सैन शुद्धि कथन, वाक्प शुद्धि, उत्तम संयम धर्म कथन पूर्ण । (४) पृ० ३१—३५ तक—उत्तम तप धर्म कथन, ताप नाम, प्रथम जनशन तप भेद, अमादज्ञ तप, व्रत परि संस्थान तप, रस परित्याग तप, विविक्त जैयोपासन, विविक्त ज्योपासन तप, काय क्लेश तप । (५) पृ० ३६—५४ तक—प्रापदिचत तप, प्रकम्पित दोष, अनुमान दोष, इष्ट दोष, वादर दोष, सूक्ष्म दोष, प्रक्षन दोष, शब्दा कुलित दोष, बहुजन दोष, तत्सर्वी दोष, विनय तप वगैरे, वैपाकृत तप कथन, स्वाध्याय तप, व्यसमर्ग तप, ध्यान तप, शुभाशुभ ध्यान वर्णन, धर्म स्वरूप वगैरे, राज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय, संस्थान विचय, शुद्ध ध्यान, प्रयत्न-व्रतके विचार, यकत्व व्रतके, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपत्ति, उत्तम श्याम धर्म पूर्ण ।

(६) पृ० ५५—५९—तक—उत्तम शक्तिचन धर्म कथन, उत्तम ब्राह्मचर्य, यहाँ तक उत्तम दशलक्षणी रूपमुनि धर्म पूरा हुआ ।

(७) पृ० ६०—८३ तक—एकादश प्रति माठव । श्रावक धर्म कथन, पाक्षिक श्रावक धर्म, नैष्ठिक श्रावक धर्म, एकादश प्रतिमा नाम । सप्त व्यसन वगैरे, व्यसनों के नाम । प्रथम दूत व्यसन का वगैरे, उदाहरण स्वरूप कौरव पाण्डवों के उदाहरण को उपस्थित कर दूत-व्यसन संबंधों बुराईयों का वगैरे । (८) पृ० ८४—९३ तक—मांस व्यसन (२) का वगैरे । कौशाभ्या के भूप नाम राजा के पुत्र बकु के मांस मशी होने का वगैरे । उसके जैने पिता का संताप कर दोक्षा लेना बकु का राजा होकर सुपकार द्वारा बारा मांस मशी होकर दुर्दशा को प्राप्त होना, अर्थात् बकु के पिता को राजा कि हिंसा न हो—जिससे डर कर उसका साँईदार एक बालक का मांस लाया और उसी को पका कर खाया, उसको जीम को वह पसन्द आया । राज बालकों को घुरा कर खाने लगा । राजा को यह बात हुआ और उस नगर कोही छोड़ दिया पुनः—राजा का इशान में भ्रमण और वहाँ बसुदेव का प्राप्त होना और उनका पादकि भू देना और बकु का नरक में पहुँच कर दुख भोगना । इस उदाहरण को उपस्थित कर मांस भक्षण करने से क्या क्या बुराईयाँ होती हैं यह निष्कर्ष निकालना ।

(९) पृ० ९४—१०७ तक—तीसरे व्यसन मद्य का वगैरे । श्री जिनेन्द्र मुनि का उत्तरार्ध निर्गिर पर पहुँचना और वहाँ उनके दर्शनों के हितार्थ यादवों सहित यलमद का पहुँचना, प्रदोत्तर द्वारा मदिरापान द्वारा यादव तथा द्वारावती नमरी के विनाश के समाचार श्रवण कर, अपने राज्य को छोड़ना और नगर में मद्यपान के निषेध का हुंकार फेर कर सम्पूर्ण मद्यपात्रों को बाहर निकाला देना, एक दिन वन कोड़ा के समय गये हुए यादवों का वृषाकुल होकर

उन पात्रों में भरे हुए बरसाती जल को पीकर उन्मत्त होकर पत्थरों को पकड़ित कर दीपायन नामक मुनि के पास रखना, उनके क्रोध से ज्वाला का निकल दारावती को भस्म करना, कृष्ण का जर्द कुंवर द्वारा विनाश वधेन कर मद्यपान के दुरगुणों का वधेन किया है।

(१०) पृ० १०८—१२५ तक—चतुर्थ व्यसन, वेश्यागमन। चारुदत्त का चरित्र, उसका अपने मातुल की पुत्री से विवाह होना। काव्यादि ग्रंथों में विरत रहते हुए स्त्री का ध्यान न करना। उसकी सास का चाकर पुत्री को देख कर और उसकी पार्थरिक्त वेदना समझ कर दुःखित हो अपनी समझिन को यह ब्यथा सुनाना। उसका अपने देवर से अपने पुत्र को कामकला में निपुण करने के लिये आदेश, उसका पुत्र को वसंतमाला की पुत्री वसंतसेना नामी वेश्या के पास भेजना, उसका उसी में अनुरक्त होकर सम्पूर्ण धन धान्य उसी को दे देना, अंत में उस वेश्या को माता द्वारा तिरस्कार पाकर श्वसुर गृह को गमन कर वहाँ पहुँची हुई अपनी माता से मिलना, उसकी सहायता से अपने श्वसुर के साथ, देशाटन को जाना और वहाँ पर अनेक व्याधियों को भुगतना और अंत में अनेक विद्या और धन धान्य से सम्पन्न होकर अपनी नव-विवाहिता बधुओं सहित निज नगरी में आना, वहाँ वतयारिणी वसंतसेना को भी अपने घर में रखना, इस प्रकार वेश्यागमन से धन धान्यादि नष्ट होकर दुःख प्राप्तानुभव कथन। (११) पृ० १२६—१३२ तक—वेश्यागमन का दूसरा उदाहरण। उज्जैनी नगरी के सुदत्त सेठ के संयोग से वसंतसेना को गर्भ का रहना, उससे एक पुत्र और पुत्री का उत्पन्न होना, दोनों का बाहर विरुद्ध दिशाओं में त्याग जाकर बनजारे तथा समुद्रतट द्वारा ले जाया जाना और इन भग्नो तथा भ्राता का विवाह संबंध होना, किसी समय इसी वेश्या के पुत्र (धनदेव) का आकर उज्जैनी में अपनी माता वसंतसेना पर आसक्त होकर उसी के साथ से गर्भ रख पुत्र उत्पन्न करना, उसकी प्रथम पत्नी (कमला) के पूर्वभव समाचार जानने के पश्चात् उज्जयनी में आकर पालने में झूलते हुए बालक (वहन) से अपने छे नाते निकालना, धनदेव संबंधी घट नातों का वधेन। वेश्या सम्बन्धी घटनाओं का वधेन। इस प्रकार अष्ट दस संबंध समन्वित वेश्या व्यसन का वधेन कर उससे धृष्ट करना।

(१२) पृ० १३३—१५० तक—पाँचवाँ व्यसन चोरी वधेन। शिव भूतनाम ब्राह्मण का जय सिंह नृपति के सिंहपुर नाम के नगर में अपने को सत्यवादी प्रसिद्धि करना, एक सेठ का उसके यहाँ चार लाल धातों रखना और प्रवास से लौटने पर उसे न देना। राजा इत्यादि का सेठ के प्रार्थना करने पर भी कुछ ध्यान न जाना, रानी द्वारा नीति से ब्राह्मण से उन रत्नों का निकलवा कर ब्राह्मण का दंडित होना और सेठ को अपने रत्नों का मिलना, ब्राह्मण का मर

कर सर्प हो राजा के कोप मंदार में वास करना और एक दिन राजा को डसना, नागदों द्वारा सर्प का विनाश तथा नारको हो कर भोग भोगना और तिर्यक योनि पाना ।

(१३) पृ० १५१—१६२ तक—अहेरो व्यसन बख्शेन । उज्जैनो के राजा धन्व-दत्त का बड़ा भारी अहेरो होना, एक मुनि के तपोभूमि में जाकर साखेट खेलने की इच्छा से जाना और ४ दिन तक क्रमशः किसी प्रकार के शिकार का प्राप्त न होना, एक दिन मुनि का भोजन के निमित्त जाना । राजा का अपनी असफलता में मुनि के कारणभूत समझ कर उनके आसनवर्ती पत्तर बंड को तथा देना, मुनि का आकर और यह समाचार पाकर साहस पूर्वक उस पर बैठ कर नियमानुसार तप निरत होना । राजा का कुप्टो होकर मरना, और अनेक नरकों में पड़ कर घातनाष्ट सहन करना पुनः संसार में स्वानादि नीच प्रवृत्ति के पशुओं में जन्म लेकर, मर कर, एक घोवो के यहां पुत्रो होना और पशुगं राग के कारण दुखो होकर बन जाना और वहां एक धार्यका के समोप रह कर व्रत करना और सिंह द्वारा उसका खाया जाना पुनः सेठ की कन्या होना और सुदत्त सागरमती द्वारा अपने पूर्वभव का समाचार सुन कर दुखो होकर उनके बनाये व्रत को धारण कर मर कर राजा के यहां जन्म पा, स्त्री शरीर से पुरुष शरीर में या पुण्यकार्य कर स्वर्ग को जाना इस प्रकार इस व्यसन को दुर्गवला का दर्शन करा उससे बचने का आदेश ।

(१४) पृ० १६३—२७७—तक श्री व्यसन । सातवें व्यसन ह्योगमन परस्त्रो गमन का बख्शेन । राम जनक सुतादि उत्पत्ति का बख्शेन, राजा दशरथ द्वारा राजा जनक की राक्षसों से रक्षा करना, राम द्वारा इस कार्य में योग दिया जाना । राजा जनक को विजय पाने का बख्शेन, और उसकी सीता को राम से विवाहने का कथन । इस पर एक राजा की आर्पति जो सीता का भाई था । राजा जनक की धनुषमंथ प्रतिज्ञा । राम की विजय, सीता का विवाह, राम का लक्ष्मण सीता सहित बन गमन, बन संबंधो सुख दुःखों का सविस्तर बख्शेन । लक्ष्मण के कई विवाहों का बख्शेन । रावण द्वारा सीता का हरण किया जाना । राम का सुग्रीव, हनुमानादि की सहायता से विजय प्राप्त करना, रावण का वध, सीता को लेकर राम का प्रसन्न होना, रावण का तीसरे नरक में पहुंचने का बख्शेन । शील की महिमा, ग्रंथ सम्पूर्णः ।

इति श्री सप्त व्यसन शास्त्र संपूर्ण । भादोवदो ११ संवत् १९३७ शके ।

No. 354(a). Vrata Mushṭī by Rāṅganātha. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—15 × 5 inches.

Lines per page—16. Extent—105 Anushtup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Pandita Ayodhya Prasāda Miśra, Village Kāṭhsailāḍī, District Bahrāich.

Beginning—ओ मतेरामानुजायः नमः ॥ चौपाई ॥ अमव सुगुल मुरति उर धारै मुनि मत भाषित वनहि विचारै ॥ अमावेय परिवा नहि लोजै । अमावेय षट दंड कहोजै ॥ साठि दंड तिथि कै वत होई । एकादसिय रहित सुम सोई ॥ सुकुल पाष वटया परिमाना संत समाज सकल सुम ठाना ॥ इति परिवा निणैय ॥ परवेथो सुम बुदज बषानौ सावन स्याम पुष्य सुम जानौ ॥ इति द्वितीया निणैय ॥ दोहा । रमा जठ उज्जैको पूर्वजता सुम होइ घोर तोजि सब जानिये पर युत सुपदा सोइ ॥ इति त्रितीया निणैय ॥ चौथि सकल परवेथो पासो आका भाद स्याम विधु भासो ॥ भाद उज्जैर दुपहरे मानौ विधु दर्शन प्रति पेइ बषानौ ॥ भाघ संथेर विधु उदय लेपो सुकुल चौथि सांझे को पयो ॥ इति चतुर्थी निणैय ॥ चौथि समेत पंचमो लेह आवन सुदि परवेथ कहैह भादौ सुदि दुपहर को जानौ मुनि पूजा महं वेद बषानौ । इति पंचमो निणैय ।

End—ज्ञान विधान संकमो होई । वोइस दंड पुष्य पर सोई ॥ आधी राति पुष्य जो लागै पुन्य दिवस पूरव पर भागै ॥ आधी राति परे जो होई । पर दिन पुन्य कहै सब कोई ॥ आधी राति बीच संकमो पुन्य दिवस दुनौ तब रमणो ॥ राति भरे यह संकम लागै ककै पुन्य पूरव दिन जागै ॥ राति भरे मह मकरौ लागै पर दिन पुन्य वेद मत पागै ॥ संख्या तीन दंड परमाना होइ राति दिनहो कर ठाना ॥ संख्या माह संकमो होई तेहि समोप दिनहो में सोई ॥ सिंह कुंभ वृष वृश्चिक कर्क । आदि दंड वोइस अति फर्कै ॥ बीच माह घमेषा भावा । शेष गर्गस पर पुन्य बतावा ॥ इति संक्रांति निणैय ॥ कोई मुनि परक बार व्रत धारै ॥ दिन अलोन भोजन इकवारै । इति अकै बार निणैय ॥ दोहा ॥ मन मुष्टो दुम अंध है रंगनाथ की जानि । मुठो में वत करत है जो करि है पहचान ॥ जो निरलस करि अंध यह पड़े सुनै नर कोठ । मनवांछित फल देहि तेहि सिय रघुनंदन दोउ ॥ इति श्रीमद् नर्म वंसावतंस कवि कुलालंकार चूड़ामणि श्री रघुवर तनुज रंगनाथ रचित अत मुष्टो समाप्ता । लिः रघुवरदास वैष्णव मिरजापुर हरि मंदिरे पोष कृष्ण ७ संवत् १९०२ ॥

Subject—प्रतिपदा से अमावास्या, पूर्णिमा, घटज, संक्रांति मकर भादमो आदि अतो के फलों का बखान ॥

No. 354(b). Vrata Mushti by Paṇḍita Faṅga Nātha of Akaraurā, Payagpur, District Bahraich. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—105 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda Mīśra, Village Kāthailāḍī, Trilwālā, District Bahraich.

Note—Details as in No. 354 (a).

No. 355. Savaiyā by Rasakhāni. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—280 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Sīmha, Guṭhawā (Bahraich).

Beginning—ओ मलेशायनमः ॥ अथ सवैया लिख्यते ॥ या लकुटी यह कामरिया हित राज तिहुँ पुर को तजि वारी । आठव सिद्ध नवो निधि को सुख नंद कि गाय चराइ विसारी ॥ रसखानि कवे इन नैनन तैं व्रज के वन वाग तड़ाग निहारी ॥ कोटिन्ह प कनवोति के घाम करील के कुंजत ऊपर वारी ॥ १ ॥

End—व्रज को वनिता सब घेरो करै तेरो हारगो विगारयो जहाँ गसु रो ॥ तू हमको रिपु काहे भई जापै कान्ह लई तौ कहा रसु रो ॥ रसखानि भनै विधि मान भो वसने नहि देत दिना दस रो ॥ हम या व्रज को बसबाइ तज्यौ बसुरी व्रज वैरिनि तू बंसुरी ॥ ७४ ॥ व्रजो है तू पाज कलंक भरो सुनिकै बृष्मानु कुमारि न ओ हैं । न जो है कदाचित कामिनो कोसु पै कान में जाइ सचानक पो है ॥ पो है विदेस से देस न आवत मेरो ही देह को मैंन सजो है । सजो सु है मैंन कहा बसु है व्रज वैरिनि वांसुरी फेरि व्रजो है ॥ ७५ ॥

इति सुनमस्तु संमत् १९०९ वैष वटो ५ श्रीराम श्रीराम राम राम १

Subject—श्रीकृष्ण राविका के प्रेम संबंधों का टुकड़ा ७५ सवैया ।

No. 356. Vaidya Prakāśa by Rasālagiri. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—9½ × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,240 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Jaṅga Bahādura, Kundana Jaṅga, Rāo Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यामनमः ॥ अथ वैद्यप्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ शिवसुत पद बंदन करौं बहुविधि सीस नवाइ । वैद्यक ग्रंथ विचित्र अति रचा महामुख पाय । वैस बंस अवतंस अति गोवर्धन मुखधाम । ताके सुत अति हो सुभग तीन महा सुष ग्राम ॥ गिरि रसाल यह मोर की प्रीति प्रतीति रसाल । अति मति जति मति है नरस अद्भुत परम विसाल ॥ श्री मथुरापुर को गये मेह भीम के संग । तेहि लघु अनुज सुजान सो तब तह भयो प्रसंग ॥ लेखराज तब मोहि कहि गिरि रसाल सुनि लेहु । औषधि सुभग समूह को ग्रन्थ मोहि रचि देहु ॥

End—उबटन ॥ मसूर की दाल चिरौजी हलदी दाढ़ हलदी लाल चन्दन इन सब औषधि को बराबर गाय के दूध में पत्थर पर चन्दन को समान घिस शरीर में लेप कर स्नान करने से भाई मुहासा और चमड़े के सब रोग दूर होय ॥

पथ तालीसादि चूर्ण ॥ तालीम मासे २ नागकेसर मासे २ सौंठ मासे २ पोपरि मासे २ मिर्ची मासे २ बंसलोचन तोले २ दाख तोले २ ल्हारे तोले २ घनारदाने तोले २ जायफल मासे २ कचूर मासे २ प्रकरकरा मासे २ हरै बड़ो की बकली मासे २ जीरो सफेद मासे २ कंकाल मासे २ मिर्ची सम मात्रा लेय ॥ नागेश्व ॥ सु एक घेला भर पाय जोशेवर जाय ॥ इति शार्द चूर्ण सम्पूर्णं शुभं ॥

Subject—गणेश स्तुति, कवि परिचय, आश्रय दाता का परिचय, नाड़ी विचार, ज्वर के भेद और लक्षण तथा औषधि, पेट पीड़ा को औषधि, कान पीड़ा को औषधि, खांसो को औषधि, गले की पीड़ा को औषधि, सिर पीड़ा को औषधि, सब प्रकार के ज्वरों को औषधि, पतौसार, मन्दाग्नि, सर्व रोग औषधि, धातु कर्न औषधि, प्रमेह को औषधि, क्षय रोग को औषधि, श्वास रोग को औषधि, नेत्र रोग को औषधि कमल रोग को औषधि, संग्रहणी रोग को औषधि, जलोदर रोग को औषधि, दांत मंजन, उबटन, तालीसादि चूर्ण ।

No. 357(a). Rasasāra by Rasikadāsa of Brindābana. Substance—New paper. Leaves—8. Size—6×4 inches. Lines per page—12. Extent—48 Anushtup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Hansa Bahādura Vaishya, Bodhipur, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री राधा रसिक विहारो जो अथ रससार लिख्यते ॥ चौ० ।

ओ हृदिदासो नर हरि दासि । स्यामो स्याम रहे मन भासि ॥

तिनको कृपा रस सार बखानो तह कवि अमित अपार अति जानो ॥१॥

कुंज केलि सहज प करै महा केलि न्यारे विस्तारै ॥

भीर भार तहं जात न कोई सुहां चुहो ज्यों ज्यावत देई ॥ २ ॥
 जहं पंखो को नहीं प्रवेस भुंकर धुनि को तहां न लेस ।
 निमत कुंज की सुनो सब कथा तहं सोमा की नाहो तथा ॥ ३ ॥
 जहं सब रितु रहै फुले फूल पकात कुंज सब रस को मूल ॥
 प्रथम चोक में घोस प्रकासे दूजा चोक सरद निसि भासे ॥ ४ ॥
 तीजे चोक रेनि तम लगे स्वामा स्वाम रूप जगमग
 पत्र मूल फन फूल हैं जिते राधा कृष्ण करि सो है तिते ॥ ५ ॥
 ठार ठार जहं प्रिया जनावै धाइ धाइ स्वाम कंठ उरलावै
 मुजा पकरि प्यारो गहिराखै प्रेम मग्न घति मोहन दाखै ॥ ६ ॥
 अनुराग मूर्ति दाऊ लन बने गौर स्वाम सोमा रस सने
 प्यारो दग स्वाम है तारे घोर खेल पल नैन उधारे ॥ ७ ॥
 ज्यों दर्पन में देखो भाई गोरो स्वाम स्वाम है छाही
 घोर खेल में चित्त न जाई मन को दसा रहै ठहराई ८
 स्वाम नैन गोरो की देह रूप दृष्टि चित सने सनेह
 जो कहिये तो कहत न पावै नेहो बिना भेद को पावै ॥ ९ ॥

End—नित्य सिधा जेतो है बसो साधन सिधा न्यारो लखो
 मूनि कन्या ब्रह्म कन्या जितो श्रुति कन्या साधन सिधा तितो ३७
 नित्य सिधा गोप कन्या जानो श्री कृष्ण अनदि तैसे ये मानौ
 राधा कृष्ण सर्व को मूल तिन की घोर कौन समतूल ॥ ३८
 चाह मूर्ति नित्य सिधा भई तिनतें घोर सखी सब लई
 तत सुख सखी एक रस पागे तिनके भेद कहीं सब पागे ३९
 तत सुख सखी को पही रीति तन में रहै अपन यो जात
 प्रिया प्रोतम को निज सुख चाहै अपने सुख नहीं मन सोनाई ४०
 पूछे सुख सखी लोहि चाह में चाह मिले मन देहि
 तिनको पादा करै न कोई पकात सेज जहां पौड़े दाई ४१
 भूषन वसन प निकरि संचारै श्रमजल पोंछि पवन कर डारै ।
 सो सुख सखी कहावै तोन स्वाम क सुख को चाहै जान ॥ ४२
 अपने सुख रहै जे रातो कृष्ण सख्य सो रहै जो मातो
 एकत केलि जहां दाई करै प सखी न तहां अनुमरी ४३
 घोर कुज कोड़ा जो करै तहां तहां सखी संग सब फिरै
 सहज केलि करि सब सुख देहि तत सुख सखी सबै सुख लोहि ॥ ४४
 महाकेलि में जात न कोई निभुति कुंज सुख लुटै दाई
 महाकेलि को सकै बताई नहि कहिये को परमति धाई ॥ ४५ ॥

या रस को जो जानै मने तातो कहियो यह निजु धर्म ।
 श्री नरहरिदास को हेत निजु जानो, श्री रसिकदास रससार बखानो ।
 इति श्री रससार संपूर्ण ।
 Subject—श्री राधा कृष्ण का प्रेम बखान ।

No. 357(b). Rasikadāsaji ke Pada by Rasikadāsa. Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—1,176 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babu Śyama Kumāra Nigama, Rāo Bareilly.

Beginning—श्री कुंज विहारो जो ॥ अथ श्री स्वामी रसिकदास जो के पद रस के लिखते ॥ राग विहागडो ॥ दूहटो दुलहनि अधिक बनो ॥ पूजन चलो कल्पतरु सुंदरि सोरै ठान ठनो ॥ किया सपनि गढ़ जोर सबनि मिलि पागे धन पाछे जो धनो ॥ गावत चलो गीत मंगल के सबै सुखर सज्जनो ॥ तनुक छुनक पग भरत धरनि पर छवि पावत अवनो ॥ छिरक सुमंघ मूल तरु पूज्यो कुलनि मान बनो ॥ अंचल जोर यहै वर मांगत रहा यह प्रेम सनो ॥ श्री रसिक विहार न होइ मान कक कलिकला कवनो ॥ १ ॥ प्यारी जु ते मोहि मालि लियो ॥ तेरो कृपा मदन दल जोरयो तेरो जियायो जियो ॥ उमड़ो सेन महा मनमथ को ते अघरासुत दियो ॥ श्री रसिक विहारी कहत दोन हूँ धनि स्वामी को हियो ॥ २ ॥ स्वामी स्वाम रूप रस चापै ॥ कुंज महल पकेछे दाऊ तहां न कोई भोके ॥ बैडो पाप ठाढ़े लाल पकरि पकरि कर राष ॥ ठाढ़े रहा किंकनो सेवारी मंद मधुर भापै ॥ अंग अंग ललचाइ रहै मन उमगी उर अमिलापै ॥ श्री रसिक विहारी यह सुष विलसत निकट भये सुपदापै ॥ ३ ॥

End—बहु विधि वेद पुराण प्रेमतत्व निजु गावै । ध्यान धरै । योजै नित्य वृंदावन को अंत न पावै ॥ तहणी रूप मनसासक चेतन्य जाग्रत जानै । वेद गुणि जो जरे सो अमंत किया बपानै । सोत उभ सुष दुष नहो निसवासर नहो तास । इंदो मन को सुष नहो नष रवि जोति प्रकास । महा गोपितं गोप्य रहसि तें रहसि एकांत रस । विनु जानै रस रोति तिनसैं ना कहिये जस । अघनासन यो ध्यान सो नोके चित धरै । भाषा बंधन छोड़ि वास विपिन में करै । श्री वृंदावन वास सुरतर मुनि निज चाहै । श्रुति धरै जो ध्यान विधि संकर योगाहै । श्री हरिदास कृपा बिना क्यो सखि अत्र भूरि । श्री नरहरिदास बताई अघना जोवन मूरि । श्री नरहरिदास पताप तें भाषा कृत सो कोनै । श्री रसिकदास को करि कृपा वास विपिन में दोनै ॥ इति श्री रसानंद पटल श्रुति अनंत संवादे ध्यान कोलो भाषा संपूर्ण ॥

Subject—पृ० १—३—शृंगार रस के पद—पृ० ४—सिद्धांत की साखी । पृ० ५—सिद्धांत के पद । पृ० ६—७—रसिकदास जी का वृन्दावन निवास वर्णन । पृ० ८—भक्ति सिद्धान्त वर्णन । पृ० ९—पुण्य कर्म वर्णन । पृ० १०—पाप कर्म वर्णन, भक्ति कर्म वर्णन, अपराधों का वर्णन, साधु लक्षण वर्णन । पृ० ११—पूजा विलास वर्णन, सतगुरु लक्षण वर्णन, अद्भुत दोष वर्णन, पाँच भाव वर्णन, उपासना भेद वर्णन, निव्यनेम वर्णन । पृ० १२—घासन को महिमा, बिना घासन दोष वर्णन । तिनक को महिमा वर्णन । पूजा विधि वर्णन । पृ० १३—सालह सखियों का वर्णन, भोजन विधि वर्णन, शुद्धता का वर्णन, विश्वास का वर्णन, प्रगट पूजा वर्णन । पृ० १४—पुन्य देवताओं का वर्णन, परिक्रमा फल, संख्या वर्णन, अपराध वर्णन, बिना सर्पण दोष वर्णन, पृ० १५—श्री कृष्ण कृपा का वर्णन, पृ० १६—कृज कैतिक वर्णन । कृज वर्णन । पृ० १७—विरह पौर उसके भेद वर्णन, कृज केलि वर्णन । पृ० १८—२० गुरु मंगल व्रत वर्णन । पृ० २१—हरि कृपा वर्णन । पृ० २२—बाललोला वर्णन । पृ० २३—कल्पवृक्ष वर्णन । पृ० २४—मंडप वर्णन । पृ० २५—श्री कृष्ण ध्यान वर्णन । पृ० २६—श्री कृष्ण चरण चिन्ह वर्णन । पृ० २७—श्री राधा ध्यान वर्णन । पृ० २८—श्री राधाचरण चिन्ह पौर ध्यान वर्णन । समाप्ति ॥

No. 357(c). Vārāha Samhitā by Rasikadāsa of Brīndāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—8×7 inches. Lines per page—38. Extent—466 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Bareilly.

Beginning—अथ श्री वाराह संहिता लिख्यते ॥ चौपाई ॥

श्री नरहरि दास जवन सिरनाऊँ श्री राधा कृष्ण सुमरि गुन गाऊँ
मैं भाषा कौ कियौ विचार मति बुधि देहु करौ उच्चार ॥ १ ॥

वन उपवन कौ कथा जु वरनौ सत पावण कौ कोनौ निरनौ
निर्गुन सगुन कौ जूदौ विस्तार सबतें परै सुनित्य विहार ॥ २ ॥

पछियात कोउ भेद लगावै श्री वाराह पृथ्वी सौ गावै

श्री प्रथमोवाच ॥ श्लोक ॥ अनंत कौटि ब्रह्मांडे तद्वाह्यांतर संसिधते ॥

विष्णु ध्यान मपरितेषां प्रधानं प्रिय मुत्तमं ॥ १ ॥ चौपाई ॥

अनंत कौटि ब्रह्मांड है जिते बाहिर भीतर हरिपुर तिते ॥ ३ ॥

विष्णु कौ प्रिय कौन सधान सबके परै कौन प्रधान ॥

कृष्ण ध्यान अद्भुत प्रिय होइ ताके परै पौर नही कोइ

महाप्रभु कृपा करि मोसौ कदौ यौ सुष सुनि अनंद अति लहौ ॥

श्री वाग्राहवाच ॥ श्लोक ॥ गुह्यादगुह्यतमं गुह्यं परमानन्द कारकं ॥
अत्यद्भुतं रहस्यातं रहस्य परमं शिवं ॥ २ ॥ चौपाई ॥

End—कृष्ण वरुण चारि हैं भुजा संख चक्रादि भूमि भुजा
दक्षिण द्वारपाल प रहे श्री विष्णु स्वामयणे जो कहे

तत्र श्लोक ॥ कृष्णवरुण चतुर्बाहं संख चक्रादि भूमितं ॥ दक्षिणे द्वारपालं च
विष्णुं कृष्ण वरुणं ॥ २ ॥

जुन घौतार चारि ये कहे द्वारपाल ते वृज के लहे ॥ २५ ॥ इति सतम
पावरण ॥

सतम पावरण उलंघ जो आवै महल कुंज विहारो को पावै
श्री इगिदास कहना निधि रहि हैं । निज दासो महल को करि हैं ॥ २६ ॥
श्री नरहरिदास चरन उर पानैं तब भाषा के पद करि जानैं ॥
निज महल जो जान्यो चाहौ तौ यह अस नीकै अवगाहौ ॥ २७ ॥
बुद्धि उनमान यह जसु ज बघान्यौ सुद अशुद्ध अपराध न मानौ
श्रीबाराह धरनी सौ भाष्यौ श्री रसिकदास भाषा करि राख्यौ ॥ २१८ ॥

इति श्रीबाराह संहितायां धरनी बाराह संवादे श्रीचूदावन रहस्य पटल
समाप्तं ॥

Subject—पृ० १—गुरु २—वन्दना, प्रभु का प्रशंसा । ३—द्वादश वन घोर
उनके भेद अष्टदल वर्णन । ४—षोडश दल वर्णन । श्री चूदावन ध्यान वर्णन ।
५—प्रभु ऐश्वर्य वर्णन । वसंत वर्णन । प्रभु राज महिमा वर्णन । ६—यमुना
जो का वर्णन । निज मंदिर वर्णन । ७—नवकिशोर ध्यान वर्णन । प्रभु महिमा
वर्णन । ८—सौरभ वर्णन । श्री राधा प्रताप वर्णन । ९—राधा कृष्ण कैशोर
आवेश वर्णन । अष्ट सखी वर्णन । १०—सखी ध्यान वर्णन । गोपकन्या का
वर्णन और भक्ति धृति कन्या का वर्णन । ११—देव कन्या वर्णन । मुनि
कन्या वर्णन । महल के चार दरवाजे के अधिकारियों का वर्णन । १२—प्रथम
आवर्ण, द्वितीय आवर्ण, तृतीय आवर्ण, दक्षिण द्वार का वर्णन, पूर्व द्वार का
वर्णन, चतुर्थ आवर्ण । १३—पंचम आवर्ण, चूड़ावर्ण में प्रताप वर्णन, अष्ट
आवर्ण । १४—अवतार वर्णन । अंत आवर्ण । समाप्ति ।

No. 858. *Jugala-rasa-mādhurī* by Rasikagovinda of
Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20.
Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—200
Anuśṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of manuscript—Samvat 1972 or A. D. 1915. Place of

deposit—Nimbārka Pustakālaya, Bābā Mādhava Dāsajī Mahānta ka Mandira, Nānpārā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—**श्री हरिहरसम् ॥ श्री भगवन्निष्ठाकं महा मुनिन्दायनमः ॥**
 यथ युगुल रस माधुरी लिप्यते ॥ जय जय श्री हरि व्यास देव दिन विदित
 विभाकर । अम तम धम यथ यौग हान सुख करन सुधर वर ॥ १ ॥ कृपासिन्धु
 आनंद कंद दंपति रस मोने । मोसे मुह अनेक पतित जिन पावन कोने ॥ २ ॥ जासु
 कृपा परसाद युगुल रस अस कछु गाऊं । सब रसिकन को हाथ जोरि पुनि सोस
 नवाऊं ॥ ३ ॥ श्रीवृंदावन सधन सरस सुख नित कवि छाजत । नन्दन वन से
 कोटि कोटि जिहि देखत लाजत ॥ ४ ॥ जहं भग भृग द्रुमलता वसत जे सब
 अविकडि । काल कर्म गुन काम कोय मद रहित हित ॥ ५ ॥

End—निज सुख हित रस जुगुल माधुरी चरित बनायो । रसिकन हित
 सों दियो विमुख सो महा दुरायो । जे जन रसिक चक्रेर मोन बातक वत
 धारो । ते भले रहि मग चलै कोऊ नहि अधिकारो ॥ जिनके यह रससार आनरस
 सुनो न भावै । ते नित ये सुख लहै आन सपने नहि पावै ॥ यह अगम आधार सुगम
 साधन किन होई । श्री गुरु श्री हरि व्यास कृपा विनु लहै न कोई ॥ रसिक गुविन्द
 सखि चरन सन दिन दरसन पावै ॥ जय जय श्री गुरुदेव यहै सुख हगन दिखावै ॥
 जैसे पारस परस होह तन कंचन धाई । ज्यों चंदन की पवन नोंव पुनि चन्दन
 काई ॥ श्री गुरु को महिमा अनंत कछु कहो न जाई । जिन धर सिर धरि वासुदेव
 लकरो पहुँचाई ॥ दोहा ॥ यह अगाध निधि मधुर रस कवि कछु कहो न जाय ।
 चटका चहै सब ही पियो वै डक बुन्द समाय ॥ यहै युगुल रस माधुरी सादर लव
 जु काह । प्रेम भक्ति सब सुख सदा श्री गोविन्द तिहि होई ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

Subject—राधा माधव की स्तुति ।

No. 359. Premaratna by Ratanadāsa of Kāśī. Substance—
 Country-made paper. Leaves—51. Lines per page—17. Ex-
 tent—850 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—
 Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1844 or A.D. 1787.
 Date of manuscript—Samvat 1857 or A.D. 1800. Place of
 deposit—Bābū Padmabaksha Sīmha, Lavedapur, Bhinagā Raj,
 District Bahrāich.

Beginning—**श्री गणेशायनमः ॥ यथ प्रेमरत्न लिप्यते ॥**

सोखटा आँसु नति आनन्द बन्द परम पदप परमात्मा ।

सुमिरि सुपरमानन्द गावत कछु हरिजस विमल ॥

पुनि गुरुपद मिरनाथ उर धरि तिनके बचन बर ।
 कृपा तिनहि को पाइ प्रेम रतन भाषत रतन ॥
 अग्र उदधि मधि जाहि पंगु चढ़हि जिमि विनु तरनि ।
 तैसिय गचि मन मांहि अमित कान्ह जस मान को ॥
 पै मो मन विस्वास पुरवत पुरन काम प्रभु ।
 उर पुर सकल नेवास निज जन को समिलाष लषि ॥
 लोला अग्रम अपार वरन न पावै शेष शिय ।
 जासु स्वास श्रुति चारि तेहि गुण गण को कहि सकै ॥
 अमित चरित्र विचित्र यथा शक्ति गावन सकल ।
 निज मुख करन पवित्र भाषत हरि गुण गण विमल ॥

End—सारठा ॥ निर्माणकाल टारह सै चालीस चतुर वर्ष जब विगत
 भो । विक्रम नृप यवनोस भयो भयो यह ग्रंथ तब ॥ ३ ॥ महा माह के मांह मति
 शुभ दिन शित पंचमो । गावो परम उक्ताह मंगल मंगलवार बढ । ४ । कछौ
 ग्रंथ अनुमान जैशत परसठ चौपई । तेहि अक्षर घट जानि देहा सारठ सारठा
 ॥ ५ ॥ कासो नाम सुठाम धाम सदा सिव को सुपद । तीरथ परम ललाम
 सुभद मुक्ति वरदाव क्षम ॥ ६ ॥ ता पावन पुर मांहि भयो जन्म यहि ग्रंथ को ।
 महिमा वरनि न जाय सुगुण रूप जस रस भयो ॥ ७ ॥ कृष्ण नाम सुख मूल
 कलिमल दुख भंजन भजत । पावहि भवनिधि कूल जाके मन यह रस रमहि
 ॥ ८ ॥ कुरुक्षेत्र सुभ थान वृजवासो हरि को मिलन । लोला रस को धानि प्रेम
 रतन गावो रतन ॥ ९ ॥ इति श्री वृजवासो हरि मिलन कथा प्रेम रतन कवि
 रतनदास कृत सम्पूर्ण सुभ मस्तु काटुक मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्यां रविवारे
 सम्पूर्ण ॥ ५७ ॥ श्रीराम राधाकृष्ण गौरीशंकर ॥

Subject—पृ० १—४ तक । प्रार्थना, कृष्ण जन्म वर्णन तथा कृष्ण का व्रज
 प्रेम वर्णन । पृ० ५—१७ तक । सूर्यग्रहण पर सब द्वारकावासो व कृष्ण का कुरुक्षेत्र
 नहाने घाना और व्रज से नंदादि का गमन वर्णन—पृ० ८—१० तक । एक ग्वाल
 को द्वारिकावासी से भेंट होना तथा कृष्ण को खबर पाना तथा गोपियों का
 संकल्प सरणादि विरह वर्णन—पृ० ११—१५ तक । वृजवासियों का कृष्ण से
 मिलने जाना, वसुदेव देवको कृष्णादि सब का प्रसन्न होना ॥ वृजवासियों के
 भाग्य को प्रशंसा करना, सत्यभामा का कृष्ण से हंसी और व्यंग्य करना ।
 पृ० १६—२१ तक । कृष्ण का नन्द यशोदा वृजवासो राधा ललितादि से मिलन ।
 पृ० २२—२५ तक नंद यशोदा व वसुदेव देवको से मिलन ॥ पृ० २६—३० तक
 राधा आदि का शक्तिगो सत्यभामा से मिलन और सत्यभामा को घालो-
 चना । पृ० ३१—३३ तक । कृष्ण का शक्तिगो से राधा का प्रेम वर्णन तथा राधा

को विरह अथवा का वर्णन । पृ० ३३—३४ तक । गोपियों में कृष्ण का रहना तथा नन्द यशोदा व गोपियों का पूर्ववत् व्यवहार करना । पृ० ३५ से ३७ तक । कृष्ण से मिलने का ऋषियों का आगमन और वसुदेव देवको का स्तुति करना । पृ० ३८ । कृष्ण को ऋषियों का व्रज कराना और सब को वसुदेव देवको का भोजन कराना । पृ० ३९—४९ तक । देवको का कृष्ण को चलने को कहना, राधा और सत्यभामा का विवाद, कृष्ण का दो रूप धर व्रज व द्वारिका जाना । पृ० ५०—५१ । ग्रंथ निर्माण वर्णन ।

Note—यह प्रेमरत्न रत्नदास का रचा हुआ संवत् १८४४ का है । इसमें मूल से लेखक ने १२४४ कर दिया है । लिखने का संवत् ५७ दिया है स्यात् १८५७ होगा क्योंकि ग्रंथ पुराना लिखा हुआ है । राजा शिवप्रसाद ने इस में से कुछ भाग गुटका में उद्धृत किया है और उसे अपनी दादी रतनकुंवरि का रचा हुआ बतलाया है, यह राजा साहब की भूल प्रतीत होती है । इस प्रति में पृ० ३, ६, २२ व २७ नहीं हैं ।

No. 360(a). *Fatah Prakāśa* by Ratana Kavi of Śrīnagara (Kamāun). Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size— $10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—1,300 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1910 or A.D. 1859. Place of deposit—Thākura Naunihāla Simba Sengara, Village Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ।

धौंदि थरकोलो भरकोलो विषु कल्पभाल हरकोलो भौंहनि समाधि सरसति है । प्रानायाम सासन कलित कमलासन में विपति विनासन को वासना वसति है । सेंदुर भरगो भुसुंड मंडल समीप गजवदन के रदन को दुति यों लसति है । सुध्या श्रोन सरद के मोरद निकट मानो द्वेज के कलाधर को कला विगसति है । १ । मंग उतमंग पाधे तरल तरंग भरौ पाधे भरौ मांग मुकुताहल सुहंग को । पाधे कंड कालकूट कालिमा कलित पाधे नीलमार्ग को ललित लपक उमंग को । पाधे उर केहरि को पाधे निरवेद पाधे शव भेद पते राजत अभेद लोला शिवा शिव संग को । २ पाद्य काव्य को प्रयोजन ।

End—अतद्गुणालंकार दोहा—अप्रकृत नई न प्रकृत जो गुन गहिरे अवगाहि । अलंकार कोविद रुच कहत अतद्गुन ताहि । २१९ । यथा सवेया । नेह भरौ अचिन्तान में राखै तऊ तुम रूपे रूपे विलखे से । ताप तथे दिय मांह दये

परि सीरे उसीर के नीर रखे से । काहे को घोर को घोर मिलावत घोर को घोर
हो चोप चखे से । जो कुल चालि नवै तुम्है चाहि के चाहिये तासैं रहै बनखे
से । २२० ॥ व्याघातालंकार । लक्षण देहां । ज्यों ज्यों हों काहु कह्यो त्योंही
ताहि लुघान । करै अन्यथा कहत हैं सो व्याघात सुजान ॥ २२१ ॥ यथा कवित्त
लाक बलि गई दई पेसो क्यों करत गई हों ही बलि गई सो तौ विकल घिछोकी
बाल । तनु तपौ तवा सो दवा सो देहरो छैं भवौ ऊँवा सो भवासौ भवौ
विरह को ज्वाल जाल । राबरी रसाल उर घरै उठि बैठो हाल बुझत दवाल
विहल मई तेही काल । कहा करौ प्यारे जू तिहारे बाझो हार हो सो मैं करो
निहाल हो पै मदन करो विहाल । २२२ ॥ इति श्रीनगर वासी फतेसाह नृपस्या-
जया कविरतन विरचिते फते साहि प्रकाशे साहित्य ग्रंथालङ्कार निरूपन नाम
षष्ठे शतक ग्रंथ संपूर्ण । संवत् १९१० वैसाख कृष्ण पंचम्यां गुरौ लिखितं
ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी स्वपठनायें वल्लारंगमस्तु ।

Subject—पृ० १ से ७ तक । गणेश वन्दना, शिवस्तुति, काव्य प्रयोजन,
काव्य के कारक शक्ति, निपुणता और अभ्यास वर्णन, काव्य लक्षण, अभिधा
लक्षण, व्यंजना भेद कथन, तीनों का लक्षण और उदाहरण वर्णन, अभिधा मूलक
व्यंग वर्णन, योग, वियोग, विरोध में नाक तथा बेसरी तथा कौशिक काक
उदाहरण । काल ध्वनि वर्णन, चक्रवर्ती का उदाहरण, देश सामर्थ्य संयोग्यता
का लक्षण व उदाहरण ।

पृ० ८ से १३ तक । लिंग का उदाहरण लक्षण, अभिनय कथन, समुद्र व्यंग्य
लक्षणा मूलक व्यंजना व्यंजक । व्यंग वर्णन शब्द व्यंजक है । अर्थ व्यंजक वर्णन, देश
काकु से भेद वर्णन । काक कथन करके उदाहरण । परस्त्रिय विशेषण वर्णन,
सय विशेष कथन देश विशेष का कथन, प्रस्ताव विशेष, वाच्य विशेष कथन
में जयद्रथ का उदाहरण वर्णन, संदेह विशेष वर्णन, आदि ग्रहणात्सव चेष्टाः
अर्थ व्यंजक चेष्टा वर्णन ।

पृ० २१ से २९ तक काव्य भेद, उत्तम, मध्यम अधम वर्णन उदाहरण वर्णन ।
चित्र काव्य वर्णन, दो चोर रस के उदाहरण हैं । इस उद्योत के अंत में श्रीनगर
वासी राजा फतेह साहि मेदिनी साहि के पुत्र का उल्लेख है । उत्तम काव्य के भेद
वर्णन, विवक्षितान्व पर वाच्य ध्वनि और अविवक्षित वाच्य, असंलक्षण कम विव-
क्षित अन्य परवाच्य ध्वनि वर्णन, रस निरूपण—भाव, विभाव, अनुभाव, अभिचारी
भाव वर्णन, आशी भाव वर्णन, विभाव, आलंबन उद्योपन वर्णन, अनुभाव, स्वेद,
धर्म वैचर्य, स्वरमंग, कंप, रोमांच, पलाप, अधु, कटाक्ष वर्णन, निर्वेदादि ३३
अभिचारी भावों का वर्णन, रस भेद वर्णन, शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर,
अमानक, वीरत्स, अद्भुत रस वर्णन, शृंगार लक्षण व संभोग वर्णन, वियोग

सिंहार, भूत प्रवास हेतु वियोग वर्णन, भविष्य प्रवास हेतु का वियोग वर्णन, भवतु प्रवास हेतु का वियोग, अभिजाप हेतु का वियोग वर्णन, विरह हेतु का वियोग वर्णन प्रसूया हेतु वियोग कथन, शाय हेतु का वियोग, इति शृंगार रस वर्णन, हास्य रस लक्षण—शिव विवाह का उदाहरण, कठना रस का वर्णन, रौद्र रस का वर्णन राम—रावण युद्ध वर्णन, वीर रस में रावण का वर्णन, भयानक रस वर्णन और फतहसाहि की प्रशंसा का हृद योमत्स रस, फतहसाहि के युद्ध का वर्णन, पद्भुत रस वर्णन में फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन, शान्ति रस में शिव का ध्यान वर्णन ।

पृ० ३० से ३७ तक । भावादि ध्वनिकथन—देव विषयक भक्ति वर्णन, मुनि विषयक रति, राधव चिनाद वर्णन, गुरु विषयक रति वर्णन, नृप विषयकरति वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा का वर्णन, पुत्र विषयक रति कौशल्या का विश्वामित्र के प्रति राम ले जाने पर वर्णन, व्यंग व्यभिचारी वर्णन, रसाभास कथन, नीलकण्ठ का विकृत कवित्त—भावाभास वर्णन, भावोदय वर्णन, भाव सबलता वर्णन, भाव शान्ति कथन, फतह सिंह की नायिका का मान मोचन वर्णन, भाव संधि असंलक्षकम व्यंग्य ध्वनि, संलक्षकम व्यंग्य ध्वनि वर्णन, शब्द, अर्थ और शक्ति से ३ भेद कथन, शक्ति भू प्रतिध्वनि, रूपोपमालंकार ध्वनि वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि विरोचालंकार ध्वनि वर्णन, पदभेद विरोचालंकार ध्वनि में फतहसाहि की प्रशंसा ।

पृ०—३८-४४ शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप व्यतिरेकालंकार वर्णन—शिव भक्ति वर्णन, उपमालंकार वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप वस्तुध्वनि वर्णन, इति शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, अर्थशक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, समेद स्वतः संभवो, प्रौढोक्ति कविकृत, वस्तु अलंकृत, व्यंग्य के १२ भेद वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवो वस्तु से वस्तुध्वनि, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवो वस्तुप्रेक्षा वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवो वस्तु से व्यतिरेकालंकार ध्वनि वर्णन, अर्थ कवि प्रौढोक्ति सिद्धि वर्णन :—शक्ति भू वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, कवि प्रौढोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनालंकार ध्वनि वर्णन, उपप्रेक्षा में कथन, कवि प्रौढोक्ति सिद्धार्थ शक्तिना अलंकारालंकार ध्वनि वर्णन । काव्य लिंग से विभावना की उत्पत्ति वर्णन, कवि कृत वक्तृ प्रौढोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुभावस्तु ध्वनि वर्णन । वस्तुना विभावनालंकार वर्णन, उत्तरालंकार ध्वनि, कवि काव्यलिंग विशेषोक्ति वर्णन, शब्द अर्थ शक्ति भू ध्वनि वर्णन, संलक्षणकम विवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन, अविवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन, अविवक्षित वाच्य ध्वनि भेद मय वर्णन, अर्थान्तरगत वाच्य पुनरुक्ति, विशेष नायकत्व वर्णन, अत्यन्तारिका वाच्य वर्णन ।

पृ० २४ से ५४ तक १६ व्यंग से शतस्र क्रम व्यंग वर्णन, उत्तम काव्य के ३५ भेदों का वर्णन । लक्ष क्रम व्यंग पद ध्वनि भेद से शब्द शक्ति मूल से वस्तु ध्वनि वर्णन; लक्ष-वस्तु के वस्तु ध्वनि का वर्णन और अतिशयोक्ति कथन तथा विरोधा-लंकार वर्णन, फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन । अलंकार ध्वनि वर्णन । स्वतः संभाव्य व्यंग के भेद चतुष्टय कवि प्रौढ़ाति भिन्न व्यंग काव्य लिङ्गालंकारेण वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, विरोधालंकार, कवि व्यंग, व्यतिरेकालंकार वर्णन, काव्य लिङ्गध्वनि वर्णन । अपन्हुति अलंकार ध्वनि वर्णन । अतिशयोक्ति चार संवाद वर्णन, पद विभाग रस के ५२ भेद वर्णन । मेहन मिश्र का सवैया, शृंगार रस वर्णन, व्यंग के भेद नाटक, साध आदि वर्णन, संघटित वाक्यतर वाक्य समुदाय वर्णन शृंगार और फतहसाहि प्रशंसा । काव्य भेद शंकरादि वर्णन । संशय ध्वनि शंकर वर्णन, संसृष्टि प्रेमांगी भाव एक व्यञ्जक प्रवेश वित्तय वर्णन गुणी भूत व्यंग के ८ भेद—पगुड़, विगुड़, संगिच, प्राधान्य, वाच्य, मिङ्गांत तुल्य-प्राधान्य, काकादि समुंदर वर्णन ।

पृ० ५५—६४ तक—अगुड़ वर्णन, निगुड़, व्यंग कथन, संदिग्ध प्राधान्य, राधव चिन्ताद से मिश्र वक्तृक पद वाच्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, तुल्य प्राधान्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, काकादि गुणीभूत व्यंग वर्णन, अपसंग गुणीभूत व्यंग वर्णन । अपरांग व्यंग रसास्यसो अंग और व्यंग के भाव वर्णन फतहसाहि की प्रशंसा चित्र भेद वर्णन ।

पृ० ६५—७३ तक । दोष सामान्य विशेष लक्षण । सामान्य दोष—वचन दोष वर्णन, कलंकटु, अवाचक, हितारथ, अवनोत, अनुचितार्थ, नैषार्थ, अयुक्त, अश्लील निरर्थक, क्लिष्ट, ग्राम्य भव; विरुद्ध, संदिग्ध, अविमृष्ट, असमर्थ ये २५ दोष हैं, अवाचक दोष के तीन भेद वर्णन, वाचक पद शक्ति योग सापेक्ष वर्णन, वाचक पदशक्ति योग अनपेक्ष अवाचक दोष वर्णन, हितोप धर्म में वाचक पद शक्ति योग अवाचक दोष वर्णन, तृतीय धर्म दोष वर्णन, अपतीत दोष वर्णन, गंग सवैया वर्णन, अनुचितार्थ दोष व नैषार्थ दोष वर्णन, अयुक्त दोष कथन, अश्लील वर्णन, व ३ भेद वर्णन, लज्जा व्यञ्जक अश्लील, असंगल व्यञ्जक व लुपुप्ता व्यञ्जक अश्लील वर्णन, क्लिष्ट दोष वर्णन, ग्राम्य दोष वर्णन, विरुद्ध मति वर्णन ।

पृ० ७४—८४ तक । अलंकार वर्णन, उपमा—पुष्पोपमा, लुप्तोपमा वर्णन, समानि पदलोपो वाचक लुप्तोपमा वर्णन, उपमान लुप्ता, धर्मवाचक लुप्ता, धर्म उपान लुप्ता, फतहसाहि प्रशंसा कथन, धर्मवाचक उपमान लुप्ता, मातोपमा धर्म अमेद मातोपमा, रसोपमा, धर्म अमेद रसोपमा, अनन्वय लक्षण व, उदाहरण । उपमेयोपमा वर्णन, उपमेक्षा, भेद, फल; हेतु, रूप वर्णन । संदेह

निश्चय पृ० ८१—१०५। वर्णन। रूपकालंकार वर्णन, समस्त वस्तु विषय, एक देशोप विवर्ति के दो भेद लक्षण उदाहरण वर्णन, फतह साहि को प्रजलिस वर्णन, मंगल रूपक वर्णन, परंपरित रूपक कथन, इल्लेप वर्णन, फतह साहि को प्रशंसा वर्णन, राम प्रशंसा वर्णन, अपन्हुति वर्णन। दो भेद शाब्दो चर्चा वर्णन, सुंदर कवि का फतह साह को प्रशंसा में समासोक्ति वर्णन, निदर्शना व माला निदर्शना वर्णन, भूपण कृत फतह साहि को प्रशंसा वर्णन, अपस्तुत प्रशंसा वर्णन, ४ भेद सामान्य, विशेष, कार्य, कारण भेद से कथन, अपस्तुत प्रशंसा वर्णन, प्रतिशयोक्ति कथन, केवल उपमान वर्णन, श्रोनगर शोभा वर्णन, उपमान उपमेव वर्णन, अलौकिक चर्चा वर्णन, कार्य कारण से वर्णन, प्रतिवस्तुपमा, माला प्रतिवस्तुपमा, हृष्टान्त में फतहसाहि का यश वर्णन। दोषचालंकार वर्णन। एक कारण बहु क्रिया का दोषक, माला दोषक, तुल्य योम्यता, अपस्तुत तुल्य योम्यता, व्यतिरेकालंकार समेद वर्णन। उरुपायकर्म व्यतिरेक के उदाहरण में फतह साहि को प्रशंसा वर्णन आक्षेपापमा आक्षेपा-पृ० १०६—१३४ तक। लंकार वर्णन—विभावनालंकार, विशेषोक्ति, यथा संख्या, चर्चान्तरन्यास, मै गढ़वार का वर्णन। विरोचालंकार, फतहसाहि वर्णन। समेद वर्णन, स्वभावोक्ति, व्याज स्तुति वर्णन, फतहसाहि को विजय का वर्णन, सहाकि, विनोक्ति, परिकृत अलंकार वर्णन, काव्यलिङ्ग में शत्रु स्त्रियों पर प्रभाव वर्णन। पर्यायोक्ति, उदात्त, सभा शोभा वर्णन, समुच्चय समेद तृतीय में फतहसाहि के वारियों का भयभीत होना वर्णन, पर्यायालंकार वर्णन विपरीत पर्याय वर्णन, उदारता कथन अनुमान अलंकार, फतहसाहि यश वर्णन, परिकरालंकार साभिप्राय विशेषण, काव्योक्ति, परिसंख्या में शिवा को प्रशंसा, गढ़वार के राजा का वर्णन, वाद्यज भक्ति कथन, कारण मालालंकार वर्णन। अन्योन्यालंकार, सूक्ष्म, सार के उदाहरण में फतहसाहि के सुजस का कथन, असेर्मात, समाधि, सम, विषय, उसके ४ भेद वर्णन, अधिक प्रत्यनोक मोलित, फतहसाह यश कथन, एकावली वर्णन स्मरण, शान्ति मान, इसमें फतहसाह का शतक वर्णन। प्रतीप समेद वर्णन। सामान्यालंकार। विशेष, वलि, विक्रम, हरिचंद से फतहसाहि को विशेष मानना, अन्यत कर्ण अर्थ कथन, तद्गुणालंकार, फतद्गुण, श्यावातालंकार वर्णन। इति।

N. 360(b). Fatah Prakāśa by Ratana Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—5 x 6 inches. Lines per page—14. Extent—1,000 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Mahāvira Baksha Simha, Taluqedār,

Village and Post Office Kotharā Kalā, District Sultānpur (Oudh).

Note—Other details as in No. 360 (a).

No. 361(a). Bandī Mochana by Raghuvara Sīmha of Alipura. Leaves—23. Size—8×7 inches. Lines per page—22. Extent—230 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1904 or A. D. 1847. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Thākura Rāmadaurā, Village Miṭhaurā, Post Office Keśarganj, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री देवो ओ सहाइ । श्री पोथो बंदो मोचन लिख्यते । अस्तुति । यदि भवानो सुर बल्यानो असुर संघारनो नाम जो । तौनि भुषन जेहि मस्तक नावे, सो बरदायनो वाम जो । यदि कुमारो सिध रसवारो जाहि भजे श्री राम जो । सो बरदायनो त्रिभुषन दाता सिध करौ सब काम जो । महिमा बंदो अगम अपार सुष से बरनो नहि जाई जो ॥ गाढ़ परै बंदो कह सुमिरै निश्चै करै सहाइ जी ॥ बंदो माई सुमिरौ मैं तेही सुमिरत गाढ़ छुटाबहु मोही । नाम तुम्हार है बंदी माई । अपने जन पर होहु सहाई । तौन लोक सिरजा तुम जवहीं । नाम घराब बंदो तवहीं ॥ सुर गंधर्व नाग मुनि देवा सकल करै बंदो की सेवा । महिमा बंदो अगम अपारा । तौनो भुषन जासो उजियारा ॥ जो बंदो कर धरै ध्याना । पाइ कपूर पौ बिलसै पाना ॥

End—तब प्रभु बहु विधि अस्तुति कोन्हा ॥ पासोखाद बंदो तब दोन्हा ॥ ध्रुत सेवा तुम कोन्हा हमारी । लेउ अपने वर देउ विचारो । सुनहु नाथ एक वचन पुनोता । लेहु असीस जग होहु अजोता ॥ औरौ वचन सुनि लेहु हमारी । सो मैं बधा कहौ अनुसारो ॥ जहाँ परै प्रभु तुम कहें गाढ़ा । अस जानो तहई हम ठाढ़ा ॥ इतनो अस्तुति कर रघुनाथा । विनै देव सब भये सनाथा ॥ अन्य बंदो है गाढ़ उधारा ॥ अथम उधारे पतितन तारा ॥ जो यह कथा पढ़ै मनलाई ॥ ताकहं गाढ़ सकल मिटि जाई ॥ दोहा ॥ निश्चै गाढ़ उधार होई । अन्य तुम बंदो माई । जो यह कथा निसदिन पढ़ै सो वैकुण्ठो जाई ॥ इति श्री पोथो बंदो मोचन कथा संपूर्ण समापतो पुस्तक लिखत रंग नरायन पठनार्थ गिरधारी राम के जो कोई बांचे सुनै तिसको हमारी सोता राम । पंडित जन सो विनती मेरी । दूटा अक्षर बांचब जारो । सुभ महोना सावन मासे किसन पछे तिथि विवादसो संवत १९२० लिपा बांसवरेनो को छावनो सदर बाजार में ।

Subject—पृ० १—देवी की महिमा, पृ० २—बंदी माई का ध्यान । पृ० ३—बंदी देवी को संसार में महिमा भजन से इच्छा फल प्राप्ति । पृ० ४—९ तक—कमलावती राजा का उदाहरण जिसने स्त्रिय होकर बंदी जी का ध्यान कर सब प्रकार के सुख संपत्ति प्रादि प्राप्त किये राजा पुत्र न होने के कारण दुखी था सो पुत्र पाकर पूर्ण रूप से सुखी हुआ । राजा ने दान पुण्य अधिक किया बंदी के दरबार में जाना नाना प्रकार से पूजन करना पृ० १०—१८ तक । राम जी को अहिरावन का ले जाना, स्नान करा देवी पर बलिदान करने की तैयारी करना, राम जी का देवी का स्मरण करना, हनुमान का आना, अहिरावन को मारना प्रादि का वर्णन । पृ० १९—२३ तक—भगवान् रघुनाथ जी का देवी सेवा में लगना, देवी का प्रसन्न होकर वरदान देना ।

No. 361(b). Bandi Mochana by Raghuvara. Substance—New paper. Leaves—33. Size—8 x 6½ inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Muṇḍiyā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 1891. Place of deposit—Paṇḍita Yaśōdā Nanda Tiwāri, Village Kānthā, District Unāo.

Note—Other details as in No. 361(a).

No. 362. Sitācharitra by Rāyachandra (Kavi Chandra.) Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—10½ x 5½ inches. Lines per page—12. Extent—4,050 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1713 or A. D. 1656. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Jaina Mandira (Baḍā) Bārābanki.

Beginning—श्री जिनायनमः ॥ शंहरा ॥ मनमौ परम पुनोत नर ॥ वरच मान जिनदेव । लोकालोक प्रकास तस करै सम कितो सेव ॥ १ ॥ तस जनधर गौतम प्रमुप । धर्मवन्त धन पात जिन सेवत भवि जन सदा । विहै मोह तम राति ॥ २ ॥ चौपाई ॥ कवि बालक यह कोन्ही ब्याल । इसौ मातो बुधिबंत विसाल ॥ राम जानकी गुन विस्तार । कहै कौन कवि बचन विचार ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरु कुं सिर नाइ । कहै चंद उत्तम जग माई ॥ पर उपकारी परम पवित्र । सजन माव भगत कै चित्त ॥ ४ ॥ समकरि प्रादि घंत अक्षर । असात प्रादि अक्षर करि परा । ए सुमिरौ परमा दातार । सोता चरित चित करौ उदार ॥ ५ ॥ कर छुग जोरि नमौ जगदोस ॥ संतन कै मन अतिहो जगोस ॥ पर उपकारी परम

दयाल ॥ परम पूज्य अति परम कृपाल ॥ ६ ॥ पंच परम गुरु परम प्रधान ॥ ए
मुमिरो उरलक्षन आन ॥ जिन कै भव अति हो तुच्छ रहै गुरु के वैन हिये जिन
ग्रह ॥ ७ ॥ दाहा ॥ पंच परम गुरु को नमो । मंगलोक सिव लोक । आपु समान
भगत को करै तुरत तहकीक ॥ ८

End—देशाः—जा जाणौ निज जांगती वडै जात पर बाण । जाण पनाख्यौ
जाणियै जाण पणै परधान ॥ x x x x
चापारै—किरिया करत करण सुष चितवै । सो बहु जन मै निकसे कित ह्वै ।
करणो करै अयख्यौ पुटै । तापर मोह मया कर तूठै ॥ करणो करै रकता
जानै । जोग किय माहँ चित ठानै ॥ रन मूह मप्रता रस भोवै । कवहुँ आपन आपी
चोन्हौ ॥ यहिकल—सुनता है संतान धरम बुधा धारको । करै सुगत परवेशन
पहुँचे नानको ॥ यामै धाषो नाहि जिनेसुर यौ कहै । तजै सकल परमाध निराध्रव
सोल है ॥ पुनः ॥ कविवल कपौ जानको यौ यह ध्यान है । इसौ मतो बुध को
जु बुधि विस्तार है ॥ यह अपनो अरदाख्य मनोषा पास है । जैहै परम सुजान
जिनै को दास है ॥ चापारै ॥ संवत् सतरै तेरो तरै । सुग सिर अंध समापत करै ।
सुकल पष तिथि है पंचमो ॥ तादिन सरस कथा यह मणो ॥ ४३ इति श्री सोता
चरित्र भाषा संपूर्ण ॥ संवत् १८६२ ॥ मिठो पौष कृष्ण १३ बुधे ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—सोता को जनश्रुति । मंगलाचरण
नमश्चरादि बंदना । प्रस्तावना—राम सोता के शील गुणादि कथन द्वारा
पाठकों का ध्यान कथा को शीघ्र आकर्षित करना । सोता का स्वप्न देखना ।
राम द्वारा उसका फल कहा जाना । कुछ निकृष्ट फल से सोता का विड्वज होना ।
राम का आश्वासन । नगर में सोता रावण संबंधी मिथ्या अपवाद राम की इस
विषय की सूचना । लक्ष्मण का इस सूचना द्वारा कोधित होना और सोता के
सती होने का बार बार कथन करना । राम को उन्हें समझा देना । सेना पति
द्वारा सोता का वन निर्वासन करना । (२) पृ० १५—२२ तक—सोता को वन
वीथी कथा—वन में सोता का विनाश । वज्रजंघ से उसका मिलाप, उसका
सोता को अपने साथ ले जाना और भगिनीवत् उसको रक्षा करना । उसके
वहाँ कुछ काल पश्चात् दो पुत्रों का उत्पन्न होना । एक खड्गेक द्वारा उनको
युद्धादि विद्याओं में निपुण किया जाना । राजा वज्रजंघ ने यथा समय उनको
अवस्था ब्याह योग्य समझ कर 'पुष्योदर' को उसकी कन्या के साथ इनके विवाह
होने के लिये एक सम्पत्ति पत्र भेजना, उसका कोधित होकर निषेध करना । दोनों
दलों का युद्ध के लिये सुसज्जित होना । सोता पुत्र लवणाकुश का यह समाचार
पाकर प्रथम से ही युद्ध कर शत्रु की सेना को पराजित करना । इस पर वज्रजंघ
ब सोता का संतोष ।

(३) पृ० २३—८० तक—राम से सीता के युग पुष्पो से युद्ध । नारद का वन में सीता के पुष्पो से मिलना, उनका प्रणाम करना, नारद द्वारा राम लक्ष्मण का वैभव की साधारण चरचा करना, बालकों का उनसे उपर्युक्त सृजनों का संपूर्ण चरित्र जानने की प्रमिलापा प्रगट करना, उनका वचन करना, जनक भय निवारण तथा दक्षिण के महात्म्य सेन को कथा—जनकी स्त्री विदेहा से एक पुत्र और एक पुत्री का जुड़वा होना, पूर्वजन्म के वैर से एक देव का पुत्र को उठा ले जाना, फिर दया करके एक स्थान पर छोड़ देना, रथनूप के चन्द्रगति विद्या-धर द्वारा उसका पोषण । एक दिन नारद का जनक के यहां आगमन, सीता का भय से शर में घुस जाना । इस पर नारद ने अपना प्रपमान समझ कर उससे बदला लेने के लिये सीता का चित्र खींच कर उसी बालक को—जो इसका भाई था और विद्याधर के यहां पाला गया था—दिखा कर मोहित करना, उसका सीता सीता रटना, विद्याधर का जनक से सीता का संबंध स्मिर करने के लिये प्रस्ताव, जनक का राम के साथ उसका विवाह करने का प्रथम कथन करना, इस पर विद्याधर को अनुष पतिज्ञा, राम द्वारा उसका पूर्ण किया जाना तथा विवाह होना, 'मामंडल' को भी सीता का अपनी भगनी होने का ज्ञान होना, अपने पूर्व भय का स्मरण करने पर, मामंडल, जानकी और राम से प्रेम संयुक्त मिलाप होना, चंद्रगति राजा को मामंडल को राज्य देकर मुनि होना; राजा दशरथ का अपने दिए हुए कैंकई के वर को काम में लाते हुए 'राम' को वनवास देना, भरत को गद्दी देना, राजा का मुनि होना, लक्ष्मण सीता का राम के साथ जाना, भरत का वन में आकर राम से मिलना, और छोटने की प्रार्थना करना, राम का उन्हें समझा कर छोटा देना, वहां से भागे की लक्ष्मण-सीता सहित राम का चलना, मार्ग में बल्लुक राजा को सिंहादर से अभय करना, लक्ष्मण के कई विवाह होना, बालभिल को कन्या से लक्ष्मण का विवाह ।

(४) पृ० ८१—२५६ तक—रामचन्द्र लक्ष्मण का एक छुपणो ब्राह्मण की स्त्री के पास ठहरना, उसका इनके साथ प्रेम से व्यवहार करना, ब्राह्मण का कुपित होना, लक्ष्मण का उसे टांग पकड़ कर घुमाना, उसका भयभीत होना, राम का उसे छोड़ा देना और भागे चलना, एक देव का वन में राम से भेंट और उसके द्वारा राम का कुछ प्रसम्मान, देव का अपने स्वामी से उनका सब समा-चार जान कर उनकी सेवा करना उनके वसंत के निर्वाह के लिये एक उत्तम सा मवन निर्माण करना, वहीं पर उस छुपणो ब्राह्मण का आगमन, राम का उसके साथ प्रेम निर्वाह, ब्राह्मण का मुनि होना, बीजापुर को कुछ घातें, विजय सिंह राजा का निमित्त से अपनी कन्या के संबंध में पुछना, उनका उसका लक्ष्मण के साथ विवाह होने की भविष्यवाणी, गुल माला—विजय सिंह की

पुत्री—का मुनि सुन कर कि मेरे पति लक्ष्मण वन में चारोंगे प्रथम से ही वन में वास करना और यद्यपि समग्र वहाँ राम लक्ष्मण का आना और लक्ष्मण के साथ वनमाना का विवाह होना। वनमाला के पिता विजय सिंह के वहाँ राजा अनन्तवर्ष का भरत पर चढ़ाई करने के लिये सहायता मांगने का पत्र आना, यह ज्ञान कर राम लक्ष्मण का स्वयं राजा से कह कर उसको सेना लेकर वहाँ जाना, राजा को भरत के भरत को उसकी कन्या देने का प्रस्ताव करना, राजा का भरत को कन्या देना, रामचन्द्र का बीजापुर को छोड़ना, पद्मावती तथा लक्ष्मण विवाह, दंडक वन में रामचन्द्र का प्रवेश, एक मुनि द्वारा रामचन्द्र को ज्ञात होना कि ४९९ जैन मुनि कोहड़ में पेर डाले गये थे यही कारण इसके ऊजड़ होने का है, भरद्वाज को श्री चन्द्रनपा का लक्ष्मण पर मोहित होना, रामचन्द्र और लक्ष्मण द्वारा उसको लज्जित किया जाना, राम लक्ष्मण से भरद्वाज का मुँह करके परास्त होना, सोता दरज। रावण का सोता से मन्दोदरी द्वारा प्रस्ताव करना, सोता का उसे इसके लिये धिक्कारना, उसका लज्जित होना, उधर राम को सुग्रीव से भेंट और उनके द्वारा साहसवली विद्याधर से उसकी श्री की प्राप्ति। अपनी विषय वासना में राम के कार्य का सुग्रीव को विस्मृत हो जाना, लक्ष्मण द्वारा उसका पुनः स्मरण दिलाया जाना, सोता को खोज को जाना, दूतने जटो विद्याधर द्वारा उसका संपूर्ण समाचार पाना और ज्ञात होना कि वह रावण द्वारा हरी गई है। इस पर विद्याधरों का भयभीत हो कर राम से कहना कि सोता का ध्यान त्यागिये और जितनी चाहिये विद्याधर कथाओं से विवाह कीजिये, राम का न मानना और कहना कि "अच्छा तुम कुछ सहायता न करो हमें केवल मार्ग बता दो हम अकेले उससे लड़ेंगे।" इस पर विद्याधरों का 'कोटि शिला' दिखा कर यह कहना कि जो इसे उठा लेगा वही रावण को जीत सकेगा। लक्ष्मण का उसे उठा लेना। विद्याधरों का उनके बल का परिचय पाकर राम की सहायता करना, हनुमान द्वारा सोता को खबर पाना लंका पर चढ़ाई करना। लक्ष्मण रावण युद्ध, रावण का वध। सोता को प्राप्ति। उनका अयोध्या को गमन। उधर अयोध्या के लोगों का राम वियोग में दुःखित होना। सोता को पाकर राम का जिन स्तुति करना। राम का विभीषण द्वारा समर्पक किया जाना। वहाँ पर बहुत दिनों तक सानंद राम का राज्य करना।

(५) पृ० २५७—२८२ तक—एक दिन राम को सुचि करके कौशल्या का आह्वान होना, नारद का वहाँ पर अकस्मात् आना। देवी का संवाद, नारद का राम का समाचार लेने लंका जाना, लंका में जाकर एक दिन 'रावण' का कुशल पूछने पर उनको दुर्दशा होना और बंदों अवस्था में राम के निकट आना।

पीछे नागद्वारा माता के रोने पीटने का समाचार राम का सुनना और उन्हें का मोह उत्पन्न होना । विभीषण का राम मातु के पास उनके पुत्रों का समाचार भेजा जाना और अयोध्या आगमन की सूचना । माता की प्रसन्नता और दान । नगर में ब्याह्र जना । लक्ष्मण का राम से अपनी ब्याही हुई सभी स्त्रियों को बुलाने के लिये आज्ञा मांगना । राम का प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देना । दूतों द्वारा सभी स्त्रियों का बुलाया जाना । और इन सब के साथ अयोध्या आगमन । अयोध्या में भरतादि सहित सभी माताओं का आनन्द मनाना । अयोध्या की उस समय की शोभा का वर्णन । भरत का अपने को राजपाट से श्रृंखला दिखाना, और भोग विलास से उन्मुक्त होने के लिये राम से प्रार्थना करना । राम तथा भरत संवाद । एक दिन राम के एक हाथी का बिगड़ना और भरत को देख कर उसका जाति स्मरण होना । दाना घास न खाना । कुल भूषण और देश भूषण मूर्तियों द्वारा राम को यह समाचार ज्ञात होना कि इनका और भरत का पूर्व संबंध है, इससे भरत को वैराग्य उत्पन्न होना । उनके वैराग्य की दशा, राम का विभीषण आदि को धिदा कर सब को राज्य बांटना । शत्रुहन को मथुरा का राज्य दिया जाना । मथु की हार । नगर के कुछ अविचारो लोगों द्वारा सीता के अपवाद का समाचार राम पर पहुंचने और उनके वनवासादि की कथा सुनाना । सीता के दोनों बालकों का कोषित हो कर राम पर चढ़ाई करना ।

(६) पृ० २८३-३०० तक—दोनों दलों में युद्ध होना । बालकों के विचित्र रण कौशल को देख कर राम लक्ष्मण का आश्चर्यान्वित होना । अन्त में पारस्परिक पहिचान होना । युद्ध की निवृत्ति सिद्धाथ द्वारा राम को सीता निर्वासन विषयक अपालेन, राम का हंस कर उनके आदेश शिरोधार्य कर सीता को बुलाना । सीता का अयोध्या में आगमन । सीता के सतीत्व की शक्ति द्वारा परीक्षा । देव शक्ति से अग्नि कुंड का तालाब हो जाना और उसका उमड़ कर वह चलना । दर्शकों के डूबने का भय होना । सीता से विनती करना, तब पानी का कम होना । सीता का जल से निकल कर विरक्त होना, राम का उन्हें इस कार्य से बहुत रोकना और उनका न मानना । अनेक ज्ञान-वर्धित वाक्यावली द्वारा लक्ष्मणादि सभी राम के सहयोगियों को उपदेश । सीता का आर्थिका हो जाना, कवि द्वारा सीता का कुछ गुणानुवाद, कवि का ग्रंथ का आचार वर्णन करते हुए कुछ थोड़ा सा अपना कथन—

किपौ ग्रंथ रविसेन ने, रघुपुराण जिय जान ।

यहै परध इस में कह्यौ राखंद उर जान ॥

कथा के पाठकों को फल प्राप्ति । ग्रंथ समाप्ति तथा लेखन काल ।

No. 863(a). Bhīṣma Parva by Sabala Sīmha Chauhāna
 Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—8 × 5
 inches. Lines per page—28. Extent—1,220 Anuṣṭup
 Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
 Composition—Samvat 1718 or A. D. 1631. Date of manus-
 cript—Samvat 1919 or A. D. 1832. Place of deposit—
 Thākura Umarāwa Sīmha, Village Mānikapur, Post Office
 Bisawā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ चौथाई ॥ ० गुरु गोविन्द के चरण
 मनावैं । जेहि प्रसाद उत्तम गति पावैं ॥ करि प्रनाम रघुपति के पावन ॥ चारि
 वेद जाके गुन गायन ॥ अवधनाथ सोतापति सुंदर । दोनवंधु रघुवंस पुरंदर ॥
 शिव सनकादि श्रंत नहि पावैं । नर मुष ते कहि विधि गुन गावैं ॥ सुक सारद
 नारद से पाठक ॥ हनुमान गावैं गुन नाटक ॥ बालमोक रामायन कर्ता । राम
 चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पुराण श्री भारथ । भाष्य व्यास ग्यान
 पुरषारथ ॥ दोहा ॥ पारासर ते जन्म है व्यास देव रविराज । जा मुष ते भाषा
 प्रगट भा कवि कुल सिरताज ॥ चौ० ॥ गुन गनेस सारद के पावन । करौ प्रनाम
 होहु सुम दावन ॥ संवत सत्रह से अट्ठारहि । तिथि पूर्णा मंगल के वारहि ॥ माघ
 मास भा कथा विचारो ॥ अवरंग साहि दिह्योपति धारो । सब पुरान पर नायक
 भारथ । जामे कुरु पांडव पुरुषारथ ॥ व्यास देव भवभार निवारन । भारथ रचेउ
 जगत के तारन ॥ दो० ॥ जोगजुड रस मेघ सब भारथ मोहै सर्व सबल सिंह
 चौहान कहि भाषा भोषमपर्व ॥

End—पांडव मन आनंद दल जोति चले रन ठान । अर्जुन के रथ सारथो
 सुन्दर श्री भगवान ॥ चौ० ॥ गोघन सहस देहि जो दानहि जो फन सब तोरथ
 असनानहि जो फल संभुनाथ पद परसे । जो फल होइ साबु के दरसे ॥ जो फल
 ब्रत एकादसि कोन्है । जो फल होइ धरनि के दीन्है जो फल रन महुं प्राण गवाये ।
 जो फल होइ ब्रह्म के आये ॥ जो फल काटि विप्र पद परसे । सो फल भारथ
 कहे सुने से ॥ व्यास देव भारथ के करता । बाढ़ै पुन्य पाप के हरता ॥ दो० ॥
 राम ३० गोविंद हरि कोजिय सदा वषान । भाषा भोषम पर्व कह सबल सिंह
 चौहान ॥ इति श्री महाभारते भोषमपर्व भाषा कृते अष्टादशोऽध्याय १८ समाप्तं
 संवत १९१९ शाके १८८४ माघ मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शनिवासरे लिख्यते इदं
 पुस्तकं गनेस पंडित श्रीराम चन्दायनमः ॥ श्री राधाकृष्ण जु सहाइ सदा ॥ श्रीराम ॥

Subject—भोष्य का सुद्ध और उसको महिमा आदि का बखान । येत
 में महाभारत के गाने पढ़ने सुनने सुनाने का फल और लेखन काल ।

No. 263(b). Bhīshma Parva by Sabala Sīnha Chauhāna.
 Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,170 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—
 —Thākura Jaibaksha Sīnha, Village Mithāura, Post Office Kesarganj, District Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भीष्मपर्व लिख्यते ॥ चौपाई ॥ गुरु गोविन्द के चरण मनैये । जेहि प्रसाद उत्तम गति पैये ॥ कही नाम रघुपति के पावन । चारि वेद जाके गुन गावन अवधनाथ सीतापति सुन्दर । दोनबंधु रघुवंस पुरंदर ॥ सिव रुनकादिक घेत न पावहि । नर मुषते कहि विधि गुन गावहि ॥ महिमा निगम कहत नहि चावै । सस सहस मुषते गुन गावै ॥ सुक सारद नारद से पाठक ॥ हनोमान गावत गुन नाटक । बालमोक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पून श्री मारथ । भाषेत व्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥

End—पारथ नहि जोते अपने बल । जो नहि कृष्ण करै रन में शल । जहं भीष्म सर सग्या लोन्हो । तंबू एक बड़ा पड़ा कै दोन्हो । गंगासुत जब कोन्हो मानहि धर्मराज पाये तब भानहि ॥ दो० ॥ पांडव दल प्रानंद मे जोति चले मैदान । पञ्चन के रथ सारथी साप अहै भगवान ॥ धन साहस देइ जो दानू । कानो बैठे सुने पुरानु । जो फल होई सिद्धि के परसे । जो फल होई संभु के दरसे । जो फल होई एकादसि कोन्हे । जो फल होई भूमि के ठोन्हे । सो फल है रन प्रान गंवाये सो फल होई बल के पाये ॥ सो फल कोटिन विप्र जिवाये । सो फल होई प्रथ सुनि पाये । व्यास देव मारथ के करता । नासे पाप पुन्य के बढ़ता । दोहा कृष्ण विष्णु गोविंद प्रभु कोजे सदा बसान । भीष्मपर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥ इति श्री महाभारते भीष्म पर्व भाषा कृते । अष्टादशोऽध्याय श्री श्री महापुराणे भाषा पर्व सम्पूर्णम् । कागुन मासे शुक्लपक्षे तिथौ परिव्रा संवत् १९२२ लिपं जगबहादुर रैकवार जो देषा सो लिपा मम दोष नाहो । साच संत के वंदनो बल के प्रनाम जो कोइ पाचो प्रेम ते ताको सीता राम ।

Subject—महाभारत के भीष्म पर्व की कथा ।

No. 363(c). Bhīshma Parva by Sabala Sīnha Chauhāna.
 Substance—Country-made paper. Leaves—68. Size—10½ × 6 inches. Lines per page—19. Extent—1,300 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Place of deposit—
Babū Padma Baksha Sīṃha, Lavedapur, District Bahraich.

Note—आदि घेत के अवतरण No. 363 (b) के अनुसार। घेत में कार्तिक
कृष्णपक्षे षकादश्यां तिथौ चन्द्रवासरे पुस्तकं समाप्तम् ॥ शुभ संवत् ॥
माशे ॥ शाके ॥ श्रीकृष्ण को जे। इति

Subject—पृ० १—१ तक—कौरव पांडव को सेना को तैयारी और
अर्जुन का वैराग्य, कृष्ण का समाधान करना, फिर मोघ्म से आशीर्वाद पाना।

पृ० १०—१६ तक—दोनों सेना का युद्ध वर्णन, अर्जुन और मोघ्म के
युद्ध का वर्णन।

पृ० १७—२२ तक। शंख का युद्ध के लिये तैयार होना। मोघ्म शिखंडी
युद्ध वर्णन। अर्जुन का कौरव सेना से प्रबल युद्ध करना। शंख और द्रोण का
युद्ध वर्णन। युद्ध विधाम।

पृ० २३—३२ तक। धृष्टद्युम्न और उत्तरा का द्रोण से युद्ध वर्णन। अर्जुन
व भगदत्त युद्ध वर्णन। भगदत्त का वध।

पृ० ३३—५० तक। मोमसुत और चलम्ब युद्ध वर्णन। लाक्षागृह वर्णन।
अर्जुन व मोघ्म का युद्ध। मोघ्म का स्व को निशस्त्र करना। हनुमान व मोघ्म
संवाद।

पृ० ५१—६८ तक। मोघ्म का कृष्ण को अस्त्र महवाने की प्रतिज्ञा करना
और उसका पूरा होना। अर्जुन का प्रबल युद्ध। धर्मराज और कृष्ण का मोघ्म
के समीप जाना और मृत्यु ज्ञात करना। शिखंडी व मोघ्म का युद्ध। अर्जुन का
बाण मारना और मोघ्म का हत होना तथा अर्जुन का शरशय्या बनाना।
कथा का फल वर्णन।

No. 363(d). Śalya Parva by Sabala Sīṃha Chauhāna.
Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5
inches. Lines per page—11. Extent—265 Anuṣṭup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—
Mahārāja Bhagawān Baksha Sīṃha, Rājā of Amethī, District
Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री यक्षेशायनमः ॥ अथ सैलपर्व ॥ देहा ॥ आसरेव पद्
मदिये का मुप वेद पुरान ॥ सैलपर्व भाषा रवे सबलसिंह चौहान ॥ जुके करन

जक जस पाये ॥ दुरयोधन अस वचन सुनाये ॥ हाहा मित्र परम सुषदायक ॥
महा बुद्धि करवे के लायक ॥ क्षत्रोधर्म मित्र तुम पाला ॥ यह सब दोष हमारे
भाला । बल से सके न घबुने मारन ॥ कुल से बधे जगत के तारन ॥ अब काँके
सेनापति करिये ॥ जाके बल भारथ में लरिये ॥ कृतवद्मा तब कहेउ विचारो ॥
राजा सुनिये बात हमारी ॥ जव पंडे निज देस पाये । के बसिष्ट जदुनाथ
पठाये ॥ मागे पाँच गाँठ नहिं ओन्हे ॥ सब विधि पांडु निरादर कोन्हे ॥ जदुपति
कहेव न कोन्हेव राजा । तब थोपति यह भारथ साजा ॥ अब कहना कोजे केहि
काजा ॥ सहसा सदा बुझिये राजा ॥ धोरमान नृप परम सयाने ॥ तिन कर गुन
नहिं जात बपाने ॥ सदायर्म अपने मन राये ॥ सत्य छाड़ि असत्य न भाये ॥

End—पृथोपति दुरयोधन लक्ष क्षत्रवर साथ ॥ लक्ष्मी जाके कांथ पर
तेहि विधि कोन्हे चनाथ ॥ तब नृप मन महं कोन्हे विचारा ॥ पैरो रुधिर
जाउ अब पारा ॥ अब सुताह पोलि सब डारे ॥ लैके गदा नृपति पगुडारे ॥
एहि विधि भारथ भयो महारन ॥ पैरो लेधि पर लेधि हजारन ॥ बार बार
नहिं सुझे काहु ॥ रुधिर नदी पति बहिय प्रयाह ॥ पैरत नृप संका नहिं मन में ॥
बहत लेधि अभिरत है तन में ॥ कवहुंक केश चरत प्रहभावे ॥ पैरत थके थाह
नहिं पावे ॥ जहाँ द्रोण गडे वडे पंमा ॥ अभिरेव तहाँ धरे कर धंमा ॥ गहि के
पंमा किये विधामा ॥ जिय में साच जाउ किमि धामा ॥ पकरे लेधि बहुत
मभियारा ॥ बुद्धि जस्त सहि सकत न भारा ॥ विधि बस एक लेधि तब गहेऊ ॥
बुझो नहीं भार तिन सहेउ ॥ चलो लेधि सा रुधिर हिलोरति ॥ अभिरत मृत्यु
गदा सिर फेरत ॥ बहुत कष्ट ते उतरेउ पारा ॥ तब अपने मन कोन विचारा ॥
दोहा ॥ कौन बौर को लेधि यह दिवौ निबहि निदान ॥ सैलपवे एहि विधि
कहेव सबल सिंह चौदान ॥ इति श्री हरि चरित्रे महामाथे सबलपर्व भाषा कृत
बुतियेमा अध्याय ॥ २ ॥ मितो वैशाख सुदी ॥ ६ ॥ संवत ॥ १९ ॥ २ ॥

Subject—महामारत के शल्यपर्व की कथा ।

No. 363(a). Śalya Parva by Sabala Simha Chauhāna.
Substance—New paper. Leaves—15. Size—10½ × 6 inches.
Lines per page—18. Extent—200 Anuṣṭup Śloka. Ap-
pearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition
—Samvat 1724 or A.D. 1667. Place of deposit—Babū Padma
Bakshā Simha, Lavedapur (Bhinaga), District Bahrāich,

Note—आदि संत No. 363(d) के अनुसार ।

No. 363(f) Sabha Parva by Sabala Simha Chauhana. Substance—Country-made paper. Leaves—35. Size— $9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—1,750 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1874. Place of deposit—Thākura Jadu Nātha Baksha Simha, Hariharapura, District Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ समापर्व कथा महाभारत लिखते ॥
 दोहा ॥ सुमिर व्यास गनयति चरन मिरिजा हरि भगवान् ॥ समापर्व भाषा
 रचा सबल सिंह चौहान ॥ सबह सै सत्ताइस संवत सुध मलभास । नौमो गुरु
 अरु पक्ष सित मय यह कथा प्रगास ॥ चौ० ॥ अब नृप कथा सुनहु मय जौई ।
 तव हित हेतु कहत मैं सोई ॥ कुरु पांडव सोईहि दोउ पाछे । जस समाज
 बरलत मैं पाछे ॥ इन्द्र पक्ष दोउ बसै सुखागो ॥ भति दिग नंद राज्य अधिकारो ॥

End—लखि कृमो कच भूप ठख गाथुर वाइन लाग । गजि गजि उचाट
 कर गयो नागपुर त्याग ॥ सबलसिंह सुनि कहि विदुर मुख को प नाथ हलवाल ।
 होई उदास सकुनो करन बोलि लोन ततकाल ।

इति श्री महाभारत समापर्व भाषा हृते पांडव वन गमनो नाम सप्तमोऽध्याय ।

भाषामासे शुक्ल पक्षे तिथौ प्रतिपदायां शुक्रवासरे लिख्य दुर्गाप्रसाद संवत्
 १९३२ राम राम ।

Subject—पृ० १—१७ तक—निर्माण संवत्, प्रार्थना, शिशुपाल वध ।

पृ० १८—सकुनि दुर्वान संवाद ।

पृ० १९—२०—कुरुषों को छतराष्ट्र से भेंट ।

पृ० २१—२४—छुपा होना और पांडव का हारना ।

पृ० २५—२९—सभा में द्रोपदी पादि का संवाद ।

पृ० ३०—३१—भीम प्रतिज्ञा ।

पृ० ३२—३५—पांडव वन गमन ।

No. 363(g). Sabha Parva by Sabala Simha. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size— 11×7 inches. Lines per page—24. Extent—1,485 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1936

or A.D. 1879. Place of deposit—Thākura Jai Baksha Simha, Mithaurā, Post Office Keśarāgaūja, District Bahraich (Oudh).

Note—उद्धरण व विषय No. 363 (f) के अनुसार ।

तिथि—संवत् १०३६ शके १८०१ चैत्र मासे कृष्णपक्षे तिथौ दुरज सोम-
वासरे हस्त नक्षत्रे लिखतं दलजोत सिंह रैकवार के ।

No. 363(h). Drōṇa Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—82. Size—12½ × 5½ inches. Lines per page—22. Extent—1,100 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedapur, District Bahraich.

Beginning—श्री मधेशायनमः ॥ रथ द्रोणपर्व लिख्यते ॥ चौपाई ॥ श्री
गुरु चरन दंडवत करिये । जा प्रसाद भवसागर तरिषे ॥ बन्दौ रामचन्द्र रघु
नन्दन महावीर दसकंध निकंदन ॥ दीरघ बाहु कमल दल लेखन ॥ गनिका
व्यास ग्रहिल्या मोचन ॥ व्यास देव कलि पातक हरता । चारिवेद श्री भारथ
करता ॥ श्रीता जननेजय गुन सागर । महावीर कुरुवंस उजागर ॥ उत्तम नगर
चंडूगढ़ साजा । भूपति मित्रसेन तहं राजा ॥ देहा ॥ रघुपति चरन मनाई कै
व्यास देव धरि ध्यान । द्रोण पर्व भाषा रचत सबल सिंह चौहान ॥ १ ॥ चौ० ॥
तब मोपम सर सेजा लोन्हेउ । दुर्योधन तब पति दुख कोन्हेउ ॥

End—द्रोणवंशु जाके रथ सारथ । मारि सकै को रन में पारथ ॥ कुरुपति
लहत सैनबल कारन । मेरे बल तुमही जगतारन ॥ सो सुनि कृष्ण बहुत मुख
माने । नृप कौ परम साधु करि जान्यौ ॥ दुर्योधन तब करन बुलायो । ।
तुम बल हम यह मारथ ठाना । मित्र सो सपै आइ निबराना ॥ मुकुट बांधि सैन्य
पै लरिषे । । सो सुनि करन कहन बसजागे । दुर्योधन राजा के पागे ॥
नृप निरपह्नु मेरो पुरुषाथ । पंडौ सैन बघौ रन पारथ ॥ दुः दिन रन मेरो सिर
भारा ॥ निदबै मर्जुन करौ संहारा ॥ सो सुनि दुर्योधन मुख पायो । सैनपति
करि मुकुट बंधायो ॥ देहा ॥ द्रोणपर्व भाषा रचौ सबल सिंह चौहान । पंडव
के रक्षक सदा भक्त बस्य भगवाना ॥ इति श्री महामारते द्रोणपर्व भाषा कृते
अष्टमो अध्याय ८ संपूर्ण मस्तु ॥ पूसमासे कृष्ण पक्षे द्वादस्यं तिथौ सम्वत्
१९०० श्री राम ॥

Subject—पृ० १—१२ तक । मोम के मारि जाने पर द्रोण को सैनपति
बनाना और चक्रव्यूह युद्ध व अभिमन्यु वध वर्णन ।

पृ० १३—३० तक—अर्जुन को जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा, दुर्योधन से सलाह, द्रोण का रक्षा करना, कृष्ण का स्वादा कर घोषा देना और अर्जुन का जयद्रथ को मारना । युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना ।

No. 963(i). *Drōṇa Parva* by *Sabala Simha*. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—12×6 inches. Lines per page—18. Extent—1,136 *Anuṣṭup Śloka*s. Appearance—Old. Character—*Nāgarī*. Date of Composition—*Samvat* 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—*Samvat* 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—*Thākura Jaya Baksha Simha*, Village *Mithaurā*, Post Office *Kesaragañja*, District *Bahrāich* (*Ondh*).

Beginning—अथ द्रोणपर्व लिख्यते ॥ चौ० । श्री गुरुचरन दंडवत करिये । जोहि प्रसाद भवसागर तरिये । बन्दौ रामचरन रघुनंदन महावीर दसकंध निकंदन । करि कर बाह कमल दल लोचन । मनिका व्याध यहिया मोचन ॥ व्यास देव कलिकलमप हर्ता । चारि वेद श्री भारत कर्ता ॥ श्रोता जन्मैजे गुण सागर । महावीर कुरवंस उजागर ॥ नृप सोह पाइ रिपेसुर ग्यानो । भाषत महा सुधा समवानो ॥ सत्रह सै सत्ताईस जानो । सो सबत यहि भोति बषानो । शुक्र पक्ष सम्बन्धि के मासहि । तिथि पढी कियो कथा प्रगासहि । उत्तम नगर चंद्रगढ़ काजत । भूपति मित्रसेन तहं राजत । रघुपति चरन मनाइ कै व्यास देव धारि ध्यान । द्रोणपर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥

End—चौ० । सो सुनि द्रोण पुत्र कियो कोथहि । पांडौ सहित वंधु सब जोथहि ॥ धृष्टद्युम्न मारी मैदानहि । तौ पित्रहि देहौ जलपानहि ॥ यह कहिके कछु मासउ वैनहि ॥ काल्हि करन सेनापति सैनहि ॥ हुइ दिन करन सेन के रच्छक । महामाठ करिहौ परतच्छक । सूर्यपति सकति लियो या कारन । करन धोर परखुन कर मान । जो प जून को देशत पैरहै । बल्य फांसते कौन बचैहै । दोहा ॥ धर्मराज यहि विधि कही कहिये प्रानंद स्याम । पांडौ संकट परै जब तुम रच्छक सुषवाम ॥ चौ० ॥ दीनबंधु जाके रथ सारथ । मारि सकै को रन में पारथ ॥ कुषपति लरत सैनवल कारन । भरे बन तुमहो जनतारन ॥ सो सुनि कृष्ण बहुत सुष मानो । नृप को परप साधु करि जानो । दुर्योधन तव करन बोलाये । करि आदर आसन बैठाये । तव बल मैं मारथ रन ठानो । सिर सो समै घाइ नियरानो । मुकुट बाधि सेनापति हुजै । पातहि जैत पत्र नृप लोजै ॥ सो सुनि करन कहन यह लागे । दुर्योधन राजा के भागे ॥ नृप देयो मेरो पुरुषारथ । पांडौ सैन बंधी नृप

पारथ ॥ इह दिन रत्न मेरे सिर भारहि । निहचै मज्जन करी संहारी ॥ सा सुनि दुजो-
धन सुप पायो सैनापति के मुकुट बंधायो ॥ दो० ॥ दोनपर्व भाषा रचो सबल
सिंह चौहान पांडव के रक्षक सदा भक्तवत्स्य भगवान । इति श्री महाभारते दोन
पर्व भाषा कृते सप्तमोऽध्याय सम्पूर्णम् लिषा दलजीत सिंह रैकवार संवत् १९३२
सावन मासे शुक्लपक्षे तिथौ द्वादश्यां गुरुवासरे शाके १७९५ राम राम ।

Subject—महामारत के दोन पर्व की कथा ।

No. 363(j). Gadā Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size— $9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—250 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 193 or A.D. 1874. Place of deposit—Thākura Jadunātha Baksha Simha, Hariharapura, District Bahraich.

Beginning—चौ० ॥ गदापर्व अब करत बखाना । दुर्योधन मन में अनुमाना ॥ संयकार में गयो न चोन्हा । मुकुट चौध मुख निरखै लोना ॥ लखन कुंवर चोन्हि जब पायो । कहना करत नृपति मनलायो ॥ जुके पुत्र हमारे कामहि । कहा कहा जाये कहि धामहि ॥ ऐसे तुम सपूत संसार । सुप परे मोहि पार उतारा ॥

End—भारत सुने संग फल सको कहा नहि जाय । संत वास वैकुंठ लहि दरश देहु अदुराद ॥ इति श्री महाभारते गदापर्व भाषा कृते सबल सिंह कृतौ समाप्तम् शुभ मस्तु वैशाख मास शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्दश्यां गुरुवासरे लिखितं दुर्गा पाठक झंगेपुरवा के यादव पुस्तक दण्डा तादृशं लिखितं भव । यदि शुभम् मशुडम वा मम दोषो न दीयते ॥

Subject—भीम का जरासेन की जंघा तोड़ना और धृतराष्ट्र का भीम से मिलने के लिये कहना और कृष्ण का वचन ।

363(k). Gadā Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—7. Size— $10\frac{3}{4} \times 8$ inches. Lines per page—18. Extent—100 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedapura, Bhisagā Rāja, (Baharāich).

Note—यादि संत No. 363(j) के अनुसार ।

No. 363(l). Udyōga Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size— $9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—2,240 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Thākura Jadunātha Bakhsha Simha Tālagedār, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ देहा ॥ विधि हरिहर गणपति गिरा
सुर मुख पाद नियोग । सबल सिंह कहि भनत पर्व उद्योग ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह
रिपि राइ सुनहु कुठकेव । कथा सुमग मुद मंगल हेव ॥ २ ॥ जब हरि धर्मराज
पहं पाये । मिलत हृदय अति आनंद छाये । गहे चरन भोमादिक भाई । बैठे अति
प्रसन्न जदुराई ॥

End—करी शकैरौ भूमि सब कुत्र परो तव शोरा ।
बचै न संकर सत मोहि जो राखै अज ईश ॥
मये मुदित मन धर्म सुत सुनि हरि गिरा प्रमान ।
मणित पर्व उद्योग यह सबल सिंह चौहान ॥

इति श्री महामारते उद्योगपर्व भाषा कृते तृप्तसप्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥ वैसाख
मासे शुक्लपक्षे तिथौ अष्टम्यां शुक्रवासरं श्री संवत् १९३१ शके १७ ॥ राम राम ।

Subject—महामारत के उद्योगपर्व का अनुवाद ।

No. 363(m). Karna Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size— 13×5 inches. Lines per page—22. Extent—440 Anushtup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A. D. 1667. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Thākura Dalajita Simha, Village Jālimasimha kā Purwā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य कर्णपर्व लिप्यते ॥ प्रथमहि कोजै
गुरुहि प्रनामा जेहिसे होइ सिद्धि सम कामा । वंदै रामचन्द्र के पाया । सोला
पति रघुवर के दाया । महिमा अगम कोऊ नहि जानहो । परम भक्ति वंदै हनुमानहो ॥
सुर मुख बार बार को मासा । तिथौ प्रकाटसो कथा प्रकासा ॥ रघुपति
चरन मनाइ के आसदेव धरि ध्यान । कर्णपर्व भाषा रचौ सबल सिंह चौहान ॥

गुरु दीन जूझे मैदानहो । दुर्जोधन तब घाप बषानहो ॥ डोनों करन सालोच्छे
छुयो । घोर घनेक चढ़े दिग घघो । घब केहि के दिग मकूट बंधीये । जेहन जोने पत्र
बोचो पैये ॥ दीन पत्र कही नृप सुन लोजे । घाप सोच केहि कारन कीजे ॥ को
मेरे सिर दोजे मारा । नाहि तौ करौ करन मिरदारा ॥ रवि सुत करन महाबल
भारो । घजुन के समान धनुचारी ॥ गुरु सुत दोनो करो प्रनामा । तब राजा
पहि भांति बषाना ॥ कही करन कुहनाथ भुवरहो । जो मेकहरन सौपतो भारहो ॥

End—करन का बाण उड़ाना जबहो । कौरव निज दल पाये तब हो ॥
पांडव पाये रवि सुत पासा । क्रांतो उंकत ऊमो स्वांसा । राय सुधिछिद्र एक में
लाये । सहदेव नकुल जय वंधव पाये । घजुन कही संग में जरिहो । भीम कही जोके
का करिहो । घन दाहो मुंड खोजौ भाई । करन कै चिता समारह जाई ॥ वास-
देव सुत हेरन तब पाये । विन दग्धो छित कतहुं न पाये । देवा हेरि सकल भूहारो
कही वसुधा न रहो विनु जारो ॥ सब पांडव कारन करहि कौन कुमति विधि
दीन करन घोर घन वंधु यह मारि कौन गति कोन्ह ॥ भीम हथोरो चिता बनाये ।
करन दाह छै तहाँ दिवाये । रोखहि घरनो घोर बकासा । रन बन रोखत रोखत
तासा ॥ रोखहि सब पशु पंखो ब्याला । कहिये काह दर्द के ब्याला ॥ रन में करन
नाउ कै लोना । अगर मती पहिले पहिले जिउ जोना ॥ एकही संग वसेर सुभ स्वर्गलोक
तिन लोन । करन घोर घन वंधु वा जनम सुफल करि दीन । इति श्री महामागते
करनाचं भाषा कृते चतुर्थेऽध्याय समाप्त संवत् १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे
तिथौ नैमिषं चंद्रवासरे ॥

Subject—कर्म का घजुन के हाथ गुड में मारा जाना, पांडवों का रोना,
घजुन का यह कहना कि हम कर्म के साथ जल मरेंगे, भीम का यह कहना कि
घब जोना व्यर्थ है । श्री कृष्ण भगवान का समझाना, भीम का बिना जलो भूमि
कर्म को चिता के लिये खोजना घोर उसका न मिलना, संत में अपनी हथेली
पर चिता बनवा कर कर्म का जलाना, उसको खो का सौ होना आदि ।

No. 363(n). Karna Parva by Sabala Simha Chauhāna.
Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—12½ × 5½
inches. Lines per page—20. Extent—400 Anuṣṭup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Bābū Padma Bakhsha Simha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—शेष No. 363 (m) के अनुसार ।

No. 363(o). Svargārohana Parva by Sabala Simha Chau-
hāna. Substance—Country-made paper. Leaves—36, Size—

9½ × 8½ inches. Lines per page—20. Extent—700 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1874. Place of deposit—Babū Jadunātha Sīmha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वर्गरोहण पर्व लिख्यते ॥ पार्वती सुत सुमिरौ तोहो । जान बुझि बर दोजे मोहो । सुमिरि शान्दहि सुमति विचारो । करहु कृपा जाहुं बलिहारी ॥ निसु दिन मैं तुव चरण मनावो । राजा करु पाँदव गुन गावो ॥ पर्व पठारह भारत भयऊ । तापरु संत कथा यह ठयऊ ॥

End—बौध रूप द्वै यहाँ मुरारो । सुनु जनमैत्रय कथा विचारो ॥ जुझिष्ठिर राजा दुर्गेधन राई । यहि विवि हरि पुर को ठकुराई ॥ वैशंपायन जनमैत्रय पागे । कथा रमान ज्ञान के पागे ॥ जो यह कथा सुने यह गावै । हरि पुर वसै इहाँ नहि पावै ॥ इति श्री स्वर्गरोहण कथा समाप्त शुभ मस्तु चांभिन मान शुक्लपक्षे तिथौ अष्टम्यां रविवारे श्री संवत् १९३६ लिपि दरबारी लाल कायस ।

Subject—महाभारत के संत मे स्वर्ग को जाना ।

No. 363(p). Svargārohaṇa Parva by Sabala Sīmha Chāhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—8½ × 4 inches. Lines per page—16. Extent—400 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1734 or A. D. 1876. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Thākura Jayabaksha Sīmha, Mithaurā, Post Office Kesarganjā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणाधिपतयेनमः ॥ अथ कथा सर्गरोहिनि लिख्यते ॥ अति उदार मंगन सदन दलन प्रबल दुष द्वंद । सबल श्याम आनंद मन प्रभु बुद्धा वन चंद ॥ चौ० ॥ कलि कराल आवन बल देषा । रहिहि न कतहुं धर्म कै रेषा ॥ सब विचारि सम मंत्र दिहाया ॥ कलौ प्रभाव सम प्रभुहि सुनाया ॥ वान तरंग कलि अस्तुति कोन्हा । अस्या पाइ पगु मंगल दोन्हा ॥ व्यास देव जाना सब भेऊ ॥ अलप निरंजन है समदेऊ ॥ दो० ॥ बलमदहि उपदेसि प्रभु चले छेगिका जाहि । कंचन महल विचित्र अति लुप्त मये जग माहि ॥ कथा घरंन कोन तब व्यासदेव उपचार । परिहित सुत उपदेस सुनि कहौ देवार विचार ॥ सुन राजा पाँदव कुर पेठा । एक एक नृप पहाहि सचेठा । महाबली मारेउ कुर पेठा । सत भ्रात

हुजोवन मारे । पष्ठादस छोहनि संहारे ॥ वधे भोष्म । द्रोण भगदंता । जुमे कसे
चादि सार्वता ॥

End—कृष्ण बहोरि सारथी बोलाये । दिव्य विमान साजि तब लाये जाहु
नक दुजोवन राजा । आनहु बेनि सुग साजि समाजा ॥ मौन बेनि चलि जमपुर
आये । चलहु भूप-जहुनाथ बोलाये ॥ चह्यो हर्षि तब संखन पाये । पाये उत जहं मुनि
समुदाये ॥ द्रो० ॥ हरि पम रेनु चढ़ाइ सिर । मुनिन्ह दंडवत कोन्ह । सत आता
जहंवा रहे तहाँ नृप आसन दोन्ह ॥ धर्मराय बोले विलपाता कर गहि बांह उठे
जन आता ॥ देवहु बंधु द्रोपदी नारी । अपर चरित्र देषु विस्तारो ॥ करन दोन
अरु देषु गंगेऊ । जुत जुमे देषो सब केऊ ॥ द्रो० ॥ देषा सर्वाहि जुचिष्टिर पूजो
मन कै पास । अबिक सनेह कोन्ह समा उर मह मये हुलास ॥ सर्वाहि भेटि
मिलि राजा बंधु सहित मुनि पास सत । आता दुजोवन बैठि करहि कविलास ॥
सर्गरोहनि कथा यह पांडव मै हरि पास । यह चरित्र जो भापै वसै कृष्ण के
पास ॥ सर्गरोहनि कथा जो गावै । सो बैकुंठ परम पद पावै । ईश्वरदास महा
कवि भारी । यह चरित्र वखैन विस्तारो ॥ जेठ मास कवि बार दिन मृग नक्षत्र
तिथि त्रै जानि । कथा समात कोन्ह लिपि । धर्मसोल को पानि ॥ सं० १९३२
कुबार मासे क्रिस्न पछे ४ जैसो प्रति पाई तिसो लिपौ ॥

Note—संवत् १७३४ में इस लेख में दिये हुए जेठ मास कविवार दिन
मृग नक्षत्र तिथि तृतिया शुक्रवार हो के तारीख ४ मई सन् १६७५ को पड़ा
था । उस दिन मृग नक्षत्र चालू था ।

No. 363(q) Mahābhārata by Sabala Sīrṃha Chauhāna.
Substance—Country-made paper. Leaves—130. Size—8½ ×
5½ inches. Lines per page—16. Extent—780 Anuṣṭup Śloka.
Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī and
Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1833 or A. D. 1876.
Place of deposit—Rāmanātha Lālā, Kāśī.

Beginning—माता सरशती कंड जो फुरइ । जोग जुगुती पकर जुखइ ।
पनवो पादि पुरुष को साधा । शैवो मातु पीता गुरु पाधा ॥ पनवो देव तैतोशी
कोरो । छोज पाप न लागै खोरो ॥ कोठो को रानो पनवो बुइ कर जोरो । जान
पंथ कर विपद गावो शुरशरी तोहो ॥ नवे शकार देव कर देसु । अरीकत
पाय करार नरेसु । गंगा जमुना गावो शरीरा । यशे अर्थ गावहु मति भोरा । पर्व
पक्षोम उतर के चारो । पाय मेठो वसै पुरवारो । पूरव काशी पश्चिम पश्चात ।
तहवां धार गंग जल लाग । दक्षिन बिंदु सो राज पहाग । उत्तर सवालाम

गेड़वाण । पड़ठ कोटो मन्ठोका गाड । तहा के ठाकुर ठकुरे नाड । सारद
मातु जे सवने देखावा । गैरो पुत परतझोहो पावा ॥

End—बूढ़ो नाहि भार मम सोहो । चलै लोथो गहो कथोरहि हेरत ।
अमोगत भोतु कागड गौ फेरत । बहुतक सौ उतरोर पारहो । बहुतक बूढ़ो धार
भभ धारहो । पहि बिधि धर्मगत घर पाये । जुआधन तब मवन सीधारे । जुनो
दल नोजो नोजो मन धारे लागे करन लोग बीसराभा हो ॥ दोहा ॥ पेंही थोथो
जुथो मणा करः की वो सत्य बलवान । एक देवस परमारय सबल सिंह पैहान ।
इसनी धी महाभारथे सत्य पथ संपुर्ण ॥ एक देवस जुथो—जे देखा से लोख
मम देख न दीयते ॥ मिनी कुषार सुदो २ के पत्र लोखा बार सोमवार । दसवत
सोभु काणय संवत १९३३ सन १९८४ ।

Subject—पृ० १ से १६ तक—कणैपर्व—कथा महाभूम, अर्जुन कर्ण प्रकथार्य,
भीष्म, द्रोण कर्ण आदि के युद्ध को दिन सारिणी, दुर्योधन का स्वप्न, कर्ण से
उसका उद्धार पूछना, कर्ण का महा कठिन संग्राम को प्रतिज्ञा करना । शल्य
का कर्ण से अर्जुन को अर्जुन कहना, कर्ण का अपना उत्कर्ष वर्णन, श्रीकृष्ण का
कर्ण के पास से चिंतित होना, कृष्ण से कर्ण के प्रचण्ड शस्त्रों के ले लेने का
विचार करना । कृष्ण का कुंतो के पास जाना, कुंतो से पुत्रों के प्रति प्रश्न करना,
कुंतो का पांच पुत्रों का उत्कर्ष कहना, कृष्ण का उसके पुत्रों का भेद बतलाना,
शल्य और कर्ण के जन्म को कथा कहना, कर्ण का परशुराम के पास पहुँचने को
कथा का वर्णन । कालवृद्ध धनुष का वर्णन । कर्ण का परशुराम से शाश्वत
और श्राप पाना । कर्ण और दुर्योधन को भेट, युद्ध, दुर्योधन का कर्ण को मित्र
बनाना, कर्ण का विवाह, राज्य और मान तथा सेना आदि का पाना । कृष्ण
द्वारा सब समाचार जान कुंतो का प्रसन्न होना । कर्ण से मिलने के लिये
उत्कंठित होना, कृष्ण का कुंतो से कर्ण को प्रतिज्ञा और उसके पुत्रों को सृष्टि
कहना और चुपके से कुंतो को रहस्य समझा कर कर्ण के पास भेजना, पांच वाण
मागने को कहना, कुंतो का कर्ण के दरवाजे जाना, प्रतिहारी से कर्ण के पास
संदेशा भेजना, कर्ण का कुंतो के वहाँ जाने का विश्वास न करना, कर्ण का
द्वार पर आना, कुंतो की शिरनवा अभिवादन करना, भाव भक्ति से स्वागत
करना, कुंतो के आने का कारण पूछना, कुंतो का कर्ण का जन्म वृत्तान्त
कहना, कर्ण का डान देने की प्रतिज्ञा करना, पुत्र होने में अविश्वास करना,
कुंतो का क्रोधित होना, स्वप्न में मरने का शाप देना, कर्ण का चिंतित होना,
कर्ण का कुंतो से अपनी गद्या यात्रा का वर्णन करना, ग्लानि युक्त होना,
मरने को डानना, सूर्य का पिंडा माँगना, कर्ण का अपना पत्र बतलाना । कर्ण
का सूर्य से माता को पूछना, सूर्य का अग्निपट देना, उस पट को धारण करने

वालो को कर्ण को माता कहना, अनेक स्त्रियों का उसके धारण के लिये आकर जल मरना, कुंतो का वस्त्र मांगना, कर्ण का अपव्यय से डरना, कुंतो का निश्चय दिलाना, वस्त्र का मंगाया जाना, कुंतो का धारण करना, स्तन से दूध को धार बढ़ाना, कर्ण को पीकर अमर होने को कहना, कर्ण का पुत्र रूप से पाने को दाढ़ना, कृष्ण का ब्राह्मण वेष में छिपे रह कर पाने से मना करना, कुंतो का सिंहासन पर बैठना, सब का हर्षित होना आनन्द के बाजे बजना, कर्ण को स्त्री का हर्षित होना, अनेक प्रकार का दान करना, कुंतो का कर्ण को पांचो भाइयों से मेल कर राजसिंहासन पर बैठने का उपदेश करना और पांचो बाण मांगना, कर्ण को स्त्री का विकल होना, कुंतो का उदास हो कर्ण से बोलना, कर्ण का कुंतो को सान्त्वना देना, अपने को बहुभागो जानना, अंगार मतो का घाँस डारने का हेतु कहना, कुंतो से प्रार्थना करना, कुंतो का कोषित होना, कुंतो को बात सुन कर कृष्ण का प्रसन्न होना, कर्ण का वाण पर हाथ जाना, वाणों का कर्ण से पराये हाथ देने से मना करना, कर्ण को वाणों का उपदेश देना, कर्ण का वाणों को उत्तर देना, पांचों वाणों को कुंतो को देना, कुंतो का प्रसन्न हो वाणों को लेना, कर्ण का छल कर कुंतो को उसके पास भेजने का भेद पूछना, अपने को रथ पांडव प्रति प्रतिज्ञा का कहना, कुंतो का घाँस डार कर रथ पर चढ़ कर चलना, कुंतो का कृष्ण से अर्जुन को समझा कर कर्ण से मेल करने को कहना, मेल न होने पर वच का पापभागो कृष्ण को कहना, कृष्ण का अपने प्रतिज्ञा का स्मरण करना, कुंतो और कृष्ण का वार्तालाप। कुंतो का कंपायमान होना, कृष्ण से अग्नि तपाने को कहना, आग का जलाया जाना, कुंतो का कृष्ण से पांचो बाण जलाने के लिये मांगना, कृष्ण का दूसरे पांच बाण लाकर देना, कर्ण के बाण को छिपा कर रखना, कुंतो को सुभद्रा के पास रखना, कृष्ण का अर्जुन को जगाना, सोने के लिये फटकारना, निश्चिन्त सोने मार न सोने वाले का वर्णन करना, अर्जुन का लड़ाई के लिये नाद घोष कराना, कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा करना, कृष्ण का अर्जुन से कर्ण के बलका वर्णन करना, अर्जुन का कृष्ण के मरोसे अपना बल वर्णन करना, वर्णन को निन्दा करना, अर्जुन का उत्कर्ष वर्णन, रथ का रणक्षेत्र में जाने के लिये घोष के साथ बाहर आना, शल्य का कर्ण के पास जाना, लड़ाई के लिये उद्यत होने के लिये कहना, कर्ण की प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाना, कर्ण का रणविजय के लिये पुनः प्रतिज्ञा करना, कर्ण का खान करना, दुबको लेते समय कृष्ण का अर्जुन कर्ण का सगा भाई कहना, कुंतो को राजा का पालन करना, अर्जुन का कृष्ण से कारण पूछना, कृष्ण का वर्णन करना, अर्जुन का विरक्त होना, कृष्ण का अर्जुन का उत्कर्ष बढ़ाना, अर्जुन विश्वसेनो

का युद्ध, अर्जुन का बाण प्रहार करना, विश्वसेनो का पांडव दल पर बाण वर्षा कर सब को विकल करना, कृष्ण का गडह का आवाहन करना, गडह का प्रयुक्त लाकर सब को जिलाना, पांडवों का कोधित हो लड़ाई करना, अर्जुन और विश्वसेनो का घोर युद्ध बखैन। अर्जुन का विश्वसेनो का शिर काटना, शिर का घड़ में पुनः जाकर लगना, कृष्ण से कारण पूछना, कारण बताना, विश्वसेनो के मरने की युक्ति बतलाना, अर्जुन का मारना, विश्वसेनो का शिर मार द्वारा कर्ण के पास भेजना, कर्ण का देख कर दुःखित होना, भंगारमती का विलम्बता।

शल्यपर्व-पृ० १७ से-१३० कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन का विलाप करना, कृतवर्मा का धर्मोपदेश देना, शकुनो का दुर्योधन को समझाना, शल्य को सेनापति बनाना, शल्य का प्रतिज्ञा करना, लड़ाई के लिये मैदान में आना, पांडवों का मैदान में आना, दोनों सेनापियों का युद्ध बखैन, शल्य का बाण वर्षा बखैन, अर्जुन का बाण वर्षा बखैन, अन्य योद्धों का परस्पर युद्ध बखैन। अर्जुन शल्य का परस्पर युद्ध बखैन, अर्जुन द्वारा सारथ्य धार रथ को विनष्ट किया जाना, शल्य का कोधित हो अन्य रथ पर जाना, बाण वर्षा कर पांडव दल को विकल करना, भीम और द्रोणो का घोर युद्ध बखैन, कृतवर्मा और नकुल का युद्ध बखैन, घोर युद्ध बखैन, भीम का गडा लेकर आना, पांडव दल की अधिक सेना का मारा जाना, घोर युद्ध बखैन, दोनों दल का पैदल युद्ध बखैन, पुनः रथ की लड़ाई अनेक प्रकार का असम्युक्त होना, धर्मराज (युधिष्ठिर) का शल्य पर शक्ति का प्रहार करना, शल्य का मारा जाना, पांडवों का घर आना, दुर्योधन आदि का घर जाना, लेखक का नाम, लिखने का संवत्।

No. 363(r). Mahābhārata Bhāṣhā by Sabala Simha Chauhanā. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size— $9\frac{1}{4} \times 8\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—40. Extent—5,000 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍitā Ramasundara Miśra, Village Kaṭāgharī, Post Office Akaunā (Bahrāich).

Beginning—वेद्यो महाभारत के।

दाहा—व्रत फलेंग यस्य घेद करो जत फलें गडदान। तत फलेंग भारथ कथा सवल सिंह चौहान ॥ १ ॥ पाइड वाई होइ यम पायम निमम पुन। भारथ कथा सुनै यत कासो स्नान ॥ २ ॥ श्री दुरजोवन वाच ॥

साजहु सुरित जाइ सब कटक घसेच समुद । सजि हूँ जन्मो पावहु मत
हस्ती गज जुह ॥ ३ ॥ चौ० ॥ सुनि कै द्रोन कहौ बिहसार्ह । यहसैर मंत्रमु भय
घनुषार्ह ॥ सकुनो क संत्र सदा तुम लेहु । हम पाचन्ह कहं दोष न देहु ॥
पांचव पांचउ घानिजे पाउ । लाहा यह तुम पांग लगाउ ॥

End—भारथ कथा सुनहिं घर गावै । ताके निकट पाप नहिं पावै ॥ जे
फल संधि तोरय स्नाना । जे फल कोटिन्ह कथा दाना ॥ जे फल जल घरम के
कीन्है । जे फल लक्ष गाय के दीन्है ॥ जे फल हांड सरन के राखे ॥ जे फल
सदा सत के भाखे ॥ जे फल पिड गवा महं दीन्है । से फल यहि भारथ सुनि
लोन्है ॥ दोहा—भारथ सुनै अनंत फल सो तऊ कहा न जाइ । भंत वसहिं बैकुंठ
महं दरस देहिं जुराइ ॥ ४८४ ॥ महामार्थ पुरन कियो सुख बनाइ विचारि ।
पंडित जन सो विनय करि धामर पहच सुधारि ॥ ४८५ ॥ इति श्री महाभारथ
संपूर्ण किया जो प्रति में देखा सो लिखा मम दोखो न दीखते सेवत १८३४
मिति कुषार सुदो नवमी ९ बार सुक्रवार के संपूरन ॥ लिखा सोतारम ऊमर के
सो जानबै सुममस्तु श्री रस्तु ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—प्रभिमन्यु सुख बखेन ।

- „ १३—१६ „ उद्योगपर्व बखेन
„ १७—६१ „ भीष्मपर्व बखेन
„ ६१—१०५ „ द्रोण पर्व बखेन
„ १०५—१४२ „ कर्ण „ „
„ १४२—१५० „ शल्य „ „
„ १५१—१६० „ गदा „ „

No. 363A(a). Bhāgawata Bhāṣā, Daśama Skandha
by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves
—239. Size—9½ x 7 inches. Lines per page—36. Extent
—6,480 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—
Nagari and Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or
A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1810 or A. D.
1750. Place of deposit—Paṇḍita Rāmasundara Miśra, Village
Kaṭāghari, Post Office Akaunā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य साक्षा भागवत लिख्यते ॥ श्री
राधा कृष्णायनमः ॥

श्लोक—बालं नील तनुं सरोज नयनं लावण्य कोटि स्मरं दीप्ति चारु मुखे
विलास कुशलं वंसादि वदिस्तवं ॥ गोपाल धृत भूधरं जन हितं च विश्वंमरं
माधवं ॥ गोपीनां नयनं चकोर शशिना वंदे जसेदा सुतम् ॥ १ सरत पद्म
वर्कं, लसत भ्रंगकेशं, तडित पीत वस्त्रं घनक्षयाम वेशं ॥ वलित भूषणं चारु
गुञ्जा चतंसं जनेसं सुरेशं रमेशं हि वन्दे ॥ २ ॥

दीहा—यति उदार मंगल सदन दलन प्रबल दुःखदं । सबल स्याम सेवक
सुखद प्रभु वृन्दावन चन्द्र ॥ १ ॥

End—छंद—हरिचरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए । तजि
मान पति निर्वान नाम प्रमान करि हित मानिए ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद
जासु पद रज सेवहों । को कहे जड़ मति मूढ़ मानव घान मानत देव ही ॥ दीहा—
सबल स्याम भव भय हरन पावन परम उदार । कृपासिन्धु सनद सुखद व्यापक
नगदाधार ॥ ८६५ श्लोक—कृपनं करोति करुणं केस कुंडल केसरी । कालिन्दी
कूल कल्लोले कोलाहलं कुतुहलं ॥ इति श्री हरिचरित्रे दशम स्कंधे महापुराणे
भगवते परम रहस्यां वेलासि भाषा सबल स्याम कौतौ चौरानवे खंड कथा
लिखितं रामकृष्ण रैकवार मौ० नन उपरा के जस देखी वैसी लिखी मम दोस
न दियते कथा समाप्त सुभ मस्तु ॥

संवत् १८८० समै नाम असाढ़ सुदी दुइज रोज सुकवार ॥

Subject—पृ० १—२३९ तक—भागवत संस्कृत दशम स्कंध का भाषा-
नुवाद ॥

Note—निर्माण काल तथा कारण :—

संवत् सत्रह सै सोरह दस । कवि दिन तिथि रजनोस वेद रस ॥
माध पुनीत मकर गत भानू । अस्मिन् पक्ष ऋतु सिसिर प्रमानू ।
प्रथमहि वरनौ नृप नृप देशा । तव हरि कथा करौ परवेसा ॥
रचेउ विरंचि नगर एक पोढ़ा । तासु नाम जग विदित यमोढ़ा ।
अवध नगर तें पूर व सोढ़ै । निरखि रूप सुर मुनि मन मोढ़ै ॥
तहं रह घोर सिद्ध धरणी धर । तरनि वंस सब तंस नृगति वर ।
वरनौ बहुदि भूप कर साजु । नगर समाज सहित जुवराजु ॥
मति अति विमल भक्ति रस पागो । वीर सिद्ध हरि पद अनुरागो ।
सहित सनेह कृपा अधिकारि । पुनि हरि भक्त जानि लखु भाई ॥
कहेउ दसम हरि कथा बनावहु । सगुन रूप कर भेद सुनावहु ।

No. 363A(6), Bhāgawata Bhāṣā Daśama Skandha by
Sabalā Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—

265. Size—12 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—4,372 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1818 or A. D. 1761. Place of deposit—Thākura Dalajita Sīmha, Village Jalima Sīmha ká Purawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः मातु दीन्ह मैं तुमहि जनाये । मानुष देह यानि नहि पाये ॥ दोहा । पुत्र भाव करि दम्पती ब्रह्म भाव जिय जानि । परम प्रेम बस समुझि मोहि मम गति सुलभ सयानि ॥ यह कहि निज माया हरि हेरी । सोइ प्राकृति शिशु भयउ बहोरो ॥ रोवन लगे बाल भय हारो । जगमोहनो प्रकृति विस्तारो । कह देवको सुनहु प्रिय प्राणा । चहत होन यह प्रगट बिहाना । यही तुम्हारण सहज सहाई । जहं रापिय यह तनय छिपाई ॥ देखहि जवहि कंस यह बारा । बचाहि बेगि नहि करहि विचारा । गोकुल नंद गोप हितकारी । तहं रहि है यह तनय सुकारी ॥ छै तहं जाहु बार जौनि लाबहु । सुतहि सौपि तुरत तुम आवहु ॥ सुनि प्रिय वचन गोपाल उठाये । पुनि बसदेव छेक छै घायै ॥ छै तब त्वरित चले वनवारी । प्रन तम मैं घनी घंघियारो उधरे वज्र कपाट निहारे । प्रभु प्रभाव मोहे रपवारे ॥

End—यहि कहि प्रेम विवस भइ भोरो । दोन वचन फुनि कहेउ बहोरो । कृष्ण कृष्ण भव भंजन मारा । सरणइ पखिल लोक करतारा ॥ पाहि पाहि प्रभु त्रिभुवन पालक । कठिन कलेस सहित सह बालक ॥ तब पद तजि नहि सरण कृपा कर । जन वन कंज प्रकास प्रभाकर ॥ परम उदार चरित फल दायक । विधि श्रुति शक सेइवे लायक ॥ दोहा ॥ कृपासिध भव भयहरण सुपदाय भगवान ॥ मायापति निर्माण पति सरणइ सोल निधान ॥ यहि विधि समुझि स्वजन धन स्यामहि । जपत पखिल जग जन येहि नामहि ॥ देत कर्म फल करत विभागा ॥ करत प्रवेस सहित अनुरागा ॥ बन्दै तामु चरण रज पावन । जग निवास घघ पखिल नसावन ॥ रूप मति समुझि महामति माना । विदा भयउ सिर नाइ सुजाना ॥ सुहृद वर्ग पहं मांनि रजाई । पवन गवन रथ त्वरित चलाई ॥ मथुरा भयउ महों वन माली । कहौ सकल कुहराज कुचाली ॥ छंद ॥ कुहराज कुमति कुचालि प्रभु पहं दान पति सब विधि कहौ । सोइ सुन्यो सम्यक वचन कृपानिधान हरि मान्यो सहौ ॥ प्रभु इदय धरि हित पांडवन प्रमुदित जिन गृहको गये । चढ़ि व्योम यानि विमान कीरति विबुध बुव गावत भये ॥ सबल स्वाम आरति हरण दोनवंबु भगवान । सुनहु राम कुठवंस मनि हरि तजि सरण न आन ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसमस्कंध महापुराणे भागवते परम रहस्ये संहितायां वयासिक्या

भाषायां सबल स्यात् कृते पूर्वार्द्धे समाप्तं संवत् १७३३ समय फालगुन सुदि पक्षादस्यां रविवासरे तरुण तारुणे तारे । लिखा संवत् १८१८ ठाकुर प्रताप सिंह ॥

No. 363A(c). Bhāgawata Daśam Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—13×6½ inches. Lines per page—28. Extent—3,360 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Simha, Guṭhawārā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरुवेनमः ॥ सर्वे देवायनमः ॥ मुंजा पोत पयोत चारु युगलं पाणौ च पंकजहं । मुक्ताहार किरोट कुंडल युतं स्यामं प्रफुल्लाननम् ॥ गोविंदैः परितः परोत मशिशं गोपोजनैः सेवितं । मोत्वा इत्स पवत्स कान्त जगतं वंदे वयोदा मुतं ॥ दोहा—सबलश्याम प्रभु कमल पद्म भव भयहरन विधान । वंदे चरण सरोज द्वै करत घणिल कल्याण ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह मुनि मुनिय भूप प्रति माना । कथा पुनोत करौं सो माना ॥ प्रसि प्राप्ति हौ सब गुन खानो । कंस महीपति के पटरानो ॥ निज पति निघन देखि दुख भारो । गई पिता गृह परम दुखारो ॥

End—जन्म देवको गर्भ तुम्हारा । है वह वादमात्र संसारा ॥ धिर चरवृजिन हरन प्रभु कैसे । तिमिर तोष कहै रचिकर जैसे ॥ वज्रपुर रमनि परम सुखदायक । पद श्रुति सक सेवे लाइक ॥ भवनिधि ज्ञान चरनसुभ पावन । हरन पाप त्रै ताप नसावन ॥

छंद हरिगोतिका—हरि चरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिय । तजि मान पति निर्वाण नाम प्रमान करि नित मानिय ॥ वल्लादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेविदों । को कहौं जड़मति भूइमानव घान मानत देवहों ॥ १ ॥ दोहा—सबल स्याम भव भयहरन पावन जन्म उदार । कृपासिंधु सरनद सुषट् व्यापक जगदाधार ॥ ४२७ ॥

इति श्री हरिचरित्रे महापुराणे भागवते दसमस्कंधे समाप्तं सुभमस्तु ॥ जेठ सुदि १० को पुस्तक प्रारंभ किया आषाढ़ सुदि १३ को संपूर्ण भई ॥ पुस्तक लिखित शिवप्रसाद कायस्थ बलरामपुर के वांसी पाठार्थ श्री महाराज कुमार भैया उमराव सिंह जीव के संवत् १८७५ सन् १९२५ मोकाम भिनगा कोट ॥

Subject—पृ० १—७ तक—प्रार्थना, जरासेध युद्ध । मुञ्चुकन्द द्वारा यवन वध वर्णन । पृ० ७—१६ बलमद विवाह, कस्मिनी विवाह पृ० १६—२० सम्बरासुर

यद्य, स्थमेतक हरण, जामवती विवाह वर्णेन चौर सत्यमामा विवाह वर्णेन । पृ० २०—३५ तक—सतधन्वा, सत्राजित वध, रानियों का उद्धार, नरकासुर वध, कृष्ण हविमणो, अनिरुद्ध ऊषा सम्वाद । पृ० ३५—४४ तक—नृगोप वर्णेन । वलदेव विजय जमुना कर्पण । पौडूक वध, द्विविद् वध, साम्य विवाह, जोगमाया दर्शन वर्णेन । पृ० ४४—५४ तक—इन्द्रप्रस्थ में कृष्ण गमन, जरासंध वध, पांडव राजसूय यज्ञ वर्णेन । भगवान नारद संवाद, द्रुपदीयन मानमंग । पृ० ५४—६४ तक—साह्य युद्ध वर्णेन । सौभराज वध, बलदेव तीर्थ यात्रा वर्णेन, वदञ्जल वध, कृष्ण सुदामा सम्वाद वर्णेन । पृथु उपाख्यान वर्णेन । पृ०—६५—८१ तक । दक्षमनो घण्टघानी संवाद । वसुदेव नंद सम्वाद, मोक्ष वर्णेन । भृगु मुनि दर्शन व द्विज कुमार वर्णेन ।

No. 363A(d). Bhāgawata, (Daśama Skandha) by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—194. Size—14 × 8 inches. Lines per page—60. Extent—6,500 Anuṣṭup Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1888 or A. D. 1831. Place of Deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Simha, Bhinagā Rāj, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ बालं नीलतनुं सरोजनयने लावण्य केटिसरं । दोषं चारु मुखं विलास कुसलं वस्या दिवा पतरम् ॥ गोपालं धृत भूधरं जन हितं विस्वमरं माधवं ॥ गोपीनां नयने चकोर शशिने वंदे यतोदा सुतम् ॥ १ ॥ सरद पद्म वक्त्रं लसद मुंगकेसं । तडित पीतवस्त्रं धनस्याम वेषम् ॥ चलत दुषणं चारु गुजां वतसे । जनेसं सुरेसं रमेसं दि वंदे ॥ दोहा ॥ पति उद्धार मंगल सदन दलन प्रबल बुध द्वंद । सवलक्ष्याम सेवक सदा प्रभु वृन्दावन चंद ॥ १

साराठा—गुरु पद पंकज धूरि प्रथम सोस निज राखि कर ।

प्रभुजस बरणीं भूरि सुखदायक सब दुख हरन ॥ २ ॥

वंदौ वंदनीय भविनासो । वंदौ शिव कैलाश निवासो ।

वंदौ गिरा नखेश पद्मानन । वंदौ सुर सुरेस सहस्रानन ॥

वंदौ नारद श्रुति चतुरानन । वंदौ भूमि गगन गिरि कानन ॥

वंदौ देवन दोन द्वारो । वंदौ चंद तिमिर तम हारो ॥

End.—कंद हरगीतका ।

हरि चरण पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिये ।

तजि मान पति निर्बान नाम प्रनाम करि नित मानिये ॥

ब्रह्मादि सुर सनकादि भारद्वाजसु पण रज सेवही ।
को कही जड़ मति मूढ़ मानव धान मानत देवही ॥

दोहा—सबल श्याम भव मयहरण पावन जन्म उदार ।
कृपासिंधु सरनद सुषद व्यापक जगदाचार ॥

इति हरि चरित्रे महापुराणे भागवते दशमस्कंधे पारमहंस संहितायां
वैयासिक्यां भाषायां श्रीसबल सिंह कृतौ चतुर्नवतितमोऽध्यायः दशमस्कंध
समाप्त सुमस्तु अथाह मासे शुक्लपक्षे नैम्यां चंदवासरे संस्कृत भाषा सम्पूर्णम्
संवत् १८८८ सन् १२३८ साल ॥ पुस्तकं लिपितं ॥ गंगाप्रसाद कायस्थ ॥ टिकुरिया
ग्राम के बसो वासं पाठार्थ ॥ लाला दाऊलाल देवान भित्ति के श्रोता पढ़े
तेकां सत्यनाम ॥ जो प्रति पावा सो लिखा मम दोसा न दीयते ॥ इति ।

No. 363A(e). *Bhāgawata Daśama Skandha* by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—570. Size— $8\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines per page—15. Extent—6,680 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1871 or A. D. 1814. Place of deposit—Śītala Prasāda Nigama, Village Saidpur, Muhallā Potidārān, District Bārābankī (Oudh).

No. 363A(f). *Bhāgawata Daśama Skandha* by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size— $13 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—3,825 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Simha, Guthwā, District Bahrāich.

No. 363A(g). *Bhāgawata Bhāshā* by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—138. Size— 14×6 inches. Lines per page—20. Extent—3,795 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Murlidhara Tripathī, Mailā Sarāya, Post Office Baundī, District Bahrāich.

No. 364(a). Bhagwantā Rāya Rāsā by Sadānaṇḍa Kavi of Asothara. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size— $7\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—24. Extent—180 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1798 or A. D. 1741. Place of deposit—Śrī Mān Mahārāja Rājendra Bahādura Simhā Sāhaba, Bhingā Rāja, Bahraich.

Beginning—श्री बलेशायनमः ॥ यद्य रासा भगिवंत सिंह जीवक ॥ दोहा ॥ एक दिवस भगिवंत जु पति अनंद सो लोन । कोड़ा जहानाबाद को हुकुम कुंच को दीन । कंद पदरो ॥ सज्जे सुवीर बज्जे निसान । लज्जे सुरेस भज्जे गुमान ॥ फुट्टे सुमेरु दृष्टे पराति । कुट्टे कितेक लिहै नसाति ॥ दोहा ॥ पाई जहानाबाद मे कत मुलुक को गौर । सोधत वाम यवाम सम लखि कै ठौर छठौर ॥ साह महम्मद कब्रपति दान कृपान जहान । सुधा कोन्हो यवध को विदित सहादति खान ॥ करे जे रक्षित बाहुबल दोन्हे नृपति निकारि । राखे जे धर्मत प्रति सकल विचारि विचारि ॥

End—कंधै लोक धवलोकि सोक भय जहं तहं बज्यौ । लपि चरिष विधि हरिहर हिय अनुराग उपज्यौ ॥ प्रेरित मन चलि वेगि समर धवनो महं आयो । कहि प्रसंग कर जोरि प्रमिय मय वचन सुमायो ॥ यत्सरि सुचारु चहुं दिसि चमर चापु डरत आनंद भयो । राजाधिराज भगवंत जु चडि विमान सुर पुर गयो ॥ १०३

दोहा ॥ संवत सत्रह सतानवे कातिक मंगलवार ।

सिउ नैमो संग्राम भौ विदित सकल संसार ॥ १०४ ॥

इति श्री कवि सदानन्द विरचिते भगिवंत सिंह जीवचरि भौ नवाव सहादति खान जुद्ध बरननो नाम सुम मस्तु सुमं भूयात् ॥ लिखी मिठो सावन बदि अष्टमो ८ सत्र १२५७ हि० बारह सै सत्तावन मा लिखा ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—२ तक । राजा भगवन्त सिंह का कोड़ा जहानाबाद पर चढ़ाई करना और यवनों को भगाना सहादत खां का नूर मोहम्मद को तहसिल के लिये भेजना और भगवंत राय का लूट करना, नवाब का चढ़ाई करना और दुजेन चौधरी से मिलना ।

पृ० ३—४ नवाब का खजुदे पहुंचना और सेना का बखेन ।

पृ० ५—६ मंत्रों से राजा भगवन्त सिंह का सलाह करना, रानी का युद्ध के लिये निषेध करना और युद्ध को तय्यारी का वखन ।

पृ० ७—८ सप्तादत खाँ व तुराव खाँ से खीचो का युद्ध वखन—

पृ० ९—११ तक । भवानो प्रसाद व दीनमोहम्मद का युद्ध वखन । शेरखलो और जयसिंह का युद्ध वखन । भगवन्त सिंह खीचो का युद्ध वखन और बोरख का प्राप्त होना । निर्माणकाल व युद्धकाल वखन ।

No. 364(b). Bhāgawantā Rāya Rāsā by Sadānandā. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 8½ inches. Lines per page—32. Extent—225 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Thakura Chitra Ketusiṃha, Nārāyaṇapur Taparā (Hariharpur) Post Office Chhiwālā (Bahraich).

No. 365. Nandaji kī Vanśāvalī by Sadānandā Dāsa. Substance—New paper. Leaves—4. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—30. Extent—60 [Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Śyama Kumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—अथ वंसावली नंद जो की सदानंद दास कृत ॥

श्री गुरुचरण प्रतापहि लई	कृष्णवंश उद्भव कह्य कही ॥ १ ॥
तीन प्रकार गोप की जाति	वैस पहोर गुज्जर वर जाति ॥ २ ॥
उत्तम बह्वर गोप कहाये	जहुवंशो वेदन में नाये ॥ ३ ॥
हित से गोपन ठाट चराये	छत्री ते ते वैस कहाये ॥ ४ ॥
वैस सुदिका ते जो होई	शुद्ध पहोर कहाये सोई ॥ ५ ॥
गुज्जर कह्य इनते लघु वरने	पीन संग ऊंचे मुख करने ॥ ६ ॥
ब्रज के निकट से बिचि से वसे	अज्ञा पादि पशुवन से लसे ॥ ७ ॥

दादा—भागुर पुरोहित विमलकुल गर्भ गुरु इनके निकट अजास ।

वेद पुराणन में निपुण दिये विष्णु परमास ॥ ८ ॥

सबे काम ब्रज में रहै हरि सेवा सुष देत । पांच कहे परिवार प हरि जू की सुष देत ॥ ९ ॥ अब बरना गोपन के नाम जेहि सुमिरे सब पूरण काम ॥ १० ॥

प्रथम गोपजन्य वधानो । ताको किया बरेयसो जानो ॥ ११ ॥ प्रथम सुतै उपनंद
वधानो । ताको पिया सुनंदा जानो ॥ १२

सुत सुमद्र तनया हुंगोनव । उत्तम गुण ताके मन उज्जव ॥ १३ ॥
सरसगौर अभिनंद वधानो । ताको त्रिया पौवरी जानो ॥ १४ ॥
सनु कुंडल पर नंद सुता । कृत पनोत गावै पतिव्रता ॥ १५ ॥
धरानंद ताको प्रिय परमा । किंकिनि सत तनया शुभ करमा ॥ १६ ॥
कांचन तन ध्रुवनन्द वधानो । ताको त्रिया सुदेसो जानो ॥ १७ ॥
सुत विलास तनया मन सोला । गावत रहत दृष्टि गुण लोला ॥ १८ ॥
महानंद को तिय दित्तकारी । सुता सुसोला सुत मन चारो ॥ १९ ॥
सुनौ सुनंद त्रिया मन लेखा । सुत उत्तम तनया दक्षि मेया ॥ २० ॥

End—सोमवंश हरि जीव को वरनै छै छै नाम । ससि के सुय वृष के पुर
जी परम संत निहकाम ॥ ७५ ॥ तिनके चायु नहुप नृप तिनके नृपति जजाति ।
तिनके जहु इनके हरि सेवो वरगात ॥ ७६ ॥ कोटवान यज्ञ नृपति जू स्वाहि
तिनके पूत । तिनके दस आहुत भये व्योम नृपति । जस तूत ॥ ७७ ॥ इनके दशविंद
प्रथम किये परम सुख कर्म । ताके ऊपना ताके दक्षि किए परम सुधर्म ॥ जाम-
वठाके के तास विदर्भ विलङ्घन गुनमान । ताके पुत्र प्रगट भय कथ जू किये पंच बहु
धान ॥ ताके कुंत विष्ट सुत सुंदर ताके गरिबत पूत । ताके दश आशित सुत व्योम
नृपति जस नृत ॥ जीव नृत ताके विक्रत भौम सुरथ भुजमान । नरथ ताके दशरथ
के सुत सकल सुर जजात ॥ नृपति करंभिक भये ताके सुत भये देव रतिराज ।
भय देवरति देवकृत्र सुत मधु नृप सतत सिरताज ॥ कुरु वंस ताके संतु नृप के
सुत मोहित जुजान । ताके सुचित ताके पंचक ताके नृप भज मान ॥ ताके नृपति
विदरथ ता सुत सुर नृपति वरजान ॥ ताके सुनि भोजि मान नृपति जु जानवत
धनवान ॥ ताके सुचित सु भोज नृप ताके नृपति इदीक । देवमीड़ तिनके कुल
प्रगटे तिन प्रगटकरो जसलोक ॥ कुत्रानो वैश्यानो इनके पत्नी देय । कुत्रानो के
सुरसेन जिन राय्यो जग भोय ॥ वैश्यानो के पजन्य प्रगट भये तिनके प्रगटे नंद ।
तिनके प्रगट भय मनमोहन यज्ञ के पूरनचंद ॥ इह वंशावलो वखानो डडिो हर्षे
वल्लभ राज । श्री सदानंद प्रानन वारत रंग भोनों सकल समाज ॥ इति संपूर्ण
शुभ ॥

Subject—नंद जी की वंशावली

No. 360. Chhattis Akshari by Sahabadinadāsa of Tipari,
Rāmapur. Substance—Country-made paper. Leaves—4.
Size—8 × 5 inches. Lines per page—40. Extent—138

Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1921 or A. D. 1864. Date of Manuscript—Samvat 1950 or A. D. 1893. Place of deposit—Bābā Bhāratamahānta, Village Datauli, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ अथ छत्तोस चक्षरी लिप्यते ॥ ॐ षोकार अपार आगे घर आदिव संत पसारा है । ब्रह्मा विष्णु महेश गणेशहु सुजे किरण उजियाग है ॥ पंच उपासन तब प्रकीरति याते सब विस्तारा है ॥ गति साहब दोन कहैं कह्यौ सब राम राम षोकारा है ॥ ना ॥ नाम निरंजन सब दुख भंजन सुमिरन किये कलेश मिटे । मन मस्त उमंगे उठे तरंगे सुनि दुष्टे हिय हरी पटे ॥ जो नाम पुकारै कवहु न हारै कलिकराल जंजाल कटे ॥ जन साहब दोन सोइ पूरा जो हरदम हरिका नाम रटे ॥ मा ॥ मन को बूझै तब गति सुखे त्यागै कपट दलालो है । वृन्दावन तन रच्यो विन्दु सो मगन मूल प्रतिपालो है ॥ वाम लगाव गयो नहि अनैवा तिन वागन खालो है ॥ साहब दोन सदा अनुभव गति वान भाभ बनमालो है ॥ सा ॥ सहित सनेह गुरुपद पूजै व्यावै ध्यान समावृ है । सुमिरै रंकार निषसर तका मता अगाध है ॥ राम नाम दम दम पर खोचे मिटे व्याधि अपराध है ॥ साहब दोन सफल मत बूझै तिसको कहिय साधु है ॥

End—॥३॥ दक्षक सिंधु में मगन सदा दुख मरम शर्म सब खोई है । जो कुछ कहि आवै नास मान अह पासत मान सुख सोई है ॥ सता स्माज साजे सदै वस एक विषम नहि कोई है । पास साहब दोन विचार लोन्ह ईश्वर जन जगमें सोई है ॥ उ ॥ ऊजर बोज नहक मत बोवो रहै यक्रे दड़तासो है । मन में भरम भूल न लावै आनंद हृदय हुलासो है येके सुर पूर जग देखे दिल को दिल को दुविधा नासो है साहबदोन रहन अस जाको तिसको कहा उदासो है ॥ पे ॥ पे संसार बजार ठगों को चिन भेदो तुम जावोगे । मोन आनंद अमोल अजुवा अदो भाव भंजावोगे ॥ खोल कपट को गांठ सवेरे जौहर न परखावोगे । साहबदोन मुरशद के जुग जुग मटका खावोगे ॥ श ॥ शपत स्वर्ग को सोस तिलक दे विगुना बूदा मेलो है । बोज मंत्र अजपा को सुमिरत पीत बसन रंग रालो है ॥ पांच कलो पांचै रंग टोपी अजब रोति चलबेलो है । सोरत साहब दोन गठे बिच पांच दत्त को सहेलो है । इति छत्तोस चक्षरी समाप्तः लिखी संवत् १९५० कार्तिक शुद्धो चतुदशी ॥

Subject—पृ० १—४ तक ३६ चक्षरी पर ज्ञान उपदेश ईश्वर भजन पर कविता को है ।

No. 367(a). Kavitāvalī by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9×6 inches. Lines per page—11. Extent—348 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiāwana Lāla, Village Daulatipur, Post Office Bīlhara, District Barā Bankī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सहज राम जी की कवितावली लिख्यते ॥ कवित्त ॥ गौरि गिरा गगनायक के पदपंकज को रज सोस चढ़ावौ । पवन को पूत सपूत बढ़ौ तिनके पद पंकज को शिर नावौ ॥ श्री गुरु दीनदयाल पड़े पद पंकज को अनुशासन पावौ । राम चरित्त कवित्त की माल बनाय गिरा के गरे पहिरावौ ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक ध्यान धरै जिनको सनकादिक जोग समाधि को साथे । संकर नाम जपै जिनको पदुमा पद पंकज को धवराधे ॥ नौमौ सुकुला मधु मास पवित्र नक्षत्र पुनर्वसु वासर आधे ॥ राम की जन्म भयो सहज हरपे सब देव दशानन बाधे ॥ २ ॥ संख घोर चक्र मदा सरसोदह चारि भुजा लखि मातु बसो है । कुंडल लेल कपोल विमंडित आनन देखि लजात ससो है । सुंदर कोट जड़े मुक्ता सुषमा लपि कै (× ×) उमान बसो है ॥ भाल विशाल विलोचन लेहित कौस्तुभ कंठ ललाम लसो है ॥ ३ ॥

End—आपनी बुढ़ाई लरिकाई रामचन्द्र जी की निरखि परस पानि जानि के सकात है । क्षत्रोन को छोना जो क्षपावै औ वचावै कोऊ ताह को मारै न विचारै और बात है ॥ पाई न मेराई न बचाई बाजो संगन में सखिन समेत सोठा व्याकुल वरात है । सहज महोप मोहिदेव की लराई कौन केतेऊ कुजोग आलु बा तियाये तात है ॥ १८ ॥ पिता समीत जानो लोन्हें हैं धनुषवान स्रावन समेत राम स्वाम गौर नात हैं । मुनि को प्रनाम कोन्हें बालक विविच चीन्हें थके मुनि नयन बैन आवत न बात है ॥ रामचन्द्र चन्द्रमा चकोर कोन्हें नैन दोऊ मैन को समान रूप देखे न मघात है । सहजराम देखि के विदेह विदेह भये परसराम राम की स्वरूप देखि कामहू लजात है ॥ १९ ॥ आशिष दै डग दाना किये कृपि पूंज पियूष पियौ अनु है । करिसायक चाप निपंग कसे सरनागत पालक की प्रनु है ॥ चारि कुमार मनौ मधुमार औ प्रेम सिंगार घरो तनु है । भृगुनन्दन को मन भूल्यो फिरै सहज हरि सुन्दरता वनु है ॥ २०० ॥

Subject—पृ० १—७ तक—मंगलाचरण, राम जन्म, उनके जन्म पर डक्लास, उनको शोभा का वर्णन । राम-माता का मुक्ति सहित चतुर्भुज रूप कल्पाने का प्रस्ताव । नगर में आह्लाद, मंगल बधाई इत्यादि । दशरथ का दान, बाल विनोद ।

(२) पृ० ८—१२ तक—राम का श्रृंगार के निमित्त अपने सहयोगियों सहित बन में जाना । चारों भाइयों के घोड़ों के विभेद का वर्णन । श्रृंगार में सफलता प्राप्ति । उनका छोटना ।

(३) पृ० १३—२४ तक—दशस्यंदन के समीप आकर कुश नन्दन का राम की मख-रक्षा के लिये माँगना, राम नाम महत्ता पर मुनि का छोटा सा व्याख्यान । राजा का इस प्रस्ताव पर खेद । वशिष्ठ का समर्थन वशिष्ठ द्वारा राजा को संतोष होना । संदेह मंग पदचात् राम लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना ।

(४) पृ० २५—४० तक—मार्ग में गौतम पत्नी उद्धार इत्यादि कार्य करते हुए राम का जनकपुर गमन । राम के स्वर्णपादि पर नगर निवासियों का आश्चर्य तथा भ्रम । धनुष यह वर्णन । जनक की दुर्प्राप्ति पर लक्ष्मण का कोप । राम का धनुष मंग करना । रामादि विवाह वर्णन । (५) पृ० ४०—४६ तक—बारात इत्यादि की शोभा के वर्णन के साथ ही साथ जनक के द्वारा उसके सम्मानित होने का वर्णन । बारात का विदा होना । परशुराम आगमन । परशुराम की शक्ति तथा वेष वृषा का वर्णन । परशुराम तथा राम में समझौता ॥

No. 367(b). *Prahalāda-charitra* by Sahaja Rāma. Substance—New paper. Leaves—22. Size—8×6 inches. Lines per page—32. Extent—352 Anuṣṭup. Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898. Place of deposit—Lāla Tulasi Rāma Srivāstava, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ प्रह्लाद चरित्रं लिखते ॥ दोहा ॥ मनपति सुमिरौ सारदा बंद कमल कर जोरि बरखत सीताराम गुण विमल करौ मति भोरि ॥ एक समै कैलास में बैठे शिव भगवान पारबती तहं प्रभ कर सुनिये कृपा निधान ॥ बोलौ गिरिजा वचन बर संकर सिला निधान । चरित सुभग प्रह्लाद को मोसन कहौ भगवान ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ प्रभ-उमा को सहज सोहाई सुन महेश बोले हरपाई ॥ सुनहु उमा यह कथा रसाला । सुंदर सुषद विचित्र विसाला ॥ एक बार मन धति सजुपाये सन-कादिक वैकुण्ठ सिंहाये । देया जाइ हरि लोक अनूपा । बसत जहां श्रीपति सुर धूपा । पांच पवुम जोजन विस्तारा जोजन सह्य उठम प्रगारा । हरिदासन के मंदिर जेते । सुर सुरमि सुर स्यामद जेते ॥ जहां राज जन्म दुख भोग । जहां व्याधि महि मानस रोग । पुन्य खोन जह कबहु न होइ । जहां गये किरि पावै न कोइ ॥

Rad—वन नर हरि तन धारन कोन्हा । जन पहलाद बिपनि हर लोन्हा ॥
 प्रथ कृपाल जस पायुस होई । सादर करिये मान सिख सोई ॥ कोळे वचन विहसि
 अमुरारी । कहा कहिये चिधि वात तुम्हारी ॥ यर बिचार नहि सुरै दोन्हा ।
 अपिन डोक खल व्याकुल कोन्हा । मसमासुरै संभु वर ठपऊ । पलटि महा बुध
 मा जन मयऊ । सहित धरा धन सैन समाज देउ देव पहलादे राजू ॥ मुनि सुरेस
 सिमासन दीन्हा । तिलक लिलाट कमल भव कोन्हा ॥ दाहा ॥ चौर लिये दिगैस
 कौ लिये हाथ हथिधार भारति करत इन्द्रावती प्रत भट दीपक वारि ॥ सहज
 राम पहलाद कौ सिर परसि पंकुह पान । खंतर हित नर हरि मय निज सेवक
 सुचदान ॥५३॥ इति धारामायण बालकांडे तुलसीकृत इतिहासे महादेव पारवती
 संवादे पहलाद चरित्रे नरसिंह प्रवतारे कथा समाप्तं मुमं कलम गंगासम ब्राह्मण
 गौड ॥ शुभ संवत् १९५५ वैशाख कृष्णपक्षे तिथि ४ रविवार पुस्तक तुलसीराम को ॥

Subject—१—महेश चौर शारदा स्तुति, पारवती का शंभु से पहलाद
 चरित्र मुनने के लिए आग्रह करना, शंभु द्वारा वैकुण्ठ का विस्तार और शोभा
 वर्णन, हरि स्वर्ण वर्णन, सब देवताओं का हरि को स्तुति करने का वर्णन ।
 दक्ष मुनि का बिना द्रापण को आशा के हरि के निकट जाने का वर्णन,
 द्वारपाल का हरि के प्रति मुनि को शिकायत का वर्णन, मुनि को कोय
 दारा का वर्णन, मुनि का श्राप देना, कमलापति को शोभा वर्णन और
 शिव नख, पीठ की शोभा वर्णन, भाल को शोभा वर्णन, कुंडल की शोभा
 वर्णन, कपोलों की शोभा वर्णन, फाट की शोभा वर्णन, भुट्टों की शोभा
 वर्णन, नासिका की शोभा वर्णन, दशन की शोभा वर्णन, भुजाओं की
 शोभा वर्णन, कंठ की शोभा वर्णन, संख, चक्र, गदादि का वर्णन, मुनि का
 भगवान से भेंट होने का वर्णन । विप्र के अपमान का फल वर्णन, भगवान
 को लीलाओं का वर्णन, द्वारपाल के श्राप को क्षमा करने के लिए भगवान का
 मुनि से कहना, हरि सेवर होने के लिए मुनि का अनुग्रह, राम का अपने
 अवतारों का वर्णन, दनुजराज का भगवान से वर पाने का वर्णन, दनुराज के
 पुत्र पहलाद का जन्म, पिता का पुत्र बच किस दास से हुआ, पहलाद को अपने
 कुल गुरु को सौंपना, पहलाद का गुरु से राम भजन फल पूछना, गुरु द्वारा
 विद्या की महिमा का वर्णन, गुरु का राजविद्या के लिये पहलाद से कहना,
 पहलाद का हठ राम भजन के लिए, गुरु का राजा से पहलाद को शिकायत
 करना, पिता का अपने पहलाद को समझाना । पहलाद का राम भक्ति के
 लिए फिर हठ करना, पहलाद का अन्य बालकों को राम भक्ति का उपदेश
 अध्यात्म विषयक उपदेश जिसमें मनुष्य की गर्माग्रहा से लेकर पालन पोषण
 बालकाल युवावस्था वृद्धि अवस्था और मरणवस्था का वर्णन, कर्म की

प्रधानता का बख़्श, संसार के नाते और सम्बन्धों पर आलोचना, राम भक्ति से रहित इन्द्रियों का सुख निरर्थक है, राम भक्ति बिना आहार निद्रा, मय मैथुन आदि में पशु और मनुष्य को समानता का बख़्श, अश्व वालकों का पहलाद से यह पूछना कि तुमने भक्ति कहाँ से सीखी, पहलाद द्वारा अपने पिता को पूर्ण तप कथा का बख़्श, नारद का पहलाद की माता को उपदेश और वहाँ से भक्ति का संकुर पैदा होना, राजा का पहलाद को परीक्षा लेना, पहलाद द्वारा राम की महिमा का बख़्श, राजा का पहलाद को राम विमुख होने के लिये समझाना, पहलाद का इठ करना और राजा हिरण्यकश्यप का तलवार लेकर मारने के लिये उद्यत होना तथा मंत्रियों द्वारा राजा को समझाना, पहलाद का हाथी तले कुचिलधाना, माता का पहलाद को समझाना, अश्व पुरवासियों की शिकायत उनके वालकों को बिगाड़ने का कारण पहलाद को बता कर अपराध लगाना, राजा का पुनः क्रोध कर पहलाद को पड़ाइ से गिराना इसके पश्चात् समुद्र में फिक्रधाना और वहाँ से भी राम राम जाते हुए पहलाद का निकल आना । फिर पहलाद का घग्नि में डाला जाना इसके बाद में सर्प बिच्छू आदि से कटवाना और संत में खंभ से बंधवाना और राजा का तलवार लेकर मारने के लिये उद्यत होना और हरि का प्रगट होना । राजा और भगवान का युद्ध होना और राजा का उदर चीरा जाना, पहलाद का भगवान को प्रणाम करना और उनका आशीर्वाद देना और वरदान देना और भगवान द्वारा पहलाद का राजतिलक होना और भगवान का संतर्धान होना ।

No. 367(c). *Prahalāda Charitra* by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size— $8\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—320 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Bhaiya Santabaksha Sirṁha, Guthawa, District Bahraich.

Beginning—.....कन कैसे तरनि आदि समुज्र मह जैसे ।
मदा एक कर रिपु मदहारे । देखि महामुनि भये सुखारे ॥ लोला कमल एक
कर लोन्हें । समन करत मुनि मन बस कोन्हें ॥ भाल तिलक श्रुति कुंडल लोला ।
फलकत पुनि पुनि मेछु कपोला ॥ रतन किरोट चिमडित घोसा । कहि न सकहि
कवि अज पर ईसा ॥ कमल विठोचन लोल मुनासा । सुगुटी कुटिल मनोहर
हासा ॥ ओ सुखभी मुनिपद जनु चच्छा । उर श्रोवत्स कहै कवि दच्छा ॥
दा०—कंबु कंठ कोष्ठुम लसै उर तुलसी को माल । चरन चलावति श्री मेनदु
सुमिरै सबतिषा साल ॥ ५ ॥

End—दनुज राज लपि रूप खरारो । चला सकोय गदा कर धारो ॥
 हे हरि कुहुक तोहि मैं जाना । झल करि बधेउ बंधु बलवाना ॥ अब नरहरि तन
 धरि मम नेरे । धावहु कठिन काल के मेरे ॥ यस कहि कोन्हेंसि गदा प्रहारा ।
 हरि धरि भूपर पटकि पक्षारा ॥ मरै न भूपर विधि बर दोन्हा । ऊर उदर विदारन
 कोन्हा ॥ उदर विदारि रुधिर करि पाना । खोजत जन प्रह्लाद समाना ॥ रूप
 भयंकर दशन कराला । पहिरे उर घेतावरि माला ॥ शोणित सद्य भरो मुख मेंछै ।
 रसना मधर कपोलत पोछै ॥ दो०—नारदादि सनकादि शिव ब्रह्मादिक
 सुर भूरि । निकट न जाहि समीत प्रति । विनय करहि सब दूरि ॥ ४३ ॥ कमला
 सन कमलासन भाखे । निकट जाहु कर कान्ह राखे ॥ हम यह रूप कवहुं नहि
 देखा । रहत रहित हरि संग विशेषा ॥ तब प्रह्लाद निकट सुर पाये । करि
 विनती विधि हृदय लगाये ॥ धन्य तात तुम साधु सुजाना । प्रेम ते प्रगट किये
 भगवाना ॥ शिव विरंचि सुर मुनि दिगपाला सनमुख होइ न सकहि यह काला ॥
 तुम प्रह्लाद जाहु प्रभु पाहो (हम सब देव विलोकि हे.....

No. 361(d) Sundara Kānda Sahaja Rāma. Substance—
 Country-made paper. Leaves—54. Size—8×6 inches. Lines
 per page—38. Extent—1,028 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—
 Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1926
 or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya
 Thakura Mahēśwara Sīmha, Village Dikaulia, Post
 Office Bisawan, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ यथ सुंदर कांड लिख्यते ॥ श्री गुरु श्री
 गुरुवंश मणि पद सरोज सिर नार । सुंदर सुंदर को कथा कहौ जथा मति नाइ ॥
 चो० ॥ तिहि घौसर माकत सुत बीरा । देखा लवन पयोध गंभीरा ॥ सीताराम
 रूप उर लापो बोले पवन तनय बल भापो ॥ मैं अब करौं गगन पथ गवनू ।
 निदरौ बैन तेज मन पवनू ॥ देखहु सकल भाहु कपि बैस । नाघौ जलदि घेनु पद
 जैसे ॥ सोघौ जनक सुता सब ठाऊं । वहि विधि आज पुरटपुर जाऊं ॥ जो न लहौं
 पुनि सिय सुधि लंका । सपदि जाउ सुरलोक असंका ॥ जो सुरलोक न सिय
 सुधि पावौ । रावन अघम बांछि लै आवौ ॥ ताते सख कहौं तुम पाहौं । प्रभु
 प्रताप बल निज बल नाहौं ॥ दो० ॥ यस कहि भुजा पसारि दोउ चला गगन
 पथ कोस । पंच पंच फन सहित जनु जेहत जुगन फनीस ॥ चले साथ
 कपि नाथ के कुसुमित सुतक सुरंग ॥ चले पठावन लोग जिमि गुरु हरिजन के
 संग ॥

End—उछरि उछरि जल बहेउ बकासा । नभ सरि जलद भनावन
 बासा ॥ सरि प्रवाहु बहेउ जल उलटा । विपति परे नति त्वागहि कुलटा ॥
 मरि मरि जोव रहे उलटाई । कुल मूल कहु चले पराई ॥ छिटक छोट की परो
 गढ़ लंका । सुनि रव धोर सुचारि ससंका ॥ सबल सुवेन नाधि जल गयऊ ।
 नंका नगर कोलाहन भयऊ ॥ पांच दिवस महं बाधेउ लेहू । हरषे निरधि मानुकुल
 केदू ॥ जोजन चारि सेव चकलाई । सति धनूय कहु वरनि न जाई ॥ भालु
 कपिन को अद्भुत करनो । सेस सहस मुख सकैं न वरनो ॥ दो० ॥ श्री रघुवीर
 प्रताप ते उपल भए जल जान । सुजस भयो नलनोल को जानहि संत सुजान ॥
 पवन तनय को पीठि पर भए बहइ रघुराव । मुये जिये जल जंतु सब तरवे दरसन
 पाव ॥ बालि तनय को पीठि पर लपन भए असवार । सुमिर सिवा सिव पुत्र को
 गवने राजकुमार ॥ चली भालु कपि सवन सब को कवि बनै पार । सहज राम
 सुरपुर मची जय जय जयति पुकार ॥ उतरि पार हेरा किए सबल सुबेल समीप ।
 उतरे वानर भालु कपि जय दिवकर कुलदोष ॥ इति श्री रघुवंश दोषक सहज राम
 कत सुंदर कांड समाप्तः दस्तपत मोहनलाल के संवत् १९२५ पूसवदी प्रभावस्थां ।

Subject—इस ग्रंथ में श्रीरामजी का हनुमानजी का सीता खोज के
 लिये भेजना रामजी के समीप हनुमानजी का समाचार लाना, नलनोल का
 पुल बांधना और राम लक्ष्मण सहित वानर गीछ पादि का पार होकर लंका
 जाना वर्णन है ।

No. 368. Rasaratnāgāra by Siyad Pahāra of Kasi Sub-
 stance—Country-made paper. Leaves—96. Size—11½ × 4½
 inches. Lines per page—11. Extent—2640 Annashūp
 Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
 Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—
 Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahraich.

Beginning—श्री वनेशायनमः ॥ हजरत गोस श्री चबहुल हू ॥ यद्य
 स्तुति ॥ दोहा ॥ पलप निरंजन एकु है घर दुजे नहि बेद । यह काहू कोन्हों
 नहीं रहि कोन्हों स चकोर ॥ १ ॥ जो० ॥ मुहम्मद नाम जगत उजियारा । ताके
 हेत रची संसारा ॥ पुनिता मत चारि विधि दये । ग्रंथ दिखावन को निर्मये ॥ पुनि
 विधि रचे मोहम्मद गोस । जाके सुमिरन रहै न होस ॥ इतनी वासु बड़े विधि
 किया । जासम को महि धैर न हुआ । विद्या गुण के सरे सुजान । सुंदरता के
 मदन समान ॥ सब हो विधि के जेता गुणो । सिवा करै पिपो सुर मुनो ॥ यह सब

विधिना चापुन लहौ । तिन के गुण प्रगट के कहौ ॥ सेवा करो नरायण साइ ।
महै पाइ रे सेवा पाइ ॥ एकहि नाम नमैं यह भई । जानि बेगि कै पाछा टई ॥

End—अष्ट शेष कै देइ सिराइ । काथ देत त्रिशेष नसाः ॥ पीपरि के पुक्षेप
सों कहौ । रोगु जाइ जो सुपक रदौ ॥ अथ पुनरवार ॥ अथ हैगुरादि वरो ॥
हैगुर तेल चुपरो क्षेना के घंगरा पर धरै जब धुसा निकसि जाय तब उठाइ लेइ
धावरासार गंधक टंक १ अकरकरा टंक १ मिर्च टंक १ पीपरि टंक १ अम्रक
टंक १ फुलिया सुहागा टंक १ मिटौ टंक १ जोरा टंक २ फुंजि लोजै तब घाट
जै काज रसो मह सौ वरो बांध जो मिर्च प्रमान तब बाइ सन्निपात को दोजै
बादे के रस सों सन्निकोला कैया तोला दोजै ॥ इति श्री सत्यद पद्धार संपुरनं ॥
शमत्त १९४० मिति भाद्रपदौ १ एक मंगलवार समाप्तम् ॥ लिपितं काशी
विश्वरंजो काशी मध्ये गंगाजो राम जो नमोनमः कालमैरव काशी के
काटवाल

Subject—पृ० १—२ प्रार्थना कवि वर्णन । पृ० ३—८ तेल वर्णन ।
अम्रक वर्णन । गंधक, सज्जो, रंगविधि, पारा, हड़ताल, सोनामाखी, हैगुर,
नैनिद्या शोधन, मुर्दाशंख, शिलाजोत शोधन । पृ० ९—१५ अम्भाभारो, बंग
विडंगादि, बंग विधि । पृ० १६—२६ धातु गुण औगुण. मारन विधि, नाग विधि,
धोने की विधि, होरा कुंद, तांबा, बंग विधि । पृ० २७—३२ अम्रक, हरताल,
मकः, ध्वज रस, गंधक पाट, शोशा रांगा, पारा, सिंदूर, कपूर । पृ० ३३—४२
गंधक तेल, कनक सुंदरी, मुनि वल्लभ, बंग रस, कुसुम भुवंग, चन्द्रकान्ति,
संखिया, ब्रह्मण्यपरेश्वर, मस्मसूत, कुष्ट हरताल, धातु हलादल, तिरोरदा,
कंदोरस । हेम रस, हसो जंगल, कपराज, रसाराजस, मदनसुंदरी । पृ० ४३—५७
नागेश्वर, सुगांक, गौरी, गनेस रस, कल्याण गुटका, मदनपाल गुटका,
चंद्रद्वारस, रामबाण, मुक्ता विधि, हरताल, धूनी, मरहम, उबटन, महातैल,
दिनाई उपचार, संकोचन, धंभन, पृ० ५८—६९ । वायुका उपचार, गंधक
तैलादि, सौभाग्य सोठि, स्वरांकुस, प्रमेह, कर्णरोग, त्रिकुटा, प्रबलेह, मूंगा
बनाना, मेघनाद रस, नागायण बटो, बवासोर का इलाज । सुगी का नास,
तिजारो, कायाकल्प, बांझ विधि, भुंगराज रस । पृ० ७०—८१ काथ, गुटिका,
हैगुर विधि विषादि चूर्ण, चिरायता, पाताद्राव, धंभन विधि, काथ, जोगराज,
मंजोष्टादि, उद्रे भारकर, कोट विधि, घरस भुवंगम रस, गर्भ पातन पृ० ८२—९६
काकबंध्या, कुरंड विधि, जोरकादि बटो, खांसी, सौभाग्य सोठि, काढ़ा,
तावे चादि का अनुपान । मेहारी रस, पताप लंकेश्वर, सूरज रस, कालाग्नि,
ब्रह्मभरो, सुनादि रस, मदनमोदक, पर मैषज, काढ़ा, हैगुरादि बटो ।

No. 369. Vinaya Bihāra by Sukhapunja (Nandagopāla) of Gaṅgāpura (Kāshī). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—12×5 inches. Lines per page—10. Extent—220 Anushtup Śloka. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A. D. 1762. Place of deposit—Raja Pustakalaya Bhīngā, Bahraich.

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ अथ विनय विहार लिख्यते ॥ दोहा—
गौरि तनै सुमिरे वनै सनै सनै सर काज । कलधार बल उदधि ते जेदि विधि
तरत जहाज ॥ १ ॥ कवित ॥ बारन बदन हैं विदारन विधन घन मोह मन मारन
हैं तनय गनेस के । कारन हैं सुख के कलुष ते उधाधन हैं दोन जन तारन हैं बारन
कलेस के ॥ समै पद दावक हैं समै विधि लावक हैं देव गननायक सहायक
सुरेस के । चंदन हैं सुर के घमुर के निकंदन हैं सुख पुंज बंदत हैं नंदन महेश
के ॥ २ ॥ दोहा ॥ ओ गुरु दानदयाल गिरि पद बंदौ सुखदानि । जासु कृपा
कवि रीति मो भई प्रीति पहिचानि ॥ ३ ॥

End—दो०—गंगापुर काशी निकट रजिधानी कसिबार । लक्ष्मी
नारायण तहां बसत सहित परिवार ॥ ५५ ॥ काव्य कुल श्री वासतव नंदन नंद
गोपाल । बन्दन कोन्या गौरि पद कंदन दुख भौ जान ॥ ५६ ॥ कविताई में नाम
निब गुरु प्रसाद वर पाव । भाषत हैं सुख पुंज कहि जगदेवहि शिरनाथ ॥ ५७ ॥
मगति सुमन सुधि नति गुनन मोमन मालाकार । इस प्रिया पद सोस धरि
विरह्यो विनय विहार ॥ ५८ ॥ प्रेम प्रानते संधिहै जे नर अर्थ सुगंध । तेहि
हिम कबहुं न व्यापि है दुरगति को दुरगंध ॥ ५९ ॥ नि० का०—भैरव महो प्रह
सिद्धि ससि सबत मै यह प्रथ । १९१९ आखिन सुदि रस कवि दिवस भयो
सुमति को रथ ॥ ६० ॥ इति श्री विनै विहार गिरिद तनया चरितारविद
स्तव सुपुंज कृत संग्रहम् ॥ शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु मि० कार्तिक शुदि ७ ॥

Subject—कृन्द—१—२ गणेश बन्दन ।

कं० ३—४ गुरु बन्दना । कं० ५, ६, ७, ८, ९ । गौरि शिव बन्दना ।

कं०—१०—५४ गौरि प्रार्थना । कं० ५५—५९ । कवि वंश घणन ।

कं०—६० निर्माण काल ।

No. 370. Rāmāyana by Samaradāsa of Magaraura, District Sitāpur near Kalyāni. Substance—Country-made paper. Leaves—265. Size—10×6 inches. Lines per page—36.

Extent—4,790 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of Manuscript—Samvat 1927 or A. D. 1870. Place of deposit—Thakura Durgā Sīmla Rāis, Dikauliā, Post Office Biswāsi. District Sitapur (Oudh).

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ अथ बाल कांड लिखते ॥ भजन ॥ गनपति सुमिरौ सिद्धि निद्धि दायक । लंबोदर मज्ज वदन सदन सुष कृपासिधु सख विद्धि से लायक ॥ विघ्न हरन सुष करन उमा सुत पादि देव समर्थ गननायक । मंगल करन दहन दुष दारुन संकर सुनु जगत पुन भायक ॥ सुनहु घर्ज यह गर्ज समर को कहौ राम जस होहु सहायक ॥ रागनो भैरवो ॥ ध्यावौ पादि सकि महारानी । मन्ना विशु दद जेहि ध्यावै तुझरो गति प्रदुभुत जबरानी । जगत तेज चौदहौ भुवन मे वेद सेस नहि सकत बपानी ॥ रक्तबोज सम कोटिन दानी निषि षिम दुष्ट बध्या है भवानी ॥ समर चहत राम जस बरजन करौ सहाय देवो वरदानो ॥ सो० ॥ तुम गुर म्यान निधान मैं अग्यानी अधम हैं । जानौ मोहि पजान करहु समर नितार प्रभु ॥

End—राजा रघुवर के बंस महं राम अवतरे पाय उनको मुजस अपार है समर कहाँ नहि जाय । ध्यान करत ध्यानी थके म्यानी करते म्यान । पार न पावै जग कोई का कहै समर पयान । बहि रघुकुल में जगम है समर राम को दास । तीस कोस पश्चिम दिना अवधपुरो ते वास । सरजू जहं कलि विष हरन पौर चन्दहि देत । राम अवतरे हैं जहाँ ताहि न भजसि अचेत ॥ जे पहिँ हैं मुनि हैं समर राम चरित मन लाय । भवसागर तरि हैं सही दिन दिन सुष सरसाइ ॥ मगरौड़ा खान है कल्याणो के तोर । समर इलि रास तजि सुमिरौ ओ रघुवीर ॥ कौविद कवि सुर साधु ते घर्ज समर सिर नाय । बनी न होवै सोइ छुप्यो जान्यो सेवक पाय ॥ संवत सत वर्षीस से ओ पावस के माहि । सुकृ पक्ष तिथि सप्तमी नयत मैत्र गुर ताहि ॥ इति ओ रामचरित्रे मानस सकल कलिकलप विध्वंसने विमल वैराग्य तुलसीदास दासस्ये समरदास कृत उत्तर कांड समाप्तः ॥ लिखतं विश्वनाथ पांडे संवत १९२७ पटनाश्रे दुर्गा सिंह के ॥

Subject—इस पुस्तक में बाल, अयोध्या, किष्किंधा, सुन्दर, लंका उत्तर—सातकांड हैं और सातो में तुलसीदास जो की भांति भजन दोहा चौपाई, सारठा पादि में राम जो की लीला बर्णन की गई है ।

No. 371(a). Kavitta by Śambhunātha of Terā, Unao. Substance—New paper. Leaves—3. Size—7×4½ inches.

Leaves per page—32. Extent—48 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Banibhushana Jī, Rāo Bareilly.

Beginning—श्री शम्भुनाथ के काबिज ॥ साँप सबै सरके हर देह ते भृंगन में सुनि भौर को वानी ॥ बैल मजो लखि सिहन को मन मोदत ही गिरि की रजधानी ॥ द्वार में काहि ले पावै लिबाई वरात तौ पोछे फिरी भररानी । बाहर ठाढ़ो हंसै लखि शम्भु गई पुर ते झुरि जो भगवानो ॥ १ ॥ सैल की गैल यो बैल को सिंह दरोत मो देखि परो निज नेरे । पुछ महे मन जात चले डरि भाजि चलो न फिरे फिरि फेरे ॥ यागे हूँ छेन चले वर को ते हंसै सिंगरे यह कौतुक हेरे । द्वारे को चार रणो कहि शम्भु वरात चलो फिरि दूलह घेरे ॥ २ ॥ माल कराल कपाल को माल कसे कटि व्याघ्र को घाल डरारो । देह में खेह घरे वर शम्भु घरे विष रेख भयंकर कारो ॥ रोचना देन लिलार लभ्या तब तोड़न पाँच लगी दगवारो । ऐचि कै हाथ पचेत गिरो दुज देखि हंसै सब कौतुक भारो ॥ ३ ॥

End—खेलत फाग मुहान मरो जिन पै सुर संगता दारतों बारि है । जैये चले भेंटिलैप उतै इतै कान्ह खड़ी वषमान कुमारि है ॥ शम्भु समूह गुलाब के मोसन को रंग केसरि डारि वेगारि है । पामड़ी पामड़े होत जहाँ तहँ का लला कामरो पै रंग डारि है ॥ १३ ॥ बालम के विछुरे बड़ी बाल को व्याकुल विरहा दुख दानिते । चापनि जानि रचो कवि शम्भु सहैलिन साहिबिनो सुख दानिते ॥ तू जुग फूटै न परी भट्ट यह काहु कहो सबिया सबियान ते । कंज से पानि ते पाँसे गिरे प्रभुवा गिरे खंजन सो पखियान ते ॥ १४ ॥ सोप लाग घर के डगर के केवारे खोलि जिय जानि वोति जुग जाम गई जामिनी । चापे पद चुप चाप चारो चेर चितवत चलो हिव पास चित चाह मरो मामिनी । पैठ सकै के निकैत के निकट शम्भु कैसी वन बोधिन बिराज रहो कामिनो । चामो कर चेर जानो चंपलता भौर जानो चाँदनो चकोर जानो भौर जानो दामिनी ॥ १५ ॥

Subject—हास्य रस के ८ छंद, करुणा रस के—२ छंद, वीर रस के १ छंद, हंसी—२ छंद, विरहिनी का वर्णन—२ छंद

No. 371(b). Muhurta Chintāmaṇi Bhūṣhā (Muhurta Manjari). Name of author—Śambhunāth Tripāthī. Substance—Country-made paper. Leaves 72. Size—10×6 inches. Lines per page—40. Extent—1,440 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat

1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Pustakālāya Rājā Lālā Bhaksha Simha Ji Talukédara Nilgama, Post Office Nilaganva, District Sitāpur (Ondh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुहूर्तं चिन्तामणि भाषा लिख्यते ॥ सखन सनध के दलन को तुव समान को होहि । हरज बिनावक को हरै बिचन बिनावक तेहि । कवि कदंब लखि श्रव के उमड़त मोद पषंड ॥ कनरव करि करि बदन फेरत सुं जा दंड ॥ अति सुदेश मम पाचरन देसन को सिरताज । सुव सुष करि घनि सिर जहां वैश भूप को राज ॥ प्रमल चरित तेहि देश को ज्यों सुरसरि को सोतु । जहां धरम ध चरण सुष दिन दिन दूनो होत ॥ प्रगट भये तेहि देश में जाके वैश प्रभाव । सरि कुल मरदन सुख सदन मरदन नर वा राव । तेहि मरदाने राय के प्रगट भये अचलेस । जाके गुण गण को कथा बरणि सकै नहिं सेस ॥ जयति पत्र जग जिन लयो सत्रु समूह नसाइ । निज बश करि तुरकान दल कस्यो मड़ो में पाव ॥ समा मध्य कै हते एक समय अचलेस । जिन कवि शम्भूनाथ को कोन्हा यहै निदेस । जैसे जातक चंद्रिका करि दोन्ही करि नेह । ल्यो मुहूर्त चिता मन्यो भाषा में करि देहु ॥

End—घनाक्षरो ॥ अथ ग्रहप्रवेश ॥ तानिष चितान मुकतान सो समेत गान मंगल के कानन सु सासो पोजिषतु है ॥ वेद धुनि सुनत न गवे सुर पूज गुरजन पुरजन सो पासोस लोजिषतु है ॥ गनिका चितेरे सौ लोग जे सनेरे नेरे जोहित पुरोहित न दान दोजिषतु है ॥ विहसत बदन सुमन दुरजन चडि नूतन सदन को गमन कोजिषतु है ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री अचल सिंह भाषा त्रिपाठी शम्भूनाथ कृत निमित्तायां मुहूर्त मंत्रणा ग्रहप्रवेश प्रकर्षे इति मुहूर्त मंत्रणा समाप्त शुभ मस्तु ॥ घनाक्षरो ॥ जौ जौ काल नायक कलानिधि कलपतक कमठ को पोठि में निवास जौलौ सेस को । देव मुनि मनुज दनुज गंधर्व जौलौ मन में अग्र माल पूजत गमन साको ॥ तौलौ हिमगिरि परा गिरिजा संभुता संभु जौलौ प्रमरावती प्रमरेश को । मान सरवर जल प्रफूलित के जौलौ तौलौ राज राजै राजवंशो अचलेस को ॥ इति श्री मुहूर्त चिन्तामणि भाषा समाप्तम् । लिपत गंगा गणेश संवत् १९०३ आषाढ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्दसी ॥

Subject—मुहूर्त चिन्तामणि ज्योतिष विद्या को पुस्तक का भाषा किया गया है, इसमें मुहूर्त जाने जाने व्याह यज्ञोपवीत यज्ञ आदि के वर्णन किये गये हैं उनके लाभ हानि भी लिखे हैं ।

No. 371(c). Muhurta Chintāmaṇi by Śambhūnātha.
Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5

inches. Lines per page—30. Extent—2250 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat 1911 or A. D. 1854. Place of deposit—Chhatra Simha Thakura, Katailā, Post Office Phakharpur, District Bahraich (Oudh).

No. 371(d). Muhurata Manjarī by Śambhūnātha Tripathī of Baksara (Rāe Bareli). Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size— $11\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—20. Extent—1550 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Place of deposit—Paṇḍit Achyutakumār Uttarpārā, Rāe Bareli.

Note—प्रादि No. 371(c) पर लिखा गया है ।

End—घनाङ्करो—सूरज नष्ट ते कलस मुष दोऊँ एक ताते कहूँ धामिन को ज्वाला ते जलतु है । चारि चारि नष्ट विचारि बहु दिसाँह में दोऊँ फल ताको तैलन टारे न टरतु है ॥ उदयस लाम लक्षिमो कलह बहुरि मध्य वेद में परै तै धामतु धामनि दगलु है ॥१०॥ (एक चरण नहीं है) तानिय बितान सुकतान सो समेत जान मंगल के कानन सुधा सो पीजियतु है । वेद धुनि सुनत नगर सुर पूजि गुरजन सो घसोस लीजियतु है । विहसत वदन सुमन द्विरदन्ह चढ़ि नूतन सदन को गमन कोजियतु है ॥ ११ ॥

उत्तर	२२ २४ २६	१०	मुष लगने रविः	२४ २६ २८
पश्चिम	२४ २६ २८	१०	मुष लगने रविः	२६ २८ ३०
दक्षिण	२६ २८ ३०	१०	मुष लगने रविः	२८ ३० ३२
पूर्व	२८ ३० ३२	१०	मुष लगने रविः	३० ३२ ३४

॥ कलह ॥



१ लक्ष्मी

उद्वसन

विनास

॥ लाम ॥

श्रीं ॥

Subject—पृ० १ गणेश स्तुति, आश्वयदाता का परिचय, ग्रन्थ रचना का परिचय । पृ० २—निर्माण सम्बन्ध, तिथि वर्णन तिथि ईस, कर्कच योग वर्णन, पृ० ३—दन्तधावन विचार, तिथि मिलन, नक्षत्र शून्य और नक्षत्र तिथि मिलन शून्य वर्णन । ४—तिथि, वार, नक्षत्र मिश्रित दोष, आनन्द योग वर्णन—५—सिद्धि योग, और कुयोग परिहार वर्णन । पृ० ६—कुलिक योग वर्णन और रव्यादिक वार दुष्ट मुहूर्त वर्णन । पृ० ७—रव्यादीनां मुहूर्त दोष वर्णन, भद्रा विचार और लोक वास वर्णन । पृ० ८—सिंहस्ते गुरौ परिहार त्रय, वक्र अतिचारे परिहारः, वार प्रवृत्ति और काल होता वर्णन । पृ० ९—मन्वादयः और युगादयः वर्णन, शुभाशुभ प्रकरण समाप्त, नक्षत्र नाम भ्रूवादि संज्ञा वर्णन । पृ० १०—प्रधौमुखादि नक्षत्र, नारी भूषण परिवान, बलचक्र, मथारंभः, मवांक्रय विक्रय, पशुखापन वर्णन । पृ० ११—हाट मुहूर्त, विक्रय मुहूर्त, मजवाजि कर्म, आभूषण बनाने का मुहूर्त, सूची कर्म वर्णन । पृ० १२—शस्त्र धारण मुहूर्त, संघादि नक्षत्र ज्ञान, धातो धारण का मुहूर्त, राज सेवा मुहूर्त और सेवा चक्र वर्णन । पृ० १३—दनकर्म, बोज बाने का मुहूर्त, खेत काटने और पक्ष लेने का मुहूर्त । पृ० १४—रुधिर निकलवाने का मुहूर्त, शान्ति कर्म, अग्नि निवास, आहुति विचारनाम, नौका, रोगी स्नान, और शिल्प कर्म मुहूर्त वर्णन । पृ० १५—संधि मुहूर्त, सुवर्णादिक के मुहूर्त, रोगो सति विचार, विषरोगोत्पत्ति, विषयर नक्षत्र, पंचक विचार, ईश्वर धरने का मुहूर्त वर्णन । पृ० १६—त्रिपुष्कर योग, नारायण वलि, मूलविचार, मूलवास, मूल वृक्ष, मूल धवौ बोलने का विचार वर्णन । पृ० १७—अश्वन्यादि स्वरूप, देव जलाशय प्रतिष्ठा वर्णन २ प्रकरण । पृ० १८—संकांति चक्र, उत्तरायन दक्षिणायन विचार । पृ० १९—कर्म ज्ञान, सुतादि ज्ञान, वाहरिणादि विचार वर्णन । पृ० २०—मलमास विचार, ३ संकांति प्रकरण समाप्त । पृ० २१—गोचर वर्णन ।

पृ० २२—तारा विचार, विरुद्ध तारादान वर्णन । चंद्रमा की १२ अवस्था, गुरु विरोध औषधि स्नान विचार वर्णन । पृ० २३—रव्यादि दान, अन्य सर्वेसा दान, चतुर्थ प्रकरण गोचर । पृ० २४—स्नान मुहूर्त, गर्भाधान, स्तनपान, सती स्नान मुहूर्त प्रथम मास दंतोत्पत्ति फल, दोला रोहन, पुंसवन सीवतकर्म जातकर्म वर्णन । पृ० २५—निकमन, अन्नप्रासन, स्नान जल पुजा मुहूर्त, भूमि प्रवेश, तांबूल भक्षण मुहूर्त । पृ० २६—कर्मवेध, चूड़ा कर्म मुहूर्त वर्णन । पृ० २७—२८—अक्षरा-रंभ, गुरु शुक्र बाल वृद्धित्व, विचारंभ, पृ० २९—वतबंध वर्णन, ५-प्रकरण संस्कार समाप्त । पृ० ३०—विवाह प्रकरण । पृ० ३१—वर रक्षा मुहूर्त, चूड़ा वत विवाह के संत । पृ० ३२—वर्षे विचार, तारा विचार, जेति विचार, महाणां भिन्न विचार । पृ० ३३—गण विचार, रासिकूट, परिहार, नाडी विचार, नक्षत्र कूट विचार । पृ० ३४—अष्टवर्ग, परिहार, अन्य विचार, रासि ईश, षटवर्ग द्रुंशकालः सप्त मासा विचार । पृ० ३५—नवांशा विचार, द्वादशांश, त्रिंशांस विचार । पृ० ३६—दिन के १५ मुहूर्त, रात्रि के मुहूर्त, विवाह नक्षत्र, पंच शलाका । पृ० ३७—सप्त शलाका, पंचक विचार वर्णन । पृ० ३८—रोग, एकान्त, पाजूरक, कांति साम्यं, दम्य तिथि, दशयोग विचार । पृ० ३९—ग्रहण इष्टि विचार तत्काल विचार, अंधादि पंगुलस विचार । पृ० ४०—विश्वावन विचार वर्णन । पृ० ४१—चक्र वर्णन । पृ० ४२—विवाह प्रकरण समाप्त ६, वधु प्रवेश । पृ० ४३—हिरण्यमन, अग्नि स्थापन मुहूर्त वर्णन । पृ० ४४—राज्याभिवेक, यात्रा प्रकरण । पृ० ४५—जीवपक्ष मृतपक्ष, कुलाकुल विचार । पृ० ४६—पथिवड, तिथि चक्र वर्णन । पृ० ४७—घात चन्द्र वर्णन । पृ० ४८—योगिनी विचार, काल वास परिधि विचार, अयन सून, सुक विचार वर्णन । पृ० ४९—अंधशुक विचार, द्विगोसा, ललाटी योग विचार । पृ० ५०—५१—प्रस्थान विधि । पृ० ५२—भाम्य योग, कल्पान योग, विजय योग, चिंतामणि योग, सिंह योग, मृत्यु योग, केन्द्र योग, पारावर्त योग, पिनाक योग, मृत योग, संजीवन योग, भयंकर योग, भ्रमय योग, कुंडवर योग, पाप कंचुकी योग, घानंदावर्णन योग वर्णन । पृ० ५३—यात्रा समय सेनादि स्फुरण सकुन वर्णन । पृ० ५४—उत्पात दोष, प्रवेश निर्गम विचार, यात्रा विधि, अश्वन्यादि नक्षत्र दोह दानि, दिन दोह, वार दोह, चलने की विधि वर्णन । पृ० ५५—प्रस्थान स्नान विचार । पृ० ५६—शकुन विचार, असगुन विचार वर्णन । पृ० ५७—प्रवेश निर्गम, यात्रा समय दोष वर्णन, यात्रा प्रकरण समाप्त । पृ० ५८—गृह प्रकरणः—द्वार विधि वर्णन । पृ० ५९—अवनादि मुख विचार, ध्रुवादि शाला, मास भेद, गृहद्वार विचार वर्णन । पृ० ६०—गृहोरंभ मास विचार, तिथिपक्ष से गृह मुख विचार । वृष चक्र, दिशा नक्षत्र विचार वर्णन । पृ० ६१—राहु मुख जानने की विधि, शाला विधि,

वदानि, चौधद विचार, वास्तु प्रकरण समाप्त । १० ६२—सूर्य विचार, कलस चक्र विचार, प्रवेश विधि वर्णन ।

No. 371(c) Vaitalapachisi by Śambhū Kavi (Śambhūnātha Tripathi) of Bakasr. Substance—Country-made paper. Leaves—292. Size—9×6 inches. Lines per page—18. Extent—2,956 Anuṣṭup Śloka. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1835 or A. D. 1828. Place of deposit—Lālā Mohana Lālaji Haladī, Nawabganj, Bārā Banki

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ यद्य वैताल पचोसो कथा लिख्यते ॥
 दोहा ॥ तव सम्मुख ज्वाला मुखो उरज्वाला मिटि जात ॥ कलि कलूप आबिल
 जथा सुरसरि वारि नहात ॥ मनमुख सम्मुख होतहो विघन विमुख हो जात ॥
 जिमि पयु परत परान मन पाप पहार बिलात ॥ दोहा ॥ कृषि कदंब लनि खेव
 के उपजत मोद अपंड ॥ कलख करि करिखर बदन फेरत सुंहा दंड ॥ कवित्त ॥
 एक समै गिरिजा को नंदनि चाह अन्हाइ कहु सरसोते ॥ भासुर भाल दिये
 दल प्रानन तौ कृषि को कृषि ओते ॥ सा हठि लोवे को सहि पसारि तहा मन
 नायक चाह अर्माते ॥ चाहि के वाप सौ दारि मनोहरे लेत सुधा अहिराज
 ससोते ॥

End—कहि देवो यह वचन प्रधान ॥ तुरित हूँ गई खेत र ध्यान ॥ वचन
 प्रमान देविके मये ॥ दुवो पुरुष नृप खर लै मये । चायो तव बैताल के पास ॥
 महाराज हिय सहित हुलास । प्रेम सहित बरस्यो नृप पाई ॥ करो बिनै बहु सोस
 नवाइ ॥ जातु सिंग मोहि नहि देतौ । तो मम प्रान पात्रु वह लेतौ ॥ जो तुम
 मेरे मये सहाई ॥ जय से बचो सिद्धि मे पाई ॥ जीवत छौ जक मे जीलो ॥
 क्रियादाम पर कोजे तौलो ॥ यह सुनि वचन देव हिय हरयो ॥ सुमन समूह भूप
 पर बरयो ॥ कहाओ अचल हूँ कोजे राज ॥ बिजइ होहु सदा महाराज । जो तेरे
 अनहित को करै ॥ बिना मोचु वह प्रानो मरै ॥ दिन दिन राज तिहारा बहै ।
 सुजस दिवस विदिसन में मरै ॥ लक्ष्मी तजे न तेरो धाम ॥ पूजन सदा रहै मन
 काम ॥ जीवत रहौ भूप बहुकाल ॥ यह कहि वचन गयो बैताल ॥ कथा संपूर्ण
 सुम मस्तु पौष मासे क्रिस्न पच्छे नौमो तिथिऊ मौमवासर सबत ॥ १८८५ को
 साल ॥

Subject—पृ० १—५ तक ज्वालामुखी तथा यमेश की वंदना, वैश्य वंश वंशेन । ग्रंथ निर्माण काल । हरिगोतिका छन्द ॥ द्विजराज कुल वन कुमुद को मुद दानि पूरन इन्दुमो ॥ निज वंस चारिज को दिनेस तिलोकचंद नरिंदर मो ॥ पुनिमो आनंद कंद प्रियवो चंद त्रिप ताके तनै ॥ भुज जोर सो लुरि अंग में जमराज हू को नहि गनै ॥ पुनि भयो ताके अजैचंद परिद कुल दल जेन्ह हन्यो ॥ तिनके भये पुनि देव राय प्रचंड रैया राउ है ॥ इनरंग निरपत चढ़त जाके सोम्युनो चित चाउ है ॥ पुनि भयो मैरो सो उदंड प्रचंड मैरोदास है । हरि सांझिषो परि वरन्ह को गिरि दरिन्ह दोन्हो वास है तिनके धराधर धरन को त्रिप भयो ताराचंद है ॥ निज कर अकंटक भू करो हरि प्रजन को दुषदंड है ॥ संग्राम राउ भये वलो संग्राम दूलह ताहि के ॥ अति धवल कवल समान जम अगि मगि रसो जस जाहि के ॥ पुनि कनिक सांझ नोरंद प्रियम भानु सो जेन्ह के भयो ॥ तिन को समर भट भोर न पगु पढ़यो गयो ॥ पुनि भयो प्रियराज प्रियु कैसा कियो ॥ जस जुह जेहि जगमें लयो वनवास वैरिन्ह को दयो ॥ तिनके पुरंदर सो प्रवल प्रगंडा पुरंदर राउ है ॥ जिनको महा मै मानिके त्रिप के इन परख्यो पाउ है ॥ करवाल जब कर लई तौ रिपुकाल कहि कहि सर भनै ॥ रन होइ सनपु सुभट को जमराज हू जो नहि गनै ॥ पुनि भयो परि मद कदन मरदन सिद्ध रैया राउ है ॥ जेहि पाइ पति वसु मति हिये दिन दिन बढ़त चित चाउ है ॥ कल अंगन काउ पति हो सख्यो तेहि देव सते डेरि डेरन्ह सो । तजि ब्रास डरे मन मुदित हो फुलो किरि चहुं चरन्ह सो ॥ जगवंद अनेद कंद चंद कुटुंब कैख को भयो ॥ रनघोर चार नभोर निरमल सुजस जेहू जगमें लयो ॥ जरिजत जासु प्रताप पावक तेज तें परिवर अनो ॥ तिन्ह के भयो सुरनाथ सो रघुनाथ जू बखिसर अनो ॥ दोहा ॥ सभा मध्य वैश्यो हुतो पेक समे रघुनाथ । घोर घोर उद भट सुभट सुतन बंधु जन साथ ॥ कह्यो किया करि संभु सन जिथा में मानि लागेह । यह बैताल कथा हमति भाषा में करि देहु ॥ नद ध्यामधित जानि के संवतसर कवि संभु ॥ भाष अथ्यासो द्वैत को कोन्हो तब प्रारम्भ ॥

(२) पृ० ६—२३ तक—प्रस्तावना—राजा विक्रम का जन्म, पंडितों द्वारा उनके उच्च षष्ठों का वर्णन, उसी षष्ठों एक तेली तथा एक कुम्भकार के पुत्रों का उत्पन्न होना, योगी वन कर कुम्भकार का जप, तेली का योगी से मारना, विक्रम को भी धोखा देना, अपने साथ में योगी रात्रि में ले जाना, मार्ग में भूत पिशाचादि दर्शन, मुर्दे को ले कर चलना, अपने मित्र बैताल द्वारा मार्ग में राजा का कहानियाँ श्रवण करना ।

(३) पृ० २४—४२ तक—प्रथम कहानी—मेनो की कथा, काशी के राजा प्रताप मुकुट के पुत्र मुकुट दोषर घोर मेनो के पुत्र मतिमानर की मित्रता होना,

दोनों मित्रों का शिकार हो जाना, रात्रि हो जाने पर एक शिव मंदिर में निवास, वहाँ पर नारियों का आगमन, एक स्त्री पर राजकुमार का मोहित होना, कुल वल से उसे ले घाना, इस पर विक्रम का हैद्रक नगर के विप्र चंद्रसेन को कथा सुनाना, उस ब्राह्मण के बालकों का सर्प द्वारा खाया जाना। पाले हुए नकुल द्वारा उस सर्प का विनाश तथा ब्राह्मणों द्वारा उस नकुल का हनन पुनः ब्राह्मणों के पश्चात्ताप का बर्मेन, मुर्दे का उसी ढाल से लग जाना जिसे राजा लाया था।

(४) पृ० ५०—६३ तक—द्वितीय कथा—तीन बरों की कथा—एक ब्राह्मण की रूपवती कन्या को घर न मिना, घनावास ही तीन बरों का घर पर आजाना, ब्राह्मण का संकोच कि किस को कन्या दे ? देवान् उस कन्या को सर्प का काटना, उसका मरना, एक बर का उसके साथ जल कर मर जाना, दुसरे का उसको प्रेम को रक्षा करना तीसरे का तीर्थ यात्रा को निकल जाना अंत में एक पोथी पाना जिससे जला हुआ मनुष्य जीवित हो जाये। कन्या का जीवित होना, बेताल का प्रश्न कि कन्या किसे मिले, विक्रम का सकारण उत्तर, सुतक का उसी ढाल पर चला जाना।

(५) पृ० ६४—८१ तक—तृतीय कथा, शुकसारिका की कथा, (रूपसेन) भागवति रानी के कंत का अपने मित्र शुक द्वारा 'सुर सुन्दरी' का समाचार पा उससे विवाह करना, राजा रानी के अनेक भोग विलास के पश्चात् शुक—सारिका को भी—एक पित्रहं में पहुँचा देना, सारिका का तोते से विमुख रहना तथा एक साहूकार के पुत्र को—जिसने अपनी स्त्री को मारने को चेष्टा की थी—कह कर पुत्रियों से धृष्टा प्रगट की तथा तोते ने एक सेठ की पुत्री को कथा—जिसके मित्र द्वारा उसको नाक काटी गई थी—अपने पति का नाम लगाने का यपराधी बता कर धृष्टा प्रगट करने का बर्मेन।

(६) पृ० ९०—९९ तक—चतुर्थ कथा। जंबूद्वीप के अंतर्गत धारानगर के राज के मित्र हरिदास की कन्या महादेवी के लिये घर की तलाश विप्र का राजा की आज्ञा से विदेश गमन और वहाँ से एक गगन में उड़ने वाले विप्र बालक के साथ आना और उसे अपनी कन्या देने का निश्चय करना, घर आकर ज्ञात करना कि एक त्रिकालदर्शी विप्र बालक स्त्री द्वारा और दूसरा उसके पुत्र द्वारा और लाया जा चुका है। शंका उठना कि किसको कन्या दी जाय। नगर निवासियों का निश्चय कि प्रातःकाल देखा जायगा। रात्रि को विप्र कन्या का हरण, ब्राह्मण का पश्चात्ताप, त्रिकाल दर्शी बालक द्वारा समाचार पाकर रथ पर आरुढ़ हो तीसरे शक्तिशाली का जाकर राक्षस को मार के कन्या को ले

जाना, परस्पर विवाद होना, बैताल का प्रश्न राजा से कि किसको कन्या ब्याहो जावे ? राजा का सकारण उत्तर देना कि वह कन्या लाने वाले को ही दी जाय, उत्तर सुन कर सूतक का फिर उसी ढाल पर लटक जाना और राजा का पुनः उसके लेने के लिये जाना ।

(७) पृ० १९—१०८ तक—पंचम कथा नर्वदा नदी के तट पर एक राजा का देवी का मन्दिर बनवाना, एक रजक पुत्र का देवी के कुंठों में स्नान कर उनको पूजा करके निकलना और एक रजक कन्या को देख कर उस पर मोहित होना और देवी से घर माँगना कि यदि यह पत्नी मिले तो तुझ पर अपना शोष चढ़ा दूंगा । पिता के उद्योग से उसे पत्नी के पिता का अपना पुत्रो को देने का वचन, रजक पुत्र का अपने मित्र सहित जाकर उस कन्या का लाना, मार्ग में देवी का मन्दिर मिलना देवी पर रजक पुत्र का शोष चढ़ा देना । पीछे उसके मित्र का जाना और उसका भी शोष का चढ़ा देना । पुनः उस रजक कन्या का मंदिर में जाकर वैसा ही करने का इशारा देव देवी का दया करना और कहना कि उनके शिरो के उनके धड़ों पर रख कर तु घाहर निकल जा वह जीवित हो जावेंगे । शीघ्रता में एक का शोष दूसरे के बड़ पर रख जाना, दोनों का परस्पर घर आकर पत्नी के लिये झगड़ा, बैताल का प्रश्न कि वह स्त्री किसको पिले, राजा का उत्तर कि जिस पर उसके पति का शोष है उसी को मिले वह सुन कर सूतक का वहाँ पर पुनः पहुँच जाना । राजा का पुनः जाना ।

(८) पृ० १०९—११५ तक—षष्ठ कथा—पंपापुर के नृपति को रूपवती कन्या के लिये वरों का खोज करना और प्रत्येक के गुणादि श्रुति में उसी को उसे सुनाना न रुचने पर पुनः लोगों को भेज कर उसके योग्य चार नृपतियों का चाना, एक पंच वस्त्र उपराजने वाला (नित नये), दूसरा शस्त्र धारी, तीसरा शस्त्रपाणि चौथा पक्षियों की बोली पहिचानने वाला, बैताल का प्रश्न कि किसको कन्या मिले, राजा का सकारण उत्तर कि शस्त्रपाणि वाले को सुनते ही सूतक का पुनः चला जाना ।

(९) पृ० ११६—१२६ तक—सातवीं कहानी । एक राजकुमार का दल बल सहित एक नृपति को राजधानी में आकर नौकरी की इच्छा प्रगट करना, राजा का उनको रहने की आज्ञा दे देना, उसका नित्य प्रति ढाल तरवार लेकर राज दरबार में कुछ द्रव्य पाने के लिये हो जाना किन्तु राजा का न मिलना, यहाँ तक कि उसके सब साथी भी मार गये और वह सब कुछ बेच कर भा गया । अन्त में राजा से साक्षात्कार होना, उसे राजा का एक स्नान के प्रबन्ध

के लिये भेजना, मार्ग में उसे एक मंदिर में पूजन करते एक रूप यौवन सम्पन्न युवती के दर्शन होना, उस पर मोहित होना, राजकुमार का कंठ में स्नान करते ही अपनी इच्छानुसार राजा के पास पहुंच जाना, राजा का उसी स्थान पर आना, उस सुन्दरी का राजा पर मोहित होकर आजा मांगना, उनका कथन कि मेरे सेवक के साथ विवाह करो, स्त्री का आजा पालन, बैताल का प्रश्न कि उक्त राजकुमार और राजा में कौन अधिक सत्यवान गिना जाय और क्यों ?— राजा का उत्तर कि राजकुमार अधिक सत्यवान है, इस पर मृतक शरीर का फिर उसी डाल पर लटक जाना और विक्रम का पुनः सक्रीय उसे लेने को जाना ।

(१०) पृ० १२७—१४५ तक—छाठवीं कथा—एक साहुकार का मरते समय अपने तकिये में सम मूल्य के चार रत्न बता कर अपने चारों पुत्रों को एक एक ले लेने के लिये कहना, छोटे का उसमें से एक रत्न चुरा लेना । उन चारों का एक काजी के पास न्याय के लिये जाना, उसको न्याय में असमर्थता दिखलाने पर एक राजा के पास जाना और उसके बतलाने पर एक राजकुमारी के पास जाना । राजकुमारी का एक एक को बुला कर एक कहानी (जिसमें शपथ के अनुसार वाणिज्य पुत्र ने अपनी पत्नी को अपने मित्र राजकुमार के पास भेज दिया था, राजकुमार ने उसे माता के सदृश बुला कर विदा कर दिया था, यह देख कर मार्ग में मिलने वाले चोरों ने उसके आभूषण न लिये थे) सुना कर पूछना कि उन तीनों में कौन अधिक सत्यवान है, तीन राजकुमारों का उन सभी को सत्यवान बताना, किन्तु छोटे का उन सभी को बेइमान बताना । अंत में उसी को चोर उहरा कर वह रत्न निकलवाया जाना । विक्रम से बैताल का प्रश्न राजा का चोरों को सकारण अधिक धर्मात्मा बतलाना, मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुंच जाना और राजा का पुनः उसे लाने का उद्योग ।

(११) पृ० १४६—१५१ तक—नवीं कथा—बैताल का राजा से प्रश्न कि एक रानी के पैर पर कमल गिरने से उसका पैर टूट गया, दूसरों के शरीर पर मृथ की किरण पड़ने से काला पड़ गया और तासरो को पड़ोसिन के धान कुटने का शब्द सुन कर हाथों में पीड़ा हो गई, बताइये इनमें कौन अधिक सुकुमारि है, उत्तर में तीसरी का सुकुमारि सुन कर मृतक फिर उसी डाल पर पहुंच गया । राजा पुनः लेने गया ।

(१२) पृ० १५२—१६० तक—दसवीं कथा—एक राजा का अपने मंत्री को राज काज सौंप कर विषय भोग करना । मंत्री का तीर्थ को जाना, वहां एक विद्याधर कन्या को जल में देखना और रत्न जटित वृक्ष सरेत डूब जाना, यह कथा उसका श्रोत का राजा को सुनाना । राजा का वहां पहुंच कर उसके

साथ डूब कर पाताल पहुँचना, उससे विवाह को अपनी इच्छा करना, उसका कृष्ण पक्ष को चतुर्दशी को विवाह करने का वचन देना, उस दिन कन्या का एक राक्षस द्वारा निगला जाना, राजा का उसे मार कर उसका निकालना और उसको अपने साथ लाना। कन्या को अपने पिता से मिलने की आज्ञा लेकर जाना किन्तु मनुष्य स्पर्श के कारण वहाँ न पहुँच सकना और फिर राजा के पास हो लौट जाना। राजा का आनन्द मनाना यह देख कर मंत्री को मृत्यु, इस पर बैताल का प्रश्न कि मंत्री को मृत्यु क्यों हुई। विक्रम का उत्तर कि "उसको मृत्यु इस लिये हुई कि राजा विषय वासना में फँस कर राज्य कार्य को विस्मरण कर देगा" सुन कर मृतक का फिर उसी डाल से जा लगना और विक्रम का उसे पुनः लेने जाना।

(१३) पृ० १६०—१६६ तक—न्याहर्वी कथा—एक ब्राह्मण का अपनी तरफ की हुई स्त्री को खोज में निकलना, अध्यातुर हो कर एक वाद्यशी से भोजन पाना, एक तटवाम में स्नान करने जाना अपना भोजन एक वृक्ष के नीचे रख जाना, वृक्ष पर रहने वाले सर्प के श्वासेच्छ्वास से भोजन में विष मिलना, ब्राह्मण का खाकर नशा हो कर वाद्यशी का यह दाप झूला कर उसी के द्वार पर पड़ रहना, ब्राह्मण का वाद्यशी को दापो समझ घर से निकाल देना, इस पर बैताल का पूछना कि कौन पापी है, राजा का उत्तर 'बिना विचारे पाप लगाने वाला' सुनकर मृतक का उसी डाल पर लग जाना और विक्रम का पुनः उसे लेने जाना।

(१४) १६६—१७२ तक—बारहवीं कथा किसी राजा का एक चोर को सुनो का दंड देना, एक सेठ कन्या का उसे देख कर मोहित होना और अपने पिता को उसके बचाने की प्रार्थना करके राजा के पास भेजना, यह सुन चोर का हँसना, रोना, नृप के न मानने और चोर के सुनो पर चढ़ने के पीछे सेठ कन्या का जलने का साहस देख कर उसके पति को जीवित कर देना, राजा विक्रम से बैताल का प्रश्न कि वह चोर क्यों हँसा और क्यों रोया? राजा का उत्तर कि हँसा इस लिये कि पिता पुत्रों का इतना साहस है और रोया इस लिये कि इसका बदला कैसे चुकाऊँगा। मृतक का पुनः जाना जाना।

(१५) पृ० १७३—१८७ तक—तेरहवीं कथा—एक विप्र का एक नृप कन्या पर मोहित होना एक ब्राह्मण के गुटका देने पर उसका पोड़पी वन कर कपट से राज कन्या के पास रह कर गुटका प्रयोजन से रात्रि में पुरुष और दिवस में स्त्री धन कर विषय भोजन में फँस कर छे मास रह कर, राज कन्या के गर्भ रखा कर, राज महिषियों के साथ बजोर के घर गया वहाँ बजोर पुत्र का उस पर

मोहित होना राजा द्वारा उस ब्राह्मण के न जाने और बज़ीर की पार्थना पर यह कन्या मंत्री सुत को भाँसा देकर उसका तोषों को भेजना और उसकी स्त्री के साथ वही पाचरण करना जो राजपुत्रों के साथ किया था। मंत्री के पुत्र के जा जाने पर गुटका प्रयोग से पुरुष बन कर उसका निकल जाना। ब्राह्मण से जाकर सब सुनाना। ब्राह्मण का राजा से पाकर और अपने पुत्र को साथ लाकर उस कन्या को माँगना, राजा का सब समाचार बताने पर उसकी पुत्री का माँगना, राजकन्या के लिये दोनों विप्र कुमारों का भगड़ा बता कर राजा से पूछना कि वह किसे मिले ? राजा का उत्तर कि "यह मूलदेव के पुत्र को मिले" पुनः मृतक का माग कर वृक्ष पर लटकना।

(१६) पृ० १८७—१९२ तक—चौदहवीं कथा—कल्य वृक्ष के वरदान से एक राजा का उत्तम पुत्र पाना, उसका बड़ा होकर विद्वान् सातवीं का वशोभूत करना, राजा (अपने पिता) के कथन से उनका अपराध क्षमा कर पिता सहित विरक्त बनवासी होना, वहाँ जाकर भी एक राजा की सुदरी कन्या से उसका विवाह होना, मृमत्त हुए उन सर्पों की हड्डियाँ देखना जो गण्ड द्वारा भक्षण किये जा चुके थे, उस दिन शंखचूड़ को बाँधे जाने पर स्वयं गण्ड का मुख बन जाना, इस पर शंखचूड़ का गण्ड की भूल से सूँचत कर स्वयं उसका भक्षण बतलाना, गण्ड का प्रसन्न हो कर दोनों को छोड़ देना, और घर देना, राजा कुमार का सर्पों को जीवित कराना, इस पर वेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवादी है, राजा का साधारण उत्तर कि 'शंखचूड़' सुन कर मृतक का उसी डाल पर लग जाना।

(१७) पृ० २००—२०८ तक—पन्द्रवीं कथा, विजयपुर नगर के धर्मशाल नामक राजा के राज्य में रतनदत्त नामक एक वैश्य की अपनी लावण्यवती पुत्री 'उन्मादिनी' को राजा के लिये देने की प्रार्थना, राजा का उसके स्वर्ण शोलादि की परीक्षा के लिये ब्राह्मणों को भेजना, राजा के विषय वासना में फँसने तथा प्रजा के दुःख के मय से ब्राह्मणों को उसके लक्षण ठीक न बताना, राजा का वैश्य की प्रार्थना का सम्बोद्धाकार करना, वैश्य का उस कन्या को सेनापति को देना, देवात एक दिन उस कन्या को देख कर राजा का मोहित होना, और ब्राह्मणों का छल प्रगट होना, सेनापति का अपनी स्त्री राजा को देने का प्रस्ताव, राजा का धर्म मय से उसे सम्बोद्धाकार करना, और वियोग में मर जाना, सेनापति का यह देख कर उल्लूक होना, और उसकी स्त्री को सती हो जाना, इस पर वेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवान है ? "राजा" यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुँच जाना।

(१८) पृ० २०९—२१२ तक—सालहवीं कथा—ब्राह्मण के एक ज्वारी बालक का घर से निकल कर एक योगी के पास, उसको कृपा से एक यक्षिणी का पाकर उसे भोजन देकर भोग विलास कर पातङ्काल चला जाना विप्र बालक का मोह विवश हो जाना, योगी के मंत्र को जल तथा किरा से उसे जपना, यक्षिणी का न सनाना योगी के मंत्र जपने पर भी न सनाना। बैताल का राजा से पूछना कि वह स्त्री क्यों न आई। उत्तर पाते ही मृतक पुनः उसी ढाल पर चला गया।

(१९) पृ० २१३—२२२—तक—सत्रहवीं कथा—एक सेठ के मर जाने पर उसका संपूर्ण द्रव्य राजा द्वारा हरा जाना, सेठानी का अपने पुत्रो सहित जंगल को निकल जाना, वहाँ सज्जो लगे एक चोर का मरते समय अपना संपूर्ण द्रव्य देकर सेठ कन्या से विवाह करके मर जाना, संपूर्ण द्रव्य का उन दोनों द्वारा लाया जाना, ऋतुकाल में एक ब्राह्मण द्वारा सेठ कन्या को गर्भधारण करना, स्वप्न में एक दैवी पुरुष के कथानुसार द्रव्य सहित उस पुत्र का राजा के द्वार पर रख सनाना, बालक का गद्दी पर बैठ कर गया में पिंड दान करना, तीन करो का निकलना, बैताल का विक्रम से प्रश्न कि वह बालक किस के हाथ में पिंड दे राजा का उत्तर कि “चोर के हाथ में” यह सुनते ही मृतक का फिर उसी ढाल पर पहुँचना।

(२०) पृ० २२२—२२८ तक—अठारहवीं कथा—एक राजा का शिकार के लिये जाना, एक ऋषि कन्या से उसका विवाह होना, मार्ग में एक राक्षस का उस कन्या को मक्षण करने का विचार, सातवर्ष के एक बालक को बलि देने के लिये राजा को उद्यत करके रानों को न सनाना, मंत्रों की सम्मति से एक स्वर्ण का पुतला देकर एक ब्राह्मण का बालक खरीदा जाना, सातवें दिन बलि को तैयारी नृप के मारते समय बालक का हँसना, राजा का नीची निगाह डालना और राक्षस का दयावान होना, इसका कारण बैताल ने राजा से पूछा, उत्तर पाते ही मृतक शरीर पूर्वस्थान पर जा लटका।

(२१) पृ० २२९—२३३ तक—उन्नीसवीं कथा—एक ब्राह्मण के चार कुमारी पुत्रों का शिक्षा द्वारा सुधार होकर उनका बाहर जाकर विद्या सीखना, उस विद्या को परीक्षा के लिये एक का सब द्रव्यां इकट्ठी करना, दूसरे का चमड़ा लगा देना, तीसरे का पूरा रूप बना देना, चौथे का उसमें जान डाल देना, ध्रुवातुर सिंह का चारों को खा जाना, बैताल का पूछना कि कौन सब से पूर्व था। विक्रम का उत्तर “जान डालने वाला” सुन कर मृतक का पुनः अपने स्थान पर चला जाना।

(२२) पृ० २३४—२४० तक—बीसवीं कथा—एक सेठ कन्या का विष पर मोहित होना, जब तक सभी विष के यहाँ गई तब तक वियोग में उसका शरीर त्यागना । विष का यहाँ पहुँच कर वह देखने पर अपना शरीर त्याग देना, इतने में स्मशान में इनको जलता देख उसके पति का चिंता में कूद कर जल मरना, बैताल का राजा से प्रश्न कि कौन अधिक कामांध था “जल मरने वाला उसका पति” सुनकर मृतक का फिर उसी वृक्ष पर चला जाना ।

(२३) पृ० २४१—२४२ तक—इकोसवीं कथा—एक ब्राह्मण के तीन चतुर बालकों का बैताल द्वारा विक्रम से न्याय करना कि कौन अधिक चतुर है, एक ने भोजन में रक्त की बदबू बतला दी, दूसरे ने खो के मुख से बकरी के दूध का संबंध बतला दिया और तीसरे ने तुल की उत्तम परीक्षा की, राजा ने तीसरे को अधिक चतुर बताया, उत्तर सुनते ही मृतक का चला जाना ।

(२४) पृ० २४२—२६१ तक—बाईसवीं कथा—बोखल नामक व्यक्ति का नौकरी के लिये एक नृप के पास पहुँचना, राजा का उसे रख लेना, एक दिन किसी रातों हुई खो का शब्द सुन कर राजा का उसे भेजना, परीक्षा के लिये स्वयं उसके पीछे जाना, वहाँ जा कर राजकुमार का उस खो से बातलाप कर यह जानना कि वह राजलक्ष्मी है और राजा के मरने का दिवस जान कर रुदन कर रही है, प्रयत्न पूछना और अपने बालक की बलि देना, उसकी खो तथा स्वयं उसका बलि वेदी पर चढ़ जाना राजा का यह आचरण देख राजलक्ष्मी का सब को जोषित कर बर देना । बैताल का प्रश्न कि किसका कार्य अधिक सराहनीय है । ‘राजा का’ यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः भाग जाना ।

(२५) पृ० २६२—२६४ तक—तेईसवीं कथा—एक विप्र के पुत्र की प्रकाल मृत्यु हो जाना, उसके स्मशान में ले जाने पर एक योगी का उसे सुन्दर पा उसके शरीर में प्राण डालना, अपना शरीर छोड़ते समय रोना—बैताल का प्रश्न कि योगी क्यों रोया ? राजा का उत्तर कि शरीर के सम्बन्ध के स्मरण करके, वह सुन कर मृतक का फिर भाग जाना ।

(२६) पृ० २६४—२८० तक—चौबीसवीं कथा—एक राजा का तेरह विद्या सीख कर चौदहवीं चोरी को सीखने की इच्छा प्रगट करना परफरा को बुला कर उसके साथ जाना, दो और चोरों का मिलना, अपने अपने गुण प्रगट करना, परफरा का रत्न चुराना, दो चोरों का पकड़ा जाना, परफरा द्वारा उनका छुड़ाया जाना, उन चोरों में सब से अधिक गुणवान का हाल राजा से बैताल द्वारा पूछा जाना, उत्तर में सगुन वाले चोर को बड़ा सुन कर मृतक का पूर्वोक्त स्थान पर पहुँच जाना ।

(२७) वृ० २८०—२८७ तक पचीसवीं कथा—एक राजा का शत्रुपों द्वारा विनाश, उसकी रानी तथा पुत्री का वन में गमन, वहाँ पर एक राजा और राज-कुमार को प्रार्थना पर उनके साथ जाने उद्यत होना, पिता पुत्र में यह निश्चय हो जाना कि छोटी पैरवाली पुत्र को और बड़ी पैरवाली पिता को मिले, बड़े पैरवाली राजकन्या थी। कुछ दिन पश्चात् दोनों के पुत्र हुए, सब साथ साथ खेलते हैं। बैताल का प्रवृत्ता कि राजा और उनका कौन रिश्ता है। इस पर राजा का उत्तर न दे कर यह कहना कि अनेक रिश्ते हैं।

(२८) वृ० २८८—२९२ तक—उपसंहार—में बैताल द्वारा उस कुम्हार के बालक का सब समाचार जान कर उसी को सम्मति से उसका देवों को वलि दिया जाना, देवों का राजा को वर देना। कथा समाप्ति—लिखने का काल सम्वत् १८८५

No. 371(f). *Vaitala Pachhisi* by *Śambhūnātha Tripathī*. Substance—Country-made paper. Leaves—154. Size— $8\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines per page—36. Extent—2772 *Anuṣṭup* Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1869 or A. D. 1832. Place of deposit—Thakura Basanta Siraha, Village Uḍawa, Post Office Śāhamau, District Rāe Bareilly.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लषि शंख के उमड़त मोद शंखंड । कलख करि करियार बदन फेरत सुंढा दंड ॥ १ ॥ कवित्त । एक समै मिरि राज को नंदिनो चाह कहाइ कहै सरसोत । मासुर भाल दिये दल कोल को घामन सो छवि को छवि जोतें ॥ सो हठि लेवे को सुहि पसारो तहां गनतायक चाह घसोतें । चाहि कै चाप सो दारि मनौ हरे लेत मुचा अहि राज घसोतें ॥ २ ॥ राजवंस बखैन ॥ हरिगोता कुंद ॥ खुब धरज पल दल मलन जिन याचरन हटयुग के किए । सनमान दान कृपान जग विघान के जग अस लिए । द्विजराज कुल बन कुसुं कामुद दात पूरन ईंदु भो । निजवंश बारिज को गनै पुनि लोकचंद नरोरा भो । पुनि भयो घामंद कंट पृथ्वीचंद नृपता को तनै भुज जोर सो लुरि जंग में जयराज हू जो नहि गनै । पुनि भयो ताकै अजय चंद मरिद कुल दल जिन हने जग मगत जाके जस पजौ सुर घसुर मुनि गवत अनु मने ॥ ४ ॥

End—बचन प्रमान देविकै करे । डुबौ पृथ्वी नृप भोतर घरे ।

चापे बहुरि मित्र के पास , मक्षराज हिय सहित हुलास ॥ १०१

नमो पैम सहित परसे तुन पाइ , करो विनै बहु सोस नवाद ॥
 जो यह सोप मोहि नहि देतो , तो मोहि मारि राज बह लेतो ॥ १०२
 जो तुम मेरे भयो सहार , जिय सो क्यो सिद्धि मै पाई
 जीवन रहौ जमल में जो लौ , कृपा दास पर कोजै तो लौ ॥ १०३
 मुनिवचन देखहि यह रघ्यो , सुमन अनूप भूष पर वरघ्यो ।
 कहाँ चलल है कोजै राहु , बिजई होउ सदा महाराहु ॥ १०४
 जो तेरे अनहित को करै , बिना मोहु बह भानो मरै ।
 दिन दिन राहु तिहारो बडै , मुजसु दिसनि विदसनि तव बडै ॥ १०५
 लक्ष्मि तजै न तेरो धाम , पूरन रहै सदा मन काम ॥
 जीवत रहो भूप बहु काल , प कहि वचन गयो बेताल ॥ १०६

इति श्री मन्मद्वाराज कुमार श्री मद्राय रघुनाथ सिंघाशाय त्रिपाठी शंभु-
 नाथ कृते पंच विंशति कथायां बेताल पंच विंशति कथा समाप्त शुभमस्तु ॥२५॥
 मिति साषाढ सुदि ॥ १५ वार वृहस्पति । संवत् ॥ १८८९ ॥

No. 371(g). Vaishya Vanśavali by Śambhu Kavi of
 Kānthā, District Unāo. Substance—Country-made paper.
 Leaves—8. Size— $13\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extant
 —160 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of Manus-
 cript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Thakura
 Raghu Nātha Simha Saṅgarā, Kānthā, District Unāo.

Beginning—इति वंसावली वैस लिख्यते ॥ एक है रदन प्रज वदन विराजे
 जाके माथे जाके चन्द्र चान्दनी समाने को । पूजे लोकपाल दिगपाल सुरपाल सबै
 पड़ै बादि रिखा सुभवानो को । गुननको बधाने को सारदा महेश सेस पावे
 नहि अत संभु प्रकथ कहानी को । गुनन को नायक है बुद्धि सरसायक है
 चारिउ फलदायक सुत गिरिजा महारानी को ॥ १ ॥

मन्माद्यक की सुमिरि के निजमति के अनुसार । चारिउ लुग के नृपते को
 करौ वंश विस्तार ॥

कथन—महाप्रलय के अन्त रह्यो अवशिष्ट एक हरि । कोरादधि में साइ
 रघ्यो अति सुसक्य धरि ॥ हरि नामो में कमल एक जनम्यो अति प्रभुभूत । तहाँ
 चतुरानन प्रगट भय सुभ वेदन सो जूत ॥

सिद्धि करन को डुकुम तेहि दोन्हों दोन दयाल हरि ।

सत वरप तासु जीवन परम होत पलै जब लौ सुहरि ॥

End—बहुरि सालिवाहन भये रतो भानु के पुत्र ।
 जाके समदानो नृपति देखौ जान न कुत्र ॥
 ताके परगट जानिये अंगद राय देवान ।
 महाबली दुसमनन कीं जिन जोतो मैदान ॥
 तासु बंधु लाल साहि । सूरबंद में सराहि ॥
 जासुदान के विधान । कौन के सके बधान ॥
 अंगद राम देवान के हैं त्रय सो सुत चारि ।
 जेते तेज हमीर हैं लखु हिम्मत सिंह विचारि ॥

कवित्त—बरजोर मितानि सिंह हिन्दू सिंह उदात सिंह बली बखतावर सिंह जु सुतचार भये बैसे बरजोर खानि है । कहै कवि शंभु महाबली परताप बली भानु के समान मयो दूसरो मितानि ॥ हिंदुन को हद को रखैवा हिन्दू सिंह बड़ा देवे को दान जाके पड़ो पक वानि है । जाको जस काहे को उदात कवि गोत कर नाम है उदात सब गुननि को खानि है ॥ दोहा ॥ हिन्दू सिंह के परगट पुनि विमल भये सुत चारि । तिनके गुण बरनन करौ भिन्न कवित्त विचारि १ चन्द्रिका बकस २ गंगा सिंह ३ इन्द्रजीत ४ पादि बकस ॥ ताके भये बच्चकुमार नाम । जो है महाविक्रम तेज धाम ॥ लोन्है सबे सत्रु समूह जोतो । नाव सबे जाको कवि लोग कोतो ॥ ताके धोषकुमार पूरनमल, जगतपति राना परमल देव, मानिकचंद मलदेव, जसवर देव, राने होरिल देव ॥ कृपाल साहि सातन चन्द्र हिन्दूपति राजसाहि, परमलसाहि रुद्रसाहि, विक्रमसाहि, नृप संतोष कृष्णपति जगतराय केसो राय ॥

Subject—पृ० १—गणेश वंदना, सृष्टि उत्पत्ति, ब्रह्मा और कल्प संख्या, स्वर्गभुव—सतर्षपा जन्म, प्रियव्रत, भ्रुव पृथु जन्म बखैन । पृ० २—सूर्य वंश बखैन, सुयुज का कन्या होना गौरी के श्राप से । राम वंश बखैन । पृ० ३—सुत्रियों को ३६ कुरियों को उत्पत्ति तथा बखैन । अमरचंद को पर्गल राजा का कन्या देना, चिह्नों का राना बनाना । पृ० ४—अमरचंद को टायज में बैसवार मिलना । अमरपुर राजधानी बनाना । अमरचंद के पुत्र विक्रमचंद, उनके रन-जोत, उनके रायतास और उनके पुत्र सावन, उनकी बोरता बखैन, बादशाह के पुत्र से युद्ध करना कालिजर को राजधानी बनाना । पृ० ५—चौहान पुत्र को मारना, और बादशाह पुत्र को धायल करना, अमरचन्द्र और निर्मल-चंद भाई भाई थे, पर्गल को रानो को छुड़ाना राजपुर में चौहानों से । पृ० ६—चौहान व रामतास का युद्ध बखैन । सातना नरेश बैसवारे में तिलोकचंद हुए । उनके राना हरिहर देव हुए । उनके भाई पृथ्वीचंद थे । पृ० ७—हरिहरदेव के छोटे भाई ने राज लिया तब दिहौपति ने उन्हें बड़ा

इलाका दिया, उनके खेमकरन जिन के सकतासंह, बरिधान, अमान, जोगाजीत हुए; सकत सिंह के तीन पुत्र होमन देव, कद्रसाहि और आलमसाहि हुए। इन सब के ८ पुत्र हुए। रतिमान जेठे थे, इन्हीं में शालिवाहन रतमान के पुत्र हुए। पृ० ८—उनके संगदराय और लालसाहि हुए, संगदराय के ४ पुत्र हुए, हमोर सिंह, हिममत सिंह, हिन्दू सिंह व उद्देत सिंह थे। शंभू कवि के येही स्यान् पाव्य दाता थे।

No. 372. Kavitta by Sangama Lala of Terha. Substance—Foolscap paper. Leaves—3. Size— $7 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extant—48 Anushtup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Pandita Banī Bhushanaji, Rās Bareli.

Beginning—समै को जानै सोच काहू को न मानै मान नाहक हो ठानै तू अजानो भई जात है। संगम मनावैं सखी हित को सिखावैं सोख जा विन न भावै भान ताहो सो रिसात है। पोछे पक्षितैये टेक तेरो छूट जैहै घात ऐसो तू न पैहै भवै टेढ़ी तनी जात है। मोसों सतरात बिनकाज सोह बात प्यारी तू तो इतरात उतै रात बोतो जात है। १ सालनख स्याम ताह कंजा कल जिह्वा जौन पेचापांउ काडौ पांउ जलम मनोजिये। बाड़ी दुम बालबड़ी भाव कस भोंक-दार बस मटि खोरे पर नजर न कोजिये। संगम कहत टेढ़े दांत को दुरद दान देवे को पताल देतो दिल में न कोजिये ॥ राज सिरताज राजसिंह महाराज सुनौ ऐसे गजराज कविराज को न दोजिये ॥ २ दोजे दान दुरद दतोले दुमदार देखि दीहिन के दिलको उठावै हूक हारि है। मरदि यही को सोस गरद चढ़ावै सुंड नीर भरि लावै पौ हरावै हेरि वारि है। संगम कहत पावों ऐसे जो मतंग तो करज को गरज गुदारी डारों मारि है। मारि डारौ दिक्कली विपति बिदारी डारों फारि डारों फिकिर दबाइ डारौ दार है ॥ ३

End—कहत भुलानो मुख बैरिन का पानो जब जंग थहरानो है भुलानो घरि साज को। सोमित सो सानो भई अकह कहानो रन मानो पगलानो ठकुरानो जमराज को। सब जम जानो खाइ घरिन अघानो विष पानो सो बुझानो है जिठानो मनोगाज को। संगम बखानो शंभुरानो है रिसानो कैधौ कैधौ है छपानो राजसिंह महाराज को ॥ १२ वेदो भालबाल हैं विसाल तरु जाल वेदो वेदो हैं तमाल ख्याल और कछु हैं गयो। कायगो उदासो वज्रवासो मनहांसो भई जब ते विषासो घोस गांसो मारि कै नयो ॥ संगम अकूर कूर बैरो जन्म पोछले को कोन्हो ना कसूर कछु हाय हरिले गयो। सालो रहे सूल सो कुचालो अकूरवली बिना बनमाली यहां बालो अज डू गयो ॥ १४

Subject—रति विरक्त नायिका वर्णन १ कवित्त, राजा राजसिंह और
वज्रनाथ के गजराजों का वर्णन ५ कवित्त

वर्षा वर्णन	२ कवित्त
वसंत वर्णन	२ कवित्त
सिंहावलोकन	१ कवित्त
कुम्भा वर्णन	१ कवित्त
राजसिंह की तलवार का वर्णन	१ कवित्त
कल्याणस	१ कवित्त

No. 373(a). Satyā Prakāśa by Santa Baksha of Narahī, District Lucknow. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—10×6 inches. Lines per page—22. Extent—800 Anushtup Ślokaś. Complete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Date of Manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Parāgi Dāsa Murāu, Village Jādavapur, Post Office Varnāpur, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री सत गुरु साहब सहाय । अथ सत्य प्रकाश लिख्यते ।
प्रथम वंदना ॥ प्रथम आदि देव श्री गणेश जी स्वामी को जिनके सुमिरन से सब
काज लोक व परलोक के सिद्धि होते हैं । बहुत भांति विनय के साथ बारबार
दंडवत करि के उस पारमेश्वर परमेश्वर निरगुण व सगुण सख्य सर्वत्र व्यापक
भक्तवत्सल कृपासागर दयासिंधु दीनबंधु जन सहायक के चरण कमल की
वंदना करत हूँ तुम्हारी महिमा चमक प्रकाश है श्री ब्रह्मा जी चारो मुप से व
शेष जो और सारदा निरंतर वर्णन करते हैं और पार नहीं पाते सो मैं पतित
कामो भोगुन को पान बुझिहोन किस प्रकार कहि सकौं ॥ आपने गनिका
व अनामिल आदिक अनेकों पापियों को इस भवसागर से पार उतारा और
निजबाम दिया सो जानि परत है कि पतित तारन आप का स्वभाव है । सो हे
पतित तारन दोनद्वाल इस पापी को भवसिंधु से पार उतार कृपा करके इदय
में आस दोजिये ॥

End—दोहा—जगजीवन के पंच का जो कोई जानै होन । राजा होय कि
छत्रपती दिन दिन होय मलोन ॥ जगजीवनदास की निदा जो कोई करै चोराय ।
जीवत सुख पावै नहीं मरे मरक मां जाय ॥ जो सत्तनामो सतगुरु साहब के वाना
को निदा करते हैं यह महा रोनी व दरिद्री हो जाते हैं भक्तकाल उनके महा-

बौर मरक होता है सत्तनामो जेवों को नशा गोजा व भंग बर्फीम का प्रहस
 अनुचित है श्री मुख वाचि है । दोहा—गोजा भंग व पोस्ता संत लोग नहि खाहि
 जगजीवन दास सांची कहैं खाहि ता नरकहि जाहि ॥ समर्थ गिरिवर दास को
 बानो ॥ सत्तनाम के ग्रंथ में मांग खाइ जो कोइ जगजीवन गिरिवर कहैं ताको
 मुक्ति न होय ॥ सत्तनाम के ग्रंथ में खाइ जो गोजा भंग जगजीवन गिरिवर कहैं
 ताको मत हूँ भंग ॥ सत्तनामो को बैसन व कुंदर अवश्य वर्जित है श्रीसंत
 गिरिवर दास साहब ने कैया भी वर्जित किया है सो सत्तनामो को गुठ वचन
 परमान उचित है । गुरु का वचन न मानै जोई । अवश नरक तेहि प्राप्त होई ॥
 इति श्री सत्य प्रकाश समाप्तम् लिखा सतगुरु प्रसाद संवत् १९२१ जेठ मासे कृष्ण
 पक्षे द्वितीयायां श्री राम ।

Subject—इस ग्रंथ में गणेश जी, भगवान्, हनुमान् जी, शंकर, प्राप्ता
 वावा जगजीवन दास आदि की वंदना की गई है, पश्चात् वावा जगजीवन दास
 जी का जीवन चरित्र दिया है । चाप पहुंचे हुए महात्मा थे, भूत, भविष्यत,
 वर्तमान तीनों काल को जानते हैं, अपने मृत्युकाल में जलाली दास को बुलाकर
 शरीर का दाह कर्म मना किया इस पर कुछ लोग अपसन्न हुए और मरने के
 पश्चात् दाह का कार्य ठहरा, परंतु जलाली दास ने न माना तब सबने कहा कि
 भगवान् सच्चा है तो वावा जी फिर कहैं लोगों का विचार था कि वावा जी के
 मरे देर हो गई किस प्रकार कहेंगे । परंतु जिस समय जलाली दासने हाथ जोड़
 कर प्रार्थना की वावा जी उठ बैठे और कहा मेरा शरीर न जलाया जाय समाधि
 दो जावे तब सब को वावा जी का महत्व प्रगट हुआ और उनके कथनानुसार
 समाधि दी गई ।

No. 373(b). Kotawabandan by Santa Baksha Mahānta
 of Narahi (Lucknow). Substance—Country-made paper.
 Leaves—28. Size—14 × 5 inches. Lines per page—44. Ex-
 tent—1,144. Anushtup Ślokas. Appearance—New. Cha-
 racter—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1929 or
 A.D. 1872. Place of deposit—Parāgīdāsa Murān, Village
 Jadavapura, Post Office Baranapur, District Bahraich
 (Oudh).

Beginning—अथ कोटवा बंदन लिख्यते ॥ दोहा ॥ कोटवा बंदन ग्रंथ यह ।
 श्री सतगुरु खान । इन्द्र दवन जे भक्त हैं तिनके उर परमान ॥ प्रभु जग जीवन शुभ
 करौ भाये सतमत म्यान ॥ अति कोटवा की वंदना परगट करौ बचान ॥ कथा

भई सारंम तव जब प्रभु दाया कोन्ह । बैठा घट मो पाय के सत्त शब्द कहि दोन्ह ॥ तुम हो तो वानी कहत में कछु जानत नाहिं । गुन तो पकौ है नहीं सब प्रोगुन मोहि माहिं ॥ जब तुम्हारि कृपा भई कथा प्रगट भई सोह । आपहि तो सब कहत हैं और न दूजो कोइ ॥ जन्म लियो सरदहा में संतन के आधार । नाम कहायो जगजीवन जगनाथ सबतार ॥ चौ० ॥ प्रभु जगजीवन जगत पवारा । लियो सरदहा मा सबतारा ॥ गति तुम्हारि कोइ जान न पावै । जेहि जस कृपा सो तस कहि नावै ॥ पाइ सरदहा कोन्ह निवासा । जगजीवन जग विदित प्रकासा ॥ प्रभु जगजीवन नाम कहाय । सारंम सो सतनाम चलाये ३

End—छंद ॥ सरन में समरथ तुम्हारी और नाम न जानऊं ॥ कहत हो करजोरि साई दूसरो नहि जानऊं ॥ चरन परि मैं करत बिनती नाथ मोहि अप-नाइय । फिरत हू मैं भरम भूला कृपा कर के छुड़ाइय ॥ छोड़ि तुम तजि जाऊं कहंवां दृष्टि में आवै नहीं । चरन तुम्हरो तप्यो जब से और कछु भावै नहीं ॥ सर्व मैं तुम चहो व्यापक और दूजा कोई नहीं । जानि मोहिं का परत यहि विधि नाथ तुमहो सब कहों ॥ खिर रहों नहि भटकौ भरम के परदा फटै । करौ अंतर नाम सुमिरि तिमिरि पांखिन को छटै । दोनबंधु दयाल तुम सम नहि दूसर देखइ ॥ समरथ प्रभु जग जीवन साहब सत्त मन मह लेषइ ॥ दाहा ॥ बलिहारो गुरुचरन को जिन मोहिं दोन्हो नाम । तेहि सुमरीं चितलाई कै ये मन पाटी-याम ॥ चौ० ॥ संतों कथा सुनौं चितलाई । गुरु जग जीवन दियो लपाइ ॥ बैठि गयो आपहिं घट माहों कहत कीर्ति में जानत नाहों ॥ मोरि बुद्धि यामे कछु नाहों । आपुहिं बैठि कहे घट माहों ॥ जाऊं सदा चरनन बलिहारो । जिन यह कथा कह्यो अनुसारो ॥ इति श्री कोटवा बंदन सम्पूर्ण संवत् १९२९ वैशाख पुष्यमा बृहस्पति लिपतं संवत् १९८५ महत ।

Subject—इसमें बाबा जगजीवन दास और खान कोटवा की बंदना की गई है । कोटवा और बाबा जगजीवनदास की मर्मा मा का साथ ही साथ बंदन किया गया है ।

No. 374. Nakhshikhā by Saṁta Baksha Bandijana of Holapur. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8×5 inches. Lines per page—15. Extent—101 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaranga Bali Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargarha, District Bāra Bankī (Oudh).

Beginning—भृकुट वनेन ॥ मणि मानिक मेहित मौलि रख्यो अनुराग विराजि रख्यो यलपै । तेहि ऊपर मोतिन की कलंगी विचवीच कुसुम कलौ दलपै ॥ कवि संत कहै दिये दीपन लौ उपमा तिहुं लोकन की कलपै । रघुवीर के ऐसे किरोट लसै मानै भानु उदै उदयाचल पै ॥ वार वनेन ॥ भवतुल के तार सिवार से हैं उपमा लखि कै सरि कौन गनै । प्रति फारो बलाहक से दूरसे भरे सौरभताई सनेह सने ॥ कवि संत कहै सदकारे खबोले लजीले मनोभव देखि धनै । किलकै दुति मेचकताई धरे रघुवीर के केस सुवेस वने ॥ भाल वनेन ॥ जोत को पत्र लिख्यो है विरंचि किधौ लिख्यो देवल को प्रतिपाल है । जंघ घौ तंघ वसीकर मंत्र सु मोहै त्रिलोक हृदय सदा परिपाल है । संत कहै जन पालिवे हेत को देर न लाय दया करि हाल है । भागी भरो निसि घोस रहे शुभ श्री रघुवीर को भाल विसाल है ॥ भृकुटी वनेन ॥ मोहै सरासन कैधौ धरे जुग सुंदरता प्रति है अनिगारी । बैठि दुरे फणि की पवलो किधौ मकंत रेख लसै जुग न्यारी ॥ कैधौ प्रनेद के कंद को दैन को संतन सेा करिये हितकारी । काम को शोभा जुटो है किधौ भृकुटी है बनी रघुवीर तिहारी ॥ नेत्र वनेन ॥ गोल प्रमोल सुढोल कपल लों चंचल केर चुभे चित चैन हैं । लज्जि तरंग कुरंग दुरै वन मोन सेा टोन भये दिन रैन हैं ॥ सेा उपमा उपमेय बखानत संत कहै सुखमा वर ऐन हैं । कंजन खंजन गंजन हैं सदा शोभित श्री रघुवीर के नैन हैं । नाक वनेन ॥ निन्दित हैं शुक्र तुंड विलेकि के फूल तिली को दिली में उदासिका । चारु सुचारि विचारि पितामह मोद भरे मन कौन्हे हुलासिका ॥ सेा छवि देखि कहै कवि संतजु तेस सदा धरे ध्यान प्रकाशिका । रात्रत प्रानन प्रेवुज पै शुभ सुंदर श्री रघुवीर को नासिका ॥ कपोल वनेन ॥ पाणिपपाल के बाल भरे किधौ पत्र पुरेन के सुन्दर नाल हैं । सिद्धि मनोरथ हो कौ करै तुना तैलित्रे हेत के नेत्र फलेल है ॥ संत समान विचार करै केहि सेपुट सैन के प्रमोल है । प्रारसो हैं की सुवांशु को हैं किधौ श्री रघुवीर को गोल कपोल है ॥

End—नख वनेन—पातु सरोज पै कैधौ परै मकरंद के बुद के भांति मला के । सेने की लेखनो पै मुकताकनो साहत खोगुनो छार छला के ॥ संत कहै जमी जोति प्रखंड दिये जग में जैसे छंद कला के । पातो नखत्रन को दूरसे नख शोभित श्री रघुवीर लला के ॥ छाती वनेन ॥ कंचन नौल के पत्र किधौ वनमाल विराजि रह्यो बहु भांती । केसरि सौरि पिताम्बर राजित वत्र किधौ है परिद को धाती ॥ संत कहै फलदायक चारि की रिद्धि सौर सिद्धि की वृद्धि बढ़ाती । चीकनो चौरौ चरिचत चंदन वोर भरो रघुवीर को छाती ॥ जंघ वनेन ॥ प्रति पोन भरे कतघौत के दंड उदंडता चारि समाय रहे । करके सरके कर क्यो उपमा सुखदाय रहे ॥ वर बिक्रम उग्रत घोप लहे जुग जानु विसालता छाजि

रहे । मणि खंभ भज दुतिरेम लज रघुवीर को जेधै विराजि रहे ॥ चरण वखेन ॥
 तरनि तरन घर बरन वर घर बरन घरन भरे सुखमा उसोर के । करन हरन
 करुणा कपोल कोर चितै भरन भरन भौ हरन भय मोर के ॥ जाहिर तरनसम
 मंगल करन चारु आरन फले के ये उधारन अघोर के । दारिद दरन अघ शोध के
 हरन परिजात के करन सो चरन रघुवीर के ॥ शिख नख वखेन ॥ भुकुटी और
 लिलाट कपोलन कुँ सुख कोयन लोचन देखि मरे । चिबुका धरि प्रीव उरोजन पै
 पुनि नामो सरोवर में लहरै ॥ कवि संत कहै जुम अंघन में मोरवानि हिये विच
 ध्यान धरे ॥ रघुवीर पदांजुज से मुनिये मन मेरो मधुवंत गुंज करै ॥ २० ॥ सर्व
 संगतोरथ वखेन ॥ पदस्याम सरोज कलिंदी लसै सुखमा अतिहो सुख साजत है ।
 हिय मोतिन माल विसाल लरै लखि निमज्जा बेगहि साजत है ॥ कवि संत कहै
 अघरान को लालो गिरा अनुराग समाजत है । नखते सिख लौं रघुवीरहि के
 तन तोरथ राज विराजत है ॥ २१ ॥ कोरति वखेन ॥ नारद पारद सो दूरसे प्री
 मुवाकर सो लसै चन्दर चूरसो । विष्णु सो कंठु कमोदनि का शशि चौवर से
 जल गंग को धूरि सो ॥ संत कहै सित भोंडर सो नखतावालि सो गजदंत के तूरसो
 कोरति श्री रघुवीर को राजति कुंदकलो करका कर्पूसो ॥ २२ ॥ वेनो लखे
 तिरवेनो लजे मुख देखि छपा कर छोम कलो के । गोल कपोल तिलोकि
 कै आरसो लोचन लोल सरोज दलोंके ॥ संत कहै सारे दंतन को सखो निदित
 दाड़िम कुंदकलो के । मोह मई तम क्या न भिटे मन ध्यान धरे मिथिलेश
 ललो के ॥ २३ ॥ कैधो कौल पागुरो पै रवि को किरानि प्रात कैधो इन्द्र
 बधू काम करत निहोरों के । कैधो गुंज विम्बा फल बन्धु जीव लालो कैधो
 दाड़िम कुसुम्भ रंग भई मति भारो के । कहै कवि संत कुरु वृंदत को कौन गन
 दूखक पतंग प्री गुलाल इति थोरों के ॥ जायक महोज पै ईगुन वरन ऐसे चरण
 विशाल राजे जनक किशोरों के ॥ २४ ॥ कास ते अधिक वक हास ते अधिक
 धन सार ते अधिक लसै मुकहार होर के । सोय ते अधिक चुन फेन ते अधिक
 गजदंत ते अधिक लघु लागे गंग नीर के ॥ दुग्ध ते अधिक वर बुद्धि ते अधिक
 सत्त्व गुण ते अधिक शक्ति रस धरि धोर के । छत्र ते अधिक प्री नख ते अधिक
 इन सब सो पनिच अस राजे रघुवीर के ॥ २५ ॥ इति—लेखक परमेश ।

Subject—(१) पृ० १—९ तक—रामचन्द्रजी का नखशिख वखेन । भुकुट,
 कोना, माल, भुकुटी, नेत्र, नाक, कपोल, श्रवण, अघर, दशन, मुख, मुज, अंगुरो,
 नख, क्कातो, जंघा, चरण वखेन ।

(२) पृ० ९-१० तक—सिखनख वखेन, सर्व संग तोरथ वखेन, कोरति वखेन ।

(३) पृ० ११-१२ तक—सीता जी का नख शिख, वेनो, पैर और रघुवीर
 का पदा वखेन ।

No. 375(a). Bānī or Sākhī by Saṁta Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size— $4\frac{1}{2} \times 3\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—18. Extent—630 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1852 or A.D. 1795. Place of deposit—Harvaṇsa Rāi, Village Tekāri, District Rāo Bareilly.

Beginning—राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम । पय स्वामी जी श्री संतदास जी को वगी सन में लायते ॥ पय गुर देव
को संग । सतुति ॥ सन में पद परकास के ॥ दाइक सत गुर राम ॥ सनत कोटि
जन साहिका ॥ साहि कं परनाम ॥ १ ॥

पंग ॥ सत गुरु का पेको सबद मनि कोरि लेवै मानि ।
तो सहज होत है संतदास मुसकलि सँ घासानि ॥ १ ॥
सतगुरु कीन्हो संतदास मुसकलि सँ घासानि ।
रामनाम की हो रही रंग रंग निज ध्यान ॥ २ ॥
संतदास तिहुलोक में पेह सिरोमणि संत ।
पूरबजनम का वोछड़ा सोही मिलाया कंत ॥ ३ ॥
सतगुरु मेल मिलाइया ॥ सरित सबद का संग ।
पय छूटत नाहीं संतदास लगा करारो रंग ॥ ४ ॥
सत गुर हर परमारयो पसो देह बणाइ ।
घरीया मुलक छूराइ के पघर मुलक ले जाइ ॥ ५ ॥

End—निरगुण नाँव हिरदै धरै निरगुण पहरै भेष ।
संतदास वा संत सँ कहोपे आप चलेष ॥ २२ ॥
फकर तारै जगत कूँ निरगुण नाँव मिलाहि ।
सकर ले बूझै संतदास भो सिधि का दह माहि ॥ २३ ॥
चलो जात है गुरसुरो अपनै सज्ज सुभाइ ।
प्यासा होइया संतदास सो पोवेना घाइ ॥ २४ ॥
संत गुरसुरो राम जल कोई पोवे प्रीति लगाइ ।
तो भग्न करम को संतदास प्यास न उपजै ताहि ॥ २५ ॥
संत निवासो संतदास सब कूँ देत निवास ।
साँच झूठ निरगुण कीया झूठा होत उदास ॥ २६ ॥

इति स्वामी जी श्री संतदास जी को सापी संपूरण ॥

Subject—पृ० १ गुरु स्तुति- पृ० २-१४ गुरु महिमा पृ० १५। गुरु सामर्थ्य पृ० १६-३०, ईश्वर सुमिरन विधि और भेद पृ० ३१-३३ ईश्वर नामों का भेद, उनका निर्णय, और सर्वोपरिनाम बर्णन; पृ० ३४। जीव निर्णय, पृ० ३५-३६। ईश्वरनाम सुमिरन की सामर्थ्य—पृ० ३७, ईश्वरनाम की महिमा, पृ० ३८-५४। संतदास की चेतावनी मक्ति के लिये। पृ० ५५-५७ साधु की महिमा, लक्षण और साधु बसाधु निर्णय, समाप्ति।

No. 375(b). Sañtadāsa ki Bāni by Sañtadāsa of Sahipurai. Substance—Country-made paper. Leaves—2262. Size—5½ × 4 inches. Lines per page—13. Extent—29,406. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1830 or A.D. 1773. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Pañdita Deviduttaji Śarmā, Village Fatabapur, District Bārā Banī (Oudh).

Beginning—अथ स्वामी जो श्री संतदास जी की वाणी अणभै लिख्यते ॥ प्रथम गुरु देव की श्रंग लिख्यते ॥ स्तुति ॥ अणभै पद परकास के ॥ दाइक सत गुरु राम ॥ अनंत कोटि जन साहि की ॥ ताहि करु परनाम ॥ १ ॥ संग ॥ सत गुरु कारो का सबद मनि कोइ लेवै मानि ॥ तो सहज होत है संतदास ॥ मुसकिल सँ पासानि ॥ १ ॥ सत गुरु किन्ही संतदास ॥ मुसकिल सँ पासानि ॥ राम राम की होइ रहो ॥ रोम रोम रज ध्यान ॥ २ ॥ संतदास हम कुं कोया ॥ सत गुरु कभी सानि ॥ देह छटो छूटै नहीं ॥ परब्रह्म लू ध्यान ॥ ३ ॥ संतदास तिहुंलोक मैं ॥ रोह सरोमं निसैत ॥ पूरब जनम का बिछड़या ॥ सोही मिलाया कंत ॥ ४ ॥ सत गुरु मैं ला मिलाइया ॥ सुरति सबद का संग ॥ अब छूटत नांही संतदास ॥ लगा करारो रंग ॥ ५ ॥ सत गुरु बह परमारयो ॥ येसो देह बणाइ ॥ धरो या मुल कछु भाइ करि ॥ अवर मुलुक लेजाइ ॥ ६ ॥ चौरासो धरोया मुलक ॥ तामैं सुर नर रहे समाइ ॥ अघर मुलक है रोम नाम ॥ जहाँ जन पहुँचा जाइ ॥ ७ ॥ तीनलोक सँ पलध सुप ॥ लावन नांही कोइ ॥ सत गुरु लाधा संतदास ॥ ८ ॥ सत गुरु मिलोया संतदास कटो भरम की पासि ॥ पा सत गुरु बांछ ॥ चौरासो का संतदास ॥ मिटि गया आवंण जांण ॥ १० ॥ सत गुरु बांछा बब भारि ॥ सुषम प्रेम का सेल ॥ निज मन तो पाइल भया ॥ अवरहं मकता पेल ॥ ११ ॥

End—काम दुष कोथ दुष पावै ॥ लोम दुष कछु कहत न आवै ॥ माया मोह दुषो संसारा ॥ तातैं जागै राम पियारा ॥ ८६ ॥ माता नास पिता सुनि

भयौ ॥ वंस सोदर पापन गयौ । पुत्र कलित्र दुष सकल पसारा ॥ तारैं जागै राम
 पियारा ॥ ८७ ॥ परब परब हाथो छद घोरा ॥ भौमि भंभारन विमो घोरा ॥
 खांषि मूदि देपत ही बारा ॥ तारैं जागै राम पियारा ॥ ८८ ॥ करि उपदेस गयौ
 रिषतई ॥ राजा को मन प्रीति बढाई । डेरा छाड़ि गए वन वासा ॥ गुरु गोविंद
 से बाढी घासा ॥ ८९ ॥ मन ही मन राजा यूँ जानो ॥ क्रिपा करो है सारंग
 प्रांनो ॥ घनघासै गुरु मिलोवा चाई ॥ प्रेम प्रीति हरि सुँ ख्यौ लाई ॥ ९० ॥
 दुहा ॥ भाग बडेही पाइयौ साधन को सतसंग ॥ जन गोपाल जनटीस कौ तन मन
 लागै रंग ॥ ९१ ॥ इति श्री ग्रंथ जड़भगत संपूर्ण ॥ महाराजाधिराज पूरण
 ब्रह्म जी दया का सागर जी रामनिवास साहिपुरै विराजमान तोस भरो पुस्तक
 लपो कृते संवत् १८७० वर्षे मितौ भाद्रपद शुक्लपक्षे पुनि स्तिथौ ३ शनि
 वासरायां ॥ लिपि कृतं ब्राह्मण गुजर गौड़ दासानुदास चरणविंद को रज
 हप राम बाचै विचारै ज्वां सुँ राम राम ॥ संत गुलम तासकौ नाम ब्राह्मण
 तुलसी राम बांच वोचारै ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—स्तुति सत गुरु राम जी को, सत गुरु की
 महिमा का वर्णन, सत गुरु के दिये हुए ज्ञान के लाभ ॥

(२) पृ० १४—३१ तक—सुमिरण का घंम, माला जाप, राम नाम का
 महत्त्व, राम नाम निखैय, जीव निखैय, नाम को सामर्थ्य, साखी ।

(३) पृ० ३२—५६ तक—विनतो का घंम—स्तुति । साखी नाम में लगन
 का वर्णन । प्रेम प्रकाशः परिचय ।

(४) पृ० ५७—९९ तक—पतिव्रता वर्णन, व्यभिचारिणी वर्णन । टेक,
 विश्वास, साधु, साधु महिमा, साधु पारख, साधु परमार्थ, साधु संगति,
 विरक्तता, निवृत्ति, प्रवृत्ति, विचार, कुविचार, सार घसार, रस, पंथ वेहद,
 सजीवन, जीवित मृतक, हठयोग, घवगुणग्राही, भक्त द्रोही, मन मुपी, मत,
 उपदेश, जग्यासो, कादर, सरातण, सतो, गुरु शिष्य पारख, सोजना ।

(५) पृ० १००—१४२ तक—गुरु वे मुख, सगुख, विमुख, राम विमुख,
 काल, चेतावनी, बोहौ पारंभो, माया, कामो नर, वाचिक जानी, सांच, घम
 विश्वंस, भेष, चाणक्य ।

रेखता

(६) पृ० १४२—१४४ तक—रेखता । (७) पृ० १४४—१५० तक—ब्राह्म ध्यान,
 (८) पृ० १५१—१६७ तक—घम सोड़ । (९) १६८—१७२ तक—पद, पारतो,
 संतदास जी का निर्माणकाल सं० १८०६—घठारै सै पट वर्ष में संक भये निरकारो ॥

राम चरण जो को पाणो ।

(१०) पृ० १७३—११५ तक—निरंकार स्तुति, गुरुदेव का संग—गुरुदेव स्तुति, साक्षी, गुरु सामर्थ्य, स्मरण, विरह, ज्ञान विरह, छै, प्रेम—प्रकाश, प्रिय पहिचान, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, समर्थ ३१, विनती, विश्वास, वरकत, निवृत्ति, साधु, यसाधु, साधसंगत, कुसंगत, वेधकिल, विचार, वे विचार, निहिचै, जोवन, मृत संजोवन, सारग्राही, प्रवगुण ग्राही, यज्ञानी, राम विमुख, काल, चेतावनो, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु पारख, सिध पारख, गुरु सिध पारख, सम्मुख, वेमुख, गुरु विमुख, चितकपटो, देखा देखो, कांदर, सुरातल, टेक, देव प्रीति, कस्तुरिया हृन्, मन, सती, वेहद, मचि, निरपय, पंथ, रस, सुखी मारग, प्रसन्नम, उया, माया, कामोनर, जस्नां, रहनो, सइज, बौद्धो धारमो डोभोनर, चासावेजो, निद्रा, मुरको, निन्दा, सांच ।

चंद्रायण संग—(११) पृ० ३१६—३४० तक—चन्द्रायण स्मरण, नाम सामर्थ्य, चन्द्रायण वीनती, विरह, परिचय, साधन, साधु संगत—वरकति, गुरु पारख, सिधपारख, गुरु, गुरु वेमुख, सम्मुख, विमुख, मन मुपौ, यज्ञानी, काल, चेतावनो, सुरातल, विचार, सांच, तुष्णा ।

सवैया—(१२)—पृ० ३४१—३५१ तक—गुरुदेव संग, स्मरण, नाम महिमा, परिचय, विचार साधु, साधुसंगति, वरकत, विश्वास, तुष्णा, लोभोनर, यज्ञानी, काल चेतावनो, सम्मुख, विमुख, गुरु वेमुख, प्रवगुणग्राही, व्यभिचारो, व्यभिचारिणी, कायर सुरातल, कामोनर, सांच ।

भूलता—(१३) पृ० ३६०—३६८ तक—गुरुदेव संग, स्मरण, विचार, साध, साधसंगति, उपदेश, वरकत ।

(१४) (कवित्त) पृ० ३६९—४५१ तक—गुरुदेव संग, स्मरण, नाम सामर्थ्य, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, विनती, प्रविश्वास, तुष्णा, निरपय, निर्गुण उपासना, साधु यसाधु, साधुसंगति, कुसंगति, साधु पारक, साधु महिमा, वाचक ज्ञानो, लक्षक ज्ञानो, यज्ञानी, यज्ञ व वेध, काल, चेतावनो, मन, मनमूसा मनसुइ, काबर, सुरातल, उपदेश, जिज्ञासु, शिवनिष्णय, सिध पारख, टेक, निष्णय, विचार हठयोग, मक्ति महिमा, माया, कामोनर, रहनो, धरणा, सांचा, माला, सांच ।

(१५) कुंडलिया—पृ० ४५२—४९७ तक—गुरुदेव संग, गुरु परमारयो, लोभो गुरु, स्मरण, विनती परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, कायर, सुरातल, विश्वास, वे विश्वास, विश्वास निरपय, वरकत, निर्गुण उपासना, साध, साध पारख, सांच गति, साधसंगति, कुसंगति, प्रदया, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु सिध,

शिष्यपारख, गुरु विमुख, राम विमुख, सन्मुख विमुख, यज्ञानी, विचार, निषेध, विचार, बोधोन्मत्त, काल, चेतावनी, मन, हठयोग, माया, कामोन्मत्त, निर्दोष, सांच ।

रेखता (१६) पृ० ४१८—६१० तक—गुरुदेव को घेग, भेषचारो, सारण, प्रेमप्रकाश, परिचय, विचार, सुरातण, सारधाही, चेतावनी, घसाधु, कामोन्मत्त, सांच, भेष, चाणक ।

(१७) गुरु महिमा, नामप्रताप, शब्द प्रकाश, चेतावनी, मनसंहार ।

(१८) शब्द समाप्त पृ० ६११—६६६ तक—गुरु शिष्य गोप्यो, ठग को परीक्षा, जिंद परीक्षा, पंडित, समाधि, लक्ष्य—अलक्ष्य, साचलक्ष्य, बेजुगति, काफरबोच ।

गाने के पद

राग भैरव इत्यादि, गाने के भक्ति संबंधी पद, (१९) पृ० २६७—७३६ तक राग भैरव, रागललित, रागविभास, विलावल, जैजैवंतो, रागप्रासा, गौड़—ध्वनि इत्यादि सहित, वसंत, काको, आसावरो, कल्याण, कनक, कनका, राग बहान, मंगल, पंजाब, राग गिरनारी, राग सुवा, सारठ, भाह, जैतथी, धनाथी, राग केदारो, जोग धनाथी, चारतो ।

(२०) घणमै विलास । पृ० ७३७—७५२ तक—घणमै विलास ग्रंथ, गुरु शिष्य संवाद, संग महात्म, संग पारस, सतपुरुष, असत पुरुष, मुक्त जन परीक्षा, जिज्ञासा साधु लक्षण ।

(२१) सुखनिवास—पृ० ७६०—७८७ तक—ग्रंथ सुखनिवास, दातास्या, रचना, अभिमान, आया, मोह, सर्वज्ञ, उत्तम इत्यादि शब्दों को परिभाषाएं राम विमुख का निषेध, राम विमुख का लक्षण, अपारस, कपटो घोर कुबुद्धि ।

(२२) पृ० ७८८—८१३ तक—दादसमो प्रकरण, डरें क्या, जतन क्या, जाल क्या, दुखदाई, विहल काल कब आवेगा ? । वैराग्य बरकत ठोक क्या, अशुद्ध व्यवहार ।

(२३) पृ० ८१४—८३४ तक—सुरापण, जिज्ञासु, संशोध, आत्म प्रबोध, सुर कायर ।

(२४) पृ० ८३५—८५९ तक—ग्रंथ विश्वास बोध, आत्मशोध भवितव्य घोर विश्वास निरूपण ।

(२५) पृ० ८६०—८८६ तक—ग्रंथ जिज्ञासुबोध, आत्म प्रबोध, गुरु स्तुति घोर घंघ संख्या निरूपण ।

(२६) पृ० ८८७—९१६ तक—विभ्रामबोध, सुख संशोध, ग्रंथ संख्या निरूपण ।

(२७) पृ० ११७—१०७४ तक—राम रसायन ग्रंथ, गुरु शिष्य पारस्व निरूपण प्रानन्द प्रबोध सरण, स्मरण, ज्ञान धारण निरूपण, अकिल, धारक, लक्षित सकार स्पर्श प्रेम, अध्यात्म ज्ञान, भोग्य सकार, अकिल विचार, चंचल तात् सकार, विनति, सैनिकाज साख्या, ऐसा साख्या वाचिक तक सकार, असलाकी भाषा मुनी, कुदिशा, दोह भासै मिछै, सो भेष दरसन गति, रोम, तृष्ण, संतोष, मुतलब सकार, हंस्पात सकार, दया, उपदेश, चेतावनो हारवोत, अर्थात् माया मतलब हंस्पा छोम छंडन और उपदेश चेतावनो, काम छंडन तिमिसंग, सुरापण, गुरु महिमा और संख्या निरूपण । रामचरण की वाणी संपूर्ण ।

राम जनजी की वाणी ।

(२८) पृ० १०७४—११८४ तक—स्तुति, ज्ञान प्रबोध, प्रकाशबोध निरूपण, साधु लक्षण, साधु संग, गुरुशिष्य पारस्व भक्ति योग संग निरूपण, नाम महात्म्य वर्णन, वैराग्य विधि निरूपण, उत्तम भक्ति योग, अद्वैत ज्ञान, प्रलय निरूपण, गुरु, वर्तमान युग, धर्म, नाम और डढ़ता, कुसंग त्याग, निज वैराग्य, गुरु महिमा निरूपण, ज्ञान प्रबोध ग्रंथ संपूर्ण ।

(२९) पृ० ११८५—११९६ तक—ग्रंथ ध्यान वगोचो ।

(३०) पृ० ११९७—१२६४ तक—सुमिरण सिद्धान्त, गुरु ध्यान की परिभाषा, स्मरण भेद, समता, मनजेर, मन उपदेश, राम गुरु से बिनती, तीन गुणों से पार होने का साधन भक्ति, प्रीति, प्रणिभाव, उत्तम विचार, जगत प्रभाव चेतावनो, साधु लक्षण, उपदेश, जिज्ञासु गति, कुसंग, कुवधित सकार, फोफटक (करनी बिन कथन), गुरुकृपा, शिष्य दोनता, सुमिरण सिद्धान्त पूर्ण ।

(३१) पृ० १२६५—१८८८ तक—ग्रंथ श्रवण सार—स्तुति, गुरुदेव स्तुति, विचार माला, संत स्तुति (पहला विधान), गुरु मिलाप महिमा, गुरुदेव की विशेषता, एकादश का प्रसंग (दूसरा विधान) गुरु लक्षण निरूपण (तीसरा विधान) गुरु कसोटो, शिष्य शुद्धात्मा, गुरु सामर्थ्य, शिष्य अशुद्धता, कृतज्ञो, मनाचीन, शिष्य प्रतापीक, (चौथा विधान-शिष्य परीक्षा), सहकाम भक्ति निरूपण (पांचवा विधान) किसका किस रूप की भक्ति करना चाहिए (छठा विधान) । निर्गुण निजमूल भक्ति निरूपण (सातवा विधान) । नवधा भक्ति वर्णन श्रवण, कोर्ति स्मरण पादसेवन, अर्चन, वंदन, दासभाव, साथ्य भाव, नैवेद्य, आपा अर्पण किंवा उसका भेद (अठवा विधान) । विकार, सुमिरण नाम निरूपण, रामनाम की सर्वोच्चता, स्मरण टेक, पतिव्रत निरूपण (दशवा विधान) नाम महिमा निरूपण, (ग्यारहवा विधान) । सुमिरण नाम माहात्म्य निरूपण (बारहवा विधान) उत्तम भक्ति ज्ञान निरूपण (तेरहवा विधान) । बंध, मोक्ष, अशुभ वासना

निरूपण, (चौदहवां विधान) । जंग दुषण, वैराग्य निरूपण, (पंद्रहवां विधान) । यथाचोक वैराग्य, यज्ञगरी भववृत्ति निरूपण, (सोलहवां विधान) । सन्धास योग, शुद्ध वैराग्य निरूपण (सतरहवां विधान), लक्ष्य अलक्ष्य वैराग्य वेष निरूपण (अट्तरहवां विधान) । मेष कौं घाड़ में निष्ठा मांगने वालों की गति, कंदरज स्वरूप, निर्दिष्ट धन से उत्पन्न पन्द्रह घनघों का बण्ण (बीसवां विधान) । सतसंग महिमा निरूपण, साधु लक्षण निरूपण (इकौस व बाइसवां विधान) । सौत प्रसाध—महिमा निरूपण, जोब दया निरूपण, (तीसवां विधान) । अर्थमे कार्य, दास लक्षण (चौबोसवां विधान) राम विचार कुसंग त्याग निरूपण (पचौसवां विधान), कुसंग लक्षण निरूपण (छत्तीसवां विधान) परंयन परत्याग, जोग, कर्म-धर्म निरूपण (सत्ताइसवां विधान) । काम खंडन निरूपण (अट्ठाइसवां विधान) शील, सुधर्म निरूपण (उनतीसवां विधान) । माया खंडन सादा होम निरूपण (तीसवां विधान) । माया खंड तत् घतत निरूपण (इकत्तीसवां विधान), चेतावनी काल की गति, गृह कूप का बण्ण, (बत्तीसवां विधान) । मन प्रसंग (तेतीसवां विधान) । बाहरी भ्रम, भूमि भेद निरूपण (चातीसवां विधान), भ्रमभेद खंडन, मनसा तोर्य निरूपण (पेतीसवां विधान) । साधु महिमा निरूपण (छत्तीसवां विधान) । साधु पारख निरूपण (चातीसवां विधान) । लक्ष्य अलक्ष्य पंडित परीक्षा निरूपण (अड़तीसवां विधान) । योगी लक्ष्य, अष्टांग योग, विचार परीक्षा, ब्रह्म परीक्षा, शील परीक्षा, संतोष परीक्षा, निरवैर परीक्षा, संदेह परीक्षा, शून्य परीक्षा, समाधि, सिद्ध, अणिमादि के लक्षण, जोगी के गुण (उनतीसवां विधान—दर्शन लक्ष्य निरूपण) । राजा वृत्त निषेध, भूत खंडन, महंत का लक्षण, राम नाम महिमा (बालीसवां विधान) । निज वृत्त भेद (इकतीसवां विधान) । अर्चन सार ग्रंथ से पूरे ।

(३२) साधुवर दूल्हा राम जो के फुटकर शब्द ।

पृ० १८८२—१९७१ तक स्तुति (निरंजन स्तुति) गुरुदेव स्तुति, साखी गुरु देव का संग, स्मरण का संग, नाम महात्म्य, नाम सामर्थ्य, विनती जीवन का संग, सारग्राही का संग, विश्वास का संग, जन देह जीत का संग, साधु संगति का संग, कुसंगति का संग, जानी संग, अज्ञानी का संग, निर्वासन का संग, पतिव्रता का संग, व्यभिचारिणी का संग, सूरतल का संग, निष्ठय का संग, सती का संग, वेद का संग, प्रदो की संग, मृतक की संग, निर्पक्ष का संग, टेक का संग, रस घनरस का संग, एकल का संग, चंदराइन गुरु देव का संग, (गुरु देव का संग से पूरे) । स्मरण, चन्द्रायण विनती का संग जस कुजस का संग, विरह का संग, प्रेम प्रकाश, विचार, साथ, बरकर, पतिव्रता

व्यभिचारिणी, विश्वास, अविश्वास, संतोष, साध संगति, कुसंगति, असाध का भंग, दया का भंग, ज्ञानो, टेक, उपदेश, ग्रहंता, काल, चेतावनी, सांच, मरम विचित्रं, (सवैया गुरु देव का भंग) । स्मरण विनयी, सरसंग, वरकत, विश्वास का भंग, चेतावनी का भंग, काल का भंग, (भूलना) गुरु देव का भंग गुरु महिमा, स्मरण, नाम महिमा, प्रेम प्रकाश, वरकत, निवृत्ति-प्रवृत्ति, साधु महिमा, साधु साधो भूत का भंग, सत संगति का भंग, उपदेश का भंग, मन का भंग, चेतावनी का भंग, काल का भंग, अकलि का भंग, वे अकलि का भंग, दया अदया, फुटकर, मन हरण और कुंडलिया इत्यादि ।

(३३) पृ० १९७२—१९८६ तक—ग्रंथ राम पदति, गुरुवन्दना, गुरु की सेवा से समता, गुरु द्वारा ब्रह्मोपदेश वर्णन, रामनामोच्चार महिमा, शरीर की सजावट का वर्णन ।

(३४) पृ० १९८७—२०१९ तक—ब्रह्म समाधिज्ञान योग ।

(३५) पृ० २०२०—२०५३ तक—नवल सागर—स्तुति, उपदेश, गुरुदेव का उपयोग, कलयुग निरूपण, नाम का निश्चय, नाम का प्रताप, रामनाम में प्रीति, भक्ति, सार असार विचार, भजन का प्रभाव ।

(३६) पृ० २०५४—२१३६ तक—यथार्थ बोधः—वन्दना—जगन्नाथ की, रामचरण की महिमा, लोको अ्यौरा, विप्रलक्षण राजा लक्षण, आत्म कथा—अठारह सै सत्रह की सान, एक एकौ विकत हाल ॥ देव करण ताहां दरसन पायै ॥ सुनिजन बचन मोद मन पाये ॥ पाखंड निषेध, जराई मन गति, नारि लक्षण, काम गति, सम्पुष विमुष, प्रताइक, विश्वास, अदलि, भक्ति, आसिरे लोभ करै सो गति, व्यभिचारिणी, हित पदार्थ, नव संध्या का लक्ष्य, चेतावनी, निदक की चाल ।

(३७) पृ० २१३७—२१६७ तक—गोपाल कृत प्रहलाद चरित्र—हिरण्यकश्यप की सनकादि का भ्राप, उसके पापों से पृथ्वी का कण्ठित होना, सुर असुरों में वैर होना, हिरण्यकश्यप का तपस्या को जाना, इन्द्र को उसकी स्त्री का हर लेना, नारद का आदेश, इन्द्र का कथन कि इसके गर्भ के बालक का वध किया जायगा, इसका नहीं । इस पर नारद का कथन को इसके गर्भ में भक्त है, ऐसा मत करो, इस पर इन्द्र का अविश्वास, नारद का उपदेश, साधु लक्षण, इन्द्र को उसकी स्त्री को नारद के शान में रखना, नारद को उसे उपदेश सुनाना । वच्चे को प्रभाव, हिरण्यकश्यप का वरदान लेकर घर लौटना, उसकी स्त्री का भी आगमन, प्रहलाद जन्म, पिता द्वारा उसका पढ़ने की भेजना, उसका भक्ति को धार मन होना, पिता का कोप, भक्त को नाना प्रकार के कष्ट, नरसिंह अवतार, प्रहलाद का भक्ति बर मानना, नरसिंह का तथास्तु कथन ।

(३८) पृ० २१६८—२१९९ तक—जगन्नाथ कृत मोहोमरद राजा की कथा—नारद का सम, परमात्मा द्वारा उसका निवारण, मोहोमरद नृप की कथा सुनना, साधुओं की बड़ाई, ईश्वर द्वारा स्वयं साधुओं का ध्यान करने का कथन, नारद का मोहोमरद नृप के दर्शन के लिये गमन, नारद के वहाँ पहुँचने पर मुनि का योगमाया उत्पन्न करना, और उसके मोहजित होने की परीक्षा, नारद का परिचय लेना और नृप के पुत्र का मृतक होना, दासों का उपस्थित होकर राजा के पास चलने की प्रार्थना, इस पर मुनि का उनके घर में शोक बताना, दासों द्वारा उसका बंधन, पुनः राजा का मुनि के पास घाना और चलने की प्रार्थना और मोह बंधन के विषय में कुछ उदाहरण उपस्थित करना, मुनि का नृप के पास घाना और पुत्र शोक के कथन में उदाहरण उपस्थित करना, राजा का मोह बंधन करना, सत्यादिक नृप की कथा सुनाना, चार भाष्यों की कथा सुनाना, दो कुत्तों की कथा, एक कुम्भकार के पुत्र की कथाओं द्वारा पुत्र कल-बादि का मोह बंधन, नारद की वृत्ति, नारद का उस लड़के की स्त्री के पास जाना, उनका शिष्टाचार, नारद का उसके पति के मृतक होने का प्रसंग छेड़ना, उसका ज्ञान कथन और सोतादि के उदाहरण देकर कर्म की प्रधानता बतलाना, नारद का नृप की वंदना करना और ईश्वर के पास आकर उनको स्तुति करना ।

(३९) पृ० २२००—२२०८ तक—राम सागर ग्रंथ, नैमिषारण्यक तीर्थ में सैनिक का सब मुनियों से प्रश्न करना कि कौन हरि कैसे मिलते हैं ? सब का चुप रहना, नारद आगमन, सैनिक का नारद से भी वही प्रश्न करना, मुनि का शिव जो द्वारा सुना हुआ राम नाम का महत्त्व बताना, जो शिव जी ने कभी पारवती को सुनाया था ।

(४०) पृ० २२०९—२२२० तक—कृष्ण उद्धव संवाद—कृष्ण का कथन कि श्राप के अनुसार यदुकुल का विनाश होना है, मैं भूमि के भार को उतारदी चुका घतः मैं भी घेतर्धान होऊँगा, तुम मोह मदादिक को त्याग ईश्वर भजन में संलग्न रहना, उद्धव का कथन कि महाराज यह मोहजाल क्योंकर छूट होगा ? इस पर कृष्ण का दत्तात्रेय और यदु का संवाद सुनाना, यदु का प्रश्न कि महाराज आप में इतना ज्ञान कैसे उत्पन्न हो गया, सबधृत का उत्तर कि मेरे बहुत से गुरु हैं—कमथः गुरुओं के २४ नामों को लेकर प्रथम पाठ की कथा सुनाकर उनसे गुण ग्रहण करने का कथन (घरनों, पवन, गमन, पानी, घनल, चंद, रवि, कपोत) ।

(४१) पृ० २२२०—२२२७ तक—मुकर, कुक, चञ्जगर, सामर, मधुकर, हस्तो, मधुमावो, मधुहरा, पिंगला (वैश्या) सत्रह गुरुओं की कथा ।

(४१) पृ० २२२८—२२३२ तक—कहर पंखो, बालक, साँप, सरो, मकड़ी भुँगी कोट, चौबोस गुहियों को कथा सुना कर शरीर का नश्वर सिद्ध कर परमात्मा में स्नेह लगाने का वचन ।

(४२) पृ० २२३३—पृ० २२४६ तक—मिथुक गीता कथन—भानुमत के आधार पर—एक ब्राह्मण का विरक्त होकर के मिथुक होना, लोगों का उसे संत करना और उसका ज्ञानोपदेश ।

(४४) पृ० २२४७—२२५३ तक—दोलव नीतव व्याख्यान । इन्द्र का उरवसों के विरह में दुःखित होना, फिर अपने प्रज्ञान पर मोहित होकर ज्ञान व्यक्त होना ।

(४५) पृ० २२५४—२२६२ तक—जड़भरत की गाथा—राजा भरत को विरक्त होकर वन में चला जाना । वहाँ पर एक हिरण-शायक के साथ दया के संसर्ग से शरीर छोड़ कर मृग हो जाना, पश्चात् मृग शरीर के त्यागने पर एक ब्राह्मण के यहाँ जन्म लेना, पिता के पहाने ज़िन्दागै पर न पहना, उनका नाम जड़ भरत पड़ना, भरत का देवी की बलि दिया जाना, देवी द्वारा भरत की स्तुति और बलि को न ग्रहण करना, एक राजा का मोह दूर कर भरत का उसे ज्ञान देना ग्रंथ की समाप्ति ।

No. 376. *Sarasadāsaji kī Bānī* by *Sarasadāsa* of *Vṛindāvana*. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—386 *Anuṣṭup Śloka*s. Appearance—Old. Character—Nagari. Place of deposit—*Babū Śyāma Kumara Nigama, Rāe Bareilly*.

Beginning—श्री कुंज बिहारो जो । यद्य सरस दास जो को बानी लिख्यते ॥ कवित ॥ रसिक सिरमौर श्री हरिदास स्वामी ॥ विविधि वर माधुरो सिधु में मयन मन वसत हृंदा विपुन वर सुबामो ॥ महल निजु टहल में महल पावै न कौऊ छत्र पतिरंक जिते करमकामो ॥ रसिक रस रोति को रोति सों प्रीति निति नैन रसना रसत नामनामो ॥ इदै कमल मयि सुख सेज राजतं दौऊ ॥ रसिक सिरमौर श्री हरिदास स्वामी ॥ १ ॥

अनन्य मति धनि श्री हरिदास स्वामी ॥

जमुन कलकूल कलकेलि कलकल्प तर तौर छवि मोर वसैं वर विधामो ॥ मंजु नव कुंज सुष पुंज गुंजै सुनत सरस यनुराग गुनराग धामो ॥ पक्षि लक्षि कक्षिने पक्षिलक्ष्म सुलक्ष निरपि निरपेक्ष जता लजित नामो ॥ नेन पुवरोति ऊपर सुष सेज कोइत दौऊ ॥ अनन्य मति श्री हरिदास स्वामी ॥

End—मदन दवंज सुष पुत्र गुंज प्रति हंजन वेत्र बख्यो सुषदाई । भूषन
वसन व्यसन स्याई प्यारे मिलि करत केति मन भाई ॥ संग संग सौ संग रंग
रुचि उपजति मानौ सुरंग सोइनो दुरंग उठारै ॥ करत विहार विहारो विहारति
सरसदासि तेवत मुस स्याई ॥ ३७ ॥ विमल पुलिनि मेडल मधि राजत नागरी
किशोर मोर मुकुट भूषन द्रुति काछनो बनाई ॥ नृतत रास रंग मरे उरपति रज
सुलप छेन ताल संचित लाग डाट प्रति गति मन भाई ॥ अपने पयने रंग नावति
मिलिधत तान तरंग बह सुबख्यो सनमुष सुष भूकुटो नैन नचाई ॥ करन सो कर
जोरत हंसि हंसि रोभि उर लागे लटकत तन मन मगन सरस दासिनि सुषदाई ॥ ३८

भूलें कुल डोल देऊ फूल मरे ।

फूल बसन फूल पाभूषन हंसनि दसन ये फूल मरे ।

फूलयो फूल मनोज मोज रति कसि कसि संगन सोज करे ॥

चलिगुन गावै फूल बहावै रोभि भोज सरस रोहि डरे ॥ ३९ ॥

इति श्री सरसदास जो को बानो रस को संपूरन ॥

Subject.—१—हरिदास जो के प्रति बंदना ।

२—नागरीदास प्रति भक्ति बखैन ।

३—श्रीकृष्ण के भक्ति विषय के स्फुट पद ।

४—सिद्धांत के कवित्त ।

५—७—श्रीकृष्ण के कामल भाव परम उज्ज्वल भृंगार का बखैन ।

८—श्रीराधाकृष्ण का विलास बखैन ।

No. 377. Virahasāgara by Bābā Sarajudāsa of Kotawā (Bārā Bānki). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8×6 inches. Lines per page—20. Extent—125 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1938 or A. D. 1881. Place of deposit—Paragidāsa, Village Jadawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—चैसे मन नामो सुनै सतनामो चंतरजामी सत साई ॥ सय
मुनलायक रुचि फलदायक प्रगट जव तारै ॥ बहु बालक साथे महिरज हाथे
लावत माथे बंधि छोरा ॥ पायन पैजनिषो पहिरे चौठनियां सोहत करधनियां
कूत छोरा ॥ सतगुरु संगनारै बैठे बकडाई पेलत साई रंग नीला ॥ मचल पसारो
तकि महतारो सुनौ नानारी करि लोला ॥ बालक चविमति रूप किरति अनूपा
प्रध हरना ॥ प्रभु कीरति पावन सत मन भावन जब कसुय नसावन है तारन

तरना ॥ हरिजन कारन असुर संघारन पतित उवाचन सत सामो ॥ संतन प्रमि-
लाषत कोरति भाषत जन प्रन राषत निहकामो ॥ सब बालक संग चढे तुरंगा
फिरत उमंगा कर कोड़ा ॥ जेहि दुषिया जानत सरनै जानत तेहि सनमानत दै
घोड़ा ॥ करै प्रतिपाला बकसि हुसाला दोनदयाला छिन मादौ ॥ भजि नाम
रसाला भै मतवाला नैन कराला कछु भै नादौ ॥

End—दोहा ॥ रावै जिव जंतु पंखी पसु संवरि संवरि गुनगाथ । पापु
समान्यो सुन्य मा मोहि करि गयो सनाथ ॥ सोरठा ॥ सो मंडफ बरबाद दीन्ह
छोटानो दास तब । चरन कमल मन लाइ हिरदे मा विस्वास करि ॥ बोटक
ऊंद ॥ संतन को दाया तब कहि गाया यह घरजी । सुनो नर नारी कहैउं प्रकारो
ले मरजी ॥ भक्तन पर दाया किहो रहै छाया यस परतापो रहे साई । भै कृपा
निधाना खतर ध्याना सबहुं हरै तन सब भाई ॥ वह देखि समाधी तरै अपराधी
तजि मोहमदा ॥ वझ दोषो धाये तरसन पाये तरे तुरत रहे पाप लदा ॥ जे
करि कामन धावै ते तुरतै फल पावै अस परतछ समाधी ॥ जे जगत भुलाने ते
चाइ तुलाने कटिगै तेहि भव ग्याधी ॥ दोहा ॥ सबहुं तबहुं किरपा किहिनि
ऐसे कृपा निधान । सरजू का यह दीजिये गुप्त भजे धरि ध्यान ॥ दोहा ॥ इन्द्रबन
गुर साहेब मये प्रगट जगत धरि देहं । प्रभु सनमानि लघु तात तेहि टौजे नाम
सनेह ॥ चौ० कोटवा घाम सत गुर मन भावन । अवर न टट बट कांह सुधावन ॥
कूप कुटो घन विटप सोहाये । मेला हाट देखि मन भाए । मंडप दरस पुरि
अमिलाषा । पक्षिम द्वार बैठि तहं भाषा ॥ इति श्री विरह सागर बानो सरजू
दास को संपूर्ण सुममस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ११ श्री संवत १९३८ जो
प्रति देषा सो लिषा लेपक परमानंद कवि बसत सरैयां ग्राम । जो प्रति देषा सो
लिषा सिद्ध करै श्री राम ॥ राम राम राम—

Subject—इस पुस्तक में बाबा जसकरन दास का मृत्यु काल बर्नन है ।
इसमें उनके गुणों का स्मरण करके विरह प्रगट किया गया है ।

No. 378. Mahābhārata Aswamedha Parva (Jaimini-
purāṇa) by Saraju Rāma of Awadh. Substance—Country-
made paper. Leaves—306. Size—12½ × 5½ inches. Lines per
page—14. Extent—8,085 Anuṣṭupa Ślokas. Appearance—
Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat
1805 or A. D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1885 or
A. D. 1828. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārīji Miśra,
Golāgañja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ संतर्ज्जलो लसति वारिदं रम्य गार्भं, विद्युत
प्रभावर बिभृषितमम्बुजाक्षं । कंदर्पं कोटि सुमगं व्रज सुंदरीणां, नेत्रोत्सवं मज्जतु
नंदकिशोरमोक्षा ॥ १ ॥ मज्जै मुनो पमतिभिर्मुनिमिविचित्रं, माषान मद्भुत
तरंग दितंजपूर्वं तज्जापया स(युराम पसिद्धिनामा, धर्मोस्वमेध मिहरम्यतमं तनोति
॥ २ ॥ सारठा—गुण गन ज्ञान निधान मंगल मय सुखमा सदन । कलि विष तुन
कृसानु एक रदन करिवर वदन ॥ ३ ॥ जाहि अमंगल मूल सुमिरत नश्यति गौरि
सुत । जरहि प्याल जिमि तुल विघन प्यावि संकट सकल ॥ ४ ॥ छंद—नमो
गौरिजा ज्ञान रूपं गनेसं । तमो मोह मज्जान नासं दिनेसं ॥ नमो धूपकेतुं गनेसैक
दंतं । नमो विघ्न छेदं धरे परसु हस्तं ॥ नमो बुध्यकांतं नमो गौरि पुत्रं । नमो
निर्विकारं नमो चारु वक्त्रं ॥ नमो बुध्य बुध्यं नमो संत रूपं । नमो ज्ञान गोपार
सिध्यं सूर्यं ॥ मजेहं नगेशं गुणं ज्ञान गेहं । नवोनार्थं वर्णं सुभं सुख देहं ॥ करि-
न्दाननं सोभितं रन्तु भालं । चतुर्बाहु कंठं चलं चारु मालं ॥

End—छंद—सुख पाइहै सुनि सुनत श्रोता जिन्है प्रिय हरि जस पहो ।
परसिद्ध जैमुनि को कथा पति कूर कविता को कहो ॥ वन बुद्धि विद्या हीन
हनि मति भज भोगुन मय महा । श्रीगुरु कृपा यह चरित कछु निमित्त सो
नियमित कर कहा ॥ दोहा—विशिष्य थोम वसु बुध्य सुकुल पटमो फान ।
पुरण भद श्रीगुरु कृपा कथा सुधिष्टिर राज ॥ (निर्माणकाल सं० १८०५ वि०) ।
इति श्रीमहामारथ पुराणे अथर्वमेवि पूर्वं सुत सैनिक संवादे जैमुनि पुराणे ज्ञान
कृपा राजा सुधिष्टिर समाप्तं षट् त्रिंशतमोऽध्यायः ॥ दोहा—वन रिपु ता रिपु
तासु रिपु तारिपु रिपु यसवार । सो तैरो रक्षा करै घरो घरो सब बार ॥ मिर्द
पुस्तकं लिख्यतं ललितादीन पाण्डे स्वयं सेवत १८८५ वि० भाद्रमासे कृष्ण पक्षे
पार्वणि त्रिपेदास्वां चंद्रवासरे शुभम् ॥ तैलं रसं जलं रसं रसं शिखिल बंधनम् ।
मूर्धं हस्ते न दातव्यं मेते वदति पुस्तकम् ॥ राम राम राम ॥ इति ॥

Subject—पृ० १-५ तक प्रार्थना, मंगलाचरण, विष्णु, गणेश, देवी,
शिवचन्दना, वाणो, गुरु स्तुति वर्णन । पृ० ६-११ तक भोष्प, सुधिष्टिर और
व्यास संवाद, सुधिष्टिर का वैराग्य होना, और व्यास का समाधान करना तथा
उसके लिये विधि बतलाना । पृ० १२-१९ तक यज्ञ मंत्रणा करना कृष्ण आदि मिल
कर पृ० २०-३१ तक । भोम और अर्जुन का धन और घोड़े के लिये यात्रा करना,
जोवनास से मैत्री होना और घोड़ा लाना । पृ० ३२-३८ तक । यज्ञ को तय्यारो
होना, जोवनास सम्मिलन और हस्तिनापुर पाना । पृ० ३९-४३ तक । भोमसेन का
झारका जाना और श्रीकृष्ण जी के साथ देवको यशोदादि को लाना । पृ० ४८-
५७ तक अनुसाल का पहर्यंत्र रच कर युद्ध करने का प्रयत्न करना, और घोड़ा

सुराता, घोर युद्ध होना, वृषकेतु का अनुसाल को पकड़ना । पृ० ५८—६३ तक घोड़ा छोड़ना, अर्जुन, अनुसाल, जोचनाथ, वृषकेतु पादि का साथ होना पृ० ६३—७० तक मदरा के राजा नीलवज्र के यहाँ जाना और उसका घोड़ा पकड़ना नीलवज्र का युद्ध वधेन, अर्जुन का प्रसिद्धि को स्तुति करना, घनन का नीलवज्र को कन्या से विवाह वधेन पृ० ७१—७३ तक । नीलवज्र का युद्ध वधेन वसुवाहन को कथा । पृ० ७४—७८ तक । एक स्त्री को भूमिरी का भोजन शूकर को देने से श्रापवश पत्थर हो जाना और प्रार्थना पर अर्जुन के पद छू कर तरने का वरदान देना, शिला से घोड़े का चिरकना, अर्जुन का छुड़ाना—पृ० ७९—८७ तक—घोड़ा का हंसवज्र के यहाँ पहुँचना, सुघन्वा के सत्य को परीक्षा तत् कड़ाही में कूदना, द्वित्रों का समाधान होना पृ० ८७—१०० तक—सुघन्वा पांडव सेवाम वधेन, वध होना । पृ० १००—१०७ तक । मुख्य पांडव युद्ध वधेनम् व वध होना, पृ० १०७—११० तक । एक सरोवर पर जा कर घोड़े का सिद्ध होना, अर्जुन को प्रार्थना पर फिर घोड़ा बन जाना वधेन पृ० ११०—११४ तक । प्रमिला का घोड़ा पकड़ना, उसका युद्ध को प्रस्तुत होना, अर्जुन के द्वार को पतिव्रा पर घोड़ा छोड़ना, पृ० ११४—१२० तक वेगन राक्षस से युद्ध व वध वधेन और माया का नाश करना—पृ० १२०—१३६ तक—घोड़े का मणिपुर में जाना अर्जुन का पुत्र वसुवाहन राजा था, चित्रांगदा मा थी, वसुवाहन का युद्ध वृषकेतु प्रद्युम्न पादि को युद्ध में हारना, अंत में अर्जुन का पुत्र मानना और वसुवाहन का अपमान जो अर्जुन ने किया भूल जाना, पृ० १३७—१४० तक । लवकुश कथा वधेन । पृ० १४१—१४८ तक जानकी वन गमन वधेन । पृ० १४९—१५९ तक । लवकुश जन्म कथा वधेन व विद्याध्ययन शिक्षा वधेन । पृ० १६०—१७३ तक लवकुश का पश्व पकड़ना और शत्रु से युद्ध होना पृ० १७४—१८६ तक । लवकुश का लक्ष्मण, सुघोष संगद विमोचन सब से युद्ध वधेन । पृ० १८७—२०० तक लवकुश का भरत से युद्ध वधेन । पृ० २०१—२१४ तक । लवकुश सीता का राम से मिलना, सब का जो उटना और सीता जी का अयोध्या में कुमारोंसहित जाना, पृ० २१४—२२४ तक । अर्जुन और वसुवाहन का युद्ध होना तथा अर्जुन का वध वधेन । पृ० २२४—२३३ तक—चित्रांगदा का दुःखित होना और पाताल से समुत् लाने की कहना, वसुवाहन का जाना और नोगी से युद्ध होना—पृ० २३४—२४० तक । शिर का लो जाना, वसुवाहन का सतीवन रत्न लेकर जाना कृष्ण का कुंती, भीम पादि समेत जाना, अंत में दुःखित हो वसुवाहन ने धपना शिर दे दिया तब श्रीकृष्ण ने सब को जोवित कर दिया । पृ० २४०—२४७ तक । तापवज्र का घोड़ा पकड़ना, मयूरवज्र का सेना सहायार्थ भोजना व अर्जुन का मूर्छित होना । पृ० २४८—२६० तक कृष्ण जी का विष भेष से मौरवज्र की

परीक्षा करना और वरदान देना और सत्कार पाना—पृ० २६१—२६७ तक । चंदेरी के चन्द्रहास राजा के यहाँ जाना, घोड़े का तैर जाना, सेना का पीछे रह जाना, घर्जुन को नारड का मिलना, नायक का चन्द्रहास की कथा कहना और कुलिंद के यहाँ कुमार का पाना—पृ० २६७—२७६ तक । चन्द्रहास की वीरता व उदारता का वर्णन । पृ० २७७—२८२ तक । चन्द्रहास की कथा व इतिहास तथा तप वर्णन पृ० २९०—२९४ तक । घोड़ा का जयद्रथ के पुत्र के देश में जाना, घर्जुन का नाम सुनकर मर जाना, और कृष्ण का जिलाना वगदालभ्य का सम्मिलन वर्णन—पृ० २९५—३०३ तक—प्रथमेय वज्र में राजाघोष का पाना और मानन्द पूर्ण होना । पृ० ३०४—३०८ तक । वकदालभ्य को दान देना, सब को धिदा करना, युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना—विप्री को दान देना—

No. 379 (a). Kavitta Ratnākara by Senāpāti. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—10 × 7 inches. Lines per page—72. Extent—1,674 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1706 or A. D. 1649. Date of Manuscript—Samvat 1884 or A. D. 1827. Place of deposit—

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कवित्त रत्नाकर लिख्यते ॥ परम जेति जाको अनंत रहि रही निरंतर । प्रादि संत यह मध्य गगन दश दिशि वहि संतर ॥ गुण पुराण इत् साह वेद बंदीजन गावत । धरत ध्यान अनुचरन पार वामादि न पावत । सेनापति प्रानंद धन रिद्धि सिद्धि मंगल करन । नायक अनेक ब्रह्मांड को एक राम संतन सरन ॥ कवित्त ॥ पाई जो कविन जन धल जप तप करि विद्या डर धरि परहरि रस रोसा है ॥ ताकि कविताई को सुजस सुपशु चाहतु है सेनापति जानत जो अक्षर न घोसा है ॥ पाय के परस जाके शिलाहू मचेत भई पायो बोध सा सारदाऊ को घोरोसा है ॥ और न भरोसा जिय पठ परोसा ताही राम पद पंकज को पूरण भरोसा है ॥ भूप समा भूषन छिपायो पर दूषन को बोल एक दूषन कहेन देह पार के ॥ राज महराजनि पूरे सकन कनानि सेनापति गुलशानि औरह को गुणदाई के ॥ तुमहो बताई कछु कोन्हों कविताई तामे होइ जोगताई दुचित्ताई के सुभाई के ॥ बुद्धि के बिनायक गुभाई कवि नायक से लोजिये बताय के कहत शिरनाई के ॥

End—अथ गृहार्थ—अ्योतिस ताते पादये संतति नोको होइ । सेनापति जो तप करै संतति पावै सोइ ॥ सेनापति जो कामिनो संथी कछु लपै ॥ कवि नव पाने कौल से ताही तोके नैन ॥ सेनापति बल्यो तुरंग उरवड मन को भाइ । तीन

पाइ को भांति ज्यों चलत चारहु पाइ । पाइ एकसौ साठि है तिनमें एक चलै न ।
ताको समबाजी चलै सेनापति हरै न ॥ चो० ॥ आदि खेत जाके है आदि न खेत
न जाके सोचे आदि देह बिनाह होतक जात निशि दिन सोचि कहै सो बात ॥
देहा—जिन पाटो सिर भोर है कोन्हा घरो अनुप ॥ सेनापति धारद घरो प्रिय
पालका स्वरूप ॥ संवत सत्रह सै त्रै १७२६ सेह सिंघापति पाँच सेनापति कविता
सजो सज्जन सजो सहाई ॥ कवित्त ॥ पूरो पंडितारि कविनारि परषोन्तारि पाई शुभ
साधुतारि कीजो यथ मानिहै ॥ पति गुणवान शीलवान सव संतन को पति पर
निंदा को सुहाति है सुहानिहै ॥ कहाँ कहाँ जैये काहि काहि समुझैये ॥ चाप
गुनो है गुनोन सममानि है सो मानिहै ॥ यथे कवि चित्र सेनापति के कवित्त
जानि जानिहै सो जानिहै न जानि है न जानिहै इति श्री कवित्त रत्नाकर
सेनापति कृते चित्र काव्य वर्णन नाम षष्ठ स्तरंगः ॥ संवत १८८३ चैत्र शुद्ध सप्तम्यां
मामे लेखि वक्तोराम कान्धकुज पुरे ॥

No. 370 (b). Kavitta Ratnākara by Senāpati. Substance—
Country-made paper. Leaves—63. Size—9×6 inches Lines
per page—30. Extent—1,418 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Prose or verse—Verse. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Thakura Ganesh Simha, Village Karailā,
Post Office Phakharpur, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री मणेशायनमः ॥ लिखित कविन रत्नाकर सेनापति कृत ॥
सुरतर सार को सवारो है विरंचि पंचि कांचन पंचित चितामनि के जराइ को ॥
रानो कमला को प्रिय आनम कहन द्वार सुरसरि सषो सुष दैनो प्रभु पाइ को ॥
बेद मे बषानो तिहू लो कन को ठकुरानो सष जगजानो सेनापति के सहाइ को ।
देव दुख दहन भरत सिर मदन वे वेदो यष पंडन पराऊं भुराइ को ॥ १ ॥
पाइ जो कविनु जल थल जपु तपु करि विद्या उरधरि परिहरि रस रोसा है ॥
ताहो कविताई को सुजसु यसु चाहतु है सेनापति जानतु जु कछु न पेसा है ।
पाइके परसु जाके सिलाउ सवेत भई पायो बोध सार सारदाह को धरोसा है
बोह न भरोसा जिय चावत परोसा ताहो राम पद पंकज को पूरन भरोसा है ॥
मदन को संगम सुगम एकठाको जाको ठोइन विमल विधि बुधि है पथाह को ।
कोई है समंग कोई पदु है समंग सोचि देखै सब संग सम सुचा के प्रवाह को आदि ॥

End—बारन लगाहो पुकार एक बार ताको बारना लगाई रखि पार भग-
वन को । सिव सिंघाज तुम थापु महाराज बैठि रहे तजि लाज काज मो मरोव
जन के ॥ सेनापति राम भुषपाल थापु जानि जिय हृदिये सरन असरन के ।

धाइ हरि राइ छै सहाइ धाइ हरि करो बास लखिमल सु भैया लखिमल के ।
 धाइर बिहोन ताहि परवार दोन जाइ होतु है मलोन बात सुनि पनबात को ।
 सदा सुप दीत राम नाम सुनि लोन रहै कोइ चित चितन करत पान बात को ॥
 धासर पौर को करत काइ ठौर को जू सेनापति पकु हरिराइ कृप तको ।
 जाके सिरपर धातु मसतु है महाराज ताहि कही करो परवाहि कौन बात को ॥
 तुम कतार जग रक्षा के करन हार वज्रवन हार मनोरथ चित चाहै के ।
 यह जिय जानि सेनापति है सरन पायो इजिये सरन महापाप ताप दाहै के ॥
 जो कहै कही कैसे कूर मन तैसे हम बादक है मुकति भगदि रस लाहै के ॥
 पापने करम करिहौ हो निरबहै गो वही हो करतार करतार तुम काहै के ॥

No. 380. Jaimini Purāṇa by Sewādāsa of Nawaranga Nagar. Substance—Country-made paper. Leaves—540. Size— $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extant—3,240 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1700 or A. D. 1643. Date of Manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Bhiruji, Village Uttaragāma, Post Office Aliganja Bāzāra, District Sultānpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरु चरणकमलेभ्योनमः ॥ गोविदाय-
 नमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ अथ जैमुनि पुराण लिख्यते ॥ दोहा ॥ चंदौ ॥ गणपति
 सरस्वतो पूजौ गुरु के पाय ॥ संतन पद रज शीशधरि भापौ कथा सुभाय ॥ १ ॥
 चौपाई ॥ जन्मेजै पूछै कर जौरो ॥ जैमुनि रिधि सुनु विनतो मोरो ॥ पूर्व कथा
 कछु मोहि सुनाणा तिन्ह कर रिधि कछु करहु वषाणा ॥ बंधुन सहित राज जस
 कोन्हा ॥ विप्रन कंचन दाग बहु दोणा ॥ जन मा भस्वमेध जस कोन्हा ।
 सो राजा कही कैसे सो दोन्हा ॥ दोहा ॥ राजज्येति जगधर्म की सकल कही
 सभुभाय ॥ मम मज परम सनेह बहु कृपा करो रिबिराय । जैमुनि उवाच ॥ चौ० ॥
 धन्य धन्य जन्मेजै राई ॥ जो तुम्ह जैसो बुधि उपाई ॥ परम पूजोत कथा हितकारी ॥
 सो नृप तुम्ह मोहि कही विचारो ॥ × × ×

End—जैमुनि कहै जन्मेजै काजा । परम पूजोत कथा पद राजा ॥ पूरण
 हम तुम्है सुनाई ॥ अधिक प्रेमते तुम सुनि पाई ॥ कलसुग सद्रवमेध नहि काजा ॥
 यहि प्रकार फल कोजिए राजा ॥ दोहा ॥ सद्रवमेध जग्य को कथा भदर पूरण
 साय ॥ अंतर इजि विचित्रे पशुणै भस्वमेध फल होय ॥ चौ० ॥ जो कोई साधु
 संत जग ब्राह्म ॥ दिनकी पद रज सेवा दाग ॥ कवि जल को बोले कर जौरो ॥

चूक चचूक बकसिये मेरो ॥ बख्खमेद सह सक तिघाहो ॥ सो हम श्रवण पुनि
कछु जाहो । वातल कछु कछु सुनि पावा ॥ तुम मिलाप के ग्रंथ बसावा । मेरता
कछु शंशे आवै ॥ ताते कवि जन ठौर बतावै ॥ भद्रावति नय के पासा ॥ जो जग
देइ कवि को वासा ॥ नवरमाखनर जब सिधपुर तहां को सुब मने नेवासा ॥ कान्ह
राम के सामने बसत है सेवादास ॥ संवत सत्रह सै भवऊ कातिक मास सोते
पछे द्वादस्यां चन्दबासरे गुरु ज्ञानवदनवाया पुस्तकं लोपितं मया ॥ लिपितं
प्राज्ञाख रुद्र त्रिपाठि त्रिवस सम्बत् बुध्या के सतत् मया ॥ वसतं ग्राम पेडार
जस्य विदितां कृति जगत्र स्थिता इति श्री महाभारते अश्वमेधे पर्वाणि जैमुनि
कृत—संवत १८५२ ॥

Subject—कुल पाध्याय । (१) पृ० १—१४—यज्ञ उपदेश । (२) १५—२६—
हस्तनापुरो यागमन । (३) २७—३६—भोमसेन गमतायोगा । (४) ३७—४६—
व्यामकरा हरण । (५) ४७—५०—जोवणरा विषहेतु युद्ध । (६) ५१—५३—
भोम युद्ध । (७) ५४—६२—जोवनाराडाडि युधिष्ठिर मिलन । (८) ६३—६६—धर्म
निरूपण । (९) ६७—७१—भोम शरिका गमन । (१०) ७२—७६—कृष्ण हस्तनापुरो
गमन । (११) ७७—८०—कृष्ण हस्तनापुर आये । (१२) ८१—८७—शल्य घोड़ा हरण ।
(१३) ८८—९६—मामा संवाद । (१४) ९७—१०८—नोलखज तुरंग हरण । (१५)
१०९—११६—नोलखज वधेन । (१६) ११७—११९—उद्यालक खो शाय विमोचन ।
(१७) १२०—१२६—सुधन्वा प्रतिज्ञा वधेन । (१८) १२७—१३०—शुचन्वा युद्ध ।
(१९) १३१—१३५—शुचन्वा वध । (२०) १३६—१४३—सुध वध । (२१) १४४—१५२
कृष्ण पौर इंद्रध्वज मिलन । (२२) १५३—१५८—प्रमाला रानी युद्ध । (२३) १५९—
१६९—बोड़ा मानिकपुर यागमन । (२४) १७०—१८३—बभ्रुवाहन युद्ध । (२५)
१८४—१८८—बभ्रुवाहन युद्ध । (२६) १८९—१९७—रामामिषेक । (२७) १९८—२०६
सोता लक्ष्मण वधेन । (२८) २०७—२१४—सोता वाल्मीकि आश्रम प्रवेश । (२९)
२१५—२२१—लव घोड़ा वधेन । (३०) २२२—२३०—लव मूर्खा । (३१) २३१—२३७
बाब्रुहन मूर्खा । (३२) २३८—२३९—लक्ष्मण सेना वध । (३३) २४०—२४१—लक्ष्मण मूर्खा
(३४) २४२—२४७—मरुत यागमन । (३५) २४८—२६०—रामचन्द्र लवकुश, सोता
वाल्मीकि मिलाप वधेन । (३६) २६१—२६७—वृषकेतु वध । (३७) २६८—२८४—अर्जुन
वध । (३८) २८५—२९५—श्रीकृष्ण मालिकपुरी यागमन । (३९) २९६—३०२—
बभ्रुवाहन विजै वधेन । (४०) ३०३—३०७—मोरध्वज अर्जुन समागम । (४१) ३०८—
३१३—मोरध्वज कृष्ण वधुवाण मूर्खा । (४२) ३१४—३२१—सुचेत युद्ध । (४३) ३२२—
३२८—कृष्णार्जुन नय प्रवेश । (४४) ३२९—३३४—मोरध्वज बाह्यस समागम ।
८४५, ३३५—३४९—मोरध्वज कृष्ण मिलाप । (४६) ३५०—३५५—मालिन कन्या
राजा बोरवाला संवाद । (४७) ३५६—३६२—धर्मराज रोग वधेन । (४८)

३६३—३७० बोरबद्धा उपाख्यान । (४२), ३७१—३८० चन्द्रहंस उत्पत्ति (५०)
 ३८१—३८६—चन्द्रहंस विद्याध्ययन (५१) ३८७—३९६ मदनवती गमन । (५२) ३९७—
 ४०१ चन्द्र कौतुलपुर सागमन । (५३) ४०२—४०८ चन्द्रहंस विवाह (५४)
 ४०८—४०८ चन्द्रहंस विवाह । (५५) ४०९—४१६ चन्द्रहंस विषय वर्णन
 (५६) ४१७—४२७—चन्द्रहंस राज प्राप्त (५७) ४२८—४३०—चन्द्रहंस राज वर्णन ।
 (५८) ४३१—४३९—चन्द्रहंस मिलाप (५९) ४५०—४५६—कृष्णवक्त्र तालपुनि
 मिलाप, (६०) ४६७—४७३—जयद्रथपुर गमन, (६१) ४७४—४८०—चर्तुन
 हस्तनापुर सागमन (६२) ४८१—४९३ वज्रारंभ श्यामकरण स्नान वर्णन (६३)
 ४९४—५०८—यज्ञ वर्णन । (६४) ५०९—५१९ व्याघ्रण भोजन वर्णन । (६५) ५२०—
 ५३०—शक्रपति व्याघ्रण कथा । (६६) ५३१—५३५—त्रैवर्णा मोक्ष (६७) ५३६—
 ५४० जैपुनि पुराण पढ़ने के फल, कवि का अपना परिचय:—मद्रावती नगर के
 पास—बढ़ा से डंड योजन नवरंग नगर । सेवादास नाम । रचना काल
 सं० १७०० लिखी १८५८

No. 881(a). Dayābodha by Devidāsa of Dīdwanā Jodhapura Rājā. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—10 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—28 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahānta Dīdwanā, Rājā Jodhapurā, Post Office Dīdwanā, Rajputānā.

Beginning—ओ गणेशाय नमः ॥ अथ दयाबोध लिख्यते ॥ गोरखनाथ
 गुरु पावो सिद्धो खोज बताऊं । मादिनाथ का पुत कहाऊं । जोगारंभ को याहो
 बाणो । सब घट नाथ एक ही करिजाणो । जोगारंभ हृदय में माड़ो । दया उपावो
 जूतो छोड़ो । नाग पावो जो नर मुवा । ताका कारज पहिले हुआ । पाप
 स्वारथ थालै धाई । तामे चोटो कैंतो मुई ॥ तजौ कहरि नजरि भभूत । बटवा
 फाउड़ी जिन लेउ हाथ । पैता चारंभ परि हरौ सिद्धी । यो कथंउ जतो गोरखनाथ ॥
 माघ चलैत्रा घरणि दिष्ट जो लागी । ताके कांटा कड़न लागे । पहिले चारंभ
 हम मो करते । जीव जंतु बहुतेरे हतते । चारंभ तजौ मुदड़ी चलायो । निरति
 सुरति यविनासी से लायो । यविनासी पुरुष का लागे रंग । रिद्धि सिद्धि
 ताहो के संग ॥ रिद्धि झंझा सिद्धि पाइये । सिद्धि शंकर के हाथ ॥ झंझौ
 सकल प्रकल को ध्यावो । यो कथंउ जतो गोरखनाथ ॥ आसन तजि अनंत
 जिन जावो । अक्षय मिखा बैठा पावो ॥ ठरना पांच घर चितायवा ।

End—यद्वा देवरा पौषह देव । तहां जोगेश्वर लास्या सेव ॥ पंच चेला मिलि पूरानंद । चरणि गमन विच भई पावाज ॥ दीपक एक संपदित विन वाही । तहां जोगेश्वर थापना थापी ॥ ता दीपक के चरण न पिंड । सिपा न नैन सोस नहि हाथ । सो दीपक देखा जगो गोरखनाथ ॥ ता दीपक के डाल न मूल । ता दीपक के कलौ न फूल ॥ ता दीपक के रंग न रूप । ता दीपक के छांह न धूप ॥ ता दीपक के सबद न स्वाद । ता दीपक के विद्या न नाद ॥ ता दीपक के मोह न माया । सो दीपक सुनै सुत समाया ॥ इति दयाबोध सम्पूर्ण लिखत गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मध्ये संवत् १७९४ ॥ पठनार्थ रूपदास महंत डोडवाना गद्दी वाले के । कार्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथि नवम्यां शुक्र वासरे ॥

Subject—इस में साधुओं के लिये दया का ज्ञान वर्णन है ।

No. 381(b). Gorakha Gāṇeshā Gossthī by Sevādāsa Mahanta of Dīdwanā (Jodhpura). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—8×5 inches. Lines per page—14. Extent—80 Anuṣṭup Ślokaṣ. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Dīdwanā Rāja Jodhapur, Post Office Dīdwanā, Rājputānā.

Beginning—ओ गणेशाय नमः ॥ यद्य गोरख गणेश गोष्टी लिख्यते ॥ गणेश पुष्टे गोरख कहिप । तुम स्वामी कहाँ ते पाये । कहा तुमारा नाम ॥ हम निरंतर पाये जोगी हमारा नाम ॥ स्वामी जोगी तैते बोलिये । जिन पंजा मेर मेपला रचा । तुम कौन जोगी । सम्है निरंजन जोगी । अतिथि गुरु चेला स्वामी । अतिथि ते कौन जानिये । रहति जानिये शब्द प्रमाणिये स्वामी रहति ते क्या बोलिये ॥ शब्द ते क्या बोलिये । शब्द बोलिये अवधू सवते विवर्जित । रहति बोलिये त्रिगुण तै स्वामी सभ ते विवर्जित ते क्या बोलिये । त्रिगुणते क्या बोलिये । सब ते विवर्जित ते बोलिये ते बोलिये अवधू सूच्छिम त्रिगुण बोलिये सत रज तम । तै स्वामी सूच्छिम ते क्या बोलिये । सत, रज, तमसे क्या बोलिये । सूच्छिम ते बोलिये अवधू हृष्टि देखे न मुष्टि मावे ॥ सतगुण बोलिये प्रबन । रजगुण ते बोलिये पासी । तमगुण ते बोलिये अवधूतामसी रूपी पंचतत्व पचीस प्रकृति का भादम । यता एक त्रिगुण बोलिये । तै स्वामी पंचतत्व से क्या बोलिये पचीस प्रकृति ते क्या बोलिये । पंचतत्व बोलिये अवधू । पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश । एक एक तत्व संयुक्त पांच पांच प्रकृति बोलिये ॥

Śloka—वायु का कौण घर कौण द्वार कौण आहार, कौण व्यवहार । तेज का कौण द्वार कौण आहार कौण व्यवहार । आप का कौण घर कौण द्वार कौण आहार कौण व्यवहार । पृथ्वी का कौण घर कौण द्वार कौण आहार कौण व्यवहार । तै अथवा आकाश का घर अन्नाड, अथवा द्वार सुखी से आहार उभवा बंध व्याहार । वायु का घर नामो नासिका द्वार वासना आहार यह कोय लोम व्याहार । तेज का घर पीछा चक्षु द्वार दृष्टि आहार पीति मोह व्याहार । आप का घर ललाट, इन्द्रो द्वार श्रो आहार, मीधुन व्याहार । पृथ्वी का घर कलेजा गुदा द्वार श्वाय से आहार लोम लालच व्याहार । तै स्वामी पृथ्वी का कौण गुरु, जल का कौण गुरु, तेज का कौण गुरु वायु का कौण गुरु । आकाश का कौण गुरु । तै स्वामी पृथ्वी का गुमन देवता । वाचा स्वरूपी ॥ आपका चन्द्रमा देवता बुद्धि स्वरूपी, तेज का गुरु सूर्य देवता अग्नि स्वरूपी, वायु का गुरु ईश्वर देवता अनादि स्वरूपी, आकाश का गुरु गोरप देवता अविमल स्वरूपी । तै स्वामी पंचतत्व को कये उत्पत्ति कये क्षयति । तै अथवा अविमल उत्पत्ता आकाश, आकाश उत्पत्ता वायु, वायु उत्पत्ता तेज, तेज उत्पत्ता तोयं । तोयं उत्पत्ता मदी ॥ मदी आसति तोयं ॥ तोयं आसति तेज, तेज आसति वायु, वायु आसति आकाश ॥ आकाश आसति अविमल । ये पंचतत्व पञ्चोस प्रकृति मेद बोलिये । निरंजन देवता पाणो का जामण अग्नि को पुट, पवन का धंया सुरति निरति सोधि सत्य में समाया अविमल स्वरूपी ॥ इति गोरप गणेश संवादे पठते हरते पार्ष श्रुत्वा मोक्षदायकं योगारंभ भवेत्सिद्धि आवागमन निवर्तते उबार विचार पापक्षय जायति ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मङ्गिन्द्रनाथ को पाखु का नमोस्तुते इति गोरप गणेश संवादे योगशास्त्र सम्पूर्ण समाप्त ॥ लिखत-गंगाराम निरंजनो वैष्णव जैपुर मध्ये पठनार्थं बाबा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष त्रिंवि दसम्य शनिवासरे संवत् १७९४ ॥

Subject—इसमें सिद्धान्त संबंधो प्रश्नोत्तर हैं ।

No. 881 (c). Mahādeva Gorakha Goshtī by Śeṛādāsa of Dīdwānā, Jodhapura Rājā. Substances—Country-made paper. Leaves—2. Size—8×5 inches. Lines per page—25. Extent—70 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahantā Dīdwānā Mandira Haridāsaji Rājā Jodhapura, Post Office Dīdwānā, Rajputana.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ महादेव गोरख गोष्टो लिख्यते ॥ ईश्वरो वाच ॥ ॐ अविमल उत्पत्ते इच्छा । इच्छा उत्पत्ते आकाश । आकाश उत्पत्ते वायु,

वायु उत्पते तेज तेज उत्पते तोयं, तोयं उत्पते महो, अविगत इच्छा इच्छते आकाश, आकाश नाम स्थान वरुण दसर्वे द्वार वास, दाहिने पैसार, वामे श्रवण निकास, नाद सुनै सो आहार, दंस बड़ाई व्योहार राग द्वेप हर्ष शोक मोहादिक ये पांच प्रकृति आकाश का बोलिप ॥ इन आकाश मारग जीव अनुसरै तौ स्वेत रज खानि भोगवै ॥ आकास ते वायु नाम नीलवरुण नाभिवासा इला पैसार पिगुला निकास, गंध वासना, आहार कोच व्योहार, गावण धावण बलमण संकोचण, पसारन ये पांच प्रकृति वायु की बोलिप, इन वायु मारग जीव अनुसरै तौ घंडरज खानि भोगवै । वायु ते तेज नाम रक्त वरुण त्रिकुटी वासा दाहिने नेत्र पैसार वामे निकास दृष्टि देखै सो आहार मोह व्योहार, सुखा तृषा निद्रा आलस कांति ये पांच प्रकृति तेज की बोलिये, इन तेज मारग जीव अनुसरै तौ रज खानि भोगवै ।

End—धर अन्नपा द्वार निश्काम पैसार संतोष निहसार मकरंद आहार अमम व्योहार इन चित मारग जीव अनुसरै तौ स्वरूप मुक्ति भोगवै ॥ परम ध्यानं च अहंकार नाम पवरण वरुण विषयी वासा लयवर नृवामोक द्वार अमम पैसार अगोचर निसार अन्नराहार, अगाध व्योहार इन अहंकार मारग जीव अनुसरै तौ साढोक मुक्ति भोगवै। प्राण संतःकरण नाम पवरण अस्थिति वासा धोरज धर अहंकार द्वारा ज्ञान पैसार विज्ञान निसार अमम आहार अबंध व्योहार इन संतःकरण मारग जीव अनुसरै तौ महा मुक्ति आत्मा परमात्मा भवन्ति जोगेश्वर जीव सोच एक भवन्ति परम सत्य भवे स्थिति पारब्रह्म भवे लीन सत्यं सत्यं च वदाम्यहं तत्त्व ज्ञान श्री शंभूनाथ अकथ कथितं ॥ सुनै हो गोरप अवधूत परम जोग संवाति जोगी ईश्वरो कथितं महाज्ञान इति ज्ञान इति ज्ञान इन्द्रादि बोलिप इतिज्ञान पटल द्वितीयोऽध्याय इति गोरप महादेव संवादे पहंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्ष लाभते जोगारंभ भवे सिद्धा आवागमन निवर्तते पठते करंते गुणंते कथंते पापं न लिप्यते पुन्येन न हारते ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मङ्गिदेनाथ जी का पादुका नमोस्तुते इति श्रीमहादेव गोरप संवादे योगशास्त्रे ग्रंथ संपूर्ण समाप्त । लिपितं गंगाराम निरंजननी वैष्णव जयपुर मध्ये कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे एकादश्याम रविवासरे संवत् १७९४ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 381(d). Niranjanapurāṇa by Sewādāsa of Dīdhwānā Jodhapur Raj. Substance—Country-made. Leaves—4. Size—9 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—176 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Dīdhwānā, Raja Jodhapura, Post Office Dīdhwānā, Rajputānā.

Beginning—ॐ ॥ अथ निरंजन पुराण लिख्यते ॥ ॐ गोरक्ष शिष्य विचार
सिंघार । बंदिनं बंदि ऊंकार शिवशक्ति न सृष्टि विचार । अर्पणं युग होता
धुं धकार । जाली कुल माई न वाप । स्वयंभू निरंजन आपही आप ॥ वरण न
चिन्ह न हथ न रेष । मूर्ति विदुना अगम घलेष । अर्थ न उर्थ न अर्थ न ग्राम ।
स्वयं विवर्जित अतीत अनुपाम ॥ धरती न गगनं चन्द्रं न सूर । वाहिर न भीतर नेरे
न दूर ॥ उत्पति प्रलै जावो न वाणी । असंख जुगे जुग जोग ध्यानी ॥ ब्रह्मा न विष्णु
वैष्णो न महादेव । संभू निरंजन अलप प्रमेव ॥ भेदा न भेदो दर्शन न भेष अगम अगोचर
भूरति प्रक ॥ अलप क्रिया सुचि नावो न भ्रांति । उत्तम न मध्यम जोते न ज्ञातो ॥
वेद न शास्त्र न पुस्तक पुराण ॥ हिन्दू न कोई मुसलमाने ॥ अनिले न नील निरंजन
राया । ते सबे सूक्ष्म सूक्ष्म को काया ॥ सुते सूक्ष्म निरंजन राया । सुनि निराखेंव
होतो निरंजन को काया ॥ काया माया निराखेंव होतो । पाप न पुण्य नहीं तहां
छातो ॥ सूक्ष्म से दुधा सबे स्थूल । अनादद धूम रचिले सृष्टि का मूल ॥

End—बाबा बादम रसूल का भया । एक मसोन दस दरवाजा ॥ तहां
चिन्ह तहां अलप पुरुष का वासा ॥ एतो एक दसौध बाबा को कबूल थो दस
भारत एक भारत । दस पुंगंडिये एक पुंगंडो । दसे पुंगंडो पुंगंडा । दसे ग्रामे
ग्राम । दसे हस्तो एक हस्तो । दसे घोड़े घोड़ा ॥ दसे बैले बैल । दसे धैलिये
धैली ॥ दसे छेलिये छेली । दसे पुयड़े पुयड़ा ॥ दसे पुदड़े पुदड़ा । दसे कपड़े तौ
कपड़ा । दसे ठुकड़े ठुकड़ा ॥ दसे मयुरे मयूर । दसे पथड़े पथड़ा ॥ दसे निवाले
निवाला ॥ जागी जतो का नाथ सन्यासी का सेप । वैष्णव का दर्शन । मुर्ना
को बाणि । दरवेश लेफो को बाणि एते दरसन सुनि मुसलमान पाना जावो
तौ सुबर पाय ये सुनि हिन्दू पाय तौ गऊ का मांस पाय ॥ पहिले पूरे पत्र पोछे
पूरा कांसा ॥ कांसा का गुठ तिपाण । पत्र का गुठ अलेप रहिमाण ॥ निरंजन
पुराण रहा भरपूर । बसे न आवे नेड़ा पाप न जावे दूर ॥ अस्त्र के हरते पापं वक्ता
मोक्ष लाभ ते इति श्री निरंजन पुराण पठेन हरते पापं अस्त्रा मोक्षदायकं जग -
रंभ भवे सिद्धा पावागमन निवर्तते ॐ नमोशिवाय ॐ नमोशिवाय श्री शंभूनाथ
का पादुका नमोस्तुते इति श्री निरंजन पुराण ग्रंथ संपूर्ण ॥ लिपतं गंगाराम
निरंजनी पठनार्थ बाबा छपदास महंत काविक शुक्लपक्ष एकादस्याम संवत् १७२४
वि० श्री श्री श्री श्री श्री ॥

Subject—इस में पृथ्वी और मनुष्यों का वर्णन और हिन्दू तथा मुसलमानों
का अलग अलग बनना बतलाया गया है ॥

No. 381(e). Śhrishtipurāṇa by Sewadās of Dīdhwānā
Jodhapur Rājā. Substance - Country-made paper. Leaves - 2.
Size—10×6 inches. Lines per page—14. Extent—24 Anushṭup

Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Dīdwānā Rāja Jodhapura, Post Office Dīdwānā, Rajputana.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सृष्टि पुराण लिख्यते ॥ ॐ एक उपरांति लेश्या नाहीं । दोय पाये सृष्टि नाहीं । गुरु पाये ज्ञान नाहीं । काया उपरांति क्षेत्र नाहीं । आत्मा उपरांति देवता नाहीं ॥ सिद्धि उपरांति ब्रह्म नाहीं । प्राया पाये परचा नाहीं ॥ शोल उपरांति घत नाहो । चक्षु उपरांति दृष्टि नाहीं । निर्मय उपरांति प्रमय नाहीं । संयम उपरांति सुचि नाहीं । संतोष उपरांति सुष नाहीं । प्रमद उपरांति सिद्धि नाहो प्रमय उपरांति करामात नाहीं । माता उपरांति जन्म नाहो ॥ गर्भ उपरांति नरक नाहो । खलंत उपरांति हानि नाहो । चित्त चंचल उपरांति रोग नाहो । वृद्धा उपरांति मृत्यु नाहो ॥ काल उपरांति बैरी नाहो ॥ नासिका उपरांति रूप नाहो । दया उपरांति धर्म नाहो ॥ ध्यान उपरांति ग्रंथ नाहो ॥ चंदन उपरांति काष्ठ नाहो ॥

End—वैकुण्ठ उपरांति अर्थ नाहो । चन्द्रमा उपरांति शीतल नाहो । सूरज उपरांति तप्त नाहो । काया उपरांति रतन नाहो ॥ सांज उपरांति शास्त्र नाहो । बुद्धि उपरांति व्याकरण नाहो ॥ स्वासा उपरांति वेद नाहो ॥ पदधीन उपरांति बंधि नाहो ॥ स्वाधोन उपरांति मुक्ति नाहो ॥ चाह उपरांति पाप नाहो । अचाह उपरांति पुण्य नाहो । कर्म उपरांति मेल नाहो दोष उपरांति कुबुद्धि नाहो ॥ निर्दोष उपरांति सुबुद्धि नाहो । मूर्खि उपरांति पोष नाहो । अज्ञपा उपरांति आप नाहो । प्रघोर उपरांति मेघ नाहो । नारायण उपरांति इष्ट नाहो ॥ निरंजन उपरांति ध्यान नाहो ॥ इति सृष्टि पुराण ग्रंथ समाप्तम् लिखतं गंगाराम निरंजनो वैष्णव जैपुर मंडे श्री बाबा रूपदास के पठनाये माय वदो ज्योदशो संवत् १७९४ मौमबासरे इति श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 382. Karuṇa Viraha by Sevādāsa Pāṇḍay of Ajodhya. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8×4 inches. Lines per page—28. Extent—1,075 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1822 or A.D. 1765. Date of Manuscript—Samvat 1889 or A.D. 1832. Place of deposit—Pāṇḍita Baldeo Prasāda Awasthi, Village Banuwāpara, Post Office Jaitapur Bazar, District Bahraich (Oudh).

No. 383. Bāgavilāsa by Sewaka Rāma of Aśwani. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size 8×6 inches. Lines per page—36. Extent—1,890 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1921 or 1864 A. D. Place of deposit—Thākura Anirudha Sinha, Assistant Manager, Nilgāma, Post Office Nilagāma, District Sitāpura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाग विलास लिख्यते ॥ दो० ॥
गजप्रसू सूरसुति गुरु चरन प्रफुलित कमल मनाव । रस स्वरूप रंग देवता भेद
कहत सुष पाय ॥ अथ रस स्वरूप कथनम् ॥ सबैया ॥ थार्ई के कारन कारज
सौ सहकारो जिते कवि सेवक गावै । ते हिय भावै विभावित सौ अनुभावित
सौ वमिचार करावै ॥ नाट्य सौ काव्य में ताते विभाव अनुभाव संचारिह नाम
को पावै ॥ अक्त है सौ इनसो सुख रूप भये परिपूरन सौ रस गावै ॥ अस्वायी
वार्ताः ॥ मम पितुः काव्य प्रमाकरे लोक में रहित्यादि के कारन जो श्री चंद्रो-
दयादि है सौ कार्य (यह सबैया) काव्य प्रकाश के चतुर्थोल्लास के इन श्लोको
के भावार्थ प्रबंय जान पड़ता है कारखान्या काव्याणि सहकारिणो यानि च
इत्यादिः आपिनो होके तानिचशाव्य काव्ययो ।

End—प्रलाप यथा ॥ करिन सो पूछै कवौ हरिन सो पूछै राम कहरिन
पुछिबे को प्रीति परसो गई । अगन सो पूछै कवौ मृगन सो पूछै जाय तटनो
तरंगिनि तिहारी तरसो गई ॥ कंजन को मालन मरालन सो पूछै दई बालन
को सेवक बिलोकि बरि सो गई ॥ वैरभाव तजि कै दबाय दुख पाय धाय दोबिजे
बताय सिंग हाथ हरि सो गई ॥ पुनर्यथा ॥ पोटम को जैबो याके तायन तैबो
इतै मेहन को पैबो बन कूकै कंठ नोलैरो । मई तन घोन परै सेज पै लपोन दोन
जल सो बिहोन जैस मोन घरसोलैरो ॥ वेदन को सेवक निवेदन करै को दई
होत हिय मेदन बिलोकि संग डोलैरो ॥ मूदे नैन मोहनो कहत रावे रावे भाये
पोलै मृदु बोलै श्याम सांघरे कधीलेरो ॥ अथ व्याधि लखन ॥ जहं पिय के मन
मिलन ते करै काम अति झोन । तासो व्याधि बषानहो विरह विकल अति
दोन ॥ यथा ॥ भरतो रहै है पुनि डरतो निसाह शोस भरतो न भेदु सुठि सिंधु में
परी मनो । उर धरियार में सुरति मोगरो को मारि काम धरियार दाँ करनि
घरो मनो ॥ बाह की अवाज निकरैरो न परैरो वाज सेवक जु रावे लागे डरनि
डरो मनो । हरे सब तंत्र कोऊ लागत न मंत्र भई पांघे परतंत्र जलजंत्र को घरो
मनो ॥ इति श्री बाग विलास सेवक राम पश्वनो निवासो विरचिते नायका

भेदादि बलेन समाप्तम् ॥ संवत् १९२१ चापाङ्ग मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाम
श्रृगुवासरे ॥

Subject—इस ग्रंथ में नायिका नायक भेद एवं शृंगार रस का बखान है ।

No. 384. Śāntipurāṇa by Sevārāma of Dewagarah.
Substance—Country-made paper. Leaves—568. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—7,952. Anushtup
Ślokas. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat
1834 or A. D. 1777. Date of manuscript—Samvat 1892 or
A. D. 1835. Place of deposit—Jaina Maṇḍira (Bārā), Bārā
Bankī (Oudh).

Beginning—ओ वोतगनदेवानमः ॥ ओ सरस्वत्यैनमः ॥ ओ गुरुभ्यो-
नमः ॥ पद्य शान्तिपुराण भाषा, सेवाराम कृत लिख्यते ॥ प्रणम्य परमानन्दान् ॥
देव सिद्धान्त सद्गुरुन ॥ शान्तिनाथ पुराणस्य ॥ भाषा सहित नौग्वहं ॥ १ ॥
दोहा ॥ नमोभान्ति जग शान्ति कृत ॥ परम शान्ति दातार ॥ कर्म समूह विसात
हर ॥ मरन संपदा मार ॥ २ ॥ जो पोटस भो तोर्थपति ॥ अमर निकर परचाय ॥
त्रिभुवन भयहर प्रथित पद ॥ मये जलधि जललाय ॥ ३ ॥ कुनि पंचम मिधिपति
भयो ॥ प्रकृत वचन रतिवान ॥ हृय पष्टम रति पति जयो ॥ लसा सुपोदधि
वान ॥ ४ ॥ तास शान्ति जग भान्तिहर ॥ नमो शान्ति पद दोय सकल ललित
नखिन कलित ॥ मंगल कारक लाय ॥ ५ ॥ नमो वृषम पद वृषम के ॥ वृषमा
जलन वान ॥ वृषपति वृष द ता जगत ॥ वृषम तोर्थ वृषमान ॥ ६ ॥ वृषभेश्वर
वृष विस्तरगो ॥ शिवसुख करन महंत ॥ वचन किरन तम छेदि तसु ॥ वंदो शिव
तिथ कंत ॥ ७ ॥

End—नमोदेव परिहंत सर्वे तत्त्वार्थ मासी । नमो सिद्धि अविकार ज्ञान
मूरति अविनाशी ॥ नमो सूर उवभाष साधुनि ग्रंथनि मो सिर । येई पद वर पंच
नमत भागी अष्ट को गिरि ॥ वंदो जिनेस भाषत वचन धर्म हठावन सर्वदा । ये
परम सार तिहुंलोक में करो छेम मंगल सदा ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ पंच मास कछु
सरस से, लगे रचत अविकार । मतिथेरो धिरता अल्प, ताते लमो अवार ॥ १२ ॥
काव्य—डोकाडोक विलोक स्वच्छ नयन सादरन निर्मल ॥ जस्य ध्यान मनंत
ता प्रविद्यात्सर्वात्मना बोधका ॥ वच्छकारिधिवक्षणेन विमला विश्वस्य
बोद्धारनो ॥ यत् सौम्यं विमता मयांसि जिनयो सांति प्रशान्ति कृपात् ॥ १३ ॥
(दोहरा) षड् सुने या ग्रंथ को ते पावै सुखताम । सुख सेां कियत भव बन विषै ।
फेरि गये शिवनाम ॥ १४ ॥ जिनवर धर्म प्रभाव सेां परम विस्तरौ ग्रंथ । ता संवत्

पैये सदा नाक मोष को पंथ ॥ १५ ॥ इति श्री शांति पुराणाचार्य श्री सकल कोटि विरचितो भाषा विचितात् लघु कवि सेवारासेन तस्यां जिन स्यानात्पत्ति वर्मोपदेश विहार समय निर्वाण भग्न निरूपत नाम पंचदशमोधिकारः ॥ १५ ॥ इति श्री शांतिनाथ पुराण भाषा संपूर्ण ॥ समाप्तं ॥

Subject—(१) पृ० १—४४ तक—मेगल/चरण तथा बंदनादि सहित ग्रंथ निर्माण हेतु इत्यादि का वर्णन। ग्रंथ निर्माण में सहायता करने वाले का कथन—मित्र खुश्याल सहित मनलाय। शांति पुराण रच्यो सुखदाय ॥ यत्ता तथा श्रोत्रार्थों के गुण वर्णन। कथा लक्षण, सुकथा और कुकथा निर्णय। स्वयं-पद्मा विवाह वर्णनोपनिधान ॥ (२) पृ० ४५—७० तक—जमनजटी प्रजापति अकंकोर्ति निर्वाण। अमित तेज राज विजे विध्वन विनाश वर्णन। (३) पृ० ७१—९० तक—अमित तेज सम्यक्त ग्रहण करण वर्णन। (४) ९१—११२ तक—श्री सेन इत्यादि भवों का वर्णन। (५) पृ० ११३—१३७—अविचल देव, यलमद्र नारायण तथा नारद का वर्णन। (६) पृ० १३८—१६८ तक—अनन्तवोर्य का स्वप्न (नरक) भग्न तथा उसके बल से इन्द्र-पद प्राप्त होना। (७) १६८—१९८ तक—अनन्तवोर्य सम्यक्त लाभ तथा वज्रायुधचक्र-पद भव प्राप्ति वर्णन। (८) पृ० १९९—२३१ तक—वज्रायुध, रुद्रायायुध तथा अहमिन्द्र पद-प्राप्ति वर्णन। (९) पृ० २३२—२६७ तक—मेघरथ का वर्णन। धनरथ के विरक्त होने तथा मेघरथ के राज-भोग का वर्णन। (१०) पृ० २६८—३०२ तक—मेघरथ वैराग्योत्पत्ति तथा दोसा ग्रहण वर्णन, मेघनाथ सुत राज ग्रहण वर्णन। दृढ़रथ तथा अन्य सात सौ नृपतियों के साथ मेघरथ का जिन मत साधन करना। (११) पृ० ३०३—३६८ तक—अपने भ्राता दृढ़रथ सहित मेघरथ का धार तप साधन करना, जप, तप, तथा अनशनादि धत धारण करना। जिन शांति-गर्मावतारा-मिधान वर्णन। (१२) पृ० ३६९—४१६ तक—रानी का सान्द्र स्वप्न का देखना और राजा से उन स्वप्नों के फलों के संबंध में प्रार्थना करना। राजा का फल कथन करना, और उन सारहों स्वप्नों के फल स्वरूप उनके गर्भ से तोयैकरोत्पत्ति तथा उनके महर्षों का कथन। तोयैकर शांतिनाथ का गर्भ से जन्म लेना और देवादि द्वारा उत्सव मनाया जाना। (१३) ४१७—४६० तक—श्री शांतिनाथ जन्माभिषेक तथा राज्य नक्षत्रों और उनको कोटि का वर्णन, उनके सात चैतन्य और सात अचेतन्य रत्नों का वर्णन, उनके सम्मुख नाटकादि द्वारा मनोरंजक कार्यों का होना। (१४) पृ० ४६१—५१२ तक—जिन दोसा निःकमेण कल्याण वर्णन। हस्तो घोड़ा इत्यादि सांसारिक वस्तुओं के मिथ्यात्व का विस्तृत वर्णन। सालह वर्ष तक शांति जिननाथ का हृद भस्तक रहना। पुनः सविकार घातक कर्मों का घात करना। शांतिनाथ को कैवल्य—ज्ञान होना।

(१५) पृ० ५१३—५६८ तक—जिन छानोत्पत्ति, धर्मोपदेश विहार समय निर्वाण गमन निरूपण, जिनके पिछले भवों का अति सूक्ष्म बलेन । ग्रंथ समाप्ति, कवि दैव्य बलेन । ग्रंथ निर्माण हेतु :—

पुण्य चरित विलोकिके, हम कवि बुद्ध सयान ।

भाषा ग्रंथ प्रवर्ध यह, रच्यो अनंदित बान ॥

X X X X

मो आनंद अगार धरि, तजि कलमल अधिकाहि ।

भाषा रच्यो प्रमोद धन, रसतरंग मन नाहि ॥

ग्रंथकार का परिचय—देश महा मालव सुभग, काठल सदित सुदार ।
तामे नगर नरेवा जुन, 'देव—दुर्ग'—अचिकार ॥ मल्लनाथ मंदिर विषे, रच्यो पुरान
महान । अति प्रमोद रस रोति सो, धर्म बुद्धि उर आन ॥ वासो जयपुर तनो, तो
हर मल्ल कुपाल, ता प्रसंग को पाव के गहो सुपंथ विशाल ॥ गोमट सारादिकन
मै, सिद्धांत नमै सार । प्रवरवोध जिनके उदै, महाकवो निरधार ॥

X X X X X

देश दुराहर आदि दै, सेवाधे बहु देश । रचि रचि ग्रंथ कठिन किये, तो
हर मल्ल मदेश ॥ तिनहो के उपदेश लहि, सेवाराज सयान, रच्यो ग्रंथ सुख पाव
के, हर्ष हर्ष अधिकांश ।

ग्रंथ निर्माणकाल :—संवत् अष्टादश शतक, पुनि चौबीस महान । सावन
कृष्ण वराष्टमी, पूरा कियो पुरान ॥

स्नान—अति अगार सुख सो बसै, नगर 'देवगढ़' सार । श्रावक बसै महा-
धनी, दान पूज्य मतिधार ॥

नृपति बलेन :—ता नगरी में भूपति, सरवीर ब्रोभेष ।

करी राठवपुर पुन्य सो, सावंत सिंह नरस ॥

ता सावंत नरराव के, द्वै श्रावक मुखतार । इक राघव रघुनाथ पुनि
धर्म घुरंघर सार ॥

No. 385(a). Sewāsakhī ki Bānī by Sevāsakhī of Vrindāba-
na. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—6½
× 4 inches. Lines per page—7. Extent—349 Anushtupa
Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768 Place of deposit—
Paṇḍita Rāma Bali Dubay. Village Bhiṭaurā Lakhān, Post
Office Jaidpur, district Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री राधावल्लभो जयति ॥ यो अथ वैराग्योद्दोषन लिख्यते ॥
 (यो) करि सत संगति चाह मन सकल कपट तजि मोह ॥ श्री राधावल्लभ नाम
 रटि सखी भाव पति छोड ॥ १ ॥ अचह चाह हरि भक्ति बिनु जानै दुख को रूप ॥
 सेवा सखि हरि आसरे दोउ सुख परम अनूप ॥ २ ॥ मन को सब मन मैं ग्रहे बुधि
 के बहुत विचार । चित्त वासना पिय मिलै सेवा सखि निरधार ॥ मनपरीक्षा ॥
 अति दुर्लभ सुलभ भयो मानुस देही पाय ॥ भजले राधावल्लभहि जन्म जो बोतो
 जाइ ॥ १ ॥ बाल कुमार पव नंदा किसोर जुवा जवा को देह ॥ सेवा सखि दुख
 सुख भोग है अंत खेह को खेह ॥ कर्मजान इन्दी दसौ मिले देह को नाम ॥ इन्है
 भिन्न कै देखिये नहि नामो को नाम ॥ २ ॥ मन बुधि चित्त ग्रहंकार जो ज्यो को
 इन्दो होइ ॥ इन्है भिन्न कै जानिये ज्यो नाम नहि कोय ॥ ३ ॥ गुरु दोषिका—सर्व
 परे गुरु जानिये गुरु पर पौरन कोइ ॥ सब मिलि गुरु को नमत हैं गुरु नाम अस
 होइ ॥ गुरु गोविंद नारायन गुरु हरि राम कृष्ण गुरु कोह ॥ गुरु के सद प्राधोन
 मन गुरु चरणन्ह चित लोन्ह ॥ २ ॥ नाम अनेत नामी अनेत दह भवसिखु
 अपार ॥ बिनु गुरु बड़े भव धार में गुरु गति उतरे पार ॥ ३ ॥

End—शरील सांगठा रुध्र दोहरा मंगल छन्द विश्राम । महामंगल परिचय
 लिप्यते ॥ सेवा सखि सहजानंद के लखि सहज संग विद्वान ॥ सहजानंद मग्न
 अनुकपन यह अरिल है ॥ हाय जाग्रत सपियाइ सुनि कै जो ग्रहै ॥ सत गुरु के
 उपदेश तारतम मानियै ॥ अलौ हाँ हाँ सेवा सखि सहजानंद के सहजा ही
 जानियै ॥ राम गौरी ॥ शरीरी मुरली बजाइ हरो मन मोहन गुरु आनमन सुहाइ ॥
 वन सुनत सुभि भई है कंत की छटो जग चतुराई ॥ छटो लोकलाज कानिकुल
 तन पट तजि उठि धाई ॥ प्रेम भगन सेवा सखि बिरहनि जिन पिय को सुधि
 पाई ॥ १ ॥ राधाकृष्ण राधाकृष्ण कुंज विहारो गोपीनाथ गोपाल मोहन वनमालो ॥
 मुरलीधर पोतावर धारो ॥ त्रिमंगी मूरति आनंदकारो मोरमुकुट कुंदल छवि
 भारो ॥ चितवन में मोहो वृजनारो ॥ नंदनंदन वृषभान डुलारो ॥ जुगल
 किशोरों पर सेवा सखी वारो ॥ १ ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—वैराग्योद्दोषन ॥ सतसंग और
 सखिभाव को भक्ति का आदेश । नाम प्रताप । शरीर के पंच तत्त्वादि से बचने
 का बखैन । इन्द्रियों का बखैन । ईश्वर द्वारा गर्भ में रक्षा होने का बखैन । सेवा
 तथा भक्ति को महिमा । प्रीतम के अनुराग बखैन । अभिमान त्याग कर ईश्वर
 भक्ति करने का आदेश । माया का बखैन । जोव ईश्वर संबंध बखैन । ग्रहंकारादि
 रागों का बखैन । नाम रहने का आदेश ।

(२) पृ० १५—२२ तक—मनकी परीक्षा । युवादि प्रवृत्तापे । मन, बुद्धि
 चित्त ग्रहंकारादि को बूथा बता कर भगवत भजन का उपदेश । मन की प्रवृत्तता

का वर्णन । मन को स्थिर करने के नियम । सेवा में मन को देने का लाभ । मन देने के कारण हरिण की दशा । पिय की आज्ञा मानने का आदेश ।

(३) पृ० २२—३२ तक—गुरु दीपिका—गुरु करने का लाभ: गुरुज्ञान की प्रधानता । नित्य, धनित्य, निमित्त, और गुरु को पकता । गुरु के लक्षण, गुरु के सात स्वभाव, शिष्य के लक्षण, गली गली फिरने वाले गुरुओं को बुराई ॥

(४) पृ० ३४—४२ तक—प्रकरण—एक ब्रह्म का वर्णन । सहजानन्द का दो ब्रह्म-कथन: ठकुरानों के ध्यान रूप होने का वर्णन । सहजानन्द की परिभाषा, माया तथा ब्रह्म का रूप, पिय प्यारी द्वारा हो उच्चार होने के कारण सखी भाव की महत्ता का वर्णन । श्रंग श्रंगी श्रंगपिय की भक्ति ।

(५) पृ० ४३—४५ तक—दूसरा प्रकरण—जागृत चोन्हने का वर्णन, कार्य कारण तथा कर्त्ता का वर्णन । वाम दाहिने श्रंग का वर्णन । सखी सेवा का महत्त्व ।

(६) पृ० ४६—५८ तक—महामंगल पञ्चिख—सहजानन्द के श्रंगों का वर्णन । सहजानन्द की शक्ति, दाहिने तथा वामे श्रंग का (पिय, प्यारी) का वर्णन । राधा के श्रंगों की सेवा करने वाली सखियों की महत्ता । ईश्वर के सब में होने का वर्णन । रास इत्यादि का वर्णन । बाये तथा दाहिने श्रंग की सखियों का प्रभाव । कृष्ण के रूप में सखी का मिल जाना, सेवा को बढ़ाई ॥

(७) पृ० ५९—७१ तक—दाहिने बाये श्रंगों से नृपि का उत्पन्न होना । साढ़े तीन कोटि सखियों तथा उतनी ही उनको सहचरियों सहित हास-विलास तथा लीलादि का वर्णन । हित हरवंस जो की उसका परिचय होना । (गद्य में) ।

(८) पृ० ७१—८४ तक—मंगल चारती—सब मंगल पदार्थों के साथ ही साथ कृष्ण की चारती कृष्ण की मूर्ति इत्यादि का वर्णन करके उनपर अपना भक्ति प्रदर्शित करना । अंत समाप्ति ।

No. 385(b). Vivekasara Surata by Sewasakhī of Vrindā-bana. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushtup Ślokae. Appearance—Old. Character—Nagari. Place of deposit—Raja Pustakālaya, Bhingā Raja, Baharāich.

Beginning—अथ विवेक सार सुरत लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरु ज्ञान सुंदर वर वंदी इनके पद । जिह मोहि दीन्हो धर्म वैष्णव की भक्ति ह्वार ॥ १ ॥ सर्व सिरोमणि भक्ति धर्म है इन समान नहि जान । इनकी महिमा की कहै जाके

वसि भगवान् ॥ २ ॥ सर्व परे भगवान् ते इन् पर और न कोई । कार एक धनैक विधि लीला ताको होय ॥ ३ ॥ कथा कथांतर कल्यांतर में चित्त ते वस्तु विचार । सर्वान्ते ते जानियै जासो सर्व बिस्तार ॥ ४ ॥

End—सेवासधी जगायऊ जागो नयना सोय । परखे मूल स्वरूप की जानु जागनो होय ॥ विनु जानै चौरासो मादो । भूली सधी खेलते तादो ॥ चौरासो माया खेल में खेलत सखि जिय संग । लीला शक्ति पेलाबही सो सुरति मन के रंग ॥ सो मन अब सधि सापन होई । माया खेल खेलारो जोई ॥ जब लगि हम नहि सुरति जाना । दुष में खेलत सुख के माना ॥ दुष सुख को यह खेल है देखा खेल बनाय । जागो नयना नौद नद मिलि सुरति सेवा सधि भाव ॥ इति विवेक सार सुरति संपूरनम् ॥

Subject—गुरु वंदना, धर्म महिमा, सृष्टि उत्पत्ति—पृ० १—३

राधा महिमा पृ० ३—४ ।

आइ वचन राधा कृष्ण का पृ० ५—९ ।

लीला माहात्म्य—पृ० १० । इति ।

No. 386. Sidhadāsa ji ki Śabdāvali by Sidhadāsa of Haragāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—9 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—600 Anush-tup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1800 or A. D. 1743. Place of deposit—Mahanta Gurūprasādaji, Haragāma, Post Office Parabatspur (Sultanpur).

Beginning—श्री. गलेशायनमः ॥ साधो ॥ श्री जगज्जीवन जग गुरु दूलन दानि उदार सगुन सब दित जानि सुभ सिद्धा नाम अचार ॥ १ ॥ नयन के भीतर सैन है मयन कोटि छवि बासु ॥ तामु चरन तर मन बस्यो सिद्धा निरपि हुलास ॥ २ ॥ नाम सैन है राम को दोष संत करि जाना । ताहि नयन बिच रैन दिन करि सिद्धाम निधाना ॥ ३ ॥ बजै रैन दिन बासुरो धरै कदम तर ध्यान ॥ सिद्धा ताको का करै करम कोट परमान ॥ ४ ॥ सिद्धा भव जल जग सर तामे माया जार ॥ मोन जीव सब जानि कै पेलत काल सिकार ॥ ५ ॥ नाम भजन ते जीव यह जल स्वरूप होइ जाइ । जाल बीच पावै नहि काल देखि पछिताहि ॥ ६ ॥

End—सिद्धा यहि संसार में कंत निरपि पहचानि ॥ यहि निरंतर पास हो अपने मन डहु जान ॥ सिद्धानाम त्रिकिर ते चौसठि घड़ो बिताउ । कंत दरस को लालसा क्षिण क्षिण बाउज ठाउ ॥ विरह सत्य यह पोयो पहर जवनपुर कोन ।

सिद्धा विवहि पहिचानि निज चरनन तर सिर दीत ॥ अष्टादस सै समै दस
बारा मास पुनीत ॥ सिद्धा देवत आयु में परे पठ आपत मोत ॥ इति विरह सत
सम्पूर्णम् ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—साफ़ी—देहों द्वारा शिक्षाये ।

(२) पृ० २६—९४ तक—शब्दावली—नाम को महिमा का ज्ञान ।

(३) पृ० ९५—११४ तक—शब्द साफ़ी—कवित्त सवैयाँ द्वारा हरिनाम का
उपदेश । विरह, सत-गुरु ज्ञानादि कई विषयों का रूपकों द्वारा मनोहर बर्णन ।

No. 387. Ānanda Rasa by Śilamaṇi. Substance—Country-
made paper. Leaves—26. Size—6 × 3½ inches. Lines per
page—14. Extent—256 Anuṣṭupa Ślokas. Appearance—Old.
Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1949 or
A. D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Sīmha ji
Thākura, Raisa, Rehnā, Post Office Bauri, District Baha-
rāich (Oudh).

Beginning—ओ गलेशायनमः ॥ देहा ॥ सरसत वरसत रंगवर रामनाम
सुख बंद शोलमनो जन जान है सुगुल वरन सुग चंद ॥ १ ॥ रामनाम रस रूप हैं
रस वरगत वरवेद भावमेद शब्देद बहु नामो नाम अमेद । २ वत्सल सख सिंगार
रस दास्य शांतमय नाम शोलमनो द्विद में वशै राजिव लोचन राम ॥ ३ ॥
रामनाम वर वरन पर परमतत्व नर रूप रस मूरति माधुर्जमय ईश ईश के भूप ॥ ४ ॥
रामनाम से होत हैं सब रवतार सुरेश शोलमनो परतत्व कवि मनत पुनीत
महेश ॥ सरल सुखद वर वरन सुग विशदर शाल विशाल महिमा व्यापक शकल
जन जन जीवन ग्धुलाल ॥ मधुर मनोहर सुधा से गौहर गरु उदार । अशल
सुतारक ताल भव अद्भुत अगम अपार ॥

End—रसमय मूरति रामसीय को हिय में राजत मोरे हैं । जीवन पाल
किशोर अनुरे मोठे स्वाम सुगोरे हैं ॥ अतिसै रूप अनूप मोहनी अंग अंग रस बोरे
हैं । शोलमनो मन हरन विदेकनि अरुणारे हृग कोरे हैं ॥ इति अरुण रंग सख
सुधा कर राग सख सदाई हैं । परनै प्रीति प्रतीति प्रेम रति अति विश्वास सनाई
हैं ॥ निश्चय ज्ञान स्नेह लगा वपु अतुराई मधुराई हैं । शोलमनो रस सख्य रसीलो
राम रंगोला पाई हैं । दास्य मयानक कहना अद्भुत घोर विभक्त रुद्रा हैं रस
सिंहार सख्य रस वत्सल सांत दास कर मुदा हैं । स्याह अरुण रंग सेन सेत रंग
चित्र शोल मति कुंदा हैं ॥ इति ओ शोलमनो कृत आनंद रस सम्पूर्ण ॥ देहा ॥
मार्गसीप तिथि तोनि दस शुद्ध पक्ष भृगुवार वत्सर तान पुनि गोक्ष कहि जात
गुजबलो अमार ॥ लेखक जानकी शरण संवत १९४१ ॥

Subject—रामनाम की महिमा और भक्त का प्रेम ।

No. 388. Vivekasāra by Śitaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size— $8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—200 Anuṣṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1903 or A. D. 1946. Date of manuscript—Samvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānanda ji Miśra, village Hinangaurā, Post Office Kādipur District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरु गणपति शारदा कल्पति सिव
हनुमान ॥ जग सीतल सुमिरन करै देहु सुमति सतज्ञान ॥ १ ॥ श्री गुरुचरण सरोज
रज हिय धरि पर उपकार ॥ विवेक सार वनन करै सीतल तत्व विचार ॥ २ ॥
तत्व विचार विवेक जुत वेद साख मत्सार ॥ ग्रंथन नाना भांति ते जया सुमांत
अनुसार ॥ ३ ॥ गुरु विषय संवाद वरनत विविध प्रकार ॥ अर्जुन ऊँचीं से कह्यो
कृष्ण यहो निरवार ॥ ४ ॥ गुरु से पूछत शिष्य यह कसो विवेक जो सार । सो
विवेक काको कहो कहो नाथ विस्तार ॥ ५ ॥ गुरुयाच हंस विवेको एक गति
छोर नोर करै न्यार ॥ नौ बेकार पानो तजै छोर हृदय सोद सार ॥ ६ ॥ काम
कोय मद लोम रज तम तृष्णा अहंकार ॥ मत्सर नौ तजि सेत सो पानो जानि
विकार ॥ × × × × ×

End—दयासिंधु दाया प्रभु दोनबेनु सुपदास तासु दास सीतल मनै सदा
चरन कि आस ॥ १७ ॥ सीतल अपरवार गति वेद न पावत पार । निज मति रुम
वरनन कहौ नाम विवेक है सार ॥ १८ ॥ यहि नहि दोऊ बूत को अरु निंदक
अभिमानि । राम अभिलाषो सेत जाति नहि देव हित जानि ॥ १९ ॥ संवत
बोनहस से अचिक होनि पौष बुधवार । असित सतमो कोन तब विवेकसार
विस्तार ॥ १०० ॥ इति श्री सीतलस्य विरचितायां विवेकसार संपुष्पे संवत
१९०८ बाली कै वाकजनै भेद प्रसव मह होई गरइ पाली कै बोले क बाली
जनीह बल मौलि उइ बोले ता सुजन जन मोले तौनो बोले तब कोई घरक अदमी
मोले गइ दवाई कै चारि बोली बोले तब जानी को कोरक मरन भ अपन परार
कहंद देपो लेई ॥

Subject—(१) १—४ तक—विवेकसार कथन ।

(२) पृ० ५—५ तक—नववा भक्ति ।

(३) पृ० ६—१४ तक—ब्रह्म, माया तथा जीव के भेद । रामनाम महिमा
का कथन, जीव प्रवृत्ता विचार । वेदोक्त चार फल और उनको क्रिया ।

(४) पृ० १५—२० तक—वेद का रूपक, द्वादश चम वर्णन । नेम वर्णन ।
तितिक्षा, यज्ञ तथा जप तपादि लक्षण ।

(५) पृ० २१—२२ तक—इन्द्रिय वर्णन ।

(६) पृ० २३—३० तक—पंचतत्त्व, पंच प्रकृति, पंच वायु इत्यादि वर्णन के
पश्चात् रामनाम महिमा ।

No. 389. Dillagana Chikitsā by Sitārāma. Substance—
Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches.
Lines per page—40. Extent—1080. Anushṭup Ślokas. In-
complete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—
Paṇḍita Martāṇḍa Datta, Vaidya, Rāe Bareilly.

Beginning—पृ० ३ से प्रारम्भ । यद्य नाडो-परोक्षा । सुन्दर हाथ कवल
दल नैनो मूर्लशुष्य सुहाई । नाडो को धर तुष्टे वताऊं जानत पंडित राई ॥ पहिले
पित्त समुम्भिये बाला काक गयो फलवेलो । टोका मोर की झोन लई है मृग
गति पाय नवेली ॥ दुजे कफ को चाल कवूतर ठुमुक ठुमुक पग धरने ॥
है सिंगार निपुण सुनि प्यारी कविता क्योकर बरने ॥ वाय तोसरो पलकवान
घौर बांकी मर्वे कमार्ने गति नागिन को प्रीति भामिनो वैद्य शिरोमणि जाने ॥
कबहु मंद चलै कम नाडो कबहु वेग जुहाई ॥ हृदज दोष कंवल दल नैनो ताकी
विधा बताई ॥ चाल चलै तोतर को पथवा लवा बटेर सवानो । सन्निपात
तिरदोष है ताके आई काल निसानी ॥

End—ये नाडुक तन प्यारी तुमने कहे कहां से आई । देख मधुरता पधारन
को सो समुत गयो छिपाई ॥ रत्नज्योति को छानि नौर में डारे अग्नि फोटावे ।
चार सेर जल छानि भामिनो षट पल तेल मिलावे । तेल बराबर सुघर काचफल
घोस लाव सुभ नैनो । धरे अगनि में तेल ५६ जावे छाने सुन सुख दैनो ॥ करके
फोहा × × सो तेल का कुच ऊपर जो परसे । नोबूत दिङ्गलन पियारी
कुच कठोर सो दरसे ॥ ३८ ॥ इति श्री दिङ्गलन चिकित्सायां हट्टी सिंह मुत
सोताराम विरचितायां त्रयोदशो अंगारः १३ पुस्तक लिखी लेखराज पठनार्थ
संवत् १८४६ भाद्वे सुभे भूयात् इति ॥

Subject—नाडो परोक्षा, पित्त, कफ, वायु जुराज, पित्त निदान, उप-
चार, कफ वायु उपचार, साध्य प्रसाध्य लक्षण, मूत्र परोक्षा, प्रथम अंगार
समाप्त । पित्तज्वर प्रतीकार, वातज्वर, वातपित्त, पित्तश्लेष्मज्वर चिकित्सा,
मूलज्वर, स्वेदज्वर, विषमज्वर चि०, ज्वराकुश रस, त्रिदोष संजन, द्वितीय

शृंगार समाप्त । कर्षणूल चि०, सन्निपात उसके मेद, संध्यक, घंतक, कन्दाइक, चित्तघ्नम, शीतांग, तंद्रिक, कर्षक, भग्ननेत्र, रक्तपटो, प्रलाप, जिह्वक, अभिन्यास, सन्निपात की चिकित्सा, तृतीयो शृंगार स०, अतोसार चिकित्सा, वातघतो-सार, पित्त घतोसार, श्लेष्म घतोसार चिकित्सा, वृद्ध गंगावर चुर्च, लेप घतोसार, दाड़िमाष्टक चूर्ण, गृह्याघलेह, गरसरोम । चतुर्थ शृंगार समाप्त, अज्ञोमे विशुचिका चि०, विलंबिकायां चि०, कृमि चि०, हलोमक पांडु कमालिवा पांड रोग चि०, रक्तपित्त चि०, पेठा पाक विधि राज छई चि०—पंचमो शृंगार । कास स्यास चि०, हिक्का प्रतीकार, स्वरमेद चि०, घटचि चिकित्सा, छई चि०, तुषा चि०—षष्ठो शृंगार । मदस्र उपचार, चरण विवाई, दाह चि०, उन्माद चि०, वात-व्याधि चि०, वातारो तेल, पक्षाघात चि०, सप्तमो शृंगार । वातरक्त चि०, अग्निवायु चिकित्सा, घामवात चि०, सूच चि०, अष्टमो शृंगार । वमन करन, जुलाव विधि, पेट चफारा चि०, गुल्म चि०, हृद्रोग चि०, मूत्र कृच्छ्र चि०, मूत्रघात चि०, मूत्ररोध प्रतीकार, पथरी चि०, प्रमेह चि०, पांडु रोग चि०, कंठमाला चि०, स्लोपद कंडु, घणैला साथ चि०, भगंदर चि०, मंद बुद्धि चि०, शीत प्रसूत चि०, दशमो शृंगार । जलोदर चि०, कुष्ट चि०, श्वेत कुष्ट चि०, क्षय रोग चि०, घम्लपित्त चि०, दाद चि०, खाज चि०, पकादश शृंगार । धुदरोम चि०, कंठ रोग चि०, मुख दुर्गंध चि०, दंत रोग चि०, स्याह मिस्सी, घरुण मिस्सी को विधि, दाद चिकित्सा, अघर चि०, कण्ठ प्रतीकार, परवाल चि०, भोजन हारी चि०, घांव वन्हो को चि०, शिरोवर्त्त चि०, द्वादशो शृंगार । स्त्री चि०, प्रदर रोग चि०, भगशूल चि०, भग संकोचन विधि, गर्भ निवारण, गर्भ धारण चि०, स्त्री पसव कष्ट चि०, कुच कटोर करण ।

No. 390. *Kṛishna Datta Rāsā* by Śwādīna of Bilgrāma. Substance—New paper. Leaves—17. Size— $8\frac{1}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—600 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Śrīmān Mahārāja Rājendra Bahādura Sinha Sāhaba, Bhingā Rāja, Baharaich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कृष्णदत्त रासा लिप्यते ॥ दोहा ॥ शिव सुत के पद बंदि क गौरो गिरा मनाव । करत बिनय शिष्यदोन कवि दोजै ग्रंथ बनाय ॥ १ ॥ जे गुरु चरण सरोज रज भंजन लेचन धारि । ते दर्शौ त्रयकाल के कहत पुराण विचारि ॥ २ ॥ छप्पय ॥ ब्रह्म सहित नम खंड चंद्र संवत परि-माने । बहुरि राग रस दीप घातमा शाके जाने ॥ कियो समर नरनाइ विदित

विश्वेन वंशवर । उदित देश परदेश मुजस अस द्वायो घर घर ॥ लीख कवि
शिवदोन विचारि चित करत ताहि वखैन सुख । करजोरि विनय कवि कुल
करौं बिगरो वखै संभारि सब ॥ ३ ॥ दोहा ॥ नाजिम महमूदलो खां बलो मुजान
विचार । दियो इजारे पवधपति सुमन देश शरवार ॥ ४ ॥

End—पायो नवाब जब हुसैन साह । दै बिलत खास वीरा सुवाह ॥
दोना वसाय भिनगा नरेश । भरि रह्यो भूरि आनंद देश ॥ नरनाह बांह
को छांह पाय । जन सधन अभय पुनि वसे आय ॥ घरउमाह मंगल सु
होत । दे रहे आशिषा द्विजन गोत ॥ दोहा ॥ दंत आशिषा भूपतिह
कवि कोविद के जाल । जोझी मंदर मेरु माहि तौझी अचल भुवाल ॥ इति श्री
मनमहाराजाधिराज विश्वेन वंशावतंश भूप शिवसिंहात्मज सर्वजीत सिंह तनुज
कृष्णदत्त सिंह हेत विरचिते कृष्णदत्त राइसा कवि शिवदोन वंदोजन विरलुल
ग्रामो विरचित नाजिम महमूद खलो खां को युद्ध समाप्तम् शुभमस्तु । इति ।

Subject—पार्थना, महमूद खलो खां को नवाब ने शरवार देश इजारे में
दिया, प्रथम कुकरावल में, जो कि लखनऊ के उत्तर एक नदी है, वास किया
फिर बहराइच घाट पर बसे, कलहंसी को बहराइच में जोता और बिलगत ली—
पृ० १—२—पांडे गोड़ा के महमूद खलो से मिल गये और रामदत्त पांडे
भिनगा पर उनके चढ़ा लाये । फिर फरेदा (गोड़ा) में घाये फिर रावतो के
किनारे चौकाघाट पर आये, पीर हनीफ से नौषा (भिनगा) पर घाये,
राजवंश वखैन तथा शासन विधि वखैन । कृष्णदत्तसिंह के चचा उमरावसिंह
का वखैन तथा उनके दूसरे चचा कालीप्रसाद सिंह का वखैन, तथा पृथ्वी
सिंह के पुत्र क्षेत्रपाल सिंह और हरिमत्तसिंह का वखैन तथा उमरावसिंह के
पुत्र सुवराजसिंह का वखैन । क्षेत्रपाल सिंह के अर्जुन सिंह हुए । त्रयोदशी
सोमवार को मोक्षों ने हमला किया । पृ० ३—६ तक राज को सेना को तय्यारो,
दूत का भेजना, युद्ध वखैन, महमूद खलो खां के साले का मारा जाना और सेना
का भागना, राज पश वखैन तथा दीवान का वखैन—पृ० ७ । पुनः युद्ध को
तय्यारो, नाजिम की तोपों का वखैन तथा राजकोश तोपों का वखैन, ७ दिन
तक युद्ध का होना, फिर रमणा (बाग) में युद्ध होना—पृ० ८—१० । नवाब
का पुनः सेना भेजना और नाजिम के भाई का युद्ध करना । गर्भवधियों की
सहायता से युद्ध करना और भिनगा नरेश का भागना । पृ० ११—१४ तक ।
तुलसीपुर के पहाड़ी राजा ने बादशाह को सहायता दी और नंदप्रसाद के
साथ सेना भेजी परन्तु फिर उनके भी हराया । गोड़ा-नरेश ने भिनगा-राज को
मेल करने के लिये पत्र लिखा उस समय गोड़ा में अमान सिंह ब्रिसेन राजा थे
मेल होने पर फैजौ सरदारों के साथ पहाड़ में शिकार खेलने चले गये फिर बंद

घमलो होने से नवाब ने नाजिम को कैद कर दिया और क़ासिमसिंह को राजा बनाया । इति ।

No. 391. *Pingala Chhandobodha* by Śiva Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—8×6 inches. Lines per page—40. Extent—900 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Thakura Jairāma Simha, Village Mirjāpur, Post/Office Mahamudābād, District Sitapura (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ शिव कवि कृत पिंगल छंदो बोध लिख्यते ॥ देहा ॥ श्री गजमुष मुष कहत हो रज हत विबन चमंद । ज्यो गिरीस गिरिजा भजत भजत सकल दुष दंद ॥ चारो चारो देन फल सुमिरन हो के साथ । सोता सोतानाथ गरु रावा राधानाथ ॥ संकर भूपन भूमिघर धवल रूप मति घाम । श्रोपति सैन्द सहसमुष शिव कवि करत प्रनाम ॥ सकल सिद्धि आवै निकट ध्यावत श्री गुरु संभु । नयो नयो नयो परै दिये जुक्ति प्रारंभ ॥ सुमिरि गिरा सेसादि मत करि के बहु विधि सोध । सुगम रोति भाषा रचत शिव कवि छंदो बोध । जो वानो छंदो मई पद्यांसा पहिचानि । होइ जो तासो रहित सो मंचा लोत्रे जानि । ॥ जामे मात्रा वरन की संख्या कोन्हो होइ । शिव कवि पिंगल के मते छंद कहावै सोइ ॥ पद्यावानो द्विविधि कर जाति वति पुनि जानि । संख्या जामे कलवि को जाति सो कहै वषानि ॥ संख्या जामे वरन को वृत्त ताहि पहिचानि । केदारादिक के मते वृत्त छंद सब जानि ॥

End—मोमदीन यजमेर पीर गढ़ संसारै ॥ उपम कहि कै कौन मकनपुर साह मदारै ॥ बहिरापच सलार या खो बढो पेदाई । दिह्यो तोये कुतुप तास की करौ बड़ाई ॥ सुमरै हसन हुसैन जिन कुपुर मारि कोन्हो ध्वजा । मन वचस कर्म स्यहि कहै पंथे पीर मंदति सदा ॥ धकित पान रहै जात सिंधु नहि लहर संभारत फनिपति फन नहि कठत कूर्म नहि वक्र निकारत ॥ षट पद समा सम्यो विमल नरपति नहि सागद ॥ सवितारथ रहिजात वेग समि रतन भारथ ॥ दल मलित घरनि घतंक मय अस उदित टोद्यतुत जब जुलफ केर करि कै समार है सर करार दुदुल चढ़त कनकधन परनग जाड़े सब जवाहिर भलक मोतियों वरिछत लता है विराजै मुकुट पर नूर का ठज लालीषा भाल ऊपर ॥ इति श्री शिव कवि कृत विबन छंदो बोध समाप्तः ॥ श्री संवत् १९२१ वैशाख मासे अधिक मासे शुद्ध पक्षे तिथी पूर्णमायाम चंदवासरे १६ पुस्तकं लिप्यं दिग्भनाथ पांडे मोचके ।

Subject—छंदों का वग्नेन है ।

No. 392. Singāsanabatisī (Vikramabatisī) by Śivanātha of Asanī (Fatahpur). Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size— $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—7. Extent—776 Anushtupa Ślokas. Appearance—New paper. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1861 or A. D. 1804. Date of manuscript—Hijari 1256 or A. D. 1878. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विक्रमबतीसी लिख्यते शिवनाथ कवि कृत ॥ दोहा ॥ गौरीनंदन गजवदन भाग्यवंत गुन माल । कृपा करो मो दोन पर वरनो ग्रंथ विशाल ॥ १ ॥ बानोजू दानो सदा मानो सकल जहान । तोनो पुर रानो कहो मोहि देत वरदान ॥ २ ॥ है पेसा बलरामपुर दाता जाता लोग । पूरबदिशि विजुलेश्वरो दूरि करै तन शोग ॥ ३ ॥ नदी रापतो कोस भर उत्तर दिशा मुदात । देखै ते पातक कटै पुन्य अधिक सरसात ॥ ४ ॥ सात कोश पटनेश्वरो राजै दिशा इशान । अवय पचोसै कोस है दक्षिण को परमान ॥ ५ ॥ तवन सहर में भूप हैं नवल सिंह जनवार । तिनके द्वै सुत दानिया कवि लोगन पर प्यार ॥ ६

End—इति श्री सिंहासन बतीसी मुकनल पुतरो कथा द्वात्रिसमः समाप्तः ३२ श्री महाराजकुमार श्री मैया अर्जुन सिंह हेत कवि शिवनाथ विरचिते अर्जुन प्रकास ग्रंथ समाप्तम् ॥ दोहा ॥ भाषा कौन्ही जानिकै अर्जुन सिंह के हेत । बानी संस्कृत में रही सुख कथा सिरनेत ॥ महापात्र शिवनाथ कवि पसनो बसै हमेश । समा सिंह को सुत सही सेवक चरन महेश ॥ जोरों में कर कविन्ह सो चूक परो जो होइ । ताको देखि सुचागियो अरजो जानो सोइ ॥ इति श्री सिंहासन बतीसी समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धिस्तु श्री महाकाली देव्यैनमः श्री सरस्वत्यैनमः ॥ सर्वं देवायनमः । सन् १२६५ साल श्री ।

Subject—प्रार्थना व राजवंश वग्नेन—पृ० १—२ । विक्रमादित्य-उत्पत्ति कथा, गंधर्व का इन्द्र के श्राप से लोक में घाना, भर्तृहरि और विक्रम २ पुत्रों का जन्म भर्तृहरि व विक्रम दोनों का क्रम से राज पाना—पृ० ३—११ तक । राजा भोज का सिंहासन पाना—१२—१४ । प्रथम पुतलो पंज मंजरी की कथा—१५—१६ । वज्रावती पुतलो और जयवंती की कथा, पृ० १७ । चंपा, मंजुषापादि की कथा—१८—२३ तक । रोषा, कपिलावती, विचित्रा की कथा—२४—२९ तक । मदन सेना, मदपिबरी, गंगा की कथा—३०—३१ तक । रतन मंजरी,

मानवतो, चन्द्रमुखी की कथा—३२—३५ तक । चन्द्रमोहनो, कमलावती, धनं-
ध्वजा की कथा—३६—३८ । मंगलावती, सुमद्रा, सुभग पित्रो की कथा ।
३९—४० तक । चंद्रिका, कमलसुधि, दुतोही की कथा—४१—४२ तक । रूप
सागरी, नवमेधा, चंद्रकला, विचित्रा की कथा—४३—४७ । घोषा, सोम पित्रो,
मुकनल की कथा—४८—५१ तक, कविवंश वर्णन—५२ पृ० । इति ।

No. 393(a). *Rasa Brishṭi* by Śiva Nātha of Puwaya, Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6
inches. Lines per page—50. Extent—1,535 Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—
Pandita Avadhiesha Panday, Village Khamahariha, Post Office
Baranāpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ रस वृष्टि ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥
श्री गणपति पद वंदि कै उर धरि शिव सुप धाम ॥ शारदादि महिदेव कवि
करि करजोरि प्रणाम ॥ सब मिलि मोहि कृपा करी देहु विमल दिव्य दृष्टि ॥ राधा
हरि शृंगार सुप कियो चढ़ी रस वृष्टि ॥ बारिज नैन सोई एकई रदन जाके
सुपमा सदन सो सहाय करि सति के * ॥ सब सुपसागर उजागर गुनाकर है
बुद्धिबर नागर देवैया शुभ गति के । विमल करन ज्ञान ध्यान धरि शिवनाथ संकट
हरण ये चरण गणपति के * ॥ दारिद्र्य दहन सुरतक को ग्रहण सोई भूपक बाहन
विद्वगन पलमति के ॥ ३ ॥ जे वाणो गुन धानि मातु सब हानि करनि तुव ॥
जे संविका भवानि दानि कल्याण करण भुव ॥ जयतनाम तव दास पास संतोष
ज्ञान ध्रुव ॥ बंछित फलदातार सकल संसार चरण ध्रुव ॥ चारि पदारथ कर
बसे देवि दरिद्रादि नाशनो ॥ करिय कृपा शिवनाथ पर विदित बल्लपुर वासनो ॥

End—अथ कृष्ण जू के शांत रस वर्णन ॥ दोहा ॥ मार कछू न सोहाय पद
एकहि रस अनुराग ॥ सो सम रस बरनत सुकवि उर उपजत वैराग ॥ सबैया ॥
दाहिम दापन ऊपन भूपन मापन चापन को विसरई ॥ कंदन बंदन मंदन बंधन
चंदनि चंपकि चंद निभाई ॥ जो अयरा मनु भावब चापि लगी रद लाल प्रेमाल
मिठाई ॥ तादिन ते शिवनाथ उठाई उठाई चरो वसुधा को सुधाई ॥ राधे जू के
शांत रस ॥ कवित ॥ जादिन ते पोरौसो पिछौरो भोढ़े देख्यो तुम्हे तादिन ते बिना
देये पोरौतन परि गई । प्रेमनि प्रेमोठो सो संगारन को ठपे ताहि सपिन सो बोलि
चालि पेलिबो विसरि गई ॥ लगी अकजकी बकबकी टकटकी लाल मूरति
तिहारो प्यारो प्राशन मे भरि गई ॥ भासन बसन वास चंदन ते चंपक ते चन्द्रमा
ते चांदनी ते चागुनक जरि गई ॥ काम कोष लोभ मोह दंभ नित भाष्य है ॥

धामुण कहानी कहै चावै पड़े रस को ॥ करै ततबोर धोर नेक ना धरत डर
बिषय को बढ़ाई करि भावै नर जस को । साधनते चरचा न करै री जातै हरे
अथ बोलत कुबाल वाक जाई पाप बस को । रसना दठोली हठ छोड़ि शिवनाथ
कवि कबधी परैगा तोहि रामनाम चसको ॥

Subject—इसमें नवरस, हाव-भाव, नायक नायिका-भेद आदि का वर्णन है । उदाहरण में श्री कृष्ण और राधिका का प्रेम वर्णित है ।

No. 393(b). *Rasa Rānjana* by Śiva Nātha. Substance—Country-made paper Size—24×7 inches. Lines per page—48. Extent—72 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thakura Nannihāla Siphā, Kanthā, Unāo.

Beginning—अथ रस रंजन सिंगार आदि नौ रस को ग्रंथ शिवनाथ कवि कृत से संप्रह कुछ करत है । अथ तोनौ नाइका को भेद ॥ दोहा—त्रिंवांछि महामाया भई तीन भेद परकास । स्वोया परकोया कहौ मुरजोषिता विलास । तोनी के भेदनि रहे तोनि लोक परिपूरि । इनहो से उपजत जगत यहो सजोवनि मूरि ॥ २ ॥ स्वर्ग मनुज पाताल फल तोनी को जिय जानि । देव मनुष अरु नारको जीव तोनि मन मानि ॥ ३ ॥ सत गुन रज गुन तम गुनी तोनी के तन जानि । सेत लाल अरु स्यामहू रंग किया हू मानि ॥ ४ ॥

End—सवैया—सुवती गन मे ठट कूप पै ठाढ़ो जबै नंदलाल पै दोठि करै । उत्साह सो बोलि उठै हांस हाथ सहेलो के हाथ धरै ॥ सब लोगनि को तजि लाज तहां निज नाह तिहो दिसि लै डगरे । भरिके धरिके अपनी नगरो खरी और सखीनि को पानि भरै ॥ २ ॥ घाटी गांठि सठ नायक में यथा—विहंसनि मनसा कर्मना चितवनि वाचा चाल । चातुरता सो चातुरी घाठ गांठि पे लाल ॥ १ ॥ हे लाल ये तिहारे संग में घाठ गांठि जे गांठि गंठोली नाइका होइ तिन सो तुमसो ठोक जोर बनि है ॥ हम गंठोली नाहो हैं ताते हम से तुम से नाहो बनैगा जारो ॥ अनभिज नायका को सवैया—

नारि कछु दिन को अरु आय बहिक्रम योगिहो होई ।

काम को भेद न जाने कछु डुल ही तन हरे प्रतिक्रम गोई ॥

रैन दिना लरिकान को संगति खेलन की रहै खेलन कोई ।

धारन जानि मुजान कहै अनभिज मनोहर नायक सोई ॥ ३ ॥

Subject—नायक के तीन भेद वर्णन । ३ लोक, ३ गुण, ३ देव, ३ कर्म वर्णन । स्वकोयादि वर्णन का दोहा वारन कृत रसिक विलास से वर्णित । उत्तमा, मध्यमा, अधमा नायका वर्णन । पृ० १

मुग्धा नायका वखैन, हाव-भाव-लक्षण वखैन, उद्दोषन व आलंघन वखैन, पाठ स्थायी भाव वखैन, चेष्टा वखैन, दृष्ट नायक में पाठो गीति वखैन—पृ० २

No. 394(a). Amarakōsha Bhāṣhā by Śiva Prasāda Kāyastha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—137. Size— $13\frac{3}{4} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—22. Extent—3,740 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1874 Samvat or A. D. 1817. Date of manuscript—Samvat 1876 or A. D. 1819. Place of deposit—Bābū Padamabaksha Simha Lavedpur (Bhingā), Baharāich.

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ वंदौ ओ गुरुचरन जुग हरन सकल भव प्रास । जा जाने सुर सिद्ध मुनि कियो ब्रह्म में वास ॥ १ ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु सिव गुरु गणेश गुरु राम । गुरते हुजो और नहि सहित शक्ति अमिराम ॥ २ ॥ ताते गुरु पद वंदिये भव बारिध को पोत । पोत सरित तरिवो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा कियो लोजै मुकवि बिचारि । सुरवानो बुध लोग को भाषा प्रबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक बहु ग्रंथ में है पहिबो पति क्लिष्ट । ताते द्वै पति सरल लपि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चौपाई में दोहरा ये द्वै छंद प्रसिद्ध । हौं यादो में ग्रंथ किय है दोहन को वृद्धि ॥ ६ ॥

End—अमर तोसरे कांड में आठ वर्ग को देखि । चारि वर्ग भाषा विषे आद्यत काज विशेषि ॥ १ ॥ सो में भाषा करि कह्यो दोहा छंदहि माह । भाषा विषे प्रवीन सो पहिदै जो करि चाह ॥ २ ॥ चारिवर्ग जो लिंग के भाषा में नहि होइ । सो पुंस नपुंस कहि इखिन पुंसक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहि करो नाम-भाव को काज ॥ संस्कृत शब्द जु होत हैं आद्यत जे ० व काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषे बिन काज के पैंपि । ताते छोड़ौ चारि ये स्वार्थ रहित को देखि ॥ ५ ॥

पैंपि भासे शुद्ध पक्षे तिथि पूर्यमास्यां विवस्वदासरे शिवचरेण लिखत सम्यत १८७६ ।

Subject—प्रार्थना व निर्मोखादि वखैन । स्वरादि कांड, प्रथम सर्ग वखैन—पृष्ठ १—२९ तक । पर्वतादि औषधि नदी वृक्षादि नाम तथा सिद्धादि जीव संज्ञा वखैन—पृ० ३०—६० तक । स्त्री वर्ग और रोगादि नाम वखैन, शरीर नाम, गहनों के नाम, सुगंधित वस्तुओं के नाम, यज्ञ वस्तुओं के नाम वखैन । पृ० ६१—८३ तक । पालतु जानवर, राजा, व्यवहारिक वस्तुओं तथा कारखानों के नाम वखैन । पृ० ८४—१०० तक । नाव के अंगादि नाम, रंगों के नाम, सुवर्णादि के नाम,

शराव, जुवा भादि व्यसनों के नाम द्वितीय काण्ड—पृ० १०१—१०२ तक । विशेषणादि ४ वर्ग का अनुवाद वनेन । पृ० ११०—१३७ तक । इति ।

No. 394(b). Vaidya Jiwana Bhāshā by Śiva Prasāda. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10½ x 5 inches. Lines per page—11. Extent—600 Anushtupa Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा—फागुन सुदि को पंचमी गुरु वासर सुभ पाइ । शिवप्रसाद भाषा रचत लेलिम राज बनाइ ॥ इलोक एक प्रति भाषा में छंद एक है ॥ छंद मत्तगर्द सुंदर मात सुभावहिते भर प्रीति रमा हिय मात्र रुदाई । घाम यहै किमि स्यामल देत सुमंगल को सबहो कह भाई ॥ रक्त सरोवर से पद लीलहि राखत है यह वेदन गार्इ ॥ बंदत हैं हर मौलि जटा करि गंव तरंग सु निर्मल तराई ॥ पुनर्वथा ॥ घाम सबै महरत्न सुदो सत द्रष्टि सदा सुख कवि लिखोई । श्रंग सुसत सुधाम यहै यस पाप यठारह वाहुते होई । सो शिव भक्ति भजे करि भक्ति खरी शत पाद्य भयो एक रोई ॥ हे श्रुत अश्वनि तो परदक्ष दनोदत्त सर्व सुधाधर सोई ॥ २

End—कृप्य छंद ॥ वेद प्रथर्वन वाक्य रहा जो काल विचारो । कहे परम परमान घनंतरि केवल भारो ॥ मरजादा जो गान दिवाकर पंडित जाने । शशि से प्रगथ्यो पुत्र सुधानिधि सम अनुमानो ॥ अति बड़ी काव्य जिन प्रगट किय समो नृपति भूपन गनित । वह तिया उक्ति जीवन व पद लेलिमराज सुकवि मनित ॥

इति श्री वैद्य जीवने लेलिमराज कृत वैद्य शिवप्रसाद काव्य भाषा विरचितार्थ सप्तमोक्तासः ॥ समाप्तम् ॥ इति ॥

Subject—प्रार्थना छंद १—६ तक । वैद्य-लक्षण, ज्वर का काढ़ा, सन्नपात का काढ़ा, तिजारी घोर चौथिया का काढ़ा, शीतज्वर, विषमज्वर, ज्वरप्रतिकार छंद ७—७८ । अतोसार ज्वर, महानंगाधर चूने । संग्रहणी प्रतीकार । छंद ७९—१०५ काम स्वास सतिकादि प्रतिकार । छंद १०६—१४७ । छंदि रोगान्त कफादि प्रतिकार । छंद १४८—१९२ । मदन उत्पात प्रतिकार, अतिकृशता, रति पुष्टि, विश्वताप-हरन, अतोसार, पंचासूत पर्यंटी रस, विस्वासिनो वल्लभ रस । छंद १९३—२१६—इति ।

No. 395. Kakabarā by Śiva Prasāda of Saraiyā, Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8 x 6 inches. Lines per page—18. Extent—90 Anushtupa

Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Gangādina Iswari, Village Udawāpur, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ककहरा लिख्यते ॥ सहर सरीसो वास करो जगवाजनी बजारा । सिवप्रसाद गरीब के एक रामनाम प्रधारा ॥ अपने अपने कछु ना चले सतगुरु होउ सहाय ॥ चौपाई ॥ कका कानो जानु सरीरा । गुरु उपदेश ते करुमन धीरा ॥ कबहुक बोला वास कर भाई । गुरु उपदेश वसै तह जाई ॥ खवा खरच करो दिन थोरा । चागे का कुछ होइ उजोरा ॥ वादि गया दिन आवहि न चेता । योज ऊसर ले बोवऊ पेता ॥ नया गरबित भयऊ अचेता । तासे चिरिया चुनि गई पेता ॥ बहु प्रकार सब विधि समुझावा ॥ तबहुं न मूढ़ जान कछु भावा ॥ अघा घरहि परो सब मूला । बिनु गुरु ज्ञान फिरै जग भूला ॥ जो तुम सार सब पहिचानौ काहेक इत उत भटका मानौ ॥ दो० ॥ चरन प्रसे दस साहस वारत गहिरे कुंड अरधनाम जब टेर करो परकरि निकारे सुंड ॥

End—अपने जन जानिय प्रभु मोहि राखिय सरना गयो बातो मंगल चार जुग जुग देहु मैं वर मांगती ॥ जेहि नाम मनसा धयत धरो कछु काहत धीर गुन पारसी ॥ ग्यान सकल अपभुत मारग दोन कर मोहि पारसी ॥ सिव प्रसाद गुरु चरनन परे आधीन होई ईश्वर भग ते जेहि जल्प होइ सांचित टिहु मत राम गुन सोइ त्रासते ॥ दो० ॥ सब संतन की दया ते लिपा ककहरा गाइ । भूल भटक जो होइ कछु सतगुरु सेठ बनाय ॥ लालन की यह दाट है मला कहै कोइ कूर । तापर चित ना दोजिय अपुरा है भरपूर ॥ सत गुरु हंन काज कै दोना । प्रमो सजीवन हंसा लोना । दुष दस मारग को गति पावै । छिन में आवै छिन में जावै ॥ सिवप्रसाद चरनन के चरे । राम रसाइन गिये सबेरे ॥ दोहा ॥ संत रंगोले राम हैं राम रंगोले संत ॥ सिवप्रसाद रंगोले संतन चरन परसत गुरु कोन मर्हत ॥ इति श्री ककहरा सिवप्रसाद कृत संपूर्ण सुभ मस्तु दसवत । रघुवर दास संवत १९२४ पगहन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीया शुक्रवासे ।

Subject—ककहरा में उपदेश के दोहे और सतगुरु की महिमा तथा उनकी सेवा का फल वर्णन है ।

No. 396. Kṛiṣṇa vilāsa by Śivarāja Mahāpātra—Substance—Country-made paper—Leaves—140. Size—9 × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—1.417 Anuṣṭupā Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date

of Manuscript—Samvat 1800 or A. D. 1742. Place of deposit—Raja Bhagwān Baksha Simha, Raja Amethi, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—पृ० ९ से—तत्र मुग्धा लक्षण ॥ दोहा ॥ नूतन जीवन को भूलक जा तिय के तनु होय ॥ ताको मुग्धा कहत हैं कविवर पंडित सोय ॥ यथा ॥ खंजन को सुखरई कछु विन खंजन नैननि आनि दर्ई है ॥ पूरन चन्द की चार कछु मृग को छबि सोभित याज भई है ॥ आप भई उर घेरे मट्ट गति मंद गयंदनि को जो लई है ॥ मैं महोपति जीवन की बसिबो तिय के तन सोख दर्ई है ॥ दोहा ॥ मुग्धा के दो भेद ये कविजन करत बिबेक । एक कहत प्रजात है ज्ञात यौवना एक ॥ तत्र प्रजात यौवना लक्षणम् ॥ दोहा ॥ निज तनु यौवन पागमन जो नहि जानै नारि । ताहि कहत प्रजात है लक्षण सुकवि बिचारि ॥ यथा ॥ सवैया ॥ जाय जनों सो कहे घरि कै यह कैसो कछुक उपाधि भई है ॥ रोजहि रोज बढै उर में दिन डैक सौं रा यह रोति लई है । बात कहे ते हसौं तुम्हरो यह तोहि दई किन सोख दर्ई है ॥ नाहि करै कछु याको इनाजहि आपने काजहि भूलि गई है ॥

End—लोजै सकल बिचारि जो बुधियल करि करि चेत ॥ कह्यो है में संक्षेप सो—बालबोध के हेत ॥ वनौं नहीं जहं बर्नेने लक्षण लक्ष्य बिचारि । कहत जो कवि शिवराज हैं, लोजै सुकवि सुधारि ॥ ऊंचे तरवर फरन को बालक हाथ पसारि । ताहो विधि या ग्रंथ में बरनौं मति प्रबधारि ॥ गनत योगुन को कबहुं बड़े जु नर जग कोइ । करत सदा उपकार को यह कैसा जो होय ॥ छमियो मो अपराध है विनय करत कर जोरि । छिडई करि भाषो यहां ग्रन्थ बडो मति धोरि ॥ भानुदत्त मत बुझि के, चन्द्रालोक बिचारि । बरखौं कृष्ण विलास है यथा बुद्धि अनुसारि ॥ ७३७ ॥ इति श्री कृष्ण विलासे शिवराज महापात्र विरचिते यमिया उत्तिम मध्यम अधम काव्यव्यनि वर्येन नाम दशमोऽङ्कासः समाप्त मासोत् ॥ सम्बत् प्रभारद सौ सुपद वा ॥

Subject—(१) पृ० १ से × पृष्ठ तक—प्रथम उल्लास (लुप्त)

(२) पृ० × से १८ पृ० तक—द्वितीय उल्लास—धारादि भेद—वर्येन ।

(३) पृ० १९—३१ तक—तृतीय उल्लास—परकोषादि भेद—वर्येन ।

(४) पृ० ३२—५० तक—चतुर्थ उल्लास—प्रष्ट नायिका भेद—वर्येन ।

(५) पृ० ५१—६४ तक—पंचम उल्लास—नवमो नायिकादि सबी इत्यादि लक्षण—वर्येन ।

(६) पृ० ६५—७६ तक—षष्ठ उल्लास—नायक-भेद—वर्येन ।

(७) पृ० ७७—८० तक—सप्तम उल्लास—सार्विक भेद लक्षण लक्ष्य वर्येन ।

(८) पृ० ८१—१०० तक—षष्ठम् उक्तास—आयो भाव, रस शृंगार लक्षण, लक्ष्य, दश दश दर्शन, हाव बखेन ।

(९) पृ० १०१—१२७ तक—नवम् उक्तास—व्यभिचारो नवरस, रस विरोध, रस सबलता, भाव सबलता, भाव-शक्ति, भाव-उदय, राज विषयादि-रतिरसामास और रति चतुष्टय ।

(१०) पृ० १२८—१४० तक—दशम् उक्तास—व्यञ्जना, लक्षण, व्यभिचा, उत्तम, मध्यम, अथम काव्य, ध्वनि वखेन ।

Note—यह 'कृष्ण विलास' नामक रीति-ग्रंथ महापात्र शिवराज जी ने, भानुदत्त के मतानुसार चन्द्रालोक को पढ़ कर लिखा है । इसमें नायक-नायिका-भेद, रस, रसों के षट्क और काव्य के भेदों को समुचित व्याख्या की गई है । उदाहरण भी उत्तम दिये गये हैं । लेखक की रसावधानी से कहीं कहीं पशु-द्वियां हो गई हैं । पुस्तक के प्रथम के ८ पृष्ठ लुप्त हो गये हैं, अंत के पृष्ठ का भी पता नहीं है । इस पुस्तक के प्रस्तुत अंतिम पृष्ठ के भाग से पुस्तक का सम्बन्ध १८०० के लगभग लिखा जाना प्रतीत होता है । संवत् "१८ सौ सुखदत्त" से यही निष्कर्ष निकलता है कि वह १८१२ या १८२२ की लिखी हुई है । यदि वह 'वा' 'वार' का प्रथमाक्षर है, तब वह १८०० में लिखी गई होगी । पुस्तक में कवि ने अपना तथा पुस्तक कालादि का विशेष परिचय नहीं दिया है । संभव है पुस्तक के आदि के लुप्त पृष्ठों में कुछ इस विषय का उल्लेख हो ।

No. 597(a). Amarakosha Bhāṣhā by Rājā Śiva Sīmpa of Bhinagā. Substance—Country-made paper. Leaves—291. Size—8½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—5,100 Anuṣṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1874 Samvat or A. D. 1817. Place of deposit—Maharāja Rajendra Bahādura Sīmpa Mahōdaya, Bhīngā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बंदेशी श्री गुरु चरन युग हान सकल भव आस । जा जाने सुर सिद्धि मुनि कियो ब्रह्म में वास ॥ १ ॥ गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु शिव गुरु वनेश गुरु राम । गुरु ते दुखे और नहि सहित सकि रामराम ॥ २ ॥ ताते गुरु पद बंदिष भव बारिचि को पैत । पैत स नित तरिबो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा कियो श्री सिवसिंह विचार । सुर-वानो बुध लाग को भाषा अथुच निहारि ॥ ४ ॥ अंत अथिक बहुग्रंथ में है पहिबो अति क्लिष्ट । ताते ह्ये पति सरज लखि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चौपाई श्री

दाहरा ये हो कंद प्रसिद्ध । दौं वाहो में ग्रंथ किय है दाहन को वृद्धि ॥ ६ ॥
निर्माण काल ॥ (१७८४) वेद सत अठ अष्ट कहि पुनि ससि संवत जान
कृष्णपक्ष नम शुक्ल तृति तिथि तेरस पहिचानि ॥ ७ ॥

End—अमर तीसरे कांड में आठ वर्गों को देखि । चारि वर्ग भाषा विषे
आवत काज विशेष ॥ १ ॥ सो में भाषा करि कायो दाहा कंदहि मांड । भाषा
विषे प्रबोन सो पढ़िहैं जो करि चाह ॥ २ ॥ चारि वर्ग जो लिंग के भाषा में
रहित होइ । स्त्री पुरुष नपुंसकहि देखि नपुंसक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नदि करी
नाममात्र को साज । संस्कृत शब्द जु होत जहं आवत तहवां काज ॥ ४ ॥ लिख
भेद भाषा विषे बिन कारज को पेखि । ताते छोड्यो चाहिष स्वार्थ रहित
को देखि ॥ ५ ॥

वर्ग आठ ह का प्रमाण ॥

विशेष निम्न वर्ग १	संकीर्ण वर्ग २	प्रत्येकार्थ वर्ग ३	प्रत्यय वर्ग ४	स्त्री लिंग विशेष वर्ग ५	पुंलिंग विशेष वर्ग ६	पुं नपुं लिंग वि० वर्ग ७	स्त्री० पुं० वि० वर्ग ८	तृतीय कांड वर्ग ८
३०२	१२८	५१५	५५	+	+	+	+	१०१२
प्रथम कांड वर्ग ११		द्वितीय कांड वर्ग १०		तृतीय कांड वर्ग ८		अमरकोश कांड ३ वर्ग २१		
५७८		१६४५		१०१२		३२४५		

इति श्री महाराजकुमार विमलवंशावतंस वरविंध्य सिन्हाःमज सर्वदेवन सिंह
तनुज शिवसिंह कृते अमरकोश भाषायां तृतीय खंडः ॥ इति ॥

Subject—अमरकोश प्रथम खंड—पृ० १—५७ तक ।

द्वितीय खंड—पृ० ५८—२१४ तक ।

तृतीय खंड—पृ० २१५—२९१ तक ।

No. 597(b). Amarakōsha Bhāshā by Rājā Śiva Simha,
of Bhinga Rājā, Bahārāich. Substance—Country-made paper
Leaves—196. Size—13 × 5½ inches. Lines per page—21.

Extent—4,620. Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition Samvat 1874 or A. D. 1817. Date of manuscript Samvat 1875 or A. D. 1818. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Sīpha Guthawar, Baharāich.

No. 397(c). Bhakti Prākāśa by Rājā Śiva Sīpha of Bhingā Rājā Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size— $6\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—30. Extent—1,050. Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Maharājā Rājendra Bahādur Sīpha Jī, Bhingā Rājā, Baharāich.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ कवित्त—बारन घदन पै रदन एक कवि छात्रे राजे सिधुलोक को निकारि सुखकंद को । आनंद सकय भरी सेंदुर मुमुंड पैसा समित परमचार काटे दुखहुंद को ॥ कामना को कल्पतरु चारो फल देत जानि मानि जन आपनो लु मेरे भवकंद को ॥ जनन को पालक सकल भय घालक भलु आनंद को कंद पारवती पति नंद को ॥ १ ॥ जपत रहत ते वे पावत परम पद सकल समूह सुख आनंद बिलारे हैं । विपति विदारि तारि केते प्राप पुंजनि ते दीन्हो है निवास वैकुण्ठनि विहारें हैं ॥ केते दोह दुसह प्रजेय कौण भादि देधि कीन्हो तू असेप यह रूढ़ महिदारे हैं । मैं तो मन बच कम पैसा इह ज्ञानत हौं चंडी के चरन मवसिधु के नयारे हैं ॥ २ ॥

देहा—जहं देहा विपरोति करि सोई सोरठा नाम ।

स्यारह तेरह मत्त पद बरनहु प्रति अभिराम ॥ ३ ॥

सोरठा—रघुवर कथा अपार गुन समूह बरनो कहा ।

को नर पावै पार नाथ रावरे कृपा बिनु ॥ ४ ॥

End—अथ स्तुति कवित्त—जाके चतुरानन सहित पंच आनन सहस्र मुख मानन करत गुन नाम को । पावत न संत संत देवता सुरेस मुनि ध्यावत रहत नित जाके रूप ग्राम को ॥ जन सिवसिंह सोई जगत को पालक है घालक है बोध भय सोई नाम राम को । दीजे मोहि जानि जन भक्ति अम्बिका के पाइ वसे चित पाइ के सबल सुख ग्राम को ॥ ५३८ ॥

देहा—जाके गुन मन को नहीं पावत अन्त अनन्त । सो अति लघुमति पाइ के क्यौं बरनौ भगिबन्त ॥ ५३९ ॥ इति श्री भक्ति प्रकाश श्री रामचन्द्र चरित्र वर्नेन समाप्तम् सुभ मस्तु ॥ सिद्धिरस्तु श्रीराम ॥ श्रीमहाकालो जो को सारन है श्री ॥

Subject—महेश व देवी वंदना वचन—छंद—१—२। शारदा तथा दोहा के लक्षण और उदाहरण वचन, निर्मायकाल वचन, छं० ३—१०। हरिगीतिका लक्षण उदाहरण, सोमा छंद लक्षणादि वचन छं० ११—१६ तक। प्रमानिका या नमस्वरूपिनी, चोटक, सोमराज्ञी, रोला, ससिवदना, धनासरी, संजुता, कुंवेलिया, माधविका लक्षण वचन—छं०—१७—४८ तक। छप्पय, हीरा, पादा कुलिक, सृजलसरा, नाराच, चामर, तिलका, सुंदरी, मौक्तिक माला, मत्त मातंग, लक्षण और उदाहरण छं० ४९—९१ तक। लक्ष्मीचर, भुजंगप्रवात, तारक, रामायण, दोधक, वंधु, नाया, संख नारी, मालती, पक्षर पंक्ति, कमला, सवैया लक्षण उदाहरण वचन, छंद—९२—१३९ तक। मदन मंगोहर, सुलक्षण, मोटक, मोहन, तारक छन्द, कंद, स्वागत, हंन, तनुमध्य और मल्लिका लक्षण और उदाहरण वचन—छं० १४०—२०७ तक। चंचला, चित्रांगदा, तामरस, डिकन, मालती सवैया, भ्रमरावली, सुंदर, नागस्वरूप, समानिका, हारो, उपजित लक्षण और उदाहरण वचन छं०—२०८—२९२ तक। तुंग, मंटिका, इत विलंबित, सग्नियो, चौपैया, पदनील, प्रमिताक्षरा, हरिनी, वृत्त, पंच चामर, तोना, कौड़ा द्रमिला, मुक्ता और किरीट के लक्षण व उदाहरण—छं०—२९३—३४८ कमला, चौपार्ह, इन्द्रजाला, चंचरो, सुंदरी, सारवती, विमंगो, लक्षण व उदाहरण। छं० ३४९—४६० तक। प्रिय, चंद्रकला, लक्ष्मीचर, मानवबंध, मोहन, और न्युति वचन—छं० ४६१—५३८ तक। इति ॥

No. 397(d). Bhashā Vritta Manjarī [by Maharāja Śivasimha of Bhingā Raja (Baharāich). Substance—Country-made papers. Leaves—29. Size—6½ x 4½ inches. Lines per page—28. Extent 392 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit.—Mahā Raja Rājendra Bahādura Simha, Bhingā Raja (Baharāich).

Beginning—ओ महेशायनमः ॥ शार.....य सुमिरि चितलाय गौरी नन्द
पतन्द मयं ।.....भाषा कहौ बनाइ मत विंगल अवलोकि कै ॥ १ ॥ दोहा ॥ भाषे
नाम अनेक विधि छंद विविधि भिधि नाम । सो मत है कविजन कियौ ग्रंथ वृत्त
सुखधाम ॥ २ ॥ तिनकौ मत है कहत हौं कछु छंदन को रीति । नाम तासु वृत्त-
मंजरी कवि जनकी जो प्रीति ॥ ३ ॥ अथ गुणविचार ॥ संजोगो के प्रथम को
बरन दुसरे समेत । कहि दोरख अनुसार कृत कहूं चरनाख उपेत ॥ ४ ॥ अथ
लघु को विचार ॥ सुख एक फल लघु कहत कहूं दोरख लघुमानि । भा.....
क विधि सो संक्षेप बखानि ॥ ५ ॥

End—बनोसाक्षरी कवित्त रूपक घनाक्षरी छंद यथा ॥ विपति विदारन है मुक्ति के.....रति है कोटि कृचि धारन है तारन जगत नित । अब को विदारन है कामना संवारन है विपति विदारनि है निश्चर निकर जित ॥ चलनि को धालक है दैत उर सालक है जनवर दालक है मेरे सेा बसत चित ॥ संविका विहारै पाँच कोटि कोटि कृचि छाव मेरे मन बच काव रावरे सरन हित ॥ १० ॥ इति श्री माया वृत्तमंजरी दंडक छंद वर्णनं नाम षष्ठः ६ ॥ समाप्तम् ॥ शुभमस्तु निखिरस्तु श्री महाकाली जीव को सरण हौ ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेशवर्दना, नाम कवि के पिंगल का आधार वर्णन । गुरु लघु विचार, व्योममाला छंद, दीर्घ लघु उदाहरण वर्णन पृ० १—२ । गण, देवता, फल विचार, दम्बाक्षर, मित्र सन्तुलन, मायावृत्त छंद, वर्णवृत्तछंद वर्णन पृ० ३—७ तक । गथा छंद, नीति छंद, उपनीति, दोहा, दोहा—भेद, रोला छंद, क्षण्य समेद, पृ० ८—१४ तक । कुंडलिया, चौपैया, शिभंगी, शिविराम क्षण्य, समुत्पथनि वर्णन, पृ० १५—१६ तक । हुमिल सवेया, लोलावती, सुभग, मरहटा छंद पृ० १७—२८ तक । श्रीछंद, उक्ता श्रीछंद, नारी छंद, प्रिया, नावाः प्रभवा, मधु छंद, मही छंद, सवास छंद, व्योममाला, पद, हरिलो, वंधू, मोदनक, धनुकुल, सुंदरी, मोहन, तामरस, मनि, मालती छंद वर्णन पृ० १९—२१ । पंकज वटिका, हरिलीला, रामायण, सुप्रिया, विशेषिका, शिषरनी, कोड़ा, चंदु, गीतिका, श्रग्धरा, विजय, मत्तगर्भद, चन्द्रकलाः मनोहर, मदनमनोहर, भुजंग, विजुंमत छंद वर्णन पृ० २२—२७ तक । दंडक, सर्वतोमद्र छंद, साखूर, धनगरीखर, घनाक्षरी, रूपक घनाक्षरी—पृ० २८—२९ । इति ।

No. 397(a). Bhāṣā Britta Ratanawali by Mahārāj Śhiva Sīpha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size— $6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—30. Extent—210. Anusṭupa Ślokas. Complete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Sīpha Mahodaya Bhingā Raja. (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ शुभग वृत्त रजावली छंद शास्त्र सुरबानि । सेा ताको भाषा कियो निरिजा पद मुक्ति ठानि ॥ १ ॥ अथ अष्ट गण नाम ॥ भव रस तज मन षष्ठमन पिंगल नाम यखानि । बरन एक उचारतें लीजे कम सेा जानि ॥ २ ॥ मनगल तोनों होत हैं भय गल पादि कहंत । रजलग भयि सेा जानिय सतलग भाषत पत ॥ ३ ॥ अथ गण देवता फल विचार ॥

मन महि सर्वे श्री सुपद भव शशि जलजस वृद्धि । रजपावक रवि मृत्युहन् सतकष
गमन न सिद्धि ॥ ४ ॥ अथ गुरु विचार ॥ संयुक्ता दिग विदु जुत पुनि बिसर्ग फल
होइ । स्वर दीरघ भविकल्प लग चरन भेंट गल होइ ॥ ५ ॥ अथ लघु विचार ॥
जो विभिन्न गुरु गहत कवि एक मात्र लघु जानि ॥ हस्व दीर्घ द्वय सज के पादि
कहं लघु मानि ॥ ६ ॥

Ende—अथ एक त्रिसाक्षर कवित्त कामः ॥ कोजै यकतोस जानि वान
प्रमान ठानि पोइसे विराम पद लपि परमानिष । भाषते फनोस मत कबोस ऐसे
पिंगल बषानि सो कवित्त काम ठानिये ॥ कहै कविलोग गुरु चरन विराम लपि
कोजै पद जमक बिलेकि इमि जानिये । वेद पद गाए सो सकल सुख भाए रचि
विमल सोहाए ऐसा छंद पहिचानिये ॥ १६ ॥ दोहा ॥ गुरु लघु लक्षण जो कहै
यामें विविध विचार । उदाहरन ताको कियो पद छंदनि सुष सार ॥ १७ ॥ इति
श्री भाषा वृत्त रत्नावली समाप्तम् सुममस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकालो देव्यैनमः ॥
श्री राम श्री ॥ इति ।

Subject—गणेश वंदना छं० १ । गणनाम वखन—छं० २—३ गणदेवता
फल विचार और गुरु लघु विचार छं० ४—८ तक । वखे वृत्त छंद—हंस, गुरु
लघु संज्ञा, छंद लक्षण वखेन और चक्र वखेन, छं० ९—१७ । तारी छंद तीनो,
वारि, पंक्ति पश्चिबदना, सोमराजो, मदलेपा, मधुमतो, विहन्माला, नागस्वरूपिनो,
छन्दो के लक्षण और उदाहरण छं० १८—२८ । चित्रपदाः मानव वंद, अनुष्टुप
छंद, कमला, मनिबंध, रूपमालो, पंचकला, सारवतो, अमृतमति, हंसो, सुंदरो,
इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति—छंद लक्षण और उदाहरण वखेन छं० २९—४३ ।
रघोइता, स्वागता, दोधक, मालिनो, हरिणहुता, द्रुत विलंबित, तोटक,
प्रमिताक्षरा, स्रग्विनो, भुजंग प्रयात, वंशज, इंद्रधंशा, उपजाति, कुसुम विचित्रा,
छंद लक्षण और उदाहरण पू० ४६—५६ । पुष्पिताया, प्रभावतो, प्रहर्षिनो, वसंत-
तिलका, मालिनो, समरावली, चामर, नाराच, पृथ्वी, हरिणो, शिखरणी, मंदा-
कान्ता, चित्रदेवा, शार्दूल विकोद्धत, शोभा स्रग्धरा, सबैया तरंगता, मदिरा,
मालतो, चित्रपदा, मछिता, माधविका सबैया के लक्षण और उदाहरण वखेन—
छं० ५७—७८ । दुर्गिल, तन्वी, कमला, भुजंग विजृम्भित वखेन—छं० ७९—८२ ।
अथ मात्रा वृत्त—गाथा, उपगोति, दोहा, रोला, छप्पय, कुंडलिका, चौपैया,
त्रिमंगी छंदो का लक्षण उदाहरण वखेन छं० ८२—९१ । अथ दंडक वखेन ।
सर्वतोमद्र छंद, चन्द्र वृष्टि प्रयात्, मत्तमातंग, अनंगशेषर, कवित्त कामः लक्षण
उदाहरण वखेन—छं० ९२—१७ तक । इति ।

No. 397(f). Kāvyaadukhana Prakāśa by Mahārāja Śiva
Simha of Bhinga (Baharāich). Substance—Country-made

paper. Leaves—26. Size $6\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—28. Extent—275. Anuṣṭupa Śloka. Appearance—Old. Character Nāgari.—Place of Deposit—Mahārāja Rajendra Bahādura Simha of Bhinga Raja (Baharāich).

श्री गणेशायनमः ॥ छन्द बरवा ॥ गौरी सुपन शुभ वदनै रदन विचार ।
चिबुन हरेन विवि कोधौ यह संसार ॥ १ ॥ बारिज जात पढानन चानन चंक ।
सिद्धि सदन गज मुख लपि प्रवदन संक ॥ २ ॥ सुकवार अष्टमि तियि सिति
बैसाख । प्रगट करौ यह ग्रंथ करि अमिताप ॥ ३ ॥ नाम थर्यौ या ग्रंथे वरनि
विचारि । काव्य दूषन प्रकासै सुकवि सुधारि ॥ ४ ॥ लपि दूषन उल्लासै
कवि प्रियान । सो संवित करि बरनै अति हित मानि ॥ ५ ॥ नहि समरथ
करिवेकौ जुक्ति नवीन । याते सुकवि छंदै पदजुत कोन ॥ ६ ॥ अर्थ पदार्थ
बेई बरने सोइ । छंद भेद करि भाषे नाम मिलोइ ॥ ७ ॥ नाम प्रगट करि बरनै
कवि निज सर्व । हौं कैसे करि भाषै मति अति पर्य ॥ ८ ॥ ताते प्रगट न मापत
राशि विनोइ । जुकवि सुमति लपि जानै पौरन कोइ ॥ ९ ॥ कौन बरन मंगल
जन करि रिपु कौन । सो बरनै या ग्रंथे लपि कवि तौन ॥ १० ॥ अथ दूषन वर्नेन
तत्र प्रथम अष्टवक्ति दूषन वर्नेन ॥

End—चौपाई ॥ यह प्रहेलिका जानो विमल । सुखे.....उलटे
अमल ॥ ५० ॥ सान । यह प्रहेलिका कहो अनुठा । सुखे सोतल उलटे भुंठा
॥ ५१ ॥ पाला । सुनो सबै प्रहेलिका ढाल । सुखे नभ बसि उलटे लाल ॥ ५२ ॥
सारा—छंद बरवा—करि प्रकास दोषक जहं लघु लपिछेन । स्यौं दूषनन दुरन
कछु यह कहि देत ॥ ५३ ॥ लखि विरोध कछु वामें छमि अपराध । हौं लघुमति
कवि गुह मति परम अगाध ॥ ५४ ॥ इति श्री काव्य दूषन प्रकास विरचितायां
प्रहेलिका वर्णेन नाम त्रितोयोऽध्याय ॥ ३ ॥ समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु श्री
महाकालो जीव की सरण ही ॥ इति ॥

Subject—गणेश वंदना, निर्माण तिथि, ग्रंथ नाम, रचयिता का नाम
वर्णेन पृ० १—२ । अष्टवक्ति दूषण वर्णेन, ग्रंथ दूषण वर्णेन । अमित, वधिर,
अगतापंगु, नाम वाक्य, नाग, हौन रस, सूतक दूषण, असमर्थ, जतिभंग, भामीन ।
व्यर्थ, वायस पांति, मरालिका, अपार्थ वर्णेन । कायर स्थूल कृष्ण दूषण पौर
कमहोन दूषण कथन पृ० ३—५ तक । छिष्ट, कणैकट, अनुबोक्षण, पुनुरक्ति,
प्रतुप्रकर्षन, देश विरोधी, पात्र दुष्ट, काल विरोध, नखानख, लोक विरोधी,
नेमानेन, न्याय पाणन विरोधी, बालमति, अथ अक्ष, रसहत वृत्ति, पिंड वाक्य
विरोधी, बरन वाक्य विरोधी, अवस्था वाक्य विरोधी, भेष वाक्य विरोधी,

दृष्यः देश वाक्य विरोधी, वरन अपक्षापक्ष, समय सिम्हार विरोधी दृष्य वर्यन
 पृ० ६—१० तक। कवितालंकार वर्यन। कामधेनु लक्षण, कंकण बंध, कमल बंध,
 धनुष बंध, गोमित्रका, अभ्यगति, कण्ट बंध लक्षण वर्यन, पृ० ११—१५ तक।
 निरोध लक्षण, मात्रा रहित, वहिलोपिका, अन्तरलापिका, सामनोत्तर लक्षण
 वर्यन, पृ० १६—१९ तक। प्रहेलिका लक्षण, वर, सोह, जुता, चना, बंदूक,
 जाल, यमोदा, कुच, नौका, मराल, खटिवा, वाद, राज, मोहर, जर, सर,
 वारन, कपि, नर, बाग घोड़े को, मज, मन, पगड़ा, वरमद, सुधा, सौतल, पाजू,
 टाल, सारस, बरद, वादर, झुरो, काम, बकरो, तोर, घाम, दापुर, घाम, मछरो,
 नौद, बेसर, तोरा, बोरकानेको नारि नषत, सुधाकर, नगर, सान, पाला सार
 तारा आदि प्रहेलिकाओं का वर्यन है, पृ० २०—२६ तक।

No. 397(g). Rāma Chandra Charitā by Mahārāja Śiva
 Simha of Bhingā Rājā (Baharāich). Substance—Country-
 made paper. Leaves—7. Size— $6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per
 page—30. Extent—100 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—
 Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat
 1857 or A. D. 1800. Place of deposit—Mahārāja Rājendra
 Bahādura Simha, Bhingā Rājā (Baharāich).

Beginning—श्री नमोऽनायकः ॥ दोहा। जो करता हरता सदा पालनता
 संसार। तापद बंदन कोजिये रहत सर्वनिने पार ॥ १ ॥ अग्नि वैश्य मुनि मत
 निरपि वरने कथा विचारि। रामचन्द्र के गुन कछु भति अपूर्व सु निहारि ॥ २ ॥
 छंद हरिमोतिका—पूरव हरिभ्य कसिय भयो दिति तनय दैतनिराज है। नरसिंह
 रूप धारी हरो तिन हयो देवनि काज है ॥ विधवा सुत पुनि सो भयो नकता
 चरो सो चाइ है। तिहि नाम रावन जानिय प्रय लोक को दुखदाइ है ॥ ३ ॥
 कवित्त—ताहि यविये को दूसरय सुत भयो हरि लोन्दी अवतार नाम राम
 जग जानिय। तोरगे हर धनुष विह धाम राम जब पक्ष वर्ष रस सोय उमिरि
 प्रमानिय ॥ हादस वरस पुनि अवध वितायो घाम आनि बनवास वैष तापस
 बखानिय। रामनन नय सोय धृति वर्ष जानि मन देखिये बहि नाम बिपिन बास
 जानिय ॥

End—छंद मोतिका—पुत्र है श्रीराम को पुनि सोय वास धरा किए।
 ताहि सो गनि लोजिय पयदि गुन ईदुदि ले दिए ॥ संक लपि परिमान वर्ष
 सुराज पुनि रघुवर कहे। फिर दरे पुत्रन अनुज पूजन सहित सुरपुर को
 लहे ॥ ४१ ॥ दोहा—मासवार तिथि सम प्रभु जो कछु कोन्हे कर्म। त्यानि
 सार सार कहे यामे कछु न भर्म ॥ ४२ ॥ रघुवर चरित प्रकास कर वरने प्रथ

विचारि। रामचन्द्र भानन्द जग बंद फंद भवतारि ॥ ४३ ॥ निर्माणकाल :—
वेद ससौ जग कुसन तिथि सतमि सित गुणवार। मास मादि हे योच रुचि
संपुन सु विचारा ॥ ४४ ॥ मुक्ति वरन कल्याण बंद बर्द्ध दिदल रिपु नाल। ये
पूरन मिलि नाम विहि किषो ग्रंथ हित बाल ॥ ४५ ॥ इति श्री रामचन्द्र चरित
संपुनेम् सुमः ॥

Subject—पार्थना, निर्माणकाल कथन, अवतार के कारण वर्णन।
छं० १—४ तक—

राम विवाह वर्णन, वन गमन, सूर्यनखा का नाक कान छेदन, सीता-हरण,
सुग्रीवमिलन, सेतु-बंधन का तिथियों सहित वर्णन। छं० ५—१९ तक।

शंभु रावण संवाद, मेघनाद का नागफाँस में बांधना, धूम्राक्ष-वध, जक
प्रहस्त, कुंभकर्ण वध, अतिकाय वध, नारायक वध, चक्रपन वध, लक्ष्मण-
शक्ति, मेघनाद-वध-वर्णन तिथियों सहित। छं० २०—२७ तक—

महामायादि वध, रावण-युद्ध, रावण वध, विधोषण के राज तिलक,
राम का अयोध्या गमन, भारद्वाज के आश्रम में आना, राम-जल भेंट, राम
का सीता के परिस्थान, लवकुश उत्पत्ति, सीता जी का पवस्त्रान, राम का
राज्य का बांटना, राम का सपरिवार स्वर्ग जाता, निर्माणकाल और
कवि वर्णन तिथियों सहित। छं० २८—४५ तक।

इति।

No. 397(h). Śrutibōdha Bhāṣhā by Mahārāja Śiva Simha
of Bhingā Rāja (Baharāloh). Substance—Country-made
paper. Leaves—7. Size—6½ × 4½ inches. Lines per page
—32. Extent—200 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old.
Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārāja Rājendra
Bahādura Simha Mahodaya, Bhingā Rāja (Baharāloh).

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ सारदा ॥ गुरुल लघु मन चानि
प्रणत गौरि हर विमल पद। कहे सुकवि पहि चानि छंद सवे भुति बोध के ॥ १ ॥
देहा ॥ मादि मध्य पुनि घंत गो भजता छेदु विचारि। यरता ले पहि चानि
मन मन सुकवि निहारि। दोरव बिंदु विसर्गे गो संयुक्ता दिन सक।। चरत घंत
लन वरन गो कदि फनि ताहि विकल्प ॥ ३ ॥ अथ छंद लक्ष्मण छंद आर्या
यथा ॥ प्रथम तीसरे गाने रस दो मत्ता विचारि के ठाणे। दूजे सेक बुजानु पद
चोथा आर्या तिथि मानु ॥ ४ ॥ नीति छंद यथा ॥ विषमे मान करोजे ॥ सब पद
मत्ता सेक है दोजे ॥ या विधि ले जह कोजे। नीति छंद सारे नाम कहोजे ॥ ५ ॥

End—यद्य ऊन विंशतिशत शार्दूल विकीर्णित छंद ॥ यथा ॥ आदौ दे
पुनि तोसरो रस वसु गो द्वादसी जानिता । आदित्यो सम येक चौदह वसु
है दीर्घ सो मानिता ॥ स्योही सत्रुह ऊनविंश गुण विंशतिगो तही जानिता ।
मापे सेस सुभाबु मेरु सुभगे शार्दूल विकीर्णिता ॥ ४२ ॥ एक विंशतिशत स्रग्धरा
छंद यथा ॥ चत्वारो नामु वर्णा प्रथम सु गुरु कै पच्छगो सप्त मो वै । कोजै गो
चौदहो सो तिथि निर्पि दस है धृतिः विंशो जुगो है ॥ एको विंशतिगो चानो विरति
हरदसो छंद से सो कहा है । मार साई कयो सो सकल गुण जुतो स्रग्धरा
नाम सो है ॥ ४३ ॥ इति श्री अत वेद्य समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु ॥ श्री
महाकाली जीव को सरख है ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेश गौरि हर वन्दना वखैन—छं० १ । गण व दीर्घ द्वस्र
वखैन—छं० २—३ । आर्षो छंद, गौति, उपगौति, ह्योति छंद लक्षण उदा-
हरण वखैन—छं० ४—७ । पंक्ति छंद, सप्तविंदना, मदलेषा, अनुष्टुप श्लोक,
मानव कोड़ा, नाग स्वर्णपिनी, विहनमाला, मणिबंध लक्षण व उदाहरण
वखैन छं० ८—१५ । पंचकमाला, मंदाकांता, हंसो, मालिनी, वायक
इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा, उपजाति छंद लक्षण व उदाहरण—छं० १६—२३ ।
विपरीति पूर्वा, रथोद्धतः, स्वगता, तोटक, भुजंगप्रयात, प्रमिताक्षरा, द्रुत विलं-
वित, हरिनोमुता, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, प्रभावतो छंद के लक्षण व उदाहरण
वखैन, छं० २४—३५ । श्रद्धिपिनी, वसंततिलका, मालिनी, हरिनी, शिपरनी,
पृथ्वी, शार्दूलविकीर्णित, स्रग्धरा छंद के लक्षण व उदाहरण वखैन । छंद—
३६—४३ तक । इति ॥

No. 398. Śiva Siphā Sarōja by Śiva Simha of Kānthā,
Unao. Substance—Country-made paper. Leaves—490.
Size—8 x 6 inches. Lines per page—56. Extent—9,000
Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Written in prose and
Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat
1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Thākura Digvijaya
Simha, Tālukedāra, Village Dikaulī, Post Office Bisawañ,
District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य सिर्वासिह सरोज लिप्यते ॥
यकवर कवि श्री मोहम्मद जलालउद्दीन यकवर बादशाह । शाह यकवर बाल
को बाह अर्चित मही जलि मोतर माने । सुन्दरी द्वार ही दृष्टि लगाव के भागिने
को भ्रम पावत गीने ॥ चौकत सो सब मोर विलोकत शंक सकौच रही मुप

माने। यों छवि नैन छबोले के छाजत मानो बिछोह परे मृगछौने ॥ १ ॥ शाह
 एकधर एक समै चले कान्ह बिनोद बिछोक बालहि। घाहट ते पबला निरध्या
 चकि खोकि चलो कर पातुर चालहि। ल्यों बनि बेनो सुधारि चरो सुमरि छवि यों
 ललना पद लालहि। चंपक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिये यहि
 बालहि ॥ २ ॥ केनि करै विपरोति रमै सो एकधर क्यों न रतौ सुष पावै।
 कामिनि की काटि किकिनो कान किछौ गन प्रोतम के गुन गावै ॥ विदु छटो
 मन में सो लिलाट ते यों लट मै लटको लगि आवै। साहि मनोज मनोचित मै
 छवि चंद लप चक डोरि बिलावै ॥

End—(१) हरीराम प्राचीन ॥ संवत् १६८०। इनका नख सिख पति
 सुंदर है। (२) हिमाचन राव कवि ब्राह्मण मटौली जिला फैजाबाद सं०
 १९०४ सोधो सादो कविता है ॥ (३) होरालाल कवि ॥ भृंगार में बहुत उत्तम
 कवित्त है। (४) हुलास कवि—देवन ॥ (५) हरचरण दास कवि। इन्होंने
 एक ग्रंथ भाषा साहित्य में महा सुंदर पदभुत प्रपूर्व ब्रहत कवि बहम नाम
 बनाया है इस ग्रंथ में अपने ग्राम सन संवत् आदि का पता नहीं दिया है। (६)
 हरिचंद कवि बरमाने वाले ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया लेकिन सन संवत् नहीं।
 (७) हजारी लाल त्रिवेदी विद्यारतन है। नौति शोति सेवंधो इनको काव्य
 सुंदर है। (८) हनिनाथ ब्राह्मण काशो निवासो १८९६ संवत् इन्होंने पलंकार
 दर्पण नामक ग्रंथ बनाया। (९) हिममत बहादुर नवाब ॥ बलदेव कवि ने सत-
 गिरा विनास में इनके कवित्त लिखे हैं ॥ संवत् १७६५ वि०। (१०) हिमतराम
 कवि सुदन कवि ने इनको प्रशंसा की है। (११) हरिजन कवि ललितपुर
 निवासो संवत् १९११ रावा ईश्वरो नारायन सिंह काशिराज के यहां रमिक
 प्रिया को टोका को ॥ (१२) हरिचंद कवि बंदीजन चरबागी वाले। राजा
 छत्रसाल चरबागी के यहां थे ॥ (१३) हुलास राम कवि सलिहोत्र भाषा में
 बनाया। इति श्री शिव सिंह सेंगर कृत शिव सिंह सरोज सनातन संवत् १९३१
 लिखत गौरीशंकर ॥

Subject—इस शिव सिंह सरोज में लगभग १००० कवियों के नाम पुस्तक
 नाम इनको कविता का कुछ नमूना निर्माणकाल निवास स्थान का पूरा पता
 आदि मली मालि वर्णन किया है। पुस्तक उत्तम है।

No. 399(a). Rasapiyūsha Nidhī by Soma Nātha of Māttra.
 Substance—Country-made paper—Leaves—148. Size—12 x
 7½ inches. Lines per page—30. Extent—2,775 Anushtup
 Ślokas. Appearance—Old. Character Nagari. Date of
 Composition—Samvat 1794 or A.D. 1837, Date of

manuscript—Samvat 1941 or A.D. 1844. Place of deposit—
Paṇḍita Syāma Vihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसपोयूष लिप्यते । कृपय—
सिधुर बदन समेद चंद सिद्धर भान धर । एकदंत द्रुतिवंत बुद्धि निधि पष्ट
सिद्धि वर ॥ मद जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरोक गन ॥ चंचल श्रवत चंचूष
धौंदि धिरकति मोहति मन ॥ मुर नर मुनि वरनत जोरि कर गुन अनंत इमि
ध्याइ चित । सतिनाथ मेद पानंद कर जय जय श्री गननाथ नित ॥ १ ॥
कवित्त—पमल पनेत नय नोरद वरनवंत प्रगटे अवनि पै चनादि निरचारे है ।
पसुर बिदारे दुख पुंज निवारै कोरि सकल सुचारे काज गुह गुन भारे है ॥
जहां जेहि ध्याये तुम तहां उहएये आइ रूप उजियारि सोमनाथ उचारे है ।
जे श्री रघुराद कह्यो चारौ फन दाइक डुलारे दशरथ के हमारे पान प्यारे
है ॥ २ ॥ कंचन के रंग रंग पानन घरन राजे उद्धत फंदैया नोर सागर दुरंत के ।
श्री कौ महामंजन सदैसा पहुंचैया पौर लंक बिनसैया धौ फिरैया सब संत
के ॥ सोमनाथ वरनै समोर के सपूत सांवे सेवक समोपी रघुवीर बलवंत के ॥
कंत अवनी के है अनंत सुख पाये गुन बावै नर ऐसौ जो हठोले हनुमंत के ॥ ३ ॥

End—सवैया—सागर सौल उजागर कोरति पानन्द के उपजावन हारे ।
आदि चनादि सरूप निरंजन इन्द्र कौ आछै बिभावन वारे ॥ मोहन श्री सतिनाथ
महाजन कौ घने खेल खिलावन हारे । लाज हमारो है राबरे हाथ पे नंद को
गाय चरावन वारे ॥ ३०४ ॥ निर्माणकाल—सत्रह सै चौरानवे संवत जेठ सुमास ।
कृष्णपक्ष दसमो भूगौ भवौ ग्रंथ परकास ॥ ३०५ ॥ छंद—श्री रघुनंद पानंद कंद
हिय में ध्याइ सुख सरसाइये । ३०६ ॥ इति श्री मन्य महाराज कुंवर प्रताप सिंह
हेत कवि सोमनाथ विरचिते रस पोयूष निधौ चर्यालंकार संश्रुष्टि शंकर चलं-
कार वर्णन नाम एक विंशति मस्तरंगः २१ ॥ श्री रस्तु शुभ मस्तु श्री संवतु
१९४१ आषाढ शुक्ल प्रतिपदायां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण
श्री कृष्णाय नमोनमः ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण पृ० १—२ । राजकुल वर्णन—पृ० २—४ । सभा
वर्णन—पृ० ५ । कविकुल वर्णन—पृ० ५—६ । पिमल, प्रस्तार, मकंदो, पताकादि
वर्णन—पृ० ७—१२ तक । मात्रावृत्त छंद वर्णन—पृ० १३—२० । वल्लवृत्त छंद
वर्णन—पृ० २१—२४ । काव्य सामिग्री लक्षण—यमिधा, व्यंजना आदि का
वर्णन—२५—३२ तक । ध्वनि भेद वर्णन—पृ० ३३—३६ । शृंगार रस भेद
तथा स्वकीया नायका समेद वर्णन—पृ० ३७—४६ तक । परकीया तथा
मयिका नायिका समेद वर्णन—पृ० ४७—५० । पद्य संयोग दुःखिता तथा

मानिनौ नायिका समेद वर्णेन—५१—५२। स्वाद्योनपतिका, खंडिता, कल-
हंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कण्ठिता, वासकसज्जा, अभिसारिका, मोषितपतिका,
प्रवास्यपतिका, आनमय्यति पतिका, नायका भेद वर्णेन—पृ० ५३—६८ तक।
उत्तमादि नायका तथा सखी भेद, उपालम्भ, परिहास, कृतौ कर्म वर्णेन—पृ०
६९—७२। नायक निरूपण, सखा, दशगादि भेद वर्णेन पृ० ७३—८६। हाव
भेद वर्णेन—पृ० ८२—८६। वियोग भृंगार तथा दश दशाशौ का वर्णेन—पृ०
८७—१०। हास्य रस, कथञ्च रस, रौद्र, वीर भेद, भयानक, वीभत्स, अद्भुत
वीर दांत रस का वर्णेन—पृ० ११—१३। माध ध्वनि वर्णेन—१७—१०२। मध्यम
काव्य गुणोद्भूत ध्वनि के घाट भेद सहित वर्णेन—१०३—१०६। कव्य के दोष
वर्णेन, वाक्य दोष, पद असमर्थ दोष, अश्लील, कमदोन, व्याहत, पुनरुक्ति आदि
का वर्णेन—पृ० १०७—११२। काव्य गुण वर्णेन। भाष्य, प्रसाद, योज वर्णेन—
पृ० ११३—११४। चित्र काव्य और अनुप्रास वर्णेन—पृ० ११५—१२०। प्रथा-
लंकार निरूपण, पृ० १२०—१४७ तक। संशुद्धि और संकर अलंकार वर्णेन
तथा निर्माण संबंध कथन—पृ० १४७—१४८। इति।

No. 399(b). Rasapiyusha Nidhi by Soma Natha. Substance
—Country-made paper. Leaves—76. Size—12 × 5 inches.
Lines per page—28. Extent—4,932 Anushṭup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition
Samvat 1794 or A. D. 1737. Date of manuscript—Samvat
1949 or A. D. 1891. Place of deposit—Thakura Digvijai
Simha Talukedāra, Village. Dikanliya, Post Office Bisawan,
District Sitapur.

No. 400(a) Śrī Jugalaśai ki Ādi Bānī by Śrī Bhatta.
Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—12 ×
6 inches. Lines per page—48. Extent—800 Anushṭup Ślokas.
Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date
of manuscript—Samvat 1893 or A. D. 1841. Place of deposit
—Paṇḍita Ganesji, Village Rakabā, Post Office Sisaiya,
District Baharāich, Tahsil Kesarganj (Oudh).

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ ओ लादिलो लाल को जय। ओ
निवादिवायनमः ओ वादिवाओ जुगुल शत ओ मट जो महाराज कृत लिख्यते
संवत् १८९८ माघ मासे कृष्ण पक्ष शुभ दिन ॥ कृष्ण ॥ कव्य चिटव ओ मट प्रगट

कलि कलमप । दुब दूरि कर जे नर भावै सण ता । त्रय तिनकी हरहो तत दरसो
ते होहि हस्त जा मस्तक धरहो गुन निधि रसिक प्रबो न भक्ति दसधा के सागर ।
राधाकृष्ण स्वरूप ललित लीला रस सागर कृपा दृष्टि संतन सुषद भक्ति भूप द्विज
बंशवर कल कलमप भट कलि कलमप दुब दूरि करि ॥ अथ चादि बाणो
ओ गुगुन शत तत्र प्रथम सिद्धांत सुष लिख्यते ॥ पद आमास दोहा ॥ राग
कैदारो ॥ चरण कमल को दोजिए सेवा सहज रसाल घर जायो मुहि जानि के
चेरो मदन गोपाल ॥ पद इकताला ॥ मदन गोपाल सरन तेरो भायो । चरण
कमल को सेवा दोजै चेतो करि रावो घर जायो ॥ धनि धनि मात पिता सुत
बंधु धन जननी जिन गोद बिलावो । धनि धनि चरण चलत तीरथ को धनि
गुरु जिन हरि नाम सुनायो । जे नर विमूष भये गोविंद से अन्ध अनेक महादुष
पायो । ओ मट के धनु दियो है अमय पद जम बरयो जब दास कहायो ।

End—तुम हमरे घर के जो पुरोहित लगे तिहारे पाई । यह बालक
चपला सो न चौके तैसे करौ उपाई ॥ आवन शुक्ल पक्ष एकादसी गोप मित्र
सब पाई । बोले गर्ग विचारि मंत्र को सुत वनो भलो नंदराई । पंच रंग पाटको
दाम रचवो नाना रतन लगाई ॥ आगम निगम मंत्र सो नोके रक्षा करौ बनाई ॥
ओ बजराम आचरज सो मुनि तैसेई करवाई ॥ मंत्र पावित्रास्त्रा कंठ में रन दई
पहिराई ॥ मानो धन धिर कोन्हो दामिनि सोभा लगन सुहाई । वाट रोम गल
सब बजपुर में ओ भट भई मन भाई ॥ ओ लाल जो की बधाई लिख्यते ॥ आमास
दोहा ॥ भागवतो जसुमति अति भो । प्रफुलित लपि लाल गोकुल मंगल आहु
सपि बाहरो बिसद बिसाल । पद तिताला । गोकुल मंगल आहु बवाई । रानो
जसुमति के प्रगट है सुन्दर कुंवर कहाई । गोपो गोपो धार लिये कर रवि
छाँव देपि लजाई ॥ गावत आवत आविपावत मूरति लगति सोहाई । देपि देपि मूष
स्याम सुन्दर को अंग अंग सजुपाई ॥ भागवतो जसुमति रानो अति सुतजायो
सुपदाई । नृत्यत कोरति मुखिया जिन मुँह कमला करत बहाई । कर सनिमान
सवन को तैसे जो जैसे मन भाई ॥ नंद सदन में दूध दशो की गोपिन कौच
मचाई ॥ आगन गोप ग्वाल मन नाचत आनंद मगन महाहो । माग सराहत ओ
जसुमति को भाषत भूप भलाई ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण राधिका की छवि वज्रलोला वर्षा बहार,
लालजो की बधाई, पवित्रा पादि का वखन है ।

No. 400(b) Śrī Jugmāsataka by Śrī Bhaṭṭadeva. Sub-
stance—New made paper. Leaves—20. Size—10 × 6 inches.
Lines per page—40. Extent—650 Anuṣṭup Ślokaś, Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—

Samvat 1652 or A. D. 1595. Place of deposit—Śrī Nimbārka Pustakālaya Maṇḍira Bābā Mādhavāśāṣī Mahānta, Nānpāra, District Baharsich (Oudh).

Beginning—ओ राधा सर्वेश्वरो चित्रवनेतराम् । ओ निम्बार्के दोनबंजु सुनि पुकार भोगे । पतितन में पतित नाथ शरण पायो तेरो । तात मात भविनो सात परिजन समुदाई । सब ही संबंध त्यागि पायो शरणाई । काम कोच लोभ मोह दावानज भायो । निशि दिन में जरी नाथ लोजिय उवारी । श्वरोप भक्त जानि रक्षा करि धाई । तैसेई निजदास जानि राखै शरणाई । भक्त बत्सल नाम नाथ वेदन में पायो । ओ भट्ट तब शरण पाय प्रमोदान पायो ॥ १ ॥ रेमन वृन्दा विपिन निहार । यद्यपि मिलै कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार । विपिन राजसी याके बाहिर हरिदू को न निहार ॥ ३ ॥ ओ भट्ट धरि धुसर तनु यह खाता उर धार ॥ २ ॥ दोहा ॥ सेय हमारे हैं सदा वृन्दा विपिन विलास । नंद नदन वृधमानु जा चरण चनम्य उपास ॥

End—यद्य फल वस्तुति लिख्यते । ओ भट्ट प्रगट युगल शत पढ़ै कंड तिहुं काल । युगल केलि खेलाकतें मिटै विषय जंजाल । नवन वास पुनि राग शोषि मनौ शंक गति वाम प्रगट भयो ओ युगल शत यह सेवत भमिराम ॥ १६५२ सेवत । एक क्षण्य १ दोहा शार्ङ्ग भक्त मयिमान । शत पद चामासन सहित युगल शत हृद परमान ॥ क्षण्य रूप रासिक सख संत जन अनुमोदन याको करौ । दस पद हैं सिद्धांत बोस पद वृजलीला पद सेवा सुख सोलह सहज सुख एक बोस हृद । पाठ सुरत इक उनबोस उत्सव लहिय ओबुत ओ भट्ट देव रच्यो शत युगल जु कहिय निज मजन भाव कविते किये इतें भेद यह उर धरौ रूप रासिक सब संत जन अनुमोदन याको करौ दत्ताक्षर किशोरोदास ।

No. 401(a). Salihotra Prakasika by Rājā Śrīdhara of Kheri Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size 10/6 inches. Lines per page—44. Extent—5,280 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1896 or A. D. 1839. Date of manuscript.—Samvat 1920, or A. D. 1863. Place of deposit.—Thākura Durgā Simha-jī, Dikauliyā, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ यद्य सालहोत्र प्रकासिका लिख्यते ॥ ओ गणपति गौरी गिरा हरि हर के पद ध्याय । ओधर विरचित ग्रंथ को हृद्य कुल को सुधाय ॥ क्षण्य बंद ॥ सिर पर लेखत किरोट माल पर तिलक विराजत ।

कूडल कानन भाभ गरे बनमाला काजत ॥ पोतावर कदि कसे हाय दक्षिण
जतवर । स्वदन में बाह्य बस रसी बाये कर ॥ हिम पारथ से मुनकात लपि
मोषम कदेश सेना डरे । यहि भेष गुविंद चन्द मय मवल आधार को करै ॥ कुरै
कंद ॥ अद्या के सुत पत्रि पत्रि के चन्द बपानै । जल स्वरूप मो तासु तनय गुन
ग्यान विधानै ॥ तासु बंस में मय मुनिद महीपति जानै प्रमद सालमल द्वीप
तासु राजा डर जानै ॥ तिन परसुराज से युद्ध करि देह छोड़ि सुत्पर गये ।
सुत भूष भय बदि देस मो सकल उग्रद्वे बहु भय । दोहा ॥ तर सिधि वस्त
विचार मे परलक्ष्म के पान । भाष्यो बंस मुनाई को किदि विधि होर प्रकास ॥

End—कक को होर मित्राज जेहि चना देहु लेहि चानि ॥ रक्त मित्रा-
जहि माखो मो परदावा को चानि ॥ टका तीन परमान से कम दाना नदि देह ॥
टका तीन से के ऊपर दाना अधिक न ले ॥ या विधि दाना दोजिय कद पर
भूष निहारि । जासा बाजो लखु रई लोजे नतो विचारि ॥ सारनवर यह
नकुल मत सालहोष को पंध । सो विचारि अनुयाय मति भाषा कोन्ही पंध ॥
दोष सरल हरपत सुकवि पल निदत है ताहि । देवि दर्प उर पाचरे कद
कराति है ताहि ॥ सुकवि चतुर तिहुं लोक के तिन सब को सिर नाइ । बिनतो
करत विनोत है सो मुनि ये चितुलाइ ॥ प्रमद प्रताप सुरावरो मेरो चूक विचारि ।
बाब हुक तुम पापु हौ दोजे ताहि सवारि ॥ सोरठा ॥ पद चानन पद व्याह गीरि
मंद निरिजा निरिस । हरि कुल को सुपदाइ ओवर कोन्ही पंध यह ॥ दोहा ॥
सालहोष प्रकासिका पढ़े सुने चितुलाइ ॥ बाजो ताके बहुत बड़े निरिजा होइ
सहाइ ॥ इति श्री सालहोष प्रकासिकायां ओवर सुकवि विरचितायां पंध
संपूर्ण सुम नस्तु मंगल ॥ सुदनखत मोहन कर गोचरो माते से जानिये ॥ संवत
१९२० भाद्रपद मास कलस पछे तिथी तीजवां ।

Subject—इस पंध में पोड़े को जाति, व्यसि के देश रीय, शुभ अशुभ
लक्षण, शय, रोग, घोषविवां सवारो को रीति बैठक, पोड़े के भोजन को रीति,
घोड़ा रखने के खान, आदि का मलो मोलि बखन किया गया है ।

No. 401(b). Vidwan Moda Tarangini by Raja Śridhara
of Kheri. Substance—Country-made paper. Leaves—136.
Size—8 x 6 inches. Lines per page—31. Extent—2,313
Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of Composition—Samvat 1970 or A. D. 1843. Date of
manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—
Thakura Maheswara Simha, village Dikauliyā, Post
Office Biswan, District Sitapur (Oudh).

Beginning—ओ मधेशायनमः ॥ अथ विद्यामोद तरंगिनी लिप्यते ।
 कवित् ॥ इतै सोन मुकुट विराजै सोस फूल उतै रतै माल पोरि उतै वेदो है
 पषान को । इतै अति कुंडल चौवा उतै राजत है रतै वनमाला उतै माला मुकतान
 को ॥ रतै पोतपट उतै सारो जगतारो सोहै बाऊ नैद मरे जागे मानै एक पान
 को ॥ ओधर को बानी कन्दै घर बरदान सदा नेउ को किमोर पो किमोरो वृष-
 मान को ॥ सारठा ॥ सुवा जानियो नाम वषत विह को लघु तनय । द्विज मत लै
 अभिराम ओधर कविता पो कलौ ॥ दो० ॥ लै कवित सध कविन के निज मति
 के अनुसा । विद्यमोद तरंगिनी सुन सेवत अवतार ॥ प्रथम मंगलाचन कदि
 कहौ प्रथ को हत । नवरस यामै कहति हैं समुझी बुद्धि निकेत ॥ कवित ॥
 कारन भाव वं भाव को रूप नवरस पूरन के दरसायो । नायका हूओ रसो
 मिलि जात इन्है करि म्यारोई भेदबतायो ॥ जन्म बिता अवरोध विरोध सो दृष्टि
 सबै रस मांति जनाये ॥ विद्यमोद तरंगिनी ओधर पानद पानि वषानि बनायो ॥

End—दोहा ॥ एक बिनती मैं करत हौं कविजन से करजार । विमरो
 बरन संभारियो मोदि न दोनौ पोरि ॥ राधिका कृष्ण को यामै चरित्र विचित्र
 महा सुनि रोझि हैं म्यानी ॥ प्रथ उमै सुनेत न छो रस राजत है छति हो सुष-
 दानी ॥ विद्यमोद तरंगिनी ओधर पानंदरूप अनूष वषानी ॥ चाहि पड़े गुन
 पानंद कोरति बुद्धि पो सिद्धि मिलै मनमानी ॥ कुंडलिया अंद ॥ कविता या
 में लसत है सत कवि को छति चार । विद्यमोद तरंगिनी करो कंड को हार ॥
 करो कंड वं हार चार ओधर कवि वानी । सध संगन ते सदा विराजत है मन
 तरनी ॥ हरनी दुष घर दोष तिमिर कोर जैसे सांघता । याको पढ़ि विद्याम
 सोन करि हैं वर कविता ॥ दो० ॥ नव रस जल में उंस लहरि भाव मंवर से
 जानि । विद्यमोद तरंगिनी ओधर कहौ वषानि ॥ भाव उदै सादिक कलौ
 अनिमेष सादिक जानि । यासो रतो तरंग में ओधर कलौ वषानि ॥ इति श्री
 आश्रित कवि विरचितया विद्यमोद तरंगिनी ग्रंथ संपूर्ण ॥ मातं अग्रहण
 माने कृष्ण पसे तिथी नवमीया बुधवासरे संवत् ११०० निषत्त मोदनलाल शुद्ध
 संवत् १११० ॥

Subject—रस प्रथ में नवरस भाव विभाव नायका नायक भेद को लक्षण
 बतैन कहै गये हैं ।

No. 402. Sursataka Purvardha 'Tika' by Śrīdhara of
 Benares. Substance—Country made paper. Leaves 34.
 Size—12 × 8 inches. Lines per page—44. Extent—748
 Anushtup Slokas. Appearance—Old. Written in Prose and

Verse. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Date of manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1864. Place of deposit—Pandita Rāma Shankara Vājpai Village Bahori ka Vajpai ka Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीवल्लभाय नमः ॥ सुरदास जो का कूट लिख्यते ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुरदास जो के कोर्तननि को संपद करिवे के प्रथम मंगलाचरन ॥ देहा ॥ श्रीवल्लभ विद्वान् वदत वंदत विसद विचार । बहान सुविद्या बुद्धिबल विनस्त विवद विचार ॥ १ ॥ यह संसार ससार में हरि कोर्तन सुप्रसार । कहत करन सब प्रजड़े लै बड़हे चर विसार ॥ उपकारक है सवन के हेतु अर्थ समुभाय । ताते गये भक्त जन भाषा सरल सुभाय ॥ सुरदास तिन में भए जनत जात ज्यो सर । गयो सब विधि कर सुजस हरि लोला रस पूर ॥ जिनके पद में गुरु बहु अर्थ भाव रस व्यंग । सुभरै जेते तिते संपद कियो सुसंग ॥ ओमन श्रीगोपाल सुन श्री ओयर सुप्रदाय । जिनको आज्ञा से कियो मान नगर में जाय । बाल कृष्ण को दोनती सुनिये रसिक सुपंथ । लोचै सुमति सुधारि के सूर शतक रह प्रथ ॥

End—राम नट ॥ मूल ॥ सुनरो हरिपति याज्ञु विराजै ॥ हरि गति चलत मंद भयो हरिजन बलकरि हरिदल साजे । हरि को चाल चलो चंचल गति हरि को हरि दुष छाजे ॥ सुरदास हरि को भज एक छिन विरह ताप तन भ्राजे ॥ अर्थ ॥ भगनो नायका सेो दूती को उक्ति मनाय के पछराय ले जात है ता समय को बरनत है ॥ सुनिगी हरि तेरे पति आज विराजे हैं संकेत में अथवा हरि जो मृग तेरे नेत्र तिनके पति चन्द्रमा सेो प्रियतम को श्रीमुख आज विराजे हैं ॥ प्रसन्नता सेो ताते नेत्र को मिलावे । हरि मज को मंद गति चलत विलंब होत है हरि जो सूर्य को बल मंद भयो अस्त भयो बल करि के हरि जो इन्द्र ताको दल मेवन को घटा होय पायो ताते उतावल सेो चलिवे को समय है अथवा सूर्य अस्त भयो अब हरि जो काम देवता को दल चन्द्रोदय पुष्पन को विकास त्रिविधि पवनदिक सब सज भये ताते वेग चलो ॥ अथवा तिहारे मनावत सेो विलंब भयो अब चलिवे मेहु विलंब होत हरि जो चन्द्रमा सेो मंद भयो और हरि जो सूर्य ताको बल प्रमोदय को विरिया भई ताते वेगि चलो ताते अब हरि दस्ता को गति चंचलताई से चलो ॥ अथवा हरि जो सर्प सेो सर्प को परिखाव हुसरो नाम उतावल को है सेो उतावल सेो चलो अथवा हरि जो पवन सेो तेको सेो पवन को नाई चलनो चाहिए ॥ काहेते जो हरि प्रियतम को हरि जो काम

ताको दुष है ताते अथवा हरि को दुष है सो तुम चलिके हरौ ॥ हरि जो पिब-
तम तिनको तिहारे भजतें सुरति किया ते बिरह ताप तन के सब भाजेंगे ॥ ताते
वेमि चलो अथवा सुरदास जो कहने हैं यह जो हरि जु को मान प्रसंग को
लीला को भजत एक क्षिनु किय ते बिरह ताप तन को भाजें ॥ इति शूर शतक
को पूर्वार्च संपूर्ण ॥ यह इतिहास सब पद को अर्थ भयो सुप्रदाय श्री निरिधर
महाराज को अमित कृपा बलपाय संवत १८८२ शतक अस्सो पर है शेष मार्ग
शिर बदि सप्तमो कवि कविता पथ देयि ॥ संवत १८८२ ॥

Subject—इस शूर शतक पूर्वार्च में श्री श्रीधर महाराज ने सुरदास कृत
कूट राग को टीका की है जिससे मूलो प्रकार पदों के अर्थ समझ में आ जाते हैं ।

No. 403. *Brahmavaivarta Purāṇa* by Śrī Govinda. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—33. Size—9 × 5
inches. Lines per page—14. Extent—280 Anuṣṭup Slokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composi-
tion—Samvat 1867 or A.D. 1810. Date of manuscript—Samvat
1952 or 1895 A.D. Place of deposit—Pandita Bhagwān
Dīnaji Miśra Vaidya, Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ब्रह्मवैवर्त लिख्यते ॥ षट् पद ॥
नैरोत्तम यश चलंकार कविता सुवती को राज पथें एसि ठाकि वश्य कोन्हो
जिन नोको ॥ यत्त अर्थ बिच बोच फिरत जेहि दैहि नाम को ॥ तारि कोश
कारक सो रहत कर सिद्धि घाम को ॥ जन जब गोविन्द मन कर्म बचन पंकज
पद निज हिय धरत ॥ तब सगुण पानि निदान जगजो (कलिद तिकर परत ॥ १ ॥
कृपा अम्ब अवलंब प्राप्तकलि रलि विकशित कर । करण ब्रान लति सुरभि ताहि
तन विकुच करसि बर ॥ यथा ॥ तद्यत्त सब निरधि पाइ हरि रूप जानि करि ॥
मेवा बरकर भान पदारथ पम्भ पाइ धरि ॥ सुखमद विशान राधारमण दुर्ज
हृदै मम तब धरिय ॥ तेहि सुरभि उदै अस्तानल पिदिविभुनन वासित
करिय ॥ २ ॥ कूट भुजंगप्रयात ॥ सुयो देवो पद्मालया चारु सोई ॥ पदारथ जस
भुंग नेशमि मोई ॥ महामोह विध्वंस के ध्यान मानौ ॥ कियो ईश है के
अमदोश जानौ ॥ ३ ॥

End—नंद अनंदहि पाइ पाइ सुत गोविंद श्री आधारा । विप्र कूट अम्ब
पूजि पूजि के दोन्हें दान अघारा ॥ ४२ ॥ मन हरन ॥ सुनत जगत ईश कनक
अशन करि काम भुक्त काम तब खग पशु जानियो ॥ सुरतपि बिधि द्विज रूप
धारिउ चित्तामनि माजिपरो श्रीव हरि सब सुख दानियो ॥ विष्णु लक्षि हिय

धरि सागर निवाश करि सागर उदर ताप अति दुख दानिये ॥ दानि वराह लाज
पाइ करि यह नहिदान प्रमान का विधि वचानिये ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ भई अकाश-
वानो बहुरि कंसकाल वृजराशि ॥ कन्या नंदहि आनि वसु दई पापनो
भाषि ॥ ४४ ॥ इहा ॥ नंद नंद सुन्यो । वृष सीस धुन्यो ॥ जावको पठई । क्षम
माह हई ॥ ४५ ॥ इति श्री गोविंद विरचिते राधाकृष्ण विनोदे राधाकृष्ण जन्म
वर्णनो नाम तृतीयो सर्गः ॥ ३ ॥ वैद्यवैवर्त पूर्वाश्रांतरस्य गोलोक कथा प्रसंग
सम्पूर्णम् मादकृष्ण त्रियो २ सेवा ॥ संवत् १९५२ लिखित्वा शिखरज द्विजे न
वासस्थान शहेल्या पाठनार्थ रामविलास मिश्र वासस्थान ब्रह्माक्ष चौक बाजार
के द्वारा ॥ राम राम ॥

पृ० १—१२ तक—पुस्तक का नाम, कविका श्री कृष्ण राधिका से प्रार्थना
करना, निर्माण संवत् ब ईश्वर को महिमा का वर्णन, पुनः श्री कृष्ण को महिमा
पादि का वर्णन किया है । पृ० १३—२३ तक—पृथ्वी पर अधिक पाप होने
के कारण पृथ्वी का माय रूप में भगवान के निकट जाकर प्रार्थना करना,
प्रार्थना पर भगवान का पृथ्वी को घोरज बंधाना, जन्म लेकर पृथ्वी का भार
उतारने का वचन देना पादि वर्णन किया है । पृ० २४—३३ तक—श्री
कृष्ण राधिका का जन्म और उनके विहार तथा आनंद का वर्णन किया गया है ।
इसमें कृष्ण का जन्म और कृष्ण का राक्षसों को मारना, कंस को मारना, भक्तों
की रक्षा करना, लिखने का संवत् और लेखक का नाम पादि वर्णन है ।

No. 404(a). Kavya Saroja by Śrīpati of Kālpī. Substance
—New paper. Leaves—66. Size—13 × 8 inches. Lines
per page—28. Extent—790 Anuṣṭup Slokas. Incomplete.
Appearance, Old—Character—Nāgarī. Date of Composition—
Samvat 1777 or A.D. 1720. Date of manuscript—Samvat 1943
or A.D. 1886. Place of deposit—Pandita Kṛishnabihari
Mishra, Editor, Sāmālochaka, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ काव्य सरोज लिप्यते सारठा ॥
लसत बाल बिबु भाल चंदन वसन मनिमाल उर । शंकर सुवन दयाल वंदत
पद सुर घसुर निज ॥ १ ॥ सेवक जन परिपाल, पकर दन धारन वदन । बिन
हरन ततकाल, बिपति कदन संगत सदन ॥ २ ॥ दोहा ॥ पलिसम स्याद महान को
जासो मुख सरसाइ । राजत काव्य सरोज सो ओपति पंडित राय ॥ ३ ॥ निर्माण
काल संवत् मुनि मुनि मुनि ससो, सावन सुम बुधवार । अक्षर पंचमो को लिखो
लखित ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥ सु कवि कापी नगर को द्विज मनि ओपति राइ ।
जस सम स्याद ज्ञान को बरनत मुख समुदाइ ॥ ५ ॥

End—अथ वीर रस विभाव—युद्ध दान यह लघु दया बड़े जैसे उस्ताह ।
 है विभाव रस वीर को प्रगट करै कवि नाह ॥ २० ॥ वीर युद्ध रसाखंडन युद्ध को
 रावन आवत है जो सदा मुनि देवन को दुखदायक । जम पराति को दम दलो
 मुर बानर नाहि सकौ सहि सायक ॥ युद्धि मरौरि बिलोकि भुजा निज माधुरी
 हास हंसा रघुनायक ॥ २१ ॥ मधवा रिपु को रन आवत हो वर बंध प्रलय बहरान
 लगी । जिनती तित मामि चले कपि कायर नातन मे थहरान लगी । कवि श्री
 पतिजू जसाह नदी हिर लच्छन के थहरान लगी । डगरे डन केहरि के अनुहारि
 सुमुक्त यहां फहरान लगी ॥ २२

Subject—चंदना, कवि वखैन, काव्य लक्षण, उत्तम काव्य, मध्यम
 काव्य, अधम काव्य, वाक्य चित्र वखैन । पृ० १—४ तक शब्द निरूपण, वाक्यार्थ,
 लक्ष्यार्थ लक्षण समेद, व्यंग समेद, वाक्य समेद, काकु, व्यंग के अन्य भेद, दोष
 वखैन । अर्थ, श्रुति कटु, गतागन चिचार, यति मंग ग्राह्यार्थ, अप्रयुक्त, असमर्थ,
 उपहत, प्राम्य, असंमत, भाषाव्युत्त, प्रतिकूल वखे । पृ० ५—२० तक । अर्थ दोष
 वखैन तथा दोष निवारण । पृ० २१—३२ तक काव्य गुण कथन, अर्थगुण वखैन,
 इक्षेप, प्रसाद, भोज वखैन, अलंकार वखैन । पृ० ३३—५२ तक । रस—निरूपण ।
 पृ० ६०—६५ तक ।

No. 404(b). Kāvya Soroja by Śrīpati of Kālapī. Substance
 —Country-made paper. Leaves—34. Size—12 × 6 inches.
 Lines per page—56. Extent—1,666 Anuśṭup Slokas. Incom-
 plete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Com-
 position—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—
 Thākura Bīra Simha, Village Bhudarā, Post Office Biswān;
 District Sitāpur (Oudh).

No. 404(c). Kāvyaśudhākara by Śrīpati of Kālapī. Sub-
 stance—Country-made paper. Leaves—15. Size—9 × 4
 inches. Lines per page—14. Extent—200 Anuśṭup Slokas.
 Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—
 Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Rājapustakālāya
 Bhinagā (Bahraich).

Beginning—श्री नखेशायनमः ॥ दाहा ॥ स्वाम स्वाम समर विदध श्री
 गुह पद जलजात । जांचत द्विज श्रीपति सुकवि देहु सुमति भवदात ॥ १ ॥
 सवैया ॥ नैम बिना निति आनन्द मै परतन नहीं कछु पार न पावै । नै रस

धामे सबै मधुरे द्विज श्रीपति चाहि कहा जस गावै ॥ नेसुक नाहि डरै जम सो
इन मांतिन के गुन केते गनावै । बानो मरि तिहुंछोक रच्यौ कविराज विरंचि
कौ सोस नवावै ॥ २ ॥ कवित किप तैं पाइयतु परम सुजस धनमान । रोगन सैं
अह दुखन सो कहै सबै प्रति मान । ३ । केसव अह गंगादि को सुजस रहौ जग
काय । यो बै म सुततैं लखौ धन मुकुंद कवि राय ॥ ४ ॥ अकबर वह दिल्लीस
तैं पायो मान अनूप । ख्यालहि में तब हूँ गयो सुकवि बोर बर भूप ॥ ५ ॥
जगनाथ तैं ज्यौ नखौ कवि विनेस को रोग । मनीराम ख्यायो तनय जानत
सिगरे लोग ॥ ६ ॥

End—दोहा—रसिक चकोरन कहं बड़ै याते परम हुलास । काव्य सुधाकर
रचित सो श्रीपति सुमति निवास ॥

भरत बिबुध नर हनत दरिद्र दर, मिटत कलुष जर डरत असम शर । लसत
मरल नर भरत कनक भर, सुजस घरनि तर रतत कुलिस कर ॥ दहत बिरह धर
रहत निगम कर लहत सुमति घर सतत कहत हर ॥

दोहा ॥ जमक लेख अह चित्र महं कहं धुनि के कन हात । सबै बहर महं
अधम है कवि कौविद उद्योत ॥ मेरे मत श्लेष में कहं अपर धुनि होय । ताको
दरसे हौं सबै सहित ग्रंथ कवि लेख ॥ तामे मध्यम भेद है कहं श्लेष देखाव ।
उत्तम भेदन हूँ सकै कहं महा कविराय ॥ कवित निरूपन पद कछौ श्रीपति
सुमति निवास । काव्य सुधाकर महं भई पहिली कला प्रकास ॥ इति श्री काव्य
सुधाकरे निरूपन समाप्तम् ॥ इति ॥

Subject—पार्थना, कविता की महता व कवियों का उत्कर्ष वर्णन । पृ० १ ।
काव्य गुण तथा कवि वंशादि वर्णन—पृ० २—३ तक । काव्य लक्षण, काव्य
शक्ति—पृ० ४ उत्तम काव्य लक्षण, उदाहरण, मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण
तथा प्रति काव्य मध्यम लक्षण व उदाहरण पृ० ५-६ । मध्यम काव्य लक्षण
व उदाहरण अथवा काव्य लक्षण व उदाहरण—पृ० ७ । अल्प मध्यम काव्य लक्षण
व उदाहरण व उत्तम काव्य कथन—पृ० ८ । अनुपास लक्षण व उदाहरण व
उपपत्तिकादि उदाहरण—पृ० ९—१० । यमक लक्षण व उदाहरण, श्लेष लक्षण
व उदाहरण । पृ० ११—चित्र काव्य समेद । उदाहरण सहित—पृ० १२—१३
अक्षर लक्षण, पोड़स दल चित्र काव्य तथा अथवा काव्य वर्णन । पृ० १४—१५
तक ।

No. 405. Śringara Saurabha by Śrī Rāma Bhaṭṭa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—18. Size—11½ × 7½
inches. Lines per page—32. Extent—432 Anuṣṭup Slokaś.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—

Samvat 1943 or A.D. 1885. Place of deposit—Pandita Syamabihāri Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शृंगार सौरभ ग्रंथ लिख्यते ॥ मंगलाचरण कवित्त ॥ वृन्दा राजारानी आदि शक्ति जग जानी जहाँ पदच सेो दबो सिद्धि संघनि हृदोश को । दासो हरे मासो पै उमा सो है खवासो खासो पावत न जान जहाँ मनहु सचोस को ॥ वाये कर वोर और दाहिने नवोन वर कोटि मारतंड को प्रकास नख बोंस को । बात बारि जात नव पात पारिजात पदजात नित ईश को कि सोस जगदोस को ॥ १ ॥

दाहा—कहो नायका नारिसों सुन्दर सुखद उदार । पिय हित रचति प्रयोनता रिम्भवावति रिम्भवार ॥ २ ॥ उदाहरण—लागत समोर लंक लचकि लचकि जात ललकि ललकि जात नजर निपातो है । विपुल नितंबन की उरज उतंगन की सिरज कंदवन की छवि छहराती है । रामजी सुकधि आर्विद मे रलिद सम छापन को बंदि बंदि मोन मुरझाती है । बनो बनिताम मे मसाल सो विशाल बाल घोर सकुचातो परो बाबासो दिबातो है ॥

End—अथ परकीया आगतपतिका को उदाहरण । बेलि मनोहर चंपक को घट काम के कुंबुक के तुलही है ॥ स्वांस समोर लगे लचके करि मग्न सगन कबोन कहो है ॥ बोल घटा पे चढ़ो मग देखत ल्यों उचकी कुचकी सुलही है । बायस बोलि परोस गयो मन हो मन आनद सो उमहो है ॥ ६३ अथ सामान्य आगतपतिका को उदाहरण—पंगिया दरको हरयो मन मे लरकी लर मोतिन जालन की । हकी सहको कुचहु बहको गति जासु मरालन को ॥ मोतिन के जालन गुंफिन मालनदी है लालन की ॥ उमगी उमगी भरि है मनकी गति ६४ ॥ इति श्री रामजी मठ विरचिते शृंगार सौरभे टस अवस्था भेद वर्णन नाम पंचमस्तरंगः समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री संवत् १९४२ आषाढ़ मास कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दश्या शनिवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्रीमान् मिश्र युगल किशोरस्यार्थं गंधाबलो खानेषु ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण, नायिका वर्णन, स्वकीया भेद, मुग्धा अज्ञात यौवना, ज्ञात यौवना, नवोद्गा और विश्रब्ध नवोद्गा वर्णन । अ० १-१३ तक ।

वयसंघि वर्णन, मध्या वर्णन, प्रौढ़ा वर्णन, प्रौढ़ा विपरीत रति व सुरत वर्णन । धोराधोरादि भेद वर्णन । अ०—१४—३९ तक । परकीया वर्णन । उद्गा, अनुद्गा, गुहा कुलटा, लक्षिता, अनुशयना, मुदिता, विदग्धा समेद, स्वयं दूतिका वर्णन अ० ४०—७० तक ।

गविता समेद । मानवतो समेद, चय्य संमान दुर्गचता, स्वकीया, परकीया
घोर सामान्या वर्णन । छन्द ७१—८४ । अष्ट नायका भेद वर्णन—छन्द ८५—
१४८ तक ।

इति ।

No. 406. Biharisatsai with Tikā Anawar Chandrika
by Subha Karana of Delhi. Substance—Country-made paper.
Leaves—98. Size—9 × 5 inches. Lines per page—25.
Extent—1,980 Anushtup Slokas. Appearance—New. Charac-
ter—Nāgari Date of Composition—Samvat 1771 or A.D.
1714. Date of manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798.
Place of deposit—Pandita Śrīpala, Village Khajuri, Post
Odice Gouriganja, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अनवर चंद्रिका लिप्यते ॥ प्रभु
वंश वर्णन ॥ मनि सब फूलह साहि साहि सर पुदो जानो । सालह साहि सुजान
साहि प्रसन्न पहचानो ॥ अनवर साहि समर्थ मुनवर साहि परवसम ॥ हासम
साहि प्रचंड साहि कासम छु अनुपम । कहि किसवर साहि बिलंब दल कैसर साहि
सुजान चित ॥ पुनि मालिक यजदर साहि हुब कुल मेहन जस किय समित ॥ २ ॥
समित तपोवर चलन हुब जाहिर सब जगजानि । गरदेखी यह क्याति जुत
वृत्त साहि बखानि । ईसफ साहि बखानि सकल गुन गन जो जानै ॥ बिदित
बिनाइत सोल समुद्धौ पाहिचानै ॥ पाहिचानै बहु दिनन कवरते करन
करौ नित लसत धान तुलतान भान सम सोहै जो समित । समित सोल मे
अकबर सुम्नर साहि हुप पुनि अबदुल्ला साहि । साहि अबदुला हाउ गनि
साहि फरीद सुजान । सैद खा सुमट सिरामनि, पुनि सैद मुवारिक खा प्रबल,
तनय सैद साता यवनि पुनि सैद मुस्ताक जस जलधि सुत ससि अनवर
खान मनि ॥ + + + + +
देहा—सांस रिख रिख ससि लिखि लिख्यो । सम्यक् सबस विलास । जामे
अनवर चंद्रिका कोन्धो बिमल बिकास ॥

End—बड़े जाहु ह्या को करत, हाथिन को धौपार । नहि जानत इहि
पुर बसत, धौयो मोड़ कुम्हार ॥ बिषय विषादिक को तृषा जिये मत्तोरन सोधि ।
समित अपार अमाध जल, मास मूड़ पयोधि ॥ यहि देहो मोठी सुगंध तुषनय गरब
बिसाक, जिहि पहिरे जग हग कसत लसति देखति सो नाक ॥ इति अष्टयुक्ति ॥ इति
बिहारो सतसेवायो टीका समाप्तम् ॥ सम्यक् १८५५ बेसाख सुदी २ शुभम् भूयात् ॥

- Subject—(१) १०४ तक—प्र० प्रकाश, प्रभुवंश वर्णन ।
 (२) १०५ तक—द्वि० प्रकाश—साधारण नायिका वर्णन ।
 (३) २०६ तक—तृ० " नव शिख वर्णन ।
 (४) २६५ तक—च० " मृग्यादि त्रिविध नायिका ।
 (५) ४२५ तक—पं० " दश विध नायिका वर्णन ।
 (६) ४३५ तक—ष० " प्रेम प्रशंसा ।
 (७) ५०० तक—स० " मामिनो वर्णन ।
 (८) ५२५ तक—प्र० " सुरत सुरतांत वर्णन ।
 (९) ९८५ तक—अंतिम प्रकाश गणना रहित—विधिव विषय, रस हाव-
 भाव तथा ऋतु इत्यादि वर्णन ।

Subject—यह पुस्तक बिहारो सतसई नामक अद्वितीय शृंगार ग्रंथ की टोका है । जो अनवर खाँ के नाम निर्माण की गई है । प्रारंभ में ही प्रभुवंश वर्णन किया गया है जो प्रमट करता है कि यह कवि सं० १७७१ में दिल्ली दरबार के माधित थे ।

No. 407. Sudāmā ki Bāraba Khari by Sudāmā. Substance—Country-made paper. Leaves--9. Size--6×4 inches. Lines per page--18. Extent--55 Anushtup Ślokaa. Appearance--New. Character--Kaithī. Date of manuscript--Samvat 1880 or A.D. 1823. Place of deposit--Thakura Ayodhyā Simha, Village Sadarapur, Post Office Gārāpur, paraganā Chāndā, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—कका कलजुग नाम गधारा । प्रभु सुमिरन भव उतरी पारा ॥ पावु संग करि हरि रस पाउँ ॥ जीवन जन्म सुफन कर लोउँ ॥ यथा जो सकल जहाना ॥ जाको गावै वेद पुराना ॥ निरमय नाम हरि को लोउँ ॥ चरन कमल को ध्यान यगौँ ॥ गंगा गुन गोविंद के गावै । राया जास भूलि अनि जावै ॥ जन जावन तन रंग पंगना ॥ छिन में कार होय यह संग ॥ ३ ॥

End—हहा हरि गुन गाये पाप भोजन पाव ॥ ओ गुरुचरन कमल परकाप ॥ जैसा ईद चहुँदिनि बेरा ॥ प्रमट भान तव भयो उजरा ॥ ३ ॥ लेने को हरि को नामा ॥ देने को नहि खान समाना ॥ ३४ ॥ काहुनो जो विष बंधन चहोये ॥ सत गुरु चरन सरन होय रहोय ॥ नाम मधुर रस पोवै सुजाना ॥ गर्भ बास नहि होय पंगना ॥ बारा बहो भान गुन गाउ ॥ दास सुदामा दोन प्रति गावै ॥ गुड डेव चरन चीत लावै ॥ ३६ ॥ इति श्री सुदामा कृत बागवद्गी संपूर्ण समाप्त ॥

Subject—पृ० १-९ तक—ककार से लेकर हकार तक क्रमानुसार छन्दों के सादि में अक्षरों का आना और प्रत्येक छन्द में ईश्वर भक्ति का ही वृत्त न कुछ वशेन ।

No. 408. Ekādaśī Mahātmya by Sudarśana of Ambu. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—12 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—2,494 Anuṣṭup Śloka. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1770 or A.D. 1713 Date of manuscript—Samvat 1922 or A.D. 1865. Place of deposit—Munsi Rāmajiāwana Lala, Teacher, Town School, Fatehpur, Bārā-bankī (Oudh).

Beginning—ओ गनैशायनमः ॥ अथ लोपते येकादसी महत्तम ॥ दोहा ॥
 कपा करी खुबोर जब तब कवि किया विचार ॥ किया महातम एकादसी
 रचि भाषा संसार ॥ × × × × मारग यह खरलोक को कथा सुनै
 नर जोइ ॥ गंगतीर को भजत है दरसन को चित होइ ॥ चौ० ॥ पथमहि भजे
 मातु में गंगा ॥ जेहि सुमिरे उजै मति भेगा ॥ जे नर बसहि गंग के तोरा ॥ ते
 बैकुंठ बसहि बलबोरा ॥ एक चित होइ गंग अन्हावै ॥ ते नर सबे पदार्थ पावै ।
 घटे ध्यान गंगा को जोई ॥ सो नर दुषित कबहु न होई ॥ जो मानुष जग में
 चतुरंगा ॥ ते असनान करहि नित गंगा ॥ तिन के कलिमष होइ बिनासा ॥ ते नर
 सुरपुर पावहि बासा ॥ जे नर पोवहि गंग को मोरा ॥ तिन के राग न रहै सरोरा ॥
 ते नर बहु विधि रहै धनंदा ॥ तिनके वशिष्ठहि जस चंदा ॥ जे नर दूरि देस ते
 आवहि ॥ मनो कामना ते नर पावहि ॥ दोहा ॥ अंग बेरहि जे गंग मह ते नर चतुर
 सुजान ॥ आगे कथा प्रसंग में सुनहु लोग दै कान ॥ जे नर निदा गंग को कहों ॥
 सात जन्म कुष्टो अवतरहीं ॥ जे नर हंसहि गंग के जल को ॥ ते नर सदा दुषित
 यहि तन को ॥ × × × × ×

End—दान पुण्य तब नृप करो विधि समेत नृप सोइ ॥ जे जे जे सब करै
 रंग रंग नित होइ ॥ चौ० ॥ कहेउ उमा तब बात विचारो ॥ बात हमारि सुनहु
 विपुलारो ॥ जेइव यह प्रभावति नारो ॥ केहि विधि मुक्ति हमर सिधारो ॥
 भये परम पद के अधिकारो ॥ काल पाइ ते हमर लेमारो ॥ मुक्ति मय सो होलौ
 कैने ॥ विस्तु सरूप धरनन जैस ॥ येकादसी है मुक्ति को दाता ॥ पारवतो सुनु
 ऐसी बात ॥ योगमद्र नृप सो करव ॥ रघुपति भक्ति हृदय में धरव ॥ वन में नृपति
 सिवारन कोइ ॥ राजा पुत्र एक सुन्दर दोन्हा ॥ नारद कल्प को कथा पनाता ॥
 पारवतो सुनि भई सुखीता ॥ दोहा ॥ एकादसी जत देसा जो कोइ करै सुजान ॥

मुक्ति पदार्थ पावे सो बैकुण्ठ समान ॥ सुनौ लोग दै कान बूत यह करौ येका-
दसि । पावे पद निबान सुष संपति सो जस मिलै ॥ इति श्री नारद पुरान कथा
एकादशो महात्म्य समाप्तम् ॥ (लिखिते दोन भगत) । वेदा ॥ श्रीगुरु संभु प्रताप
पोथो भई तवार । जो जस देखा तस लिखा दोष न देव हमार ॥ मिति कुवार
सुदी ४ वार इतवार ॥ सन् १२७३ ॥ संवत् १९२२ ॥

Subject—पृ० १—३ तक—ग्रंथ निर्माण कालः—“सबह सै सत्तरि
संवत मे संसार । भादौ सुकुल सोवार को कथा लोन चवतार” —गंगा महात्म्य
तथा उत्पत्ति । (२) पृ० ४—५ तक—कवि के नगर आदि का वर्णन । “अंबू नगर
ग्राम को नाऊ ॥ सुदरस कवि बसै तेहि ठाऊं ॥ इत गंगा उत जमुन बहाई ॥
पंतरवेद सुदरसन रहई ॥

“मैसा तेज नरेस को बसै सब सच देस ॥ नाम तौ रामगुलाम है तेज
स्वासि नरेस” ॥

(३) पृ० ५—२८ तक—चमहन शुक्र एकादशी को उत्पत्ति, अर्जुन कृष्ण
संवाद, मूर रक्षसी द्वारा देवताओं को कष्ट, देवताओं का भाग कर विष्णु के पास
जाना, देवासुर संग्राम, सुरों को पराजय, विष्णु का गुफा में छिपना, स्त्री का
गुफा से निकलना, राक्षस को मारना । विष्णु का अर्चन, उसका नामादि
पूजना, एकादशी का सब वृत्तान्त कथन । विष्णु का वर देना । (४) पृ० २९—३६
तक—एकादशी चमहन कृष्ण पक्ष को उत्पत्ति वर्णन । दैत्य देश के राजा का
स्वप्न में अपने पिता को नरक में देखना, मुनि द्वारा इसके कारण जानकर एका-
दशी (चमहन कृष्ण) का व्रत करके उन्हीं सुरपुर भेजवाना । (५) पृ० ३७—४४
तक—माघ की एकादशी व्रत का फल उसकी उत्पत्ति का इतिहास, पंचावती
के महाजीत नामक राजा के पुत्र लक्ष्म का ज्वारी होना, पिता द्वारा उसका निकालना
जाना । दशमी तथा एकादशी के दिन भूषा पड़े होने पर एकादशी व्रत का फल
प्राप्त होना । पिता के पास जाकर राज्याधिकार प्राप्त करना । (६) पृ० ४५ से ५३
तक—श्राव शुक्र एकादशी का फल, व्रत को रीति, चंदावतीपुर के सुकेत नामक
राजा का पुत्र न होने पर वन को जाना । वहाँ भूष व्यास से व्याकुल हो कर
एक तालाब पर निकलना । वहाँ पर एक बैठे ऋषि के आदेश से व्रत करना और
पुत्र पाना ।

(७) पृ० ५४—६४ तक—माघ कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम, उसका
इतिहास—एक ब्राह्मणी को नारायण द्वारा परीक्षा, भिक्षा मागने पर मिट्टी
डालना, उसको स्वर्ग होना, केवल मिट्टी का घर मिलना, पूरुने पर नारायण
का बाली मकान देने का कारण बताना । किचाड़ देकर नारायण को

पात्रा से रहना, मुनि नारियों का उसे व्रतदान का फल प्रदान करना, उसके घर में सब कुछ हो जाना ।

(८) पृ० ६५—७२ तक—माघ शुक्ल पक्ष एकादशी के व्रत का नियम इतिहास—एक माघर्ष का इन्द्र के घनाड़े की पुष्पवती नामवाली घप्सरा पर मोहित होना, इन्द्र के घमिशाः से दोनों का पिशाच पिशाचो होना । एकादशी के घनाट व्रत से उनका उद्धार ।

(९) पृ० ७३—८२ तक—फागुन कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम—इतिहास—चन्दलम्भ द्वारा एकादशी महात्म्य सुनकर चौर बैसा हो करने पर राम की विध्वंस का वचन ।

(१०) पृ० ८३—९४ तक—फागुन शुक्ल एकादशी का नियम इतिहास—मानधाता-वशिष्ठ संवाद—चैतर्य रात्र के एकादशी व्रत द्वारा एक दुष्ट का तरण, सुर्य नामक एक राजा का एकादशी व्रत के कारण शत्रुओं से बचना ।

(११) पृ० ९५—१०५ तक—चैत्र कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल, मानधाता-शेामस संवाद, इतिहास—चैतर्य वृष का वन विहार, उसी वन में मेधावी ऋषि की तपस्या देख कर चौर इन्द्रासन जाने की घांटा से सुरात्र का मंजुदाया नामक घप्सरा का उसका तप मंग करने की भेजना, कामदेव की सहायता से घप्सरा की सफलता, मुनि के साथ ५७ वर्ष निवास, ज्ञात होने पर लो की मुनि का घमिशाप । एकादशी व्रत से दोनों के कलमष दूर होकर उद्धार ।

(१२) पृ० १०६—११२ तक—चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी, नामपुर के ललित नामक पुरुष का अपनी पत्नी ललिता के एकादशी व्रत कर के उसका फल देने से ललित का शपथोचन और पिशाच से बचना वास्तविक रूप ग्रहण करना, एकादशी व्रत का फल कथन ।

(१३) पृ० ११३—१२१ तक—वैशाख कृष्ण एकादशी का फल—इतिहास—लवनपुर के राजा हरिवेन के एक चमार द्वारा एकादशी का फल प्राप्त करने पर एक गंदा बने वृष बाधन का उद्धार ।

(१४) पृ० १२२—१३१ तक—वैशाख शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत का फल, एक सेठ के पापी पुत्र का जुषा इत्यादि कुर्मों द्वारा घर से निकाला जाना, चारो करने पर दंड देकर नष्ट से निकाला जाना । पशु पक्षियों का विनाश करना । कौडिन्य ऋषी द्वारा उसका एकादशी व्रत करके उद्धार होना ।

(१५) पृ० १३२—१३८ तक—जेष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल—इतिहास—वैभन की पुष्पा से एक घप्सरा का विमान नीचे गिरना, दासों जो एकादशी के दिन भूजो रहो थीं उसके फल से उसका घाकाश पर चढ़ना, राजा का एकादशी व्रत नगर के लिये पुष्पों सहित करना ।

(१६) वृ० १३९—१६० तक—जेष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी महात्म्य, इन्द्र के शाप से एक मंथर्व का जिन्द् होना, एकादशी व्रत का महात्म्य सुनकर उसका आचरण करने पर एक राजा का पुत्र होना । उस पुत्र का बड़ा होकर मन्दन वन को जाना, वहाँ जिन्द् का उससे चिपट जाना, वर घाने पर एकादशी व्रत का फल पाने पर उसका उद्धार ।

(१७) वृ० १६१—१६७ तक—भाषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी । एक ब्राह्मण का कुबेर के अभिशाप से कुटो होना और मार्कण्डेय ऋषि द्वारा भाषाढ़ एकादशी व्रत द्वारा उसका उद्धार, व्रत फल ।

(१८) वृ० १६८—१७७ तक—भाषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी—इस व्रत द्वारा राजा बलि को जो पाताल लोक के राजा बन गये थे—का नित्य ही भगवान् के दर्शन पाना । व्रत का फल ।

(१९) वृ० १७५—१७८—श्रावण कृष्ण एकादशी व्रत का फल । यज्ञा द्वारा नारद की सेवा ।

(२०) वृ० १७९—१९६ तक—श्रावण शुक्लपक्ष की एकादशी व्रत का महात्म्य, द्वार में महिषासुरी नगर के महोजीत नामक राजा का इस व्रत को करके पुत्र प्राप्त करना ।

(२१) वृ० १९७—१९८ तक—माघ कृष्णपक्ष की एकादशी के व्रत का फल—इस व्रत के फल से राजा हरिश्चन्द्र का मृतक पुत्र जीवित होना ।

(२२) वृ० १९९—२०० तक—माघ शुक्लपक्ष की एकादशी का फल—एक राजा के नगर में वर्षों न होना, उसका दुर्गन्धित होकर नगर परित्याग, वन में ऋषियों का आदेश पाकर एकादशी व्रत द्वारा अल बरसाना ।

(२३) वृ० २०१—२०६ तक—श्रावण कृष्ण एकादशी व्रत महात्म्य—महिषासुरी के राजा इन्द्रसेन के एकादशी व्रत से उनके तरक में पड़े हुए पिता का उद्धार होना । व्रत का नियम ।

(२४) वृ० २०७—२१८ तक—श्रावण शुक्लपक्ष एकादशी व्रत महात्म्य कृष्ण द्वारा युविष्ठिर से चार प्रकार की मुक्ति का कथन, व्रत के नियम तथा फल ।

(२५) वृ० २१९—२३३—कार्तिक कृष्ण एकादशी व्रत का फल, मुचुकुन्द की पुत्री चन्द्रमामा का विवाह सोमन के संग होना; सोमन का समुद्राल घायमन, एकादशी व्रत का घाना, मुचुकुन्द की आज्ञानुसार सब नम्र के साथ इनका भी व्रत होना, जामात्र का मरण होना, राजा का उसको किया करना, एक ब्राह्मण का तीर्थ को जाना, मार्ग में पड़ने वाले परवत पर सोमन का देखना, व्रत के महात्म्य से उसका राजा होने किन्तु; यशस्वि के साथ किये व्रत के फल से उस नम्र के थोड़े दिन रहने को चरचा कर अपनी पत्नी को सुचित करना

पत्नी के पकादशी व्रत के प्रथाप से नगर का शिखर रहना । (२६) पृ० २३४—२३९ तक—कार्तिक शुद्ध पक्ष की पकादशी का महात्म्य—व्रत के नियम और फल ।

(२७) पृ० २४०—२५८ तक—रुक्मांमद चरित्र—सह्यदास विरचित—राजा का व्रत करना, इन्द्र का ध्वराना, एक मोहिनी स्त्री द्वारा राजा को धोखा देकर वन से घर लौटाना, राजा का एक ऊंटनी—जो शायदश इस रूप में परिणत हुई थी—द्वारा सचेत होने पर भी लौटना, मोहिनी द्वारा राजा से पकादशी व्रत फल मांगना अथवा पुत्र का शिर मांगना । राजा का असमंजस, रानी को सम्मति तथा पुत्र की अनुमति से शिर देने का उद्यत होना । ईश्वर का प्रसन्न होकर पण्डित होना, सब नगर सहित राजा का स्वर्गवास । (२८) पृ० २५९—३००—तक—जैदेव की कथा—एक ब्राह्मण की तपस्या द्वारा वह वरदान मांगना कि यदि मेरे प्रथम पुत्र अथवा कन्या होंगी तो वह चाप के अर्पण करेगा और दूसरे को मैं ग्रहण करेगा, उसकी मनोकामना पूर्ण होना, पुत्रों को लेकर जाना, स्वप्न में ईश्वर का कथन कि वह कन्या जैदेव को दे, जैदेव के न ग्रहण करने पर बरबस कन्या को छोड़ कर ब्राह्मण का चल देना, जयदेव का उसे ग्रहण करना और वन घास को इच्छा से किद्विद के नृपति के पास जाना, चोरों द्वारा उनका भोग भोग, राजा का पाकर उन्हें ले जाना, ग्रहणा होने पर उन्हें दान का कार्य सौंपना, एक दिन चोरों का घा जाना उनका भयभीत होना जयदेव का समय-दान, उन्हें बहुत सा द्रव्य देकर विदा करना, उनको स्त्री प्रभावती की ईश्वर द्वारा भेजी हुई सिद्धियों से रक्षा । चोरों को राजा द्वारा जयदेव का बहुत सा द्रव्य देकर दूतों के साथ विदा करना, घर के पास पहुँच कर चोरों का दूतों द्वारा राजा को संवाद, कि 'वह साधू नहीं है' हमारा साधो चोर है इसी कार्य में उसके हाथ पैर कटे हैं, इतना कहते ही चोरों का पृथ्वी में समा जाना, दूतों का जयदेव के पास आकर सब हाल सुनाना, जयदेव के हाथ पैर उगना, संपूर्ण समाचार राजा को ज्ञात होना, राजा का सेवा में उपस्थित होकर विनय पूर्वक सब समाचार जानना, प्रभावती का मनन, राजा का रक्षेत्र में जाना और जयलाम करना, सात संतों का युद्ध में मारा जाना और उनको स्त्रियों का सती होना, रानियों का यह हाल प्रभावती को सुनाना, उसका कहना कि इससे क्या लाम, रानियों द्वारा प्रभावती को जाँच । जयदेव का सर्प से डसे जाने का मिथ्या समाचार, उसका सब समाचार जानकर मिरवा बताना । रानी द्वारा दूसरा धोखा कि जयदेव की मृत्यु हो गई, यह सुनकर प्रभावती का शरीर त्याग । रानी का खेद, राजा को सब समाचार सुनाना । राजा का जयदेव से सब समाचार सुनाना, राजा का जयदेव से सब वृत्तान्त कहना, जयदेव का कथन कि भच्छा हुआ खुबौर के पास गई, इसपर राजा का आग्रह, प्रभावती का

जोबित होना, एक मेले में राजा के साथ जयदेव का जाना, मेले में उनका खोजाना, द्रव्य लोलुपों द्वारा उनका पकड़ा जाना, उनके मारने का इरादा जान कर जयदेव का प्रश्न कि तुम लोग मुझे क्यों मारना चाहते हो। वारों का कथन कि द्रव्य लाभ हेतु, जयदेव का शीस झुका देना, ईश्वर द्वारा लोगों का मत पलट जाना, जयदेव को छोड़ देना, राजा से उनका मिलना, राजा का सब समाचार जानकर खेद करना, घर छोड़ना, जयदेव से प्रभावती को पुन—इच्छा प्रकट करना, जयदेव का उसे एकादशो वत का उपदेश “ममा उत्पत्ति का कारण” ब्रह्मा द्वारा नारद को बतलाया जाना, घोर एकादशो महाभय वखन—मनसुखदास कृत भक्त माल (कुछ प्रजामिलादि के तरण का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन, पथवा नाम गिनाना) वखन। ग्रंथ समाप्ति।

No. 409. Bhishaja Priyā by Sudarāṣana Vaidya of Hamirpur. Substance—Country-made paper. Leaves—166. Size— $7\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—13. Extent—2,160 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1729 or A.D. 1672. Date of manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Pandita Rāmādhina Vaidya, District Bārābanki (Oudh).

Beginning—यो श्री गणेशायनमः ॥ नमः सरस्वते ॥ अथ भैषज प्रिया लिप्यते ॥ दोहरा ॥ लंबोदर गजमुख सुमन एक रदन जग बंद । विधु-वाल माल बंदन सुमिरि हे मिरजानंद ॥ १ ॥ दोहरा ॥ धूजनवन सुममति करन हरन दरिद्र समाज । असन वसन धन बुध वरन महादान गजराजि ॥ २ ॥ दोहरा ॥ रिपुमर्दन संकट हरन करन सदा भानन्द । मूषक वाहन दरसते मिठ सकल दुखदंद ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ एक रदन फरसा कर लोन्हे । नज भानन सिंदुर सिर दोन्हे ॥ कुमति हरन शुभ मति वजावत । तुरत प्रबोन बुद्धिबर भावत ॥ ४ ॥ धूप दीप मोदक कर पूजा । विधि वार अस देव न दृष्टा ॥ प्रथम गणेश पढ़तई जावै ॥ शुभ कारज मंगल त्रिय नावै ॥ ५ ॥ मदन कंदन सउ गुरु मननायक ॥ अष्ट सिद्धि दाता सुख दायक ॥ जा सेवत निर्धन धन पावत । महादोन को दरिद्र नसावत ॥ ६ ॥ भय संकट मह सदा सहायक । शतिबल विक्रम कोतुक लायक ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ बानो जू को बंदन विधु सुधा भभृत सुषकंद । सिव चक्रार जिमि चितु बसत निह कलंक मुष चंद ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ रवि प्रताप भानन ससि छाँव दामिनि तन हेम । जग जननी तुव दरन को लियो सदा सिव नेम ॥ ९ ॥

End—चित्रिकादि चूर्न कफ हरन ॥ सेंधव लोजिर एक पल दो पल पोपरा मूर ॥ पोपर लोजिये तीन पल चारि तौ बाकौ मूल ॥ २१ ॥ चित्रक लोजे पंच

पल सुडो घट पल लेउ ॥ हरै लोअये सात पल सब चूरन करि देउ ॥ २२ ॥ टंक
 तीन प्रमान यह जो रानी को देइ । भुष अधिक पुनि मल टरे मुनि निषज यह
 भेउ ॥ २३ ॥ बड़वानल चूरन ॥ झुकरकरा केसरि कना छेगि इलाचो घानि ॥
 पतौ चंदन जाइफल सोठि कंकाल बघानि ॥ २४ ॥ सुमित भाग बोधद सबै
 यकीम बराबरि जानि ॥ एकत सबै मिलाइ कै चूरन करौ बनाइ ॥ मासौ येक
 प्रमान यह मधु मिलाइ कै पाइ ॥ बाहे काम ता पुरुष के बाड़े रुचि अधिकाइ ॥
 करभादि चूरन योज अस्थमन ॥ जवापर साजो को घानि ॥ पाहा चोता कछो
 बघानि ॥ बाइविहंग तासु यह नाउ ॥ पंच लवन पुनि घनि मिलाइ ॥ पला
 तगुह लेइ देवदारु ॥ मोथा बोज कचूर को डारु ॥ इन्द्रजा घ वरे घानि ॥
 २६ ॥ इति श्रीवास्तव्य काव्य कुन सुदर्शन वैद्य कृते निषज प्रिया समाप्तम् ॥
 संपूर्णम् ॥ × × × × ×

संवत् १८५५ मितो चैत्र तीज बुधवार के दिन लिखत ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—प्रथम उद्देश्य, वैद्य लक्षण, मंगलाचरण,
 गणेश तथा सरस्वती वंदना । ग्रंथ निर्माण परिचय, 'नाना मुनि के वचन मुनि
 ग्रंथ उक्त परमास । गिरधर सुत भेषज प्रिया, भाषा करो विलास ॥ सार सार
 संग्रह कियो सकल ग्रंथ मति पान । निषजन को भेषज प्रिया, चित्त सुदर्शन जान ॥

× × × × × ×

ग्रंथ चतुष्टय । कवि कुल वंशतः—उत्तर दिशि मिथोनगर, कियो वास कवि-
 लाल । काव्य उष्ट प्राप्ति घर तिन मैनाम रिसाल ॥ वैद्य वृत्ति तिनको दई मक्त
 भवानी जान । मारहि राजा राइ सब सुख काटे सुम वान ॥ तब ते उद्यम करत
 यह सोति नये बहुकाल । एक दिवस पूछन लहे नैन पीछ नृप बाल ॥ विहवल
 मदिरा पान ते सुखि न रहो मति धोर । अकं छोर प्रकृत दियो राज रयन गई
 पोर ॥ बहु कालो निर्वासपुर घट रवि को मूल । ताके पथ अंजन किये नये डगन
 को मूल ॥ बहु काली निर्वासपुर तब ते मदिरा पान को सतकरो पुरषान ॥ अब
 बाको संग्रह कियो बुद्धिमेत जस हान ॥ २३ ॥ रामदमन परसुत दमन धनुष
 धनुर्धर छप । एकते एक हैं गुन अधिक जिन्हें सराहैं भूप ॥ २४ ॥ पंडित प्रगट
 प्रसिद्ध सब, हमीरपुर खान । पंच सात तिहि बंस में वैद्य सुदर्शन जान ॥ जन्म
 भूमि है तासु को पुर पवित्र शुचि धोर ॥ अति प्रवीन नर जासु कै वसत वैतवे
 तौर ॥

राज वंसादि वंशतः—गहिरवार कुल जगत जसु काशी सुर महिपाल
 कोन्हो राज कुडारगढ़ पगबल साह नृपाल ॥ कवि जन ताके वंश को कहा लगी
 करै बखान । पतापद सुत साबु मति उपजी धर्म निधान ॥ सुख समूह समति
 सहित निस दिन रहत धनंद । सुमन नगर निधि भोड़छो मधुकर साहि नरिंद ॥

तब तै उद्यम करत यह बीति गये यह काल । एक दिवस पृथ्वी नहे नैन पीर नृप
पाल ॥ ताको पुत्र प्रसिद्धि नृप महि मतिबोर सिंह देव ॥ जेते देस विदेस नृप करत
भूप सब सेव ॥ दान करन पारध समर श्रुति पुरान पावान । महाराज बोर सिंह
को दियो साह भुज रान ॥ बृदेजखंड भरतखंड मो मध्य देस में देस । पदार
सिंह महो को संकित सकन नरेस ॥ तिहि कूल सुजान सिंह नृप करो धर्म सुत
रोति । द्वापर जैसा कृष्ण मो कलि विश्वं परि प्रीति ॥ ताको परजा सब सुखो
अन्न वसन धन धान्य । निर्मय राज सदा रहे यतिनिंस पाठोजाम ॥ × ×

ग्रंथ निर्माण काल :—संवत् सत्रह सै भये लगो वास उनगोस । १७२९ ।
रितु वसंत फागुन सुमग कृत्तल पक्ष व्रत ईस ॥ सनि दिन सुभग चतुर्दसी सिद्धि
जोग तिथि वार । प्रथम पहर आरंभ यह तादिन भयो विचार ॥

वैद्य लक्षण, रोगो लक्षण, अवैद्य कथन, रोगो ग्रंथ अनुमान । परिषत्-
कामन । दूत परोक्षा, सुभ शगुन लक्षण, प्रशुभ सगुन परोक्षा, वाम दक्षिण सगुन,
स्वर परोक्षा, नाडों परोक्षा, मुख परोक्षा, नेत्र परोक्षा, दंत परोक्षा, जिह्वा परोक्षा,
नव परोक्षा, इष्टेषवा परोक्षा, स्त्रज परोक्षा, मूत्र परोक्षा, मल परोक्षा, छाया
परोक्षा, छाया विचार ।

(२) पृ० २६—६५ तक—काल वेधादि, द्वितीय उद्देश्य । चतुर्दश परोक्षा
लक्षण, सूर्य कालानल चक्र दूत प्रागप जानना, काला चक्रम, चन्द्र काला-
नन चक्रम, पताका चक्र, सनाका चक्र, द्वादश रासिका दान । नक्षत्र वार
तिथि रोग निवेद्य, नक्षत्रादि दोष, वार वर्ग, नक्षत्र भेद, चन्द्र बल, नक्षत्र
रोगावली चारो चरणों की, लग्न विधान, कालज्ञान लघु जातक, राशि
फल । घात फल ।

(३) पृ० ६६—१४ तक । तृतीय उद्देश्य । चिकित्सा दर्पण । साध्य लक्षण
समोत भाव लक्षण, चाष्ट ज्वर लक्षण—ज्वर को उन्मत्ति, स्वरूप, कोप, प्रसाध्य
उपद्रव, ज्वर प्रमाण, दोष प्रमाण, शुभ ज्वर लक्षण, दोष ज्वर लक्षण, चार
प्रकार का लक्षण, सखिपात त्रयोदश लक्षण, घंतिक लक्षण, रुम्हाह लक्षण, चित्त
भ्रम लक्षण, अन्य सखिपात भेद लक्षण, बंध्या गर्भ विधान, नष्ट पुरुष विधि,
ब्रह्मदंडो प्रयोग, बंध्या लक्षण तथा उसका उपचार, अन्य कफ बंध्यादि लक्षण
घोर प्रयोग गर्भ चिकित्सा, गर्भ रक्षा, गर्भ कष्टो ह्यो का उपचार, द्वादश मास
रक्षा करण विधि, गर्भ वर्जित गर्भ पतन उपचार ।

(४) पृ० १५—१११ तक—बाल चिकित्सादि । बाल चिकित्सा विधान,
धाय परोक्षा, धाय लक्षण, फलो लक्षण, जोगिनो लक्षण तथा उपचार, उनको
शान्ति के सेव । पागादि जोगिनो वगैरे, बालक के बोलने की बात, दश वर्षेन—

अनूप देश तथा जांभख्य देश वनेन, धोरन देश वनेन, अष्ट दिशा रोग वनेन, षट् ऋतु वनेन, ऋतु विद्यान, ऋतु रोग लक्षण, दिन रात पहर रोग राज वनेन, तीन कान, वायु हेतु लक्षण, पित्त हेतु लक्षण, कफ कोप निदान, कफ हेतु निदान ।

(५) पृ० ११२—११६ तक—वायु लक्षण निदान, पित्त लक्षण, कफ लक्षण, प्रशमन, वायु, पित्त कफ कोप । पञ्चमोद्देश ।

(६) पृ० ११७—१२० तक—षष्ठमोद्देशः—स्वस्त्र क्रिया, अनुपान, स्वर, त्रिफलादि सुरस, निव तथा गुरुच स्वस्त्र, तुलसी तथा गुमा स्वस्त्र, जंबू स्वस्त्र, घात्रोफल सुरस, चतुर्विधि स्वस्त्र, सतावर तथा श्वादि स्वस्त्र, मुंडो स्वस्त्र, ससा स्वस्त्र मुंडो स्वस्त्र, ब्रह्मादि चतुर्विधि चुणे, गंगेवा स्वस्त्र ख घातक, पूत पाक विधि, जवादि घृत, मेह विधि, जूसव विधि, कल्क करन ।

(७) पृ० १२१—१५४ तक—सप्तमोद्देश—

काथ कल्पना, अनुपान, काढ़ों के नाम, गुरुवादि काढ़ा, पंचमद्र पित्तज्वर, अमृताष्टक, सन्निपातज्वर दशमूल काथ, अमवादि काथ, कटफलादि काथ, गुरुवादि काथ, अतोसार, संप्रहणो ज्वर वनेन, अन्य त्रिफलादि काथ, अतोसार संप्रहणो संयंत्रो म्रांड विधि, पानादि कल्पना, कोरपाक विधि, चतुर्विधि बल ।

(८) पृ० १५५—१६६ तक—अष्टमोद्देशः—

चूणे विधि—अनेक प्रकार के चूणे—ग्रंथ समाप्ति ।

No. 410. Bhakta Nāmāvalī by Sudhamukhī. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size— $6\frac{3}{4} \times 4\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Gaṇeśa Prasāda, Village Danoj, District Rāe Bareilly.

Beginning—श्री सोत्तारामाभ्यांनमः ॥ अब मैं इन हरिजन को चेतो । हूँ अनुकूल मूलवर दोऊँ हरि छूटै मय वेरो १ । विधि नारद, संकर सनकादिक, कपिलदेव, मनु, भूषा नरहरि दास, जनक, मोषम, बलि, मुकं मुनि, धर्म सरूप ॥ २ ॥ विष्णुकसेन, जय, विजय, प्रबल, नंद, सुनंद, सुमद्रो । चंड, प्रचंड विनोद, पुनोता, कुमुद, कुमुद दग, मद्रो ॥ ३ ॥ सोल, सुसोल, सुपेन, गहड़, कमला जानो हरि प्यारो । जामवंत हनुमान विमोपन, सबरो भगपति धारो ॥ ४ ॥ बिदुर मुकंड, भ्रूव, उडव, पकुर, सुदामा, जानो । चित्रकेतु, संवरीष पाह गज, चंद्रास मन मानो ५ ॥ कौषारव, कुंतो, बिभु, पांडव, जगेश्वर, श्रुति देवा । प्रभु भंग, मुचकंद परोक्षत, पियशत, सस, सुसेवा ॥ ६ ॥

End—रामनन्द, पूरन, परबोध, जगदीनन्द मलार । दास द्वारिका भट्ट लक्ष्मण, नाम गङ्गाधर भार्ग—१४ । श्री नारायणदास, दास भगवान, सुजय कल्याणा, संतदास पुनि माधोदासा, सोभ, राम घमाना ॥ १५ ॥ कान्हर, गोविन्द, वासव सुत; श्री जगत सिंह जगज्जाने । दोष कुर्वरि; जयसिंह भाल गिरधर, हरिजन अनुरागे ॥ १६ ॥ रामदास गोपार्थ शर्मा, रामराइ भगवंता, माधो रसिक, स्वरूप उपासिन, लालमती मनिसेता ॥ १७ ॥ श्री नामा स्वामी माला से गुरु सेतन मृष जान्यो । मति अनुकूप रची नामावलि सज्जन सुनिसुप मानो ॥ १८ ॥ भूल चुक सब कुमा करो मम गम नहि जो सब भापै । प्रातकाल नामावलि लोजै तो हरिजन रस चापै ॥ १९ ॥ दूसरथ सुत श्री जनकनन्दनो रोझै तापर बेनो । भोर घोर मधुरे स्वर भापै नाम सकल डै नेनो १०० ज्यों हरि घाप सकल जग पावन नाम पुनोत पुनोता । ज्यों हरिजन सच्चिदानन्द है नाम लेत जन भीता ॥ १०१ ॥ नाम भक्त नामावलि बाको जाको जाप करीजै । पनायास भव प्राप्त विगत सो होय जुगल पद लोजै ॥ १०२ ॥ हरि को प्रति प्यारे हरिजन जस जो जन मन में भावै । सोल मती गुरु कृपा करी जब सुधा मुषो कहु नावै ॥ १०३ ॥

Subject—सुधा मुषो कृत भक्त नामावली पर्यान् नामा जो कृत भक्तमाल में जित भक्तों के नाम आये हैं उनके संक्षेप रूप में काव्य में रचा है ।

No. 411. *Santi Bhawani kī* by Sukhadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8×4 inches. Lines per page—22. Extent—125 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāzari. Date of manuscript—Samvat 1917 or A.D. 1860. Place of deposit—Thakura Jagadewa Singh, Village Gujauli, Post Office Bauri, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अस्तुति भवानो को भाषा ॥ चोपार्थ ॥ गुरु गणेश के चरन मनावो । जेहि प्रसाद देवो गुन गावो ॥ पथमहि सुमिरौ बंदी माया । जेहि सुमिरै ते निर्मल काया ॥ सौरौ देवो चादि कुमारी । जेहि सुमिरै सिवि होइ हमारी ॥ सुमिरौ देवो मन चितलारि । दुख दारिद्र्य पाप छे जाई । अस्तुति करौ भवानो केरो । सुनौ संन कहौ मैं उरो ॥ जा सुमिरै दुख भंजन होई । रोग भयानक रहै न कोई ॥ जा सुमिरै ते दुजैन दुरई । काल कराल महा दुख हरई ॥ जल धल रन मह रक्ष्या करनी । सुमिरौ ताहि माह भय हरयो ॥ ताको पाप्म कभी नहि जाई ॥ जब देवो को नाम प्रकारै । सेकट विपति दुरि तेहि भाजै । जहं देवो को सेवक गाजै । विषम उबारि दुर्ग मह जाई । तहां

भवानो पाप सहाई ॥ कहें जनि प्रभुता कही बचानो । बार बार नर सुमिर
भवानो ॥ प्रादि स्वरूप ज्योति तब लयऊ । ब्रह्मा विष्णु सब तुमते भयऊ ॥

End—पछ शस्त्र कोठ धाव न पावै । नित देवो को अस्तुति ध्यावै ॥
इं कनि सं कनि पै महामारो । तिन्ह से नाहो होइ दुखारो । नवग्रह ताहि न
सकैं सतारै । पढ़ि अस्तुति सब दोष नसाई । धन धर धान्य होइ अधिकारो ।
महा धनाढ्य होइ सो भारी । तोनि लोक माता कोऊ नाऊ । अस्तुति पढ़ै सदा
तेहि ठाऊं । अथ सृष्टि नहिं ताको होइ । औ सो वर्ष जिये निज सोई ॥ उरि
होइ कछु रिन न रहाई । जब देवो को अस्तुति कहै । पुत्र पौत्र वाडै परिवारा ॥
पदु अस्तुति नित दुनौ वारा ॥ चंद सूर्य सो जवळो धरतो । संत जनन को तब
लग बढ़तो । कलियुग कलमष जाय नसाई । अस्तुति पढ़ै सदा चितलाई । कोड़ो
पढ़ै कुष्ट छय जाई । दादु खाजु ना तन में रहै । जातो सुमिर होइ सो प्रानो
अपे नाम होइ बड़ जानो । विद्यार्थी सो विद्या पावै । पुत्र प्राधिक को पुत्र
मिलावै । जो जो मन में इच्छा लावै । सो इच्छा सम्पूरण पावै । दिन प्रति अस्तुति
जो कोइ ध्यावै । कहि सुषदास परम पद पावै ॥ देवो को अस्तुति सम्पूणे सुम
मस्तु जेठ मासे कृष्ण पक्षे तियाँ परिवाराम, गुजलो देवोदीन मुसहो लिखते
संवत् १९१७ राम राम राम राम राम राम राम ।

Subject—पृ० १—८ तक—भवानो को महिमा का वर्णन किया गया है
कि इस प्रकार शंभु निशंभ प्रादि को मारा । भवानो का स्मरण करने से पुत्र
पौत्र धन बल प्रादि प्राप्त होता है, मनुष्य आनन्द से अपना जीवन व्यतीत करता
है उसका किसी प्रकार का भय तीनों तापों का नहीं रहता है ।

No. 412(a). Adhyātma Prakāśa by Sukhadeva Miśra.
Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—9×7
inches. Lines per page—32. Extent—455 Anushtup Ślokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—
Samvat 1775 or A.D. 1718. Place of deposit—Pandita Śiva
Narayanaji Vajpai, Village Vajpai kâ purwā, Post Office
Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री नमोभयनमः ॥ सच्चिदानन्दाय नमः ॥ कवित्त ॥ थावर
जंगम जीव जेत जग भोतिन भोतिन भेष धरे हैं ॥ नामहि सत्य चिदानंद रूप सो
आत्म एक प्रकास करै है । । बिन जानत सिंधु सो लागत जानेते गोपद तुल्य
तरै है ॥ बंदात ताहि सदा सुपदेय जू बल सदा सब दो ते परे है ॥ १ ॥ दोहा ॥
व्यास मथन करि वेद सब स्रष्ट निकारे सार । श्री गुरु संकर देव जो कीन्हे बहु

विस्तार । तिन ग्रंथन को समुक्ति मत्त हिय घरि पर उपकार । भाषा कर सुषदेव यह रच्यो इंध घति चाह ॥ जैसे रवि के तेज ते संवकार मिट जाव । अध्यात्म परकाश ते त्यों अज्ञान नसाइ ॥ गुरु शिष्य को बाद यह वेद वचन उपदेश । अध्यात्म परकाश यह भाषा सरल सुवेष ॥ अधिकारी जिज्ञासु यह शिष्य कहावै सोइ । तप साधुन करि देह के पापनि दारौ घेइ ॥

End—सांध्य ॥ प्रकृति पुरुष यह तनु को जाके होय विवेक । यहै मुक्ति सांध्यो कहै ज्ञान भये सब एक । आगम तंत्र पुरान पुनि पंच रात्र मत्त जानि । ऐचि आपने पंथ को जग में दारत धानि ॥ मोरे साखन के मते पर जगत में जानि । कल्पन छोड़ूटै नहाँ जन्म मृत्यु लपटानि ॥ अपने मत्त यह वेद सिर सब त उत्तम जानि । ताहो को विस्वास करि भूल मोर मत्त मान ॥ सठ यह धूरत नास्तिक वेद विरोधी मोर । तन्हें न भूलि सुनाइये यह मत्त मत्त सिर मोर ॥ जिनके उर हरि मक्त हैं सो गुरु भक्ति निदान । तिनके आगे बोलियो यह उपदेश निदान ॥ वेद स्मृति स्मृति वचन को कह सुषदेव विलास । अध्यात्म परकाश ते अध्यात्म परकास ॥ सत्रह से पत्रद्वये कातिक मास वषानि । हरि वासर बुधवार को सुकुल पक्ष जिय जानि ॥ इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेव मिश्र कृत पूर्ण ॥

Subject—इस अध्यात्म प्रकाश में शिष्य गुरु संवाद है शिष्य ने मनुष्य शरीर पर व ईश्वर रूप पर व आत्मा आदि पर प्रश्न किये और गुरु ने उनके प्रत्येक प्रत्येक उत्तर दिये । इसमें सांध्य वैशेषिक पातंजलि आदि के उदाहरण दिये हैं और प्रकृत के रहस्य को उत्तम रीति से समझाया है ।

No. 412(b). Adhyātma Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves--40. Size--9½ × 5 inches. Lines per page--8. Extent--360 Anuṣṭup Ślokas. Appearance--New. Character--Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1772 or A.D. 1715. Date of manuscript--Samvat 1845 or A.D. 1788. Place of deposit--Paṇḍita Chandrabhāṭājī, Village Parvatpur, Post Office Suratganj, District Barabanki (Oudh).

Note—(I) आदि पत्र No. 412. (a) पर लिखा गया है ।

End—(II) इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेवन कृतं वहि मुखांतं ॥ दोहा ॥ सकल धर्म कामादि तांज मझु निहचै करि मोहि ॥ सब पापिन ते

मुक्त कर मोक्ष देहुंगा तोदि ॥ नेपाल बचनेकं अर्जुन पति ॥ संवत् १८४५
मिती मादपद सुदी द्वादशी शुक्रवासरे लिखितं भोलानाथ द्विवेदी स्वाक्ष
पाठाक्षम् ।

No. 412(e). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—30. Size—9×6
inches. Lines per page—24. Extent—540 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—
Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat
1867 or A.D. 1810. Place of deposit—Thākura Rāmadaura,
Village Mithaurā, District Baharāich, Kesaraganja (Oudh).

No. 412(d). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—17. Size—8×5
inches. Lines per page—41. Extent—468 Anushtup Ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date
of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manua-
script—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—
Mahanta Jawāhiradāsa, Village Narottamapur, Post Office
Khairighāt, District Baharāich (Oudh).

No. 412(e). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Substance
—New paper. Leaves—24. Size—9×6 inches. Lines per
page—18. Extent—432 Anushtup Ślokaś. Appearance—
New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat
1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1946 or
A.D. 1889. Place of deposit—Nāgarī Prachārini Sabhā,
Kāśī.

No. 412(f). Pingala Chhanda Vichāra by Sukhadeva
Misra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—Country-made
paper. Leaves—29. Size—10×5 inches. Lines per page—11.
Extent—750 Anushtup Ślokaś. Appearance—Old. Cha-
racter—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1907 or
A.D. 1850. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhīṅgā
(Baharāich).

Beginning—श्री मणेशासनमः ॥ मनपाति गोरि बिरोस के पाई नाई निज सोस । मिश्र सुकवि महाराज को देत बनाई असोस ॥ १ ॥ रजत धर्म पर मनहु कनक जंजोर विराजति । बिसद सरद धन मध्य मनहुँ छैन दुति छवि छाजति ॥ मानहुँ कुमुद कदम्ब मिलित चंपक प्रसून तति । मनहुँ मध्य धनसार लसत कुम-कुम लकोर छति ॥ हिमिनिरि पर मानहुँ रवि किरिन इमि धन धरि चरध्वं मह । सुखदेव सदासिव मुदित मन यो हिम्मत सिंह नरिद कहं ॥ रतन जटित भू माल को मनो विभूषन वेध । जाहिर जम्बूदीप में सिरै घमेठी देस ॥ अपनेहु सुनिये नाहि जहां काहु को डक नाहि । सदा एक परलोका ही सिनरे देस बेराहि ॥ ४ ॥ सतौ दिन सुनिचत जहां दुशमन हो को नास । सात्विक भाव हो में जहां संसु पटोह उसास ५

End—अथै काक्षरावदारभ्य षड्वि शतियन्त्रे पर्वत पुथक पुथक नामात्यु-क्यते ॥ उक्ता प्रत्युक्ता बहुरि मध्या कहिये जानि । कही प्रातिपदा बहुरि सुप्रतिपदा मन में जानि ॥ ४२ ॥ गायत्री उष्णिक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि । बृहती पंगति कहि बहुरि त्रिष्टुप त्रिप में जानि ॥ जगतां यति जगतां कही बहुरि सङ्करो जानि । यति सङ्करो गनाई पुनि षष्ठानि षष्ट बचानि ॥ पुनि कहि भूति यति भूति बहुरि कृति पुनि विहृति यवानि ॥ बहुरि संस्कृत जानि पुनि यति कृति उठकांत मानि ॥ ये रू यरन प्रस्तार ते छविस सौ ये नाम ॥ कमते कहत फनिन्द सुनि होत भवन विश्राम ॥ वृत्तानि समाप्तम् ॥ शुभं भूवात् सावन माने कृष्ण पक्ष ७ बुधवासरे सप्तम १९०३ साके १७७२ इति श्री मन्महाराजाधिराज बाघेल गौत मनिराजा हिम्मत सिंह कारिते मिश्र सुखदेव कृते पिगल कुन्दो विचारे वण्णे वृत्तानि ॥

Subject—प्रार्थना, राजवंश वर्णन—पृ० १—३ । गुरु, लघु संज्ञा, प्रस्तार षट्कल, चक्षर गण, नल विचार, उद्दिष्टादि । ३—५ । गाहा कुन्द, विषमस्थान, विषाहा, उगादा, माहिनी, सिंहनी, पंचा, बखेभेद, दाहा भेद, व्याघ्र घबिबाल, सुनक, उंदर । ६—९ तक । रसिका, रोला, उछाला, साम्ना संज्ञा भेद, काय द्रोष, कृपय, हुटिका, घसिला, पादाकुलक, चौबोला, दंडा, पचावगी, कुंड-लिवा, समुतध्वनि, गगनांगन, दौबह, ऊलना, पंजा, सिधा, माला, खुलिपाला, सोरठा, हाकलि, मधुमार, घामोरा, देवकाला । ९—१३ । दीपक, सिद्धाचलोकन, पूर्वंग, लीलावती, हरिगीत, त्रिमंगी, दुर्मिला, होरका, जनहरन, मदनहरा, १४—१५ उध्वल, मोहनो, हरिपद, बरबै, सवेया, सुगति, काम, ताली, शशि, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदउतीषा, कमल, तोणी, नगानिका, संमोहा, हारी, सेवा, तिलका, त्रिमोहा, चतुर्वंसा, मंधान, संखनारी, मालती, समानका, सुवासक, करहचो, सरप झपक, वसुमती, मंदलेका, विद्युन्माला, प्रमाणिका, मझिका, मुगा—१६—१८ । कमल, मानवकीड़ा, पादंत, कमला, विष, तोमर, हलमुखी

रूपमाली, मांखवंध, समुता, चंपकमाला, सुमुखार, समृतागति, वंशु, लुकाहे, दोधक, सालिनी, दमनक, सेनिका, मालती, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, स्वागता, रघोद्वता, भुजंगप्रमाण, लक्ष्मोघर, ओटक, मोक्षिकदाम, सारंग, मोदक, तरलनयन, सुंदरी, प्रमिताक्षरा, वंशस्व, इन्द्रवंशा, माया, तारक—१९—२३। कंडु, पंकावली, वसंततिलका, चक्रपद, चमरावली, सारंगिका, चामर, मनहंस, मालिनी, सरम, नाराच, नील, चंचला, प्रह्लरूपका, शिखरिनी, मेदाकांठा, हरिणी, मंत्ररी, चंचरी, चन्द्रमाला, धवला, गौतिका, गौका, श्रम्वरा, नरेन्द्र, हंसो, मोहिनी, सुंदरी, चकोर, मत्तनवंद, हुमिल, किरौट, त्रिमंगो, सालूर—२४—२८। सौदाम, सुंदरी, पुष्पतारा, सौरम, घनाक्षरी, रूपधना, शशो, वैदिक छंद—२९।

No. 412(g). *Pīṅgalā Bhāṣā* (Vṛitti vichāra) by Sukha-deva Miśra of Kampilānagara. Substance—Country-made paper. Leaves—91. Size—8×4 inches. Lines per page—18. Extent—1,435 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1858. Place of deposit—Thākura Jagadeva Simha, Village Gujauli, Post Office Bauri, District Baharāich (Oudh).

Beginning—धोरामानुजायनमः ॥ अथ पिंगल भाषा लिख्यते ॥ चौ० छंद ॥ जय जय मोहन मदन नुरारी । कमल नयन केशव कंशारी ॥ करना कर केसो रिपु कृष्ण जय वसुधा घर बावन बिम्ब ॥ मनहरन छंद ॥ बिम्बन बिनासन है आले आधु आसन है से ये पाक सासन है सुमति करन को । आपदा के हरन हैं संपदा के करन हैं सदा के धरन हैं सरन असरन को । कुंज कुल को है नव पहनव जो है सरि सुपदेव सोई धरे धरन धरन को ॥ बुद्धि के बिनायक सकल सुपदायक सुसेवा कविनायक विनायक धरन को ॥ दोहा ॥ मदन पाल कृपाल के कमल चरन चितलाइ । कियो सुकवि सुपदेव यह वृत्त विचार बनाइ ॥ पिंगल नाम अर्णास्त कृत छंदो ग्रंथ अगाध । सार लियो तिन को कछु छमियो कवि अपराध ॥

End—समुभि विचारि सु चारु मति दोहा अर्थ बिसेषि भो । रघुवर दास चनंद जूत कवि पंडित जन लेषि भो ॥ होत मात करतव्य बात वश पिता मरख भो । विद्धि राम बन गमन बाढ़णी राज धरन भो सुवन के कई योग चतुर ब्रह्मा मोहि कीन्हा । नृपति तनय प्रभु बड़ापन नाहके दोन्हा । बादि बड़ाई तेहि वंश तुम सब मिलि अब राज लय रघुवर दास ये कवित कहि राम चरन जुग हृदय धरि ।

सवेवा । आनंद बंद सुकोमल बंद सबै बलिहारो सुबाहु तुम्हारो । जगदे जेहि को
जस दै अखेदन हु कहि नोति सुगई । पार न पायो शारदे शेष गणेशहु चाहि
रहे सिर नाई । रघुबर दास सु पाश यही कृपा करि के हमहु अपनई ॥
इति श्रीरस्तु ॥

No. 412(h). *Pingala Himnata Simha* by Sukhadeva
Mīra of Kampilā. Substance—Country-made paper.
Leaves—44. Size—8 × 6 inches. Lines per page—32.
Extent—792 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of manuscript.—Samvat 1920 or A. D. 1863.
Place of deposit—Thākura Lāyaka Simha, Village Bhag-
awānpura, Post Office Biswān, District Sitāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पिंगल हिम्मत सिंह की लिखते ॥
दोहा ॥ गणपति गौरि गिरोस के पाय नाय निज सोस ॥ मिथ सुकवि महाराज
कह दंत बनाय असोस ॥ छौ ॥ रजत पंम पर मनहुं कनक जंजोर बिराजति
बिसद सरद घन मध्य मनहुं छन दुति छवि छाजति ॥ मानहुं कुम्भ कदंब मिलत
चंद्रक प्रसून भति मनहुं मध्य घनसार नसति कुंकुम लकोर अति ॥ हिम गिरि
पर मानहुं मानहुं रावि किरिनि इमि घन धरिय अखंग महं सुकदेव सदासिव
मुद्रित मन हिम्मत सिंह नरेस कहं ॥ दोहा ॥ रतन जटिन भूपाल को मनौ विभूषन
बेस जाहिर जंबूरोप में सिरे अमेठी देस ॥ सपनेहुं सुनियत जहां काहु को डर
नाहिं । सदा एक परछोक हो सिंगरे लोग डेराहिं ॥ रातौ दिन सुनियत जहां
हुसमन हो को नास । सात्विक भावहि में जहां अमुवा दोह उसास ॥

End—अथ गद्यस्योदाहरण ॥ जबर अरि जेर कर सेर समसेर समसेर
बहादुर ॥ बैरि बर वानर बिदारन सिंह मत्थ ॥ हत्थ अकृत्थ बल पत्थ समान
महा ॥ वीराधि वीर समर धीर धरनि धुरंधर ॥ अराधोस धवल घाम धवल
सुजस पुंज । विजित सुर धुनी धार धवलिम श्री महाराजाधिराज हिम्मत सिंह
चिन्हजोव ॥ पथे काक्षरात्यादांभ्य षड्विंशति वसे पथै पृथक् पृथक् नामभ्यु-
च्यते ॥ उक्ता अयुक्ता बहुरि मया कहिये जानि । कही प्रतिष्ठा बहुरि सुप्रतिष्ठा
मन में जानि ॥ नायत्री उज्जिक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि । बृहती पगतो कहि
बहुरि चिष्टप जिय में जानि ॥ जगतो अति जगतो कही बहुरि सज्जरी जानि । अति
सज्जरी गनाइ पुनि अष्टति अष्टि बपानि ॥ धृत अति धृत कृत प्रकृत पनि आकृति
विकृति बपानि ॥ बहुरि संस्कृति जानि पुनि अति कृति उत्कृति मानि ॥ एक
बरन प्रस्तार से छबिस लौ ये नाम । क्रमते कहत फनिद सुनि होत अवन विधाम ॥

इति श्री मनमहागजाधिपति हिममत सिंह कारते मित्र सुखदेव कृते कंद विचारी
यस्य कृतानि निवृत्तानि संपूर्णम् सुममस्तु ॥ श्री संवत् १९२० शके १७२४ कार्तिक
मासे कृष्ण पक्षे त्रिंशो द्वितीयायां मिदं पुस्तकं समाप्तम् लिख्यते मनेस पंडित
पैदापुर ग्राम्याने ॥

Subject—इस पुस्तक में पिंगल काव्य वर्णन है ।

No. 412 (i). *Pingala Bhāṣā* (Vṛitta vicāra) by Sukha-
deva Miśra of Bigahāpura Kampilā. Substance—Country-
made paper. Leaves—85. Size—12 × 6 inches. Lines per
page—32. Extent—1275 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—
New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Sam-
vat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1939
or A. D. 1882. Place of deposit—Lālā Bhāgawatā Prasāda,
Village Sadābāpur, Post Office Sisaiyā, District Baharāich
(Oudh).

No. 412 (j). *Chhanda Vicāra* by Sukhadeva Miśra of
Kampilā (Farrukhābād). Substance—New paper. Leaves—
50. Size—13 × 8 inches. Lines per page—22. Extent—620
Anuṣṭup Ślokaś. Incomplete. Appearance—New.
Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1943
or A. D. 1886. Place of deposit—Pandita Kṛṣṇabibāri
Miśra, Editor, *Mādhuri*, Lucknow.

Note—प्रथम पृष्ठ खंडित है । दोष खंडित प्रति सहित पूर्ण विवरण सहित
No. 412 F पर लिखा गया है ।

No. 412 (k). *Pingala* (Himmata Simha) by Sukha-
deva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—
33. Size—10 × 6 inches. Lines per page—64. Extent—
1,805 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A. D. 1813
Place of deposit—Siva Nārāyaṇa Vajpai, Village Vajpai
lā purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (l). *Chhandoniwāsa Sāra* by Sukhadeva. Substance
—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches.

Lines per page 10 Extent—600 Anushtup Ślokas. Appearance New. Character—Nāgarī Place of deposit.—Daughter of Pandita Dwarikā Prasāda Trivēdī, care of Devī Dīna Kurām, Numberdāra Village Lakshmanpura, Post Office Satarikha, District Bārābanki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ भगन तीनो गुरु भूमि सुर सिद्धि करै तत्काल ॥ यगण आदि लघु नोर प्रभु सुख संपदा सुकाल ॥ १ ॥ भगन आदि गुरुचन्द्र सुख पूत्रे मन को आस ॥ गीत सारठा का विसव पूरण पूरव विलास ॥ २ ॥ भगन तोलहु शेषधन सुख संपति पानन्द ॥ कवित कंद दोहा करो फलो दोह सुख कंद ॥ ३ ॥ जगन मध्य गुरु होत है ताकर देव प्रकास होत मूल फल देत नहि निफल मन को आस ॥ ४ ॥ तगन संग लघु जानिष पवन देवता मानि ॥ दुरि बहावै सर्वदा करै सबै हित हानि ॥ ५ ॥ रगन मध्य लघु देखि सो पावक इष्ट विचार ॥ मृत्यु करै कवि ते कहत मति कर कवित सिंगार ॥ ६ ॥ सगन अन्त गुरु कहत है राख ताको बलवान ॥ रोग बढ़ै पानंद घटै पंडित सुनहु सुजान ॥ ७ ॥

End—दोहा ॥ दोह हानि हाते निपटि छाहै सुख को मूल ॥ जगन शुद्ध कविराज यह कही जगत अनुकूल ॥ ८ ॥ रस वग्नेन—प्रथम सिंगार सुहास रस कहना बहुदि सुजान ॥ रौद्र वोर सुखवान कहि ओ विमल सुप्रान ॥ ९ ॥ षड्भुत रस कविराज कहि समरस कहियत प्रौर ॥ नवरस नाम प्रसिद्ध ये बरनत कवि सिरमौर ॥ १० ॥ परानाथ अनुभाव के यह विभाव के चित्त ॥ जो कुछ उपजत पानि कै सो कहियत रस मिश्र ॥ ११ ॥ कवित्त—कोटि अपाव के क्षिप्रा करै कोठ किन मोतर को उपरहि पानि उफनात है ॥ बोलत चलत चित्तन मे लखन पै ये नयन को नजीर बनाइ करामात है ॥ सुखरै न कूर ओ कूरै न सुखर भावै जाको जैसो समुझि तैसो संगति मुहात है ॥ तीन तीन सुख के मया के मधुवन के साहब को संगी समुझि जाती जात है ॥ १२ ॥ इति श्री कवि कुलार्ककार चूडामणि श्री सुप्रदं विरचितायां कंदो निवास सार समाप्तम् शुभम्पूगात सम्बत् १९२७ साके १७८५ अषाढ़ शुक्ल १ पुष्य वासरे प्रलिख दारिका प्रसाद त्रिवेदी ॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—गण भेद तथा गणों के फल । दग्वासर पाठ (ह म अ न ध र प म) । दग्वासर फल । गुरु लघु विचार, लघु के नाम । पदाकुल छन्द । रसिक छन्द, पादाकुलक, माया छन्द, दोहा लक्षक, मकर छन्द, रौला छन्द, रसिक छन्द, चौपया छन्द, मंथान छन्द, तुलसीय, मधुता

छन्द, घनानन्द, पादाकुलक, पलिलह, काथ्य लक्षण, कुडलिया, दुरती लक्षण, कोर छन्द के लक्षण ।

(२) पृ० ७—२८ तक—उलाला, मोहन छन्द, राई से विगत नंगा । चौबोला, भूजना, शिष्यमा, चुलि घाल, पद्यावती । देवाइ छन्दा पंजा छन्द । प्रजलिय, हाकलि छन्द, भार छन्द, घामोर छन्द, कुकुम छन्द, सरसी छन्द, दंडक छन्द, दीपक छन्द, सिंहावलोकन छन्द, दिप्पटा, पूर्वंगम, लोलावती, हलिमोटिका, त्रिमंगी, दुमिला, पहोर, जलहरन, मदनहर मरहटा, दंडक, समृतध्वनि, श्रीछंद, लकुता, मही छंद, मधु छंद, सार, प्रतिष्ठा, हठ छन्द, हारि छन्द, हंसो छन्द, जमक छन्द, गायत्री, शिवराज, हिल्ला, मालती, तन-मध्वा, चौरासी, शशिवदना, समुमति, विज्जहा, सामानिक, सुवस छन्द, कर-हंजी छन्द, सिधुरूप, मदनलेशा, मधुमति, विद्युन्माला, प्रमानिका, मालिका छन्द, तुंगा छन्द, पंकसाला, कुमार ललित, चित्रपद, महालक्ष्मी, सारंगिका, पाइता छन्द, कमल छन्द, बिब छन्द, तोटक छन्द, रूपमाला, संयुता छन्द, चंपकमाला, सारस्वती, सुश्याम छन्द, समृतगति, नोलस्वरूप, सुमुषो छन्द, दोधक छन्द, मदनक छन्द, सेनिका छन्द, मालती छन्द, इन्द्रवज्रा छन्द, उषेन्द्र यज्ञा, भुजंगप्रयात छंद, लक्ष्मीधर, सोमर छन्द, स्मरण छंद मुक्तिदाम, मोटक छंद तरलन मान, सुंदरी छन्द, द्रुतविलंबित छन्दा के लक्षण ।

(३) पृ० २९—४२ तक—माया छन्द, तारक छन्द, कदंक छन्द, पंकाबलो वसंततिलका, चक छन्द, समराक्ष, रंगिका, चामर छन्द, त्रिशिपाल छन्द, मनहरन छन्द, मलिन छन्द, सार छन्द, नाराच छन्द, नोल छन्द, चंचला छन्द, पृथ्वी छन्द, मालाघर, मंजोर छन्द, कोड़ा छन्द, चंचरीक छन्द, शार्दूल विकी-कित, चन्द्रमाला, खवल छन्द, गीतका, दंडिका, भग्यरा, मेदिरा, छरी, पवित्राक्ष, गजेन्द्र गति, दुमिला छंद किराटी, सबैया, त्रिमंगी, शालूर, सुंदर छन्द, सुव छन्द, क्षय्य, दोहा, मेदना, गनांगन देवता फल, गवमाव दग्याक्षर फला, बिचार, रस वचन, ग्रंथ समाप्त ।

No. 412 (m). Fazila Ali Prakāśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size—10 × 5 inches. Lines per page—32. Extent—1,116 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Date of manuscript—Samvat 1919 or A.E. 1862. Place of deposit—Paṇḍita Śhivadāyalājī Village Jaunāpura, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—अथ फाजिल अलौ प्रकास ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ कमल
नयन करना करना कमला पति करतार । करो कृपा कविराज को कामद
काहू कुमार ॥ अथ शेषकानुप्रास ताको लक्षण ॥ तुकसो तुक जोई मिलै चरन
चरन सुर वृत्ति । अक्षर के स्वर होहि सम छेका कहति मुकृति ॥ यथा ॥
जय जय गननायक सिद्धि सहायक बुद्धि विनायक भौ हरन जय पत्र दाहन
विघन विगारन मूषक वाहन जन सरन ॥ जय जय गुन आगर सब सुष सागर
अवनि उजागर दुवन दमो । जै जै जगबंदन कलिमन कंदन गिरिजा नंदन
नमः नमो ॥ अथ छंद ग्रिमंगो ताको लक्षण ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु
पर बहुरि सुरसु पर विरति जहां । फनि भापिन मानौ बुधिवल जानौ गुर एक
आनौ पेत तहां ॥ कहै जगनन आवै कवि मन भावै श्रवन मुहावै गुनहि नहै ।
तिरमंगो नामा छंद सुदामा प्रति अभिरामा किरति लहै ॥

End—अथ तपतवद्ध कविता ॥ दरब यति घातक बाढो चढो चढो
फाजिल डुरद दरदु भारो पोठि कूरम भयो मुष अति जगद ॥ दरज पाई भार
धरती भयो भूधर गरद नहै गड़ सिर गिरे लै भिरे हरवै वरद ॥ अथ प्रेम हेलिका ॥
नाम एक सब के मन भावै पाँके तोनि जामे वनि आवै ॥ उलटि पड़ेते पसु डै
जावै । जो जानै सो पंडित राइ । अथ दव सरसो छंद ॥ तोको चलो तुहो चलि
आयो तोहि देखि रहो लुकाइ ॥ तू चलि जाहि तोहिछै आवै मोखर सासु
रिसाइ ॥ अथ वरि ॥ सब काहु के प्रगट है घर घर काबर सिद्धि । द्वै अक्षर द्वै
सरथ द्वै एक नाम परसिद्धि ॥ आसोबाँद ॥ जब लगिबेद पुरान पुरुष पूरन
नारायन । जब लगि भूवर भूमि मानु ससि घन तारायन ॥ जब लगि गौरि गनेस
वेन सुरपति गुर सुनिवे । जब लगि गंग समुद्र रुद्र व्यासादिक गुनिवे ॥ कवि-
राज राज फाजिल अलौ महावजो कोरति लहै । संपति समाज दंपति सहित
चिरंजीव जब लगि रहै ॥ दोहा ॥ दसमो रवि पूरन भयो फाजिल अलौ प्रकास ।
संवत सत्रह सै जहां वैतिस कातिक मास ॥ इति नवाब इनाइत खान घात्मज
महावजो मिरजा फाजिल अलौ विरचिते फाजिल अलौ प्रकासे संवत १९१९
साके १७८४ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ अष्टमावाम सोमवासरे समारं
लिपत गनेस पंडित ॥

No. 412(n). Fāzila Ali prakāsa by Sukhaḍeva
Mīra. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size
—8½ x 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anush-
tup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date
of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Place of deposit
—Rāja Pustakālaya Bhingā Rāja Baharāich).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ फाजिल चलो लिख्यते । प्रथम वृत्तानुपास ताके लक्षण ॥ दोहा ॥ पुण्ये तुकेपके वरन चरन चरण जह पाद । कहे वृत्तानुपास सो पंडित कवि समुदाय ॥ १ ॥ संशक्तोपि आवृत्ति बखने संपूर्ण वृत्तानुपास लोकाद्वयः ॥ दोहा ॥ कमल नयन करुणा करन कमलापति करतार । करदुःकृपा कविराज कहं कामद कान्ह कुमार ॥ २ ॥ छंद चिभंगो श्लोकानुपास इन बुद्ध को लक्षण ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पन बहुरि सुरस पर विरति जहां फनि माषत मानो बुचजन जानो गुरयक घानो संत तहां ॥ कहे जनमन पावै कवि मनमावै धवन सुहावै दुनहि नई । तिरभंगो नामा छंद सुधामा प्रति परिभाषा कीति लहै ॥ ३ ॥

Read—सबद एक सक्के मन भावै । सांकतोनि तामे गनिघावै ॥ उलटि पढ़ै तो पसु है जाइ । जो जानै सो पंडित राइ ॥ दरबयति आतंक बाढ़ी चढ़ी फाजिल वृत्त । दरदु मोरो पीढी कुरम न पे मूख घति जरद ॥ दरज खाई भार-धरतो भये भूधर नरद । दर गहे गढ़ सिर गिरे घरि छै भरे हर पदर ॥ तो को चलो तुही चलि आघो रीति कि खो लजाइ । यवतु जाहि तोहि छै पावो मो घर सासु रिसाई ॥ दोहा ॥ पानो सब का प्रगट है घर घर कारव सिद्ध । है पक्षर है धंध है एकै नाम प्रसिद्ध ॥ इति श्री फाजिल चलो ग्रंथ समाप्तम् संपूर्ण मस्तु ॥

Subject—अनुपास समेद, राजकुल वर्णन, कवि कुल वर्णन । पृ० १—३ तक, जयशब्द, प्रखनिका छंद, व्ययय, मनहरण व्यतिरेकालंकार, रूपक, उल्लेख, यश व प्रताप वर्णन, यमक गण विचार गणदेवता, फल, दुर्गुण विधान, गोपाल छंद, वृत्ति विचार, दग्धाक्षर, वर्णविचार, गुरु लघुविचार । पृ० ४—८ रसविकल्प भाव, संस्कृतेपि, रसतरंगिणी नवरस कथन, मृंगार रस, संयोग सिंगार, माधव छंद, उपेक्षा, विषाग, अस्त्युक्ति, पक्षेप । पृ० ९—११ तक, नायका वर्णन, स्वकोषा, जाति, नीलकालंकार, गोपाल छंद, दोहा, सरसो छंद, उपेक्षा, लुप्तोपमा, सम-शेषव मुग्धा, नव यौवन मुग्धा, सरसी छंद, अज्ञात यौवना, धर्मलुप्तोपमा, स्वभावोक्ति, नवोदा मुग्धा, विषद नवोदा, यमक, दृष्टान्तालंकार विमुद्गनवोदा, मध्यमा, संदेहानुगत दृष्टान्तालंकार, प्रणम्या, उपेक्षा, मध्याधोरा, वकोक्ति, संस्कृत्येपि, मध्याधोरा, प्रौढाधोरा, अपन्हुति, पौढाधोरा, यमक, प्रौढाधोरा वीरा, ज्येष्ठा वनिष्ठा, संस्कृतेपि, परकोषा, अनुदा, पादाकुलक, गुप्ता, व्याजोक्ति विदग्धा, ध्वनि, लक्षिता, अनुशयना, संकेत संदेहा, व्याजोक्ति सामान्या, अज्ञेयम दुःखिता, वकोक्ति, व्यतिरेक, रूपगविता, मान । पृ० १२—२८ तक । अचनायका—बद्धिता अपन्हुति, प्रेषितपत्रिका, उपेक्षा, अस्त्युक्ति, शब्द रूपा-लंकार, समिसारिका, आतिमान, धर्म लुप्तोपमा, विप्रलब्धा, उका, कलहंत-रिता, स्वाधीनपत्रिका, वासकशब्दा, प्रेषितपत्रिका, उत्पत्तायिका, मध्यमा,

षडसमवृत्ति, प्रथमा, नायिका को जातिवत्, पद्मिनी, चित्रनी, संपन्नो, हस्तनी, सखी, शिक्षा, उलहना, परिहास, शृंगार व चाभूषण, श्लेष, दूतो, नायिका को दूतो, विरहवेदन, विहार । पृ० २१—३७ तक, नायक लक्ष्म, पति, अनुकूल, दक्षिण, इष्टान्त, शठ, धृष्ट, उपपति, वैशिक, उत्तम, मध्यम, नायक, अनुमान चवद, प्रेषित पति, रुक्मानंकार, प्रेषित वैशिक, मानो, चतुर, प्रेमिष्ठ, पोठ मदे, वचन व किया चतुर, चिट, चेटक, विदूषक, भाव, स्थायी भाव, व्यभिचारो, घेतक, अनुभाव, हाव, लीला, ललित, विलास, विचित्र हाव, विभ्रम, व्यतिरेक, गर्वित उपप्रेक्षा, विदित, किलकिचित, विधोक्त, कुटुमित, प्रत्यक्षदर्शन, स्वप्न, चित्र, समला जंद । पृ० ३८—४२ विप्रलंभ, समोप, अभिलाषा, गुनकथन, सुमति, उद्देग, प्रजाप, चिन्ता, जड़ता, व्याधि, उन्माद, पृ० ५०—५२ तक । रसनिष्पन्न, कहणा, रौद्र, वीर, दया, दान, युद्ध, मवानक, वीरत्न, पद्मभुत, सम, मध्याह्नरो कथन—पृ० ५३—५६ तक इति ।

No. 412 (o). *Fāzila Prakāśa* by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Lines per page—32. Extent—1,008 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1753 or A.D. 1676. Place of deposit—Thākura Śiva Prasāda Simha, Katelā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (p). *Juāna Prakāśa* by Sukhadeva. Substance—Country-made paper—Leaves—11. Size— $7\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—52 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Bāmādhina Murāw, Village Badausarāya, District Bārābānki (Oudh).

Beginning—पद्य ज्ञान प्रकाश लिप्यते ॥ दोहा ॥ दोन वचन है शिष्यने नमस्कार कियो पाइ । बांछ्यो मन संसार में छूटै कौन उपाइ ॥ १ ॥ द्वितीय प्रश्न पुनि कहत हैं नौके कहिये मोहि ॥ पंच कोश वपुतोनि को उत्पति कैसे होइ ॥ २ ॥ गुरु वचन ॥ सिध उत्तर सुनि गुरु कह्यो निश्चय कर उर माहि ॥ छूटै एक विचार ते दुजो सायन नाहि ॥ ३ ॥ येकै ते तृदा भयो दृष्टा सत्ता पाइ । पंच कोश करि रचित है कहीं तोहि समुझा ॥ ४ ॥ शिष्य ॥ ईश्वर तुम तृदा कह्यो चेतन सत्ता पाइ ॥ मित्र मित्र करि मोहि इन कै कही बुझा ॥ ५ ॥

End—हलन चलन भोजन किया जानिहु के घर होइ ॥ ग्रहंकार करि रहित है ताते वधै न कोय ॥ ४६ ॥ परिजल ॥ पातम उद्यत रूप सर्वगत जानु रे ॥ वेकल्प रहित सा रूप सुख परमानु रे ॥ पराव्य के योग दुख सुख भासहो ॥ पातम सुख सख्य सुता परगासहो ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कहत सुनत सबहो धके उभयो एक निधार । प्रह्न सप्रि परगट भई जक भयो जरि द्वार ॥ ४८ ॥ कोन्हौ ग्रंथ विचार यह निश्चै ज्ञान प्रगास ॥ श्रवण सुनत चानंद युत मिटै द्वैत जग प्रास ॥ ४९ ॥ गुरु सिष के संवाद यह जेरि सुनै चित लाइ समुझै अपने रूप के जक भई मिटि जाइ ॥

Subject—(१) पृ० १—४ तक—संसार में बंधे हुए मनके छुटकारे का प्रयत्न पुच्छना (शिष्य द्वारा)—गुरु का ज्ञान द्वारा संसार से छुटकारा पाने का वर्णन, चानन्द कोश तथा कारण और सूक्ष्म शरीर का वर्णन । स्थूल शरीर का वर्णन, जीव का वर्णन, जीव के प्रह्न का आभास कथन और प्रह्न का निर्विकल्प ।

(२) पृ० ५—१० तक—तत्त्व तथा त्वं पदों के वाच्य तथा लक्ष्य अर्थ । देह और प्राण का पृथक्करण । माया का मिथ्या होने का वर्णन । ईश्वर की परिभाषा । अविद्याधकार विनाश होने का समय ।

(३) पृ० ११—११ तक—ज्ञानो को समो कियारो का निरभिमानता से होने का वर्णन । निरभिमानो का कियारो में न बंधने का वर्णन, दुख सुख भासने का कारण, अपने रूप के पहचानने से संसार के भ्रमों का विनाश ।

No. 412 (q). Jñāna Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper Leaves—27. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—34. Extent—459 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1808. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Śrī Bābā Rāmaoharānādāsājī, Chandraabhawana Payāgapura, Post Office Payagapur, District Baharāich (Oudh).

Note—शेष सब No. 412 (p) पर लिखा गया है ।

End—नोति अनोति विवेक विचारो । राखो नोति अनोति विसारो ॥ उलटि आबु में सहज समावै । निज स्वरूप आपन तब पावै ॥ सांख्य ज्ञान मत हूजे सुखो । वहनो कदै ज्ञान गुरमुखो । पुनि वेदांतसार मत कहै जामे कहन सुनन नहि रहै । पुरनप्रह्न निरंतर प्रहै कैसा नोति अनोति कहै ॥ ज्ञान प्रज्ञान कवन

सा कहै । सब में सोहं प्रकाशो लहै ॥ वेदांतो पुनि पगट बपानै बल्लो साधुन ह
 सो जानै ॥ षटशास्त्र को भिन्न विचारो । तत्व विचार पुनि सब मत सारा ॥ जैसे
 एकै भावन द्वारा । राग रागिनी बहु विस्तारो ॥ जोई जोई जाके भावै ॥ रोमि
 रोमि पुनि सोई गावै ॥ विधि निवेद्य कबने सो कहै । जैसे कै भावन द्वारा लहै ॥
 बल्लो सर्व मत पूरन एका । अपने भावने भये अनेका । सबु बल्लो सुरसरो है ।
 निर्मल पति उजियारी रहै ॥ तन में तन सो निघरे रहै । ज्यों जल में शशि तारे
 रहै ॥ षट दरसन घाद्वण जागो जंगम सेवरा संन्यासी दरबेस । विना प्रेम पहुँचे
 नहीं दुर्लभ हरि को देस । चारि मनुज नौज जज्ञ हैं म्यारह पसु दस पक्ष । बोल महेश
 तोस यहि एह चौरासी लख ॥ लिपितं गंगासिद्ध क्षत्रिय सं० १९०२ वैश्रमासे
 अक्षित पक्षे षष्ठीयां सनिवासरे ।

No. 412 (r). Maradāna Rasārāṇava by Sukhadeva Mīśra of Kāmpila. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—10 × 6 inches. Lines per page—46. Extent—1,000 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1736 or A.D. 1679. Date of manuscript—Samvat 1834 or A.D. 1777. Place of deposit—Thākura Śiva Prasāda Simha, Village Katalā, Post Office Fakharapurā, District Bahārāich (Oudh).

Beginning—आ गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ कानन दुट्टे विघ्न के जालन
 के यह न्यान । कज भानन को जाति मिटि मज भानन के ध्यान ॥ वस वंस पव-
 तंस सम निर्गुन मन को दरिघाउ । कनक सिंद जाहिर भयो । जग में रैया राउ ।
 दिलोपति के काज जिन कोटिक करो फतुह । जग मंगल जग पर भजौ जाके जस
 के लुह ॥ जाहिर हिम्मत हृद भयो सबहों दुन को मेह । सुसुति जानि जग में
 करो प्रगट पुन्य को पैड़ । पृथ्वी पालन के भयो ताके पृथ्वीराज भोज देन को
 भोज सो बड़ा मरौब नेवाज ॥ महा बाहुता के भयो उषाँ क्षौरचि ते चंद । भूमि
 पुरंदर से लगी लपत पुरंदर नंद ॥ सेत करो पृथ्वी सकल । जाके जस को छोह ।
 मानो क्षौर के सिंधु ते काढ़ी बहुरि बराह ॥ मरदानो ताके भयो मृदुन रैया राउ
 जग जाके अविचन बचन संगद कैसा पाउ ॥ मृदुन कवि मुखदेव सो भाष्यो
 निपट सनेहु । कछो नाइका नाइकन बरनि ग्रंथ करि देख । मृदाने के हुकुम ते
 मिश्र मुकवि मुखदेव कहत लख लखन साहित न्यारे न्यारे मेव ॥

End—ऐसे नवह रसन के मेद कहे हम जानि । रस ग्रंथन को रोति यहि
 सब जानि है जानि ॥ यह मर्दान रसानो पूरा कोन्हों ग्रंथ । याके माने मानि है
 रस ग्रंथन को ग्रंथ ॥ इति श्री मिश्र मुखदेव कृतो रसाखंड संपूर्ण समाप्त मस्तु

मिश्र शिवदास दातेन श्री श्री श्री चौधरी देव सिंहस्य पठनार्थे मिता आदिवा
कृत्य पक्षे त्रिधा पंचम्यां शनैः संवत् १८३४ असना गोलालपुर तिनके मध्य सुठाम ।
मिश्र सुकवि शिवदास तहं वसै लपोपुर ग्राम ॥ तिनपै करि कै बहु कृपा देवसिंह
कथा हमै लिपिदेव यह लपै रसनि कै मेव ॥ जौलो देस गणेश है ईस दिनेस
छपैस देवसिंह दर्जसिंह सुत करै राज्य सब देस ॥ श्री दुर्गा देवेवमः श्री रामानु-
जायनमः चिरंजीव तब हो रहै जवलो रवि रजनीस जाके यह पोथी लिखी ताको
यहै असोस ॥ श्रीपूरब सैराबाद को परगना विसवां नाम तामे वसै सु चौधरी
देवसिंह सरनाम ॥ यह पुस्तक संवत् १७३६ में मेर्दानसिंह को प्राज्ञा से रची गई ।

Subject—पृ० नं० १—४२ तक—नायिका नायक भेद आदि कवित्त सवैया
आदि छन्दों में बनेन किये गए हैं ।

No. 412(s). Vrittivichāra by Sukhadēva Mīśra of Kam-
pilā. Substance—Country-made paper. Leaves—176. Size—
9×5 inches. Lines per page—8. Extent—1,056 Anuṣṭup
Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of Composition—Samvat 1626 or A. D. 1569. Date of
manuscript—Samvat 1851 or A. D. 1794. Place of deposit—
Paṇḍita Rāmadulārā, Post Office Deva, Village Deva, District
Bārābanki (Oudh).

Note—(1) आदि संद No. 412 (g) पर लिखा गया है ।

Subject—(१) पृ० १—४ तक—वंदनाएँ—कृत्य, बलेश की, ग्रंथ का
आधार, छन्द को परिभाषा ।

(२) पृ० ४—१४ तक—कविवंश बनेन । आश्रयदाता का परिचय तथा
ग्रंथ निर्माणकाल ।

(३) पृ० १५—२८ तक—दृग्धाक्षर विचार, प्रतिबले फल, पिगल मतानुसार
गुरु विचार, उदाहरण, टीका ३ ॥ गुरु का उदाहरण गुरु के नाम, लघुविचार,
लघु के नाम, लघु के उदाहरण, सूचनिका प्रत्यय लक्षण, प्रस्तार लक्षण, पिगल
मत वाले प्रस्तार, चण्डस्य मत, प्रस्तार के तीन भेद, ज्ञान विपरीत, संख्या विपरीत,
उभय विपरीत, प्रस्तार भेद ज्ञान, टीका, वगैरे सूची लक्षण, वगैरे सूची कर्तव्यता,
पाताल लक्षण, ज्ञान विपरीत, उदाहरण, संख्या विपरीत, उदाहरण, उभय वि-
परीत, मात्रा और सिंहन का प्रयोजन ।

(४) पृ० २९—३९ तक—मकंदी, बले मकंदी, पिगल मत वाले मकंदी, वगैरे
मकंदी का चक ।

(५) पृ० ३२—४० तक—उद्दिष्ट लक्षण, समस्त्य मत उद्दीष्ट, ज्ञान विपरीत का उद्दिष्ट, उदाहरण, वरुण नष्ट, संख्या विपरीत उभय विपरीत, वरुण प्रेष्ट ।

(६) पृ० ४१—५० तक—लुप्त ।

(७) पृ० ५१—५८ तक—समलक्षण, उदाहरण, सर्व समलक्षण, उदाहरण, विषमवृत्त, उदाहरण, दंडक का लक्षण, उक्तादिको सूचिका, वरुण प्रत्ययको सूचनिका ।

(८) पृ० ५९—८० तक—समवृत्त श्री छंद, उक्तो श्री छंद, महो छंद, मधु छंद, सप्तो, रमन, पंचाल, सृगन्ध, मंदर, प्रतिष्ठा, धारो, नगानिका, पंचाक्षर प्रस्तार, संमोहा छंद, कोर छंद, हस्ति, हंसो, जमक छंद, गायत्री महाक्षर प्रस्तार, सेषारोमा छंद, डिल्ल, सतिवदना छंद, वसुमति, विज्जोहा, मंधाना, सताक्षर प्रस्तार, उन्निक छंद, सुषाम, काहंव, सोरप, रूपका, मदलेषा, वधुपनो, अनुष्टुप, षष्ठाक्षर प्रस्तार प्रमाणिका, कमल, कुमार ललितः, चित्रवदा महीरो, वृद्धा, सारंगिका, पाइना, कमला, विवा, तोयर, रूपामाजी, दशाक्षर प्रस्तार सेवुता, चंपकमाला, साबरी, सुषमा, मनुतगत, पक्षादशाक्षर प्रस्तार जगनी नील संपा, सुमुषो देवक, मदनक, सनिका, मालिनो, उपेन्द्रवक्त्रा, उपजाति, वामछंद के, चतुर्दश जाति का उद्दिष्टः ॥ नष्ट

(९) पृ० ८१—९२ तक—द्वादशाक्षर प्रस्तार, भुजंगप्रपात, लक्ष्मोवर छंद, सारंग, मौक्तिक, गंगावर, मोडक, ताल नयन, सुमुषो सुन्दरी, प्रमिताक्षरा, तारक, सुखदायक, कंदुक छंद, चारु छंद, पंचचामर ।

(१०) पृ० ९३—९७ तक लुप्त ।

(११) पृ० ९८—११६ तक—मालिनो, सरम छंद, सारंगो छंद, समगावली, नराच, नील, चंचला, पुष्पो छंद, मालावर, धृत, कोड़ा, चर्वरी, चन्द्रमाला, गौति का, कृतिवृत्ति, दंडिका छंद, स्रग्धरा, चाकृत्ति, मदिरा, सर्वेषा भेद, भेदक, विह्वत, सुमुषो, वाम छंद सर्वेषा भेद, मायवो, गंगावर, किराटा, सुंदर छंद, कृतवृत्त ।

(१२) पृ० ११७—१२१ तक—दंडक छंद, सुवाचर, महोचर, वसुधाचर, नीलचक्र, मनहरण, जलदहन ।

(१३) पृ० १२२—१३६—नष्ट विचार वरुण माया, प्रस्तार, भेद, ज्ञान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, पंचकल टगन के नाम, ठ, ड, ल, नष्ट के नाम, मध्य गुरु के नाम, सर्व लघु चतुःशला के नाम, षादि लघु पंचकला के, षादि लघु त्रिकल के नाम, षादि गुरु त्रिकल, माया सूची, कलापताल, कला

पताल का चक्र, अथ चारों प्रकार के उद्दिष्ट, प्रथमकम प्रस्तार, संख्या विपरीत प्रस्तार, उभय से विपरीत चारों कला प्रस्तार, खान विपरीत, मात्रा मेरु, खंड मेरु, मेरुचक्र, मर्कटो, मर्कटो चक्र, मात्रा पताका, मात्रा खंडों की अनुक्रमशिका ।

(१४) पृ० १३७—१७६ तक । गाथा, दोहा, गंद, रोला, रसिका, चौरैया, गंधना, सुमना, सुलखी, पादाकुलक, परिल्ल, काय कुंडली, उल्लाला, कृष्ण, कृष्ण दृषण, चौबोला, मनमोहन, सुगती, सुदु गति, शोभन, वसुमती, गोपाल, लोला, हरिप्रिया, अनुकूल, सुमाला, सुलियाला, परबोन, साल, सारठा, हाकिल, मधु भार, चहोर, कुंम, सरसो, दंडकला, दोपक, जेतिधरा, निर्मला, सिद्धावलोचन, पुलंगम, लोलावती, हर्षिता, त्रिभंगी, दुमिळा, हरिसुजन, हरनाम, दोहरा, मरहटा, दंडिका, मानवी, ग्रंथ समाप्ति ।

No. 412(c). *Vritti Vichār* by Sukhadēva Mīśra of Kāmpilā (Farrakhabād). Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—8 x 6 inches. Lines per page—20. Extent—915 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1933 or A. D. 1879. Place of deposit—Pañjābī Kṛishna Bihārījī Mīśra, Editor, Mādhuri, Lucknow.

No. 413. *Vaidyaka Sāra* by Sukhalāla of Gaundāpur (Gondāl). Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—9 x 7 inches. Lines per page—16. Extent—2,200 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1892 or A. D. 1835. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Rājā Pustakālaya, Bhīngā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ दोहा ॥ मनपति गिरा सु गुरु गवरि गिरिपति गोविंद गंग । गार गाई गुन गंग गनत गति मति होत परमंग ॥ १ ॥ सबधपुरो सरजू नदी तीन भुवन विख्यात । गुरु वसिष्ठ दसरथ नृपति सुमिरत सुख सरसात ॥ २ ॥ सबधोत्तर दिसि में बहसै गडदापुर प्रमिराम । बल चारि चतुराधमो बलत जहो सुम काम ॥ ३ ॥ तापुर बंस बिसन में भूपति मये उदार । सर सुपुत्र सुसाहसो भक्तशन दातार ॥ ४ ॥ तिहि कुल प्रगट प्रसिद्ध सब श्री गुमान नरनाह । प्रजा पनेदित वसति है जाके जसको खाह ॥ ५ ॥

End—सगुन सुषुप गुमान के बानी बुद्धि विवेक । लघुमति कवि सुखलाल
को कहा कहौ मुख एक ॥ संवत लेखन रंघ वसु सवि मधुवास विचार ।
कृष्ण चतुर्दसि सौम्य दिन पूरन वैदक सार ॥ दशोक—सैल रक्ष जल रक्षे रक्षेति
मल बंधनात् । मूर्ख हस्ते न दातव्यं वेदं वदति पुस्तकम् ॥

इति श्रीमन् महााजाधिराज श्री महाराज गुमान सिंह जी बदायुन देशाज्ञा
वैदक सार ज्योतिर्विद् सुखलाल विरचिते गद्दे मंत्रत वख्तेनाम सुममस्तु ॥

Subject—मंगलाचरण—पृ० १ । नाडी परीक्षा—पृ० २ मुख परीक्षा—पृ०
३ । नेत्र परीक्षा—पृ० ४ । मूत्र परीक्षा पृ० ५ । वात् पित्त-कफ परीक्षा—पृ० ६ ।
पित्त कफ लक्षणादि, स्नायु सतांग, वैद्य लक्षण, साध्यासाध्य—पृ० ७ । ज्वर भेद
चिकित्सादि पृ० ८, सज्जिपात पृ० ९—२२ । जल भेद चिकित्सा, घातिसार
पृ० २२ । संग्रहणा—पृ० २३—२५ । बवासीर—२६, मगंदर, २७ । विशूचिका—
२९—३० । पत्रोष्णे, विशूचिका ३१, कृमि, ३२ । पाण्डुरोग ३३, रक्तपित्त लक्षण
कास पृ० ३४—३५ । श्वास पृ० ३६, हिक्का पृ० ३७, चक्ष्मा पृ० ३८, शरीरचक
पृ० ३९, तृषा, क्षर्दि पृ० ४०, मूत्र परीक्षा पृ० ४१, उन्माद, पृ० ४२ । मेह, पृ० ४३,
वात व्याधि पृ० ४४—४७ वातरक्त पृ० ४८, घामवात पृ० ४९ शुल पृ० ५०, गुल्म
पृ० ५२, उदर रोग पृ० ५३, गुल्म जलोदर, हृदि रोग, मूत्र कृच्छ्र पृ० ५४ । प्रमरो
पृ० ५५, मूत्र रोग प्रमेह पृ० ५६ । मेदा रोग पृ० ५८, शोथ पृ० ५८ । भेदबुद्धि,
श्लोष पृ० ५९, व्रण पृ० ६० । गंडमाला पृ० ६०, अन्नदान उपदेश पृ० ६१ । विसर्प
पृ० ६३ । कुष्ठ रोग पृ० ६४, दद्रु, पृ० ६६, उन्माद समुचित पृ० ६६ । दूसरा रोग
पृ० ६७ । अर्द्धशोथो, केशवर्द्धन, केश स्वाह पृ० ६८ । नेत्ररोग पृ० ६९, जावन पोड़ा
पृ० ७१ । मुख भाई समोह, नासिका रोग पृ० ७१ । कर्ण रोग, स्त्री रोग पृ० ७२ ।
मर्म रक्षा पृ० ७३ । कुष्ठ रोग सतिका रोग पृ० ७४, दोनि दुर्गंधि रोगमर्म
निवारण, क्षीर बुद्धि, कुच काठिन्य, बाल रोग पृ० ७५ । मुख रोग लिंग शिथिलता
पृ० ७७ । वृश्चिक विषोपचार, खुजली, विष पृ० ८१ । मुख दुर्गंधि हरण कस्यकमे
पृ० ८२ । रंजन, वमन पृ० ८३ हरोतिकादि पृ० ८३ । आशावाद—८८ ।

No. 414. Hanumāna Charitra (Chaupāyī) by Sundaradāsa.
Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—12½ x
11½ inches. Lines per page—12. Extent—1,440 Anuśṭup
Śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
Composition—Samvat 1616 or A. D. 1559. Date of manu-
script—Samvat 1915 or A. D. 1559. Place of deposit—Jaina
Mandira (Barā) Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ यद्य हरणवंत चौपाई कवित्त लिख्यते ॥
स्वामी सुव्रत नाथ जिणंद । सुमिरत होइ सिद्धि भानंद ॥ नासै पाप भली मति
होइ । नमो सोस जोड़ि कर होइ ॥ १ ॥ सादिनाथ त्रिण सेवा करौ । वाचा
वर्न काथा चित धरौ ॥ अजित नाथ बन्दो जौन सार । लहीं जान पावौ शिव
हार ॥ २ ॥ संभव नाथ जपौ मन लाय । वाढै धरम समुझ छै जाय । नमो सोस
धर्मनंदन देव । सुर नर फणि मिलि आवै सेव ॥ ३ ॥ स्वामी सुमिति देहु तुम
मोहि । राति दिवस मति राखै तोहि ॥ पथ प्रभू को सेवा करौ । त्रिमि संसारा
बहु दिन परौ ॥ ४ ॥ हरित वरुण जिन देव सुपास । नाम लेत सहु पुजै पास ॥
चन्द्र प्रभू त्रिण गुण होन धान । सुमिरत होइ पाप कबै मान ॥ ५ ॥

End—जो या कथा सुनै दैकान । कालनववि पावै निरवाण ॥ ६८ ॥
गोइ गोइ इहु दण्ड न होइ । तेल सिद्धर छु पूजा कोइ । पवन पूत बैकुण्ठहि गवौ ।
सिधु सुख्य दर पावौ ॥ ६९ ॥ जे देखै पूजे हनुवंत । तासु पावन चिनाम संत ॥
जोव बहुत तनु पागे मरे । पूजि कुंदेव नरकि संचरै ॥ ७० ॥ जाणौ मथ्य वहुए
आचार । मिथ्या देव तजै ध्याहार ॥ दुष्ट देव शंका मति करौ । जैसे कर्म तोड़ि
निस्तरे ॥ ७१ ॥ × × × × ×
स्वामी मुनि सुव्रत नरनाथ जिणंद । सुमिरत होइ सिद्धि भानन्द ॥ नासै पाप
भली मति होइ । नमो सोस जोड़ि कर होइ ॥ ७२ ॥ एति श्री हनुवंत कथा
चौपाई संपूर्ण । लिख्यत गजाधर के पूत देवरोको संवत् १९१५ मिति भाषाई
गुफा १—नवावगंज में लिखी ।

Subject—(१) पृ० १—१६ तक—मंगलाचरण—जैन तीर्थंकरादि
बंदना, राजा पट्टाद के वैभव का यशोव चौर उसको रानी से पवनंजय कुमार
को उत्पत्ति । महेन्द्र (विद्याधर) के भेजना कुमारी का उत्पन्न होना और
समयनुसार उसके विवाह को जिला, मंत्रियों से सम्मति, भेजना के पिता का
राजा पट्टाद के पास पाकर उनके साथ अपनी पुत्री का विवाह टोक करना
और उसका लौट जाना ।

(२) पृ० १७—१४ तक—राजकुमार पवनंजय भेजना के रूप लावस्य की
प्रशंसा सुन कर विवाह के तीन दिन रह जाने पर हो उत्कण्ठित हो कर अपने
मित्र प्रहस्त को लेकर अपनी समुदाय पहुँचना और अलक्ष्य होकर महलों में
जाना और भेजना को सचियों का राजकुमार पवनंजय तथा इन्द्रजीतादि को
प्रशंसा करना और भेजना का यशोव सुनना और इसपर राजकुमार का
लौटना और फिर बहुत आग्रह पर विवाह कर लेना । भेजना का पति के अश्रद्धा
के कारण अपमानित होकर पकॉत जास ।

(३) पृ० २५—२८ तक—रावण की सहायता को कुबेर के साथ युद्ध करने का पवनंजय को जाना। चञ्जना के द्वार पर होकर ही उनका निकलना, और पति को पलना पकड़ कर उसका बहुत निङ्गिड़ाना किन्तु उस पापास हृदय का न पसीजना, पवनंजय का मान सरोवर पर पहुँचना और वहाँ से चक्र बाक मिथुन की वियोगावस्था से विवश होकर विमान द्वारा चञ्जना के महलों में घाकर उससे संयोग करना और पारस्परिक मनोमालिन्य दूर करना। अपना चिन्ह देकर विदा होना।

(४) पृ० २९—४२ तक—गर्भ प्रकाशित होना। चञ्जना के प्रमाण उपस्थित करने पर भी सास ससुर का उसे निकाल देना, उसका पिता के वहाँ नमन और पिता का भी उसको सहायता न करना। एक महात्मा योगों के दर्शन और उनका भविष्य बाली, पति सम्मेलनादि विषयों के संबंध में कह के पन्तर्धान होना, पुत्र जन्म, राजा प्रतिसूर्य (चञ्जना के मामा) का चञ्जना से सम्मेलन और उसे अपने वहाँ ले जाना। बच्चों का विमान से गिरना, और बच जाना; राजा प्रतिसूर्य द्वारा उसका नाम शिलाचूरा पढ़ना और घर आकर राजा का उत्सव करना और द्रोप के नाम पर उसका नाम हनुमान रखना।

(५) पृ० ४३—७९ तक—पवनंजय का युद्ध से लौटना और स्त्रियों को न पाकर बिना माता पिता की समर्पित के उसको तलाश करने का समुद्राल जाना और उसका वहाँ भी न पाना और घंट में निज प्रियतमा का कुमार से मिलाप। पवनंजय का कुछ दिनों तक वहाँ रहना और हनुमान का वहाँ कोष, व्याकरण, न्याय कंदादि का पठन कर के पारंगत होना; हनुमान जो का कई युद्धों में रावण की सहायता करना। हनुमान का रावण की मंगिनी शूर्पणखा को पुत्रो अर्नम पुण्या और सुखीव सुता पद्मरागो से विवाह होना। रामचन्द्र के वनवास के समय महारानी सीता के अन्वेषण में और रावण के साथ संपात में बहुत कुछ सहायता दी और जीवन के घंट में इस संसार को असार समझ कर इससे विरक्त होना और इन्द्रिय दमन पूर्वक योग को चरम साधन पर पाकड़ हो आत्मा की शुद्धि कर परमात्मपद प्राप्ति।

(६) पृ० ७९—८० तक—हनुमान की पूजा का फल। कथा निर्माण कारण व समय—ब्रह्मराय मन्त्र मंत्र करि दिये, इह कथा कोयो परमास ॥ क्रियावंत मुनि सुंदर दास। मनी कथा मन में धरि हर्ष ॥ सोलह सै सोलह शुभ वर्ष। रित वसंत मास बैसाख ॥ नवमी शनि अंधियारो पास ॥

No. 415(a), Jñāna Samudra by Sundaradisa of Jaipura
Rāja, Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—

8½ × 5 inches. Lines per page—25. Extent—600 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Pandita Badari Nathaji Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ ज्ञान समुद्रं लिख्यते ॥ मंगला-
चरण ॥ कृष्ण्य ॥ प्रथमं वंदि परब्रह्म परम आनंद स्वर्ण्य । द्वितीयं वंदि गुरुदेव
दियो जिन ज्ञान अनूपं ॥ त्रितियं वंदि सब संत जोरि करि तिनके आनंद ।
मन अब काय प्रणाम करत भय भ्रम सब भाग्य ॥ इहि भांति मंगलाचरण करि
सुंदर ग्रंथ बखानिये । तहं चित्र न कोऊ ऊपज्य यह निदख्य करि मानिये ॥ १ ॥

देहा ॥ ब्रह्म प्रणम्य प्रणम्य गुरु पुनि प्रणम्य सब संत । करत मंगलाचरण
इमि नाशत चित्र अनंत ॥ २ ॥ उहै ब्रह्म गुरु संत वह वस्तु विचारति एक । बचन
विलास विमान यह बदन भाव विवेक ॥ ३ ॥

End—सुन्दरज्ञान समुद्र को बारापार न संत । विषय भागै भिम्भकि
को पैठ कोरि सत ॥ सुन्दर ज्ञान समुद्र को जो चल यावै मोर । देखत हो सुख
ऊपजै निर्मल जल गंभीर ॥ यहई ज्ञान समुद्र है यह गुरु शिष्य संवाद । सुन्दर
याहि कहै सुनै ताके मिटहि विषाद ॥

इति श्री ज्ञान समुद्रे अद्वैतारि शुं निरूपणं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ गुरु शिष्य
संवाद संसृजे ॥

मिति कार्तिक वदो १४ शनिवार संवत् १९०० वि० इति ।

No. 415(b). Jñāna Samudra by Sundarādāsa.—Leaves—
34. Size—11 × 4½ inches. Lines per page—16 Extent—
544 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—
Nāgarī. Place of deposit—Panditā Garuoharāna Vājpaī,
Bhaṇḍa, Bāo Bareli.

Note—I यदि संत No. 415(a) पर लिखा गया है ।

Subject—पृ० १—परब्रह्म तथा गुरु संतो को वंदना और मंगलाचरण,
ग्रंथारंभ वर्णन । पृ० २—ग्रंथ गुण वर्णन, विज्ञान के लक्षण, गुरु देव को
हुलैसता का वर्णन, गुरु-महिमा वर्णन । पृ० ३—गुरु लक्षण और गुरु को प्रति
वर्णन, शिष्य की प्रार्थना गुरु के प्रति । पृ० ४—गुरु की प्रार्थना । शिष्य का जोव
पद्धति और आवागमन विषय पर गुरु से प्रश्न और गुरु का उत्तर । पृ० ५—भक्ति

विषय, भक्ति के २ भेद वंशेन । दसवाँ प्रेम लक्षण और उसके पागे परामर्श वंशेन । उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ भक्ति का वंश । पृ० ६—श्रवण, कोर्तन, स्मरण शिष्यत्व और शर्पण भक्ति का लक्षण और उदाहरण । पृ० ११—प्रेम लक्षण के उदाहरण, परामर्श के लक्षण और उदाहरण इनमें परामर्श उत्तम, प्रेम भक्ति मध्यम और नववा भक्ति कनिष्ठ है । पृ० १२—योग विषय-यम वंशेन अहंसा का लक्षण, सत्य का लक्षण, अस्तेय लक्षण, ब्रह्मचर्य का लक्षण, अष्ट प्रकार मैथुन के लक्षण, क्षमा लक्षण, धृति लक्षण । पृ० १३—दया लक्षण, धैर्य लक्षण, मिताहार लक्षण, शौच लक्षण । पृ० १४—नियम-वंशेन, तप लक्षण, संतोष लक्षण, बुद्धि सात्त्विक लक्षण, दान लक्षण, पूजा लक्षण, सिद्धान्त श्रवण लक्षण, पृ० १५—ह्री लक्षण, मन लक्षण, तप लक्षण, वैराग्य लक्षण, पृ० १६—सिद्धासन का वंशेन, पद्मासन का वंशेन, प्राणायाम विषय—इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडियों का वंशेन । पृ० १७—दस प्रकार के पवन का वंशेन—प्राण, अपान, समान, ध्यान, उदान, नाग, कुम्भ, कर्क, देवदत्त और धनंजय का वंशेन । इन दस वायुओं के स्थानों का वंशेन । श्वः चक्र वंशेन । प्राणायाम की क्रिया का वंशेन । पृ० १८—गौरव उक्तः कुम्भक नाम वंशेन । धुनि—दस प्रकार की धुनि का वंशेन । भंवर गुंजर, संख धुनि, मृदंग, ताल, घंटा, घोषा, भेरि, हंदिमि, समुद्र गरज, मेघ घोष । पृ० १९—मृदा नाम वंशेन, पलाहार वंशेन, पंचतत्व की धारणा का वंशेन । पृ० २०—ध्यान विषय—पदस ध्यान वंशेन, रूपस ध्यान, रूपातान ध्यान वंशेन । पृ० २१—समाधि वंशेन । पृ० २२—सांख्य भट्टानुसार योग वंशेन । जीव प्रकृति विषय वंशेन । पृ० २३—पंचतत्व गुण वंशेन । पंचतत्व स्वभाव वंशेन । तामसाहंकार वंशेन और राजसाहंकार वंशेन । राजसाहंकार से दस इंद्रियों की उत्पत्ति वंशेन । पृ० २४—सात्विकाहंकार से उत्पन्न देवताओं का वंशेन त्रिविधि शक्ति सत्त्व रज, तम का वंशेन । स्थूल देह का वंशेन । पृ० २५—पंचतत्व पंच वृत्तादिक संश वंशेन और अन्यभेद वंशेन, कर्म इंद्रिय त्रिपुरी भेद वंशेन । पृ० २६—संतःकरण त्रिपुरी वंशेन, पृ० २७—जाग्रत अवस्था, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं का निखेय, तृतीयावस्था का वंशेन । पृ० २८—तृतीयावस्था वंशेन । पृ० २९—चतुरमास वंशेन, प्रागभाव अवस्था । पृ० ३०—भाव वंशेन, पंचतत्व विकार वंशेन, प्रवृत्ति भाव । पृ० ३१—३३—प्रत्यक्भाव वंशेन, द्वैत अद्वैत का निखेय । पृ० ३४—ज्ञान समुद्र ग्रंथ की प्रशंसा वंशेन ।

No. 415(c). Jñāna Samudra by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—16. Extent—612 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Chandrabhānaji, B.A., Aminābad, Lucknow.

No. 415-(d). Sabdasāgara by Śundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—16 x 6 inches. Lines per page—26. Extent—90 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thakura Jagadēo Simha, Village Gujauli, Post Office Baundi, District Baharāich (Oudh).

Beginning—ओ नमोऽराधनमः ॥ भुव्यौ फिरै समते करत कछु घौर घौर करत ना ताप हरि करत सेतान को । दक्ष भयो रहे सुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत परदक्षणा न दक्षणा दे पाप को । सुन्दर कहत जैसे जानै न जुगति कछु पाप जाप जौ न जपत निज जाप को । बाल भयो जुवा भयो बय सोत बृद्ध भयो बय रूप होय के बिसरि भयो बाप को ॥ १ ॥ इन्द्र चन्द्र ॥ पान उई जो पीयूष पोषै नित दान उई जो दरिद्रहि भानै ॥ कान उई सुनिये जस केशव मान उई कर प्रेसन मानै । तान उई सुरतान रिझावतु ज्ञान उई जगदोसहि जानै ॥ बान उई मन बेयत सुन्दर ज्ञान उई उपजै न प्रजानै ॥ शूर उई मन को बस राख ॥ कूर उई रन माहि लजै है ॥ स्वाम उई यनुराम नहाँ कहु भांग उई मन मोहत जै है ॥ तव्य उही निज तत्वहि जानहि यव्य उई जगदोसज जै है । रक्त उई हरि सा रत सुन्दर भक्त उई भगवत भजै है । २

End—सावत सावत सोइ गयो सट रावत रावत कै वर रायो । गोवत गोवत गोइ घरयो घन गोवत गोवत लै विष बायो । सुन्दर सुन्दर नाम भयो नहि टोवत टोवत बोझहि टोयो । दैपत दैपत मागर मैं पुनि वृक्षत वृक्षत वृक्षत पायो । सुम्भत सुम्भत सुम्भि पायो सब गावत गावत गोविंद गायो । सोयत सोयत सुद्ध भयो पुनि तापत तावत कंचन तायो । जागत जागत जानि परयो जव सुन्दर सुन्दर सुन्दर पायो ॥ १०२ ॥ बैठत रामहि ऊठत रामहि बोलत रामहि राम गछौ है । जेवत रामहि पावत रामहि सोमत रामहि राम गछौ है । जानत रामहि सावत रामहि जावत रामहि राम लखौ है । देतहु रामहि लेतहु रामहि सुन्दर रामहि राम कछौ है ॥ ओजहु रामहि नेत्रहु रामहि बक्रहु रामहि रामहि गाजै ॥ सोसहु रामहि हाथहु रामहि पांवहु रामहि रामहि साजै ॥ पैठहु रामहि पीठिहु रामहि रोमहु रामहि रामहि वाजै ॥ अंतर राम निरंतर रामहि सुन्दर रामहि राम बिराजै ॥ भुमिहु रामहि आपुहि रामहि तेजहु रामहि रामहि बासु । रामहि व्योमहु रामहि चंद्रहि रामि सुरज रामहि सोत न घामै ॥ आदिहु रामि अंतहु रामहि मध्यहु रामहि पुंस न घामै ॥ आजहु रामहि कालिहु रामहि सुन्दर रामहि म्हामहि घामै ॥ वैषहु रामि अक्षरहु रामहि लेषहु रामि अलेषहु रामै ॥ एकहु रामि अनेकहु रामहि लेखहु राम

अशेषहु रामै ॥ मौनहु राम अमौनहु रामहि मौनहु रामहि मौनहु ठामै ॥ बाहिर
रामहि मोतर रामहि सुन्दर रामहि है जय जामै ॥ दूरहु राम नजोकहु रामहि
देशहु राम प्रदेशहु रामै ॥ पूरव रामहि पच्छिम रामहि दक्षिन रामहि उत्तर धामै ।
आगेहु रामहि पीछेहु रामहि व्यापक रामहि है वन धामै ॥ सुन्दर राम दशौ दिशि
पुल्ल स्वर्गहु राम पतालहु तामै ॥ आपहु राम उपावत रामहि भंजन राम संवरत
रामै इष्टिहु राम अष्टिहु रामहि इष्टहु राम करै सब कामै ॥ बखैहु राम अखैहु
रामहि रक्त न पोत न स्वेत न स्वामहि । शून्यहु राम अशून्यहु रामहि सुन्दर रामहि
नाम धनामै ॥ इति ।

Subject—ईश्वर की भक्ति सम्बन्धी शब्द ।

No. 415(e). Sundaradāsajī ke Ashtāka by Sundaradāsa.
Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size— $7\frac{1}{2} \times 9$
inches. Extent—285 Anushtup Ślokas. Appearance—New.
Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or
A.D. 1836. Place of deposit—Rāmādhīna Murāo, Village
Bādāusarāya, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुन्दर दास जी के अष्टक ॥ दाहा ॥
अलख निरंजन बंदि कै मुख दाहु के पाइ ॥ दाऊ कर तव जोरि कै संतन को सिर
नाइ ॥ १ ॥ सुन्दर तोहि दया करो सतगुरु गढ़िया हाथ ॥ माता तो अति मोह
मै राता विषया साथ ॥ २ ॥ क्रुद्ध ॥ ब्रमंगी ॥ तेमै मत माता विषया राता बहिया
जाता इनबाता ॥ तब गोते आता बूझत माता ता होतो घाता पकितता ॥ उन सब
सुख दाता काक्या नाता आप विचाता गहि लेला ॥ दाहु का चेला चेतन मेला
सुंदर मारण बुझेला ॥ ३ ॥ तौ सतगुरु आया पंथ अताया ज्ञान गढ़ाया मनमाया ।
सब कोतन माया यो समुझाया अलख लषाया सखुगवा ॥ हौं किरता धाया
उन मन लाया अमुवन राया दत्त देला ॥ दाहु का चेला चेतन मेला सुंदर मारण
बुझेला ॥ ४ ॥

End—कहु कौन कहे कहु कौन सुनै बह कहन सुनन ते मित्र हैरे । तहं सोत
नहों तहं धाम नहों तहं धाम नराति न दिख हैरे ॥ तहं स्य नहों तहं रेप नहों तहं
सुन्दर कछु न चिन्ह हैरे ॥ ६ ॥ नहि गोश हैरे नहि नैन हैरे नहि मुख हैरे नहि
बैन हैरे ॥ नहि नैन हैरे नहि सैन हैरे नहि गैन हैरे न असेन हैरे ॥ नहि पैठ हैरे
नहि पीठि हैरे नहि कवा हैरे नहि मोठ हैरे ॥ नहि दुखन हैरे नहि इष्ट हैरे नहि
सुंदर दोठ अदोठ हैरे ॥ ७ ॥ नहिं शोश हैरे नहिं पांव हैरे नहिं रोक हैरे नहिं
राउ हैरे ॥ नहिं पावन पोवन चाउ हैरे । नहिं दारन जोवन दाव हैरे । नहिं नौर हैरे

नहिं नाव हैरे नहिं पाक हैरे नहिं भाव हैरे ॥ नहिं मौति हैरे नहिं आयु हैरे नहिं
सुंदर भाव प्रभाव हैरे ॥ ८ ॥ इति ज्ञान भूलना अष्टक संपूर्ण ॥ संवत् १८९३ का

Subject—पृ० १—३ तक—गुरुदया अष्टक—गुरु के उपदेश से चेतन्य
होने का वर्णन । घपने को दाढ़ का चेला बताना । (२) पृ० ४—८ तक—
भ्रम विदुषण—माला तथा तिलकधारी इत्यादि पाखंडियों के भ्रम का वर्णन ।
(३) पृ० ९—१४ तक—गुरु कृपा अष्टक—गुरु के चरणों की महानता, गुरु की
शिक्षा का फल । (४) पृ० १५—१९ तक—गुरु उपदेश सतगुरु वंदना, गुरु के शब्द
वाण का प्रभाव, गुरु के गुण वर्णन, संसार को स्वप्न तुल्य मानकर उससे बचे रहने
का कथन । अष्टक के पढ़ने का फल । (५) पृ० २०—२३ तक—गुरु की महिमा
कथन के साथ ही साथ दाढ़ को ब्रह्म स्वरूप मान कर वंदना करना । गुरु
देव महिमा स्तोत्र । (६) पृ० २४—२७ तक—रामजी अष्टक—राम के एक रस
होने का वर्णन । ब्रह्मादि उसी के गुणानुसार नाम होने का वर्णन । श्रृष्टि उत्पत्ति
होने का वर्णन । विध्याम पाने की वन्दना । (७) पृ० २७—३२ तक—तामाष्टक—
ईश्वर के कई नाम हरि ईश्वर, माधव, केशव, भज और मोहन का वर्णन कर के
‘तु’ शब्द मेंही सब का प्रवेश और उसी से उत्पत्ति और विनाश होने का वर्णन ।
(८) पृ० ३२—३५ तक—आत्मा अबल अष्टक—कुंषा के चलने, दीपक तथा
अग्नि के जलने इत्यादि के अशुद्ध प्रयोग या लोकोक्ति के अनुसार अर्थ न हो कर
अंश अर्थ होने का वर्णन करके आत्मा का प्रचल सिद्ध करना । (९) पृ० ३५—३७
तक—पंजाबी भाषा अष्टक—योगी, जपी, तपसी इत्यादि को उसके भेद न पाने
का वर्णन । उदासी इत्यादि का संसार में बाहुल्य होना किन्तु उसके भेद पाने
वाले बिरले ही होने का वर्णन । ईश्वर के अग्रम प्रणोचर होने का वर्णन । (१०)
पृ० ३८—४० तक—ब्रह्म स्तोत्र अष्टक—ब्रह्म के कुछ गुणों का वर्णन करके उस
को कुछ स्तुति करना । (११) पृ० ४१—४४ तक—पीर मुगैद अष्टक—पीर
की कृपा से ईश्वर (ब्रह्म) प्राप्त होने का वर्णन । नफस को मारने का वर्णन, पीर
से राहें रास्त बतलाने का निवेदन । पीर का उसी के हृदय में ब्रह्म का होना
बताना । (१२) पृ० ४४—४५ तक अजब ख्याल अष्टक—बंदे के हाजिर होने में
खुदा का हाजिर होना, बंदगी के नियम और उपदेश (१३) पृ० ४५—४६ तक—
ज्ञान भूलना अष्टक—ईश्वर का सब स्थानों पर समभाव से स्थित होने का वर्णन ।
बिना अनुभव के उसके ज्ञान न होने का वर्णन । उसी के सर्वस्व होने का वर्णन ।

No. 415(f). *Sundara Vilāsa* by *Sundaradāsa*. Substance—
Country-made paper. Leaves—12×6 inches. Lines per page
—48. Extent—1,939 Anushtup Ślokas. Appearance—New.
Date of manuscr. —Samvat 1940 or 1888 A. D. Place of

deposit—Thakura Sivabaksha Simba, Village Basantapur, Post Office Payāgapura, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर विलास लिख्यते ॥ प्रथम गुरु देव जी को संग लिख्यते ॥ इंदव कंद ॥ मौजकरी गुरुदेव दयाकरि शब्द सुनाय कह्यो हरि मेरो । क्यों रवि के प्रगटे निशि जात सु दूर कियो भ्रममान अन्धेरो । कायक बायक मानस हू करि है गुरु देवहि वन्दन मेरो । सुन्दरदास कहै करजोर जु दादू दयाल को हू नित सेरो ॥ पूरण ब्रह्म विचार निरंतर काम न कोध न लोभ न मोह ॥ ज्ञान स्वल्प अनूप निरूपम ज्ञानु गिरा सुनि मोह न मोह ॥ सुन्दरदास कहै करजोरि जु दादू दयालहि मारि न मोह ॥ धीरब्रवंत अडिग जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान गह्यो दृढ़ घाटू । भेषन पक्ष निरंतर लक्ष जु धीर नहीं कछु बाद विवादु ॥ शोल सेतोप क्षमा जिनके घट लागि रछा सु घनाहद नादु ॥ ये सब लक्षण हैं जिन माहि जु सुन्दर के उर है गुरु दादु ॥ भव जल में बहि जातहु ते जिन काढ़ि लिये अपने कर घाटु । बहुरि संदेह मिटाय दिये सब कानन टेरि सुनाय के नादु । पूरण ब्रह्म प्रकाश किये पुनि छूटि गयो यह बाद विवादु । ऐसी कृपा जु करी हम ऊपर सुन्दर के उर है गुरु दादु ॥

End—जोगी धके कहि जैन धके ऋषि तापस धाकि रहेफल बाते ॥ न्यासी धके बनवासी धके जो उदासी धके बहु फेर फिराते । शेष मसायक धीर उलायक धाकि रहे मन में मुसुकाते ॥ सुन्दर मौन गहो सिध साधक कौन कहै उसको मुष बाते ॥ इति आश्चर्य को संग समाप्त ॥ सबैया । सुष घाम मनोहर अमल पुर निज कालिन्दी के कूल कहावै । सुर नर मुनि आदिक ध्यान धरै तुहो जग को प्रतिपाल करावै ॥ जिन किंचित हो जलपान कियो तिनके सख घोष को खोज कहावै अब केतिक बात कहौं प्रति गंग के जाहि लखे अमराज डरावै ॥ तहं हो यसि के निर्वाह करै द्विज राधा कृष्ण कहावत है । जेहि नाम शिरोमणि लेत सबै पुनि भक्तन के मन भावत है कर लेपक को उद्यम करि के यों पाय उदर को दीयत है । परमारथ हेत बनै न कछु तात पति हो जिय कापत है । इति श्री सुन्दर दास कृत सबैया सुन्दर विलास ग्रंथ समाप्तः लेखक राधा कृष्ण ब्राह्मण ॥ संवत् १९४१ वि०

Subject—इस ग्रंथ में ज्ञानोपदेश सबैया सब ज्ञानियों के लिये वर्णन किये हैं (१) गुरु की महिमा, उपदेश चिन्तामणि काल चिन्तामणि, देह आत्मा बिछोह, तृष्णा, धैर्य उराहनः विश्वास, देह मलीनता, गर्भ प्रहार, नारो निन्दा, दुष्ट जन, मत्तका संग, नासक्य को संग, विपरीत ज्ञान को संग, वचन, विवेक को संग, निर्गुण उपासना, प्रतिघता को संग, विरह, शब्दभार, भक्तिज्ञान, विष के शब्द, सरासन कर संग, साधु का संग, ज्ञानो का संग, सांख्य ज्ञान, अपने

भाव का संग, स्वरूप विस्मरण, विचार का संग, निष्कलंक ब्रह्म-आत्मा अनुभव, निःसंशय को संग, प्रेम जानो का संग, ईश ज्ञान का संग, जगत मिथ्या का संग, साधर्व का संग, लेखक की सर्वेण आदि वचन ।

No. 415(g). *Sundaradāsa kṛit Savaiyā* by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—15×5 inches. Lines per page—16. Extent—880 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Bīśeśwara Simha Indrabaksha Simha, Village Hari, harpur, Post Office Chilwariyā, District Baharāich (Oudh).

Note (I) 'सुन्दरदास हठ सर्वेण' नामक संग वास्तव में 'सुन्दर विलास' है ।

(II) संग सब विवरण No. 415 (f) पर लिखा गया है ।

No. 415(h). *Savaiyā Sundaradāsa kī* by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper Leaves—174. Size—10×4 inches. Lines per page—14. Extent—1,696 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Pāṇḍita Avadhēsa Pāṇḍey, Village Kham-bharihā Pāṇḍay kī, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh).

No. 416(a). *Bhramaragītā* by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12×5 inches. Lines per page—28. Extent—4,200 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript Samvat 1899 or A.D. 1842. Place of deposit—Swāmidayāla Vājpai, Swamidayāla kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—ओ गोविंजन बह्मभयनमः ॥ पय समरगोत लिख्यते ॥ मंगला-चरण ॥ राम कल्याण ॥ ताल जलद तिताला ॥ चरण कमल बंदो हरि राई ॥ जाको कृपा पंगु गिरि लंबे धंवेरे को सब कुछ दिखराई । बहरे सुने गुंग पुनि बोले रेक चले सिर कर घराई । सुदास स्वामी करुणा मय चार बार बंदो तेहि पाई ॥ पय समरगोत को प्रस्ताव ॥ ओ पभुजोके वचन उड्य पति ॥ राम सारंग ॥ पहिले करि प्रणाम नंदराय को समाचार सब दोजो घेर उहां वृषमान गोव सो

जाइ सकल सुखलोजा ॥ श्रीराम आदि पादि सब ग्वाल बालनि मरा इत भेटिबो ।
सुख संदेस सुनाइ हमारा गोपिन को सुख भेटिबो ॥ मंत्री एक बन बसत हमारा
ताहि मिले सबुपाखो । सावधान हूँ मरे हुता ताही माथे नाखो ॥ सुंदर परम
किसोर वय कम चंचल नैन विशाल । कर मुल्लो सिर मोर पंख पितांबर उर
वनमाल । जिन हारियो तुम सखन बन में बज देंबो रखवार । वृंदावन सो बसत
निरंतर कबहुं न दौत निधार । ऊधो प्रति सब कही स्वाम जू अपने मन को प्रीति ।
सुरदास प्रभु कृपा करि पठये यह सकल वज्र रीति ॥

End—गद्य सारंग ॥ देन पाये ऊधो मत नोको । हित उपदेश करन वज्र
पाये लिख हरि जोको । जोग जुगति निज मन उपदेशनि ग्यान सुनाइ जकीको ।
चावहुरी मिलि सुनहु सवानो लियो मुजस को टोको । तजन कहत खबर चापूषन
देइ गेह सतहीको । भोग मसम करि सोस जटा धरो सिखवत निरखुल फोको ।
मेरे जान इहै युवतिन को दैत फिरत दुख पोको । ता सराप ते भय स्वाम तन
तरुन गहन उर जोको । जाको कृपा परी रो जाँव तै सो सोचन मलो बुरी को ।
जो लगि सुर ग्वाल बसि भाजै सुख नहि होत समो को । राग विहाय ॥ ताज
इकतार ॥ कृष्ण कृष्ण करत डोलु कृष्ण कहां मैं पाऊं । द्वारे ते दौड़ आऊं तौ उन
लाज लजाऊं ॥ तोहैं छांड़ि पौर को मैं कौन को कहाऊं ॥ ऊधो जो तुम बेग
जायो प्रेम पातो पठाऊं ॥ हृदि फिरो बन कुंजन माहि स्थान स्वामा गाऊं । या
विवता नहि पंख दोनो उड़ि के द्वारका जाऊं । ऊधो जो तुम बेग जायो स्वामहो
बेग लै आऊं । सर के प्रभु दरस दोज्यो हरि हंस कंठ लगाऊं । इति अमर गीत
संपूरण ॥ शुभ मितो वैसाख शुक्ल १३ रविवार संवत् १८९९ ।

Subject—इस पुस्तक में श्री कृष्ण जो ने ऊधो को मथुरा ते वज्र में वज्र
युवतियों को समझाने जोग पादि को शिक्षा देने के लिये पठाया था उसी को
कथा पूर्ण रूप से वर्णन की गई है इसी में वज्र युवतियों ने भी ऊधो जो से अपना
संदेश कहा है और श्री कृष्ण जो को उलाहना दे भेजा पादि ।

No. 416(b). Bhaṇwaragīta by Suradāsa of Gaughāta (Run-
ukta, Āgrā). Substance—Country-made paper. Leaves—120.
Size—10×7 inches. Lines per page—20. Extent—1,200
Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Pandita Badarī Nathaji Bhaṭṭa, Professor,
Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्रीराधाकृष्णवल्लभा ॥ अथ मौर गीत लिख्यते ॥ ऐन ऊधो
बेगि तुम वज्र जाहु । धृति संदेस सुनाइ मेढो बल्लभनि को दाह ॥ काम पावक

तुल्य तन में विरह स्वांस समोर । मसम नाहों होत पावत लोचनन के नोर ॥
 मोहलौ यहि मोति हैं वे कछुक स्वांस सरोर । ते पर विनु समाधानहि क्यो धर
 तन धोर ॥ बारबार कहा कही तुम सबा साधु प्रबोन । सर सुमति विचारियै
 जिय मनौ जल विनु मोन ॥

End—राग सारंग ॥ हरि विनु मुरली कौन बजावै । कमन नैन म्याम
 सुन्दर विनु को मधुरे मुरगावै ॥ प दोड भवन मुवाकी पोषे को बज्र फेरि बसावै ।
 ऐसो कियो निहुर मन मोहन जो यहि पंथ न आवै । छांडो सुरति नंद जमुदा को
 हमरो कौन चलावै । सरस्वाम की प्रीति पाखिलो को प्रब सुरति करावै ॥ ३ ॥
 सुनियत मोहन व्याह सखोरो हम देखन नहि पायै । भासा लगो रहो मेरे मन क्यो
 नहि बोल पढायै ॥ जद्यपि हो परतोतो कान्ह को कौने गुरु पढ़ायै । जननो
 जनम भूमि यह गोकुल नैकौ बहुरि न पायै ॥ बचनहु की माठा नहि मेटत जो
 नहि जमुदा जायै । पखिली प्रीति बिसारि सर प्रभु जा लै मोद बढ़ायै ॥ ४ ॥
 इति सूरदास जो कृत मंतर गीत संपूर्णम् ॥

No. 416(c). Sūradāsakṛit Kabira by Suradāsajī, Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—9×4 inches. Extent—27 Anuṣṭup Ślokaa. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rādhā Kṛishṇajīpuri Bhoja Tiwāri, Post Office Alipur Bāzār (Sultānpur).

Beginning—पृ० १—श्री गणेशायनमः ॥ कबीर ॥ शारी नोल मोल मंहं
 छेको गोर गात छवि होति । मनहु नोलमनि मंडप मध्ये बरत निरंतर जोति ॥ १ ॥
 निरखि छवि रावा नागरि प्यारो ॥ कबीर ॥ छोटी चार तोनि सर राति कुहु
 केतु घट राहु ॥ मनु हिलि मिलि एक संग हेमगिरि ससि मुख कोन्ह गराहु ॥ २ ॥
 कबीर ॥ मंजुल मांग मोति लर लटकत भटकत उपमा देत ॥ मनु उडगन सब
 सिमिट एक होइ बीच करत ससि हेत ॥ ३ ॥ निरखि छवि ॥ भाल बिसाल
 तिलक प्रति राजत दिहे लाल रज बिंद ॥ मनु बंधुप के सुमन भानि कै मनसिज
 पूजि मंहं ॥ ४ ॥ निरखि ॥ जुपा ग्राह ताटक चक्र जुग भौ शृंगो मुग नयन
 मनु दौ तिलक बाग नहि बैठे ससि रथ स्वारथ मैत ॥ ५ ॥ निरखि ॥ भौहैं विकट
 निकट भवनहु लग हम पंजन अनुहारि ॥ मनु परस्पर करत लराई कोर बचा-
 वत रारि ॥ ६ ॥ निरखि ॥ कबीर ॥ नासा शुभग मोति बेसरि को बरखत हात
 सकाच ॥ मानहु कोर फोरि दाढ़िम फल बाज रहै यहि चाच ॥ ७ ॥ निरखि ॥
 क० ॥ पुष्ट कपोल चारु चिह्नन प्रति बरखत मन सकुंचात ॥ मनु दौ सेष करत
 ससि तैं मत मानि अनुज को नात ॥ ८ ॥ निरखि ॥ क० ॥ अग्रर बिच रंग सानि

सुधारस यह उपमह को घेत ॥ मानहु उगिलित सोप रूप निधि मोति दूकि
हुति दंत ॥ ९ ॥ निरपि ॥ क० ॥ ठोड़ी ठकुराइन को नोको मोलाबुंद मभार ॥
सालिग्राम मनु कनक संपुट मारहिगे तनक उकार ॥ १० ॥ निरपि ॥ क० ॥
केको कंड सुमय कंड सरो या सरि को चवर न कांति । मानहु कनक मुरति
गंगातट निकट निपटि दिपि प्रांति ॥ ११ ॥ निरपि ॥ क० ॥ पहुचो पानि बाहु
बाजु बंद

End—प्यारी ॥ कबोर ॥ चम्बुज चरण पावटो बुन्दो यह उपमा कहू चवर ॥
मधुर नाद गुंजाग करत मनु उड़ि उड़ि बैठत भंवर ॥ २१ ॥ निरपि छवि राधा
नागरि प्यारी ॥ कबोर ॥ कह सहचरो वेगि लै घाई प्रभु तरे हित लागि ॥ पव
रस विलस विमल वृंदावन दम कपट कुल त्यागि ॥ २२ ॥ निरपि छवि राधा
नागरि प्यारी ॥ कबोर ॥ ज़ारी ज़री दोन सारा प्रभु बड़े रीतिरस रंग ॥ ठकुराइन
ओ राधा मेरी ठाकुर नवल त्रिमंग ॥ २३ ॥ निरपि छवि राधा नागरि प्यारी ॥
इति सदास कृत कबोर समाप्त

Subject—पृ० १-४ तक—श्रीमती राधा रातो जो के नवशिश के वस्तेन
सद्विज कबोर कथन । राधा जो को साड़ी, चोटो, मांग, माल तिलक, घाड़,
ताटक, युग मोह, नयन, दो तिलक, डग, नासा, कपोल, चधर, ठोड़ी का नोला
बुंद, कंठसगी, पहुँचो, बाजु बंद का फुंदना, सोप, सिपज का हाग, चौकी,
लालगुलाल हारावलि, चालो में कुच, रोमावलो, नामि, नोवो, नितम्ब, जंघा,
चौर चरलों के पाँवरे पर मनेहर उत्प्रेक्षाएं ।

No. 416(71). *Sūradāsake Vishunapada* by *Sūradāsa*. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15×5 in-
ches. Lines per page—18. Extent—1,080 Anushtup Ślokas.
Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date
of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit
—Bīṭṭhaladāsa Mahanta—Village Mirāpura, Post Office
Baharāich, District Baharāich (Oudh.)

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ श्री सरदास के विष्णु पद
लिख्यते ॥ प्रथम राग घनाधो ॥ जैगोविद माधो मुकुंद हरि । कृपासिधु कल्याण
कंस शरि । कृपन पाल दामोदर देव प्रति । कृष्ण कमल लोचन प्रगोस्त मति ।
रामचन्द्र रा गोव नयन चर । सरन साद्व श्रीपति सारंगधर । वनमानो बोटल पावन
नवल वासुदेव बंसो वृजभूषन तल परदूषन त्रिसिंग सिर पंदन चरण चिन्ह
दंडक भू मेहन कालो दवन बेसि कुल पाठन घना दुष्ट घेनुक तन घातन । रिप

मध दूधन ताड़िका ताड़न । बन बसितात बचन प्रतिपारन बको बदन बक बदन
बदारन । बहन बिबाद नंद निस्तारन । रघुपति प्रबल पिनाक विर्मजन । जन हित
जनक मुना मनरजन । गोकुल पति निरघर गुन सागर, महुइधर स्वामी नटनागर
कहनामय कपि कुल हितकारी वान विनोद खंडट मुगहारो । गोपी गोप गुपत
व्रतकारन । मन बच कम सेवक भयनारन सुरदास जावत पभु रघुवर । कोजै
कृपा अनंत हरि जन पर ॥ १ ॥

End—माधो जीका धरारो हो । जग पाइ कछु जोगन साधो धरौ न
मन में भौ सब सो कहत रोति जमपुर की मज पयोलिका लौ पाप पुन्य को फल
न बतायो दयो नके की पौ । कानपात पर कहौ विपानिधि कछु भक्ति भौ भौ ॥
कहना सिधु कृपाल कृपानिधि भजौ स्वर्ग को क्यों हंसि घेले जगदीस जगन गुह
वात तुम्हारी पौ वात कहौ तौ बहुत भूसौगे चरन कमल की सौ ॥ मेरो देह
छुटत जम पठप जिने दूत सर मी । वे ले चले तु साज आपने सान धराये स्यौ
जिनके दासन दरसन होत पतिन करत स्यौ स्यौ । हुड़ि फिरि कोउ घर न बतावे
सुपच कोरिवा लौ ॥ रिसि मरि गये परम राकस तब पकरि छिपे न कैसौ । तब ले
फिरि नगर ते बाहर जहां सुतक हौ हौ ॥ तारिस करि हौ बहुत माग्यो कहं लनि
वरनि सकौ ॥ हाइ हाइ हौ करौ कृपन हौ रामनाम न जावौ ॥ ताल पषावज
चले बजावत समजो सोम को ॥ सुरदास को भलो बनो है ॥ गजो गौ घो पौ ॥
हां पतित सिंदामनि माधो ॥ अजामेल तुम काटजु तारो जुतो तु मेरो माधो
जुगजुष यहै विरदि चलि आयो कहियत है अब ताते ॥ मोहि छुड़ि तुम सब
उवारो हो घटि हौ अब काते ॥ कै अब हारि मानि प्रभु बैठे कै करि विरद सहो ।
सुरस्याम जो घोयो उपजै तौ सोधियो बहो ॥ इति सुरस्याम के विष्णु पद ॥

Subject—इस पद्य में सुरदास जीने श्री कृष्णजी की लोला वशोदा नंद
का श्री कृष्ण पर प्रेम न राधिका कृष्ण का प्रेम व ऊयो का योग शिक्षा के लिये
श्री राधिका के निकट आना व सुरदास के पद जो सेंटिम में कहे हैं वर्णन हैं ।

No. 416(e). *Rukminivivāha and Sudāmā Charitra* by
Sūradāsa of Rūnukuta (Āgrā). Substance—Country-made
paper. Leaves—5. Size—10 × 7 inches. Lines per page—
20. Extent—50. Anushtup Ślokas. Appearance—Old.
Character—Nāgarī. Place of deposit—Pandita Badari Nāthaji
Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—अब रुक्मिणी विवाह कथा ॥ राग बिलावल ॥ द्विज
कहियो कदुपति सौ बात । वेद विरोध होत कुंदनपुर हंस के प्रस काग

नियरात ॥ जिन हमरे गुन दीप विचारो कन्या लिखो नौति करितात ॥ ताते यह द्विज बेगि पठावौ नेम धर्म मरजादा जात ॥ तन आत्मा समपौ तुमकौ पाछे चनुज परे कछु नात । करि सनेह पग धरीं तुम्हारे ऐसे कौं प्रति चित सकुलात ॥ कृपा करौ रथ बेनि चढ़ौगे लगन समीप रचो परमात ॥ सुरदास ससियाल पानि गहि पावक परौ करौं तन घात ॥ १ ॥

End—राग सारंग ॥ ऐसें चौर कौन पहिचानै । सुनि सुंदरि हरि दोन-बंधु बिनु कौनु मिर्जा मानै ॥ दौं प्रति कुटिन कुटिल कुदरम भये जवनाघ गुसाई । लियौ उठाई प्रक भरि मावौ उठि चरुन को नाई ॥ लै प्रजंक बैठारि परम रवि निज कर चान पखारे ॥ पूरव कया सुनाय कृपा करि सब संकोच निवारे ॥ ३ ॥ लये क्लिनाय चौर ते तंदुल केतै लै मुख मेले ॥ भावहु कृपा करो सुरज प्रभु गुह गुह वसे अकेले ॥ इति सुरदास कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् ॥

Subject—दक्खिणो विवाह कथा कं० नं० १—३ तक । सुदामा चरित्र वल्लभ कं० नं० ४—९ तक । इति ।

No. 416(f). Sūrasāgara by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—275. Size—12×10 inches. Lines per page—56. Extent—19,250 Anuṣṭup Ślokas—Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1899 or A.D. 1892. Place of deposit—Paṇḍit Śiva Nārāyana Vājpai, Vājpai ka purwā. Post Office Sisaiyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning—श्री गोपोजन बह्मभावनमः ॥ श्री बह्म चरणकमलेभ्यो-
नमः ॥ श्री विठलेशान्नयतिराम ॥ श्री गिरिचरो जयतिराम ॥ श्री कृष्णायनमः
पथ श्री सुरदास जी कृत सुरसागर सारावली तथा सवालाख पद के सूचीपत्र
श्रीकृष्ण नंद व्यासदेव राग सागर संग्रह कृत लिख्यते ॥ वंदौ श्री हरि पद सुख-
दाई । बहिरौ सुनै गुंग पुनि बोले रंक चले सिर कृप धराई ॥ सुरदास प्रभु की
शरणागत बारंवार नमो तेहि पाई ॥ रामनो काफो ताल जत ॥ खेलत यहि बिधि
हरि होरो हो होरो हो वेद विदित यह बात ॥ टेक ॥ अविग्न भादि अनंत
अनूपम अलप पुरुष अविनासी । पूरण ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम नित निज लोक
बिलासी ॥ जहां प्रदावन सादि अजर जहं कुंजलता विस्तार । तहं बिहरत प्रिय
प्रोतम दोऊ निगम भुंग गुजार ॥ १ ॥ रतन जडित कालिंदी को तट प्रति पुनोत
जहं नोर सारस हंस चकोर मोर खम कुजत कोकिल कोर ॥ ३ ॥ जहं गोवर्धन
पर्वत मनिमय सधन कंदरा सार । गोपिन के मंडल मध्य राजत निसबासर करत
बिहार ॥

End—राग मलार ॥ कौट वज्र वांचत नादिन पाती ॥ कति लिखि
लिखि पठवत नंद नंदन कठिन विरह को कांती ॥ नैन सजल काण्ठ सति
कौमल कर घंगुरी सति नाती ॥ परसे जरे बिलोके मौजहु दुह भांति दुख छाती ॥
क्यों प वचन सु ब्रह्म सर मुनि विरह मदन सर घाती ॥ मुख मुहु वचन बिना
सोचव जो बड़ो प्रेम रस भाती ॥ राग सारंग ॥ देन चाये उचव मत नोको ।
हित उपदेश करन वज्र चाये लाये मनोहरि जोको । जोग जुगति निर्गुन उपदेशहि
ज्ञान सुनाइ जतो को । चावहु रो मिलि सुनहु सयानो लिये सुजस को टोको ॥
तजन कहव वर आभूषन देह नेह सत होको ॥ संग मसम करि सोस जटा घरो
सिखवत निर्गुन फोको ॥ मेरे जान इहै जुवतिन को देव फिरत दुख फोको ॥
तो सराप ते भये स्याम तन तरुन महत जर जोको । ज्यों लगि सुर बायल डसि
भाजै सुख नहि होत घमी को ॥ राग बिहान ॥ ताल एकतारा । कृष्ण कृष्ण करत
होलु कृष्ण कहीं में पाऊं ॥ द्वारते दौड़ पाऊं तौऊ न लाज लगऊं ॥ तोह
छाडि प्यार को मैं कौन को कहाऊं ॥ ऊयो जो तुम वेग जायो प्रेम पाती पठाऊं ॥
हुँहि फिरौ वन कुंजन मारि स्याम स्यामा ब्याऊं ॥ या बिचनो नहि पंच दोनो
उड़के द्वारका जाऊं ॥ ऊयो जो तुम वेग जायो स्यामहि वेगि ले पाऊं ॥ सर के
प्रभु दास जो हरि हंस कंठ लगऊं ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण की लोला जन्म से लेकर अंत तक बचपन को
गई है प्रथम बचपन, यान लोला आदि पूर्ण रूप से वर्णित है ।

No. 416/g). Sūrasāgara by Sūradāsa of Runkuta (Gau-
ghat) Āgrā. Leaves—168. Size—10×7 inches. Lines per-
page—20. Extent—4,000 Anushṭup Slokas. Incomplete.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Paṇḍita Badarī Nāthji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow Univer-
sity, Lucknow.

Beginning—सुनो म्यान सो सुमिरन राखी ॥ जैसे मुक को व्यास
पढ़ायो । सुदास तैसे कहि गायो ॥ ३ ॥ श्री भागवत वक्ता श्रोता वसेन ॥
राग बिलावल ॥ व्यास देव जब मुकहि पढ़ायो ॥ सुनि के सुत सो हृदय बयो ॥
मुक सैनिक सो पुनि कहाँ । बिदुर मैत्रेय सो पुनि लहौ ॥ सुनि भागवत सबनि
सुखपायो । सुदास सो वरनि सुनायो ॥ ४ ॥ अथ सुत सैनिक संवाद ॥ राग
बिलावल ॥ सुत व्यास सो हरि गुन सुन्यो । बहुरौ तन तजि मन में सुन्यो ॥
सो पुनि नीमपार में पायो । तहाँ रिषिन को दरसन पायो ॥

End—फिर वज्र वंशो गोकुलनाथ ॥ अब न तुम्हें जगाइ पठिबैं गोधनन के
साथ ॥ बरजै न माखन खात कबहुँ दख्यो देत लटाय । अब न देहि उराहरो नंद

छरनि भागे आए ॥ नहि देखि दावर जोरि कै बागुन न कहिहैं आनि ॥ कहि हैं न
चरनन देन जावकु गुहन बेना फूल । कहिहैं न करन सिंगार यहुतर बसन जनुना
फूल ॥ करिहैं न कबहुँ मान हम हठिहैं न मांगत दान । कहि हैं न मृदु मुरली
बजावन करन तुम सौँ गान ॥ देहु दरसन नंद नंदन मिलन को जिप्र पास । सर
प्रभु के दरस करन मरत लोचन प्यास ॥ ४८८ ॥

इति ।

No. 416(h). *Sūrsāgara* by Sūradāsa of Gaughāta (Āgrā).
Substance—Country-made paper. Leaves—334. Size—10 × 6
inches. Lines per page—10. Extent—2,925 Anuṣṭup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of
deposit—Pāṇḍita Badri Nathaji Bhaṭṭa. Professor, Univer-
sity, Lucknow.

Beginning—ओ गणेशाय नमः ॥ ओ कृष्णाय नमः इति बाललोक काव्य
सार ॥ पद्य दसमस्कंध लिखितं सुरदास कृत ओ भागवत वखनं ॥ राम सूरन—
प्यास कही सुकदेव सों ओ भागवत बखान । द्वादश स्कंध परम सुमम प्रेम
मक्ति को खान ॥ नव प्रसंतं नुर सों कही ओ सुकदेव सुखान । सर कहत सब
दसम कौँ उर में धरि हरि ध्यान ॥ ८६

राम बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि स्मरण करौ । हरि चरनारविंद उर धरौ ॥
अथ यह विषय पारम्य दवाई । विप्र श्राव समुद्र मये सोई ॥
हुई जनम ज्यो हरि उदारौ । सो तो मैं तुमसो कहि उचारौ ॥
बकदंत ससिपाल जो मरो । वासुदेव होइ सो पुनि हरो ॥
धौरी लोना यह विस्तारं । कोइ जीवन को ज्यो निस्तारं ॥
सो यह तुमसों सकल बखानौ । प्रेम सहित सुनि हृदये धारौ ॥
जो यह कथा सुनै चित लाय । सो भव तरि बैकुंठे जाय ॥

End—राम कल्याण ॥ कोयो प्रतिमान नृषमान धारौ । देखि प्रतिविष
पिय हृदै नारौ । कहा थां करत कै जाहु प्यारौ ॥ मनहि मन देव अति ताहि
गारौ । सुनत यह वचन पिय बिरह बाढ़ौ । कियो अति नागरो मानु माढ़ौ ॥
काम तन दहत नहि धोर धारै । कबहुँ उठत बैठत बार बारै ॥ केरि अति भये
व्याकुल मुरारौ । नैन मरि हेत जन देव द्वारौ । ३२ ।

राम विहाग ॥ जान कही तिय चित प्रपरावहि । तन टाहति बिन कात
भापनो कहतउ रतहि न बादहि ॥ कहा रहो मुख मूँदि भामिनो मोहि चूक कहु
नाहि । भूमकि भूमकि ज्यो चतुर नागरो देखि भापनो छाँड़ि ॥ अग्रहुँ हरि करौ

रिस उरते हृदये ज्ञान विचारो । सुर स्याम कहि कहि पचि हारे हठि कोन्हो
जिय भारो ॥ ३३ ॥ राग कल्याण ॥ काम स्याम तनः—

Subject—मंगलाचरण, भगवान जन्म लीला बचैन ।

No. 416(i). Sūrasāgar by Sūradāsa of Gaughāta, Agrā.
Substance—Country-made paper. Leaves—368. Size—13 × 7
inches. Lines per page—14. Extent—14,168 Anuśṭup
Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of
deposit—Rājā Pustakālaya, Bhināga, Bahārāich.

Beginning—ओ गणेशाय नमः यद्य सुर सागर लिख्यते ॥ तत्र प्रथम परमारय
को कथा । हरि हरि हरि हरि सुमिअ करो । हरि चरनारविंद उर धरो । हरि
को कथा होइ जब जहां । गंगा हू चलि आवै तहां । जमुना सिंधु सरस्वति आवै ।
गोदावरो चिलंब न लावै । सब तौरथ को बासा तहां । सुर कथा हरि को जहां ।
चरण कमल बंदौ हरि राया । जाको रूप पंगु गिरि लखै अंधे को सब कछु
दरसाया । बहिरौ सुनै गुंग पुनि बोलै रंक फिरै सिर कृप धराया ॥ सुरदास
स्वामी कहना मै बार बार बंदौ तेहि पाया ॥ कौजे प्रभु अपने विरद को लाज ।
महापति कबहु नहिं पायो नेक तिहारे काज । माया प्रबल धाम अरु वनिता
आयो हो या साज ॥ देवत सुनत सबै जानत हौं नेक न आवत बाज । कहै श्रुति
पति बहुत तुम तारे अवन सुनो पावाज । दै नहिं जात घाट उतराई चाहत
चढ़न जहाज । लीजे पार उतारि सुर कहं महाराज वृजराज ॥

End—राग नट ॥ देखु सखी हरि वदन इंदुवर । चिह्न कुटिल मलक
अबलो छवि कहि न जाय सोमा अनूप वर ॥ बाल भुजंगिनि निकसि मनो मिलि
रहौ घेरि रस मनो सुधाकर । तजि नहिं सकहि नहिं करहि पान को कारन कौन
विचारि हरि उर ॥ अरुन वनज लोचन कपोल सुभ श्रुति कुंडल मंडित अति
सुंदर । मनहुं सिंधु निज सुतहिं मनावन पठयो जुगल बसोठि वारिचर । नंद
नंदन मुख सुंदरता छवि कहि न सकत श्रुति सेस उमावर । सुरदास त्रैलोक्य
विमोहन कपट रूप नर त्रिविधि मूल हर ॥ काहु फिर न कहौ वे बातें । जो नर
यहां सुकृत कछु करिगे बातन को कुसलातें । जैसे सखी जरै पिय के संग विरह
प्रेम रस मातें ॥ ताको स्वाद पुझिये कातें सियरे जार कि तातें । जैसे सुर धसे
रन भीतर अरु सनमुख करि बातें ॥ ताको स्वाद पुझिये कातें सहत सेल उर
घात । सुरदास देहो को या गति समुझि परो अब बातें ॥ या संसार बोल को
परियो पायो नयो कहातें ॥

Subject—प्रार्थना २ पद

परमार्थ ब्रह्म	३-१७६ पद तक
भागवत प्रथम स्कंध की कथा	१७७-२५८ "
द्वितीय स्कंध की कथा	२५९-२८८ "
तृतीय " " "	२८९-३१८ "
चतुर्थ " " "	३१९-३३० "
पंचम " " "	३३१-३३७ "
षष्ठम " " "	३३८-३४४ "
सप्तम षष्ठम स्कंध "	३४५-३५८ "
नवम " " "	३५९-४१७ "
दशम स्कंध	४१८२-१०४ "
एकादश स्कंध	२१०४-२११० "
द्वादश स्कंध	२११०-२१२४ "

इति

No. 416(j). Sūrasāgara (Dashama Skandha) by Sūradāsa of Runakutā (Āgrā) Substance—Country-made paper. Leaves—103. Size—15 x 8 inches. Lines per page—32. Extent—5,300 Anuṣṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Padma Bakhsha Simhajī, Lavedapore, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनमः । भजुमन नन्द नन्दन चरन ॥ घमल पंकज घति मनोहर सुकल सुख के करन ॥ सनक संकर ध्यान ध्यावत निगम निवरन वरन । सेस सारद रिपे नारद संत चेतन चरन ॥ पग प्रयाग प्रताप दुर्लभ रमा बाहिन करन । परसि गंगा भई पावनि तिहुँ पुर घर धरन । चित्त चेतन करत कोरति घब टरति नारिन नरन । गये तरि छै जाय केते पतित हरि पुर धरन ॥ जासु पद राज परिस गौतम नारि गति उद्धरन । सोइ कृष्ण पद मकरंद पावन पौर नहि सिर धरन । सूर भजु चरनारविंदहिं मिटै जन्मो मरन ॥ १

चोपाई । श्री कृष्ण चरित्र सदा सुखदाई । जेहि गावत सूर नर मुनिदाई ॥ श्री बसुदेव देवकी बामा । मथुरा पगटे पूरन कामा ॥ २

End—राखे उदगन सुत पति दीन । तेरे भौन गौन हरि कीन्हो राहु गहन कस कीन्ह ॥ नौ अद सात साजि के बैठी सारंग सुत कस दीन ॥ सारंग देवि बिदा भे सारंग चाहि रिपु त्यागन कोन ॥ उदगन सुत धरहु मापनो सैल सुता

सत कोन । कदलो खंभ बने जन दोऊ नागरिषु कटि कोन ॥ सुरदास प्रभु मिलौ
गोपालहि खंभ खंभ परबोन ॥ निसि दिन पंथ जोवत भाई । जल सुधन सुत तासु
बाहन विकल हूँ मकुलाई ॥ गंध बाहन तासु सुत को बंधु घरनो भाई ॥ हगनि
ते कब देखि हो बलि सकल दुष विसराई ॥ गौ सुधन पति पति रिपु न मानत
फानि मोहन राई ॥ करि ततच्छन वेगि आवहु हदै भालत भाई ॥ अजै भष को
हानि हय को दा के को सब काई ॥ सुर के प्रभु कब मिलहिं परमिवे को
पाई । राम

No. 417(a). *Bhukmāngada ki Kathā Ekādasi Mahātmya*
by Suryadāsa Kavi. Substance—Country-made paper.
Leaves—18. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16.
Extent—300 Anuśṭup Ślokas. Appearance—Old. Charac-
ter—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D.
1829. Place of deposit—Pandita Śatrughnaji Miśra, Village
Sikāndarpore, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—आ गुरुनाथनमः ॥ सकमांगद को कथा लिखते ॥ जौपाई ।
प्रनवौ गुन गनपति के चरना । सिद्धि वही दायक के करना । चरन मनावों हो
कर जोरी । गनपति बुद्धि बढ़ावहु मोरी । मातु पिता गुरु बन्दौ पावों । जिन यह
निर्मल ज्ञान लषावा ॥ सदाहि देवै बन्दौ स्वामी । गनपति हो सब खतरजामी ।
सूरदास कवि बिनती करई । मोरे हृदय कपट नहि परई । सबध नगर के
बरनौ पारा । जहं नारायण भये सबतारा । कनक कोटि फिरि चारहु प्रासा ।
उठे कंगुरा जनु कैलासा । पूरव पावरो बिरजे जरिया । दबिन पवरो सान सब
महिमा । पछिम देगे होहु पहि नास । उत्तर दोसै देव को बास । चारिध धरन
वसै सब जाती । परजा छान बसै बहु भांती । सब को सुप सबै सकुमारा । सब
के कंचन पवन पगारा । सब के घरो बाघे हाथी, सब के तुरै रथन सारथी ॥

End—मगुध रूप तब देवन लोन्हा । तबहि मोहनो काहु न चोन्हा ।
संभावति तब दोन्हसि सरापा । डेमिनि हुइ के भुगतहु पापा । पुहप के बस
जियोहु तुम जाई । कूकर के बसि तोरहु पाई । जग्न निरास हो गये परगाई ।
घपने लोक बैठे सो जाई । सिव कैलास बैठे घराघाई । निज निज डगर देवतन पाई ।
मोहनो भई आप को भंडिये । सुमै लागि घाम के छेड़िये । विश्व साथ हरि मंगर
लोन्हा । प्रेत को महिमा कहं लागि कहियो ॥ एकादसो कोन्हे शाप सो कहं
लगा प्रत करौ बधान । तिनहि लौ लागि बड ठाना । सूर्यदास कवि भाषा
सकमांगद कैलास निदब मन केस प्रहु कैला चरन निवास । इति श्री एकादसो
महात्म सूर्यदास विरचिते भाषा सकमांगद वाई बाखे इतिहास संपुरन लिखते

सेवा मित्र सिकंदरपुर के सं० १८८६ साके १७५१ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे त्रिदो
तिरोदस्याम शुक्र वासे जैसा देषा तैसा लिषा समदोष नाहीं । समाप्त ॥

Subject—१—रुकमांगद की कथा इस प्रकार है कि ऋषोष्णापुरी के
राजा अंशुमान में हरिश्चन्द्र हुए उनके पुत्र रोहिताश्व और रोहिताश्व के रुकमां-
गद हुए । रुकमांगद न्यायी धर्मात्मा ईश्वर भक्त था । वह एकादशी का व्रत
विधि पूर्वक करता था । उसके राज्य में कोई भी ऐसा न था जो एकादशी का
व्रत न करता हो वहाँ तक कि हाथी घोड़े चादि की भी एकादशी के दिन
दाना चारा न मिलता था । यमराज यहाँ से बबड़ा के भगे और इन्द्र के निकट
सब समाचार सुनाया इन्द्र विष्णु के पास गए विष्णु प्रय इन्द्र के शंकर के पास
गये वहाँ से मोहनो राजा को खोजने के लिए भेजी गई । वह मोहनो राजा
को वन में शिकार खेलते मिलो राजा देखकर मोहित हो गया मोहनो और
राजा का सर्व चन्द्र को साक्षी में मेल हो गया और उसने एकादशी व्रत से सब
प्राजा को राजाजा से छुटाना चाहा जब राजा की रानी संभावती को यह
वृत्तंत ज्ञात हुआ तो उसने मोहनो को आप दिया क्योंकि एकादशी व्रत वहाँ
कोई भी न करने लगा । और मोहनो का रथ रुक गया कि एकादशी व्रत वाला
अगर रथ छू देवे तो रथ चले राजा रुकमांगद के राज्य में कोई भी न निकला
केवल एक बुढ़िया ओ अपने पतोह से लड़ कर पुत्र से एकादशी के दिन भोजन
नहीं किया या निकली । उसने रथ छुड़ा और रथ चला तब राजा को अपने राज्य
की दशा ज्ञात हुई कि मोहनो ने हमको खून कर एकादशी का व्रत राज्य भर
में छुड़वाया । रानी के आप से मोहनो डोमनो हुई और प्रायश्चित्त रानी ने यह
बताया कि जब तु एकादशी व्रत करैगी तब फिर संप्रसा होगा । इस प्रकार
राजा रुकमांगद की कथा एकादशी माहात्म्य के सहित बर्णन की गई है ।

No. 417(b). *Ekādāśī Māhātmya* by Suryadāsa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—24. Size—7½ × 4½
inches. Lines per page—35. Extent—475 Anuṣṭup Ślokas.
Appearance—New. Date of manuscript—Samvat 1901 or A.D.
1844. Place of deposit—Paṇḍita Ayōdhyā Prasāda Mīśra,
Village Kataliv, Post Office Chilawaliyara (Baharāich).

Beginning—ओ गणेशाय नमः

अथ एकादशी व्रत नारायण प्रारंभ्यते ॥

देहा ॥ शंकर शरण प्रथमही पंकज सोल नवाह । चरण कमल में मानऊँ
ओ गुहदेव लखाय ॥ १ चौ० राम लपन सुमिरौं दोउ भाई । नाम लेत पातक

बसि जाई । सुमिरौ पवन पूत दनुमंता । येहि सुमिरौ बल होर बहूता ॥ सुमिरौ चांद सूर्य दोऊ भारी । जितकै ज्योति रही जग काई ॥

End—सूर्यदास चिनतो करै सुनहु हो संत सुजान । करहु ध्यान श्री कृष्ण कर होइ इन्द्र खान ॥ ८० चौ० एकादशी जो सुनिहि संपूरण । ते जानहु मंगा खान तण । सुनिकै कथा जो देहि दाना । तेहि कहं होइ इन्द्र पणाना । एकादशी प्रसूत कै खानो । संत सुजान पियहि मन जानो । जमकै निशानो संतमन जाति कै धौरो । रसना बक्षर बक्षर कै जौरो । दोहा—कहौ सुनै जो प्राणो प्रभवमेध जब होइ । सूर्यदास कवि भाषै हरि सम प्रवर न कोइ ॥ ८१ इति श्री एकादशी कथा संपूर्ण समाप्त सुममस्तु । मि० भादौ मास कृष्णपक्ष १२ संवत् १९०१ लिखा देखो शिवदाश सागर मध्य रविचार ।

Subject—स्तुति; नारद का पुत्र के लिये इन्द्र से कहना और इन्द्र का रंभा को पुष्प लेने रुक्मांगद के यहां प्रवेश्य भोजना पृ० १—२ रंभा का लिखा जाना, रानी का आश्चर्य करना, रंभा का राजा को एकादशीव्रत का फल कहना, नगर में एकादशी रहनेवाले को डूढ़ना और एक स्त्री मिलने पर उसके छूने से रथ इन्द्रलोक को जाना । पृ० ३ से ६ तक ।

राजा का व्रत के लिये नियम करना और सब का स्वर्ग जाना । देवताओं का व्रत भंग करने का विचार करना और मोहनो को बनाना और रुक्मांगद के पास भोजना राजा का मोहित होना रानी का राजा को समझाना पृ० ७—१२ तक ।

मोहनो का राजा के साथ प्रवेश्य खाना वड़ी रानी का विप्र भेज व्रत को वाद कराना मोहनो का निषेध करना राजा रानी संवाद पृ० १३—१७ तक ।

पुत्र को बुला कर उसका सोम देने को तय्यार होना पुत्र के आने पर राजा का दुःखित होना कुंवर का समझाना और दात देकर सिर काटने को तय्यार होना विष्णु का खाना और रक्षा करना मोहनो का नरक में जाना पृ० १८—२४ तक ।

इति

No. 417(o). Rāmajaṇma by Sūraja Dāsa Kavi. Substance—Foolscap paper. Leaves—78. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—468 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Kaithi Mudīā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 1896. Place of deposit—Pandita Yaśyodā Nanda Tiwārī of Village Kānth, District Unāo.

Beginning—श्री गणेश जी सहाय नमो । श्री सुरसुता जी सहाय नमो । श्री गंगा जी सहाय नमो । श्री महादेव जी सहाय नमो । श्री पापी राम जनम निषते श्री गुरु चरम सरोजर रज नोज मन मुकुर सुवार । बरनौ रघुपति बोलत ज । जो चापक फल चार । बरनौ रघुपती बांधोना बतिस । रामरूप तुम पुरखहु पास । बरनौ सुरसुता अमोरीत धानी । रामरूप तुम भली गति जानो । बरनौ चंद सुरज को जोती । रामरूप जस निरमल मोती । बरनौ बलुच घरी जौनर । राम रूप भये जगत पिघार । बरनौ मात पिता गुर पऊ । जीन मौही नोरमल गोषान सोबाऊ ॥ सुकनदास कवी बरनौ परम नाथ जाव मौर । राम कथा कोछु भवहु कहत न लगी और ॥ बालमोक रामायन मोखा । तीनों भुवन जी मरो पुर गाथा । राम के जनम सुनौ मन लाइ । बड़े धरम पाप छे जाइ । सानंद मंगल सब कैर करइ । सद्वर होम सौदोन दोन करइ । होखे मह जीवनी कोन । कौटीन गये बापर कहि दोन ।

End—राम जनम सुनै मन लाइ । बुच दलिदर सम जाइ पराइ । राम के जनम सुनै जो कान । तेही कर पुत्र होत कलौषान । राम के जनम मनोती जो गाये । सौ नर भव सागर तरी जाये । दोहा—राम जनम कथा जनम कथा बिमल पढ़े सौ नर मन लाय । सौ नर राम परसाव से भी सागर तरी जाय । इतो सोतो राम जनम पून जी पत्र देवा सौ लोबा भम दौस न दाजिए पंडित जन सौ बान्नी मौर टुटल बसर लेव सजौरो महोना फागुन दोन बुध सन १८१६ दस्तबत देवीराम के ।

Subject—राम जनम की कथा पढ़ने की महिमा बर्नन पृ० १—४

राजा दशरथ का ३०० रानियों से विवाह करना तीन पट रानियाँ । राजा का शिकार खेजने जाना बत में भूल जाना संघ्या समय सरोवर पर घाना, धनुष बाण लेकर बैठे विचार करना—पृ० ४—५

श्रवण का जन्म होना, उसका विद्या पढ़ना, लो का घाना, वादाविवाद होना, लो का निकाला जाना पुनः घाना लट्टा मोठा भोजन बनाना, भेंवो, भेंवो को दुबेल देख श्रवण का पूछना, समाचार जानकर कुलमती को उसके भायके भेजना । काँचरी बना कर माता पिता को लेकर घूमना, माता पिता को पिपासाकुल हो पानी माँगना, श्रवण का पानी के लिये जाना । पृ० ५—१४

सरोवर में कमंडलु का दुबोते समय शब्द होना, दशरथ का शब्द सुनकर शिकार का अनुमान कर बाण मारना, श्रवण को लगना राम राम शब्द सुन कर दशरथ का वही घाना, श्रवण का राजा से पूछना और राजा का शयना परिचय देना, श्रवण का राजा से माता पिता को पानी पिलाने के लिये कहना, राजा को उनके पास जाना, पानी देना, सब समाचार कहना, भेंवो भेंवो का

राजा को शाय देना और देह त्याग करना, राजा का अयोध्या आना, वीरशठ से पुत्र हेतु उपाय पूरना, यज्ञ करना और पुत्रों का होना । पृ० १४—२८

पुत्री का यज्ञोपवीत होना, विश्वामित्र का अयोध्या आना, यज्ञ रक्षा के हेतु पुत्रों का मांगना, राजा का दुःखित होना, विश्वामित्र का क्रोधित होना, देवताओं का दशरथ को सम्मानना, राजा का राम और लक्ष्मण की मूर्ति के साथ भजना, दोनों भाइयों का विश्वामित्र के पादपत्र में आना, राम की मूर्ति से गंगा का उत्पत्ति पूरना, मूर्ति का वीर्य करना पृ० २८—४७

मूर्ति से वार्तालाप कर के शयन करना, आधोरात को लुप्त कर आना, सनेकी प्रकार के उवात होना, राम का उसे माँगा, बाह्यलों का सुखी होना, यज्ञ के लिये भगवान का मूर्तियों का आज्ञा देना, मूर्ति का राम को लेकर तिरहुत जाना विश्वामित्र की आज्ञा हुआ जानकर जनक राजा का आना, देह प्रणाम करना, राजकुमारों को पूरना, पश्चिम पाकर प्रसन्न होना, पुरुषासियों का राम लक्ष्मण को देख कर प्रसन्न होना, राम का धनुष यज्ञ देखना और धनुष का तोड़ना, जनक का अयोध्या के दूत भेजना, दशरथ का जनकपुर आना, जनक राजा का दशरथ को जनवास देना, चारों भाइयों को शादी पृ० ४७—६०

दशरथ का विदा होकर अयोध्या के लिये चलना, रास्ते में परशुराम से भेंट, नारायण धनुष राम को देना, राम का उसे चढ़ाना, परशुराम का वन नग्न, राजा का पुर प्रवेश, परिक्रम होना, सासुओं का वधुओं का मुख देखना, गृह प्रवेश आदि वीर्य, राम जन्म पढ़ने का फल वीर्य—६०—७८

No. 418. Suratarāmaki Bāṇi by Saddō. Substance—Country-made paper. Leaves—108. Size— $4\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—18. Extent—1,215 Anushtup Slokas. Appearance Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Haravamsā Rai Tikari, Rao Bareilly.

Beginning—अथ सर्वां सूरत राम जी को बानी प्रथम लिख्यते ॥

प्रथम मूर्ति का किवत लिख्यते ॥

नमो रमैया राम बिसरि तेरै पाधारा । जो नमो गुर सेत सदा मोहि नमो प्रियारा ॥
तुमरे पदकी सरनि रहे नितही मम सोसा । मैं हूँ पाँवर नाव जप स्वामी जगदीसा ॥
सूरत राम सरणी सदा कर प्रणाम अनंत । तुम परमपार अपार हो मैं हूँ तुमरो जंत ॥

अथ साधो गुरुदेव को ध्येय लिख्यते ॥

प्रथम राम रामतोत जू सत गुरु सब हो संत । जन सूरत राम बंदन करै बाहु-
तार धनंत । ध्येय ॥ राम चरण गुरु तपत है । सूरत राम के सोस । म्यान भगति
वैराग दे नांवकस्यो बकसांश । राम चरण हरि रूप है अमति भूष है सोस । सूरत
जाय उनसु, भित्ति सव मिल नामै घोष । सत गुरु सब गुण भेट दे निरगुण करै
निराट । जन सूरतगाम सांची कदै देह मुक्ति तर्णी है वाट । ४ सत गुरु का प्रताप
सुं तोष प्रगट घाई । सूरत रात्रि ऐ लोक धन मेरे मन नहि जाई ॥ ५ मेरे मन
भावे नहीं तीन लोक को धन । सूरत राम गुरुदेव का चरणों लागे मन ॥ ६

End—पदराग धारतो ॥ धारति तेरो राम धर्मगो । घटि घटि चेतन साध
बासंगो ॥ टंक नहीं निराकार नहीं धाकारा । राम जपे जपि राम संचारा ॥ १ सेस
महेशुर पार न पावे । निति अनिति हो निगम बतावे ॥ २ आदि ध्येय मधि है एक
सारा । सूरत राम सो राम पिबारा ॥ ३ इतो सावां सूरत राम जो को बांनों
बनभै संपूरण ॥ गोठ को संख्या को व्योरा साधो ॥ ८०९ धरवंदार्ष ॥ १-२ ॥
सर्वईया ॥ ३ किवतन सार ॥ १२ ॥ कूंडख्या १८ धररेखता १२ ॥ ग्रंथ ६ ॥ पद
वेताल ८७ ॥ ग्रंथ पद वेताल । सबद संता का मानूं सरप सबद को जोक ११३२
हो जानूं ॥ अनत म्यान भरपूर है ताको नाहीं पार । साधो सर बंदाइसां सबैया
किवतन सारबुल ॥ सरप संता को महरि सुं सबद लिख्या है सार ॥ जो कोई
वांचिति धारसो सो नर उतर पार तर ॥ जन सूरत राम परताप सुं लिख्यो जेतहो
राम ॥ रोड़पूरे । निज नांव है राम दुवारो धाम ॥ २ ॥ संवत अठारा से सहो
वष वाचने ठाम ॥ मांदवां बुधि है । सप्तमी संत विराजत पाठ ॥ ३ ॥ सोरठा ॥
संत विराजत पाठ, भगति मुक्ति दाता रहै । तब मन प्रायो रागि, माहो
जग के पार है ॥ इतो गोखो संपूरण ॥

		पृष्ठ
Subject—राम और गुरु बंदना	१
गुरु महिमा (सूरतगाम रामचरण के शिष्य के)	२
राम सुमिरन से लाभ सब पदार्थों की प्राप्ति	३—७
राम के प्रति चिंतो	७—८
राम के विरह में दुख वर्णन	९
प्रेम से राम मिलन	१०
राम को सर्व व्यापकता	११—१३
साधो भावना से पतिव्रता की महिमा वर्णन	१४
“ ” ध्येयचरित्रों की निंदा	१५
साधु महिमा और लक्षण	१६

	पृष्ठ
संसाधु की निंदा लक्षण	१७
साधु संग से ज्ञान-लाम	१८
मन को चंचलता वर्णन	१९
ज्ञानी के लक्षण और बाद विवाद की निंदा	२०
राम विमुख से संकट को प्राप्त होना	२१
गुणज्ञानी के लक्षण और कर्म वर्णन	२२
काल (मृत्यु) सदा उपस्थित ज्ञान राम भजन के लिये उपदेश	२३
चेतावनी राम भजन के लिए	२४—२५
जिज्ञासु की महिमा	२८
रामभक्ति में दृढ़ता का उपदेश	२९
दया धर्म की महिमा	३०
सार असार वस्तु वर्णन	३१
विषय विकार से दूर रहने और काम, क्रोध, लोभ, मोह का तिरस्कार करने का उपदेश	३२
कामी पुरुष की दशा का वर्णन	३३—३४
सत्य की महिमा	३५
राम को छोड़ कर भ्रम में पड़ने वालों की निंदा	३६
बनावटी वेश की निंदा	३७
गुरु करने लाम उससे ईश्वर की प्राप्ति	३८—४०
राम स्मरण का उपदेश और विमुख रहने में हानि	४१—४४
इंद्रियों का निग्रह और भक्ति और प्रवर्त्य करने का उपदेश	४५—५०
तिलक सुमिरनों आदि का विधान	५६
भक्ति महिमा	
अवधूत के कर्तव्य की महिमा	५७—७०
ज्ञान के पद	१०७
सुंद संख्या	१०८

समाप्ति

No. 419(a). Kavi Priyā 'Tikā by Śūrata Mīśra. Substances—Country-made paper. Leaves—57. Size—10 × 4 inches. Lines per page—42. Extent—1197 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—

Nāgarī. Place of deposit—Thākura Gyaṇa Simha, Village Mādhōpore, Post Office Bisawan, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ सारठा ॥ गढ़ पाय गिरिपाल गोरि गिरा गल प्रहृष युक्त । ये जेहि रूप रसाल बंदो पद जेहि जुगुल के ॥ गज मुख भ्रम मुख होत हो या दोहा को तिलक सुरत मिश्र करत हैं तहो प्रभ कोई बादी कात भयो । गनेश जुके बरनन में विघ्न को विमुख हूँ वो कछो और प्रयाग के बरनन में पापन को विलादो कहाँ । विमुख भविष्य को विलात नासबो यह समता नाहीं और प्रभ जिन गनेश को दानत तिन गनेश को प्रस्तुति में न्यूनता है विघ्न भाजि जात है धामें प्रयाग को अधिकारी है और पाप विलात हैं यानी नास जात हैं ये दोऊ प्रभ ॥ तहां उत्तर विमुख को सर्थ विगत है मुख जिनको सोस कटि जात है यह प्रयाजन जब बिन सोस भयो तब विलादो दोऊ ठौर सिद्ध भयो ॥

End—को कामो सदा है । ये कहिये हे सपी तब उन उत्तर दीन्हो । को कहै हिय विषे कामो सदा सर्प भयो है । जेहि राह ताकी लोक बनो है ताको देखि करिकै सपी पूज्य है यह लोक तुम हम पर कहउ ॥ कालो को है अर्थात् केहि पंचाई है तब वह उत्तर देत है कालो है कोयो, सर्प भयो है ताको लोक बनि रहो है । वह जानिय पुनः कंड बसत को सात कोक कहावहु विधि कहै का कहिय सुलात को कामो दित सुरत रस अथ गनागन चित्र प्रलेकार को लखन । सुषो उलटो बांचिय कहिय अर्थ प्रमान । कहत गनागन ताहि कवि केशव दास सुजात ॥ गनागन को उदाहरन मासम से हंस जे बनवीनन बोन बजे सह सोम समा मारल ताहि बनावति सारो रिसाति बनावति ताल रमा । माल बनो बलि केशव दास सदा बलु कलि बनी बलमा । सुषो उलटो बांचिय और पद अर्थ एक सर्वेषा में सुकवि प्रगटे दोउ समर्थ ताको उदाहरन सैनन माचव अंग सर केशव रेप सुवेप सुदेस लसै मैतव को तम जो तकनो रुचि चोर सबै बिन काल फंसै । तैन सुनो जस भीर भरो धर चोर बरोति सु कौन बसे । मैत मनो गुन बाहु चहै सुम सामन में सासो बिलसै ॥

Subject—केवल कवि प्रिया को टोका प्रभ उत्तर सद्धि है ।

No. 418(b). Nakha Śikha Radhājako by Surata Mīra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—9×5 inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of

deposit—Thakura Nannihāla Simha, Village Kānthā, Parganā Kānthā, District Unāo.

Beginning—सूरति मिथ कृत नख शिप वखेन ॥ ओ गणेशायनमः ॥

कवित्त—चरन चतुर्भुज के चिह्न हूँ करत सेवा रमा के मुदस ग्रहण सर-सात है । आसन हूँ बिबिहि रिक्कायो पै न बनो विधि सूरति सुकवि बातें जग के चिख्यात है ॥ सुनिये हो लाल उहि बाल पग समता को कोनो बहुतेरो पै न भाव बार जात है । ऐसो कौन जाके हिय धोरज धराइ बाके पाइ देखे काह के न पाइ छरात है । २

जावक वखेन—किधौ सब जगत को भगनाई हारो ताकी आइ के रजोगुन चरन अनुराम्यो है ॥ किधौ पद कंजन की सेवत हैं गिरा बड़े पूर हित जाके देखे चतुर्भुज भाख्यो है । सूरति सुकवि जानि परो यह बात सब तोहि बुझिये न क्यों हूँ मान गिस पाख्यो है । जावक न होइ सुनि प्रानप्यायो तेरे यह प्रोतम को अनुराम पाइ पाइ लाख्यो है । २

पद नख वखेन—बदन अनुहारो स्त्रीनो रवि को भगननाई जोते जेतिवंत स्वच्छ रूप बिलसत है । जेती जग नारि ते निहारि नारि नौची करै सखहो के प्रतिविम तिन में लसत हैं ॥ सूरत ओ वृन्दावन रानी को चरन संग पाइवे को बिष पाभावत दूरसत हैं । साँची कहनावत इहाँ हो देखो लान सब जगत के रूप जाके नख में बसत हैं ॥

End—कैस वखेन—किधौ तन पानिप की साइत सिवार पुंज किधौ चंद पाछो आइ खेरा तमघरि है । किधौ मन पक्षो यहिबे को मबतल जाल मदन बतायो फांसि जाते को निकरि है ॥ सूरति ए ऐसे बह साँवरो रसिक बड़ी देखिबे को जक लागे धोरजु न धरि है ॥ कारे सटकारे ए तू बार बार छोरति है तेरे बार देखे काह मेरे बार परि है ॥ ३१

मांग वखेन—किधौ जमुना के पूर बीच गंग चार बड़ी किधौ तम घोरयो रवि करि आइ हारे तें । किधौ रसराम के सरोवर में चलो बग छोननि को पांति उत इत के किनारे तें ॥ सूरत कुरांले छैन कके हैं कुरांलो देख और बसोकर कहा करिदौ बिचारे तें । व्यापि जाय बिन संग वारो संग घागमन राग से हरत तेरो मांग के निहारे तें ॥ ४० बेनी वखेन—त्रिभुवन पति के हरति पुख देखत हो सहज सुवास ऊँचा बास सोम रस है । नेह लुन सरसै पहाई सुख सरसै बे तीनहुँ चरन को प्रगट मुदरस है । सब दिन एक तो महातम है सूरत यों नागर सकन सुख सागर परस है । परो सुगमनो पिकवैनी सुख दैनी पति तेरो यह बेनी तिरवैनी ते सरस है ॥ ४१

उति श्री सुरति कवि विरचितं नय सख वरने समाप्तम् ॥ संवत् १८५३
माघ वदो ९ नवमी मंद वासरे ॥ लिखित मिर्द ।

Subject—राधा के चरण, जाबक, पदनय पड़ी चरनागुली, भूषन
चमकट, नूपुर, पाइजेव वरने छंद १ से ८ तक ।

गति, कटि, त्रिवली, रोमराजी, उरोज, हाथ, कर भूषन, चूरी, मुतमूल,
पीठि वरने । छंद ९ से १९ तक ।

घोषा, तिल, मुख, अघर, दशन, रसना हँसो, बाखी घोर कपोल वरने
छंद २० से २८ तक । नासिका, नय, नेत्र, अंजन, नेत्रभाष, वरनी, मुकुटा, अवन,
माल वरने छंद २९ से ३७ तक ।

पनक, कंस, मांग बाग धेनी वरने तथा लिखने के संवत् का उल्लेख छंद
३८ से ४१ तक । चाँदनी वरने, संयकार व शीत वरने के ३ छंद इसमें सार
रुत और भी दिये हैं । इति ।

No. 419, c). Bihāri Satasaf ki Tīkā by Surata Mīśra and
Isavi Khān of Āgrā. Substance—Country-made paper.
Leaves—625. Size— $8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20.
Extent—7,812 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Date
of manuscript—Samvat 1973 or A. D. 1916. Place of deposit
—Pandita Śyama Bihari Mīśra, Gōlāganja, Lucknow.

Beginning—विदामो सतसयो टोका ॥

सतसैया की टोका श्री मिश्र कवि सुरति कृत समर चन्द्रिका व ईस्वी
कृत टोका लिख्यते ॥ देहा—मेरी मव बाधा हरी राधा नागर सोइ । जातन
को भाई परै श्याम हरित बुति होई ॥ १ सुरति कृत टोका—प्रथम मंगलाचरण
यह कवि की विलोकी जानि ॥ प्रगटते अपनी अयमता अधिकारी सुनि जानि ॥
जितो अयम तितनो वड़ी मव बाधा यह अर्थ । उहि हरि के चाहिबे कोऊ
बड़ो समर्थ । नर बाधा को सुर हरत सुर बाधा ब्रह्मादि । ब्रह्मादिक को व्याधि
को हरत जू श्याम अनादि । लखि राधा तिन श्याम को, बाधा हरत न कोइ ।
यते मे बाधा हरी राधा नागर सोइ ॥

End—समर चन्द्रिका ग्रंथ की पड़ै गुनै चितलाय । बुद्धि सभा परबोन्ता
ताहि देखै हरिराज ॥ ई० टो० इस अग्रह वाद के अर्थ ब्रथा के हैं । हेतार्थ देहा को
यह है कि अपने मत का अमरा ब्रथा है, क्योंकि जिनने सेवा है तिनने जानी नंद
किसोर ही को सेवा है क्योंकि ब्रह्मा, सिव, सनकादिक, सब विष्णु हो हैं तो

जिनने जिसको पूजा मानो विष्णु को हो पूजा । चलंकार उपाया तिसका लक्षण ।
जहां वेद स्मृति पुराणादिक करि अर्थ पाइये सब ही को एक नंद नंदन सहैवे
पुराणेति है । जो परिसंख्या चलंकार है तो ताकी लक्षण यह है कि एक थल
को चरोज एक थल नंद नंदन को स्वन ठहराये । यामे चार देवन को चवजा
होइ । ताते परिसंख्यालंकार नहीं राख्यो ॥ यद्यपि है शोभा धनो मुक्त मे देव । मुह
टार को टार मे तार मे हात विशेष ॥ ७१७ निषेयालंकार ॥ जो संपत्ति बहुतै बढ़
घानेद उपजे चित्त । यो तीनों न विसरिये हरि अंग अपने मित ॥ संग्रहालंकार ॥
इति श्री अमर चंद्रिकायां अमर सृति पद्मोत्तरे सैवो हत विहागे सतसैया
व्याख्याना शत रस वर्णना नाम पंचम विलासः ॥ मिर्ठी वैद्य मुद्रा १ संवत्, १९७३
विक्रमो ॥

Subject—विहारो के ७१७ जागो को टीका है । सृति मिथ ने प्रथम पद्य
में चार कहाँ कहाँ अर्थ स्पष्ट करने को गद्य में टीका की है । उस पर इसको
खा ने गद्य में टीका की है ।

No. 420. Ravi Vratā Kathā by Surendra Kirtī of Gōpā-
chala (Gwalior). Substance—Country-made paper. Leaves
—12. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—22. Extent—
662 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—
Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1740 or A. D. 1683.
Date of manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1898. Place of
deposit—Sri Jaina Mandira (Barā), Barā Banki (Ondh).

Beginning—अथ रविव्रत कथा लिख्यते ॥ चौपाई

प्रथमहि सुमिर जिनवर चौवास । चौदह सै जेयत जू मुनीस । सुमिरौं सारथ
भक्ति अनंत । गुरु देवदे जू कौंसी महंत ॥ १ ॥ मेरे मन उपज्यो एक भाव । रवि
व्रत कथा कहन को चाव । मैं तुक दीन जू अक्षर करौं । तुम गुण उर कवि
नौके धरौं ॥ २ ॥ नगर बनारस उत्तिम धान । पारसनाथ जन्म कल्याण । सहस्र
कोटि चैत्यालय बने । कंचन कलस जड़ित सोर बने ॥ ३ ॥ वहाँ जू नंगा गहिर
मैंगोर । जिन कर गुन सम उज्जल नीर ॥ राजा के जो महल सोमंत । कंचन
कलस दीपतज्जु महंत ॥ ४ ॥ हाट बजार भरे दीनार । देस देस के कोठो बार । पड़
सु पंडित वेद सुजान । बड़े ग्रंथ जमु खवल पुरान ॥ ५ ॥ बने बगोवा कूपि विशाल ।
उपजे सेवा बहुत रसाल । चंपा पाडर करना जुही । पर फुल्लति बहु वागन
बनो ॥ ६ ॥ निकल वेसि अरु मध्या जाइ । लता लवंग रही बहु छाव । नगर
बनारस महिमा बनो । अमरापुर ते अतिहो बनो ॥ ७ ॥ राज राज करै महिपाल ।

बड़ी मोति सब के रखपाल । मति सागर तहँ सेठ जीहरी । जैन धर्म की टेक लु धरी ॥ ८ ॥

End—रवि-व्रत तेज प्रताप गई लक्ष्मी फिर पारै । कथा करो धरनिन्द पौर पद्यावति माई । जहाँ गये तहँ सिद्धि सिद्धि सब टाँग पाई । मिसे कुटुम्ब परिवार भले सज्जन मन माई । पढ़े सुनै जो पात उठि, नर नारो अमु बुद्धि । धर-निन्द यह पद्यावतो होइ सर्वदा सिद्धि ॥ बार बार प्रथ कह कहौ, रवि व्रत फल लु पनंत । प्रभु धनेन्द्र किरपा करो । दोनो लक्ष पनंत ॥ दान मान लु करै धरै रवि व्रत लु ध्यान उर । जोग योग भोग रस हित अपत उर प्राहि परम गुरु । सत सौच व्रत नेम जोग तीर्थ फल पावै । रवि व्रत कथा कहंत सुनंत जो चित लगवै ॥ सुरेन्द्र कीर्ति भव यौ कहे रवि व्रत गुन ह्य मनूप सर । पंडित सुत केशवदास कहि लोचो चुक सुधारि प्रथ । १३५५ इति श्री रवि-व्रत-कथा सम्पूर्ण ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—मंगलाचरण । जिनादि बन्धना, काशी के राज्यान्तर्गत एक सैठ मत्तिसागर तथा उसकी सेठानी गुन सुंदरी के साथ पुत्रों का होना और उनके वैभव का वर्णन । गुन सुंदरी का चैत्यालय जाकर मुनि से रवि व्रत लेना और घर आकर कहना । सैठ का व्रत की निन्दा करना सब द्रव्यों का नष्ट हो जाना, लड़कों का प्रयोष्या जाना सैठ जिनदत्त से पाश्च पाता, बालकों का भी व्यापारादि में कमशः हानि का ही होना । अंत में एक मुनि के आदेश से गुण सुंदरी सहित सैठ का पुनः व्रत साधन करना ।

(२) पृ० ७ से पृ० १० तक—गुनधर (सैठ मत्तिसागर के पुत्र) को नागेन्द्र नेवा में घन धान्य की प्राप्ति और जिन मंदिर का निर्माण कराया जाना । उनके ऐश्वर्य से द्वेय करके उन्हें खार बता कर प्रयोष्या नरेश से उनकी शिकायत होना । राजा का भ्रम निवारण, राजा का अपनी प्यारी पुत्री पोतिमती का विवाह होना, अंत में राजा से साठर विदा लेकर काशी को छैटना और माता पिता से मिलना । व्रत के प्रताप से पुनः वैसे का वैसाही हो जाना बल्कि और भी अधिक धन तथा मान का होना, इस कथा के पढ़ने तथा सुननेवालों के फल का वर्णन;

कवि परिचय :—

म—निवास स्थान, गङ्गोपाचल नगर भले शुभ धान बसाने ॥

ध—वंश परिचय, देवेन्द्र कीर्तिमुनि राज भले तप तेज प्रमाने । तिनके यह सुरेन्द्र कीर्ति मष्टारक जाने ।

स—प्रथ निर्माणकाल :—

संवत् विक्रम जीत भले सत्रह सै माने । ता ऊपर चालीस जेठ सुदि द्वादश काने । बार लु मंगल बार हस्त नक्षत्र लु पारियो । तम हर रवि व्रत कथा मुनेन्द्र कीरति शुभकरियो ॥

द—महंत होने का वचन—

मर्ग मोक्ष प्रपदान ते हू नगर के जे हैं वासी । साह मह के पुत साह भाऊ
बुध रासी ॥ उनको बुद्धि में कौनिये वे पूरे गुनवंत । पंचम मिलि जो दया करो
पाये पदजु महंत ॥

No. 142(a). Jānaki Vijaiya by Sūrya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—8×6 inches. Lines per page—8. Extent—130 Anuashṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Rājā Bhagawāna Baksha Simhājī, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Ondh).

Beginning—श्री गणेशायनः अथ जानुकी विजय कथा ॥ छन्द ॥ जय
जयति जय जगदम्बिका जननी पखिल जन जानकी ॥ अति अतुल जासु प्रभाव
गम्य नहि गति जानुकी । गुन तोनि पावरै तरब माया विगुन सगुन सख्य जो ।
प्रसिद्ध त्रिभुवन विभव भूषित अमित शक्ति सख्य जो । तैरठ ॥ परत विषम भय-
कूप, सुर मुनि षड्मित जोग में । चिदानंद भय रूप, जब लग जानि न जानकी ॥
देहा ॥ जइ पवि नासन जानकी राम वाम दिसि सोह । सुर नर मुनि सुमित
सदा, होत विगत भद मोह ॥ अरित नराकृत कौन् बहू सौम्य सुभग तनु धारि ।
जानकी निव मन मोह कहु जानि सु राजकुमारि । सत रिसिनि अस मत भयऊ
सिख महिमा नहि जानि ॥ विजय जानकी कथ करि कह्यो प्रसेग बखानि ॥

End—छन्द ॥ लोला अमित सिय राम यह अति गुन ग्रंथनि जो रही ।
पावन करन हित (निज) गिरा परसिद्ध तुलसी कर कही ॥ पदकंज जानुकि
धौति युत जे सुनहि सादर गावहों । सौभाग्य श्री संपति सदा कल्याण कोरति
पावहो ॥ तैरठ ॥ श्री कर्माति सुख घाम, तासु सदा मंगल भवन । छवि सुधास
श्रीराम तुलसी के प्रभु पल दवन ॥ ० ॥ इति श्री जानुकी विजय रामायण सहस्र
सौ दिव्य रावन वध समाप्तम् सम्वत् १९०० शके १७६५ ॥

Subject—इस में कवि ने रौद्र, नीर, भयानक तथा यद्भूत रस का उत्तम
वर्णन किया है । रामचंद्र जी लंका को विजय करके सोता लक्ष्मण सहित
अयोध्या के गमन करने को हैं; देवता तथा मुनीश्वर उनको प्रार्थना कर कृतज्ञता
प्रकाश करके खड़े मये हैं । इतने ही में सत ऋषियों ने आकर रामचंद्र से उनके
लंका विजयोपलक्ष में प्रशंसात्मक वाक्य कहे और जानकी जी को राजकुमारी
बतलाया, सोता जो सुसकराई राम ने कारण पूछा, इस पर सोता ने बतलाया

कि भयो एक रावण सहस्र मुख का सात समुद्र पार बंध करने का बाको है, फिर क्या था राम सैन्य उसके बंध को चले। समुद्र स्वयं शुष्क हो गया। राम वहां पहुंच नर। राम की संपूर्ण सेना उस राक्षस ने उड़ा दी। केवल जानकी (सीता) तथा राम रह गये, राम ने भी कुछ न हो सका अंत में सीता ने प्रार्थना की उन्होंने उग्र रूप धारण कर राक्षस को नष्ट कर दिया। वह रावण मरते समय सीता जो मैं ही प्रवेश कर गया। अनेक शक्तियां जो उनके शरीर से ही उत्पन्न हुई थीं उन्हीं में प्रवेश कर गई। इसपर सम्पूर्ण ऋषि मुनियों की सीता जो का प्रभाव जात हो गया। राम ने ही एक सागर को पार कर दस मुखवाले रावण को ही विजय किया था और यह उन्होंने सात समुद्र पार कर सहस्र मुख वाले रावण को नष्ट किया। इस प्रकार बड़े अच्छे ढंग से जानकी जो की विजय दिखलाई है। सब ऋषियों ने उनकी वन्दना की तब कहीं उनका उग्र रूप दिखा। पुस्तक संवत् १९०० वि० शाके १७६५ सन् १२५१ की लिखी हुई है।

No. 421(b). Janaki Vijaiya by Surya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—8×6 inches. Lines per page 24. Extant—200 Anushtup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1896. Place of deposit—Paṇḍita Mahādeoī, Village Aurāhi, Post Office Sisaiya, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ जानकी विजय लिख्यते । दोहा ।
चरित राम सत कोटि किय विविधि मुनिह विस्तार । अद्भुत चरित विचित्र
अति गुप्त प्रगट संसार ॥ मर्याद मुनि सन कइत बालमोक इतिहास । नाम
विचित्र रामायन विजय जानकी ज्ञास । छंद ॥ जय जयति जय जगदंबिका जननी
अपिल जय जानकी । अति अमित ज्ञातु प्रभाव पावन गय नहि गति जान की ॥
गुन तीन पाँचौ तत्व में सब सगुन निरगुन ह्य जो । परसित विभुवन विजय
पुष्टि अति सकि सङ्ग जो । सारठ ॥ परतपरम भव कू । सुगुनि अहिमित
ज्ञान जे ॥ चिदानंद में ह्य जब जनि जान न जानकी ॥ दोहा ॥ जहै बिनासन
जानकी राम वाम दिशि सोह । सुर मुनि सो सुमिरत सदा होत विगत भट
मोह । चरित राम कृत कोन्ह बहु सौम्य सुभग तन धारि । जानकी जै मन सोह
कहु जान सो राजकुमारी । सत रिपिन भ्रम भयो अति सिव महिमा नहि जानि ।
विजय जानकी ग्रंथ यह कहीं प्रसंग बषानि ॥

End—दोहा—अहि विवि अस्तुति प्रेम गुत बुध जन जयहि बषान । अमे
दान दै देवि तब परम भवाकुल जानि ॥ उग्र रूप जो त्यागि तौ सौम्य सुभग तन

घारि । राम बाम दिसि बास दिय बहु विदेह कुमारि ॥ सुगमन बरिहि सुमन मन
बाजहि व्योम निसान । चले अवध प्रभु गान चहि जय जय होति बषानि ॥
सिया राम राजत अवध जग जामिनाम अपार । चरित चारु लखि लखि ललित
करत अनेक प्रकार ॥ छंद ॥ लोला ललित सिय राम को वह गुन ग्रंथन जो रह्यो ।
पावन कटक हित निज मित परसिद्धि भाषा कवि कह्यो । पद कंज जानु विशेषि
जुत सो जे सुनहि सादर गावह्यो । यह लोक तति बैकुंठ पठे परम पद्यों पावह्यो ।
इति श्री हरि चरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसनेनाम विमल वैराग्य
पावनोनाम जानकी विजय कथा समाप्त धूम मस्तु मादमाने कृष्ण पक्षे तिथौ
चतुर्थ्याम चन्द्रवासरे संवत् १९०३ शके १७६८ सन् १२७४ लिख्यते ईश्वर सहाय
चक्रकहा के ॥ श्रीराम ॥

Subject—जानकी विजय में श्रीराम जो जब अयोध्यापुरी में रावण को
मार कर आये और सिंहासन पर बैठे उस समय सब देवता और ऋषियों
मुनियों ने पृथ्वी के मार उतारने की प्रशंसा की उस समय जानकी जो मुसकरायीं
श्रीराम जो ने मुसकराने का कारण पूछा तो कहा कि हजार सिर वाला रावण
जब तक आपने नहीं मारा तो किस प्रकार पृथ्वी का बोझ उतारना कहा जा
सकता है । श्रीराम जो ने उस रावण के निवास स्थान को सोचा जो से पूछा ।
उन्होंने सात समुद्र पार बतलाया और उसकी बड़ी महिमा बर्णन की । श्रीराम
जी तुरंत ही अपना कटक जो रोछें और बानरों व राजाओं का था लेकर पहुंचे
परंतु महारावण श्रीराम जो से न मरा तब अपनी शक्ति की प्रार्थना की उस समय
सोचा जो ने सौम्य रूप को त्याग कर भगवती का रूप धारण कर और योगनी
भूत प्रेत डाकियों आदि लेकर महारावण को नष्ट भ्रष्ट कर दिया । उस समय
तीन लोक चौदह भुवन में बचाई बजने लगी देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की और
सोचा जो (भगवती रूप) को सबने प्रणाम किया । इस प्रकार सोचा जो ने विजय
प्राप्त की । इसी का वर्णन इसमें किया गया है । कवि के नाम का छंद नीचे
दिया जाता है । प्रभु चरित्र अद्भुत किय सगुन रूप विस्तार । जानकि जिय मन
भार कछु जानि सय कुमार ।

No. 422(a). Jhagarā Rādha Kṛishṇa of Suwamśa Kavi.
Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—6×5
inches. Lines per page—12. Extent—180 Anuṣṭup Ślokaś.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—
Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Thākura
Hannamāna Simha, Village Bardeha, Post Office Kherighāta,
District Baharāich (Oudh).

Beginning—पथ दोका भगरो राधा कृष्ण का लिख्यते ॥ दोहा ॥ अमल कमल मनपति चरन सुमिरि सुर्वस सुचित । करीं अकार हकार लौं दोहा सहित कवित ॥ सवैया ॥ घामन एक लसै हरि राधिका चंदन सौरि इतै उत रोरो ॥ मौर इतै मिर फूल उतै तन स्वास इतै उतै तन गोरो ॥ परदसि पीत पिछौरो इतै उत बांधरो चुनरि सो रंग बेरो । भाई सुर्वस सुनौ मन गोरो लवै निसि दौस मनोहर जौरो ॥ मसला ॥ पादे हतो हरि भजन को बाटै लगे कपास । दोहा । इतै घनोपा खालना उतै रसिक नन्दलाल । बरको रस भगरो सुनौ भगरो परम बिलाल ॥ सवैया ॥ इन्दु रसोली रसै बह इन्दु मुपो तरिता घन मय अनु मेचक सारी । समु समान उरोज दोऊ कटि केहरि दोठि मनो अनिवारो । भाई सुर्वस मरालन को गनै माते मतंगन को गति हारो ॥ जाति बली दधि बेचन को तिय लेति जगति जहाँ गिरवारो । म. र्पा जानै रोस्तिन को निवाद कही कैसे ।

End—हरि हरि हरि को चरित, जे सुनि है चित लार । ते जग में सुष को करै सकल संपदा पाव । हरि को हिय में धरि ध्यान कही यह है भव सागर को वरने ॥ सो ससि में ससि चंद्रक वार । हतो सित पक्ष चतुर्दस को भरनौ महि नंदन वास सुर्वस कहै दुष दोरख दारिद को हरनौ । नद नंदन पौ नव नागर को रस को भगरो भगरो वरनौ ॥ मसला । हरदा के साथ कपिला का विनास ॥ दोहा ॥ किया अकार हकार लौं जानै सबै सुजान । कंद दोहरा कवित सो यों प्रसन्न उपपान ॥ सवैया । छूटन सारो समुद प्रसेद सितारो तुम्है बुधवंत न जानो । पार उपाय न देषि परो तब वायु बुढावन को मत ठानो । ठेकि चलावै सबै मिलि कै यह जानि सुर्वस एकात्रि वषानो ॥ याहि पड़े सब पींडित मापत माहत मंद बहै मन मानो । इति श्री ठेकि भगरो राधा कृष्ण सम्पूर्ण ।

Subject—इस ग्रंथ में राधा कृष्ण का भगड़ा है दोनों रूपों को शोभा और शृंगार बताया गया है ।

No. 422(b). Rāmacharitra by Suwansa Kavi of Terha (Unnao). Substance—Foolscap paper. Leaves—24. Size—9×5 inches. Lines per page—24. Extent—360—Anushtup Ślokas. Complete or not—Complete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1879. Place of deposit—Baba Banamaladāsa Gundā (Rāe Bareilly).

Beginning—श्री वनेशायनमः ॥

एकौ छन के चरित को महिमा परंपार, का सुर्वस कवि कहि सकै सेस न पावत पार ॥ बरन्यौ राम चरित्र बांस तरा के कंद ते । सुनौ चाड करि मित्र

तिन को अब लखन कहौ । रस रीति बसु भौ बसुमत । संवत वरप विचार ।
 अमित पसाव पकादसौ रामचरित अवतार ॥ उपनि छै विश्वामित्र मुनि वा
 काव्यायन सुत जय । लहि बंस में अवतंस कतवज माहि चिन्तामणि भये । तिनके
 तनय जय राम अरु अतिगढ़ कैसीराम ये । कहं लो सुवंस बन्धु भाई जिनके
 कलपवत काम भे । सुत जुगुल केसावाम के भैं हरी भायो अति लखे । ते पिछ
 मोद बड़ाइ दुनौ भाइ सुति आत बसे । एकट हरी के चार सुत अठे गोवर्द्धन
 जानिए । एक मारकंडे गनो गवन प्रसिद्ध सिद्धवर जानिए । भैं मारकंडे मिश्र के
 सुत पांच लोला धर जसो गुनगानि कासीराम विद्यापति विरा । ओं भूषो ।
 सुखमै सुदामा परम पुरुष एकट रागेस्वर भये ॥ सुत पांच लोलाधर मिसिर के
 जातु गुन गन छित रूप । अनरुद्ध राजा राव जादिर महामुनि मन मानिए ।
 गुनगाथ जागेस्वर सुखद अति प्रेमगाथ बखानिए ॥ जैतने राजाराम के भैं
 छेपराम प्रथम कह्यो । मतिराम वै सोतल प्रसाद सुधमै सुख पूरन लख्यो । सोतल
 प्रसाद सुबुद्धि के द्वै पुत्र भे जनु द्वै सखो । सुख दानि बाबो लाल भौ रिपिनाथ
 साधु महाजसो ॥ सुमति मिश्र रिपिनाथ के सुत भे साधोराम । कलियुग में
 तिन दिन करत सब सतजुन के काम । साधोराम सुवंस पै अितनो करी सताइ ।
 सातो रसना एक सों कैतै बन्यो जाइ । जातो बिन भ्रम हो मिछै चारि पदारथ
 मित्र मंगलाचरण एक शोस मोला कह्यो बन्यो राम चरित्र । मंगल करन
 उताल विवनहरन दारिद्र दरन । करिए दया दयाल जंबोदर करिवर वदन ।
 जटाजुट सिर गंग भालचंद भर माल पहि । आदि शक्ति परधन महादानि सेकट
 द्रव्यो ॥ चरन कमल गुरु के सुमिरि आधुन को सिर नाइ, राम क्यो ते राम को
 चरित कहौ सुखदाइ । अमित राम अवतार ॥ अमित अथा विस्तार, मोहं कहैं
 हौं एक विधि निज मति के अनुसार ।

End—जब ते रघुनायक राज्य करो । जुग आदि को कोरति भवै बगरो ।
 दक्षिण धरा सब सस्या करै । सब जीव सुखो न प्रकाल परै । जल देत बला तक
 चित्त चह्यो । वर बारि सदा परि पूरि रह्यो । सुरगो सम धेनु भई सगरी ।
 यमरावति शोल सती नगरी । नर नारि उदार गुनाइ जसो । हड़ु संपति गेह न
 गेह बसो । उतसौ दिनहु दिन होत लगी । नर नारि सुधमै सुनीति पगे ।
 दारिद्र के दारिद्र भैया रोगहि के भो रोक । दुख के दुख सम के समै सोकहि
 सोक संजोक । मातु पिता गुरु को करै सेवा प्रेम बड़ाइ । कहै तुनै हरि हर
 कथा नर नारो मनुलाइ । धर्मवंत वृष को प्रजा साजति सब सुख साज । रीति
 तहां को क्या कहौ जहां राम महराज ।

Subject—१—राम चरित्र यथेन में कवि को असमर्थता का वर्णन ।
 निर्माण संवत वर्णन ।

- २—साधो राय का कुल वर्णन ।
- ३—मंगलाचरण आशुतोष समय का वर्णन ।
- ४—भूमि का गो रूप वर्णन ।
- ५—शिव स्तुति ।
- ६—माता का वात्सल्य वर्णन ।
- ७—बालकोड़ा वर्णन ।
- ८—बारात की शोभा वर्णन ।
- ९—भोजन सायप्रियो का वर्णन ।
- १०—गारो नाचन
- ११—लक्ष्मण पशुराम का वर्णन ।
- १२—सैवक धर्म वर्णन ।
- १३—जाति ब्रह्म धर्म वर्णन ।
- १४—मातृ भक्ति वर्णन ।
- १५—कैवट प्रेम वर्णन, राम निवास स्थान वर्णन ।
- १६—मरत कैकेई संवाद वर्णन ।
- १७—लक्ष्मण का क्रोध, सैन सुरसरी का वर्णन ।
- १८—बृद्धा अशुभ्या के सिर कंठ, राम प्रतिज्ञा, पंचवटी का वर्णन ।
- १९—बरदूषण प्रलाप, मायासूत्र का वर्णन ।
- २०—बटाखु युद्ध, युद्ध के कारणों का वर्णन ।
- २१—राम बालि तत्त्वज्ञान महावीर का बल वर्णन ।
- २२—राम रूप, लंका दहन, रामदल, रामकी उदारता वर्णन ।
- २३—रावण की समा में संगद का संवाद वर्णन महल्ला में हुसना धन चोर सुद्ध वर्णन ।
- २४—जगत में दुःख के कारण, राज्यधरो मद् और राम राज्य का वर्णन ।

No. 422.c). *Sphuṭa Kāvya* by Suwanśa of Terho (Unāo).
 Substance—Foolscap paper. Leaves—30. Size—9 × 5 inches.
 Lines per page—22. Extent—330 Anuṣṭup Ślokaś.
 Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—
 Bābā Banamālā Dāsa, Gunda, Rāo Bareilly.

Beginning—ध्रौ गणेशायनमः

राखे सदा जन को भव मोमते, पार करे धन पातक नाशे ।
 नाशे कुरूप कुबुद्धि सुबुद्धि है खानत है हिय की घर घांसे ॥
 पांखे निहारत देव अदेव जे वेद

पुरान सदा गुन मापे । मापे सुर्वस हिये धरि ध्यान बनेस कलेस को लेस
न राखे ॥

जा हरि को चारि मुख चाउ सेां विचारो करै धारा करै ध्यान ध्यानों
ध्यान में न पावहीं । जा हरि पिपि मुनि मनन करत रहै जा हरि को बन बीच
तपो तन तावहीं ॥ जा हरि को पाठो जाम सुकवि सुर्वस कहै घाम छोड़ि बोना
लोन्हें नारदादि गावहीं । ता हरि को गोप नारो हंसि हंसि हेरि हेरि चारि पग
चलै चूमि छतिया लगावहीं । गुलुफ गुलुफ ते वे मन को कुलुफ करो करतों
बिहार तापे चाकता सो ऊवरु । गुंघो मखतूल सेां न तुलि है तरनि तेज फूल कर
फूलो सदा खल हरस मुख ॥ सुकवि सुर्वस कहै जटी नग जालन सेां हरतो जंजाल
हाल मोहैं मन भुवक । मंदारव करतों भरालन के बालन को मंद मंद बाजतो
गुविन्द पांय सूंघरु ॥

End—दसन दिखाइ प्रह उदर बलाइ बांधि मिथ्या के पबंध लखु लोगन
को जाब्यों में । चरित लपै रस के गाइ कै रिक्ताव मूढ़ हठो मन जानि झूठो
ठहरायो सांचों में । लाभ के बजाइ बाजा सुकवि सुर्वस कहै यहि मत मोक्ष
प्रपनान कहैं बाब्यों में । मरत के भैया मेरो बिननि हरैया राम तोहि बिन जांचे
तो अनेक नाच नाच्यों में ।

गहुरे हरि के पद पंकज तू परि पुरो सिखावन है गहुरे । गहुरे जग झूठो दे
देखु चिह्न हरिनाम है सांचो साइ कहुरे ॥ कहुरे न कहै पद्माइ को बात सुर्वस
कहै कोऊ सो सगुरे । सगुरे मन तोलों करैं बिनतो रघुनाथ निरंज का गहुरे ॥
छोड़ि मनोति को तोति गद्दी हड़ साधु को संग करौ सब जामे होहु जसो
हरि लोला सुनो पद राखी सदा करुणा हिय धामैं ॥ पाने पैदो सदा शिव
लाक में व्यापे सुर्वस कहै सिप रामैं । रेमन चंचल लोकना चाहि तुमै मति
चंद मुखान के चामैं ॥

Subject—

पृष्ठ

१—५ गणेश स्तुति, बालकृष्ण का वर्णन ।

६—१० वसंत और वर्षा ऋतु का वर्णन ।

११—भंग (विजया) प्रशंसा वर्णन

१२—१५ राजा रघुनाथ सिंह के शिष्यों का वर्णन ।

१६—१९ राजा रघुनाथ सिंह और सुदर्शन के छोड़ों का वर्णन ।

२०—राजा सुदर्शन को तलवार का वर्णन ।

२१—बीर रस वर्णन ।

पृष्ठ

२२—दानवीर दयावीर के उदाहरण ।

२३—रौद्ररस के उदाहरण ।

२४—कल्याण रस के उदाहरण

२५—हास्य रस और भयानक रस के उदाहरण ।

२६—२७ वीररस के उदाहरण ।

२८—भक्ति भाव वर्णन ।

२९—गंगा महिमा वर्णन ।

३०—भक्ति उपदेश वर्णन ।

No. 422(II). Umarāo Kośa by Suwamśa Śukla of Bisawāñ. Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—12×6 inches. Lines per page—44. Extent—2,530 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1862 or A. D. 1805. Date of manuscript—Samvat 1943 or A. D. 1895. Place of deposit—Paṇḍita Vipina Behāri Miśra, Brijarāja Puṣṭakālaya, Village Gandauli Post Office Sidhāuli, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ उमराव कोष लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्ध करत प्रसन्न सते दारिद्र्य दल दयाल । मन मायक दायक सदा गो मायक गणपति ॥ छप्पय ॥ करत वान कछोल केलि कलख को करि करि । फेरत सुडा दंड प्रतिज्ञाया को घरि घरि । मुक्ता से श्रव कंद परत घानन ते भरि भरि । सद्य शक्ति महिनोत सुते आनंद उर भरि भरि । उर लाय लनकि चूमति वदन यह सुवंस मायो परवि । सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमा नंदनि हरवि । अथ रात्र आन वनेन ॥ घनाहरो ॥ जामै चारौ बल करन के समान देवे वे भरम चारो पाप धरन हंसत हैं । देवो देवता से नर नारि मोति रोति गड़े प्रोति देवता को दिन दिन ससति है । मुकवि सुवंस कदै रतन समोल जड़े मानो भूमि मान को विमूषन लसत है । देश देश जाहिर नरेश यों बषानि करै बेस औध मंडल में बिसर्वा बसत है ।

End—मोचा नाम । केरा समर ये दुयो मोचा नाम प्रमान । भानु मेघ पर्वत भयो प कवि कहत सुवान । इड़ा नाम । सनि वलुखा पुनि वाक गनि मदिरा बेरो नोर । इड़ा कहत पांचो विप्रे अ कवि गुनो गंगोर । स्वाम नाम । निज घर घन पुनि ज्ञात गनि सुत निज वस्तु सिहारि । ये चारौ को स्वा कही मुकवि सुवंस विचारि । ककुद नाम । कांय पुष्प नृपविन्द अथ इन्है ककुद है

नाम । कुंदकलो तारा मधा मधा जुगल बुच धाम ॥ सत नाम ॥ साधु सत्य पुनि
 श्रेष्ठ गनि और प्रसस्त मन मानि । ये चारौ को सब कहौ सुकवि सुवंस
 वर्णानि ॥ चौ० वर्ग विशेष विद्व द्वै मित्र । सहित अनेक ग्रंथ विचित्र । ऐसे
 कंद सत्तरि । दार कांड तोसरे में है बुचिवर । युग रस वसु यह निदा
 पति सुवत वर्ष विचारि । माघ कृष्ण प्रतिपदा को मयो ग्रंथ भौतार । ग्रंथ संज्ञा ॥
 वर्ग दोस मय कांड त्रय क्षिति रस वसु ससि कंद । भाषा शुद्ध सुवंस कवि करि
 के महानंद ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधोस चौबरी शिवसिंह
 वंसावतंस उमराव सिंह कारिते शुद्ध सुवंस विरचिते उमराव कोये समाप्तम् ।

Subject—एक शब्द के अनेक नाम दिए हैं ।

No. 422(e). Umarao Vrittakar by Sawansa Śukla Kavi of Viśwanāthapurā. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—8 × 6 inches. Extent—770 Anuṣṭup Ślokaś. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. B. 1841. Place of deposit—Thākura Mahābīra Baksha Simhaji. Rāisa Tālukedār, Village and Pargana Kothārā Kalāo, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः देहा ॥ गणपति गौरि गिरीश गिरि गुरु
 गोपालहि धाइ । कवि सुवंश उमराव को देत चसोस बनाइ ॥ १ ॥ छप्पै ॥ जब
 लगि गणपति गौरि गिरा गंगा गंगाधर । जब लगि गबूड़ जोन्हाइ गगन गुहाक
 पति गिरिवर ॥ जब लगि पन्नग रात्रपुरो यह प्राग पुरंदर । जब लगि सातों सिंधु
 सिंधु की सुता सुधाधर । कहि सुवंस जब लगि ध्रुव चिरंजीव मुनि शंभु सुत । तब
 लगि राजा उमराव नृप करौ सकल संपति सुत ॥ देहा । गुरु लघु वष्ट उदिष्ट
 यह मेरु पताका जानि । सहित मकैटो चक्र प प्रथमहि कहौ बनानि ॥

End—अथ द्विर्विश अक्षर प्रस्तार । देहा ॥ सोरह सोरह पै विरति गुरु
 लघु नेता मानि । बत्तिस अक्षर अंत लघु कंद जलहरन जानि ॥ ७३ ॥

वधाः—जलधर सम स्याम तनु अभिराम राजै पारद जुगल पट बोझुरी सोहै
 विशाल । काँडनी कलित कटि तट में सुवंस कहै कर परवेनु चारु गेर में पटुप
 माल । कुँडल कनक जड़ित मणि कानन मे सोस में किरोट यह केसरि को गौरि
 भाल । परे मन मेरे ऐसो रूप हिये धारि कहौ बाटो जाम कहौ गोपाल गोपाल
 गोपाल ॥ इति जलहरन । अथ हरिगोत कन्द ॥ जब लगि विधाता वेद है यह शेष
 हरिजस को कहै । तब लगि विदित वसुधा विष उमराव वृत्ता कर रहै ॥ जाहि

के पड़े ते धर्म बिना घर वृत्त को रचना करै । कविराज है द्विप में सुर्वस कहै
सदा सुष को भरै ॥ २७५ ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधोश चौधरी
शिवसिंह वंशवर्तस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुर्वस विरचिते उमराव वृत्ताकरे
बने वृत्त वर्नेनाम पंचमोऽष्टास समाप्त संवत् १८९८ मितौ पौष कृष्ण पक्षे त्रयो-
दस्यये रविवारसरे पाथी लोषा ईसरी प्रसाद मुकुल साकोन पोछोरा सुम मस्तु ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक प्रथम उल्लास, गुरु लघु विचार मात्रा
का प्रस्तार, मात्रिक गण, चतुष्फल नाम, त्रिकल नाम, गुरु नाम, लघुनाम,
प्रक्षर गण, गण फलाफल । द्विगण विचार, द्विगण फलाफल, द्वाधाक्षर, मात्रा
मेरु, मात्रा मर्कटो ।

(२) पृ० ५ से ६ तक—द्वितीय उल्लास, उद्विष्ट, वर्ण मेरु, उद्विष्ट नष्ट मर्कटो
वर्ण तथा मात्रा दोनो के संबंध से ।

(३) पृ० ७ से पृ० २४ तक—तृतीय उल्लास, छन्द लक्षण, समवृत्त, विषम
वृत्त, उक्तादिक नाम, माहा, उपमांति, नादिनी, सिंहानी, अस्कंधक, हारिणीत
वर्ण मेरु, प्रमर, सरम, मंडक कर्कट, करम, महकल, पयोवर, बलवानर, त्रिकल,
कमठ, मच्छ, सिंह, अहि, बाघ, बिलाई, सुनक, सर्प, रोला, गंधानक, वृत्ता,
उल्लाहा; षट् पद प्रकरण, प्रभक्तिका, धवल, पाथाकुलक, कुंडलिनी, अमृत-
ध्वनि, भूनाता, सारठा, चमोर, सिंहावलोकिता, त्रिमंगी, दुर्मिता, मनहरण
इत्यादि; छन्दों के लक्षण ।

(४) पृ० २५ से पृ० ४०—तक—चतुर्थ प्रकाश, वर्ण वृत्ति वर्णन, छन्दों के
नाम, ताली, शशी, प्रिया, पंचाल इत्यादि के लक्षण.

(५) पृ० ४१ से पृ० ५० तक पंचम प्रकाश २३ अक्षर तक का प्रस्तार । अंत
में अपने आश्रय दाता का परिचय कवि ने दिया है ।

No. 423. *Pāṇḍava Yaśendu Chāṇḍrikā* by Swarūpa Dāsa
(Rasāla). Substance—Country-made paper. Leaves—197.
Size—Lines per page—18. Extent—3,103 Anuṣṭup Ślokaś.
Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date
of Composition—Samvat 1893 or A. D. 1835. Place of
deposit—Pāṇḍita Gaṇeśa Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—आमंशेशायनमः पथ रसाज्जुत बोधनो पांडव येसैंदु चंद्रिका
निरूपते ॥ श्लोक ॥ मुखालंकारिणो बोरौ ॥ धुनस्तो प्रविचारिणौ । भूमादहरिणौ
व्यं नर नारायण भुभौ ॥ १ ॥ दोहा ॥ ध्यान कोरत वंदना, त्रिविध मंगलार्चन ।

प्रथम अनुसटप बीच साईं मेरे त्रिधा सुम कर्न ॥ २ नमो अनंत ब्रह्मांड के सर भूपते
भूप । पांडुव येसंद चंद्रिका बरजत दास स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामी के पोछे रहै आदि होय
अचार, नरनारायत सब कूं दास स्वरूप विचार ॥ ४ ॥ बनासरो ॥ गरल तै भोम के
सुज्वाला ह ते पांचहु के ॥ द्रोपदी के सभा यो विराट बन तीन बार । किरौटी के
अपहर के आप तै युधिश्चिर कूमा (इससे आगे पृष्ठ दो और तीन नहीं हैं) पृष्ठ
४ ॥ कोसंबे पत्र है वरन्या इवरूप किरौटी के स्वारथो सहायवे कर हियै । १२ ॥
किं प्रयोजन सबैयो ॥ पावैन करो गौन हरि दिस फेरियै पात्र चले न चले ॥
जोम हैसै करिवान हरि फिर दास स्वरूप हलै न हलै तैन झोते लयो रूप विराट
कौ फिरये नैन पिछे न पोछे । श्रोन छेते हरि कोरति कुसुनि फिर पै श्रोन मिले
न मिले ॥ १३ दोहा ॥ लाभ जिव का सुजस का पुनि परमार्थ सांच विव्र सांति
परलोक कि सिद्धि प्रयोजन पांच ॥ १४ ॥ मेरे पांचों हैं मेरी जीवका हरि हरिदास
कि तीन ग्रंथ कियो जास मो है पढ़े गोविन्दो कौ बुद्धि सुकर्म प्राप्ति परमार्थ
ग्रंथ विषे विव्र सांति परलोक सिद्धि है हो श्री हरि कौ हरिदासन कौ मिश्रत
यस सांक लैन । करकंज निसा चंद्रन्यायेन ॥ १५ ॥ अष्टादश परब शुचि
मेत्र प्रथम आदि पर्व शुचि ॥

End—श्लोक वैष्णवानां यथा शंभु देवानां महर्ष्वजः नदीनां च यथा
गंगा सास्त्राणां भारती कथा ५० इदं भारत महाप्र्यानमः पठे श्रमयानरः पदशमे-
धाधिकं पुण्यं लभते नात्र शंशयः ५१ इदं श्रुत्वा यथा शक्त्वा वाङ्मणान् भोजये-
न्नरः हित्वासाय समूहं च हन्ति विष्णु पदं व्रजेत् । ५२ बुद्धा मोहि जस सुनो किनां
सुनो जनजस सुनो जरर जैसे श्रीमुख को वचन सुन्यो निकट अह दृष्ट ५३ ॥
फिर चाकर जस हान तै ठाकुर कौ अधिकार । दरसत यह विष्यात है मै का
कहं पुकार ५४ ॥ ताते कोनो चंद्रोका मेरो मति अनुमान । भक्त संग अह भक्ति कौ
देहु कपानिध दान ॥ पंगुल गुणो रोज जुत बनिक लुधातुर जोब । भय जुत बाल
तोय अचप सुतत अनाथ सदोव । ५६ कवित—ज्ञान यो विराज दात पावन
बिना हुं पंगुः भक्ति सारै तैंहों गुंन हो निहारोगे । त्रिधाता परोगो कर्म बानिज
बनिक हूं मै भूयो दसधा कौ के ३ जन्म कौ विचारोगे । काल भौत बाल बुधि
आतमा है अबला यो अंश तत्व संजन बिताहु नैक धारोगे । भेक संग के अनाथः
ताके विकै सुनै हाथः आ संत में अनाथ नाथः क्यों बिसारोगे ५७ छंदयः पंगु
कुबज्या संमति गुंन जम जम लाहु न भावत रोगो माचवदास बनितर लोचन
प्यावतः लुधित सुदामा विप्रः भौत जुत वज्र को भा ।

Subject—भगवान को बंदन की कथा । २ और ३ पृष्ठ नहीं हैं ।

४—ग्रन्थ को महिमा बर्णन (अष्टादश रूपो मेत्र) प्रथम आदि पर्व
सूची । जन्मेजय से लेकर भरत नल और पांडु आदि को जन्म कथा, लाक्षागृह,

हिडंब, वकासुर वय, द्रौपदी स्वयंवर, अर्घ्य रात्र्य पाना, वनवास, भजन सुभद्रा विवाह बाँडबदाह, धनुष, सभा का वनेन इसमें २२७ अध्याय और ८९,८४७ श्लोक अनुष्टुप हैं।

५—सभा सूची—नारद द्वारा सभा का वनेन राजसूय यज्ञ को वनेन, चारों दिशाओं की दिग्बिजय, भीम द्वारा शिशुपाल वय, सभा में सुयोधन का अपमान होना, जुवा खेलना चोर हरण, सुसर से बर पाना, पुनः जुवा खेलना, और वनवास वनेन, इसमें ७८ अध्याय हैं २५११ श्लोक हैं, इसी प्रकार वन पर्व की सूची उसके अध्याय और श्लोक संख्या का वनेन।

६—विराट पर्व की सूची, अध्याय और श्लोक—संख्या वनेन, उद्योग पर्व की सूची अध्याय और श्लोक—संख्या वनेन, भीष्म पर्व की सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वनेन, द्रोण पर्व की सूची अध्याय और श्लोक संख्या वनेन।

७—कथे पर्व की सूची। अध्याय और श्लोक—संख्या वनेन। शल्य पर्व की सूची और अध्याय और श्लोक संख्या वनेन।

८—सौप्तिक पर्व अध्याय और श्लोक संख्या वनेन, स्त्री पर्व सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वनेन, शान्ति अनुशासन पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या का वनेन, ९, अश्वमेध पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या वनेन, व्यासश्रम सूची अध्याय और श्लोक संख्या वनेन, १०—मूसल पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या वनेन महाप्रज्ञान, पर्व सूची अध्याय, और श्लोक संख्या वनेन, स्वर्गरोहण सूची अध्याय और श्लोक संख्या वनेन। ११—सम्पूणे महाभारत अर्थात् अष्टादश पर्वों के अध्याय और श्लोक संख्या वनेन, अश्व सेना की संख्या सवार सहित वनेन, १२—अष्टादश पक्षोद्दिष्टो सेना की संख्या और विवरण वनेन। १३—१५—संस्कृत छंदों की नामावली, वर्णाष्टक छंद वनेन, गुरु लघु का वनेन, सम विषम छंद वनेन, वृत्त छंद भेद वनेन, वने भाषा और मात्रावली का वनेन। गणों का विचार और छंदों का वनेन। १६—२२—साहित्य के क्लृप्ताः प्रग (छंदवृत्ति, २ नायिका, ३ अलंकार ४ रसशब्द, ५ पंचमारी तिमिरा। ६ कल्यादि त्रिणा) देवाणी, संस्कृत, भाषा, विभक्ति, समास, वचन, निम वनेन, काल वनेन, काव्यदोष वनेन, रस वनेन, भाव, विभाव, अनुभाव, आलंबन, उद्दीपन आदि वनेन, शृंगार रस की प्रधानता वनेन, संयोग वियोग वनेन, हाव भाव वनेन। २३—अनुभास वनेन, नायिका भेद वनेन, स्वकीया, परकीया, सामान्या इनके अन्य भेद वनेन। दर्शन, स्वप्न, चित्र, साक्षात्, दर्शन, वनेन, प्रकृति, राजसी, तामसी, तानसुर और ऋतुओं का वनेन। २४ घाठ नगन से करौठ छंद, घाठ जगन से जोधक, घाठ रगन से बोधक, २५ दोहा, चौपाई,

वैताल, त्रिधा छंद छंद वर्णन, नपुंसक छंद सारठा, पदगौ, पदाकुलक नरायणो, कवित, घनाक्षरी आदि का वर्णन, २६—अलंकार सूची उपमा सूची, घट लुप्तोपमा वर्णन। वर्ण्यर्म उदाहरण, स्वेत उदाहरण, २७—कृष्ण उदाहरण, रक्त उदाहरण, पीत उदाहरण। २८—आकृति वर्णन, २९—गुण आकृति उदाहरण ३०—गुण उदाहरण, अनन्य अलंकार, अनुज्ञा अलंकार वर्णन, भाव सावत्य वर्णन। ३१—संघ अलंकार, व्याज स्तुति अलंकार, व्याज निन्दा, अलंकार, एका-बलि अलंकार, सुसिधा अलंकार वर्णन, प्रहरयण अलंकार, प्रश्नोत्तर अलंकार, विभावना ॥ अलंकार। ३३—अनुशुना अलंकार, एकान्देको अलंकार वर्णन, ३४—काकोकि अलंकार वर्णन, जायकालंकार, ३६—दोषादोष वर्णन। ३७—समास लक्षण, गोटिका उदाहरण, चैटमी लक्षण उदाहरण ३८—लाट लक्षण उदाहरण लाटानुपास, छेकानुपास रस सूची—शत्रु मित्र स्त्रियो स्वामी वर्णन। ३९—४१—शान्तिक संग वर्णन। ४३ तक शब्द से शृंगार, रूप से शृंगार रस से शृंगार, गंध से शृंगार वर्णन, महाभारत आरंभ—४४ से ब्रह्म, अग्नि, चन्द्र, बुध, पुरुषा, नहुष, ययाति, पुरु, रोधाश्व, कन्वेपु, घनावृष्टि, मतिनाग, तक्षु, इलिन, कुबंजु, भर्ता, भूमन्य, सुहोत्र, हस्ति, प्रजमिठ, शक्ष, संवर्ण, कुर, जन्मेजय, धृतराष्ट्र, देवापो, शतनु, देवव्रत, विचित्रवीर्य, विभ्रांगद पांडु, वाल्मिक, विदुर पांडव, कौरव आदि को उत्पत्ति क्रम से कथा सहित वर्णन। ४५ तक द्रोण की उत्पत्ति से लेकर भीष्म तक आने की कथा वर्णन।

४६—से ४९ कौरव पांडव का विचारंभ कथा का वर्णन, कर्ण का घन में मुनि से घर और आप पाने का वर्णन और विद्या में निपुण होने पर परीक्षा के दिन तक की कथा का वर्णन, अर्जुन के यश से सुयोधन की ईर्ष्या उत्पन्न होना, और कर्ण का अर्जुन से लड़ने की तैयारी होना पानु दासोपुत्र होने से अधिकारहीन बताना और सुयोधन द्वारा संग देश का राजा बनाने का वर्णन।

५०—वृष्ट प्रद्युम्न और कृष्ण की उत्पत्ति कथा वर्णन। द्रुपद और कौरवों का युद्ध वर्णन, भीम की सुयोधन द्वारा विष दिए जाने का वर्णन।

५१—सुयोधन का पिता से राज्य अधिकार पाने के लिये कहना और पांडवों का वारणाश्व उत्सव देने के बहाने भोजन का पंड्यंत्र रचना। लाक्षागृह का निर्माण होना और विदुर द्वारा युधिष्ठिर का सचेत होना वर्णन।

५२—भीमनी और उसके पांचे पुत्रों का लाक्षागृह में जलने का वर्णन।

५३—हिडिंब वध और हिडिंबा के साथ भीम का ब्याह होना वर्णन।

५४—पांडवों का द्रुपद देश जाना, द्रौपदी स्वयंवर वर्णन, द्रौपदी का रूप वर्णन, अर्जुन द्वारा भीम बधना वर्णन।

५५—सहदेव का माता से वस्तु प्राप्ति वर्र्णन । और माता का पाँचों भाइयों के भोग की याज्ञा, युधिष्ठिर का यह ज्ञान चर्म संकट में पड़ना, व्यास द्वारा, पूर्व श्राप का वर्र्णन और द्रौपदी का विवाह वर्र्णन, सुयोधन का पांडवों को जीवित दूध शोक बढ़ना वर्र्णन, और पांडवों के नाश करने का उपाय साधना ।

५६—विदुर का धृतराष्ट्र से पांडवों को घाया राज्य देने के लिये कहना, पांडवों को हुलाकर घाया राज्य देना, और कुछ दिन युधिष्ठिर का राज्य करना, नारद का घाना और युधिष्ठिर को याशोधद देना ।

५७—द्रौपदी के भोगने का नियम वर्र्णन, एक ब्राह्मण का संकट में पड़ना, अर्जुन का शस्त्र लेने जाने के कारण नियम भंग होना ।

५८—अर्जुन का वनगमन, गणेशजी के साथ विवाह वर्र्णन, उससे पुत्र वस्त्रवाहन का होना, गिरि पर यदुवंशियों का मिलना ।

५९—और अर्जुन का सुमद्रा हरण—वर्र्णन वलभद्र का कोव करना, और कौरवों का नाश करने का विचार करना, तथा श्रीकृष्ण द्वारा समझाना और दहेज देने के लिये कहना ।

६०—खांडव में जमुना तट विहार श्रीकृष्ण और अर्जुन का वर्र्णन, यज्ञि का ब्राह्मण भेष में घाना और खांडव भस्म करने के लिये घपना जन्म होने का वर्र्णन, खांडव वन दहन और मय दैत्य को रक्षा, मय द्वारा समा भवन निर्माण करना भीम को गदा देना और देवदत्त को शंख देने का वर्र्णन युधिष्ठिर से सब समाचार कहना, द्रौपदी से पाँच पुत्रों की उत्पत्ति वर्र्णन सुमद्रा से अभिमन्यु का होना ।

६१—सभामंडप की शोभा और विचित्रता वर्र्णन, अर्जुन आदि का दिग्विजय करके घाना, श्रीकृष्ण को निर्मंत्रित करना, और जरासिंह का विजय न कर सकने का वर्र्णन, श्रीकृष्ण और भीम का जरासिंह से युद्ध करने जाना और भीम द्वारा जरासिंह वध तथा

६२—उसके पुत्र सहदेव को श्रीकृष्ण द्वारा राज्य देने का वर्र्णन, यज्ञकार्य भार सौंपने का वर्र्णन सुयोधन को मंडर कार्य सौंपने का वर्र्णन । यज्ञ समाप्त होने पर श्रीकृष्ण की पूजा पर शिशुपाल का कोव और कृष्ण द्वारा वध होना ।

६३—सुयोधन का मय दानव की समा देखने घाने और सम होने का वर्र्णन, नकुल और द्रौपदी के हंसने से घपमान समझ कोधित होने का वर्र्णन, सुयोधन का माता पिता से पांडवों के वैभव का वर्र्णन ।

६४—पांडवों के समान वैभव पाने को सुयोधन का इच्छा का वर्णन, धृतराष्ट्र द्वारा विरोध न करने के लिये समझाना और सुयोधन का अपने पिता से अपना अपमान वर्णन तथा मरने के लिये उद्यत होना ।

६५—शकुनि का जुषा द्वारा संपत्तिहरण करने का विचार वर्णन, युधिष्ठिर को जुषा के लिए बुलाना और शकुनि द्वारा संपत्ति, चारों भाई और स्वयं युधिष्ठिर तथा द्रौपदी को जीतना वर्णन ।

६६—सभा में द्रौपदी को सुयोधन का बुलाना, द्रौपदी के समासदों से प्रश्न, दुःशासन का द्रौपदी को सभा में लाना और द्रौपदी का पुनः समासदों से प्रश्न करना और उत्तर न पाना सुयोधन का जंघा दिखाना ।

६७—दुःशासन का चोर खींचना द्रौपदी का ईश्वर स्तुति करना ।

६८—मांगारी का धृतराष्ट्र को समझाना भीम को प्रतिज्ञा का वर्णन, धृतराष्ट्र का द्रौपदी को वर देना द्रौपदी का पाँचों पतियों सहित दासता छूटने और सशस्त्र घर जाने का वरदान मांगना, धृतराष्ट्र का वरदान देना, सुयोधन का पिता से पुनः जुषा खेलने को आज्ञा मांगना उसमें जो हारे वह १२ वर्ष वनवास भागे और एक मास अज्ञात वास ।

६९—अज्ञातवास में यदि अवधि से पहले ज्ञात लिये गये तो फिर १२ वर्ष वनवास होने का वर्णन, जुषा खेलना और फिर युधिष्ठिर का हारना तथा द्रौपदी सहित वनवास वर्णन । कुंतो का मिलाप वर्णन, विदुर का सांत्वना देना वर्णन ।

७०—सूर्य द्वारा यान पाने का वर्णन, वनवास को दशा वर्णन, श्री कृष्ण का वन में पांडवों के पास जाना, सुयोधन का दुर्वासा को पांडवों के पास थाप देने के लिये भेजना, ८८ हजार ऋषियों सहित दुर्वासा ने युधिष्ठिर से भोजन मांगा । तब बड़े संकट में श्री कृष्ण को स्मरण किया और उनके जाने से सब ऋषि गल तृप्त हो आशीर्वाद देकर चले गये ।

७१—युधिष्ठिर को शम्भो के लिये तप करना वर्णन । कठिन तपस्या से इन्द्रादि देव प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार के अन्न देने का वर्णन शिव का पांडवों को परीक्षा लेने का वर्णन, अर्जुन का शिव से युद्ध और पशुपति अन्न लाभ करने का वर्णन, अर्जुन का इन्द्रादिक में अन्न और संगीत सोसने का वर्णन ।

७३—इन्द्र को आज्ञा से सिंधु में बादेसुर रिपु से युद्ध कर अर्जुन का आना और मुकुट तथा अन्न शस्त्रादि का प्राप्ति करना वर्णन ।

७४—उर्वसी को अर्जुन के इन्द्र द्वारा भेजना वर्णन ।

७५—सुर्योधन का सेना सहित पांडवों को मारने के लिये आना । इन्द्र का चित्रकेतु को अर्जुन की सहायता के लिए भेजना चित्रकेतु का वर्ण से युद्ध पर सुर्योधन का बांधना ।

७६—भीमादि द्वारा उसको छुड़ा देना सुर्योधन का यज्ञ करना ।

७७—पांडवों पांडवों का यज्ञ में जाना द्रौपदी-हरण वर्णन, जयद्रथ की तपस्या वर्णन शिव का अर्जुन छोड़ चारों भाइयों को जीतने का घर देना । वन में वाद्यन की प्रकार सुतना और हिरन के पीछे पांडवों का दूर निकल जाना तथा प्यास से आकुल होना ।

७८—एक एक का पानो लेने के लिये जाना घंट में युधिष्ठिर का जाना और चारों भाइयों को मुक्त देख संग्राम । यक्ष का धर्मराज से प्रश्न करना, युधिष्ठिर का यक्ष को यथार्थ उत्तर देना, यक्ष का प्रसन्न होकर एक भाई को जिलाने के लिये कहना धर्मराज ने नकुल को जिलाने के लिये कहा घंट में सबों का जीवित होना वर्णन । यक्ष से अज्ञातवास निर्विघ्न समाप्त होने का वरदान वर्णन ।

७९—शमी में अपने वस्त्र बांध कर राजा विराट के यहाँ पांडवों का द्रौपदी सहित अज्ञातवास करना भीम का जोमूत महेन से कुंठो होना, और जीतना । कौचक का सैरिंधो (द्रौपदी) पर आसक्त होना ।

८०—कौचक की रति याचना, और द्रौपदी द्वारा अपमानित होने पर भी कौचक का अपनी बहिन से सैरिंधो को उसके पास भेजने की कहना । रावों का द्रौपदी के भाई से मदिरा लाने के बहाने से भेजना ।

८१—द्रौपदी का उसको गोच वृत्ति देखकर भागना तथा कौचक का लात मारना वर्णन, द्रौपदी का सब सगचार भीम से कहना । भीम ने द्रौपदी से उसे नृपगृह में भेजने का वर्णन वहीं भीम द्वारा कौचक का वध करना ।

८२—सुर्योधन के दूतों का आना, परन्तु पता न पाने पर निराश हो लौट जाना ।

८५-८७—सुर्योधन का राजा विराट से युद्ध वर्णन ।

८८—उत्तरा का अर्जुन के दसों नामों का पूछना और अर्जुन का उत्तर ।

८९—अर्जुन का उत्तरा से अज्ञात की कथा का वर्णन करना ।

९०—पांडवों का पराक्रम वर्णन, और विराट को उनके

९१—अज्ञात वास का पता लग जाना, राजा विराट द्वारा

९२—पांडवों का स्तकार वर्णन, राजा विराट का उत्तरा का विवाह करने का प्रस्ताव करना ।

९३ से ९७-भूमिमन्यु का उत्तरा के साथ विवाह। राजा विराट और कृष्ण की सम्मति से धृतराष्ट्र के पास अपना राज्य पाने के लिये पुरोहित का भेजना। भीष्म, द्रोण, विदुर, पादि का सुयोधन को समझाना, सुयोधन का हठ खोलना।

९८-१००-अर्जुन और सुयोधन का भी कृष्ण को निमंत्रण देने के लिए जाना कृष्ण का प्रथम अर्जुन से मिलना वर्णन, अंत में श्री कृष्ण ने एक तरफ सेना और दूसरी तरफ स्वयं निःशस्त्र रख कहा जिसकी जो इच्छा हो ले लीजिए। सुयोधन और अर्जुन ने श्रीकृष्ण को अपना सहायक बनाया।

१०१-१०२-पांडवों का पांच ग्राम मांगना, पर दुर्योधन का न देना, भीष्म द्रोण आदि का समझाना और विदुर का धृतराष्ट्र से राजनीति वर्णन।

१०३-धृतराष्ट्र और गांधारी का सुयोधन को समझाना,

१०४-श्रीकृष्ण का संघि के लिए जाना।

१०५-द्रौपदी का श्रीकृष्ण को सुयोधन के बीच कर्मा का सरण दिलाते हुए बदला लेने के लिए आग्रह करना।

१०६-१०९-श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र की समा में जाकर सुयोधन और धृतराष्ट्र को बार बार समझाना, अंत में निराश होकर छोड़ जाना। श्रीकृष्ण का कर्मे का पांडव पक्ष लेने के लिये कहना। कर्मे का समा मांगना।

११०-कुंतो का कर्मे से पांडव पक्ष लेने का प्रस्ताव वर्णन।

१११-कौरव पांडवों का विरोध वर्णन। कुक्षेत्र में दोनों पोर की ग्यारह पक्षोद्घोषी कौरव दल और सात पक्षोद्घोषी पांडव दल का इकट्ठा होना वर्णन।

११२-महा/थो लक्षण, पांडवों के महारथियों के नाम वर्णन।

११३-सुयोधन के महारथियों के नाम वर्णन।

११४-अर्जुन का घोड़े में रथ बड़ा करना और सबों को अपना बंधु बांधव ही समझ कर धनुष बाण फेंक देना।

११५-श्रीकृष्ण का जोर शरीर का संबंध और साध्यात्मिक ज्ञानोपदेश वर्णन। पुनः भीष्म के विषय, लाक्षाग्रह दाहन, द्रौपदी के अपमान, आदि का सरण करा के अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार करना। युधिष्ठिर का भीष्म और द्रोण के पास जाना और आशावांछ पाना, और भीष्म तथा द्रोण के वचन का उपाय जानना।

११६-दो दिन धर युद्ध होने पर तीसरे दिन का वर्णन

११७-श्रीकृष्ण का भीष्म द्वारा परिध शस्त्र पकड़ा देना।

११९-इसके पश्चात् ९ दिन तक धर युद्ध होने का वर्णन जिसमें अर्जुन और विराट के तीन पुत्रों का मरना तथा एक एक दिवस में दस दस हजार

सवारों का भोष्म द्वारा मारा जाता वगैरे । दूसरे दिन शिखंडी को घाग कर घर्जुन ने युद्ध किया जिसमें भोष्म ने धनुष बाण छोड़ दिया और घर्जुन के बाणों से विद्ध हो सरशय्या पर पड़ता ।

१२०—भोष्म का पानी मांगना और घर्जुन द्वारा बाण के साघात से पृथ्वी से जल निकालना वगैरे ।

१२१—द्रोण का सेनापति होना वगैरे ।

१२२—दो दिन द्रोण का धार युद्ध वगैरे ।

१२३—तीसरे दिन चक्र व्यूह की रचना का वगैरे ।

१२४—अभिमन्यु की प्रशंसा वगैरे ।

१२५—दुःशासन का मूर्खित होना, लक्ष्मण की मारना ।

१२६—अभिमन्यु वध और युधिष्ठिर का विलाप ।

१२७—घर्जुन का संततकों की जीत कर घाना ।

१२८—और अभिमन्यु के मरने का वृत्तान्त वगैरे ।

१२९—घर्जुन का जयद्रथ वध करने का प्रयत्न वगैरे सुयोग्यता का द्रोण से जयद्रथ की रक्षा करने की कहना ।

१३०-१३५—घर्जुन का युद्ध पारंगत, द्रोण की युद्ध परिक्रमा और प्रणाम कर घर्जुन का घागे बहना ।

१३६-१३८—घर्जुन के बाणों से सेना का संहार वगैरे ।

१३९-१४०—कृतवर्मा, दुःशासन आदि से युद्ध वगैरे ।

१४१-१४२—सात्वकी भोम युद्ध वगैरे, धृतिश्रवा, ।

१४३—दुर्योधन दुःशासन, कृपाचार्य आदि का भागना वगैरे ।

१४४—सुयोग्यता का द्रोण से कटु वचन कहकर जयद्रथ की रक्षा करने के लिये कहना ।

१४५-१५०—द्रोण का युद्ध पराक्रम वगैरे ।

१५१—कण का युद्ध वगैरे ।

१५२—द्रुपद और बिराट का वध वगैरे ।

१५३—धृष्टद्युम्न का द्रोण से युद्ध वगैरे ।

१५४—धृष्टकेतु और सहदेव का द्रोण से युद्ध वगैरे ।

१५५—श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से अश्वत्थामा के मरने का समाचार द्रोण से कहने के लिए आग्रह करना, युधिष्ठिर का भुट बोलने पर राजी न होना । सबों के कहने पर युधिष्ठिर द्वारा अश्वत्थामा का मरण सुन द्रोण ने शस्त्र छोड़ दिए और द्रुपद ने उनका शिर छेद दिया । द्रोण मरण वगैरे ।

१५७—अश्वत्थामा का युद्ध वर्णन, कर्णे का सेनापतित्व वर्णन ।

१५८—१५९—भीम और कर्णे का युद्ध वर्णन ।

१६०—भीम द्वारा दुःशासन का वध वर्णन ।

१६१—१६८—कर्णे अर्जुन युद्ध वर्णन ।

१६९—कर्णे का रथ पृथ्वी में धँस जाने का वर्णन ।

१७०—१७१—कर्णवध वर्णन ।

१७२—शल्य का सेनापतित्व वर्णन ।

१७४—शल्य वध ।

१७५—१८०—अश्वत्थामा युद्ध, सुयोधन युद्ध और वध ।

१८१—अश्वत्थामा को पकड़ लेना ।

१८२—धृतराष्ट्र और गांधारी का युद्ध स्थल में घाना, धृतराष्ट्र, गांधारी का युधिष्ठिर अर्जुन आदि के संवाद तथा गांधारी का विलाप वर्णन ।

१८३—धृतराष्ट्र का भीम से मिलने की इच्छा करना और श्रीकृष्ण का भीम से न मिला कर धातु मूर्ति से मिलाना जिसे धृतराष्ट्र का चूर चूर कर देना ।

१८४—युधिष्ठिर का सब का अत्येष्ट कर्म करना । युधिष्ठिर का विलाप वर्णन ।

१८५—युधिष्ठिर को भीष्म के पास लाना । भीष्म का युधिष्ठिर को ज्ञानोपदेश वर्णन, भीष्म का मरण वर्णन ।

१८६—भीष्म का दाह कर्म करने का वर्णन, युधिष्ठिर का राज्य छत्र धारण करना । परोक्षित का जन्म वर्णन ।

१८७—युधिष्ठिर के सुराज्य की कथा वर्णन ।

१८८—१९०—कुंती, द्रौपदी, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर का अपना पूर्व इच्छा का वर्णन करना ।

१९१—१९५—युधिष्ठिर का सुराज्य वर्णन, परोक्षित को राज्य देना, पाँचों भाइयों का

१९६—द्रौपदी का हिमालय जाना वर्णन, चारों भाइयों सहित द्रौपदी का हिमालय में अग्न्याश्रम और युधिष्ठिर का स्वर्ग जाना वर्णन ।

१९७—ग्रन्थ की प्रशंसा वर्णन ।

No. 424. *Sakhī Dasa Patasāha kil* by Swarūpa Dāsa of Panjāb? Substance—Country-made paper. Leaves—508. Size— $13\frac{1}{2} \times 10\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—36. Extant—15,000 Anushtup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Gurumukhī. Date of manuscript—Samvat 1897 or A. D. 1890. Place of deposit—Sardāra Budhela Siuṅha, Mohalla Gudadi Bāzār (Baharāich).

Beginning—ॐ सत गुरुप्रसाद ॥

दाहरा ॥ ओ सत गुरु प्रकास ॥ साखी जनम जय पावत नित नीत । महिमा प्रकास तिह नाम पर लिख पोथी कोनो मोत । १ नमो नमो परमात्मा सतगुरु कृपा निधान । पन्न दंडन मंडन भगत बंदन जगत महान । अथ राज जनक प्रसन्न अनिक जीवन नरक सो मुकाय सुख पठवत मये । पर बचन भगत कौया प्रथम चरन कलुहरि भगत पायो पार होइ । सारठा ॥ कोटि छिन वै जीव मुकताये नर को जनक । अर बचन भगत तेहि कोन तिहि ते हरि गुरु वपुधरा ॥

End—दाहरा-हे गुरु कृपानिधान दास सक्रय बिनतो करै । गुरु चरन मन ठानि हृदय नाम हर हर हरै ॥ ७१ ॥ अब दाजै मोहि दान जेहि विधि बलि वामन कहाँ । इदै बसौ भगवान जेहि विधि बलि द्वार रहाँ ॥ ७२ साखी सम्पूर्ण भई दसा पातसाह को पढ़न्ते सुनन्ते मान मुकति लहन्ते । ओ बाह गुरु मुख करो उचार । होइ दयाल कर लहु उचार । पोथी संपूर्ण संवत १८९७ विक्रमो असाज सुदी ९ ॥ इति ॥

Subject—साखी पहले मुहल्ले को गुरु नानक का बखैन पृ० १ से १७९ तक । साखी दूसरे मुहल्ले को गुरु अंगद का बखैन पृ० १८० से २०४ तक । साखी तीसरे मुहल्ले का अमरदास गुरु का बखैन पृ० २०५—२५६ । साखी चौथे मुहल्ले का गुरु राम का बखैन पृ० २५७—२६५ तक । साखी पांचवें मुहल्ले को गुरु अजुन का बखैन पृ० २६६—३०१ । साखी छठवें मुहल्ले को गुरु हर गोविन्द का बखैन पृ० ३०२—३४४ तक । साखी सातवें मुहल्ले को गुरु हरराम का बखैन ३४५—३७८ । साखी गुरु हरिकृष्ण जो को आठवें मुहल्ले को ३७९—३८८ तक । नवां मुहल्ला गुरु तेग बहादुर का बखैन पृ० ३८९—४२७ तक । दसवां मुहल्ला गुरु गोविन्द सिंह जो का बखैन पृ० ४२८ से ५०८ तक । इति ।

No. 425. *Sāmudrika* by Tejanātha of Sapahan Gauwāñ. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—12. Extent—234 Anushtup Ślokas. Appearance—Old,

Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Thākura Mahesa Simha Village Kohālī Beoharī Simha kī Purawā, Post Office Kesarganja, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः पद्य सामुद्रिक लिप्यते ॥ शेरसाह बहु दिशि सुलताना घनूप ताहि अनुमान । शमझो देश विप्रजन ठाऊ । तेजनाथ बस सपहा नाऊ । मल नहि घपन घस्तु करई । लोग हंसै निज पुन्यो हाई । गुन निगुन सब लोग कि भाषा । जस पपजस घपने हो राषा । दोहा भलमानुस पे जनिहि जस गुणाह हमार । साधु सकल गोविंद कह दुर्गन गुन पयकार ॥ तेजनाथ सामुद्रिक जानि । पाश कणे ते कहा बषातो । जेहि जाने सबके सुष होई । सब जानि मानै सब कोई । लक्षण सब जहजस देष । नर नागो केरा करव विसेष । जानत कहि न ग्रंथ कर भेऊ । कहै तब जानै सब कोऊ । कहवे मंद भल बुझन द्वारा । पश मानुस बिरलै संसारा । दो० केउ केउ बात बिचक्षण केउ के ग्रंथ पहिचान । गाल गोल रहत पन एक ग्रंथै रहै निदान ॥

End—जेहि कामिनि सुष देत सुवेषा । विषम मोट पुनि विररै लेषा । संतत दुःख यह सुख न ताके । लटु समान स्वेत दंत मुन बाके । लंब मोट पुनि होइ रोबारा । कामिनि निक्खै याहि भतारा । पाकरि घरनि कोट सम लेषा । चिकन रोम रहित शुभ देषा । पातर घरन शुभन मनिषाया । से कामनि स्वामो सुखसारा । नक भंगार लामि हो बाके कोपिनि कामनि कहिहु हु ताके । नाक अंगार जिस लघु होई । तेहि पर दासो कहि हो सोई । चिपटो नाक बिधवा तृष देषो । सुवा टोट सुभदायक दोषो । ना घति छोटी ना बड़ि नासा । सम सुंदरि सोभी सुपवासा । पोत नयन तृषकल विषारो । शोल रहित विधवा हो नारो । करंजो घाषि विविचंचल नारो । निषय कुलटा कहेउ विचारो । जाके हंसत गंडा हो बाला । सो स्वामो घर बसै न वाला । दुरज चांद सम मोहै जाके । सम नासा अंगुरा लघु ताके । कंत प्रीति तेहि ते अधिकारि । दिन दिन देह सपय अधिकरि । इति सामुद्रिक सङ्पूर्णम् लिखत प्रताप सिंह संवत १८९२ ॥ शुभमस्तु ॥

Subject—सामुद्रिक में हस्त रेखा, पद रेखा नेत्र नाक सिर बाल आदि के द्वारा शुभ अशुभ फल बनेन किष गये हैं ।

No. 426. Kṛta Kavitta by Thākura. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—6 × 5 inches. Lines per page—13. Extent—10 Anuṣṭup Ślokaś. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Thākura Nauni-hāla Simha Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—कूट कवित्त लिख्यते—तथा

हरि हित नामै ये वचन सुनि मोहन के दम रस भूपन सेवारि चतु मेहरो ।
सुर करि गुरु वर वाहन के परि परि तापन पिता को रिपु दाहत है उहरो ॥
कैसे मन कैसे लगे सबहु या मानतु प्यारो बेगिहो भिचारो को करौ नानामु नेहरो ।
ई सेंवारी होतो वाम को कुमारी पाज कुं सो छवि वान बैर देहरो ॥ १ अजौ
चतु प्यारो तोहि तारै बारै समपति पतिय कहे वियोग मोन तेरे में लु पाई रो ।
दाहुर के रिपु रिपु ताके पति बाके ठात बाके परि कारने निहारिहौ पडाई
रो । रवि सुत रिपु ताके पतिय गोपान लाल ताके सुत सुनाको धरनि हेति माई
रो ॥ कब कोहौ पाई मोहि टोत्रिये विराट सुत तरो मुख इंदु रिपु जोहत
कन्हाई रो ॥ २ सवैण—सबु तनै हित नेक रखौ ठवने तुम्हरे द्विष बैठी कुमारी ।
वाहनो धौन पितु इन जाम ना निशि भौन फिरो धमिसारो । तो बसु मूष
दिसान दई पग पाविष को जननी करि हारो । जोहत ऐन सरोवड़ नैन चलो
मववा रिपु जाहु तिहारो ॥ ३

End—पास पधार जो सिद्ध मरै कबहुं न मरै खर के वह छाये । कानद
धूप दिखाये मरै कबहुं न मरै जल मांदि सझाये । निसि छाये से चन्द मनोन लगे
कबहुं न मनोन लगे दिन छाये । मानुष सुधारन पीये मरै कबहुं न मरै विष के
वह छाये ॥ मोन मरै जल के परसे कबहुं न मरै वह पावक लाये । फुल जु फुले
सि ना महं कंठ कबौ नहि फुले तड़ाग लगाये । बोलत सदै में कोकिल है कबहुं
नहि बोलै बखत के पाये । दोष प्रकास करै दिन में कबहुं न प्रकास करै निसि
छाये । ८ दाहुर प्रीपम बोलै कहे नहि बोलत हैं वरपा रिपु छाये । मानुहि राहु
मरै कबहुं नहि खेद है निज प्रवसर पाये । भोजन छाये ते जोव मरै कबहुं न मरै
बिन प्रज्जहि छाये । ठाकुर चंद पताल उवै कबहुं न उवै लु प्रकासहि ठाये ॥ ९

इति

Subject—इस पुस्तक में दृष्टि कूटक १ कवित्त चौर सवैये हैं । जिनमें
उलटी बात कही हुई जान पड़ती है जैसे—मोन मरै जल के परसे कबहुं न मरै
वह पावक लाये ।

No. 427. Dalala Prakāśa by Kavithāna Rāma of Naisa-
wāra Daundia Kheda. Substance—Country-made paper.
Leaves—28. Size—12×6 inches. Lines per page—60.

Extent—1050 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1848 or A. D. 1790. Paṇḍita Bipīna Bihārī Mīśra, Brajarāja Pustakālaya, Village Gandhauri, Post Office Sidhauri, District Sitapur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कृपे ॥ जै लंबोदर शंभु सुवन संभोरुह
लोचन । चंचित् चंदन चन्द्र माल चंदन रुचि रोचन ॥ मुख मंडाल गंडाल गंड
मंडित श्रुति कुंडल । वृन्दारक वर वृन्द चरन वंदन सापंडल । वर अभय गदा
संकुश धरन विघ्न हरन मंगल करन । कवि धान नवासय मित्रिवर एक दंत जै
तुव सरन ॥ सरस्वती सुर मंडल मंडित है घासन कवल संग संवर चवल मुख चंद
से । चवल रंग नवल चहुत है । ऐसी मातु भारती को घारती करत धान जाको
जस विधि जैसे पंडित पढ़त है । ताको दया दोटि लाष पापर निरापर के मुख ते
मधुर मंडु पापर कहत है । गुरु देव कृपे ॥ श्री गणेश गुरु देव वल्ल गुरु देव
विधाता । रमा रमन गुरु देव देव गुरु शंकर दाता । भुक्ति मुक्ति गुरु ज्ञान दान
नर प्रेरजामो । मज वंदन ते मुक्ति करत गुरु त्रिभुवन स्वामो । चरणारविन्द
रजशोश धरि नवन भरि जारे करन ॥ कवि धान नमित धरि भूमि सिर जै जै जै
गुरु तुव सरन ॥

End—कमल बद्ध दोहा—

घार भार घर सार कर हर
हर रर घर चार । पार तार जर
मार सर घर घर हर तर डार

पथ चोको बद्ध ।

न मान राखत दुषन को जै हाथ
कठिन कृपान न पाकृतमके
पंथ घरत तुदलेल भूप सुजान ।
न जासु गुन मन थाह पावत कहत
कवि यह वान न धार जाको
मिलत शोभा शील मुख सनमानि ॥
इति श्री कवि धान राम विरचिते
दलेल प्रकासे विषय काव्य बल्लो
नाम ११ दोहा बल्लासः

Subject—श्रंगार रस नायक नायिका भेद व चित्र काव्य वर्णन ।

No. 428. Samara Sāra Bhāṣha, by Tirtha Rāja, Substance—Country-made paper, Leaves—28. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—560 Anuṣṭup śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1807 or A. D. 1750. Date of manuscript—Samvat 1830 or A. D. 1833. Place of deposit—Paṇḍita Durgā Prasadājū Jigania, Pargana Hajoorpore, Police Station Hajoorpur, District Baharāich (Ondh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः । अथ सवर सार विजयते लिखते ॥
श्री गणपति पद कमल विभु वृक्षित किन पद छोन । रंगो रशम रंग में फिरत
मोमन कुंभक दीन ।

छन्दः ॥ जय जय जय गुण रूप भूप पद कुल दल मेहन । भक्त हेतु तन धरत
दोह दानव बल खंडन । करि करि विनय घनत सत्त चिन्तित उर धरि धरि ।
ताको सब मज नाम रूप पोषत इय भरि भरि । कहि राज कैन वजराज विन
भव पाथा संकट हरन । जय दीन बंधु गिरवर धरन रावा वर बद्धी चरन ॥
पैत निशि दिन विषय नद मो मन मोहन हाथ । प्रेम डोर बंशो बिना स्त्री पावै
वजनाथ । मो करलो करि मोन मन गुन हर नोरद रूप । बरसत सब पर एक रस
गिरवर सर वर रूप ।

End—अथ पार्श्वोवाद् ॥ जौ लो काम तन को उदारता बजानै कवि
जौ लो मन मानर कोरति सुहाति है । जौ लो पंचतरय है बियाता के पणिल
घन जौ लो कमला को कला कलि में भवाति है ॥ जौ लो बतुवा में धाम धाम
राम राम रहै जौ लो वाम वाम संग मज के निभाति है । तौ लो आ सजल सिंह
घरणी में राज करै धरम धुरंवर पुरंदर को नाति है । ५२

इति श्री महाराज कुमार सिद्धान्त तोरयराज कृत सार विजये छाया
पुष्प दर्शन नाम सप्तम प्रकाशः समाप्तः शुभमस्तु ॥

सारदा ॥ श्री परब्रह्म नृप हेतु सार विजय भाषा लिखा ।

वेला धाम निकेत पड़ै बोर सुख तो लदै ॥

दीक्षा ॥ सर गुण नम विभु नित शकै सावन वदि शनि रोज ।

रामदीन भाषा लिख्यो सो नोक नृप तोज ॥

Subject—प्रार्थना—राजवंश वर्णन पृ० १—३ तक । जयात्रय वर्णन पृ०
४—७ तक । पंच स्वर वर्णन पृ० ८ से १० तक । भूवल सायना वर्णन पृ० ११—

१६। अष्टदल चक्र, प्रश्न विचार जुवा विचार वर्णन पृ० १७—१९। कोट चक्र वर्णन पृ० २०—२३ तक। सर्वतो भद्र चक्र, सर्व चद्र कला, जल जाया पुरुष विचार आशीर्वाद पृ० २४ से २८ तक। इति।

No. 429(a). Gomata Sāra ki Samak Jñāna Chandrikā Nāma Tikā, by Todara Mala of Sawāyī Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—1,904. Size—13½ × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—53,312 Anushtup slokas. Character—Nāgari. Date of Composition—1818 Samvat or A.D. 1761. Date of manuscript—1828 Samvat or A.D. 1769. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Barā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री ज्ञानायनमः । अथ श्री गोमठसार को समग्रज्ञान चन्द्रिका नाम भाषा टीका लिख्यते ॥ दोहा ॥

बंदो जानानंद कर । नैमिचंद्र गुनकंद ॥ सायब बंदित विमल पद । पुण्य पयोनिधिमेंद ॥ १ ॥ दोष-दहन गुनगहन घन । भरि करि हरि चरहत । स्वामि भूति रमनोर मन । जग नायक अवर्त ॥ २ ॥ सिद्ध शुद्ध साधित सहज । सुरस सुवाररस धार ॥ समग्र सार शिव सर्वगत । नमत होहु सुपकार ॥ ३ ॥ जिव बानो विविध विध । बनेत विद्वध प्रमान ॥ ग्यात पद मुद्रित अहित हर । करहु सकल कल्याण ॥ ४ ॥ मैत मौन मन जैन जन । ग्यान ध्यान धन लोन ॥ मैत मान विनि दान धन । दान होन तन खोन ॥ ५ ॥ यहाँ चित्रालंकार युक्त है । ईह विधि मंगल करने तै । सब विधि मंगल होत ॥ होत उदंगल हरि सब । तम ज्यों मानु उद्योत ॥ ६ ॥ अथ मंगलाचरण कर श्री महोगोमठसार द्वितीयनाम पंच संग्रह ग्रंथ ताको देश भाषा मय टीका करने का उद्यम करो हौ । सो यह ग्रंथ समुद्र तौ घसा है । जो सातिशय बुद्धिबल संयुक्त जीवनी करि भो जाका अवगाहन होना बुलैम है । और मैं मन्द बुद्धि हू ॥ × × × ×

End—सबैया—चरहत सिद्ध श्री उपाध्याय साधु सर्व ग्रंथ के प्रकासी मंगलोक उपकारी है । तिन को स्वरूप जानि राम तै भई हू भक्ति तातें काम कौन मावस्तुत को उचारो है ॥ धन्य धन्य तुम तुम हो तै सब काज भयो कर जोर बारंवार बंदना हमारी है । मंगल कल्याण सुष पेसा अब चाहत हौ हौहु मेरी पेसा दृश्य जैसी तुम चारो है ॥ ६३ ॥ इति श्री महत् लब्धिसार वा सपणासार सहित गोमठ सार शास्त्र को समग्रज्ञान चन्द्रिका नामा भाषा टीका संपूर्ण ॥ १ ॥ अबु संग्रह कुनि एक घर तुम रस बरस प्रमान । तिथि पड़िवा मंद बार दिन लिख्यो ग्रंथ हित धान ॥ भग्न प्रष्टो करो प्रीवा बंधो दृष्टि रघो मुख । कष्टे न

लिप्यते शास्त्रं यत्नेन परिचालयेत् ॥ २ ॥ बाह्यं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिप्यते
मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ लिपितं सौताराम उच्यते स्वेता-
म्बराश्वनाय स्वर तरंगे लिपो मध्ये लपछेठ ॥ लिखायतं ज्ञाना मौजोराम जो
धमवाल वंशे यास्तव्य नवावमं जे श्री जिनालय मध्ये स्थापितं ॥ शुभं भवतु.....
कल्याणमस्तु..... श्रीरस्तु.....

Subject—

(१) पृ० १ से पृ० ७१ तक; पौठिका ।

मंगलचरख । गोमठसार पुस्तक की टीका करने और हिंदी में ग्रंथ
लिखने का कारण । शास्त्र अभ्यास का आदेश । सम्यक्ज्ञान की परिभाषा ।
शास्त्र अध्ययन के लाभ । तीन प्रकार के अनुयोगियों की समस्तियां । शास्त्र के
पादि में पंच परमेश्वरों की वंदना का विधान । संस्कृत टीकाकार का मुनोन्नादि
की वंदना करना । जैनियों के अध्ययन योग्य ग्रंथों का कथन । शास्त्र अभ्यास के
फल । शास्त्र अध्ययन का समय मिलने की दुर्लभता का वर्णन । सूक्ष्म अनुक्रम-
णिका । संहति के अर्थ वा कहे हुए अर्थों की संहति जानने की इस भाषा
टीका में जुदा हो संहति अधिकार वर्णन । मूल शास्त्र व टीका में जहाँ संहति
वा अर्थ लिखा था वहाँ ही उन अर्थों का निरूपण कर के न लिखने का टीका
कार का संहति । अधिकार में वर्णन करने का कारण । टीका के परिचय के
सम्बन्ध में कुछ उल्लेख । अधिकारों की सूची । जैतिक तथा प्रौक्तिक
गणित के सम्बन्ध में कुछ कथन । दोनों गणितों से सम्बन्धित परिभाषाओं का
वर्णन तथा उनको किशोर् और इसी के संगत शून्य परिकर्माष्टक का वर्णन ।

(बीस प्रकरण)

(२) जीव कांड (१) प्रथम अधिकार पृ० ७२ से पृ० १७७ तक—

गुणज्ञानाधिकार । गुणज्ञान का नाम, और सामान्य लक्षण, सम्यक् चरित्र,
अपेक्षा और दृष्टिकादि संभव से भावनिका निरूपण, मिथ्या दृष्टि पादि गुण
ज्ञान निन्दा वर्णन, मिथ्या दृष्टि में पंच मिथ्यात्वादिका, सासादन में काल व
स्वरूप का वर्णन, मिथ्य में उसके स्वरूपादिक का, देश संपत् विषय उसके स्वरूप
का वर्णन, प्रमत्त का कथन में पन्द्रह व असौ वा साढ़े सैंतीस हजार प्रमाद भेद-
निका और वहाँ प्रसंग पाइ संख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट, समुदृष्टि कर, गृह,
यंत्रों से अक्ष संचार विधान का कथन । अक्ष संचार विधान, प्रमत्त के कथन में
स्वज्ञान और सातिशय दो भेद कह सातिशय प्रमत्त के अक्षकरण का कथन,
उसके स्वरूप काल, परिलाम, समय, समय सम्बन्धी परिणाम व एक एक समय में
अनुदृष्टिविधान, वहाँ संभवतः—चार आवश्यक इत्यादि का विशेष वर्णन ।

श्रेणी व्यवहार रूप भक्ति का कथन । उसमें सर्व धन, उत्तर धन, मूल भूमि, ज्व, मच्छ, इत्यादि संज्ञाओं का स्वरूप और प्रमाण लाने के लिये सूत्रों का वर्णन, अपूर्व करण का कथन में उसके स्वरूपादि का कथन, सूक्ष्म सापराय का कथन में कर्म पद्धतियों के अनुमान अपेक्षा अविमान प्रतिच्छेद, धर्म, वर्गणा, सङ्केता, गुण-हानि, नाना, गुणहानिनिका, पूर्व पञ्चक, अपूर्वस्पर्धक, वादर कृष्टि, सूक्ष्म, काष्टिका वर्णन है । उपशोत कषाथ, क्षणिकषाय कथन में उनके दृष्टान्त पूर्वक, स्वरूपका, संयोगो जिनको कथन में नव केवल लेखि, आदिकका, प्रयोगो विषयक अपेक्ष्यपता आदि का कथन । बारह गुण स्थानभिर्विषय गुण श्रेणी निर्देशा का कथन है । वहाँ द्रव्य का अपकर्षण करके उपरतनि स्थिति, गुण श्रेणी, आध्याम और उद्गावनी विषय जैसे विवर्णित हुए है उनका व गुण श्रेणी आध्याम के प्रमाण का निरूपण है । संमूर्तवर्त व भेदों का वर्णन । सिद्धिनिका वर्णन ।

(२) दूसरा अधिकार पृ० १७८ से २१६ पृ० तक, जीव समास अधिकार ।

जीव समास का अर्थ । होने का विधान, चौदह, गुण तोस वा सत्तावन वा चार सौ छः जीव समास का वर्णन । चार प्रकार के जीव समास, उसीके जीव समास वर्णन करने वहाँ स्थान भेद में एक एक आदि उत्पत्ति पर्यंत जीव स्थाननिका वा इनहो के पर्यातादि भेद कर स्थाननिका वा भूदानवे वाच्यादिसै छः जीव समासनिका कथन, योनि भेद विषे शंका यत्नादि तीन प्रकार योनिका, और सम्मूर्च्छनादि-जन्म भेद पूर्वक नव प्रकार योनि के स्वरूप वा स्वाभिरुच का, और चौरासी लाख योनियों का वर्णन । चार नलियों के अन्तर्गत सम्मूर्च्छनादि जन्म वा पुरुषादि वेद संभाव है उनका निरूपण । धवगाहना भेद में सूक्ष्म निगोद, अपर्याप्त आदि जीवों की जबराम उत्कृष्ट शरीर की धवगाहना का विशेष वर्णन है । उसमें परेन्द्रियादिक भी उत्कृष्ट धवगाहना कहने का प्रसंग पाकर गोलक्षेत्र, संख क्षेत्र, आपत चतुर्भुज क्षेत्र का क्षेत्रफल करने का, और धवगाहनाविषय प्रदेशों को वृद्धि जानने के अर्थ अनंतमाणादि चतुः स्थान पतित वृद्धि का पर इस प्रसंगमें दृष्टान्त पूर्वक षटस्थान पतित यदि वृद्धि हानिका, सर्व धवगाहना भेद जानने के अर्थ मत्स्य स्वना का वर्णन है । फिर कुल भेद विषयक एक सौ साठे सत्तावन लाख को द्विकुलानि का वर्णन है ।

(३) तीसरा अधिकार, पृ० २१७ से पृ० २५८ तक—पर्याप्त नामा अधिकार ।

मान का वर्णन, मान के दो भेद, लौकिक, अलौकिक, द्रव्य मान के दो भेदों में संख्या, संख्या मान में संख्यात असंख्यात अनंत के इकोस भेद का वर्णन है, संख्या के विशेष रूप और चौदह धाराओं का कथन है, उनमें द्विरूप वर्गधारा, द्विरूप धन धारा, द्विरूप अनाधन धारा के स्थान में जेपा जाते हैं उनका विशेष

वर्णन है। पल्लवोद्भावन, शकटों का प्रमाण, वर्णशाला का चर्चच्छेदनिकालन-
कर, अविमान प्रतिच्छेद का स्वरूप वा उक्त च लाया होकरि चर्चच्छेदादि के
प्रमाण होने का नियम; आनिकाय जीवों का प्रमाण निकालने का विधान।
दूसरा उपप्रामाण के पल्लवादि घात भेदे वर्णन है। व्यवहार पल्ल के रोयों को
संख्या लाने को पर माराहुते लगाव संगुणपर्यंत अनुक्रम का तीन, प्रकार के
संगुण का, जिस जिस संगुलिका से जिसका प्रमाण वर्णन करते हैं उसका कथन,
गोलमर्त के श्लेषफल लाने का विधान, उद्धार पल्ल से द्वीप समुद्रों को संख्या
लाना, यद्वा वल्य, से आयु यापि वर्णन करने का विधान। सागर को सार्धक
संज्ञा जानने को लवण समुद्र का श्लेषफल इत्यादि का वर्णन है। स्वयंगुल,
प्रतर्दांगुल, भ्रतांगुल, जगत धेलो, जगत पत्तर जगत घन का प्रमाण लाने का
विरलन घाति विधान का वर्णन है। पल्लादिक को वर्णशालाका। चर्च पोछे
पर्याप्ति प्रपण्णा। पर्याप्त, अपर्याप्त के लक्षण और कः पर्याप्ति के नाम, स्वरूप
का, धारम संपूर्ण होने के काल का, स्वामित्व का वर्णन है। वदुरि लान्वि
अपर्याप्त का लक्षण, उसके निर्दंतर सुदमवनि के प्रमाणादिक का वर्णन, नही
प्रमाण फल रक्का ह्य वैराशिक गणित का कथन, सयोती जिनके अपर्याप्त बना
संभव नेका, लब्धि अपर्याप्त निर्वृति अपर्याप्त पर्याप्त के संभव से गुण आनिका
वर्णन है।

(४) चौथा अधिकार, पृ० २५९ से पृ० २६१ तक—प्रणाधिकार।

प्राणों का लक्षण, भेद, कारण स्वामित्व का वर्णन है।

(५) पाँचवाँ अधिकार, पृ० २६२ से पृ० २६३ तक—संज्ञाधिकार।

चार संज्ञाओं का स्वरूप, भेद, कारण और स्वामित्व का वर्णन है।

(६) छठा अधिकार पृ० २६४ से पृ० २८६ तक—मार्गणाधिकार।

मार्गणा का, निडाकि का, चौदह भेदों का, सात मार्ग लाके, अंतरालवा,
प्रसंग वश तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार नाना जीव, एकजीव अपेक्षा गुणज्ञान
विषयक, और गुण ज्ञान की अपेक्षा लिये मार्गणानि विषय कालका, अंतर का
कथन करके छठा गति मार्गणाधिकार है। उसमें गति के लक्षण का, भेद का
और चार भेदों के निरुक्ति लिये लक्षणों का, पाँच प्रकार त्रिपंच, चार प्रकार के
मनुष्यों का, सिद्धों का वर्णन है। फिर सामान्य नारको, चर्चमुने सात पृथिव्यां
के नारको, पाँच प्रकार के त्रिपंचा चार प्रकार के मनुष्य, अंतर ज्योतिषी
भवनवासो सौधमोदिक के देव, सामान्य देवराशि इन जीवों को संख्या का
वर्णन है। कटपय पुरुष वर्ण इत्यादि सूत्रों द्वारा ककारादि सप्तक रूप भेद वा
विंदो की संख्या का वर्णन है।

(७) सांख्य इन्द्रिय मार्गणा अधिकार, पृ० २८७ से पृ० २९४ तक—

इन्द्रियों को निरुक्ति लिये लक्षण का, बन्धि उपयोग रूप भावेन्द्रिय का वाङ्मय अन्तर भेद लिये निवृत्ति उपकरण रूप देवेन्द्रिय का, इन्द्रियों के स्वामी का उनके विषय भूतस्त्रेय का, सूर्य के चार क्षेत्रादि का, इन्द्रियों के पाकार का अवगाहना का, और अतोन्द्रिय जीवानि का वर्णन है। एकेन्द्रियादि का उदाहरण रूप नाम नाम बाहु कर उनको सामान्य संख्या का बर्णन। विवेक्षणने सामान्य एकेन्द्रो, सूक्ष्म वादर एकेन्द्रो, सामान्यव्रस, वे इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चोइन्द्रिय, पंचो इन्द्रिय इन जीवों का प्रमाण और इनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों का प्रमाण वर्णन है।

८—पाठवां काम मार्गणा अधिकार—पृ० २९४ से ३१९ पृ० तक।

काम के लक्षण और भेदों का वर्णन, पंच साधनों के नाम, काम कायिक जीवरूप भेद, और बाहर सूक्ष्म पता का लक्षणादि, शरीर को अवगाहना, वनस्पति के साधारण प्रत्येक भेदों का प्रत्येक सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित भेदों का, उनकी अवगाहना को, एक स्कंध में उनके शरीर का प्रमाण। योनीभूत, जीवों में जीव उपजने का यहाँ सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित जानने को उनके लक्षण, साधारण वनस्पति निगोदरूप, उसमें जीवों के उगने, पर्याप्ति धरने, मरने के विधान का निगोद शरीर को उच्छृष्ट स्थिति का, स्कंध, घंडर पुनवो, पावास देह, जीव, इनके लक्षण और प्रमाण, नित्य निगोदादि के स्वरूप, त्रिस जीवन और उनके क्षेत्र का वर्णन। वनस्पतोद्यत् औरों के शरीर में सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित पने का, साधर वस जीवों के पाकार का, काय सहित काय रहित जीवों का वर्णन, अग्नि, पृथ्वी, अप, वात, प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित प्रत्येक साधारण वनस्पति जीवों को और उनमें सूक्ष्म बाहर जीवों, उनमें भी पर्याप्त अपर्याप्त जीवों को संख्या का वर्णन। पृथ्वी इत्यादि जीवों को उच्छृष्ट प्रायु का वर्णन, वस जीवों का, उनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों को संख्या का वर्णन है। बाहर अग्नि कायिक आदि को संख्या का विशेष निर्णय करने के लिये उनके सद्यं छंदादि का वर्णन। और दिवस छेदे गद्य हिद" इत्यादिक करण सूत्र का वर्णन।

९—योग मार्गणा अधिकार—पृ० ३२० से पृ० ३६५ तक—

योग के सामान्य लक्षण, सत्यादि चार चार प्रकार मन, वचन और योग का वर्णन, सत्य वचन का विशेष ज्ञान को दस प्रकार के साथ का वर्णन, अनुभव वचन काके विशेष ज्ञानने के लिये आमंजन आदि भाषनिका, सत्यादिक भेद देने के कारण, केवलो मन वचन योग संभव दृश्य मन का पाकारादि, काय योग के सात भेदों का वर्णन, बौदादिकादिकों के निरुक्ति पूर्वक लक्षण, मिथ

योग होने का विधान, साधारण शरीर होने का विरोधत्व, कामीय योग के काल का वर्णन । युगवत् योगों की प्रवृत्ति होने का विधान, योग रहित आत्मा का वर्णन । पंच शरीरों कर्मों का कर्म भेद, पंच शरीरों की वर्णना या समय प्रवृत्ति विषय परमायुर्गणिका, प्रमाण वा कम से सुक्ष्मपणा वा उनको व्यवसाहना का वर्णन । विश्वमे पंचम स्वरूप, उनके परिमाणुओं के प्रमाण, कर्मों का कर्म का उत्कृष्ट संचय होने का काल और सामिधो । औदारिक यदि पंच शरीरों का द्रव्य का वर्णन समय समय प्रवृत्ति मात्र कह कर उनको उत्कृष्ट स्थिति उसमें संभवतो गुणहानि, नाना गुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि, दोगुण हानि का स्वरूप प्रमाण कह कर कारण सूत्रादिक से उसमें त्रयादिक का प्रमाण लाकर समय समय पर संबंधों नियमों का प्रमाण कह एक समय में कितने परमाणु उद्वहन हो कर निर्जर केते सत्ताविषय अवशेष रहें उनके जानने की शक्ति से दृष्टि की अपेक्षा, लिये त्रिकोण पत्र का कथन । वैकियादिकों का उत्कृष्ट संचय किस के कैसे होय इसका वर्णन । योग मार्गशा में जीवों की संख्या वर्णन, वैकियकशक्ति का संयुक्त बाहर पर्याप्त अग्नि कायिक, वात कायिक, पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्यों के प्रमाण का, भोग भूमिया आदि जीवों की पृथक विक्रिया, शरीरों के अणुव विक्रिया हो उसका कथन, त्रियोगो, द्वियोगो, एक योगो जीवों का प्रमाण कहि त्रियोगों में आठ प्रकार मन वचन योगो और काम योगो जीवों का । द्वियोगियों में वचन काय योगियों का प्रमाण वर्णन । सत्य मनोयोग । दिवा सामान्य मन वचन काय योगों के काल का वर्णन । काय योगियों में आठ प्रकार काय योगियों का जुदा जुदा प्रमाण, औदारिक और रिकमित्र कामीय के जीवों की संख्या उत्कृष्ट पने युगवत् होने की अपेक्षा का वचन ।

(१०) वेदमार्गस्य अधिकार—पृ० ३६६ से पृ० ३७० तक ।

भाव द्रव्य भेद होने का विधान, उनके लक्षण, भावद्रव्य भेद समान व असमान होवे उसका वर्णन, वेदानिका कारण, दिवा कर वल्लभ्यं श्रमोकार करने का वर्णन । तीनों वेदों की निरुक्ति के लिये लक्षण का अवैदो जीवों का वर्णन । संख्या के वर्णन में देवराशि कह उसमें स्त्री पुरुष वेदानिका, तिर्यचनि में द्वय स्त्री आदि का प्रमाण कह समस्त पुरुष स्त्री नपुंसक वेदानिका प्रमाण वर्णन । सैतो पंचेन्द्रिय गर्भजा नपुंसक वेदो इत्यादि ग्यारह आतों में जीवों का प्रमाण वर्णन ।

(११) ग्यारहवों कथावनार्गशा अधिकार—पृ० ३७१ से पृ० ३८८ तक ।

कथावनिका निरुक्ति लिये लक्षण का, सम्प्रकृतादिक घात के रूप दूसरे पदों में अनुत्तानु बंधी आदि का निरुक्ति लिये लक्षण का वर्णन । कथावनि के एक, चार, सोलह असंख्यात लोकमात्र भेद कह कोषादिक की उत्कृष्टादि

चार प्रकार की शक्तियों का इष्टान्त और फल की मुख्यता का वर्णन। पर्याप्त करने के पहले समय कपाय होने का नियम है या नहीं इसका वर्णन। एकपाय जीवों का वर्णन, कोषादिक की शक्ति की अपेक्षा चार, देशवा अपेक्षा चौदह आयुर्वध अपेक्षा बीस भेद हैं। उनका और सब कपाय स्थानों पर प्रमाण कह उन भेदों में जितने जितने संभव उनका वर्णन। जीवों की संख्या के वर्णन में, त्रिवेच, मनुष्य गति में जुदा जुदा कोषो आदि जीवों का प्रमाण। उन गतों में कोषादिक का काल वर्णन है।

(१२) बारहवां, ज्ञानमार्गणा अविकार। पृ० ३८९ से पृ० ४४९ तक।

ज्ञान का निष्कृति पूर्वक लक्षण कह कर, उसके पांच भेद और क्षेपण शम के स्वरूप का वर्णन। तीन मिथ्या ज्ञानियों का, मिश्र ज्ञानियों का, तीन कुज्ञानियों के परिणामों के उदाहरण मतिज्ञान तथा उसके नामांतर। इन्द्रिय मन ते उपजने का और उसमें अवग्रहआदि होने का वर्णन, व्यंजन अर्थ के स्वरूप का, व्यंजन में नेत्र मन या ईहादिक न पाये जाव उसका वर्णन, पहिले दशन होइ पोछे अवग्रहादि होने के कम का, अवग्रहादिकों का स्वरूप अर्थ व्यंजन के विषय भूतबहु बहुविधि आदि बारह भेदों का, तहां अनिवृत्ति विषय चारि प्रकारयत्तेश्च प्रमाणगमित पना आदि का वर्णन। मतिज्ञान के एक, चार, बीसवाँ अष्टादश और इनस बारह गुने भेदों का वर्णन है। बहुरि श्रुति ज्ञान का वर्णन, उसमें श्रुत ज्ञान का लक्षण, निष्कृति आदि का अक्षररूप श्रुति ज्ञान के उदाहरण वा भेद वा प्रमाण का वर्णन। बहुरि भाव श्रुत ज्ञान अपेक्षा बीस भेदों का वर्णन। पहिल ज्ञान्य रूप पर्याय ज्ञान का वर्णन विषय उसके स्वरूप का उसका आचरण जैसे उदय होवे उसका, यह जिसके हाथे उसका दूसरा नाम लब्धि अक्षर है उसका वर्णन। अष्टावि समास ज्ञान का वर्णन, षट् ज्ञान पतित वृद्धि का वर्णन। उसमें ज्ञान्य ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदिका प्रमाण लाने की प्रक्षेपक आदि का विधान, एक बार, दोबारा, आदि संकल धन लाने का विधान। साधिक ज्ञान्य जहां दुना होवे उसका विधान, पर्याय समास में अनंत भाग आदि वृद्धि होने का प्रमाण इत्यादि का विशेष वर्णन। अक्षर आदि अठारह भेदों का कम से दो वर्णन है। अष्टाक्षर के स्वरूप का, तीन प्रकार अक्षरों का, शास्त्रा के विषय भूत भावों के प्रमाण का, तीन प्रकार पदनिका, चौदह पूर्वान वस्तु पाभूतनामा अधिकाराने के प्रमाण का इत्यादि का वर्णन। बीस भेदों में अक्षर अनक्षर, श्रुत ज्ञान के अठारह दो भेदों का और पर्याय ज्ञान आदि की निष्कृति लिये स्वरूप का वर्णन, हव्य श्रुत का वर्णन में द्वादशांश के पदनिका, प्रकाशक के अक्षरों की संख्याओं का, चासठ मूल अक्षरों का पांक्या का। अवन एक सर्व अक्षरों का प्रमाण वा अक्षरों में पर्येक द्विसंयोगा आदि भोगा

करितिस प्रमाण लाने का विधान, सर्व भूत के अक्षरों में शंको के पद और प्रकोलकनि के अक्षरों के प्रमाण लाने का विधान इत्यादि का वर्णन है। पाचार रांग चादि ग्याह संग, दृष्टि वाद संग के पांच भेद, तिनमें परिकर्म के पांच भेद, तहाँ सूत्र और प्रमाणानुयोग का एक भेद, पूर्व गत के चौदह भेद, चूनि का के पांच भेद, इन सर्वों के लुदा लुदा पदों का प्रमाण और इन में जो तेरा व्याख्यान है उनको सूचनिका का कथन। तोर्यकर को दिव्यध्वनि होने का वर्णन। वर्तमान स्वामी के समय दस दस जीव संतकृत केवलो और अनंतर गामो हुए उनका नाम, तीन सौ बसठ कुवादिन के चारकवि में कई कुवादियों के नाम, सत भंग का विधान, अक्षरों के स्थान प्रणवादिक, चारह भाषा, आत्मा के जोशदि विशेषण इत्यादि अनेक कथन। सामयिक चादि चौदह प्रकोलकों का स्वल्प भूत ज्ञान की महिमा, अवधि ज्ञान का वर्णन, निरुक्ति पूर्वक स्वल्प कह कर उसके भव प्रताप, गुण प्रत्यय भेदों का, और वह भेद किस किस के हो कौन आत्म प्रदेशों से उर्जे उसका, उसमें गुण प्रत्यय के छः भेदों का उनमें अनुगामो अननुगामो के तीन तीन भेदों का वर्णन, सामान्य पने अवधि के देशावधिप्रामावधि, सर्वावधि भेदों का, उनमें भव प्रत्यय, गुण प्रत्यय के संभवपने का, यह किस किस के होयें, प्रतिपातो, अप्रतिपातो, विशेषका, इनके भेदों का प्रमाण का वर्णन। जगन्म देशावधि का विषय, भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन कर द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपेक्षा, द्वितोयादि उत्कृष्ट पर्यंत कम से भेद होने का विधान इत्यादिक के प्रमाण का और सब भेदों के प्रमाण का वर्णन। ध्रुव, हार बगै वर्गला गुण कार इत्यादि का वर्णन, क्षेत्र काल अपेक्षा उस देशावधि के डगलोस कांडकनि का वर्णन है। बहुरि परमावधि के विषय भूत द्रव्य क्षेत्र-काल भाव अपेक्षा जगन्म से उत्कृष्ट पर्यंत कम से भेद होने का विधान, वहाँ दृशादि का प्रमाण वा सर्व भेदों का प्रमाण। संकलित धन लाने और 'ईच्छा-दरासिबेद'। इत्यादि दो कारण सूत्रों का चादि अनेक वर्णन। सर्वावधि प्रभेद है। उसके विषय भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन, जगन्म देशावधि से सर्वावधि पर्यंत द्रव्य और भाव अपेक्षा भेदों को समानता का वर्णन। तरक में अवधिका और उसके विषय भूत क्षेत्र का वर्णन, मनुष्य तिर्यच विषे जगन्म उत्कृष्ट अवधि होने का और देवा में मवनवासो, व्यंता ज्योतिषो योगों के अवधि गोचर क्षेत्र काल का सौधमादि द्विकनि विषे क्षेत्रादिका का, द्रव्य का भी वर्णन है। मनः पर्याय ज्ञान का वर्णन उसके स्वल्प दो भेद, अष्टभुमति के तीन प्रकार, विपुत्र मति के का प्रकार, मनः पर्याय त्रिसते उपपत्तो हैं और तिनके हातो है उनका वर्णन। दो भेदों में विशेष है उसका जीव से चितया हुआ इत्यादिक का ज्ञान उसका और अष्टभु मति का विषय भूत द्रव्य का और मनः पर्याय

सर्वथो भ्रूवहार का और विपुनमति के तत्त्व से उत्कृष्ट क्षेत्र पर्यंत दृष्ट अपेक्षा भेद होने का विधान, भेदों का प्रमाण, तत्त्व उत्कृष्ट काल भाव का वर्णन, केवल ज्ञान सर्वज्ञ है उसका वर्णन । यहां जोवों को संख्या के वर्णन में प्रति प्रति मनः पर्यंत केवल प्रवृत्ति जानों का और चारों वति संबंधों विमंग ज्ञानों का और कुमति कुश्रुति जानों का प्रमाण वर्णन ।

१३—तैरहवां अधिकार—संयम मार्गणा—पृ० ५०० से पृ० ५०८ तक

संयम मार्गणा का स्वरूप । संयम के भेदों का निमित्त । संयम के भेदों का स्वरूप । परिहार विगुद्धिका विशेष, स्यात् प्रतिपाद प्रद्वार्य विषय इत्यादि का वर्णन । फिर यहां जोवों को संख्या के वर्णन में सामयिक कर्तव्यप्राप्त, परिहार, विगुद्धि, सक्षम सांपराय, यथा स्यात् संयम चारों, संयतासंयत और असंयत जोवों के प्रमाण का वर्णन है ।

(१४)—चौदहवां अधिकार—दर्शन मार्गणा—पृ० ५०५ से पृ० ५०६ तक ।

दर्शन मार्गणा का स्वरूप, दर्शन भेदों के स्वरूप का वर्णन, जोवों की संख्या का वर्णन । शक्ति चक्षुर्दर्शनी, व्यक्त चक्षुर्दर्शनी का और प्रवृत्ति केवल प्रचक्षुर्दर्शनी का प्रमाण वर्णन ।

(१५) पन्द्रहवां अधिकार—लेख्या मार्गणा अधिकार—पृ० ५०७ से पृ० ५१५ तक ।

द्रव्यभाव से दो प्रकार लेख्या का निरुक्ति लिये लक्षण और उससे बंध होने का वर्णन है, फिर सोनद अधिकारों के नाम हैं । निर्देशाधिकार में छे लेख्यानि के नाम । वर्णाधिकार में हव्य लेख्यानि का कारण का और लक्षण का, कृष्ट द्रव्यलेख्यानि के वर्ण के दृष्टांत का, जिनके जो जो द्रव्य लेख्या मिले उनका व्याख्यान है । प्रमाणाधिकार में कषायन के उदय खाननि विषे संक्षेप विगुद्धि खाननि के प्रमाण का उनके संक्षेप विगुद्धि को हानि वृद्धि से अक्षम शुभ लेख्या होने के अनुक्रम का वर्णन । संक्रमणाधिकार विषयक स्वस्थान परस्थान संक्रमण संक्षेप विगुद्धि का, वृद्धि हानि से जैसे संक्रमण होवे उसका, और संक्षेप विगुद्धि विषे जैसे लेख्या के खान होवें और त्यों जैसे पट खान पतित वृद्धि हानि संभवै उसका वर्णन । कर्माधिकार विषे कृष्ट लेख्या वाले कार्य विषे जैसे प्रवृत्ति उसके उदाहरण का वर्णन । लक्षणाधिकार विषे कृष्ट लेख्या वाले निका लक्षण वर्णन है । वति अधिकार विषे लेख्यानि के कृष्ट संश निन विषे घाट मध्य संश घातु बंधका कारण, घाट अपकर्ष कालों में हो उन अपकर्षनिका उदाहरण पूर्वक स्वरूप, यदि उनमें घातु न बंधे तो जहां बंधे उनका, सापकवायुक्त निष्पकवायुक्त जोवों के अपकर्षणरूप काल का, आयुर्व्ययनः विधान व

गति आदि विशेष का वर्णन। प्रत्यक्षपन में आयु बढ़ने वाले जीवों का प्रमाण, लेश्यानि के अठारह भेद विषे भारण हुए जिस जिस स्थान में उपजे उसका वर्णन। बहुरि स्वाभो अधिकार विषे भाव लेश्या को अपेक्षा सात नरकनि के नारकियों में मनुष्य त्रियेच विषे, वही भी एकेन्द्रिय विकल त्रय विषे असेनो पंचेन्द्रो विषे लब्धि अपर्याप्तक त्रियेच मनुष्य भवनात्रिक देवसा सादन वालों में, पर्याप्त, अपर्याप्त भोग भूमि या विषे मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों में, पर्याप्त भवनात्रिक से धर्म द्विक आदि देवों में जो जो लेश्या मिले उनका वर्णन। उसमें असेनो के लेश्या निमित्त से गति में उपजने आदि का विशेष कथन। साधन अधिकार में ह्य लेश्या और भाव लेश्यानि के कारण। संख्याधिकार में ह्य क्षेत्र कालमाय मान कर कृष्णादि लेश्या वाले जीवों का प्रमाण वर्णन है। क्षेत्राधिकार में सामान्यपन स्वस्थान समुद्रात उपपाद अपेक्षा विशेष पने दो प्रकार स्वस्थान सात प्रकार समुद्रात, एक उपपाद इन दस स्थानों में संभव संस्थानियों को अपेक्षा कृष्णादि लेश्यानि का स्थान वर्णन अर्थात् क्षेत्र का वर्णन है। वहाँ प्रसेग वश विवक्षित लेश्या विषे संभव संस्थान, उन जीवों के प्रमाण का केवल समुद्रात विषे दंड कपाटादिक को; छेद के क्षेत्रफल का वर्णन, स्पर्शाधिकार में पूर्वोक्त सामान्य विशेष पने द्वारा लेश्यानि का वर्णन। तीन काल संबंधी क्षेत्र का वर्णन, मेरु से सहस्रार पर्यंत सर्वत्र पवन के सञ्चार का वर्णन। जंबूद्वीप समान लवण समुद्र के बंड, लवण के सहस्र अन्य समुद्र के बंड करने का विधान। जलवर रहित समुद्रों का मिलाया हुआ क्षेत्रफल के प्रमाण का; द्वादिह के उपजने गमन करने का वर्णन। काल अधिकार में कृष्णादि लेश्या तितने काल रहे उसका वर्णन। वहाँ प्रसेग या ऐकेन्द्रो विकलेन्द्रो विषे उत्कृष्ट रहने के काल का वर्णन। भावाधिकार में छहो लेश्याओं में षोडाशिक भाव के सञ्चार का वर्णन। अल्प बहुत्व अधिकार में संख्या के अनुसार लेश्याओं में परस्पर अल्प बहुत्व का व्याख्यान है। इस प्रकार सोलह अधिकार कह कर लेश्या रहित जीवों का व्याख्यान है।

(१६) मय मार्गणा अधिकार—पृ० ५५६ से पृ० ५६७ तक।

मय प्रमथ्य और मय प्रमथ्य पने से रहित जीवों का स्वरूप। संख्या के कथन में मय और प्रमथ्य जीवों का प्रमाण वर्णन। ह्य, क्षेत्र, काल, भवभाव-रूप पंच परिवर्तननि के स्वरूप का, अथवा जिस कम से परिवर्तन होवे उसका वर्णन, परिवर्तनों के काल, अनादि से जैसे जैसे परिवर्तन हुए उनके प्रमाण का वर्णन है। उसमें सृष्टी आदि सुवर्गों के स्वरूप सहस्रदृष्टि वाला वर्णन। योग संस्थानादिक का वर्णन।

(१७) सत्रहवां सम्यक्त्व मार्गणाधिकार—पृ० ५६८ से ६१६ तक

सम्यक्त का स्वरूप, साराग वीतराग के भेदों का वर्णन, पट, द्रव्य, नौ पदार्थ श्रद्धान रूप लक्षण । पट द्रव्य का वर्णन में सात अधिकारों का कथन । उसमें नाम अधिकार में द्रव्य एक या दो भेदों का वर्णन, जीव अजीव के दो भेद । सुदुर्गल का निर्वक्ति लिये लक्षण । सुदुर्गल परमाणु के आकार का वर्णन पूर्वक रूपों अरूपों अजीव द्रव्य का कथन, उपलक्षणानुवादाधिकार कहा द्रव्यनि के लक्षणों का वर्णन, उसमें गति आदि जिहा जीव सुदुर्गल हैं । उनका कारण धर्मादिक हैं उनका इष्टांत पूर्वक वर्णन । वर्तनाहेतुत्व काल के लक्षण का इष्टांत पूर्वक वर्णन मुख्य काल के निश्चय होने का, काल के धर्मादिक के कारण पाने का वर्णन । समय आवलों और व्यवहार काल के भेदों का वर्णन, उसमें प्रसंगवश प्रदेश के प्रमाण का, अर्तमुहूर्त के भेदों का, व्यवहार काल जानने का निमित्त का वर्णन व्यवहार काल के अर्थांत अन्तर्गत वर्तमान भेदों के प्रमाण व्यवहार निश्चय काल का स्वरूप स्थिति अधिकार में सर्व अपने पर्यायनिका समुदाय रूप अव-स्थान का वर्णन, क्षेत्राधिकार में जीवादिक जितना क्षेत्र शेकें उनका वर्णन । प्रसंगवश तीन प्रकार आधार व जीव के समुदायादि क्षेत्र का वासकोच विस्तार शक्ति का सुदुर्गलादिकों की अवगाहन शक्ति का वा लोक के स्वरूप का वर्णन । संख्याधिकार में जीव द्रव्याधिक और उनके प्रकाशों का वर्णन, द्रव्य क्षेत्र काल भाव मान का वर्णन हैं । फिर स्थान स्वरूपाधिकार विषे द्रव्यों का वा द्रव्य के प्रदेशों के चल पचल पने का वर्णन । अनुवर्गणादि ते इस सुदुर्गल वर्गणों का वर्णन । उन वर्गणों में जितने जितने परिमाण मिलें उनके आहारादिक वर्गणा से जो जो कार्य विषये उनका अवश्य, उत्कृष्ट प्रत्येकादि वर्गणा जहाँ मिले उसका वर्णन । सुदुर्गल के स्थूल आदि छै भेद — स्कन्ध, प्रदेश देश इन तीन भेदों का वर्णन हैं । फल अधिकार में धर्मादिक, का गति आदि साधन रूप उपकार, जीवों के परस्पर उपकार, सुदुर्गलों का कर्मादिक वा सुबादिक उप-कार, प्रदोत्तर सहित उनका वर्णन । कर्मादिक के सुदुर्गल ही हैं । कर्मादिक जिस जिस वर्ग, से उपजे उनका वर्णन, स्थित रूप के गुणों के अंशों से सुदु-र्गल का संबंध । पट द्रव्य का वर्णन, काल विना, पंचाधिकाय, नव पदार्थ जीव अजीव का पट द्रव्यों में वर्णन । उपशम संपक अंशों वाले निरंतर घटसमयों में जितने जितने हैं । सुगपत बोधिक बुद्धि आदि जीव जितने हैं उनका वर्णन, सकल संयमियों के प्रमाण का वर्णन । साक नरक के नारको मवनांत्रिक सौधमें द्विकादिक द्वय, तिर्यंच मनुष्य यह जितने जितने मिथ्यादृष्टि आदि गुण स्थानों विषे पाये जायें उनका वर्णन, गुण स्थानानि विषे पुण्य जीव पाप जीवों का भेद वर्णन । फिर सुदुर्गलोक द्रव्य पुरुष पाप का वर्णन, पासवर्षय सेवर निजरा मोक्ष रूप सुदुर्गल का प्रमाण वर्णन । पट द्रव्यादिक का स्वरूप कह कर उनके अज्ञान

रूप सम्यक्त्व के भेदों का वर्णन, स्थायिक सम्यक्त्व के भेदों का वर्णन । स्थायिक सम्यक्त्व होने के कारण के स्वरूप का वर्णन, उसको पाने से जितने मयों में मुक्ति होइ उसका वर्णन; उपशम, समाप्ति का स्वरूप, कारण एवं लक्षण आदि सामिग्रो का जिनके उपशम, सम्यक्त्व होने उसका वर्णन, प्रसंगवश अयु बंध हुए पोछे सम्यक्त्व बत होने न होने का वर्णन । सासादन मिश्र मिथ्या जीव का वर्णन है जीवों की संख्या के वर्णन में स्थायिक उपशम, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन, मिश्र जीवों का प्रमाण, नव पदार्थों का प्रमाण । वहां जीव और अज्ञात में सुदृगल धर्म, अधर्म प्रकाश, काल और पुण्य पाप रूप जीव और आसन्न सबर निर्जरा बंध मोक्ष इनके प्रमाण का निरूपण ।

(१८) अहारहवां संज्ञा मार्गण अधिकार—पृ० ६१७ से पृ० ६१८ तक ।

संज्ञा का स्वरूप, संज्ञो, असंज्ञो जीवों के लक्षण का वर्णन, और वहां संख्या के वर्णन में संज्ञो, असंज्ञो जीवों के प्रमाण का वर्णन ।

(१९) उन्मोक्षवां अहार मार्गण अधिकार—पृ० ६१९ से पृ० ६२१ तक

अहार का स्वरूप और निकटिका और आहारक जिनके होवें उनका जहां प्रसंग है वहां सात समुद्र घातनि के नाम व समुद्रात के स्वरूप का और आहारक, अनाहारक के काल का वर्णन । आहारक जीवों का प्रमाण वर्णन है वहां प्रसंग-वश प्रक्षेप योगेन्द्रुति मिश्रपिंड इत्यादि सूत्र कटि मिश्र के व्यवहार का कथन ।

(२०) बोसर्वा, उपयोग अधिकार में—पृ० ६२१ से ६२२ तक

उपयोग के लक्षण, साकार, अनाकार भेद, उपयोग है सा व्याप्ति अयाप्ति अक्षमबो दोष रहित जीव का लक्षण है उसका वर्णन, केवल ज्ञान केवल दर्शन बिना साकार अनाकार उपयोगों का काल अंतरमूर्त मात्र है उसका वर्णन, जीवों का संख्या साकारावयोन विषे ज्ञान मार्गणावत् और अनाकारो पयोन विषे दर्शना मार्गणावत् का वर्णन ।

(२१) इक्षोसर्वा आवादेश योग निरूपण अधिकार—पृ० ६२३ से ६३७ तक ।

गति आदि मार्ग रामभेदों में क्या समय गुण स्थान और जीव समाप्ति का वर्णन, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व विषे पयात्त अपयात्त आसा गुण स्थाने का विशेष वर्णन । गुण स्थानों में समय तेजो जी व समाप्ति पयात्त प्राण संज्ञा चौदह मार्गणा के भेद उपयोग तिनका वर्णन । मार्गणा व उपयोग के स्वरूप का भी कुछ वर्णन, योग भव्य मानेजानि के भेदनिंका व सम्यक्त्व मार्गणा विषे प्रथम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का इत्यादि का विशेष वर्णन, गति आदि कई मार्गणानि विषे पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा कथन ।

(२२) वाईसवां अधिकार आलाप—पृ० ६३८ से ७५२ तक ।

आलाप अधिकार में मंगलाचरण कर सामान्य पर्याप्त, अर्थात् कर तीन आलाप, अनवृत्ति करण में पांच भागों की अपेक्षा पांच आलाप उनका गुण ज्ञान चौदह मार्गणा के भेदों में यथा संभव कथन है । उसमें गति मार्गणा विषे विशेष कथन है । गुण ज्ञान मार्गणाज्ञान में गुणज्ञानादि बीस प्रकृष्टता यथा संभव आलापति को अपेक्षा निरूपण करनी । वहाँ पर्याप्त अर्थात् एकेन्द्रियादि जीवों के संभव से पर्याप्त प्राण जीव सामानादिक का कुछ वर्णन कर यथा योग्य सर्व प्रकृष्टता जानने का उपदेश है । यहूरी उनके जानने का मंत्रों द्वारा कथन । पहिले मंत्रों विषयक जैसे अनुक्रम हैं वह समस्या है या विशेष है सा कथन । एक एक रचना विषे बीस बीस प्रकृष्टता का कथन स्वरूप कह से चउदह मंत्रों की रचना है उसमें कोई रचना समान ज्ञान बहुत रचनाओं को एक रचना है । फिर मन पर्यय ज्ञानादिक में एक होवे अन्य न होवे उसका वर्णन । उपशम श्रेणी से उतर, मरण हुए उपजने का, सिद्धानि विषयक संभवसौ प्रकृष्टतानिका निक्षेपादिक प्रकृष्टता जानने के उपदेश का वर्णन है । फिर आशीर्वाद । टीकाकार के बचन

“जीव काण्ड नामा महाअधिकार”

संपूर्ण

(२) संजीव काण्ड नामा महाअधिकार (पृ० से पृ० तक)

(१) प्रथम अधिकार—पृ० ७५३ से ७८५ तक ।

समुत्क्रांति अधिकार में—मंगलाचरण, प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा का स्वरूप, जीव कर्म का संबंध, उनका अस्तित्व, इष्टांत पूर्वक कर्म परमाणु का ग्रहण, बंध उद्दय, सत्त्वस्व कर्म परमाणु, का प्रमाण, ज्ञान वर्णादिक आप भूल प्रकृतियों के नाम । धातो धातो भेद उनके कार्य । कर्म संभवने का वर्णन, इष्टांत निरुक्ति लिये इनके स्वरूप का वर्णन, इन ही उत्तर प्रकृति का कथन, पंच निद्रा तीन दर्शन मोक्ष होने के विधान, पंचशरीरों पंद्र मंगनिका विवक्षित संदहन वाले देव नरक गति में जहाँ उपजें उनका वर्णन, कर्म भूमि स्थितों के तीन संवर्मान धाताप, प्रकृति के स्वरूप स्वामित्व । मतिज्ञान, वर्णादि उत्तर प्रकृति के निरुक्ति लिये स्वरूप का वर्णन । प्रसंगवश समस्त के केवल ज्ञान के सद्भाव विषे प्रश्नात्तर । सात धात, सात उपधातु । अमेद विविक्षा ज्ञा प्रकृति गमित हो उसका वर्णन, बंध उद्दय सजा रूप जितनी प्रकृतियाँ हैं उनका वर्णन । धातिया में सर्वधातो देश धातो प्रकृतियों का वर्णन, सब प्रकृतियों में प्रशस्त अपशस्त विषे का वर्णन, प्रसंगवश संशय विषयक अनव्यवसाय का वर्णन । तीन प्रकार के धातियों का कथन, प्रकृति के चार निक्षेप नामादि निक्षेप का स्वरूप कह नाम निक्षेप का धार

तदाकार अतदाकार रूप दो प्रकार थापना निक्षेप का और आनमने आनम रूप दो प्रकार द्रव्य निक्षेप का जो आनम के व्यापक तदपत्ति रिकारूप तीन प्रकार भूत, भावो वर्तमान का ज्ञापक शरीर के तीन भेदों का कथन बहुत स्वाधित्यक्त रूप भूत शरीर के तीन भेदों का व्यक्त के भक्त प्रतिज्ञा इंगितो पायोपनमन रूप भेद भक्ति प्रतिज्ञा उत्कलन मध्य, तन्मय रूप तीन प्रकार तदपत्ति रिकारूप आनम द्रव्यके कर्मते कर्म भेदों का फिर भाव निक्षेप के आनमने आनम भेदों का वर्णन । मूल प्रकृतिनि विषे इन कति उत्तर प्रकृति विषे वर्णन है । और दो आना-भाव कर समुच्चय रूप वर्णन है ।

(२) दूसरा अधिकार—बैंज उद्यम सत्त्वयुक्तस्त्व नामा अधिकार—पृ० ७८
से ११८ तक

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्तवनादिक का लक्षण बतौन बहुरि ।
बंध व्याख्यान विषय बंध के प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश रूप भेदों का चौर तिन
विषय उत्कृष्ट अनुसृष्ट जगन्मय अज्ञान्य परने का, इन विषय भौलादि जनादि अथ
अधुव संभवने का बतौन । प्रकृति बंध का कथन विषय गुण स्थाननि विषय प्रकृति
बंध के नियम का, तहां भो तोथैकर प्रकृति बंधन के विशेष का, चौर गुण स्थानों
विषय व्युत्पत्ति बंध संबंध प्रकृतियों का, तहां भो व्युत्पत्ति के स्वरूप दिखावने
को दूषार्थिक पर्यायार्थिक, नपको अवेशा का गति आदि मार्गना के भेदों के
विषय सामान्य पनै संभव मे गुणस्थान, अयोव्युत्पत्ति बंध संबंध प्रकृतियों के
विशेष का, मून उत्तर प्रकृतिनि विषय संभवने सादितै, आदि देकर बंध का, वहां
अथ प्रकृतियों में संपत्तिपक्ष निःप्रतिपक्ष प्रकृतिनिका, निरंतर बंध होने के कान
का बतौन । स्थिति बंध के बतौन में मून उत्तर प्रकृतियों के उत्कृष्ट स्थिति बंधका
चौर उत्कृष्ट स्थिति बंध संज्ञक पंचेन्द्रियके हो होय उसका चौर जिस परिणाम
में या जिस जीव के जिस प्रकृति का उत्कृष्ट स्थिति बंध होय उसका, वहां
प्रसंग या उत्कृष्ट रूप प्रथम संवत्सरे परिणामों के स्वरूप दिखाने को अनु-
कृष्ट आदि विधान का चौर मून उत्तर प्रकृतियों के जगन्मय स्थिति बंध के प्रमाण
का जगन्मय स्थिति बंध जिसके होय उसका बतौन । एकेंद्रो वेन्दो नेन्दु चौान्दो
संसृजो संज्ञो पंचेन्द्रो जीवों के मोहादिक को उत्कृष्ट जगन्मय स्थिति के प्रमाण, प्रसंग
पारानिन के अवाया के कान भेद कंदकनिने प्रमाण, भेद प्रमाण, गुणित कांडक
प्रमाण को उत्कृष्ट स्थिति विषय कपौरी जगन्मय स्थिति कर प्रमाण होने का बतौन है ।
बहुरि एकेंद्रियादि जीवों के स्थिति भेदों को स्थापन करि तहां चौादह जीव
प्रमासति विषय जगन्मय उत्कृष्ट स्थिति बंध चौर अवाया चौर भेदों के प्रमाण का
चौर तिनने जानने का विधान बतौन है । वहां प्रकृतियों का जगन्मय स्थिति बंध
जिनके होय उसका, चौर जगन्मय आदि स्थिति बंध विषयक सादि नै आदि देकर

संभवपन को और विगुह संज्ञेश परिमाणों से जैते ज्ञान्य उच्छ्रित स्थिति बंध होय उसका, प्रवाधा के लक्षण, मोहादिक को प्रवाधा के काल का वक्षेत्, प्राय को प्रवाधा के विशेष का तथा प्रसंग पाकर देव नारको भोग भूमियों कर्म भूमियों के प्राय बंध होने के समय का, उदोर्णा अपेक्षा, प्रवाधा काल के प्रमाण का प्रसंग पाकर अचला बली, उदया बलि उपरितन स्थिति विषय कर्म परमाणु खिरने का उदोर्णा के स्वरूप का, प्राय या अन्य कर्मनि के निषेकनि के स्वरूप का संक संदृष्टि निषेकनि पूर्वक विषय द्रव्य प्रमाण का तथा गुण हानि प्रादि का वक्षेत् है ।

बहुवि सनभान बंध का व्याख्यान विषय प्रकृतियों का अनुभाग जैसे संज्ञेश विगुह परिणाम निकारि वक्षे है उसका और जिस प्रकृति का जाके तोष वा ज्ञान्य अनुभाग वक्षे है उसका वहां प्रसंग पाकर अपरिवर्तन मान, परिवर्त मानमध्य परिणामनि के स्वभादि का और उत्कृष्टादि अनुभाग बंध विषय सादिने प्रादि देकर भेदों के संभवपने का वक्षेत् बहुवि सात्त्विकानि विषय लातुदाक पचि शील भाग रूप अनुभाग का तथा देश प्राति या स्पर्शकनिका मिध्यात्व विषय विशेष है उसका वक्षेत्, जिन प्रकृतियों विषय जैते प्रकार अनुभाग प्रवर्त उसका वक्षेत् ।

सत्त्विकानि विषय प्रशस्त प्रकृतियों का मुह बंध शर्का असुत रूप प्रशस्त प्रकृतियों का, निवर्काजीर विषय हलाहल रूप अनुभाग का और इन प्रकृतियों के तीन तीन प्रकार अनुभाग प्रवर्त उसका वक्षेत् । प्रदेश बंध का पथन विषय एक क्षेत्र अनेक क्षेत्र संबंधो वा वहां कर्म रूप होने का योग्य अयोग्यरूप, तिन विषय भी जीव के सदृश को अपेक्षा सादि प्रनादि रूप बुद्धियों का प्रनादादिक कह तदो जिन बुद्धियों को समय प्रवृत्ति में प्रहै उसका वक्षेत् । प्रहै प्रतीय परमाणु के प्रशस्त उनको पाठ या सात मूल प्रकृतियों में जैसे विभाग है उनका दोनाधिक विभाग होने का कारण । उत्तर प्रकृतियों में विभाग का अनुक्रम, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, संतराय में सर्वज्ञातो, देशज्ञातो द्रव्य का विभाग, मति ज्ञानावरणादि प्रकृति में सर्वज्ञातो, देशज्ञातो स्पर्शकनिका, उसमें अनुभाग संबंधो नाना गुण हानि, अयोग्याभ्यस्त द्रव्य स्थिति गुण हानि का प्रमाण का कर उसमें वर्णना का प्रमाण ला उसमें जहां देशज्ञातो, सर्वज्ञातोपना प्राया जाय उसका वक्षेत् । चार सात्त्विक कर्मों का उत्तर प्रकृतियों में कर्मप्रमाणों के विभाग का वक्षेत्, संजलन और नोकपाय में विशेषण । नोकपाय के सुषण् बंध । उनके निरंतर बंधने का काल । संतराय को प्रकृतियों में सर्वज्ञातोपना न होने का वक्षेत् । सुषण् नाय कर्म को तैस प्रादि प्रकृति बंधे उनका विभाग । जेदनादादिक को एक एक दो प्रकृति बंध इससे इसमें जहां कहीं जलन बंध इससे वहां विभाग न होने का वक्षेत् । मूल उत्तर प्रकृतियों का उत्कृष्टादि प्रदेश बंध में प्रादि इत्यादि भेद संबधने का वक्षेत् । जिस प्रकृति का उत्कृष्ट ज्ञान्य प्रदेश बंध जिसके हो उसका वक्षेत् । स्तोत्र सा एक जीव के सुषण् जितनी जितनी

प्रकृत बंधों उनका वर्णन । योगनिका का कथन । उपपाद एकांत वृद्धि परिणाम रूप योगनि के स्वरूपादि का वर्णन । योगनि अविभाग प्रतिच्छेदन वर्ग वर्गणा स्पर्शक गुण हानि नाना गुण हानि आननि के स्वरूप प्रमाण विधान का योग शक्ति व प्रदेश अपेक्षा विशेष वर्णन है । योगनिका जघन्य आन से लेकर आननि में वृद्धि के अनुक्रम तक वर्णन । सूक्ष्म निर्गादिवा लक्ष्मि अर्थात्तक का जघन्य उपपाद योग आन से लेकर ८४ आननिका, बीच बीच में जिनका आनो (स्वामी) न मिले उनका, उनमें गुणवार के अनुक्रम का, जघन्य आन से उत्कृष्ट आन के गुण कार का वर्णन । तीन प्रकार योग निरंतर जितने काल प्रवर्त उनका पण्योत त्रस संबंधो परिणाम-योग आनो में जितने जितने योग आन, दो आदि पाठ समय परवर्त निरंतर प्रवर्त उनके प्रमाण लाने का कालयव मध्य रचना । पण्योत त्रस संबंधो परिणाम योग आननि में जितने जितने जीव मिले तिनके प्रमाण जानने का गुण हानि आदि विशेषता युक्त जीव यव मध्य रचना का चौर योग आनो से जितना जितना प्रदेश बंध हो उसका, उसका जघन्य से उत्कृष्ट आन पर्यंत बंधने क्रम का बीच बीच जितने अविभाग प्रतिच्छेद हों उनका वर्णन है । चार प्रकार बंध के कारणों का कथन । योग आनादिक के अल्प बहुत्व का वर्णन । योग आन श्रेणो के असंख्यातयो मात्र मात्र उनका वर्णन । असंख्यात लोक गुने कर्म प्रकृतियों के भेदों के वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद । क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन । उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद । क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन । उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन, उनमें एक एक प्रकृति को अन्याद उत्कृष्ट पर्यंत स्थिति भेदों का कथन है । उनसे असंख्यात गुने स्थिति वंचाध्यवसायनिका वर्णन, द्रव्य स्थिति गुण हानि निषेक त्रयादिक को स्थिति बंध का कारण परिणामों का स्तोत्रसा । फिर उनसे असंख्यात लोक गुने अनुभाग वंचाध्यवसाय आननि का वर्णन । उसके अन्तर्गत द्रव्य स्थिति गुण हान्यादिक अनुभाग का कारण परिणामों का स्तोत्रसा कथन । उनसे अनंत गुने कर्म प्रदेशों का वर्णन । द्रव्य स्थिति गुण हानि नाना गुण हानि त्रय निषेकों का एक संक्षिप्त वा अर्थ करि कथन । एक समय में समय प्रवद्ध मात्र गुदगल बंध, एक एक निषेक मिल कर समय प्रवद्ध मात्र हो निर्देर ऐसे होते स्पर्श गुण हानि गुणित समय प्रवद्ध मात्र सत्त्व रहे उसका विधान जानने के लिये त्रिकोण पत्र को रचना । उदय के वर्णन में उदय प्रकृतियों का नियम । गुण आनो व्युच्छित उदय, अनुदय प्रकृतियों का वर्णन । उदीरणामे विशेष कह गुण आनो में व्युच्छिति उदीर्णा अनुदीर्णा रूप प्रकृतियों का वर्णन । मार्गैय में उदय प्रकृतियों का कह मति आदि मार्गैया के भेदों में संभव संगुण आनो को अपेक्षा लिये व्युच्छिति

उदय अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। सत्त्व के कथन में तीर्थंकर आहारक की सत्ता का, मिथ्या दृष्ट्यादि विषे विशेष और आयु बंध हुए पीछे सम्यक्त्व ज्ञत होने का विशेषत्व, क्षायिक सम्यक्त्व होने का विशेष कह मिथ्या दृष्टि आदि सात गुण स्थानों में सत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। ऊपर श्वेक श्रेणी अपेक्षा व्यञ्जित सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। उपशम श्रेणी विषे इकोस मोह प्रकृति उपशमा बने का कम। सत्त्व प्रकृतियों का कथन। मार्गणा में सत्ता असत्ता प्रकृतियों का नियम। गति आदि मार्गणा के भेदों में यथा संभव गुण स्थानों को अपेक्षा लिये व्यञ्जित सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। इन्द्रिय काय मार्गणा में प्रकृतियों को उद्देलना का इत्यादि अनेक वर्णन।

(३) तीसरा अधिकार—विशेष सत्ता—पृ० ९६९ से पृ० ९८९ तक।

एक जीव की एक काल प्रकृति मिले उनके प्रमाण को अपेक्षा स्थान स्थान में प्रकृति बदलने की अपेक्षा भंग उनका वर्णन। नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्थान भंगों का स्वरूप कर गुण स्थानों में सामान्यवत् प्रकृतियों का वर्णन करके विशेष वर्णनों में मिथ्या दृष्ट्यादि गुण स्थानों में जितने जितने स्थान चयवा भंग हो उन को कह कर जुदा जुदा कथन में उनका विधान वा प्राकृतिक घटने बंधने बदलने के विशेष का बड़ाबु बवड़ाबु अपेक्षा वर्णन है। मिथ्या दृष्टि में तीर्थंकर सत्ता वाले के नरकायु हो का सत्व हो उसका वर्णन। एकैन्द्रिय आदिक के उद्देलन्य का और सासादन में आहार सत्ता के विशेष का मिथ्य में अनंतानुबंधी रहित सत्व स्थान जैसे संभव उसका असंपत्त में मनुष्यायु तीर्थंकर सहित एक सौ चतु-तीस प्रकृति की सत्तावाले के एक वा दो वा तीन हो कल्याण कहो उनका अपूर्व करणादि विषे अपश्मक श्वेक श्रेणी अपेक्षा का इत्यादि अनेक वर्णन है। वगुरि आचार्यों के मत जो विशेषत्व है। उसके कथन पर उसकी अपेक्षा की कथन है।

(४) चौथा अधिकार—त्रिचूलिका पृ० ९९० से पृ० १००४ तक।

नौ प्रश्नों द्वारा चूलिका का व्याख्यान। पहिले तीन प्रश्न करना और उनके उत्तर में जिन प्रकृतियों को उदय व्यञ्जित से पहिले बंधु व्यञ्जित युगपत् दुई उसका वर्णन, फिर तीन प्रश्न कर के उनके उत्तर में जितना चयना उदय होते हो बंधु हो उनका और जिनका अन्य प्रकृतियों का उदय होते हो बंध होने उनका वर्णन। फिर तीसरा तीन प्रश्न कर तिनके उत्तर में जिनका निरंतर बंध हो उनका और जिनका सांतर बंध हो उनका और जिनका सांतर निरंतर बंध हो उनका कथन। यहाँ तीर्थंकरादि प्रकृति निरंतर बंधो जैसे उसका और सप्रतिपक्ष निप्र-तिपक्ष अवस्था में सांतर निरंतर बंध जैसे संभव है उसका वर्णन है। दूसरी पंच

भाग द्वार चूलिका का व्याख्यान में मंगलाचरण कर उद्देलन विध्यात श्रवः प्रवृत्त गुण संक्रम सर्व संक्रम इन पांच भाग द्वारन के नाम स्वरूप भाग द्वार जिन जिन प्रकृतियों में गुण स्वानों में संभवें ताकर वर्णन । सर्व संक्रम भाग द्वार गुण संक्रम भागद्वार उत्कर्षण वा अपकर्षण भागद्वार श्रवःप्रवृत्त भागद्वार योगों में गुणाकार स्थिति में नाना गुणहानि पत्य के प्रवृत्तौद पत्य का वर्गमूल स्थिति विषे गुणहानि प्रायाम, स्थिति विषे प्रयोान्याभ्यस्त राशि, पत्य कर्म को उत्कृष्ट स्थिति, विध्यात संक्रम भागद्वार, उद्देलन भागद्वार अनुमान विषे नाना गुणहानि, दो गुणहानि, प्रयोान्याभ्यस्त इनका प्रमाण पूर्वक श्रवः बहुत्व का कथन । तीसरी दश करल चूलिका के व्याख्यान में वंघन उत्कर्षण, २ संक्रम, ३ अपकर्षण ४ उदीर्ण, ५ सत्व ६ उदय ७ उपशम ८ निवृत्ति ९ निःकांचना, १० इन दश करणानि के नाम स्वरूप जिन जिन प्रकृतियों या गुण स्वानों में जैसे जैसे संभवें उनका वर्णन ।

(५) फिर पांचवां वंघ उदय सत्व सहित खान समुत्कौर्थन नया अधिकार पु० १००५ से पु० ११५३ ।

मंगलाचरण, एक श्रव के गुणपत् संभवतो वंघादिक प्रकृतियों का प्रमाण रूप खान या वही प्रकृतियों के बदलने से हुए घंमति का वर्णन । मूल प्रकृत के वंघ खान । भुजा कारादि वंघ विशेष का, भुजाकार पत्य तर अवस्थित श्रव कर्तव्य रूप वंघ विशेषों का स्वरूप का वर्णन । मूल प्रकृति के उदय खान उदीर्णा खान, सत्व खानों का वर्णन । उत्तर प्रकृतियों के कथन में दर्शनावस्था मोहनोय नाम को प्रकृति विशेष है तहां दर्शना वरण के वंघ खानों का वर्णन । गुण खान अपेक्षा भुजा कारादि विशेष संभन का दर्शनावरण के गुण खान वंघ खान उदय खान सत्व खान मोहनोय के वंघ खान । प्रकृतियों नाम जानने को भूवर्चयो प्रकृत का, कूट रचना प्रादि का । प्रकृति बदलने से हरा शंखियों वंघ खानों में संभव से भुजा कारादि विशेषों का भुजा कारादि के लक्षण सामान्य अवकृत्य घंमियों की संख्या, भुजा कारादि संभवन का विधान, गुण खान में चहुना उतरना, इत्यादि का विशेषत्व । मोह के उदय खान । उनको प्रकृति का विधान । संख्या । मिलाई हुई संख्या । गुण खान में संभव से उपयोग, शेष, संयम, लेख्या, सत्यकृत्व उनकी अपेक्षा । मोह खान का प्रकृतियों का विधान संख्या प्रादि का अनंतानुबंधी रहित उदय खान । मिथ्यादृष्टि को अप-चांत अवस्था में न पाइये इत्यादि विशेष वर्णन, मोह सत्व खाननिका वर्णन का या तहां प्रकृति घटने का और वह खान गुण खानों में जैसे संभवें उनका, और अनिवृत्ति करल में उसका वर्णन । नाम कर्म का कथन में प्राचार भूत इकता-लोस श्रव पद चौतीस कर्म पदों का व्याख्यान कर नाम के वंघ खान का और वे गुण खानों में जैसे संभवें उनका और वे जिस जिस कर्म पद सहित वंघ हैं उसका

घौर उनमें कम से नौ घुव बंधों आदि प्रकृतियों के नाम का, तीस केव आदि दै कर नाम के बंध खाननि विषे जो जो प्रकृति जैसे जैसे हैं उनका बनेन । प्रकृति बदलने से हुए भंगियों का बने हैं । यहां पसंग वा स्वयं भूमण सपुद पर कूणानि विषे कर्म भूमियां तिर्यंच बाहर सूक्ष्म परिचात अघरिचात अग्निकायिक आदि जीव जहां उपजै उसका सूक्ष्मनिगोदंस चाप मनुष्य सकल संयमन प्रह इत्यादि विशेष का अपर्चात मनुष्य जहां उपजै उसका बनेन । भोग भूमि कुमोग भूमि के तिर्यंच मनुष्य, कर्म भूमि के मनुष्य जहां उपजै उसका बनेन सर्वार्थ सिद्धि से लगाय भवतत्रिक देख जहां उपजै उसका बनेन । व्यवन उत्पादक कह चौदह मार्गणा में गुण खान की अपेक्षा लिए जैसे जो जो नाम कर्म के बंध खान संभव उनका बनेन है । गति इन्द्रिय काय काय भोग वेद मार्गणा तो लेखा अपेक्षा बंध खानों का कथन है । कषाय मार्गणा में अनंतानु बंधों आदि जैसे उदय होवै उसका या इनके दश घातो सब घातो, स्पर्शकनिका, सम्भक्त्य संयम घातने का वा लेखा अपेक्षा बंध का खान कथन । ज्ञान मार्गणा में गति आदिक को यो अपेक्ष कर बंध खाननिका कथन है । संयम मार्गणा में सामायिकादिक के स्वरूप का घर संयता संयत विषे दो गति अपेक्षा, संयम विषे चार गति अपेक्षा बंध खानों का कथन है । निवृत्य पर्यात देव के बंध खान कहने को देव गति विषे जो जो जीव जहां पर्यंत उपजै उनका बनेन । सासादन में बंध खान कहने जो जो जीव जैसे उपशम सम्भक्त्य को छोड़ सासादन हो उनका कथन । दर्शन मार्गणा में गति अपेक्षा बंध खान । लेखा मार्गणा प्रथमादि नरक । पृथ्वी में लेखा संभवने का जिस जिस सहनन के धारो जो जो जीव जहां जहां पर्यंत नरक में उपजै उनका नरको में पर्यात निवृत्य पर्यात अवस्था अपेक्षा बंध खान का घौर तिर्यंच में ऐकेन्द्रियादिक के वा भूत भूमियां तिर्यंच जो जो लेखा मिले उनका जो जो जीव जिस जिस लेखा द्वारा विव्यंच में उपजै उनका बनेन । उनके निवृत्य पर्यात अवस्था में बंध खाननिका शुभाशुभ लेखा का परिखाम, कषायनिके खान । चौदह लेखा खान । बीस आमुबंध खान वे लेखाओं सुकोस अंश । लेखाओं के पलटने का काम । भूमाभूमि आदि तिर्यंचादि का बनेन । मनुष्य गति में लब्धि अपर्चात, निवृत्य पर्यात दशाष्ट देवगति भव्य मार्गणा में बंध खानों का बनेन । सम्भक्त मार्गणा त्रयंकर सत्ता वालों के तद्भव अन्य भव अन्य भव में मुक्त होने का बनेन । क्षायिक सम्भक्त्य विषे संभवते बंध खानों का बनेन । वेद सम्भक्त्य जिनके हो । प्रथमोपशम । द्वितीयोपशम सम्भक्त्य से जैसे वेदक सम्भक्त्य हो घौर तिनके जो बंध खान हो उनका बनेन । सा सादन मिश्र मिथ्यात्व जहां जहां जिस जिस दृश्य संभव घौर तहां जो बंध खान मिले उनका बनेन है । नाम के उदय खानों का वरन । कर्माण, मिश्रा शरीर,

शरीर पर्याप्ति, उच्छ्वासपर्याप्ति भाषा पर्याप्ति इनपंच कालों के स्वस्व प्रमाणादिक। प्रकृतियों के बदल कर संभव ते प्रगति का वर्णन। नाम के सत्व स्थानिका वर्णन। जिन प्रकृतियों को उदेलता तिनके स्वामो इत्यादि का कथन। सम्पत्त्व देश संयम अनंतानुबंधी विसंयोगजन, उपश्रेणी चढ़ना सफल संयम धरना, ए उच्छ्वासजन जितनी बार हों इनका वर्णन। इकतालोस जीव यहां में सत्व स्थान संभव उनका वर्णन। त्रिसंयोगों ने स्थान वा प्रगियों का वर्णन। मूल प्रकृति उत्तर प्रकृति। दर्शना वर्णन, वेदनोच वर्णन। गोत्र, प्रायु। घात अपकर्ष में बंधने का वर्णन। वर्धमान, भुज्यमान प्रायु के घटने रूप अपवर्तन घात कदलो घात का वर्णन। वेदनोच गोत्र प्रायु के संग। मोह को स्थानानि को अपेक्षा संग मोह का त्रिसंयोग, मोह के बंध उदय सत्व। नाम कर्म के स्थानोक्त संग। गुण स्थानों और चोदह जो समासों में बंध स्थान वा सात्व स्थानादि का वर्णन।

(६) छठवां प्रत्यय अधिकार—पृ० ११५४ से ११६७ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा, चार मूल शास्त्र, सत्तावन उत्तर शास्त्रों का और जैसे स्थानों विषे संभवे उसका उसमें व्युच्छिति वा शास्त्रों के प्रमाण नामादिक का वर्णन। पंच प्रकारों का वर्णन प्रथम प्रकार में एक जीव के एक काल संभव ऐसे जन्मनादि का वर्णन। दूसरे प्रकार में एक एक स्थान में शास्त्र भेद बलेन से जितने प्रकार हों उनका वर्णन। तीसरे प्रकार में उन्हीं कूटों के अनुसार प्रत्येक संचारि विधान से जैसे जैसे शास्त्र स्थानों के कहने का विधान रूप कूटोच्चारण। पांचवें प्रकार में उन स्थानों में संगलाने का विधान। गुणस्थानों में संभवतः भाविकादि का वर्णन।

(७) सातवां भाव चूलिका नाम अधिकार—पृ० ११६८ से पृ० १२०६ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके भावों के गुण स्थान संज्ञा देने इस प्रकार कथन कर पंचमूल भावनिका, उनके स्वरूप का तैयन उत्तर भावनिका मूल उत्तर भावों में प्रत्येक संचार के विधान से प्रत्येक पर संयोगोदिसंयोगो प्रादि संग। जवादि संभवे भावों का वर्णन। एक जीव के सुगम संभव से भावों का वर्णन। गुण स्थानों में मूल भावों के प्रत्येक पर संयोगो द्विसंयोगो प्रादि संगनिका वर्णन। प्रत्येक त्रिसंयोगो, द्विसंयोगो प्रादि संगलान का गणित शास्त्रानुसार विधान। गुण स्थानों में मूलभाव। उत्तर भावों के संग स्थान नत पदगत भेद से दो प्रकार। स्थानों को परस्पर संयोगों को अपेक्षा गुण गुणाकार शेषादि विधान से जैसे जैसे जितने प्रत्येक संग और पर संयोगों में द्विसंयोगो प्रादि का भेद। गुण गुणाकार शेषका प्रमाण। पदगत संग के दो भेदों (१) जाति मदन भव पदों का वर्णन। इन दोनों भेदों के स्वभावादि का कथन। सर्व

प्रत्यय के दो भेद । उनके स्वरूपादि का वर्णन । तीन सौचित्य कुवाद के भेदों का वर्णन ।

(८) घाटवां त्रिकरण चूलिका नामा अधिकार—पृ० १००६ से पृ० १२१६ तक ।

मंगलाचरण करके कारगनिका प्रयोजन । चयकरण का वर्णन । उसके कालादि का वर्णन चार वहाँ समय से सब परिणाम, प्रथम समय संबंधी परिणाम । समय समय प्रतिबृद्ध रूप परिणाम वा द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम व संबंधी परिणामों से खंड रचना कारि अनुकृष्ट विधान । खंडन का वर्णन । एक संदृष्टि व अर्थ अपेक्षा परिणामों का वर्णन समय समय प्रतिबृद्ध रूप परिणाम द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम प्रतिवृत्ति करण में भेद नहीं इस लिये कालादि का वर्णन ।

(९) नवमों कर्म स्थिति अधिकार—पृ० १२१७ से पृ० १२५४ तक ।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके प्रवाधा केलक्षण का व स्थिति अनुसार उसके काल का, वा, उदोदगा अपेक्षा प्रवाधा काल का वर्णन है । कर्म स्थिति में निषेकन का वर्णन प्रथमादि गुण हानि के प्रथमादि निषेकों वर्णन है । स्थिति रचना में द्रव्य, स्थिति गुण हानि, नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त इनके स्वरूपादि का वर्णन । मिथ्यात्व कर्म की नाना गुण हानि अन्योन्याभ्यस्त जानने का विधान । 'प्रथमं प्रथमं गुण गुणिये' इत्यादि करण सूत्रों द्वारा गुणकार रूप पंक्ति के जोड़ देने का विधान । गुण हानि दो गुण हानि के प्रमाण का वर्णन । विशेष जो प्रथम उसके प्रमाण का वर्णन । एक दृष्टि व अर्थ अपेक्षा । मिथ्यात्ववत् अन्य कर्मों की रचना एक संदृष्टि अपेक्षा त्रिकोण में, इस में का प्रयोजन । निरंतर सौत रूप स्थिति के भेद स्वरूपादि का वर्णन । स्थितिव्य का कारण । स्थिति के भेद । अनुकृष्ट रचना । आयु कर्म का विधान । खंडों को समानता असमानतादि के अनेक कथन । अनुमान वय का कारण । अनुमानाध्यवसाय जानने का वर्णन । उन सब का प्रमाण । मूलपंथकृतों के किये हुए प्रथम को संपूर्णता होते हुए प्रथम के हेतु का चासुंद राय राजा के शाशोर्वाद का उसके द्वारा बनाय हुए चैतान्य वा जिन विषय का बोर मातंड राजा के शाशोर्वाद का वर्णन है । फिर संस्कृत टोकाकार प्रथम गुण का वा प्रथम होने के समाचार कहता है, उसका वर्णन ।

(३) संदृष्टि अधिकार (पृ० १२५५ से पृ० तक)

(१) संदृष्टि चूलिका—पृ० १२२५ से पृ० १४४४ तक ।

सहस्रि अधिकार में प्रथम मंगलाचरण, दश प्रकार का कारण, प्रकृति बंधाय पसरण, स्थिति बंधाय पसरण, स्थिति कांडक, अनुभाग कांडक, गुणश्रेणी कालि इत्यादि । कई संज्ञाओं का स्वल्प वर्णन करके प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने का विधान । प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने के योग्य जीविका, पंचलक्षियों के नामादिक कह कर उनके स्वरूप का वर्णन । प्रायोजिता लब्धि में जिस प्रकार स्थिति घटती है और वहाँ चार गति अपेक्षा प्रकृति बंधायसरण होता है उसका, स्थिति अनुभाग प्रदेश बंध का वर्णन है । करणालम्बिका कथन विषय तीन करणानि का नाम कालादिक कह उनके स्वरूप का वर्णन । पञ्चकरण में स्थिति बंधा पसरणादिक भावश्यक होता है उनका वर्णन । अपूर्व करण में चार चार भावश्यक तिनमें गुण श्रेणी निर्जरा का कथन । चाकर्षण किया हुआ द्रव्य को जैसे उपरितन स्थिति गुण श्रेणी प्रायाम उदपावलो में दिया है उसका वर्णन है । उत्कर्षण और प्रवकर्षण किया हुआ द्रव्य का विशेष और प्रति स्थापना का विशेष वर्णन । गुण संक्रमण जहाँ संभव उसका वर्णन । स्थिति कांडक अनुभाग कांडक के स्वरूप प्रमाणादिक । स्थिति अनुभाग कांडक कोत्करण काल का वर्णन—स्थिति अनुभाग सत्य घटाने का वर्णन । अनिवृति करण में स्थिति कांडकादि विधान । अंतर करण करने का और प्रथम स्थिति का वर्णन । अंतर करण का कालपूर्व रूप पोछे प्रथम स्थिति काल का वर्णन । अंतरा याम काल प्राप्त हुए उपशम सम्यक्त्व होने का वर्णन । उपशम सम्यक्त्व का विधान । प्रथमोप सम्यक्त्व में मरण के प्रभाव का वर्णन । सासादन होने का कारण । उपशम सम्यक्त्व का चारों व निष्ठापन में जो जो उपयोग योग्य लेश्या उनका और उपशम सम्यक्त्व के काल स्वरूपादि का वर्णन है । सायिक सम्यक्त्व के विधानादि का वर्णन । स्थिति कांडादिक का वर्णन । मिथ्यात्व मिश्र मोहनों सम्यक्त्व मोहनों विषय स्थिति घटाने का कारण । संक्रमण होने का विधान वर्णन करके सम्यक्त्व मोहनों को पाठ वर्ष प्रमाणास्थिति रहे अनेक क्रिया विशेष होने का वर्णन । गुण श्रेणी स्थिति कांडकादिक में विशेष हो उसका वर्णन । कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने का व वहाँ मरण होते हुए लेश्या वा उपजने व कृतकृत्या वेदक हुए पोछे जो क्रिया हो उनका वर्णन । सायिक सम्यक्त्व के विधान विषय संभव से तैत्तिरीय स्थानों में अल्प बहुत्व का वर्णन । सायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का वा मुक्त होने इत्यादि वर्णन है ।

(२) लब्धिसार चूलिका—पृ० १४४५ से १६२४

चरित्र लब्धिका स्वरूप और भेदों का कथन । देश चरित्र का कथन । वेदक सम्यक्त्व सहित देश चरित्र जो प्रदे उसे दो कारणों का वर्णन । धर्कात वृद्धि देश संयत के स्वरूपादि । पञ्चः प्रवृत्त देश संयत का वर्णन । स्वरूप काला-

दिक । देश संयम में काल के अल्पत्व और बहुत्व का विवरण । जलन्य उत्कृष्ट देश संयम जिसके हो उसका वर्णन । देश संयम में स्पष्टक व अविभाज्य प्रतिच्छेद स्थाननिका, उनके प्रतिपात, प्रतिपाद्य पान अनुभव रूप तीन प्रकारों का वर्णन । सकल चरित्र का वर्णन । उसके क्षायात्मिक औपशामिक क्षायिक तीन भेदों का वर्णन । सकल संयत स्पष्टक का अविभाज्य प्रतिच्छेदों का कथन कर प्रतिपा-
तादि का वर्णन । उपशम चरित्र का वर्णन । उपशम श्रेणी चढ़ने में द्वितीयोपशम सम्यक्त्वों की व्यवस्था । चरित्र मोह कर्म के उपशम करने में आठ अधिकारों का वर्णन । तीन कारण का विधान बंधा प्रसरणादिक का रूप । उपशान्त कषाय से पड़ने की विधि । उपशम श्रेणी चढ़ने वाले बारह तरह के जीवों की विशेष क्रियाओं का वर्णन ।

(२) क्षायिक चरित्र, पृ० १६२५ से १९०४ तक

चरित्र मोह को क्षयण (नाश करने) का विधान । अथः प्रवृत्त करण का वर्णन । अपूर्व करण का स्वरूप । गुण श्रेणी का स्वरूप । गुण संक्रम का स्वरूप । स्थिति संदन का स्वरूप । अनिवृत्ति करण का स्वरूप । स्थिति ग्रंथाद्य सरण का क्रम । स्थिति सत्त्वा प्रसरण का क्रम । क्षयण का स्वरूप । देशघाति करण का स्वरूप । घंतकरण का स्वरूप । घंतकरण का स्वरूप । संक्रमण का स्वरूप । अपगत वेदों की क्रिया का स्वरूप । अनुभाज कांड के घात होने पर जो व्यवस्था हो उसका कथन । कृष्टि क्रिया सहित अपूर्व कषे क्रिया होने में यति वृषमा-
चार्यों की सम्मति । बाह्य कृष्टि करण का काल । पाश्चै कृष्टि का कथन । कृष्टि वेदना का कथन । संक्रमण द्रव्य का विधान । अनु समय अपवर्तन की प्रवृत्ति का कथन । स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ रचना का विधान । दूसरा विधान । क्षौण वृषाय नामा बारहवें गुण स्थान का स्वरूप । पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ़ने वाले का स्वरूप । श्रौवेद सहित चढ़े जीवों के भेदों का वर्णन । नपुंसक वेद सहित चढ़े जीवों का कथन । क्षौण कषाय गुण स्थान के घंत समय का कथन । सयोग केवली गुण स्थान का वर्णन । चार घातियों के क्षय से चार गुणों का प्रगट होना । दुःख का लक्षण । इन्द्रिय जनित सुख का लक्षण केवली के इन्द्रिय जनित सुख दुःख नहीं होने में हेतु । दूसरा हेतु केवली के बाह्य मार्गणा होने में कारण । समुदात में कार्य विधान । समुदात क्रिया के समेटने का क्रम । बाह्य योगों का सूक्ष्म रूप परिणयन होने की व्यवस्था । अयोग केवली का कथन । चौदहवें गुण स्थान के घंत समय से पहले में तथा घंत समय में पचासो प्रकृतियों का (कर्मों का) नाश करने का कथन । ऊर्ध्व लोक के ऊपर मोक्ष स्थान का स्वरूप । इष्ट प्रार्थना । संयकर्ता की प्रशस्ति । घंत मंगल ।

No. 429(b). Moksha Mārga Prakāśa, by Todara Malajī of Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—588. Size— $13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—2,702 Anush-tup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira, (Bara) Bārābankī (Oudh).

Beginning—**यो नमः सिद्धे भाः ॥ यद्य मोक्षमार्गं प्रकाश नामशास्त्रं लिख्यते ॥**

देहा ॥ संगल मय मंगल करन बोल राग विज्ञान ।

नमो ताहि जाते मये घरने तादि महान ॥ १ ॥

करि मंगल करिहौं महा ग्रन्थ करन को आज ।

जाते मिलै समाज सब पात्रे निज पद राज ॥ २ ॥

यद्य मोक्षमार्ग प्रकाशक नाम शास्त्र सा उदय होय है । तहाँ प्रथम मंगल करिये है ॥ नमो ग्रहहंतारं । नमो सिद्धार्थं । नमो उपजायात् । नमो लोच साहर्णं ॥ ३ ॥ यह प्राकृत भाषामय नमस्कार मंत्र ॥ सो महामंगल स्वरूप है ॥ बहुरिया का संस्कृत ऐसा होई ॥ नमो हितेभ्यः नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमः पाचार्येभ्यः ॥ नमः उपाध्यायेभ्यः नमो लोकैः सर्वे साधुभ्यः ॥ बहुरि याका अर्थ ऐसा है ॥ नमस्कार ग्रहहंत के निमित्त ॥ नमस्कार पाचार्यन के अर्थ ॥ नमस्कार उपाध्यायन के अर्थ ॥ नमस्कार साधुनि के अर्थ ॥ ऐसा या विषय नमस्कार किया ।

End—**पद्म-जो कोई सम्यक् जीवन को भी मर्धर गलान पादि पाइ कर है ॥ पर कोई मिथ्या हठोन के न पाइय है ॥ तार्त्तलिसंकता दिक् भंग सम्यक् कैसे कहे हो ॥ जाका उत्तर ॥ जैसे मनुष्य सरोर के हस्त पादाद भंग कहिय है तहाँ कोई मनुष्य ऐसा भी कोई ताके हस्त पादाद विषय कोई न होई ॥ तहाँ वाके मुख सरोर तो कहिय ॥ परन्तु तिन प्रकारन बिना वह सोभायमान सकल कार्यकारी न होई ॥ तहाँ वाके मुख सरोर तो कहिये परन्तु तिन भंगनि बिना वह सोभायमान सकल कार्य कारो न होय ॥ तैसे सम्यक् के निस्संकि तादि भंग कहिय है तहाँ कोई सम्यको ऐसा भी तोय ॥ जाके निस्संकत्त्वादि विषे कोई भंग न होई ॥ तहाँ वाके सम्यक् तो कहिये परन्तु तिन भंगन बिना वह निर्मल सकल कार्य कारो न होय ॥ बहुरि जैसे बांदरे के हस्त पादादि भंग हो है । परन्तु जैसे मनुष्य के होय तैसे नहीं होई हैं कैसे मिथ्या हठोन के भी विषहार उपलिसंकतादि भंग हो है । परन्तु जैसे निश्चय । को सापेक्षा लिये सम्यको के होई तैसे न होय है । बहुरि सम्यक् विषे पचीस मत कहे हैं । पाठ संकादिक मन । पाठ पद । पठ अनापचन । इति**

Subject—प्रथम अधिकार (पौठिका)

(१) पृ० १ से पृ० २० तक—संगलाचरण

पारहतादि को नमस्कार, नमस्कार किये जाने वाले सज्जनों का स्वरूप वर्णन। पाचाव्यों द्विपदों की व्याख्या। पंचपरमेष्ठो पद की व्याख्या। २४ तीर्थंकरों को नमस्कार। अन्य विवादि को नमस्कार।

(२) पृ० २१ से पृ० ३८ तक विषय प्रवेश। सद् शास्त्रों की व्याख्या। श्रोता वक्तादि के गुण।

(३) पृ० ३९ से पृ० ४३ तक-उपस्थित ग्रंथ का सार्थकत्व। दूसरा अधिकार संसार की अवस्था का निरूपण

(४) पृ० ४४ से पृ० ९० तक—कर्म बन्धन का निदान, जीव तथा कर्म सम्बन्ध का समय कर्मभेद, घनादि से धारा प्रवाह रूप द्रव्य कर्म व भाव कर्म की प्रकृति का वर्णन। नाम कर्म के उदय से शरीर होने का वर्णन। जीव तथा आत्मा का सम्बन्ध, जीव के चैतन्यादि गुणों का वर्णन। जीव की भिन्न भिन्न संज्ञाएं। चार प्रकार के कषाय का वर्णन। घनादि संसार संबंधी आधाति कर्मों के उदय के अनुसार आत्मा की अवस्था।

तीसरा अधिकार (संसार दुःख तथा मोक्ष सुख का नियम)

(५) पृ० ९१ से पृ० १४० तक—संसार के दुःखमय होने का वर्णन, दुःख का स्वरूप, उसका मूल कारण, इत्यादि के सुख के मिथ्यात्व का वर्णन, दुःख का मूल कारण—इच्छा का होना। इच्छाओं की पूर्ति के लिये किये गये उपायों का मिथ्यात्व, दुःख तथा उसके कारणों के विनिष्ट होने का उपाय। संसार को छोड़ सिद्धि पद पाने का उपदेश।

चौथे अधिकार सेव्य अधिकार तक

(६) पृ० १४१ से पृ० १७० तक—संसारो दुःखों के जीव रूप मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान तथा मिथ्या चरित्रों के स्वरूप का निरूपण। मिथ्या दर्शन के विशेषत्व का वर्णन। अज्ञान को संसार के मोक्ष के वताय जाने का कारण अथज्ञान का ही नाम मिथ्या दर्शन कह्यन। सब दुःखों का मुख्य कारण कर्म बन्धन का होना। मोक्ष की परिभाषा। संसारिक जीवन के मिथ्या दर्शन को प्रकृति के पाने का उपाय, मिथ्या दर्शन का स्वरूप, मिथ्या ज्ञान का स्वरूप। पदार्थों के इष्टानिष्ट न होने का कथन। जीव के राग-द्वेष का वर्णन।

सातवां अधिकार।

(७) पृ० १७१ से पृ० २५० तक—सहीत मिथ्यात्वादिक का निरूपण। मिथ्या चरित्र की परिभाषा। इसी का विशेष वर्णन-महत् के अर्हत को न मानते हुए

उस पर उनके बितर्क। कर्ता का निषेध करते हुए वेदान्तियों के सृष्टि-निरूपण तथा अन्य कितने ही कार्यों पर आक्षेप करते हुए कृष्णादि के चरित्रों की आलोचना। मायादि की कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुसलमान तथा हिन्दुओं के केवल एक ईश्वर पर वाले सिद्धान्त को समता दिखाते हुए उसका खंडन, वेदान्तियों द्वारा किये गये तत्त्वों के पंचोक्त्यर्थ को मिथ्या ठहराना। शाक्त तथा शैवों पर आक्षेप। वेद पूजकों के अनेक भेद पंथियों द्वारा अनेक मत समर्थन करने पर संपुल्ल को मिथ्या निश्चित कर केवल जैन धर्म ग्रंथों ही का वर्णन। चोतला भाव को महिमा का वर्णन। अन्य मतों ग्रंथों तथा सिद्धान्तों के अनुसार ही जिन धर्म की प्राचीनता के सिद्ध होने का वर्णन। हिन्दुओं के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेदों से भी जैन मत प्राचीन तम होने का प्रमाण। वेदों के सूत्रों के कृत्रिम होने का कथन। जिन तीर्थंकरों की उत्पत्ति इत्यादि पर किये गये कुछ आक्षेपों का स्वयं ही उपलब्ध कर उनका उत्तर देना।

(८) पृ० २५१ से पृ० २७८ तक—जैन धर्म को दूसरी शाखा के मानने वाले श्वेताम्बरियों द्वारा भगवान के स्वरूप आदि पर किये हुए कुछ आक्षेपों के उत्तर। आहार विहार संबंधी कुछ समस्याएँ। भगवान द्वारा किये हुए उपदेशों तथा इन्द्र कृत समवतार के विषय में कुछ न समझ सकी जाने की मनीषा बातों का संशोधन कराना। श्रावक शब्द की व्याख्या। श्वेताम्बर धर्म की शास्त्र कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुनियों की वाचना के सम्बन्ध में कुछ सरणीय बातें। गुरु तथा धर्म का स्वरूप। सम्यग् दृष्टि आदि के कई हुए रूपों में से कुछ का मिथ्यात्व। श्वेताम्बर संप्रदायवालों पर कई आक्षेप श्वेताम्बर मत के सकारण त्याग्य होने का वर्णन।

यहाँ पर अन्य मत निरूपण समाप्त हुआ।

(९) पृ० २७९ से पृ० ३११ तक—गंगा इत्यादि तीर्थों पर किये जाने वाले पिंडादि का निषेध। सूर्यादि की पूजा का भ्रम बताना। जिन धर्मानुकूल की जाने वाली पूजा का महत्त्व। मिथ्या भेष धारण करने का निषेध, मुख्य भेष निरूपण। गुरु सेवन निषेध कुयुक्ति द्वारा गुरुओं की अपाहित करने वालों के मत का निरूपण। गुरु का मुख्य स्वरूप। कुधर्म का निरूपण।

मोक्षमार्ग प्रकाश—शास्त्र विषयक कुदेवादि निषेध वर्णन।

(१०) पृ० ३१२ से पृ० ३५० तक—जो जैन होकर भी इस धर्म में श्रद्धा नहीं रखते उनके विषय में कुछ वक्तव्य। ज्ञान की सद्भावना सदैव मानना। वर्णादिक सामाजिक से आत्मा के भिन्न होने का कथन। शास्त्राध्ययन। तपश्चरण इत्यादि के विषय में की गई कुछ शंकाओं के उत्तर। सम्यग्दृष्टि की सिद्धि के लिये

आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता आत्माचरण विषयक वृत्तादिक के साधनों का कथन । ज्ञान विना तप की असिद्धि का कथन । हिंसादि के त्याग का कथन । प्रतिज्ञा रूप वृत्त का कथन । वैराग्य व्याख्या । आत्मा के विषय में अनुभव करने का कथन । ध्यान की परिभाषा । पर ब्रह्म-त्यागोपदेश । पदार्थ सिद्धान्त कर मोक्ष में ध्यान लगाने का वर्णन । धर्मात्मा को परिभाषा, जिन राजा मानना हो सच्चा श्रद्धान है । मिथ्या दृष्टि का वर्णन; उसकी पूर्णे व्याख्या ।

(११) पृ० ३११ से पृ० ३७७ तक—श्रद्धानों का लक्षण । किसी धर्मिणाय विशेष को लेकर जो जैनी बन जावे उसके पापी होने के संबंध में शंका समाधान के साथ कुछ विचार धारा । विना समझे वृत्ते पूजा पाठ करने वालों के सम्बन्ध में कुछ कथन । इच्छा पूर्ति के लिये जो जाने वालों भक्ति को रागरूप मानकर मोक्ष के लिये बाधक मानना और राग के उदय में भक्ति के न करने का उपदेश । मुनि का सच्चा लक्षण । मुनिभक्ति द्वारा शास्त्रभक्ति का निरूपण । तप तथा धर्म को ही मोक्ष मानने वालों को भूल और इस संबंध में कहे हुए जैन सिद्धान्त के ग्रंथों में कथित वृत्तादि पर जिज्ञासु को शंका और उसका समाधान । सिद्धयने इत्यादि की तुच्छता सिद्ध करते हुए बोधराग भाव हो को प्रशंसा करना ।

(१२) पृ० ३७८ से पृ० ४४१ तक—केवल व्याकरणादि के ग्रंथों के सबलो कन में प्राप्ति का व्यतीत न करके तत्त्व ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश । प्रतिज्ञा के संबंध में कुछ उपदेश । प्राप्त पद के अनुसार ही किया करने का उपदेश । चरित्र के (स. राग, बोधराग) दो भेदों का वर्णन ॥ निश्चयन का निरूपण । व्यवहार के संबंध में कुछ कथन । निश्चय व्यवहार-मोक्ष मार्ग का निरूपण । तत्त्वज्ञ का अन्य क्रियाओं के प्रतिरिक्त भी सम्यक्त होने का कथन । सम्यक्त होने के प्रथम पंचलब्धि का कथन । क्षमापशमादि पंच लब्धियों की व्याख्या । किसी के श्रावत चरित्र को पाकर भी मिथ्या दृष्टि होने और किसी के अंतर्मुहूर्त में ही कैवल्य ज्ञान हो सकने का कथन करते हुए परिणाम विगमने का ध्यान रखने का उपदेश । इस प्रकार यहाँ तक नाना प्रकार के मिथ्या दृष्टियों के कथन करने का उपदेश ।

* जैन धर्मसहित अन्य धर्मावलंबी मिथ्या दृष्टि निरूपण पूर्णे *

(१३) पृ० ४८२ से पृ० ५१८ तक—मिथ्या दृष्टियों को मोक्ष का उपदेश । उपदेश का स्वरूप, उपदेश के चारों अनुयोगों का कथन । प्रथमानुयोग का प्रयोजन । इसी प्रकार अन्य तीनों अनुयोगों के प्रयोजनों का कथन । प्रथमानुयोग विषयक मूल कथा । अन्य तीनों प्रयोजनों के संबंध में कुछ कथा । इन अनुयोगों के

अनुसार उपदेश देने के प्रकारों का वर्णन । चारों अनुयोगों में दिये गये उपदेश, उपदेशों का जैन मतों से ही ग्रहण करने का विधान ।

* मोक्षमार्ग विषय उपदेश स्वल्प प्रतिपादक नाम अधिकार पुणे *

(१४) पृ० ५१९ से पृ० ५८८ तक—मोक्ष मार्ग के स्वल्प का कथन, मोक्ष से आत्म हित होने का कारण । शरीरादि के साथ वृथा मोह सिद्ध कर संसार को दुःख का हेतु सिद्ध करना । मोक्ष अवस्था के हितकारी होने का कथन, मोक्ष के उपाय करने का कथन, मोक्ष का उपाय काल लब्धि प्राप भवितव्य अनुसार बना है अथवा मोहादि का उपसमादि से बना है अथवा अपने पुण्यार्थ और उद्यम से बनता है । इस शंका का निवारण । मोक्ष के निमित्त कर्म से मोह के बंध करने का कथन । उपदेश देने योग्य पुरुषों तथा उपदेशकों के कर्तव्य का कथन । मोक्ष का स्वरूप कथन । सम्यक् ज्ञान तथा ज्ञान चरित्र को एको भाव हो के मोक्षमान बतलाना । आत्मा का लक्षण । सम्यक् दर्शनादि का सच्चा लक्षण । 'वचन' तथा 'अर्थ' को ध्याना । सातों तत्त्वों के यथार्थ अर्थान के आधेन मोक्ष के न होने का वर्णन । अरहंतादि के अर्थान के सम्यक् कथन । आत्म अर्थान का मुख्य लक्षण । सम्यक् के भेद । दोनों भेदों का स्वरूप । पुनः सम्यक् के दश भेदों का कथन । फिर सम्यक् के तीन भेदों का कथन । उन के स्वल्प । संज्ञाजन विसेज्ञाजन का कथन । सम्यक् के विरोध तथा अभाव में कई गये वचनों के उत्तर देकर सात प्रकृतियों के उपसमादिक से सम्यक् के उत्पन्न होने का कथन । सम्यग्दर्शन के आठों अंगों का वर्णन । उनके नाम तथा स्वरूप का वर्णन । पुनः अंत में सम्यक् विषयक पचास गठों का केवल कथन ।

इति ग्रंथ समाप्ति ।

No. 429(c). Triloka Sāra, by Todara Mala of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—814. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—13,431 Anuśṭup ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1844. Place of deposit—Sri Jaina Mandira (Bara), Barabanki (Oudh).

Beginning—॥ ६० ॥ यो नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ त्रिलोक सार नाम ग्रंथ को भाषा टोका लिखिये हैं ॥ दोहा—त्रिभुवन सार अथार गुण जापक नायक संत । त्रिभुवन हितकारी नमो ध्यो अरहंत महंत ॥ १ ॥ तीन भुवन के मुकुट मणि गुण अनन्त मय शुद्ध । नमो सिद्ध परमात्मा धोतरान अविच्छेद ॥ २ ॥ तीन भुवन तिथि जानि के आप आप मय होय । परते भये विरक्त अति नमो महा मुनि

साय ॥ ३ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषे चेत्य चेत्य यह सार । ते सब बन्दी भाव जुत
 सुभकारन सुखकार ॥ ४ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषे अरघ प्रकासन द्वार । जैन वचन
 दोषक नमो म्यान करन गुण द्वार ॥ ५ ॥ ऐसे मंगल रूप सब तिनके बन्दी पाय ।
 पब कलु रचना कहत हो जाना विधि सुखराय ॥ ६ ॥ मंगलाचरन करि श्री मत्
 त्रिलोक सार नामा शास्त्र को भाषा टीका करिये है । इस ग्रंथ को संस्कृत
 टीका पूर्व मई है सो यह संस्कृत गणितादिक के ज्ञान बिना तिस विषे प्रवेस
 होय सकता नहीं ॥ ताते स्तोत्र ज्ञान वालो के त्रिलोक के स्वरूप का ज्ञान होने
 के अर्थे । तिसही अर्थे कुं भाषा करि लिखिये हैं । जो मेरा कर्त्तव्य कछु है नाहीं ।
 जो किछु छुयोपसम ज्ञान के अनुसार तिस सास्त्र का अर्थ ज्ञान ॥ धर्मानुराग
 करि व्याख्या करें ॥

End—

कोई ऐसा जानैगा के भगवान के तो इच्छा नाहीं । इच्छा बिन कैसे डनि
 मरे और कैसे उठे बैठे ॥ ताका उत्तर ॥ भगवान के इच्छा नाहीं इहां तो सत्य ॥
 परंतु भगवान के सरोरादि चारि प्रयातिपा कर्म बैठा रहै ताका निमित्त करि
 मनुष जन काय योग पाइये है । तासु भगवान के मनुका पदेसा का चंचल
 पने । वा बानी का बिस्वा ॥ वा सरोर का नेटना बर डग भला समवे है । यामे
 दाप नाहीं ॥ ठोर ठोर ग्रंथन में कहा है । बहुरि मुनि अर्थ का श्रावक श्रावना ।
 और मनुष्य वा त्रियेच भूमि में गमन करै है ॥ और चारि जातिन के देव व
 विद्याधर प्रकास में भगवान के निकाद वाद् राग मना करै है ॥ भावाथे ॥
 इन्द्रादिक के देव निज भक्ति है ॥ तेतो भगवान के समीप भगवान को सेवा
 करता जाइ है । पर देवा का वृंद कहिये समूह घना ॥ ताते भगवान ताई
 पहुँचि सकै नाहीं ॥ और कोई देव तो भगवान के ऊपर छत्र किया जाइ है ॥ कोई
 देव घोपदार कोसो ना हाथा मर तन मर छड़ी वा घाला वा गुराँछ इत्यादि
 विषा निमित्त बिनय संयुक्त दवाकु भटा उठा करता चलवा जाय है कोई देव
 स्तुति करता चला जाय है ॥ पर भगवान दिसा ईच्छं द्रष्टि करि हालवा जाय
 है । इत्यादि अनेक प्रकार मंगलोक कीय विहार समे विषे बने है । ताका वखैन
 करना समर्थ हम नाहीं ॥ और भागे इन्द्रादिक देव समे सरन प्रगाऊ पूर्वोक्त व
 है । ताविषे भगवान जो स्मित करै है सोसा विहार वखैन जानना । ऐसे विहार
 सहित समोसरवा का वखैन संपूखे । ॐ नमः सिद्धेभ्यः संवत् १९०१ ।

Subject—टीकाकार लिखित विषय ।

(१) पृ० १ से पृ० १० तक—भूमिका ।

(२) पृ० ११ से पृ० २४ तक—सहस्र सृजनाकार विवर्णित विषय विभाग
 के अनुसार ॥

(३) पृ० २५ से पृ० ८२ तक—त्रिलोक सार का परिशिष्ट भाग—गणित ज्ञान रहित जीवों के निमित्त प्रयोजन मात्र शास्त्रोक्त भक्ति विधानों का कुछ बखेन । मूल ग्रंथ में कथन किये गये नामों इत्यादि के समझने के लिये पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या । गणित के भेदोपभेद का सूक्ष्म बखेन तथा पाठकों के व्याख्या के समझने में सहायक होने के समिप्राय से पनेक उदाहरणों का समावेश ।

(१) (मूल ग्रंथ प्रारंभ) लोक सामान्याधिकार ।

(१) पृ० ८३ से पृ० २७५ तक—मूल शास्त्र का संगनाचरण । पंच सधिकारों में विवर्णित विषयों की सूक्ष्म सूचनिका । सर्व साक्षात् के घनतम लोककाश का बखेन, लोक का स्वरूप तथा आकार । प्रसंगवश 'राज' इत्यादि का बखेन । उसके लौकिक मान के घनतम संख्या मान के ज्ञान्य संख्यातादिक इकोस भेदों का बखेन । अधन्य परीत पसंख्यात का व्याखने का कुंडनिका क्षेत्र फल । सरसों प्रमाण बतलाने का खात क्षेत्रफल । सूची क्षेत्रफल सरसों का क्षेत्र इत्यादिकों का कारण करण सूत्र । धृत ज्ञानादिक के विषयों के प्रमाण का बखेन । संख्या मान के विशेष ज्ञान के अर्थ सर्व आरधादि चौदह धारायों का बखेन । उनके स्थान, अनुक्रम और जिस धारा के स्थान के बखेन में जिसका प्रमाण आवे उसका और सब स्थानों के प्रमाणों का बखेन । उनमें द्विरूप वर्ग यादि, तीन धारा है तिनेके स्थाननि का विशेष बखेन । द्विरूप वर्ग धारा का कथन के घनतर पक्ष छेद वर्ग शलाका जानने के कारण सूत्र और द्विरूप घनाघन धारा विषयक प्रश्नि कायक जोवों का विशेषतया प्रमाण कथन । उपमा मान के पक्ष्यादिक पाठ भेदों का बखेन । पक्ष के रोगों की संख्या जानने के लिये सूक्ष्म खात फल करने के कारण सूत्र का और रोग पंगुलादिक के प्रमाण की उत्पत्ति के अनुक्रम का बखेन । पक्षर संज्ञा से चंक जानने का भाषा में उक्त सूत्र बखेन । सागरोपम को सार्थक बतलाने के लिये लवण समुद्र के क्षेत्र फलादि का बखेन । सूर्य गुलादिक का बखेन । उनके तथा पक्ष छेदादि के विधान के जानने के कारण सूत्र कहते हैं । लोक के व्यासादिक का और जहाँ जितना व्यास पाया उसका बखेन । चघोलेक का पाठ प्रकार का और ऊर्ध्वलोक का पांच प्रकार का क्षेत्रफल बखेन । लोक की परिधि का बखेन । उसमें करणादिक जानने के कारण सूत्र । वात बलपनि का बखेन है । उसी के घनतम उनके करणादिक का और उनको जहाँ जैसी मोटाई है उसका इनसे जितना स्थान ठका हुआ है उसका बखेन । तनु वात बलप में सिद्धि के विराजने और पत्रगाहन का बखेन । बसनाली के स्वरूप स्थान प्रमाणादिक का बखेन । उसके अथो भाग में स्थित सात पृथिवियों का नाम बखेन । प्रथम पृथ्वी के तीन भागों के नाम, मुटाई का प्रमाण, पहिले भाग में सोलह पृथिवियों के स्थित

होने तथा उनके नाम का और तीनों भागों के निवासों तथा छः पृथिवियों को मुट्ठाई का वर्णन। पहिली पृथ्वी का तृतीय भाग और छः नीचे वाली पृथिवियों के अंतर्गत नारकियों के बिल होने का वर्णन। उन पृथिवियों में पटल, विल, वहां के शीतोष्ण विलों और इत्यादिक विलों की संख्या का वर्णन। इन्द्र के विलों के और उनके समोपल जो श्रेणी—वज्र हैं उनके नामों का कथन। श्रेणोवर्णों की संख्या तथा वर्णन के कारण कुछ सूत्र। प्रकोपों की संख्या। विलों का विस्तार और बाहुल्य और अंतराल का वर्णन। पृथ्वी के अंत इत्यादि पटलों अंतराल और विलों का तिर्यक अंतराल और आकाशदि का वर्णन। वहां दुर्गन्धता का और उपजने के स्थान का और उन स्थानों के प्रमाण का वर्णन। उनके उपजने के स्वरूप का और वहां यदि उल्लाने के प्रमाण का और नवोन पुराण नारकियों का कर्तव्य कथन और उन विलों में कूर पर्वत नदी इत्यादि जो पाये जाते हैं उनका और वहां के नारकियों की प्रवृत्ति का और बाह्य दुःख साधन का, उनके दुःख का आहारादि का और तोषक सत्त्ववालों का जब दुःख निवारण होता है उसका और नारकियों के दुःख भेद तथा मरण का वर्णन। नारकियों के अवधि श्रेय का वर्णन। नारकों निकल कर वहां उपजें और जो पद न पावें और जो जीव जिस पृथ्वी में उपजें उसका और उनके क्लेशाधित्य का वर्णन। नारकों के वर्णन के पश्चात् लोक का वर्णन समाप्त हुआ।

(२) भावनाधिकार पृ० २७६ से पृ० २९६

मेघनाचरण। भवन वासियों के कुल भेदों के नाम। उनके इन्द्रों के नाम। उनकी पारस्परिक ईर्ष्या का वर्णन। असुरादि के विह। चैत्य वृक्षों के भेद। प्रतिमा मान स्तम्भादि। उनके भवनों की संख्या, स्वरूप तथा स्थानों का वर्णन। देवों के इन्द्रादिक दश भेद। उनके संभव का वर्णन। भवन वासियों में इन्द्रादिक दश भेदों का वर्णन। सेना की संख्या लाने की शूल कार रूप जो, स्थान तिनके जोड़ देने के कारण का सूत्र कथन। इन्द्र तथा अन्य देवों के प्रमाणादिक का वर्णन। भवन वासी केतुराणि की प्राप्ति का वर्णन। भवन वासियों के कुल और उनकी देवी, उनके अंगरक्षकादि की प्राप्ति का विशेष वर्णन। उन कुलों में उद्वास तथा आहारादि का अनुकूल और उनके शरीर की ऊंचाई का वर्णन।

(३) व्यंतर लोक का अधिकार। पृ० २९७ से पृ० ३१७ तक।

उनके प्रमाण का समित मेघन कर उनके कुलों का, उन कुलों के भेदों का वर्णन का, चैत्य वृक्ष का और वहां की प्रतिमा तथा मान स्तम्भादि का वर्णन। उनके कुल भेदों में जो भेद हैं, उनका, कुलों के इन्द्रों की देवियों के प्रमाण का, और कुल भेदों में जो भेद हैं और उनमें जो इन्द्र और इन्द्रों की महादेवियों हैं उनके नामों का वर्णन। इन्द्रों के नाम कव्योपरास्त उनकी गणिका महत्तवियों के

नाम और सामानिकादि देवों को संख्या और अनोक के विशेष वर्णन । इन्द्रों के नगरनि का स्नान नाम आगाम का और तिनके कोटादि का वर्णन । गणकाओं के नगरनि का और कुल भेद अपेक्षा स्थानों का वर्णन । नीचापटापादिवान व्यंतरनिका स्नान । नाम तथा आयु का वर्णन । व्यंतरनि के रहने के विलियों के भेद का, व्यंतरनि के सर्व क्षेत्र का, निलय जिस प्रकार पाये जाते हैं उनका, निलियों के व्यासादि का वा स्वरूप का और व्यंतरनि के माहारा उश्वास का वर्णन । तृतीयाधिकार पूर्ण हुआ ।

(४) ज्योतिर्लोकचिकार पृ० ३१८ से पृ० ४८० तक ।

ज्योतिष्क निबों का प्रमाण गमित मंगल करके ज्योतिष्कों के पांच भेद कह कर प्रसंग पाकर उनके आधार भूत कितने ही द्वीप तथा समुद्रों के नाम कह कर सर्व द्वीप समुद्रों को वलय व्यास सूची व्यास लाने के विधान तथा प्रमाण का और उनको वादर सूक्ष्म और वादर सूक्ष्म क्षेत्रफल लाने का, विधान प्रमाणादिक का जंबूद्वीप के समान औरों के खंड प्रमाण लाने का विधान, समुद्रों के रसादिक विशेष का और उनके विषे भोग भूमि, कर्म भूमि क्षेत्र के विधान का कर्म भूमि विषे उत्कृष्ट अवगाहना लिये एकैन्द्रवादिक जीवों के प्रमाणादिक का आयु वा वेदों का वर्णन । इन प्रासांगिक वर्णनों के पश्चात् ज्योतिष्कनि का स्नान का, तारानि का भंतराल का, निबों के स्वरूप का, चौड़ाई मोटाई के प्रमाण का, किरणों के प्रमाण का, चन्द्रमा को वृद्धि हानि होने के विशेष निबों के चलाने वाले देवों के प्रमाण का, गमन करने के विशेष का, जंबू द्वीपादि में उनके प्रमाण का वर्णन । प्रसंग वश राम के पद छेड़ पड़ने के स्नान कह कर सर्व ज्योतिष्कनियों के प्रमाण का वर्णन । एक चन्द्रमा के परिवार के प्रमाण का घट्टासो प्रहों के नाम का, जंबू द्वीप के तारों का विमान का, चन्द्रमा सूर्य का भंतराल व चार क्षेत्र का और दिन रात्रि के परिमाण के हानि के विधान का, उसमें ताप तम फैलने का, और सूर्य देखने का इत्यादि अनेक वर्णन हैं । इसके पश्चात् चन्द्रमा सूर्य प्रहों के नक्षत्र भुक्ति लाने का विधान । अथन तिथि मासादिक का विधान नक्षत्रों के तारा आकारादिक का वर्णन । चन्द्रमादिक के आयु का और देवियों का वर्णन है ।

(५) वैमानिक लोक का वर्णन पृ० ४८१ से पृ० ५४० तक ।

मंगल करने के पश्चात् स्वर्गादिक के नाम का स्नान और वहाँ स्थिति विमानों की गणना, नाम स्नान और उनके विस्तारादि का प्रमाण, वर्षे प्राधार और इन्द्रियों का स्नान वा चिह्न इन्द्रियों का नगर आवासादिक और इन्द्रियों के स्वामोन्यादिक दोनों कारण । और नगरों में विशेष रचना । इन्द्रादिक को देवों आदि का प्रमाणादिक और ईंद्र वा देवांगनाओं के उत्पन्न होने का स्नान । वैमानिकों के

प्रबोचन किया अबवि-ज्ञान, भंतराल और तदा उत्पन्न होने वाले जोव और उनको आयु का वर्णन। ऐशान्तिक देवों का स्थान, कुलादिक और देवियों को आयु, देवों के शरीर उश्वास, आहारादिक का प्रमाण और स्वर्ग में जाने जाने वाले जोव, एका भवतारो जोव, शलाका पुरुषों को आगति। देवों के उपजने रहने का विधान फिर सिद्धों के स्थान स्वरूपादि अनेक वर्णन हैं।

(६) मनुष्य तिर्यग्लोक का अधिकार। ५० ५४१ से ५० ८१४ तक।

मंगल पश्चात् पंच मेरुओं का स्थान कह कर भरतादि क्षेत्र और हिमवान आदि कुलाचल और कुलाचलों के ऊपर, द्रव, पद्मनि में कमल, कमलों के ऊपर भेद मंदिरों में परिवार सहित वसती देवों और द्रवों से निकलने गंगानदी और नदों के पड़ने के कुंड और नदियों का गमन और समुद्र में प्रवेश द्वारादिकों का स्वल्प स्थानादिक का वर्णन। क्षेत्र कुला शलानि का प्रमाण। लाने का विधान कह कर मेरु गिरि और उसके वन और बनों में मंदिरादिक तिनके प्रमाण स्वरूपादिक का वर्णन। परिवार सहित जंबू आदि दश वृक्षों का स्थान स्वरूपादि वर्णन। भोग भूमि तथा कर्म भूमि के विभाग और यमक गिरि और सोता, साधोदा में बोलद्रव, और उनके निकट कोचन गिरि और दिग्गज पर्वत तथा गजदंत पर्वतों का वर्णन। विदेह क्षेत्र के दशों विभाग का और वक्षार गिरि विभंगा नदी देवारण्य वन तिनका वर्णन। विदेह क्षेत्र के गंगादिक उपसमुद्र और मागयादि तीन द्वीप और तहां वर्षादिक प्रवृत्ति और तोर्यकरादि होने को संख्या का वर्णन। पलंगवश चक्रवर्त्ति राजादिक, और तोर्यकर को विभूति का वर्णन। विदेह देशों के नाम उनके पट खंड, विजयाई नदी तथा मंदिरों के स्थानादिक का वर्णन। विजयाई की श्रेणी में नेगरादिक तथा ग्लेक खंड, विष्वे वृषमाचल होने का वर्णन। आर्य खंड में राजाधानों के नगरों का वर्णन। भोग भूमि विष्वे तिष्ठिते नामि गिरि का स्थान प्रमाणादिक और कुलाचलों के कूट और वनादिक का वर्णन। जंबूद्वीप के पर्वत, नदों की संख्या और उनको वेदियों की संख्या का वर्णन। भरत परावत विजयाई के कूट और गजदंतों के कूट और वक्षार गिरि के कूटनि का नाम, प्रमाण, स्थानादिक और उन कूटों के ऊपर वसने वालों के नामादि का वर्णन। पूर्व पश्चिम चपेक्षा मेरु आदि का व्यास वर्णन। धातुको खंड पुष्करादि विष्वे मेरु मद्र शाल विदेह देश गजदंत हैं उनके व्यासादि का वर्णन। जंबूद्वीप विष्वे द्वीप कुछ उत्तर कुछ और कुलाचल और क्षेत्र, भरत परावत संबंधी विजयाई तिनका धनुः एक बाण जीवा वृत्त निष्कंभ घुलिका पार्श्वे भुजा का प्रमाण। अनेक प्रकार जीवादि लाने के कारण सूत्रों का वर्णन। भरत परावत क्षेत्र में कालादिक पलटनि होने का वर्णन। और वहां जैसी प्रवृत्ति होती है उसका वर्णन, इस भरत क्षेत्र में इस पञ्चविंशती काल में

चौदह कुलकर, चैवोस तीर्थकर, बारह चक्रवर्ति, नव नारायण प्रति नारायण, बलमद और ११ रुद्र उनका नाम प्रायु प्रादिक का वर्णन । उन लोगों के होने का समय, तीर्थकर का वेश वर्ण का दुबमा काल में शक और कब्बो होता है उसका और प्रादि घंत के कर्त्तव्यों के कर्त्तव्य । दुबमा काल के घंत में धर्मादि नाश होने का कथन । दुबम दुबमा काल को प्रवृत्ति का और उसके घंत में प्रलय होने का वर्णन । दुब समय किन्ही युगल के बचने का और फिर दुबमा काल होवे उसके उसके घंत में चौदह कुलकरों और दुबम सुबमा काल विषे तीर्थकर चक्रवर्ति नारायण प्रति नारायण बलमद होते हैं उनके नामादिक का और जहां जैसा काल प्रवृत्ति है और म्लेच्छ खंड में जैसे काल पलटता है उसका वर्णन । द्वीप तथा समुद्रों के घंत में चैगिरदा जो वेदो है उसका वर्णन । इस प्रकार जंबूद्वीप के वर्णन के पश्चात् नवण समुद्र का वर्णन है । वहां उसके सम्यंतर पाताल हैं तिनका और उसके जल को ऊंचाई के बढ़ने घटने का वर्णन, उनके व्यास का, उसके जल का, चन्द्रमा सूर्य के घंतरालादिक का और पातालों के घंतराल का, उस समुद्र में बेलंघर नाम कुमार रहने हैं उनका और पर्वतादिक हैं उनमें देव रहते हैं तिनका और द्वीप है तिनमें बेलंघरन रहते हैं उनका, तीन द्वीप रहते हैं उनका उनमें रहने वाले नागवादि देवों का । द्वीपों में बसने वाली कुमान भूमियों का, उनके ज्ञान नाम तथा प्रमाणादि का वर्णन है । घातको खंड पुष्करार्ज का वर्णन । वहां चार इश्वाकार पर्वतों का और वहां स्थित कुलाचलादिकों के प्रमाण कुलाचल क्षेत्रों के आकार और उन द्वीपों को परिधि का प्रमाण वर्णन कर कुलाचल क्षेत्रों के व्यास का, और विदेई वंशादिक के आचाम का और कुछ वृक्ष तथा नदियों के गमन विशेष का वर्णन । मानुषोत्तर पर्वत के प्रमाणादिक का और उसके ऊपर कूट है जहां देवादि निवास करते हैं तिनका वर्णन । कुंडलगिरि, रुचक गिरि का स्थान प्रमाणादिक का और तिनके ऊपर कूट हैं उनका और उनपर बसे हुए जीवों का वर्णन । द्वीप तथा समुद्रों के स्वामियों का वर्णन । नंदोश्वर द्वीप में वावन पर्वत उनके ऊपर चैत्यालय, सोल-हवा बड़ी तथा चौसठ बनों का वर्णन । उनके ज्ञान तथा प्रमाणादिक का वर्णन । देवों द्वारा वहां होने वाले पष्ठाहिक पर्व का महोत्सव और चैत्यालयों के जगत्यादि प्रमाण का वर्णन । चैत्यालयों को अनेक रचनाओं का वर्णन । तिन विष के जल स्वप्न का वर्णन । घंत में मंगन कर के कर्त्ता का नाम सूचन करके पंच परम गुरु से अमोष्ट फल को पार्यना करके ग्रंथ समाप्त किया जाना । घंत में का समाचार कह कर ग्रंथ को समाप्त करना । ग्रंथकर्त्ता का नाम: —

रदि रोमिचंद मुणिना ग्रंथ सुदेशा भयने दिवच्छेया । रथेा तिलोच सारेा खमेवु ते बहु सुदाहरिया ॥

पर्य—इस प्रकार करि अल्प श्रुत ज्ञान का धारी और अमयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तिकावन्त शिष्य ऐसा तेमिचंद सिद्धांत चक्रवर्ती प्राचार्य ताकरि यह त्रिलोक सार नामा ग्रंथ रच्य है ताको बहु श्रुत बारक प्राचार्य हैं ते कदों चूक भई होइ तहां समा करो ।

No. 430. Śālihotra, by Tṛivikramaseta. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—11×6 inches. Lines per page—20. Extent—600 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—1694 Samvat or A.D. 1637. Place of deposit—Pāṇḍitā Gaṅgā Sahāya Bājapai, Alipore, Rāe Bareilly.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सालिहोत्र अथ वर्येन लिख्यते ।
 दोहा ॥ जग्याय पंडित मंडलो मंडित समा अनूप । बोल बोध तिन मापदो कहै
 त्रिविक्रम भूप ॥ मानु तनै छाये हृदै नंदन तुमरे वंत । करि प्रणाम बिनतौ करौ
 होहु प्रसन्न तुरत ॥ तुरंग देव पशु सब कहै तामे जो मुख दांष । ताहि प्रणट करि
 कहत हौं सुनहु संत तजि रोष ॥ चौपाई ॥ पाँठ पच्छवैत सब शाजो । चलहि ल्योम
 गंघर्व समाजो । तोनि लोक मंड जो कछु अहई सो तुव पासहु भिन्न न रहई ।
 देषा सक वेग जुत वाहा । सालिहोत्र मुनि ते तव काहा । बिनती मोर चित्त
 मह धरहु । बाहन होय तुय सो करहु । जइ माहि पति दैत्य जुझारा । बारन ते
 नहि होय समारा । मुनि बिनतौ वासव कै राखी दया छांडि काटो हय पांखो ।

End—सम्यक्सरे निगम नन्दु रस न्दु सुके वैनाथ शुक्ल दसमौ सुतिथा व
 पूरि हमोर सेन । तनयेन गुणोज्ज्वलेन श्रीमद् त्रिविक्रमसेन हयेपरीक्षा ।

दोहा ॥ जुग नव रस ससि वर्षे भुग । दशमो माधव मास । शुक्लपक्ष विक्रम कियो
 तुरप चिह्न परकास । त्रिविक्रम हमोर सुत हर प्रिय सेवक भूप । तुरप वंश सुष
 हेतु लगि मायै ग्रन्थ अनूप ॥

अथ परीक्षाने माथा त्रिविक्रम सेन विरचित विरचिते द्वैसौ तितित्थय ।

दोहा—महाराज अर्जुन नृपति । सालिहोत्र कविमान । पंडित रामदयाल सां
 सुधवायो हितजानि । तेहि गंगाप्रसाद पुनि अति हर्षाई । दोहा छपै चौमदो
 दोन्हो सुखम बनाई । सोम दशमि वदि कार रहन भवसु वसु सोस सवर्ष । नकल
 ताहि प्रति तें कियो बंसोवर जुत हर्ष । सारठा ॥ रच्यौ त्रिविक्रम राय सालिहोत्र
 बरनन तुरय । असोदाय अघ्याय दोहा सवह पंच सत । इति सालिहोत्र समाप्तः

Subject—

पृष्ठ १—राम स्तुति, अश्वों की पर विहोन होने की कथा ।

- पृष्ठ २—अश्वदेश उनकी प्रकृति और जाति परीक्षा ।
 पृष्ठ ३—अश्व शुभाशुभ लक्षण और योग परीक्षा ।
 पृष्ठ ४—घोड़ों को भौरो का वर्णन ।
 पृष्ठ ५—अश्व के रोगों का वर्णन ।
 पृष्ठ ६—अश्व के तिल, बूँदा, नाद, स्वभाव को परीक्षा विधि ।
 पृष्ठ ७—घोड़ों के उत्पात स्वेद गंध और योगप्रमाण का वर्णन ।
 पृष्ठ ८—अश्व को घातु और दंत परीक्षा का वर्णन ।
 पृष्ठ ९-१०—अश्व को कृः जंतुषो में पोषण करने की विधि वर्णन ।
 पृ० ११—घोड़े के शिर दर्द की परीक्षा और उसकी औषधो—नस्य औषधि ।
 पृ० १२—गर्भवती घोड़ों की परीक्षा का वर्णन ।
 पृ० १४—वात पित्त कफादि उत्पत्ति और उनके प्रलेप का वर्णन ।
 पृ० १५—घोड़ों के मुख और नेत्रों की चिकित्सा ।
 पृ० १६— " तिमिर जल प्रवाह और रक्त घाति की चिकित्सा ।
 पृ० १७— " नेत्र पटल और मुंजा नेत्र चिकित्सा ।
 पृ० १८— " स्वांस, कास और सन्निगत रोग की चिकित्सा ।
 पृ० १९— " घोड़े के कृमिरोग और कर्ण रोग की चिकित्सा ।
 पृ० २०— " पित्तास और श्लेष्मास की " "
 पृ० २१— " त्रिदोष और व्रण रोग की " "
 पृ० २२— " पित्त दोष की " "
 पृ० २३— " व्रण रोग और पद रोग की " "
 पृ० २४— " वात, पित्त और कफज्वर की " "
 पाँच लंग की " "
 पृ० २५—अतोसार रोग " "
 पृ० २६—शूल " " "
 पृ० २७—कृमि और मूत्र " "
 पृ० २८—पथरी, कृत् और सोच रोग " "
 पृ० २९-३०—वात पित्त कफ घंड रोग की " "
 पृ० ३१—वात पित्त कफ उदर रोग की " "
 पृ० ३२—वातोत्कर्ष रोग की " "
 पृ० ३३—घीवा रोग की " "
 पृ० ३४—घोड़ों के उन्माद रोग की चिकित्सा
 पृ० ३५— " चलंग
 पृ० ३६—सोष त्रिदोस द्युन सोषत्रिरोन रोग

पृ० ३७—विषसाधविषं साध्यालय को चिकित्सा

पृ० ३८—४० नाम पते वात पित्तकफ के अन्य रोगों को चिकित्सा ।

No. 431. Hanumāna Tikā, by Tulasī. Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—7×4½ inches. Lines per page—20. Extent—60 Anushtup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—M. Brajalāla, post Office Jagadīspur, District Rāe Bareilly.

Beginning—ओ गणेशायनमः हनुमान टोका लोपतेः ॥ तुजसोकृत राम-
दूत को जैः ॥ दोहा ॥

वरनो घादो भवानो जग मया सुष धाम ।
क्रोपा करो जन जानो कै जाई सोध्य सब काम ॥ दोहा
बीर बषानी पवन सुत जनत सकल जहान ।
धन्य धन्य भंजनो तनै संकट हरो हनुमान ॥
जै जै हनुमान भगंगी । जै जै महावीर बजरंगी ॥
जै जग बंदनो मोल भगारा । जै कपोस जै पवन कुमार ॥
जै घदोवंत भमोल बबोकापो । प्ररो मरदा जै जै गोरधारो ॥
भंजनो वेद्र जग तुम्ह लोन्हा । जै जै सब देवन्ह कोन्हा ॥
बाजो हुंदमो गगन नमोरा । सुर मुनो हर्षे बसुर मन पोरा ॥
कपै सौंधु लंका संकाने । लूटो बंदो देवतन्ह जान्हेः
रोषो समुह नोकर चलो प्राये । पवन तनै को पद सोर नयेः ॥
बीर बर भनो स्तुती करो नाना । नीरमल नाम धारा हनुमानाः ॥
सकल दोषै मोलो असमत ठानाः । दोन्ह बतार्ई लाल फल पाना ॥
सुनि बचन कपो घति हरवाने । खोरथ प्रासो लाल फल जानैः ॥
रथ समेतो कपो कोन्ह भाहाराः । सोर भव तहा भमै कारा

End—ये बंघन को केतो वाता ॥ नाम तुमार सकल सुष दाता ॥
करो क्रोपा जै जै जग सामो ॥ वरन भयेग नमामो नमामो ॥
भौम परै घदो करैई ध्याना ॥ खुप दोष नै बेरी सुजना ॥
भागल दायैक को लै लाये ॥ सो नर तासु तुरत फल पायै ॥
बल्ल बोस्त सौंधु सुरसारो ॥ ईवो मुदना जै जैतो गोशार्ई ॥
भंजनो तनै नाम हनुमाना ॥ सो तुजसो के कोपा नोधाना ॥

दोहा—जै कपोस सुमीच जै भगद हनुमान

राम लपन सोधा जानको सदा करै कल्यान । इति

हनुमान टीका संपुरणा सामंत राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम

१६	२	१२	महा
६	१०	१४	वीर
८	१८	४	तीस

सुचंति वसु पक्षीणं पठंतो मुक्त सरोकादत्त सुपनोद्यतां नच मुरान चण्डोता
चर्जुन ते कदा कोण जी सलोका कोण कोण कोण कोण

Subject—

भवानो स्तुति, पवन सुत वंदना, हनुमान का बल प्रताप वर्णन ।
'लंका जाने, सोता जी को धैर्य बंधाने राक्षसों को मारने, लंका को जलाने,
रामचन्द्र के पास सोता का संदेश लेकर आने का वर्णन । इसके पश्चात् पुल
बांधने में सहायता करना—युद्ध करना । सुखेन को गृह सहित लाना ? सजीवन
पर्वत सहित लाना, रामचन्द्र के साथ सदा रहना और उनमें भक्ति रखना,
हनुमान के अन्य नाम, बल पराक्रम वर्णन, हनुमान से वित्तव्य करना, अंत में सब
को जय जय

No. 432(a). Barwai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājā-
pura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—20.
Size—14 × 5½ inches. Lines per page—9. Extent—460
Anushtup śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Rājapustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री नवशायनमः ॥ अथ वरवै रामायण लिख्यते ॥
छंद वरवै ॥

मम नायक वर नायक देव मनाय ।
विघ्न विनाशन कस्तक न होहु सहाय ॥ १
श्री गुरु पद रज अम्बुज हृदय संभारि ।
वरनन करौ राम जस कृपा सुचारि ॥ २
श्री रघुवर वंग सेमित अतुलित काम ।
मगत चकोर पूर्वे विधु करौ पनाम ॥ ३ ॥
भरत भारतो नायक छंद विधान ।
बालमौक यह घट रहि करि गुनगात ॥ ४ ॥

End—यहि बिधि अबच नारि नर प्रभु गुनगान ।

काहि देव सतिशि तुलसी जात न जानि ॥ ३९३

भजन प्रभाव भक्ति बहु बरनेउ वेद ।

तुलसी गायो हरि जस निमि भव पेद ॥ ३९४

करन पुनीत हेतु निज बचन विवेक ।

तुलसी अघसेहु सेवत राखत टेक ॥ ३९५ ॥

सीता राम लखन संग मुनि के साज ।

तुलसी चित्रकूट बस रघु रघुराज ॥ ३९६

इति श्री बरवै रामायण तुलसीदास कृत उत्तर काण्ड संपूर्णम् शुभ मस्तु
सिद्धिमस्तु ॥

No. 432(b). Barvai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājā-pura (Bandā). Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size— $12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—21. Extent—440. Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1841. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedpur, Baharāich.

Beginning—ओ गणेशायनमः ॥ अथ बरवै रामायण लोखते ॥ बरवै
कंद लिखिते ॥

मन नायक बर दायक देव मनाय ।

विघ्न विनाश प्रकासक होइ सदाय ॥ १

ओ गुह पद रज ध्वज होइय समारि ।

बरनन करौ राम जस कृपा सुधारि ॥ २

ओ रघुवर संग सोमित अतुलित काम ।

भगत चकोर पूछे विधु करौ प्रणाम ॥ ३

भरत भारती नायक कंद विद्यान ।

बालमोक वह घटि रहि करि गुनगान ॥ ४

End—यहि बिधि अबच नारि नर प्रभु गुन गानि ।

करहि दिवस निसि तुलसी जात न जानि ॥ ३९३

भजन प्रभाव भक्ति बहु बरनेउ वेद ।

तुलसी गायो हरि जस मिटि भव खेद ॥ ३९४

करन पुनीत हेतु निजु बचन विवेक ।

तुलसी ऐसेउ सेवत राखत टेक ॥ ३९५

सोता राम लपन संग मुनि के साथ ।

तुलसी चित्रकूट वसि रघुबर राज ॥ ३२६ ॥

इति श्री बरवै रामायन तुलसीदास कृत उत्तर कांड संपूर्ण शुभ मंजु
संवत् १९०१ शके १७६७ फाल्गुनी मासे शुक्ल पक्षे पंचम तिथौ शुक्लाक्षरे पुस्तकी
संपूर्ण सन १९५२ श्री राम श्री देवि ।

No. 432(c). Barwai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājā-
pura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—
10. Size—11×5½ inches. Lines per page—9. Extent—80
Anushtup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of manuscript—1909 Samvat or A. D. 1854. Place of
deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ बरवै रामायन तुलसीदास कृत लिख्यते ॥

केश मुकुट सवि मरकत मणि मय होत ।

हाथ छत्र पुनि मुका करत उदोत ॥ १ ॥

सम सुवरण सुषमा कर सुषद न घोर ॥

सौय शंग सपि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥

सिय सुख सरद कमल जिमि किमि कहि जात ।

निसि भलीन बह निस दिन यह बिसात ॥ ३ ॥

बड़े नयन कट मुकुटो भाल विशाल ।

तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥ ४ ॥

कंपक हरबा शंग मिलि सखि सुहाद ।

जानि परै सिय दिपरे जय कुम्हार ॥ ५ ॥

End—एकहि एक सिखावहि जय तनु पाप ।

तुलसी राम प्रेम कर बायक पाप ॥ २२

मरत कहत सब सब कहं सुमिरहु राम ।

तुलसी सब नहि अपत समुझि परिनाम ॥ २३

तुलसी राम नाम जपु पालस कांडु ।

राम विमुख कलिकाल को भयो न भांडु ॥ २४ ॥

तुलसी राम नाम सम शंग न धान ।

जो वै चादहु राम पुर तन अवसान ॥ २५

नाम भोला नाम बल नाम खेहु ।

जन्म जन्म रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ २६

जन्म जन्म जहं जहं तनु तुलसिहि देहु ।

तहं तहं राम निवाहिव नाम सनेहु ॥ २७ ॥

इति श्री वरवै रामायण उत्तर काण्ड समाप्त ॥ तुलसीदास कृत लिखिते
सिध शंकर मिसिर सेवतु १९०९ ॥ राम

इति

No. 432(d). Bhanwaragitā, by Śrī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—6×4 inches. Lines per page—22. Extent—400 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1916 Sambat or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasad, village Naipālapura, post office Sitapur, tahsil Sitapur, district Sitapura.

Beginning—श्रीमच्छेशायनमः ॥ श्री तुलसीदास कृत भंवर गोता लिखिते ॥ राम जैत श्री ॥ नंद जू हाँ डाढ़ो दस स्पंदन जू को नगर अवध ते पायेो यतनो, कहि प्रति हारन हरि सों करि मेरो मन भायेो ॥ महाराज वज्रराज भालु जाँकतुव येक दुवारे ॥ अवध राज रघुवंस नृपति गुन कोरति पढ़त प्रकारे ॥ जो कहि कहि काकुल भूप गुन अरु इकुल बढ़ाई ॥ अज दलोप रघु दसरथ राजा शुभतल कोरति छाई अजहुं बहुत कहत गुन उन कर्नासिंघु सदाई ॥ मैं अज्ञान अनूप भाँति मेरो कछु कहत न पाई ॥ यह सुनि नंद अनेद मान दै ततकन मोहिं बोलोयो ॥ पावसु पाइ पाइ अंतपुर ॥ दै असोस सिर नायो ॥

End—कहा भयो कपट जुवा जोहारो । समर धोर महाबोर पंचपति क्या देहैं मोहि होन उचारो । राज समाज समासद समरथ भीषम दीण धर्म धुरधारी ॥ अवला अनन्य अनौसर अनुचित होत हेरि करिहैं रखवारो ॥ ये मन गुनत दुसासन दुरजन तमकि गहो तकि दुइ कर सारो । सकुचि गत जोधत कपटो ज्यो हहरी हृदय विकल भइ भारो ॥ अपतिन को बिछोकि बल सकल पास बिस्वास बिसारो । हाथ उठाइ अनाथ नाथ सो पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारो ॥ तुलसी परनि प्रतीति प्रीत अति आरत पाल कृपाल मुरारो ॥ बसन वेष राख्यो बिसैप लवि बिरदावलि मूरति नर नारो ॥ ६१ ॥ गढ़ गढ़ गगन बुं बुभो बाजो वरवि सुमन सुरगन गावत जस हरष गगन मुनि सजन समाजो ॥ सानुज संगन सचिव सो जो धन भय भूप मलिन पाइ पल पाजो ॥ लाज नाज जब बनि कुचाल कलि परो बजाइ कहं कहूं बाजो ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया को मलो भूरि भैमभरिज भाजो । कहि पारथ सारथो सराहत गई बहोरि गरीब नेवाजो सिधिल सनेह मुदित मनहो मन बसन बीच बिच बधु बिराजो समासिंघु जदुपति

जलमय जनु रमा धनट त्रिभुवन भरि मात्रो ॥ जुग जुग जग साकेह सब ही के
समन कलेस कुसाज कुसात्रो ॥ तुलसी को न होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल
भक्ति पथ राजो ॥ इति श्री तुलसीदास कृत भंवर गोत । समाप्त ॥ संवत् १९१६
भाद्रमासे कृष्णवन्ते तिथौ परं भृगुवासरे निषत् कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर ।

No. 432(c). Chhandāwali Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāudā). Substance—Old, country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—120 Anushṭup ślokae. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1911 Samvat or A. D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Gola-ganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ कंदावली रामायण तुलसीदास कृत

दाहा—दशकंधर घट कर्षे अन्न मार धरा बुझ होइ ।

गई गमन गो देह धरि कहि सुरपति सों रोइ ॥ १

कंद चौपय्या—सुरपति गुरु बुझा सुरमति सुझा गे विधि लोक तुरंता ।

विधि सुर समझाये संग सिधाये जहं सोवत श्री कंता ॥

दशमुख को करणो बहु विचो वरणो धरणो जेहि विधि रोइ ।

सुनि सारंग पानी भई नम्र बानी विधि जाना नहिं कोई ॥

विधि बचन सुनाये सुर समझा र तजहु सोच मन देवा ।

जो जन हितकारी प्रभु असुरागो करहि पार सोइ खेवा ॥

वानर गो पूछा तन धरि रोछा वसहु जाहु मदि मादो ।

अवधेश निकंता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम जाहों ॥ २

End—

नित प्रति सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करें ।

गज बाजि राज समाज लपि सब वन उपवन.....फिरें ॥

बैठे समा मंद जाइ श्री रघुवीर दुख सब कै हरें ।

हरि न्याउ स्वान उलूक को लपि लोग सब विलस करें ॥

मोड़वो श्रुतिकीर्ति उर्मिला सबनि सुत है है जने ।

जानकी के सुत जुगल जाये सबन मन पानन्द धने ॥

सनकादिक नारद मुनिवर सकल अवधि चाहैं आवहों ।

लपि जाहि रघुवर के चरित सब विधिदि जाइ सुनावहों ॥

एक बार कौट महि देव को सुत समा महं पावौ मरगो ॥

गुण पूर्ण तप ते मारि सुदहि तबहि सो उति जिय परगो ॥

वहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करे ।

कहि दान तुलसी सुनत सब के वचन मन पातक हरै ॥

देशा—सुनि सोता के जुगल सुत राम कीन्ह अनुमान ।

लोक सिखावन देन हित बोलै श्री भगवान ॥

इति श्री उत्तर काण्ड संपूर्णम् ॥ लिखिते शिवशंकर मिश्र संवत् १९११
वि० राम राम राम राम.....

Subject—राक्षसों के बोझ से पुरखी का गौ रूप से देवलोक को जाना
मत्ता का विष्णु के पास ले जाना तथा अवतार के लिये आकाशवाणी होना
और देवों के अवध में धारण व रौद्र रूप में जन्म लेने को कहना छंद १—२

राम का संशील सहित अवतार लेना और अवध में आनन्द होना छंद ३—४

राम का कौड़ा करना और यज्ञोपवीत व शिक्षा प्राप्त करना, विश्वामित्र के
साथ ताड़का तथा सुबाहु बच करना, गौतम को पत्नी का उद्धार व जनकपुर
आगमन और धनुष भंग तथा सोता का विवाह वरून और मार्च में परशुराम
मिलन वर्णन छंद ६—७

राम धन गमन, दशरथ का प्राण विसर्जन, राम का प्रयाग होकर विज-
कूट जाना भरत से राम की भेंट वरून छंद ८—९

अयोध्या का सोता लोके चौंच मारना और राम का उसे ताड़न देना,
विराट वध, सरांस से भेंट, राम लखन सोता का पंचवटी जाना, सुपर्णा को
नाक काट लेना, विशिरा, सर दुषण वध, भारीच वध, सोता हरण गोघ-
रावण युद्ध, सबरी राम भेंट पंगसर पहुँचना और नाद से भेंट होना वरून
छंद १०—११

राम से हनुमान और सुग्रीव से भेंट, बालि वध, सुग्रीव को राज देना और
सोता को खोज करना । छंद १२—१३

हनुमान का लंका में जाना सोता से भेंट तथा लंका जलाना, विभीषण
के रावण का लात मारना और राम से मिलना । छंद १४—१५

राम लक्ष्मण व रावण, मेघनाद, कुंभकर्ण से युद्ध वर्णन विभीषण को
राज देना व सोता से भेंट छंद १६—१७

राम का अयोध्या आना भरत से भेंट व राजगद्दी होना देवताओं का
स्तुति करना, स्वान, उलूक, व घातक बालक के न्याय की कथा वर्णन चारों
भायों के देा देा पुत्र होना वर्णन । छंद १८—२२

इति

No. 432(f). Chhandavali Rāmāyaṇa, by Tulasi Dāsa of Rājapura (Bānda). Substance—Old paper. Leaves—16. Size—10½ × 5½ inches. Lines per page—8. Extent—136 Anuṣṭup śloka. Appearance—Loose and old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1909 Samvat or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः । अथ छंदावली रामायन तुलसी दास कृत लिख्यते । दोहा ॥

दशकंवर छंद कबै सबमार धरा दुःख होइ । नहि संजत गो देह धरि कहि सुरपति सो रोइ । छंद चौपद्या । सुरपति गुर वृष्ठा सुरपति सृष्ठा गे विधि लोक तुरंत ॥ विधि सुर समुझाये खंन सिचाये जहं सोचत श्रीकंता ॥ दशमूप को करणो बहु विधि बरखो धरखो जेहि विधि रोई सुनि सारंखपानो भई नम वानो विधि जाना नहि कोई ॥ विधि बचन सुनाये सुर समुझाये तजहु सोच मम देवा ॥ जो जन हितकारी प्रभु असुरारो करहि पार सोइ पेवा ॥ वानर गो धूका तन धारि रोज बसहु जाइ महि माही । सबवैश निकैता व्युह समैता प्रभु पावत मुम पाही । दोहा । यहि विधि विबुध विबोधि गे गे सुर निज निज धाम । कछु काल बोते सबध प्रगट भवे श्रीराम ॥ ३ ॥ शशि वदन छंद ॥ जन हितकारी प्रगट सुरारो । नरतन धारी कवि सुप कारो ॥ मृदु भुवकारो धरि दल हारो ॥ सुमप निहारो बलि महतारो ॥ सबध बिहारो भव भव हारो ॥ जपत पुरारो सब अमहारो ॥ सबध उमारो यह प्रण भारो ॥ तुलसी हितकारी शरण सभारो ॥ ४ ॥ हरि गीतका छंद ॥ संभारि शरण विचारि तुलसी राम जस गावत लियो ॥ बय ताप समन कलेश हरन को भौर नहि जन मन वियो ॥ जेहि नाइ जमन किरात पल हरि पुर गये करि सुधि दियो ॥ रघुवीर जस सुनि हिमत हरष्यो पुरो नित अपने कियो ॥

End—सिय सहित रघुकुलमनि विराजत सुमग सिंहासन परै ॥ सुम सुमन वरषहि दिये हरषहि व्रजादि सब जय जय करै ॥ नहि छत्र चामर चमर असि धनुषोर तरकस के लये ॥ भरतादि अनुज बिभीषणांगद हनुवित चरनन दये ॥ सुनि सिंहा श्री रघुवीर को अविवेक पुनि उर में धरै ॥ कद दास तुलसी जन्म को सुप लहि जलाधि बिन अम तरै ॥ दोहा । नित नव मंगल प्रबधपुर करहि सकल नर नारि ॥ लहहि चार फल पकृत तन रघुवर रूप निहारि ॥ १९ ॥ छंद । नित प्रत सरित बन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करै ॥ गज वाजि राज

समान लपि सब देवि वन उपवन फिरै ॥ बैठे समा मह जाइ थी रघुवीर दुःख
सब के हरै । हरि न्यात्र स्थान उलूक को लपि लोग सब विस्मै करै ॥ मांडवी
श्रुतिकीरति उरमिना सबनि सुत डै डै जने ॥ जानकी सुत जुगुल जाये सबन मन
पानंद घने ॥ सनकादि नारद आदि मुनिवर सकल भवघहिं घावहो ॥ लपि
जाहि रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहो । एक बार कौउ महि देव
को सुत समा मह आये मरौ ॥ गुरु बृम्हि तपते मारि सुद्र हित बहि सो उठि
जिय परौ ॥ यहि भाँति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करै ॥ कहि दास
तुलसी मुनत सब के बचन मन पातक टरै ॥ दोहा । सुनि सोता के जुगुल सुत
राम कीन्ह अनुमान ॥ लोक सिपावन देन हित बोलेो श्री भगवान ॥ इति श्री
उत्तर काण्ड श्री गोसाईं तुलसीदास कृत कृन्दावलि रामायनि समाप्त । शुभ
मस्तु० संवत् १९०९ लिखित वै वैशखवदास श्रीराम ।

Subject—दशशोस, धट कर्षे आदि के पाप भार से पृथ्वी का दुःखी
हो गो कृप धर इन्द्र के पास जाना, इन्द्र का वृहस्पति से परामर्श कर ब्रह्मा के
पास जाना, ब्रह्मा का सान्त्वना दे क्षीरसागर में भगवान के पास जाना, राक्षसों
को करना भगवान से कहना, आकाशवाणी का होना, ब्रह्मा का सबको
समझाना, वानर मातु होकर पृथ्वी पर जन्म लेने के लिये देवताओं को
आदेश देना, भगवान का यथोप्या में जन्म लेने का संवाद कहना, काल
पाकर भगवान का यथोप्या में जन्म लेना, बाल लोला वर्षन, ग्यारह वर्ष में
उपनयन, विश्वामित्र का राम को भोगना, ताड़का वध, विश्वामित्र द्वारा यक्ष
प्राप्ति, सुबाहु वध, मध-रक्षा, ग्रहिल्या तारण, मिथिला-गमन, धनुष-भंग, सोता-
विवाह, यथोप्या-नमन, मार्ग में परशुराम से भेंट, धनुष देकर वन-गमन पृ० ३—४
बालकांड

राजा दशरथ का मुकुट देचना और बुढ़ाये का आभास पाना, राम को
युवराज पद देने का करना संकल्प, कैकई का भरत के लिये राज-पद माँगना,
रामचन्द्र को वनवास देना, सोतागाम लक्ष्मण सहित वन-गमन, गंगा प्रयाग होकर
विचलूट जाना, भरत का शोकाकुन होना, भरत का वन जाना, कैवट से भेंट,
भरत का राम से मिलना, पादुका पाना, पादुका लेकर वापस आना और नियम
धर्म से रहना वर्णित है पृ० ४—५ यथोप्याकांड ।

जयन्त का जानकी-स्पर्श, उसको आँखों का फोड़ा जाना, विराध-वध,
शरभंग से भेंट, रामचन्द्र जी का पंचवटी जाना, सर्पकथा का नाक कान बिहोना
होना, शरदूपन-त्रिसिरा-वध, रावण का मारीच के पास जाना, मारीच का
स्वर्ण भुज बनना, मारीच वध, मारीच का शब्द सुन लक्ष्मण का राम के पास

जाना, रावण द्वारा सीता का हरा जाना, राम का दुःखी होना, सीता को खोजना, युद्ध से भेंट, उससे समाचार पाना, सेवरी से भेंट, पंथासरथाना नारद से भेंट सुग्रीव का राम को देख कर विस्मय युक्त होना, हनुमान को भेद लेने के लिये उनके पास भेजना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है पृ० ५—६ आरम्भकांड ।

हनुमान का राम को ले जाकर सुग्रीव से मिलाना, सुग्रीव और राम को मित्रता का होना, सुग्रीव का कष्ट समाचार सुन कर राम का बालि के मारने का प्रण करना और सुग्रीव को राजा बनाना । सुग्रीव का सीता को खोज का प्रण करना, बालि का मारा जाना, सुग्रीव-तिलक, चोमासे का निवास, सुग्रीव का सीता को खोज के लिये बंदरों का भेजना, बंदरों का विवर प्रवेश एक छो से भेंट, मृदस्य से समुद्र तोर घाना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है । पृ० ६—७ किष्किंधा कांड

हनुमान का सागर पार जाना, लंकिनी वध, हनुमान का छोटा रूप धर कर लंका में प्रवेश, सीता को खोजना, विभीषण से भेंट, हनुमान का सीता को देखना, रावण का भाकर सीता को दुःख देना, हनुमान का मन में कोपित होना । मुद्रिका का सीता के आगे फेंकना उसे देख सीता का हर्ष विस्मय युक्त होना, हनुमान का प्रगट होना, फल खाने की आज्ञा मांगना, बगोचे में फल खाना, उत्थात मचाना, रघुवालों को मारना, मेघनाद द्वारा हनुमान का मारा जाना, रावण को सभा में पूंछ का तेल पट से बांधा जाना, उसके द्वारा लंका-दहन, राम का ससैन्य लंका-गमन समुद्र का पैर पड़ना, नल द्वारा सेतु-बंध मंदादरी का रावण को समझाना, रावण को मंत्रणा, विभीषण को लात मारना, विभीषण का राम के पास घाना, शंगद का रावण के पास घाना, शंगद-प्रेज, लंका पर चढ़ाई, सूत्र रूप से वर्णन किया है । पृ० ७—१० सुन्दर कांड

राम और रावण की सेनाओं की लड़ाई, मेघनाद-वध, सुलोचना का सती होना, रावण का मारा जाना, जानकी का राम के पास घाना, सैन्य समेत पुष्पक पर चढ़ भयोध्या प्रयाण, प्रयाण घाना, हनुमान को भरत के पास भेजना संक्षेप में वर्णन किया गया है । पृ० १०—१३ लंकाकांड

भरत का हनुमान से राम आगमन की सूचना पाना, भरत का घर आकर समाचार देना, रामचन्द्र का भरत गुरु और प्रवासियों से भेंट, वशिष्ठ और सुमंत्र द्वारा राज्याभिषेक का होना, भरतादिक भार्यों का शंगद हनुमान सहित सेवा का वर्णन, सब भार्यों के दो दो पुत्रों का होना, नादादि कानित्य घाना, भयोध्या का संवाद ब्रह्मा के पास जाकर कहना, रामचन्द्र का श्राव्य वर्णन, ब्राह्मण के मृतक पुत्र का सभा में घाना, युद्ध की आज्ञा से युद्ध यत्नी की मारना ब्राह्मण के

सूक्त पुत्र का जो उठना; सीता के दोनों पुत्रों का मिलना और लोक शिक्षा के लिये चरित्र करना । सूत्र रूप से वर्णन किया गया है । पृ० १३—१६ उत्तरकांड ।

No. 432(g).¹ Chhappaya Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—9½ × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—134 Anuṣṭup śloka. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Pāṇḍita Śyāma Bihārī Mīśra, Gollāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशाय नमः । अथ छप्पै रामायन लिख्यते । छन्द छप्पै ॥ श्री गुरचरण सरोज बंदि गणनाथ मनावै । उंदि प्रसाद शुभ होई राम सो चिनय मुनावै । भारत मंजन राम नाम मुनि साधुन गार्ह । सुमिरत नाढ़े नाथ होत सब दैर सहार्ह । अपति रघुपति अवध पति करौ नाम सोई जाय । दैर दैर श्री रामचन्द्र मम हरहु लोक संतापना ॥ १ ॥ रहौ कपोतो स्वपति समेत बैठि तह पासा । गंगन उड़े सोचा भूमि तल दैवो प्रकासा । व्याघ्र महे करवान देखि छोचन जन मोचति पक्षी स्वमन महा समीत दक्षि दंपति उर सोचित । दुष्ट दलन कठणाचन राम छेहु सरनापना । दैर दैर श्री रामचन्द्र मम हरहु लोक संतापना ॥ २ ॥ उठे तनछन मेघ वृष्टि जन बनल वृत्तानो । निकसि भुषंगम उलो वृद्धि व्याधो विकलानो ॥ निकसो पाको तोर जाइ संजानहि मारो । अस्तुति करत कपोत नाथ प्रनगरत हारो । सो पशु बेनि दवाल हो जिमि कपोत परदापना । दैर दैर श्री रामचन्द्र मम हरहु लोक संतापना ॥ ३ ॥

End—गुरु अनुसासन पा सचिव साजि भारती बनाई । राम निहासन दोन्द राज गुर मुनि समुदाई ॥ भरत गहे कर क्षत्र चमर सियराम निहारो । मुदित जन्म फल पाइ मातु भारती बतारो ॥ विदा होय सब जयति करि सकि देहु रामापना । दैर दैर श्रीरामचन्द्र मम हरहु लोक संतापना ॥ २९ ॥ छूटेउ बंदि सब देव बिबुध कोटि तेलोस हरपि कह । अस्तुति करत बनाय पशुप जयमाल हरपि गह । शंभु बाप अस्तुति करत बिबिधि मांति सियरामा । पाय रत्नाय सब चले देव सब निज निज चामा ॥ विदा किये सब कै पशु देव जयति कह जापना । दैर दैर श्रीरामचन्द्र मम हरहु लोक संतापना ॥ ३० ॥ राम चरित चबगाइ सिन्धु कोठ पार न पावै । शुक्र सारद निगमादि नेति कहि निज मुख गावै । शंभु उमा मुनि भरद्वाज मुनि जानबलिक मुनि । काग भसुडि मुनि गहद मांनि कह तुलसीदास गुनि ॥ कहे सुने रति राम यह बेक राज मति पापना । दैर दैर श्रीरामचन्द्र मम हरहु लोक संतापना ॥ ३१ ॥ रति श्री

तुलसीदास की कृपे रामायन उत्तर काण्ड समाप्त सप्तमोऽध्यायः ॥ रावण नामवान् ॥ ३१ ॥ सो एकतीस कपरे हैं । सेठा । १ । रंग (२) फोक (३) पंछ । ४ । वचन । ५ । गौसो । ६ । संकट मोचनो रामायन पाठ करै तो रावण मरै सो मन है । बेतौ तौ सब काम सिद्धि होइ । बां तावरी करी तौ पावौ भव-सागर ते नर तन नाव है ॥ संख १२९१० ॥ राम साँव ।

Subject—गुरु चरण वंदना, कपोत के जोड़े को विपट, (वाज—व्याघ्र और शत्रु से) उसका उद्धार, भगवान के घनेकों नामों को वंदना, ताड़का, सुबाहु का वध, मय को रखवालो, अहिन्या का शाप मोचन और वरदान, विदेह का प्रथम रचना, धनुष-मंग, पशुराम का सरासन देना, सोता विवाह और अयोध्या गमन का संक्षेप में वर्णन किया है । पद० १—५ बालकाण्ड ।

वन गमन, कैवट का पद धोना, चित्रकूट वास, कोल भौंठों को तारना, भरत को चरणपादुका देकर तुष्ट करना, भरत का विनय करके पलटना वर्णन किया है । पद० ६—अयोध्याकाण्ड ।

जयंत का शरण आना, एक प्रांश का फोड़ना, विनाश कर दृष्य, कपटी सुग (मारोच) कर्षध आदि का वध, गिद्ध को सुगति, सेवकों की भक्ति देना, बालि के भय से सुग्रीव का पर्वत पर वास करना संक्षेप में कहा है । पद० ७ चारण्यकाण्ड ।

हनुमान का भगवान के पास जाना, सुग्रीव की मित्रता, बालि का वध, वर्षा ऋतु में निवास, सुग्रीव को राज देना, हनुमान को मुद्रिका देकर भेजना, हनुमान का प्रसन्न हो खोज करने जाना, वानरों के साथ वन, पर्वत, पोट, ताल आदि का खोज करते हुए समुद्र तीर आना, संपातों से भंड, संपातों का साक्षात् होना, सोता का निशान बतलाना, समुद्र को देख कर सब का हृष्ट कर विलाप करना, संक्षेप में कहा है । पद० ८—९ किष्किंधाकाण्ड ।

आमंत्रित की बात सुनकर हनुमान का प्रसन्न हो समुद्र माघने के लिये जाना, सुरसा से भेंट, सिंघि का वध, मैनाक स्पर्श, समुद्र का पार होना । लंकिनी को मुष्टिका पहार, लंका में घर घर सोता का खोजना, निराश हो राम नाम जपना, विभीषण भेंट, विभीषण से युक्ति पूछ कर प्रशोक-वन में आना, पक्ष्य में छिपना, प्रगट होने की युक्ति विचारना, दशकंधर का छिपे संहित आना, जानकों को डरवाना, जानकों द्वारा तीरस्कृत हो वापस जाना, सोता का व्याकुल हो आग मांगना, हनुमान का उसी समय मुद्रिका देना, सोता का उसे पाकर विस्मय हर्षयुक्त होना, हनुमान का प्रगट होना, जानकों से संदेसा कहना, सोता का व्याकुल होना, हनुमान द्वारा सान्त्वना पाना, हनुमान का वाग में जाना, फल खाना, वृक्ष तोड़ना, अश्वकुमार आदि का मारा जाना, मेघनाद का आना,

वस्त्रों द्वारा हनुमान का बांधा जाना, पुंछ में तेल पट बांध प्रज्ञा लगाना, लंका-
दहन, विभीषण का घर जलने से बचना, हनुमान का समुद्र में कूद कर पुंछ
पुमाना, सोता से चूड़ामणि के विदा मांग कर रामचन्द्र के पास जाना, मधुवन
का फल खाना, बंदरों से भेंट, सोता का विरह राम से कहना, मारोच, सुबाहु,
कबंध आदि की याद दिलाना, चूड़ामणि देना, रामचन्द्र का करक समेत
समुद्र के किनारे जाना, विभीषण-भेंट, उसे प्रमत्त करना, लंका बनाना, रामेश्वर-
स्थापना का संक्षेप में वर्णन है—पद १०—१२—सुंदरकांड ।

मालु घोर बंदरों की सेना सहित समुद्र पार जाना, मंगद का बसीठो होकर
जाना, युद्ध, कंप भक्त, महोदर, अतिकाय, मेघनाद महिरावन, कुमकरव, रावण
आदि का बध सोता भेंट, देवताओं द्वारा रामचन्द्र जी की स्तुति, विभीषण
का राज्य तिलक, पुष्पक पर चढ़ कर प्रयाग जाना, हनुमान का भरत जी के पास
भेजना, संक्षेप में वर्णन है—पद २०—२६ लंकाकांड ।

हनुमान का भरत से संवेसा कहना, भरत का गुरु माता, मंत्री पुरवासी सब
को खबर देना, रामचन्द्र का पुष्पक से उतरना, सब से भेंट करना, गुरु की
आज्ञा से मंत्रों का रामचन्द्र की सिंहासन पर बैठाना, भरत का चमर हाथ में
लेना, माताओं की प्रसन्नता, देवताओं का स्तुति करना, कवि द्वारा रामचन्द्र
की महिमा वर्णन कथा का उद्गम शंभु-उमा, मरुद्वाज, वायवज्ज, काग, गरुड़
द्वारा वर्णन कर संक्षेप में कथा समाप्त किया है—२७—३१ उत्तरकांड ।

No. 432(h). Dohāwālī, by Tulasi Dāsa of Rājāpura.
Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—8½ x
4½ inches. Lines per page—7. Extent—740 Anuṣṭup
blokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—1249 Hijri or A.D. 1871. Place of deposit—
Rajpustakalaya, Bhinaga (Baharāich).

Beginning—थी गणेशायनमः

दाहा ॥ राम नाम मनि दोष धर जोहूँ देहलो हार ।

तुलसी बाहिर भीतरों जो चाहत डोंजवार ॥ १

२ २ मित परमात्म सत धकार सिय रूप ।

दोष मिलि विधि जाव दव तुलसी बदत अनूप ॥ २

राम नाम को एक निधि साधनता सब सुन्य ।

संत रहित सब सुन्य है एक सहित दश गुन्य ॥ ३

जथा भूमि सब बीज मय नपत नेवास धकास ।

राम नाम सब जर्म मय जाचक तुलसीदास ॥ ४

End—बैठि सिधासन राम जू सुर बिमान बहु भोर ।

हरषित सुर वरषहि सुमन सो जय जय रघुवीर ॥ ९८

स्यामल गौर किशोर वर विहरत सरजू तौर ।

सखमेव कोटिन कियो सो जय जय रघुवीर ॥ ९९

बह साखी सिय राम जस सुमिरि करहु मनधोर ।

तुलसी दरमै कही लगि सो जय जय रघुवीर ॥ १००

तुलसी चतुरे गरन ते बचै न उर को द्वेत् ।

ज्यो शीशो रंग से भरी उपर देखाई द्वेत् ॥ १०१

इति श्रीराम चरित्रे दोहावल्लो श्रीराम भक्ति संपादिनेनाम शतमेो स्वर्गे ॥
सम्पूर्णम् शुभमस्तु मिः फागुन शुदी ११ सन १२५९ साल

No. 432(i). Dohāwālī, by Tulasī Dāsa. Substance—
Country-made paper. Leaves—49. Size—6 × 5 inches.
Lines per page—22. Extent—750 Anushtup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856
Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Thakura Hanu-
māna Sīphājī, village Vardaha, post office Kherighāt, dis-
trict Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पद्य दोहावल्लो लिप्यते ॥ दोहा ॥
राम नाम गनि दोष बह जोह ईहरी द्वार । तुलसी बाहर भीतर जो चाहे उजि-
वार ॥ राम नाम को श्रेक निधि साधनता सब सुन्य । श्रेक रहित सब सुन्य है श्रेक
सहित दस गुन्य । दुगुने त्रिगुने चौगुने पांच षष्ट अथ सात । आठौ तै पुनि नौ
गुने नौ के नव रहि जात ॥ नव के नव रहि जात तुलसी किये विचार । राम
राम जो जगत में नहीं द्वेत् संसार ॥ जया भूमि सब बीज सब नष्ट नेवास
अकास । राम नाम सब धर्म सब जानत तुलसीदास ॥ तुलसी रघुबर परम निधि
निसि दिन भजौ निसंक । आदि अंत प्रति पाजिहैं जैसे नव को श्रेक ॥ हरि सो
हिय यो राखिये कोटि किये उपचार । मिटै न तुलसी श्रेक नव नव को लिपित
पहार ॥

End—ब्रह्मज्ञान जबही भयो तुलसी त्यागे व आठ । कौन बतावै रास में सुख
लाग रे काठ ॥ तुलसी तुम ज्यो कहत हैं संगत ते सब होय । माझ उपरी राम
सर वाहिन कस रस होय ॥ संगति भई तो का भयो संग स्वभाव न जाहि । फूल
जंत्र बक डार में पाता क्यों न बसाय ॥ ज्यो जल कंडी पत्र में ता धारो उर
हार । तुलसी दास गनि गुन मुई तिन्हौ न पायो पार ॥ तुलसी राम प्रताप ते

मिटत करम को रेख । ज्यो हरदो जरदो तजे चूना रह्यो न सेख ॥ एक तौ जल के मध्य है एक बरम को छोर ये दोनों एक ठौर कठ तुलसी करत निहार सत ताल सर बेधियो हत्य बालि महि बोर । दियो राज सुषोव को जै जै जै रघुवीर ॥ बांध्यो सेत सिल तरंग तरंग कपि दल मोर कुटुम सहित रावन हत्यो जै जै जै रघुवीर ॥ इति श्री दोहाबली तुलसी दाम कृत समाप्तम सुममस्तु दस्तक नीलकंठ काव्य धुंधा के संवत् १८१६ भादौ कृष्ण अष्टम्याम सुक्रवासरे ।

Subject—श्री रामचन्द्र जी की महिमा और उनका प्रेम वर्णन ।

No. 432(j). Dohāwālī, by Tulasī Dāsa of Rajāpura (Bandā). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—840 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A.D. 1837. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Mīśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥

अथ दोहाबली लिख्यते ॥ तुलसी दास कृत ॥

दोहा—राम नाम मनि दीप घर जोह देहरी द्वार ।

तुलसी मोतर बाहरा तो चाहै उजियार ॥ १

रा । नाम को अंक निधि सखनता सब सुन्न ।

अंक रहित सब सुन्न है अंक सहित दस गुन्न ॥ २

दुगुने तिगुने चौगुने पांच षष्ट अठ सात ।

षाठव ते पुनि नव गुने नौ के नौ रहि जात ॥ ३

नौ के नौ रहि जात है तुलसी कियो विचार ।

रम्यो राम जो जगत में नाहि हैत संसार ॥ ४

End—तुलसी राम प्रताप तैं मिटत कर्म को रेख ।

ज्यो हरदो जरदो तजो चूना रहै न सेख ॥ ६१

एक तौ जल के मध्य है एक है नम के घोर ।

ये दोनों एक ठौर कर तुलसी करत निहार ॥ ६२

सत ताल सर बेधियो हत्यो बालि महि बोर ।

राज दियो सुषोव कहै जै जै जै रघुवीर ॥ ६३

बांध्यो सेत सिलातरी उतरौ कपि दल बोर ।

कुटुम सहित रावन हत्यो जै जै जै रघुवीर ॥ ६४ ॥

इति श्री द्वावावली ॥ तुलसीदासकृत संपूर्णम् ॥ संवत् १८२४ ॥ शके १७५२ ॥ चैत्र शुक्ल १५ लिपतलाला कंभेद साँघ कौच के इति ॥

No. 432(k). Gītāwālī Rāmāyana, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—97. Size—6 × 12 inches. Lines per page—24. Extent—2,706 Anushtup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit—Paṇḍita Bhagwānadīnaji Miśra Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाईं तुलसी दास कृत गोता-
वली सातो कोड रामायण लिप्यते ॥ श्लोक ॥ नीलाम्बुजं स्यामलं कोमलानं
सोता समारोपित वाम मानं ॥ पाछो महाशायक चाह चापं नमामि रामे
रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आज्ञु सुदिन सुमधरी सोहाई । रूप शील गुन
धाम राम रूप भवन प्रगट भय छाई ॥ अति पुनोत मधु मास लगन यह बार जेग
समुदाई । हृष्यं चर अचर भूमि तरु तन रह पुनक जनार्द्र ॥ २ वरपहि विबुध
निकर कुसुमावलि नम हुंदभो बजार्द्र । कौशल्यादि मातु मन हरपित यह सुख
बरनि न जाई । सुनि दशरथ सुत जन्म लियो सब गुरु जन विप्र बोलाई । वेद
विहित करि कृपा परम सुचि पानंद उर न समाई । शदन वेद धुनि करत मधुर
मुनि बहुविधि बाज बधार्द्र । पुरवासिन प्रिय नाठ हेतु निज निज संपदा सुटार्द्र ॥
मनि तोरन बहु केतु पठाकनि पुरो ठचिर करि छार्द्र ॥ मागव सुत द्वार बंदोजन
जहं तहं करत बडार्द्र ॥ सहज सिंगार किये बनित चलि मंगल विपुल बनार्द्र ॥
गावै देहि असोस मुदित चिरंजीवो तनय सुखदार्द्र ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ तिहारो चरित मनोहर नाथ । सकल अवबवासी ।
अति भेदार अवतार मनुज बनु घरयो ब्रह्म अज अविनासी ॥ १ ॥ प्रथम ताड़िका
इति सुबाहु बधि पाछो द्विज हितकारी ॥ देषि दुष्टि अति सिला आप बस
रघुपति विप्रनारि तारो ॥ २ ॥ सब भूपनि गर्व हरयो प्रभु मंज्यो शंभु चाप
भारो । जनक सुता समेत पावत गृह परसराम अति मदहारो ॥ तात बचन तजि
राज काज सुर चित्रकूट मुनि भेष धरयो ॥ एक नयन कोन्हो सुरपति सुत बधि
विराध ऋषि शोक हरयो ॥ पंचवटी पावन राधो करि सज्जन कुरूप कोन्हो ॥
परदूषन सेहार कपट मृग मोघराज कह गति दोन्हो ॥ इति कबंध सुयोव सवा
करि टारो ताल बालि मारो ॥ बानर रोक सहाय मनुज संग सिंधु बांधि जस
विस्तारो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अयिल सुर बुध टारो ॥ परम

साधु जिय जानि विमोषण लंकापुरी तिलक सारो ॥ ७ ॥ सोडा अह लक्ष्मिन
संग लोन्हे प्रैरी जिजे दास जाये ॥ नगर निकट विमान आवत मुनि नर नारी
देखन जाये ॥ ८ ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह
वियोग जनित संसृत दुख राम चरन देखत बिउरे ॥ ९ ॥ ब्रह्मादिक सुर नारदादि
मुनि अस्तुति करत बिमल वर वानो ॥ चौदह भुवन चराचर हरषित जाये राम
राजधानी ॥ १० ॥ देखि दिवस सुम लगन साधि गुरु महाराज अभिवेक कियो
तुलसीदास तब जानि सुषोसर भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ ११ ॥ इति श्री
रामायण गीतावलि सातो कांड समाप्तः शुभ संवत् १८९१ वैशाख मासे कृष्ण
पक्षे दसम्यां सनिवासरे श्रद्धं पुस्तकं लिखितं संपूर्णम् शुभम् रामायनम् ।

Subject—इन पुस्तक में श्री राम जी की लीला सातो कांडों में पृथक २
वर्णन की गई हैं । अर्थात्

श्री राम जी का जन्म, व्याह, ताड़का सुबाहु आदि का मारना मुनि के
मख को रक्षा करना, गौतम नारी का उद्धार करना, भूषों के गर्व को दूर करना,
परसराम का संवाद, ज्योत्ष्यापुरी जाना, फिर पिता वचन मान बन गवन
करना, चित्रकूट में मुनि भेष धारण कर वास करना, जवंत को एक घोष कोड़ना,
सुपंगवा को नाक काटना, शरदुखन का संहारना, कपट सृग का वध करना,
गुह्यराज की मुक्ति देना, कबंध को मारना, सुग्रीव से मित्रता करना, बाली को
मारना, घानर घोर रोड़ों को सहायता से रावण का सर्वश नाश करना, विमो-
षण को लंकापुरी का राज देना और फिर लक्ष्मण सोता सहित अयोध्या में
वापस आना, नगर निवासियों का आनन्द आदि का वर्णन है ।

No. 432(1). Gitawali, by Tulasidasaji. Substance—
Country-made paper. Size—13 × 6 inches. Lines per
page—12. Extent—1 Anushtup sloka. Incomplete.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Pandita Śiva Sahai, village Ulara, post office Musāfirkhānā,
district Sultānpur (Oudh).

Beginning—हैं है लाल कवर्दि बड़े बलिहारो मैवा ॥ रामलपन भावते
भारत रिपुदहन चारु चारै मैवा ॥ १ ॥ बाल विभुषन घसन मनोहर संगति
विरचि बनैहो । सोमा निर्निन मेलावरि करि उल्लाह वारने मैहो ॥ २ ॥ कृष्ण
भगन भगन खोजिहो, मिलि ठुमुक ठुमुक कब मैहो ॥ कल बल बचन तोतरे
भंजल कवि मा मोहि तुलैहो ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव राउरानो सब सचा सहेली ॥

लैला छोचन लाहु सुकल जपि ललित मनोहर बेली ॥ ४ ॥ जो सुषको लालसा
रहे सिख सुक सनिकादि उदासी ॥ तुलसी तेहि सुष सिंधु कौसिला मगन प्रेम
पुखासी ॥ ५ ॥ ८ ॥

End—पृ० १२०—राम वसंत ॥ बेलत वसंत राजाधिराज । नम कौतुक
देपत मुर समाज । सोहै अनुज सपा खुनाय साथ । बौलिन सबोर पिचकारि
हाथ । बाजहि मृदंग इफताल बेतु । छिरकहि सुगंध परिमल परेतु । उत युवति
पूय जानकी संग । पहिरै पट भूषन सरस रंग । लिए छरी बेत सोधे विमान ।
चाचरि भूमक कहै सरसराम । नूपुर किकिनि धुनि प्रति सोदाइ । ललनागन
जब जेहि धरहि धाइ । छोचन घौत्रे कुमुपा मनाइ । छाड़हि नचाइ हाठा कराइ ।
चढ़े बरन विदूषक स्वांग सजि । करै फुटि निपटि गई लाज भागि । नरनारि
परस्पर गारि देत । सुनिहि सतराम माइन्ह समेत । बरपहि प्रसूत, बर विबुध
बृंद । जय जय दिनकर कुल कुमुदचंद । प्रह्लादि प्रसंसत प्रवचवास । गावत
कल कोरति तुलसिदास ॥

No. 432(m). Gītāwālī Rāmāyana by Tulasī Dāsa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—400. Size—9 x 4½
inches. Lines per page—7. Extent—2,275 Anushtup ślokas.
Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—
Thākura Viśwanātha Sīphajī, Raissa and Talukedāra,
Agarasar, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी विष्णु भोविज्ञेयत ॥
नीलकुंज स्वामल कोमलांग सौता समारोपित वामनाम ॥ पाछै महासायक चाह
चार्य नमामि रामे रघुवंश नार्थ ॥ राम प्रसाधरी ॥ बाहु सुदिन सुभचरो सुहाई ॥
कंपशोल गुनधाम राम नृप भवन प्रगट भै पाई ॥ अति पुनोत मधु मास लगन यह
बार जाग समुदाई ॥ हरपर्वत चर अचर भूमितह तनकह पुलक जनार्थ ॥ बरपहि
विबुध निकर कुसुमावली नम दुंदुभो बजाई ॥ कौसल्यादि मातु मनहरविहिं यह
सुष बरनि न जाई ॥ सुनि दसरथ सुत जगम लिप सब गुरजन विप्र बुलाई ॥ वेद
विदित करि कृपा परम सुखि आनंद उर न समाई ॥ सदन बैठ धुनि करत मुदित
मुनि बहुचिखि बाज बजाई ॥ पुरवासित प्रियनाथ हेतु निज संपदा छुटाई ॥ मनि
तोरन बहु केतु पठाकनि पुरी सचिर कृति छाई मागव सुत द्वार वंदि जन जहाँ तहाँ
करत बजाई ॥ सहज भिगार किए बनिता बलि मंगल विपुल बनाई ॥ भावहि देहि
प्रसोस मुदित हूँ जोरजोबो तनै सुषदाई ॥ विधिन कुंकुम कौच परगजा
घनर घबोर उड़ाई ॥ नाचोहे बर नर नारि प्रेम भर देह दशा विसराई ॥ प्रमित
धेनु रत्नतुरंग वसत मनि जात रूप अचिकाई ॥ देत भूप अनुसूय जाहि जोर सकल

सोचि ब्रह्म चाई ॥ सुषो मण सुख संत भूमि सुख फल मन मन मलिनार्ह ॥ सबहि सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद बिपिन विलपाई ॥ जो सुचि सुकीर्त सोककृत सोच विरंचि प्रभुताई ॥ सोई सुष भवध उमानि । ह्यो दशदिशि कौन जनन कही गई ॥ जेसुवर चल चितक तिन्हको गति प्रगट दिपाई । अबदिल चमल अनुप इह तुलसी दास कटाई ॥ १ ॥ जयति श्रीः ॥

End—चालक सिध के विदरत मुदीत मन दोउ भाई ॥ नाम लवकुश राम सोय अनुहरत सुंदरताई ॥ देत मुनि मुनिष सोक हरण पंचवटी पावन राखे करि सुपनेषा कुरुष कोन्ही ॥ परदूषन संवारि कपट सुग गोयराज कह गति दोन्ही ॥ हति कवेष सुषोव सपा करि भेद ताल बालि भाग्यो । वानर रीझ सहाई अनुज संग सौंधु विधि जमु विस्तार्यो ॥ सकुल पुत्र टल सहीत दशानन मारो धमिल सुर दुष टार्यो ॥ परम साधु जोषजानि विमोषन लंकापुरी तौलक सार्यो । सोता यह लक्ष्मीमन संगलोन्हे बा गिते दासंग प्रारो ॥ नागर निकट विमान पावो सब नर नारि देखन धाये त्वि विरंच सुक नारदादो मुनि प्रस्तुतो करत विमल चानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषोत प्राय राम राजधानी मोले मरत जननी गुर परिजन चात परम प्रनेद मेरे ॥ हुसह वियोग जनात दाहनदुष रामचरन देखत विसरे ॥ वेदपुरात विचारि लगन सुम महाराज चविवेक की वे तुलसीदास जोय जानि सुषवसर भगतो दान दत्त मांगि लौंघो ॥ इति पद गीतावली ॥

No. 432(a), Gītāvalī, by Tulāsi Dāsa. Substance—Country made paper. Leaves—230. Size—7 × 3½ inches. Lines per page—26. Extent—2,970 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1902 Samvat or A.D. 1845. Place of deposit—Thākura Indrajīta Simha, village Atoṛar, post office Baondi, district Bahārāich (Oudh).

Beginning—श्री मल्लगायनमः श्री जानको बह्मभावनमः ॥ यद्य गीतावली लिखेत ॥ नोलाहुजं स्यामल कोमलानं सोता समारोपित वाम भागं । पाली महासायक चारु चारु नमामि रामे रघुवंस नाथम ॥ राम प्रसावरो ॥ पाहु सुदिन सुमयरो सोहाई ॥ कहा कही अधिकार्य ॥ रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये चाई ॥ अति पुनीत मनुवांस लगन प्रहवार जेम समुदाई ॥ हरष-वंत चर अचर भूमि सुर तन रुद पुलक जनार्य ॥ वर्षदि विबुध निकर कुसमावलि नभ हुंहुमो बजाई ॥ कौसल्यादि मातु मन हरषित यह सुष वरनि न जाई । सुनि दसरथ सुत जग लयो सब गुर जन विम बोलाई । वेद विदित करि कृपा परम

सुचि धानंद उर न समाई ॥ सदन वेद धुति कांत मधुर मुनि बहुविधि ब्रजत
बधाई ॥ पुरवासिन प्रिय बाध हत निज निज संधा सुदाई ॥ आदि ॥

End—राम रामकलो ॥ रघुनाथ तुम्हारे करित मनोहर गावत सकल धबधब
बासी ॥ पाति पोदार पोतार मनुज वधु घरेड ब्रज सोई धयिनासी ॥ प्रथम
ताड़िका हति सुबाहु बाधि मय राध्या द्विज हितकारी ॥ द्वेपि दुषित पाति सिला
ध्राप वस रघुपति बिप्र नारि तारी ॥ रुच सुपन को गर्भ हन्यो हरि मंज्यो संभु
चाप भारी ॥ जनक सुता समेत भावत शूह परसराम को भद्रहारी ॥ पिता वचन
तजि राज-काज सुर चिष्कूट मुनि वेष धरयो ॥ एक नयन कोन्हो सुरपति सुत
वधि विराध त्रिषि लोक हरयो ॥ पंचवटी पावन करि राधो सुपनेषा कुरूप कोन्हो ॥
परदृपन संधारि कपट मृग गोधराज कहं गति दोन्हो ॥ इति कबंध सुग्रीव सपा
करि बंधेड ताल बालि मारयो ॥ बानर रौड सहार मनुज संग सिधु बांधि लु
विलारयो ॥ सकल पुत्र दल सहित दसानन मारि अपिल सुर दुष टारयो ॥ परा
साधु त्रिय जानि विवोधन लंकापुरी छिलक साख्यो ॥ सीता लपन संग लोन्हो प्रभु
बैरी जेत दान चाये ॥ नगर निकट विमान आयो सव नर नारी देखन चाये ॥
सिध विरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल बानी ॥ चौदह भुवन
चराचर हरषित पाये राम राजधानी ॥ मिले मरत जननी गुरु परिजन चाहत
परम अनंद भरे ॥ हुसई वियोग राम हासन दुष रामचन्द्र देखत विसरे ॥ वेद पुरान
विचारि लगन सुभ महाराज समियेक कियो ॥ तुलसीदास प्रिय जानि सुखवसर
भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ इति श्रीराम गोतावल्या उत्तर कांड समाप्तमे
लापाल समस्त सुमं सुधात श्रीराम चंद्राय नमोनमः ॥ क्षेत्र माते कृष्ण पक्षे
भौमवाचरे संवत् १२०२ ॥ लिखेत मोहनलाल ग्रामवासो बासुरे के जो देषा
सा लिपा मम दोष न दीजते ॥

No. 482(o). Rāma Gitāvalī, by Tulasi Dāsa of Rājōpura
(Banda). Substance—Country-made paper. Leaves—43.
Size—8 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—900
Anushtup ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character
—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Sundara Miśra,
village Katghari, post office Akaona (Baharāich).

Beginning—मानय सुत भाट नट जाचक जहं तहं करहि विचार ।

विप्र वधू सनमानि सुधासिनि जन परिजन पहिराई ।

सनमाने भवनीस ससौसत दष्ट महेस मनाई ॥

षष्ट सिद्धि नवनिधि विभूति सब भूपति भवन कमाहीं ।
 समै समाज राज दसाथ को लोह्य सकल सिद्धाहीं ॥
 को कहि सकै सबब वासिन को प्रेम प्रसाद उक्ताइ ।
 सारद सेन मनेस गिरौसहि अगम निमम भवगाइ ॥
 शिव विरंचि मुनि सिद्धि प्रसंसित बड़े भूप के भाग ।
 तुलसिदास प्रभु सोहिछो गावत उमगि उमगि अनुदान ॥

End—किंकिनो कनक कंज धवली मुहु मरकत सिखिन मय्य अनुजाइ ।
 मानहु परम सोमित नमित मुख विकसित चहुँदिसि रदौ लोभाइ ॥
 भुज प्रलंब भूपन अनेक जुत वसन पोता सोमा अधिकारि ।
 ज्योष्योत विचित्र हेम मय मुकामाल उरसि मोहि भाइ ॥
 धनुद सहित बौच जनु सुरपति धनु निकट बलक पांति चलि पाइ ।
 कंबु कंठ चिबुक पर सुन्दर क्यौ कहौ दमन को गुचोपाइ ॥
 कुंचित केस सुदेस वदन पर मधुपन को धवली चलि भाइ ॥
 पदुम कोस.....

No. 432(p). Rāma Gītāvalī, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—12. Extent—2,640 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1840 Samvat or A.D. 1783. Place of deposit—Rājapustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री सीता रामायनम् ।

स्वामी स्वामिन के सहित बन्दै तुलसीदास ।
 करहु कृपा चित चरन ते कबहु न होइ उदास ॥
 आलाखरौ—आज सुदिन सुमनरो सुहाई कहा कहौ अधिकारि ।
 रूप सोल गुन घाम राम नृप भवन प्रगट भये पाई ॥ १
 अति पुनीत मधुमास लगन यह बार जोग समुदाई ।
 हरषवत चर अचर भूमि तरु त नर पुलक जगारि ॥ २
 वरषहि बिबुध निकर कुसुमावलि नम हुँदुमी वजारि ।
 कौसिक्यादि मातु सब हरषित यह सुख वरनि न जारि ॥ ३

End—शिव विरंचि गुफ गारदादि मुनि सस्तुति करत विमल बानी ।
 सोदह भुवन चराचर हरषित आप राम राजधानी ॥ ९ मिले भरत जननी गुरु पुर-

जन चाहत परमानन्द मेरे । दुसरे वियोग जनित दारुन दुख रामचरन देखत
विसरे ॥ वेद पुरान बिचारि जगन शुभ महाराज अभिपेक्ष कियो । तुलसीदास
जिव जानि सुखवसर भक्तिदान तब मोगी लियो ॥ इति श्रीराम गोतायल्या
श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत सम्पूर्णम् शुभ मस्तु संवत् १८४० माघ मासे कृष्ण
पक्षे तिथि ४ बुधवार ॥

No. 432(q). Hanumāna Vahika, by Tulasi Dāsa of Rājapūra (Bānda). Substance—Old country-made paper. Leaves—20. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—22. Extent—400 Anuṣṭup ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Behārī Paṇḍey, Nāgarī Prachārini Sabha, Kāśī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः स्वये सैन संकास कोटि रवि तरुण तेज
तन उर विशाल । भुज दंड मेढ नख वज्र तन पिंगल नयन भुङ्कुरी कराल ॥ रसना
दशनानन कपिश केश ककैस लंगुर खल दल तम मान । कह तुलसीदास सो
जासु उर बसहि माहत मूर्ति विकट । संताप ताप तेहि पुरुष के सपनेहु नहि
आवत निकट ॥ सिंधु तरन सिंधु शोक हरन रवि बाल बरन तन उर विशाल ।
मूर्ति कराल कालहुक काल अनु गहन दहन × × ×
नहि संक वंक भुज × × × जातु धान
बलवान मान मद दवन पवन सुब । कह तुलसीदास सेवत सुजग माकर सुत
मूर्ति निकट ॥

End—पाद हीन पैद हीन मुख हीन बाहु हीन सोस हीन जन जानि सकल
समोप हीन मयो है । इंच भूत पितर कर्म बल काल भद मोहिय इन्दी वर मानिक
से दई है ॥ हीं तो बिन माल हीन बिकानो बल रावरे हो तेरे मोट नाम की
ललाट सोच लई है । कुंभज के किकर बिकल बूढ़े गो खुरन हाथ हाथ राम
राए ऐस कहि भई है ॥

बाहुक सुबाहु मोच लोचन मरोच मिलि पीडा है मुफेतु सो तो रोग जातु-
धान है । रामनाम जापि जानि कियो चाहौं सागराग काल के दूत भूत कहा
मेरे मान है ॥

सुमिरे सहाय राम लखन बखन दाऊ तिनके साके समूह जागृत जहान है ।

तुलसी समान ताड़िका संहारि मानो भर बधे बखद से कनारि धान
धान है ॥

बाल पनै सुधे मत × × × ×

No. 432(r). Hanumān Stuti (Hanumān Vahuk), by Goswāmi Talasī Dāsī. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—5 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—168 Anuṣṭup slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1932 Samvat or A.D. 1875. Place of deposit—Thākura Jaivakha Simha, village Mithaora, tahsil Kesarganj, post office Kesarganj, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ हनुमान स्तुति लिख्यते ॥ त्रिभु तरण सिय सोच हरण
रवि बाल वरन तनु भुजा विशाल मूर्ति कराल कालहु को काल जनु । मदन
दहन निर्दहन लंक निःसंक वंक भुव ॥ जातुवान बलवान मान मद दवन पवन
सुव ॥ कह तुलसीदास सेवक सुलभ सेवक हित संतत निकट गुण गण तने मत
सुमिरत जपत सनम सकल संकट विकट ॥ स्वरण सैल संक सकोटि रवि ठहन
तेज धन । उर बिसाल भुजदण्ड चंड नथ वज्र वज्र तन ॥ पिंग नवन भुकुटौ
कराल रसना दसतान ॥ कपोस केस ककेस लंगु पलदल मानन ॥ कह तुलसी
दास वस जासु उर मारुन सुत मूर्ति विकट । संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु
नहि पावत निकट ॥ कवित्त ॥ पंच मुष छः मुष भृगु मुष भट असुर मर सर्व
सरिस समारथ सरी । बं कुरो बोर बिदैक बिदाबलो वेद बंदो बदन पैज
पूरी ॥ जासु गुन ताय रघुनाथ कह जासु बल विपुल जल भरित जग जलधि
सरी ॥ इन दूष दवन कैत तुलसी सई पवन को पूत रजपूत पूरी ॥

End—काल को करालता करम को कठिनाई कैथो पाप के प्रभाव को
सुभाव वाय वाबरे । वेदन कुमांति सो सही न जाति राति दिन सोई बांह गही
ज्यो नही समोर डाबरे ॥ लातह तुनसो तिहारो सो निहारि बारि सोचिये
मजान भो कुपोर ताय ताबरे ॥ भूतन को आपनो पराई है कृपा निवान जानियत
सब हो को रीति राम राबरे ॥ पाइ पोर पैट पोर बांह पोर मुष पोर जरजर सकल
सरोर पोर मई है ॥ देव भूत पितर कर्म पल काह ग्रह मोहि परद वरिद मान
कसो दद है ॥ हो तौ बिन भोज हो बिकानो बलि बार हाते पाट राम नाम को
लजाट लिख लई है ॥ कुसज के किंकट विकल बूड़े गोपुरति हाथ राम दूत पैसो
नो कह भई है ॥ बाहुक सुबाहु नोच लोच मरोच मिलि पीड़ा है सुकेत सुता
राम जातुवान है राम नाम जप जाम किया चाहे सानुराम काल कैते हुत भूत
कहा भरे मान है । सुमिरे सहाइ राम लपन आपर देऊ जिनके साके समूह जानत
जहान है ॥ तुलसी संभारत ताड़का संभारि भारि भट वेधे बखड से बनाई वान
वान है ॥ इति

No. 432(s). Hanumāna Vahuk, by Tulasi Dāsa of Rājā-pura. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size $6 \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—245 Anuṣṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1029 Samvat or A.D. 1872. Place of deposit—Paṇḍita Baijnāthaji, post office Govindapura, district Rae Bareilly.

Beginning—श्री गणेशायनमः

श्री रघुवरहि प्रणाम करि सहित लखन हनुमान ।
 राखि हृदय विस्वास हड़ पुनि पुनि करी प्रणाम ॥ १ ॥
 भोमवार आदिक पढ़े जा नर सहित सनेह ।
 रुज सेकट थ्यारे नही बाढ़ै सुष घन गेह ॥ २ ॥
 सुचि सनेम पढ़ि है सुजन निरुज गात बल धाम ।
 हूँ है रत तुलसी सपद जस पेहै सब ठाम ॥ क्यौँ ॥
 स्वर्ण सेन सेकट सकौटि रवि तरुण तेज धन ।
 उर विमल भुज दण्ड चण्ड नय बज्र बल ॥
 पिन नयन भुकुटी कराल रसना दस मानन ।
 कपि सकल कर कंस लंगूर बन दल बल मानन ॥
 कह तुलसीदास बसु जासु उर भारत सुत मूरति विकट ।
 संताप पाव तेहि पुरुष के सपनेहु नहि भावत निकट ॥ १ ॥

End—बसन बसन होन धिये विषाद लोन होत दोन दूवरो कहैया हाथ हाथ
 को । तुलसी प्रताप को शताय कोन्हा रघुनाथ दोन्ही फल चारि चारि आपने
 सुभाय को ॥ नीच बढि बोज सुष पाव पाँ भव हाथ छाडिहारि मजन विसारो
 मन काय को । ताते वर तोर तन निति दिन देखित मानो । कूटि कूटि निकसति
 है लोन राम राम को ॥ ५२ ॥ वीहा

बाहुक सीता राम को हनुमत सखहि पाइ ।
 तुलसी राम वैवाजेट कर गहि कोन्ह सहाइ ॥
 भज तरु बाहर रोग यदि श्वस कोन्ह प्रवेस ।
 बिहंग राज बाहन सुरत काटे मिटै कलेस २ ॥
 निज पौगुन गुण राम को समुझै तुलसीदास ।
 होइ भलो कलि कालहु उमै लोक मनवास ॥ ३ ॥
 बाहु पोर को नाम पुनि हरन पोर संसार ॥
 पण्ट क्रियो मम इष्ट गुरु रहित समस्त विकार ॥ ४ ॥

बाहुक पोरा बाहुक हरन करन सकल कल्यान ।

तुलसी पत्र नित नेम से बावन कवित प्रमान ॥ ५

इति श्री बाहुक स्तोत्र गोसाई तुलसीदास कृत समाप्तम् सम्मत १९२९.

No. 432(f). Hanumāna Vāhuka, by Tulasi Dāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—Size— $9\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—125 Anushtup ślokas. Appearance—Good. Prose or Verse—Verse. Character—Nāgari. Date of manuscript—1878 Samvat or A.D. 1821. Place of deposit—Pandita Bhawāni Mīsrājī, village Uttar Gāwan, post office Aliganj Bāzār, district Sultānpur.

Beginning—श्री ननेशायनमह ॥ श्री महावीर जो सहाय ॥ कवित्त बंदक ॥ कमट को पोष्टो जाको गाढ़ि न की गाढ़ै माने । नाम कैसा मानन जल निधि को जल भो ॥ जातयान पावन परावन को दुर्ग भयै महा मोन आस ताने मोन को सुखल भो ॥ कुंभकरन रावन पयोधिनाद श्यन भो तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ॥ भीषम कहत मेरे अनुमान हनेमान सारिषे जोकास को जिसेक महा बल भो ॥ १ ॥ दूत रमारवन के सपूत पवन के तुं प्रजनो के नंदन प्रताप भूरि भान से ॥ सीया सेक हरन दुरित दुखदरन सरन पाये खर्वनि लपन प्रोया प्रान से ॥ दसमुष दुसह दरिद दरबे को भयै प्रगट जोलोक दोक तुलसी नीधान से ॥ ग्यान गुनवंत बलवान सेवा साधयान साहेब सुजान उर पान हनेमान से ॥ २ ॥

End—संकट हर मंगल करन महावीर गुनगान ॥ अक्षर पद सब लीन रह सुष संपत्ति कल्यान ॥ है तुलसी के येक गुन प्रीगुनाधिक कह ले ॥ मले भरोसा राम को राम रोक्खे जोग ॥ जह लखु तंद दीरख कोहेउ दीरख लखु की ठाउ ॥ अक्षर पद दूटै जहा छनिये सब कपि राउ ॥ महावीर को रंक ते लंकाँनो को बल दूट ॥ तुलसीदास जो अर्घ्य प्रति बाह विद्या सब छूट ॥ इति श्री समस्त संपूरन कया बाहुक तुलसीदास कृत जो प्रति देषा से लोपा मम दोष न दीयते पंडित जन से धिनतो भारि दूट अक्षर वाचन जोरि दसपत रामदास कथिक के लोवे संवत १८७८ मोती जेठ सुदीय मंगरवार संव १९२८ सोतराम ॥

No. 432(u). Hanumāna Vāhuka, by Tulasi Dās. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size $7\frac{1}{2} \times 4$ inches. Lines per page—7. Extent—170 Anushtup ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgari. Date of manuscript—1835 Samvat or A.D. 1778. Place of deposit—Pandita

Bhāgīrathi Pandey, village Piparpur, post office Piparpur, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ पोथी हनुमान बाहुक ॥ तुलसीदास
कृत ॥ ॐ ॥ स्वर्न सपन संकास कोटि संकास कोटि रवि ठकन तेज घन ॥ उर
बोसान भूतदंड चंड नृप वज्र वज्र तन ॥ पोंग नयन श्रीकुटी कराल रसनारद
आनन ॥ कपिस केस कंकननगुर पल दल बल मानन ॥ कह तुलसीदास य श
जम्बूनव मागति वोकट ॥ संता बाव बावरे ॥ वेदन कुमाति सा सहि न जात
राति दोन सोड ॥ बाह गहो जो गहो समोर डावरे ॥ लापवतर तुलसी तेहार
सा नोहारि बारि सो बी० प मलान भवत पोहै तोहुत वरे ॥ भुतनो का आपने
को साथ ते बड़ो हौ ॥ बाह वेदन कही न सहि जाति है ॥ घनुपद अनेक जंत्र
मंत्र टोटकादि कोप बादि महा देवता मनाप आबोकाति है ॥ करतार हरतार
भरतार कर्म काल को है जंत्र जाल जो न मानत इतराति है ॥ वेदा तेरा तुलसी
तु मेरा कही रामहु ठठोल ते हो महाबोर पोखे पीराव है ॥

End—सीता राम दयाल है सुमित नाम उदार ॥ तुलसी ताको सुलम है
सदा युक्ति को द्वार ॥ २ ॥ राम नाम जपते रहो सदा संत लवनीन ॥ तुलसी ते
जान खुद है कबहो न होत मलि ॥ जन की पीर ॥ तुलसी का पष रापीय शरन
सुषद खुबीर साधव सीताराम है जानत जन को पीर ॥ सो हरन संसै दलन
सरन सुषदरन धरि ॥ तुलसी राव हरि पद गहो पाप न रहै सरोर × ×
× × × है तुलसी वह पक गुन प्रोगुन नौबी वह लोग ॥
मर्यो मरोसा रावरो राम रो भवे लोग ॥ ९ ॥ इति श्री हनुमान बाहुक श्री
गोसाह तुलसीदास कृत संपूत शुभमस्तु श्री बाहुकस्क ॥ संमत ॥ १८३५ भादो
मासे वृक्ष सप्तम्या सुकवासरे लेखीता चोतामनि द्वारा ॥ × × × ×

Subject—बाहु पीड़ा निवारणार्थ हनुमान जो को प्रार्थना सम्बन्धी ४४
अक्षर और कुछ दाहे ।

No. 432(v). Hanumatā Panchaka, by Tulasī Dāsa of
Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—2.
Size—5½ × 3½ inches. Lines per page—11. Extent—62
Anushtup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Date of manuscript—1918 Samvat or A.D. 1861. Place of
deposit—Thākura Nannihālā Simha Sengara, Raīsa, village
Kānthā, post office Kānthā, district Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमंत पंचक तुलसी कृत लिख्ये ।
बालि का त्रास कुम्भ कुलंगति व्याकुल देह दत्ता विसर्गः । वैठि विचार करी
गिरि ऊपर चित्त न भावत एक उपरि । मन में अनुमानि तुम्है रघुनाथक भेंट
भये ते भिटो दुचिताई । या विधि मोर कलेस हरी हनुमान तुम्है भियसाम
देहाई ॥ १ ॥ नाथि पयोध पयोधि निधा अरु मेदि विमोघन को दुचिताई । फेरि
हवा सुत भानि कही तो समर्थ विदेह सुता कुलार्थ । रावन के मद मर्दन
को पुनि कोन्हे है हर्ष सुषो समुदाई ॥ या विधि ॥ २ ॥

End—आनेहु मौन सुखेन समेत गहे गिर डोलि दुरे दुतिजाई । विच के पाथ
चले सति पातुर पुण्य विमान मनो हलकाई । घोषवि पाद प्रमादित हूँ तब वैद
सुखेन सुकोन उपाई । याविधि मोर कलेस ॥ ४ ॥ रोन वियोग विदारन को
अरु भालु के घेक में मरु बहारी । पुत्र पौत्र सखा परिवार सुषो सब सागर
सेत बंधाई । दारिद्र्य दम मिटै तुलसी हनुमान के पांच कवित पढ़ाई ॥ या
विधि ॥ ५ ॥ पांच कवित को पंच कवि पढ़े सुनै नर कोइ । सुष संगति पात्य
बुधि दिन दिन दुनो देइ । इति तुलसीदास कृत हनुमंत पंचक संपूर्ण शुभमस्तु ॥
सं० १९१८ ॥

Subject—पांच कवितों में हनुमान जी की स्तुति की गई है ।

No. 432(w). Jnanadipikā Bhāṣā, by Tulasi Dāsa. Sub-
stance—Country-made paper. Leaves—31. Size—8 x 5
inches. Lines per page—18. Extent—384 Anushtup slokas.
Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition
—Samvat 1631 or A.D. 1574. Date of manuscript—1873
Samvat or A.D. 1816. Place of deposit—Thākura Daljita
Simha, village Jālima Simha Kā purwā, post office Kesara-
ganja, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ सुमिरत चरन गनेस के प्रथमहि
सीस नवाय के । बुद्ध सिद्ध जति नही भाषै संघ बनाइ । चौ० ॥ नहि उपजै नहि
देह विनाश । तिहु लोक जाकर परकाश ॥ जाको लोना जगत भुलाना ।
नमो नमो ता प्रभु भगवाना ॥ दोहा ॥ सारद सुत नारद सुमिरि व्यास जनक के
पाद । ज्ञान दीपका रजत ही । राम चरन चितु लाइ । चौ० ॥ सुनि मुनि विविधि
संस्कृतवानो । भाषा कोन्ह चहै कहि मानो ॥ हरिहि मिलन के मारग पाये ॥
देहि बताय प्रगट्युय भाये । दो० ॥ ज्ञान दीपिका बरनि ही भाषत जो तिहि
पांच । उकि युक्ति तो संघ करि कथा पुरातन सोच ॥ अथ दीपक प्रथा ॥ दो० ॥

बुद्धि पात्र वाती उक्त तत्त्व तेल को धार । ब्रह्म अग्नि करि लेसिये ज्ञान दीप
उज्जियार ॥ संवत सौरह सौ मये इकतिस अधिक विचारि शुक्लपक्ष आषाढ़ को
दुदज पुन गुरवार । तादिन उपजो दीपिका पांच ज्योति परधान धर्म ज्ञान यहं
ब्रह्म पुनि प्रभु स्वल्प विज्ञान ॥

End—दो० ॥ मन में करियत छोम कहु कैतो परै संभास । यह विचार जन
राशि निरदेत हरन करतास । सुपति भूमि यह कुमति धनु सर करनो सब
मौर ॥ भोग निसाना ताकि करि करत काम तन घोट । यह विचारि नहि पाव
सिर पिय सकल प्रभार । करम घोट दुख सुख जगत सब भुगवत करतार ।
बुद्धि होत जड़ता अधिक कहिय पायको मोट । राम साधु को विरद सम
टिक्यो दुहुन को घोट ॥ यह विचारि नहि मानिये सबगुन ता मति होत । विरद
समुझि यह सरन लपि क्षिमा करेहु सु प्रवीन ॥ सौरठा । मतिबंदू कुल देस
जप तप विद्यावेद विधि । रहै न इनको लेस नारि जो मुषहिलगारये । कर्म सुमा-
सुम जानि, विधना ताके कर गहे । जितहि टिकावति आनि, तितहि वसै मन
कामना ॥ इति श्री ज्ञान दीपिकायां श्री स्वामी तुलसीदास कृत श्रीति पुराननु
मते सिद्ध्यामार्ग वर्णनो नाम पंचमोऽध्याय ॥ ५ ॥ सौरठा । श्री गुरुचरन प्रसाद
पोयो लिपि पूजि कियो राम सदा सदाय श्री रघुवीर प्रतापते संपूर्ण जेष्ट वदि
५ भृगुवासरे संवत १८७३ श्री दश्यानमः ॥ राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—४ तक—ईश्वर प्रार्थना । आदि दीपक की परिभाषा ।
धर्म मार्ग, अर्धमार्ग, सुबुद्धि, कुबुद्धि, यमराज आदि का वर्णन । अर्थात् राम
वशिष्ठ, श्रीकृष्ण और सुमित्रि का संवाद वर्णन किया गया है । पृ०—५—१०
तक—ज्ञान मार्ग जो प्रबोधचन्द्र के मतानुसार है । इसमें काम कोच छोम मोह
तप क्षमा दिसा आदि का चलन चलन वर्णन किया गया है । पृ० ११—१४
तक—श्री शंकराचार्य मतानुसार ब्रह्म और माया का निर्णय वर्णन है । पृ०
१५—२४ तक भागवत, रामायण मतानुसार श्री रामचन्द्र जो व श्री कृष्ण के
स्वल्प वय सहित ध्यानपूर्वक वर्णन किया है । पृ० २५—३१ तक—भुक्ति पुरान
मतानुसार शिक्षा भाग्य का वर्णन है । इसमें बताया गया है कि मनुष्य का
क्या धर्म है और उसे क्या करना चाहिये ॥

No. 432(a). *Mangala Rāmāyana* (Jānki Mangal), by Tulasi
Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size
—6 × 12 inches. Lines per page—16. Extent—256 Anush-
tup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of manuscript—1861 Samvat or A. D. 1804.

Place of deposit—Pandita Bhagwān Dināji Mīśra, Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—**श्री गणेशाय नमः ॥** अथ मंगल रामायण लिख्यते ॥ गुरु
नमस्ति गौरि गिरायति ॥ सारद सेष सुकवि भूति सेत सरल मति ॥ हाथ जोरि
करि विनय सबदि सिर नावड ॥ सो रघुबीर विवाह अथा मति गावड ॥ सुम
दिन रचेत सुमंगल मंगलदायक ॥ सुनत श्रवन हिय बसहि सिधा रघुनायक ॥
इस सुहायः पावन वेद वपानः ॥ भूमि तिक्कसम तिरहुति विभुवन जानइ ॥ तहं
वसै जनक नगर नृप परम उजागर ॥ सिधा लला तहं प्रगटे सब सुष सागर ॥
जनक नाम तेहि नगर वसै नरनायक ॥ सबगुन रूप निधान न पटतर लायक ॥
मये न डूँ हैं देन जनक सम मल मै ॥ सोय सुता भइ जानु सकल मंगल मै ॥

End—**जनि छोइ छोइय विनय सुनि रघुबीर बहु विनती करयो ॥** मिलि
भेदि सहित सनेह बहुरि धिदेह उर धीरज धरयो ॥ सो समय कहत न वनै कछु सब
भुवन भरि कहना रही ॥ सब कोन्ह कौसल्यति पवान निसान बाजे गहगहो ॥
मंगल ॥ तहहि मिले भृगुनाथ हाथ करसा लिये ॥ हाटत पांति देवाइ कोप दाहन
किये ॥ राम कोन्ह परितोष रोष रिसि परिहरे ॥ चले सोपि सारंग सुफल
लोचन करे ॥ रघुवर भुजबल दधि उकाइ बरातिन ॥ मुदित राउ लपि सम्मुख
विधि सय भांतिन ॥ यदि विधि चाहि सकल सुत जग अस कावड ॥ मम लोगन
सुप देत प्रभव पति आवड होदि सुमंगल सगुन सुमन सुर वरपदि ॥ नगर कुलाहल
भवड नारि नर हरपदि ॥ इति श्री मंगल रामायण स्वामा तुलसीदास कृत समाप्त
सुममस्तु ॥ संवत् १८६१ भावनि मासे कृष्णपक्षे तिथौ चतुर्थी रविवारे ॥
दसवत वैनो वकस के मंगल रामचरित्र भाषनि बदि तिथि चौथ कहं प्रादित
पार पञ्चि ॥ ससि रस बसु ससि प्रेक्षये सोरं संवत जानु रामचरित्र अद्भुत
रतन करसि सदा मन ध्यानु ॥ राम लपन जय जानको सहित भरत परिहंत ॥
सुनित मंगल सर्वदा जे पवनज हनुमंत ॥ श्री जानको बह्मो जयति ॥

Subject—**श्री जानकी जी का जनक जी के यहाँ जन्म व व्याद व महा-
राजा दशरथ की वरात व भृगुनाथ का पाना व श्री राम जी का मृगुपति का
सेताप करना आदि का वनेन ।**

No. 432(y). Kavitāvali, by Goswāmi Tulasi Dāsa of Rājā-
pura, Bāndā. Substance—Old, country-made paper. Leaves—
58. Size—11 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—
1,160 Anushtup ślokaś. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of manuscript—1889 Samvat or A. D. 1832.
Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ कवितावली रामायण कथा तुलसी
कृत लिख्यते । अथ कला पथ्याय तुमिला कंद ॥ अथप्रेस के द्वार सकार गई सुत
गोद में भूपति छै निकसै । अथलोकिहुं साच विमोचन को ठगि सो रह्यो जे न ठगे
धूम से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से । शसनो शशि में
सम सोल उये नय नील सरोवर से विगसे ॥ ?

End—चाहै न अंतग अरिहैं को संग मागने को दियोई पै जानिये स्वभाव
सिद्धि जानि सो । बारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर बारि वेतो दैत फल चारि लेत
सेवा सांची मानिये ॥ तुलसी मरोसो मवेस भोरानाथ को तो कोटिक कटेस
करो मरो बारि सानिसो । दारिद दमन दुष दोषदाह समन सो लोक तिहुं नाहीं
इते रमन भवानि सो ॥ १५५ इति श्री रामायण कवितावली गोसाई तुलसीदास
कृत उत्तर कांड समाप्त सुममस्तु ॥ मिति आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां चंद-
वासरे समत १८८९ सन १२४० साल दः गंगाप्रसाद कायस्थ मुं टिकुइया ग्राम ।

No. 432(s). Kavitta Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Raja-
pura (Bānda). Substance—Old country-made paper. Leaves
—57. Size—8½ × 5 inches. Lines per page—22. Extent—
1,232 Anushtup ślokaś. Appearance—Old. Character—
Nāgarī. Date of manuscript—1850 Samvat or A. D. 1793.
Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedpur,
Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी रचन चरन कमलेश्या नमः ॥
अथप्रेस के द्वार सकार गई सुत गोद के भूपति छै निकसै । अथलोकिहैं साच
विमोचन को ठगि सो रह्यो जे न ठगे धूम से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन
सुखंजन जातक से । ससनो शशि में सम सोल उये नय नील सरोवर से
विगसे ॥ १ ॥ पगनूपुर को पहुंच्यो कर कंजन मेहु बनी बने माल दिय । नय
नील कलेवरपोत भगा भलकै पुलकै नृप गोद जिष ॥ अरविद से जानन
रूपमयंद अनंदित होचन मुंन पिये । मन में न बसै अस बालक जो तुलसी जग में
फल कौन त्रिष ॥ २ ॥

End—चाहै न अंतग अरिहैं को संग मागने को दियोई पै जानि सुभाव
सिद्धि जानो सो । बारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर बारिये तो दैत फल चारि लेत
सेवा सांची मानिसो ॥ तुलसी मरोस नमवेस भोरानाथ को तो कोटिक कटेस
करो मरो बारि सानि सो दारिद दमन दुष दोष दाह समन सो लोक तिहुं नाहीं
इते रमन भवानि सो ॥ १९८

दादा—राम वाम दिसि जानकी लखन दाहिने ओर ।

ध्यान सकल कल्पान मय सुर तव तुलसी तोर ॥ २१९

इति श्री कवित्त रामायन सम्पूर्णम् ॥

सुचिर्मासे शुक्ल पक्षे पंचम्या सनि वासरे पुस्तकं लिखित्वा नगराजस्य
सम्बत् १८५० ॥

Subject—बालकांड वर्णन १ से २२ छंद तक

प्रवोच्या कांड वर्णन २३ से ४४ छंद तक

आरस्य कांड वर्णन छंद ४५ से ५० तक

किष्किन्धा कांड वर्णन छंद ५१ से ५२ तक

सुन्दर कांड वर्णन छंद ५३ से ९२ तक

लंका कांड वर्णन छंद ९३ से १४३ तक

उत्तर कांड वर्णन छंद १४४ से २१९ तक

इति

No. 482(a2). Kavitta Rāmāyana, by Tulasi Dāsaji. Substance—Old country-made paper. Leaves—228. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—6. Extent—550 Anushtup slokas. Appearance—Ordinary and damaged. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A. D. 1844. Place of deposit—Thākura Viśwanātha Simha, Tallukōdara, village Agreser, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ यद्य कवित्त रामयण लिप्यते ॥ सदैवा ॥ कवित्त ॥ प्रवदेश के द्वार सकार गई सुत गोद के भूपति है निकसे । प्रवलोकि है शोच विमोचन कै चकि सो रही जो न चकै धिक से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित भजन नयन सुखंजन जातक से । सजनो शक्ति में शमशोत उये नव नील सरोरुह से विकसे ॥ १ ॥ पग नेपूर घो पहुंचो कर कंजनि मेहु वनो मोष माल हिये ॥ नवनील कलेवर पोत भगा भलकै पुलकै नृप गोद लिये ॥ परबिंद से आनन रूप मरंद धनन्दिन लोचन भूंग विये ॥ मन में न वसै अस बालक जो तुलसी जग में फल कौन जिये ॥ २ ॥

End—देत संपदा समेत श्री निकेत याचकन भवनि भवूति भंग हृष भव दनु है ॥ नाम वाम वामदेव दाहिनी सदा प्रशंक सेत प्ररथंगन धनंग को महतु है ॥ तुलसी मदेश को प्रभाव नाव ह सुगम यगम निगम ह को जानिवो कहा कहे

कवि मुष शरदा लज्जानो जात गात श्वेत चंद जात रूप को लहतु है ॥ ३०० ॥
चाहे न अनंग परि पको घेन घानने को दियोई ये जानिये सुनाव सिद्धि
पानि सो । बारि बुंद चार त्रिपुरारि पर डारिये तौ देत फल । चारिलेख सेवा
सांची मानि सो ॥ तुलसी भरे मन भवे शमेराना । यको तौ कोटिकलेश करो
मरो द्वार सानि सो ॥ दारिददवन दो दाहक शमन शोक लोक तिहू नाहि दुजो
रवन भवानि सो ॥ ३०१ ॥ इति श्री कवित्त रामायण ॥ सम्वत् १९०१ ॥

No. 432(b2). Kavitta Rāmāyaṇa, by Tulasi Dāsa of Rājā-
pura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—
15. Size— $11\frac{1}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—9. Extent—304
Anuśṭup blokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī.
Place of deposit—Nāgarī Prachārini Sabha, Benares.

Beginning—सिला सब सोहत सागर जौ बल बारि बड़ै । करि कोप कहुँ
रघुवीर प्रिया सो कौतुक हो गड़ कूदि चढ़ै ॥ चतुरंग चमू पल में दलिकै रन
रावण राज के हाड़ गड़ै ॥ ८९

घनाक्षरो—विपुल विशाल कपि भाल माने काल बहु वेप धरे धावै किरो
करपा ।

लिप सिला सैल साल ताल सौ तमाल तेरो तैप निधि विविध समाज
हरपा ॥

दुगो दिन कुंजर कमठ काल कलमलै डोलै धरावर धनु धरा धर धरपा ॥

तुलसी तमकि चले राघो की सपथ करै को करै भटक कपि कटक
धमरपा ॥ ९० ॥

End—सवैया । जाके विडोक्त लोकप होत विसोक । लहै सुरलोक
सुरलोक सुगीनहि । सो कमला तजि चंचलता मर कोटि कला रिभवै सिर
मौराहि ॥ ताको कहाह कदा तुलसी तुल जाहि मांगत कूकर कौरहि । जानकी
जोवन को जनु है जरि जाहु सो जाह जो जांचिय बौरहि ॥ १६६

जहु पंच मिले जेहि देहकरो करनो लखु धौधरनी धर को । जन को कहु
क्यों करि है न संवार जो सार करै सचपाचर को ॥ तुलसी कहु राम समान को
घान जो सेवक जाहु रमा घर को । जग में गति जाहि जगत्पति को परबाहि
च ताहि कहा नर को ॥ १६७

जग जांचिय कौन न जांचिय जो जिम जा × × × × चपूले ।

No. 432(e2), Krishna Gitawali, by Tulasi Dāsa of Rājā-pura. Substance—Foolscap paper. Leaves—20. Size 7×4 inches. Lines per page—12. Extent—150 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasi Rāma Agrawala, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्ण गोतावली श्री कृष्णाय नमः

माता है उल्लस गोविंद मुख बार बार निरखै ।

पुलकित तनु भानंद धन जन जन मन हरखै ॥

पूछत तोतरात बात मातहि यहुगई

अतिसे मुख जाते तोहि मोहि कहु समुझाई

देव तुव वदन कमल मन भानंद होई

कहै कौन सुर नर मुनि जानै काइ कोई

सुन्दर मुख मोहि देखत इच्छा अति मोरे

मम समान पुन्य पुंज बालक नहि तोरे

तुलसी प्रभु प्रेम विवश मनुज रूपधारो

बाल केलि लौला रस ब्रज जन हितकारो ॥ १

End—गह गह गगन दुन्दुभी बाजो

वरपि सुमन सुरगण गावत यश हरष मगन मुनि सुजन समाजो

सानुज सगन ससचिव सुयोधन भये मुख मलिन छाई खल बाजो

लाज गात्र उन बिन कुचालि कलि परी बजाई कहै कहुं गाजो

प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया को भली भरी भय भरी न भाजो

कहि पारथ सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीब निवाजो

सिथिल सनेह मुदित मनहीं मन बसन बिच बीच वधु बिराजो

सभा विधु यदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भाजो

सुम सुम जन साके केशव के शमन कलेश कुसाज सुसाजो

तुलसी को न होइ मुनि कोरति कृष्ण कृपाल मक्ति पथ राजो । ६१

इति श्री राम गोतावली कृष्ण चरितं समाप्तम्

Subject—१—श्री कृष्ण की वात्सावल्या और यशोदा का प्रेम बख्शें ।

२—गोपियों का यशोदा से श्री कृष्ण की शिकायत बख्शें ।

३—श्री कृष्ण का गोपियों का उलहना झूठा बताना, यशोदा का श्री कृष्ण की तरफ़दारी करना ।

- ४—दधि लोला का वर्णन
- ५—श्री कृष्ण की मृग शोभा वर्णन
- ६—श्री कृष्ण जन्म से ब्रज का चानन्द वर्णन
- ७—श्री कृष्ण का पर्वत उठाना वर्णन
- ८—श्री कृष्ण का गौ चरावन वर्णन
- ९—श्री कृष्ण का गाना वर्णन, श्री कृष्ण शोभा वर्णन
- १०—श्री कृष्ण का मधुवन जाने में वियोग वर्णन
- ११—कूवरो का स्नेह वर्णन
- १२—श्री कृष्ण विरह में ब्रज दशा वर्णन
- १३—ब्रजवासियों का उधौ से शिकायत वर्णन
- १४—श्री कृष्ण पर विरह में दोषारोपण तथा गोप ग्वाड़ों की प्रीति वर्णन
- १५—मधुप दूत से गोपियों का श्री कृष्ण वियोग में निज दशा का वर्णन ।
- १६—ऊदव को शिक्षा गोपियों का ।
- १७—गोपियों का ऊदव को उलाहना देना
- १८—श्री कृष्ण का ब्रज में लाने के विविध उपाय वर्णन ।
- १९—द्रौपदी के चोर दान में उसको श्री कृष्ण से प्रकाश वर्णन ।
- २०—श्री कृष्ण की रूपा का वर्णन, यज्ञ में मीर द्रौपदी का प्रेम वर्णन

समाप्त

No. 432(d2). Rāmājyā, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—9×4 inches. Lines per page—7. Extent—406 Anushtup slokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—1871 Samvat or A.D. 1814. Place of deposit—Śrī Mān Mahārāja Bhagawān Baksha Simphaji, Rājā Amethī, district Sultānapura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ बानि, बिनायक, धन्व, हर, रवि, गुरु, रमा, रमेश ॥ सुमिर करव सब काज सुम संगत देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सारद सिधुर वदन सशि सुरसरि सुर गद ॥ सुमिर करदु मंगल मुदित होरहि सुकृत सदाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुरु गनम हरि मंगल मंगल मून ॥ सुमिरत करतल विजि सब होइ ईस अनुकूल ॥ भरत भारती त्रिपु दवन गुरु गनैस बुधवार ॥ सुमिरत सुलभ सुधर्मकल विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥ सुर गुरु हरि सिय राम गुरु राऊ गिरा उर भानि । जो कहु करिय सो होइ सुम पुलहि सुमंगल भानि ॥ ५ ॥ सुकृति सुमिरि गुरु सारदा गनप लपन हनुमान ॥ करिय काज सुमसाज भल

निवहै नोक निदान ॥ ६ ॥ तुलसी तुलसी राम सिध सुमिरि लपन हनुमान ॥
काज विचारहु सो करहु दिन दिन पद कल्याण ॥ इति प्रथम सतक ॥

End—हनुमान सानुत भरत राम सिवा उर घनि । लपन सुमिरि तुलसी
कहत सगुन विचारि वषानि ॥ जो जिहि काजहि धनुसरे सो दोहा जब होइ ॥
सगुन समै सब सत्य फल कह्य राम मत सोइ ॥ गुन विश्वास विचित्र मति
सगुन मनोहर द्वार । तुलसी रघुवर भक्ति उर विलसति चिमल विचार ॥ इति
श्री तुलसीदास कृत रामायण सामांजा समाप्त षष्ठोत्तर शत कमल फल मृष्टि
तीनि परिमाण । सप्त सप्त तजि शेष कौ राखहि सब विलगान । प्रथम सर्ग जो
शेष रहै दृजे सतक होइ । तीजे दोहा जानि के सगुन विचारव सोइ ॥ श्री
रामाय नमः ॥ सम्बत् १८७१ ॥

Subject—(१) प्रथम सर्ग—(१) पृष्ठ १—२ तक—प्रथम सतक वन्दना
तथा दशरथ का संघ मुनि को शाप देना, दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ करना ।

(२) पृ० २—३ तक—द्वितीय सतक । रामादि जन्म वखन ।

(३) पृ० ३—४ तक—तृतीय सतक—चूडाकर्मादि के पश्चात् राम का
कैशिक मुनि के साथ गमन, शिलातारन ।

(४) पृ० ५—६ तक—चतुर्थ सतक—सौय स्वयंवर वखन ।

(५) पृ० ६—७ तक—पंचम सतक—राम विवाह वखन ।

(६) पृ० ७—८ षष्ठम सतक—दशरथ अवध गमन ।

(७) पृ० १० तक—सप्तम सतक—अवध में बचाई ।

(२)—द्वितीय सर्ग ।

(१) पृ० ११—२० तक—सप्तक—विषय

(२)—राम वनवास ।

(२)—से (७) तक—वन के कार्य ।

मुनियों से मिलाप इत्यादि ।

(३) तृतीय सर्ग—२१—२९ तक—दंडकारण्य वास वखन ।

(४) चतुर्थ सर्ग—पृ० २९—३७ तक—

(५) पंचम सर्ग पृ० ३८—४७ तक—

(६) पृ० ४८ से पृ० ५७ तक—षष्ठम सर्ग—

(७) पृ० ५७—पृ० ६८ तक—सप्तम सर्ग ।

No. 432(42). Tulasidāsa Kṛit Sagunāwali, by Tulāsidāsa.
Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—8×4
inches. Lines per page—20. Extent—480 Anuṣṭup śloka.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1655 Samvat or A.D. 1598. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1889. Place of deposit—Paṇḍita Rishi Rāma Dubey, Brāhmaṇa Tolā, post office Fakharpur, district Baharraich (Oudh).

Beginning—

१	२	३	४
५	६	७	८

No. 432(f2). Rāmājñā, by Goswāmī Tulāsi Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Lines per page—24. Extent—384 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1896 Samvat or A.D. 1839. Place of deposit—Rāja Kiśore Ṭhikēdāra, Harachandapura, Rāe Bareilly.

No. 432(g2). Tulāsidāsa kē Saguna, by Tulāsi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—22. Extent—668 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1879 Samvat or A.D. 1822. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda (Bhondū), Bārābānki.

No. 432(h2). Saguna Mālā, by Goswāmī Tulāsi Dāsa of Rājāpura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—49. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—10. Extent—500 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856 Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Paṇḍita Kailāś Nāth Vājpaīyī, Asani, Fatehapura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी बल्लभो विजयते ॥ वानि विनायकं शिवं रविं गुरुं हरं रमा रमेस । सुमिरि करहु सब काज सुम मंगल देस विदेस ॥ १ ॥ गुर सर सइ सिबुर वदन सांस सुरसरि सुरगइ । सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि मुकृत सदाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गणय हनु मंगल मंगल

मूल । सुमिरत करतल सिद्ध सब होइ ईसु अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिपुदबनु
गुरु गणेश बुध बार । सुमिरत तुलसु सुधरम फल विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥
सुर गुर गुर सिय रामगन राव गिरा उर पानि । जो कह्यु करिय सो होइ सुम
खुलहि सुमंगल खानि ॥ ५ ॥ सुक सुमिरि गुरु सारदा मनपुलकन दनुमान । काज
विचारेहु जो करहु दिन दिन बड़ कल्याण ॥ ६ ॥

End—इनूमान सानुज भरत राम सोय उर खानि । लखनु सुमिरि तुलसी
कहत सगुन विचारु बखानि ॥ ५ ॥ जो जेहि काजहि अनुहरै सो दोहा जव
होइ । सगुन समय सब सत्य फल कहव राम गति गोइ ॥ ६ ॥ गुन विश्वास विचित्र
मनि सगुन मनोहर दाह । तुलसी रघुवर भगत उर विलसत विमल विचार ॥ ७ ॥

इति श्री तुलसीदास कृतौ सगुन मालायाः सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ सुममस्तु ॥
संवत् १८५६ ॥ चाश्वने शुक्ल पक्षे द्वादसी गुरु वासरे लोपोत्तं राम वक्त्र काव्य
सोनारपुरा मध्ये ॥

सर्ग							सप्तक							दोहा						
१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७

दोहा—कमल वीज सत अष्ट गनि तीन पुष्टि कर लेव ।

पुनि गुनि दिन गुनि धातु गुनि सगुन सत्य कहि देव ॥

इति ।

Subject—प्रथम सप्तक—देवों की स्तुति आदि वर्णन । पृ०—१

द्वितीय सप्तक—दशरथ राज सुख कथन, पुत्र जन्म वर्णन पृ० २—३

(३) राम आदि भाइयों की बाल कोड़ा, अदित्या तारण पृ० ३—४

(४) सोय स्वयंवर वर्णन

(५) विवाह वर्णन

} पृ० ४—५,

(७) भव्य आनंद वर्णन पृ० ६ ।

(१) राम वन गमन वर्णन, ग्रामवासियों से सम्मिलन, प्रेमभाव वर्णन ।
(२) सुमेरु विलास, दशरथ स्वर्गगमन वर्णन पृ० ७—१० । (३) नय चरित्र वर्णन ।
(४) भरत का पितृ कर्म करना । राम के पास जाना और छोटाना, (५) चित्रकूट में
साधु समाज वर्णन । (६) राम का पंचवटी वास । (७) पुनि यज्ञ, गृध्र भेद कथन,
पृ० १०—१३ । (१) दंडक वर्णन । स्वर्गलका की नाक काटना, राक्षस वध वर्णन ।
(२) मारोच मृगरूप गमन । (३) सोता हरण, राम विलाप, गृध्र युद्ध-तरन ।

(१) चारोबंधु का स्मरण फल । पृ० १४—१६ । (५) राम हनुमान भेंट और सुग्रीव मिलन । (६) बालि वध, सोय शोधार्थ सेना, (७) सोयशोधन पृ० १७—१९ । (१) रामचवतार वर्णन । (२) संस्कार वर्णन चारो बंधु के । (३) राम के कारण प्रवध चानंद कथन । सोता जन्म, राम महिमा कथन । पृ० २०—२२ । (५) विद्वामित्र का राम लक्ष्मण को प्राप्त करना । (६) मध्व रक्षा पहिल्या तारण । जनकपुर गमन । (७) धनुष भंग पृ० २३—२४ । (१) राम नाम महिमा कथन । (२) हनुमान का लंका में जाना । (३) हनुमान सोता संवाद । (४) हनुमान मरत, शत्रुहन्त प्रशंसा वर्णन आदि । (५) अक्षवध, लंका-दहन, पृ० २५—२८, (६) विमो-पन्न-राम भेंट । (७) रावण रावण युद्ध । इति पंचम सर्ग । (१) राक्षस-वध, सोताराम-भेंट, प्रवध गमन । (२) राम लक्ष्मण का माता गुरु आदि से भेंट । (३) मालु, कपि, राक्षसों को विदार्द—पृ० २९—३२ । (४) अयोध्या में राजसुख वर्णन । (५) मृत बालक का जीवन वर्णन । (६) सोय त्याग, राम यज्ञ वर्णन । (७) लव कुश जन्म, सभा में वश-वर्णन, सोता का भूमि प्रवेश कथन—पृ० ३२—३६ । (१) राम-राज्य सुख वर्णन (२) ग्रहों का फल । (३) रामपंचायतन-वर्णन (४) रामराज में कर्म-फल वर्णन । (५) बुरे भाग्य का फलना । (६) मथरा और केकई का वर्णन, दुष्टता कथन । (७) सब देवों को प्रार्थना । चक्र व विधि समनौती कथन । पृ० ३७—४२ तक ।

इति ।

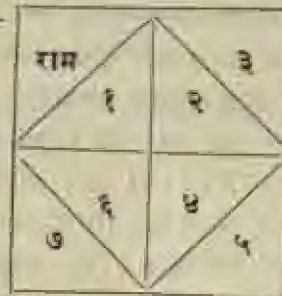
No. 432(i2). Rāma Śālākā, by Goswāmī Tulasi Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—4½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1265 Fasli or A.D. 1848. Place of deposit—Pandita Ajodhya Prasāda Misra, Kalail, post office Chilwaliyā, district Baharāich.

NOTE—(1) शेष सब विवरण No. 422 (j) (1) पर लिखा गया है ।

No. 432(j2). Rāma Śālākā, by Goswāmī Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8½ × 6 inches. Lines per page—18. Extent—405 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāmanātha Lalā, Kāsi.

No. 432(12). Rāma Śalākā, by Goswāmi Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—406 Anushtup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Paṇḍitā Lalatā Prasāda, village Paṇḍitapurwā, post office Sisaiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—



No. 432(m2). Rāma Mukātāwalī, by Goswāmi Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—7 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—254 Anushtup slokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1726 Samvat or A.D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Govinda Rāmājī, village Amahat Purawā Gajādhar Tewārī, post office Sultānpur, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री मते रामानुजायनमः कथं राम मुकावली लिप्यते । सारठा । बुझि देषि सब काय ॥ राम नाम सम मंत्र नहि ॥ बुधजन लेहु विलोय ॥ निर्गुण शुभुन विचारि कै ॥ दोहा ॥ रूप कहै निर्गुण कर सुनहु शंत मन माह । निगम कहै तोहि क्हाह जो सोहहि सबदा नाह ॥ २ ॥ चौपाई ॥ आपर मधुर मनोहर दोऊ ॥ वरन विलोचन जन जिय जोऊ ॥ प्रथमहि निर्गुण रूप अनुपा । केवल जोतिन दूसर रूपा ॥ नहि तब पांच तरुन गुन तीनो ॥ नहि तब शिष्टि विधाता कोन्हो ॥ नहि तब इन्द्र तरनि परमासा । नहि तब पावक नोर निवासा ॥ नहि तब तपत रजनि उजधारा ॥ नहि तब येकौ सकल पसारा ॥ नहि तब बारिज सुत परवेसा । नहि तब विस्नुन देव महेसा ॥ नहि तब मननावक न सुरेस । नहि तब गुरु सिध कर उपदेस ॥ देव तटनि नहि राख सुत भयक इंदु सुता नहि संनम कियऊ ॥ नहि तब परसाठि तोरथ पूजा । नहि तब देव दनुज नहि

End—जब देवा कलि सब कर नाचा । तब मैं पवन तनै यह जाचा ॥
 कासोपुरो संभु खजाना । तहें मोहि छाई मिले हनुमाना ॥ का मागहु तुम राम
 सेवक । जाको विमो देव के देवक ॥ तब मैं कहा सुनहु सुरनायक । करहु किपा
 मेपर सुखदायक ॥ सो पद्य कहहु जो रामहि पावै । बिनु प्रवास भवभ्रास
 नसावै ॥ तब अस हुकुम पवन सुत दोहा । वेद पुरान साख मत चोन्हा ॥
 करहु राम मुक्तावलिजार्ई । सो सुनि पढ़ि नर पाय परार्ई ॥ तबहि राम मुक्ता-
 वलि भयऊ ॥ जब मोहि पवन सुवन बल दयऊ ॥ जोई मंत्र विरंचि हरि संभु
 रहें लवलाय । सोई राम मुक्तावली निनम कहो जेहि नाह ॥ ४३ ॥ बैसा नाम
 बुध देखिहौ ग्रंथन कह कहु होय ॥ पवन तनै को राखना पावै सकल
 विलोय ॥ ४४ ॥ जो पढ़ै दिन थो राति । चित दै के बहु भाति ॥ वह सुनि नार
 जो कोय । सो राम पद कह होय ॥ सुनि है जो हिय भरि ध्यान । सो पावै पद
 निर्वाण ॥ ताकह कल्प जो होय । तेहि संग रहै न सोय ॥ x x

Subject—(१) पृ० १—७ तक सृष्टि निरूपण (२) पृ० ८—१० तक—भुगु द्वारा त्रिदेव परीक्षा । (३) पृ० ११—२३ तक—राम भेंट के साधन, सगुण, निर्गुण वचन । (४) पृ० २४—२५ तक—नवव्या भक्ति वचन । (५) पृ० २६—२३ तक—कलियुग में रामनाम महिमा । (६) पृ० २४—३६ तक—तीन प्रकार के पुरुषों के लक्षण । (७) पृ० ३७—४६ तक—शास्त्र मत शरीर का रूपक नगर के साथ सादृश्य, अज्ञात जाप के भेद । (८) पृ० ४७—५४ तक नाम जपने का नियम, फल । (९) पृ० ५४—कलियुग में उत्पन्न हुए नृपों में निर्वाण पदाधिकारी । (१०) अंत—पाठ—महात्म्य, पृ० ५७ तक पृ० ५८ में रामनाम महिमा के दो कवित्त ॥

No. 432(a2). Rāma Mukṭāvalī, by Tulasī Dāsajī. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—9×7 inches. Lines per page—24. Extent—300 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1884

Samvat or A. D. 1827. Place of deposit—Paṇḍita Mangaladeva, village Rewalī, post office Baharāich, district Baharāich (Oudh).

No. 432(02). Rāmāyana (Bālakāṇḍa), by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—864. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—7,844 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1903 Samvat or A. D. 1846. Place of deposit—Thākura Bindhyābakhsha Simhaji, village Tikarā, post office Dhanauli, district Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः गुह्यनारायणाय चतुलित वलचामं स्वर्णं
शैलाव देहं दनुजवन कृशानं ज्ञाननामाय नमः सकल गुणनिधानं वानरानांघोशं
रघुपति वरदूतं वात जातं नमामि ॥ १ ॥ मनेजबं माहवतुष्य वेगं जितेन्द्रिय
बुद्धिमतां वरेष्टं ॥ वातात्मजं वानर युध मुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्यं ॥ २ ॥
उल्लिख सिंघो सनिलं सलोलवः शोकं वह्नि जनकात्मजाया ॥ प्रदायते नैव ददाह
लंका नमामितं प्राञ्जलि राजनेयम् ॥ ३ ॥ गोः पदं कृतवारोशं मसको कृत राक्षसं ॥
रामायन महं माला रत्नं वन्दे निलात्मजं ॥ ४ ॥ वोर दनुमते नमः ॥ श्रीगणेशाय-
नमः श्रीगुह्यशरण ॥ वर्णानं मर्थं संघानां रसानां कंदसामपि ॥ मंगलानां च क सौंदर्य
वन्दे वाणी विनायकौ ॥ भवानो शंकरो वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ ॥ जिह्वा
विना न पश्यति सिद्धि स्वांतलमोश्वरे ॥ २ ॥ वंदे बाघमयं नित्यं गुहं शंकर
रुपिणं ॥ जामाशितो हि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्दिते ॥ ३ ॥ सौताराम गुणग्राम
पुष्पारत्न विहारिणौ वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ कबोश्वर कपोश्वरौ ॥ ४ ॥

End—सोरठा—भगेश्वरि सुखचाम पतिसुख पति निर्मल सुख शिवपुरो
तहां देव विश्राम सो महिमा वरनौ कदा ॥ दोहा ॥ कहे सुने समुझे सकल सो
प्रभु गुनगण गान । सोता पाति रघुकुल तिलक सदा करहि कल्याण ॥ सोरठा—
सिय रघुचोर विवाह जो सप्रेम नावहि सुनहि ॥ तेन कह सदा उक्ताह मंगलयेतन
रामजस ॥ दोहा ॥ कठिन काल कलिमल ग्रसितः साधन कछौ न होइ ॥ पेंह
विचार विश्वास करि सुमिरहि बुध जन सोइ ॥ सोरठा—मनहरि पद प्रनुराग
करहि त्याग नाना कपट । महामोह निभु जागु, सोयत बोते काल बड्ड ॥ इति
श्री रामचरित्रे कलिकलुपविध्वंसने विमल वैराग्य संघादिनो तुलसीकृत बालकांड
रामायण संपूर्ण शुभमस्तु कल्याण मस्तु मिति पौषमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां सोम
वासर संवत् १९०३ शाके १७६८ ॥ दसकत भजोत सिंह ॥ बास टिकरा ॥ पटनाथ
बलदेव यक्ष सिंह ॥

Subject—(१) पृ० १—१७३ तक—इन्मूमान जी की वंदना, बाणो तथा विनायक की वंदना, भवानी शंकर की वंदना, गुरु की वंदना, कबोइश्वर तथा कपोइश्वर की वंदना, सौता की वंदना, रामायण की प्रस्तावना । गलेशजी की वंदना, तथा महिमा नारायण, शिव, गुरु के कमल चरण की वंदना, चरखरत्न को बड़ाई पद नख की शक्ति का वर्णन । सज्जन विनय, साबु चरित विसदता तथा उसके फल । बल वंदना, संगति का प्रभाव, देव दनुजादि सभी की वंदना । विविध विरान वर्णन के साथ ग्रन्थचतुष्टय भक्त तथा अभक्त जनों का स्थान । कविको दीनता स्वमुचते, ध्यास इत्यादि कवि जन की वंदना, कविता का वास्तविक रूप । चारों वेदों की वंदना, विप्र, सारद सरितादि वंदना, कथा का फल, पंचधपुरी की वंदना, राम के माता पिता की वंदना, भरत हनुमानादि रामायण के पन्थपात्रों की वंदना । रामनाम महिमा, रामायण की कथा प्रथम किसने किससे कहो, रामायण की कथा अपने गुरु से सुनने का वर्णन । राम गुणानुवाद विषदना, रामायण निर्माण काल । संवत सौरह सौ इकतीसा । करत कथा हरि पद धरि सौसा । भौम नौमो बार मधु मासा ॥ पंचधपुरी यह चरित प्रकासा ॥ इस ग्रंथ के रामचरित मानस नाम रखने का कारण, कथा की विषदता का वर्णन, त्रिविधि श्रोता वर्णन, सूक्ष्म में कथाओं की गणना, शंकर विप्र की कथा, कलसुग की दशा उसमें वलौध्रमादि की दुर्व्यवस्था का वर्णन, कलसुग के गुरु वर्णन, हनुमान तथा तुलसीदास जी का मिलन, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य संवाद, शिव तथा सती का संवाद, पारवती का जन्म, षट्मुख जन्म, त्रिपुरा दनुज जन्म, गलेश का जन्म, रामसर शिव पारवती का संवाद, रामचंद्र के भजन की महिमा, राम के अवतारादि लेने का वर्णन ।

(२) पृ० १७८—६५० तक—जालंधर की कथा, नारद मोह वर्णन, मनुसत्तरूपा की तपस्या, भानुपताप की कथा, मेघादरी का जन्म, देवासुर संग्राम, रावण-जन्म, रावण लंका प्रवेश, मेघनाद तपस्या, पहिरावन का जन्म, इन्द्र-मेघनाद संवाद, मेघनाद का विवाह, राजादलोप की कथा, राजारणु की कथा, राजाभज की कथा, रावण-नारद संवाद, मनुसत्तरूपा का जन्म, सुमेत-मेघनाद (संग्राम) नेमाहित की कथा, दशरथ-कौशल्या का विवाह । सुमेत का विवाह, दशरथ-चरदूषण का संग्राम, केकई-सुमित्रा का विवाह, जानकी का जन्म, रावण चरित, बालि-सुग्रीव का जन्म, शंखरोष की कथा, लोमपाद राजा की कथा, धीरामचन्द्रजी की कथा जन्म, रघुवंशियों का वंश वर्णन, विश्वामित्र की कथा, ता.बुका की कथा, सानभद्र नदी की कथा, परशुराम का जन्म, गैतम-इन्द्र संवाद, राजानहुष की कथा, भस्मासुर की कथा,

संजनी तपस्या, संजनी विवाह, महावीर जन्म, महावीर-कुंभज संवाद, बलि-वाहन संवाद, राजसागर का विवाह ।

(३) पृ० ६५१—६८४ तक—उमर की वज्र, अश्वमान का राज्य, दलीप का राज्य, भागोरथ की कथा, नारद-ब्रह्मा का संवाद, रावन की कथा, गंगा जी की चारों धाराओं की कथा, जनक-विश्वामित्र संवाद । कुलकारों की कथा, परशुराम संवाद, जनक तपस्या, धनुषा की कथा, श्रीरामजानकी विवाह ।

No. 432(p2). Rāmāyana (Kishkindhakaṇḍa), by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—10×5 inches. Lines per page—10. Extent—800 Anuṣṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1880 Samvat or A.D. 1823. Place of deposit—Pāṇḍita Bisambhara Nātha Pāthaka, village Tikariyā Pura Gangadhar, post office Gauriganj (Sultānpur).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः श्री गुरुभ्यांनमः ॥ अथ किष्किंधा कांड प्रारंभ ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि बरलौ रघुपति विमल जस जो दायक फल चारो ॥ चौपाई ॥ सुनहुं उमच विनिधो गुण-धामा । पंपासार ते चले श्री रामाः । अनुज समेत तहां चलौ पाये । जहां प्रकशिक मुनि ध्यान लगाये ॥ पूछा मुनिहि नया पद माथा । जदपि सब जानत रघुनाथा ॥ सुनो प्रीय वचन मुनीन प्रवीना । माग्य सराहि हरोष अति कोना ॥ कर जोरी तब पोति दोडाई ॥ प्रेम मोद न हृदय समारि ॥ तदपि सुनौ तुम्ह कुल देवा ॥ राम चहहि निज सुजस गवावा ॥ मुनि सौ कह प्रभु तुम को अहहुं ॥ कठिन तपस्या केहि नित करहुं ॥ सुनत वचन मुनि भये सुषारी ॥ नयन खोलि प्रभु निकट निहारौ ॥

दाहा ॥

नोल जलज तन जटा शीर कटी तुनीर मुनी चिरा ।

अरुण नयन शर चाप कर हरण भक्त भये मोरा ॥

End—दाहाः—भव भेषज रघुनाथ जस सुनत जे नर नारि ॥ तिन कर सकल मनोरथ सिद्धि करहि तृपुरारि ॥ नोल तत तन इषाम कोम कोटि सोभा अधिक ॥ सुनत तामु गुण धाम । जामु नाम एग अथ अधिक ॥ ५२ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने ॥ × × × ॥ चतुर्थ कांड सोपान किष्किंधा कांड सोपान ॥ संवत् १८८० शके १७४५ याभ्वनि शुक्ल पक्ष सप्तमी ॥ लिखित रामचन्द्र रघुनाथ श्री पट्टेपुरकर ।

Subject—तुलसी कृत रामायण एक कांड । विषय उसी के अनुसार है ।

No. 432(q2). Rāmāyaṇa, Uttar, Sundar and Kishkindhā Kandas, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—9×6 inches. Lines per page—15. Extent—1,650 Anuṣṭup ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—1855 Samvat or A.D. 1798. Place of deposit—Paṇḍitā Sambhunāthaji, village Bāboori, post office Aliganja Bazar, Sultānpura (Oudh).

Beginning—पारस्यकांड पृ० ४३ अन्तिमः—

कन्द—कपि संगन सैन संधारी निशि नारी सोतहि पानी है ब्रैलोक पावन सु
सुर मुनि नारद आदि बखानी है ? जास कहत गावत सुनत समुझत प्रभु पदन
समाई है रघुवीर पथ पंचोज मधुकर दास तुलसी नाई है भौ भेषज रघुनाथ
जस कहहि सुनहि नर नारि ॥ तिन्ह कर सुफल मनोरथ सिद्धि करहि त्रिपुरारी ॥
दाहा बुधो बोसाय राषो उर मानस कहा समभ्यानः तुलसी सो नार पकृत
तनमा यही पद नीर मानः इतो श्री माह पाथो किष्किंधा कांड रामायण कोत
गोसाई तुलसीदास जी कथ संपुरनंग सुभमस्तु समावतः जो परतो देखा सो
लोखा मम दोषो न दीखते पंडोत जन सन धीनतो मेरो दुटल चक्र वाचव
समजारी सन १२०६ संवतः १८५५

End—उत्तर कांड—प्रथम पृष्ठः—श्री गनेसाधोपनमह भवानी जीव सहाइ
पाथो उत्तर कांड लोषाः दाहा श्री गुरुचरन सरोजः रजनोज मन मुकुर
सुचारो वरना रघुपति वीमल जस, जो दायेक फलचारो चौपायः—सोता
लखन सहित भगवाना ॥ चले सकल सुरसाजि वेशना ॥ पहुँच वेवान तहा चलो
आया ॥ दंडक वन जहाँ परम मुहावा ॥ जहाँ करो मुनिन्हि कर संतोषा । चला-
वेवान तहाते चौपा ॥ अंतरीक्ष सो चला उड़ाइ ॥ अंजावलोपर पहुँचे जाइ ॥
अंजावलो देखा हनुमाना ॥ जनम भुंयो माता पसयाना ॥ जाइ द्वार ठाढ़ प्रभु
भयेउ ॥ हनुमान तब मोतर गवेउः ॥

Subject—(१) पारस्यकांड—८६ पृष्ठ ।

(२) सुन्दरकांड—१३० पृष्ठ

(३) उत्तरकांड—८४ पृष्ठ

No. 432(r2). Rāmāyaṇa Uttara Kāṇḍa, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—9 ×

4½ inches. Lines per page—8. Extent—862 Anushtup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1837 Samvat or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍitā Bhawānī Bakhṣa, village Ulara, post office Musāfirakhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—आदि के पृष्ठ नष्ट हो गये हैं ।

x	x	x	x
x	x	x	x

पृ० १४—यह संशय प्रभु देख चुकाई । यात्रु सौनक सरहेदु गोशाई ॥ दो० ॥ भरत प्रनुज के वचन सुनि लोन्ह शुचि कर सांसु ॥ विरह दवा के धूम हिय उमगिनयन वह सांसु ॥ सोरठा ॥ तिमि पर पंवरहि जोशु दुन कहेठ कछु वचन हठि सिय मनसा पिय सोऊ सो तुम्हो करनीय भव ॥ ६१ ॥

End—कृन्—पक्ष तानि समय चुकानि गगन बल्ल बानो भई ॥ द्वापर परि-
तोखे मुनि मन पांखे तब तुम कुबि भारु पलई ॥ प्रभु मनु सेवा पूबिसु देवा बलि पावन तब तोहि देखे ॥ सुतार महानम प्रभु जो आतम नियकर पोरि प्रसंसकई ॥ पुनिक मज्जन पाय निबंढन गगन जो बानो बल्ल भई ॥ फल चारि दाता प्रमिष्ट अघाना मज्जन सरजू पुन्यलई ॥ कवि मुदित वधावा तुलसी गाथा मन बलि मोद अनन्द भरे ॥ यह चरित यो गावहि हरिपद पावहि सुगल लोक परलोक करै ॥ दो० ॥ तुलसीदास सतसंग करु यो चाहसि सुख लोक ॥ रसना राम कहह निति यो यह चाहसि विसोक ॥ १८५ ॥ इति लवकुसा संपूर्ण संवत् १८३७ ॥ दोसरै कावस लिखित ॥

Subject—लंका विजय के पदचात पद्य आगमन होने पर श्री सीता जी का वनवास होना, लवकुशजन्म, अश्वमेध यज्ञ । अश्व का लवकुश द्वारा बंधन, लवकुश और रामदल से युद्ध ।

No. 432(52). Uttara Kāṇḍa (Rāmāyaṇa), by Goswāmī Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—107. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—28. Extent—1,498 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1897 Samvat or A.D. 1840. Place of deposit—Śaṅkara Prasāda, post office Chāndapura, district Rae Bareilly.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ उत्तर काण्ड लिख्यते ॥ श्लोक ॥ केको कंठामनोल सुरवर विलसद्विषयादास चिन्ह ॥ शोभाय्य पीतवस्त्र

सरमिन्न नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ पाछौनाराच चापं कपि निकर युतं बंधुता सेव्य
मानं ॥ नैमोक्षं जानकीशं रघुवर मतिशं पुष्पकाकडु रामं ॥ १ ॥ कौशलेद पद
कंज मंजुलोकोमलाजमहेम वंदितौ ॥ जानकी कर सरोज ललिता चित्तकस्य
मनमुद्गमौ ॥ कुंद इंदु वर गौर सुन्दरं ॥ चंविका पतिममोष्ठ सिद्धिदं ॥ काकणोक्त
कलकंज शोचनं नैमिशंकर मनेम मोचनं । दोहा ॥ रहा एक दिन अवधिकर ॥
पति भारत पुर लोग ॥ अहं तहं सोचहि नारि नर ॥ कृशतन राम वियोग ॥
दोहा ॥ शकुन होंहि सुन्दर सकल ॥ मन प्रसन्न सबकेर ॥ प्रभु पागमन जनावजनु ॥
नगर रम्य चहुंकेर ॥ दोहा ॥ कौशल्यादि मातु सब ॥ मन अनंद प्रस होई ।
पाये प्रभु सिय अनुज युत ॥ कहन चहत प्रसकोई ॥

End—सुंदर सुजान कृपानिधान बनाय पर कर प्रीति जे ॥ सो एक राम
प्रकाम हित निर्वाण पद सम मान को ॥ जाकी कृपा लवलेख तें मतिमंद तुलसी
दास ह ॥ पायौ परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहू ॥ दोहा ॥ मेसम दोन
म दोन हित तुम समान रघुवीर ॥ प्रस विचारि रघुवंश मति हरहु विषम भव-
भोर ॥ दोहा ॥ कामहि नारि पियारि जिमि होमहि प्रिय जिमि दाम ॥ पेसे होइ
के लागहु तुलसी के मन राम ॥ इति श्री रामचरित मानसे सकल कलिकलुप ॥
विश्वंसेने विमल वैराग्य संस्थादिनो नाम सत सोपान शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु
प्रथ ॥ उत्तरकांड ससकृत् प्रभुर मातोन प्रति मिलाय कै सोधि के लोपा ॥ दसपत
कोकनाथ गुह शिववक्त्र दास काप्रथ के पुत्र ॥ गायनगर ॥ श्री शुभ
संमत १८९७ भाद्र शुद्ध ३ ।

No. 432(42). Sakhi Goswāmī Tulasi Dāsa ki, by Tulasi
Dasa. Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size
—9 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—630 Anushṭup
ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—1858 Samvat or A. D. 1811. Place of deposit—
Paṇḍitā Govinda Rāmaji, Purwa Gajādhara Tewari, village
Amahat, district Sultānpura.

Beginning—श्री गनेसायनमः ॥ ओमते रामानुजाय नमः ॥ राम सौता
अथ मन को परिकर्ने लिख्यते साबो गोसाईं तुलसीदास जी की ॥ दोहा ॥
तुलसी मन पूखहि सानि सिबासर ध्यावै ॥ पक्षिम दिसि पावै नहीं कैसे धिति
पावै ॥ १ ॥ पक्षिम बसे जु प्रान पति हरन अनंत अवकास ॥ तुलसी ताहि विसारि
मन पूरव करै प्रकास ॥ २ ॥ पिन नैनो पिन नासिका पिन छबनो चलि जाय ॥
पिन तुलसी रसना लुबधि सकल स्वाद रस जाय ॥

End—प्रद देवै बाहु समजोइ ॥ बीजे बसै ज्यौ भुषंगा जोइ ॥ तुलसी
 विना भगति निहिकाम ॥ तहा न राचै येकौ जाम ॥ १७ ॥ सदा उदासी नाही
 नेह ॥ कहा प्रेह कहा दिख देह ॥ तुलसी राम भजि रहै सो न्यारा ॥ त्यागी
 कोकट प्रपंच पसारा ॥ १८ ॥ तुलसी बेसा सती जब होइ जनी जनन का संगी से ॥
 मनुवा पाहि है असवार ॥ पहुँचै वेगि मोखि दरवार ॥ १९ ॥ इति श्री सती जनकी
 परिकरण संपूर्ण ॥ मिति पुस सुदि ॥ ४ ॥ संवत् १८६८ ।

Subject—(१) पृ० १—२८ तक १३० छन्दों में—मनका प्रकरण ।

(२) पृ० २९—४४ तक—७३ छन्दों में—योगका प्रकरण ।

(३) पृ० ४५—५२ तक—३७ छन्दों में—साखी प्रकरण ।

(४) पृ० ५३—७२ तक—१०३ छन्दों में—गुरु प्रकरण ।

(५) पृ० ७३—८८ तक—७६ छन्दों में—सुमिरण प्रकरण ।

(६) पृ० ७७—९० तक—१३ छन्दों में—ज्ञान प्रकरण ।

(७) पृ० ९१—१०३ तक—६१ छन्दों में—परचौ प्रकरण ।

(८) पृ० १०४—११३ तक—५३ छन्दों में—चेतावनी प्रकरण ।

(९) पृ० ११४—१२१ तक—३७ छन्दों में—सत्संग प्रकरण ।

(१०) पृ० १२२—१२६ तक—१२ छन्दों में—सतीजन प्रकरण ।

No. 432(u2). Saptāka, by Tulsasi Dāsa. Substance—
 Country-made paper. Leaves—48. Size—7 × 5½ inches. Lines
 per page—14. Extent—504 Anushṭup śloka. Incomplete.
 Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—
 Paṇḍitā Raghunandana Prasādaḥ, village Tilawaya, post
 office Suratganja, district Bārābānki (Oudh).

Beginning—अथ तृतीय सप्तक ॥ भूप भवन भाइन्द सहित रघुवर बाल
 विनोद ॥ सुमिरत सब कल्याण जग पग पग मंगल मोद ॥ १ ॥ करन वेव चूड़ा कर
 कन श्री रघुवीर उबोत ॥ समय सुफल कल्याण मय मंजुल मंगल गीत ॥ २ ॥ भरत
 शत्रुसुदन लपन सहित सुमिर रघुनाथ ॥ करहु सुमिरि मुजस बड़ मिलहि सु
 मंगल साथ ॥ ३ ॥ मुनि मधपाल कृपाल प्रभु चरन कमल उर घानि ॥ तजहु
 सोच संकट मिटहि सत्य सगुन जय जानि ॥ ४ ॥ राम लपन कौंसिक सहित
 सुरहु करहु पवान ॥ लखि लाभ जय जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥ ५ ॥ हानि
 मोक्षु दारिद दुरित पादि घेत गत बीच ॥ राम विभुष घस घापने गयो निसाचर
 बीच ॥ ६ ॥ सिला शाप मोचन चरन सुमिरहु तुलसी दास ॥ तजहु सोच
 संकट मिटहि पुजहि मन को पास ॥ ७ ॥ इति तृतीय सप्तक समाप्त ॥

End—सुधा सिन्धु सुर तह सुमन सुफल सुहावने वात ॥ तुलसी सीतापति
भक्ति सगुन सुमंगल तात ॥ १ ॥ सिद्ध समागम संपदा सदन सौम्य सुवास ॥
सीतानाथ प्रसाद सुभ सगुन सुमंगल वास ॥ २ ॥ कौशल्या कल्याण मय सुमिरि
वार तप नाम ॥ सगुन सुमंगल काज किशकरी भसि राम ॥ ३ ॥ सुवन लपन रिपु
सुदन पावहि पति पद प्रेम ॥ सुमिरि सुमित्रा नाम जग जोति अलेहि सुनाम
राम वाम दित जानुको लपण दाहिनी वार ॥ ध्यान सकल कल्याण मय तुलसी
सुरतर तोर ॥ ७ ॥

Subject—(१) पृ० १ नष्ट । पृ० २—८ तक—प्रथम सर्ग । प्रथम सप्तक
पौर द्वितीय सप्तक नष्ट । तीसरा सप्तक—राजा दशरथ का शिकार को जाना
तथा उनको शाप लगना, पुत्र यज्ञ तथा राम जन्म । चौथा सप्तक—कसैवेध चुन
कर्मादि संस्कार, मुनि मन्त्र रक्षा, सिला शाप मोचन । पंचम सप्तक—सिया
स्वयंवर तथा विवाह । षष्ठ सप्तक—विवाह के पश्चात् भव्य यागमन । सप्तम
सप्तक—राजप्रासाद तथा नगर में प्रसन्नता ।

(२) पृ० ८—१५ तक—द्वितीय सर्ग । प्रथम सप्तक—राम वन गमन, द्वितीय
सप्तक—प्रवच में शोक तथा मार्ग निवासियों का दर्शनों से मुग्ध होना । तृतीय
सप्तक—भरत शत्रुहन यागमन, राजा का दाह संस्कार, षष्ठ सप्तक—मैदाकिनों
पर निवास, सीता को वस्त्र प्राप्त होना । काक-कुचाल, विराध-वध, सारंग देह
त्याग तथा मुनियों से मिलन । सप्तम-सप्तक—राम पंचवटी निवास ।

(३) पृ० १६—२२ तक—तृतीय सर्ग । प्रथम सप्तक—दंडक वन निवास,
संपन्नता कुष्ठ, बरदूषण वध, द्वितीय सप्तक—संपन्नता को रावण से शिकायत ।
तृतीय सप्तक—सीताहरण । चतुर्थ सप्तक पंचम सप्तक—सुग्रीव मिलाप तथा
बालि वध । षष्ठ तथा सप्तम सप्तक—सीता को हनुमान का मुद्रिका देना और
उनको सुधि लाना ।

(४) पृ० २३—३० तक—चतुर्थ सर्ग । राम जन्मादि तथा राम बाल केलि
वर्णन—राजा का दान देना चारों भाइयों के नाम जपने के फल । मुनि मन्त्र रक्षा
करने का वर्णन । धनुष भंग तथा विवाह ।

(५) पृ० ३१—३८ तक—पंचम सर्ग—राम नामादि के कुछ-पुत्रादि उत्पत्ति-
फलों का वर्णन । मुरसा कपि संवाद, चित्रटा स्वप्न, हनुमान का मुद्रा डालना,
रावण का वाम विनाश । चारों भाइयों के स्मरण के पृथक् पृथक् फल । लंका दहन,
हनुमान का राम के पास पहुंचना, सुद का वर्णन तथा कुछ कुफलों का वर्णन ।

(६) पृ० ३९—४५ तक—षष्ठ सर्ग । राक्षसों का नष्ट होना, बन्दरों का
जीवित करना, सीता को राम के पास लाना । सीता को अग्नि परीक्षा, राम का

जानकी को धनुराग दिखाना । राज्याभिवेक । सुरों का प्रसन्नता प्रकाश । विभीषण को राज्य देना । राम के दर्वाजे पर सुतक बालक के ब्राह्मण पिता का प्रागमन, बालक का जोचित होना । रामराज्य का सुख । सीता को कलंक, सीता का परित्याग, राम का पकड़ाना, वाल्मीकि ब्राह्मण में लवकुश का जन्म ।

(७) पृ० ४६—४८—सप्तम सर्ग । प्रथम तथा द्वि० सर्ग—राम इत्यादि रामायण के पात्रों के स्मरण के फल । शेष पांच सप्तक छुप्त हो गये हैं ।

No. 432(v2). Sata Pancha Chaupāī, by Tulasi Dāsa of Rājāpura. Substance—New paper. Leaves—10. Size—7 x 5 inches. Lines per page—12. Extent—105 Anushtup slokas. Appearance—Old. Place of deposit—Lālā Tulasi Rāma Nigama, Rāe Bareilly.

Beginning—श्री जानकी बह्ममायनमः ॥ पथ सतपंच चौपाई लिख्यते ॥ संपू मनु सतिरूप दरस समे बालकांड दोहा । नोल सरोवर नोल मनि नोल नोरघर स्याम । लाजै तन सोभा निरपि कोटि कोटि सत काम ॥ चौपाई ॥ सरद मयंक वदन छवि सोबा, चारु कपोल चिबुक दर मोबा । अघर घरन सुंदर रद नासा, बिधुकर निकर विनिदित हासा । नै प्रभुज प्रम्वक छवि नोके, चितवन ललित भावतो जो के, भुंकुटो मनोज चाप छवि हारो, तिलक ललाट पटल दुति-कारी, कुंदल मकर मकुट सिर साजा, कुटिल केस जनु मधुप समाजा, उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला, पदिक हार भूपन मनि जाला,

End—ललित कपोल मनोहर नासा सकल सुषद ससिकर सम हासा १९
नोलकंज लेचन भौ मोचन साजत माल तिलक गौरोचन २००
बिकट भुंकुटो सम भवन सोहाये कुंचित कच मेचक छवि छाये २०१
पोत भोत भूंगुलो तन सोहो किलकनि चितवन भावत मोहो २०२
नृप रासि नृप अजित विहारो नाचत निज प्रतिविम्ब निहारो २०३
मोसन करै विविधि विधि कोडा वरनत चरित होत मोहि वोडा २०४
किलकत मोहि धरन जब धारै चलो भागि तव पूष देषावै २०५

दोहा ॥ सावत तिकट हंसै प्रभु भाजत कदन कराहि
जाहुँ समीप गहन पद फिरि फिरि चिते पराहि
सतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै
दाहन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुबर हरै इति
सतपंच चौपाई संपूरन सुममस्तु श्री सोताराम श्रीराम श्रीराम ।

Subject—श्री सोताराम की नव शिख वर्णन ।

मुख शोभा वर्णन

पृ० १—२ तक

कपोल	"
चिबुक	"
घोवा	"
घघर	"
दंत	"
नासा	"
मूकुटो	"
तिलक	"
कुंडल	"
केश	"
उर	"
कंधा	"
बाहु	"
कर भुज दंडा	"
कटि	"
पद	"
नैन	"
शोभा वर्णन	"

शंभु मनु सतरूप समय

प्रथम जन्म समय—

राम लक्ष्मण को कवि वर्णन नव शिख—२—३ तक

जनकपुर देखने के समय राम लक्ष्मण को नव शिख की शोभा वर्णन पृ० ३—५। विवाह समय की शोभा वर्णन पृ० ५—६। तब कोहबर समय की शोभा पृ० ६—७। भरत मिलाप समय शोभा पृ० ७। शिव मिलाप समय की शोभा पृ० ७। विमोक्षण मिलाप समय पृ० ८। लंकाकांड कर्मकरे वचन उत्तरकांड भरत मिलाप समय पृ० ८—१० तक काकभुसंडि दरस समय। शत पंच चौपार पढ़ने से प्रविद्या और पंच विकारों से रहित होना।

No. 432(w2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substances—Country-made paper. Leaves—17. Size—14 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—170 Anuśṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A.D. 1818. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Autāra,

village Paṇḍitapurwā, post office Rasiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीमलेशायनमः ॥ श्रीसूर्यायनमः अथ सूर्य कथा लिख्यते ॥
 दोहा ॥ एक समय गिरिजा सहित संभु रहे कैलास । उपजी अति अनुराग हृद
 सूर्य कथा प्रगास ॥ दोहा ॥ आदि भवानो संकरहि पूछै प्रेम दिहाइ । सूर्य
 प्रताप जो काज है सो मोहि कहौ बुझाइ ॥ दोहा ॥ श्री सूर्य को महिमा
 संकरहि वणें लोन्ह । कोटिन विप्र जिवांइ कै दान सो बरन कै दोन्ह ॥ दो० ॥
 प्रथम सूर्य मनाइ कै सिधु कोन्ह प्रनाम । अरध दोन्ह कर जोरि कै वखें लाग्यो
 नाम ॥ चौ० ॥ श्री सूर्य देवता सुमिरौं तुम्हो । सुमिअ ग्यान बुद्धि दे मोहो ॥
 जोति स्वरूप आदित बलवाना । तेज प्रताप तुम्ह अग्नि समाना । तुम्ह आदित
 परमेश्वर स्वामी । अलख निरंजन अंतरजामी ॥ बरणि न जाइ जोति कर लोला
 धरम धुरंधर परम सुसोला ॥ जोतिकला जहुंघोर विराजे जगमग कानन कुंडल
 छाजै । स्वेत वरन कवि तुरंग सचांगे ग्यान निधान धर्म व्रतधारो ॥ परम पुनोत
 आदित अविनासो । सछै अजीत सब घट घट वासो ॥

End—दक्षिण दिसि है कासो प्रयाग तहवां बहइ सरस्वती गंगा । दो० ॥
 दक्षिण दिसि पुनोति है सुनहु उमा मनलाइ । आगिल अर्थ जस होइ है
 तस में कहौ बुझाइ ॥ कलौ के बोले बीत सब जाई । मानुष का तन मानुष
 पाई । तब अवतार प्रभु लेई अकलंको । मानुस तन होइहि जिमि पंकी ।
 दक्षिण दिसि तब उदइहि जाई ॥ अति हित कथा कहौ समुझाई ॥ धर्म कथा
 होइहि दिनरातो । वेम धर्म करि है बहु भोतो ॥ विप्र अघाइ पाप तब पड़ है
 निस दिन कथा सूर्य को गइ है ॥ दक्षिण दिसि रवि लेई निवासा । धर्म कथा
 तहं होइ प्रकासा । मिथ्या वचन कोउ नहि भणि हैं । निस दिन टेक सूर्य पर रवि
 है । धर्म विचार सूर्य तब करि हैं । दादस कला जोति तहं उइ है ॥ दोहा ॥
 दादस कला होइ उइहि रवि तहं जाइ ॥ जन्म जन्म के पातक हल्या कहत
 सुनत सब जाइ । सारठा ॥ उमासंभु के संपदा पह भषावै । सूर्य को पढ़े सुनै मन
 लावै । पावै पद निर्माण इति श्री सूर्यपुराण लिपितं वस्तोराम मिथस्म शुभं
 भूयात संवत् १८७५ समे पौष १५ दिन भुगुवासरे ॥ राम राम राम राम राम ।

Subject—सूर्य की कथा और उसको महिमा मच उदाहरण यथा—सूर्य
 भगवान का व्रत करने से अंधे को नेत्र, काढ़ो को सुन्दर काया, निर्धन को धन
 और बिना पुत्र वाले को पुत्र प्राप्ति होता है ।

No. 482(x2). Surajapurāṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—
 Country-made paper. Leaves 23. Size—7 × 4½ inches. Lines
 per page—20. Extent—275 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—

Old, Character—Nāgari. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1899. Place of deposit—Hazāri Lāla, post office Rahua, district Rāe Bareilly.

Beginning—*घों श्रीगणेशाय नमः ॥ घों श्री कृज जी सहाये नमः श्री हनुमान जी सहाये नमः ॥ श्री सरासजी जी सहाये नमः श्री तेतीस कोटी देवता जी सहाये नमः ॥ श्री गुरु जी सहाये नमः ॥ श्री कृज पुरान लीपते ॥ दोहा ॥*
बंदों चरननि उर घरी भक्ति प्रेम लवलोन । महिमा चमक अपार है साहेब म्यान प्रबोन ॥
बंदों चरन जोगी कर श्रोपती गौरी गनेस । तुलसीदास करो बरनो बरानै कथा दिनेस ॥ चौपाई ॥ श्री कृज देवता सुमिदौ तोही । सुमोख म्यान बुधौ देह मोही ॥
जांतो सरूप पादोत बनवाना ॥ तेज प्रताप न घंगौनी समाना ॥ तुम पादान प्रमेस्वर त्यामो ॥ चलप नोरंजन चंद्रजामी ॥
बरनोन जाइ जेति कै लीला ॥ घरम घुरंजर प्रम सोसोला ॥ जेतिकला चहुंवेर विराजै ॥ जगमग कानन कुंडल काजै ॥ नील वरन कबो तुरंग घसवारो ॥
म्यान सोधान घरम ब्रतधारो ॥ प्रेम पुनीत पादोत प्रबोनासो ॥ पजै भनादो सकल घटवासो ॥

End—*पथवा पोपर बटतर गायै । ब्रत करै रविनाम कहायो । रोग सकल तन के सब जाहो ॥ तेज मान रवि प्रवेश कराहो ॥*
पुत्र पउज संपदा ते पावहो ॥ सो विशेष करो स्तुती घस गावहो ॥ दिन दिन भक्तो करै अघोकाई ॥ तेहि पर पादित रहहि सहाई ॥
सुर दुर्लभ जग विविधो भोग करो ॥ संत प्रबख्ता सुर सुनो तन घरी ॥ रोपी पुरवास ताहो कर होई ॥
रवि के भक्तो जानै जो काई ॥ दोहा ॥ येह ईतिदास पुनित अतो ऊमहि कहा समुझाई । ब्रत कीये नोमहि लाये सो रोपी लोकहि जाई ॥
इति श्री पद्म पुराने ॥ श्री कृज महातमे ॥ उमा महेश सेवाइ पुजा पाठ घसधाने बरनौ नाम द्वादसमा अध्याय ॥ १२ ॥
इति श्री कृज महातमे मेहा पुराने ॥ कृजा ब्रत विधान बरनौ नाम ॥ द्वादस ॥ मा अध्याये ॥
इति श्री कृज पुरान संपुरन समत ॥ सुभ मस्तु ॥ रामा राम राम मदसदह लीपत गंगादिन । तैवारि जो प्रति देष सो लिषा ॥ संवत् १९०६ महीने कुषार सुकल पक्षा तीथी १ पंचमी ॥ दिन सुकवर

No. 452(y2). Surajapurāṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size 9 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—25 Anuṣṭup śloka. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—1907 Samvat or A.D. 1850. Place of deposit—Śrīmatī Mahantī Lakṣhaman Dāsi, Kutī Bābā Jhāmādāsajī, post office Kesaraganja, district Sultānpur.

No. 432(a2). Surajapurāna, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—9 × 8 inches. Lines per page—28. Extent—270 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1925 Samvat or A.D. 1868. Place of deposit—Thākura Rāmdaura, village Mithaurā, post office Kesarganja, district Baharāich (Oudh).

No. 432(a3). Tulasi Satsai, by Tulasī Dāsaji Goswāmī. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—14 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—902 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1830 Samvat or A.D. 1779. Place of deposit—Rāma Śhaṅkara Bājpai, village Bahorī ka Bājpai kā Purawā, post office Sisaia, district Baharāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ नमो नमो श्री राम प्रभु परमात्म परधाम । जेहि सुमिरत सिध होत है तुलसी जनमन काम ॥ १ ॥ राम वाम दिसि जानको लखन दाहिनी ओर । ध्यान सकल कल्याण कर तुलसी सुर तह तौर ॥ २ ॥ परम पुरुष परधाम वर जापर अपर न आन । तुलसी से समुक्त सुनत राम सौई निर्बान ॥ ३ ॥ सकल सुषद गुन जासु से राम कामना होन । सकल काम प्रद सर्व हित तुलसी कहहि प्रबोन ॥ ४ ॥ जाके राम राम प्रति प्रमित प्रमित ब्रह्मन् । से देपत तुलसी प्रगट प्रमल सु प्रचल प्रचंद ॥ ५ ॥ जगत जननि श्री जानको जनक राम सुभ रूप । जासु कृपा प्राति प्रस हरनि करनि विवेक अनूप ॥ ६ ॥ तात मापु पर जासु के तासु न लेस कलेस । ते तुलसी तजि जात किमि तजि घर जन परदेस ॥ ७ ॥ पिता विवेक निधान वर मातु दया सुत नेह । तासु सुवन किमि पाइ है अनत अटन तजि गेह ॥ ८ ॥ बुद्धि विमै रगत होन सिंसु सुपथ कुपथ मत जान । जननि जनक तेहि किमि तजै तुलसी सरिस अजान ॥ ९ ॥ मात तात सिध राम रूप बुधि विवेक परमान । हरत प्रथिल प्रस तरुन तर तव तुलसी कहु जान ॥ १० ॥ जिन ने उदमव वर विमवब्रह्मादिक संसार । सुगति तासु तिनको कृपा तुलसी वदहि विचार ॥

End—पीत सगई सकल विधि वनिज उपाय प्रनेक । कल बल कल कलि मल मलिन उरकत प्रकहि प्रक ॥ दंस सहित कलि धर्म सब कल समेत व्योहार । स्वारथ सहित सेनेह सब रुचि अनुहरत प्रचार ॥ यानु वंशो निरुपाधि वर सद गुरु लाम सुमोत । दंस दरस कलि काल मह पोधिनि सुनय सुनोति ॥ कैराहि मुख सिल सदन लागे प्रदुष पहार । कायर कूर कपूत कलि घर घर सरिस उहार ॥

जो जगदीस तौ पति भलो ज्यो महीस तौ भाग । जन्म जन्म तुलसी चाहत राम
चरन अनुराम ॥ का भाषा का संस्कृत बिभव चाहिये सांच । काम जो पावे
कामरो कालै करिय कमाच ॥ वरन विसद मुका सरिस पर्य सुत्र सम बूल ।
सतसैदा जगवर विसद गुन सोमा सुख मूल ॥ वर माला वाला समति उर धारै
जुत नेह । सुख सोमा सरसाय नित लहै राम पति गेह ॥ भूप कहहि लघु गुनिन
कहं गुनी कहै लघु भूप । महि गिरि गत दोऊ लखत भिमि तुलसी स्व स्वक्य ॥
दोहा ॥ चारु विचार चहु परि हरि बाद विषाद । मुकृत सोम स्वाय्य धर्वाधि
परमाय्य भरजाद ॥ इति श्री मद्गोसाई तुलसी दास विरचितायां सत शति
कायां राजनीति प्रस्ताव वरनो नाम सप्तमः सर्गः निषत्तं कालिका प्रसाद
काव्य संवत् १८३६ गुजौली मध्ये ॥ श्री राम श्री राम श्री राम

Subject—राम की महिमा सत लक्षण राज नीति आदि के ७०० दोहे ।

No. 432(b 9). Dohāwālī "Tulsi Satsai", by Tulsi Dāsa.

Substance—Country-made old paper. Leaves—106. Size—
10 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—931 Anuṣṭup
ślokaś. Appearance—Very nice. Character—Nāgarī. Date
of manuscript—1893 Samvat or A. D. 1836. Place of
deposit—Thākura Vishwanātha Simha Talukedāra, village
Agesar, post office Tirsundī, district Sultāppur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पद्य श्री गोसाई तुलसी दास जो कृत
दोहाबलो सतसई लिख्यते ॥ गुर मनपति गिरजा रोषै ॥ गौरा कपोश पद्मोस ॥ बंदि
वरन दोहाबलो । कृपा करहु भज ईस ॥ १ ॥ भाई सकल सदगुन सुमतिः ॥ बैठहु
उर खान ॥ करहु दया मति विमल हें ॥ कहौ गुन मान ॥ २ ॥ तासु सुजस की
कहि सके जेहि उर राम निवास ॥ तेहि हनुमंतहि नाई सोर ॥ भाषा ललित
प्रकास ॥ ३ ॥ संसकोट के पथ के तुलसी शक संजोग ॥ बम बारा भाषा
बोना ॥ हरि है न लाग भोग ॥ ४ ॥ का भाषा का संस्कृत ॥ मेम चाहिये सांच ॥
काम जो पावे कामरो ॥ कालै करै कू मांच ॥ ५ ॥ मंगल मनि मज्जाद मनिः ॥
सकल धर्म मनि घोर ॥ लाल हयमनि भूप खानद मनि रघुघोर ॥ ६ ॥ × ×

End—तुलसी बोहो बापुरो घपने भवन भभार पंथ नोहारै राम की पल
पल बारंबार ॥ ६९६ ॥ कब मिलि है कब मोटि है कब देखौ बोई पार ॥ जिन
पादन्ह ते बोलुरे बहु दोन गद बोहाई ॥ ६९७ ॥ जीय में जीकर लनि रही नोस
वासर नोत सौई ॥ राम मीलन के कारने रही पपीहा होई ॥ ६९८ ॥ ज्यो मकली
जल की चहै जातक धन की व्यास ॥ त्यो बीर होरि दरस की तलपि तरसाई

॥ ६९९ ॥ छतो नेह कागद होय हुतो लया यन टोक ॥ चाँच घगे उध सौ सुवस
से हुंड कैसा चाँक ॥ ७०० ॥ इति श्री राम दोहावलो सतसई ग्रन्थ समाप्त ॥
शंवत ॥ १८९३ ॥ माघा ॥

× × × × × ×

No. 432(c 3). *Vinaya Patrikā*, by Gōswāmi Tulasīdās of Rājāpura. Substance—Old paper. Leaves—280. Size—8×6 inches. Lines per page—11. Extent—1,950 Anuṣṭup blokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachārīnī Sabhā, Kāśī.

Beginning—..... म चरण रति ॥ तुलसीदास प्रभुहरी भेद मति ॥ ७ ॥
देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे । किये दूरि दुःख सुवनि के जिन जिन कर
जोर । सेवा सुमिरण, पूजिषो पाता खता धारे । गावे वसो वामदेव मैं कबहुँ न
नहारे ॥ पधि भौतिक बाधा भई ते किंकर हैं तेरे । बेगि बिलोकन वरजिये
करावति कठोरे ॥ तुलसी दलि क्यौ चढ़ै सठ शाक सहारे ॥ ८ ॥

End—कहौ बिन रहिना परत कहे राम रसना रहत ॥ तुम से सुसाहिब
को बोट जाइ खोटा खरी कालको बर्म को हू सासति सहन ॥ विचार सार
पैवत हू न कछु सकल बढ़ाई सब कहौ ते लहत ॥ नाथ को महिमा सुनि समुझि
षपनो वार हेरि दारि हृदय दहत । पपन सुसेवकन सुतोयन प्रभु आप मा आप
तुहो साची तुलसी कहत ॥ मेरो ते धारो है सुधरैगी विगैऊँ बलि राम रावर
सो रही राचरो चहत ॥ २६६ ॥

दीनबंधु दूरि कियो दोन की दूसरी शरण । आपका भलो है सब आपनो
की काऊ—

Subject—इस ग्रंथ में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, हनुमान, शिव,
पार्वती, शारद, आदि देवताओं की पाप मोचनार्थ और रक्षार्थ स्तुति प्रार्थना की
गयी है । यह ग्रंथ छप चुका है ।

No. 432(d3). *Vistāra Rāmāyaṇ* (Bala Kāṇḍa), by Tulasīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—197. Size—8×6 inches. Lines per page—48. Extent—7,056 Anuṣṭup blokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1925 Samvat or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Library, Maheswara Simhaji, Rais, village Dikawliya, post office Biswān, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः पथ बालकांड लिप्यते । श्लोक ॥ वरमानामार्थं
संधानां कृंदसामपि मंगलानां च कर्तारौ वंदे वासी विनयकौ ॥ भवानौ संकरौ वंदे
श्रद्धा विश्वासरूपिणौ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्त्रोश्वरम् ॥ वंदे
वायमयं नित्यं गुरुं संकर रूपिणौ यमा श्रितोहि वक्तोपि चंदः सर्वत्र वंदिते सीता
राम गुणग्रामे पुन्यारन्य विहारिणौ ॥ उद्भव स्थिति संहार कारिणौ क्लेश हारिणौ ॥
सर्वस्वेषु करो सीता नताहं रामवल्लभा ॥ नाना पुराण निगमागम संमतं यद्वा-
मायणे निर्गदितं कचिदन्यतोपि ॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ गथा माया
निबंध मात मंजुल मातंगात्रि ॥ सोरठा ॥ अहि सुमिरत मिथिहोद मननायक करि-
यर वदन ॥ करहु पनुग्रह सोह बुद्धि रासि सुमगुन सदन । मुक होइ वाचालु
पंगु चंदे गिरिवर गहन ॥ जासु कृपा सुदयाल द्रवौ सकल कलिमन दहन ॥ नील
सरोरुह स्याम तरुण प्रहण वारिज नयन ॥ करहु सो मम उर धाम सदा क्षीरसागर
सयन ॥

End—वामदेव रघुकुल गुह भ्यानी । बहुरि गाधिमुत कथा वषानी ॥ मुनि
मुनि सुजस मनहि मनुराऊ । वरनत पावन पुन्य प्रभाऊ । बहुरे लोग रजावसु
पाई । सुतन समेत नृपति गृह चाई ॥ जहं तहं राम सुजस सबगावा । सुजस पुनीत
लोक तिहुझावा ॥ चाये राम व्याहि घर जवते । वसै यनेद प्रवधपुर तवते ॥ प्रभु
विवाह जसभयो उक्ताह । सकहि न वरनि गिरा पहिराऊ ॥ कविकुल जीवन
पावन वानो । राम सिया सब मंगल खानो ॥ तेहिते मैं कछु कहा वषानी ।
करन पुनीत हेत निजवानो ॥ कृंद ॥ निज गिरा पावन करन कारन राम जस
तुलसी कहा । रघुवीर चरित प्रपार वारिध पार कवि कैसे लहा ॥ उपबोत
व्याह उक्ताह मंगल मुनि सो सावर गावहीं ॥ वैदेहि राम प्रसाद ते नर सर्वदा
सुख पावहीं ॥ सोरठा ॥ सिय रघुवीर विवाह जे स प्रेम गावहि मुनिदि तिनकह
सदा उक्ताह मंगलायतन राम जस ॥ इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलपु
बिच्यंसने विमल वैराग संपादिनो नाम प्रथमो सापान समाप्त सुमंभूयात इति
श्री मोहन लाल शुक्ल गायत्री प्रस्थान संवत् १९२५ मार्ग मास कृदन पक्षे तिथौ
एकादस्याम भौमवासरे ॥

No. 434. Swarodaya, by Udaya Chanda Chaube of Agrā.
Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—7 x 5
inches. Lines per page—17. Extent—270 Anushtup ślokas.
Incomplete. Appearance—Old and damaged. Character—
Nāgarī. Date of composition—1830 Samvat or A.D. 1773.
Date of manuscript—1834 Samvat or A. D. 1777. Place of

deposit—Pandit Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—कहत हैं मुनि चिन्तये गिरिजा, सहो ॥ ८२ पहिले.....
नके सात दिन सहै न मोहैं जानि हो । पांच दिन.....हि छै नदो सै तारिका रामा
.....दिन तीन तना सांभ सूरै एक दिन रसना सहो ॥ यह काल चक्र विचार
के सु.....प शिवा सो मैं कहो ॥ ८३ यह परम.....म गुप्त मारग दिखौ ताहि
बताइ कै । चारौ पदार्थ को प्रगट जो कल्प वृक्ष.....जाइके ॥ यह सुनत गिरिजा
प्रति मुदित हूँ जेरि कर अस्तुति करो । अमान वि.....को संभु के चरन
परो ॥ ग्रंथ स्वरोदय कियो मैं कछु संक्षेप बनाइ । सकल मुकवि बिनतो करौ लोखे
ताहि अपनार ॥ ८५ (अथ) नैहो यह जा (निकै).....यहै विचारि । भुलै होउ
जहां (तहां) लोखै मुकवि सुधारि ॥ ८६

End—जेठे पीतंबर दास । बहु गुनन कोन्ह प्रकास ॥

सुत जासु नंद किसोर । गुन लसत जिनमें कोरि ॥ २०२

तिनके सुदूजद राइ । हरि भक्त सुद सुभाइ ॥

मथ जासु दौलत राय । जग में लसत अमिराम ॥

लखु खेमचंद विलास । पुनि नाम व । लाल ॥

गुन लसत जिनमें बूझ । सो जगत मांभ प्रसिद्ध ॥

जाके सुदैं सुत जान । छोटो समय मनि मान ॥

जैठा उदै है चंद्र । जिन कियो है यह छंद ॥

संवत् १८३४ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी ११ चन्द्र वासरे लिखी अ राम ॥ मिथ
उदैचंद्र जो लिखावित ॥ परोपकारार्थम् ॥ श्री सुम श्री शुभम् ॥ श्री ॥ इति

Subject—ग्रंथ बहुत ही अपूर्व और दोमक का साया हुआ है १८ पृष्ठ
में केवल ३ पृष्ठ शेष हैं ।

No. 435(a). *Rasa Chandrodaya*, by Udai Nātha (Kavīndra).
Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—10 × 6
inches. Lines per page—50. Extent—832 Anushṭup
śloka. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of
manuscript—1913 Samvat or A. D. 1856. Place of deposit—
Pandita Awadheshaji Pānde, village Khambhariha Pandenkī,
post office Barhapura, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ योग ज्येष्ठा को उदाहरण ॥ दाऊ एक ठौर जहां बैठो
हैं जलजमुषी प्यारे तहां पाये धोखाई तकि नेह को । नेह करसाई निरकारे

न छपाई की समता। सुलह को। कटुक ज्यों मेह को भनत कवोंद रंग भेद
हो मैं भोग छुति एक रंग देपि पगो दुहुन की। देह की पीरो सारी है के
लाल एक बहराई पहिराई लाल सारी लाल सारा जसा नेह को॥ अथ
अधोरा जेसा कनिष्ठा॥ दोऊ सिर सार्ज राजे चित्रित मदन मध्य वाग को
बनक जहां जोहै जोहै जाल से॥ भनत कवीन्द्र तहां कामहु ते अमंगल
पाये सरसाये त्याम सुषमा विशाल से॥ लाल वारी वेदो बाल वारी
फलसेटे पक्ष घुंघट के लागे ते उच्चटि परो भाल से॥ आसो सवारि के
निहारि देन लागो एक नेह लागो तौ लनि लपटि लागो लाल से॥ धोरा
अधोरा॥ धोरज अधोरज को नोरज नयन दोऊ एक टौर बैठी पायो तितही
रंगोना है॥ पंचमो वसन्त की है सुमन गुलाबो यह ईश पै चढायवे कहाँ अचहों
नबोना है॥ भनत कवीन्द्र कंत प्रेसा मत कोना है जोरि भंक भेक से भरोरि
कुच प्यारे लाल तौ लौ बाल दुजो को परि रस लोना है॥

End—अथ साक्षादृशं॥ गया॥ केसरि को पौरि माल गरे धरे गुंज
माल लाल कर लकुट मुकुट सोस सोह्यो है॥ पीत पट फेटा कटि पेटा को को
कसेरी जहां निकसे रो तहां देवो भाति साह्यो है॥ भनत कवीन्द्र गेह आनन
साहाय है न देवे बिना आनन में पौरै रंग रोह्यो है॥ काहु सो कह्यो तौ हौ मैं
लोक में न लवै वाहि टोना डारि सांवरे डोटोना मन मोह्यो है॥ प्रांतम के पट में
लिख्यो चित्र निहारि छको तिय मोद मढ़ाये॥ ता पल में पल लागत हौ सपने
सुष तौ अपने पिय पाये। बाल के आनंद बाढ़त हौ परतौत मई कछु लाल के
पाये॥ यों एक बार सितासित में बड़ी जाति बिहार बिहार के न्हाये॥ शरद
मयंक यो कलंक भरो पिय बिन दरद करद समदेत हिय हलकै॥ सौति को
सहेलो पाय पाय के पकेली पाय बिरह दवारी वारि देति कुंकि फुलि के॥
सुष के समाज साज दुषदाई लेष राज तापै ताप ताप तन अतन अतुलि के॥ प्रेसो
पीर भीर समय पायो नाह वीर वीर के ले कान वीर भौरे भाव तेषा भूलि के॥

इतो श्री कवि कुन कुमदानंद वर्धने श्री गोपीजन बल्लभ रहस्ये उदयनाथ
(कवीन्द्र) विरचिते काव्य चन्द्रोदय समाप्तः

Subject—नायक नायका भेद और हाव भाव वर्णन।

No. 435(8). *Rasa Chandrodaya*, by Ravindra Uḍai Nātha
of Bānapura. Substance—Country-made paper. Lines—11.
Size—9×6½ inches. Lines per page—18. Extent—225
Anuṣṭup ślokaś. Incomplete. Appearance—Old. Cha-
racter—Nāgarī. Place of deposit—Thākura Navanīhāla Sīmha
Sengāra, Kantha, Unāo.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ यद्य दृढं कवि के पिता कविन् कवि
कालिदासमज कृतो रस चन्द्रोदय ॥ लिप्यते ॥ मंगलाचरण वानो को ॥
कवित्त ग्रंथ परिपूर्ण के तुरन विघ्नहार मुकता के चुरन जवाहिर झुवान के ।
परा अपरा के वैखरो मध्यमाके पतिमा के भेद संधो अनुबंधी कवितान के ॥
मनत कविद दि प्रति नये जये कहै न्यारे न्यारे पुनि नोइ रस के विधान के ।
वानो के वरन जुग पोटें चतुर मुख होत हैं चतुर मुख वानो के समान के ॥ १

End—यद्य भावो ब्रह्मान भाव संका संकेता अनुसयना लक्षण ॥ दोहा ॥ जाके
धान बभाव को संका ठर सरसाइ । सो अनुसयना दूसरी कहत सकल कविराइ ॥
६७ ॥ कवित्त ॥ बीच करि बल्लि को मालती सो मल्लिका को मला को लवंग
को अनेक क्यारी न्यारी है । चंपक को चन्दन को मौलसिरो बृंदन को बलित
लतानि सो मिलित साख सारी है ॥ मनत कविदा मति पेद करै मृग नैनो तेरे
हेत लोनी हम पवरी बनारो है । गढ़ गढ़ी गुलवारो सुन्दर सुमन वारी तेरे सासुरे
में सुनो कैयो फुलवारो है ॥ ६८ ॥

No. 436. Sagun Vilāsa, by Udai Nātha of (Naimishāra) Sitāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—26. Extent—270 Anuśṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1841 Samvat or A. D. 1884. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Thakura Rāma Simha, village Raghunāthapura, post office Biswān, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ यद्य सगुनविलो लिप्यते ॥ चौ० ॥
गुर पद सुमिरौं दोह कर जोरो । देव बुद्धि में करौं निहोरो ॥ दो० ॥ जगत
जननि मिरजहि सुमिरि बार बार सिर नाइ । राखहु पन जन जानिकै जेहि ते संसय
जाइ ॥ सिद्धि सदन मणपति चरण जो ध्यावै मन नाइ । फल चारिउ नर लहे सो
अपदा कोटि नसाइ ॥ प्रमल सरोवरु गुरु चरन ध्याइय सब तजि काम । राम
दाहिने होहि जेहि नित प्रति हित जेहि नाम ॥ नैमो हरहि करौ सिर नाइ मंगल
रूप सुमंगल दाई ॥ करहु सिद्धि शिव सगुन विलासा निज जन जानि पुरवहु
ममभासा ॥ पुनि सुमिरौं मै हरि सिर जाई ॥ करु आपन सेत सुषदाई । गति लख
अलख बरनि नहि जाई । हर सारद नारद नहि पाई ॥ फन सदख जानहि नहि
मेवा । प्रामत प्रमाथ सेत गुन देवा । डोपदी पारत वेत पुकारो । बसन बाहि
पहु लख उवारी ॥

End—राहु बली जाइ सरस खाई प्रतिकूल । लोग करै पुनि नोक है वाम
 धर्म सो मूल ॥ केतु कला बंचल बसै तुव मन अखिर नाहि पूरहि वेध मालिक
 सरस केहि बिधि सेसै जाहि ॥ जेनिन बल बड़देव है भू बल बलहि समान ।
 जतन करहु रचि सुमट सब सुनु प्रच्छक दै कान ॥ नगन काल के मुषहि में
 प्रच्छक रचना साहु । वेध विचारि होम करु तब तब पूरन काहु सिद्धि सयाने
 समुझि छे भाता घायल तोर होइ पराजय रिपु सवन छुटि जाय एक घोर ॥ बिशु
 ध्यान जेहि करहि नर जे कारज हित होइ । उदयनाथ हरि ब्रकि विन सुष नहि
 पावै कोइ ॥ इति श्री उदयनाथ विरचित्तायां सगुन विलास समाप्त ॥ श्री
 संवत् १९२४ शके १७८२ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे, तिथी चतुर्थे यां गुरु वासरे
 लिप्यते इदं पुस्तकं ब्रह्मदेव पंडित पैदापुर ग्रामे निवासीतः राम राम राम "सगुन
 विलास पोथी लिखी सब सगुनन को सार ताहि विचारिय परमिये सगुन सगुन
 विस्तार ॥ सगुन सगुन विस्तार जानि पोथी में लिखै जैसा निकसै हाल जानि
 पुनि तै सो किजै । कह पंडित सुविचार जानि मन में निज कोथी । सगुनन
 को सब सार नाम सगुनन को पोथी ॥

Subject—इस पुस्तक में कार्य के सिद्धि होने न होने के प्रश्नोत्तर हैं ॥

No. 437. *Alif Nama*, by Bajhana Śāha, Barābankī.
 Substance—English paper. Leaves—7. Size—8½ x 6½ inches.
 Lines per page—20. Extent—85 Anushtup ślokaś. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Chetana
 Śāha Śāhiba, Awaliyāpur, post office Safdarganj, Barābankī
 (Oudh).

Beginning—मलिक एक बहुरंगो सारि । हर घट में वासो परछाई ॥ जहं
 देखते तहें रूप है न्यारा । ऐसा है बहुरंगो प्याग । बुझन कहैं तो क्या कहैं कुछ
 नहीं कहने को बात । समुद्र समायो बूंद में अचिरज बड़ा दिखात ॥ वे बिनु गुरु
 कोइ भेद न पावै । चरतो से अकास लौं पावै ॥ पहिले प्रीति गुरु से कोजै । प्रेम
 नगर में तब पद दोजै ॥ बिनु गुरु बज्रहन लेत है जो कोइ बसन रंगाइ ॥ यो निज
 कर तुम जानियो दोउ फोट से जाइ ॥ ते तब जाग तिराबनि अइहै । जब यह
 बेरिन बुबिधा जई ॥ यहो तो मन में कपट को हाटी । जिन सब खेल किया है
 माटी ॥ जामन के मन ही में रहे । घोर तै तैं का बंध तार ॥ बुझन भाइ अथही मिले
 तनिक न लागै बार । से सावित है ध्यान जो लागे ॥ आपुहि आप भ्रम सब भागै ॥
 पञ्च आप तु अपरे भाइ ॥ छुटि जाहि दर्पन को काई ॥ बुझन कहैं तूं आप कर
 बैठि रहु ध्यान लगाइ ॥ सुरति निरति दोऊ रखा बिरथा सांस न जाइ ॥ जीम

लुगल मैं पौर बतैहीं । जो तोहीं प्रकला करि पैहों ॥ प्रबहों वह संगो नहि छूटै
 दिन दिन बुपहर पड़ा छूटै ॥ कहने को तो पांच हैं हैं वह पूरे तोस । इनहीं
 कारन ना मिलै प्रबहो छों जगदीस ॥ हे हृदयर यह भूल है तेरो ॥ एकौ बात न
 माने मेरो ॥ अब तक तू ऐसा हो जाता ॥ जैसे कोई भला मदमाता ॥ कहाँ गई
 वह बुधि तेरो कहाँ गया था चेत ॥ ऐसी काया पाय के हरि सों किया न हेत ॥
 खे खाविद का कहाँ है न्यारा ॥ मूँटि देखि तैं दसहु दुघारा ॥ मुनि परिहै
 धनहृद का बाजा ॥ परजा से होइ जैहो राजा ॥ समो तार तन में बजै मन में मचे
 हैं राग । बुझहन जाको मुनि परै वाके बड़े हैं मान ॥ दाल दया जो मन में राखे ।
 प्रेम का रस कैसे ना चाखे ॥ बिनु मधु पिये होइ मतवारा ॥ निस बासर बु करै
 नजारा ॥ बुझहन जगत में चाइ के करिये ना तू मान ॥ दया धर्म नहि छाड़िये
 जब लग छट माँ प्रान ॥ जाल जो फल जब छै नहि प्रावै । कितनौं चहै कोई
 मन मदकावै ॥ हिरदै लगि न प्रेम को गाँसो ॥ कैसे कै मिलहि कहाँ पविनासी ॥
 जब छों तन नाहों जरै सो मन नाहों मरि जाइ ॥ बुझहन मूरति स्वाम को तब छों
 कहा दिखाइ ॥ रे रियाज मैं ऐसा खोला ॥ जैसन कुछ मसूर था बोला ॥ सो
 सब सुनै रहै तू पारा ॥ आनि परी मति लै गये चोरा ॥ लाज का कातर तैं अपने
 नैनन नहि हारे घोइ ॥ बुझहन कैदे कैसे भला दरस पिया का लइ ॥ जे जर देख
 लु भूला रहिये ॥ सबहो बैस प्रकार्य जैहै ॥ प्रेम बढो का मद पिठ चोखा ॥
 मिटि जैहै मन का सब घोखा ॥ हौ से स्था कहि पाये हियाँ किया का चाइ ॥
 भूयो माया देखि के कै सा रहे भुलाइ ॥ सोन सहज का सोख ले लटका । काहे
 फिरत है इत उत मदका ॥ सोचन कर प्रबहो है सबेरा ॥ तिरकुटो कोट करि दे
 डेरा ।

End—फे फरमान तलब का पेहै । का मुख लेकर वहां को जैहै ॥
 वादिन का कलु सोच न कोने ॥ हरि का नाम कबहु नहि लोने ॥ पागे तो
 कबहु ना सुने सो प्रबह कहत हैं डेर ॥ एक दिन फिर पछि ताइगा जो चिरियां
 चुनि हैं खेत ॥ काफ कौन तेरा है भूटा ॥ पौर दंग से उड़ै पनुठा ॥ सुनत रहे
 साधुन की बानो ॥ तिहु पै प्रबलें मंगे न ग्यानी ॥ जो मति का होना भैया तो
 वाको कौन हवाल । पागे का सोचत नहीं सो पीछे का पक्कतात ॥ काफ करम
 उन बड़ा है कोना । मानुष जनम जो ऐसा दीना ॥ प्रापु क्रियाना तोइ उधारा ॥
 यो तो मन में सोच गंधारा ॥ वाको बदला एक है जो मैं देहु बताइ ॥
 हरि होरा जो चाहिये पहिले प्रापु हिराइ ॥ लाभ लाभ को छोड़ि दे बातें ॥
 जो मैं कहाँ सोख लै बातें ॥ ऐसा लाभत पिया लु तेरा । जैसा चांद को चहन
 चकोरा ॥ जा तू प्रेम के रंग में तन मन लेत रंगाइ ॥ देखि तो पहिले जोर
 में लाभ किधर को जाइ ॥ मोम मुहब्बत चाहिये मन में । घर में रहे चहै रहै

वन में ॥ गले पड़े जो प्रेम की फाँसी ॥ कहीं का पल्लव्या कहीं को कासी ॥ जाके
हिरदै राजत है बुझहन प्रेम का वान ॥ छूट जाइ सब तर माँ पाइ जाइ सब
स्थान ॥ नून नहीं हुआ कोई जग में । सापुहि आप रहत है सब में ॥ हित
चित से मुनि ले यह बैना ॥ खुलि जैहै तेरे हिया के नैना ॥ बुझहन कहै तू बुझि
ले पवहीं है यह बुझ ॥ एक दिन याही बुझ से होइ जइहै सब सुझ ॥ वाउ वही
इक याद है तेरा ॥ तिहि को गलिन किया नहि फेरा ॥ दुरजन थे सो मौत बनाय ॥
समझा नहि मोरे समझाये ॥ मैं तो कबौ चतुर है तू है बड़ा नदान ॥ कितनी मैं
समुझावत हैं किहे न एको कान ॥ हे दादो ऐसा तू पावे । उन्हें से न अपना
नेह लगाये ॥ ऐही सोच है मोह के कारो । देखो कहीं गति होइ तिहारो ॥ हियाँ
के द्वारे द्वार हैं हियहि के जोते जोत । बुझहन कहै तू मान ले कर साहब से
प्रोति ॥ ये यारो हरि से भव करना । ये अक्षर हिरदै बिच घाना । वनत वनत वनि
जैहै ऐसा ॥ कोई दिन मंसुर था जैसा ।

बुझहन अक्षर ऐसे कहे साधुन के हथियार ।

बिरहो के मैदान में पति के राखन द्वार ॥

(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—ईश्वर के हर घट में रहने का वखन, गुरु महिमा,
सत्पा जाप का महत्व, ५ इन्द्रियाँ और उनके पंजीकरण हो कर पूरे ३० हो जाने
के कारण ईश्वर भजन में विन्न होने का वखन, उत्तम मानवी काया पाकर
ईश्वर भजन न करने पर घृणा । ईश्वर का अपने ही में होने का वखन । दया की
महत्ता । मान का खंडन । बिना मन मारे ईश्वर मिलने का कथन । पिब दर्शन
का मार्ग । झूठा माया में भूलने का वखन । त्रिकुटी में ध्यान रखने का आदेश ।

(२) पृ० ३ से पृ० ६ तक—संसार के माया में भूलने का वखन । साधु के
लिये संतोष का उपदेश । किसी से न माँगने और आसन पर डढ़ रहने का
वखन । नवी का नाम लेने का उपदेश । पत्नी का ध्यान रखने का वखन । घट
के अन्दर सर्वोन्नत हरनगर ॥ जाने का मार्ग । गुप्त और प्रकाश में उसी के प्रकाश
का वखन । प्रेम नगर की सहरो नदी का वखन । पूज्य और पुनक का एका
कथन । प्रेम मार्ग की कठिनाइयाँ जुषा में साहब के नाम जोतने का उपदेश ।

(५) पृ० ६ से पृ० ७ तक । मृत्यु के दिन का ध्यान रखने का ध्यान ।
अपशोचो होने का उपदेश । ईश्वर के साथ कृतज्ञता प्रगट करने का उपदेश ।
लोभ परित्याग का वखन । घर वन कहीं रहे उसमें प्रेम रखने का उपदेश ।
अयोध्या काशी इत्यादि का ईश्वर प्रेम के समुद्र तुच्छ दिखाना । 'एक वही' का
उपदेश देकर भजन में प्रवृत्त होने का वखन । ईश्वर मार्क से 'मंसुर' के सहस्र
होने का उपदेश ।—अन्ध को बड़ाई

No. 438. Mānasa Śankāwalī, by Bandana Pāthaka of Mirzāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15×7 inches. Lines per page—28. Extent—1,339 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse both. Character—Nāgarī. Date of composition—1906 Samvat or A.D. 1849. Date of manuscript—1951 Samvat or A.D. 1894. Place of deposit—Santan, village Aria, post office Pipari, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री जानकी बलमो विजयते ॥ मानस संकावली लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री साता श्री राम पद पदुम बंदि त्रय श्रात ॥ धाम नाम लीला ललित श्री हनुमत प्रवदात ॥ श्री गिरजा पति पुत्र के बंदौ पद प्रमिराम । तुलसी तुलसी दास पद करि कै बिबिध प्रनाम ॥ श्री रामानुज मत प्रबल चारक तारक जीव । तुलाराम श्री गुण चरण बंदौ बकता सोव ॥ श्री सोताबल्लभ रसिक हरीदास प्रव भाव ॥ जुक्त सदा माल भगत बसत महल नत पाव ॥ श्री मद्राम गुलाम के सिष्य सो चोपई दास । तासु सिष्य बंदन नमत श्री मिरजापुर बास । शिव प्रसाद पाठक विमल तासुत बेनोराम । तासु पुत्र लक्ष्मण लसत तासुत बंदन नाम । श्री काशी पति ईश्वरो नारायण नृप राज । तेहि के सुमन सनेह ते प्रगट ग्रंथ द्विज-राज ॥ श्रीमानस संका सकल रदो विश्व में ब्राह् । ताके उत्तर बोध हित ग्रंथो-ज्व सुप पाइ ॥

End—पुनः संका तीन इतो सूक्ष्म तीन कांड में धरि एक बाल कांड में एक चरन्य में १ लंका में यामे का हेतु है ॥ उत्तर यह तीन इतो अनेक रामायण में अनेक रीति से हैं ॥ ताते सिद्धार्थ सूक्ष्म इति इंदुके इन्हने भी उनके मत दिढ़ राख्यो और चापनो कांड कम तौ बिलसल हो कियो सो तौ स्पष्ट हो ग्रंथ में है ताते ग्रंथकार को सर्व मत रखक द्रष्टि और श्री गोसाईं तुलसी दास जी को प्रभाव प्रशय है और ग्रंथ श्री मद्राम चरित्र मानस मो प्रभाव है ॥ मैं स्वमति अनुकूल कह्यो है समुक्ति लेना सन्देह नहीं है । इति श्री मानस संकावली समाधान जुक्त श्री मानसी बंदन पाठक कृत समाप्त ॥ संबत् रस नभ अंक शशि ऋतु वसंत मधुमास । शुक्लपक्ष नौमो सुतिथि संकावली प्रकाश ॥ श्लोक ॥ संकावली सुमन मानस मान दात्री श्री रामचंद्र पद पंकज मक्ति गाम्भ्या ॥ श्री विश्वनाथ परि तोष कृते सुरम्या व्यक्तो कृता विमल बंदन पाठकेन । वाराणसी संस्कृत कमुद्रा यन्त्रालिक जने मुद्रितोयं शिला शर्मे मन्नालाल ने शर्मेणाय श्री संबत् १९५१ भाषाई मासे कृष्ण पक्षे अमावस्याम भौमवासरे लिखी समाप्ते संकावली । बाल कांड में ३० ॥ अयोध्या में ॥ १० ॥ चरन्य में ॥ ९ ॥ किष्किंधा में ११ ॥

सुन्दर में ६ ॥ लंका में १७ ॥ सर्व कांड को समिष्टो १०४ ॥ नाम चतुर्थ पंच-
युत कुगुनो बस करि लेषु । तुलसी वा संसार में दुर प्रक्षर करि लेषु ॥ सुत कलत्र
धन धाम तन मानस अस जगवंध । रामचरण ये सान में नेह करत जे प्रेय ॥

Subject—इस ग्रंथ में रामायण के सब कांडों को मुख्य शंकाओं की समा-
धान है अंत में निर्माण और लिपि संवत् है ॥

No. 439. *Lilāwati*, by Bilochana Rama. Substance—
Country-made paper. Leaves—77. Size— $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches.
Lines per page—8. Extent—513 Anushtup slokas. Appear-
ance—Good. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891
Samvat or A.D. 1834. Place of deposit.—Thākura Viśwa
Nātha Simha Sāhiba, Talukédāra, village Agresar, post
office Tirsandi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ लोलावती लोप्यते ॥ देहा ॥ विप्र
हरन सब सुष करन हरन सकल अघलेष ॥ सुष सेवति दायक सदा सोढी नाम
गनेस ॥ १ ॥ बुक्ति उक्ति मन में बहै स्वर सति रसना बैठि । सुरनर मुनि सुमिरन
करत कहति हिये में पैठि ॥ २ ॥ देहु बुद्धि कोजै कृपा गुन प्रताप है भूर । ताते
बरनि कही कछु करि नामा दस्तूर । इही बरनौ मनपति कृपा शीघ्र संवाद के अर्थ
को लेषन की मरजाद ॥ ३ ॥ गुह सेां पुछां शिष्य नै धरि चरनन पर सोस । अच
निहि साव अनेक बोधि मोदि कही जगदोस ॥ ५ ॥ है हिसाब दीरज दुनो मोहि
लगत है गुह ॥ जो नर है संसार में बाना गुह सब मूढ ॥ ६ ॥ + × × ×

End—गुह बाबा ॥ एक सर को एक कर दूजौ तिगुनौ लप तामु बीगुन
करि तोसरी तीगुनौ चौथासैठा ॥ १०३ ॥ बार बार मन के करै जागे पाछे देह
जैतिक नैवा होये तोतरो तौल करेह ॥ १०४ ॥ जैसे लेवे बहुत है कहत बढ़त
विस्तार, ताते संछेगहि कहे चारो पंड बोचार ॥ १०५ ॥ इतने लेवे पाइ कै सुरजन
बहै सुवान । गुनवती सो कहाइ है मज्जोलिस बैठ नोदान ॥ १०७ ॥ इति श्री
मति धिरचिते अथर्वन मेह बरनने नाम चतुर्थ पंड ॥ ४ ॥ संपुर्ण समाप्त श्री
संवत् १८९१ मासानाम मासोत्तये में मासे कुषार मासे कोसुन पछे पंच भाग
सनीवारे समाप्त ॥ ॐ ॥

Subject—

- (१) पृ० १ से १२ तक, प्रथम खंड तौलखंडो-विधि वर्णन ।
- (२) पृ० १३ से २७ तक, द्वितीय खंड-नाप विधि वर्णन ।
- (३) पृ० २८ से ५६ तक, तृतीय खंड, गिन्तो वर्णन ।
- (४) पृ० ५७ से पृ० ७७ तक, चतुर्थ खंड, अथर्वन खंड ।

No. 440(a). Bhaktāmar Charitra, by Vinodī Lāla of Śahjādapur. Substance—Country-made paper. Leaves—444. Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—5,439 Anushtup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1746 Samvat or A. D. 1689. Date of manuscript—1883 Samvat or A. D. 1826. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री चोतराण जो सहाय ॥ अथ भक्तामर चरित्र भाषा लिख्यते ॥

दोहरा—घोँकार पई सबिन्दु है बन्दों मन वच काय ।
 नमो नमो पुनरपि नमो वरु विधि सोस नवाय ॥ १ ॥
 जामै गमित तोन पद महामंत्र नवकार ।
 ताको प्रनऊ प्रथम हो मुक्ति भुक्ति दातार ॥ २ ॥
 प्रति जन जाके ध्यान ते पार्ये पद निर्वोन ।
 चार संजना ते जख्यो लख्यो यमर पद थान ॥ ३ ॥
 शिव दायक लायक सकल नायक जिन मत माहि ।
 तीस पांच पक्षर विमल मुहि बिसरत है नाहि ॥ ४ ॥
 भव-मंजन तारन तरन सिद्धि बखू उर माल ।
 अथ चौबीस जिनंद पद बंदों नमृत माल ॥ ५ ॥

छोपाई—श्री रिशदेम्बर जिन राज पाइ । बन्दों मन वच कम सिर नाइ ॥
 बन्दों अजित नाथ दूसरे । अजित जोति भवसागर तरै ॥ ६ ॥
 बन्दों संभव नाथ जिनंद । भव दुख हरन करन सुखकंद ॥
 अमिर्भंदन बन्दों जिन राय । आनन्द चन्द परम सुखदाय ॥
 सुमति नाथ सुमति दातार । बन्दों कुमति कुगति हर मार ॥ ७ ॥
 बन्दों पद्या प्रभु जिन तोहि । पद्यासन बैठे शिव मोहि ॥ ८ ॥

X X X X X

End—कोनो कथा विविध बनाय । भक्तामर स्तवन गुन गाय ॥
 श्री आदिनाथ को स्तुति गुनभरो । मान तुंग प्रतिवर को करो ॥
 ताको कथा संपुरन मई । भाषा बंद छोपाई ठई ॥
 दोहा छन्द चरिल्ल बनायो । कहु कुंडलिया सारठा लायो ॥
 संवत् सहस्र सै सैताल । सावन सुदी दुविया रविवार ॥

शुभ दिन कथा संपूर्ण करो । प्रथम जिनेन्द्र तनो गुन भरो ॥
 जो यह पढ़ै सुनै चितलाय । सो नर सुख भुंजै सिव जाय ॥
 जो मिया तो निदैं कोय । अपने पल को पावे सोय ॥
 जोरि कथा कवि दई समोस । षट दशन बूझै जगदोस ॥
 श्री जिन वर तुम्हें होहु सदाय । चादि नाथ मंगल सुखदाय ॥

दाहरा—सकल कथा पूरन मई, बानी विमल विमाल ।
 विश्व भूषन प्रति देखिके, रचो विनोदो लाल ॥
 पढ़त सुनत पानेद बड़ै, ज्यो हुतिश को चंद ।
 पुन्य बड़ै पातिम घटै, उपजै परम पनेद ॥
 कदो विनोदो लान, सारद गुण पातापते ।
 पूरन मई रसाल, सदभूत कथा सुहावनी ॥

इति श्री प्रथम जिनेन्द्र भूषण श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदो
 कृत चौपाई बंद संपूर्ण । संवत् १८८३ शुभ भूषात् ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक, वन्दनार्थ—जैन धर्मानुसार तीर्थकरादि
 को स्तुतिर्था, कवि विनयोक्ति, कवितया उसके समय के नृप का सूक्ष्म परिचयः—

(१) कौशल देश मध्य शुभधान । शाहिजादपुर नगर प्रधान ॥
 गंगा तोर वसै शुभ टौर । पटतर नहीं तासु पर चौर ॥
 वसै महाजन बहु विधि लोग । अपने धर्म लोग संभोग ॥
 थावक लोग वसै जहं धने । जैन धर्म रत सत आपने ॥
 चेल्यालब जिन वर के तोन । धिन्न धिचिन्न रचित प्रबोन ॥
 धर्म ध्यान सब विधि सो करै । जती वृत्तो को यति आदरै ॥

(२) नैरंग साहि बली को राज । पातसाह सब हित सिरताज ॥
 सुख निधान सक बंध नरैस । दिल्ली गति तप तेज दिनेस ॥
 अपने मत में सम्यक बंत । शील शिरोमणि निज तिय कंत ॥
 दीप दीप है जाको धान । रहै साह सब सेका मान ॥
 साहिजहां के वर फरजिन्द । दिन दिन तेज बड़ै ज्यो चंद ॥
 भयो चकसा ऊस उदास । सिंह बली बन जैसे हात ॥

दा०—तप तप मंत्र तुरंग नन । ते व्यागो बुधिवान ॥
 भुज बल साहस धैर बल । तखत जियै मुलतान ॥
 छत्र धरयो सिर आपने, फेरो चहुँदिश धान ॥
 पालम गौर महाबली, नैरंग साहि सुजान ॥

(परिल) जाके राज सुचैन सकल हम पायो । इति भोति नहीं होइ
सुजित गुन गावै ॥

लाल विनोदो नाम सारदावर दिवौ । निस दिन देव पसीस साहि जुग
जुग जियै ॥

(सोरठा) सुखो प्रजा सब कोय, नौरंग सह के राज में ।

जा कोई दुःखित होय, तो सब अपने कर्म तैं ॥

(३) ते पुर लाल विनोदो रहै । जैनधर्म की चर्चा कहै ॥

धरवाल जैनी शुभवस । गर्भ गो । प्रगट्यो सर हंस ॥

ग्रन्थ निर्माण हेतु इत्यादि चतुष्टय वखैन, कथा संबंध वखैन :—प्रथमहि
मान तुंग मुनि भये । मकामर रचना करिगये ॥

× × × × ×

मूल संघ मदारक दक्ष । विश्व भूपन मुनिवर परतक्ष ॥

ताको प्रदुमुत टोका करो । विगत कथा सब को विस्तरो ॥

श्लोक बद्ध तिन संसृत करो । कसै करि समुझै नर नरो ॥

ताको अब मैं भाषा करूँ । पंडित लोग हंसन ते डरूँ ॥

(२) पृ० १० से पृ० ८६ तक—प्रथम कथा ।

उज्जैनो के राजा सिंधु सुजान का निपुत्रा होकर खेद प्रकाशित करना,
मंत्रो का सान्त्वना देना, राजा तथा उसको रानी रत्नावली का वन में सैर को
जाना, वहाँ पर एक हाल के बालक का प्राप्त होना, राजा का मंत्रो को सम्मति
से उस यज्ञात गर्भात्पन्न को निज बालक प्रसिद्धि कर देना और उसे अपने पुत्र ही
को भाँति पालना, उसका विवाहादि करना, सिंधु की रानी का गर्भ-
स्थित होना, उससे सिंधुन का जन्म, सिंधुल का परिपोषण और विवाहादि वखैन
सिंधुल के दो पुत्र शुभचन्द्र तथा भरत का उत्पन्न होना, राजा सिंधु का
मुनिवृत्त धारण करना और मुंज के राजनोति का उपदेश देकर गद्दी का
स्वामित्व प्रदान करना । एक दिन एक तेलो के गाड़े हुए कुदाल का किसी
बोधा का न उखाड़ सकना, सिंधुल द्वारा उसका उखाड़ा जाना, सिंधुल
का पुनः कुदाल गाड़ कर सिहनाद करते हुए उसे उखाड़ने को लनकार
देना, किसी से न उखाड़ सकना, राजकुमारों द्वारा उसका उखाड़ा जाना,
राजा मंजु का द्वेष करके उनके मारने की चेष्टा, मंत्रो को सम्मति से राजकु-
मारों का राज्य से निकल कर विरक्त होना, शुभचन्द्र का मुनि होना । मर्तु हरि
की सिद्धियों में लित होना, दोनों का सम्मेलन, बड़े भाई का छोटे का उपदेश

मंजु का सिधुल से भी देखकरा के संया कराना, मंजु का पश्चाताप, भोजो व्यति, राज-काज वर्णन, मंजु का चिरक होना, कालिदास की कथा, धनंजय वर्णन, ब्रह्मचर्यादि वर्णन, ब्रह्मचारियों के साचार विचार भोज राजा की समा में मान तुंग जैन मुनि का आगमन, समा में पंडितों द्वारा मुनि का मान-भंग, कालिदासादि पंडितों की हार, भोज का मुनि वृत्त लेकर जैन-धर्म साधन करना ।

(३) पृ० ८७ से पृ० ११४ तक—भकामर स्तवन माहात्म्य, कथा संबंध का व्यास, सुमल काव्य का कथन फल वर्णन, एक सठ होने की कथा ।

(४) पृ० ११५ से पृ० १२४ तक—“ॐ नमो अनंतोद्दि जिज्ञासं” मंत्र संबंधी कथा ।

(५) पृ० २५ से पृ० १३१ तक—“ॐ ह्रीं महानमो कुक्कु बुधिनं” मंत्र संबंधी चौथी कथा ।

(६) पृ० १३१ से पृ० १४० तक—लत्तसेस्तवेन—इत्यादि काव्य संबंधी कथा ।

(७) पृ० १४१ से पृ० १४७ तक “ऊनमोपदानु सारोऽन” मंत्र संबंधी मंत्र के फल का उदाहरण द्वारा समझाया जाना, उसकी सिद्धि से एक नृपति की मनोवांछा पूर्ण होना ॥

(८) पृ० १४८ से पृ० १५३ तक—शास्ता स्तवन की कथा ।

(९) पृ० १५४ से पृ० १६० तक—नान्यदभुते काव्य की कथा ।

(१०) पृ० १६१ से पृ० १७० तक—“यो हारायो स्वयं बुधानं” संबंधी कथा ।

(११) पृ० १७१ से पृ० १७८ तक—“ॐ ह्रीं नमो यजेय बुधानं” संबंधी कथा सुतशेखर का उदाहरण ।

(१२) पृ० १७९ से पृ० १८७ तक—“ॐ ह्रीं नमो मोहिब बुधानं” मंत्र का महत्व प्रकाशन संबंधी कथा ।

(१३) पृ० १८८ से पृ० १९४ तक—चित्रं किमि व्रज दिते का वृत्तान्त कल्याणी रानी की कथा ।

(१४) पृ० १९५ से २०६ तक—ॐ ह्रीं नमो चौदास पवने की कथा ।

(१५) पृ० २०७ से पृ० २१४ तक—“यो ह्रीं नमो षष्टानि मित्त महामित्त महा निमित्त कुमलोऽनं” की कथा फल सहित ।

(१६) पृ० २१५ से पृ० २२४ तक—रति मद्र की कथा । उसके मूर्ध से पंडित होने का वर्णन

(१७) पृ० २२५ से २३४ तक—ऊं ह्रीं अरुहन्मो घटवान् ॥ ऊं ह्रीं नमो वोत्रा हरीणां संबंधो कथा ।

(१८) पृ० २३५—२४६ तक “ऊं ह्रीं नमो चारुणां सो धरौ”—मंत्र संबंधो फल की संसिद्धि के हेतु उदाहरण रूप विष्णु दास की कथा ।

(१९) पृ० २४७ से पृ० २५४ तक । ‘सो ह्रीं अरुहन् मेव’ मंत्र सम्बन्धो व्रत कथा फल वर्णन । श्रीधर का उदाहरण ।

(२०) पृ० २५५ से पृ० २६२ तक—“सो ह्रीं नमो जिनतवानं” इत्यादि मंत्र संबंधो मठोच्चर को कथा ।

(२१) पृ० २६३ से पृ० २७२ तक—“सो ह्रीं नमो जिनत वानं” इत्यादि मंत्र सम्बन्धो कथा ।

(२२) पृ० २७३ से पृ० २७९ तक—घन मित्र को कथा ।

(२३) पृ० २८० से पृ० २८७ तक—ऊं ह्रीं नमो तत्र तवानं महा मंत्र संबंधो कथा ।

(२४) पृ० २८८ से पृ० २९४ तक—ऊं ह्रीं अई नमो महा तवानं ॥ मंत्र संबंधो कथा ।

(२५) पृ० २९५ से पृ० ३०२ तक ऊं ह्रीं अई नमो चार तमानं ॥ मंत्र संबंधो कथा । इस मंत्र द्वारा जय सेना रानो के व्याधि—हरण की कथा ।

(२६) पृ० ३०३ से पृ० ३१० तक—ऊं ह्रीं अई नमो चार गुणानं इत्यादि मंत्र संबंधो कथा का वर्णन ।

(२७) पृ० ३११ से पृ० ३१९ तक—ऊं ह्रीं अई नमो चार गुतवंध पारीनं मंत्र संबंधो कथा ।

(२८) पृ० ३२० से पृ० ३२८ तक—ऊं ह्रीं अई नमो साषादीं इत्यादि मंत्रों की कथा ।

(२९) पृ० ३२९ से ३३७ तक—ऊं ह्रीं नमो विधो साई पत्तानं मंत्र के महत्त्व संबंधो कथा ।

(३०) पृ० ३३८ से पृ० ३४६ तक—ऊं ह्रीं सवोहि पत्तानं संबंधो कथा ।

(३१) पृ० ३४७ से पृ० ३५५ तक—ऊं ह्रीं नमो वचवल्लोने संबंधो कथा ।

(३२) पृ० ३५६ से पृ० ३६४ तक—ऊं ह्रीं नमो वच वल्लोणं । महामंत्र संबंधो देवराज की कथा ।

(३३) ऊं ह्रीं नमो वीर सवोणं मंत्र संबंधो, दावानल उपसम होने की कथा पृ० ३६५ से ३७२ तक ।

(३४) पृ० ३७३ से पृ० ३८४ तक—एक सती की कहानी जिसने जैन धर्म संबंधी मंत्र बल के प्रभाव से संपूर्ण लोगों को अपने धर्म का परिचय दिला कर और पति को रोग मुक्त कर जैन धर्म की महत्ता दिखाई गई है।

(३५) पृ० ३८५ से पृ० ३९५ तक—ऊं ह्रीं नमो सवि चोणं ऊं ह्रीं मुभारस वोणं नामक मंत्र संबंधी कहानी, गुन वरों का सुर पद पाना।

(३६) पृ० ३९६ से पृ० ४०० तक—ऊं ह्रीं नमो धम्मिस वोणं मंत्र संबंधी कथा।

(३७) पृ० ४०१ से पृ० ४२४ तक—ऊं ह्रीं नमो चाइमो न महा नारणं ॥ मंत्र संबंधी हंसराज की कथा। राजा हंसराज को कलावती के साथ भोग विलासादि का वर्णन।

(३८) पृ० ४२५ से पृ० ४३४ तक—ऊं ह्रीं नमो बहू मानं मंत्र संबंधी कथा।

(३९) पृ० ४३५ से पृ० ४५२ तक—ऊं ह्रीं ध नमो सर्व सिधा इत्यादि मंत्रों से संबंध रखने वाली गाथाओं के वर्णनों द्वारा जैन सिद्धान्तों को पटल बनाकर मान तुंग कालिदास को पराजित करना, राजा भोज का रनवास सहित जैन धर्म की दोषा लेना। इस ग्रंथ के पठन पाठन का फल।

निज सम्राट वंश परिचयः—

बौरंग साहि बलो के राज । पावौ कवि जन परम सम्राज ॥

× × × ×

बावौ साहि चकता वंश । तिमिर लंग सम प्रगटौ हंस ॥

× × × ×

तिनके तगत बखत परचंड । बबर साहि भये परचंड

× × × ×

ता सुत साहि हमाऊं भयो । जिनके राज दुख सब गयो ॥

तिनके साहि चकर भये । नाम लेत दुख दारिद्र्य गये ॥

× × × ×

तिनके जहंगीर जग जप । साहि सडेम नूरदी भये ॥

हिन्दू पति प्रगट्यो जगमाहि । ताकी उपमा दोऊ काहि ॥

तिनके साहि जहाँ सुलतान । मर तेज जिमि ऊँठ मान ॥

हठ कांधनो हुठोले साह । भयो किरान सॉनि जगमाहि ॥

तिनके तगत बखत के जोर । बैठो बौरंग साहि मरारि ॥

× × × ×

आलम गोर कहावै सोय । जाहि कारम आलम को होय ॥

अपने जोर छत्र सिधेरो । दक कृत राज विधाता करौ ॥

x

x

x

x

जाके राज परम सुख पाय । करी कथा हम जिन गुन गाय ॥

(४०) पृ० ४४२ से ४४४ तक । कथा निर्माणादि विषयक कथन शाहि-

जादपुर सहर मझार । रहै सदा जिनके आचार ॥

काष्टा संघ आदि जिन सेना । माथुर मझुजागर सेना ॥

पुष्कर गुन गनमै सार । जैन धर्म को परम अंगार

कुमार सेनो मुनि कोनी आय । प्रगटयो अब का धर्म सहाय ॥

वैश्य वंश में उदित महा । जैन धर्म कलालय लहा ॥

तापर जाति महा गंभीर । अमरवाल गुन आगरधोर ॥

गर्म गोत्र उत्तम गुन सार । अष्टादस गौतम सरदार ॥

x

x

x

x

मिथ्या मत को नासन हार । प्रगटयो कुल को परम अंगार

मंडल को परपोता भलो । पारस पोता को असु चलो ॥

द्रगाही मल को सुत गुन धाम । लाल विनोदो मेरो नाम ॥

ग्रन्थ समाप्ति कालः—

संवत् सत्रह सै सैताल । सावन सुदि द्वितीया रविवार ॥

शुभ दिन कथा संपूरन करौ । प्रथम जिनैन्द्र तनो गुनमरी ॥

पठन पाठन का फल—ग्रन्थ समाप्ति ।

No. 440(b). Vishnu Kumāra kī Kathā, by Vinodī Lāla. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—22. Extent—635 Anuṣṭup slokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—1955 Samvat or A.D. 1898. Place of deposit—Sri Jaina Mandira (Barā), Barābanḳi (Oudh).

Beginning—ॐ नमः सिद्धोय ॥ अथ विष्णु कुमार को कथा

वात्सल्य संग धारक कथा लिख्यते ॥ (परिच्छेद) ॥ प्रथमहि प्रथम जिनैन्द्र चरन । चित लाइये । पंच महावृत चरन सुताहि मनाइये ॥ प्रथम महामुनो भेष सुचर्म भुरंघरो प्रथम धरम परकासन प्रथम तोर्यकरों ॥ १ ॥ (गौतम छंद) गुरु चरन वंदा सुचर्म करे कथा अनुपम विस्तरो ॥ २ ॥ प्रथम तोर्यकर सुमिर मन सारदा हिरदं धरो ॥ उपसर्ग पायो सात सै मुनि आनि

जिनहूँ नै वार को । तूष सुनौ भवि जन एक चित्त दै कथा विष्णु कुमार को ॥ २ ॥ दोहा ॥ बंदौ विष्णु कुमार मुनि मुनि उपसर्ग निवारि । वात्सल्य संग को कथा सुनहूँ भाविक जन सार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ अब यह जंबूद्वीप मभार । भरथ क्षेत्र सोमित सिंगार ॥ देस अवलौ उत्तिम ठौर । तेहि समान देस नहिँ और ॥ ४ ॥ वहाँ नगर उज्जैन समान । सबनो विपै न दोसै पान ॥ वन उपवन रंजित चहुँ ओर का सोमा बनौ तिहिँ ठौर ॥ ५ ॥

End—नाक कान मुख शृष्ठां भरो । ताको सबन कियो उपचरो । पशु कज्जल यह सुरस पहार । बहु विधि पुन्य उपावन सार ॥ १८ ॥ तब देवन मिलि पूजौ पाई । विष्णु कुमार भूमि मै आई ॥ विनती कौय अनूपम दिये । करि प्रनाम सुर निज पुर गये ॥ १९ ॥ विष्णु कुमार गये निज धाम ॥ सबन सुरन को करि सनमान ॥ फेरि जाय दोक्षा पादरी । इहिँ सो मुनि अपना तप करो ॥ २०० ॥ सावन मुदि पुन्यो तिथि तनो । कथा विचित्र अनूपम बनो ॥ वात्सल्य संग कथा यह करो । कथा कोस सम जो कछु लहो ॥ २०१ ॥

x x x x x x

इति श्री विष्णु कुमार मुनि कथा संपूर्ण ॥ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथी ३ भृगुवासरे संवत् १९५५ ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—उज्जयिनी के राजा सिधाराम के चारों मंत्रियों को धूर्तता से एक जैन मुनि का अभिनय होना—जिसने कितने ही ब्राह्मणों को अपने जैन मत के प्रभाव से हरा दिया था । मुनि के तप से उन चारों का कोला जाता, राजा को यह सब ज्ञात होना और उनको प्राण दंड को पाशा दिया जाना, मुनि का उनके प्राण बचाना और राजा से किसी अन्य दंड को प्रार्थना करना; राजा द्वारा उन को देश निकाला दिया जाना ।

(२) पृ० १२ से पृ० २२ तक—चारों ब्राह्मण मंत्रियों का निकल कर हस्त-नामपुर के राजा पदुम के यहाँ पहुँचना और एक विशेष ढंग से उसके शत्रु को उसकी शरण में लाने के उपलक्ष्य में सात दिन का राज्य पाना । वहाँ पर उन्हों मुनिवर का (जिनसे इन लोगों का प्रथम विरोध था) पुनः यज्ञ द्वारा श्रद्धा न करना और विष्णु कुमार को सहायता से कष्ट से मुक्त होना । विष्णुकुमार का धामन रूप धारण कर के बलि मंत्रों को (उन चारों ब्राह्मणों में मुख्य) को क्लान्त । मुनिके प्रभाव से प्रभावान्वित होकर उन चारों का आवश्यक वत धारण करना । विष्णु कुमार का प्रख्यान । कथा फल वर्णन । ग्रंथकार का परिचय—विष्णु कुमार मुनिद को कौनो कथा रसाल । सुनौ भव्य गन भाव से कहुँ विनोदो लाल ॥

No. 441. Sati Vilāsa Biranji (wife of Sāhabadīn) of Newādā (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—10½ x 6 inches. Lines per page—21. Extent—908 Anuṣṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nagari. Date of composition—1905 Samvat or A.D. 1848. Place of deposit—Śrīman Bābū Bhagwān Bakhshā Sīmhājī, Rājā of Amethī, Rājā Amethī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—अथ सती विलास लिख्यते ॥

होहा सब कर पालक जवन प्रभु प्रज अनोह निर्वाण ॥ वन्दौ तिन के पद कमल जापर अपर न घान ॥ मलपति सेस महेश विधि चंद सूर दिज व्यास ॥ सेत सती सारद सिवा पुत्रबहु मन को पास ॥ × × × ×
जोव विन जस देह मलोन वो नीर बिना सूर सृषित कैसे ॥ ज्ञान विदोन जतो क्विति मै हरि भक्ति बिना नररूप अनैस ॥ चंद मलोन पियूष बिना जगजान बिना कुल वादन कैसे ॥ नारि विरजि विचारिक है पिय भक्ति बिना तिय सोहत कैसे ॥ ३ ॥ × × × ×
सूर्यवंस मै रघुमये रघुवंसो श्री राम ॥ ता सुत डे लखकुस भये क्विपित पुरन काम ॥ द्विषितवंस उदित भये पुर्गवंस महाराज ॥ तिलक जुक्त सुभ सोमिजै सख्य धर्म कर साज ॥ चमरसिंह तेहि वंस मै रामचन्द्र कर दास ॥ जोग जतन अप तप किये पुत्र होइ को पास ॥ सेवत वंस गोपाल के तेहि सुत साहिब दोन ॥ सो प्रभुतक विचारि के रहत ब्रह्म मो लोन ॥ अब भापौ माईक अत्रस कासो सुभ पखान ॥ जाके दरसन हेत हित देव कोहि पखान ॥ विमलवंस रघुवंस के वंस बशालिस होइ ॥ धाम निवादा मै विदित ममपितु सोतल सोह ॥ चौ० ॥ जिले जवनपुर मै गडवारा ॥ दुर्गवंस तह वसहि बोदारा ॥ तहाँ जान अनुभव हम पाये ॥ सो कहि पगट ग्रन्थ मै गाये ॥ वान सुन्य घर बँक मिलाई ॥ तापर चंद देतु पुनि ॥ भेक रोति संवत विप्याता ॥ जाति लेव इहि विधि बुध बाता ॥ × ×
सावन सिति पुन्यौ जव पाई ॥ तब मेरे मन हुलसत भाई ॥ जाये धर्म पतिव्रत केरा ॥ जेहते करु सब धर्म बसेरा ॥ × × × × ×

End—दुर्ग वंस अकतंस सोहि पिय भक्ति वता येव ॥ यह छिन उपजेव ज्ञान कंत सेवा मन लायेव ॥ अनुभव यातम जगे सतीसत्त ध्रुव ऐह भापौ ॥ दिन पति कर कल्याण सस गौरो पति सापौ ॥ पोड़स वर्ष को उमरि मै किमि भापौ मै भक्ति पिय ॥ ऐहते सबनर जानिये येह कोनो कृत संभु विय ॥ सबैषा ॥ सोय

सतो पद वंदि सोहावनि पावनि जे पिय संग सिधाए । पारवतो जुत इंसति के
पद वंदो कथा करि होहु सहाय ॥ कोटि करो विनतो रिषि नारिको कोरति
जामु सिधा वर गये ॥ नारि चिरञ्जिय भर्ते ऐहो ऐह ग्रंथ पढे नर वांछित पाये ॥

X X X X

मादौ तिथि भगवान की तादिन ते दुर अवर ॥ सत विलास भाषा कियो सकल
धर्म को टवर ॥ × × ×

इति ।

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम विलासः त्रिवर्ग भक्ति, देश धर्म शास्त्र मत वर्णन । (२) पृ० १९—२८ तक—द्वितीय विलासः ज्ञान समुद्र नाम केत वर्णन । (३) पृ० २९—३८ तक—तृतीय विलासः उपपुराण मतसे पति पूजन विधान वर्णन । (४) पृ० ३८—५० तक चतुर्थ विलासः शास्त्र मतसे शत्रु ब्रह्मज्ञान देश प्रादि का वर्णन । (५) पृ० ५१—६२ तक—पंचम विलासः गोपी उपदेश वर्णन । (६) पृ० ६२—७३ तक—षष्ठ विलासः विष्णु दिव्य संवामे गृही धर्म वर्णन । (७) पृ० ७३—८६ तक—सप्तम विलासः गृही धर्म प्रताप वर्णन ।

No. 442. Bāraba Khari, y Viṣṇudāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—9×6 inches. Lines per page—20. Extent—165 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of composition—1851 Samvat or A.D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Kṛishṇa Kumāra, post office Bahādurganja, Rae Bareilly.

Beginning—प्रथम विष्णुदास जी की बारह परो लिख्यते ॥ दोहा ॥
पहले गणपति ध्याये पीछे कोजे काज । विघ्न हरन मंगल करन राखत जनको
लाज ॥ गणपति को सिर नाइके करो कोरतन रंग । राम भजो मुख बावरे काटे
जम के फंद ॥ संवत अष्टादह सै इकावना सामन सुदि तिथि दृज । विष्णुदास
बारह परो कहौ देवता बृक्ष ॥ कहौ देवता बुझि विश्व भर भगवत नाम उचारौ ।
अरतिस प्रच्छन्न भरतन कौन्हे हिरदे भयौ उचारौ ॥ गुरु की ध्यान धरौ
मन माहौ माया मई अपारा । विष्णुदास द्विज दसम ब्रषाने सुनि के भये निस्तार ॥

End—जितना जनकी उक्ति थी उतनी कहो बनाइ । नाम कथा सागर बड़ा किस पर पैरो जाइ ॥ किस पर पैरो जाय समद दर कुकरो मकरो बनाई । गुरु हथ लदा चरन से बड़ा पड़ा बनाई ॥ विष्णुदास उम्बर—को वासी जिन ये कोरति नाई । टंडो राम गुरु को किरपा से जग विचि सोना पाई ॥ इति विष्णुदास को वारह परो भई समाप्त ॥

Subject—पृ० १—वर्णरति स्तुति, निर्माण काल और गुरु महिमा वर्णन, वसुदेव देवकी विवाह तथा साकाशबाणी का होना । पृष्ठ २—कंस का डर जाना और देवकी को दुख देना, वसुदेव का पुत्र देने की शपथ करना और देवकी को लेकर घर आना ।

पृ० ३—संज्ञान उत्पन्न होने पर कंस को द देना, वसुदेव और देवकी का बंदा होना, कृष्ण जन्म, कृष्ण को बंद गृह ले जाना यमुना का बहना, वसुदेव की उस समय की दशा का वर्णन पृ० ४—वसुदेव का छोट कर वापिस आना, कृष्ण का पालने में झूलना, पूतना वध, गौ चराने की लोला का वर्णन ।

पृ० ५—काली दमन, गोपियों की उस समय की मयभीत दशा का वर्णन । कंस वध वर्णन ।

पृ० ६—कृष्ण विनय के पद और ग्रन्थ समाप्ति ।

No. 449. Durgā Śtaka, by Viṣṇuśiṅga Mahāpātra. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—8 by 5 inches. Lines per page—10. Extent—360 Anuṣṭup śloka. Appearance—New. Character—Nāgari. Place of deposit—Thākura Mahābīra Simhaji Talukédāra, village and post office Kothara Kalān, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री वनेशायनमः ॥ यथ दुर्गा शतकम् ॥ कवित ध्यान ॥
 होरन के खंभा जगमगि रहे मंदिर में धूपन के बास आस पास बगरे रहें ॥ मोतिन की झालरें झपकि रहों चहुँघोर बादलान तासु के वितान पसरै रहै ॥ सब देव मंदल मुनोस सीस पानि जोरै चिट्ठम के पलिका जरावन जरे रहैं ॥ बैठी तहां देवी विध्यवा सिनो चरन आगे मुकुट दिगोसन के लटके परे रहै ॥ १ ॥ पुनः ॥
 कनक को मन्दिर सिंहासन रुचिर तामे बैठी जगदंबा गान किशर करे रहैं ॥ नाचै देवतान की बधूरी भुरि भाव भरो बाजत सुदंग ताल नौबति भरे रहै ॥ संकर रमेस बंस चवर डोलावै दोउ कुत्र लोन्हे कर में निसाकर खरे रहैं ॥ सासन की जोवै पाक सासन हमेले जासु आसन के मोचे पंकजासन परे रहै ॥

x

x

x

x

End—जब धूम ताम गोम धावत जलद ऐसे चहुँघोर फैलत नगारे की सहर है ॥ विपन के मंदल जपत सिद्ध मेघ जामें घंटा की धनक जामें घाटी पहर है ॥ रुचिर हुकानन में पावन विविध वस्तु उत्तर दिशा में पुन्य गंगा की लहर है । चहल पदल होत महल महल बीच राजत विचित्र जगदंबा की सहर है ॥

तैहो सस सागर कमठ शेष नाग तैहो तहो मेरु दिग्गज कुबेर मयवान है । तैहो नव कानन पवित्र सृष्टिघर तैहो तैहो पुरी ग्राम तीना पावत प्रचान है ॥ तैहो गुन तोरय प्रयाग में त्रिवेनी तैहो तहो जप तप जोग संजम विचान है । तैहो भूमि पावक सलिल ज्यौम माखत है तैहो देवी सुरज मयंक जगुमान है ॥ इति श्री दुर्गाशतके प्रथम स्तोत्रे महापात्र विष्णुदत्त कृता वागादि वरुणो नाम दशमं दशक ॥ इति दुर्गा शतक सम्पूर्णेम् ॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—प्रथम दशक, ध्यानवर्णन, (२) पृ० ६—९ तक—द्वितीय दशक, प्रभाव वर्णन, (३) पृ० १०—१५ तक—तृतीय दशक—पद, मुख, प्रीति, कर, भुक्तो वर्णन । (४) पृ० १६—२० तक—चतुर्थ दशक—दवा दृष्टि वर्णन । (५) पृ० २०—२५ तक—पंचम दशक, महिमा वर्णन । (६) पृ० २५—३० तक—षष्ठ दशक—स्तुति वर्णन । (७) पृ० ३०—३४ तक—सप्तम दशक, घंटा विशूल वर्णन । (८) पृ० ३४—३९ तक—अष्टम दशक—बाहुआदि वर्णन । (९) पृ० ३९—४५ तक—नवम दशक, मदिरादि वर्णन । (१०) पृ० ४५—५० तक—दशम दशक—घाटिकादि वर्णन ।

Note—यह पुस्तक सन् १९०६ ई० में मिरजा पुर निवसो रामधनज्योतिषी के नाम से प्रकाशित हो चुकी है ।

No. 444. Bhakti Ratānāvalī (Tōkā), by Parama Hans Vishnu Puriji. Substance--Countrymade paper. Leaves--100. Size--13×6 inches. Lines per page--22. Extent--2,300 Anushtup ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Place of deposit--Paṇḍita Bhagawāndinājī Miśra, Vaidya, Baharāich.

Beginning—दशमं श्री शुक्र वाक्य ॥ श्री कृष्ण सर्वोत्कृष्ट है ॥ कैसे हैं विवरूप त विम्बस्वरूप हैं ॥ बाजोक निवास जाकों । भनरात्मा तें वा भक्तन की निवास हैं जाविषे ॥ श्री कृष्ण भाव स्पष्ट करिये हैं ॥ श्री देवकी विषे है जन्म प्रसिद्धि जाको ॥ व रक्त में जन्म नहीं हैं ॥ श्रेष्ठ यादव है समा सेवक रूप जाकों ॥ चारि भुजतें वा भुज रूप धनुनादिक तें दुष्ट दैत्यादिक को बध करिके ॥ यधमे को दूर करत हैं ॥ ऐसे समर्थ को मेरो विघ्न वारन के लो कहैं ॥ कलु नहि है बिलास चातुरो ॥ लावक्यादिक बिनाहु सम्पन्न मात्र तें ॥ लावर जन्म जे वृन्दावन के वृक्ष लता लुख ॥ पक्षि के दुख हारो हैं ॥ मेमाधोन कहिय हैं सुन्दर हास्य को शोभा हैं जाविषे ॥ ऐसा जो मुष तातें गोपिधन के कामदेव को वृद्धि करत हैं ॥ काम वृद्धि को हेतु श्री कृष्ण विषे काम हैं । सो परमानन्द दाख होइ ॥

End—कृता ग्रंथ ग्रंथ जो अपने कर्म ताको भगवान को समर्पित है । हे भगवान हे लक्ष्मीकांत ये चांचल्य विषे सयथा सकल को विषय सधेवा परमाथे के निरूपण विषे तुम मोको तत्पर करो ॥ तहां बुद्धि के विभव तुल्य जो मेरे यत्न तिन करि भगवान तुम भक्त सहित प्रसन्न होहु ॥ अपने ग्रंथ विषे सकल संपत्ति को योग्यता कहैं हैं ॥ भक्ति है प्रयोजन जिनको ऐसे जे सावू तिनको पादर पठन चितव को आग्रह या ग्रंथ विषे आग्रहि ते होइगो ॥ अरु सुक्ति के विचार विषे हैं स्वभाव जिनको ऐसे भक्तिहीन अस शब्दिक तिनको तो पादर होइगो ॥ मेरे श्रम को देखिकै कैसा है श्रम नाना प्रकारन के इलोक को सम्बन्ध ते एकत्र लिखत ऐसो हैं । जो कोई प अनन्य की कृति है ऐसो ज्ञानि के निंदा करत है तिनको मैं याचत हौं प मैं रिक्तति को बार बार देखि कै पोछे दुखन कौंछो जो भक्ति को महिमा ज्ञान पर निंदा को वासना रहंगी तो दुखन देवै ॥ ये ग्रंथ बारबार देखत भगवान भक्ति उपजैगो । तब पर निन्दादि दुर्वासना कहां उपजै आदि ।

Subject—पुस्तक प्राचीन है परन्तु इसमें आदि का एक और अंत का एक पृष्ठ नहीं है जिससे संवत् आदि का पता नहीं चलता शेष पुस्तक पूर्ण है । पृ० १—३१ तक श्री कृष्ण की भक्ति का वर्णन है इसमें नारद जी, सुत जी, विष्णुपुरी, मुकंदेय जी, कपिल देव को माता व कपिल जी आदि व भ्रुव प्रह्लाद आदि की भक्ति का वर्णन किया है । पृ० ३२—५२ तक साकाशवाणी नारद प्रति । भगवान की भक्ति करना और विषय भोग को त्यागना आदि का वर्णन है ॥ पृ० ५३—६२ तक सुधा, तुलसी, कीध, लोम, मोह, आदि से भक्त को दूर रहना उचित है इसी पर व्याख्या की गई है ॥ पृ० ६३—७३ तक हरिकोर्टन में तत्पर रहना सब दुखों का छुड़ाना है क्योंकि श्री भगवान के पद से गंगाजी ने प्रगट होकर संसार के पापों को दूर किया आदि वर्णन है । पृ० ७४—८४ तक जरासंध वध आदि की कथा वर्णन है ॥ पृ० ८५—९० तक श्री भगवान सांसारिक किसी वस्तु की इच्छा नहीं करते और सब से दूर रहकर संसार का पालन करते और दुःख हर्ते श्री राम वानर रोक आदि के साथ रहे और उनको भक्ति देख उनको अपनाया आदि वर्णन किया है ॥ पृ० ९१—१०० तक श्री कृष्ण भगवान की महिमा का वर्णन किया है भक्ति और शत्रुघ्न से जो उनको आवाते हैं तो सब उनको प्राप्त करते हैं और स्मरण मात्र से कृतार्थ होते हैं इसी प्रकार नारद आदि के वाक्य वर्णन किये गये हैं । फिर ग्रंथकार ने अंत में अपनी प्रार्थना श्री भगवान कृष्ण जी से की है ।

No. 446(a). Ananda Raghunandana Nataka, by Visva Natha Simha of Rewa. Substance—Country-made paper.

Leaves—67. Size— $13 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—13. Extant—1,750 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Baharāich.

No. 445(b). Ananda Raghunandan Nāṭakā, by Maharaja Viṣwanātha Simhaji of Rewā. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size— 14×7 inches. Lines per page—11. Extant—2,247 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Sukhi Lālā Rāma Prasāda Kaserā, Bāzāra, Nawābganj, Bārābankī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ आनन्द रघुनन्दनं नाम नाटक ॥ कंद शिखा ॥ प्रशरण शरण शरण दश मुख मुख दलन दलि है ॥ अकरन करन करन धनु शर प्रल उधरत रन चलि चलि है ॥ सद मन सदय सद कर कर जनन जनन पर रति है ॥ जस जग मनत गुण मण मण मणय चाहिय पशुपति हैं ॥ १ मृद पदु पदम पदुम महियन मन पलि पलि रहि रमि रमि है ॥ चख चल चलानि करति बरवस सुबय वयन अमि अमि है ॥ अति मद मदन सर सर सत रस पति तन है ॥ जय जय जयन विजय वुध कन कन मम पति पति त्रिभुवन है ॥

End—सूत्रधारः प्रवेशः ॥ जय जय रघुनन्द करुणा कर दे ॥ ताड़का तनुमंजन बल दल मंजन हे ॥ पिताक बंजन जन रंजन हे ॥ सीता विवाहन सुखाव गादन हे ॥ सौख्योत्थै दार्यादि कुन भाजन हे ॥ १ ॥ रे ई सुनि रेरे सनि सामिन्ति परवप्य प्रगरे सामय्य ममय्यय्य अथ मयनि अथ पाथो दिग दिग थोपि गदि गदि गति कत कत कत कथं तक थंतक नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग तनुष्य थैया ॥ १ ॥ श्री रघुनन्दनः ॥ मायु मायु ॥ सूत्र धारः ॥ भजन ॥ छूटै मन मलो-नता सारी कामादिक मिटि जाहों ॥ होय विवेक नसै दुख सिंगरे गद्दी आप ममवाहों ॥ अति निर्मल चित है प्रभुपद मे लगी सहित द्रुग भावै । परम प्रेमरघु-नाथ आप को विश्वनाथ अथ पावै ॥ १ ॥ जौलौ कोरति चले तिहारो तो लौचले नाथ यह नाटक ॥ सुनि सब होहि सुखारो ॥ जो यह करै लहै धन धामहु अंत सुगति तिहि होवै ॥ विश्वनाथ को प्रगट रहियतन सुमन तिहारो जोवै ॥ १ ॥ श्री रघुनन्दन दनः तथा सूत्रधारः प्रसन्न सहर्ष निःशान्तः ॥ इति श्री मन्महाराजा विराज वैद्यवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जुदेव कृत आनन्द रघुनन्द नाथ के सप्तब्राह्मः ॥ समाप्तम् ॥ गुरुदत्त लेखित संवन १९१६ ॥

Subject—(१) पृ० १—२ तक—नान्दो, सुत्रधार प्रवेश, मारिष से सुत्रधार के नाटक खेलने की घाजा और उसका निषेध, सुत्रधार का मारिष से गुप्त बाणों का कथन करना, परिपार्श्वक प्रवेश, उसको नट से नाटक खेलने की प्रार्थना; उसका निषेध पुनः परिपार्श्वक का स्मरण दिलाना कि तुझको—तेरे ही कथन के अनुसार अभिवाणों का आशिर्वाद मिल चुका है कि तुझे एक अपूर्व नाटक मिलेगा—इति प्रस्तावना (२) पृ० २—३ तक—सुत्रधार को एक चौड़ी मिलना उसका उसे पढ़ना, उसी में कविक का परिचय इस प्रकार:—श्री जै सिंह भुवाल विधिपति सुत विमुनाय सिंह जेहि नाऊ सो नाटक आनन्द रघु-नन्द भाषा रचि है साउ ष्ठाऊ ॥—इति निः कांतः ॥ शिष्य प्रवेश, नट का गुरु को देव कर उससे पूजन की तयारी के लिये कहना, गुरुशोभा वर्णन, गुरु प्रवेश, प्रणाम पश्चात् गुरु की चिट्ठी पाने का उनसे कथन और घपना नाटक पढ़ने की इच्छा प्रगट करना, गुरु की स्वीकृति। नट का कथन कि घाप के प्रसाद से मुझपर नाटक आया।

(३) पृ० ४—७ तक—नेपथ्य में कैलाहल, गुरु का ईश्वरावतार होने का संदेह, अपराजिता नाम नगरी को गुरु का जाना। विष्कामकः—महाराज का आगमन, सूत्र माणदादि का वन्दन पाठ, नट का नटी से पुरहुत तथा दैत्यों का गुरु बता कर कच्चे सूत पर चढ़ के पाकाश भ्रमन, वहाँ से उसके भोगों का गिरना, नटी का सती होना, पुनः नटका का जाना, लोगों का आश्चर्य चकित होना, नट का नटी को पुनः बुलाना और उसका महलों से निकलना। विदूषक का नटी से हास्य।

(४) पृ० २—१९ तक—नृत्य होना, महाराज का कैशिल्या के महलों में जाना, रानियों को उपदेश, कुमारी का महलों से दरबार में बुलाना, मंत्री से राजकुमारी के विवाह की बातचीत, गुरु आगमन, राजा का गुरु से कथन कि विश्वामित्र ऋषि आनेवाले हैं और वह भी सुना है कि वे दोनों राज-कुमारी को मांगेंगे। गुरु का वहाँ कुमारी के भेजने का उपदेश जप्यागमन, कुमारी का मांगना, राजा का कुमारी को दे देना, शर्म पूरा करके उस राक्षसी के वन में पहुँचना—जो ऋषि का मंत्र भंग करती थी, धनुष बाल चढ़ाना, गुरु से शंका करना कि स्त्री को मारने से कुल का कलंक होगा ऋषि का कहना कि ऐसी पापिनीयों (भूगु को स्त्री और मंथरा को) मुरारी और नगरि ने मार कर पशु लिया है। यदुत से राक्षसी का वध।

(५) पृ० २०—३३ तक मुनि का सोलकेतु रूप की वन्या के स्वयंवर में राजकुमारी सहित जाना, सङ्घर्षकर तथा दिशशिरका घाटाविषाद दिक्

शिर का भाकाशवासी ध्रुवण करके भाग जाना, धनुष टूटना जयमाल पहनना, महाराज अपराजित को चिट्ठी जाना, उनका गद्गद हो कर पड़ना और महिजा से अपने पुत्र का विवाह होना सुनकर बरात सजा कर जाना ।

(६) पृ० ३४—४५ तक नियमानुसार विवाह का होना, मंत्री का राजा से पुत्र की विदा की प्रार्थना इस हेतु कि हर धनु मंग सुव रेणुकेय पा रहे हैं । गौतम के शिष्य का प्रागमन, राजा से बंग भाषा में मुनि का संवाद पहुंचना, रेणुकेय का प्रागमन, उनके भूषणादि का वर्णन, रेणुकेय का कोच डोल घराघर से बादाबाद, रेणुकेय का उनको अवतार समझ तपस्या को चला जाना, राज-कुमारों का अपने नगर को आ जाना, माताओं का हर्ष—

इति प्रथमोऽङ्कः ।

(७) पृ० ४५—५१ तक चादि कवि के शिष्य का क्षौरवती तथा कलिद जा द्वारा सुना हुआ संवाद सुनाना कि 'राजा' का देवलोका हो गया, इस पर मुनि का हर्ष शोक प्रकट करना, राजकुमारों का चादि कवि के पाश्र्व पर जाना, उनके ठहरने को स्नान बनावा । अपराजिता को कथा पूछना, मुनि का उनको प्रसन्नता का कथन करना ।

(८) पृ० ५२—५९ तक उड्डह जगकारी का घर जाना, डोल घराघर का वन प्रवेश सुन कर शोक, दासी की ठोक पीट, कुशला मिलाप, अपने और सफ़ाई देना कि डोल घराघर के वन भेजे जाने में मेरा दोष नहीं है, उड्डह जगकारी का डोल घराघर के पास चला जाना । काग का महिजा को चोच मारना, सीक के बाण द्वारा उसको एक घाँच फेंक देना, सेना देवकर विलाप करना, बड़े माई से कहना कि यदि पाजा हो तो सभी इन दोनों भाइयों को पकड़ लाऊँ । सब का प्रागमन, पिता मरण सुन कर रोदन । गुरु का सम्मानना, उनको पादुका देकर विदा करना ।

इति द्वितीयाङ्कः ।

(९) पृ० ६०—६९ तक मैव बहण का गुरु को सूचित करना कि डोल घराघर (तुम्हारे इष्ट देव) आवत हैं । डोल घराघर का प्रागमन मुनि का चर्च पाद द्वारा स्पर्श करना, उनको मराठी भाषा में पंचयटी पर निवास करना कथन, हितकारी से बातलाप । उड्डह जगकारी को कथा सुनाना, (दीर्घमन्त्री) एक स्त्री का प्रागमन विवाह प्रस्ताव दीर्घमन्त्री के नाक कान भंग करना, रासभ प्रवेश, हितकारी रासभ सुद्ध रासभ तथा अन्य राससों का मारा जाना, मैव बहण का प्रवेश तथा वन्दना ।

(१०) पृ० ७०—८१ तक दिशशिर का मंत्रों से समर्थ कैलाशदि उठा लाने का वार्तालाप, दोर्धनघो का रोते हुए पहुंचना, सब कथा कहना, दिशशिर का सोच करना, मंत्रों का उनकी स्त्री के हरण की सम्मति देना, डोल घराघर का महिजा ने मृग देखकर उसके मार लाने का कथन, उनका गमन, डोल घराघर २ का शब्द सुनकर महिजा द्वारा हितकारों का भेजा जाना, महिजा हरण, जटायु युद्ध, जटायु परम गति, डोल घराघर का महिजा के वियोग में स्थित होना। पनुरामिनी मिलाप, सुगलकंठ आश्रम को गमन।

इति तृतीयाङ्कः।

(११) पृ० ८२—९३ तक सुगलकंठ और उसके मंत्रों चेतामह से मिलाप, महिजा संदेश कथन, वासिव (सुगलकंठ का चम्रज) वध, भुजभूषण को युवराज पद, वासिव का सुख भोग, हितकारों का वर्षा व्यतीत होने और शरद ऋतु या जाने पर खेद प्रकट करना कि, सुगलकंठ ने अभी तक महिजा मिलाप का कोई प्रयत्न नहीं किया। सुगलकंठ का देश विदेशों को बानरों को भेजना, द्राविड देश की एक पर्वत की गुहा निवासिनी स्वयं प्रकाशिनी तपस्वी तथा एक गृध्र द्वारा बानरों का समाचार हितकारों को ज्ञात होना, गृध्र द्वारा बनाई हुई राक्षस पुरी को चेतामह का पहुंचना। गृध्र का भाजा लेकर चलना।

इति चतुर्थाङ्कः।

(१२) पृ० ९४—१०६ तक चेतामह का राक्षसपुरी में पहुंचना महिजा का समाचार लेना वादिका विनाश, दिशशिर के पुत्र नयन का मारा जाना, चेतामह का पकड़ा जाना, राक्षसपुरी दहन, चेतामह का सम्पूर्ण समाचार हितकारों को आकर सुनाना उनका दिया चूड़ामणि हितकारी को देना। राक्षसपुरी को सैन्य गमन। दिशशिर के लघुभ्राता (भयानक) का दिशशिर से आ मिलना। हितकारों का भयानक से समुद्र पार करने की सम्मति लेना, समुद्र का स्वरूप धारण करके आना, सेतु बांधना, शिवलिंग स्थापन।

इति पंचमाङ्कः।

(१३) पृ० १०७—१५१ तक राक्षसपुरी में बानर दल की चढ़ाई से हाहाकार, दिशशिर के यहाँ भुजभूषण का पहुंच कर उसे समझाना, उसका कोव करना, पद रोपण, संवाद, भयानक द्वारा राक्षसपुरी के प्रत्येक द्वार पर कौन कौन राक्षस स्थित हैं इसकी सूचना हितकारों को देना। कौन योद्धा किससे लड़ा इसका बखान, डोल घराघर के शक्ति बाल लगना। चेतामह का घोषधि लाना और डहडह जयकारों का समाचार सुनाना। डोल घराघर का संचेत होना, पुनः युद्ध, घट कण तथा घननाद योद्धाओं का विनाश,

दिशसिर का मरण, महिजा-मिलाप, भवानक को राज-तिलक, प्रवधि में देाही दिन रह जाने का स्मरण कर प्रवध को चलने का विचार, भवानक का एक विमान देकर सुकंठ चेतामल्ल और भुज भूषणादि सहित प्रवध को चलना । हितकारी का यह कह कर कि मुझे याज्ञवल्क्य के शिष्य के आश्रम में कुछ विलम्ब होगा सो तुम आकर डहडहकारी को सूचित करो ।

इति षष्ठमोऽङ्कः ।

(१४) पृ० १५२—१७२ तक हितकारी के न घाने पर डहडहकारी का शोक, चेतामल्ल का उनके घाने का समाचार सुनाना । हितकारी का आगमन होते हुए विमानादि के शब्दों को सुनकर प्रवधवासियों का आश्चर्यान्वित होना और मेघादि शब्द की उपेक्षा करना, चेतामल्ल का उन्हें समझाना, हितकारी तथा डहडह जयकारी का मिलाप, मैत्रावरुणि आगमन और उनका आशिर्वाद देकर विदा होना, पञ्चराशों का मुख्य गान और उनका नाम नायक भेदानुसार करना, गौरांग नर्तकियों का घंगरेजो गान, फारसी गान, पर्वी तथा तुर्कियों का गान, मरुदेशी चारवधुओं का गान, गानेवालों स्त्रियों को विदा कर हितकारी ने सब भाइयों को कार्य्य संपूर्ण किया, स्वर्धुनो ब्रह्म कुंडजा सम्बाद, भरत वाक्य-नाटक समाप्त । इति सप्तमोऽङ्कः ।

No. 446(a). Bhāva Panchāsikā, by Vrinda Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—260 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1343 Samvat or A.D. 1686. Place of deposit—Paṇḍita Ramadevaji, village Baburīgām, post office Dhanauli, district Barābankī.

Beginning—अथ भावपकाश पंचाशिका लिख्यते ।

देाहा—प्रदुभुत समित अनन्त अति प्रगम अपार धनूप । व्यापक इक्ष्य प्रदृश्य मय जय जय ज्योति सख्य ॥१॥ कवि लोगन के भाव सुनि । कछुक भये चितचाव । करो भाव पंचाशिका वृन्द सुकवि धरि भाव ॥२॥ भाव सहित शोभा लहै, पूजा जप तप मित्र । वाते वृन्द विचारि के, कोने भाव कवित ॥३॥ बाजत ताल मृदंग उषंग महाधुनि तीनहु लोक कई है । वृन्द कई सुर किन्नर भूत पिशाच पड़ै अस उक्ति नई है । नाचत गौरि को हेत लिये सित कंठ हिये चतुराग मई है । चारिहु घोर घराघर ऊपर मेघ बिना जल वृष्टि मई है ॥४॥

देहा—हरि लोको पावन धरो, यह कहूँ और प्रसन्न ।

हर है मैं राखी सदा, सिर पर लोको गङ्गा ॥

End—चित उदास न कोमल हास उदास भरे मुख खोने रहै रत । खोन सबीन के संगन बैठन देखिये दोन कहै न सुनैवत ॥ वृन्द कहै यह भाव कहा प्रति निन्दित है विधि को अपने मत याको न रोग न पोको बियोग न योग कलेश को ऐसी दसकत १०८ ॥ दोहा—करिहैं दिन चारि में पिय परदेस पयान । सुनत भई ऐसी दसा समुझहु भाव समान ॥

पानपती के पयान समै प्रति काम डरी मररी हिय में धन । क्यों जिय घोरज की धरि है रु कहा करिहैं उपचार स गोजन ॥ x x x x । यों तकि शंक नईक भई उनि सौपि दिवौ मन मोहन को मन ॥ दोहा । तिय मन दोनों पीय कीं जब हो किया पयान । अब उर कहा लु मोहिनी समुझहु बुद्धि निधान ॥१११॥ कोने कवित्र मंजुस बराबरि तामे बवाहर भाव भरे हैं । स्वच्छ सुदेश सुलखन पेखि महा निरादोष बरे सुधरे हैं ॥ ताके दुराव को ताछे दये समुझे बुद्धिवान दुराव धरे हैं । वृन्द कहैं पुनि ताके प्रकाश को कुची समये दोहा करे हैं ॥११२॥

दोहा—विभाव पंचासिका वृन्द सुभाव विचारि ।

भूल चुक कवि कुल सबे लोने समुझि सुचारि ॥

Subject—(१) पृ० १—३ तक—व्योतिःस्वरूप परमात्मा को वन्दना । भाव पंचासिका के निर्माण का कारण । ग्रंथ निर्माण कालः—सत्रह सै तैत्तलोम सुदि, फागुन मंगल वार । चौथि भाव पंचाशिका, प्रगटी बवनि उदार ॥ शिव जी के मुख से विना वादल जल बरसने का कारण । गंगात्री की बंदना ।

(२) पृ० ४—७ तक—मानन्द सम्मोहिता नायका बखैन । मानिनो नायकान्तमेत शिवजी के शिर पर गंगा को देखकर पारवती का मान करना । रूप गविता का बखैन । कुम्भज मुनि का बिरहो जनों को वेदना न जानने का कारण । नर, सुर, असुर, पयोनिधि, शेष और समुद्र के कोसने वाली कृत पर पकी विरहिनी नायिका का बखैन और उसका इन लोगों को कोसने का कारण 'चंद्रमा' को जो विरहियों को अत्यन्त दुःखदाई है—उत्पन्न करना । विरहिनी नायिका का विरहावस्था में कोकिलों को कूजने, झमरों को गुंजारने और चंद्रमा को, निरद्वन्दता के साथ आलोकित होने की आज्ञा देने का कारण ।

(३) पृ० ८—११ तक—दोहिनी का अपने पति चन्द्रमा के पास से राज-कुमार को मुनया के भय से भागने पर उसे न पहिचान कर परिचय में आपाति

करना। पिय के हिय को छोड़ कर पीठ से आलियन करने वालो नायिका का बर्णन सकारण। विद्योगिनो नायिका का कोकिलों के साथ केवल इसलिये कूकना कि यह मेरे कलख से ललित होकर चुप हो जाय और मुझे विरह वेदना न हो।

(४) पृ० १२—१६ तक—भूत सुरति संगोपना नायिका का वर्णन। इस सवैया के उत्तर में दो दोहों द्वारा सत और असत पक्षों का निरूपण। अन्य सुरति दुःखिता नायिका का वर्णन इसके अंतर्गत कवि के वचन तथा नायिका के विषाद का वर्णन। विरहिणो नायिका का सकल शोतोपचार परित्याग पश्चात् भी शीत करवारी चन्द्रमा का सेवन करना और उसका कारण किसी प्रोषितपतिका नायिका का बिना पति के मिले ही उन्हें जाने का कहना इसका कारण यह कि जिससे हिय से लगते ही कहीं पास पक्षेक न उड़ जाय।

(५) पृ० १७—२० तक—वचन विदग्धा नायिका का वर्णन। संयोग-वस्था के सम्पूर्ण सुखों के तिलांजलि देने पर भी विद्योगिनो नायिका के मलयावलि पान का कारण (भुजंगों के विषयुक्त वायु के सेवन से विद्योगा-वस्था में शरीर त्याग का प्रयत्न)। न्याय का पक्ष लेते हुए सत्य का निर्वाह करने वाले मनुष्य का हरि के हिय को सकल संपत्ति पाने के अधिकारी होने का वर्णन। पति घागम सगुन प्रदर्शनकारी काम को भोजन देते समय करवलय के गिर जाने को घाशंका यद्यवा इस भय से कि वलय के शब्द से कहीं काम उड़ न जाय, भीतर चुपचाप भोजन रख देने वाली घागमपतिका नायिका का वर्णन। मुग्धा नायिका तथा सठनायक का सम्मिलित वर्णन। प्रोषित-पतिका नायिका का टोका निकालने का वर्णन।

(६) पृ० २०—२२ तक—घपनी प्रेयसो का पत्र पढ़कर नायक के विषाद तथा हर्ष एक साथ होने का कारण। स्वभाव से ही विशालासो नायिका के कजरारे नेत्र होने के कारण उसका प्रीतम से मिलने के लिये काजल के न लगाने और हृदय में अंतर पड़ जाने को घाशंका यद्यवा उर में मदन गति होने के कारण हार न पहिने का वर्णन। हरि-ललना के स्वरूप पर उत्प्रेक्षा। प्यासे विरही का पानी को खोज में जाने पर तालाब सूखने पर जल और जलज के प्रभाव में उसको मोद होने का कारण, ऊष के जलने पर नायिका को सफलता पाने का वर्णन। घागमपतिका नायिका का वर्णन—चैरी का बचाई मांगना और नायिका का उसे गालों देकर मारकर निकाल देने का कारण। प्रीतम के घपराय से कोयित होने वाली नायिका का वर्णन। क्रियाचतुर नायिका तथा नायक का वर्णन। वचन चतुरता—सखी के वचन नायिका से—सखी के वचन कुंवों पर किये हुए नक्षत्रों का गोपन करना।

(७) पृ० २३—२५ तक—सौत स्वल्प धारिणी नायिका का पति को अपने में अनुरक्त देखकर प्रेम प्रकाशित करने का वर्णन। सुरति संगोपना नायिका का वर्णन। चन्द्रमा के प्रकाशित होने पर चक्रवाक के पृथक् पृथक् न होने का वर्णन। केलि मंदिर में रति समय मुखचंद्र के क्षिपाने के चातुर्य का धारण। पौड़ा नायिका का वर्णन। ह्यगविता नायिका का वर्णन वचन चतुर नायिका का वर्णन। एक दिन राम के मृगश से शैटते समय सौता को सहिष्णुता के तरने का स्मरण होने पर चरण छूने का वर्णन।

(८) पृ० ३०—३२ तक—दुती द्वारा अपने मुख की चन्द्रमा को उपमा दिया जाना सुनकर रोष प्रकट करने का वर्णन। सौता द्वारा राम की महोपति कहे जाने के निषेध का कारण। प्रीतम के पत्र में यदि, शिवादि का चित्र लिखकर भेजने का कारण, चित्र द्वारा पत्रों भेजकर पंखरादि मांगना। पिय ममन पर नायिका के शोक प्रकाशित न करने का कारण। भाव पंचांशुका का विषय।

No. 446(b). Vrinda Satāsai, by Vrinda Kavi of Jodhapur Raja. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size— $9\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—36. Extent—720 Anush-tup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1761 Samvat or A. D. 1704. Date of manuscript—1905 Samvat or A. D. 1848. Place of deposit—Thākura Guruprasāda Siphā, village Guthawa, Bahārāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ पथ वृन्द सतसई लिखते ॥ दोहा—
श्री गुरुनाथ प्रभावते होत मनोरथ सिद्ध । मनते ज्यों तब बोलि दल कुल फलन
को वृद्धि ॥ १ ॥ किये वृन्द प्रसार के दोहा सुगम बनाय । उक्ति पर्थ हृष्टान्त
करि हृष्ट के दिये बताय ॥ २ ॥ भाव सरस समुझत सबै भले लगे इहि भाय । जैसे
पवसर को कहौ वानी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥ नोको पै फोको लगी बिन पवसर को
वात । जैसे वरनत युद्ध में रस शृंगार न सुहात ॥ ४ ॥ फोको पै नोको लगी
कहिण समय विचार । सब को मन हरषित करै ज्यों विबाह में गारि ॥ ५ ॥

End—बहने को समति सकल लघु विलसत मनस । दधिजल घन
घन जल घरा घर जल जग विलसत ७०१ जेहि जेतो निहिचै तितौ दैत दई
पदचाप । सककर सोरे के मिलै जैसे सककर भाव ॥ २ ॥ जिय ससोष विचरिय ।
रे होय लु लिख्यो नसोष । बल गुर कांच कथोर सौ मानत रलो मरोब ॥ ३ ॥
जया योग सब मिलत है जे विवि लिख्यो पंकूर । बल गुर योग नवारनो रानी

पान कपूर ॥ ४ ॥ समैसार दोहानि को सुनव होय मन मोद । प्रगट भई यह सत-
सई भाषा वृन्द विनोद ॥ ७०५ ॥ इति श्री वृन्द सतसई संपूर्ण समाप्तम् ॥ संवत्
१९०५ आषाढ कृष्ण षष्ठ्यां ८ ॥ २ ॥

Subject.—नाति के फुटकर दोहे ७०५ हैं ।

No. 447. Pancha Kalyankapūjā, by Vrindābana of Kāśī.
Substance—Country-made paper. Leaves—250. Size— $9\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—9. Extent—1,970 Anushtup
Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of
deposit—Śrī Jaina Mandira (Barā), Bārābanki (Oudh).

Beginning—प्रो नमः सिद्धेभ्यः ॥ प्रो नमो नेकांत वादिने जिनाय ॥
दोहा ॥ बन्दौ पाँच पदम गुरु गुरु गुरु वंदत जास । विघ्नहरण मंगल करन
पूजन परम प्रकाश ॥ चौबोसौ जिनपति नैमा नमो शास्त्रा माय । शिव
मम सायक साधु नमि रच्यो पाठ सुखादय ॥ जै जिनंद सुखकंद नमस्ते ॥ जय
जिनंद जित कंद नमस्ते ॥ जय जिनंदवर बोध नमस्ते ॥ जय जिनन्द जित कोय
नमस्ते ॥ १ ॥ पाप ताय हर इन्दु नमस्ते । अर्हवरन जूत बिंदु नमस्ते ॥ शिष्टाचार
विशिष्ट नमस्ते इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥ परम धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्म
मर्म धन धर्म नमस्ते ॥ इग विशाल वर माल नमस्ते इदि दयाल गुन माल
नमस्ते ॥ शुद्ध बुद्धि वर वृद्ध नमस्ते । चोतराग विज्ञान नमस्ते ॥ विद्विलास धृत
ध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥ स्वच्छ गुणां बुद्धिजन नमस्ते । सत्य हितकर वज्र नमस्ते ॥
कुनय करि मुनगाज नमस्ते । मिथ्या जनवर वाज नमस्ते ॥ ५ ॥

End—श्री वीर जिनेसा नमित सुरेसा नाग नरेसा भगति भरा । वृन्दा-
वन धाराव विधन नवावै छित पावै शिव शर्म बरा ॥ ७ ॥ महाचै आशीर्वाद ॥
दोहरा कंद ॥ श्री सनमति के जुगल पद जो पूजे घरि प्रीति । वृन्दावन
सा चतुर नर लई मुकत नवनात ॥ सुनिचे जिनराज तिठोक धनो । तुम मे
जितने गुन हैं तितनो ॥ कहि कौन सके मुख सो सब हो । ति पूजत हो
नह अधर्म यही ॥ १ ॥ रिपुभंदेव को सादि संत श्री वरधमान जिनवर सुखकार
तिनके चरण कमल को पूजे जो पानी गुनमाल उचार ॥ ताके पूज मित्र धन
जोवन सुख समाज गुण मिलै अपार । सुर पद भोग भोग यको है अनुकम लई
मोक्ष पद सार ॥ २ ॥

इति श्री वरधमान चौबोसो प्रथक २ पंच कल्याणक पूजा वृन्दावन कृत
सम्पूर्ण ॥ २४ ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—मंगलाचरण । तमस्कार, समुच्चय चौबीसों जिन पूजा कथन । आदिनाथ पूजा वर्णन ।

(२) पृ० १८—४० तक—श्री सजितनाथ पूजा वर्णन । श्री संभवनाथ जी पूजा का वर्णन श्री धर्मिन्दननाथ पूजा वर्णन ।

(३) पृ० ४२—८० तक—सुमतिनाथ पूजा वर्णन । श्री पद्म प्रभु की पूजा का वर्णन । श्री सुपाद्वैनाथ पूजा वर्णन ।

(४) पृ० ८१—१११ तक—श्री चन्द्रप्रभु पूजा वर्णन । पुष्पदन्त जिनेश्वर की पूजा का वर्णन । श्री शीतलनाथ जी की पूजा का वर्णन ।

(५) पृ० ११२—१४० तक—श्रेयाशनाथ पूजा वर्णन । श्री वास पूजा और जिन पूजा वर्णन । श्री विमलनाथ पूजा वर्णन ।

(६) पृ० १४१—१८० तक—श्री घनंतनाथ जी की पूजा का वर्णन । श्री धर्मनाथ की पूजा का वर्णन । श्री शांतिनाथ पूजा का वर्णन । श्री कुंतनाथ जी की पूजा वर्णन ।

(७) पृ० १८१—२१२ तक—श्री भरहनाथ जी की पूजा का वर्णन । श्री मल्लिनाथ जी की पूजा का वर्णन मुनि सुप्रतनाथ पूजा का वर्णन । श्री नेमोनाथ जी की पूजा का वर्णन ।

(८) पृ० २१३—५० तक—श्री नेमनाथ जी की पूजा का वर्णन श्री पाद्वैनाथ पूजा कथन । श्री वर्द्धमान जी जिन पूजा वर्णन पूजा का कल, कवि का नाम, जन्म तथा सहायका दिन नाम :— काशी जी के काशीनाथ नन्दूजी घनंतराम । मूलचंद षाड़त सुराम घाटि जासियो दे । सजन अनेक तहाँ धर्म चंद जी की लंड बन्दावन अमवाल गोल गोति बान्दियो ।

No. 448. Dhyāna Mañjarī, by Vrindābana Śaraṇādeva. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—10 × 5 inches. Lines per page—30. Extent—88 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1972 Samvat or A. D. 1915. Place of deposit—Nimbārka Postakālaya Bābā Mādhava Dāsajī Mahānta, Nāna Pārā, Bahārāich.

Beginning—श्री सर्वेश्वरो जयति ॥ श्रीमद्भगवते नमस्कारोच्चाप्य नमो नमः श्री वृन्दावन शरण देवजू कृत ध्यान मंजरी निरूप्यते ॥ रोलो कन्द ॥ श्री गुरुचरण सरोज हरन भव मंगलकारी । वन्दन करि धरि ध्यान ध्यान

बरनौ पिय प्यारी ॥१॥ रति फल भारन फूल भूल तह बेलि छह रित । मंजु कुंज बलि पुंज गुंज सुनिये जितही तित ॥२॥ आवत धोर समोर तोर जमुना जल परसै ॥ समल कमल मकरंद सकल दिसि सुमन न बरसै ॥ कोक कारिका पदत रदत जित पिक सुक कारो ॥ दम्पति तेहि अनुसार करत कोहा सुब कारो ॥ कुसुम सैन पर परम चैन पावै मिलि दोऊ ॥ बैठे करत विनोद मोद भरि पौरन कोऊ ॥

दोहा—प्रथमहि प्यारी को करत सिख नख बरनन चार ।

जाहि सुनत मोहि देखै पिय रिमि बघनो द्वार ॥

End—लाल बजाव बेनु बोन लै बाल बजावत । मिले करत दोउ बान तान सौ तान मिलावत ॥ रीझ परस्पर पृनि निसंक हूँ छेत संक भरि ॥ प्रेम विषस हूँ जात मधुर घति भवर पान करि ॥ देखि परस्पर रूप होत दुःख-नित दोउ मोहन ॥ बाहो ते दिन रैन कबहुँ छुटत नहिं मोहन ॥ करत विविध शृंगार भौतिक कहत न पावै । तदपि सुमति अनुसार भक्त कहि कै सख पावै ॥ ताते सिखनख ध्यान कछो मैं रसिक जनन हित । कंठ पाठ करि राख यहि सुमिरत करिहौं नित ॥ दोहा ॥ हाव भाव लावन्य घति घनिनित मिने न जाहि । निरखत सख पावै सखो दूरि दूरि कुंजन माहि ॥ जानहु को यह ज्ञान है ध्यान रसिक जन पान । पान करै जो पान यह सो न छुवै कछु पान ॥ श्री वृन्दावन धाम कवि दयामा दयाम सुखं । जन्म जन्म वृन्दावनहिं दोऊ निज जन संग ॥ इति श्री वृन्दावन शरण देव जु कृता ध्यान मंत्रो समाप्ता ॥

Subject—श्री कृष्ण का ध्यान ।

No. 449. Jyotisha Chakra of Vyāsadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—11×5½ inches. Lines per page—30. Extent—280 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Simhaji, village Payāgapura, post office Payāgapura, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिष चक्र लिख्यते ॥ नाम मनवाग्रह तिथि जान । संगति वेद करव परिमान बसु । ८ । गुन । ३ । वन । ७ । हित करिये तंत्र । ताते जनिये गर्भ का संत ॥ विषम पुत्र सम जानु कुमारी । सुख रहे तेहि मृतक बचानी ॥ रवि शुक्र भौम पुत्र उत्पत्त्या सोम सुके बुध भै कन्या ॥ मोरे भारे सनि जो आवै । अमर जनाई कै जीव नसावै ॥ इति कन्या पुत्र जन्म ॥

कट पति हस्त कोत्रे परमान । चाकर चूकर त्रिगुण वयान, एक झाड़ि जो वसु
ते हरे । कहै व्यास ऐसे गृह करै ॥ तादा नृपति नपुंसक ठसकर । भोजन विचकृत
घमै दलिद धनाढ्य ॥ तिथि कर दून बार सम लेख सहित नक्षत्र एक करि लेख
तीन के भागे रहे दुलास जल थल चंदा वसे षकास । घले वसै पड़गे लोहा तीन
लोक मह जागिन वसै कहै व्यास ऐसे लुभि करै ।

End—चूल्हा चक्र—

ईसान ३	पूरब ३	पनिान ३	स ३ म ५	श ३
उत्तर ३	मध्य ३	दक्षिन ३	स ३	बू १
वाइव ३	पछ ३	नैमित्य ३	रा ४ बू ७	च २ क १

जावत भात भुक्तानो दिवसेधि सुने च संख्या तथा बहो ३ भूता ५ । गुना
३ । पश्वि ४ । सेताव ७ । नैत २ । पृथ्वी १ । इन्दु १ । कमात करै हानि मुभे
सुध्वच कथितं चक्रं कर भूषनं पिंडे न वा ९ । कं ९ । गर्ज । नम्र । २ । पश्वि ३ ।
नट ८ । नाग ८ । नागै ८ । गुन तके । विभाजिते नाग । २ ॥ नमो १ । ७ ॥ ९ ॥
सुर्ज १२ ॥ नगाछे १७ । तिष्या १५ । छ २७ ॥ पमानुमि १२० ॥ इति धुजादि
ग्राम भुवेदा पंचकः १४ ४।४।४।४।३३ । कलस्ते चक्रं मातः । इति ग्रह प्रवेश ॥

१	४	४	४	४	४	३	३
प	प	शु	शु	व	अ	शु	शु

लिषा संवत १८९४ मुन्नु दुक्ल ॥ आगे का पृष्ठ फट गया है ।

Subject—इस पुस्तक में कन्या पुत्र जन्म । जोगिनो चक्र, विशेषतरो ।
सप्त दिवस का विचार भूमि चक्र, दिक्मूल चक्र, महामारो भूमि चक्र, क्षिप्र-
पालो भूमि चक्र, निगमय भूमि चक्र, गेरो भूमि चक्र । जोय मरजोव खेल
चक्र, जय विजय भूमि चक्र । बार काल घण्टे दिसा प्रमान । शनिकाल चक्र
जाक जोय निजोव विचार, शिकार विचार, सूर्य काल विचार, नाहो चक्र,
संघत चक्र, सप्त सलाका चक्र, पकाल सुकाल चक्र, दिन घटो घाना, जोय
पक्ष चक्षु पक्ष । चार काला चक्र, सर्वतोमद्र चक्र, दुर्गकाल । दसा राहु चक्र,

जाई स्वायी विचार चक प्रनुह्य । पंच स्वरा चक । सर्व दिशा वासु सुरमिक्ष
दुर्मिक्ष भूमि कंष विचार । रेकांति विचार । समावस रिक्ष वास का विचार,
कूप चक । नेवर चक । चूल्हा चक, कर भूषन चक, श्वजादि ग्राम चक ग्रह
प्रवेश चक अंत में केवल लेखक का नाम और संवत् है शेष पृष्ठ फट गये हैं ।

No. 450 Sevaka Bānī, by Vyasa Mīśra of Gokula (Muttra). Substance—Country-made paper. Leaves—182. Size— $5\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—6. Extent—575 Anuṣṭup ślokaś. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1843 Samvat or A. D. 1786. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Bihārījī Mīśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—पथ श्री सेवक वानी लिखते ॥

तृपदी छंद ॥ राग धमासिरी ॥ श्री हरिवंश चन्द्र शुभनाम ॥ सब सुख प्रेम
रस धाम ॥ जाम घटी विसरै नहीं । यह जुपर्यो मुहि सहज स्वभाव ॥ श्री
हरिवंश नाम रस जाव ॥ नाम सुहृद भव रतन की नाम रत आई सब सोहि ॥
हुह सुबुद्धि कृपा करि मोहि ॥ पाद सुगन माला रचौ ॥ नित्य जुकंठ सु पहिरौ
तास ॥ जस वानी हरिवंश बिलास ॥

श्री हरिवंशहि माहौ ॥ श्री वृन्दावन वैभव जितौ । वरनत बुद्धि प्रभाते
कितौ ॥ तितौ सबै हरिवंश की । सबो सुखा क्यों कहौ चिह्न ॥ तौ मेरे मन
को प्रवसर ॥ देख सकज प्रभुता कहौ ॥

End—काहे को इरति मामिनो हो जु कहति निज बात । नैकु बदन
सनमुख करौ छिन छिन कलप सिगात ॥ ५ ॥ वे चितवत बिभु बदन तन तु निज
चल निहारति ॥ वे मृदु बिभुक प्रलोचनो तु कर सो कर टारति ॥ ६ ॥ वचन
प्रघोन सदा रहै रूप समुद्र प्रगाथ । प्रान खन सौं कन करति बिनु प्रानत
अपराध ॥ ७ ॥ चितवौ कृपा करि मामिनो लोने कंठ लगाइ । सुखसागर पूरित
भए देखत हियौ सिराइ ॥ ८ ॥ सेवक सख सदा रहै प्रनत नहीं विश्राम । वानी
श्री हरिवंश की कै हरिवंशहि नाम ॥ ९ ॥ इति श्री सेवक वानी संपूरण ॥ शुभ
संवत् १८४३ मितो माह सुदी २ ॥ इति ॥

Subject—

हरिवंश नाम महिमा वर्णन । अं० १-२० तक ।

भक्त का उपदेश वर्णन । अं० २१-२४ तक ।

हित हरिवंश की केलि वर्णन । अं० २५-३७ तक ।

हरिवंश का यश वर्णन । अं० ३८-२५ तक ।

हरिवंश नाम प्रताप वर्णन । अं० २६--३३ तक ।

हरिवंश की बाणों की महत्ता वर्णन । अं० ३६--४३ तक ।

हित हरिवंश की प्रशंसा कथन । अं० ४४--५४ तक ।

हरिवंश के शरण में सुख की प्राप्ति । अं० ५५--५८ तक ।

हरिवंश स्तुति । अं० ५९--७३ तक ।

हरिवंश का सौंदर्य वर्णन । अं० ७४--८२ तक ।

हरिवंश की ब्राह्म महिमा वर्णन । अं० ८३--९५ तक ।

हरिवंश जी का प्रेम वर्णन । अं० ९६--१०५ तक ।

हरिवंश की कृपा वर्णन । अं० १०६--११५ तक ।

हरिवंश के भक्तन से ही सम्पूर्ण पुनः मिल सकते हैं । अं० ११६--१२४ तक ।

श्याम श्यामा मिलन वर्णन । अं० १२५--१४० तक ।

राधाकृष्ण विहार वर्णन व स्तुति कथन व सर्व फलदाता वर्णन । अं० १४१--१६४ तक ।

सेवक बाणों की प्रभाव व महिमा वर्णन । अं० १६५--१८० तक । इति ।

APPENDIX III

Extracts from the works of unknown Authors



APPENDIX III

No. 451. Ārja of 20 leaves on Astrology. Deposited with Gaṅgāprasāda Pāṇde of Asōkapura, Post Office Pāṭṭi, District Pratāpagadhā (Oudh)

No. 452. Ashtāvakra edānta ki Bhāṣā of 15 leaves. Dated in Samvat 1920 or A. D. 1863. Deposited with Thākura Rāṇadhīra Sīmhājī Jamīdar, Village Khāpura, Post Talab Baksī, District Lucknow.

Beginning :—ओ गणेशाय नमः ॥ अथ अष्टावक्र वेदान्त की भाषा लिख्यते ॥ दोहा ॥ ज्ञान प्रकाशहि फटौ प्रभु मुक्ति केहि विधि जानि । पुनि पैगम्यहि मो कही तत्व लही सब ज्ञानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ओ गुरुवाच । जो तेहि तात मुक्ति की इच्छा । विषयत-विषय जानपर इच्छा ॥ समा पाठैव सत सेतोष । इन पंचामृत पावै मोष ॥ २ ॥ दोहा ॥ पृथिवी वायुः जल नदीं अग्नि प्रकाशहि मोहि । इनको सासी रूप है तू चेतन धत मोहि ॥ ३ ॥

End :—दोहा ॥ कहा प्रवृत्ति निवृत्ति पुनि बंध मुक्त कछु नाहि । निधिनाग कूटस्थ है अचल सदा अप मोहि ॥ १२ ॥ कहा शास्त्र उपदेश है गुरु शिष्य कोऊ मोहि । पुरुषार्थ कासी कही निर अपाधि शिष्य मोहि ॥ १३ ॥ एक कहा अरु द्वैत है पुनि है नाहि कहीर । कही कहाँ हो बात यह मो ते कछु न मोर ॥ १४ ॥ इति शिष्य प्रकरणं ॥ २० ॥ इति श्री अष्टावक्रा संपूर्ण ॥ ४ ॥

No. 453. As'vamedha Chapeṭika of 5 leaves Dated in Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Umāśankara Dube of Hardoi.

Beginning :—अश्वमेध का करै मंगल्य घर में परे सनाका है । बातन में ही पर करैया अरजैया न टका जाई । अश्वमेध का घोड़ा पकड़े वा हम भा बड़े लड़ाका है । अश्वमेध को यज्ञ नहीं यह मेटति वेद को शाका है । अश्वमेध कहि सबहि व कावै बंधा अहित रुपा का है । रामानन्दी तिलकु लगार्य करत कामु दगा का है । राम चन्द्रमा दोहु लगार्य देते बड़े कजा कही पाते यज्ञ अश्वमेध नहि यह मेटत वेद कि शाका है । प्रथम यज्ञ राम ने कोन्हो जिनको अब तक शाका है दूसरि यज्ञ पांडवन कोन्हो लोन्हो कृष्ण विनाका है । तिसरि फिनि जतमेजय कोन्हो तवते मवा मनाका है । तारें यह अश्वमेध यज्ञ नहि मेटत वेद का शाका है ।

No. 454. Atariyādeva kī Kathā or a prayer to the deity of intermittent fever. Dated in Samvat 1883 or A. D. 1826. Deposited with Paṇḍita Madhusūdanajī Vaidya, Village Old Sitāpur, post office Sitāpur (Oudh).

No. 455(a). Aushadhi-Saṅgraha of 135 leaves on medicines. Deposited with Paṇḍita Rādhorāma, of Āmamañ, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagarha (Oudh).

No. 455(b). Aushadhi-Saṅgraha of 318 leaves. Deposited with Bābū Rudrānārāyaṇa, of Pratāpagarha (Oudh).

No. 456. Aushadhiyā on medicines. Four leaves. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pāṇḍe of Ghurrahā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagarha (Oudh).

No. 457(a). Aushadhiyā-kī-Pustaka. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapurī.

Beginning :—अथ चांदी मारण विधि ।

एक चांदी को पत्र सोधि लेइ ठूका ठूका करिके एक कुलिया मा रवि लेइ उस कुलिया में चिचरा को रस भरि देइ वजन पैसा भरि चांदी ती पैसा भरि पाउ भर चांदी ती पाउ भरि रस देइ धी नैसादर दुइ मासे भरि देइ तब कुलिया माटा ते संपुट करे तब गोइटा में धरिके दुइ प्रकार की आंच देइ शीतल परै तब निकारि लेइ भस्म होइहि ॥

End :—योगेश्वर चुनैम् ॥ पारा पै० एक ताव की दरतान पै० १ ईगुर पैसा १ सोना मापी पैसा भरि मुरदाशंख पै० १ लोम पै० १ आवित्री पै० १ मिरचि पै० १ सोडि पैसा १ पोपरि कै मूल सेां पाइ सञ्जियात जाइ ॥ अफीम सेां जाइ कफ मिटै लहसुन सेां पाइ ती सब चायु जाइ ॥ इति योगेश्वर चुनैम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—लुप्त ।

(२) पृ० ७ से पृ० २२ तक—चांदी, समुक्त, सुवर्ण तथा रौपा मारने की विधि, गर्म होने की विधि, योगिन संकाचन विधि, अंजन विधि, अंड-वृद्धि चिकित्सा, पुष्टि की दवाई ।

(३) पृ० २३ से पृ० ४० तक—आतु पुष्टि की औषधि, प्रमेह स्तंभन की दवा, ज्वरहादि चुने, गर्मी जाने की वस्ती, प्रसूत दवा, अग्नितरि सत, योगेश्वर चुने ।

No. 457(b). Aushadhiyo-ki-Pustaka on medicines. Leaves-41. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munima, Shop Murlidhara Mahādevaprasāda, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

No. 457(c). Aushadhiyo-ki-Pustaka. Leaves-13. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

Beginning :—अथ रस ॥ घाति दोषक के विधि ॥ सैधव टंक ४ लैंग टंक ४ जायकर टंक ४ विष टंक २ साहाना टंक ४ विषु कामदो के रस से परल करै पहर ४ गोली बनावे चता प्रमाण निठ पाइ धुवा लागै ॥ अथ साधारण तामरस के विधि ॥ पारा टंक १ गंधक टंक १ सज्जो टंक १ निबुषा के रस से परल करै पहर २ गोली बधि रतो १ निठ पाइ धुवा लागै ॥ मृगंग के विधि ॥ सोने के पत्र बनावे फिर ताता के के तेलमा बुकावे बार ७ सेटुड़ के दूध मा बुकावे बार ७ फिर सोसा तोला एक माँग तोला १ स्वर्ण तोला १ बीटावे कच-मार तर ऊपर घरिया में धरै गंधक तोला ४ पारा तोला ४ तर ऊपर धरै पाँच देइ पहर ४ चारि तोना भरै ॥

End :—संघिया सुमिल मारने की विधि ।

सुमिल संघिया १ घा सुमिल धैनी मा डारिके तौ भाटा के मोतर भरै तौ ठंडी लगावे ॥ सोय कुसाटा लगावे बाड़ा ते तेहिमा सुमिल डारिके फिर भाटा के ठंडो देव फिर गोरि जाय तेहि के प्रमो पान के साथ पाइ चाउर ४ ताई जुड़ो चाइ परमेह जइ गार् के दूध मा पाय रसो १ परमेह के दाप जाय बंद होय घा गोला एक दिन रापि के फोरे ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १४ तक—धुवा लगने की औषधि । सोना और हस्तार मारने की विधि । उबराकुश बनाने की विधि, भैरव रस की विधि । रस साधारण की विधि, घानद भैरव की विधि, पारा मारने की विधि ।

(२) पृ० १५ से पृ० २६ तक—तामा मारने की विधि, मल्ल गोली बनाने की विधि, मल्ल गोली लघु बनाने की विधि, भूत काँड़ने की विधि, राँगा मारने की विधि, पैसा मारने की विधि, सोसो मारने की विधि, संघिया सुमिल मारने की विधि ।

No. 458. Ava-Pada. Leaves-21. Dated in Samvat 1874 or A.D. 1817. Deposited with Paṇḍita Rāmākumārājī of Chilahilārapgītapura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः॥ अथ अथ पद लिख्यते ॥

॥ अथ पद ॥

मैं पेंड चारि पक्ष पासे के चहु डार लिख्यते ॥ पीछे पासा दाथ लेना ॥
अपणे इष्ट देवता को चिता करना ॥ पीछे पास बार तीन मंत्र सेती मंत्रना ॥
पासा डालना ॥ तिसका फल ओ कछु होइ सो सगनौतो कहै ॥

॥ अथ मंत्र ॥

मैं विपुल लाहो अथ लोहि में मंवा चार कायं चिति पिनि श्री निमि
भागे गुरु मंदिर स्वाहा ॥ इति पासा डालन मंत्रः ॥

अथ अथ अथ

अहो पृच्छन द्वार तु जो कार्य चितवत कार्य है ॥ तुम्हारे शत्रु बहुत हैं पर
तुम्हारा सुख होवना ॥ अथ कार्य सिद्धि होवना ॥ निश्चय सेती ॥ १ ॥

End :—

(द अ अ)

अहो पृच्छन द्वार तु जो कार्य चितवत कार्य है ॥ सो कार्य संतापकर
होवना ॥ १४ ॥

(द अ अ)

अहो पृच्छन द्वार तेरे चितवे कार्य बहुत दिन मय है कष्ट जाइयो सुख
होवैयो लाभ मो है ॥ आरोग्यता होवैयो मलाई है सहो श्रेष्ठ ॥ १५ ॥

(द अ अ)

अहो पृच्छन द्वार जो कार्य चितवत है तु कहीं जाहि नहीं ॥ स्थिर चित
कह पहिले तो तो को बहुत कष्ट भयो है ॥ इच्छा मन बांछित होइ कछु परै
देवना ॥ इष्ट देवता को पूजाकर तद कार्य सिद्ध होवना श्रेष्ठ मही जानना
॥ १६ ॥ इति श्री प्रकरणं चतुर्थं समाप्ते ॥ इति श्री नर्म ऋषि विरचितायां
पासे के बला मंत्र ॥ १७ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४२ तक—पासे का मन्त्र तथा प्रयोग को
विधि, पासे का तीन बार डालने का आदेश और पड़े पासे में निकले अक्षरों
का फलान्वेश कथन ।

No. 459. Bāraho Rāsi-ko Janma. Leaves--6. Dated
in Samvat 1863 or A.D. 1809. Deposited with Umāśankara
Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः । लिख्यते बाहो रासि को जन्म । आदि-
त्यवार से जन्महि ते मूर्ध होहि । सोमवार से जन्महि ते पंडित होहि । मंगल के से
जन्महि ते सुखति होहि । बुधवार से जन्म ते चनपाकी होहि ॥ गुरुवार से जन्महि

ते स्वरपति होहि । सुकवार जे जन्महि ते सुगे न होहि ॥ सणोदकर जे जन्महि ते शलो वृत्ति होहि ॥ इतिवार साता जन्म भरवगे भरती जे जन्महि दिन ८ मास ४ सायुर्वेल वर्ष १० सुषमीचु मिलै छत्तिका मा जन्महि दिन ९ मास १ वर्ष ३२ सायुर्वेल वर्ष १०० रोहिणी में जे जन्महि मास ९ वर्ष १० सायुर्वेल वर्ष १०० सर्प हाथ मोचु ॥ घृग सिरा जे जन्महि दिन ८ मास ६ वर्ष २७ अर्बल वर्ष ६७ नाग मोचु परदा जे जन्महि दिन ११ सायुर्वेल ० पांड रोम मोचु ॥

End :—पुनर्वसमा जे जन्महि दिन ७ मास ४ वर्ष ५ उपरांत वर्ष ६० सायुर्वेल वर्ष १० सर्प हाथमोचु । पुष्य जे जन्महि दिन ९ मास १ वर्ष २७ तथा वर्ष सायुर्वेल ६० सुष मोच घश्लेषा मा जे जन्महि दिन १२ मास ४ वर्ष १९ तथा वर्ष २५ सायुर्वेल वर्ष १०० घोरे हाथ मोचु । पूषा में जे जन्महि दिन ५ मास २० सायुर्वेल वर्ष १९ पानी मा मोचु ॥

उक्तामा जे जन्महि दिन ४ मास ४ वर्ष १६ ॥

(इसके प्रश्नात् पृष्ठ संवित हो गए हैं)

Subject :—बारह राशियों में जन्म होने का फल ॥

No. 460. Baitālapachisi. Leaves—86. Dated in Samvat 1782 or A. D. 1725. Deposited with Śrī Mannūlālaji Postakālaya, Murārapura (Gaya).

Beginning:—फकीर सोंघ पालै परजा सम शत्रुन को कीठ दये कुंज है । अकबरः सुनो तम कहूँ सोमः फकीर सिंघ निज परित को कीबो नगर जनु कोयः प्राथो पाल ताके मयः प्रीथु जश लाज जहाजः मौज देन को भोजशोः बड़े गरोब मेवाज ॥

॥ कवित्त ॥

कंत्रहित मुदित कुमुद अनहित मुख सकुचित रुदित रुषो मुख अनम है । हंस चंचरोक कवि पंडित मधुर बोल मेदित धिलोकत करत गुन गान है ॥ सुमन उलूक मुक मूक चंच गिरि कंद में रहत न डरत काठ से प्रमान है । तारे चार कुदिल कलंकी चंद छये भोगनपत फकीर सोंघ सूरज समान है ॥

End :—रानी लै निज कनका, गई भांसि घन मौर ।

चला चंदरो को वृषति, आई गयो तिहि ठौर ॥

सिंघ पैरुष भूप के, सुन चंड चिकन नाम ।

दोड मिलि लिकार जो मय, कानन गवै शीतन घाम ॥

चंद्रावति कन्या सहित को रूप देखो जाय ।

काम शर लागे दोड के गिरो तब मन छाए ॥

चंद्राशतो को चंड विक । भदौ तब निज पानि ।
 हणवती को लहि तब उहा शीघ्र वैद्य जानि ॥
 निज निज भयन में सुति केली सुचि मुदित दिन रैन ।
 राज भार समधि मेजिहि । घेठ सुंचित सुखैन ॥
 यह कहो कथा बैताल परिणी निवट संसे भवन ।
 पह दुनो नाना के सुतन्ह से भय नाता कवन ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—खंडित ।

(२) पृ० ३ से पृ० १२ तक—प्रथम निमोण कारण व प्रथम रचना काल—

लोचन वसु मुनि भूवरख, माध शुक्ल शशिवार ।
 तिथि वसेत को पंचमी, भोट प्रथम प्रवतार ॥

प्रतिष्ठानपुर के राजा का वन में जाकर साधु को तप करते देखना और
 भय जाकर तप भंग करने का संस्कार भोजना ।

(३) पृ० १३ से पृ० १६ तक—खंडित ।

(४) पृ० १७ से पृ० ४० तक—राजा विक्रम और तेलो को कथा, प्रेत-तेलो
 का बारम्बार कोई न कोई कथा राजा को सुनाना । इस प्रकार
 संप्राप्तों को कथा बखैन करना ।

(५) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—खंडित ।

(६) पृ० ४७ से „ ५७ तक—चौथी कथा ।

(७) पृ० ५८ से „ ७० तक—पांचवीं कथा ।

(८) पृ० ७१ से „ ७६ तक—छठवीं कथा ।

(९) पृ० ७७ से „ १७२ तक—सातवीं कथा से चौबीसवीं कथा तक । शेष
 खंडित ।

No. 461. Bhagavadgīta-kī-Bālabodhanī-Tikā. Leaves—
 176. Dated in Samvat 1837 or A. D. 1810. Deposited with
 Thākura Vrajabhūṣaṇasīmha, Village Jhukavārā, Post
 Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री परात्पर गुरु स्वरूपाय निर्विकाराय
 नित्य शुद्ध बुद्धि चित्ता नंद बोध स्वरूपाय ॥ श्री वासुदेवाय नमः ॥ श्लोक ॥
 श्री भगवद्गीते गोवर्तना नामाभिच द्रव्य लोकाणां चाहितायि सु कृतं भाषा च
 दिव्यं ॥ १ ॥ एक समै दत्तन करिके पुरुषो माराज्य प्रति व्याहृत होत भई तब
 मझा द्य आदि दैके समस्त देवता नास्ते मुनि सहित गमन करत भये जहाँ श्री
 भगवान् और सागर निवासी बहो जाय के प्राप्त होत नये तब मझा वेदरिचा वेद

मंत्र धेन सहित घृत्य नाना प्रकार अत्यन्त उच्चैस्वर करिके अति आर्तवन्त हो के मुनि देवता सहित ब्रह्मा स्तुति करत भये ॥ तब श्री परमात्मा देवतनि के निमित्त-
घटने भक्त को रक्षा के हेतु अति आर्त जानिके स्तुति सुति के तहां प शब्द प्रगट
भयो, सो ब्रह्मा किमार्थ पागतः तब ब्रह्मा पृथ्वी का सब वृतांत कहत भये तब
श्री भगवान् सर्वज्ञः सर्व जानते थे पुनः शब्द उपजत भया सो ब्रह्मा शृणु शृणु
लोक के विषे जादव कुल मधुरा स्थान देवको के यह हम पानि के घातरंगे । ×

×	×	×	×
×	×	×	×

End :—

यथाक्षार समुद्रेषु एकाले वेतु सर्वथा ।

तथा धेनु मने केत क्षीर मेकतु एकतः ॥ १ ॥

तथा देह मनेकेन आत्मा मे कोपि अभ्यते एवं ज्ञान मनेकेन विवेको मेक
उच्यते ॥ २ ॥ अंतः शुद्धि न शुद्धि वास मुदे शुद्धता वृष्णा मगधममेन संकल्पो
नैव शाम्यते ॥ ३ ॥ आर्द्रा ध्यात कृतं धर्म मूलं सत शतं तथा तुलसी धावाय
कंपोक्तं श्लोकै पट सहस्रकं ॥ ४ ॥ कृष्ण वृक्ष सन्त्यर्थं गोता नाम हरोतकीरे
नरा किन्नर वदन्ति किलौमल विरेचने ॥ ५ ॥ श्री भगवद् गोता मध्ये अष्टादश
अध्याय विषे श्री भगवान् अर्जुन प्रति ज्ञान सार ज्ञान सार क्रिया कर्म सार भक्ति
सार सर्व शास्त्र चार वंदको ब्राह्मन यथा प्रकार कहत भये हैं ते श्री परमात्मा
अर्चन परम ब्रह्म ब्रह्मा धाता अमय प्रति मंगल दरातु सुम कल्याण मस्तु संवत्
१८६७ साके १७३१ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—प्रथम अध्याय । अर्जुन को
समय पक्ष को सेवा देवकर विषाद उत्पन्न होने का वर्णन ।

(२) पृ० २५ से ६४ तक—द्वितीय अध्याय ।

ब्रह्मज्ञान तथा आत्म बोध ।

(३) पृ० ६४ से पृ० ८८ तक—तृतीय अध्याय ।

कर्मयोग वर्णन ।

(४) पृ० ८८ से पृ० १०७ तक—चतुर्थ अध्याय ।

संन्यास कर्म निर्णय, ज्ञान निर्णय, ब्रह्म निर्णय, वस्तु निर्णय ।

(५) पृ० १०७ से पृ० १२२ तक—पंचम अध्याय ।

ध्यान योग व ज्ञान साधन विधि ।

(६) पृ० १२२ से पृ० १४५ तक—षष्ठ अध्याय ।

कर्म व ज्ञान न्याय, साधन विधि, योग न्याय, पूर्वक संस्कार न्याय,
योग को अधोमर्ह तथा अंगरात्मा को धारणा ।

(३) पृ० १४६ से पृ० १५२ तक — सप्तम अध्याय ।

विभूति ज्ञान, विधिभ्याय तथा देवता उपासना विधि ।

(८) पृ० १६० पृ० १७२ तक — अष्टम अध्याय ।

उत्तरायणे व दक्षिणायणे सूर्य की गति, वज्र सहोदात्रि, कल्प संख्या प्रमाण

(९) पृ० १७३ से पृ० १९३ तक — नवम अध्याय ।

परमात्मा को योग शक्ति, बल स्वरूप, मुक्ति साधन लक्षण, प्रकृति-पुरुष संबंध ।

(१०) पृ० १९४ से पृ० २१० तक — दशवीं अध्याय ।

विभूति ज्ञान, अध्यात्म विद्या और सर्व विषय, एक वद्व ।

(११) पृ० २११ से पृ० २३७ तक — ग्यारहवीं अध्याय ।

विराट रूप दर्शन ।

(१२) पृ० २३८ से पृ० २४९ तक — बारहवीं अध्याय ।

विश्वरूपी परमात्मा, वज्र अक्षर स्वरूपी भगवान को उपासना, सुगुण निर्गुण उपासना ।

(१३) पृ० २५० से पृ० २७० तक — तेरहवीं अध्याय ।

प्रकृति-पुरुष निरूपण, सृष्ट्युत्पत्ति तथा कारण बीजरूप सांख्य ज्ञानादि वचन ।

(१४) पृ० २७१ से पृ० २८१ तक — चौदहवीं अध्याय ।

त्रिगुण निर्णय, गुणातीत से गुण साधने का विधान ।

(१५) पृ० २८२ से पृ० २९३ तक — पंद्रहवीं अध्याय ।

यक्षय वृक्ष य वैराट तट निर्णय, निर्गुण स्वरूप कथन ।

(१६) पृ० २९४ से पृ० ३०४ तक सोलहवीं अध्याय ।

देव तथा आसुरी ज्ञान मार्ग । संत यसंत के लक्षण । शास्त्र प्रमाण कार्याकार्य वर्णन ।

(१७) पृ० ३०५ से पृ० ३१७ तक — सत्रहवीं अध्याय ।

त्रिगुण को धृष्टा, दान, यज्ञ, जप-तप, साधन भ्याय सत सुभाषे और अज्ञान भाविक दोषों का न्याय, त्रिविधि ब्राह्मण और ओंकार विधिभ्याय का वर्णन ।

(१८) पृ० ३१८ से पृ० ३५२ तक — अठारहवीं अध्याय ।

ज्ञानसार, योग सार, किया सार, कर्म साधन तथा भक्ति सार वर्णन ।

No. 462, Bhagavāna ke Dasau Avatāra. Leaves—8.
Deposited with Umāsankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—यव भगवान रामचन्द्र के दसौं बीतार लिखते ।

दो०—श्री पति गौरि गणेश को सुमित बारम्बार । नारायण के चरित
पुनि वरनौ दस बीतार ॥ चौ० ॥ मच्छ कनकरि वेद छे भाये । पाइ बिरीच मुदित
मन भाये । वरन करत जो जस मुख चारो जे राधावर कुंज बिहारो ॥ १ ॥ दूसर
तन धरि कृष्ण बनिकै । मण्ड सिंघु कर मंदिर धरि कै ॥ लोन्हेउ चौदह रतन
निषारो । जे राधावर कुंज बिहारो ॥ २ ॥ शूकर रूप धरेउ बनवारो । दैतन का
तुम हतेउ मुरारो । छे धरनो पुनि आपुसवारो जे राधाकुंजबिहारो ॥ ३ ॥ नर-
सिंघ होइ जन रावेउ ताही । परमट मया हरि पंथा माही । निकसत जारेउ बोदर
बिहारो ॥ जैराधा वरकुंज बिहारो ॥ ४ ॥ श्रीरति धावन रूप बनाये । बलि के
हारे जानन भाये । मेरे बन के द्वेय निषारो जैराधावर कुंज बिहारो ॥ ५ ॥

End:—परसु राम होइ जगत जमुकोन्हा । पियेवो जोति दुजन का दोन्हा ॥
दूसर कोन न मया धनुषारो ॥ जे राधावर कुंज बिहारो ॥ ६ ॥ रामरूप होइ बहुत
जस कोन्हा रावन कुलहि मारि जसु लोन्हा । दोनबन्धु प्रभु भसुर संहारो ॥
जे राधावर कुंजबिहारो ॥ ७ ॥ परब्रह्म बीतरे मुत्तारो । नन्द सुवनमे कुंवर
बन्हाई । जाकोध्यावत वृत्त को नारी जैराधावर कुंज बिहारो ॥ ८ ॥ जगनाथ
जगदीश कहावै । धोष रूपधरि भौन पुजावै ॥ सुरमुनि अस्तुति कतल तुम्हारो ।
जैराधावर कुंज बिहारो ॥ ९ ॥

× × × × × × × × ×
प्रात समय जे पहुँ नरनारो । छटै पाप तन तेज प्रचारो ॥ जे राधावर कुंज
बिहारो । × × × × × × × × ×

दो० । पहुँ सुनै चित्त जायकै मन बिच बो करि ध्यान । ताके सकल
मनोमथ सिद्ध करै भगवान् ।

Subject:—दस खतारों का वर्णन ॥

No. 463. Bhajana-Sangraha. Leaves—12. Deposited
with Pandita Satyanārāyaṇa Tripathī of Bāndā, Post Office
Gaḷavāra, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री राम जो ॥

राम को ध्वजा फहरानो अब देखो राम को ध्वजा फहरानो-देक-
दरकत डाल फाखत नेजा मरद उड़ी असमाना ॥

लक्ष्मण बोर बालि सुत बगेंद हनुमान भगवानो ॥ १ ॥

कहत मन्त्रोदरि सुन पिया रावन त्रिभुवन पति मो ठानो ।

जा सागर को गमै करत है तापर शिला तिराना ॥ २ ॥

तिरिया जाति बुद्धि को पैको उनहूँ को करत बड़ाई ।
 भुव मंडल से पकरि मंगाऊँ वे तपसो दोऊ भाई ॥ ३ ॥
 जरत अग्नि में कूदि परत हैं कोट गिनै नहि खाई ॥ ४ ॥
 मेघ नाड से पुन धमारे कुंभ कथै बल भाई ।
 एक बेर सन्मुख हूँ लखिहौं युग युग हेत बड़ाई ॥ ५ ॥
 कहत मेरोदरि सुनु बिय रावण तू मेरो एक न मानी ।
 रैन को स्वप्ना पेसा भयो है सो कि लंक जरई ॥ ६ ॥
 अग्र के स्वामी गड़ लंका घेरो भजहूँ न जेता अभिमानी ॥ ७ ॥

End:—

राम जन्म सुनि चपते पति सो हंसि दाढ़िन ये बाली हो ।
 जाडु कंत राजा दशरथ को दान कोठरी बाली हो ॥ टेक ॥
 तुमको देव भंग को वागे और दक्षिणा भरि भाली हो ।
 हमको लीजो नख शिख को कहते पटरसुवा को बाली हो ॥ १ ॥
 साज सहित एक घोड़ा लीजो गया दूध पचोई हो ।
 सहज भमारो हाथी लीजो, हथिनो अधिक पमोली हो ॥ २ ॥
 लीजो कत्त कहार समेत एक, हमन चढ़न को डोलो हो ।
 सोलह वर्ष को सुन्दरि लीजो, टहल करन को गोरो हो ॥ ३ ॥
 सेज सहित एक पछंगा लीजो, और पानन को डोलो हो ।
 बीरो करि करि हमहि खचावे लीजो सुघर तमोलो हो ॥ ४ ॥
 जन्म जन्म काह के धागे बहुरिन माडो बालो हो ।
 जन गोविंद रघुवीर यांवि के मये हैं घयाचक डोलो हो ॥ ५ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—रावण तुलसी संवाद (प्रथम तुलसी), रामचरण महिमा (तुलसी), जगदीश-विजय (माधोदास), राम का सौन्दर्य वखन (रामसेवक), धनुष-भंग (तुलसी), राम की शोभा (हरि आनंद), लंका विजय के पश्चात् राम का प्रवचन में आग्रसन (रामानन्द), विजय-राम (तुलसी), कृष्ण-विनय (चन्द्रसखी), दाऊ की शिकायत माता से (सर), गीता की महिमा (हवीकेश), नाम महिमा (नामदेव), राम की मकबतसलता का वखन (सेवादास), चौको हनुमान जी की (बालानन्द) ।

(२) पृ० १७ से पृ० २४ तक—कृष्ण का भोजन करना (परमानन्द), सुगल मूर्ति भोजन (सेवासखी), सोता राम भोजन (तुलसी) श्याम श्यामा पांशा खेलने का वखन (परमानन्द), शयन एवं विनास (नरहरि), विनय (सर), कपि की चौकी (तुलसी), राम जन्मोत्सव (कमलानन्द), राम जन्मोत्सव में दाढ़िन का दूध मांगना (गोविन्द) ।

No. 464. Bharatamilapa. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa. (The book was found with) Svāmī Pitāmvarādāsa, Village Sonāmañ, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ भरत मिलाप पारसः ॥ दोहा ॥

सुरस चरन मनि ग्रह , मन में बहुत उछाह ।

राम कथा कह्यु गावैं, जाको सुन आगाह ॥ १ ॥

सौपार्श्व ॥ रामचंद्र वन को याना ; राजा दशरथ बहु पछताना ॥
रामचंद्र कृष्णा स्थाना , दौरे नगर सकल परिधाना ॥
रोवैं सकल नगर नरनारी, राम लक्ष्मन बिन अधिवजारी ॥
रवि राँच केकई पत्र लिपावा, दूत हाथ नेहार पठाया ॥
जाय दूत भरत के पास; अवधपुरी कर भयो निरासा ॥
सोच दूत विदा नव भयेउ, अंतर वास जाजन शत भयेउ ॥
जहाँ भरत सत्रहन यह गयेउ, जाय दूत दंडवत कयेउ ॥
कहिये दूत अवध कुसलाई, कैसे कौशिल्या पुरवाई ॥
घर घर राज नोति ठकुराई, कैसे राम लक्ष्मन दोउ भाई ॥
तिनके पुत्र भये, अनुरागी, विधि का लिये भये वैरागी ॥

End:—चवदह वरप राम नहिं आई, असकहि लोगन बोध करारि ॥
कौशिल्या पै गे दोउ भाई, भरधहि देखि कौशिल्या धारि ॥
सुत निकट परे मूझाई । हाथ उठाई थोक मह लाई ॥
नारि पकरि बहु विधिसमझाई । नहिं चाये लक्ष्मन रघुराई ॥
तेव पादुक सिर लोन बझाई । राम लपन सीता दुष पाई ॥
बाद विचाता सेज वनाई । हमहु रहवपुर बाहर जाई ॥
वन कुस सिज्या परी पुटाई । बैस आसन प्रभु मन लाई ॥
आगे पादुका घरि सिर नाई ।..... ॥
तिस दिन पूजन ताको करहीं, अवधि पधार अंगोचर रहहीं ॥

दोहा :—भरथ मिलाप कथा, सरदा सों कवि गाई ।

जो नर सुनहि जो गावहि, जन्म जन्म यह जाई ॥

इति श्री भरत मिलाप संपूर्णम् ।

Subject:—पृष्ठ १ से पृष्ठ २० तक—भरत के पास दूत का जाना; भरत का संदेह, कुशल पूछना, अवध आगमन तथा अत्यन्त विषाद करना, केकई का उपालंभ, कौशिल्या तथा गुह इत्यादि का भरत को पबोच, भरत का वन में राम के पास जाना, लक्ष्मण का सन्देश, राम का निश्चय, भरत-मिलाप, भरतार्ति

द्वारा राम को लौटाने का प्रयास, उनका न लौटना और चरख पादुका देकर भरत को राज-काज के लिये मयाध्या लौटाना ।

No. 485(a). Bhūgola. Leaves—29. Deposited with Rājā Avadhesāsīmha. Rājā and Talukedāra of Kālākāṅkara, District Pratāpagaḍha (Ondh).

Beginning :—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ पथ भूगोल निघ्यते माया कथयामि । पदिडे पाकाश उपजा । पाकाश से बापु उत्पन्न हुआ । बापु से तेज मा । तेज से जल मा । जलसे ब्रह्मांड मा । सो ब्रह्मांड ईश्वर की कृपा ते फुटि पाचा मा । ब्रह्मांड के मध्य में जल विषय व विष्णु उत्पन्न मा । ता परमेश्वर के नामो कमल में ब्रह्मा उत्पन्न में । ब्रह्मा ने पृथ्वी को घटन कोन ऊंचा ४२ कोटि जोजन की प्रमाण है । ताके मध्य में सुमेरु पर्वत है । चौरासो लक्ष जोजन ऊंचा तोक सौरह हजार जोजन पृथ्वी में जाहिरा ॥ बीस हजार जोजन मध्य में चकला । जब का दाना जैसा तैसा मध्य में मोटा । तल्ला मान पतला सुमेरु पर्व है

x x x x x x x x x

Middle :—आकाश प्रमाण

श्री पथ चट्टालिश निमर्ष भोगहत्तरि एबुर्द सतावन कोटि पैठालिश लाभ पंचावन हजार पांच से जोजन आकाश प्रमाण है ।

पथ नक्षत्र विचार ।

भूमि लोक से जिस लक्ष जोजन सूर्य लोक । वहत्तरि हजार जोजन विस्तार । सूर्य लोक से उपर लक्ष जोजन चन्द्र लोक । अठासो हजार जोजन विस्तार । चन्द्र लोक से लक्ष जोजन विस्तार मंगल लोक है । मंगल लोक से एक लक्ष जोजन ऊपर तिरसठ हजार जोजन विस्तार शुक्र लोक है ।

x x x x x + x x +

End :—कलत्रुग व्यवसा

चार लाख वतिस हजार कलत्रुग प्रमाण । मानुष्य प्रमाण हस्त ॥ ३ ॥ सूर्य पर्व एक हजार । चन्द्र पर्व दु हजार । तोर्य मंगाजी । देवी चामुंडा ॥ पाप । १८ । पुन्य । २ । श्री प्रसादवार ॥ २१ ॥ मानुष्याचल । १२० । वाज बोवनवार ॥ १ ॥ छेदन । १ । पाण कन्न मठ । राजा शालि वादन । ताके पुत्र । कुमार । ताके पुत्र रैष्यु । ताके पुत्र ब्रह्मा x x x x x x x x चारिठ वरन तुलक ठकुरां । छोटी वस्तु भइनी । बड़ी वस्तु सस्ता । धर्म करने वाले बुयो । पापी लोगो लंपट खुगुल इनसा सब सेा प्रीति बैसा कलत्रुग में परमेश्वर की मक्ति युक्त मनुष्यन की बाचा धार होवै । परिणाम में धर्म सदा सहाय है ॥

इति कलत्रुग बरनन भूगोल संग्रहम् ॥ मित्रो वैठ नवम्पो । रावियासुरे ।

Subject :—(१) पृ० १ से ५ तक पृथ्वी इत्यादि की उत्पत्ति पृथ्वी के नव बंध कृत होय ।

(२) पृ० ६ से ९ तक वातावे कुर्म विचार, पृथ्वी का कुर्म, पृथ्वी के आठ पर्वत, चौदह जमे के नाम ।

(३) पृ० १० से १५ तक आकाश प्रमाण यह नक्षत्र विचार ईश्वर के ज्ञान का निरूपण ।

(४) पृ० १६ से पृ० १९ तक वंशावली देश विचार ।

(५) पृ० २० से २७ तक सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग की व्यवस्था ।

No. 465(b). Bhūgol-Purāṇa. Leaves—7. Deposited with B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purāṇi-Basti, Katni Murwārā, District Jabbalpur (C. P.).

Beginning :—भोगोल पुराण लिखा है ॥

तयदि यदि पेक्षा एक ब्रह्मांड नोल बरने ॥ ब्रह्मांड बिस्त सिधया ठपे
यथा ॥ आकास ते वायु उत्पत्ति बाद ते तेज उत्पत्ति तंजते ॥ ब्रह्मांड फुटि कुट
को भये ॥ ता जल भवे विष्णु रहे हे ॥ विष्णु के नामि कमल के बिपे ब्रह्मा
रहे हे ॥ सो ब्रह्मांड बांट कोय है ॥ पंचास कोटी जो जन उबो हे ॥ सोय
सहस्र जो जन धरतो मधे गहो है ॥ बीस सहस्र जोजन उपर बिस्तार हे ॥ सरवा
के चलकार सुमेर । पवेतु हे ॥ ता सुमेर पर्वत को अष्ट अंग हेमा बरो अंग
लोल अंग मालि रंती अंग जाम वंती अंग ॥ नव निचि अंग ॥ उच्च माल अंग ॥
महो अंग ॥ एवं अष्ट अंग है ॥ ऐक ऐक अंग कितनो अंतर हे ऐक ऐक लक्ष
जो जन आपस मधे कुख्यामय अंतर है ॥

x

x

x

x

End.—कौन कौन राजा भये ॥ राजा सारि वाहन ॥ १ ॥ राजा साकिकुमार
राजा हरिब्रह्मा ॥ ३ ॥ राजा भाईप ॥ ४ ॥ राजा महस्त ॥ ५ ॥ राजा ईद्र ॥ ६ ॥
राजा अज जात ॥ ७ ॥ राजा महोपातु ॥ ८ ॥ राजा गंधर्व सेनि ॥ ९ ॥ राजा
विक्रमाजोत ॥ १० ॥ राजा महोफुज ॥ ११ ॥ राजा चित्रक ॥ १२ ॥ राजा हारिषु
॥ १३ ॥ राजा विक्रमाचकु ॥ १४ ॥ राजामाज ॥ १५ ॥ ता उपरोक्त नमबंती इती
पतसादी कौन कौन ॥ गोरौखजुदोन ॥ १ ॥ अलाहुदोन ॥ २ ॥ नसोर उदोन
॥ ३ ॥ लोह ठाय मैह मूद ॥ ४ ॥ बडो महमूद ॥ ५ ॥ सुर्ज साहो ॥ ६ ॥ तिमिर
लिम पात साहो ॥ ७ ॥ बबर साहो ॥ ८ ॥ हिमाड साहि ॥ ९ ॥ धकबर साहि
॥ १० ॥ जहांगोर ॥ ११ ॥ साहि जिहा ॥ १२ ॥ यौरंगजेब ॥ १३ ॥ श्री वेद व्यास
मासित भोगोल पुराण समाप्त ॥ ॥

Subject :—भूगोल का संक्षिप्त वर्णन ।

No. 465 (c). Bhūgola Pramāṇa. Leaves—7. Deposited with Thākura Chandrikā Baksa Simbaji Jamīdār, Village Khānīpura, Post Office Talāba Baksi, District Lucknow.

Beginning :— श्री गणेशाय नमः ॥ यथा पृथ्वी भूगोल प्रमाणं लिख्यते । यथा आकाशते वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्न पानी पृथ्वी पशु उत्पन्न ब्रह्माण्ड काटि वि खंशु मये तेहि जल मध्ये विद्युत् रहत है विद्युत् को नाभि कमल मध्य ब्रह्मा उत्पन्न मये सा ब्रह्मा उवाच किये है पचास कोटि योजन पृथ्वी प्रमाण है पृथ्वी मध्ये सुमेरु पर्वत है चौरासी योजन उच्च है सोरह योजन पृथ्वी मध्य गडो है विस सहस्र योजन विष्व विस्तार है सर बाकी आकार सुमेरु है ता सुमेरुके षष्ट श्रृंग हैं कवन कवन श्रृंग हैं हेमवत श्रृंग १ नोल श्रृंग २ श्वेत श्रृंग ३ उच्च श्रृंग ४ मालिखंत श्रृंग ५ गंच मदन श्रृंग ६ महा श्रृंग ७ पर्व चष्टा गति पर्वत ऐक ऐक श्रृंग कोना अन्तर है अपना ते ऐक ऐक लक्ष योजन अंतर है ता सुमेरु मध्ये पर्वत सुवर्ण मय है आकाश मंदिर है वैदुर्य मणि मुक्ता मय है महा गण संघर्ष प्रस मुनि परि ज्ञात है मालि मान राजा बैठे हैं वैकुण्ठ महा पुण्य प्रधान प्रदायक है इति सुमेरु विषे अंग है ।

End :— एक लक्ष योजन १००००० बृहस्पति लोक है अठ्ठासी सहस्र योजन ८८००० बृहस्पति लोक का विष्व विस्तार है बृहस्पति मंडल का परि एक लक्ष योजन १००००० बुध मंडल है तीस सहस्र योजन ३०००० बुध मंडल का विष्व विस्तार है बुध मंडल परि एक लक्ष योजन १००००० शनि मंडल है अठ्ठासी सहस्र योजन ८८००० शनि मंडल का विष्व विस्तार है शनि मंडल ऊपर एक लक्ष योजन १००,००० राहु मंडल है अठ्ठासी सहस्र योजन ८८००० राहु मंडल का विष्व विस्तार है राहु मंडल ऊपर एक लक्ष योजन १००००० केतु मंडल है एक सहस्र योजन १००० विष्व विस्तार है केतु मंडल का शनि मंडल ऊपर बसे है ताते राहु नाही देपि परत है केतु मंडल ऊपर एक लक्ष योजन १००००० सप्त ऋषि का मंडल है मिश्र मिश्र सातो ऐक ऐक लक्ष योजन १,००,००० अपना अपना मां अंतर है तीस सहस्र योजन ३०,००० विष्व विस्तार है सप्त ऋषि मंडल का । राम राम कृष्ण राम राम कृष्ण राम राम ।

Subject :— आकाश, वायु, तेज, पानी आदि की उत्पत्ति, ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति पृथ्वी में सुमेरु पर्वत चौर उसके श्रृंगों के नाम व जंबू बृक्ष आदि का वर्णन, पृथ्वी का बंड, द्वीप, सप्त द्वीप प्रमाण, सात समुद्र पृथ्वी के रक्षपालक, चमरावती का विस्तार, चमपुरी, यम नाम, कुबेर पुरी, कुबेर नाम, सूर्य लोक, चंद्र लोक, नक्षत्र लोक, उनका विस्तार विष्व विस्तार, दूरी आदि आदि वर्णित हैं ।

No. 466. Bihārisatasaī-kī-Tika. Leaves—150. Deposited with Babū Jayamaṅgalarāya, B.A., L.T., Gaḍipura City.

Beginning:—सारे जगत के नास करने वाले नगरवन् । सो चित्र तै एक ॥ घनेक जगे वर सने घोट सम जुरिके इकठे हो के एक साथ हो वरसनने लगे ॥ जब ओ गिरघने गिरकौ करै धारन करिके सुरपत जो है इन् ताके नव अत्यंत दुर्प सौ हरौ ये गिरधरनाच भयो । इहाँ काकलिंग चलंकार है । काकलिंग सामर्थता । इहाँ सामर्थता दिखाई ॥ १२ ॥

दाहा । डिग्न पाँव डिग्नलात गिर लापि सम चित्र वेहाल ।

दुर्प किसारी दरसिके परे लजाने लाल ॥ १३ ॥

इहाँ सात्युक भाव है ओ राधा जो के दरसतौ भयो यह सपी सपो सौ कहाँ । प्रिया दरस सात्विक भयो कर कंपित इह हित गिरन गिरै वज्र जन डरत । लपि हरि लाजत चेत । जब निरपो सात्युक किया दिया संग के भाँहि । तब सुलजाने हरि परे मति सुप्रोठ लागि जाहि ॥

End :—घोर भ्याँन को पाप न लमै जो करै लोक सिंघार मोता में यह वचन है यहै सर्थ निर्धार । बारला । यह बात ठोक है राजा प्राक्म होन को दबावे रोग देह बलहीन को दबावे । पाप भ्याँन बल होन को दबावे भ्याँन को नहीं यह दोषका चलंकार है । उपमा यह उपमेयको इक पद लागे समने । इत दोषक से दबाव पद लग्या सबहो धल मानि ॥ ६४२ ॥

दाहा—बड़े न हुजै गुनन बिनु विरद बडाई पाव ।

कहत धतुरे सौ कनिक गहनों गह्यो न जाय ॥ ६४३ ॥

यह प्रस्थाविक है नालायक को बडाई कोई करै सो बूधा उहा कह्यो यह भाव को बडाई पावके बड़े नहीं होत । काहु विरद नै बडाई करै भूडो तुम ऐसे ऐसे घोर गुन को रहे न ।

Subject :—शृंगार रस वचन तथा चलंकार ।

बिहारो के दाहाँ पर चलंकार सहित वज्र भाषा मिश्रित टीका पद्य में की गई है । किसी किसी दाहे को टीका पद्य में मो है ।

No. 467. Characha-Sphuṭika. Leaves—41. Deposited with Śrī Jaina Mandira, Kāṭara Medanipura, Post Office Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ महाबोर पुरान से चरचा एकटिक लिखते ॥

प्रथम कुरंग धरि नकै लहेत । दृजे नीलहि थावर जंत ॥

ठोजे कपोल जानि तिर जंच, चौथे पीत मनुष्य पद संच ॥ १ ॥

पंचम पद्य स्वर्ग नति लहे । षष्ठम शुक्ल मय सिवगहे ।
 षष्ठ लेस्या भेद विचार, सुनहु भव्य मिथ्या व निवार ॥ २ ॥
 धारत रुद न त्यागै कदा, धर्म विवर्जित कोचो सदा ।
 दया रहित परपंचो घोर, लेस्या कृष्ण जासु खन गोप ॥ ३ ॥
 मंद बुद्धि परमादो गुणै । निष्ठुर वचन भनै वह घणै ।
 है परपंचो कामो घोर । लेस्या नील तामु को घोर ॥ ४ ॥
 साक करै यह वृष्ट सुभाव । भर निदा निज धुतिव चराव ।
 रक्ता जुब कु गुरु को सेव । वह कपोल धनो को भेव ॥ ५ ॥
 End :—इत्सर्पिता उपजै किर घाय ।

वृक्ष रूप कम-कम चढ़ि जाय ॥

जेहि प्रकार कालहि घट जान ।

तेहि समान बढ़तो उनमान ॥

॥ बाहा ॥

या विधि जिन मुख कमल कचि,

ज्ञान पियुषांह पीय ।

बस्यो मोह मिथ्यात्व विष,

सौतम विष सुधीय ॥

काल लब्धि को निकट लहि,

भाव संवेन बढ़ाय ।

विश्व भोग तन लक्ष्मी,

भयो विरक्त सुभाव ॥

संपूर्ण ।

Subject :—जैन धर्म के पाँचरहों पर उपदेश :—

(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—षट् लेस्या वर्णन, प्रत्येक लेस्या का लक्षण तथा उदाहरण, भव्याभय वर्णन, गुण ज्ञान भेद कथन, स्त्री देह में निगोद वर्णन, घनादि मिथ्यात्व कथन, पचीस वृषण वर्णन । मिथित गुण ज्ञान, वृत गुण स्थान, अवृत गुण स्थान, सत्तावन प्रकृति विधि, बारह कृत कथन, पंच धनोवृत ।

(२) पृ० १२ से पृ० ३७ तक—चार शिष्या वृत कथन । द्वादश तप, सामयिक प्रतिमा वर्णन, दश प्रकार सम्यक् वर्णन । सम्यक् महात्म्य, मूल गुण वर्णन, श्री महावीर जी के भाषांतर वर्णन, त्रयपह्य वर्णन ।

(३) पृ० ३८ से पृ० ८२ तक—ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, प्रतिमाओं के अनुसार उनके धारण करने वालों के पद । पाशों के अनुसार दान-विद्यान । सम्यक् दर्शन-कथन । अष्टाङ्ग सम्यक् ज्ञान कथन । त्रयोदश चरित्र कथन,

(आवक्यम्) —पनिधमं वनेन, चार प्रकार के ध्यान का वर्णन, उनके मंत्राय-
मंत्र, तन्त्र निकाम, समानुवृत्त मंत्र, पञ्च मंत्र, चंद्र रेखा मंत्र, पञ्च मंत्र, स्वस्वादि
ध्यान वर्णन। सर्पिणी तथा उसर्पिणी कथन। अंत समाप्ति ॥

No. 468. Chaudaha-Vidhāna. Leaves—9. Dated in
Samvat 1892 or A. D. 1855. Deposited with Radhāvallabha,
Village Khairābada, Post Office Rajapura, District Unnava
(Oudh).

Beginning :—थी गणेशायनमः यद्य ज्योतिर्दृष्ट विधानं लिख्यते ॥ मेम को
प्रकारा कैसा चानंद को कां जैसा । चानंद को कद कैसा जैसा धो सदन है ॥
थी जुको सदन कैसा कमल कमल जैसा कैसा है कमल उदित जैसा मदन है
उदित मदन कैसा मोदन सख्य जैसा मेहन सख्य कैसा सुमनो कदन है तमको
कदन कैसा सोमै सुगाधरि जैसा सुगाधरि कैसा जैसा धारो को वदन है ॥ १ ॥
है विधान ॥ सख्या सख्य मान जैसा पुन्य पाप जान तेसे संत घो अघंत घेसे धनो
निधन तो । उवां घोर घात देषि गुनो निरगुनो लप ज्यो विशेषतुं सो लेष
स्योदो नाना मन सो ॥ सुभा सुम सुष दुष कमल स्यो ज्यो कलुष सनमुष स्यो
विमुष सो है प्रभुजन सो ॥ सीतल लपत गजे मिजन विछोद छाजे तेसेदो विगाजे
मिलो साषा भूत मनसो ॥ तृतीय विधान ॥ अति रस रसे प्रिया मोठम बिलोकि
अल जल बल न्यारे न्यारे करै देषि मगनो ॥ चकचाक जल तोर सुषद सरोर
चोर तिसाकर वांत जुदे कोने पोर नगनो मोन जल करै केल पचृत अषिक मेल
धंको बिलार लटु हारे दुष दगनो ॥ चंद्रमा चकोर हुह घोर कोर डारै मोर मन
घोर आत्मा को सोदो पांथा ठगनो ॥ २ ॥

End :—द्वादस विधान । पांड, वन, तम, घोर, कुह, मयवून, घोर, छांड,
कहि, पुंछ मोर, काजर, जमन जल, करि, नारे, महा, मत्त, रैन, भोने, मैन,
श्रात, मृद, निर्तंदीप, सति, पचुति, कलित कज, विषो घटा, पुंज, गुंज, नर,
वर, डर, कृज, सुमिल, सुपन भुज, नौ रविके मेडल, फलो, वन, निश, पक्ष, नभ,
तार, श्याम, अक्ख, सर, दोह, हुड, स्वच्छ, सोई कांचपल ॥ यतिप दस
विधान ॥ घृण, मोन, हच, नट, केज, फलि, वान, मट, पांड, दीप, उद्विचत,
पंजन, चकोर हैं ॥ सिनु, जल, डच, नर्तु, मृद, मत्त, निख, चंद, चित, चोर हैं ॥
मोठ, चोत, सिनु, वन, पुत्रे, ल्याम, पंच रत्न, विषो, जोत, नमंगल, चाई चहुंमोर
हैं ॥ थल, केन, रित्त, रस, राब, मोन, मनु, फलि, कूर, नेट, तेज, फंसि, नेहो,
मोन जोग हैं ॥ चतुर दस विधान ॥ चक्र तूबा, लान, गिर, कुंभ, नारियल,
लटू, मठ, मुक्का, मेद, मव, कंज, तपो हैं । सर, वोनो, हंस, हृह, सुधा, मज,
पक्ष वर, चित्र, चपा, काम, स्वम, राव, ध्यान, ज्यो है ॥ निस, रूप, चित, वक्ष,

मरे, मोती, लक्ष, चक्र, रति, मनु, कैल, विष, लक्ष, स्वता, यथी, हैं ॥ चित्तु, प्रेम,
पुष्ट, सुग, जग्य, मत्त, रत्त, रत्त मोद, मंध गोल, नाग, मूदे, सिद्धि, अपो हैं ॥

१४ विद्यान खंडा संपूर्ण समाप्तः सम्पत् १८९२ वि० ॥

Subject :—रस वादि कविस पृथक् पृथक् वर्णन ॥

No. 469, Chitrakūta Mahātma. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa, (the book was found with) Babā Pītāmvaradāsa, Village Saunāmān, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagadhā (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशाय नमः ।

बोधा :—प्रथम गुरुन के चरन राज, बंदी बारहि धार ।

जा सुमिरे प्रभु पाइये, उतरी नर भव पार ॥ १ ॥

चरन सन गुरु देव के, जब लमि भायो नाहि ।

नवनि विधिनि निज माधुरी, क्यौ परसै मन माहि ॥ २ ॥

चित्र कूट गुन कहन को, कोनो मन उझाहि ।

जनक नंदनी छपा बिनु, कैसे होइ निवाह ॥ ३ ॥

एक भास विश्वास गहि, करनि कथा मति मोरि ।

चित्र कूट निज धाम को, काहु न पायो धोर ॥ ४ ॥

महा प्रणम दुर्लभ कठिन, चित्र कूट निज भौन ।

जनक नंदनी छपा बिनु, कहि धौ पावै कौन ॥ ५ ॥

सब प्रकार गुन होन ही, यहै सोच मन मोहि ।

जनक नंदनी छपा बिनु, जो कहू होइ सो होइ ॥ ६ ॥

—End :—पण्ट भई जिहि ठौर ते, गुन गोदावरि मंग ।

मानी गिरि तनु धारिकै, बैठा धानि धनंभ ॥ १०० ॥

मंगा मज्जन करत जे, ते बहमांगी लोग ।

धन के वासी संत जे, हैं सब दरसन जोग ॥ १ ॥

भाये तिलक विराजहो, गर तुलसी को माल ।

राम चरन मे रति रहै, परै न दुजे ध्याल ॥ २ ॥

पंगु चहत गिरि वर चख्यो, कैसे पावहुं पार ।

छपा होइ रघुवीर को, सहजहि चढ़े पहार ॥ ३ ॥

जो गावै सोखै सुनै, चित्र कूट सु विलास ।

राम छपा ता संत को, रघुवर पुत्रवै पास ॥ ४ ॥

रति श्री चित्रकूट महात्म्य संपूर्ण गुन मस्तु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मंगलाचरण, चित्रकूट की महत्ता तथा फल, उनको प्राप्ति के उपाय, जनकनंदिनी के चरणों की महत्ता, कवि का दैव्य भादि । (२) पृ० ४ से पृ० १६ तक—चित्रकूट की विशदता का बर्णन उसके वन स्रितादि की शोभा, चित्रकूट-स्वित्त राम के सावास का वर्णन । चित्रकूट के वन का तप के लिये उपयुक्त होने तथा भक्ति करने का फल । (३) पृ० १७ से पृ० १९ तक—संसार की निस्तारता तथा उसके परित्याग का कथन, भक्ति महात्म्य, चित्रकूट की भक्ति का कथन, चित्रकूट महात्म्य के पठन-पाठन का फल ।

No. 470. Dānalīla Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Sarma. Paṇḍita-ka-Paravā, Manja Bhādhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—ध्या गयेशावनमः ॥ अथ दान लीला लिख्यते ॥ देहा ॥

एक समय श्री राविका, सब मिलि कोन्ह विचार ।

हिल मिल बलिषे जमुन तट, हरि संग करहि विहार ॥

दहो मटुकिया सोस पै, खेला सकल प्रज बाल ॥

जब देखिहै यह वेप मो, तब छेरिहै नंदलाल ॥

पंच हमारी रोकि कै, हंसि के कहै मुरारि ।

हाथ लकूट हादश तिलक, महिमा अमित अपार ॥

जब कहि दै मन हरष युत, दान देहु ब्रज नारि ।

तब हम हरि सो भगुरि हैं, वातन विविध प्रकार ॥

End :—

अहत नयन हु, गये, सुनत उपजी रिस भारो ।

तनक दहो के काज हास, तुम करत हमारो ॥

सुनहु मया दैपत कहा, दधि लूटहु बरबोरि ।

सोस मटुकिया फेरि कै जू लेहु हार डर तौरि ॥

देसो को जग माहि हार छुड़ सकै हमारो ।

दहो मटुकिया फेरि कितै फिरि बचे विचारो ॥

सो मन अपने समुक्ति के, छोड़हु गैन हमारि ।

मोहन सासु रिसाई है, जो घर में देव बसाई ॥

इति श्री दान लीला समाप्त शुभम् ॥

Subject :—कृष्ण दानलीला वर्णन ।

No. 471. Dāsa-Avatāra. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Bhāgirathīprasāda of Usakā, Post Office Kaudhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—प्रथमै लोन्ह मोन भवतारा ।

उघधी पै इह संवा सुर मारा ॥

सुक सारद नारद उठि धाम ।

महा वेद चारि मुख नाथ ।

दुसरै कमल रूप भवतारा ।

जोगय बान भयु कोटिक मारा ॥

सहस मुख ठव हरि गुन नाथ ।

दुरंदर पुर मे भरसा खाये ॥ १ ॥

End :—नवयै मद रूप भवतारा ।

परसात्तम पुर मे जै जै कारा ॥

पसिला मा मगहा सुर मारा ।

जोग पत्र के कोन्ह उवारा ॥ १ ॥

दसयै चकलक भवतारा ।

गहा सैमारि जहं जै जै कारा ॥

धजा दिनासो संगही मारा ॥

मरथ पंड के भार बतारा ॥ १० ॥

दस भवतार को चारतो नैये ।

सुर भक्त मेम फल पिये ॥

सात सुकत परिवेद बनाये ।

इति श्री दसै भवतार संपूरण ॥

Subject :—दश भवतार वनेन ।

No. 472. (a). Dharma-Samvāda. Leaves—32. Dated in Samvat 1901 or A. D. 1844. Deposited with Vaidya Ramabhadra, Village Kāmātāpūra, Post Office Etanjā, District Luoknow (Oudh).

Beginning :—श्री श्रीगणेशायनमः ॥ प्रथमं संवादं लिखते ॥ ओ-
झापर बिबे कथा होत भई नगर हस्तिनापुर दिहो के निकट ता बिबे गुरा कोल
पूछत गई । सो राजा जनमेजय राजा परीक्षितदा वेदा पांडव दा राजा ॥ हे
वैश्यपायन जो ॥ राजा भये पौर पुत्र बुधुष्टिर इसका मिलाप क्यों कर होइ है ॥
सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैश्यपायनवाच ॥ राजा का वचन सुनकर श्री
भ्यास देव जो का शिष्य हूँ हे वैश्यपायन सो कथा कहता भया ॥ हे राजा तू
सुन पक्ष समझ हूँ हे देवता यह इन्द्र यह विनायक यह सरस्वती यह गंगा जो
यह जमना जो यह गंधर्व यह वन स्वर्गोई सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति

भई पाई । नारद जो लु है विषो जाई करके नमस्कार करते जाँया ॥ यह यजन करबोलागो ॥ नारद्वर वाच ॥ नारद जो कहते हैं लुईवता के बीच शंकर जो का नाम है यह ब्रह्मा विष्णु महादेव है तैरा सुखु लोक विषे राजा युधिष्ठिर है । धर्म धर्म का पुत्र है जिसके प्रलोक विषे कीरति जायती है ॥ सो ऐसा राजा न कोई हुआ है और न जागे होइया ॥

End :—पतीतो वाच । हेराजा जो मैं सति कहिया है मेरे ताई दोष नाहीं देना ॥ मेरे ताई दोष नाहीं देना ॥ असाढ़ में कार्तिक में सावन में वैशाख में असनान दान करे हे राजा जो पंगो है ॥ लुधिष्ठिरोवाच ॥ हे पतीत तू जो है सो मेरा देह है मैं जहाँ सो पावै जाणि ॥ मेरा जो सुन या गइया पर मैं सुफला होइया ॥ तेरा दरसन करके ॥ यह तो प्रतिध देव है तेरा चाँदाल का रूप मेरे घर विषे पाइया है हे पतीत इकता तू इंद्र है इकता यज्ञा है अधवा विष्णु है तू जो है चाँदाल का रूप धार करे मेरा पिता पाया है ॥ घरमो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सबना शास्त्र य जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता है यह तू पुत्र है हे राजा तू सति जानु हे राजा तू साधु है तेरा जन्म धन है तेरा वंश धन है तेरा कुल धन है तेरा जस मैं सुखिया सो स्वर्ग विषे तैं तेरा दरसन करने तेरे घर विषे पाया है ॥ जिस अर्थ जोग पुन करदा है सो देवता तेरे घर विषे पाया है ॥ लुधिष्ठिरोवाच ॥ पांडु मेरा जन्म सुफल है पांडु मेरो तपस्या सुफल है पांडु मेरा जन्म मो धन है तेरा दरसन कोता है मैं पाप ते मुक्ति होइया है और जिने लाभ कर्म है तिता ते मुक्ति होइया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरो धारवल बहुत होवै । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ है संवाद करके यह राजा धर्म देव-लोक विषे प्रापति भया धर्म करके सगु मो दूर होता है ॥ धर्म करके प्रद मो दूर हो जाता है जिस्ये धर्म उख्ये दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णं शुभम् मित्रो चेष सुदो तेरस संवत् १९०१ विक्रमो जै राम राम राम राम राम राम राम ॥ वि०

Subject :—नारद वैशंपायन का संवाद, धर्मराज युधिष्ठिर की महिमा का बखान ॥

No. 472 (b). Dharmasambada. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A. D. 1710. Deposited with Pandita Ramanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadarapura, District Sitapur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अर्थे धर्म संवाद लिख्यते ॐ ह्रापर विषे कया होवी भई नगर जो है हस्तिनापूर दोलो के पास ते विषे शुभ काल

पूजता भई । ऊँ राजा जन्मोदय राजा परोजित का बैठा पांडवा दा पैठा है
वैशंपायन जो । राजा धर्म भर पुत्र जुधिष्ठिर इसका मिलाव क्यों कर होइ है
सो तुम ठपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि कर श्री
व्यासदेव जो का शिष्य जु है वैशंपायन सो कहत भया कथा । हे राजा तू मन ॥
एक-समै जु है देवता भर इंद्र भर मुनीश्वर भर ब्रह्मा भर विष्णु भर विश्व
भर सृज भर चंद्रमा भर विनायक भर सरस्वती भर गंगा जो भर गंधर्व
भर वनस्पती ई सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति भई पा ॥ नारदा जो जु है
रिषी जाइ करिके नमस्कार करते भइया ॥ भर वचन करछे जानो ॥ नारदा
वाच ॥ नारद जो कहत हैं जु देवता के बीच शंकर जो का नाम है भर ब्रह्मा
विश्व महादेव है ती मृत्युलोक विषे राजा जुधिष्ठिर है धर्म धर्म का पुत्र है
जिसका त्रिलोक विषे कीरत गावती है सो भैंसा राजा ना काइ होइहा बौर
न होइगा ॥

End :—जुधिष्ठिरा वाच ॥ हे भतीत तू जो है मेरा इंद्र है मैं जहां सो
सावैतामि ॥ मेरा जोगु मया मइया ॥ पै मैं सुफला होया ॥ तेरा दरसन करके
भर तो प्रतिध देव है तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे भाइया हो हे भतीत
इकेता तू इंद्र है इकेता तू ब्रह्मा है मया विश्व है जो तू है चंडाल का रूप
घोर कर मेरा पिता भाया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सय ना शास्त्र
नू जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता है भर तू पुत्र है हे राजा तू सति जान
हे राजा तू साय है तेरा जन्म धन्य है तेरा वंस धन्य है तेरा कुल धन्य है तेरा जस
मैं सुनि यां सो स्वर्ग विषे मैं तेरा दरसन करछे तेरे घर विषे भाया हो जिस
धर्म जोन पुन्य करदा है सो देवता तेरे घर विषे भाया है । जुधिष्ठिरा वाच ॥
भाज मेरा जन्म सुफल है भाज मेरी तपस्या सुफल है भाज मेरा जन्म भो धन है
तेरा दरसन कोना है मैं पाप ते मुक्ति होइया बौर त्रितने लोभ कर्म है तिनो से
मुक्ति होइया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरो भाखल बहुत होयै । हे पांडव
पुत्र तू चिरेनाय दूर है । संवाद करके भर राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापति
भया ॥ धर्म करके सबु भो दूर होता है जिये धर्म उखे दया है ॥ इति श्री धर्म
संवाद संपूर्ण धूम मस्तु लिखत बनवारी लाल पाठक पैतेपुर निवासी संवत्
१७६७ वि० ॥ राम राम राम राम राम राम ॥ श्री शंकर की जय होय ॥

Subject :—महाराज जुधिष्ठिर और धर्म का संवाद ॥

No. 472(c). Dharmasamvāda. Leaves—30. Dated in
Samvat 1772 or A. D. 1715. Deposited with Rāyalāla, Village
Ramuāpura, Post Office Dhauraharā, District Kheri (Oudh)

Beginning:—**ॐ श्री गणेशाय नमः ॥** अथ धर्मसंवादः शिष्ये श्री द्वारा-
पुर विषे कथां श्रोतुं भवे ॥ नगरं जातु है हस्तिनापुर दिल्ली के पास ता विषे एक
समय पुकता भई । सो राजा जनमेजय राजा परीक्षित का बेटा पाँहवीं दा पौत्रा
हे वैशंपायन जी राजा धर्म यह पुत्र सुविष्टिर इनका मिलान क्यों कर होइ है ॥
सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्री
गणेशदेव जी का शिष्य सु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन ।
एक समय जातु है देवता यह इंद्र यह मुनीश्वर यह ब्रह्मा यह विष्णु यह विश्व
यह सूरज यह चंद्रमा यह विनायक यह सरस्वती यह नंगा जो यह जमुना जो
यह गंगवी यह वास्यती ई सब एकच बैठे ये नहीं जाय प्रापति भई सो नारद जो
जातु है गिरी जाइ करके नमस्कार करते भये यह वचन करने लागी । नारदोवाच ॥
नारद जी कहते हैं जा देवता के बीच शंकर जी का नाम है यह ब्रह्मा विष्णु
महादेव है सो मृत्यु सो क विषे राजा सुविष्टिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका
बेटा क विषे कौत गावती है सो सेवा राजा न कोई दुषा है न कोई दोषेगा ॥

End:—सुविष्टिरो वाच । हे प्रतीत तू जातु है सो मेरा देह है मैं सु हौं
सो भावै जाति ॥ मेरा जातु नर्व था गया । पर मैं सुफल होइया तेरा दर्शन
करके यह तो पतिय देव है तेरा चंडाल का रूप है मेरे घर विषे पाया है हे
प्रतीत इकेता तू इंद्र है इकेता ब्रह्मा है अथवा विष्णु है तू जातु है चंडाल का रूप
धार करे मेरा पिता आया है ॥ धर्मोवाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है सब ना
शास्त्र जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता यह तू पुत्र है हे राजा तू सब
जान हे राजा तू साध है तेरा जन्म धन है तेरा धन धन है तेरा कुल वध है
तेरा जस मैं सुनि वा सो स्वर्ग विषे मैं तेरा दर्शन करने तेरे घर विषे आया
हैं ॥ जिस सर्थे आज मन कर रहा है सो देवता तेरे घर विषे आया है सुविष्टिरो-
वाच ॥ आज मेरा जन्म सुफल है आज मेरी तरफ़ा सुफल है आज मेरा जन्म
सो धन है तेरा दर्शन कौता है मैं पाव ते मुक्त हुआ है धार जितने लोग कम
हैं जितने मुक्त हुआ है । धर्मोवाच ॥ हे राजा जो तेरी पारबल बहुत होवै हे
पाँहव पुत्र तू चिरंजीव दुः है ॥ संवाद करके यह राजा धर्म देव लोक विषे
जाइ प्रापति भया । धर्म करके सब मो दूर होता है धर्म करके यह मो दूर होता
है जिते धर्म उये दया है ॥ इति श्री धर्म संवादः संपूर्णम् फाल्गुन मास
शुक्ल पक्षे द्वादश्यां संवत् १७७२ वि० ॥

Subject:—महाराज सुविष्टिर और धर्म का संवाद ॥

No. 472(d). Dharmasamvāda. Leaves—30. Deposited
with Maunilala Gaṅgāputra Tivārī, Village Misarikhā,
District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—**ओं श्री गणेशाय नमः ॥** यह धर्म संवाद लिखते ॥ **जं हापुर** विषे कथा होत भई । नगर जु है हस्तिना पुर दिन्ही के पास ति विषे गुरा कोल पूकत भई । सो राजा जनमेजय राजा परीक्षित दा वेदा ॥ पांडवा दा पाँजा ॥ हे वैशंपायन जो राजा धर्म यह पुत्र सुचिष्टिर इस को मिनाप क्यों कर होई है ॥ सो तुम कथा करके कहु ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि धीर्यास देव को का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भवा ॥ हे राजा तू मुन ॥ एक समै जु है देवता यह इंद्र यह मुनोदर यह ब्रह्मा यह रिष्य यह विशु यह सुरज यह चंद्रमा यह विनायक यह सरस्वती यह गंगा जी ॥ यह जमुना जी ॥ यह गंधर्व, यह वनस्पती ॥ हे सब एकत्र बैठे थे तहाँ जाई प्रायति भईया ॥ नारद जो जु है रिषी । जाइ काके नमस्कार करते भईया ॥ यह वचन कहे लागी । नागदा वाच ॥ नारद जो कहते है जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है । यह ब्रह्मा विशु महादेव है तो मर्ये लोक विषे राजा जुचिष्टिर है । धर्म धर्म का पुत्र है । जिसका त्रिलोक विषे कोरति सावती है । सो ऐसा राजा न कोई पाग होइया है । न कोई होवेना । कैसा है राजा जुचिष्टिर । सत्यवादा है ।

End:—जुचिष्टिर वाच ॥ हे अनंत तू जो है सो मेरा देह है मैं जहाँ सो पावै जाति । मेरा जो मुन या भया ॥ पर मैं सुफला होइया तेरा दरसन करके ॥ यह तो प्रतिप देव है ॥ तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे पाइया है । हे अनंत इकंता तू इंद्र है ॥ इकंता ब्रह्मा है चथवा विशु है । तू जो है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता पाया है ॥ धामो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है ॥ सबना शास्त्र तू जानने वाला है । हे राजा मैं तेरा पिता है यह तू पुत्र है । हे राजा तू सत जान । हे राजा तू साव है तेरा जन्म धन है । तेरा वंस धन है । तेरा कुल धन है तेरा राज समै सुखिया सो स्वर्ग विषे मैं तेरा दरसन करके तेरे घर विषे पाया हूँ । जिस धर्म जोग पन करवा है सो देवता तेरे घर विषे पाया है ॥ जुचिष्टिर वाच । आज तेरा जन्म सुफल है । आज तेरो तपस्या सुफल है । आज तेरा जन्म भी धन है । तेरा दरसन को ता है । मैं पाप ते मुक्त होइया ॥ पार जिसने जोम कम है । तिनो ते मुक्ति होइया । धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरो पारवल बहुत होवे । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव नाइ है । संवाद करके यह राजा धर्म देव लोक विषे जाई पापित भवा । धर्म करके सबु भी दूर होता है ॥ धर्म करके यह भी दूर होता है । जिये धर्म उघ द्या । इति

Subject:—धर्म उपदेश ।

No. 472(e). Dharmasamvāda. Leaves—21. Dated in Samvat 1897 or A. D. 1840. Deposited with Thakura Vijayab-

hādara Simha of Saitāpura, Post Office Gadavara, District Pratāpagaṛha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशाय नमः ॥ पद्य. धर्म संवाद कथा मध्यदेश भाषा टीका लिखते ॥ जन्मेजय उवाच ॥ जन्मेजय नामा राजा वैशम्पायन ऋषि के पास पृच्छते ये क्षपा युग विवे उत्पन्न हुये इतिनापुर विषे महा बलवन्त जन्मेजय नामा गुरु वैशम्पायन ऋषि के पास पृच्छते ये ॥ १ ॥

जन्मेजय उवाच ॥ द्वारे ज सः १२२ नमरे इतिनापुरे । गुणां पृच्छते राजा जन्मे जयो मशायलः ॥ १ ॥ कथं विना गुरुवेण धर्म राजा सुचिन्तितः ऐष सर्व प्रकारेण कथमस्य महामुने ॥ २ ॥

धर्म रूपेण दिनादिह जय विना ॥ धर्मराजा जो है सुचिन्तित से किस तरह से पृच्छते ये सर्व प्रकार से दे महामुने क्षपा वंशवायन ऋषि विस्तार पूर्वक मेरे पास कहा ॥

॥ २ ॥

End:—देवदेवो मतो धर्म पांडमाश्वरजि विनः

धर्मेण हन्ते व्यधिर्धर्मेण हन्यते शत्रुः ॥ ११८ ॥

धर्मेण हन्यते शत्रु यतो धर्मस्ततो जयः

२: पठेद्धर्म संवादं श्रुत्वाद्वा समाहितः ॥

सर्व पाप विनि मुक्तः धर्म समाप्नुयात् ॥ ११९ ॥

धर्मराज देव लोक के गयाः स्वर्ग लोक को जाते थे पांडव चित्रजीव होर धर्म से शत्रु मार होये धर्म से शत्रु बल हाति है जहाँ धर्म होता है तहाँ जय होता है जो मनुष्य धर्म संवाद का पाठ करता है तो मनुष्य जो मनुष्य सुनता है सर्व पाप विनिमू को सर्व पाप से मुक्त होर के परम पद को प्राप्त होता है ॥ मनमें निश्चय करके कथा को श्रवण करे सुणवे तद फल होता है ॥

इति धर्म संवाद सत्य तिनक कथायाः भाषा टीका समाप्ताः संवत् १८९७ याके ७६२ चैत्रमास षष्ठावर्षा तिथौ बुधवासरे पंचम प्रहरे हादमारे चतुर्थे प्रहरे लिपितं शुभम् समा समा समा समातः समाताम् ।

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—प्रस्तावना, धर्म का चाँडाल रूप धारण करना । इतिनापुर जाता व चाँडाल और भीम संवाद, चाँडाल शब्द की व्याख्या, भीम का चाँडालीवित होकर सुचिन्तित के संवाद देना ।

(२) पृ० १९ से पृ० २६ तक—सुचिन्तित के सम्मुख चाँडाल द्वारा पुनः चाँडाल शब्द की व्याख्या और जीवन का मूल तत्व सम्झना ।

(3) पृ० २६ से पृ० ४२ तक—यमें की व्याख्या और मद्भादि का वर्णन ।

No. 473. Dohāsāra. Leaves—21. Dated in Samvat 1913 or A.D. 1856. Deposited with Bābū Sudarsānasirāha Rāisa and Tallukedāra of Sujākhara, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagadhā (Ondh).

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दोहा सर ॥

Beginning:—

॥ दोहा ॥

नयन निकट कज्जल प्रसे, पै दरपन दरसाय ।
 त्यों साधुन सत संग विनु, नाहिन घोर उपाय ॥ १ ॥
 सबहीं घट में राम है, ज्यों गिरि सुत में श्वेति ।
 जान मुख चकमक बिना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥
 है हिय में पयत नहीं, करिवत बहुत उपाइ ।
 जैसे अपनी देह को, छांद नहीं नहि जाइ ॥ ३ ॥
 करि घूँघट जग मोहरै, बहुतक लाभ लाग ।
 दरसन जगहै देपाइयो, जेते दरसन जान ॥ ४ ॥
 बलप एक बहुवेष धरि, घट घट रह्यो समाइ ।
 साधनि प्रगट्यो अधिक प्रति, ताते लक्ष्यो न जाइ ॥ ५ ॥
 घट घट में राधारमन, वामे नहीं विवेक ।
 जैसी फूटी धारसी, पंढ पंढ मुख एक ॥ ६ ॥
 जब सुभयो तब संघ ते, जब संघे तब सुभ ।
 इतके भये न उत्त के, बाव सुम को वृभ ॥ ७ ॥
 राम नाम को लेस नहि, रह्यो विषय लपटाइ ।
 धास चरै पसु प्राप मुख, गुर गुलियाये पाइ ॥ ८ ॥

End:—धरो बने धरियार की, तू कछु समु भयो चित्त ।

पापु घटे जावन प्रसे, यह समुझाये चित्त ॥
 बहुत घटी घोरौ रह्यो, ताही भांभ घटाइ ।
 बाको इतनी पर कहा, की काहु के जाइ ॥
 हम परदेशो पाहुने, दिन दिन सोदै गांव ।
 भर मुलु जानै पापुनो, हू है कौने ठांव ॥
 कहि कालू कैसी बने, काल घरो सिर कैसे ।
 ना जानो कह मारि है, का घर का पदेस ॥

दाम संपि लौ लक्ष्मि, उदौ चक्षि लौ राज ।
 मूसन जौ निज मरन है, तौ धकौ नहि काज ॥
 कयौ घुटै इहि लाज परि, कित कुरङ्ग पकुलाइ ।
 ज्यौ ज्यौ सुरभि भगौ, चहै, ज्यौ ज्यौ उरभति कार ॥
 जुमला गुह्यो बडावतो, मनको करतो डोरि ॥
 पाई लहरि जु प्रेम को, कित जमला कित डोरि ॥

इति देशान्तर समाप्तम् सुभ मस्तु दशपत् गोपाल लाल कायस्थ संमत् १९१३
 संमत् १९६३ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—शान्ति सम्बन्धी दोहे । (तुलसीदास
 जी के बनाये हुए) । सामान्य-भाव, जेष्ठा । लगन । नेत्र । प्रेम लगन भाव । बिहारी
 रहोग, प्रहमद कुतुब, रसलोन, कबीर, जानिल, तुलाराम, संमन आदि कवियों
 की कविताएँ ।

(२) पृ० ९ से पृ० ४० तक—पङ्क भाव (कटि) रोमावली, कुच,
 झलक, तिलक, संग भाव, तप भाव, दूती के वचन नायिका से सभी वचन
 नायिका के प्रति, रसतक भाव, नायिका भाव, नैन विरह भाव, साधारण विरह
 भाव, मिलन भाव, मन प्रकृति भाव, सज्जन एवं दुर्जन भाव, शठ भाव,
 कष्ट भाव, शिक्षा भाव, ज्ञान भाव, प्रस्ताव भाव, स्फुट भाव, मन शिकार भाव,
 हास्य भाव, चातक, चकोर, समर, पतङ्ग, चन्द्रोदय, मत विश्वास एवं गुरु भाव ।

(३) पृ० ४० से पृ० ४२ तक—वैद्योला भाव, विरोध भाव, वैराग्य भाव ।

No. 474. Drashāntasāra-ke-doha. Leaves—12. Dated in
 Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Pṛdita Lakshmi-
 kānta Kothīval of Basu āpura, Post Office Lakshmikānta-
 ganja, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning.—ओ गनेसायमा ॥ पथ हृष्टान्त कार के दोहा लिख्यते ॥

जो जाको प्रति पिय लगी । सो तिहि करतु वपान ।
 जैसे विष की विषमयी । भाषत प्रमृत्त समान ॥ १ ॥
 कदा होत उद्यम किये । जो प्रभु नहि अनुकूल ।
 जैसे निपजे खेत को । सलम करत निमूल ॥ २ ॥
 जाहो ते कछु पाइयत । ताको करियत प्राप्त ।
 पालो सरवर पर गये । कैसे मिटत पिपास ॥ ३ ॥
 जो जाको होइ कै रई । सो तिहि पुत्रवत प्राप्त ।
 स्वात बुंद धनु सकल धन । चात्रक मरत पिपास ॥ ४ ॥

रस अनरस समुह नहीं । पढ़े भेम को गाय ।
विच्छेद भेम न जानहीं । सर्पहि खारु हाथ ॥ ५ ॥

End:—जहाँ वसे गुनवंत नर । तासो सेवा होति ।

अहाँ चरै दोषकु तहाँ । निधय करै उदोति ॥ १०४ ॥

मले बुरे को एक सो । मूढ़न के परतोत ।

गुंजा सम तौलत कनक । सुना पला को रोति ॥ १०५ ॥

सेवक साहिब के बड़े । बड़े बड़ाई चाज ।

जैता ऊँचे जान बड़े । तेता बड़े सरोज ॥ १०६ ॥

धनो हात निरखन कहै । निरखन तै घनवान ।

बड़ी होति निसि सिसिर रिनु । ज्यों गोपम दिनमान ॥ १०७ ॥

जहाँ सनेही सेवा रहत । समत समत मनु पाइ ।

फिरत कटोरी भेम को । चोर दिये ठहराइ ॥ १०८ ॥

इति श्री हृष्टान्त सार के द्वाहरा संपूर्ण ॥ अगहन सुदी ५ संवत् १८९१ ॥

॥ मुक्तम इन्द्रगढ़ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २४ तक—हृष्टान्त संबंधी १०८ दोहों का संग्रह ॥

No. 475. Dvādasa Rāsi Vicāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—श्रीमते रामानुजाय नमः अथ बृहस्पति कौंड द्वादश रासि को विचार । मेघरासि गुरु जाता ॥ पारवती पूछे महादेव कहै ॥ सवे को लक्षण मेघ रासि गुरु ॥ वर्षा होइनी दिन ४९ ॥ आसाढ़ दिन ११ ॥ आवन दिन १८ ॥ भाद्र दिन १२ ॥ अश्विन दिन ५५ कार्तिक ३ एवं वर्षा उचिते माघ चिकि होइनी दिन ३५ मघन महंगे होइने वैशाख जेष्ठ असाढ़ आवन भाद्रपद अश्विनो का कार्तिक चना दाम ५ पसेरो धाम दाम—५ पैतानिस दाम ५ पसेरो जेड़ रही १६ दाम ५ पसेरो इति मेघ रासि गुरु लक्षण समाप्त । अथ मघ रासि गुरु लक्षणमाह यदि पूछे पारवती कहै महादेव कहै समै के लक्षण बरखा होइनी दिन ६३ आसाढ़ दिन ५ आवन दिन २५ भाद्र दिन १५ अश्विन दिन ८ कार्तिक दिन ३ वैशाख दिन ४ एवं बरखा उच्यते ॥ समै मालव के देसा होइने पसेहोने होना बाबनु महंगा होइने अश्विन मेघ चिको होइनी मनोठ टंक ३ तोनि पसेरो होइनी कपास सेतिस धाम ३१ पसेरो मजगज टंक ३ गज होइने हरदो टंक ३ अफसेरे होम पौर बरनु सरवस्त होइनी ।

End:—अथ कुंभ रासि गुरु उच्यते । यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै के लक्षण बरखा होइनी दिन ५५ आसाढ़ दिन ९ आवन दिन २५ भाद्र दिन ५

आश्विन दिन ५ कार्तिक दिन ५ पुष दिन ३ अशु सहते होशो गोह दाम १५
पतेरी १५ टेडु रंक मेर । कसो तांबो सस्ते होशो सोने मासे १ गजो टंक
एकर होशो इति कुंभराशि शुभमाह । अथ मोन रामि गुरु उच्यते यदि पूजति
पार्वती कहै मनादेव समै को लखनु बरवा होशो दिन ४५ आसाहु दिन १०
आश्विन दिन २५ भाद्र दिन २ आश्विन दिन ३ कार्तिक दिन ५ पुष दिन १५ इति
बरवा । बांड बांड के होश होलगे उत्तर देस नरपति परेगे मन सासनु छाड़गे ।
बहुत होश सन्तुष्ट हेगे । अनको दुकाल होशो । उत्तर देस परजा गिरहगे मोन
मै हनुमन नाटक को मतो कहतु है । तेहि ते सुख देखतहो बने कहुं देखन होइ न
सुना होइ ।

इति बृहस्पति कांड समाप्त ॥ १२ ॥

श्रीमते रामानुजाय नमः :

No. 476. Ekādaśī Mahāphala. Leaves—12. Deposited
with Lāla Gajādharma Prasāda, Village Kurāḍihā, Post Office
Pariyāvā, District Prataṭpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री स्वाम चरण दास जो सहाय ॥

श्री गुरु गणेश जो को सिर नाऊं । तो इकादशी चरित सुनाऊं ॥
सावधान है सुनियो भारी । कहै सुनै जो मुक्ति दिवाई ॥
हकमानंद राज प्रघटाई । ऐसो ग्यास जगत में पाई ॥
सूरज बंशी राजा मयो । मनो धर्म कल ऊपर छूयो ॥
पंचा नगरो तासु दुदाई । षटा घोर हर धर्म सुदाई ॥
सुपो लोग सब दोषे जामैं । दुष दालिद्र पावै नहि जामैं ॥
परजा सुपो धर्म सब करै । आनंद मंगल सबदिन सरै ॥
एक समय बसंत रितु पाई । ता राजा को प्रति लैगे सुदाई ॥
रानो सहित वाग में गये । फूठ तरुवर देये नये ॥

×	×	×	×
×	×	×	×

End:—चलि के सवये सुर नये, जहं बैठे देव प्रलेप ।

कपट बाहि मदि लई नारायन, करि आज्ञाण को भेष ॥
एक पुत्र बिनु जग बांधिबारे, इवे राज तुम्हार ।
मया पिंड को मदिहै राजा, को करे पित्र को काज ॥
छाड़ि विज मेरो बाहि, धर्म कित नार लगावै ।
मानि दक्खिना लेउ, जोर तेरे मन भावै ॥

देखो सरप डिगाम के, छान दृष्टो भाव ।
 तब प्रभु चरो चतुर्भुज मूरति, दरसन दये अभाव ॥
 जो जा कथा सुने भर गावै, नरक लोक नहि आव ।
 धनि रानो अमावसो, धनि हनुमान्द राव ॥
 क्यों न प्रसूया तरेई, जहं हनुमान्द राज ।
 इकदशो प्रताप ते, पायो बैकुण्ठ को वास ॥
 अथ इकादशी महाफल ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० २३ तक—एकादशी महाफल ।

मंगलाचरण । सूर्यवंशी राजा हनुमान्द के राज्य का सुख वैभव वर्णन । राजा का सपत्नीक वसन्त ऋतु में अपनी बाटिका में जाकर सुखानुभव करना । रानो का मालो को सब पुष्पों को राजप्रसाद में पहुंचाने की आज्ञा । मालो का एक भो पुष्प न लेजाकर, चारों को कथा सुनाना । राजा को कोपित होकर उसे दंड देने की आज्ञा । दूसरे दिन मालो का एक स्त्री द्वारा पुष्पों को चारों की सूचना देना । दूसरे दिन राजा का रंभा को जा पकड़ना और उसका सब समाचार सुनना । एक रजक-स्त्री के एकादशी को घनशन व्रत (क्रोध से) करने के पुण्य से रंभा का विमान स्वर्ग पर चढ़ जाना देखकर उस व्रत पर राजा को श्रद्धा । सब प्रजा सहित राजा का व्रत करना । सुर, देव तथा यम का प्रताप । मोहिनी का व्रत भंग करने का प्रयत्न करके राजा के राज्य में खाना और उसका खजाना । एकादशी व्रत का मोहिनी द्वारा विषेय । राजा का परिताप, मोहिनी का उसके पुत्र का शोश मांगना । पुत्र का प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकृति देना । भगवान का विप्र वेश में प्रवेश । राजा का सत्य से न डिगना । भगवान का प्रसन्न होकर चतुर्भुज रूप दिखाना । राजा की प्रशंसा । एकादशी कथा श्रवण फल ।

No. 477. Ganesavata-Katha. Leaves—14. Dated in Samvat 1870 or A. D. 1813. Deposited with Setha Maganirama Saudagara, District Kherilakhimpura (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ बंदि चरण शरदि के हरिहर निरजदि मनु लाइ । सैन सुता सुत को कथा कहौ सुनौ चितु लाई ॥ दो० ॥ राम कृष्ण सानत सहित श्री पुर कामिनि निज धाम । बुद्धि बढ़ावत सकल मिलि पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥ कथा कहौ गणनाथ को पार उतारी वीर । बुद्धि दीन निज ज्ञानि के सुमिरौ तनय समोर ॥ ज्योतिरौ बाच ॥ दो० ॥ सुगु कृष्ण देवन के देवा । निगम सेव विधि पाव न सेवा ॥ जैसे प्रभु तुम दोन

दशना । सदा करहु दासन प्रतिपाला ॥ विपत हमारि विछोकरहु स्वामी ।
 कृपा सिधु तुम शंकर जामो ॥ कल कीन्हो छर जोधन राजा । जोति लियो मोहि
 राज समाजा ॥ अनुज सखेत लुचति सेव लाये । कानन फिरत दुसह दुख पाये ।
 तेहित प्रभु बिनदौ करजोरो । केहि विधि पाउव राज वहेरो ॥ श्री कृष्णो-
 वाच ॥ कृष्ण कहा सुनु बचन नरेश । तुव हित लानि कहौ उपदेश ॥ पूजहु
 गणपति कहैं चित लाई । जेहि पूजे सब दुख मिटि जाई ॥ विघन हरन हैं जाकर
 नामा । तेहि पूजे पैछौ विद्यामा ॥ दोहा ॥ कृष्ण बचन सुनि धर्म सुत बोले
 पद सिर नाइ । गणपति को हैं नाथ मोहि कहिये कथा लुभाय ।

End:—दोहा ॥ बहि विधि द्वादस मास को कहौ भूप भनु लाइ । विधि
 सो पूजहु गणपतिहिं सर्व संकट मिटि जाइ । चौ० ॥ यह सुनि धर्म तनय सिर
 नावा । हरि पद की रज नेत्र लगावा ॥ जेहि विधि कहेउ कृष्ण वृत्त रोती तेहि
 विधि राजा कीन्ह संपोती ॥ गणपति की भइ कृपा अपारा । मारि सनु कोन्हो
 संहारा ॥ सुप सो राजु भरी पर कीन्हा । सब गणपति की दया लपि लीन्हा ॥
 जो गणेश को वृत्त चित लावै । मन बांछित फल सो नर पावै ॥ रिद्धि सिद्धि धन
 धेनु अपारा । धरनि धाम सुप संपाति दारा ॥ नागो पुरुष करै वत कोई । सकल
 सिद्धि फल पावै सोई । जो यह कथा सुनै जो गावै छंत काल सुर पुर सुप पावै ।
 इति श्री भविष्योत्तर पुराणे चंग कृते माया विरचिते कृष्ण लुचिष्टर संवादे हर
 गौरी सुत गणेश व्रत समाप्त सुम मस्तु पादिवेन मासे कृष्ण पक्षे त्रिंशो चौवि
 लिपत पोस्तक श्री पाल मिश्र संकल दो ी संवत् १८७० वि० ॥ श्री राम राम राम
 सोताराम ॥ श्री गणेशायनमः सदा गंगा जी को जैव दे ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

Subject:—गणेश जी को उत्पत्ति, महिमा और व्रत फल वचन ।

No. 478. (a) Garbhagītā. Leaves—32. Dated in Samvat
 1767 or A.D. 1710. Deposited with Pandita Rāmanātha Misra,
 Village Imaliyā, Post Office Sadārapur, District Sitapur (Ondh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ उं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ गर्भ-
 गीता लिप्यते ॥ भर्तुर्नोवाच ॥ ओं भर्तुर्न श्री कृष्ण भगवान् वास पूकृता है ॥
 श्री कृष्ण जो उत्तर देता है श्री कृष्ण जो को पात्रा है जो कोई भर्म भोता का
 पाठ सुनै प्रेम सहित तिसके निकट जम फिर पावे नदों वचन है श्री कृष्ण
 भगवान् जो का श्री भर्तुर्न संवाद करते हैं सुन्य पाव बिचारते हैं जो कोई इहु
 वचन पाठ सुनै कमावै यह रहते रहै तो मुक्ति होइगा ॥ श्लोक ॥ गर्भवासे जरा
 भृशु किमर्थे समते नरः किमर्थे रहिते जन्म कथं कस्य जनार्दन ॥ टीका ॥ भर्तुर्न
 पूकृता है श्री कृष्ण जो भर्म के विषे जो प्राणी दोष ते क्षायता है तब उसको जरा

सत्य का दोष लागता है यह यह कौन ग्रन्थ है तिस ग्रन्थ ते जन्म रहत होइ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे षष्ठुंन यह जो मानुष है सो संघ मूढ़ है संसार भी प्रीति करति नाल बहुत प्रीति है घाठ पहर उसही प्रीति नाल लाभ रहत है ॥

End:—श्री भगवानुवाच ॥ हे षष्ठुंन गुरु के वचनो ते विमुष है सो कुत्ते को बराबर है कोई गुरु के वचनो को मानता नाहीं सो बैसनो नाहीं ॥ जगत पर धोपी चंद है जो कोई गुरु के धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे षष्ठुंन जो कोई गुरु मुप होइ कर राम नाम सि-रेगा सत गोत्र सो एकप्रसी पितरों तारेगा ॥ सो जो मेरा भगत नित प्रति करेगा सो बैकुंठ जावगा ॥ हे षष्ठुंन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही खातो है ॥ घोर पितरों को पिंड भी श्राद्ध दिये ना पावै ॥ जो उन पुरुष को स्वर्ग लोक के कर्म किया होई तो भी स्वर्ग ना पावै ॥ हे षष्ठुंन चाण्य क्षत्रो वैश्य शूद्र अरु होर लोक भी गुरु दीपिया बिना सो बार बार जन्म पावेगी ॥ हे षष्ठुंन भगत बारबार न ते ऊपर हैं प्रधान अरु केशव नारायण तैतिस कोटि देवता के ऊपर प्रधान हैं अरु भवना अता के ऊपर हर दिन एकदशो प्रधान है मई ना में बहुत निष्काम है मेरा निवास इना में है ॥ अदोषत मानुष ब्रह्म पुन करेगा ता पशु को जूनि में पावता है जो कुछ दान पुन करे सो जोनि में पावता है ॥ षष्ठुंनुवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जो गुरु जी दीप्या कैसा होता है तिसका फल कृपा करके कहो ॥ अरु ताविषे उत्तम कौन है और गुरु कैसी वाक्य जगत को करो है यह लेवा पूजा का फल कौन है यह बैसनो भगति को किरिया जगत रहत कैसी होता है ॥ उससे भिन्न भिन्न दुर्मति कौन है ॥ श्री भगवानुवाच ॥ अन्य तेरो ज्ञान रूप को है सो बैसनो धर्म तेरा सुपको भावना है ॥ अरु दीप्या हो संसार है अरु जे हरि हरि सदा अपीये ॥ हे षष्ठुंन बैसनो अस नाम करके ऊं नमोनारायणाय ॥ श्री मंत्र एक मन होइ कर जो सो मेरा भगत है ॥ सो बैकुंठ को प्राप्त होता है ॥ सो मेरा भगत जानना यह माधु भगत छोड़ कर मनुष के गर्भ बास होता है हे षष्ठुंन मनुष की देह में साढ़े तीन करोड़ रोमावली हैं तब लग भरक में जाता है इह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भगवत गीता सृष्टि निपत्त प्रज्ञ विद्यायां योग सास्त्रे श्री कृष्ण षष्ठुंन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् लिपतं वनवागी लाल पाठक पैंतेपुर निवासी असाढ़ वैशाख ३ सवत् १७६३ वि०

Subject.—गर्भ, जन्म, मरण, सुख दुःख आदि वर्णन ॥

No. 478 (b). Garbhagita. Leaves—32. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Ramabhusana, Village Kamatapura, Post Office Etanuja, District Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यथे गते
गीता लिप्यते ॥ अर्जुनवाच ॥ ओं अर्जुन श्री कृष्ण भगवान् पास पूछता है ॥ श्री
कृष्ण जी उत्तर देता भग कि ओ कृष्ण जी को पता है जो कोई इस गम गीता का
पाठ सुनै प्रीत लाइके तिनके निकट जप किकर पावै नाही वचन है श्री कृष्ण जी
का श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं पुन पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ
सुनै कमावै धर्म रहते रहै सो मुक्ति होइग ॥ अर्जुन वाच सलोक ॥ गर्भ वास
जरा मृत्यु किमर्थे मारते नरः किमर्थे रहिते जन्म कथ कस्य अनर्दत ॥ टीका ॥
अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानो दोष ते पावता है । तब
उसको जग मृत्यु का दोष लागता है पर वह कौन यथे है । तिस यथे ते जन्म
रहत होर ॥ श्री भगवानु वाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन इहु जो मानुष
सो संघ मूढ़ है संसार भी प्रीति करत नाल बहुत प्रीति है पर पहर उस ही प्रती
नाल लाभ रहत है ॥

End :—हे अर्जुन ब्राह्मण सबो वैश्य शूद्र पर होर जो क भी गुरु गुरु
देविवा बिना सो बार बार जन्म पावेगो हे अर्जुन भगत बार बार न ते ऊपर है
प्रधान पर केशव नारायण तैवोस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है पर सब वृत्ता
के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है मैं इनमें बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास
रसमें है अदोषत मानुष कल्ल पुन करेगा तापसु की जुनि में पावता है ॥ जो बुद्ध
दान पुन करे सो जाति में पावता है अर्जुन वाचा ॥ हे श्री कृष्ण जी भगवान्
जो गुरु जी देखा कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहे और जाय विषे
उत्तम कौन है और गुरु कैसो वाक्य जगत को करो है पर सेवा पूजा का फल
कौन है पर वैष्णव भगत की करिपा जगत रहत कैसो होतो है उससे भिन्न भिन्न
दुर्मत कौन है श्री भगवानु वाच ॥ हे अर्जुन धन्य तेरो म्यान रूप को पर वैष्णव धर्म
तेरा तुमको भावता है ॥ पर देविवा दो प्रक्षर है पर जे हरि हरि सदा जपिये हे
अर्जुन वैश्यों असनान करिके ऊं नमो नारायणाय ओ मंत्र एक मन होकर जपे ॥
सो मेरा भगत है ॥ सो वैकूट का प्राप्त होता है । सो मेरा भगत जानता है पर
साधु भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होता है हे अर्जुन मानुष की देह में साड़े
३ करोड़ रामायलो है ॥ तत लग नरक में जाता है यह गीता गर्भ है ॥ इति श्री
भगवत् गीता सुप्रसिद्ध ब्राह्म विद्यायां ज्ञान दास्ये श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गम गीता
संपूर्ण समाप्तम् शुभम् लिपतं ०० देवीराम भावण युक्ता सप्तमी संवत् १८७२ वि० ॥

Subject :—श्री कृष्ण जी का अर्जुन का ज्ञान उपदेश वर्णन ॥

No. 478 (c). Garbhagita. Leaves—32. Deposited with
Pandita Mannilalaji Gangāputra Tivārī, Village Misrikhā,
District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यह मर्म गीता लिख्यते ॥
 षष्ठ्युनवाच ॥ ओं षष्ठ्युन श्री कृष्ण भगवान् पास पूजता है ॥ श्री कृष्ण जो उत्तर
 देता है ॥ श्री कृष्ण जो के पाछा है ॥ जो कोई इस मर्म गीता को पाठ सुनै प्रीत
 लाय के तिसके निकट जन्म किकर पावे नाहीं ॥ वचन है श्री कृष्ण जो का ॥
 श्री कृष्ण षष्ठ्युन संवाद करते हैं ॥ पुन्य पाप विचारते है जो कोई यह वचन पाठ
 सुनै कमावे घर रहते रहे सो मुक्ति होयगा ॥ षष्ठ्युन वाच ॥ सलोक्त ॥ मर्म वासे
 जरा सुन्यु किमर्थे समते नरः ॥ किमर्थे रहिते जन्म कथंकस्य जनार्दन ॥ १ ॥
 टीका ॥ षष्ठ्युन पूजता है श्री कृष्ण जो मर्म के विषे जो पानी दीप ते पायता है
 तब उसको जरा सुन्यु का दीप लागता है ॥ और उह कौन पर्थ है ॥ तिस पर्थ
 ते भग्न रहत होई ॥ श्री भगवानोवाच ॥ श्री कृष्ण जो कदता है ॥ हे षष्ठ्युन रह
 जो मनुष्य है सो धंध मूढ़ है ॥ संसार भो प्रीति करति नाल बहुत प्रीत है ॥ घट
 पहर उसही प्रीत नाल लोभ रहत है ॥ जैसे इहु कर्म किया है ॥ घर पासा भो
 काते है कि वांचि तब है ॥ जो इहु कर्म किया है घर इहु बरोगे ॥ घर और
 मानते क्या मानते हैं ॥ लक्ष्मीराज और जीवना बहुत मानते है घर रत्ना करमो
 करके गरम विषे पावता है ॥

End :—भगवानोवाच ॥ हे षष्ठ्युन जो गुरु के वचनो से विमुप है ॥
 सो कुत्ते को बराबर है ॥ घर जो कोई गुरु के वचन को मानता नाहीं सो
 बैसनो नाहीं ॥ जगत पर धोपोचंद है ॥ जो कोई गुरु को धर्म ते विमुप है सो मेरा
 भगत नाहीं ॥ हे षष्ठ्युन जो कोई गुरु मुप होइकर राम नाम सिमरेगा सप्त गोत्र
 और एकांतर सो पितरो तारेगा ॥ और मेरो भक्ति नित प्रति करेगा ॥ सो वैकुण्ठ
 जायगा ॥ हे षष्ठ्युन सद्योगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही पातो है ॥
 और पितरो को पिंड भी श्राद्ध विषे ना पावे ॥ जो उस पुरुष को स्वर्ग लोक के
 कर्म किया होय तो भी स्वर्ग ना पावे ॥ हे षष्ठ्युन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र घर
 और लोक भो गुरु दीपिया बिना सो बार बार जन्म पावेगा ॥ हे षष्ठ्युन भगत
 बारबार नते उपरे है प्रधान ॥ घर केशव नारायण तैंतोस कोटी देवता के ऊपर
 प्रधान है ॥ घर सबजा जना के ऊपर हरि दिन एकादशो प्रधान है ॥ मैहना में
 बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास इना में है ॥ अदीपत मानुष कछ पुन करेगा ॥
 तो पस जो ज्ञान में पावता है ॥ जो कुछ दान पुन करै सो ज्ञान में पाता है ॥
 षष्ठ्युनवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान् जो गुरु जो देखा कैसा होता है ॥ तिसका
 फल कृपा करके कहे घर आ विषे उत्तम कौन है ॥ घर गुरु कैसी वाक्य जगत
 को करो है ॥ घर सेवा पूजा का फल कौन है ॥ घर वैद्वोभगत को करिया
 जगत रहत कैसी होता है ॥ उससे भिन्न भिन्न दुपति कौन है ॥ श्री भगवानोवाच ॥
 हे षष्ठ्युन धन तेरो ज्ञान धन को घर वैद्वो धर्म तेरा तुमको भावना है घर

देखीया दो चक्षर है । यह जे हरि हरि सरा जपिये । हे चहुँन वैशेना चलना करिके जो नमो नारायणाय श्रीमंत्र एक मन होइ कर जपे सो मेरा भगत है ॥ सो बैकुण्ठ को प्राप्त होता है सो मेरा भगत जानना ॥ यह साधु मगन छेड़ के मनुष के गर्भ वास होता है ॥ हे चहुँन मनुष को देह में । साहे तीन करोड़ रोमावली है तब लग नरक में जाता है ॥ इह गोता का है ॥ श्री इति भगवत गोता संप्रति-
षन्तु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण चर्जुन संवादे गर्भ गोता संपूर्णम् शुभम् ।

Subject :—गर्भवास पाकर कौन दुख और कौन सुख भोगता है, कौन किस कर्म से नरक व मोक्ष प्राप्त करता है, आदि प्रश्न श्री कृष्ण जो ने चर्जुन को समझाया है ।

No. 479. Garuḍa-Purāṇa. Leaves—75. Deposited with Lālā Gangohri Prasāda, Village Ālhāpurā, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री भगेशायनमः गरुड़ श्री श्री भगवान् श्री सो पृथक् भये श्रीभगवत के प्रसाद करिके तोन्यो लोक बैकुण्ठ आदि है सचर सचर जीव संपूर्ण देखे उत्तम ज्ञान मध्यम ज्ञान अधम ज्ञान य मैंने संपूर्ण देवे कछू देखन को अभि-
लाषा यो नहीं ॥ १ ॥ पाताल ते लैके सत लोक पर्यंत संपूर्ण देवे-जम लोक को दर्शन कोनो नहीं ॥ दलोक ॥

भगवत प्रसादात् बैकुण्ठ त्रैलोक्यं सचराचरं भयाविलोकितं ।

भयाविलोकितं सर्वे उत्तम मध्यम अधिमा ॥ पातालात् सतर्गतः पुणामास्यं
विना पद्मे भूलोक सर्वे लोकानां प्रभुरः सर्वे जंतवः ॥

पृष्ठ—१५०

End :—

एक तो हरि का नाम मानोरथो कहो मैं मंगा जो का नाम और विप्र संसार में ये तोनि वस्तु सार है ये तोन्यो जान तरण तारण हैं ॥ १५ ॥ मंगल भगवान् विष्णु मंगल नरदृष्टवजं मंगल पुंखरो कासं मंगलाय तनौ हरि ॥ १६ ॥

x

x

x

x

जिनके लक्ष्मी नारायण दमोदर हृद्दर्म विराजे हैं तिन पुरुषन को सदा जे है सदा लाभ है तिनको कबहु शरि चावे नहीं सदां जकारदन सहाय रहत है ॥ १८ ॥ या कथा के सुनै पुस्तक को पूजा कोजे भेट यभागे मठदान दोजे मुद्रका दोजे यद्यवा बोरो पुस्तक को पूजा कोजे ॥ १९ ॥ जे पागी भगवत् भाव सो सुनै गरुड़ पुराण को कथा सुनै तिनको प्रायु हूवे जम लोक मार्ग को देवे नहीं नके में पैर नहीं सर्व पापन ते छूटे निरानन्द होय ॥ २० ॥

सुत जी.....

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—प्रथम अध्याय—नरक भगवान सेवाद, वृषास्नान वखेन ।

(२) पृ० ८ से पृ० १४ तक—द्वितीय अध्याय जीवित क्रिया विधि अर्थात् जीवन काल में धर्म, दाता पूजनादि का विधान ।

(३) पृ० १४ से पृ० १९ तक—तृतीय अध्याय । प्रेत वाक्य वखेन, पिंडदान । एकदशाह, त्रयोदशाह आदि कर्मों के दिन निश्चय करने की विधि ।

(४) पृ० २० से २८ तक—चतुर्थ अध्याय । प्रेतों की यममार्ग पुी का वखेन । यमदूत तथा पाणियों का वार्तालाप तथा प्राणियों के कृत कर्मों का दिग्दर्शन ।

(५) पृ० २९ से पृ० ३४ तक—पंचम अध्याय । ग्यारहवें दिन के पिंडदान का फल तथा शेषदान का विधान । त्रयोदशाह की विधि, नरकों के नाम और पाप कर्मों के अनुसार उनको प्राप्ति का कथन ।

(६) पृ० ३५ से पृ० ३९ तक—षष्ठम अध्याय । पाप तथा कर्मोंनुसार फल की प्राप्ति (यमलोक वखेन) ।

(७) पृ० ४० से पृ० ४६ तक—सप्तम अध्याय । प्रेत का निवास स्थान, प्रेत लोकानन्तर प्रेत के जाने का स्थान तथा उनके कर्मभोगों का वखेन । प्रेत योनि प्राप्ति का कारण तथा उनके भोजनादि का कथन ।

(८) पृ० ४७ से पृ० ५१ तक—अष्टम अध्याय । कलियुग में नियत सौ वर्ष पूरी भी आयु न होने का कारण । षड्षा भेद वखेन । पांच वर्ष तक की षड्षा के पापों में फंसने-भागने का विधान । गर्भ तथा गर्भ से बाहर प्राप्ति हो मरने वाले जीव की संक्षेपि का विधान ।

(९) पृ० ५२ से पृ० ५७ तक—नवम अध्याय । घट कर्म सर्पिणों कर्म तथा वर्ष दिन तक पिंड दान करने का वखेन । स्त्री के सती होने का फल ।

(१०) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—दशम अध्याय । मनुष्य की क्रिया का कथन तथा उसके संबंध में परलोक सुख वखेन । एकबाहु का आख्यान (राजा के प्रति प्रेत की स्तुति) ।

(११) पृ० ६५ से पृ० ६९ तक—एकदशम अध्याय । उक्त आख्यानान्तर्गत प्रेत आद्य वखेन ।

(१२) पृ० ७० से पृ० ७३ तक—द्वादशम अध्याय । दान महात्म्य वखेन ।

(१३) पृ० ७४ से पृ० ७८ तक—त्रयोदशम अध्याय । शरीर भेद वखेन ।

(१४) पृ० ७९ से पृ० ८७ तक—चतुर्दशम अध्याय । जीव उत्पत्ति वखेन ।

(१५) पृ० ८८ से पृ० ९४ तक—पंचदशमोऽध्यायः । यम लोक वर्णन ।

(१६) पृ० ९५ से पृ० १०० तक—षष्ठदशोऽध्यायः । धर्म प्रवर्धन के लक्षण तथा पिंड प्रधान वर्णन ।

(१७) पृ० १०१ से पृ० १०४ तक—सप्त दशमोऽध्यायः । शैवादान की महिमा का वर्णन ।

(१८) पृ० १०५ से पृ० १११ तक—अष्टदशमोऽध्यायः । दाह संस्कार विधान तथा सूतक लगने का कथन । श्राद्ध-दानादि कथन तथा मिस्रति ।

(१९) पृ० १११ से पृ० ११८ तक—नवदशमोऽध्यायः वर्णन । घनशन व्रत वर्णन तथा घट दान का नियम और दान दिये जाने वालों की गणना । दान किसको दिया जाय, दानग्राहो का लक्षण ।

(२०) पृ० ११९ से १२३ तक—एकाविंशतिमोऽध्यायः । कैसा फलदान करने तथा कैसा नीर्थ करने से मोक्ष होता है । किस प्रकार का दान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

(२१) पृ० १२३ से पृ० १२७ तक—द्वाविंशति अध्यायः । सूतक निर्णय, चारों वर्णों में किस प्रकार सूतक लगता है (शुद्धाशुद्ध वर्णन) ।

(२२) पृ० १२८ से १३१ तक—त्रिंशेमोऽध्यायः । (मोक्ष वर्णन) सकाल मृत्यु तथा अन्य प्रकार की मृत्युओं का वर्णन ।

(२३) पृ० १३६ से १३९ तक—चतुर्विंशतिमोऽध्यायः । वस्त्र विधि वर्णन ।

(२४) पृ० १४० से पृ० १४५ तक—पंच विंशतिमोऽध्यायः । मुहूर्त करने वाले के फलादि का वर्णन । पापियों को वेनि प्राप्ति का विधान ।

(२५) पृ० १४५ से पृ०.....तक—वैतरणी नदी के वित्तारादि का वर्णन । गोदान विधि, गङ्ग पुराण अथर्व विधि ॥

No. 480. Garuḍapurāṇa-Bhāṣā. Leaves—72. Dated in Samvat 1924 or A. D. 1867. Deposited with Paṇḍita Murlidhara Dube, Village Laharapura, District Sitāpur (Ondh).

Beginning :—श्री मणेशायनमः॥ अथ गङ्ग पुराण लिख्यते ॥ श्री भगवान् सारं संसार विषयं वृक्ष रूपो सदा विराजते ॥ कैसा तावृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद पुराण शाखा है कृतफल है मोक्ष फल है कैसा वृक्ष स्वरूपो भगवान् है तिनके चरणारविन्द को सदा जय रहो ॥ हे वैकुण्ठ नाथ तुम्हारे प्रसाद कहें ते कृपा से

तोनों लोक देवे हैं । उत्तम स्थान भुवर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जन-लोक, तपलोक, सत्य लोक, प्रथमलोक अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल मध्यम मनुष्य लोक ते सब देवे हैं ॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्य लोक तारि है प्रभु मैं सर्व लोक देवे एक भय पुरो विना सो मनुष्य लोक के प्रचुर कह भांति यमलोक को जाते हैं ॥ मनुष्य देह सर्व योनि में श्रेष्ठ है भुक्ति भुक्ति का दाता है पुन्य आत्मा जोय है जिन मनुष्य देह पाई है सो मनुष्य समान न भूत न प्राणी कोई न हुषो न कोई दीनदार हो । गायति देवता मनुष्य जन्म को महिमा गावत है धनैक जन्म के पुन्य के प्रभाव करिके मनुष्य देह पाई है ते धन्य हैं सो फल स्वर्ग लोक का दाता है और मोक्ष को देनदारा है सो मनुष्य देह है ॥

End :—है गढ़ जैसे धर्म को जोत है पाप जोते नहीं । सत्य की जीत है असत्य जोते नहीं । क्षमा की जीत है क्रोध की जीत नहीं जैसे विष्णु भगवान को सदा जीत रहे असुरन की सदा हार है उनको सदा लभ्य है निश्चय करिके । एक तो हरिमंगा भागीरथी ब्राह्मण ये तीन वस्तु संसार विषे सार हैं । जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान का नाम है सो मनुष्य सदा पवित्र है । मंगल रूपी भगवान का नाम है जिनके मन में पुंडरीकाक्ष श्री गढ़ध्वज बसे हैं उनके सदा मंगल है सुत जो सौनकादिकान सों कहत हैं सोसा वचन श्री भगवान को वचन सुनि के गढ़ जी के मन में बहुत हरष उपज्यो तब तीन पदक्षिणा कोनी । गढ़ जी ने भगवान को धानो सुनि के गढ़ जी को ज्ञान बहुत उपजो या कथा को सुनि के सोसा यह प्रेम को कथा ध्वज करै जिनको यम लोक को भय कबहुं व्यापे नहीं श्री भगवान गढ़ का संवाद है यो कथा सुत जो ने नैमिषारन तिषे ८८००० हजार रिपोश्वरन को शौनिकादिकन को सुनावत हैं या कथा को चितु लाय के हेत करिके सुनो जाके सर्व पाप जोत रहैं । और दया उपजै धर्म करिके जय रहै सहस्र अश्वमेधयज्ञों को बराबर पुन्य है और सेवक री वाजपेय यज्ञों को बराबर यज्ञों को फल है करवाने वालों को और कथा के सुनने मात्र करिके संपूर्ण धर्म करि दिया इन मनुष्यों ने निश्चय करिके सब जानियो इति श्री गढ़ पुराणे प्रेक्ष कल्पे षष्ठादशके साहस्रं सहितायां उत्तर खंडे कृष्ण वैतथ्य संवाद जन्म देष सूचनो नाम चतुर विंशोऽध्याय संवत् १९४७ पौष सुदो चतुदश्याम शुभ्र या इष्टं पुस्तकं दृष्टवाताहं लिख्येत मया यदि शुद्धम शुद्ध वा ममदेषो मदीयते ॥ लिपि मारणीयर पंडित

Subject :—गढ़पुराण भाषा (मनुष्य के माने पर क्या होता है या उसकी गति किन कर्मों से क्या होनी चाहिये)

No. 481. Garuḍapurāṇa-Satīka. Leaves—84. Deposited with Paṇḍita Mahāvīra Pāṇḍo, Village Sagarāmapura, Post Office Madhauganja, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गरुड़ पुराण सटीक लिप्यते ॥ श्री गरुड़ो वाच ॥ धर्म इह बद्ध मूला वेद स्कंध पुराण शाखाद्वय कृत फलमो मोक्ष फलो मधुसूदन पादयो जनयति ॥ १ ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ भगवत् प्रसादाद्भूकुण्डं त्रैलोक्यं सचराचरम् मया विलोकितं सर्वं भुत मध्यमथ्यम् ॥ २ ॥ भूलोकात् सप्त पर्यंतं पुरं याम्य विना प्रभो भूर्लोकोक्तसर्वं लोकानां प्रचुरं सर्वं जंतुषु ॥ ३ ॥

टीका ॥ श्री भगवान् सोई संसार विषै बृक्ष सख्यो सदा विराजै हैं कैसो ता बृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंध है पुराण शाखा है कृत फूल है मोक्ष फल है ऐसो बृक्ष स्वक्यो भगवान् है तिनके चरणारविंद को सदा जय रहै ॥ १ ॥ हे वैकुण्ठनाथ तुम्हारे प्रसाद कहैते कृपाते तौनों लोक के देये हैं—उत्तम स्थान भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्ग लोक ३ महर्लोक ४ जन लोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ अघम । नीचे के लोक पतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६ पाताल ७ मध्यम ८ मनुष्य लोक ते सर्व देये हैं ॥ २ ॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्यलोक ताई हे प्रभु मैं सर्व लोक देये एक यमपुरी विना सो मनुष्य लोक के प्रचुरः कइ भाँति यम लोक कूँ जात है ॥ ३ ॥

End :—अपवित्रेऽपवित्रेषु सर्वावस्थान्तो पित्रा वसरेत् पुंडरी काक्षं सर्वाङ्गार्यं तरुणि ॥ ३७ ॥ मंगलं भगवान् विष्णुं मंगलं गरुडध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरो ॥ ३८ ॥ श्री सुत उवाच : ॥ इति विष्णु यच्च श्रुत्वा गरुड़ो हस्त मानसः तं विष्णु त्रिपरिक्रम्य ज्ञानवान् सम जायतः ॥ ३९ ॥ यस्य मरण मात्रेण धर्म जयच्च दायानि भगवान् गच्छ पाप्याने कथा पापहरा परा ॥ ४० ॥ अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च कथा श्रवण मात्रेण सर्वधर्म कृता नितै ॥ ४१ ॥ इति

टीका.—मंगल भगवान् को नाम है जिनके मन से पुंडरीकाक्ष श्री गरुडध्वज वसे हैं उनके सदा मंगल है ॥ ३८ ॥ जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान् को नाम हैं सो मनुष्य सदा परियज है ॥ सुत जो सौनकादिकन सँ कहत हैं ऐसो वचन श्री भगवान् को सुनि गरुड़ जो के मन में बहुत हरष उपर्यो तब तौनि मदासिना कोन्हों गरुड़ जो को भगवान् को वाणी सुनिके गरुड़ जो के ज्ञान बहुत उपर्यो या कथा कूँ तुजि के ॥ ३९ ॥ ऐसो बड़ प्रेत को कथा श्रवण करै तिनको यमलोक को मय कवहु व्यापे नहीं । श्री भगवान् गरुड़ को संबाद है । जो कथा सुत जो ने नैमकारव्य विषै गठासो सइस ऋषि स्वरन कूँ शौनकादिकन कूँ

सुनावत हैं या कथा कृत बित लावकें देत करके सुखे जाके सब पाप जात रहै
 पार दया उपजे धर्म करिके जय रहै जय होय ॥ ४० ॥ सहस्र पदवमेघ यज्ञों को
 बराबर पुन्य है पार सैकरों पावयेय यज्ञों को बराबर फल है—करवाने वाले
 कृं, पार कथा के सुनने मात्र करिके संपूर्ण धर्म कर दिया उन मनुष्यों ने निदखे
 करिके सब जानिये ॥ इति श्री गणेश पुराणे प्रेत कल्पे टोकायां पष्ठादशोक्त
 सहस्रं संहितायां उत्तर पंड कृष्ण वैतेय संवादे जन्म देव सूचनो नाम बड
 खिद्योऽध्याय ॥ ३४ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—प्रथम अध्याय ।
 प्रेतोत्सर्ग करने का आदेश, उसका फल पार करने के साधनकारी ।

(२) पृ० ७ से पृ० १६ तक—द्वितीय अध्याय ।

दानादि क्रिया जो अपने हाथ से अथवा सर्वपियों के हाथ से कराई
 जाय; वेत में अथवा अचेत में कराई जाय उसका फल । उत्सर्ग विधि, पिंड
 दान विधान, वमलाक के मार्ग में पड़ने वाले पुं । मार्ग में पितृ का पश्चात्ताप ।

(३) पृ० १६ से पृ० २१ तक—तृतीय अध्याय ।

मांसिक श्राद्ध का फल, शौचिपुत्रादि पितृ के विक्षाम स्थान, उनको मयं-
 करता तथा उससे विमुक्त होने के लिये विप्रसादि क्रियाओं का विधान ।

(४) पृ० २१ से पृ० २५ तक—चतुर्थ अध्याय ।

वैतरणी इत्यादि के दुःख तथा उनसे विमुक्त होने के उपाय ।

(५) पृ० २६ से पृ० २९ तक—पंचम अध्याय ।

दान के पदार्थों का वर्णन; बड़े-बड़े इज्जत नरकों के नाम; पापों को
 परिभाषा, पार उनके लिये पिडादि विधान ।

(६) पृ० ३० से पृ० ३२ तक—षष्ठम अध्याय ।

प्रेत कथन, चित्रगुप्त के मंदिर का वर्णन, पुनायुक्त कर्म फल ।

(७) पृ० ३३ से पृ० ४१ तक—सप्तम अध्याय संस्थापन)

प्रेत वास वर्णन अथवा उनका द्वारा अनेक प्रकार को पोढ़ाये तथा प्रेत यानि
 पाने का कारण ।

(८) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—अष्टम अध्याय ।

प्रेतों के लक्षण, उनकी मुक्ति का विधान, नारायण बलि का फल व
 विधान ।

(९) पृ० ४७ से पृ० ५० तक—नवम अध्याय ।

मनुष्य के निज कर्मों के कारण बल अथवा अधिक होने का कारण ।

- (१०) पृ० ५१ से पृ० ५३—दशमोऽध्यायः ।
मृतक के लिये पुराण विधान ।
- (११) पृ० ५४ से पृ० ५९ तक—एकादशोऽध्यायः ।
दोष दानादि विधान । पुत्र निवेद्य ।
- (१२) पृ० ५९ से पृ० ६७ तक—द्वादशोऽध्यायः ।
सर्पिडि सति महिमा ।
- (१३) पृ० ६८ से पृ० ७१ तक—त्रयोदशोऽध्यायः ।
ऊर्ध्व देह क्रिया, वज्रवाहन राजा का आख्यान ।
- (१४) पृ० ७१ से पृ० ७७ तक—चतुर्दशोऽध्यायः ।
ऊर्ध्व क्रिया का विधान, प्रेति येनि पाने का कारण ।
- (१५) पृ० ७८ से पृ० ८२ तक—पञ्चदशोऽध्यायः ।
कपिला दान तथा यज्ञोपवीत धारण फल; मृत्यु के समय के दान ।
- (१६) पृ० ८२ से पृ० ८६ तक—षष्ठदशोऽध्यायः ।
विविध दानों के विविध फल, शरीर वर्णन ।
- (१७) पृ० ८७ से पृ० ८९ तक—सप्तदशोऽध्यायः ।
शुभपुराण वर्णन ।
- (१८) पृ० ९० से पृ० ९३ तक—अष्टदशोऽध्यायः ।
शरीर विपत्ति वर्णन ।
- (१९) पृ० ९४ से पृ० ९८ तक—एकोनविंशोऽध्यायः ।
स्त्री के गर्भ का वर्णन, शरीर वर्णन ।
- (२०) पृ० ९९ से पृ० १०२ तक—विंशोऽध्यायः ।
जन्तोत्पत्ति लक्षण ।
- (२१) पृ० १०२ से पृ० १०७ तक—एकविंशोऽध्यायः ।
यमपुरी, पुण्य वर्णन ।
- (२२) पृ० १०८ से १११ तक—द्वाविंशोऽध्यायः ।
यम मार्ग कथन ।
- (२३) पृ० १११ से पृ० ११६ तक—त्रय विंशोऽध्यायः ।
शय्यादान कथन ।
- (२४) पृ० ११७ से १२१ तक—चतुर्विंशोऽध्यायः ।
सर्पिडो कारण ।

- (२५) पृ० १२२ से पृ० १२३ तक—पंचविंशोऽध्यायः ।
 भ्रातृ विधान, भ्रेतृ पंचक दोष, सृतक वार्ता वचन ।
- (२६) पृ० १३० से पृ० १३४ तक—षट्विंशोऽध्यायः ।
 पितृ निवेद्य वचन ।
- (२७) पृ० १३४ से पृ० १३८ तक—सप्तविंशोऽध्यायः ।
 शालिग्राम महिमा वचन ।
- (२८) पृ० १३८ से पृ० १४१ तक—अष्टविंशोऽध्यायः ।
 कुमदान महाव्य, तथा कुमदानादि पात्र वचन ।
- (२९) पृ० १४१ से पृ० १४५ तक—एकोनविंशोऽध्यायः ।
 नारायण बलि विधि कथन ।
- (३०) पृ० १४५ से पृ० १४९ तक—त्रिंशोऽध्यायः ।
 नारायण बलि अष्टोदश पदादि का वचन ।
- (३१) पृ० १४९ से पृ० १५१ तक—वक्त्रविंशोऽध्यायः ।
 वृणोत्सर्ग विधि ।
- (३२) पृ० १५२ से पृ० १५७ तक—द्वाविंशोऽध्यायः ।
 वृत्ति सूतक वचन ।
- (३३) पृ० १५७ से पृ० १६१ तक—त्रतिंशोऽध्यायः ।
 वैतरणीदान विधि ।
- (३४) पृ० १६१ से पृ० १६८ तक—चतुर्विंशोऽध्यायः ।
 कृष्ण वैतथेय संवाद, जन्मदेव स्तवन ।

No. 482. Ghodon ka Ilāja. Leaves—90. Deposited with Pandita Rāghavarāma, Teacher, Primary School, Āmāmaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—

पृष्ठ ५

चार बरस की उम्र तक घोड़े से काम न लैना चाहिये क्योंकि उस समय काम करने से जवानों में चक्का काम नहीं कर सकते । सिर्फ लयाम का उनके अभ्यास कराना चाहिये ।

दूसरा अध्याय

जिम्हें घोर कुम्भेत का वधान ॥ जिम्हें नाम बोचे लिखे जाते हैं वे घोड़े सख्तो होते हैं—लैते मगली, लाजो, चरबी, खुपसायी, रपाकी, बमन, तुके,

तातार, खुतन, घदने, चीन, गां चीन, तुंग, काबली, काशमोरी, ईरानी और मरायल और जो हिंद में हैं वे ये हैं—कठिगावाड़, भोटिया, रंगपुर, बोड़ा घाट, जहाँ कि छोटी खुंटों का होता है और इसको ये आदतें हैं कि जब तक तुम खबदोर न करले तब तक न कानों को दवाये न दाँतों से काटे न पुस्तकें मारे ॥

End :—

॥ तीसरी नुकसा ॥

जो बोड़ा मुंह ज़ेरो करे उसका इलाज ॥ चिरचिरे को जला फिर इसली का पानी मिला दहाने को पाँच छे बार बुझावे ॥ दूसरी ॥ लकड़ी का बाल मंगा कर चूड़ोंके होवे उन्हें गुलाब में घोस कर फिर उसी गुलाब में दहाने को सात बार बुझावे फिर उसी लनाम को लगावे ॥

॥ चौथी नुकसा ॥

जो बोड़ा दो पैरों से खड़ा हो जावे उसका इलाज ॥ सवार को चाहिये कि तर कपड़ा अपने पास रखे जब बोड़ा खड़ा होवे तब पानी कान में निचोड़ देवे ॥ दो बार दफा ऐसा करने से आदत छूट जाती है ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—प्रथम अध्याय सुत ।

(२) पृ० ५ से पृ० ३८ तक—हिंस तथा कुम्भेत की पहिचान, सग्य रोगों के घोड़ों की पहिचान, घोड़ों के सौन्दर्य की पहिचान, शकलों की पहिचान, दोषों की पहिचान आदि ।

(३) पृ० ३९ से पृ० ८६ तक—बोमारों के पैरों का पखेरा, बोमारियों की पहिचान; घात, पिष्ट और वायु की पहिचान; मुख परीक्षा, शींख की बोमारो तथा उनका इलाज, मुख संबंधी रोगों का इलाज, कोलास, बामनो का इलाज, सुफा और सोना बंद आदि का इलाज, बेल बंद नाम और बिनाम का इलाज ।

(४) पृ० ८७ से पृ० १२२ तक—किरम का इलाज, पट्टे फड़कने, बाप करने, बोर हड्डी, इन्दमान, बजरहड्डी, जानुप, हड्डी, मे, तड़े, पुस्तक और चकयल का इलाज, बैरा और काने का इलाज, रसीली, लुम संख्या बापायियाँ—खुरेगाह, कमर व पीठ के रोगों तथा सूजनी का इलाज, खिच व डुम संबंधी रोगों की बापायियाँ, खुजली बगैरह अन्य प्रकार के इलाज, नाक, दाँत और जवान संबंधी रोगों के इलाज, कुरकुरी का इलाज, तप का इलाज ।

(५) पृ० १२३ से पृ० १७० तक—दुषा और साबोज घोड़ों के बांधने, लाड़ने और मिलाने पिलाने संबंधी कुछ पादश । हाजमे आदि के चूरन व मसाला, कुछ गुलाब और दस्त बंद करने के नुसखे । बच्चे लने और हमल जायम करने की तरकीब, आस्ता करने की तरकीब, भरदम बनाता ।

(६) पृ० १७१ से पृ० १८० तक—दलालों की बोलो और हिकमत ।

(७) पृ० १८० से पृ०.....तक—सुत ।

No. 483. Gita Gadyānuvāda. Leaves—96. Deposited with Paṇḍita Durgā Prasāda Tivari, Bandha (Varipāl).

Beginning :—चौपुत्र ॥ साईं तनै महारथो पांडवनको तरफ के हैं यह हमारो कोइ केई ते तुम सुनहु ॥ संजय उवाच ॥ तब संजय रोमो सर राज घूत राहु जुसों कहत हैं ॥ के सुनौ हो राजा कौरावन का खान्या विषैं सब दल ग्यारा छै।हनी जुरत भये ॥ छत्र धारो मुकट बंद राजा जर जोधनको तरफ जुरैई कुर छेज विषै ॥ तिनमें महारथो कहो जत है ॥ ते तुम सुनहु ॥ तब राजा जर जोधन यह राजा दुस्सासन और भग दंत राजा और राजा करन और राजा कोरत यह राजा वरम यह राजा संल । यह राजा भोषम पितामह यह दौना चारज गुरु सो इतने महारथो जर जोधन को तरफ भये ॥

End :—रात बादो काहुसों हत बैठन करै वन तप ॥ सांचो बोलै जाके बोले और को काज होइ अपुन पढ़े और पै पढ़ावै सो वन रूप तप कहावै ॥ अथ मान तप ॥ मन प्रसन्न इन्द्रो वस्य ॥ सत्य बादो मौजसो रहिजै तासो मान तप कहावै ॥ राजसो कहियतु हैं ॥ अरु कोनै फल-कोऊन बांछो ये सातु कभाव तप कहिये ॥ अपने तपको बढ़ाई करै दम लालचो सुताको राजसो तप कहिये ॥ अथ तामसो तप ॥ दठ धर्म कोजै और को दुख होइ अपने सतोर को सुख होइ सो तामसो तप कहावै अथ तौन भोति के दान क इति ॥

No. 484. Grahano-ki-Pothi. From Samvat 1927 to Samvat 2012. Leaves—32. Dated in Samvat 1938 or A. D. 1871, Samvat 1931 or A. D. 1874. Deposited with Paṇḍita Badriprasāda, Village Navinagara, Post Office Laharapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गार वल्लभाच्चिदानंदायनमः ॥ सर्वे चन्द्र ग्रहण लिप्यत । संवत् १९२९ वि० से संवत् २०१२ वि० तक ॥

चंद्र ग्रहण

संवत् १९२९ शाके १७९४ वैशाख १५ बुध ५८ । ५७ । १०८ चक्र ३२ वारविः
१ । १० । ११ । ४५ गः ५७ । २८ चंद्र ७ । १० । ११ । ४५ । ८ । ३७ । ३९ । राहु
१ । २१ । ११ । २८ व्यः ११ । १९ । ०० । १७ भुज १० । ५९ । ४३ अर १७ । १६६० च ।

वि० ११। १६। कु २९। ११ मा. ख. २०। १३ मास २। ५७ स्वर्श १। ५६।
१० मास १। ४ च ४। द. मा. २। ५७। ५। ५४

सूर्य ग्रहण

संवत् १९२९ वि० शाके १७१४ अष्ट ३० गुरौ ४। ४३। १२३ चक ३२ रविः
१। ३३। ३५३। ५७। १३ चंद। १। २३। ३। ५३। ७४। ३। २१॥ राहु १। २०
२७। ४। ५। २। ३६। ४२ लंबन ३। ३१। सृ. स्पष्ट शरद। २४ द. सृ. वि. १०।
२४ चं वि. १०। ३ मा. ख १०। १३। मास ३। ४९ स्वर्श ५८। ३९ मास. २।
४० व. ३। २४ उक्त मासा. ४। ४४। ४। १६

End :—

सूर्य ग्रहण

संवत् २०१२ साके १८७७ आषाढ ३० से० मी० ११। ३८३. २३। ३९
च रविः २। ४। ४२। ५२ मति। ५७। २ चं. २। ४। ४२। ५२ मति। ५। २ रा.।
८। ३। ९। ६॥ व्य. गु.। ६। १। ३। २। ४६ वि भान। ६९। ९ लं. २। ३५
सृ. स्प. ८ शा ५। १३ वा न्य सृ. वि० १०। २१ चं. वि. ११। ३१ मा. स्प. १।
५७ मा. ५। ४४ लि. २। १६ स्प.। ५। ५१ मास १२। ३९ व. ३। २। ५८ उक्त
मा. ५। ३६॥

चंद्र ग्रहण

संवत् २०१२ साके १८७७ कार्तिक १५ मौमे. ३९। १८३ २५. १ चक ३९
रविः ७। ७ ३१। ४६। ५६। ५५ चं. १। १३। १०। ५६ म. ८४९। ४७ राहु ७।
२४। ३२। २५ स्पः १७। १८। ३८। २० भुज ११। २१। ३९। शर १७। ५१ मा.
चं. ११। २९ कुं २९। २३ मा. २०। २६ मा. २। ३५ वि २। १७ स्प. ३७।
२१। मास ४१। ५५ वल. १। ३७ उ. मा. शा २। ५॥

इति ग्रहणावली संपूर्णम् समाप्तः लिखतं हरद्वार्दे निवासी पंडित शासोराम
सं० १९३१ वि.।

Subject :—संवत् १९२९ वि० से सम्यत् २०१२ तक के सूर्य और चंद्र
ग्रहण वर्णन ।

No. 485. Grahano ki-Pustaka. From Samvat 1929 to
Samvat 2012. Leaves—40. Dated in Samvat 1938 or A. D.
1871—Samvat 1984 or A. D. 1877. Deposited with Pandita
Gaṅgāviṣṇu Jyotishī, Village Banthara, District Unnava
(Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः । श्री गारुड सहस्रनामः ।
सूर्य चन्द्र ग्रहण लिप्यन्ते ॥ चन्द्र ग्रहण संवत् १९३९ शके १७९४ वैशाख १५
बुधे ५९ । ५३ । १०८ चक्र ३२ रा रवि १ । १० । ११ । ४५ म. ५७ । २७ चन्द्र
७ । १० । ११ । २७ ॥ ८३४ । ३९ राहु । १ । २१ । ११ । २८ म. ११ । २९ । ०० ।
२७ बु. १० । ५९ । ४३ शर १७ । १६ । द. चं. वि. २१ । १६ कु. २९ । ११ म.
चं. २० । १३ मास ३ । ४९ स्वर्ग ५८ । ३९ मोक्ष २ । ४७ वं. ३ । २४ उत्त
पाशा २ । ५७ । ५ । ५४ ।

सूर्य ग्रहण संवत् १९२९ शके १७९४ ज्येष्ठ कृष्ण ३० गुरो ४ । ४४ १२३
चक्र ३२ रविः १ । २३ । ३५३५७ । १३ चं. १ । २३ । ३ । ५३ । ७७ । ३ । २१ रा.
१ । २० । २७ । ४ व्यय २ । ३६ । ४९ । लंवन ३ । २१ काल्यष्टशर ६ । ३४ द. स
वि १० । २४ चं. वि. १० । ३८ मा. ४ १०५ । २३ । मास ३ । ४९ स्वर्ग ५८ ।
३९ मोक्ष २ । ४७ वं. ३ । २४ उत्त ४ । ४४ ४ । १६

End :—(चन्द्र ग्रहण) संवत् २०११ वि. शके १८७६ अषाढ १५ बुधे
। ३४ । ४२ चक्र ३२ रवि २ । २९ । २६ । १४ मतिः ५७ । चं. ८ । २९ । २६ । १४
मति ७७२ । ५३ रा । ८ । २१ । ७ । ४७ व्ययुः ६ । ८ । १८ । २७ शर १३ । २
यामा चं. वो १० । ३२ । कुं २६४४ मा खं १८ । ३८ मा ५ । ३६ स्थि. ३ ।
२० स्थ ५६ । ५८ मो ३ । ३८ चं १ । १ द. पाशा ४ । १८ प्रस्तात्म ॥

(चन्द्र ग्रहण)

सं. २०१२ शके १८७७ अषाढ ३० सौम्ये ११ । ३८५ । २३ । ३९ चं. वि.
२ । ४ । ४२ । ५२ । म. ८५० । २ रा. ८ । ३ । ९ । ६ । व्ययु ६ । १ । ३ । २ ।
४६ त्रि मोन ६९ लं. ९ । २ । ३५ स. स्व. ८ शर ५ । १३ याम्य स वि. १० । ११
चं. वि. ११ । ३१ मा. चं. १० । ५७ मा. ५ । ४४ स्थि. २ । २६ स ५ । ५१
मा. १२ । ३९ वं. ३ । ५८ उत्त. मा. ५ । ३६ ॥

(चन्द्र ग्रहण)

सं. २०१२ शके १८७७ कार्तिक १५ मौमे ३९ । १८५ । २५ । १ चक्र ३२
रवि ७ । ७ । ३२० । ४६ । ५६० । ५५ चं. १ । १२ । १० । ५६ म. व ४९ । ४७
राहु ७ । २४ । ३२ । २५ व्य. १७ । १८ । ३८ । २० मुज ११ । २१ । ३९ । शर
१७ । ५१ या चं वि ११ । २९ । कुं. २३ मा. २० । २६ मा २ । ३५ स्थिर
२ । १७ स्थ. ३७ । २१ मो ४१ । ५५ बु. लं. १ । ३७ उ. पाशा २ । ५ ॥ इति श्री
लोकानाथार्य कृत ग्रहणा वली समाप्त मितो माघ सुदी १५ सं. १९३७ वि. ० ।

Subject :—अवध १९२९ से संवत् २०१२ वि तक सूर्य ग्रहण वली ॥

No. 486. Haratāla Śodhana. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—हरतार लेइ तावको पांच पन सून एक पन यहि विधि घालु । बल बारि घसि कली करै एक पहर जो चति बरदाइ ॥ ता पाछे गोबो के पान नीर काहि के कान ॥ वास सो खरै यहि भांति बारह पहर जाइ जब बोति । बहुरि सुपै के सोसो भरै । मुद्रा के पुनि सुपन धरै । पत्र बालुका में सो धरै । भागि पहर है मदी करै पुनि चढ़तो चढ़तो देइ भागि । सोइ पहर दैव दिन जानि पाठ पहर जो छौ वैन को घंसे सोसो सोनल होइ । तब सोसो देखिये उतारि सातु पासे डरि लागै नारि । लोजै फेरि कहरी फारि फिरि बाढी रस बल बढ़ारि परछै फेरि पाछिली मर जाइ । संक्या तैसो कहाँ है पादि ।

End :—याको है पन्द्रह को भागि पुनि बाधधि उडि लागै नारि । बहुरि पलकै ग्यारह जाय ग्यारह यह भागि दे काम । इहि विधि पहर व भागो चौदह सोसो बैसाइ । यहि विधि तार तन सिंध जो होइ चौदह दिन तंदुल भरि खाइ नासै कुछ बुरो बतारै । तोन्या उवर तेह संख्यपात ॥ अथस्मार छिन लागै जात चौर बाठ चौगसो जाइ जाय ते सब नासै तेते । जे सुम कर्म होइ ते तेने । सबे स्वेत हार के बिघने जो तहारि बैठै हरतार तो नीने दूटै करतार ॥१॥ लैहसार तार टंक चालोस । घात्री गंधक मासे २० दौऊ बांदि छु रत के धरै । धृत सान के चदिया करै । छुपरि लुदेडा धरिये माहि दस पल धृत में लिये ताहि । भागो धोइ मदी करै पुनि उठाके सोसो भरै । जावराता दोसै हरतार तब उतरि के पानो घालु । ताल केरिया नाम याके बाये बाई काम तेह सम्य चौरासो वा चौर बैनै रक्त चिकार ॥२॥ अथरान विधि महा-रागु भरिये घंसे सामानि को बानै तैस । रागु परिया देइ चढ़ाइ ॥ तामे दै ऊजवाइनि पाइ । दाख लकरिय हारै सो पहर है मै भस्म जो होइ । ऐसो भांति मंगल जानि ऐसेई अखिली की छाकाटि २ के अथरा घालि उजल भांति होइ गो बंगु वा बाये बनिता सो रंगु । राग पत्र कोजै पातरै । सोय व चिचरन मौलै धरै पुरत पन ले वेवै घंसे गेद करै राम पल ५ चिचारा पल २० ।

Subject :—हउमल के शोधने की विधि ।

No. 487. Hastarekhāvicāra. Leaves—8. Deposited with Rāmaprasāda Murāṇ, Village Parāvisrāmādāsa, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—ओ मते रामानुजायनमः

अथ तः से प्रवक्ष्यामि हस्त रेखा विचारणं ॥ दक्षिणे पुण्यं श्वैव वामे धाम कर-
स्तथा ॥ १ ॥ शिषो कर्तव्यं सामुद्रं कर रेखा शुभा सु शुभं लो पुण्यो वापि

सामुद्रिक लक्षणं जया ॥ २ ॥ जस्य भोजनं समा रेषा करम सिद्धिश्च जायते धना-
ख्यस्तु सविज्ञेयो बहु पुत्रैः न शंशयः ॥ ३ ॥ तुला ग्राम तथा वज्रं कर मध्ये च
दृश्यते तस्य वनिज्य सिद्धिस्तथा स्वरूपस्य न शंशयः ॥ ४ ॥ पद्म चापादि खड्गं च
अष्ट कोणादि स्त्रियो पुरुषो वापि धनाख्यस्य सुखो नरः ॥ ५ ॥ शंख चक्र ध्वजा
कारो नदा कारोच दृश्यते सर्व विद्या प्रदानेन बुद्धिमान नसे भवेत् ॥ ६ ॥

सात आदि अष्ट अंत दस , इतन शंख लपाय ।

राजा कहिये दास को , चक्रे निशान बजाय ॥ १ ॥

एक सोप धन बंत नर , चारों ताहो जानि ।

चारु ते जो अधिक है , महा तेज सो मानि ॥ २ ॥

पहुंचा रेखा एक राजा गति जानिए ।

पहुंचा रेखा दोय वकता बषानिए ।

पहुंचा रेखा तीन महा सुप्रथाम है ।

पहुंचा रेखा चारि दग्दिनी नाम है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

हरिहर नप जा पुरुष को , सो पापी नित्य जानि ॥

सदा दुखी वह नर रहै , सामुद्रिक मत मानि ॥ ४ ॥

जासु पुरुष को सुरूप नप , तेजबंत सो होइ ।

महा दुखी सो जानिए , आसित रंन नप कोइ ॥ ५ ॥

X	X	X	X
X	X	X	X

Subject :— (१) पृ० १ से पृ० २ तक—संस्कृत में हस्तरेखा का फलाफल बर्णन ।

(२) पृ० २ से ३ तक—हिन्दी भाषा में उक्त विषय का पद्यानुवाद ।

(३) पृ० ३ से ४ तक—संस्कृत में कथा तथा स्त्रो को हस्तरेखाओं के फलाफल का बर्णन ।

(४) पृ० ५ में—मणिर्बच नामक हस्तचित्र ।

No. 488. Hitopadesa. Leaves—54. Deposited with Rāma-
gopāla Vaidya Murāo of Alikātāla, Post Office Pariyavā,
District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—

दोहा—भावी मिटे न भाव को , कारण कहन पाय ।

नील कंठ नाते फिरै , अहि लावत हरि भाव ॥

विद्या वित्त धन आयुबल, मरण जन्मये पांच ।
मर्मन्त्रये विधि लिपित है, नर नारिन के सांच ।
मनहोनों होनों नहीं, होना होय रदै न ।
यह चिंता विष दह बढ़गे.....दण्डये....न ।

॥ चौपाई ॥

जो कारज को घातम होई । यहि विधि बचन कहैगो सोई ॥
भरजन करत आयु बलसाई । ताको संपति रदै न जाई ॥
येक चाकृगत रथनहि होई । पुरषा रथ धन लहै न कोई ॥
पूर्व जन्म कियौ सो धर्मा । सोई भाग्य कहावै कर्मा ॥
ताते भाग्य चहो अनुकूल । जतन करो पुरुषारथ मूल ॥
ज्यौ माटी करता कर लेई । कोन्दौ चढ़े सोई करि देई ॥
यह उपमान लोग सब गावैं । जैसा करै सोतैसा पावैं ॥

॥ दोहा ॥

भाग्य मेरोसे मंद कह, पुरुषारथ तजरोष ।
जतनकिहे जौ ना मिलै, ता ये है निज दोष ॥

End:—

पृष्ठ—१०८

राजा कही कथा यह कैसी । बायस कही सुनौ है जैसी ॥
कहुं येक बन पन्नग रहै । मंद घिसर्प नाम तेहि कहै ॥
सो घसक मधु ठेठि न सकै । परवै ताल तारहि सब तकै ॥
देशि दुरि दादुर कह्यौ । क्यों परिवर घबसत तुम गह्यौ ॥
कहो सांपु सुनि दादुर जैमे । मंद भाग मेरो यह है.... ॥
पुनि दादुर सादर ह कहौ । कहौ कही मनमें तुम गह्यौ ॥
कृया कहन पन्नग ठव लई । जो अपने सुभाव ते भई ॥
बसै ब्रह्म पुर कौड़िय नाम । प्राज्ञन ब्रह्म तेज को घाम ॥
बीस वर्ष को बाको बालक । मंद काटा सब गुन को पालक ॥
छद्मन मुये किये हिज सोक । पाये सुनि सब बंधन लोक ॥

रत में दुष में दुमिष में,

राज दुष्मार मसान ।

बाहूँ बेर विरोध में,

टिकै सो बंधु प्रमान ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २ तक—छुन ।

(२) पृ० ३ से पृ० ६ तक राजा का विष्णु शर्मा से सपने पुत्र के मुखरत्न को समझाकर उसके विद्याध्ययन संबंधी प्रस्ताव को रखना । विष्णु शर्मा को स्वीकृति तथा बालक को विभिन्न कथाओं का सुनाना । राजनोक्ति को कथा सुनाने की प्रतिष्ठा ।

(३) पृ० ६ से पृ० ३८ तक मित्र लाम की कथा । वायस, कपोत, मृग तथा चूहे की मित्रता के लाम को कथा ।

(४) पृ० ३८ से पृ० ६८ तक—सुहृद भेद । वृषभराज तथा सुगराज की कथा ।

(५) पृ० ६८ से पृ० ९६ तक—विग्रह को कथा, तृतीय प्रबन्धः—चित्रवर्ण मार तथा राजहंस को कथा ।

(६) पृ० ९७ से पृ० १०८ तक—संज्ञि कथा बखेन (घण्टे) ।

(७) पृ० १०९ से आगे—छुन ।

No. 489. Hori. Leaves—20. Deposited with Pandita Lakshmikānta Kothivāla of Basuāpura, Post Office Lakshmi-kāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

॥ होरो ॥

सार्ध चलो मुम स्हामरो जग होरो मचि गहो है भारो ॥

किम पार्षद लये कर मै डफ दौ बड़हो बड़को तारो ॥

त्रिगुन तार तमूरा साजे भास तिहुना मतिधारो ॥

पाप पुन्य दोषत पिच कारो छोड़त है वारो वारो ॥

जे नल सन मुम दोकर पेछै तिनको छोट लगे कारो ॥

लोम मोह अभिमान भरे छै गंगा ऊपर द्वारो ।

राजापरजा जागो तपसी मौजि रही सबहा सारो ॥

कुहुवि मुनाल द्वार मुम मोड़ो काम कला पुटरो मारो ॥

लूम लूम पेलन भी चलि सारे काहु सौ नार्ही द्वारो ॥

अह चेतन दो रूप सम्हारे एक कनक दुजे नारो ॥

पांच पचोस लये संग सबला हंसि हंसि भाषत है मारो ॥

जुनुरा नल दै फगुपा छूँ मूरुष को लागत प्यारो ॥

चरनदास सुषंद कहत है निरगुन ग्यान गलो न्यारो ॥

End :—

॥ होरो ॥

होरो पेलत कुंज बिहारो हो हो बिहारो ॥

सधन कुंज नन सोवट केट द्वारि भारि बजनारो ॥

हंसि मुसिक्यात कहत प्रोतम सौ खेलहु फाग बिलाहो ॥
 बिलाह कहायत भारी ॥ चौथा चंदन पतर परगजा ॥
 कुम कुम केसर गारी प्रबीर गुनाल लियै भर भोरी ॥
 कर कंचन पिच कारिरो चले सनमुख बनचारी ॥
 तकि पौर चाट करत कुम कुम को मित्रवत प्रनरंग सारी ॥
 मानहु जलद छटा भर भादौ बरसत घति सुप कारी ॥
 संग सब गाय कुमारी ॥
 भद्रा नंद मनन मनमें हंसि राधा जुगति विचारो ॥
 गहि किन लेहु वेगि मन मोहन माने नहि जाहि पुरारो ॥
 करौ बस मैं हितकारी ॥ कनकर कपट महेन्द्र मनन ब्याई भुंड मभारो ॥
 बंदो सिर इन भंजन पाजौ निरंजन मांग सम्हारो ॥ नचावत दै द्वे तारी ॥ फगुवा
 लेख कहत हरि हंसि हंसि जो मन पास तुम्हारी ॥ दरस बरस चाहत हरि प्रंतर
 कोविद पास तुमारी करहु कबहु मति न्याये ॥

Subject :—

पृ० १ से ४० तक—विविध सन्तों द्वारा रची गई होलियों का संग्रह ।

No. 490. Hridaya Prakāśa. Leaves—16. Dated in Samvat 1779 or A. D. 1722. Place of deposit B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purāni Bastī, Katni Murwārā, Jubbulpore (C. P.).

Beginning :—श्री जुगल कोशोरराय नमः श्री हिरे प्रकाश ग्रंथ लिखिते ॥

होहा—उदें साहि के सुतमय ॥ प्रेम चंद आनंद ॥
 तिनके मुख भागात हुंव ॥ तिनको चंपति मंद ॥ १ ॥
 चंपति संपति जक को ॥ लोन्ह दोन्ह दोन ॥
 गहै दाहिं मुनक सब ॥ साहनि सुकरि आन ॥ २ ॥
 चंपत के छव शालउव ॥ ठागुन चपर पार ॥
 मान कलि समान को ॥ मयो जयुं बुध सबवार ॥ ३ ॥
 प्रान नाथ सनाथ कोय ॥ कृप शाल सुत जान ॥
 हिदै हिदै साहै के ॥ दोन्हो मकि निदान ॥ ४ ॥
 अथ सत गुरु श्री देव चंद वरमन ॥ होहा ॥
 ठमर कोट ॥ नगर है ॥ दिसा पक्खिम सुम धान ॥
 दया धरम घति नरन के ॥ संत लेत विसराम ॥ ५ ॥
 का पय कुल में प्रगट हुव मत्त महता जानि ॥
 श्री देव चंद तिनके मय ॥ घाम वासना घनि ॥ ६ ॥

End :—वेद कहत बुव ग्यान कूं, देषत लगत भयान ।

अति गभीर गहरों कह्यो, काहुतें नहीं जान ॥ २५२ ॥

यह समझा सों कहत हैं, सब पर एकइ दृष्ट ।

विसद भाव तातें कहैं । सब के बोधक ईष्ट ॥ २५३ ॥

महैता कहते दूसरे । दूसर सोहन और ।

व्याकुं जैसा ग्यान है । ताको बल तिहि ठौर ॥ २५४ ॥

×

×

×

×

संवत सभे से सहि । प्रगट उनाशो शाल ।

वसंत पंचमी माघ की, पूर्ण ग्रंथ कुशल ॥ २५६ ॥

माया पुगे मुकाम है, सब विधि अधिक प्रनूप ॥

ताही में दस दिसन के, वस्तु पर्मे को भूप ॥ २५७ ॥

संपूर्ण शुभ मस्तु रचो लिख्यो जो ग्रंथ बनाई ॥

प्रेम नेम श्री कृष्ण पग श्री हृदेस गुन गार्ह ॥ २५८ ॥

नर्थ संपूर्ण ॥ श्री श्री श्री बाबा बेनीदास के चेला ।

श्री श्री श्री बाबा लालदास ॥ तिनके चरन रज श्री बाबा

रघुदास कृपा तिनकी ॥ लोपतें गर्बे संपूर्ण समा पतस ॥ २५९ ॥

Subject:—सृष्टि निरूपण तथा आत्म ज्ञान का उपदेश ॥

No. 491. Indrajāla. Leaves—12. Deposited with Thākura Badrīsīmha, Jamidāra, Village Khānūpura, Post Office Talābābaksī, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इन्द्र ज्ञान लिख्यते: प्रभुनो नक्षत्र पार सुनु वार वारहि वारवोचन जो भंगुन लाऊ कलार घर धरि साऊ । तुलत विनिनि मह जाय ७ भंगुल जो छादस जान । करि लेहु सुज्ञान प्रमाण ॥ पटवा के घर परि आवै तब पटवा कभिर आई । कह इन्द्रजाल सुनु माइ सुनि लेहु कविन की राइ । भरनो नखेत्र कोल भंगुल एक कोल घर न ऊका बीच मध्य भलाई । तब नऊका पार न जाइ । यह गुप्त मंत्र विचित्र सुनु रापु अपने चित्त कतिका नक्षत्र मद नाई । जम्बू की लकड़ी लायू, केतिकी करै उपाइ । नहि ताव आवै सुख कछु न लागै हाथ ॥

End :—प्राणह नक्षत्र कह जम्बक बांदा लाइ । कटिबांधी नर अपने गुल्म बवासीर जाइ । सब सुनु श्रवण नक्षत्र कह वर वस बांदा मित्र बांध पियन कह दोजिये गर्भ धरै सुनु चित ॥ ३९ ॥ सुनुहु धनिष्ठा कर सब भेषा । मुनि सन विहंसि कहहि हरिदेवा जब कर बांदा बहु सुख भाषा । बहूतौ दिव्य गुणोत्तम मन भाषा जायौ हाथ चनी धुनि होई । जानै चतुर मनुष्य जो कोई । और रोइणी

कर भेद बतावै । सुनु मुनि तुम सन कहत दुरावै ॥ महुवा कर वादा लै पावै
शिड राखी कह पाणि जगावै ॥ कटि बांधी ली लै जवही । मम न होय सुनु
मुनि तवही ॥ श्राद्धा ॥ उवा नक्षत्रहि पाविये । पीपर वांदा सोय ।

लै बधि कह पाणि नर रक्षा मोहन होय ॥ चतुरावा

No. 492. *Indrajāla (Mantrāvalī)*. Leaves—43. Deposited
with Paṇḍita Vindhēśvari Prasāda Miśra, Teacher, Samskrīta
Pāṭhaśāla, Village Gonda, Post Office Mādhoganja, District
Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेस जी सहाये श्री सरस्वती जी सहाये श्री काली
जी सहाये । श्री पोयी इन्दर जाल मंत्रा वली लिखवते ॥ मंत्र जपने की विधि ॥
इन्ह मन्त्रों को जब कोई मनुष्य किया चाहे तो उसको चाहिये कि पहिले अपना
बन्दोबस्त इस तरह से करे कि जहाँ मंत्र जपे उस स्थान में दूसरे मनुष्य को न
पाने दे और अपने चारों तरफ धूप दीपक और अंतर मीठा रखने फूल पान और
इस मंत्र को पहलू अपने ऊपर फूँकले और तीन लकीर पैचले और जब तक मंत्र
को जपे प्रासन से न उठे और न किससे बोले और न उस कुंड लकीर से बाहर
निकले फिर मंत्र का जब जप पूरा हो जाये उस वपत जो वीर बोले तो उसका
उत्तर देना चाहिये ।

मंत्र

हाथ वसे हनुमंत भैरों वसे लिलार जो हनुमंत टोका करै मोहै जग संसार ॥
जो पापे मारमार करता सो दीये पायल सेवा हनुमंत और पंजादे रहे महामदा
और खानी छोड़े श्रमों का और मारन समंत करे नारायन सोय और प्रणट साजे
भैरों और की पावकीरतो रहै जो हमारे ऊपर घाव घावै उन्ट हनुमंत और
उसी को मारै जल बांधु धल बांधु बांधु संतर ताया मन बांधु तन बांधु बांधु कुटुम
और कापा चेत चेतरे पानी हनुमंत और पाया ताई तरफ सवाई तपे लोहा कच
पड़े घाई लाल चक चंकी असमान छाया । हाँक ललकार हनुमंत की भगिनि
पानी हो जाय महाराजाधिराज बाब साहिब स्वयं के पुत्र धर्म के नातो तुम्हारा
हो आसरा है

End :— ॥ राज वसो करणम् ॥

श्री नमो भास्कराय त्रैलोक्या तमने षट्के महीपते मम वस्यं कुरु कुरु स्वाहा

॥ विधि ॥

रुज के पुण्य रविवार को लाये इस मंत्र को पहिले पुण्य को राजा को पचावे
तो बसो होये ॥ इति ॥

श्री बापू इन्द्रजाल संपूजन समाप्त जो पत्र में देण से लिखा मम देण न दीजिये पंडित जब से बिनती मोर टुटल चक्कर लंग समजारी: दसपत दे देपाल दास का मोकाम कलकत्ता जान बजार कैंरो स्कूल स्ट्राट ११ मंत्र देकान के मालिक पंचमराम कुरभी ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—मंत्र अपने को विधि। बला से बचने का मंत्र और उसको तरकीब। और सिद्ध करने का मंत्र तथा उसकी विधि। चौकी मोहमदा और की और उसको तरकीब। इस चौकी के उपयोग। चौकी सौकाबोर, विधि तथा उपयोग सहित।

(२) पृ० २ से पृ० १८ तक—बोरों का जंजीर, विधि तथा उपयोग सहित। मैरी को चौकी। जिन्नों तथा नबियों की हाजरात। नाहर चार तथा बिच्छू खादि बांधने का मंत्र। मुठी पोर की चौकी। चौकी हनुमन्त बोर, डाँकिनी खादि बकराने (तज्जने) का मंत्र। मंत्र सर्व सुख दाता। सर्वोपरि मंत्र-तंत्र। मंत्र ईद रक्षा का। मंत्र इन्द्रजाल।

(३) पृ० १९ से पृ० ४० तक—रसायन का मंत्र। ऋद्धि-सिद्धि का मंत्र। पृष्ठी में धरा धन दीवने का मंत्र, पृष्ठी खादने का मंत्र तथा तरकीब। मंत्र ईद रक्षा का जाप। मार्ग में साँप, चार, नाहर से बचने का मंत्र। मार्ग बाध के बांध देने का मंत्र, आफत टलने का मंत्र। हन बंधन का मंत्र। मेघ स्तंभन मंत्र। वधम प्राप्त होने का मंत्र। दग्धता नाश करने का मंत्र। रोजी प्राप्ति का मंत्र। क्रिये कराये के उतारने का मंत्र। रक्षा मंत्र। समस्त पोड़ा का मंत्र। दाँतों के कीड़ों का मंत्र। नेत्र को फूली कटने का मंत्र। नेत्र को रोशनी करने का मंत्र। नेत्र दुखने का मंत्र। नेत्र रोग का मंत्र। पेट को पोड़ा का मंत्र। डाढ़ को पोड़ा का मंत्र। ग्रीहा का मंत्र, पसलो पोड़ा का मंत्र। गर्भ स्तंभन मंत्र। बवासोर का मंत्र। अन्न पचने का मंत्र। आधा सौसो का मंत्र। जहर उतरने का मंत्र। नगरा का मंत्र। बिच्छू का, बावडे कुत्ते काटने का मंत्र। नाय मैस के कीड़ों का मंत्र। साँप काटने का मंत्र। मार्ग में घाराम पाने का मंत्र।

(४) पृ० ४१ से पृ० ६४ तक—पशु का कीड़ा फाड़ने का मंत्र, पैर चकने का मंत्र। शत्रु मुख बंधन मंत्र। सर्व मोहनों मंत्र। सुई छेदने का मंत्र। बवासोर फूटने का मंत्र। बाजोगर के तमाशे का मंत्र। कड़ाही बांधने का मंत्र। हाँडी में धाग न लगने का मंत्र। तुपक बांधने का मंत्र। तलवार बांधन का मंत्र। बर बांधने का मंत्र। घाव पुरने का मंत्र। शनी बांधने का मंत्र। मानमती के अन्य खेल। अग्नि बुझाने का मंत्र। जंत्र मंत्र और तंत्र दोनों के दूर करने को तरकीब। रोजी मिलने तथा धन को बृद्धि होने का मंत्र। रोजी व धन बढ़ने का मंत्र। बुद्धि कारक मंत्र। लक्ष्मीजी का मंत्र। कमळा का मंत्र। कुबेर का मंत्र (प्यान

सहित) । मनसा सिद्ध करने का मंत्र । व्यापार सिद्ध करने का मंत्र या व्यापार के द्वारा धन प्राप्ति का मंत्र । उपद्रव नाशक मंत्र । उपद्रव नाशक मंत्र छंट कारिणो । सहदेव कल्प मंत्र । विद्या का मंत्र । पढ़ी हुई विद्या न भूलने का मंत्र । मंत्र उचिष्ट नष्टप्राप्त । स्वप्न में कृष्ण का मंत्र । कुष्ठो जीतने का मंत्र । कीर्तिबोध का मंत्र । रुद्र का मंत्र । गणपति का मंत्र । कर्म विनाशिनो का मंत्र ।

(५) पृ० ६४ से पृ० ८६ तक—अष्ट मंत्रों की विधि । दस मंत्रसंस्कार । वटुक मंत्र । सरस्वती मंत्र । जुवा बड़ी का सर्वोपरि मंत्र । बगला मुखी मंत्र । (न्यास, ध्यान तथा मंत्र सहित) । श्वालामुखी का मंत्र । महालक्ष्मी का मंत्र । नजर का मंत्र । मूठ धामने का मंत्र । भूतादिक दोष निवारण मंत्र । गंडा बनाने का मंत्र । परियों का खलल दूर करने का मंत्र । किये कराये की रक्षा का मंत्र । भूतादिक दोष निवारण का अन्य मंत्र । उग्र मंत्र । नकसीर धामने का मंत्र । पाँच दुखने का मंत्र । सर्प काटे का मंत्र । भूगो का मंत्र । दाँत के कोड़े का मंत्र । आधा सोसो का मंत्र । बरबासो की रक्षा का मंत्र । जादू उतारने का मंत्र । राज यशीकरण ।

No. 493. Indrajāla-Vidyā. Leaves 22. Deposited with Pandita Bhātschandrajī Misra of Śitalanāṭolā, Post Office Malibābāda, District Lucknow.

Beginning :—धो गणेशायनमः ॥ यथ इन्द्रजाल विद्या लिप्यते ॥ दोहा ॥ इन्द्रजाल विद्या कही सुनियो चतुर सुजान । मारन मोहन बसि करन होर उचाटन जान ॥ १ ॥

चतुर होइ सो करै नर करै सो खुदे नाहि । चुकि जाइ तौ फेरि नहि वचै न बाहो लाहो ॥ २ ॥ चौपाई ॥ विद्या इन्द्रजाल की करै धोरज घरे नयन में डरै ॥ मारन मोहन सबै करावै । अपुहि घाप वचै जो वचावै ॥ फेरि उइन विद्या उहि चले । कोई फूल घन रिनु में फलै बसो करन उचाटन जानै ॥ कोई पैठ पतालहि पावै । कोई पावे सर्ग उठावै ॥ कोई करै दिवाना सोई । सब काने देखे कोई बाग बगोचा देखै ॥ कोई जाइ डर्वसो पैवै ॥ कोई जल ऊपर जो धावै । कोई घनरिक फल जो पावै ॥

End :—यथ धो को मंगो करने की विधि ॥ जो कोई इसी मान करै जब तब पैसो बिधि कोजै ॥ भादित बार अनिच्छर हो वे कच्चे डोरा लोजै । चिर चिरौटा लगा लगावै संगत करै जो जवहो ॥ तब डोरा में गाँठ तई दें जो वेर लहो जो तवहो ॥ वह डोरा को धूप देइ कर पागिन महि परचावै ॥ वह डोरा रास्ता में डारै जब यह कामिनि जावै ॥ लहं नयत छूटि परै जब कोटि जतन

कर बाधे ॥ वह नहीं बधे बचाये कबहुं सबद गुरु का साथे छैटि फेरि जार
 होय को लहना बाधि जो पावै ॥ ऐसा जतन दुजै से न कहिये थाप जाइ कर
 धावै ॥ मंत्र मूत मेल क हनुमंता चलबंता गात कंथा माधे बखरक कोटो यलो
 हाकी लठो सुने की धानो हफ फिरै हनुमंत वृत्त को भोम मार भूत मार प्रेत मार
 डाकनो साकनो मार बड़ा बोर मलान मार पाताल मार जो न मारै तो माता
 घंजनो हुच पिवा हयाम करै अथवा कलाहल धपनो कपाट पूजालो जै अपना
 चलधाय न घन घ को ॥ इति इन्द्रजाल ॥

Subject :—मारन विधि, घन्थ मारन विधि, मारनविधि मंत्र, मोहन मंत्र,
 उद्वताटन मंत्र, बशीकरण मंत्र, काल भैरव इन्द्रजाल, गिद्ध सिद्धि विधि, कोटो
 फरन विधि, प्रक्षेप घंजन, दोबाना करने की विधि, बैरों को दवा देना, स्त्री
 को सुवर्तइकंगी, दरिपाव मोतर पैठने की विधि, पानो में नाव धमने की विधि,
 मद बशीकरण, स्त्री को नेमी करने की विधि ॥

No. 494. Jantramantra. Leaves—11. Deposited with
 Pandita Ramākānta 'Prakāśa', Village Bandā Gaḍavārā, Dis-
 trict Pratāpagadhb (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ ऊं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रः ॥ वा वा दि नि ॥
 सरस्वती मम बुद्धि प्रकाश कुरु कुरु स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण सहस्रं जाप्यं
 करोति ॥ तद् दास्ये होम ॥ दास्ये त पहा दास्ये मार्गसा ॥ सर्वे सिद्धि भवति ॥
 जगद्गुरु सति भवति वय वाचस्य प्रतिमः भवतिमः भवति प्रति दिनः पष्टो-
 त्तर १८ ॥ मार्ग्यं कुरु इति सरस्वती मंत्रः ऊं भूर्भुवः ह्रीं ह्रीं सो सो फट् स्वाहा ॥
 सास्त उपदेश मंत्र ॥ कृष्णायनमः ऊं ह्रीं ह्रीं सुय इचंदमा मे सुध मन हते भ्यः
 पापायः रक्षितोभ्यः स्वाहा ॥ जप्य अष्टोत्तर सत् श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ततः नमः नामः
 स्वाहा तानि वेर पढ़े चारों दिशा साके बाऊ पवेस होइमा ॥

End :—सात सरिसा तेरह पाइ नौ सब योगिनि देपि डेराय चंदा दे
 चंदा देपि सुध धावै सुख्य अस्त करौ गराल जो जो मोका चित्त-बैसा सो
 पावै नास सभा बडि के धोले दाघ जिहि मारो-नरसोह के थाप जोगनी माता
 ईश्वर बचाव मेरी मक्ति गुरु की पाय सरला ॥ देवो सहाय ॥ अगर चंदन
 कस्तूरी गौराचन खुर कपूर सो भोजपत्र पर लिख मनोरथ पूजे होय ॥

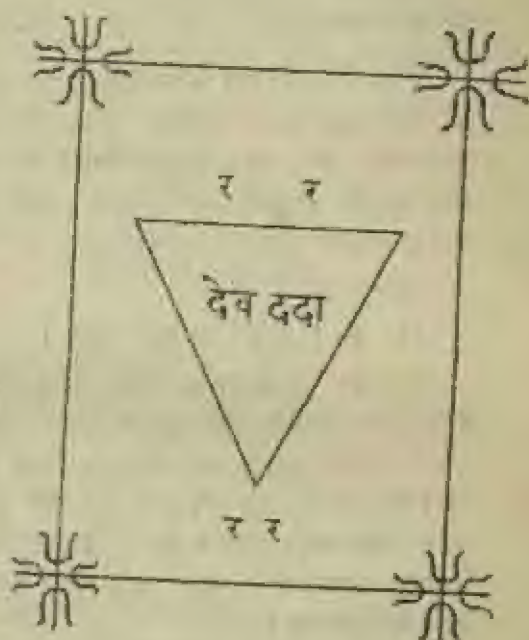
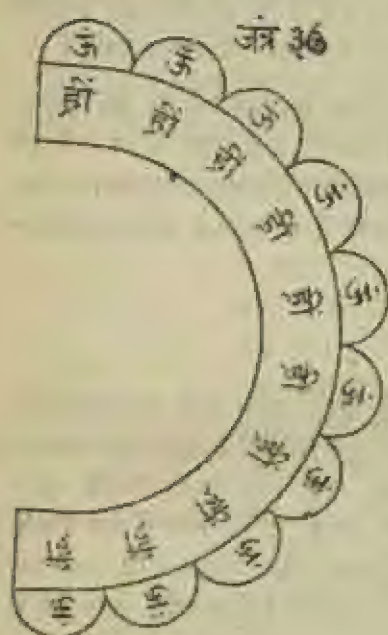
x	x	x
x	x	x

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—सरस्वती मंत्र, खगदाक मंत्र, जंत्र (बालक के गले में बांधने के लिये) गर्भस्तंभन, स्त्री वशीकरण, पंचदो जंत्र ।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—सांख का मंत्र, चर्च कपारी का मंत्र, चण्डू न इस नाम, गौ की व्याधि का मंत्र, उच्छाटन विधि, पिशाच मंत्र, गर्भस्तंभन ।

No. 495. Jantrāvalī. Leaves—33. Deposited with Pandita Vindheshvariprasāda, Teacher, Samskrita Pāthashālā, Village Gaudā, Post Office Madhoganja, District Prātāpagaḍha (Ondh).

Beginning :—



मूल नक्षत्र रविवार को इस जंत्र को भोजपत्र में चष्टगंध से लिख के स्त्री के बाएँ हाथ में बाँध दे तो गर्भ स्थित रहे गर्भ नहीं गिरे पुत्र होय ।

इस जंत्र को कागपत्र से मेहे के रुधिर से मसान के कोयले से मुरदे के कफन पर लिखे वा मसान के बांस पर लिखे ।

विधि—पुख का पुस्त करके चौराहे के राह में सात खेपुर नीचे गाड़दे तो देवों मित्र में लड़ाई होगी । उच्छाटन होगा ।

End :—

जंत्र १२३

७६	७३	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	७८	८१

जंत्र १२४

५९	६६	२	८
७	३	६३	९२
६१	६०	९	१
४	६	६२	६४

इस जंत्र को माली बाग में गाढ़े
ते बाग सुर जावे ।

जंत्र बकरो के दूध में लिपे जब पुष
नक्षत्र होये तो वह बकरा नाचे ।

इति श्री पोथी इन्द्र जाल चौथा भाग जंत्रा वली सम्पूर्ण मई जो पत्र में देवा
सो लिखा मम देश न दोजिबे पंडित जग सा बिनती मोर टूटा चढ़र छेव सप
जातो सत्र १३०१ साल महोना बैसाख वदो मेकाम कलकत्ता जान बजार प्रोत-
मार बाबू के कोठी का दरवाजा के सामने दशकान है दशकान के मालिक पंचम-
रामजु दसपद बमाल दास का सम्पूर्ण ।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २० तक—छुस ।

(२) पृ० २१ से पृ० ३२ तक—राजसमा में मान पाने, सर्व कार्य के सिद्ध
होने, कुत्ता भौंकने, मट्टी फोड़ने, डोल फोड़ने, भूत भगाने, दूकान का व्यवहार
बढ़ाने, बिक्री बढ़ाने, सर्व मनोरथ सिद्ध होने, ताप बंद होने, सम्पूर्ण कार्य
सिद्धरथ, ऊंट ही ऊंट दिखाई देने, सर्व काम सिद्ध होने, स्वप्न में भूत देखने,
घावरा रोग जाने, स्वप्न में बन्दर हो बन्दर देखने, सर्व काज सिद्ध होने, गया पशु
छोटाये, घावरा रोग जाने, कमान का रोदा न चढ़ने, सर्प न घाने, तथा मय न
होने के लिये मंत्र ॥

(३) पृ० ३३ से पृ० तक—मनोवांछा सिद्ध होने, भूत वाया न होने, बौध
होने, हनुमान देव को प्रसन्न करने, वचन सिद्ध होने, बुद्धि साधक होने, मन
चीन्ता काज होने, शत्रु के यहाँ छेश कराने, काली देवी को प्रसन्न करने, सर्व
कारज सिद्ध होने, विद्या बुद्धि होने, डर न लगने, भूमिका देशों के प्रसन्न होने,
शत्रु का चित्त उछादन होने, चक्रवर्ती पद में करने, मजरा लगने, भूख बहुत होने,
कामना जानने, पाई वस्तु जाने, उबर जाने, मनोकामना सिद्ध होने, सेत का मय

न होने, बड़क वायु जाने, मनचोता कारज होने, सर्व कामना सिद्ध होने, बुद्धि नष्ट करने, अति सुख प्राप्त होने तथा भूतादिक दोष दूर करने के लिये जंत्र ॥

(४) पृ० ५१ से पृ० ६६ तक—अग्नि-सिद्धि होने, वृक्ष में फल अधिक जाने, बैरी को कष्ट न देने, शत्रु से विजय पाने, आपस में लड़ाई कराने, स्मशान जागने, मनुष्य को भस्म करने, बैरी को हानि पहुंचाने, आपस में क्रोध कराने, चूहों के कपड़े न फाड़ने, स्त्रियों के पुत्र होने, भूत-भय विनाश होने, सब देवताओं के प्रसन्न करने, जप में जोड़ने, समा में सम्मान पाने, शत्रु के शरीर में दुष्प्रकार करने, सर्प न घाने, सर्व कार्य की सिद्धि, अधिक भोजन करने, राग में फूल बहुत घाने, बिच्छू उतारने, भूत प्रेतादिक का भय न होने, किसी तरह की बाधा न होने, धान सुखाने, तथा बकरा नचाने के लिये मंत्र ।

No. 496. Joganīdīśāvichāra. Leaves—4. Deposited with Pandita Rāmaprasāda Pānds of Ghurabā, Post Office Madhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ ज्ञानो दसा की विचार ॥

जन्म नक्षत्र ते सादि दे । अस्मन् ते गुन लेख ।
त्रे लोचन हैं सिम के । ते इकर कर लेख ॥
तामें अष्टम भाग हर । बांकी लेख विचार ।
सेष सेष बांकी बचै । दसा लेख ठहराइ ॥१॥
एक सेष की मंगला । जुगल विंगला जान ।
बोनि सेष धन्या रहै । चारिहु भ्रमरी मान ॥
पंचम नौकी भद्रका । अष्टम बलका जान ॥
सप्त सेष सिधा रहै । अष्टम संकट जान ॥
अष्ट दशका कसौस लैं । अवय दार अनुमान ॥
अपने अपने फल करै । सेंतर दसा प्रमान ॥

End:—

॥ चन्द्रमा की बासौ ॥

पंचम जन्म तीसरो सीस ॥ अष्टम नमौ ननि सै पीठ ॥ अष्ट सातौ दसौ
एकादस हदै गनौजै ॥ दूजो चौथौ हस्त निवास ॥ रोहि विवि गनौ चन्द्र की
बास ॥ अथ फल ॥ भाये चन्द्रमा दर्व बढ़ावै । हिरदै चन्द्रमा महा सुख पावै ॥ पादन
कर कर पीठ निरास । हस्त चन्द्रमा पुत्रवै भास ॥

x

x

x

x

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—जोषनी दशा विचार पत्रम्
चन्द्रमा का वास ॥ चक्र ॥

No. 497. Jyotisha Leaves—46. Deposited with Pandita
Bāṇdeva of Kamāsa, Post Office Madhauganja, District
Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :— ॥ छंद गोतिका ॥

यज्ञ मोन घटिका तोनि के पल जानिये । इकतालिसा वृष कुंभ वेद वषानिये ।
पल होत तेह शालिशा—मिथुन मकरहि वान वेदहि दंडु वल ये जानिये

ककं धन सर वषा हि स सहो ये करि मानिये ॥

सिद्ध बलि मै पांच घटि पैतालिसौ पल होत है ।

कन्यका यर तुना पांचै पैतिसौ पल कहत हैं ।

यह भुक्ति वेद वषानि भाषत छंद है यह गोतिका ।

वनक लोग विचारिहैं मन मानि ऐसो रीतिका ॥

×

×

×

×

चन्द्र मित्र रवि बुध कहे पौर सकल समभाव ।

शत्रु कोऊ इनके नहीं ऐसो कहाँ प्रभाव ॥२॥

मंगल के यह मित्र हैं, सूर्य चन्द्र गुरु पूर ॥

शुक्र सनिश्चर सम करे, बुधहि शत्रु कह कर ॥३॥

बुध को मित्र वषानिये, सूर्य शुक्र बुध जानि ।

मंगर ग्रह शनि समहि, चन्द्रहि शत्रु वषानि ॥४॥

End :— ॥ भाषा कवित्त ॥

चन्द्र से शेषित तोनि नक्षत्र दिवाकर रिक्षत एक न मोको ।

बुध वंशे अम पंथ करै मन शून्य वंशे सब सिद्धि पनीको ॥

वैरी मुंड कर रुंड करै कर वालक धन जदा कदलो को ।

यह चक्र विलोकि कै दखर करै मधवानहि रघुवत ताहि घरी को ॥

॥ इति डाक चक्रम् ॥

॥ दोहा ॥

रवि नक्षत्र को आदि है शसि नक्षत्र हो भोग ।

भाग मानिये सात को कहिये आठर जोग ॥

बचे तोनि सा अम कर्य जुगमे शात कलेश ।

वान (५) वेद (४) सवि (१) जो बचे तब कोजा परवेश ॥

॥ इति दखर चक्रम् ॥

×

×

×

×

॥ इति सुत चक्र चक्रम् ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—राशि मे-नम्, द्वादश राशयः । लग्न मुक्ति प्रमाण, लग्न प्रमाण, राशीश, राशीस चक्र, उच्च ग्रह जानना, चन्द्रवल, व्योनि, सिद्धि-योग, चन्द्रवासफलम्, भद्रा, कर्केच योग, जमघंट, बर्जानि, वखेप्रोतिः । नाडी दोषः । योगि दोष और शत्रुः बुध पंचक, रविबल, गुरुबल, (विवाह प्रकरण) ।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—वधू प्रवेश, द्विरागमन, गर्भाधान, सोमस्त पुस्तकर्म, प्रसूतास्नान, नाम करण, निष्कासन अन्नप्राशन, शुद्धाकर्म, कर्केवेध, बुधवन्ध, विद्यारंभः, हल प्रवाह, वोजोप्तिः, भूमिशयन, पाटः सूर्य स्रोत द्वार चक्रम्, कूपचक्र, सेवा या मवास विचार, राशि राशिके भोतर, द्वार विचार, नवान्नम्, शय्य रोपणाकर्ण मर्दन, चूलिका परिधानम्, पंचक रोमोस्नान, सर्वोक्त यात्रा, दिगंशुनम्, तत्काल यात्रा, तत्काल चन्द्रविचार, नक्षत्र के उत्तम, मध्यम तथा नष्ट होने का विचार, एक मासे पंच बार फलम्, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, धाम वास फल, मूल वृक्ष फल ।

(३) पृ० २२ से पृ० ४० तक—वार पूर्विकिः, संग्र्यास मूल विचार, मूल वृत्ति विचार, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, संक्रांति फल, रोहिणी चक्र नर चक्रम्, गोचर फल, नित्य सौरः राज्याभिषेकः, भैषज्य कर्म, नरवाहन, गृहदानम्, गुरु विचार, पंचमी फल, पूर्णमास्याफलम्, राशिग्रह योगफल घटोदय राशि फल, नक्षत्र गुरु फल, एकरासी ग्रह भुक्तिः, होम विचार, वर्षा नक्षत्र के वाहन, स्त्री पुरुषो नपुंसक जोग विचार, वर्षाज्ञान, गर्भज्ञान, स्त्रीक विचार, दिग-शूलेन वारणम् । कंडा रखने का विचार ।

(४) पृ० ४० से पृ० ५८ तक—जातक भाषा, लग्न का रंग, लग्न प्रमाण जानना, राशि तत्व, लग्न उदय ज्ञान, राशिनाम, धूर ग्रह, उच्च ग्रह, नीच ग्रह, ग्रहबल, नैसर्गग्रह बल, सूर्यादि ग्रह स्वरूप, चन्द्र फल, भौमफल, बुधफल, गुरुफल, शुकफल, शनिफल, शनिद्वार जानना, राहु फल, कौन ग्रह किस उमर में क्या फल देता है । गर्भ विचार, भवन द्वार जानना, दीपक भेद, यात्रा लग्न विचार ।

(५) पृ० ५९ से पृ० ६४ तक—शकुन ग्रामादिशिः सम्बत् फल, काक फल, काक वाक्य परोक्षा, त्रिदंडी चक्र ।

(६) पृ० ६४ से पृ० ९२ तक—शिवा मुहूर्त, कोटादि संबंधी ४३ चक्र, अन्य विचार, ग्राम सुष्ठु जाग्रत विचार, कोट जाति विचार, मोट वन्धा चक्र, टाक चक्र, द्वार चक्र, सप्त चन्द्र चक्र ।

No. 498. Kakaharā-me-Śrīmahādevājī-ka-Vyāha. Leaves—2. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājārāma, Village Narabā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—ओ महेसायनमः ॥ अय ककहरा में ओ महादेव जो का विवाह बरनन ॥ मनपति मुमिरि ककहरा कोजे मोतिन अक्षर पर कनि दोजे ॥ कहत ककहरा एक सुदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेशा ॥ पाप लगायेडमक लोने मांन घट्ट पनाता क्रीने ॥ गडे म्हास सपुले सिर मंगा ॥ भूषन मसम लगाये बंगा ॥ घटनाहि दूसर भूत बरातो । चले चयात विजया को पातो ॥ नाम एक ईसहि सुन राजा । करत निहालमाल के बाजा ॥ चन्द्र लिजाट जटा कटकारे ॥ लाचन तीन लोक वजियारे ॥ छांडे एद कैलास सोहाये । व्याहन बैन महेश मंगाये ॥ अतन न कोन्ह बैल को बानो । साने सोन मड़ायो पानो ॥ भालरि नाग मोतिन को माला । धनी बैल जा शंकर पाला ॥ नाथ हाथ अपने पहिराये । कंचन से पुर लोन मड़ाये ॥ टेरत भूत भिआवन बानो । बैल चड़े आवै शिव दानो । ठाड़े सुर मुनि देषि तमासा डीगवर बाधंवर पास ॥ डेकिठ बैल चलाये हुको का बरनौ सामा हर जू को ॥ डोल नफार मेरि बह डंका । बैल चड़े आवै शिव बंका ॥ नांहर ब्याल बैल विष भक्षन । चढे दिमंचल धान कतसन ॥

End :—मानै सोच सपा जनि कोई । करम जिपा तह पावा सोई ॥ अवहे बरात द्वारहि आई । बिलुकाबैल बाध मराई ॥ राजत गिरिजा देषि तमासा । सधिन सोच हिमवान हुलासा ॥ लगे पांच दिमवान पपारे । मोतिन चौक चानि बैठारे ॥ वारिके मानिक कोन्ह निझावरि । संकर गौरि दोन्ह सत भांवरि ॥ सो संपति शिव दोन्ह लुटारि । अचल कोन्ह हिमिवानहि जाई ॥ पवरि भई देवन सब जाना । गीरो व्याह कोन्ह हिमवाना ॥ सो संपति शिव जग के दानो । चरन टेकि छै दोन्ह भवानो ॥ हरये देव सुमन बर्षाये । बझा विष्णु तमासे पाये ॥ दा० ॥ शेम कुशल रचना रचौ शिव गीरो को पास । मुक्ति दान मोहि दाजिये प्रभु तुम्हारा में दास ॥ इति ओ ककहरा शिव गीरो व्याह संपूर्ण संवत् १९२५ मितो ज्येष्ठ वदो पंचमो शिवायनमः ॥

Subject :—शिवजी का विवाह बरनन ॥

No. 499. Kalachakra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Vāsudevasahāya of Kamāsa, Post Office Madhau-ganja, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥

मेघ रासि जौ जन्म होइ ॥ रवि क्षेत्र जलबंत होइ ॥ कोच बंत होइ ॥ बिते बीस भित्र होइ ॥ सुन्दर बंत होइ ॥ चपल होइ ॥ सिपान भोगो होइ ॥ कष्ट वर्ष ६ ॥ १५ ॥ ३१ ॥ ३५ ॥ ६७ ॥ ७५ ॥ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे मंगर वासरे तिथि पंचमी ५३ ई पहर प्रातः त्यज्येत् ॥ १ ॥ वृष राशिजौ जन्म होइ ॥ मिस्र भाग बंत होइ ॥ कष्टमास ॥ १२ ॥ १७ ॥ ३४ ॥ ५३ ॥ १०० ॥ अषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे चित्रा नक्षत्रे सप्तमी तिथि शुक्र वासरे प्रथम प्रहरे प्रातः त्यज्येत् ॥ मिथुन राशि जौ जन्म होइ ॥ कष्ट मासे वर्ष ॥ ४ ॥ १० ॥ १४ ॥ १८ ॥ जोवे वर्ष ८६ ॥ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे पञ्चमी नक्षत्रे एकादशी शुक्र वासरे प्रथम प्रहरे प्रातः त्यज्येत् ३ ॥

End :—उत्तर भाद्र दिन ४ मास ८ वर्ष १४ वर्ष ८० ते जोवे १०० राजा हाथ मृत्यु ॥ अश्विन दिन ३ मास ३ वर्ष ४९ ते जोवे वर्ष ८० राजा हाथ मृत्यु ॥ धनिष्ठा दिन १२ मास १ वर्ष ३० ते जोवे वर्ष १०१ छोटा हाथ मृत्यु ॥ शत भिषा दिन १४ मास १ वर्ष ४० वर्ष ५० ते जोवे वर्ष ३ ते जोवे वर्ष १५ विष हाथ मृत्यु ॥ उत्तर भाद्र पद दिन ४ मास २ वर्ष २ वर्ष ११ वर्ष १५ ते जोवे वर्ष ६० सुख मृत्यु—

॥ इति काल चक्रं ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—जन्म राशि के हिसाब से कष्टादि पढ़ने और मृत्यु दिवस का परिचय । (जन्म-राशिक आनुः बल)

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—जन्म के नक्षत्र से प्रवृत्ति की सीमा निर्धारित करना ।

No. 500. Kalikāla-Varnana. Leaves—7. Deposited with Pandita Vishnubharose, Village Belamañ, Post Office Ajgaína, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—देव मंदिर दिया न बाटो गार न पै बजियाला । भूम देव विष्णु को देवों को देत कसाला । राहुन के भोजन को सिनो ऊपर पान मसाला । साधुन को नहीं चून नून हुकों सेठे देव दियाला । चतुर नरन को वद सरत को कूरन के घर वाला । मूरष बैठे मौज दहावै पर बीनन पग छाला । भूपति कृपा करत नीचन पै कर भनोत प्रत पाला । जयर जैर कल काल जाल को गुन को चले न चाला ॥ मुसलमान सीता पति सुमिरै हिंदु मुप कद ठाला । मुसलमान मौसी कर डेरै हिंदु जातक साला ॥ दाम दाम कर जात मदारन दाव कांष मैं लाला ॥ पूजत प्रेत गुरैया बाबा छोड़े देव बिसाला ॥ अथरम प्रमट भयो

भूतल में धंसि गौ धरम पताला ॥ ३ ॥ निजपति मुच्छ मुच्छ करि जारत उपपति
हित प्रति पाला । विधवा इगन कोर भर काजर संम साभरन जाला । मुलकट
कंबुक कसत सुजन पर उर पर वर बन माला । अघरम धरम प्रगट भयो भूतल
धंसि गयो धरम पताला ॥ ४ ॥

End :—एकै साहु पकरि रिनिया को लूठ लेत घर साला । एकै रिनिया
वांघ पोटरी देत साहु को बाला ॥ जोर जोर पंचन को ह्यावत मानत बात न
बाला । अघरम प्रगट भयो भूतल में धंसिगौ धरम पताला ॥ १ ॥ पर सुष देष
सुनेत सिर काटत पुत्र लोग सौ साला । घोरन को दुष देष देष सुष मनै प्रगट
भयो लाला ॥ बैसे कुमति भई लोगन को चलत कपट को चाला । अघरम धरम
प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ २ ॥ लपट भपट घर घर पट
पट कर वरत कपट को उचाला । मारन उलट पलट घट पट कर बिकट प्रगट
कल काला ॥ दुर्जन चटक मटक अति चटकत सुरजन पटक उताला । अघरम
धरम प्रगट भयो भूतल धंसिगयो धरम पताला ॥ ४ ॥ संघासी रापे दुत्र दासी
नित प्रति वेद उचाला । एकहि व्रज सकल घट पूजन यामे पाप न भाला । धर्म
शास्त्र में थापो दासी भोगत सब घर बाला । अघरम धरम प्रगट भयो भूतल
धंसि गयो धरम पताला ॥ त्याग करव अंगुर दापन को गुलर पै हित पाला ।
पर निदा पर पूरत पंडित मंडित करत कुचाला । पुत्र पाट को बात न
बोलत दिये रहत मुष नाला अघरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम
पताला ॥ ६ ॥

Subject :—कलिकाल को दशा का बर्णन ॥

No. 501. Kathā-Saṅgraha. Leaves—72. Deposited with
Paṇḍita Rāmaratna Śūkla, Village Dariyābāda, District
Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्रीमच्छेषायनमः ॥ अथ कथा संग्रह लिखते । पहिली कथा
एक साहुकार पोतड़ी का रज्जा समय के फेर में पड़ अपना धन सब छो बैठा घोर
लगा निपट दुख पाने घोर उपासा रहने निदान उसने जो में यह सोच साया कि
ओ मे किसी महा पुरुष या सिद्धि के पास जाऊं तो यह दुख मिटै क्या कि सुना
भी है कि साधू के दर्शन से प्याचा जाती है यह विचार कर एक जोगी के पास
गया । यह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मतार्थ जान
कर के कहा ॥ दोहा ॥ सुख दुख प्रति दिन संग है भेदि सके नहि काय । जैसे
झाया देह को स्यारी नेकन होय ॥ यह उत्तम उत्तर पाय वह विचारा घोर घर
अपने घर थाया ॥

(२) कथा । एक भैया वैराग्य काशी के बाबू मलिकानिक घाट पर बैठा ग्रन्थ में दली पेड़े खा रहा था कि देखकर किसी पंडित ने पूछा सुखदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दली पेड़े खाता हूँ कहा ग्रन्थ में उत्तर दिया बाबा मेरे गुरु दया से सदाही ग्रन्थ है यह सुन कर पंडित हंस कर चुप हो रहा ॥

End :—एक बूढ़ा बटोही ग्रीष्म की रितु में तपन को प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था मार्ग में एक युवा यदवा रुक था निकला बूढ़े को देख कर उसे दया हुई बोला बज्जी मैं युवा पुरुष हूँ शीत शाम सब सह सका हूँ तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके भव इस घाड़े पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला जाऊँगा उसको इस कहना पानों से मगन हो बूढ़ा इसके घाड़े पर चढ़ा घोर युवा पीछे पीछे चलने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा कि चरें बूढ़े निलैज घाड़े पर से उतर क्या तुने जाना थोड़ा पाया है जो सारा दिन उस पर घाड़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा घोर घोर घोर चलने लगा थोड़ी दूर गया था कि इसका कष्ट देख कर फिर उसके जी में दया आई घोर बहुत ही विनती कर उसे फिर घाड़े पर चढ़ाया थोड़ी दूर जाने उसे फिर उसी भाँति उतारा निदान तीन बार बार उसे इस प्रकार उतारने चढ़ाने से उसने पूछा बाबा तुम्हारे पिता का नाम क्या बोला सैय्यद हव्वा उसने पूछा तुम्हारे मदतारी का नाम क्या बोला जोरा पर वह कुल बंटी नहीं उसको ध्याव करने से हमारे कुल में कलक लगा यह सुनते ही बूढ़े ने कहा हाँ बाबा अब मैं समझा कि चढ़ाव हव्वा घोर उतारे जोरा अब आप सिधारिये मैं मिरते पड़ते चला जाऊँगा ॥

Subject :—एक सौ कथाओं का संग्रह जिसमें हंसो चादि का वर्णन है ॥

No. 502. Kavita-vali-Aragaja. Leaves—18. Deposited with Sudarsanasingha Raia and Talukedara of Sujakhara, Post Office Lakshmikanaganja, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—ओ महेशायनमः ॥ कवित्त ॥

नमते सुर सुमन मरै किन्नरादि गान करै मान तान मोद भरै सर वम सिंगार भो । सरभो प्रियोदन को लोकन को हर निहार सत्य सिधु सत्य निरावार के अपार भो ॥ शेष इसह दर निहार चार दान दोन को दंपति जुग चरन सरन को न पतित पार भो । मावे मधुमास सुकुल पच्छ सुच्छ नौनो तिथि पाली बनिराम धाम द्याना प्रवतार भो ॥ १ ॥

बाजत बजाई सुखदाई हुहु राज द्वार,
 पवध नगर जनकी नगर जै जै जयकार भो ।
 लोक लोक भो बिलोक संतन मन परम तोष,
 निकसि भजो राम रोष जन धन डजिवार भो ॥
 दौन लागे राम रंग भक्ति ग्यान को प्रसंग,
 देवन्ह प्रतिवार भयो हल धरनि भार भो ।
 माषी मधु मांस सुकुन पच्छ सुच्छ नौमो तिथि,
 पाली बलिराम स्थाम श्यामा धौतार भयो ॥२॥

End :—वेलत है फागु भयो लाल के सोढाम बाल,
 फँके करसो गुलाल भंग लाज पोवतो ।
 कान्ह छै पयोर मोर टारि रंगी बाका चौर,
 सुन्दर छोटो दाँपि भँवल सो गोवतो ॥
 ताको कुच कासी भारी पासो पिचकारी लगी,
 सिसकि समेटि (समेटि) सजो बाको छवि जोवतो ॥
 मायो वक्त तुंड सुंड गंग तोर कूड पैठि,
 धार छुंड छुंड पूजि संभु शिषा धोवतो ॥

वेलत है फागु स्थाम श्यामा भवुराम मरे,
 डफ करतार बंस मृदंग सो रह्यो है छार ।
 नावत राग धूंधुरि मचावे बाल भ्रमके,
 भ्रमकि भूमि काम रति को लजाइ ॥
 धूंधुटि छधारि कान्ह कर सो गुलाल मझौ,
 बाल मुप इन्दु लगे सोभा सपि दरसाइ ।
 वषर को बिहाइ मेघ कारे फलगाइ मानो,
 भौम विच दैके कंज चंद सो मिल्यो है जार ॥

ग्याल के जाये कर्ष पावे इत माम वे सो,
 गर्भ तो बढाये सो कहावत पयोर इहो हो ॥
 जाति के छपाये पांति नाहो मिलति रावरो,
 वावरो भये कहै लोन्हे हाथ लट्टो हो ॥
 जानो पुनो बात को का करत हो सयानो ।
 करौ बूझा पानो सो चलायो बार भयो हो ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—राम चवतार एवं कृष्णचतार, सोता
 राम की सोभा देख कर मोह, गुगुल मूर्ति को महत्ता, श्याम स्तुति, रामरूपवर्णन

(प्रेमसखी द्वारा) दोनता स्तुति (प्रयत्नविदारी) । हृष्य की शोभा (तोष) ॥
 विरह बलैत (तोष) । कोमलता (प्रेमसखी) । गंगा की प्रशंसा जड़ता, महावीर
 बुद्ध बलैत । मङ्गद पदारोपण । छन (तोष) । राख मन्त्रोदरी संवाद । महाराजी
 जी के दरबार का बलैत (भूषण) । राख मङ्गद संवाद । शिवराज प्रशंसा
 (भूषण) । चंद्रिका महेश (विधान कवि) । नैन प्रशंसा (सर्वेश कवि) । गान्धीपुरी
 ज्ञान की प्रशंसा । भगवान् की बुराई (गोकुल) । राम विश्वराम का एक द्वारा
 फल चढ़ाई । नायिका की शोभा । " मधेश " की ठकुरान (गौरी की प्रशंसा) ।
 (२) पृ० १३ से पृ० तक विरह बलैत (भूषण) । गुजरी का संयोग बलैत,
 रघुवार का बल बलैत । मुद्रिका पाठ । लंका दाह । जैसिह राजा का शाब्द ।
 चौकवी, चौदिसा, स्तुति, भरत हनुमान संवाद (संजोवनी लाते समय हनुमान
 कवि द्वारा) ।

No. 503. Kavitta. Leaves—5. Deposited with Pandita
 Ramākānta Śākla of Puravāgaribadāsa, Post Office Gaḍa-
 varā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—कविचु ॥

कासी में बास करौ लुग चारि छै, द्वारिका जाइके देह जावौ ।

बाँहि चढ़ाय दिगंजर हो सबी सब सुधाकौ छहिनो व्यावौ ॥

बल्ल भनै मुख एकै जपे कर कंचन कोटि सुमेर लुटावौ ।

पाठ सौ बाँविकै शुक्ति मरी शिनाम भनै यिनापार न पावौ ॥

सोताराम जानतु है सोताराम मानतु है ।

सोताराम पुजति है जपत सोताराम है ।

सोताराम हो कै प्रभु सोताराम की प्रनाम ।

सोताराम हो कै ध्यान धरै समिराम है ॥

श्रीपति सुजान सोताराम में वसत पान

नाम सोताराम जू कै छेठ पाटी जाम है ।

मेरे जान सोताराम कामना कल पतक

सोताराम जू को सौह सोताराम कै सुनामहौ ॥

तिसना विसासिन के बसना बसैये ।

रसना रिज जित स्वाद बदना भनै रहौ ।

कहत प्रजेस मद मोह मतवारिन के ।

मद को कहन करि ममिता हवै रहौ ॥

लोच छोम मोह वदौ पुरान पति चारन के ।

तजि के प्रवास भनै सुपनि भनै रहौ ।

मेरे तन मेरे मन मेरे धन मेरे धाम ।

मेरे राम मेरे हियौ सदन बने रहौ ॥३॥

End:—सहज मैं सीले जंग जुदै घरवो छैन ।

राजत कुबोले किनै छाँउनसहत है ।

भूठ नाहों बेले डार-डार नाहों डाले ।

मलो मुख सा है सदा जस को चाहत है ॥

सुनै रागरंग रंग कौन सुरुंग कवि ।

कवि पंडितन संग लैय चरवा चाहत है ।

आनंद उछाड़ सदा रहत चित चाढ़ जाये

राने सुभाव जातो ठाकुर कहत है ॥१॥

छन्द

कैहरि जन नहि चरति सर रन छिन नहि संकहि ।

सतोषन फिर सहत कहि दानि करि होइ रंकहि ॥

गुर नहि गोपहि म न जंन नहि चलहि मरन पर ।

इतल धमर नहि तलहि पधम नहि पावहि सुरपुर ॥

आह कर्म रेव विचल्य चल्य सततन अह गुनगनहि ।

लखुगल जाल संकहि रमल नहि मराल कंकर चुनहि ॥

Subject:—

(1) पृ० १ से पृ० १० तक—महा. प्रजेष्टा, तुलसी, आदि कवियों के शास्त्रिसंघर्षों की संवेष्टा कृत कविता ।

No. 504 (a). Kavitta-Saṅgraha. Leaves—15. Deposited with Pandita Satyanārāyaṇa Tripathi of Bandā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning:—

॥ कवित्त ॥

गोरे गोरे माल पै गुजाब दार नाम सा है

बिजली भूमाकदार दोनों कान भलकै ।

बंदी भाल माथ हू पै करत सिंगार गोरो,

मथवा के मोती जस चन्द्रमा से लकै ॥

नाक हू को नथिया बुलाक मैं भूमाक करे ।

तुलसी की मोती गोरो चोठ दाँप भलकै ।

इतना बयान करि नदी के ऊपर को,

धार हू बयान कहु संग संग फरकै ॥१॥

॥ सवैया ॥

नाम बड़ा धन धाम बड़ा अस कोरल हू जम में पगटो है ।
 द्वार अनेक गपेंद झुमे उपमा बल्लु इन्द्र से नहिं छटी है ॥
 सुख साज अनेकन पाय मनोहर फूले रहैं मन ही मन में है ।
 तुलसी जग जोवन भक्ति बिना अस सुन्दरि नारि को नाक कटो है ॥

End :—

तात को सोच न मात को सोच, न सोच पिता सुरधाम गये को ।
 सोच इरै को तो सोच नहीं, नहिं सोच हमें वन मारि रहे को ॥
 बन्धु विछोह को सोच नहीं, नहिं सोच जटावृ के पंख जरे को ।
 केवल सोच बड़ो तुलसी, एक दास विमोक्षण बांढ गये को ॥
 सुगन्ध लनाय के ऊचि मरै, प्रिय जानत है तनको सुकुमारो ।
 हार चमेली को नोक लगे, प्रिय लाज करीं यदिरै तन सारो ॥
 और मधुपण क्या बरने, प्रिय लाजत पांय महाधर मारी ॥
 मरे सुभाव की जानो नहीं, रसधान कपूर मुनापम ताही ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—नायिका को योग्य वर्णन,
 भक्ति बिना मनुष्य की दशा, धनुष यज्ञ, राम धर्म सीता के सुयोग का वर्णन,
 राम को देखकर सीता का प्रेम और सांख्यों का परिहास । माधन लोला ।
 राम मछाह संवाद ।

(२) पृ० १० से पृ० १३ तक—लुप्त ॥

(३) पृ० १४ से पृ० ३० तक—उपदेश, धनुषयज्ञ, 'वात' का महत्त्व ।
 समस्या पूर्ति "तखा के तरे लौ" "दाह हुतात नहीं" । 'र' कार और 'म' कार
 का महत्त्व । "स्वप्नदर्शन" समस्या "बजरमार गहर बनायो है" "नारि हंसै तो
 भंसेना" "छु ननो केहि कारण क हि धररो है" "छु ननो यदि कारण काहि
 धररो है" "लक्ष्मण की शक्ति लगने पर राम का मनस्सोय" सुकुमारता का वर्णन ।

No. 504(B). Kavittasāṅgraha. Leaves—40. Deposited
 with Padma Ramakanta Tripathi, Village Banda, Post Office
 Gadavara, District Pratapgarh (Oudh).

Beginning:—धासन दे घुरवा त्रिविध पवन सावन है कंजन में ललित
 लतान को । कूकन दे कोकिला प्रकारन है चात्रकन बोलन है सजनो सुभाष
 सुधान को ॥ दामिनी जाति कातरौ दामिनी में जागन है वरसत दे इत् छुपाई
 घटान को । चाये मन भावन सा रस वरसावन मो सावन में नावन देहो
 बनतान को ॥३॥

पावस पबल पीठ पोवै न रत जीव, दसहू दिसान के संदेस भव पापरो ।
 मोहन बताते मन कैसे कठिन करौ, अवधि धितोत भई भालो वरस पापरो ॥
 मोहन को सार सुनि कोकिलान को रतन दिन, पयोहा को डेर सुनि मदन
 खगापरो ॥ इंदा घाई वरसात गगन गहरात, बैरो आवे बादर विदेसो क्यों न
 पापरो ॥४॥

End :—विधि ने बढ़ाई दई चाहि लपि पाये कोऊ । ताको सु दया करि
 मया के रस हरियो । घर दोजो जस लिजो जीवन यही है सुख, दैके सवै बुव
 दोवन के हरियो ॥ चिन्ता मनि कहे जो ये गाँठ को न दोजो जाह,तोऊ एक
 उपकार करियो । आपने कहते जो आगळे को भेला होइ तो, जोम के हलाखे
 को काहिलो न करिये ॥

कवित्त :—घोप कर विरंचि रूप रासि कैसे कोक कोक.....

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—विपलम्भ शृङ्गार संबंधी
 कवित्त ।

(२) पृ० २६ से पृ० ५० तक—संयोग शृङ्गार के कवित्त, तथा दोनों प्रकार के
 सम्मिलित छन्द, विविध नायिका भेद सम्बन्धी कुछ छंद ।

(३) पृ० ५० से पृ० ८० तक—ऋतु संबंधी छन्द । विविध छन्द (गंगाजी को
 पशंसा तथा वीर रस के कुछ छंद) ।

No. 505. Kavittasāra by Manirāma. Leaves—25. Deposited
 with Umāshankar Dube, Research Agent, District Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः

नेहुर के गामो तुम स्वामी स्वयंभामा जी के अन्तर के जामो तुम मिटैहो
 दुष्प धाइ कै । तुम तो खुबोत घोर जानै सबहो को पीर भोर परे चोगुह
 बहाइ दोन्ही पानि कै । कहत मनोगुम गज प्रादिसो उबार जोन्ही चलप
 विरंजन भव तेरो जस गाइके । नंद के कुमार नेक हेरौ प्रभु मेरो बार पेसे
 हो चितैहो को चितैहो चित्त लाइके । जैसो करो तू करो के कटेस में जैसो
 करो नहि गोतम नारि को । मोय पै व्याध को जैसो करो फिरि जैसो करो
 सधना वो अमार को मेरिय बार अवार कहाँ अवतार न हो अघने प्रतिपालको ।
 ठारि हो नाहि जो मोहि कहु छड़ि कोरति जैहै दसो अवतार को ।

End :—मेघ नहि मानत म विरह के मगाहु देत लेहौ पुलकाइ यहां पवन
 बिचारे को । त्वारे करि मारिये न कोव मदन साजके लिखतो संदेस मैं तो नन्द

के दुलारे को । कहै पदुमाकर काकिला को केतो हकीकत कोवल बंधवाइ छैदौ
 पंख उजारे को । प्यारे को कैसा समीप करि पावतो तो पीय २ करतो पपीहा
 दै मारे को । सबैया—ससुरे को तुम कोन पयान हमें कल कैल परै नित प्यारो ।
 सेन परै न घरो पल एक रहै निस वासर याद तुम्हारी । प्रान पिबारी तुम्हारे
 लिये बदनामी मई पर यारी न छारो । भावत गंग प्रसाद कहै तुम प्रात लगाइ
 के कीन्ह तयारो ।

Subject :—(१) किसी पार्त्त मनुष्य का भगवान से अपनी दशा सुधारने
 के लिये प्रार्थना ।

(२) जप, तप, धत आदि से रहित मनुष्य का ईश्वर को शरणा
 घाना ।

(३) जनक जी के धनुष भंग का प्रसेन ।

(४) नैमिषारण्य महात्म्य पर कवित्त ।

(५) ययोध्या महात्म्य वर्णन

(६) सीताहृत्य, राम विरह, लक्ष्मण शक्ति

(७) नायिका का विरह वर्णन । किसी पुरुष का स्त्री के प्रति प्रेम ।

No. 505. Kerala—Prasnavivākara. Leaves—2. Deposited
 with Paṇḍita Śivamaṅgalaprasāda Mīra of Udayapura, Post
 Office Athohā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—पंचाङ्ग के लाभ खर्च एकत्र करे एक कम करके घाठ का
 भाग दे, एक बचे तो लाभ, दो में सुख तीन में ह्येष्ट चार में रोग, पांच में
 शोक तथापि बाद छै में चादर सात में जोत घाठ में हानि ॥

प्रश्न कर्त्ता मुकद्दमा में हार जोत का प्रश्न करे तो यदि भाते समय दाहिनी
 घोर बैठ कर पूछै तो जोत बायें हार घोर सम्मुख सला होनी चाहिये ॥ प्रमुक्त
 वस्तु खरीदने से लाभ होगा या हानि (वत्तर) नाम प्रश्नर में ३ से गुणा करे
 वस्तु नाम प्रश्नर जोड़े एक घोर मिलावै दो पर भाग देवे एक में लाभ दो तथा
 शून्य में हानि होयगी ॥

End :—प्रमुक्त बात में मंदो या सत्तो वत्तर—महोना को संकाति दिन
 तिथि के चंक लुक करि ३ पर भाग दे शेष एक मध्यम भाव दो सत्तो शून्य
 महंगो होना चाहिये ॥

संकांत	मं	हु	मि	क	सि	कं	हु	वृ	घ	म	कुं	मो
शंक	३	२२	२३	२५	१९	१७	२२	१२	१६	१२	२३	१५
दिन	१	चं	मं	हु	गु	मु	घ					
शंक	२१	१५	१३	२	१३	१४	०					
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
शंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तिथि	१३	१४	१०	१५								
शंक	१३	१४	१०	१५								

इति प्रश्न दिवाकर समाप्तम् ।

Subject :—(१) गृ० १ से गृ० ३ तक—

बारहों राशि के वार्षिक लाभ हानि का विचार । मुकद्दमें, कय विकय में लाभ हानि । गर्भ विचार प्रश्न । मास की मंद्गो सत्तो का हाल ।

No. 507. Kerala—Prasnasāṅgraha. Leaves—4.
Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgala Miśra, Village Udaya-
pura, Post Office Aṭhohā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

योगम्

दे	द	ज	घ	च
वा	ज*	ह	तो	ये
मो	दी	जी	वी	ई
यो	जी	दी	ली	क

य—जिन बात की निश्चय विचार करने हो और हैरान हो, रोजगार को उन्नति के लिये परदा गेव से बढोला होगा ।

ब—एक पादमी की बेचफाई का बवाल करके दिल में परेशान हो, अब खराब दिन निकल गये दिल का बिचार पूरा होगा ।

ज—तरफकी रोजगार घाय शय का बवाल लगा है बांदियों से भय है, नेकी का बदला बदों से मिला है दो तीन महीने में फायदा होगा ।

End :—

हो—दुनिया दारी के कामों में तुमको तकलौफ उठाना पड़ता है शत्रुओं व कुर्जबवाहों ने नाक में दम कर दिया है सब काम १ साल के चन्द्र चन्द्र बुरुस्ती पर आजायेंगे ।

तो—जिस कार्य के लिये कोशिश करते हो तुरन्त मुसाद पूरा होगी और कोई मनुष्य तुम्हारी मदद करेगा ।

क—जिस तरफ यात्रा करने का इरादा रखते हो वहाँ पर राज कार में लाभ और हर तरह से आराम पाओगे परन्तु नशीली वस्तुओं से परहेज रखो ।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—बीस पक्षों का एक कोष्ठ तथा उसमें संकित पत्येक पक्ष का फल ।

No. 508. Khela. Leaves—2. Dated in Samvat 1933 or A. D. 1976. Deposited with Paṇḍita Vindhēśvarī Prasāda Miśra, Teacher, Sanskrit Paṭhshālā, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganuja, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—ओ महेशायनमः ॥

१—बनते बनि पावत सबी । मोहन मदन गुपाल ।

भोर मुकुट लखि थकि रहीं । कमल लिये कर लाल ॥

२—चित्त में चम्पा के बिटप । फूलों प्रति इर बाय ।

मन मावन में पैठि कै । गुथी माल बनाय ॥

३—ऊनु बंसत पाप सबी । कोकिल कहत सुनाय ।

फूलों टेसु सघन बन । देपत मन भर भाय ॥

४—मोहन मूर्ति साँघरी । लाल लकुट छेँ दीय ।

फूल बिराजत सबती । फुँजमाल के साथ ॥

५—फूलन लागी केतकी । सुंदर सुबद सुवास ।

चहुँ पार गुंजत मधुप । नेकु न छाजत वास ॥

६—मोहन मूर्ति श्याम को । निरञ्जि निरञ्जि दर मैने ।
नरगस को निरखन लगे । सुमन सुवन को दैन ॥

End :—२८—लालन के माधे बनी । पंक से समनी पाग ।

मोहो सब वज्र की वधू । गुल सोसन के राग ॥

२९—गुल बंसत कूलन लम्बो । देवति सखिन समेत ।

मानहुं शोभा ते भरो । सखि सोभा यदि देत ॥

३०—गुल सखो ले हाथ में । सुंघत नन्द किशोर ।

तकल घरल धारिज नयन । चितवति र.....॥

३१—गुलदावदी सघन बन । बेरि घाय बहुं वार ।

नन्द लाल को निराष के । हरिप रहेव मन मोर ॥

श्री दसरथायनमः श्री राधा कृष्णायनमः श्री शिव श्री संवत् १९३३
सन १९८३ मितो वैशाख वदी ९ बार मंगर ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—इकत्तीस दोहों में से प्रत्येक दोहे में राधा तथा
कृष्ण का संबंध स्थापित करते हुए एक एक पुष्प का वचन ।

No. 509. Lokhā Pahādā. Leaves—44. Deposited with
Gosvāmiji, C/o Pandita Badri Nāth Bhatta, Husainganj,
Lucknow.

Beginning :—

एक दलं महायोजं नमो करस पानये ।

सिद्धन्तु सर्वे कार जाने तुं प्रसाद मनैश्वर ॥

१	११	२१	३१	४१	५१
२	१२	२२	३२	४२	५२
३	१३	२३	३३	४३	५३
४	१४	२४	३४	४४	५४
५	१५	२५	३५	४५	५५
६	१६	२६	३६	४६	५६
७	१७	२७	३७	४७	५७
८	१८	२८	३८	४८	५८
९	१९	२९	३९	४९	५९
१०	२०	३०	४०	५०	६०
५५	१५५	२५५	३५५	४५५	५५५
१/५	३/५	५/५	७/५	९/५	११/५

Middle :—सुलसी डेरत कहत है सुनीयो संत सुजान ।
हम दान गज दानते बड़ा दान सन मान ॥

११	११	१२१	२१	२१	४४१	३१	३१	९६१	४१	४१	१६८१
१२	१२	१४४	२२	२२	४८४	३२	३२	१०२४	४२	४२	१७८५
१३	१३	१६९	२३	२३	५२९	३३	३३	१०८९	४३	४३	१८४९
१४	१४	१९६	२४	२४	५७६	३४	३४	११५६	४४	४४	१९३६
१५	१५	२२५	२५	२५	६२५	३५	३५	१२२५	४५	४५	२०२५
१६	१६	२५६	२६	२६	६७६	३६	३६	१२९६	४६	४६	२११६
१७	१७	२८९	२७	२७	७२९	३७	३७	१३६९	४७	४७	२२०९
१८	१८	३२४	२८	२८	७८४	३८	३८	१४४४	४८	४८	२३०४
१९	१९	३६१	२९	२९	८४१	३९	३९	१५२१	४९	४९	२४०१
२०	२०	४००	३०	३०	९००	४०	४०	१६००	५०	५०	२५००
२४८५			६५८५			१२६८५			२०७८५		
४२/३५			१३१/३५			१५३/३५			४१५/३५		

End :—इतनैनि मित्रि लंका विघडो । सोरख लाख रामपै रदे १६०००००
३२२८४२५०१४४ एक एक कंगुरापै इतने इतने बैठे ॥ नौ डबरा एक एक डबरा में
नौ नौ मौसि एक एक मौसि पे नौ नौ बगुना एक एक बगुना के मोहो में नौ नौ
माझरो डबरा ९ मौसि ८१ बगुना ७२२ मछरी ६५६१ खवा एक कुवामेते बोख्यो
घरे हजके खवा तुम कितेक दो ॥ हम सु हमदो हमते हुने भागे हमते छोड़े
पाखै तू भावै पुरे सौ है जाहि ॥

हजके २२ हुने ४४ भागे छोड़े ३३ पाछे वह पक्षु मिल्यो पुरे सौ भये १०० ॥

इति

Subject :—प्रारंभमें भिनतौ पका, म्यारह, एक ईसा, एक तोसा के दस
दस पहाड़े का बखेन पू० १९ से ३० तक सवाया, छोड़ा, डप्पा, हुंठा, ड्यो चा
का बखेन पू० ३१ से ४२ तक बड़ा म्यारह चौर बड़ा पका के भिन्न भिन्न पहाड़े
पू० ४३ से ५४ तक दोना, छटांक घ सेर को लिखापट का बखेन, पाना पाई
का बखेन पू० ५५—५८ तक चार के १६ करे बखेन, पानो को बूंदें, बाल, सुई,
काजर, लंका बुद डाबरमें भैस बगुनादि सौर बृक्ष पर तोलों का गखित संबेधो
मौखिक बखेन पू० ५९—६२ तक ।

इति

No. 510. Mahadeva Vivaha. Leaves—9. Dated in
Samvat 1893 or A. D. 1836. Deposited with Umāsankar
Dubey, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—अथ महादेव विवाह लिख्यते ।

वै०—कहत ककहरा नगर सदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेसा ॥
 पाप लागर डमरु सुर कोन्हा । भांग धतूर पत्राना लोन्हा ॥
 गरे नाग सिर पै सुर गंगा । भूषन मस्त चढ़ाये घंगा ॥
 घर नहि दूसर भूप बराती । जलै चवाति विजै को पाती ॥
 नाम लेतु ईसुर भस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥
 चन्द लिलार जटा फटकारे । लोचन तोनि लोक उजियारे ॥
 छाड़ा गिरि कैलाश सुहावा । वाहन बैल महेश मंगावा ॥
 जात न कही बैल को बानी । सोने साँग मड़े दो भानो ॥
 भक भालारि गज मोतिन माला । घन्घ बैल सेउ संकर पाला ॥
 नाथ हाथ अपने पहिराई । कंचनसे पुर देत मढ़ाई ॥
 टेरै भूत मिहावन बानी । चला मस्त योगी शिवदानो ॥

End :—

धमो बरात द्वार पे भारी । विजुका बैल बाधु गरारै ॥
 दवरि भई सिवसंकर पाये । सब सपिघन मिलि मंगल गाये ॥
 धावति चलो देपन सहेलो । पारवती का छोंड एकलो ॥
 नारि चढ़ी घोरहरा ऊंचे । देपि सहप नैन मे नीचे ॥
 पाछेक काहु देवचल कोन्हा । गौरा रूप दिगंबर लोन्हा ॥
 फांसो वै तुम तजहु भवानो । सपिनसाच गौरा मुसक्यानो ॥
 मन मा सोय करौ जनि कोई । कर्म लिखा वध पावा सोई ॥
 लेलकि पांड हेमवान पुकारो ॥ मोतिन चौक तहां बैठारो ॥
 बह मोतिन को करै निछावरो ॥ संकर गौरा फिरै सत भावरि ॥
 हरपे देव फूल बरपाये ॥ ब्रह्मा विष्णु तमासे पाये ॥

वै०—ककित करै सब भारती ॥ ककित भयो कैलास ॥

मुक्ति दान अवदोजिये । हरि चरनन को पास ॥

रति श्री महादेव विवाह सम्पूर्ण समापित सुममस्तु ॥

Subject :—

- (१) विवाह के लिये गमन करते समय महादेव जी के वेश वार साथ को सामग्रियों का वखन ।
- (२) महादेव जी के वाहन को शोभा का वखन ।
- (३) दिवाचल नगरी के वासियों का बारात देखने के लिये शोचतापूर्वक पाना । भुवतियों का संकरजी के स्वरूप का देखकर रोच करना ।

(४) पार्वती को प्रसन्नता । शिवों का समझना ॥

(५) शिव पार्वती का विवाह संस्कार । यज्ञा विष्णु आदि देवों का बाराह देखने के लिये आगमन ।

(६) देवताओं द्वारा आकाश से पुष्प वृष्टि ।

No. 511. Mahūrtavichāra. Leaves—12. Deposited with Rāmāprasāda Murān, Village Viśramadāsa-kā-Puravā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्रीमच्छेशायनमः करण भगवद्वापम् वार संक्रांति दीपं कुतिथि कुलिकं शं मया मदि दीपम् राहु केत्वादि शंषं हरति सकल दीपं चन्द्रमा सम्मुखस्यान् ॥ १ ॥ अथा विशाखा छत्तिका । अदि शिव भरणो मूल । स्वान सर्प इतमा डसै । मानहुं जम हनो त्रिसून ॥ २ ॥ रामनाम घर भोग विलासा । सोता शोक करै बनवासा ॥ पश्चिमन लक्ष जोति एह पावे । हनूमान कछु खयरि जनावै ॥ नौमो प्रतिपदा शनि सोम प्रतिकाल भवत घट तुला लग्न परवत जाइये ॥ पंचक सोम पंचमो गुठ दिन मध्याह्न काल ते रासि भोना तिककै दासिल बराहये । पष्टी सुगुमान भौम भूत पुष्य रोहिणी सेव्या चन में पहरि पश्चिम न जाइये ॥ द्वैज दिन रवि शशिव भौम मकर निशार्द मकर कुंभ कन्या नहिं उत्तर सिधारिये ॥

End :—जो कोई पैगिमा को भूमि कपै वा दिन में तारा दूटे वरका पात व भज घात होय वा चंद्र सूर्य मसै वा केतु उदय होय इन्द्र धनुष कइ तौ सब वस्तु महंगी होय ग्रहण में प्रवश्य । इत्युत्पाताः ॥ बुधः शुक्र समीपस्थः करोधि काष्ठे वा महीं ॥ नवो इतर्नता मानुः समुद्र मार्गं शोषयेत् ॥ बुधे तिजे बुध शुक्र समीप होइ तौ पृथ्वी भर में जल वर्षे अथ जोतिन के बीच में सूर्य आनि परें तौ समुद्र के जल को भी सोष लेइ ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० २ तक—सर्प काटने का विचार, मात्रा विचार लग्न प्रमानन, नक्षत्र विचार, मद्रा वषेन,

(२) १० से पृ० १८ तक—विवाह विचार, होम कर्मव्यभि विचार,

(३) पृ० १९ से पृ० २४ तक—यात्रा तिथि विचार, ज्योति विचार ।

No. 512. Manihārīna-Bhāṣa-ki-Poṭhī. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Mathurāprasāda Mīśra, Village and Post Office Pariyāvā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ॥ यह मनहारि भेष को पावो लिखते ॥

एक समे वज्र चंद्र नंद सुत मन में यह विचारो ।
करिके भेष विसाति नारि को छलिये राधा धारो ॥
कीतपाप को लहना पहिरे धरुन जरकसो सारो ।
धंगिया लाल श्याम मंदन को रति छवि देत सो भारो ॥
मोतिन को पहिरे नक वे झालरदार बनाई ।
मानों विरचि विरचि सापकी गहने को सुवराई ॥
कानन करन फूल रति सोई माये वोज़ जराऊ ।
ठा ऊपर रति लसत बंदनी मोतिन माँग भराऊ ॥
कंड लसत हुलरो भी तिलरो गज मुक्तन को हारा ।
मानों जुगल सुमेरु के ऊपर घसो गंग को धारा ॥
मरे हवाल माल फंचन की यह पहिरे पग धारो ।
मानों काम पापने ऊपर रुचि रुचि विविधि सवारो ॥

End :—

घरस परस धुंधन लों करिके..... ।
लखि के पदम कान घस लागे ऐसा भेष बनायो ॥
विरजा सखी सबन ते खंचल छिन मर रही न सावो ।
हाथ पकरि मनहारि जु के जाइय खोलिन छावो ॥
ससिके परे तुरतहि देऊ डलते लगे मंजोरा ।
दाँत धंगुरिया दई राविका धन्य धन्य बलवीरा ॥
मेरे काज लाज तजि मोहन एते परिधम कीन्हो ।
नारि भेष धरि पाये मोहन बड़ा बहुधन दीन्हो ॥
जाको जपत शेष राज शंकर सुर मुनि जिते बड़ेरे ।
ते मोहन तुम बने किरत हो वज्र वनितन के घेरे ॥
तुम तो तीन लोक के स्वामी श्री रति अंतर जामो ।
ताप हीनि छत होत हो श्री कृष्ण गरुड के गामो ॥
आनंद कंदन के नंद नंदन जगवदन गुन राखो ।
जाको ध्यान धरत सुर नर मुनि जामो जन सन्यासी ॥

x	x	x	x
x	x	x	x

इति श्री मनहारि भेष को पावो संपूर्ण ।

Subject :—श्री कृष्ण का मनहारि भेष में राधा को छलना । श्री वेष-
धारा कृष्ण के नख-शिशु का चर्चन । विरजा सखी द्वारा वृषभान-भवन में

पहुँचना और राधिका से मिलना तथा राधा के प्रश्न पर अपना पूरा पता बताना । विविध प्रलंकारों से राधा को विभूषित कर प्रेमालाप करना । विरजा सभी द्वारा छातियों पर बोधे मंजीरों का धौंसा जाना । कृष्ण का कपट रूप प्रगट होना तथा राधा द्वारा कृष्ण की बिनती और नवलकुंज में मिलने का वादा । कृष्ण का घर आकर भोजन कर शयन करना ।

No. 513. A collection of Manohara-Kahānī. Leaves—72. Dated in Samvat 1939. Deposited with Thakura Śivasimha, Village Vikramapura, Post Office Oyala, District Kheri (Oudh).

Beginning :—श्रीमणेशायनमः अथ मनोहर कहानो लिप्यते ॥ कहानो ॥ एक साइकार पोतहों का राजा समय के फेर में पड़े अपना धन सब खो बैठा । और लगा निष्ठ दुख पाने और उपासा रहने । निदान उसके जो में वह सोच पाया कि जो मैं किसी महा पुरुष या सिद्ध के पास जाऊँ तो वह दुख मिटै क्योंकि सुना भी है कि एक साध के दर्शन से व्याध जाती है यह विचार चला चला एक जोगी के पास गया वह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मनोव्यंजन जान कर कहा ॥ दो० ॥ सुप दुप प्रतिदिन संग है मेरि सकै नहिं कोय जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय । यह उत्तम उत्तर पा वह विचार धीरे धीरे अपने घर आया ॥ १ ॥ एक खेवा बैरागी काशी के बीच मथिकच्छिका घाट पर बैठा प्रहज में दही पड़े खा रहा था कि देखकर किसी पंडित ने पूछा सरदास जो यह क्या करते हो वाला महाराज दही पड़े खाता है कहा प्रहज में—उत्तर दिया मेरे गुरु की दया से सदा ही प्रहज है । यह सुन पंडित हंसकर चुप हो रहा ॥ २ ॥

End :—एक बड़ा बटोहो प्रीति की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निष्ठ कष्ट पाकर लाठीटेकता चला जाता था । मार्ग में एक युवा आम्बाकड़ या निकला बूढ़े को देखकर उसे दया पूर्वक बोला भोजी मैं युवा पुरुष हूँ शीत शाम सब सह सका है तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके अब इस घोड़े पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला जाऊँगा उसको इस कहना वाजो से मगन बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा और युवा पीछे पीछे पैदल जाने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा अब बूढ़े निलज घोड़े पर उतर क्या वृ ने अपना घोड़ा पाया है जो साया दिन उस पर आरुढ़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा और धीरे धीरे चलने लगा घोड़ी दूर गया था कि इसका कष्ट देप फिर उसके जो मे दया चाहें और बहुतसी बिनती कर इसे फिर घोड़े पर चढ़ाया घोड़ी दूर

जाते उसे फिर उसी भांति उतारा निदान दो तीन बार उसे इस प्रकार चढ़ाने उतारने से बड़े ने पूछा बाबा तुम्हारे पिता का नाम क्या है बोला सैयद हमने पूछा तुम्हारी महतारी का नाम क्या उसने कहा बोबी जोरा पर यह कुलवती नहीं उसकी ध्याह करने से हमारे कुलमें कलंक लगा यह सुनतेही बड़े ने कहा हां बाबा अब मैं समझा कि चढ़ावें हमने और उतारे जोरा अब पाप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा ॥ इति मनोहर कहानियों संपूर्ण समाप्तः लिखतं गिरधारी लाल वैश्य वज्राज गंज देला ॥ संवत् १९३९ भाद्र पद कृष्ण पक्षे षष्ठ-मशाम् ।

Subject :—१०० मनोहर कहानियों का संग्रह ।

No. 514. Mantra. Leaves—4. Deposited with Pandita Ramasvarūpa Miśra of Arjunapura, Post Office Antu, District Pratapagadhā (Oudh).

Beginning :—॥ श्रीराम ॥

ऊं नमो षादेश गुरु को डाकिनो सिंहागे किल्ले मारो ।

यतो हनुमान ने मारो कहाँ जाय दुवकी किनो ने देखो ।

यतो हनुमान ने देखो सातवें पाताल गई सातवें पाताल से कौन एकड़ लाया,
यतो हनुमन्त एकड़ लाया यतो हनुमन्त बीर एकड़ लाय के एक ताल दे एक कोठा
तोड़ा दो ताल दे दो कोठे तोड़े तीन ताल दे तीन कोठे तोड़े चार ताल दे चार
कोठे तोड़े पाँच ताल दे पाँच कोठे तोड़े छः ताल दे छः कोठे तोड़े सातवाँ कोठा
खोल देखे तौ कौन-कौन खड़े हैं । डाकिनो सिंहागे भूत भैर ले यतो हनुमन्त तेरे
भाड़े से चले । ऊं नमो षादेश गुरु को गुरु की शक्ति मेरी भुक्ति कुरो मन्त्र
ईश्वरोवाचः ॥

End :—उक्त मन्त्र को १००० सहस्र बार जप करै गुगल के भौगुल तुरे के
कुल को ७०० शत पाहुती करै दो और मैनफज की राख को छरे में मिलाकर
चाती बनालो यह चाती तेल भरे दीपक में जलाकर उस दीपक की पूजा करो
उपनस्तर घाट या दस वर्ष की अवस्था उत्तम वर्ग देवगण वाले पवित्र बालक
(लड़का तथा लड़की) को दीपक के समुच्च बिठलाकर आप भी पवित्रता से मन्त्र
के जप के संकल्प का जल मैनफज पर डालो और दीपक के समुच्च इस मन्त्र
को लिख के निम्न लिखित यंत्र को पूजा करो तथा बालक को हथेली में वह
दिखाकर मैनफज की राख तेल में मिलाके बालक को हथेली पर लगा दो और
पूजित पंच उसकी गले में दक्षिण दृश्य में बाँधकर उससे कहो कि तू अपनी हथेली
में देखताजा फिर उससे जो पूछो वह अपनी हथेली में देखकर जो कुछ करे सो

सत्य जानो ।

॥ यन्त्र ॥

१	८	३	८
५	६	३	५
७	२	२	२
७	४	५	४

यह विधि उद्योग में लिखी है ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—हनुमान का मंत्र, दो यन्त्र, मंत्र से प्रथम सन्ध्या की प्राति करन्यासादि । मंत्र-सिद्धि करने की विधि ।

No. 515. Mantraprayoga-Saṅgraha. Leaves—14.
Deposited with Pandita Śiva Kanṭha Dube, Village Daudāra-
pura, District Kheri (Lakhimpur) (Oudh).

Beginning :—श्री नमोऽश्विनः ॥ अथ मंत्र प्रयोग संपन्न लिख्यते ॥ मंत्र
पापनी देह रक्षा को । ऊँ नमो लोह का लोहा जहाँ जाको कूड़ी हमारा पिंड
पैठा ईश्वर कुँवो ब्रह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुवंत रबवाला ॥ या मंत्र
को पढ़ि के कहाँ रहै कुछ चिन्ता या को देह में नहीं उपजे । सत्त सद्दी है ॥
बवासो का मंत्र ॥ उमरी उमरी चल चल स्वाहा ॥ लाल सत में तीन गंड
देकर ११ मंत्र पढ़ के पाँच के संगुठा से बाँधे ॥ दस रोग का गंडा ॥ परवत
ऊपर परवत घेर परवत ऊपर फटिक सिला फटिक सिला पर घेंजनी जिन
जाया हनुवंत नेहला टेहना काश को काश लो ॥ गोछे को घड़ो कान को
कनफड़ रान को भद कंठ को कंठ माला । घुटने का डढ़ डढ़ की डढ़सल
पेट को तापतिरलो फोया इतने को दूर करे ॥ भामंत नावर भे माता घेंजनी
का दूध दिया हुआ हराम मेरो भक्ति गुरु की शक्ति पूरा मंत्र ईश्वरी वाचा ॥
सत्य नामा अष्टदेश गुरु का विधि ॥ सात शनीश्चर हनुमान का पूजन धूप दीप
नैवेद्य आदि करे १०८ प्रति दिन जाय स्त्री पास नहीं जाय फिर होलो दिवालो
पहन में १०८ जापकर बला घड़ो कनफड़ भद कंठमाला डढ़ सल राख से
झाड़ें डढ़ के पाक के ताप तिलो छुरी से मोड़े हनुमान का पसाद अटवा
दिया करे ॥

End :—किये कराये उतारिवा का मंत्र ॥ ऊँ नमो आदेश गुरु कोऊ अपर
केश विकट भेष प्रमति पहलाद राखे पाताल राखे पाव देवी जंघा राखे कालका
मस्तक राखे महादेव यह पिंड प्राण को छेदे तौ देव दानाव भूत में डंड को

संकुली गंडलीय ते जरी एक पहर बाह्ये पहर सांभ को सवाण का किया को कराया को डलटि बाह्ये पिंड पर परे इस पिंड को रक्षा श्री नरसिंह श्री करै ॥ सध सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ कीड़नगरा को मंत्र ॥ ऊं नमो पादेश गुरु को जादि नगरा ते चलो रालो सहस कोटि लाय च्यारि दोटि कालो कावरी सध एक उन्हार मंदिर माहि घर करै प्रजा ने बहुत सतावै ॥ जुहारी जतो हनुमंत को हमारो गली में घावै ती लंका से कोट समुद्र सो पार जै कोड़ा मगर रहे ती जतो हनुमंत वीर को दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ विधि ॥ तिल काले पर ७ मंत्र पढ़ि कोड़ नगरा पै नापि जै दिन ७ तथा १४ कोड़ नगरा जाय ॥ आप तिहनी को मंत्र ॥ ऊं नमो हुतास परबत जहां सुरद गाव सुरद गाव के पेट में बच्चा बच्चा का पेट में तिलनी तिलनी दवा दवा तिलनी कटे सर कड़ा बड़े फोवा कटे हरो फुरो । साठ संका करके छुरी के फलग सां भाड़ दोजै सरफ डा बड़े छुरी को जोह कटै ॥

Subject :—हर प्रकार के रोगों के मंत्र और वशीकरण चादि मंत्र का वर्णन ।

No. 516 (a). Mantra-Saṅgraha, Leaves—16. Deposited with Bābā Jhabbūdas of Bādasāhanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning :—ओ गणेशायनमः ॥ अपनी देह रक्षा को मंत्र ॥ ऊं नमो कोह का कोड़ा जहां हाको कुंड़ा हमारा पिंड पैठा ईश्वर कुंजी घासा ताला हमारा पिंड का ओ हनुमंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहीं रहे कुछ चित्त बाको देह न रै उपजै सुत सहो ॥ बवासोर को मंत्र । उमती उमती चल चल रवाहा लाल सुत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांच के संगुठा से बांधे ॥ इस रोग का मंत्र ॥ पर घत ऊपर पर घत और परबत ऊपर फटक सिना फटक सिना पर संकली जिन जाया हनुमंत नेह ला देहला कारव को करव लाई । पोछे की घदोठ, कान को कनफेड़ रान को वद कंठ का कंठ माला छुटने का बहक बाड़ा को बड़ खल पोठ को ताप तिलनी फोवा इतने को दूर करै मर्मत नावराये भाता अन्नो का दुध पिया दुधा हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति पुरो मंत्र ईश्वरोवाचः सध नामा पादेश गुरु का । विधि । साठ शनिश्चर हनुमान का पुजन घूप दो नई शिवादि करे १०८ प्रति दिन जाप स्त्री पास नही जाय फिर होली यादिवाली ग्रहण में १०८ जाप का खला घदोठ कनफेड़ वद गंध माला बाड़-सल रूप में भड़े बहक को पाक से ताप तिलनी को छुरी से भाड़े हनुमान का परछाद घटवा दिया करै ॥

End :—समा मोहनी ॥ काल सुष धो करे सलाम । मेरी बाँछों में सुरमा बसे जो देखे तो पाँच पड़े । दोहारे जो सुल बाजम दस्तगौर को छू बिधि । सवालान गेहूँ पे १२५००० मंत्र पढ़के बाँछों पाटा करावे श्री पाँठ भिलाय हलवा बनावे फिर जो सुल बाजम दस्तगौर को वस्त्रे नियोजन दिलाके आपही पाय जब किसी समा में जाय सुरमा पर सात बार मंत्र पढ़कर लथाय जाय सब समा वस्त्र में होय ॥ समा मोहनी सिन्दूर । दयेली तो हनुमान वस्त्र भैरो वस्त्र कपाल नारसिंह की मोहनी मोहै सब संसार ॥ मोहन रे मोहनवा बोर सब बीरल में तेरे शिर सब की दृष्टि बाँछि दे मोहि तेल सिन्दूर चढ़ावे तोहि तेल सिन्दूर कहाँ ते पाया कै लाल परबत से पाया कौन लाया अन्नो का हनुमंत भौरी का मलेश काला मोरा तोतला तोना वस्त्र कपाल बुझ तेल सिन्दूर का दुसमन गया पताल हुदाई का मियाँ सिन्दूर को हमै देखि शीतल होइ जाइ हमारी भक्ति गुरु को भक्ति फुरा मंत्र ईश्वरो वाचः सत्यनाम आदेश गुरु को । विधि ॥ सात शनिश्चर वा रविवार दोपक ८ तेल करके होवान देखे मिठाई योग घरे १०८ जब फूल पात करके पूजा करै सिद्ध हो जाय ता पाछे जहाँ जाय सिन्दूर पे सात बार मंत्र पढ़ भाषे पे लथावा जाय राजा गुस्सा हो जाय दंड देखे को बुलावे तो देखते ही शीतल हो जाय जिस समा में जाय वहाँ के सब मनुष्य आदर भाव करे ग्रह प्रीति से सम्मान करै ॥

Subject :—हर प्रकार के ३०० मंत्र कावै रोग आदि के वखन ॥

No. 516 (b). Mantra-Saṅgraha. Leaves—10. Deposited with Umāhankarā Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—आसमेनो पास मोहनी मस्तक मोहनी जन्म समा कै बिद्या बाँछो मोहनी मन मोहनी तरादायो हनुमंत विगाजे कपाले भैया श्री श्री सिंदूर को दृष्टि देखे पताल ॥ १ ॥ आनो ॥ तुमहो से माता तुमहो से पिता तुमहो हस्त रह्यो वे अगिल या पानी परंतो कार शाय सोता सोता राम राक्षाय सर सुवर पगिनि सो बत्ता रक्षा करै गुरु गोरख प्रबधूत मेरी भक्तो गुरु को सकतो फुरा मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ २ ॥ धूल धुनी में रोवायु चंद सुबद सर्व ई ठकायक देह पानी पानी पढ़ते पानी हात उचाट लागु ॥ ३ ॥ देवत के चतुर्ना गुचलंत के पमला गुरु हत्ता के पाठन गुमारता के हस्त लागु लागु नल गु कहक राजा श्री विपुलारी कोटि भजा वेगी लागु ॥ कंबक देस कमध्या दोनो जह वसे असमाइल जागो असमाइल जागो जागो बाही बाकी न फूल हंसै न भिगसे न फूल मुँछै न कुमिलाइ जो सुखे फूल की बात सो पावे हमरे पास ॥

End :—मंत्र साँप मारक । उत्तर दिशि कारी बादरी ल्यहि मध्य ठाठ काल पुष्प एक हाथ चक्र एक हाथ मदा मारो सत खंड लाइ । मदा मारो सत पाल लाइ सो हर २ निर्विष शिवाज्ञ । अन्यत्र । दिह पवन निहि विस नासै तेहि देखि घरहर करि संसर्जो बाख विसमो रुदिष्ट भै नहो विष ॥ पहि मंत्र कुसलै बालु गालै माख तत्काल निर्विष होइ ॥ जब बंधन मारै क मंत्र ॥ जटा ऊपर का नार है ॥ ॐ नमः शिवाय शिव विचित्र सा पुनः कामा मोटे पणिपा परे पोठे ॐ नमः शिवाय विचित्रां काम्याल हरि जगावै क मंत्र क्व मास को परो डंक कापा को करार गये न तो निम झोडि काम घात मिथ उड़इ सर बाहर पठाबहि ठावना नाच मारो वहाक खंडा न कै पड़ो उठो ठोठो भइ लागु पर मदसर उठुरे खंड कहा हगुरिगव पंजरन्द ला कटो काहर हाकड़े सो वैना नापो निनि डंग उठै बिहास पिये सात समुद्र मांके पड़ो कविष बाढ़ी जीवघरा कामजी रहि दि जगावै जोगिनि पाखतो जागु २ परमेश्वर उठरे डंक ॥

No. 517 (a). Mantra-ki-Pustaka. Leaves—5. Deposited with Mahanta Santadāsa of Maujā Sagarāmapura, Post Office Pariyāva, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॐ पश्चिम देसते चलो हनुमंत वीर मृत लोकहि सो संसार सिजा पहिरे है वजरंग बंदर छूटे भुरे घंटाकि सैन पवन को पूत वे बांधे कलत्रमकपूत श्री राम पर बोरा पावो देव सुत सब बांधि मंगाये मलु करै पयुबाधु छलुकरै छलु बांधु वलु करै गुदि दे पाठ देवो हनुमंत देव तेरे या मंत्र को या शक्ति गोड के गरि मारे नौ नारो वहसरि कोठाते बांधि महं कारि अपने हे बाढेन करै तो बहिन भांजी को सज्जा पांउ धरे राजा रामचन्द्र कहिरि जान ।

End :—मन्त्र पान का ।

ॐ कामरु देस काममा देवो तिनने मेजे चारि पान पहिलो पान रातो माता दुजो पान विरह को माता तौजो पान मौरा अउर चउथो पान मिलावै जेड़ा जो कोउ पाइ हमारो पान सो पावै हमारे पास न राति कल न दिन सुख फिर फिर देखै हमारो मुख कालो गुदरी कालो राति जाइ बैठि अमुक की पाठ सावत होइ जगाइ ल्याइ बैस होइ चटपटी लाउ टाड़ होइ चलाइ ल्याउ न सबै मुख कथि को कार दोहाइ ईश्वर महादेव को दोहाइ नानुष जोगी को दोहाइ इस मैला जोगी को ।

Subject :—हनुमान का मंत्र, महाराक्षस छुड़ाने का मंत्र, चोर जानने का मंत्र, मोहन मंत्र, कार्य सिद्धि का मंत्र, मोलें उतारने के दो मंत्र, बाघ मारने का मंत्र, गोल्ला का मंत्र, विक्षित का मंत्र, यशोकरण फूल का मंत्र ।

No. 517 (b). Mantro-ki-Pustaka. Leaves—4. Deposited with Pandita Vindhesvariprasāda Miśra, Teacher, Sanskrita Pāthashālā, Village Gaṇḍā, Post Office Madhoganja, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ आपकी देह रक्षा का मंत्र ॥ ओ० नमो लोह को बाड़ा जहाँहा की कुहो हमरा पिंड पैठा इधर कुँचो गङ्गा ताहमा हमारा पिंड का श्री हनुमन्त रखवाला या मंत्र को पढ़िके कहीं रहे कुछ वित देह में नहीं उपजै । सव्य सदो ॥

॥ ववासीर का मंत्र ॥

उमती उमती चल चल स्वाहा ।

लालसूत में तीन गाँठ देकर २१ मंत्र पढ़िके पाँच के शृंगुठे बाँधे ।

दश रोग को भाड़ना

परवत उपर परवत और परवत ऊपर फटिक सिला फटिक शिलापै शंजनी जन जाया हनुमन्त नेहं लाट हला कोख की कंचलाई पौछी को घटो ठकान को कन फिर रान को मद कंठ को कंठ मोल घुटने का डमरु बाड़ को बाड़ शूलपट को तापतिल्लो की या इतने को दूर करे मसलनातर मुझ माताशंजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरो भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोबाच सत्यनाम आदेश गुरु का ।

End :—॥ बैरो जेर करवे का मंत्र ॥

घों नमो वली या वली उरका चला बुलुफ इसका बाजु बुलुफ दुशमन का जेर हमको खेर ॥

॥ विधि ॥

२१ दिन पूजा हनुमान जी की करै मंगल से १०८ जप करै जप करै धूप दोष निवेद्य करके मंगल को मंगल १०८ जप करै वृत्त राखै जहाँ बैरो बैठा होय रत को चुकटो पै ३ या ७ बार मंत्र पढ़िके बैरो की तरफ फूँके ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—अपनी देह रक्षा का मंत्र और उसकी विधि । ताप-तिल्लो का मंत्र । उसकी सिद्धि की विधि, बाड़ के दर्द का मंत्र । गर्भ रक्षा का मंत्र ।

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—नेत्र की पीड़ा का मंत्र । डमरु पसली व बाजु का मंत्र । उसकी सिद्धि करने की विधि तथा प्रयोग । विष उतारने का मंत्र । सभा मोहनी मंत्र ।

No. 518. Moti-Binaule-kā-Jhagvā. Leaves—8. Dated in Samvat 1933 or A.D. 1876. Deposited with Paṇḍita Devatādina Miśra, Village Sulatānapura, Post Office Thānā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्रीमच्छैलेशायनमः ॥ यद्य मोती विनैले का भगवा लिप्यते ॥ क्याल ॥ बड़े बड़ार कमी न करते छोटे मुख से कई वचन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनैले लगे लड़न ॥ रहूँ सिध के बीच समुन्दर सोप दीप हो रही चाला । पड़ो बूँद स्वाती की मोती नित प्रति हुषा निर चाला ॥ चातुर ने करो चाह बड़ी हिकमत से मुझको निकाला ॥ दिया जौदरो हाथ दलहर जद विस का मैने टाला ॥ चातुर के मन बसा तुलत भगवा मुझ को डाला ॥ सोने का किया साध बार मुखड़े पर रहता रखवाला ॥ ऐसो धरन से रहूँ तुम्हें क्या कहूँ तू घाजा मेरी सरन । अपने मनमें सभी बड़े हैं मोती विनैले लगे लड़न ॥ क्याल ॥ जवाव विनैला ॥ कई विनैला सुन भाई मोती क्या कता है बड़ार । फुलों में सिरदार फूल मेरी हुनिया में हैं उजलार ॥ दो दो बांधत राख पदनते पख कहलाते सिरार । सब के कूँ बकूँ मदव में रलूँ लान क्या लुगार ॥ सब के साके काज लाज मैं रलूँ शम भनमनसार । क्या गरीब क्या तालेवर में बड़ रही मेरी पवार ॥ ऐसो धरन से रहूँ तुम्ह से क्या कहूँ तू घाजा मेरी सरन अपने में सभी बड़े हैं मोती विनैले लगे लड़न ॥

End:—क्याल जवाव मोती का ॥ कई ओ मोती सुनरे विनैले में घनमोल बड़ा सिरदार । क्या बजोर क्या राजा बादसाहि बैठे गले में माना डार । जोड़ी ज्योति जगमगी कच हरी भरा हुषा साधा दरवार । पैसे के दो सर विनैले मंगा कूड़े रखवा दिये द्वार ॥ मैं कहता हूँ सुन वे विनैले अब भी तू होजा लाचार ॥ ज़िद तू अपनी छोड़ दे हमसे नहीं तो माफंगा पैजार ॥ ज़िद अपनी को छोड़ विनैले घाजा तू ती मेरी सरन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनैले लगे लड़न ॥ जवाव विनैले का ॥ कई विनैला सुन वे मोती चुपका रही तू मुझो के । नंगो बड़ो करदं धोरत कपड़े खीन लेवै तन के ॥ मोती के घाले कानों में हाथों में गजरे सोने के । देख ती वे अच्छी लगे हैं विना विनैले कपड़े के । जब तक तुम पर भाव है मोती तब तक तुम ही कपड़े के । जब पानी डल जाय तुम्हारा फिर नदि कीर मतलब के ॥ बड़ी नहीं तुम में टकनाया चमकता था विस दिन । अपने मनमें सभी बड़े हैं मोती विनैले लगे लड़न ॥ ऐसो धरन से रहूँ तुम्हसे क्या कहूँ तू घाजा मेरी सरन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनैले लगे लड़न ॥ हरि ओ मोती विनैले का भगवा संपूर्ण समातः संवत् १९३३ कार दशहरा ॥ श्री शंकराय नमः ॥

Subject :—मौल्य और चिन्मैत्रे की अपनी अपनी बड़ाई का ब्यंन -

No. 519. Māshṭīkapraśna. Leaves—2. Dated in Samvat 1784 or A.D. 1827. Deposited with Pandita Śivakanṭha Dubē, Village Devadārapura, District Kherī (Lakhīmapura) (Oudh).

Beginning :—ओ मणेशायनमः ॥ अथ मृष्टिक पत्र लिप्यते ॥ लग्न की केन्द्री बृहस्पति तथा शुक्र होय तौ जीव चिन्ता कहिये ॥ मं. वृ. कुं. म. मिह इन ऊपर केन्द्री कुल चके होय तौ धातु चिन्ता कहिये ॥ मं. ३ कुं. ११ कं. ६ म. १० इनमें कोई लग्न होय अथ बुध तथा शनि वकी होय तौ मूल चिन्ता कहिये ॥ ३ वृ. ॥ २ घ. ८ तु. ७ मि. १२ ॥ क ४ ॥ चं. वृ. शु. तौ जो इनकी दृष्टि होय अथवा स्थित होय तौ ओव चिन्ता कहिये ॥ ४ बुध लग्न ये ५ अथ ९ ॥ ५ ॥ शुक्र की दृष्टि होय अथ ॥ ६ ॥ शुक्र होय तौ मूल चिन्ता कहिये ॥ चंद्रमा केन्द्रि बुध होय कं सूर्य की दृष्टि होय तौ मुंन मूल बतैये ॥ चंद्रमा की केन्द्र शुक्र देषत होय तौ फल चनका कहिये कपासु पद्मादिक कहिये ॥ ७ ॥ बुध ॥ ७ ॥ तथा बृहस्पति होय तौ मिर्च फल तथा धातु स्नाह पीत होय ॥ ८ ॥ शुक्र चंद्रमा तथा शनि ॥ ७ ॥ वे होय लग्न ते तौ जायफल धातु शूल श्रुति कहिये ॥ शुक्र चंद्रमा शनिश्चर जो ७ वे होय तौनि वस्तु होय धातु मूल घृतिक ॥ १० बुध ॥ मं. ॥ रा. ॥ श. ११ तथा ९ होय तौ सुगंध को फुल कहिये ११ ॥ बु. ॥ वृ. शु. जो ये पांचो होय तथा ॥ १० ॥ आन को देषतो होय तौ केला को फल कहिये ॥

End :—१२ ॥ राहु के० बु० शु० जो ६ होय तथा स्थान को देषत होय तौ कक्या फल कहिये ॥ बु. वृ. मं. जो छठो होय तौ तीन वगै को वस्तु कहिये ॥ वृ ३ श. १० बु० होय तौ पारंवर वस्त्र लग्न कुं. चै. श. देषति होय तौ फल मूल कृष्ण सुपेट होय १६ चंद्रमा मे. बु. जो १० चारहे होय तौ एक स्वेत पीत वस्त्र होय ॥ १७ ॥ मं. रा. केन्द्र लग्न को देषत होय तौ घोडोय धूम धुवां सरोषो वस्त्र होय ॥ चंद्रमा केदो होय तौ स्वेत वस्त्र होय ॥ चंद्रमा भवन शुक्र होय तौ रुपे को मुद्रा कहिये ॥ बुध केदो होय तथा केद्री को देषति होय तौ फल मूल तुल मद्दा हरो वस्तु होय ॥ वृ. ७/९ तौ रक्त शुक्र स्ववस्त्र युक्त वस्त्र जोखे होय सूर्य ४/१० होय तथा लग्न १/७ लग्न को देषत होय तौ मुक्ता फल शुक्र वस्त्र होय ॥ जो केतु होय तौ विद्रुम होय मंगल केन्द्री को देषति होय तौ लाल विद्रुम होय ॥ केद्री शनि होय तौ लोहा कार होय राहु केद्री होय तौ संपाकार होय ॥ बुध ३/५ होय राहु सूर्य को दृष्टि होय तौ सब गुण तथा देषति होय तौ स्वेत कृदन जानिये ॥ मंगल शुक्र १/५ होय तौ मृत्तिका कहिये सूर्य केद्री होय बुध २

होय ५ मंगल होय तौ मूडो में फल कहिये ॥ बुध ५६ चंद्रमा शुक्र देखत होय
तौ पालो को फल कहिये ॥ सूर्य ६ मंगल ९ होय तौ तिल मसुरो रक्त करौ
करबुर कहिये ॥ शुक्र ११ होय तौ गेहूँ जौ कहिये ॥ इति श्री मुष्टिक प्रश्न
समाप्तम् शुभं भूयात् ॥ लिखत भोलानाथ त्रिपाठी स्वपठनार्थ नेरो के बीच संवत्
१७८४ चैत शुक्ल नौमि ॥

Subject :—ज्योतिष द्वारा मुष्टिक वर्णन ॥

No. 529. Nāḍī Parīkshā. Leaves—50. Deposited with
Pandita Jagannāth Bajapei, Village Makhī, Post Office
Nevāṭani, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ यद्य नाडी परिक्षा लिप्यते ॥ दश ॥
शुभमन सरस्वती सुमिर्ये शुद्ध चित्त हित जानि । प्रगट परिक्षा जीव को
लहियो चतुर सुजान ॥ चौ० ॥ पित्त वाति पुनि दरेष्य जानि । देवो धमनी राह
पिङ्गालि कटुङ्ग तिल पुनि उष्ण को पानो । शिथिलरक्ष त दृढ विधि जानो ॥
काऊ मूल सम चंचल नाडो । पित्त प्रकोपे चले उधाडो ॥ दृढ दहो बिस्वा
गुह पाय । तिसमें ऐसा माय अणाय ॥ प्रात समै पुनि पाणो पोवै । तिसको
नाडो पित्त घर धीवै । पीर परबूझा संपूजे शाली । मिष्ट धार मल पित्त पपालो
पीत संपिनो पाय सनि पातो । वात वस्तु पायो होय पातो ॥ चलतो चलतो
फुलिन ज्यो कहे । कारे मात्र पांवा जिमिलुंदे ॥ सौफ सजी धनियां मषियां ॥
मिछी गरी सब लीजे मषियां ॥ पित्त नाडी दूध कफ सर तासै । तौ आनि ज्यो
वेद उलासै ॥ हंस सरो यहि ज्यो जव पावै । फिर पोछे पित्त के घर आवै ॥
पाणो सखो मरखो प्रेसो । कफ नारोडा लक्षण कैसो ॥ वटेट बति तौ धमनी
जानो । वात प्रकोपे सोतल पाणो ॥ सोम चले पुनि सोतल उपजावै । वात
पित्त का मेद लपावै ॥ मृष प्रकोपे चंचल हो जावै ॥ रक्त रश्म को जानो
समांझे ॥

End :—चतुर्थे उर को नसवार । बुंटात ॥ पत्र अगधिया के ग्रहो रक्षको
दे नसवार । जुर चतुर्थे ना रहै भाव्यो बृद्ध मंफार ॥ पुनः । अपुष कंटालो मून
छे रवि नहि उगे सर । गुमल धूप दे बांधिये अतीव उर जाय धंधूर ॥ पुनः ॥
दूधक मूल जो संप्रहो बुध रवि दिन के घार कंठ बांधो । धूप दै अतीव उर जाय
निरधार ॥ पुनः पकात्तरादिक को मंगा या उतरे कूडे अपुष नाम से
मृत तस्मैति लोक कंद धातु मुंचल्ये कादिक उर बांधिये ॥ काला तिल चक्र
पाणो दूध मंत्रसे मंत्र नित्य उर के नामे बाहिर जात तिलको डेरी कांजे पाणो
को घारा बागिदं दूर दीजे कहो ते मुषिहं सोम नित्य उर जाय । जानि क्षमि

फहिर करि उठि धरि पावै फिर पोछा ने कोछै नहीं ॥ इति मिय खर जाय ॥
मस्तक पीड़ा छिद्र छिद्र वे ज सोत खर जाई ॥ सोत खर को चूने सखिपात
कलिकात ॥ वी० ॥ पोपल मूल भौ पोपल पिता । सुनि चव्यक टांक करि
मिता ॥ पांच टांक भांखनो जायै । सौल टांक चिरायता पायै ॥ मुष्ट पुराणों
साढ़ा पांच बोंस सिर साहो लेती । का पोस टांक तीन चूने छे प्रातें खरें सीता
गन रहै हूय पातै ॥

Subject :—वैद्यक वचन ॥

No. 521. Nakshatra Prakāśa. Leaves—15. Dated in 1888 or A. D. 1926. Deposited with Umāsankarā Dubē, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्रावण श्रावण बादरी महो जुलंती जाय । श्रावण पहलो
पंचमा जो नहीं उठे ब्याल । जुना जे पौल माल बैतू जासौ मोसाली । श्रावण
पहिलो पंचमो कै बादल के बीज । कान काढ़ो रबी कवा रावो भातर बीज ।
चाधि नवमी चौदह्या जे संकरण पड़ाई । परमर्षी जे भा भली कुना भंग
कराई । जेटी चर्च समावस्था रवि छाडै तो जाई । जोजे शशिहर समेत त्यागो
कहसो मोह । जुलर तो उत्तम समो माघे मध्यम काल जो शशि दक्षिण चाधवै
तौरो बज्र काल । श्रावण वदो पकादसी तेतो रोहिणि होइ । तेतो समो परंष
जे विरला जान कोइ । कृतिका तौर कटवरो रोहिणी तौर सुकाल सेते चाव
सुगासिर तो पड़े हवाहर काल । जेष्ठ सुदिवा निर्जला जेतो घटो का का होई
सातै भागज दोजियेव वरता फल होई । वैतु वरतो वरसे अपार व्यापी वचतो
अति वनसार । पंचै पंचस नुषिरिवाई । कुम्भो मा मेहज भाई ।

End :—चादि भरणी चसलेष मधा तिहुं वजाधो रस तिमि या । सात
नक्षत्रा का कड़ा । जे सिर वै सेमान । शर साधै चरधो करै । घेत बृह चसराल ।
पूर्वो गल्यो परि बागलौ ॥ गलौज पंचक मूल । पूर्वाषाढ घेडू कसो तो निपजै
सावृ त । चैत बीता बैशाख जडेलो । तिथि नथिन जोरई रै मौसो तिथि तौ
पर्वत दासे । नक्षत्र बधे तौ पाल विगासे । तिथिवार होइस समनुला तौ पुरयो
फुले सो बन फुला मयवैज सर सात दिवस वरसै जुधन जन अति होर जु पुर ।
भोग बुलातो सो हो गया नू क्यों सुतो नाह । पार भरमे छै मडली छवि स प्रनु-
राधा ॥

No. 522. Nāmarāsi Lakṣhaṇa. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Vāsudeva Pāṇde, Village Kamāsa, Post Office, Mādhoganja, District Pratāpagāḍha (Oudh).

Beginning:—दया शुक्र की ॥ अथ लिखते नाम रासी के लक्षण ॥ मेष रासी पुरुष की अच्छी सुरती होयगी ॥ महीना भादों का अच्छा शुभ होयगा ॥ बार चादित की शुभ होयगा ॥ कंवर में पोर होयगी ॥ ताको रत्नाज ॥ गुलाब पोर चासकंद ॥ व काली मिरच ॥ व हांठि ॥ सब का बराबर करिके पोसि के ॥ गोली बनावै नाम पानी ले पाइ तौ भाराम होयगा ॥ जो चन्द्रमा देखै तौ वह महीना पुसी में कोतेगा ॥ देही पतरी होयगी ॥ परच बेकटर करेगा ॥ लोह पकवार गिरेगा ॥

स्त्री वृष रासि होय तौ पहिले स्त्री मर जायगी ॥ दूसरी स्त्री के लरिका होयगा ॥ लरिका मर होयगी ॥ लरकी पांच होयगी ॥ तनी संतान होयगी ॥ तीस में लरिका दीप जीवेगा ॥ लरकी दीप जीवेगी ॥ पोर सब चाखिर हो जावैगे ॥ तीस में एक लरिका तालेश्वर बहुत होयगा ॥ पोर बड़े चादमो के पास जाय तौ दाहिने बैठे तौ बड़ी पदवी पावेगा ॥ चल परस ग्यार ॥ ११ ॥ में होयगी ॥ चलक बाप ॥ १५ ॥ में होयगी ॥ ऊंचा से गिरेगा ॥ बरस बीस ॥ २० ॥ में उपटौ उतारन होयगा ॥ बरस चालीस में चलक भारी होयगी ॥ चागे उमरि बरस नवे ॥ २० ॥ जीवेगा ॥ अंध रावै तौ पुसी होयगा ॥

End :—४४३ ऐ सकुन धर्म नहीं थोप धर्म नोहानी धसे । बीच में विरोध उपजसे ले माटे तुसा थप रहे जो बीज का मामला मध से विचारि काम कर जो ग्रहों पूजा करजो धुष टल से तौल (तिला) इन्दी ऊपर छे । ऐसकुन तु काम धो पानी से मई वस्तु आवसे पाछी एक मास बेक बरस माकंडोछे व्यापार माल मध से राजा श्री जैन मान धसे तुमन मा संतोष राखे जे ये निशानी ये निशानी तानी इन्दी ऊपर सीलछे ॥ प्रश्नावली समाप्त ॥ शुद्धया ॥

Subject :—

- (१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मेष राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण । कंवर की पोका की औपधि व उनके पास रखने के लिये एक यंत्र ।
- (२) पृ० ३ „ „ ६ „—वृषराशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण व यंत्र ।
- (३) पृ० ६ „ „ ९ „—मिथुन राशि के पुरुष „ „ „ „ ।
- (४) पृ० ९ „ „ १० „—कर्क राशि के पुरुष का लक्षण, औपधि व यंत्र ।
- (५) पृ० १० „ „ १२ „—सिंह राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण तथा यंत्र ।
- (६) पृ० १२ „ „ १३ „—कन्या „ „ „ „ औपधि ।
- (७) पृ० १४ „ „ १६ „—तुला „ „ „ „ „ ।
- (८) पृ० १६ „ „ १७ „—वृश्चिक „ „ „ „ „ ।
- (९) पृ० १७ „ „ १९ „—धन „ „ „ „ „ ।

- (१०) पृ० १९ से पृ० २० तक—मकर राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण तथा वंश ।
 (११) पृ० २१ „ „ २२ „ —कुंभ „ „ „ „ „ ।
 (१२) पृ० २३ „ „ २४ „ —मीन „ „ „ „ „ ।
 (१३) पृ० २५ „ „ ४० „ —शकुनावली फल सहित ।

No. 523. Onāmāsi, Bārāhakhadi, Pañchapāṭi, Dhāturūpa and Laghuchānakya Rājñiti. Leaves—18. Deposited with Gosvāmiji, C/o Paṇḍit Bādri Nāthji Bhatta, Hussainganj, Lucknow.

Beginning :—सिद्धि श्री नवैशायनमः ॥

ॐ नमो श्रीर्धे ॥ घ षा हि हो रं ऊं रे रै ले लै रे घे
 ॐ षाऊ षंनह ॥ का षा गा घं ना ॥ च ला जा भं म ॥
 टा ठा डा ढं षा ॥ त था दा धं ना ॥ पा फा बा मं मा ॥
 जा रे ला वा सं ये सा हा ॥ लं लो वा ॥
 क का कि को कु कू के के के का कै कं कः ।
 घ षा वि षो घु पु वे रे रो वा पं षः ।
 न ना नि नो गु पु ने नै गो गी गं नः ।
 घ षा वि षो घु पु वे रे रो वा पं षः ।

Middle:—

पठकः पाठकश्चैव ये ज्ञान्ये शास्त्र चिन्तकाः ।
 सर्वे श्वस्तानि मूर्खो यः किंवा वाक्स्पष्टितः ॥ ७ ॥
 परितः देशे कुशला श्वस्त्ये बहुषो मरा ।
 स्वभाव ननु वर्तते सहस्रे श्वसि तुल्यमाः ॥ ८ ॥
 हतं ज्ञानं किंवा हीनं दत्ता श्वानिना मरा ।
 हतं किंवाक सौम्यं श्वस्त्ये रश्मिना दत्ता ॥ ९ ॥
 केचिद् ज्ञानतो नष्टा केचिदष्टा प्रमादतः ।
 केचिद् ज्ञानावशेषेन केचिदष्टा स्तु नास्तिका ॥ १० ॥
 श्रमिन् वचन दाग्निं विष वचनाज्जो स्वदार एति तुष्टे ।
 परितः परितः किंवा केचित्कश्चिन्मदित्ता वसुधा ॥ ११ ॥
 इति लघु ज्ञानपथे रात्रि मोति कारणे द्वितीया श्वायः ॥ १२ ॥

End :—

पञ्चैताश्चपि श्रुत्यन्ते नर्मस्वस्वैव देहिना ।
 पाशु कर्म च विषं च विद्या निघनमेव च ॥ ७ ॥

लिखिता चित्र गुप्ते ललाटे शर मालिका ।
 तां देवोपि न शक्नोति स्तुतिव्य लिखितं पुनः ॥ ८ ॥
 मावितव्य यथा येन नासौ भवति चान्यथा ।
 नोयते तेन मार्गेण सुखं वा तत्र गच्छति ॥ ९ ॥
 स तत्र बद्धा रणवेव क्लार्दवैर्न नीयते : ।
 संसार विष क्लेशस्य द्वै फले भ्रमृतापमे ॥ १० ॥
 काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जने सहः ।
 यने रने शत्रु जल अग्नि मध्ये महाशब्दे पर्यंत मस्तकेवा ।
 सुप्तं प्रमत्तं विषयस्थितं वा रक्षानि पुण्यानि पुराकृतानि ॥ ११ ॥
 इति लघुचा नारके राज नीति शास्त्रे अष्टमो अध्याय समाप्ता : ॥

इति

Subject :—पृ० १—२—खानम तथा वारह खड़ी संपूर्ण

पृ० ३ से ५ तक—सिद्धी घरनाको प्रथम पाटी संधै सुप्र वर्णन द्वितीय से पंचम पाटी तक वर्णन ।

पृ० ५—६—धातु रूप वर्णन ।

पृ० ७—१८ तक—पार्थना राजनीति शास्त्र प्रथम अध्याय से अष्ट अध्याय तक भिन्न भिन्न विषयोंपर द्रष्टव्य वर्णन ।

इति

No. 524. Padamāvata. Leaves—144. Deposited with Pandita Krishna Vihari Misra, Model House, Aminābāda Park, Lucknow.

Beginning :—नहीं होता ये सब कहते हैं एकसर । गजांलो जो घुम का सैदरी घुसकर ॥ तमासा कर उधर सै ज्ञान कुं जामै । गुलो गुंवे के साथ इस दिल कु बैलामै ॥ हमरी बातर सबके साल गुलसन । भरे हैं कैसे ये फूलों से दामन ॥ दिले आस्क से दो देवा निसा है । जहाँ लाला है और आवेर वा ॥ गुले चंपा पिलाया वन पिला है । तेरी चंपा कलौ से खुसनुमा है ॥ गुलों के बीच मैनु सैरा राना । रवा हो मुत्तलिल चुं जाममीना ॥ है सपे सबज पर गुंवे नमूदार । तेरे तोते के जैसे सुरज मिनकार ॥ बहा चेहरे को कर गुल के मुकाबिल । कि जामें फूल इसके गुल बनादिल ॥ चिरागे गुल नहो क्यों कर मला गुल । तेरे भागे है गुल चुं समै काकुल घर न रगसे तू भाँवै लड़ावै ॥ उस नजरी से बहो मिल के भावै ॥ नरज सब मोहरु भागे फिल बाज । चमन के बस फरेधी बुकी पदाज ॥ नखी जासा जुवाने मसल इतकार । ना कहती थी लघुन बलुज

गुल जार ॥ लगे हर मोले पो बरसाव संगेज । न रहता छुज हरफ गुल मारिद ॥
गुल रेज पदम भी चाहती थी ऊनको पधार । हुई तैयार बकसत पास पातर ॥

End:—पदम को रसके उसमें खास पोसाक । फिरे बेताब करके चुस्त
चालाक । चले दिल्ली के जान बाद ले तंग । बजाहर सुले ले किन पदों में जंग ॥
ये साहरत दो सखी सहरी नगर । पदम राजी है चाती है साह घर में ॥ रतन से
हाथ उठाकर वादले जान । हुषा चाहै सह के घर मुसलमान ॥ बई सुस्त जा
हिन्दुस्तान में पाये । पौर उसका खास डोला साथ लाये ॥ रयी पोसाक उसमें
थी मुयस्तर । मगर कुर वाम होती जिसके ऊपर ॥ हजारों गिर्द डोले उसके बाहम ॥
कि है इसमें परस्ता राम हमदम ॥ बई सुस्त गरज वो कौज मझार ॥ फरोदाई
लयदारया चूं हकवार ॥ खबर जल्दी से सुनता को सुनार ॥ कि पदमावत हुज्जी
में है चाहै ॥ हमे इसके मुह स बसही भरती । पसज आदाव है ये चर्ज करती ॥
मैं कुफरे काफरी से हूं गुरेजी । कंक तलकीन ठरोके दानो इवान ॥ रतन को
कीजिये बकसत कदादम । कुछ उससे हमको कहना है कहे हम ॥ मुझे कहना है
जो कुछ कह सुनाऊं । फिर बंदगी मैं सह को चार्ज ॥ गुलामाने बफा आ सध
पाये । उसे जो लामे वैसे हो जामे ॥ यकीन देसाही सुन के साह कू पाया ।
न पैराहन मैं फिर फुला समाया ॥ कहाले जायो जल्दी से रतन कू । दिपादा
आके उस रसके चमन कू । मोरो जान वसे यही कहिये बसद सौक । कवेहद
तरे मिलने का है बस जाक ॥ हिदायत की खुदाने तुम्हको जाना । कि वू होने
को चाहै है मुसलमान ॥

Subject :—रानी पदमावती का हाल बर्णन ॥

No. 525. Panchāṅga Darpaṇa. Leaves—10. Deposited
with Umāśankara Dubē, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—दादा (इस दादे को रचयिता ने पुनः श्रुत करके लिखा
है) ।

(विन सताब्द को चन्द में द्वादश नाम जो लेह । सेष मादि भू होन कारि)
विन सताब्द को चन्द में है द्वादश की भाग । एक होन यदि माद्र तक जन्म बृहस्पति
लाग ॥ १ ॥ सात जोरि संवत् चिये ले बारह के भाग । जन्म समय सब जनन के
होइ बृहस्पति लाग ॥ सन ७८ जोरि के सन ईस्वी बबानु । सन ५७ जोग से सम्बत्
विक्रम मानु । बृहस्पति हिजरी फललो जानु । हिजरी मोहरेम से मानु । आदि
कुबार बंदो से साखु । प्रारंभित फललो को चाखु । ईस्वी सन पंचवमाखी
५८२ बटे हिजरी सन सुख तयै पगटे तिनि संवत् षट बंतालिस् ६९९ हों । हरिये
हिजरी कहिये तबहों । हिजरी सन में १० बुरि करै । फललो सन यो हिये मांभ
भरे फललो सन की बहु चाखु चलो । चाहिये अपनी सखी सुमलो ।

End :—

[illegible]

Subject:—किसी का ग्रह बताने के हेतु उसका ग्रह वर्ष और जन्म संवत् ज्ञात करना ।

(१) उपर्युक्त संवत् और वर्ष ज्ञात होने पर पंचांग दर्पण चक्र द्वारा उसका फलादिक बतलाना

(२) नक्षत्रादि की घड़ो, वार तिथि आदि जानकर कुंडली के कौन २ ग्रह किस राशि में हैं उसको बतलाना ।

(४) बृहस्पति १९ महोना यनि २१ वर्ष, राहु-केतु ११ वर्ष एक राशि पर रहते हैं । राहु केतु का सदा यगो रहना ।

(५) मस्तक रेखा तथा कर रेखाओं को देखकर जन्म कुंडली के ग्रह बनाना ।

(६) पंचांग दर्पण चक्र

No. 526. Panchayajñavidhi. Leaves—4. Deposited with Thākura Badrinātha Sīmha, Village Kharanhi, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning:—श्री नमोऽयनमः ॥ अथ पंच यज्ञ विधि ॥ गोघ्रास । सुरभिर्मोता सुरभिः पिता सुरभिः पितृ तारिणी ॥ गोघ्रास भ्रमवाटते सुरभे प्रति गृह्यताम् ॥ १ ॥

प्रथम चक्र बनावै जिसका द्वारा पूर्व राखै ऐसा चार कूट वाला चक्र करे । उस चक्र के पूर्वादि दिशा ईशान्यादि विदिश कल्पना करे प्रथम ईशान दिशा में काश्च पात्र राखै तिसमें जल जल में ॥ ॐ वासुदेवा स्वाहा ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥

इन मंत्रों से तीन जगह जुदा जुदा यज्ञ धरे ॥

End:—

इन मंत्रों से यज्ञ में पंच यादृति करै ॥ अग्निविसर्जन करे ॥ ॐ नमो रामाय सुर श्रेष्ठ स्वयंने परमेश्वर ॥ यत्त प्रजा दयो देवा स्तन नमः हुताशन ॥ इति हुत यज्ञ पंचम् ॥

इति पंच यज्ञ विधि समाप्त ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ८ तक—गोघ्रास, हस्तकार, प्रतिधि पूजन, अथ स्थण्ड, स्वान बलि और वैश्वदेव कर्म विधि ।

No. 527. Philanāmā. Leaves—144. Dated in Samvat 1939 or A. D. 1882. Deposited with Mahārāja Library, Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning:—श्री मधेशायनमः ॥ अथ अध्याय पहिलो । हाथी को होसियार करना वा दौराना । दवाई ॥ मदार के कोपल, पलाश के जरि । कंदूल के जरि रुह के पातो इन सब चीजों को मिलाव के के तथा ठंडा के के पिलावै तो हाथी मस्त हो जावै घारे दिन में ॥ १ ॥

दूसरी दवा ॥ २ ॥

कठोरा पैसा भर ॥ २५ ॥ पहिले हाथी को नहवाइ के कठोरा पोसि के पांच दफा चबोइ दिहने हास से फेरै घोर एक नाद में चार सेर पानी डालै घोर तीन पाव मैदा के दूर रोटी बनावै घोर दवा रोटी में डालि के पकावै घोर राती राति का पिलावै घोर सोने न देवै घोर सेवरे फेरने का पूरव तरफ छैजाइ घोर पानी में न जाने पावै तो मस्त हो जावै ॥ २ ॥

End:—एक से एक कुयां के पानी एक से एक पेड़ के पत्तो गोहू के घाघ सेर कच्चा भूसी एक बरतन में डालि के पिलावै धार नागा न करै करने बदफा हो जावै अगर कछु पिलावा होइ तो इग्यारह बड़े मुगो के पोसि के घो एक छुटकी भर दिया करै तो करने व बसरन करै मो जायज होवै तमाम शुद्ध ॥

इति *

मि० पूस बंदो १२ सत्र १२२९ फ० मुनाचिक पहिलो १ जनवरी सत्र १८८२ इसवी रोज रविवार मुकाम लखनौऊ में लिखा गया ॥

द० इन्द्रजीत सिंह समबन्त भाकोन गोहा पास के जैस प्रति पाया वैसा लिखा शायद कछु भूल चूक होय तो चतुरो सुधारि लिजिएगा ॥ घोर माफ करिये ॥

Subject:—हाथियों के अनेक रोगों को बिलाने तथा लगाने को औषधियां ।

पृ० १—३० हाथी को मस्त करना, होसियार करना, दौराना धारन वा पाचन की दवा ।

पृ० ३०—३६ अनेक तरह के जुलाव ।

पृ० ३६—४० पंचिस व वाई आदि की दवाइयां ।

पृ० ४०—४६ जहरवाद आदि की दवाइयां ।

पृ० ४६—५२ रस को हन व आमोसय आदि की दवा ।

पृ० ५२—५८ बिस्तर, नस्त वा काश्वत वगैरे की दवा ।

पृ० ५८—६४ दांत, नाखून, डूहावा, लड़का आदि की दवाइयां ।

पृ० ६४—७२ पलका, नाखून, जाला, फुला, सफेदी, आदि आंख की बीमारियों की दवा ।

पृ० ७२—८२ तक—मरहम घाव, छाजन, बमनो, नासूर आदि को दवा ।

पृ० ८२—८४ पीठ, कपोल आदि की सूजन की दवा ।

पृ० ८४—९२ कांड़ी बाछेव वा तल बांस पौर को दवा ।

पृ० ९२—९४ रस मौली वा खुर वा मल्लो या चमड़े का सल्ल होजाना ।

पृ० ९४—१०२ अग्नि बाव वा बाई ।

पृ० १०२—१०४ बाल बढावा, बाल सफेद करना ।

पृ० १०४—११२ ज्वर व ललारी आदि को दवा वासा बाव व खोरह को दवा ।

पृ० ११२—१४४ घोरज घरना हाथ का घोर फुटकर दवाइया ।

No. 528. Piyūsha-Pravāha. Leaves—190. Deposited with Pandita Bhagavatiprasāda Trigunāyata of Taradabā, Post Office Paṭṭī, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ पुनः सूजन गटई के भीतर होति है तौने के पहिचान यह है—कि पानी पियत को पानी नक्रा को राह से बहुत है और कबो कबो गटई गोइसा रगरत है और गटई छुपई नाहीं देत कबो कबो सूजन ऊपर ऊपर देखाई देत है बहुधा ई रोग कनार के पाछे होत है ॥ इलाज कपड़ा के गहो बनाई के गरम पानी मा भेइ के बाँधे ॥ अथवा बजरो घोरोठो बराबरि कूटि के पीट रो बनाई के क ॥ अथवा नोम सँके पातो मकाई के पातो पोंसि के चमिल ताल का गुडा मिलाई के गरम गरम लगावे ॥ अथवा यह दवा लगावे कि पाका नरम होई के कूटि जाय पिपाज पोंसि के तुलिया मिलाई के लगावे ॥ अथवा मैसा का गोबर नमक सँगरि आदमो का पेलाव मा चुरे के लगावे ॥ अथवा मैस फल मैथो आमो हरदो सो कुषारो को गुभा बराबरि पोंसि के लगावे ॥

End :—वरमद कर गरम पात महुषा कर वोक्ला जामुनि कर वोक्ला कोच हरी के झालो हादो सब बराबरि पोंसि के महीन लेप करै तो गरमो रोग जाय ॥ अथवा ॥ जंगो हरे ८ पैसा भरि और सपेद १ पैसा भरि नीला-धोधा १ पैसा भरि सब मधोन पोंसि १०० नेबुधा के रस मा घरल करै और १ रतो भरि के गोली बनाई नित एक गोली दहिउ के साथ साथ तो गरमो रोग जाय ॥ अथवा ॥ नीला धोधा १ भाग और २ भाग मुखद सेब २ भाग सुपागे

कै राखी २ भाग सब महीन पीसि कै गरमो मा छुटकावै तो गरमो रोग चक्का होय ॥ अथवा ॥ पारा १ टंक खैर सार १ टंक चकर कड़ा २ टंक सहत ३ टंक सब महीन पीसि कै ७ गैली बनाइ कै १ गैली रोज जल के साथ खाइ तो सब प्रकार को गरमो जाइ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५२—बंझित ।

(२) पृ० ५३ से पृ० १२० तक—घोड़े को चिकित्सा—गले की सूजन, तालू की सूजन जीभ के दाने, लगाम की रगड़ आदि, खाँसी, डाली, दम, शूल, घघ कुरकुरी, २१ प्रकार की कुरकुरी का लक्षण, सदावर्त शून, पतरावत शून, रक्त पत्र शून, कम दुःख शूल, सदावरण शून, पाता वरण शून, भूमिवरक शूल, कासावरत शूल, मुक्तावर्त शूल, कलाकर लहम शून, कसावत शून, पसव-रत शून, पत्रावर्त शून, सर्वकम शून, उदावर्त शूल, घंजन शून, भावोवरत शून, लीद बंद होने, पेट से कुकुर आवाज आने, पेट में पड़ी जोंक, पेट की सूजन, कम पानी पीने, पेशाब में खून आने, बहुत पेशाब आने, गुमताम, पीठ, की सूजन । तंग की सूजन, घोड़े को तंग, वेगहूँ जोगीरा, जानुषा, दामिनो, चकाबोर, पुस्तक, कफगीरा, उद्वं करने वाड, गज चरण, सुम की पुतरी से पानी बहने, रस उतारने, सुम भौर होने, भनक बाई, जहरयाद, घंड़े की सूजन, घमि-बाई, देह की गुरथी, रक्त पिसी, ज्वर, सन्निपात ज्वर, बात ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर, मौन ज्वर, कंथान ज्वर, घोड़े के ज्वर, जोड़े के बाद की सौपधि, मस्रो से भरने को टया, चाँदनी मारने, बाल काले या लाल करने की तरकीब, सितारा मिटाने की तरकीब, भोला मारने तथा श्राप काटने के इलाज ।

(३) पृ० १२१ से पृ० १३७ तक—ऊँटों की बीमारियाँ । चारिस की दवा, ऊँट के लिये हाजम का मसाला, दौड़ाने का मसाला, लहू ऊँट के निरोम रहने की सौपधि, कपालो, सुह के खाले तथा खाँसी का इलाज, बंगली, सूजन, अफा पेट का दर्द, पेट का बहरपना, पेशाब बन्द होने, जानुषा, भोला, पोछे वाले पेट की सूजन, सरदी से जकड़ने, ऊँट के मरने, ताव खाने, खाते-पीते भी बुबला होने, बाई, कापने, रस्सी तुड़ाने, मिट्टी खाने, चोट लगने, नासूर, कौड़ा, जफ़म, चारिस्त, छिटो तथा किलनो के लक्षण और सौपधियाँ ।

(४) पृ० १३८ से पृ० २१३ तक—हाथी की चिकित्सा । हाथी के सदा निरोम रहने, धारन सुखदेव, हाजमा, धारन भाजन, धारन चञ्जीक, मोटे होने, दौड़ने तथा तेज चलने, दल का रोग, फूलो, माडू, जाला, नाखुन, काँइली बघन, चञ्जीक, की कराने, मरोड़, पेट के कीड़े और प्राँव निरने का इलाज । खलाव, दस्त बंद करने, पिछले घेग के दाहिने बायें बिचने, जानुषा, पेट

को कड़ो सूजन, छाजन, नाखून गिरने, रक्त उतरने, मिट्टी बाने, जहरबाद, गले का जहरबाद, शमिवात, चाई जकड़ने, ताय बाने, चमड़ा कड़ा होने, जखम होने, नाखून, ठालू, धुधन चौर पीठ को सूजन, पीठ का जखम, अस्ती पादि को शोषधिवा । हाथो लड़ाने की विधि, दांत साफ करने, दांत फड़ने दांत टूटने, कोड़ा पड़ने, सड़ने, घादि का इलाज ।

(५) पृ० २१४ से पृ० २२० तक—बैल तथा मँस की चिकित्सा रीवा का लक्षण तथा इलाज, जुयो पड़ने, कंघे की सूजन, पलान घादि से हुई सूजन, तरबोस, नाखो, डंगराने, गर्भवती होने, दुध बढ़ाने को शोषधि तथा गऊ की साधारण बीमारियों में पूजा का विधान ।

(६) पृ० २२१ पृष्ठ २२३ तक—बकरी चौर भेड़ को दवा । धुई, मुंह सड़ जाने, पेट फूलने, जखम होने घादि को दवाये ।

(७) पृष्ठ २२४ से पृष्ठ २२७ तक—धूसरे बिड़ो को दवा । सरदो को बीमारी, ऐसे जखम को दवा जो चाटने को जगह पर न हो । किलने लगने घादि के इलाज ॥

(८) पृ० २२८ से पृ० २५० तक—चिड़ियों को दवा ॥ सामिष और निगमिष भोजो विविधों का इलाज । सरदो, सिग्दई, पांख के रोग, फूलो, जाला, पानी बहना, पलक की फुसो, पलक की खुल्ली, घोंघ का नासूर, नाखून तथा पंजा फटने, नाखून टेढ़ा होने, पंजे के मसे, मुद तथा कंठ के रोग, मुंह की सूजन, सरदो से ठालू खुजलाना, गर्मी की खांसो, सिर में गर्मी चढ़ने, दाता न पचने, वमन में कीड़े गिरने, कलेजे पर सूजन होने, चन्द्र में कीड़े पड़ने बघा-सीर, पांख को गंठ को सूजन, करीच के जुं, देह पर बाल बड़े होने, चारिष तथा सूजन की दवा ।

(९) पृष्ठ २५१ से पृ० २६७ तक—मुर्गे को दवा । कपूतर, बटेर घादि को दवाये ।

सोप रोग, दीवाना होने, ताकत कम होने, घेंडबाघ, लवाई का शाय । कपूतर के रोग, सोप को दवा । बटेर का जुलाब । हाते की दवा, कम बोलने चौर सरदो को दवा । बुलबुल को दवा, ज्यादा लड़ने की शक्ति देने को दवा । जरी, बाज तथा शिकरा का इलाज । गुलाल चश्म को दवा, शिकरा को दवा, परिवाल कच्ची करने, मुंह से तामा गिरने का इलाज । रगाह चश्म को दवा जरी वा तितरमुतो का इलाज । तोतर को दवा ।

(१०) पृ० २६८ से पृ० ३८० तक—बादमी का इलाज । अवार लक्षण, शोषधि, सर्वे अवर चूने, सर्वे अवर रस, तितारो को दवा, शोषधि अवर

की दवा, सर्व सन्निपात लक्षण, संचिक लक्षण, मग्नेत्र ज्वर का लक्षण, धातुिक सन्निपात, चित्त-ग्रम सन्निपात, कंठ कब्ज, प्रलाप, सन्निपात, शोथ-रू सन्निपात, शमिन्वास सन्निपात, मिह्रत सन्निपात, क्वादाद सन्निपात, तंद्रिक सन्निपात, करतक सन्निपात आदि की औषधियाँ और लक्षण । सर्वसन्निपात की दवा, सर्वसन्निपात पर रस तथा काढ़ा; सन्निपात की गोली, काम ज्वर, सजीबे ज्वर । ज्वर, के दस उपद्रव—तृषा, खाँसो, स्वाँस, हिचकी, वमन, अतिसार, अरुचि, बद्धकोष्ठ, अफरा तथा मूर्च्छा की औषधियाँ । संतत आदि—सर्व विषम, ज्वर, ज्वर का यत्न, ज्वरादि रस, विषम ज्वर पर शंजन, विषम ज्वर पर लक्षादि तैल, अतिसार रोग की उत्पत्ति तथा लक्षण, वात के अतिसार का लक्षण तथा औषधि, रक्तातिसार, गुदा पाक, धामातिसार के लक्षण, सर्वसंप्रदायों का यत्न, पांडु रोग की उत्पत्ति, लक्षण तथा यत्न, सुगो रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न, वात की औषधि, अमृत गुटका; पित्त तथा कफ, की उत्पत्ति और यत्न । पित्तही रोग, सुजाक तथा उसके भेद, पथरी, प्रमेह, मर्मी, वितर्प आदि रोगों के यत्न

(११) पृ० ३८१ से पृ०.....सुत ॥

No. 529. Pothi-Prasna. Leaves -27. Dated in Samvat 1848 or A. D. 1791. Deposited with Papdita Śyāmasundara Pānde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭī, District Pratāpa-gaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री रामचन्द्रादि पूज्य ।

- १—विवाह होइना अवसि के घर बैठ ॥
- २—वस्तु गई पै घर के मानुष के भेद सौं ॥
- ३—भगड़ा जिनि करहु निह फल है ॥
- ४—धरने जिनि जाहु निह फल है ॥
- ५—गांउ गया आवत है धन संहित ॥
- ६—मित्र करहु मिताई मल होइह ॥
- ७—गई वस्तु पैवेहु भेद लगाये रहहु ॥
- ८—राजा राज पावेगा किछु दिन मा ॥
- ९—संतति एक होइह मागीवंत ॥
- १०—विद्या पावहु गे पढ़े के बहुत दिन महनत करहु ॥

End:—गंगेवाहि पूज्य ।

- १—पारा कर्म जन करहु जगुन है ॥
- २—औपाय लिहै धानि है जिनि लेहु ॥

- ३—रोमिया चाखन जिवाये नौक होइ है ॥
 ४—घर्ये रोजिगार किहो प्राप्त होइ है ॥
 ५—व्यापार जिन करहु मूल मो दानि है ॥
 ६—जात्रा सुफल होइह करहु ॥
 ७—जागर राखहु मुदरिन रहि है ॥
 ८—वैष्ण लावहु धामंद होइ है ॥
 ९—सोरो ते बड़ा दुःख होइह जनि जाहु ॥
 १०—पेठो करहु लहना होइहि ॥
 इति पोथी पसन्ध के सम्पूर्णम् सुम समाप्ते ॥
 जो प्रति वेषा सो प्रति लिखा दोस भम न दोषते ॥
 मिति सावन वदी १३ वार बुधवार संवत् १८४८ सन् ११९८

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २० तक—प्रश्न कोष्ट ।

(२) पृष्ठ २१ से पृष्ठ ५४ तक—प्रश्नों के उत्तर । नई वस्तु पाने, संघाम करने, धानी करने, चिता करने, गांव चलने, बंदी बांधने, रोगो अच्छा होने, बगोचा लगाने, रोजगार करने प्रारंभ लेने, नौकर रखने, उधार देने, तोख करने, राजा के राज पाने, घर्य प्राप्त होने, विद्या पढ़ने, यात्रा करने, संतति देने आदि प्रश्नों के उत्तर ॥

No. 530. Pothi Ramalasaguna. Leaves—9. Deposited with Pandita Syāmasundara Pānde of Brāhmanapura, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—आमनेस आप नेमः ॥ अथ पोथी रमल सगेन ॥११॥ पेह सगुन अच्छा है जो काम चाहोने सो होयगा भगरा मा है व्यवहार मा लाभ होयगा तेरे दिन अच्छे हैंगे ॥ काम मनोरथ सो होयगा—तेरो दाहिनी भुजा पर तिल है ॥ सो देप लेना ॥ ११२ ॥ पेह सगुन मध्यम है ॥ दूसरे काम विचार के करना ॥ कुल देव को पूजा करो ॥ तुम्हारी स्त्री झूठ बोलती है ॥ सो विचार लेना ॥

॥ ११३ ॥ पेह सगुन का पल सुनो ॥ खान लाभ होइगा ॥ चित्त को चिता मिटैगी ॥ तेरे दिन बुरे हैं सो गप ॥ अब तेरे दिन अच्छे हैं ॥ तुम विश्वास मानो ॥ तेरे दाहिने भुजा पर तिल है ॥ सो देप लेना ॥

End :—॥ ४४२ ॥ पेह सगुन किछु धरम करना तब काम सिद्ध होमा चाखते दिन निवत गद हैं विचारि के करना अब अच्छा होमा तुम्हारे सरीर में घुसी नाहीं दोत है ॥

४४१ ॥ येह सगुन भाय से बड़ा है यह है मध्यम है दिसा निबज है जलदो नहीं छोड़ेगे काम विचारि के करना गुरु इवता के पूजा करहु ताके बलते भल होगा ॥ ४४३ ॥ येह सगुन से चापुन में विगार है काम नहीं करना जे काम विचारे है सो वह सिद्धि न होए गुरु नारायन का पूजा करना ॥ तेरो इन्दी पर तिल है सो देप लेना ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १८ तक—रामन के पाठों के बंकों के अनुसार प्रश्नों का उत्तर ॥

No. 531. Pothi-Sarvaguna. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A. D. 1817. Deposited with Pandita Panchamarāma Pāthaka of Ramapura-gādhaali, Post Office Sagaramagadha, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—पेथी सबै गुन को

सो पे जो भा ताको विधि—जा ठौर होइ ता ठौर अपने चाप पाछि लगावै नोको होइ ॥

दूजी विधि—कौर बसने में कचूर मेलै तब मथै जब मिलि जाइ तब तहाँ लेप करै तत्काल नोको होइ ॥

छाया वे जाइ ताको विधि ॥ जौ वैद को तेल कछया सेर एक ले घबटो पाले बाको फेरि उतारै दुरि होइ तब ऊपर ते दरताल मेलै टाँक दुरि तब हीडो मुँदै भलि के बाफ बाहर न जाइ तब ऊपर ते सेकु करै ता छेक के पड़े पानी डारै सपरी के उतारै तब बासन में करै तब तेल हाथ मो लगावै सुना जौ जाइ जहाँ विर्यक होइ तहाँ पोछे पानी काहै तब लेपु करै—

End :—

धानु करन बहु बल धरन, मोहि पूछे जौ कोइ ।

पय समान तिहुँ लोक में और न पोषधि होइ ॥ १ ॥

रति के समै जौ पय पियै, घटे न बल तेहि संग ।

विरहिन को रति रुचि मिटे, चागुन बड़ै घनंग ॥

॥ धानु बंध ॥

मारो लोहा टाक दग लोठि सम लोठिप मिथी उजै समान सो चुरन कौजिये दिखस पकेस धात ठठि पाइ वैहै हि बीज न वेगि धानु नहि जाइ है ॥ इति सर्वगुन ग्रंथः समाप्तः संवत् १८७४ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां बुध वासरे समाप्ति मिदभागम् ।

Subject :—विविध रोगों की औषधियाँ ।

(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—खो पैजा भैता की विधि, छाया न जाइ ताकी विधि, पसीता न आवै ताकी विधि, भंग सुवास होइ ताकी विधि, कोढ़ो की विधि, गुल्म जाने की विधि, चर्म दोषिका, त्रिफलादि चूर्ण, शंख चूर्ण, स्तंभन विधि, विदारो कंद, गर्भ रहने की विधि, खो के दूध न होइ ताकी विधि, गर्भ न होय ताकी विधि, प्रति मृत के दश मून, खो कपडा लोह व कैता की विधि, देवदारु पुष्टि, खो की पुष्टि विधि, ऋतु होने की विधि, गर्भ होने की विधि, खो के सेवान, बाल स्याह विधि ।

(२) पृ० ९ व १० जुग। पृ० ११ से पृ० २२ तक—सेहपा विधि, खाज, इन्दी जुलाब, शिरोक्ति, पाँच की बरौती जमने की चिकित्सा, तिमिरका, खराकुश त्रिजवाका, सम खर घेतिया के, माथे की पीड़ा, नासुर की औषधि, रतौद विधि, फोतहि विधि, हसीविधि, बिराचका, पेट पीड़ा, देह गंध, दांत जमने के समय की चिकित्सा, बालक की व्यास, मूनी, तिजरा नहरपा, उवादम्य, खर साक की विधि, कलेजे की पीड़ा, भलाक की पीड़ा, कुत्ता काटे की दवा बीछी मोरे की दवा, साँप काटे की दवा, रक्त विकार, बशीकरण, केशनाशन, खर-रक्त रतिसार, धामातिसार, मंगलाष्टक लेप, सन्धिपाठ, दाद की औषधि, मूत्र-छक्क, पंच सम चूर्ण, पुष्टि की औषधि, शूल मज केशरि गुरका, छई की औषधि, कुपट की औषधि ।

(३) पृ० २३ से पृ० ३२ तक—ताँबा मारण विधि, नंधक शोधन, बिहुं क साद की औषधि, कुबति कारण औषधि, रईकपारो की औषधि, वायु व्यधा, तेज मंद के घोरों दिन की फुला; वदमूत्र की औषधि, दुवर की औषधि, शंभन की विधि, बीछी उतरे ताकी विधि, यात्र बाधनी होइ ताकी विधि, माद होइ ताकी विधि, मुच सुवास होइ ताकी विधि, पुरुष दोष विधि, गर्भ में मरा बालक होइ ताकी विधि, शाकादि सब विद्या की विधि, दांत उगने में बालक को दुप होवै उसकी विधि ।

(४) पृ० ३३ से पृ० ४२ तक—दूध बहुत होने की विधि, काया कल्प की विधि, बङ्ग न लगे ताकी विधि, जुमा जीते ताकी विधि, खार के नाम निकालने की विधि, घनाज बहुत आव ताकी विधि, बवासीर जाने की विधि, मंदयेन की विधि, मोहन मंत्र, छुधासागर की विधि, भूच का चूर्ण, मदन मोद के खर विधि, प्रमेह का बल, मूत्रहृत्क, रोम विधि, रोम सातन, चडोप विधि, घाय का इलाज, स्तंभन विधि, प्रातु वेध ।

No. 532. Prāśnachaura. Leaves—3. Dated in Samvat 1945 or A. D. 1888. Deposited with Panditā Rāmākaraṇa Pāṇde of Puresanātha, Post Office Patṭī, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री नमोऽष्टायनमः ॥ अथ प्रश्न चौरः ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ १२॥
१० दिन बली जानव ॥ दिन सू लगे रात्रि चौर जानव ॥ दिवा चौर ॥ ६॥ ७॥
५॥ ८॥ ९॥ ११ दुतोसरो बंड चेतनी लग्न में दिवा चौर जानव ॥ लग्न चौथि
चौति होइ तो परै दिन चढ़े जानव ॥ मित्र ॥ सु० चं० ॥ दू० ॥ मं० ॥ मित्र ॥ चंद्र
को शुक्र ॥ बु० ॥ शु० ॥ शत्रु शुक्र को ॥ चं० ॥ सु० सप्तुनि के सु में शत्रु पास मा
जानव ॥

End :—अथ वस्तु मिलन की परीक्षा ॥ अथ नेत्र बनिष्ठा पुण्य ॥ रोहिणी ॥
पूर्व भाद्र पद ॥ विष्णुवा ॥ उवा फाल्गुणी ॥ रेवती इति ॥ अंधा क्षमा जाइतौ
वस्तु जखी मिलै ॥ अथ मेदाक्षं ॥ पारदा ॥ मवा पूर्व भाद्र पद ॥ चित्रा ॥ ज्येष्ठा ॥
अमजित् ॥ भरणी ॥ इन नक्षत्र मा जाइतौ दूरि भुनि परै बड़ी मसकांत सौ मिलै ॥
अथ दिव्य होवनं ॥ स्वांती पुनर्वसु ॥ श्रवण ॥ कृत्तिका ॥ उग्रमांपद मूल ॥
पूर्वाका इना जाइतौ ना मिलै ॥ इति मय्याक्षं नक्षत्रम् समाप्तमसंबव १९४५
के मि० फा० व० १४ श्री रामदास मिश्र ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—चोरी के समय का विचार, दिशा
का विचार, जिस स्थान में वस्तु रखी हो उसका विचार चौर की जाति तथा
वर्ष का विचार, स्वामी से चौर का संबंध विचार (२) पृ० ४ से पृ० ६ तक—
चौर के नाम का तथा उसके निवास का विचार, वस्तु मिलने की परीक्षा ।

No. 533. Prāśna Phala. Leaves—64. Deposited with
Nāgarī Prachārini Sabhā, Rākī and Pandit Lurgā Prasāda
Baudha, Post Baripal, District Unnāva.

Beginning :—

चिता मिटै को पद्य	उधार देवा को पद्य
१ बह राजहि पूछै	१ आत्म कपिहि पूछै
२ नर बाहेन पूछै	२ अगस्त कपिहि पूछै
३ मानोरथहि पूछै	३ पहलादिहि पूछै
४ स्वामि कार्तिके पूछै	४ बल हनै पूछै
५ राजा समरै पूछै	५ श्री मंगवानहि पूछै
६ बरयोबाहि पूछै	६ भारी खदि पूछै

७ चित्रांगदहि पूछो	७ वशिष्ठहि पूछो
८ हरि चन्द्रहि पूछो	८ पुनस्तहि पूछो
९ चन्द्रोदादिहि पूछो	९ पुलद नाई पूछो
१० रोहिताक्षहि पूछो	१० घाने वई पूछो

Subject :—चिन्ता मिटने, उधार देने जुगा खेलने, मड़ खेलने, साथ चलने, पानी बरसने, चाकरो मिलने, नाउ चढ़ना का प्रश्न—पृ० १-४ तक । वन्दो झूटे, डेरा भय, ग्रह स्थापन, चापदा प्रश्न मित्र मिले, चौपाय लेनेका, विवाह संतान, यात्रा, पढ़ना, रोजगार, भेद करना, खेतो करना, बीज बोना, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगो प्रदन पृ० ८—१२ तक, घरघराई का प्रश्न, नाउ चढ़े का प्रश्न, चौपाय करना, परिचय करना, द्रोह करना, महु गडे का प्रश्न, तौर्य करना घर रहना, घोड़ा लेना, आनम, चोरो, सगाई, सहेर, व्योहार प्रश्न—पृ० १३ से १९ तक । गंगा, भोम सेल, हनुमान, बुधिष्ठिर, राजा समर, पुलासी, नर पोष, चित्रांगद, सुग्रीव, चन्द्रोदय, धलु न कथन वखन—पृ० २० से ३१ तक । वासुदेव, लक्ष्मण, नल, आत्म वर्णय, हरिश्चन्द्र, बलना, नरवान, भगवान, मारीच, धेगद, उपंज, रावन, सहस्रार्जुन, नल, रामचन्द्र, बलि, वशिष्ठ भगवत्, पुलहन, जामवन्त वखेन पृ० ३२ से ५५ तक । भागोरथो, नकुल, स्वामि कार्तिक, रोहितास, प्रह्लाद, घानेव सहदेव, वक्ष, सुग्रीव, शत्रुघन और कुम करण का वखेन पृ० ५५ से ६४ तक

End:—कुम करण उवाच०

- १ घेरा मति लेहु लाभु ना बीना ।
- २ एहि गांव बसौ लाभ होई
- ३ बीज बण लाभु थोड़ा है कष्ट बड़ा है ।
- ४ चागुम पाई चिन्ता मति करौ
- ५ मित्र करौ लाभु होई
- ६ रोजि गारमी लाभ होई
- ७ नष्ट वस्तु पै है चिन्ता मति करौ
- ८ संतान को फल होई चिन्ता मति करौ
- ९ विद्या पढ़ी अपढ़िई
- १० व्योहरे ते फल थोड़ा है कष्ट है ।

इति

No. 534. Prāsa-Sabbākāraja. Leaves—20. Dated in Samvat 1872 or A. D. 1815. Deposited with Rāja Avadhēsa-simha, Rāsa and Tāllukedāra of Kalākākara, District Pratapa-gaḍha (Oudh).

श्री राम जी

Beginning :—सदाये श्री हनुमान जी सदाय

श्री यस्तुतो

श्री रामचन्द्र कृपाल भक्तुमन हरन भै भो दाहने ।
नव कंज लोचन कंज मुच कर कंज पद कंजदने ॥
भक्ति दीन बंधु दिनेस दानो भुषन दंतु निकहुन ।
रघुवीर मानंद कंद कोसल चंद दसरथ नंदन ॥
भक्तु हेतु दीन दयाल देखु कृपाल पदबुद सुंदर-भूत कताये के मध ।

१ मारीच	२ बलीबाह	३ भगवान	४ पुनस्ती	५ परजुन
६ हनुमान	७ मारीच	८ भगस्त	९ सहस्रारजन	१० परजुन

॥ भगस्त खवाच ॥

End :—१—इस घर से लाभ नहीं है ।

- (२) सघार दीजे मिलैगा विग्रह से ।
- (३) यह छुटेगा बड़ा जोर से ।
- (४) जुगा में हारोगे धारा ।
- (५) भूत बड़े दिक् से छुटेगा ।
- (६) भै वर मो सका बड़ा है ।
- (७) सगार करो मरोगे जहदी से ।
- (८) परसे कीजे लाभ होइगा ।
- (९) मैत्र सिखावे विरोध माने ।
- (१०) गाँव चलेने को भला है ।

इति श्री दोधो प्रश्न सम काकाज के सु पुरनः सुम मस्तु श्रीरस्तु । लिखत राममुच बाळन खेवतु १८७२ बैशाख वदी ५ सुनी वासर ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—स्तुति, प्रश्न-चक्र, भूत छुड़ाने का चक्र और प्रश्न, मिटाई करने का प्रश्न । पशु खरीदने का प्रश्न । परदेश से आने का प्रश्न । औषध, सगाई, भैरव, साथ चलना, बंदगुक्त, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी निराग, खेती, बीज बचन, सुवास, आपदा, साथ करना, बसा, चाकरी, नाम मङ्गल, जुमा खेलना, ग्रह लेना, व्याह करना, संतान, यात्रा, बालकोत्पत्ति, राजगार, चित चिता, उधार देना, शिकार, घर रखने, ग्राम चलने का परिचय, दोहरी देना, ग्रहणी ग्रह, ठोथे यात्रा, नवीग्रह प्रवेश, चोरी करने तथा चोड़ा खरीदने के प्रश्न चक्र ।

(२) पृ १६ से पृ० ४० तक—उपरोक चक्रों के फलाफल ।

No. 535. Premabodha. Leaves—144. Dated in Samvat 1750 or A. D. 1693. Deposited with Pandita Gopalaprasāda Upādhyāya of Sirasāganja, District Mainapuri, U. P.

Beginning :—

मन मनसा जब प्रेम की धारै । चंचल गति बहु सकल बिसारै ॥
चित में प्रेम वसै जब चाह । तन मन की सब सुधि बिसराइ ॥
प्रेम अग्नि जा घट मर्हि जागी । जुमादक लग ता तन ते मागी ॥
प्रवाह प्रेम की जेहि घट वहै । अज्ञान फूस तहै नाहीं रहै ॥
जोग वैराग सन्यास को । चंचल गति द्यमाहि ।
प्रेम अग्नि के जरत हो । होय स्वर्ग की दाह ॥
प्रेम पवन जिहि घटहि बढाई । अग्यान पान ज्यौ सब उठि जाई ॥
प्रेम भावु जेहि बढाई प्रकासै । अज्ञान तिमिर पिन माहि बिनासै ॥
प्रेम प्रतीत जायै मन पावै । × × × ॥
तिसु तन प्रेम वसै है चाह । हुष सुष मन के नष्ट हिराइ ॥
प्रेम पिपासा जिन मुष पाय । सहज तिया गति मो मन नहि पाय ॥

End :—

पोथी पूरन सत गुरु करी । दास दुषारे पुरो परी ॥
अरव सहस चौपरे यामैं । बोलन अचिक दोहरा तामैं ॥
सारठा झूलना बाहर नाहों । ज्यौ पात फूल फल तरवर माहि ॥
मेमबोच पोथी को नाम । बहुत सुनत रहै सुष विधाम ॥
प्रेम महोदधि वैठि कै, जो कोइ गोता लें ।
हरि रतन समालक हाथ तिसु, सहजे सत गुरु देख ॥
पोथी पूरन भई । जो देखा सो लिपा ॥
भूल चुक बकसि लेना । बाह गुरुजी ॥ बाह गुरुजी ॥

Subject :—(१) पृ० १.....नष्ट ॥

- (२) पृ० २ से पृ० १२ तक—प्रेम का वर्णन, ग्रंथ प्रतिज्ञा ।
 (३) „ १२ से „ २० तक—कबोर जी को परचो ।
 (४) „ २० से „ ३० तक—पन्ने जी को परचो ।
 (५) „ ३० से „ ३७ तक—त्रिलोचन जी को परचो ।
 (६) „ ३७ से „ ५७ तक—परचो नामदेव जी को ।
 (७) „ ५७ से „ ६७ तक—जैदेव जी को परचो ।
 (८) „ ६८ से „ ८१ तक—रैडाम जी को „
 (९) „ ८२ से „ १०० तक—मोरा जी को „
 (१०) „ १०० से „ ११५ तक—कभोवाई जी को „
 (११) „ ११५ से „ १५० तक—पेये जी को „
 (१२) „ १५० से „ १६२ तक—हैन जी को „
 (१३) „ १६२ से „ १८३ तक—सधने जी को „
 (१४) „ १८३ से „ १९७ तक—वाल्मीक जी को „
 (१५) „ १९७ से „ २१७ तक—सुखदेव जी को „
 (१६) „ २१७ से „ २३० तक—वधिका जी को „
 (१७) „ २३० से „ २५० तक—धुव जी को „
 (१८) „ २५० से „ २८८ तक—प्रह्लाद जी को „

ग्रंथ निर्माण काल ।

संवत् सत्रह सै पंचास । सुकुल एकादस मगसर मास

पायो पूरन सत गुरु करी । दास बुधेपर पुरो परो ॥

ग्रंथ के विवर्णित छन्दों की संख्या

No. 536. Prem-Prabodha Prem-Parachayī. Leaves—104.
 Dated in Samvat 1780 or A. D. 1723. Deposited with Ananda-
 Bhavana Pustakālaya, Visavā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—दो० ॥ सो० नमो परमात्मनः पूरि रहो सब धन । खादि
 मध्य पुनि अंत एकता को जगत तरंग ॥ सारठा ॥ अतिम प्रेम प्रेमायो पुरो त्रिकुटो
 जेन्ह रचो बहु विधि रचना थापो । पेले प्रेमो होय करि ॥ चौ० ॥ प्रेम रूप
 धरि जग मंड वेले ॥ चारि प्रेम प्रेमो को मेले ॥ प्रेम बचन कहु कहन न भावै ।
 उपजे प्रेम तब प्रोतम पावै ॥ प्रथम हिये को कय चकैला । कियो पनास प्रेम को
 बेला ॥ पुरुष प्रकीर्तो रूप धरि पायो मोतर सुख प्रेम का पायो ॥ अतिम प्रेमो
 पुरुष प्रकीर्तो । प्रेम तदा सुप्रतामह बेजो ॥ दो० ॥ पार ब्रह्म अपरंपरा आत्म

पूज एको तिरवान ॥ प्रतिम प्रेमो होईके येले परम निधानु ॥ मैं चाहौं लिपौं
प्रेम को वाता । पातुभरी कामन भोरजाता ॥ प्रेम यवन कुछु लगौं उचारौं ।
तरको करेजा पादि पुकारौं । प्रेम को सुरति जब मन पावै । तन मन सकल
विसरि तब जावै ॥ प्रेम को वान कान जब परै । मन पाथर पोला जिमि गरै ॥
प्रेम उचर रसना जब आवै । गद गद होइ कुछु कहन न आवै ॥

End :—दियो उठाय मांतु पहुंच जाये । रोम कमन अधर फटिकाये । रोदन
करत मुख बात न आवै । माता देखि बहुत दुप पावै ॥ कहै माता मुझ किने
हुषाया । मुख सिर चूमि छाती छैमावा ॥ धुमले होइ कोरे कहती स माना ।
मंत्रेह को कहौ सब यथाना ॥ सुनत पचत ते न बरिसा थापी । जेउ को तेउ सब
सुत सो भापी ॥ दो० ॥ रेसुत कोई वासना तुझले पाई बहि ठौर । बिना
भगतो भगवान को आदर होत न तौर ॥ वासना रात्रयर पाई उपजाना ॥ बिन
भगतो न पाई उंच गाना ॥ तै भगतो न करो हरि को चितलाई । नहीं तनमें होई
हरि कोरत नाई । बिन हरि भगतो सब हो जा कोई । तोसु दुहु लोकन आदर
होई ॥ जो मान महत्व बढ़ीसा चाहौं । तौ हरि चरना चित भपना लावौं ॥
माता उपदेश भुव चित पाया । होई दिइता वैराग जनावा भुव कहत है मातु
सो मैं हरि भगतो करेऊ जो पदवो कोने न पाइया मैं चाहौ को लेउं ॥ कहौ माता
को प्रह को त्यागा हरि को भगतो को मनु मनुरागा । फिरत फिरत वाग मदि
भावा । तहं सत रिपि को दरसन पावा । अपूर्ण (पागे पूर नही हैं)

Subject :—भगवान को प्रेम भक्ति उदाहरण स्वरूप भ्रुव की कथा ।
कबीर, रैदास, नामदेव, आदि को परचर्च ।

No. 537 (a). Putanāvidhāna. Leaves—5. Deposited
with Paṇḍita Vasudeva Sahāya of Kamāsa, Post Office, Mād-
hauganja, District Pratapagaḍha (Oudh)

Beginning :—ओ गणेशायनमः ॥ अथ पूतना विधानं लिख्यते ॥ प्रथम
मास गर्भ रक्षा कर्मलं कुर्यात् तगर सममानं गृहीत्वा शौतल जलेन पिष्टा पिबेत्

×

×

×

जातानां प्रथम वर्षे लक्षणं ॥ श्रीवा पूष्टि टेहो होइ लाट आवै मात्र में उद्देग होइ
आहार के अनिष्टा होइ ॥ धायनी गहौ नाम तस्य प्रतीकारः सद्यः बालकं गृहीत्वा
मज्जीठ धर्वा का फूल लेव हरताल चन्दन जल सौं घाँटि के लेपन करव ततो
सुंचित पूतना ॥ अथ द्वितीय रात्रि के कास होइ । बहुत गाव शीघ्र होई मो पनो
नाम प्रहो ते के मइते एते लक्षण होइ ॥ अथोपचारः ॥ चिचिरा उरै विपरामूट

चिरायता चारि चीज छेरी के दूध में पोसि के लेव करव पाछे ते दूध देइ बकरा के सोंग रोम उरिद समेत तो सुंचित पूतना ॥

End :—॥ अथ एकादश वर्षकम् ॥

दक्षिणा नाम राक्षसी तेके प्रदे ते एने लक्षण होई नेत्र रोम होई अनेक प्रकार के नाभ में उद्वेग होई निष्ठुर वचन बोलै कबहुँ के देखै तस्य प्रतीकारः ॥

कोदइ लावा चबरा पूरी मासु उसेइ केँ मछरी कमल के फूल केसरि त्रि रात्रि बलि देव स्नान पंच गय पंच पल्लव धूप सुग अंग रोम के ततो सुंचित पूतना ॥

अथ द्वादश वर्षकम् ॥

वायसी नाम मदासभी तेके प्रदे ते एते लक्षण होइ ॥ मुख लाल होइ सबै नाभ शिथिल होई मुख सुपाई ॥ तस्य प्रतीकारः ॥ रक्त माख्य गंध फूल के बलि देई अनुक मन्त्री पूर्ववत् न तो सुंचित पूतना ॥ एति श्री पूतना विधान वाल तंत्रे वाल चिकित्सा भाषा समाप्तः ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—प्रथम मास गर्भ रक्षा, द्वितीय मास से दशवें मास तक गर्भ रक्षा का विधान । जातक के प्रथम वर्ष का लक्षण (प्रथम दश रात्रि तक, पुनः प्रथम मास से लेकर बारहवें मास तक) ॥

(२) पृ० ६ से पृ० ९ तक—प्रथम वर्ष से लेकर दशवें वर्ष तक पूतना से बालक की रक्षा का विधान ॥

No. 537 (b). Pūtanāvidhāna Sangraha. Leaves—8. Dated in Samvat 1942 or A. D. 1885. Deposited with Pandita Rāmaprasāda Pānde of Ghurahā, Post Office Mādhoganj, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— × × × नाम से बालकु को घानि प्रसे ताके लक्षण ॥ बार बार भुंक्काइ दाहिनी पांव कैंपे बार बार दूध डारै रा ती मुख होइ ॥ ताकी बिधि ॥ पोर मुणौरी मदिरा दक्षिण दिशा में डारि आवै ती बालकु नोकी होइ ॥ तीसरे मास को पोतना ॥ रुद्र नाम घान प्रसे ताके लक्षण ॥ रोवै बहुत स्वांस चले रक्त नेत्र होइ चितै के हंसै ताकी बिधि ॥ उरद ठेसाये सुंदर चंदन मिमुरी मदरी घालम में धरै दक्षिण दिशा डार आवै ती बालक नोकी होइ ॥

End :—नवई वर्ष भोग नाम पूतना घानि प्रसे ताके लक्षण ॥ छुर छिरद होइ रक्त चिकार हाथ पाँव डारै बीर पटके माघो पिराय नौदन आवै रात पेसाय होय नोद रात के होय ताको उपचार चाउर बिचरी दही रोटी कथा

को पंखी मंदरा बरा उरद के कौरा कारे बसन में धरे सब वस्त्रें रात के पीयर
तरे धर धावे तो बालक नोको होय ॥ इति पूतना विधान संपूर्ण ॥ मिती कुवार
बदो ३ रविवार संवत् १९४२ द० हरप्रसाद मात्रे द्वारा ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—१ मास लेकर ९ वर्ष तक के बालक
पर बाधायें करनेवाली पूतनाओं के लक्षण और उनसे सुरक्षित रहने के उपाय ।

No. 538. Rādhānāma-Mādhurī. Leaves—4. Dated in
Samvat 1873. Deposited with Rāmasvarūpa Śukla, Post
Office Bisavā, District Sitapur (Oudh).

Beginning :—ओ राधा रमन जो सहाय ॥ पाय राधा नाम माधुरी
लिप्यते । वृन्दावन रानो ओ राधा । मोहन मन भानो ओ राधा ॥ जय नित्य
विहारनि ओ राधा । वृज सुष विहारनि ओ राधा ॥ कोरति कौ कन्या ओ
राधा । सबदो विधि धन्या ओ राधा । जय रास विलासन ओ राधा । नित कुंज
विहारनि ओ राधा ॥ हरि वन वनमाला ओ राधा । ओ दामा अनुजा ओ
राधा । वृष दिन मनि तनुजा ओ राधा । रसिकन को स्वामिनि ओ राधा ।
करनानियेतामनि ओ राधा । बंसो वट वामिनि ओ राधा । संगति प्रकासिन ओ
राधा । गोपो सर्वो मणि ओ राधा । जय स्वाम सज्जोवन ओ राधा । चानंद रस
पोषनि ओ राधा । चानंद रसायनि ओ राधा । पीतम सुष दापनि ओ राधा ॥
अनुराग सुवेलो ओ राधा ॥ सौभाग्य नवेलो ओ राधा । सरसोरुह छावन ओ
राधा । हरि विरह विमोचन ओ राधा । वृन्दावन वासनि ओ राधा । ओ कृष्ण
छासनि ओ राधा । श्रंगार मुचार्निध ओ राधा । प्रेमावधि सब विधि ओ
राधा । ललितादिक प्यारो ओ राधा ॥

End :—जग बंदन बंदित ओ राधा । निसि जग रसाजित ओ राधा ॥
सुष सेज विराजति ओ राधा । वृज चंद चकौरी ओ राधा । वृषभान किसारी
ओ राधा । वृज मोहन मोहनि ओ राधा । अभिलापन देहनि ओ राधा । वृन्दा-
वन सोभा ओ राधा ॥ कौड़ा तरु गोमा ओ राधा । प्रति सुधर स्वरूपनि ओ
राधा । माधुरी अनपनि ओ राधा । ओ कृष्ण कर्पन ओ राधा । चानंद वन वर्पनि
ओ राधा । दिव्यशु केशो ओ राधा । प्रति मंजुल केशो ओ राधा । अभिसार
प्रवधा ओ राधा । सत्यंत पसंभा ओ राधा । कल केलि परावधि ओ राधा ।
रस रीति रही सुधि ओ राधा । इति ओ राधा नाम माधुरी संपूर्णम् संवत् १८७३
वि० लिखत मजलाल बाबूख पाटनार्य महारानी ओ लक्ष्मी जो ॥

Subject :—यह छोटी पुस्तक आदि, श्रेष्ठ, मध्य में सम्पूर्ण हो गई इसलिए
इसकी व्याख्या नहीं की गई ।

No. 539. Rādhā Svāmī. Leaves—41. Deposited with Umāśankar Dubey, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—शब्द दूसरा—घट कपट दूर कर भारी ॥ टेक ॥ सरवा भाव चरन में राखी पीत प्रतीत बड़ाई ॥ १ ॥ मुँह के कहे काज नहि होना—जब लग मन में प्रेम न आई । वाचक सूर कहे अपने को बिन रन देखे करत बड़ाई ॥ ३ ॥ वैरी सनमुख होत कदाचित् ऐसे भागें काज न पावे । छाया तिमिर बुँद पर ऐसी अपनी गति को बूझ न लाई ॥ ५ ॥ जैसे मूसा बिल का सूर बिछो का मय चितन समारि बिल में बैठे बातें मारें बिछो का हम मार गिराई । बिछो बिल पर चान पुकारो । आषो सूरमां बड़े सिपाही ॥ ८ ॥ सुनकर म्याउं च्याउं धवराये एक एक भागे खबर न पावे । ऐसे जानो वाचक जगमें निज वैराग को करत बड़ाई ॥ १० ॥ भाव हो न माया वृक्षे मन जानें हम त्याग कराई । धन वालों को डूँढत डोलें काहू के उपदेश समाई ॥ जो संयोग वने कहीं ऐसा विषय परायत होता जाई । ते भोगें पूरे वन कहवें मन का धर्म सुनाई अथवा प्रारब्ध सिर डालें तराइ २ को बात बनाई ।

End:—सुरत सम्वाद

पद्य १ ला—अब सुरत पूछे स्वामी से भेद कहे तुम अपना मोहि वास तुम्हारा कौन लोक में यहां आये तुम कौन मौज में ॥ २ ॥ देश तुम्हारा कितनी दूर खोजे सुरत न पावे मूर ॥ ३ ॥ मैं बिछोही तुमसे कहे कैसे । देश पराये आई जैसे ॥ ४ ॥ मेरा हाल मिल कर गायो । देश अपना मोहि लिखायो ॥ ५ ॥ मन तन संग पड़ी मैं कबसे । दुख पाये बहुतक मैं जब से ॥ ६ ॥ क्यों भूजो मैं देश तुम्हारा आप पदों परदेश निहारा ॥ ७ ॥ पाताल बसोकि मृत्यु लोक में स्वर्ग बसो कि ब्रह्म लोक में ॥ ८ ॥ विष्णु लोक वैकुण्ठ धाम में इन्द्र पूरी या शिव मुकाम में ॥ ९ ॥ कृष्ण लोक या राम लोक में । चार खान चर अचर लोक में ॥ १० ॥ क्यों मोहि डाला काल लोक में । अति भर मायादर्ष संगये ॥ १२ ॥ अब कौन आये मोहि चितावन रूप धरा तुम अति मन भावन । मैं दासी तुम चरन निहारे भेद देव तुम अपने सारे ।

उत्तर संग पहिला—तब हंस शब्द स्वामी बोले ठा सुरत तुम मैं कहू खोजे जो वू पूछे भेद हमारा । कहू समों अब कर बिलारा ।

Subject :—शब्द द्वितीय—शारीरिक कपट आदि दूर करके प्रेम करने का उपदेश । झूठी बातें बनानेवाले वैरागियों और सन्यासियों का अच्युतन । कसारिक लोग बुनिया के समों कामों को तो आवश्यक समझते हैं परन्तु वे शक्ति मार्ग से विमुख रहते हैं ।

शब्द तृतीय—प्रेम के सम्पूर्ण विद्या को मोक्षता । केवल पुस्तकों का प्राप्ता होने से ही अनुभव नहीं प्राप्त हो सकता । प्रेम ही से सब कुछ अनुभव होता है । विद्या के बलवानों का अभिमानो होना ।

वचन पचीसवां । शब्द पहिला १—वेदान्त मत को असिद्ध करना और राधा के विश्वास पर दृढ़ता ।

शब्द दूसरा—वेदान्त और ज्ञान आदि का भ्रम । मुरत शब्द में प्रेम ।

शब्द तीसरा—जाग्रत सुषुप्ति और तुरीय अवस्था का दुस्र सुख ।

वचन छठीसवां—प्रश्न १—मुरत और स्वामी का परस्पर वार्तालाप, एक दूसरे के अस्तित्व के सम्बंध में ।

No. 540. Rājūlapachīsī. Leaves—16. Deposited with Pandita Rāmasvarūpa Miśra of Paṇḍitakā-Puravā, Village Baudhū, Post Office Sagarāmagadhā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—॥ अथ राजुल पचीसी लिखते ॥

प्रथमहि सुमिरौ जाई राई । पुरि सारद मनाइ स्यो जोववे ॥ बंदौ अपने गुर के पाइ । राजनवी जू के गुन नाइस्यो जोव वे ॥ गाऊं मंगल राजुल पचीसी । नेमि जिन व्याहन चले देखि समुबनि दया ऊपजो ओहि सब वन को चले ॥ गिर-नारि गढ़ पट जाइ कै प्रभु जैन दृष्ट्वा अदरी ॥ राजुल तप कर जोगि विनवे वाप सौ चिन्ती करी ॥ १ ॥ नावे वे मुझ गिर नारि पठाऊ । मैं मूष देखौ नाथ दा टोववे ॥ वा वे वे मुझ गिर नारि पठाऊ । मैं वा वे वे मझु हिऊं माहा चावा ॥ अपने पीय के साथ दा जोव वे । हुवाऊं माहा साथ दा संसार सकाल असार है ॥ पिय पुत्र भाई बहिन यह सब मोह का जाल है । यह जानि असरन सरन सकल वा वे जहे गनीहय कथदा । छिन कर्म छिन जाइना हुवाई माहा साथ दा । वववे यह संसार असार तातें रहिय । मौन गहि जौववे ॥ बावे वेचहु गति दुःख अपार ॥ २ ॥

End :—माइरी वह घर मेरा नाहि ॥ काया घर मेरा संग है जोव वे ॥ माइरी इन सब लोगन महि बेारन मेरा संग है जोव वे । बेारन मेरा संग वा वे ॥ मेरो परिवार और है जोव वे ॥ छिमा माता पिता धीरज रत पिवा सिर मोर है । भाई विवेक सुबहि कदन ना सुमति मेरि सहेलिरी ॥ संग मन मन कुटुंब रता ॥ सुकेवा कई छु सकेलोया ॥ माइरी लु चुकराऊ । अथ मैली निह है सोह दो जोव वे ॥ बैठि नगर वन माहि कै जिनहु पिय मोहिदी जोववे ॥ संगरि पोडस कलश करनी दादस संग संग भूषन । अष्ट कर्म निल बैठी माला..... ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २६ तक—वैष्णवाय का विवाह के समय पशुओं पर दया करके विवाह का विचार छोड़कर बौच ही से चला जाना । उनकी मनोनीता स्त्री का उनपर मोहित होकर उन्हीं के पास जाकर तप करने को इच्छा प्रगट करना, पिता से संसार को संसारता और मोक्षादि के विषय में समझा कर भ्रिमिहार पर भ्रमने की प्रार्थना करना, पिता का विरोध, पुत्री का समर्थन, पिता का माता से चाचा लेने के विषय में प्रस्ताव, पुत्री का माता से विदा मांगना, माता का विरोध, पुत्री का अपने प्रस्ताव का समर्थन । शेष लुप्त ।

No. 541. Rāmachandra-kī-Bāramāsi. Leaves—9. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871. Deposited with Thākura Gayādina Simha of Noharahasanapura, Post Office Rakhahā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री गनेसायनमः ॥ श्री येथो रामचन्द्र को वारह भासां लिप्यते ॥

चैत हिरना लपो हरी नै चांप छै टाढ़े भये ॥ तुम रहौ लखन जानको
दिन सापु मारन कौ चले ॥ वन बीच हिरना फिरत भाजत रूप क्षिपि क्षिपि
जात है ॥ ताने सरासन वान रघुवर कलौ कल करि जात है ॥

दो० ॥ कलौ मातु श्री जानकी, सुनु लखिमन बलधोर ।

हिरना ने कलु कल किया, दंभ्या प्रभु रन धोर ॥ १ ॥

वैसाय वन वन फिरत लखिमन राम को योजना चले ॥

दसकंध मन मह प विचारि अब तौ कल बल है भौतौ लैके उसासि लखन
श्री राम को कहं पाइ हैं ॥ वन बीच सुनौ जानुको मन कौन विधि समुझाई हैं ॥

दो० ॥ उतते आवत हरि मिले, लखिमन वन में लौन ।

सुनौ छेड़ो जानुको, सहेता तात कह कोन ॥

End :—फागुन में सब जग फागु धेले लंक में परमर परै ॥ एक इन्द्रजीत
बलवान जाया राम सन मुप सो लरै ॥ गट मोर लखन तोर तानै बरनी सो
बरनी मिले । मति मंद है दसकंध को सुत पैंच सकी हनि दरै ॥ हनुमान जब
सजोवन लाय तात को जीवन भयो ॥ वह सक्ति सुरपुर को सिधारी सोम दूहत
भयो ॥ भुत बोल बोल्हो गरजि कै मैं सर्वाहि अब मैं मारि हैं ॥ हनुमान चर नल
गोल संगद छार मैं करि डारिहौ ॥ रघुवीर ने जब तोर तानै छेड़ि रावन पै
दयो ॥ श्री राम के परताप तै यह असुर सुरपुर को भयो ॥

दो० ॥ असुर मारि सोता लरै, भगतन को सुप दोन ।

तुलसीदास प कहत है, राज विभोपन दोन ॥

इति श्री वाग्द मासो संभूतः समाप्तः शुभ मस्तु संवत् १९२८ मास भाद्रि
श्रीवा सुदो १२ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—रामचन्द्र जी के वनवास का
दरम्य से रावण वय तक का द्वादश मास के संबंध से वर्णन ।

No. 542. Rāmagītā-ki-Tikā. Leaves—14. Deposited
with Thākura Brajabbashama Simha, Village Jhukavāra,
Post Office Pariyavā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ यद्य चण्ड्यात्म रामायण । उत्तर कांड में
शंकर जी के प्रश्न पर तिकी में उत्तर कांड में श्री लक्ष्मण जी के पदों पर श्री राम
जी ने आप दिया करके रामगीता कही ॥ यद्य श्री राम गीतायां टीका लिख्यते ।
तत् सौताजी के त्यागते उपरान्त श्री रघुत्तम मूल प्रथम श्लोक ।

ततो जगन्मगनात्मना विद्याय रामायण कीर्ति मुत्तमम् । चचार पूर्वा चरितं
रघुत्तमो राजर्षि वर्यै रपि संमित्रं तथा ॥ १ ॥ टीकायां । मुंज है जो श्री राम
तिन, अपनी मंगल मूर्ति करके रामायण नाम की कीर्ति कही प्रबन्ध कैसा है उत्तम
है काहेते जो शंकर जी पार बाल्मोकादिक को कहत हैं तिसि कीर्ति को जगत
में कैलाप करके दास भनि कीर्ति को पढ़त हैं सुनते हो अनायास मुक्ति हो बावगो
फिरि मो अपने बंध में बड़े जे सगर दलाप रघु तिन करिके चरित्र कहिये किये
जो कर्म कैसे कर्म प्रजा पालन कथा श्रवण संध्या वंदन पादि गुरु भक्ति पूर्वक
तिन कर्म को आप भी सावधान होकर कहत भये कैसे जैसे पानिपत्र ब्रह्मपत्रों
में श्रेष्ठ हैं जिस भांति तिन्होंने जिस भांति किये आप भी करते भये ।

End :—यों अब श्री रामचन्द्र जी गीता के पाठ का फल कहते हैं । हे
लक्ष्मण यह जो विज्ञान है इसको जो कोई श्रद्धा करिके पाठ करे और गुरु जो
पढ़ावन हार है तिस विषे पहिले भक्ति करे कि मुझ पर गुरु ने बड़ा अनुग्रह किया
जा मैं राम गीताये तत्व को जाना । यासों भावना गुरु भक्ति कही है तिसकर
मुक्त होकर पढ़े यह मैं नियम है या पर श्रुतिः वस्तु देवे परामर्श यथा देवे तथा
गुरौ तस्यैति कथिताः याः प्रकाशं ते महात्मकः इति श्रुति । × ×
× × इति श्री मध्यात्म रामायण उमा महेश्वर संवाद
उत्तर कहि अंक टीकायां राम गीता नामो पंचमोऽध्यायः ॥

श्लोः—आप टीका यह चरि राम वाक्य अनुसार ।

ज्यों का त्यों ही वाक्य पढ़ि लिख्यों यथै सुविचार ॥

यति दुर्गम है संस्कृत कैसे जानी जाय ।

याते भाषा कर दर्द टीका सुगम से पाय ॥

सुम संवत् १९२४ । वसंत रितु माघ मासे कृष्ण पक्षे तृतीया मंगल वासरे
 लिएतं × × × लिखो (मा) स्वाम दास विष्णु
 प्रीति अर्थ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १७ तक—प्रस्तावना, वर्णाश्रम धर्म का वर्णन, तत्त्वज्ञानोत्पत्ति रीति, आत्म ज्ञान, कर्म भेद, कर्म विधान, माया निरूपण, समुच्चरवादी कथन, तत्त्वदर्शा का रहन, वाक्यार्थ निरूपण, स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर का वर्णन और गुणात्मिका बुद्धि की अवस्थाओं का वर्णन ।

(२) पृ० १७ से पृ० २८ तक—जगत त्याग का भादंश, अध्यास, ब्रह्म निरूपण, अविद्या-विनाश विधि, ब्रह्म को सर्व व्यापकता, उत्तरास विधि, समाधि से पूर्व की अवस्थाएँ, विलायत का विधान, जीवन मुक्ति के लक्षण, राम गोता के पाठ का फल ।

No. 543, Ramala. Leaves—16. Deposited with Pandita Bhāgirathiprasāda of Usakā, Post Office Kandhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पृष्ठ २ ॥

११३ ॥ यह सगुन अच्छा है कुटुंब बुद्धि मंगल होइगा ॥ प्रसन्न ॥ अर्थ लाभ होइगा कोई संग होइगा मित्र मिले पुत्र फल होइगा आज से महीना वीति मे बहुत अच्छा होइगा अपने इष्ट और गुरु को पूजा करना मन का मनोरथ होइगा निकासो तुम्हारी खों के पेट पर तिल है देपि लेना ॥

११४ ॥ यह सगुन अच्छा है कुछ बड़ा लाभ होइगा कुल देवता पूजा करी धन लाभ होइगा सत्रुन से मिलाप होइगा जेहिते—तुम्हारे मिलाप बोच रहै से मिलैगा धन लाभ होइगा चिता मिलैगी निसानी तुम्हारे संगपर तिल है देपि लेना ॥

End:—पृष्ठ १६ ॥

४४१ ॥ यह सगुन धर्म से सिद्धि होइगा पर यतन करना काम निरफल उच्छिदि गया है धन को हानि बहुत भई है दूसरा काम विचारना नाहीं में अच्छा है निसानी तुम्हारे सिर का सुप नाहीं है ।

४४२ ॥ यह सगुन का फल सुनै कामना हो होवनी धन हानि होइगा ॥ पुत्र से विरोध होइगा ॥ तुमको जीव का बड़ा जोखिम है अतः सवाधान रहना दूसरा काम करोगे तिससे भला होइगा से विचार कै काना ग्रह की पूजा करना तिसमें कटेस मिलेगा निसानी खरी इन्दी परतिल है देपि लेना ।

४४३ ॥ यह सगुन का फल × × ×

Subject:—१, २, ३, तथा ४ के अक्षरों से प्रनो (११३ से ४४२ तक) संख्याओं के पासे दायां प्राप्त फलाफल का वर्णन ।

No. 544. Ramala Prasna. Leaves—9. Deposited with Umābankara Dubé, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—श्री मते रामानुजाय नमः ।

धनंतर संसार के कारण जानिवे के कारण रमल प्रश्न करो सो नारायन सिद्ध करै नोक व विकार जानन जोग सुख चित्त सो कै कहै पाति ४ बुंदन को करै दै को तरह देइ जा एकु रहै तेहि को कुंडली करे जा दै रहै तो मंद करै पाइ करै येही तरह से चार पाति बुंदन को करे इन चरित्र से गनतो नीरै तौन एक ठठ करै चार सकल देखै यह सकल देखै पहिली सकल ०॥ दूसरी सकल १०० तीसरी सकल ०१० चउथी सकल ॥॥ पंचम सकल ००१० सकल छठि ०॥० सकल सतइ ॥१० सकल षठइ १०॥ सकल नवइ ॥०१ सकल दसइ ००॥ सकल ग्यारहा ॥०० सकल बारहो ०००१ सकल तैरहो ०१०० सकल १४ ॥००० सकल १५ ॥००१ सकल १६, ०००० सकल १७ ०॥ श्री भगवानुवाच ॥ धनंतर तेरे दिन नोक चाये जा कछु तुम चहव सो सब मल होइ अउ जहो कउनो काज के जाव सो सिद्ध होइ मन चानन्द होइ लुटि मिलै नाहो तो कछु परा पावै । पूज सुख देखै ॥ सबते सनेह अधिक होइ । अज्ञान छुटै पहिले को जगह में सुख है अह छुटे सुख होइ ॥

End:—०१०० श्री भगवानुवाच जानुको नारायन की कृपा है सर्व काज प्राप्ति होइ देव के धनके विदेस भला है मने कामनु सुफल होइ पुसयन जर होइ सकल कामना सफल होइ । ००० श्री भगवानुवाच यह प्रश्न भलो है सर्व कारज तैर भलाइ मा मिलि उठे । विदेस सुफल नोक सायति है मनंद होइ ॥००१ श्री भगवानुवाच यह प्रश्न सुम है । नारायन मधिम ते उत्तम करै सकल कामना सुफल होइ सनु क्य होइ ०००० श्री भगवानुवाच यह प्रश्न भलो है सब कारज सुफल होइ । जेदि विधि चाहसि सोइ होइ विदेस भला होइ ताप सहित घर पावै कन्या व पुत्र का सुफल होइ कुछ चहांस सो होय ।

सकल १५—रोजी मिलै सुखु बनाधित होय । परमेश्वर की कृपा ।

Subject:—शुभ नाम फल वर्णन ।

No. 545(a). Ramalasāra Prāśnāvali. Leaves—8. Deposited with Late Paṇḍita Baijanātha, Village Śīrakhore, Post Office Gadavārā, District Prātāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामलसार प्रश्नावली ॥ इसके देखने को यह रीति है कि एक पाँसा काठ का बनाइले घोर ससमें सेक्या के एक से लेकर चार तक शंक लिखे ॥१॥२॥३॥४॥ घोर पहिले प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार ले जिस मनोरथ के लिये छाले तब तीन बार पाँसे को फेंके जब उसमें जो शंक तीन बार में पड़े उन शंकों को कम से जाड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवै उसका समझ ले ॥

१११—यहो पूजनहार पुत्रप सकुन उत्तम है ॥ तुम्हारा कारज सिद्ध होयगा ॥ सब कामना सिद्ध होयगी घोर इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा घोर तुमको व्यापार में लाभ होयगी । यही चित में चढ़ेगा परंतु श्री गुरुदेव को पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥

End :—३२३ ॥ उत्तम तुमको अर्थ लाभ सामान्य मिलेगा घोर तुम्हारे पैरों का नाश होगा घोर धन धान्य की वृद्धि होयगी ॥ इष्ट मित्र से लाभ होगा घोर तुम्हारे दुष्ट नाश होगा परंतु तुम श्री सत्यनारायण की पूजन करना ॥ सकुन तुमको सामान्य है ॥ ३२४ ॥ उत्तम तुमको पैतों में अर्थात् व्यापार में बहुत लाभ होयगा घोर मनो कामना पूरे होगी घोर धन सुख मिलेगा घोर तुमको मार्ग में भय होगा घोर चिन्ता दूर होगी परंतु हनुमान जी का पूजन करना शुभ है ॥

Subject :—१११ से ३२४ के प्रश्नों का (पाँसों द्वारा) फल ।

No. 545(b). Ramalasārapraśnavālī. Leaves—24. Dated in Samvat 1936. Deposited with Pandita Śivaratana Pande, Village Rāmanagara, Post Office Misarikha, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—अथ रामल सार लिप्यते । इस रामल सार प्रश्नावली के देखने को यह रीति है कि एक पाँसा काठ का बनावे उसमें सेक्या के एक से लेकर चार तक शंक लिखे १-२-३-४ प्रथम प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार लेवे जिस मनोरथ के लिये छाले तब तीन बार पाँसे को फेंके तब उसमें जो शंक तीन बार में पड़े उन शंकों को कम से जाड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवै उसका समझ ले ॥ इति ॥

१११ यहो पूजनहार पुत्रप सकुन उत्तम है सो तुम्हारा कारज सिद्ध होयगा घोर इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा ॥ घोर तुमको व्यापार में लाभ होयगा यही चित्त में चढ़ेगा परंतु श्री गुरु देव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥ ११२ ॥ मध्यम इस काम के करने में लाभ नहीं घोर चिन्ता बहुत होगी

मत करना जो सपने में चक्षुम देखै तौ व्यापार में लाभ नहीं होय इस काम को छोड़ और कुछ करना ॥ ११३ ॥ उत्तम तुम का ठिकाना अच्छा मिलेगा और चिता दूर होगी चित्र मिलेगा सुख होगा और कल्याण भोग्य होयगा और बड़ाई सुनोगे जो भवत करौ तौ सिद्ध होगा ये काम अवश्य करना चाहिये ।

End:—४३३ तुम्हारे मन में चिता है सो काम मत करना तुमको दुख होगा और ज घर और पुण्य करे तौ नारायण को कृपा होगी सगुन मध्यम है ॥ ४३४ ॥ तुम्हारे शरीर में क्लेश है अथवा भाई बंधु से घन मिल रहते हो और जो मन में काम विचारा है सो होगा और सर्व कामना पूर्ण होगी सगुन उत्तम है ॥ ४४१ ॥ तुमको फल प्राप्त होगा और कोई उपाय करे डरे मत बड़ा लाभ होगा जो तुमने विचारा है सो मनोरथ सिद्धि होगा सगुन उत्तम है ॥ ४४२ ॥ उस काम के करने में तुमको सुख न मिलेगा और चिता बहुत है और राय का हर है परंतु इसमें लाभ है देर से होगा श्री शिव जी के मंदिर में एक दीपक का प्रकाश सगुन तुम को मध्यम है ॥ ४४३ ॥ यह काम अशुभ है और इसमें चिता होगी काम बिगाड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म करौ तौ बड़ा कल्याण लाभ होगा ॥ यह सगुन मध्यम है ॥ ४४४ ॥ तुमको व्यापार में लाभ होगा और मन में चिता होगी अथवा छंद पाओगे कुछ दिन पीछे तुमको सुखदाई फल मिलेगा और सकल कामना सिद्धि होगी परंतु श्री राम नाम को गाली बना कर जल में डाल अथवा जीवों को सुगावै तौ महा सुखदाई फल मिलेगा यह सगुन तुमको महा श्रेष्ठ है ॥ इति श्री रामलतार प्रभावली संपूर्ण समाप्तः संवत् १९३६ लिपत वनोत्तम तिथारो जठ मास कृष्ण पक्षे ११ दशो ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

Subject :—शुभ अशुभ प्रश्न विचार ।

No. 546. Ramalasanguna. Leaves—8. Deposited with Pandita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kaulhaur, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्री नमोऽस्तुते ॥ अथ रामल सगुन लिख्यते ॥ १११ ॥ यह सगुन से जोत होगा ॥ मन जोता है सो पावैगा ॥ सगुन में जोता है नवा वैपार होगा ॥ वैपार में लाभ होयगा तुम्हारे दिन अच्छा है मनको मनोरथ सुफल होयगा ॥ नितानी तेरी भुजा पर तिल है जान लेना ॥ ११२ ॥ यह सगुन मध्यम है दूसरा काम चेतो हो यह काम शुभ नही है यह सहीना तुमको धीनस मन जाता है ॥

End :—पृष्ठ १६ ॥

३१४ ॥ यह सगुन से तेरा कल्याण होगा मंगल होगा धन लाभ होगा ॥
तथा भवर काम सब सिद्ध होगा मन में चिन्ता करना मनते उपकार है तेरा
मला होगा निसानो तेरे बाबा को धन बड़ा है घर में तेरे सा देखि लेना ॥

३२१ ॥ यह सगुन से मन में चिन्ता है दिन मध्यम है यह काम सिद्धि नहीं
होइगा तेला तुम दुरी करना यह काम करोगे तो चमस होइगा घर में कलेस
होइगा ॥ एक महीने तक चिन्ता होगा चबकास पीछे होगा ॥ कोई बात को
उताइलो होगे ॥ परमान लाभ होगे निसानो कोई तेरे संतान नहीं हैं ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० १६ तक १, २, ३, ४ संकी से बनी संख्याओं
के अनुसार फल-कथन ।

No. 547. Ramala-Sakunvanti. Leaves—32. Deposited
with Pandita Chandrikāprasāda Bhatta of Sakarauli. Post
Office Mohanagaonja, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—धो गणेशायनमः ॥ यद्य रमल शकुनवन्तो लिख्यते ॥
१११—शकुन उत्तम है ॥ उच्छाह काम संतति लाभ होइ ॥ वीक्षित फल होइ ॥
चित्तव्य मंगरथ सिद्धि होइ ॥ चिन्ता मिटैगी ॥ धन सिद्धि होइ ॥ दान पुण्य
करना ॥ शकुन अच्छा है ॥ फल उत्तम है ॥ महा लक्ष्मी को कृपा है ॥ पाठ करना ॥
तंडुल दान करना ॥ घर की पीड़ा जायगी ॥ सपना होत है ॥ पर मातुल परता
नहीं ॥ हाथ मध्ये निशानी तिल की है ॥ शति धो प्रथम ॥ शकुन संपूर्णः ॥ धो
रामायनमः ॥ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ११२—शकुन मध्यम है ॥ सत्य चलना ॥ अनेक
कारज करता कष्ट होत है ॥ प काम करता विप्र होइ ॥ जोष का दुष उपजै ॥
तुमार दुश्मन तुम पर ईरखा करता है ॥ उसे वो काम नहीं होता ॥ ये काम
करता दुष उपजै ॥ हृदय मधे बड़ी चिन्ता है ॥ शरीर मधे कोई गुम पीड़ा है ॥
संतान विरोध है ॥ धन प्रह शान्ति करना ॥ शुभ होगा ॥ विद्वान् रजनी ॥ देव
वचन सत्य है ६ ६ ६ ६ ६ ६

End:—४४३ ॥ सगुन उत्तम है ।

अर्जुनोवाच ॥ तेरे शरीर पीड़ा मिटै ॥ घरमा मंगल काम होइ विरोध मिटै ॥
तेरी भाग्य उदय है ॥ सज्जन मोले ॥ सुप होइ ॥ जो उदास होत है ॥ महावीर
की पूजा करवाना ॥ उदासी मोटै ॥ कीर्ति मिष्टाच मिलै ॥ तुमार सर बड़ै ॥
शरीर का वायु को उपद्रव ॥ सो मिटै ॥ सुपेती लई ॥ ४४४ ॥ सगुन उत्तम है ।

धर्मराज वाच ॥ परमेश्वर को कृपा से कार्य सोधी ॥ धीरज रचना ॥
तुमार भाग्य उदय जाने बहुत है ॥ आप पराक्रम पाती होयगा ॥ तुमरे धरमा सब
कुशल है ॥ गयो धन मोले ॥ उदासी चिन्ता बहुत है ॥ मनपति पूजा करौ ॥
आनंद होइ ॥ पुत्र लाभ ॥ सज्जन मोले ॥ तुमारि इंदो तिल है सो जानव ॥

Subject:—(१) पृ० १ स पृ० १८ तक—१११, ११२, ११३, ११४, १२१, १२२, १२३, १२४, १३१, १३२, १३३, १३४, १४१, १४२, १४३, १४४, संख्याओं के फल।

(2) पृ० १८ से पृ० ३२ तक—२१२, २१३, २१४, २२१, २२२, २२३, २२४, २३१, २३२, २३३, २३४, २४१, २४२, २४३, २४४ संख्याओं के फल ।

(ब) पृ० ३३ से पृ० ४६ तक—३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४ संख्याओं के फल ।

(घ) पृ० ४१ से पृ० ६४ तक—४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२१, ४३२, ४३३, ४३४, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४ संख्याओं के फल ।

No. 548. Ramalāsāraphālanāmā. Leaves—13. Deposited with Tarāchanda Munima, C/o Messrs. Mahādevaprasāda Murlīdhara, Sirasāganja, Mainapurī.

Beginning:— श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचन्द्राय नमः ॥ रमन साह
काल नामा शहनशाह फरास ने नैपालियन बीनापाटी ने अचेनामबर प्रजोम
बलसान बहादुर ने फिरंच जवान में निहायत मेहनत से तैयार किया इसके बगैर
यह कोई काम न करता था ॥ हमने इसका तर्जुमा हिन्दी जवान में किया
इसमें अपने प्रश्न का सच्चा जवाब मिलता है ॥ सवाल से जवाब निकालने का
कायदा ॥ इसमें कुन मतलब देने वाले सोलह सवाल हैं वह नीचे लिखे जायेंगे
इनमें से कोई सवाल करे तो ईश्वर की तफ़्थ्यान करके मन में राम नाम
कहता हुआ चार सतरो में बिन्दियां घनगिनी देता जाय मगर भिने नहीं

X X X X X X

End:—जब बात तो (७)

∴ वास्तव में खुशी के साथ दिन गुजरेंगे।

आज का दिन अच्छा नहीं है ॥

— बाह्य या फल से कौनो नहीं ।

३ इस भारत के एक लड़का होगा ॥

— झाड़ो दार साहब झालत मिलेगा ।

उस समय के साथ-साथ करने से वंशक तुम्हारी शादमाती का जमाना आयेंगा ।

३. इस संकलन को तुमसे मोहबत तो बहुत है मगर लुपाता है।

वे संज्ञा सफर करो ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मूल ग्रंथ के निर्माण तथा उसके शास्त्रवाद का संक्षिप्त परिचय । सर्वांग से जवाब निकालने का कायदा, मनुष्य तारीखों की खोज, सोलह प्रश्न तथा उनके जवाबों का नकशा ।

(२) पृ० ७ से पृ० २५ तक—फालिफ़ (الف) की तब्दी से लेकर तो (ب) की तब्दी तक जवाबत ।

No. 540. Rambhāṣuka Samvāda. Leaves—22. Deposited with Umaśankar Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—तीर्थ तीर्थ विषे निर्मल वस्त्र वृन्द माद्वय लेग रहते हैं तिनके समूह में वेदान्त को चर्चा होता है, तिस बाद विवाद में आत्म बोध होता है और उस बोध में ईश्वर का साक्षात् हो जाता है ॥ ३ ॥ रम्मा कहने लगी कि हे मुनिराज ! घर २ में चलने वाली हेमलता स्वर्ण के समान सुन्दरी ली फिरती है तिसके मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं तहाँ मुखरूप चन्द्रमा पर हो नेत्र मङ्कलियों को ताह जो दोखते हैं तिन पर कामदेव का प्रचार होता है ॥ ४ ॥ शुक्रदेव ओ कहते भये कि हे रम्मा तूने तुच्छ स्त्रियों को क्या बढ़ाई करो । देखा जगह २ मुनियों के बैठने की भूमि है तहाँ वेदो २ के ऊपर सिद्ध और गन्धर्व लोगो को समा होता है वहाँ समा २ में किशोर किशोरियों का नाचन होता है और गौत २ में रामचन्द्र के गुण गण गाये जाते हैं ॥ ५ ॥ रम्मा कहती भयो कि हे ऋषिवर ! जिस स्त्री के स्नन बड़े कठोर हैं जिसके देह में चन्दन लगाया हुआ है । चनायमान पाखों वाली जवान सुन्दर सुभाव वाली ऐसी नारी जिसने मेम से पालिगन नहीं करो उस नर का जोना व्यर्थ हुआ ।

End :—शुक्र मुनि कहने लगे कि हे रम्मा अपवित्र देह वाली पतित स्वभाव वाली देह से प्रणम्य वाली बलकर लाभ सहित सुभाव वाली भूत बालता हुई ऐसी नारी का भोग जिस मनुष्य ने किया उसका जीवन व्यर्थ है । रम्मा बोली हे मुने पतला और पिबली युक्त पेट वाली हंस सरीसृप चाल वाली मद से भरी भई सुन्दरता व सौभाग्य से युक्त अधिक चञ्चल ऐसी मनोहर स्त्री जिसने इच्छापूर्वक रमयसमय में नहीं भोगी है उस मनुष्य का जीवन व्यर्थ है ॥ ३६ ॥ शुक्रदेव मुनि कहते भये हे रम्मे संसार में सदभाव और ईश्वर की भक्ति से रहित चित्त को धुगने वाली हृदय में दया नहीं रखने वाली ऐसी पापिनो का भोग जिसके योगाभ्यास छोड़के पालिगन करो उस नर का जीवन व्यर्थ भया । रम्मा कहने लगी कि जिस मनुष्य में पुण्यपणा नहीं है तो बहुत पक्की सज बनाई तो क्या सुन्दर ली है तो क्या बलवत् कस्तु है क्या भया पूर्णमासी रात्री विषे चन्द्रमा चिल रहा है तो क्या भया अर्धरात्रि जिसने स्त्री संग नहीं किया

उसका पुरुषार्थ व वैश्वर्य वृथा है। शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्मे जो विष्णु भगवान के चरणों में मन नहीं लगा तो सुरुष शरीर, यौवन, बालो लो, सुमेरु समान धन होने से क्या भया।

Subject:—(१) शुक मुनि द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि में तोषों को महिमा, वेदान्त की चर्चा और ईश्वर के साक्षात्कार आदि का कथन।

(२) रम्मा का स्त्रियों की उपमा हेमलता और चन्द्रमा, मञ्जरी इत्यादि से देकर उनकी शोभा बख्शन करना।

(३) शुकमुनि द्वारा खान र पर रामचन्द्र की भक्ति की महिमा दिखलाना।

(४) रम्मा का यह कथन कि जिसने सब प्रकार सुन्दर स्त्रियों का उपयोग नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ व्यतीत हुआ।

(५) शुक मुनि का पुनः ईश्वर के ध्यान को ही जीवन की सार्थकता सिद्ध करना।

(६) रम्मा का पुनः विषयोपभोग की महत्ता सिद्ध करना।

(७) शुकदेव जी द्वारा श्री कृष्ण भगवान का ध्यान ही सच्चा ध्यान कहलाया जाना।

(८) रम्मा का पुनः अपना पक्ष समर्थन।

(९) श्रीकृष्ण को भक्ति पर शुकदेव जी की घटल निष्ठा और यह दिखलाना कि विषय सुख सर्वात्मिक और नाशवान हैं।

No. 550. Rasanirūpaṇa. Leaves—21. Deposited with Paṇḍita Śrīpati Lalaji Duba, Village Bamaraulikatāra, Post Office Khāsa, District Agra.

Beginning:—श्री राम। प्रथम रस रूपी ईश्वर है तिनको प्रणाम करना। वेद रस रूपी भगवान को कहत हैं। भगवान सब रस के कारण हैं ॥ भगवान सब रस के कारण हैं। काहेतें कि सर्व भूत पानों के भेद करन में बैठके सब जीवन के मन को वृणुष मय अष्ट दल कमल पर फेला हैं। जब जैसे जैसे दलन पर मन जात है तब तैसी अभिनाय याहि उपजत है। पुन सो अभिनाय जब स्थिरी भूत होत है तब याहि स्थायी भाव कहत हैं। पुनि सोई स्थायी भाव जब इन्द्रियन द्वारा हृ के बाहर प्रगट होय के अपने कर्मन को करतु है तब याहि रस कहतु है ॥ अर्थात् सर्व रस के कारण ईश्वर है। इति वस्तु निर्देशे पुरुष निर्देशः ॥

End:—नायिका नायक के निकट आवै तब उत्तम प्रकार से बैठै याहि स्थिति कला कहिये। सो स्थिति कला होय प्रकार को कहिये ॥ अवि स्थिति

१ रस स्थिति २ कवि स्थिति ल० । नायक के सम्मुख विनय पूर्वक बैठे ताहि कवि स्थिति कहिये । रस स्थिति ल० ॥ नायक के याम भाग विषय अपने हाथ ते नायक को हाथ पकर के पधवा अपनी भुजा को नायक के स्कंध विषय रस के बैठे ताहि रस स्थिति कहिये ॥ २ ॥ अथ घूंघट कला ल० नायक के सम्मुख जब आवै तब प्रथम घूंघट मुक्त अवै मुखा हाथके बैठे ताहि घूंघट कला कहिये ॥ ३ ॥ घूंघट उडाटन कला ल० ॥ जब अपने मुख के देखे को कवि नायक को जानै तब शनैः शनैः मुख को उधारे प्रथम नेत्र उधारे पुनः आघे वदन उधारे या प्रकार ताहि घूंघट उडाटन कला कहिये ॥ ४ ॥ लज्जा कला ल० जब मुख उधारे तब लज्जा मुक्त नीची दृष्टि रस ऊंची दृष्टि न करै ताहि लज्जा कला कहिये ॥ ५ ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—वस्तु निर्देश, पुरुष निर्देश, प्रकृति निर्देश, रस निर्देश, रस सामर्थ्य, आलम्बन, अनुसंचारी या श्रमिचारी भाव, भावों का वर्णन, सात्विक भाव, भाव निर्देश, भावामास, रस भेद वर्णन ।

(२) पृ० ११ से २४ तक—अंगार रस वर्णन, अंगार रस को प्रशंसा—(प्रथम तथा द्वितीय प्रकरण) नायिका भेद वर्णन, विषयालम्बन, विषयालम्बन के अधिकारी तथा अधिकारियों के भेद, नायक तथा नायिका भेद, नायक के गुण तथा गुणादि के भेद, नायक के ४८ भेदों का वर्णन, पुनः उनके तीन तीन भेद, प्रत्येक के दस-दस भेद करके १४४० भेदों का वर्णन ।

(३) पृ० २४ से ४२ तक नायिका के गुण, नायिका के भेद (२४०० भेद), उद्दीपन विभाव, उद्दीपन के भेदों के भेद, मनोविकार लक्षण, अंग गुणादि वर्णन । वयः संचिनी नायिका वर्णन, नायिका के अन्य भेद, नायिकाओं को कालाएं और उनके भेद आदि ॥

No. 551. Ravikathā. Leaves—39. Deposited with Pandita Rāmasvarūpa of Pandita-kā-Puravā, Post Office Sagarāmagadhā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—अथ रवि कथा लिख्यते ।

रिख्ह नाह विनऊं जिनंद । जा प्रसाद चितु होइ भवेद ॥

विनऊं अश्रित विनासै पापु । दुख दालिद्र हरै संतापु ॥

संभव नाथ तनी धृति करौ । जा प्रसाद बहु प्रुति तरौ ॥

आचि नंद तुम सेवहु वर वीर । जा प्रसाद आरोम्य सरोर ॥

सुमति देव जिन पदम सुपास । बहु विधि नवन करो प्रविलास ॥

चंदा प्रभु जो विनऊं तोहि । हरै कलंक देहि जनु मोहि ॥

सुन दल सौतल सेवा करौ । पुनि श्री भांस स्वामी मन धरौ ॥

End :—

इति रवि कथा को बहु छेव । जायो समा के जिन वर देव ॥
जिहि भविष्य को कुटी बैद भाऊ । करि सिधि सिव पुरो को राउ ॥
माह हमाल जिहि वस कोयो । राग द्वेष तजि संजम लीयो ॥
अजर अमर निर्मल होइ ख्यौ । सोनरु देव गोठि कूं ज्यौ ॥
पर दिन बहौ रच्यौ पुरातु । वाञ्छो बुधि में कियौ बषातु ॥
अधिक होन जो अक्षर होइ । बहुरि संवारो गुनघर लेय ॥

×	×	×	×
×	×	×	×

वामानं दिन पार्श्व जिनि, निस दिन सुमिरौ सोइ
इन्दु तनै सुष भोगि कै, पावै मंगल सु होइ ॥

इति राव कथा समाप्ता सुभं भवतु मंगलं ददातु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण प्रतिज्ञा, कथा आरंभ, बनारस के राजा जैपाल का वर्णन, उसके राज्य में रहनेवाले कोटिध्वज का वर्णन, कोटिध्वज का ऐश्वर्य तथा दान इत्यादि का वर्णन, उनकी स्त्री को सात पुत्र होने का वर्णन तथा उनके पुत्र रवि की कथा । सबसे छोटे पुत्र गुणघर की महत्ता, कथा श्रवण फल ।

(२) पृ० १० से पृ० ३५ तक—कथा की निंदा करने वालों को कुफल, मनोश्वरों का घामघन तथा धर्म फल वर्णन । मतिसागर को गुनसुंदरी को मुनि का रवि वत का उपदेश, रवि वत का फल, अपने घर आकर पारियों को बुलाकर वत को महत्ता सुनाना और उनको बुराई करना, गुनसुंदरी का दुःखित होना मतिसागर की लक्ष्मी का विनाश, गुणघर का पिता को सम्मानना, अपने पेट भरने के लिये बाहर जाने का कथन, जाग ग्रहण, सस असन वर्णन, अन्य शिक्षार्थ गुणघर का अयोध्या पहुँचना, वहाँ के सेठ बलमद से भेंट, सेठ का गुणघर को भंडारी नियुक्त करना, वाणिज्यार्थ उसे धन देना ।

(३) पृ० ३६ से पृ० ४० तक—मतिसागर का दुःखित होकर पारिवान्या मुनि के पास जाना और अपने भविष्य के संबंध में पूछना, मुनि का दुःख दूर होने और पुत्र का पुनः लाभ सहित लौटने का कथन । पारसनाथत्रिनेन्द्र के सेवन की साक्षात्, साक्षात् पालन पर उसके अतुल्य धन होना ।

(४) पृ० ४० से पृ० ७८ तक—गुणघर का भूखा होना, अपार संपत्ति की प्राप्ति होना, निम्न २ प्रकार के दुःखों में फँसना, राजा की प्रसन्नता और उसके

साय राजकुमारो का पालिग्रहण, बहुत दहेज मिलना, कुछ दिन बाद अपने कुटुम्ब से मिलने को इच्छा प्रगट करना, पाशुनाथ को पूजा का फल कवि परिचय ।

धनःवारै ये कोयो बधानु । जननी नगर पैहि नगर डांव ।

गगर गौतु भन् कौ पूतु । माउ भगति कय घत संजुक्त ॥

बवहि यह करम सच्यै करन मति भई । तब यह धर्म कथा निर्मां ॥

No. 552. Śaṅgana Navsundisā-ko. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Śaligrāma Dikshita of Jāmū, Post Office Sandila, District Hardoi.

Beginning :—रवि उत्तर दशा फलं ॥ १० ॥ रवि ग्रह में प्रान को कहे
जो हुतो सुमाउ पंडित पंडित हो इन्हि जो समुझि के पेतु वनाउ ॥ १० ॥
बाइव सोमवार को बोले ॥ जो सुभ माया वेतहि ओले कोई वाति न कारज
करै ॥ ये कोजे सो निर्मूल परै ॥ व्याहन गये जो देजे पावे ॥ मूठो लावतु
हायहि पावे ॥ वो दुलहिनि वै सगरी कहिवो ॥ मेतु पारकै चुप किन रहिवो ।
जो पै व्याहे आवत होई ॥ दुलहिन सभ वांछ कहि बोई ॥ येन सगुन गौन कह
करै ॥ एक जनौ लंघन कै परै ॥ कै पंडो भूलेगो कोर ॥ भाइमिले कै विचुरनु
होई ॥ पंडे पूछे सगुन अपार ॥ कहिवो कोऊ कहिके उपकार गये ते पालो परै
सिकार । जो पावे तो होपरि सिवार ॥ चछु रगु विगरे सोई ॥ तिय पशु
परिषु बयुं मरे कोई ॥ पानो नगै एकै घस जरै बादस होइ सो वूंटो परै ॥ १० ॥
अपने ग्रह शशिवार को कहे पंडे निबंछु ॥ सुगम समुझि जो वांचलै सो जम मे
पंछु ॥ १० ॥ सोमवार घर पावे बुध ॥ सुभ माया है कछु कवि रुझ ॥ क्षत्रो
पाछन को काजु न होई ॥ जो पै करै अलपु कहि बोई ॥

१०—नान्हे तुरिक काज नहि करहो ॥ बहुतु न होइ न पालो परहो ॥ रगु
चाछु अवल कुन रातो । मछरो मांस गाव पवहो तो ॥ पावे नावहि नान्हे
कोर ॥ कै सिकार नान्हे को होइ ॥ जो विगरे तो नान्हे मरे । पानो पवन प्राग
फुनि बरे ॥

End :—१०—सारे विगरे जानि यह कागु अकासहि केतु । केतु काज
कोना कहे क्षत्रो दिखु को होय ॥ १०—किस हूये तजे होइ फेकार ॥ समुभ
में सुभ सुभ मे वेकार ॥ हाकिम चहुं गाउ भावो चहै ॥ ऐसे सगुन फेरि की रहै ।
पोसि लई जो कहऊ चलावे ॥ ऐसे सगुन जिये किरि पावे ॥ जूझसि कारको
घोरन के रंग । के स्वाम कुम हतु शनि के रंग ॥ शनि घर रवि घबल के बधाने ॥
शनि घर सोम आगे ते जानै ॥ लोला हरे चाछु सो बवारु । पै तब चहु

हाथों तक है पसु ॥ शनि के घर में मंगल पावे । कारो कुम इतु वार बोलावे । शनि घर बुधनी लोपै हारो । सुरषा पक्षर सुमति हापरो ॥ पोलु कोठ लो लो फुनि कहै सिंकार गये सुकर को गठे । जो शनिघर बोटकै पावे । तो पै भवल गुरंगु बतावे । केतु पकास सुभाषा होई । सभी द्विज करै कालु न होई ॥ सूर सुरिकु को कारज भलो । गड मनि पाल पावे चलो ॥ नान्दो मूठ धरे कछु पावे ॥ सूर तुलकि पडुनोई मिलावे ॥ करतु परै ऊर फर फकौ । जुभति रुद लराई होई—मेढा मांस मांस कहि बोई । कै लोह देपिये के पैसा । कै कछु बात सगुन है पैसा । विगरे सौर केत को धाम । क्षत्रिय बाह्यन करै न काम । उहरे बहु करार मझराहो ॥ लसि करि पानि तहा ठहराहो । विगरे सुधरे डूँ हे कूच पागे अब फकार कै सजु । इति सगुन नवौ दिशा को समाप्त—

Subject:—रवि-उत्तर दिशा के फल का वर्णन करते हुए सोमवार के दिवस का शकुन कहता है कि इस समय में कोई जाति शुभ कार्य न करे, व्याहृति कार्य न करे क्योंकि ये उस समय निर्मूल हो जाते हैं । सोमवार के घर में बृहस्पति के जाने पर भी कोई शुभ काम बाह्यन या क्षत्रिय को न करना चाहिये । सोमवार के घर बुध के जाने पर सब कार्य करना चाहिये । इसमें कार्य की सिद्धि होती है ।

पूर्व राहु के घर बृहस्पति के जाने पर जिस कार्य का विचार किया जावे वह पूरा होता है । परन्तु राहु के घर शुक्र के जाने पर केवल क्षत्रीय और बाह्यन आदि के कार्य सिद्ध होते हैं । ईशान दिशा—राहु के घर शनि के जाने पर क्षत्रिय बाह्यन आदि का कार्य नहीं सिद्ध होता तुलका आदि नोच जातिये का कार्य बनता है ।

अथ चन्द्रमा शनि के गृह में पावे उस समय सब जातियों को अपना २ कार्य करना चाहिये; पुत्रोत्पत्ति, कहीं से शुभदायक समाचार आना ये सब बातें इस काल में प्राप्त होती हैं ।

शमशेर—शुक्र के घर शमशेर—विचार इस काल में बाह्यन, क्षत्रीय, वैश्य ये कार्य न करें परन्तु शूद्र और तुलके आदि जातियों अपने अपने धर्म का अनुसरण करें ।

दक्षिण—बृहस्पति, मृग और मीन की एकता में किसी को शुभ कार्य न करना चाहिये । इसमें घर की सम्पत्ति नष्ट होती है । गोत्र और समाज में भगड़ा होना, बुरे ग्राम में आगमन इत्यादि बातें संभव होती हैं ॥

मैत्रव्य—शुक्र के घर मंगल के जाने पर चोरों को अपने कार्य में सिद्धि प्राप्ति होती है ।

पश्चिम—भौम के घर चन्द्रमा के जाने पर शुद्ध आदि निम्नजातियों का सफलता होता है।

वायव्य—सोमवार के घर सूर्य के जाने पर कोई अच्छा शब्द सुनने में आता है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदिकों के घर पावने आते हैं।

No. 553. Sagunanti. Leaves—5. Deposited with Pandita Vindeśvariprasāda Misra, Teacher, Sanskrita-Pathashāla, Village Gaudā, Post Office Madhoganja, District Pratapa-gaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ सगुनांटी लिख्यते ॥

॥१११॥ यह सगुन अच्छा है जो काम चाहाने से पावेगे भगवा मिटैग व्यापार में लाभ होयगा ॥ तेरा दिन अब अच्छा चावैगा मनोस्थ सुफल होगा निस्सन्देह तेरे दाहिने भुजा पर तिल है सो देपि लेना ॥

॥११२॥ यह सगुन मध्यम है तुममें तुमको लभै है चित्त में को काम नहीं होगा उवही दिन तुमारे समाचान है फूल छे देवों का पूजा करो चित्त चित्त को मिटैगो तुम्हारी जो झूठ बोलतो है सो विचारि लेना ॥

॥११३॥ यह सगुन का फल सुने स्थान लाभ होगा चित्ता चित्त को मिटैगो पुत्र प सुफल होगी दिन तुमारे बुरा रहा है सो गये अब तेरा अच्छा है तुम विश्वास मानो तेरे दाहिने घट्ट पर तिल है सो देप लेना ॥

End :—

॥४४१॥ यह सगुन से भाई की चित्ता है मझिम है दिन अच्छा है धोरज रपना ॥

॥४४२॥ यह सगुन बेकार है घन हानि होगी भय होगा काम विचारि के करना तुम सुष नहीं है सोच है सो विचारि लेना ॥

॥४४३॥ यह सगुन अच्छा है सोच मिटैगो घन प्राप्ति होगी पुत्र लाभ होगा। तेरो छती पर तिल है देपि लेना ॥

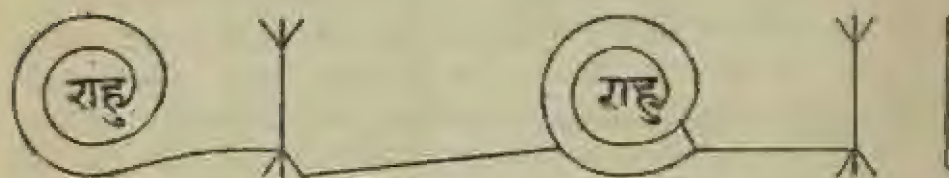
॥४४४॥ यह सगुन से काम नहीं होगा आपुन में विरोध होगा तेरे जो में चित्ता है दूसरा काम करो तो बड़ी दुखी होगी तेरो इन्द्रो पर तिल है सो विचारि लेना ॥

॥ इति सगुनांटी संपूर्णम् ॥

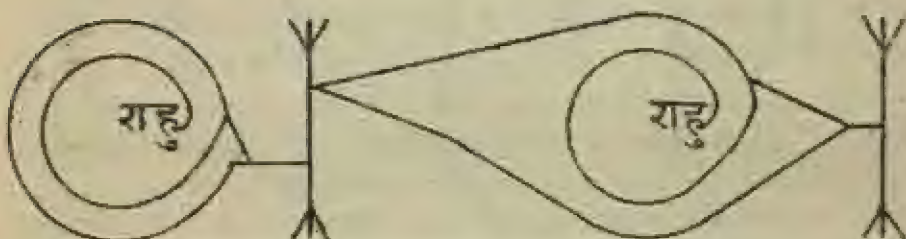
Subject :—(१) पृ० १ से लेकर १० तक—१११ आदि १, २, ३, ४, के श्लोकों से बनी हुई तीन श्लोकों वाली संख्याओं के अनुसार सगुनों के फलों का वर्णन।

No. 554. Sagunavati. Leaves—26. Deposited with Pandita Bhagavanādatta of Benipura, Post Office Madhoganja, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—अथ आधा सोसो कर जंत्र



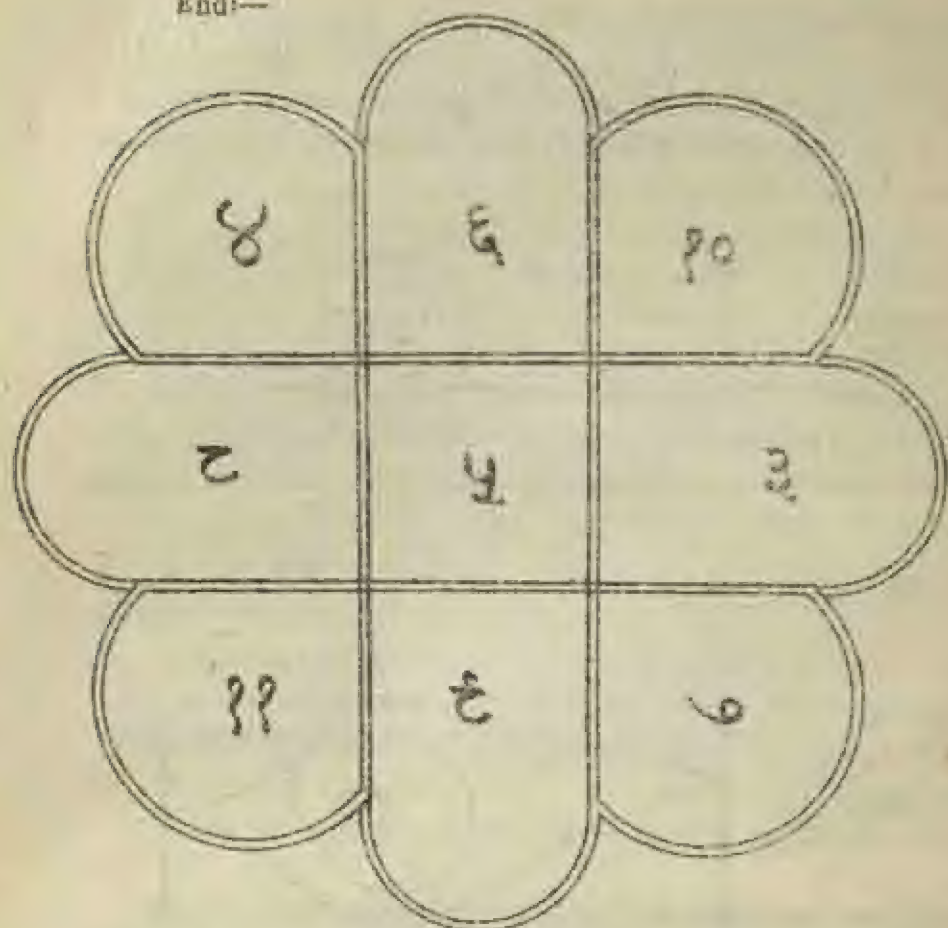
आधा सोसो कर जंत्र ॥ * ॥



१	८	४	५
१	८	७	१२
८	१०	३	६
७	१२	१३	६

राहु को पेदो जंत्र लिखित
लिपि के दिपाये गये पंडित द्वारा

End:—



चारि ४ दश १० कोइ पायस पावै ॥ = ॥

घाठ ८ पांच ५ कल मांगे पावै ॥ = ॥

तीन ३ पमारह ११ भूजे राज ॥ = ॥

मै ९ छा ६ सतरह १७ होइ सकाज ॥ = ॥

इति सगुन बता सिद्धिः ॥ = ॥ =

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक कुल ।

(२) पृ० ७ से पृ० २० तक—गर्भ मोक्ष, मोसा वंश, पाचा मोसा का वंश, गरी वंश, इन्द्रियहृद करण, भगवै में जीतने, गऊ राम नाथ, वयोकरच तथा लघाः चित्रण करने के वंश ।

(३) पृ० २१ से पृ० ३० तक—सुत ।

(४) पृ० ३१ से पृ० ४३ तक—साकषण, लक्ष्मी लाम, सर्व कार्य सिद्धि, राजा वशीकरण, राज सम्मान, वशीकरण, बौद्धा मंत्र, पुत्र होने, घण्टा प्रसव करण, काक प्रदन, सर्व सिद्धि श्वर नाश, पाप मोचन । अन्तरा करण तथा तलो के अन्य दो मन्त्र ।

(५) पृ० ४३ से पृ० ५२ तक—बंदी मोक्ष, तिजारो, प्रजा मोक्षन कामिनी वशीकरण, जुषा जीतने, शत्रु नाशन, भूत-भैर विनाशन, संग्राम में बड़ बेग प्राप्त करने, राजद्वारा सम्मुखे वशीकरण, सर्वकार्य सिद्ध करने, सुगो रोम नाशन, सर्वकार्य सिद्ध करने, तिजारो दूर करने, सगुनवती तथा सगुनवती सिद्धि मन्त्र ।

No. 555. Śakuna-Kuśaguna Parikshā. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Gunnā Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शकुन कुशकुन परीक्षा लिप्यते जो मनुष्य अपने घर से किसी कार्य को चले । उसको मार्ग में पानी से भरा हुआ वर्तन मिले अथवा निरधुन अथवा धुंधला से रहित भरी मिले अथवा मझली की डलिया लिये आगे से लिये आता हो अथवा कोई रोटी लिये आगे से आता हो वा दूध आगे से लिये आता हो अथवा दही से मटकी भरी वा और किसी वर्तन से भरा दही लिये आता हो ये शगुन शुभ हैं । जिस काम को जाता होय वह अवश्य सिद्ध होय ॥ और किंतु रागी के निवृत्तार्थ दूत वैध को बुलाने आवै तो ये शगुन मध्य हैं और येही शगुन जो वैध को मिलें तो शुभ हैं रागी अच्छा होय ॥ जो मनुष्य किसी कार्य को घर से निकले मार्ग में कन्या अथवा स्त्री अंगार से भूषित प्रतिप्रता श्री मिले वा बाह्य ज्ञान किं दुप मिले वा किसी राजा का दर्शन मिले वा गुरु मिले वा पान आगे से भरा लाता होय वा अन्न भरा आता होय तो ये शगुन शुभ हैं सिद्धि के दाता हैं कार्य वेग सिद्धि होय ॥

End:—जो चिड़िया हरे पेड़ से उड़ के घाटी पर घाय के अथवा किसी खेत में आकर दाना चुगे अथवा कृमि चुगने लगे अथवा घाटी में अथवा पेड़ वा पत्थर में खोच बिसने लगे अथवा अच्छे प्रकार बैठो होय आनंदित होय उत्तर पूरव वा पश्चिम को मुह किये बैठो होय और हरे वृक्ष पर अथवा फुले हुए वृक्ष पर बैठो होय और दाहिनी ओर मिले अथवा हरे पेड़ पर से उड़के दूसरे फुले हुए पेड़ पर जा बैठे । और पत्तो फुलादि खाने लगे तो वह शगुन अच्छे हैं मन के चोते कार्य सिद्धि होय हैं ॥ और जो बटोही घर से चले और जंगल में पहुंचे और मझारो का जोड़ा लड़ता मिले अथवा बेरो पा बधूल के पेड़ पर बैठा होय अथवा जवासे के खेत में जमीन पर बैठा होय अथवा लुगो आता

देखे वा पाँच चार इकट्ठी होके लड़ती देखे अथवा सामने से उड़ जावे और कोण्ड आदि पर जा बैठे अथवा चिड़हातो हुई आकाश को उड़ती चली जावे और फिर दृष्टि न आवे यह शकुन छोटे हैं जो बटोरी जैसे शकुन पाप पागे जायेंगे तो दंगा फिसाद होगा कार्य बिगड़ जायेंगे और जो घर को छोड़ेंगे तो शुभ है ॥ जो ऐसे कुशकुन हों और घर को ना छोड़ सके तो बहाँ ठहर कर देवता को पूजे अथवा सूर्य नारायण को जल चढ़ावे शुभ मंत्र का जप करे और अक्षानुसार दान करे तो कुशकुन का प्रभाव जाता रहे तो कार्य भी सिद्ध होगा ॥

Subject:—देश परदेश यात्रा आदि में जो शुभ शकुन तथा अपशकुन आदि होते हैं उनका वर्णन ॥

No. 556. Samantasāra-Vaohanāvali. Leaves—73.—Dated in Samvat 1953 or A.D. 1896. Deposited with Pandita Santaprasādaaji Śarmā, Village Mirjā-kā-Bāga, Post Office Pratāpagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री सौतारामाय नमः पथ विचित्र वचन श्री राम भक्तन के संसंध जीव मोह माया को निद्रा में सुते पड़े हैं कोई पुरुष इस निद्रा से जाग है तो जाना है तिसके हृदय में परमेश्वर के भजन रूपी खेत जमा है तिस परम भजन रूपी खेत का फल श्री रामदरशन है पर भजन रूपी खेत पर रक्षा भली मोति चाहिये जैसे अनाज के खेत के ऊपर राखी रखते हैं जिससे पशु न खाव जावे ऐसे ही भजन का खेत भी रक्षा लायक है भोग रूपी पशु ग्रहंकार रूप और संकल्प रूपी पक्षी दंभ रूपी शूकर प्रयोजन रूपी हरिण इन सब दुष्टन से रक्षा किया चाहिये और जिन्होंने रक्षा नहीं किया तिनका खेत बजड़ जाता है ॥ १ ॥

End:—साई साथ प्यार इतना कर जितना सुख चाहता हो और पाप इतना करो जितनी नरक की बाँध सहने को शक्ति होय विश्व में विस्तार इतना कर जितने दिन रहना होय ॥ १४ ॥ जितना है तितना कहु जेता कहु तेता कर मन अपने को बंधन में राख जो राजेना तो मन तुझको बाँध के चाहै जहाँ पट-कोण ॥ १५ ॥ जो मन को जीता तो प्रभु के समीप रहेगा । जो मन न जीता तो सदा प्रभु से दूर रहेगा ॥ १६ ॥ मन का कहां न मानना रोके रहना बड़ा बेरो है एकान्त वास सदा संत संग भोजन लघुमान जाशुत करत रहना तब इन रहस्य वचन का म्वाद होयना पंडित वाचक जानी विरामहोन न इहन देना मन में मनन करना सदा २ ॥ १७ ॥

इति श्री सर्व धुति नृति संहिता संत समेतसार । श्री वचनावली श्री सुगौतानय शरत् ने लिखि दिया । शुभ मस्तु ॥ मिति आसाढ़ वदी २ सम्बत् १९५३

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३० तक—भजन ह्यो जीवों की रक्षा का आदेश । परमेश्वर के करन कारण होने का वर्णन । ईश्वर की रचना की महत्ता । हृदय के शुद्ध होने का उपाय, मनुष्य के उपकारी ४ पदार्थ, भक्तों की पहिचान, भगवान की कृपा पसन्द है । सूरमा, गरीबी, उत्तम पुरुष, परो, निष्कपवान, विद्वान, संत, और प्रभुपिष के लक्षण । सरसंग की आवश्यकता, जीव और परमेश्वर के मध्य के पाँच परदों का वर्णन । गुरुमत का रूप, मोह-बंध से हानि, स्थूल तथा सूक्ष्म कुटुम्ब का विवरण । सूक्ष्म कुटुम्ब का स्वरूप परम संतों के पाँच चिन्ह । पाँच प्रकार का मांस और चार प्रकार की निद्रा के त्याग का कथन । जिज्ञासुओं के तीन उत्तम लक्षण । जीवों की शत्रु का नाश होने के पाँच कारण, शत्रु सृष्टि का फल, सावधानी से रहने का उपदेश, मोक्षपद दस 'स' कार, पाँच दुर्लभ पदार्थ । जीवन का मुख्य, कामादिक की प्रवृत्ति, मन तथा इन्द्रियादिक की प्रवृत्ति, संत का रहस्य ।

(२) पृ० ३१ से पृ० १०० तक—माया का ब्रह्म घोरज, संतोष, विराग तथा सेवकाई का स्वरूप, सधन की कथा, बंधन से छूटने का उपाय । कर्म मिथ्या चेष्टा है । शुकदेव का आश्वान, गुरुमुख का स्वरूप । सरसंग की महिमा, मन-रोग के वैद्य संत हैं । संतोचित प्रभु की वित्तियाँ, मनकों के दंड का विधान । संतलम का संबंध । माया के त्याग का वर्णन । प्रज्ञा की प्राप्ति का विधान । परमेश्वर तथा जीव का स्वरूप । गुरुमुख और मनमुख का लक्षण, विषय त्याग । जिज्ञासु के दस लक्षण । रामह्यो प्रहारफो के ग्रहण का उपदेश, संतों के बचनों का महात्म्य, चौरासी का कष्ट । भक्ति संबंधी कुछ उपदेश, जगत के मिथ्यात्व का वर्णन । भक्त धर्मकों की परीक्षा, माया का स्वरूप, ज्ञान तथा ध्यान का स्वरूप, भजन का स्वरूप, आरम्भ ।

(३) पृ० १०१ से पृ० १४६ तक—संतों की प्रतीति, प्रीति, भाई सज्जन जो की साखी, रणों की दूसरी साखी । तीसरी साखी । दर्शनभक्त की साखी । शूरमा का लक्षण, साखी, बज्रो का आश्वान । विवेक तथा अविवेक, मनुष्य के पर-लक्षण, विचार पदार्थ, शुद्ध बुद्धि का लक्षण । आरम्भान्त के मुख्य चिन्ह । मन के भेदों, कुछ उपदेश । प्रितमान के मान के घागे पड़ने वाले तीन परदे । पापियों की प्रीति के छे पदार्थ । संसार की साठ उत्तम वस्तुएँ । साखियाँ । धर्म का तत्व, फकीरी क्या है । संतों के ग्रहण करने योग्य बालकों के चार गुण, स्नानादि ग्रहणीय गुण । मन को जीतने का उपाय ।

No. 557. Samarasāra. Leaves—18. Dated in Samvat 1793 or A.D. 1736. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of

Pandita-kā-Puravā, Maujā Bhaddhū, Post Office Sagarāma-
gadha, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—परमात्मानम् पश्य ॥

सकल सृष्टि संसु पोषक रजन पालक सुष दाह ।

जै वायक प्रति भवल के हुजै सरन सहाइ ॥ १ ॥

दीन सहाई सूर्यपति सैनापति सिरताज ।

चित्त को चिंता भेटि कै कोजै सिद्धि सुकाज ॥ २ ॥

×	×	×	×	×
×	×	×	×	×

ताको राह विचार को कटपय देत दिषाइ ।

इन चौ वरगनि सुमिरि जो निरखै ध्यानु लगाइ ॥ ३ ॥

कट दस दस हन य सहाई य वरग वसु निरधार ।

प्रति प्रसर निव ठार मत कम तें छेक विचार ॥ ७ ॥

End:—पहुंचा खोन न देखी, हाथु धरे सिर जोड़ ।

ताका डर नहिं मोच को रस मासनि लौं होइ ॥ १३५ ॥

माथे पर संजुलि जवै कदली सुमन समान ।

घाभा लाल धराइ तौ भै नहिं रंच प्रमान ॥ १३६ ॥

संसु सलिल में जो तिरै तौ न मरै नरु सोइ ।

जो भाषत है नेम कति देव मुनी सब कोइ ॥ १३७ ॥

चिन्ह पायु निज कय लखि निहचै करै न ठानु ।

मुख्य देह के सगुन हैं एन सम पान न जानु ॥ १३८ ॥

इति श्री समर सार समाप्ते ॥ शुभ मस्तु ॥ सम्वत् १८२६ कार्तिक वदो
सप्तमी शनि वासरे ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—संगनाचरण, गुरु ज्ञान कथन:—

मिश्र धजोच्या नवर के, जगत गुरु धनस्थाय ।

विद्या के सागर महा, ज्यो मनपति मतिधाय ॥

तिनही को परसाहु नहि, ज्योतिष प्रगम जगधाय ।

"समरसार" भाषा करौ, कमियो बुध पपराध ॥

ग्रन्थ निर्माण काल—

गुरु निर्धि परवत सोलकर, जब संवत् सुष साह ।

ज्येष्ठ पक्षित तिथि तीज रवि, भवै ग्रन्थ सौताह ॥

संस्थाज्ञान, जय पराजय, चिता, वरण स्वर, राशि स्वामी, ग्रह स्वर राशि स्वरम स्वरज्ञानम् । द्वादश वार्षिक, स्वर वार्षिक, स्वर घयन, स्वग्रह स्वर मास, स्वर घयन, स्वर कथनम्, ज्ञातु स्वर वचन ।

(२) पृ० ८ से पृ० १६ तक—मात्रा स्वर, जोष स्वर, पिंड स्वर, जोष स्वर, संतरोदय, भू-बल, रचिहत दिशा, चन्द्रहत दिशा, केतुहत दिशा, राहु बल, जोगिनो बल, जोगिनो नाम । राहु युत जोगिनो बलम् ।

(३) पृ० १७ से पृ० ३६ तक—काल कथनम्, तत्कालज्ञानम्, दिन व्यतीत ज्ञानम्, बार प्रवृत्ति, द्वारा, प्रहर लक्षण, लगन प्रमाण, वास्तु सुनं, सकाल, राहु कलानख, तात्कालिक, जोष पक्ष कथनम्, नाम ज्ञानाय शकुनत पट्ट चक्रं, हंसचार, दलपति फलं, स्वास फल वाह प्रमाण कथनम्, स्वाबलं, रतिविधि, छूतफोड़ा, सभेर चौपचानि, कोट चक्रम, सर्वतोभद्र चक्रम, साध्यासाधक, मद्रा बौर पुत्र संबंधी प्रश्न ।

No. 558. Sāmudrika. Leaves—10. Deposited with Umā-sānkara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—नामो लक्षण नामो मंभोरो बाहुो सदा होर घनवन्त । सुन्दर नामो पुरुष को पुत्र देवावै संत ।

अथ हस्त रेखा लक्षण

अथ सुनु कहौ हस्त को रेखा । जैसा भाव जहां मै देखा । प्यार प्याद रेखा होइ हाथ । बहुतै बनो जब छे तेहि साधा । मंछरूप रेखा देखावै । शयै शोधि हाथ जह लावै । फुटग्ये रूप जो रेखा होई । ता कहै होर कहै सब कोर । कै शरी के बांकुस रेखा होइ सर पै घनवन्त देखा । चौखटो रेखा जेहो होई । मद्रा सुरोवा कहिये सोई । दो०—तिलटो रेखा हाथ में हिन्दुहि तुरक कराइ । जोई तुरक के हाथ में निश्चै धाई सो पाइ । अथ पुरुष लक्षण वचन—कामली मुरती संग सौ । बंकट भौइ विशाल सो लोचन लाल चमहो । होरे काम कला बहुत सुख पावइ । सोल बंत गुन बंत सो चतुर कहावइ । इषवन्त प्रति चतुर बिनाद रागरस मोत सरथ सौ हेतु रहै चोत प्रेम बंध । लहु भोजन लहु रोष दान दीन भावइ । कामीनो पत्तर सलाइ सो रूप रिक्तावई । प्रति लहु प्रति न विशाल शोभ धाम संग होइ । मधु बानी मधु भोजन सुन्दर रूपते ही ।

End:—अथ घन प्रमाण लक्षण—बावन घंगुल घन पुरुष जो जानिये सो बावन नौतार देव करि मानिये । रात्रपुष जो होई जो बली पावन फेरे ।

चारो घौस घंगुल पुरुष जानु दुष्ट सो होइ । मन कपटो अप रचार यो भेद न पावे सोइ । नवै घंगुल पुरुष जो लहिये । तीस वर्ष आवेदा कहिये । सौ

धंगुल का होइ प्रवाना । प्रथि वष होइ अनुमाना । सौ धंगुल ऊपर जो गनै । धंगुल साथ वष दश मनै । होइ दहातरो सैको काया । तौहु चाहि अधिक बड़ि यासा । सात वष ताको अधिकारि । धंगुल पाछे लेहु गनारि । वोसा सौ तजी ऊपर बड़ै । होइ चिरंजो यागम पड़ै ।

हिरदै लक्षण—दाउ अदयन नर भारी होइ । मझा घनाटो पुणै है सोइ बांइ दोस अदयन है भारी । मिलै नारि तेहि प्रेम पियारी । इदैं समान घरन जो होइ । सेवा करै जगज सब कोई । दुबल हिया दाखिद का माइ । मोटा हो आवरण सौ चाह ।

Subject :—(१) नामि लक्षण ।

२—हस्त रेखा लक्षण ।

३—पुरुष को चार जातियों के लक्षण ।

४—चित्रिनी स्त्री लक्षण ।

५—इस्तिनी लक्षण ।

६—नख लक्षण तथा चरण की उंगलियों के लक्षण ।

७—जातु लक्षण, पंजर लक्षण ।

८—इंद्रिय लक्षण ।

९—योग प्रमाण लक्षण ।

१०—हृदय लक्षण ।

No. 559. Saṅgraha. Leaves—6. Deposited with Thākura Bidriprāsada, Village Kharanhi, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagadhā (Ondh).

Beginning :—भव तो मिलनो कठिन है । पावन पड़ी जगोर ।

परबस प्यारे हम भई । फाउ करै ततघोर ॥ १ ॥

मित्र तुम्हारे मिलन को । चाहत है चित नित ।

तन नहि मिल्यो तो का भयो । मन मिलि आवत नित ॥ २ ॥

सारठा :—प्यारे तुम जित जानियो । हम सन प्रीति गई ।

धमर खेल ज्यों वक्ष पर । बाहुत नित नई ॥ ३ ॥

तुम विछुरत छिन में मरी । कहा जियौ बिनु तोहि ।

तब मूरति मन में बसै । बहो जियावत भादि ॥ ४ ॥

End :—साँची कही हमसौ मनमोहन, काके कहे तुम प्रीति तजी है ।

प्रांखिन देखि बिना नहि चैन सो, प्रीति को रोति कहाँ बिसरो है ॥

का कही मोहो सो चुक भई, तुमरे चित को जो चाह घटो है ।

बै कपटो कि भो व कपटो कि तौ, वह कपटो जहि देखो ठटो है ॥ १ ॥

फोकी लगी घति लोको सु फूल यथा सुचि सुख सुगंध विना ।
 तन मांदि पोसाक न सोहत है दीप बंदी यथा कटि बंध विना ॥
 बोर सरीर न सोहत है भुज तंडव उन्नत कंध विना ।
 कविता वनिता नहि सोहत यों वर भूषण छंद प्रबंध विना ॥ २ ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ४ तक—पत्र संबंधी दोहे ।

पृ० ४ से पृ० १२ तक—पत्र तथा विवाह संबंधी दोहे ।

No. 560 (a). Sāragita. Leaves-20. Deposited with Pandita Mannilā Gaṇ gāputra Tivāri, Village Misrikhā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री नमोऽश्विनमः अथ सार गीता लिख्यते ॥ अर्जुन उवाच, अर्जुन श्री कृष्ण भगवान् जो सा प्रश्न करे है कि परमेश्वर जो उकार का महात्म और असंख्य । तिसके सुगने को मेरे वांछा है ॥ तुम कृपा करके निरूपण करहु ॥ श्री भगवान् वाच ॥ हे अर्जुन तुके बहुत भला प्रश्न किया है ॥ अथ ओंकार का महात्म विस्तार कर कहता हूँ श्रवण करो । पहि गीता सार हैं । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर एहु इसके रक्षा करने हारा है । और अमन वायु सूरज एहु इसके देवता है ॥ गायत्री जगजी अथ एहु तीनों इसके छंद हैं ॥ और अमन अखान है तहां चारों वेद हैं । रिग्वेद । युजर्वेद । सामवेद । अथर्वण वेद ॥ चारों वेद कारन हैं । अम इनका उत्पत्ति कहें । ओंकार ते इनके उत्पत्ति है रिग्वेद का नील वरण । युजर्वेद का पीत वरण है । साम वेद का स्येत वरण है । अथर्वण का रक्त वरण है । ओंकार नाम अक्षर सक है अरु मकार के लोक है । ओंकार अक्षर परम हय है अरु इसुर वेद कमल बिजे बसे हैं । पृथ्वी अग्नि रिग्वेद है अरु ब्रह्मा भुवलोका पदो चारों अक्षर अक्षर के साथ है ॥

End:—सर्व सास्त्र मयो गीता । सर्व धर्म मयो दयः । सर्व तीर्थ मयो गंगा ॥ सर्व देव मयो हरि जो कोई इसका एक सलोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है सा संसार के संघ कृप ते मुक्ति होई श्री कृष्ण भगवान् जो के अग्रित वचन है । वचनों ते भला फल सार गीता कोनी है । रे मनुष्यो तिस फल को तुम क्यों नहीं खाते पापों के अग्राने का बरेवन करने हारो है ॥ बारंबार भलो भोति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजे । अथवा श्रवण कीजे ॥ और शास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजे ॥ कमल नाम जो है श्री कृष्ण कृपा निधान । श्री नारायण जो तिनको मुख कमल ते निकसो है । अरु श्री मुख वाक्य है । गंगा, गीता, नावत्रो, गुरु, गोविंद । इन पंचो राग करे । सा पुनर्जन्म को न पावे ॥ जो कोई दस सार गीता का यथा शक्ति अभ्यास करन न जाये

अथ पाठ मात्र करे सो भी विशु के विमान जाइ पात होइ । इसके आगे क्या कहो । इति श्री भगवद्गीता प्रज्ञा विद्यावा योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गोता समाप्ते ॥

Subject:—श्रीकार का महत्व, रूप, स्थान आदि जानने के प्रश्न श्री कृष्ण जो ने अर्जुन को समझाया है ॥

No. 560 (b). Saragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Pandita Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapura, District Sitapur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सार गोता लिख्यते ॥ अर्जुन उवाच ॥ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान् जो से प्रश्न करे है कि हे परमेश्वर जो उंकार का महातम रूप स्थान तिसके मुलने को मेरे वांछा है तुम कृपा करके निरूपण करहु ॥ श्री भगवानुवाच है अर्जुन तु के बहुत भला प्रश्न किया है अथ श्रीकार का महातम विस्तार कर कहता हूँ ॥ तू श्रवण करो पहि गोता सार है ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर यह इसके रक्षा करने हारा है ॥ और अमन वायु सृज यह इसके देवता हैं ॥ गायत्री जमनी शिष्टम् यह तोते इसके कंद हैं ॥ और अमन अस्थान है तहां चारोवेद हैं ॥ रिग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेण वेद ॥ चारो वेद कारन ॥ अथ इनका उत्पति कह हौं ॥ श्रीकार ते इनको उत्पति है रिग्वेद का नील वरण है यजुर्वेद का पति वरण है । सामवेद का स्वेत वरण है अथर्वेण का रक्त वरण है श्रीकार नाम अक्षर सकृ है यह मकार के लोक है श्रीकार अक्षर परम रूप है यह इस हृदे कमल विषे वसे है पृथ्वी अग्नि रिग्वेद है यह ब्रह्मा भुव लोक ये चारों अक्षर अक्षर के साथ है ॥

End:—जो कोई एक बार सार गोता के अर्थ जल त्रिपै असना न करि के पाठ करे सो संसार के अंध कूपते मुक्ति होइ ॥ समस्तजाओं ते उत्तम है और जिस को वेदानों है यह आखला का दातो है यह श्री नारायण मई है सर्व सास्त्र नई गोता सर्व धर्म मथादया ॥ अथ ताये मया गंगा सर्व देव मया हरि ॥ जो जो कोई इसका एक श्लोक एक चरण आथा चरण पाठ करे है यह श्री नारायण जो का ध्यान धरे है सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति हो ॥ श्री कृष्ण भगवान् ओ के अमृत वचन हैं ॥ वचनो ते भला फल सार गोता को तो है रे मनुयो त्रिप फल का तुम क्यों नहीं खाते ॥ पापों के अज्ञान को वरेचन करन हारो है बारबार भलो भाति सदा सर्वदा गोता का पाठ कोजे अथवा श्रवण कोजे और साख का विस्तार श्री कृष्ण को निमित्त कोजे ॥ कमल नाम जो है श्री कृष्ण कृपा निधान श्री नारायण जो तिन को मुप कमल ते निकसो है यह

श्री मुप वाक्य है गंगा गोता गायत्री गुरु गोविन्द इत्यु पाँचों राम करे तो पुनर्जन्म का न पावे जो कोई इस सार गोता का जथा शक्ति अभ्यास करने न जाये यह पाठ मात्र करे तो भी विष्णु के विदमान भाई प्राप्ति होई ॥ ३ ॥ इसके पागे क्या कहें ॥ इति श्री भगवत गोता (सार गोता) सुप्र निष्कृतं ब्रह्म विद्यायां ज्ञान शास्त्रे श्री कृष्ण चर्जन संवादे सार गोता सेपुर्णम् लिखतं वन वारी पाठक पैतृपुर निवासो जेष्ठ शुक्ल दशमी संवत् १७६७ वि० राम राम राम राम राम ॥

Subject:—भगवद्गीता का सार ॥

No. 560(c), Srisāragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhūshana, Village Kāmātāpura, Post Office Etāuja, District Lucknow (Ondh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ यह सार गोता लिखित ॥ परब्रह्म उवाच परब्रह्म श्री कृष्ण भगवान् जो को प्रथम करे है कि हे परमेश्वर जो शोकार का महातम और रूप और असंख्य तिस के पुनरो को मेरे वांछा है तुम कृपा करके निरूपण करहु ॥ श्री भगवान् उवाच ॥ हे परब्रह्म तुमने बहुत भला प्रथम किया है यह शोकार का महातम विस्तार कर कहता हूँ ॥ तू श्रवण करो ॥ पही गोता सार है ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ये इसके रक्षा करने हारा है और भगन वासु सूरज यह इसके देवता है ॥ गायत्री जगजो त्रिपद पदु तोनों इसके छंद है और भगन असंख्य हैं तहां चारों वेद हैं ॥ रिग्वेद ॥ यजुर्वेद ॥ अथर्ववेद ॥ चारों वेदों कारण है ॥ इनका उत्पत्त कहें हैं रिग्वेद का नील वरण है यजुर्वेद का पीत वरण है ॥ सामवेद का स्वेत वरण है अथर्ववेद का रक्त वरण है ऊंकार नाम प्रथम सक है यह मकार के लोक है शोकार प्रथम परम रूप है और इस हृद कमल विषे वसे हैं ॥

End:—सर्व सास्त्र भयो गोता सर्व वर्म भयो द्यः सर्व तोषे भयो गंगा सर्व देव भयो हरिः ॥ जो कोई इसका एक श्लोक एक चरण भाषा पाठ करे है यह श्री नारायण जो का ध्यान करे तो संसार के बंध रूप से मुक्ति होई ॥ श्री कृष्ण भगवान् जो के प्रसूत वचन हैं ॥ वचनों से भला सार गोता को ती है रे मत धोति सफल को तुम क्यों नहीं रखाते ॥ पापों के प्रस्थान को वरेचन कर नहारी है ॥ बार बार भलो भोति सदा सर्वदा गोता का पाठ कीजें ॥ प्रथवा श्रवण कीजें ॥ और सास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजें कमल नाम जो है श्री कृष्ण श्री कृष्ण निधान श्री नारायण जो तिनको मुप कमल से निकसी है यह श्री मुप वाक्य है ॥ गंगा गोता गायत्री गुरु गोविन्द इत्यु पाँचों राम करे ॥ तो पुनर्जन्म का न पावे जो कोई इस सार गोता का जथा शक्ति अभ्यास करने न जाये यह

पाठ मंत्र करै सो भी विद्वानु के विद्यमान जाई प्रापति होई है इसके प्रागे क्या कहौं इति श्री भगवतोष्ण सपनिवत्सु ब्रह्म विद्या या योग शास्त्रे श्री कृष्ण चर्जन संवादे सार गीता संपूर्णम समाप्तम् शुभम् लिखत देवी राम शर्मा माघ शुक्ल पंचमी संवत् १८२७ वि० ॥

Subject:—चर्जन का श्री कृष्ण भगवान से झोंकार का महारस्य, इस और स्थान पूछता और श्री कृष्ण भगवान का तोना प्रद्वों के उत्तर चर्जन को समझाना ॥

No. 661 Sārgangadhara Samhitā. Leaves—137. Deposited with Ramagopāla Murāī, Vaidya, of Alikātāla, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning:—

दोय कौल को करष जु बछ । जानि पान मानिक पर तक्ष ॥
 किंचित यानक कुरतर लेये । निंदुक पोइश कापिच देये ॥
 कवल यह सुंदर वर जाना । हंस चरन सो वरन वषाना ॥
 घोर विहालय इहि को मानै । इतने नाम पधेला जाने ॥ १० ॥
 दोय कर्ष को पैसा लेय । नाऊ मुक्त चष्टका येक ॥
 दोय मुक्त को टका सो जाने । बेल पोइसो मूढ़ वषाने ॥ ११ ॥
 पट पकुंच चातुर्थ क ले उ । चष्ट टका को नाउ कहेऊ ॥
 टका दोय को प्रसरित नाउ । दुजो प्रसरित जाने लाउ ॥ १२ ॥
 चार टका को नाम कहि घान । जलव कुंडव सुताको जान ।
 चष्ट मान ठासो कहत चर्ध सराय कमान ॥ १३ ॥
 कहत सुरायक अरु मानिका चष्टप कहिये देष ।
 पाह टका को नाउ कहि बुध जन जानि विशेष ॥ १४ ॥

End:—

पृष्ठ २७३ व २७४

चक्री पथ त्रिफला रस ल्याय । सुरमा को ताता करवाय ॥
 सात-सात बेरहि बुचाय, पाजै नेत्र रोग सब जाय ॥
 नेत्रन दोष मिटो जब दोष, तब जल में भिजवै पुनिसोय ॥
 केरि नेत्रन को जारे दोष । यह जो दोष कछ पुनि होय ॥
 धोके प्राव चाकर चार । बेहर लगी न होय विकार ॥

=०=

जकला मधु घृत घमरानोर । साठ मूत्र गोधी रहि खोर ॥
 चलाका राणा को तपवाय । इन सब में लोजै तपवाय ॥

यह सलाका घाँजि जाय । नेत्र रोग सब नोका होय ॥

X	X	X	X	X
X	X	X	X	X

Subject:—(१) पृ० १ से ४ तक—सुप्त ।

(२) पृ० ५ से १७ तक—अध्याय ३ । कुछ पारिभाषिक शब्दों को व्याख्या तथा रोगी परीक्षा अथवा रोग परीक्षा । नाड़ी परीक्षा ।

(३) पृ० १७ से पृ० २० तक—अध्याय चौथा, दोष-पाचन ।

(४) पृ० २१ से २९ तक—पाँचवाँ अध्याय । शरीर भेद, सप्त धातु, सप्त त्वचा, कलादिस कथन ।

(५) पृ० ३० से पृ० ३४ तक—छठवाँ अध्याय । आहार पाक कथन ।

(६) पृ० ३५ से पृ० ४४ तक—सातवाँ अध्याय । पित्त से चौबीस रोग । दातों की जड़ के तरह रोगों का वर्णन । कण्ठमूल के पाँच रोग । चौरानवे नेत्र रोग । संध्य के नौ रोग, सुषेज-पुच्छों के तेह रोग, कलि तिल के पचास रोग । नाससात रोग । घाठ तुष्ट रोग । स्त्री नाम रोग । योनि रोग बीस, गर्भ के घाठ रोग, बालक के बारह रोग । (रोग विष उपविष वर्णन)

प्रथम बंड

(७) पृ० ४४ से पृ० ५० तक—पुट पाक कल्प अध्याय, १ । सुरस पुटपाक तुंडल जल । तोतुर पाक । दाहिम पुटपाक, क सेा पुट पाक ।

(८) पृ० ५० से पृ० ७२ तक—बात ज्वर पर सुहृचांद, नवांद, कासम जाता, कट फनादि, पपेटादि, बोज पुरादि, मुनि आदि, लघु नक्ष्यादि, परवध, गुर चादि, दसमल सन्निपात घाँभयाद सन्निपात चष्टादश मुन कथन, कटु फनादि, गदाय का जोन ज्वर, बृहती, छुद्रादि शीत ज्वर, सुस्तादि शीतज्वर गुवादि तृतीय ज्वर, चतु मर्दका, त्रिफलादि, रक्षापंचक, महारक्षादि काथ, हरीत काथ, बोरकरपाद, पलादि, दारावदा, नीचा दाघ, ब्रह्म दाघ पंचक, बर नाह, समर गुजार, तेल लघु मज्जिपादि, पथ विषंड, वासादि, पेटालाद, प्रमथ्या, जूष, पान कल्पना, जलपान विधि, क्षीरपान, बिचड़ी, पञ्चत्र बागु, विडेली, पसगुन माह-

(९) पृ० ७२ से पृ० ७४ तक—दसवाँ अध्याय ॥

फाट कल्पना, मधुप फाट, असतार, लघु मधुक पाठ, मथफाटक, खजुराद माघ, मसुराद माघ, (जब सत्व मथ)

(१०) पृ० ७४ से पृ० ७६ तक—ग्यारहवाँ अध्याय ॥

हिम कल्पना, घसृतादि हिम, नीलान्य लाद हिम, धनादि हिम,

(११) पृ० ७६ से पृ० ८० तक—बारहवाँ अध्याय ।

विषली वर्धमान, रसानकक ।

(१२) पृ० ८० से पृ० १०१ तक—तेरहवीं अध्याय ।

चूरन कल्क, मधु पिघलो, ऊपकादि चूर्णे, त्रिफल चूर्णे, पटुक चूर्णे, त्रिसुगंध चतुर्जात चूरन, जीवनी, पंचजवन, लघु सुदेशन चूर्णे, मूल्यादि चूर्णे, हरत क्वाद चूर्णे, मंगायर चूर्णे, कवितारका चूर्णे, बृहत्कादि माष्टक, लवणाद्य चूर्णे, महाधने चूर्णे, नारायण चूर्णे, पंचसम चूर्णे, मधुनारायण लवणमशादि चूर्णे, पाठादि चूर्णे, मज्जमादादि चूर्णे, दिग्गादि चूर्णे, जगन बांड चूर्णे, ताली साद चूर्णे, शीत बलादि चूर्णे, लवण भास्कर, पंचागरिष्ठ, अश्वगंधादि, करमह, वर्धमान पोषर,

(१३) पृ० १०२ से पृ० १४० तक—पाग कल्पन, चौदहवीं अध्याय । गुटिका, बहुलंजोग गुन, गुनाद गुटिका, संवीवन, बोध, जधारक, सप्त पिंडो । मंडर बटिका, बंदाक गुटिका, जोगराज गुग्गुल, कैलास गुग्गुल, त्रिफला गुग्गुल, गोक्षरादि गुग्गुल, त्रिफलादि मोदक, कचानार गुग्गुल (पकाधिकार)—कुलाब पाक, सेवती पाक, गोषर पाक, करंज पाक, शूठी पाग, जायफल पाग, गुग्गुल पाक, कसरवा पाक, जीरा पाग, अभिमादि पाक, कामदेव गुटिका, चोब चीनी पाग, पोषर पाग, सुपारी पाक, चंद्रक पाक, अमृत पाक, दाहिमा पाक, हरदा पाक, नारियल पाक, कुचला पाक, मिलवा पाक, हरंदो पाक गोषर पाक, कुमडा पाग, करंज पाक, पिघलो पाक ।

(१४) पृ० १४१ से १४६ तक—पन्द्रहवीं अध्याय, अथलेह कल्पना, कंटका अथलेह, अयन प्राश अथलेह, कूष्मादि अथलेह, अत दण्डिकादि अथलेह, कट जाता अथलेह ।

(१५) पृ० १४७ से पृ० १५३ तक—सोलहवीं अध्याय, छिड कल्पना, श्लोक पटपलघृत, चगेरो घृत, मसुरादि घृत, कामदेव घृत, पान कल्पना, अमृतादि घृत, महा सकघृत, कोमो साद तैल, जातो फल घृत, प्रदघृत, त्रिफलादि घृत, मयूरघृत, त्रिफलादि घृत, पंचन घृत ।

(१६) पृ० १५६ से पृ० १६६ तक सत्रहवीं अध्याय । तैल कल्पना—लक्षादि तैल, नारायण तैल, बाला तैल, प्रसारिणी तैल, माषादि तैल, सतावर तैल, कोसोसादि तैल, बिडावल तैल (अर्क) । मिरचादि तैल, नाम बोज तैल, मधु जाष्ठा तैल । कुंजाद तैल, दाकनोल तैल, मंगराज तैल, हरमेदादि तैल, करनमूल हिमवतैल, विष्वादि तैल, क्षार तैल, बिहादि तैल, ब्राह्मो तैल, कुंटादि तैल, वज तैल, काथोरादि तैल,

(१७) पृ० १६७ से पृ० १७५ तक—अठारहवीं अध्याय, संधान पासव परिष्ट कल्पन—संधाय, कल्प, वाती, पासव, उशोर पासव, पोषरा सब, लोह पासव कुट्टारिष्ट, विहंग परिष्ट, देवदास परिष्ट, पदिसादिरिष्ट, अमृतापरिष्ट अमृतापरिष्ट, हारिष्ट, वेदितकारिष्ट, । दशमूलारिष्ट,

(१८) पृ० १७६ से पृ० १८६ तक—उत्तोलसर्वा अध्याय, धातु सोधन क्षर कल्पना, धातु सोधन मारन विधि, सोना मारन विधि, क्यामारन विधि, ताँबे मारन विधि, जस्ता मारन, सोसा मारन, राग मारन, लोह मारन, उप धातु, (सोनाभाषी क्यो माखी, चमक सुरमादि) मारन विधि । सुरभा, मनसिल हरतार, पागसोघन विधि, धातु निजोव करण, होरामास धेत ऋतु मारन, मणि मारन, सर्व रत्न मारन, शिलाजित सोधन, मेहूर करण,

(१९) पृ० १८७ से पृ० २१५ तक—बोसर्वा अध्याय । पारा मारन, ज्वरा कुश रस, शीत ज्वरारि रस, क्षुरंधी गुटिका, लोक नाथ रस, सुंगम पोटली रस, हेम पोटली रस, महा ज्वराकुश रस, सोचकारो रस, पंच बको रस, उन्मत्ता रस, इच्छामेदी रस, चमका रस, सुज बत्ती रस, हंस पोटली रस, त्रिवक् रस, महावालेखर रस, कुष्ट वृद्धोरा नाम रस, उदवादिष्योरसः । बन्धिरस, विद्याधर रस, शूल गज केसरी, कश्मि रेडी रस, यजोष्णे कंटकारी रस, मध्यान मैत्रसर, वातनासन रस, कनक सुंदरी रस, सन्निपात भैरव रस, ग्रहनी कपाट रस, बन्ध ग्रहनी कपाट रस, मदन (कामदेव) रस, कंदर्प सुन्दरी रस, लोक रसायन ।

मध्यम खण्ड समाप्त

(२०) पृ० २१५ से पृ० २१९ तक—इक्षोसर्वा अध्याय, स्नेह कल्पना,

(२१) ,, २२० ,, ,, २२४ ,, —बाहसर्वा अध्याय स्वेद विधि कल्कनाम अध्यायः—स्वेद विधि, तुवस्वेद ।

(२२) ,, २२४ ,, ,, २२८ ,, —तेइसर्वा अध्याय—वमन विधि

(२३) ,, २२८ ,, ,, २३२ ,, —चैविसर्वा अध्याय—विरेचन विधि ।

(२४) ,, २३२ ,, ,, २३९ ,, —पर्वांसर्वा अध्याय—नास विधि ।

(२५) ,, २४० ,, ,, २४२ ,, —इक्षोसर्वा अध्याय—धूम्रपान विधि ।

(२६) ,, २४२ ,, ,, २५६ ,, —सत्ताइसर्वा अध्याय—गंडूष करण । अश्रोतन, पिठो, कल्क, चूर्णे, प्रवटेह ।

(२७) ,, २४७ ,, ,, २५६ तक—महाइसर्वा अध्याय, लेपन विधि, विष हरण । लेप, हाँथी दांत बार के लेप, कर्णवण ।

(२८) ,, २५७ ,, ,, २६१ ,, —उत्तोलसर्वा अध्याय, ठविर मोक्षण ।

(२९) ,, २६२ ,, ,, २७४ ,, —तोसर्वा अध्याय, नेत्र प्रसाद कर्म, तर्पन विधि, पुटपाक, भ्रंजन, वत्तोलेवन, लेपनी बत्ती, रोपनी रस किया, लेहनी रस किया, मुहुचूर्णे भ्रंजन, नेत्र काम प्रसाद चूर्णे, मुता प्रसाद चूर्णे,

(३०) ,, ३७५ ,, ,, —लुप्त

No. 552. *Sārasaṅgraha*. Leaves-44. Deposited with Raja Avadhesasimha Raisa and Tallukedara: of Kālākākara, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning:—ओ गनेस जो सहाये ॥ ओ सरस्वतो सहाय ॥ सोसा लाय तामों रागु । उत्तम हो इनपर ई भांग ॥ यह कैसे के जानै संतु बेला ॥ थाली जेबै संतु ॥ यपश लेले इनो वागु इह जानै तथो को भागु बाये हिसा सोला परै ॥ तो मोखे का तोरा करै ॥ अब कहिहौं तिन कि मरजादो जरई हरई जैलो खादो ॥ खुदन कैला बंस वपनि पुनि सोले गठो जानि ॥ ३० ॥ कहुं तरके चावन बंस । चारि घामरै चालिस कंस लेह । तांयु पुत्रा चालीस । घोर रंग जान बबतास तथो क्वालोस गाने कही चेसाला सधाल को सानो । बडतालोस लुप पर सनो ॥ पारो सतरो मैक जुगार ॥ नौबत तेज मरजाद कही । रस रततामर ते करो सही ॥ बापर एक निकुतम हई । एक दवानि सुनि लोई सोई ॥ ३३ ॥

End:—चूने खेर पापरो घानि । चूने जोरो हरद बसानि ॥ पांचो करप करप पर घानि । कह बो तेल चारि पल घानि घोपद बांठि मेलि जै माहा । पर रततार उठै जो जहां ॥ जिते बग्न चोतारो तनै । सात घास में भागे घने ॥

इति मल्लम मज्जिप्पादि

पुर बी पुगी फल चारि । थो घोर घामरे कालि जानियो । घोर बांठि छे घट के पान । पल पल सोरो शाप सुजान ॥ चूने सोप पैरया ॥

Subject:—(१) रंगा का वस्त्र, वृत्तियों के नाम, शोधन विधि, पारा शोधन विधि, स्वर्ण मल्लिका शोधन विधि, नैनिवां सुमल शोधन विधि, फिटकरी शोधन, सुरमा शोधन, पपरा शोधन, शैषधि नाम । घनशोध धातु से बाहुने, धातुघात के गुण गगन तथा इंगुरादि गुण घटागद कष्टों की शोधधि, शंख द्राव काढ़न विधि—पृ० १—२९ तक ।

(२) महासेव द्राव, तांबे शोधनो, वंग विधि, सारमारन को विधि, शोशा मारण को विधि, हरताल विधि, कांति रस विधि कनक सुंदरो रस, मुनि बल्लभ रस, कुसुम भवगंस—पृ० २९—४८ तक ।

(३) संविद्या हरताल विधि, कनक छपरिया विधि, कुटीरस विधि, चिटो विधि गंधक, हेम रस विधि रूप राज विधि, इंगुर मारन विधि, नागेश्वर रस विधि—पृ० ४८—६५ तक ।

(४) बागेश्वर रस विधि, महिमंडल रस विधि, क्षोरद वर्द्धमान रस कचन रस विधि, संपुट, सालरस, रघुपति कल्याण कामेश्वर गुटका, मदन पाग गुटका, कुप केदरी, बसुधा विधि । शुद्ध घनो विधि मंत्रिप्पादि मरहम चादि वस्त्रेन—पृ० ६६—८७ तक ।

No. 563. Śatasamyatsara-Phala. Leaves—30. Dated in Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1769 or A.D. 1712. Deposited with Umāsaṅkara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—सम्बत् १७६९ विजय नाम संवत्सरे चन्द्र स्वामी मेह घणा । समीमलौ घृत तेल सुकना । लोक सुषो । समी मलौ । चैत्र वैशाख सुहंगा ज्येष्ठ भूमि कंष अजमेरि राजप लक्ष्मी । उपद्रव । तलो माटी उपरि हो इसी लोक छोटसी म्हेकुज्जेठ देसही दुराज गरज सी ॥ घसाड़ दुकाल श्रावण सुकाल मादव मेव घणा ऊपर मास सर्व मला इति ६९ फलं ॥ संवत् १७७० वर्षे वृष नाम संवत्सरे मंगल स्वामी दुर्भेक्ष होसी । राजपीडा । घन घल्य मार वारि दुर-भक्ष । रौरव वरतो लोक पसत होसी । पूर्व सुकाल । मध्य देसि मंडो वरि में वाहिरी दुकाल । पाप में पाप लागसी चैत्र वैशाख मंदु । ज्येष्ठ घसाड़ श्रावण फरका मादवै वर्षा मंद । भासाज लोक २ छत्रसी भुषा धान मणये राजी २१ लक्ष्मी प्रजा कष्ट । कातो सागशिर मलौ पौस माह फागुन फरका इति ७० फलं संवत् १७७१ वर्षे चित्र मानु नाम संवत्सरे बुधस्वामी । लोक सुषो मेव घणा सतल होसी । घनसत्ता । जे घन लेती तद्विने टोटे । मास ४ उरति सुकाल । चैत्र वैशाख मंदो ।

End:—सम्बत् १८८० वर्षे राक्षस नाम संवत्सरे । चन्द्र स्वामी । सर्व जनसी । घनघणा नदी फूसी मालवै दुकाल । चैत्रादि मास उयोचो । घसाड़ श्रावण फरका । मादवादि मास ४ मध्यम मार्ग शिर रस कस सुकना पौस माह महाजन पीडा । फागुन छुटसी राजविरोध घणा । माह देस मजसी । चित्र वोट राजपटसी रुंडमुंड मेदिनी मुनुप्या मनुप्य लागसी । चैत्र वैशाख मंदो ज्येष्ठ विषह । घसाड़ मेव पल्य । श्रावणो पुरकि । मादवारै पाछिलै पामि किचित् वर्षा सर्वत्र होसी । मार्ग शिर पौस मंद । माह ॥ फागुन महगई । इति १०० फलं ॥ श्रीः ॥

इति सौ संवत्सरो फलं सम्पूर्णं समाप्तं श्री रस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥ संवत् १९३९ मितो वैशाख सुदी ३ ॥

No. 564. Śāvāra Mantra Śāstra. Leaves—43. Deposited with Umāsaṅkara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः । प्रादमंत्रः ॥ गुरु सख विस्मिह्याह । काफु श्रियां मो पावनकार भादि गुरु हृष्टि करतार वेद नहरता वही एको पाइ जुग चारि तोनि लोक चारि वेद पंच पांडव छव मार्ग सात समुद्र अठ वसु नवप्रद दश रावन ग्यारह रुद्र बारह रारि तेरह मोल चौदह भुवन पंद्रह तिथि चारि पाति चारि वचन पांचभूत चौरासी आत्मा लख जीव अनोनि

षष्ट कुनो नागा तेंतीस कोटि देवता सकासु पतालु सृति मंडल राति दिन पहर घरो दंडु प्लु जाय महा रघु साधा धरते हो जौ कथु फलाने के पिंड देवन होइ देवदानव भूत मेत राधा सुमुषो सुमानु की तारा वादिता देवा बाडीठो मूठो चपिनो भुपिनो मिलनो विहिनो फोरो बिठोरो गाहिनी नाई का पेलाई ॥ धौनो भूल वायु सलनह सान हावा उहरवा दद्रु गरहु कर कलपितो मूत्र कृच्छ्र पठाग्रह प्रमेह गोला फोटी अहरघा अहो गार्घो सासो कुठो लुठो कुंवोरो भिरगो वसन बाढ हरिषा चुनवा चुरपेल गंडल कवाड चोट फेट फेदि ताकि ताला पालगा पाप पोती लांध्या डळंध्य बाट धाटक बाहर निसार, पेसार सांधु सकार कवनहु प्रकार होहाइ गुदवार चाम नागि अर्थ प्रेम जहां हंसो दोहाइ सलैमान पैगम्बर की तुरंतु तुरंतविलाई पक्षो पोनि पाहिना लरिस वालाप पैगम्बर की वज्र क्षाप नवनेच चौरासो सिद्ध ।

End :—मंत्र सांप को । भूलि मिलि कंत घरो मनाउ अम्है विषमया महादेव विषि बाहर कता विषा समपात कल पेहि के विष तई सलि संगे संगे हुंके तत आवै जो मैं पाई सान सराई देउ वाय गठ बैठाइ बारह चन्द्रमा सारह जीत जागता महादेव कै दोहाई गीरा पार्वतो लोहा चमारिनि कै दोहाई यहं मंत्र पांडुके जहां काटै तहा गोट तरकै धूरि संगे बुराकै देव । मंत्र ध्वन्या सुटावै ॥ क्षुरंत देवगी पसरत विषा पसरहु चारिहु दिशा ॥ २ ॥

अग्नि बंधन मंत्रः अथ अग्नि ज्वर लंते पर जरै जरै महेस कथा भा वल्ला विषयु महेस शींगो बले केदार शीनि चलते हो । जटो सांगि लोहै परै तुषार में से हाथ का बार जरै हनुमान जतो कसेत बन जरै ॥ १ ॥ कालो नागिनि किल किलंति पाकति अनुपं कंत अहो तेल मंत्र से होउ पानो शीनि सगिस बते हराई हनुमंत था मैं स तेल कराहो पर तेल था मन्त्रानि सीता सती की लाप दोहाई मंत्र ठाहुस बनाइ कपार पर झरै वाल घरै ॥ मंत्र लगावै की सुक्ति ॥ पिसान रुवा सर ते कर महादेव बनावै तोह बाद आवाह लिपर जाय ॥ अथ मारणम् ॥ यो सुता भेरण मम मे मम भद्राय पक्ष पतरि पुधिष्टा व लक्ष्मसराव क्षय सेपुः ।

Subject:—प्रथम प्रकाश—पादि मंत्र, आत्मकुक मंत्र, मेतादि प्रयोग, धनुष बंधन मंत्र, अग्नि स्तंभन, और तैल स्तंभन आदि मंत्रों का बखन ।

द्वितीय प्रकाश—अथ भाङ्गने का प्रयोग, गौधी निवारण प्रयोग, दांत भाङ्गने की विधि ।

तृतीया प्रकाश—गोमहिष्यादि दुग्ध वर्धनमंत्र, स्त्री गर्भधारण, गर्भरक्षा वात रक्षा, और मक्षिका संजोवनी आदि प्रयोगों और मंत्रों का बखन है ।

चतुर्थे प्रकाश—विशोषशमन, कुपकुर काटने पर मंत्र प्रयोग, विच्छेद मंत्र एवं प्रयोग, दाँव, मुख, नेत्र, आदि भाङ्गने के मंत्र ।

पंचम प्रकाश—मोहिनी प्रयोग, श्री वशीकरण, मारण प्रयोग, कटोरा चलाने के मंत्र ।

षष्ठम प्रकाश—ज्वर, अजीर्ण, शिर पीड़ा, कसै व्यथा, शिषा बंधन, मारण, वंशोत्पत्ति करण आदि मंत्रों का वचन ।

No. 565. Siddhānta. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Śarma, Paṇḍita-kā-puravā, Maujā Bhadhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning :—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ सिद्धांत लिप्यते ॥

ऊँ अब जागे श्री गुरु राम नंद अबधूता ।

सेनो सिंगो जग जंगेठा पत्र पाँवड़ी दंडक छोटा ॥

रोली रंडा चवर सडानो । दोनो अलप काम सहदानो ॥

कुबजा कड़ा सुमनो माला । मेघ की लाज मगवान रखने वाला ॥

साकरी संघ गुदरो तू भी बाजे मोचंग मुलानो प्रंगी अचला टोपी मोर कलंगी ये राखे साधू बहु रंगी ॥ पाँच सांकरो गोरप थंदा । साधू सुरति कर राखे बंधा ॥

कडिया का दंड आडबंद पजरा ॥ बटुवा सुई सुई का घागा । चोला पलगा सीवन लाग ॥ घाला काला डोरा ये साधू का चोला । पट्ट कुटाड़ी फरसो गुपती । देवी पाघट नहीं छिपती ॥

End :—

॥ चूला चेति मंत्र ॥

ऊँ सद्ध का पात्र अंत्र का चूला । रसाई करै जानकी माई ॥

सात समुद्र जल घटारे भाख नास, पत्ती लकड़ी घानी ॥

सिध प्रधान ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवता जिनसेा हित सनेह ॥

रिधीजारे घेत पुर नावोड दूर ननेस जो उजंत आवे जर मरे सो वैकुंठ प्राप्त होय ।

मंथ पड़ै चूला चेावे । सो संत परमपद पावे ॥

॥ इति चूला चेतने का मंत्र ॥

हो लक्ष्मी माई सत्त की सवाई । चढ़ै भंडार करै सहाई ।

रिद्धि निद्धि सदैतो राज रामचन्द्र की तुहाई ॥

अथ पुराना महादेव की पूरे गनेस । सिद्धी आदि घेत की जानी ॥

आकास देवी पाताल कूवा लक्ष्मी आइ भंडार किया ॥

लक्ष्मी गई सुख के पास । हम रहे सबू के पास ॥

सात समुद्र जल ले आवे । अठाराभार बनास पातो लकड़ी घानी ॥ ब्रह्मापरी

अनी ॥ पत्ती ले चेतानी ॥ लक्ष्मी गई ब्रह्मा के पास घाट पहर चौसठि बोर भंडार

किया तीन लोक का उदर भरा । पड़ि मंत्र भंडार चेताने । सो संत परंपद पावे ।

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—गुरु रामदास की पंच मात्रा ।

(२) पृ० ७ से पृ० १५ तक—चामृषण मंत्र, धी मंत्र, चलकी मंत्र, सनकादिक मंत्र, कुंची मंत्र ।

(३) पृ० १६ से २४ तक—निरंजन तारक मंत्र । सिन्दूर चढ़ावन मंत्र । वैराग्य बीज मंत्र । अमर बीज मंत्र । ब्रह्म तारक मंत्र, जटा मंत्र ।

(४) पृ० २४ से पृ० ३२ तक—अरथरी मंत्र, कामधेनु मंत्र, चूल्हा चेतने का मंत्र, लक्ष्मी मंत्र । मंदार चेतने का मंत्र ।

No. 566. Śikshāsātārdha. Leaves—7. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājārāma, Village Narahā, District Sitāpur (Ondb).

Beginning:—धौ गलेषायनमः ॥ अथ शिक्षा शतार्थं लिप्यते ॥ दोहा ॥
कहिये बात प्रमान को ज्यों को ल्यों दरसाय । बन साचे भाषे बचन फिरि पाछे
पाँकूताय ॥ कथ अनीतो हुष्ट नर रहत अडर जग माहि ॥ अवस दुर्दसा होति
है अर बाकी मति नाहि ॥ सुधरो कारज आप के करत भंग जो कोई । जितने वो
कारज करै बाकी एक न होय ॥ जो छुट छुट बातें करै बाकी सब सुनि लेई ।
अगुम बात की छाड़ि के शुभ मन में धरि देई । आगे पोछै साँचिये बासा चतुर
कहाय । बिन साचे जो कोउ करै निद्राँ घेपाँ खाय ॥ निबल सहायक बुजिये
जो बह साँचा होय । सबल घोर सब होत है धर्म न देवे कोय ॥ प्राण जाय जाते
रहै मिथ्या दोजे त्यागि । जो असत्य बोले मनुष्य लागै कुल का दाग ॥ बिपता
काहुँ पै परै तब कोजै उपकार । कवहुँ न कवहुँ आपनो कारज देय समाँरि ॥
कवहुँ न मागै मित्र सो कछु वस्तु यह जान । जो जन माँगत है अवस खोन होत
है मान ॥ दुर्जन अप सो आप के पोटी जाय सुनाय । शव हँसि के सुनि लीजिये
कोष शोष मिटि जाय ॥ नीच आये जो सेमुष पड़ि जाई । ती चुप के है
बैठिये बल तुरंत घटि जाय ॥ परनाले को दोषो चतुगन को नहि काम । तेज
घटत सब संग को पावत अपजस धाय ॥ नीच घोर मोछेन को कवहुँ न कोजै
संग । वा संगति से आपनो होत प्रतिष्ठा भंग ॥

End:—मीत प्रीत में कहत कछु राखै मन के माहि । जैसे पानी वृष में
मिलि के निकसत नाहि ॥ जो अप को शिक्षा कहै सुनिये कान लगाय । ह्रैत
हुँड के बात को अपने चित ठहराय ॥ जो तुम जानौ मीत सौ प्रीति किये दुख
होय । ती कवह मति कोजिये बाकी संगत कोय ॥ पोछे जन की प्रीति को
करन करी बसानि । परत यबूजा नोर में ताको पोतिहि जानि ॥ जो अप सो
विपुता करै ताको मन मति देव । अपने भेद नहि दोजिये बाकी मन हरि डेव ॥

जो पाये या जगत में जीव धारि के देह । पालन सब को ईश वह करिके पित
सम नेह ॥ जो पाये या जगत में झूठ न बोले कोय । झूठ पाप को मूल है ताको
फल दुष होय ॥ प्रातहि उठि के ईश को धरो चित्त में ध्यान । धन कोरति धन जस
बढ़े हिय सो उपजै ज्ञान ॥ सकल सृष्टि में पाय के करै कोऊ उकार । वाके
मन प्रभु या वसै होय जाम उदार ॥ मिथ्या को सांचो किये मिथ्या तेहि पछि-
ताहि । जैसे घाव पुरे हुए तासु पोख ना जाय ॥ जैसी हो वैसी कहौ मत कहौ
कछु बढ़ाय । जाते जन सब पाय ले भ्रम कहि नाहि बुलाय । प्रभु में चित लगाय
के करै पुन्य धरु दाम । यही दान फल दान है जग में हो जस मान ॥ काहु सो
लड़िवों नहीं धापिन राखै लाज ॥ वनै चाप सो तो कछु करि दोजै पर काज ॥
परसु काज को जो करै यही वाक्य बड़ मान । दिन दिन प्रति संपति बढ़े हो
सहाय मगवान । मित्र जानि के मित्र सो कहै मित्र कछु चाप मली शुरो जो हो
कछु राखै बाढ़ छिपाय ॥ काहु सो बैर न करौ राखै सब सो प्रीति । उत्तम जन
जो जगत में उनको यह है रीति ॥ पंडित पद पाके करै जो घबरम को बात ।
ताको उपमा ये लखै दीप आंचरे हाथ ॥ इति शिक्षा सतार्थ समाप्त शुभ मस्तु
मिती माघ वदी १३ संवत् १९२५ ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject :—५० शिक्षापद दोहे ।

No. 587. Śodhaka-Paṭāla. Leaves—36. Deposited with
Bābū Tribenīprasāda, Sub-Court Inspector, Davariyā, Gorak-
hapura.

Beginning:—अथ सोचक पटलनावा विधि गुण उपार्जन यज्ञः लक्षण
जो हाड़ निकलवाना होय अथवा पानी निकलवाना होय अथवा देवता भूत
जो चोत्र जमीन से निकलवाना होय ताकी विधि ॥ मंजू का वाधा केरा के
ढाठ चौती कीड़ी सादो कीड़ी दश गंडा ॥

॥ विधि ॥ कील के पांच ईटा पांच पोर के पांच खूँटा खैरा के पांच पत्ता
पोपर के सेमर के वर पोपरि गभारी पाकड़ी पांच खूँटा करके सेमुर गुण लोहा
हरदी तीन वस्तु जनेऊ बरुपा नरियर कपूर ॥

End :—प्रथम ॥ १ ॥ गर्भ के महीना जानने कीरी प्रश्न लगने से शुक्र
जितनी राशि पर है उतना महीना गर्भ के स्थित जानो । गौर ग्यारहवें दशवें
भाव में है तो पंचम भाव से रखना ॥ १ ॥ गर्भ का कुशल जानना । यदि पंचम
भाव का स्वामी तथा शुभ ग्रह पंचम भाव को न देखता है अथवा ना युक्त है
गौर पाप ग्रह देखता है वा युक्त है तो गर्भ का पतन कहना अन्यथा नहीं ॥ २ ॥

प्रदत्तकर्ता को चाहिये कि प्रथम मकान गिन बावे फिर ४ उसमें जोड़ लेना ताके पंच गुना कर लेना फिर २५ बढ़ाकर लेना ताके ५ का भाग देना जो लक्ष्मी बावे उसमें एक युक्त करना उतना ही प्रमाण जानना ॥

Subject:—पृ० १ से ६ तक—ज्योतिष ग्रंथ ग्रहण से फलित तथा तंत्र का ज्ञान हाड़ और द्रव्य इत्यादि भूगर्भ का हानि जानना । ६—११ तक—जन साधन दूत परीक्षा, मकान परीक्षा, मकान शकुन परीक्षा, भव का ज्ञान, अग्नि भय ज्ञान, भय की शांति के उपाय, यंत्र चालीसा, बहू यंत्र । पृ० ११—१४ तक—द्रव्य निकलवाने की विधि बादशाही यथवा बलिदानों द्रव्य की शांति का उपाय, यंत्र बीजा, यंत्र तीसा, यंत्र चालीसा, यंत्र पचासा, यंत्र ७० । २० । २०० । २१० यंत्र २० । ४२ । ३८ । ३६ । ४६ । ३४ । ७२ । ५२ । (इन यंत्रों से अनेक प्रकार के भय की शांति होती है । यंत्र पटलका समूह १३,२०० यंत्र कपूर के राम नाम के चंका प्रदत्त करने की विधि यथेष्ट षाठ प्रकार के मंत्रों का समूह । दोष शांति के मंत्र नक्षत्र परीक्षा तिथि परीक्षा दिन परीक्षा, तथा शुभा शुभ फल देखना वायु ग्रह चक्र, वायु ग्रह से फल निकालने की विधि ।

भेद जानने की विधि अनेक प्रकार की बोगारियों की शांति के यज्ञ, यंत्र चक्र, गर्भ का महोत्सव जानने की विधि—

No. 568. Subhākhita-Dohā. Leaves—28. Dated in Samvat 1917 or A.D. 1860. Deposited with Lalā Prabhūdayāla of Ālamanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning:—यद्य सुभाषित दोहा लिख्यते ॥ मलय धकी फल दे घना उत्तम पुरुष सुभाष । दृष्ट करै तृण को चरै ज्यों गोकुल की गाय ॥ जेता का सेता करै मध्यम नर सनमान । बटै बल नहि रंजहु धररा कायरै धान ॥ दोजे जेता ना मिलै जवन पुरुष को वान । जैसे फुटे घट धरगो मिलै मलय पवधान ॥ भला किये करि है बुरा दुरजन सहज सुभाष । पय पाप विष देत है फणा महा दुषदाय ॥ सहै निरादर दुर वचन दण्डमार अपमान । चार जुगुल पर दार रत छोम वार प्रमान ॥ अमर हरि सेवा मानुष की कहाबात ॥ जो नर शील संतोष जुन करै न पर को घात ॥ अगनि चार भूपति विपति इत रहै घनधान । निरधन नौद न शंकले मानै काकी हान ॥ एक चरण जो नित पड़े तो काहे प्रमान ॥ पनिहारी को नेत्र ज्यों सहज कटै पापान ॥ पतिव्रता सत पुरुष की बड़ी रीति नहि जाय । भूष सहै दारिद्र सहै करै न होन उपाय ॥

End:—विद्या दिये कुशिय को करे सुगुरु अपकार । लाप कहाये मानवा पोसे ले प्रविकार ॥ ना जाने कुल शील के ना कोजे विश्वास । ताह

मात जाते दुखी ताहि न रसिये पास ॥ गलिका जोगी भूमि पति बानर सहि
मांझार । इन्ते राखे मिषता परै प्राण उर भार ॥ पट पनहो बहु सोर जो
घोषधि तीज सहार । ज्यो लामे लो लोजिये कोजे दुष परिहार ॥ नृपति निपुन
क्यों न प्रजा की हान ॥ घन कमाव घन्याय का वृष दश धिरता पाव । रहे
कदा मोहस बरस तो समूल नस जाय ॥ गाढ़ी जो तरु उदधि बन कद कूप
निरराज । दुर विष में नौ जीवका जो बो करै इलाज ॥ जाते कुन शोभा
लहै सो सपुत बर एक । भार बहे के दू चरै नरधव भए घनेक ॥
दूच रहित घंटा सहित माय मोल क्या पाव । लो मरष साठो पाकर
नाहि सुघर हो जाय ॥ काकिल थारी बैन ते पनि अनुगामी नार । नर बर
विद्या ज्ञत सुघर तप बर कृमा विचार ॥ दूर बसत नर दूत गुण भूपति देत
मिलाव । डाक दूष राजि कंतको वास पगट दुइ जाय ॥ इति श्री सुभाषित
दाहों का संग्रह संपूर्ण ॥ निषा वैद्यनाथ त्रिपाठी संवत् १९०५ चित्र फालगुण
कुन्दाई इराज ॥

राम राम राम राम राम राम राम ॥

Subject :—शिक्षाप्रद दाहे ॥

No. 569. Sukabahatri. Leaves—87. Dated in Samvat 1931.
Deposited with Pandit Rāmanārāyanadattaji Śastri, Village
Jānapuratera, Post Office Lakhmapura, District Kheri
(Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शुक्र वदन्तरो (शुक्र प्रभावतो
संवाद) लिप्यते ॥ प्रणम्य शास्त्रां देवीं दिव्य ज्ञान समन्विता ॥ मन चित्त विने-
दाथे क्रियते शुक्र वदन्तरोम ॥ १ ॥ एक पृथ्वी के विषे चन्द्र कला नाम नगर है ।
तहां राजा विक्रमसेन राज करता था तहां हरदत्त नाम सेठी बसता ताको सुर
सुंदरी स्त्री ताको पुत्र मदन ताको रतनसेन की बेटो प्रभावतो से व्याह किया सो
अप लावण्य युका से व्याह किया मदनसेन आसक्त दुषा दमभर जुदा न होता
पिता मन में धिक्ता करता पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहता है इससे
छत्र रोग होगा यह समझकर चिंता करने लभ्यो इस हेतु में जो बात प्रगट भई
सो कहते हैं ॥ चित्त दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण विक्रम नाम का था सो यह
गंधर्व पर्वत को गयो उस पर्वत पर एक सिद्ध महातपस्वी तप करते देखा जाके
दंडवत कियो तब सिद्ध ने बहुत आनित स्वानत किया तब ब्राह्मण ने कहा एक
वस्तु जो अपूर्व है सो दीजिये किस वास्ते कि जो पृथ्वी घटन रहते है । कथा
वार्ता विन चित्त लगता नहीं और जो ऐसे रिपोन्धर के पास से भी नहीं पाऊं

तो कहाँ से पाऊँगा जो रिपि को सेवा करूँ तो बिहतर है तो निरफ्त नहों ।
 ॥ श्लोक ॥ प्रमोघा वासरे विद्युत् प्रमोघं निशि भर्जितं प्रमोघा च सर्ता वाणी
 प्रमोघं सिद्ध दशनम् । चागे घोर ऐसा ब्राह्मण ने कहा तब सिद्धि ने ध्यान किया
 उस समय एक सुवा एक सारे सिद्धि के दृष्टि पाई उन दोनों को अभ्यान्तर
 की बातें जानने में पाई कि ये दोनों गंधर्व हैं कोई रिपोश्वर के साथ से सुवा
 योनि पाई है घोर रिपोश्वर अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषे मनुष्य भाषा किया
 प्रभावतो चागे रात्रि को उपदेश करूँ प्रायः यह सुवा गंधर्व मादन पर्वत पर जायगा
 तब शरीर को छोड़ना फिर गंधर्व हो जावेगा अब शुक अपना शरीर बेचै मुहर
 ५०० का तो या ब्राह्मण को दिवावै तो पाप ते छूटै ऐसे सुवा सुवतो का देव-
 रिपि ने कहा कि घरे शुक वृ इस ब्राह्मण के संग जा घोर मुहरों का दान कर
 तेरा भला होगा इतना शुक सुन हाथ पर जा बैठा तब रिपि ने उस ब्राह्मण से
 कहा अब ब्राह्मण वृ इसे ले जा जो कोई तुझे ५०० मुहर दे उसे दो जो मेरी
 छाजा से तेरा भला होगा ऐसा कहा तो ब्राह्मण उस सुवा को ले छाजा मांग
 चला ॥

End :—प्रभावतो अपने पति से बोली कि हे स्वामी तुम्हारे गये पोछे
 एक छोटी मोकी विरह उपज्यो तब एक दूती पाई घोर मोकी प्रवाची तब मेरे
 भी मन में यह पाई कि घोर पुरुष से भोग कौजै यह विचार कर सिगार कर मैं
 चलोता समय सारी ने रोका बुरा लगा तो मैंने मार दई तो पोछे शुक से पूछो
 शुक ने ७२ दिन कथा कह दिन विताये घोर धर्म राख लिया मैं शुक के प्रताप
 से रहो ये कहों तब मदन सेन शुक से कहों कि शुक तुम से चतुर कोई नहीं
 घोर तुम्हारे ही प्रताप से मोकी पत्नी प्राप्त भई इस तरह कह तब वे शुक बोला
 मदन सेन तुम अपने पिता पास जाकर मोकी छाजा मांगो तो मैं घर जाऊँ
 क्योंकि मैं गंधर्व हूँ रिपोश्वर के श्राप से शुक मया हूँ तब मदनसेन पिजरा ले सेठ
 के पास गया घोर पिजरा दे के सब हाल कहा तब सेठ ने शुक से कहा कि उदास
 हो शुक ने कहा कि तुम्हारे पास रह कर कोई उदास न होगा अब मुझे
 छाजा दो छाजा या बिदा भया पर्वत को गया देह छोड़ गंधर्व भया घोर स्त्री
 पुरुष दोनों स्वर्ग में भोग करने लगे यहाँ मदनसेन घोर प्रभावतो भोग करने लगे ।
 इति श्री शुक वहचर्यो प्रथीत शुक प्रभावतो संवाद संपूजे समाप्तः लिपतं क्यालो-
 राम गिर संवत् १९३१ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे दशम्याम् (श्री राम राम राम)

Subject :—(शुक घोर प्रभावतो संवाद) चन्द्रकला नगरी का राजा
 विक्रमसेन था । वहाँ हरदत्त नाम का एक सेठ रहता था । जिसके कि सुरमुन्दरी
 नाम की स्त्री घोर मदनसेन एक पुत्र था । मदनसेन को रतनसेन की बेटी
 प्रभावतो प्याही थी । जब कि मदनसेन देशाटन के लिये गया था प्रभावतो पर

पुरुष से सम्मोग करने के लिये रवाना हुई परन्तु सारी ने उसे मना किया। उसको प्रभावती ने मार दिया फिर शुक से आज्ञा माँगी शुक नहीं न कर अपनी बुद्धिमानों से उसे प्रति दिन एक एक किष्का सुना कर सानत्वना देता रहा इस प्रकार ७२ दिन व्यतीत हो गए। ७२ वें दिन प्रभावती का पति या गया। प्रभावती ने शुक को बड़ाई करते हुए सब वृत्तान्त सुनाया। मदनसेन भी बहुत प्रसन्न हुआ। शुक ने मदनसेन से कहा कि आप मुझे अपने पिता से आज्ञा दिला दोजिये तो मैं अपने लोक चला जाऊँ। मैं मन्धर्व हुए ऋषोम्बर के श्राप से शुक हुआ था और अब समय खतम हो गया है। इस पर मदनसेन ने अपने पिता से सब हाल कह सुनाया और पिता ने शुक को छोड़ दिया। शुक पर्वत में जा देह छोड़ मन्धर्व हुआ और स्वर्गलोक में अपनी स्त्री के साथ मोग विलास करने लगा। यहाँ प्रभावती और मदनसेन भी अपने दिन आनन्द से काटने लगे।

इसमें ७२ कथाएँ अलग २ दो हुई हैं।

No. 570. Svargārohiṇī, Leaves—28. Deposited with Munshi Śivadhārī Lāla, Manjā Mamarejapura, Post Office Beniganja, District Hardoi.

Beginning:— श्री गणेशाय नमः । श्री गुरु चरण कमलेभ्यां नमः यद्य स्वर्ग-
रोहिणि लिख्यते । चो० ॥ पारवती सुत सुमिरं तोहो । म्याम बुद्धिवर दोऊँ सोहो ।
सुमिरि सारदहि सुमति विचारो । करतु कृपा जन तुष बलिहारो । निशदिन मैं
तुव चरण मनावै । आज्ञा कर पण्डव गुल गावै । अठारह पर भारत के भयऊ ।
लापर संत कथा यह ठयऊ । इसकर नाम सुनहु चित लारै । स्वर्गरोहिणि प्रति
प्रिय भाई । सुनिये प्रसृत कथा प्रिय बानो । जिसमें मुक्ति मुक्ति को जानो ।
गुरु गोविंद के लागौ पाया । चित्त सुदृष्टि करतु कलु दाया । आपर संत साई
नियराना । तब बस पांडव कौन्ह पयाना सोई कथा मैं बरनि सुनावै । अब तो
कलु गोमिद अस गावै । राम नाम कलि नक नसावन सब के ऊपर है जग तारन ।
संछ चक्र घर सारंगपानी । सुमिरा देख रमापति जानि ।

End:—जब लागि राज्य जोम्य होइ जनमैं दो पुत्र तुम्हार ।

तब लागि राज छेहु तुम मानहु कहा हमार ॥ १७ चौपाई ॥

सुनि कै परोक्षित रावन लागे । परे जन्म मम करम समाने ॥

मैं नहि जानौ राज का भेवा । बिन मछाहु अपबिच सेवा ॥

सुनु राजा मैं कहू नहि जानौ ॥ कह लागि अपने कर्म बसाने ॥

तुम मोरे तात निरंजन देवा । ना जानौ जग पार का भेवा ॥

कह मोहि छांड़ि के चले भुवारा । कहा पाप तुम करो चंडारा ॥

दा०—कहै परीक्षित तात गइ सुनु सात दीप के राज । राज पाट धन घरतो
मारे कौनै काज । १८ ॥ दो०—राजा कहै भीम सुनु भाई तुम छै पाट
बैठ बैठाई । भीम कुंवार को पाट प्रधाना छै कान्हा सिंगासन धाना ।

Subje 1:—१—अयोध्या मगुरा काशी आदि को महिमा—गंगा
महात्म्य । वैशंपायन का जनमेजय के यहाँ आगमन ।

२—वैशम्पायन का पाण्डवों को कथा जनमेजय को सुनाना—महाभारत
का युद्ध, युधिष्ठिर का राज सिंहासन पर बैठना ।

३—युधिष्ठिर का भाइयों के मारे जाने पर पश्चात्ताप । कृष्ण के पास पाँचों
भाइयों का आगमन ।

४—कृष्ण का पाण्डवों को उपदेश—कलि कथा ।

५—केदार यात्रा के लिये कृष्ण का पाण्डवों को उपदेश, परीक्षित को राज
कार्य सौंपकर पाँचों भाइयों को यात्रा ।

No. 571. Syarodaya Leaves—6. Dated in Samvat 1917 or
A. D. 1860. Deposited with Thākura Brajabhūshaya Sīmha
of Jhukavārā, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha
(Ondh).

Beginning:—श्री रामायनमः ॥ नामो के ठिकाने कंद है तदा ते सकल
नाड़ो उपजति है थहा राज के मध्ये २१,६०० तिनको नाड़ो ॥ ७२,००० ॥ तिन
विषे दश उर्व्व ॥ दश चर्द ॥ दो दो तिरीछे है ॥ मैसो नाड़ो चौविस श्रेष्ट है
तिनके श्रेष्ट १० ॥ ऊर्व्व ॥ चर्द ॥ १ ॥ तिन विषे तिनको पन्न मार्ग को बरि है ।
एक इहा नाड़ो वाम, नाड़ो चंद्र को है । दूसर पिमला नाड़ो सूर्य को है तो-र
सरस्वती सुमना हव ॥ मध्य नाड़ो गर्ज को है ॥ क्षत्र वाम क्षत्र ठक्षिण है ॥

End:—पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश ॥ १५० ॥ १२० ॥ १० ॥ ६० ॥ ३० ॥
यह श्वास को मर्यादा है ॥ एक स्वर को नाड़ो पंच धरी प्रमाण है ॥ एक नाड़ो
पंच तस्व बरत हैं ॥ इति स्वरादयमतम् ॥ लिप्यतं लाला सीताराम भाब सुदा १
॥ संवत् १९१७ ॥ श्री चित्रकुट सीतापुर ग्रामे ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—नाड़ो का वर्णन । चन्द्र कर्म,
सूर्य कर्म, पक्ष विचार, वार विचार, संक्रान्ति विचार ।

(२) पृ० ३ से पृ० ५ तक—पुनः वार विचार, स्वविचार, युद्ध विचार, पंच
तस्व भेद ।

(३) पृ० ५ से पृ० ६ तक—मैथुन विचार, तस्व विचार, पन्न विचार ।

(४) पृ० ६ से पृ० ९ तक—पुनः तस्व विचार, वायु विचार, शान संबंधी
पक्षों का विचार । काल-ज्ञान विचार ।

(५) पृ० ९ से ११ तक—नाङ्गो-पवाहनादि किया का वर्णन । अष्ट दल प्रमाण । तत्त्व भेद ।

No. 572. Tihārīrajya-kā-Itihāsa. Leaves—39, Deposited with Mannūlāla Pustakalaya, Gaya.

Beginning:—ओ मतेरामानुजायनम् ॥

॥ दोहा ॥

सुमिर समीर कुमार पद । ओ गुरु पद युग कंज ।
परम भागवत नृपति को । कहीं चरित चति मंजु ॥ १ ॥
मिथिला पवधि पवासते । प्रकटे निर्मल इन्दु ।
कोकट समल पवास में । बस्या समिधरस स्यंद ॥ २ ॥
सिव हर रजधानो बड़ो । तिरहुत देस पुनोत ।
मातृ पस में प्रमद भये । जनु भुव जई सुनोत ॥ ३ ॥
माता मुह हर्षित भये । राधा मोहन साहि ।
जैधर वंशो धन्य मैं । भुव सम नातो जाहि ॥ ४ ॥
दिये दान द्विज पौलि के । रतन बजाने खोलि ।
किये निष्ठावर गुनित को । भूपन वसन घमोल ॥ ५ ॥

End:—परम पुनोत कार्तिक भास जिसमें ओ वैकुण्ठ का खुला दरवाजा रहता है ओ सोताराम जी के ध्यान मेरे मन को मग्न करके अपनी माता ओ मम्महारानी इन्द्रजित कुंवर साहिब से कहा माता जु मैं ओ सोताराम जी के नित्य पारपद हूँ प्रभु चाहा ते ओ महाराज हित नारायण सिंह जो बहादुर का परलोक बनाने के लिये पृथ्वी तल में अवतार धारण किया था सिवाय उनके परलोक बनाने के हम अपने माता पिता के सौर हजूर के घर लोक नहीं बना सकें अब मैं ओ सोताराम जी के धाम में जाता हूँ ।

+

x

x

Subject:—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, राजकुमार रामकृष्ण का जन्म, उनकी जन्मकुंडली तथा नामकरणादि संस्कारों का वर्णन, श्रीकास्तजी से विद्या पढ़ना और गुरु सेव लेना तथा तत्त्वज्ञान का श्रीमंश ।

(२) पृ० १० से पृ० २३ तक—कुमार का सोता कुंड को गमन, श्री राघवदासजी परमहंस से भेंट तथा प्रश्नोत्तर । कुमार का युक्तिपूर्वक प्रश्नोत्तर में अपनी योग्यता प्रकाशित करना, गुरु का संक्षेप में ज्ञान प्रदान कर घर को छोटा देना ।

(३) पृ० २३ से पृ० ३६ तक—कुमार का ठिकारो घाना और महारानी को ओर से दोवानो कल्ला, राजा हित नारायणसिंह का उन्हें दत्तक पुत्र मान लेना

घोर सुवराज को प्रार्थना पर उन्हें धर्मोपदेश देना; मालो के सदृश राजा के साथ धर्म; मन्त्री घोर राजा के पारस्परिक व्यवहार तथा उक्त पदाधिकारियों के लक्षण ।

(४) पृ० ३७ से पृ० ७८ तक—राजनोति सम्बन्धी प्रश्नोत्तर, राजा का मंत्रियों की बुद्धि की परीक्षा लेना, अठारह प्रकार के व्यवहार का वर्णन । पंच वर्ग का चिन्तन, सरकारी चिलखत प्राप्त होना, महाराज का प्रजा घोर अपने छोटे दामाद को उपदेश देना ।

No. 573(a). Vaidyaka. Leaves—120. Deposited with Pandita Dinanātha Mīśra of Fatehpura Chaurāsi, Post Office Saphipura, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सप्त धातु सौधव मारणं माह ॥ प्रथम धातु नां संख्या माह ॥ स्वने शौष्मं च ताम्रं च रंगं यशदं मैवं च शोषं लोहं च सेते धत्ते तवः कथिता बुधैः ॥ सेना, ह्वा, तांबा, रंग, जस्ता, सोसा, लोहा ॥ अथ शोधनं च । एक तोला सेने का केटक देखो पत्र साठ करै पेटो भोति रूपे का घोर सबकुं गरम करै पहिले तिल के तेल मा बुझावै बार ३ पुन । गरई के माठा मा बुझावे बार तीन । कुरथी के काढ़ा मा बुझावे बार तीन पुनः गोमूत्र मा बुझावे बार तीन तब सातौ धातु सुद्ध होय ॥ अथ मारण माहा । पारा टंक १ गंधक शुद्ध टंक २ इन दोनों को कजरी करै पीछे गदो के रस ते छेटी घरी य तब सोधा सेना का चुनै टंक तीन स्रं कजरी मा मिलावे निबुषा के रस मा मिलाई के एक घरी छोटे जव गाढ़ा हो जाइ तब एक टिकरी बनाई के घामें मा सुपाय डारै तब सराब संघुट में राषि के सेधो सो मृदि के कपूरौटी करै गज पुद सांच तरे देह ती भस्म होइ ॥

End:—अथ वाजी करण । कामेश्वर चुनै ॥ गोबर, केवाच २ । ककहो के बीज १ । शतारी १ । विदारो कंद का चूर्ण २ । खोरा के बीज २ असगंध २ कसे के जरि का वकला १२ मूसरी गुरिच के सैदा रक्त चंदन तज पत्रज इलाइची पीपरि घांघरा लवंग नाग केसरि यह सब अथेला भरि सब का चुनै करै । वरि पारा के जड़ के काढ़ा को सात भावना देइ । सेमर के काढ़ा को सात भावना देइ फेरि कुल कास सिरसा के जरि के काढ़ा कर सात भावना देइ के छुरे डारै फेरि समान चीनो डारि के अथेला भरि रोज घाय ऊपर से नाय का दूध एक पाव पीये ती रति की वड़ी शक्ति होय । मूत्रकृच्छ्र मूत्र घात प्रमेह जाय । हय मुख्य परा कम होय ॥ गत बीर्य को शोषाधि ॥ चिकनी सुपारी दलियो दल डका भरि नाय का दूध ८० डका भरि गोघृत ४ डका भरि चांड

५० टका भरि गुजराती इलायची गुलसकरी को जरि का बकला बरी पारा के जड़ को बकलो पीपरी जावनी सूँठि सुगंध वाला मोथा त्रिकला वंश लोचन शतावरी केवाँच के बीच छुदारा तोपुर मगईला बोर को गुदा जटा मासो सौफ अलमंध लवंग ये सब टका टका भरि कपूर रसा, सैदुर बंग भागेद्वर अथक यह सब एक एक पैसा भरि प्रथम सुपारी वारीक कठक कर के मदाग्नि ते पाक करे जब वारीक सोहा होइ धो मह डारै कटारै उतारि के शकर मिलावे केरि काष्टादि मिलावे तब एक घोहा वासन मा मिलावे प्रातःकाल एक पैसा भरि पाय तो बहुत पुष्टि होय बोर पराकम होय ॥

Subject:—वैद्यक वखन ॥

No. 573(b). Vaidyaka, Leaves—30, Deposited with Pandita Śitalāprasāda Dīkshita, Village Sikari, Post Office Tamboura, District Sitapur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अरप इनाइ का गुन ॥ अरप इनाइ तोले १ अरप कठफा तोरई का मासे ३। अरप मिर्च का मासे ४ अरप पोथरि का मास २ इनको मिलाइ पोवे उन्माद नासै ॥ भटा खुर नासे उदैन नासे सुक-खुर जाइ। प्रमेह नासे, सनिवात नासे, छाती का खल नासे विषमज्वर नासे। पेट का खल नासे। भूप होइ अग्नि पुडै, सोधा नासै, येते रोग नासै। अरप सौफ का गुन ॥ अरप सौफ का तोले १ दाप तोला १ ताके बीज निकारि डारै इनको मिलाइ पोवे सब मल को भरि जाइ। पेट का खल जाइ अरप सौफ का तोला १ सबत तोला १ पोवे अतिसार जाइ खर्द नासे भूप लागै अग्नि पुडै साँचपात नासे पैसाव पुडै दालि चाउर पथ करै ॥ अरप जोरा का अरप जोरा तोला १ मिर्च मासे ६। अरप मिर्च का मासे ३। इनको मिलाय पोवे लय खुर नासै नमी नासै परमह नासे पेटे रोग नासै पट बयाला मनै।

End:—अथ तेल महातम। तिल का तेल सेर ४। ग्रामा हरदी पाव सेर सिंधिया जहर टंक २० सफेदी घुघुची टंक २० लींग को जर पाव भर गुमा को जर पाव से ठोना मदार को जर पाव सेर सिंभोटा को जर पाव सेर इरानी को जर पाव पाव कलेर को जर पाव पाव भुरवारी को जड़ पाव सेर वाइ मुइको आय पाव अजमाइन आय पाव इन सब को तेल में बौटे जब पाकि तब उतारि छेइ जितनी यह तेल होइ उतनी रेडो का तेल छेइ तितनी महुया का तेल छेइ। तौनी को मिलावे जोसु देइ तब जगावे जो कमर वाइ से रडि गई हो सो नोक होइ जाको पोंठि कुवर निकरि आवा होई सो नोक होई जाको कमर टेढ़ी हो गई हो सो नोक होइ। पाज बाई जाय और पैगन बाई जाय रपिन

बार जाइ । नरो टेढो हो गई होइ सो नीक होइ चोरन बार जाइ नठिया बार जाइ प्रसूत जाइ सेवि सेवि को बाई जाइ भोला बार जाइ सर्व संग बार जाइ येते रोग जाइ ।

Subject :—अतिरोग और उनकी औषधियाँ, चर्क तथा चटनों के गुण और उनके घनाने की विधि ।

No. 574. Vaidyaka-Pharāsīsa. Leaves—20. Dated in Samvat 1840 or A. D. 1783. Deposited with Pandita Śivadulāre, Village Varanāpura, Post Office Visva, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—आ नखेसायनमः ॥ अथ वैद्यक फलसोस ग्रंथ लिख्यते ॥ प्रथम नमस्कार के होइ ॥ प्रथम गवरि मनेस सरस्वति आम्हा पाके हैं अचोन मति होन वरनि करि सके कहा है तुम गुन अपरणार ॥ व्याप रहे विमुन जहाँ लो फलसोस ने विचार के भेद कहे ताके भेद सुनी । गुरु आम्हा बिन कहू न होइ चारि रितु प्रगठ करि कहे अब सुनो जिन के सब भेद ॥ अथ रितु विचार वरन ॥ शरीर में चार कोठा है । एक कोठा में अग्नि है तहाँ से शुष्क लगत है प्रथम जल को कोठा ताके में रग है सो ऊपर को चली । दूसरे कोठा में स्रव रहत है । तिसरे में जाय के मल होत है । चौथे में मल वंयत है । दो नोचे को जले एक दाहिनी तरफ एक बाई तरफ नोचे की पवन को तरफ आई । बाई तरफ के बाई के रग में चार खंडुर फुटे । एक नोचे को एक बाई तरफ एक दाहिनी तरफ एक ऊपर को चली दाहिनी तरफ को बाई रग में ते चारि खंडुर फुटे । एक नोचे को गई एक बाई तरफ गई एक ऊपर को गई । दो रगें तिन में ते दो दो फुटी दो दाहिनी को दो बाई को ॥

End:—अथ सोत ते गरमी झुरी तरे पेसाब कांसे के सो रंग होय तामे सरवत के सो रंग मिल्यो होय तौ सोति ते गरमी विकार जानिये ॥ ताके लक्षण ॥ पेट में दर्द होय नोचे के आगे घन पसीना आवे ॥ छाती में दर्द होय सिर द्रुवे ठवक होय हाथ पाँव जरे पाँवो सुख होय अतोसार होय स्वांस होय कफ डारे पेट में दर्द होय छाती मरी रहे । उबक हाड़ फुटन होय ॥ अथ मल ते वाय ॥ पेसाब को तेल के सो रंग होय तामे भूरो रंग मिलो होय तौ मल ते वाय विकार जानिये ॥ ताके लक्षण ॥ अम होय सिर द्रुवे बांसी चफरा होय माथे पसीना आवे खचक होय ॥ अथ मित ते मल झुर जो पेसाब कांसे के सो रंग होय तामे तेल के सो रंग मिल्यो होय तौ सोत ते मल विकार जानिये ॥ ताके लक्षण ॥ मल भेद होय पेट में खल होय हाथ पाँव में जलन होय झुर होय हाड़ फुटन होय तौ

मल ते शुक्र जानिये ॥ अथ शुक्र ते मल जुर ॥ जो पेशाब को हरे के सो रंग होय
 तौ मेलने के सो रंग मिलो होय तौ शुक्र ते मल विकार जानिये ॥ ठांके लक्षण ॥
 अथ लोहू बैठे उचक होय नल चढ़ि जाय चन दिन होय हाड़ जुर होइ चित्त
 मम होय ॥ जितना पाया उतना लिपा पुस्तक विच पाया । लेखक रामनाथ
 शुक्ल संवत् १८४० वि० पुस्तक प्रति उत्तम बैठक जानिये के लिये है ॥

Subject:—रोगों के नाम, उत्पन्न होने के चिन्ह और लक्षण आदि ।

No. 575. Vaidyakaśāra-Saṅgraha. Leaves—31. Dated in
 Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Paṇḍita Tārachanda
 Munima, C/o Messrs. Murlidhara-Mahādevaprasāda, Sira-
 sāganja, Mainapuri.

Beginning:—अथ मलेशायनमः ॥ अथ वैद्यक सार संग्रह लिख्यते ॥

दा०—गज मुख मोदक सुमग घति, एक रत्न अग वन्द ।

भाल बाल विच अतुल से, सुमिरीं गिरिजानन्द ॥

क्रिया पाठ पागनो ॥ सोठि टंक १० पीपर टंक १० जोरा टंक २ तज पत्र
 टंक १५ घना टंक १५ नागर मोथा टंक १५ नागकेसर टंक १० इन्द्र जव टंक
 १० मोचरस टंक १० लाल मधाना टंक १० सेत मूसरी टंक १० स्याह मूसरी
 टंक १० दालाचनो मुहरेठी टंक १० लोच टंक १० लाइची बड़ी टंक ५ लोच
 टंक ५ कवाव चीनी मस्तंगी टंक ५ बंस लोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५
 जुहारे टंक ५ गिरी २० बादाम १० लोच टंक १० लाइची बड़ी टंक ५ लोच
 टंक ५ कवाव चीनी मस्तंगी टंक ५ बंसलोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५
 जुहारे टंक ५ गिरी २० बादाम १० दाने पोस्त टंक २० दान टंक १० चिरींजी
 टंक २० अकर करा टंक २ मिरच टंक ५ गोपक टंक १० सहत टंक २० गिलोय
 टंक ५ करैप के बोक टंक ५ कैच के बोक टंक ५ उसोर सत टंक २० सता-
 वर टंक २० सेमर को मूसरा टंक २० मधाने टंक १५ पांडू ८ सेर धो पाव का
 सेर १० ता पीछे पाठा को छालि कतरा कर बीजा निकारि हारे तब पाग
 उतारि छेड़ तब सिराये पाछे धौपधि हारे मिलाय के तब कौरो हांडो मिलाय
 दे तब कौरो हांडो में कपूर लगाइ ठामे राखी तब सकारे सांझ पाइ ज्वर सहै
 काम बात जाय महाफल करे ॥ इति पाठा पाग ॥

End:—धौपधि स्वेत दाग ॥ कुटको पल १ बड़ी पल इड १ तालीस पल १
 बाबची पल १ बांठि बासी जल में गोली करे बासी पानी में लगावे स्वेतदाग
 जाइ ॥

पाने को ॥ कुटको पल ४ हरपल २ बहेरापल २ जायफर २५ हरज वा पल १ बासो पानी से पीस गोलो बांधे चना प्रमाण नित्य पाइ ॥ बासे पानी में चना का रोटी पण्य चलासो दाग जाइ ॥ लेप पुनर्नवा को जड़ १ अफोम १ सोंठि १ देवदारु १ बाट गोलो मूल से लेप करै ॥ ऊपर तमासू के पाठ बांधे ॥ इति ॥ वैद्यक सार संग्रह ग्रंथ समाप्त ॥ मिः पौष शुद्ध पक्ष तिथि सप्तम्या भौम वासरे संवत् १८९१ समाप्त ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, काढ़ा पित्तश्वर, गर्मी का इलाज, फूलों तथा धुंध का भोजन । धातु क्षीण को दवा, क्रिया सार को दवा खांसो को सदर कफ को । कसौसादि घृत, मूत्र स्तंभ, घाव का भरहम । दंत कुष्ठ को घौषधि, नेत्र संबंधो रोगों को घौषधियां, पुष्टि कर्ता गुटका, लवंगादि चूने, समरो चिकित्सा । रक्तातोसर घौषधि, चांसि सुष चूने ।

(२) पृ० १० से पृ० ३६—नेत्रों का लेप, सतावार तैल, नारायण तैल, गर्मी को पुष्टि कर्ता घौषधि । दन्त रसना तथा नेत्र संबंधो चिकित्सा । ज्वर । प्रसूत कार्य उपचार । कुष्ठ रस तथा कियारे व गुटका । ज्वर लक्षण । काल ज्ञान परीक्षाएं (३) पृ० ३७ से पृ० ६२ तक—ठांवेद्वर, गर्मांशुति । कृष्णांड पाक, मुसलापार गुण । बज्रक्षार विधि, कूकर काटने को दवा, भगंतर को दवा, प्रदर तथा स्तंभन उपचार, वद को घौषधि, जवापार विधि, धातु पुष्ट को घौषधि, कृष्णांड घृत, कचनार गुग्गल, पथ्यादि गुग्गल, शुंठि पाक, नारि के लिये पाक, सौभाग्य सुंठि, धान्य काष्ठ, सन्निपात उपचार, दाद आदि को घौषधि, धातुपों का शोधना, घौषधि कुष्ठ.

No. 576. Vaidyaka-Saṅgraha. Leaves—112. Deposited with Paṇḍita Durgādīnājī Dikshita, Village Sikāri, Post Office Tambaūra, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कान को दवा बकुरी के फूल को मैदा दुर रत्तो कान में डारै । तौ अराम होइ कान का बहव बंद होइ ॥ बांसे की सुत मैदा के के दुइ रत्तो कान में डारै तौ कान को चिलकवा मिटै औ बहव बंद होइ । औ जो कान में फुरिया होइ तौ कौड़ो को भसम डेढ रत्ती गंगालिया के रस में मासा भरे में धोरि के डारै ॥ तौ अराम होइ । ५ सफेदो बुधवी पैसा भरि कर तेल में जारि के बनाइ पोटी के कान मां दुइ रत्तो डारै बाई के के बहति होइ व चिलकति होइ वा पिराति होइ तौ अराम होइ रोज ३, ४ में । गगन धूरि दुइ रत्तो कान में डारै तौ कान बहव मिटै फुरिया होइ तौ अच्छी होइ जाइ ३ । ४ रोज मां ॥ लोल को पत्ती कनेर के फूल सफेद पियाज सफेद इनके चकं सम के के चकरो के दूध के साथ कान में डारै तौ बहव व पोरा मिटै ॥

End:—ईगुर बिधि ईगुर ले आवै जितना चढ़े पोसि के मैदा करै छोढ़े की कटोरी में मैदा धरे कागड़ी नोबू का रस एक बासन में भिचोरै तै। कटोरी में डारै जेहि मा मैदा बूड़ि रहै कटोरी में इतना डारै छोढ़े की तिगुडिया तेहि पर कटोरी धरे तरे कोइना की सांच देइ जैसे दिया की जालि तैसी भगिन करै जब नोबू को रस जरि जाइ तै बौर डारै इहि भांति चारि पहर सांच देइ। बिचरी की भांति पक होइ एक मंगुसी छोढ़े की तेहिने मैदा चनावै ॥ जौनु उबला तौनु तौन बौर मा धरे जो पाबि जाइ तै ऊर से डार के पकावै उबार पोर सब एकै पक करै जो चारि पहर मा न पकै तै भोर हुई फेरि पहि भांति स सांच देइ तिगुडिया के पास पास बंद करै पवन न लागै जब ईगुर तैवार होइ तब मेरगम मिलावै जावनी लोंग इलायची जायफर ककड़ा केवांच के बिषा दाल चिनो ताल मजाने उरगन के बीज पस्तगी कवाच चीनी ये सब मस मैदा करै सइत में खाने गोलो भूखेरिया के बर काँ मैताइ ईगुर तैवार कर हुई रत्नी गोलो प्रति डारै जब ईगुर भगिन पर ले डतारै तनिक नलोदर डारि देइ इलाज सांक सवेरे पाइ बूड़ते जवान होई कामो बिना नारि न रहै १० नारि से भोग करै देहो मोटा लिंग मोटा होइ। भूष बहुत लगे नामदे से मई होइ।

Subject:—वैद्य क, रोग औपविनाड़ी पटीसा आदि।

No. 577. Vandimochana-Kathā. Leaves—14. Deposited with Pandita Nakachhedarāma Miśra, Village Dhanaurā, Post Office Gadavārābājara, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginning:—श्रीराम जी ॥ स्वामी वैजनाथ जी सदाई। श्री पाथी वन्दो-भोचन कथा। स्तुति ॥

श्री आदि भवानो कल्याणी श्री सुर संधारिनी नामा जी ॥
 तोनि भुवन जेहि समता है कन्या सो बरदाई बम्माजी ॥
 सो बर दायिनी प्रभुवन दाता सिद्धि करै मम काम जी ॥
 पादि कुमारी सिद्ध असवारी जाहि भजे आ रामजी ॥
 महिमा वन्दो अथम अपारा मुख से बरनी न जाय जी ॥

॥ आपाई ॥

गाइ परे जहं मोहं का वन्दो। काज कैलाश ये छन्दो ॥
 निजय होठ सदाय जी। नारद मुनि से कहै बम्मानो ॥
 वन्दो माई सुमिरौ तोहो। सुमिरत गाइ छुकायहु मोहो ॥
 नाम तुम्हार है वन्दो माई। आपन जन पर होइ सदाई ॥

तीनि लोक छैत जब नामा । धन लक्ष्मी देहीं सो बम्भा ॥
 तीनि लोक उनाह सिरजवहो । नाम धार्य बन्दो तबहो ॥
 सुर गण्यबै नाम मुनि देवा । सकल करी बन्दो के सेवा ॥
 महिमा बन्दो के प्रथम अपारा । माइ परे तहं करे उचार ॥
 जो बन्दो पर पुर धरे जो ध्याना । साइ के पुरबिल सेके जाना ॥
 नायना जो ध्यान शील गुनबानी । बन्दो देवता सादि भवानी ॥

End:—

॥ चौपाई ॥

रक्त बीज असुरन के राजा । तुरिते आये तहं सहित समाजा ॥
 चहुं दिशि घेरि तन बांधा । वरै न जाइ देई दल बाधा ॥
 लागे होन तहो रन मारी । भोरहि असुर पर चलो ब्यारी ॥
 तब बन्दो भिगून चलारै । लाख सेना मारि निरारै ॥
 हुंद एक रथार महि परई । कोटिह वीर तहां भौतरहो ॥
 इहि विधि लागत बहुत दिन वोता । तीन भुवन तब भये भोता ॥
 छुड़ देषि बसुधा अकुलानी । सेना असुर कहु बरनि न जानी ॥

x	x	x	x
x	x	x	x

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—मंगलाचरण, बंदो देवी का महत्त्व । कथापाठ का फल । त्रयस का फल । कमलापति राजा का निपुणी होना । शिवजी का काशी को बन्दो देवी के पूजन का आदेश और राजा का सपत्नी जाकर बन्दो को पूजना और बर पाना ।

(२) पृ० ८ से पृ० १२ तक—बन्दो के समाज का वर्णन । बन्दो की महिमा । बन्दो का पूजन विधान । पूजा का फल । बन्दो के विविध रूप और अधिकार ।

(३) पृ० १२ से पृ० १६ तक—स्तुति । ब्राह्मण भोजनादि । राजा के दो पुत्रों का देना । राजा का उत्सव करना । राजा का पुत्र तथा रानी के साथ बन्दो के दर्शनों का घाना । जाननी, भूत, पिशाचादि का माना बजाना । बन्दो का पूर्व इतिहास । अहिरावण का राम को ले जाकर बलिदान करने का विचार । राम का बन्दो का सरण और देवी का पाताल जाना ।

(४) पृ० १७ से पृ० १८ तक—बन्दोका राम से सपत्नी स्तुति सुनकर प्रसन्न होना । बन्दो के प्रताप से हनुमान का भा जाना, गुड़ करना और राम का छूट जाना ।

(५) पृ० १९ से पृ० २८ तक—बन्दी को सोमा वर्णन, उनको स्तुति । देव-
ताओं का प्रसुरों से तंग आकर बन्दों की बन्धना करना । देवों के समाज और
प्रसुरों का युद्ध । देवों की विजय । देवों की स्तुति ।

No. 578. Vedānta-ke-Praśna. Leaves—6. Deposited with
Babu Rām Manohar Bichpuriyā, Purāni Basti, Katni-Mur-
wārā, District Jubbulpur (C.P.).

Beginning :—श्री परमात्मने नमः ॥ अथ वेदांति के प्रश्न निम्न्यते ॥ श्री
वेदांति मधे ऐसे कहौ है ॥ जो कछु दृष्ट विषे ॥ देखीयत है ॥ सब कानन विषे
सुनियत है ॥ अथ जो कछु चित विषे मन विषे ॥ ध्यान को जियत है ॥ अथ सद्
मात्र वस्तु मात्र जो है ॥ सो सब तीनों काल मिथ्या है ॥ अथ स्वप्न ॥
याको साक्षि ॥ दृश्य ते ध्रुयते अथ तस्मिन्निः शानरैः सद् असत्तमे वतस्सर्व यथा
स्वप्न मनोर्थ ॥ १ ॥ वेदान्त विषे ऐसे ये कहौ है जो कछु मन चित्त विषे ॥
सद् मात्र वस्तु मात्र सो सब चिदानन्द ब्रह्म है ॥ याकि साक्षि ॥ यास्ति भाति ते
शानरैः शब्दाः तत्तत्त्वतस्त्वद्वा साच्चिदानन्द मय्य ये ॥ २ ॥ अब या प्रश्न को अर्थ ऐसे
प्रकार सो ॥ विचार के लो जै ॥ जो पहले सो सब मिथ्या कहौ केर बाह्यो सो
सच्चिदानन्द ब्रह्म कह्यो ॥ अथ असत् मिथ्या कबहु सत न होइ ॥ और सत ब्रह्म
कबहु मिथ्या न होई ॥ यह तो अगादि बिबद्ध है ॥ ताते य दोउ वचन वेदांत के
सत करने ॥ अथ विधि मुख करके विवक्षान करौ ॥

End :—श्री आत्म बोध मधे ऐसे कहौ है ॥ जो तीन प्रकार की सृष्टि
है ॥ एक तो जीव को ॥ एक ईश्वर को ॥ एक ब्रह्म को ॥ तामे ऐसा कहौ
है ॥ जीव सिष्ट है सो स्वप्न है ॥ अथ ईश्वरी सिष्ट है सो सौदा लोक ब्रह्मांड
प्रकृति आदि लो ॥ अथ जो ब्रह्म को सृष्टि है सो सच्चिदानन्द रूप है ॥ ब्रह्म
समान है ॥ उकांच आत्म बोधे ॥ त्रिधा सृष्टि ॥ पुरा प्रोक्ता जीव ईश्वरी
ब्रह्मनिस्तथास्वप्न जीव सिष्टिः स्यात् जाग्रति ईश्वरी संताः ब्रह्म नित्यता
प्रोक्ताः सच्चिदानन्द लक्षण इति विचिन्त्या वस्तुत्वः ॥ ज्ञात्वा वेद्वि मित्रो
भवेत् ॥ ३२ ॥

अब या प्रश्न को अर्थ ऐसे प्रकार सो जो लो जै ॥ जो जीव सिष्ट तो स्वप्न ते
कहौ ॥ अथ ईश्वरी सिष्ट प्रकृति के आदि लो लय करि सब संसार कहौ ॥ अथ
ब्रह्म कि सिष्टि तद् सत ब्रह्म समान है ॥

लिखिते संमूर्ते परसन ॥

Subject :—वेदान्त सम्बन्धी कुछ प्रश्न और उनके उत्तर ॥

No. 579. Vidhaya-Vivaha Khandana. Leaves—10.
Deposited with Umāskankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री भक्तेश्वरमः श्री हरिः यो । विषयाचक वृन्द । प्राज्ञ
जिस निन्दित कर्म के कोलाहल को सुनकर महामा सञ्जन सनातन धर्मी माइयों
का चित्त व्याकुल हो जाता है और जिसको सतिष्ठा दिखलाने के लिये
लेखनी हाथ में लेनी पड़ी है वही विषया विवाह शब्द और विषया विवाह
विषय खंटेन मेरे सामने है और जिसने समस्त हिन्दु सन्तानों का प्रकटित संघर्ष
है लेख निश्चित हुये लेखनी कापती है । शरीर में रोमांच हो रहा है । कारण यह
है कि विषया शब्द के साथ विवाह शब्द का योग कैसे हो कर हो सकता
है यही एक बड़े प्राज्ञाचार्य की तो बात है जिस पर विषया-विवाह यह कैसा
कलुषित और अनमेल सम्भव है । हा ।

जिस कुंठि की प्राचीन ऋषि मुनियों ने पाशविक धर्म कहकर महापाप
बतलाया है और जिसे व्यभिचार तथा दुराचार से तुलना की है हाथ ! उसी
कुंठि की बात कुछ पञ्चानों का म पण्डित व्यभिचारियों ने भारतवर्ष के
पुनरुद्धार का एक मात्र शुद्ध पाप तथा चर्य्य महापापालय समझ रक्खा है ।

End :—मंत्र—उदोर्ष्य नार्यभिजोवलेकं गता सुयेत मुपशेप पदि दस्त
ग्रामाय दिधि पोस्तवेदं पत्युर्जे नित्वममि सम्बन्ध ॥ यजु० ॥

अब देखिये इस उपरोक्त मंत्र के द्वारा कैसा अर्थ का अनर्थ बतलाकर
स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके अनुयायी तथा विषया विवाह के प्रस्तावों
लोगों ने अमात्मक भावार्थ निकाला है कि हे नारी ! तू इस मरे हुए पति के साथ
जा लेट रही है उठ । चार जीते हुये मनुष्यों के भोजन के समुप या ! और किसी
विषया का हाथ पकड़ने वाले तथा पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पति की
पत्नी हो बस अब क्या अर्थ हो गया यजुर्वेद की एक धृति के द्वारा खुल्लम खुल्ला
कपोल कल्पित अर्थ करके विषया विवाह का प्रमाण सब के सामने वेदाक्त
दिखला दो । इसी प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भी इसी से मिलता
जुलता भावार्थ कर दिखाया है परन्तु है यह बात बड़ी हंसी के योग्य देखिये
जा शब्द स्थाने धातु के मध्यम पुरुष का एक वचनान्त पद है उसे सप्तम्यान्त पद
मानकर मन माना कपोल कल्पित अर्थ लिख मारा है यहाँ तो व्याकरण शास्त्र
की टांग ही तोड़ दी गई है ।

Subject :—

पृष्ठ १—विषया शब्द के साथ 'विवाह' शब्द का योग अनुपपन्न है ।

पृष्ठ २—प्राचीन ऋषि मुनियों के मठ के प्रतिकूल है ।

पृष्ठ ३—विधवा विवाह सामाजिक और अन्याय है।

„ ४—मंथी का उल्टा घर्थे।

„ ५—विवाह, कामवासना के तृप्त्यर्थ नहीं वाञ्छ सम्पूर्ण संस्कारों में एक संस्कार समझकर किया जाता है। और सभी संस्कार एक बार होते हैं इसलिये विवाह संस्कार में एक ही बार होना चाहिये (यहाँ पर विधवा विवाह असिद्ध होता है)।

पृष्ठ ६—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा घर्थ का घनर्थे।

पृष्ठ ७—विधवा विवाह के कारण सामाजिक कुरीतियाँ।

पृष्ठ ८—रोग रोकने से और बढ़ता है, उनके मूल को ही नाश करने के उपाय सच्चे हैं। अतएव कुरीतियों के ही निवारण से वास्तविक मन्तव्य सिद्ध हो सका है। अन्यथा विधवा विवाह आदि मिथ्यापचारों से व्यभिचारों की केवल वृद्धि होगी।

पृष्ठ ९—भारत की प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाओं का ही पालन करने से उन्नति हो सकती है।

पृष्ठ १०—मनु, पाराशर आदि स्मृतियों, शास्त्रों, काव्यों, ऐतिहासिक ग्रन्थों से कहीं भी विधवा विवाह सामाजिक नहीं सिद्ध किया गया है।

No. 580. Vrindāvana-Bhāshya. Leaves—32. Dated in Samvat 1890. Deposited with Thākura Rāmāpālā Simha, Village Datagava, Post Office Barātāla, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—राम बिहार ॥ रास में नृत्य करतव नवारी । मुदित मनोहर रंग बढ़ावत संग वृषमान बुलारी । मार मुकुट मकरंद विराजत नाक बुलाक सुतारी ॥ कर मुरली कर काकनी कटि काछे चलकें घुँघर बाली ॥ राधाजू के शीश चँदिका नीलाम्बर जर तारी ॥ ताथीना ताथीना धीन धाना बसत पपावज ताल बाल वीन गति न्यारी ॥ उतत उतन नन नुपुर की धुनि भनन भनन भनकारी ॥ धेई धई धई नाचत दोऊ मिलि बिहंसि बिहंसि मुसकारी ॥ चरन दास रख देव दया लें से पावे दरश मुरारी ॥ (चरन दास छत)

राम कल्याण ॥ आज संसारत नादिन गोरौ ॥ फुलो फिरत मत्त करणो ज्यों सुरति समुदके कोरे । बालस बलित चरन धूसर मुप प्रगट करत मुप चोरौ ॥ पिय पर कहल समीरस वरपत अथर सरलता धोरौ ॥ बांधत भुँग उरज धनुज पर चलकनि बुद्धि किशोरौ । संगम किरचि किरचि कबुकि वद सिधिल भई कटि

धारी ॥ देत प्रसीस निरधि सुवतो जिनके पीत न धारी ॥ जै श्री हत पाहु
हरिवंश विविनि भूतन पर संतति सविचन जौरी ॥ २ ॥ (हित हरि वंश कृत)

End :—येह जा हृदय की छाये नी चना वचन अनेक । वनै न श्याम
शरीर विन विधि सम्यो वर्ष लग एक ॥ प्रीति होरि सैचे जवहि दो नहि पायो
जाय । तवहि बुद्धि बल पापनी यस छंदवानि रच्यो वनाइ ॥ भादौ की कारी
निगा जन्म मयो यस भोग धोरीहु सो मन रुचै लाल रस गोरस को भोग ॥
सखिन किलौना करि रच्यो प्राण भावतो कंठ भोजन सुविधि करावहि रसै
कौतुक रचित अनंत ॥ चौपर सुविधि खिलावहि भ्रगदावहि रचि योज भक्तक
जो भावत लाल के देखो वदन लुपतक मनोज ॥ हग बालस पालस जुम न पालस
फूलति बैन । भवल महल जाइ के सखि तहां करावत सैन ॥ पतझवा सौरभ के
भोजन धरि रस पान । चरण पछोहत रूप हित घति को उभावत वा श्याम ॥
श्री हरि वंस प्रसाद बल वरणी विविध पलाग वृन्दावन हित वरनि सुख माने
जुगल सुहाग ॥ (हित हरिवंश)

देखता ॥ चल देखिये ध्यारो पनघट पै भौर छाई ॥ टेक ॥ विद्विया जड़ाऊ
गढ़ना सुन्दर सुनार लाई । पहुँचो जड़ी रतन से दोषत है मन लुमाई । चल देख
हुलरी है पास उसके सोभा कहीं न जाई । सुन्दर जड़ाऊ धारसी देखन को
मुख बनाई । चल देखियो है भांति भांति नग मो कहां तक कहूँ मैं नाई । ऐसी
सुनारिन नैनन देखी कभी न भाई ॥ चल दे० ॥ विवना ने सांच कर के विधि से
बसे बनाई ॥ कहता है अब हजारो राधा है नग को भाई ॥ इति श्री रहस वृन्दा-
वन प्रयोग वृन्दावन भाष्य समाप्तः लिखा रामचरण क्षेत्र १८२० वि० चैत्र
शुक्ल १ ॥ (हजारो कृत)

Subject :—नानलीला, वाद्वन लीला, जोगलीला मनिहारिन लीला,
चुनिहारिन लीला, विसाखिन लीला, मालिन लीला,

No. 581. Vyavahāra-Darśana. Leaves—110. Dated in
Samvat 1904 or A. D. 1847. Deposited with Thākura Haribak-
khasimha Raisa, Village Kuthariya, District Pratāpagadhā
(Ondh).

Beginning:—श्री मते रामानुजायनमः ॥ जयतः ॥ श्री रामचन्द्रजो यति
कमल भूतस्य पत्नी च शुभं ॥

जयति श्री भक्त राजी विमल मठिकरः ॥ श्री पिथा दास ईश जयति श्री
भूषकेल प्रभुर नखद चाड ज्ञान तामि सुहायी ॥ जयति श्री राज बलभ्ये

जयति मनुष्यः शुद्ध धर्म प्रचारो ॥ १ ॥ अथमनुयाज बलक्या वनु सारेण व्यवहार पादो निरूपयते ॥ व्यवहारानूपः पश्येद्विद्वज्जिः ब्राह्मणे सह ॥ धर्मे शास्त्रानुसारेण क्रोध लोभ विवर्जित ॥ १ ॥

राज्याभिवेक जुक्त जो है राजा तोंका प्रजा पालन धर्म बिना दुष्ट को दंड दोन्हें नहीं हूँ सकै और दुष्ट सुष्ठ बिना व्यवहार देपे नहीं जानि परै तेहिसे पंडितन को लैंके राजा राज राज । व्यवहार देपे व्यवहार कोन कहावै को दुई बादो वाद करत हैं तौनेमा जो भूँठ कहत है तौने को निरने करकैं जौन साच कहत है तौन को स्थापन करव सो व्यवहार धर्म शास्त्र के अनुसारते क्रोध लेति विवर्जित हूँ के राजा देपे इहां क्रोध से विवर्जित हूँ के राजा देपे इहां क्रोध से विवर्जित कहिनते दिते मत्सर मदद पाइगे पौलौ भते विवर्जित कहिन तेहि से काम मोह यदौ पाइगी ॥ १ ॥

End :—जो राजा को मरजों के अनुसार तें पंडित लोग अन्याया निषाध करै सो पंडित राजा दोहन का दंड चाहौ सो राजा आपन दंड बरनाय देइ देवा संकल्प कैके ब्राह्मन कादे रापै और जौने बादो का न्याय ज्ञान कैके सुद्ध हूँ गाइ सो वाके रि न्याय कै उजर करै हे तो वाको किरि न्याय कैके हराय कै इन दंड लेइ जो असुद्ध देपि परै तौ केरि शुद्ध कै देई सो जो कौनो राजा के निषाध दूसरे राजा के यहां जाय तै वही राजा निषाध देपे सो जो राजा अन्याय कैके जो कहू दंड लेइ तो जैतो ह्वय होइ तेकर तीस गुना द्रव्यन का संकल्प कै ब्राह्मन का देइ सो जैतो दंड लोन्हेसि होइ तेकर बहोरि देइ ।

मिति पूस वदो १३ भाषिकास. सं० १९०४ के साल ।

Subject :—(१) पू० १ से पू० १६ तक—स्योहार दर्शन का प्रकरण—वादी के भागे प्रतिवादी से उत्तर लेने का वचन ।

(२) पू० १५ से २४ तक—प्रार्थना पर प्रार्थना सुनने का प्रकरण । दुष्ट साक्षी का लक्षण ।

(३) पू० २४ से पू० ३६ तक—लेख साख मौम्य दिव्य का प्रकरण बहुत दिनी मुक्ति जो न खुली हो उसका प्रकरण ॥

(४) पू० ३६ से ६० तक—ग्रहण पाती का हाल न खुना हो तो उसका वचन । एक खान का न्याय दूसरे खान पर सुनने का वचन । पिता, पुत्र, स्वामी, चाकर इत्यादि के अपराध का वचन । रूपा, सोना, नाय, । भैंस (खोई वस्तु)

को कोऊ पावे उसका वधेन । शंजा पावे उसका वधेन । ऋण दान का प्रकरण । जामनि का प्रकरण । रास बैठाने का वधेन ।

(4) पृ० ११ से पृ० ११८ तक—गहन वधेन वैपाना का प्रकरण सापी का प्रकरण । व्यवहार में साप का प्रकरण, कूट सापी का प्रकरण । डेप का प्रकरण । दिव्य का प्रकरण । हिस्सा का प्रकरण ।

(६) पृ० ११९ से पृ० १४० तक—बारह प्रकार के पुत्रों का वधेन । गुरु चेले के हिस्से का वधेन । संसृष्टि विभाग का प्रकरण । जो हिस्से के अधिकारी नहीं हैं । उनका वधेन । खो धन का प्रकरण । तिलक चढ़ाके अन्य खान में काम करे उसका कथन । कन्या का धन भाई पावे उसका वधेन । सीमा विभाग किसानों और गृहिर का प्रकरण । किसी को चीज कोई बेचे उसका वधेन । दान दे के लैटा ले उसका वधेन ।

(७) पृ० १४० से पृ० १८० तक—पैल लेके बढ़ाई उसका प्रकरण, सेवा चाकरो करके, धंगोकार करके न करै तो उसका प्रकरण । जो संमति करके न करै तो उसका प्रकरण । राजा के सब जातियों के धर्मों के पालन का वधेन । बाजो लगाई के जुवारी और जिड़िया इत्यादि को लड़ाई का वधेन । मार पीट तथा दंगा फसाद और साहस का प्रकरण ।

(८) पृ० १८० से २१० तक—साहस के तुल्य जो अपराध है उसका प्रकरण । वैध का प्रकरण । राजा को पाशा बिना कैदी को छोड़ दे उसका वधेन । अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु मिला कर बेचे उसका वधेन । बाजार भाव का कथन । जड़म आवर बिकने का विवरण । सामे में उद्यम करै उसका वधेन । घोरी का प्रकरण । गर्मपाठ कराने का वधेन । खो संमदण का प्रकरण ।

(९) पृ० २१० से पृ० २२० तक—खो पुरुष के विरोध का प्रकरण । राजा किसी को कुछ दे और लिखने वाला और कुछ लिख दे उसका वधेन । हुत सामग्री बिलाने का वधेन । सवारों में धक्का लगने का वधेन । जो कोई राजा के शत्रु को बढ़ाई करै उसका वधेन । राजा को निंदा करै उसका वधेन । राजा का मंदार काटे उसका वधेन । ज्योतिषी राजा को बुरे ग्रह बतला कर उसको शांति का यज्ञ करै उसका वधेन । न्याय में सम्प्रदा करे उसका वधेन ।

No. 582 (a). Yantravāli. Leaves—20. Deposited with Pandita Bhagavānadatta of Benipura, Post Office Mādhoganja District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥

जेनहृत् गृहं श्रेष्ठं कलत्रं यत्र पुत्रकं ।

उच्चाटनं वयः कृयात् दुष्टं दंडो विधोयते ॥

×

×

×

×

×

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

यह यंत्र लाघवार कामद ऊपर लिखि के एक ठौर नदी मा कि तलाव मा बटोरि के डारि देइ लाघ जब पूजे तब पूछे हुति करै जय से पत्र लिखै तब लहि जाउर गोहु घृत न पाइ ॥ २० ॥ मंत्र ताज १००००० ॥

॥ ऊं ह्रीं शिवायनमः ॥ इ यंत्र गोरौचन से लिखै ॥

End:—

अ- भा- की की स्वा- रा	६६६	४४६	१११७	२२२२	४४८
	१४६३	४०७४	५०६	४४४०	५५५४
	३११२	६६४०	२२३०	५५७१	५५४४
	४४४२	५७४	२७४	४२४	४४४

तीनि पुरुष का नाम लिखि के पिकुवारे नेई के तरे गाढ़े तो उच्चाटन होइ ॥ मेहावर से लिखि के दुश्मन के पिकुवारे गाढ़ि देइ तो काम सिद्धि होइ ॥ मसि से लिखै पोपर पत्र पर जर जाइ कामद पर लिखे बाहे बांधे त्रिजारी जाइ एक हाथे पानी मरी पोपर पत्र पर यंत्र लिखै चारि बार धोवै बाहो पानी से मुख छटा मारी भूत भागै भोज पत्र मेहावर तेके राम लिखै पेट बलै गर्भ रहे पानी से लिखै ई विषाई छह सिर दुष जाइ ॥

Subject:—(१) वृ० १ से वृ० १४ तक—बोसा मंत्र, पद्मह का मंत्र, भूत लपने का यंत्र, सर्व दुःख निवारण यंत्र, मोहन यंत्र, कार्य सिद्धि मंत्र, मूस निवारण यंत्र, डोना निवारण यंत्र, गरि विजय मंत्र, सकल सिद्धि यंत्र, बुद्धि होने का मंत्र, मोहन यंत्र, बशीकरण सर्व सिद्धि तथा मोह जाल यंत्र ।

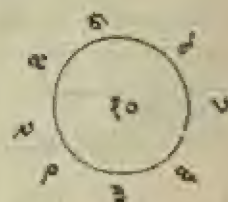
(२) वृ० १५ से वृ० ४० तक—पाचा सोसी, शंका छूटने, प्रेत नाशक, बालक जिलाने, बहु भोग करने, स्त्री पुरुष बशीकरण, बांभ के बालक होने,

हथी बशीकरण, गर्भ रहने का, राजी बशीकरण, कबे व्याधि निवारण, सुगो नाशक, बशीकरण, बालक रोदन, उखाटन, बशीकरण, बुद्धमन का मूढ़ नेत्र वेद होइ । बुद्धमन का उखाटन होइ । अन्तिम मंत्र और उसका फल ।

No. 582(b). Yantravaligrantha. Leaves—8. Deposited with Pandita Gunnā, Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—अथ यंत्रा बली ग्रंथ लिख्यते ॥

यह यंत्र बोलो का इतवार के दिन केसर से भोजपत्र पर लिखे और तबि में मढाय कर पगड़ी में रखे तो बुद्धमन का जोर अपने उपर नहीं चले ॥ (१)



यह यंत्र इतवार के दिन गौरोचन से भोजपत्र पर लिखे और बोलार बोड़े के गले में बांधे तो सात दिन में अच्छा होय ॥ (२)

दः	क्षीः	कः	भः
क्षः	सः	गः	रः
धः	घः	चः	कः

यह यंत्र इतवार के दिन गौरोचन से लिखे भोजपत्र पर और दाहिने हाथ में बांधे स्त्री बस्य होय चार मास के भीतर परन्तु स्त्री को रोग दिखाया जाय ॥ (३)

कः	प्रः	जः	रः
क्षः	टः	कः	जः
सः	घः	ङः	घः

यह यंत्र जिसके लड़का मर जाते हो उसके गले में बांध दे तो लड़का जीते रहे परन्तु इतवार को मर जाते हो तो उसका मंत्र है ॥ (४)

ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः
ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः
ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः
ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः	ह्रीः

End:—चार प्रकार के १५ के यंत्र की विधि । जिस मनुष्य का जैसा मिजाज हो सो उसी प्रकार के यंत्र का लेवन करे और मेधादि १२ राशि चार प्रकार के मिजाज पर बांटी गई है सो अपनी राशि मिलाकर मिजाज पहिचाने ॥

(१) खाकी

८	१	६
३	५	७
४	९	२

वृष

कन्या

मकर

(२) बादी

८	३	४
१	५	९
६	७	२

मिथुन

तुला

कुम्भ

(३) चावी

२	७	६
९	५	१
४	३	८

कर्क

वृश्चिक

मीन

(४) अतशी

४	९	२
३	५	७
८	१	६

घन

मेघ

सिंह

अपूर्व ॥

Subject:—यंत्र बंधन ॥

No. 583. Yntra-Vidhi. Leaves—2. Deposited with
Bābū Rām Manohar Bichpuriya Purānī, Basti, Katni Mur-
wāra, District Jabulpur (C.P.).

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥ नेत्र ग्रहा श्रुतिवार सर, गुन रस ससि बसु जान ।

नौ कोठा के जंत्र की यह विधि भर बुध जान ॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

॥ दोहा ॥ दिग सर नग द्रुग वसु सिव तेरा ग्रह तिथि भुति रस सिगार ।
दिग सर गुन नग बल मनु रवि घर जंज सगहार ॥ १ ॥

१४	१	१२	७
११	८	१३	२
५	१०	३	१६
४	१५	६	८

End:—

जंज २५०

३	४	५४	५३	१४	१३	५२	६०
२	१	५५	५६	१६	१५	५८	५७
३१	३२	४२	४१	१८	१७	३२	४०
३०	२९	४३	४४	१९	२०	३८	३७
५१	५२	६	५	६२	६१	११	१२
५०	४९	७	८	६३	६४	१०	९
४७	४८	२६	२५	३४	३३	२३	२४
४६	४५	२७	२८	३५	३६	२२	२१

Subject:—कुल जंज और उनको विधि ।

No. 684. Yuddha-Dipaka. Leaves—7. Deposited with
Mannulala Postakalaya, Gaya.

Beginning:—ओ मलेशायनमः ॥ अथ युद्धे दीपक प्रद्योतते ॥

दो०—मुरे धिनु युग सेन जिमि, कुरे तार फिर सेर ।

कुरे शक्ति नाशक कुरे, तुरे घरे हो डेर ॥१॥

इते बृद्ध मते सेष युग कालक मते अघोष ।

दहन दहन युग्धा अनुज वातनु तजे न लेष ॥२॥

कद सोषे लपि सिन्धु डिंग मरे धौग कर जानि ।

हरये कोशप सार कर करे दीड छुग मानि ॥३॥

भू सहाय हर करि युगल योग कंभु भू साधु ।

बल्लव बद्धभुत लखि कचिर पर युग रहे अगाधु ॥४॥

पातम चितक जह मे चितक दूह समीप ।

मे अन्धक लपि युद्ध मति मे अन्धक धम लोप ॥५॥

End:—

निगम मांस सारंग रट, स्वांती अट एक युद्ध ।

हो चाहत चिन कारन अब गृह चलि पमा हो सुद ॥ ११५ ॥

कपि ले मंदिर वस इहां नयन पुरदा वार० ।

सच्चा इते वत पितु वचन भरत सनेह सम्हार ॥ ११६ ॥

लूट न बहुत शमा जमा आगेय पाछे पाप ।

कपि इच्छा अति काल हर बहु अपमान जनाय ॥ ११७ ॥

दिज भुज तेज भु पुत्रय मुनि भेज डू राम रजाय ।

शत उत्तर बस दश लक्षे दीपक युद्ध शहाय ।

इति श्री युद्धे अग्नि प्राय दीपक समाप्तः ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

Subject:—सिन्धु तरण से लङ्का के युद्ध तक रामायण का सूक्ष्म वर्णन ।

No. 585. (Unknown.) Leaves—153. Place of Deposit
Jairāmasimha, Village Haripura, Post Office Manadhata,
District Pratāpagadha (Ondh).

Beginning:—ओ रामजो ॥ ओ मलेशायनमः ॥ तप गरमो का इलाज ॥

कमल गटा के गुदा पांच मासे ॥ कबरा मासे ४ मुनक्का मासे ४ धनिया मासे
२ सपेद जोरा मासे २ बस मासे २ कुलफे का बीज मासे २ दालचिनी मासे २
संदल मासे २ सब का साथ सेर पानी में बघटाये जब तब सोर गरम पौधे

॥ पुनः ॥ पीत पापरा लेला भरि मुक्कका लेला भरि दोनों मिलोइ राखै विहनि
छानि के पीये ॥ पुनः ॥ ककरो का बोधा मासे दुइ ॥ पीरा का बिधा मासे
दुइ ॥ कासनो मासे चारि ॥ लौफ मासे तीन ॥ सब को पोसि के दोइ पैसा
भरि पीये ॥ चीनी मिलाइ के पीये ॥

End:—

॥ मूत्रातिसार को इलाज ॥

मुरर के वोकलाइ के बुकनो ५६ चीनी सेर ५१। तीपुर ५- बड़ो इलायची
के दाना ५- स्याह मूसरि ५- ससनंध नागारो ५- घुराव दुइ पैसा भरि चूरन के
दुबो जुन पाइ जल से वा भाइ के दूध के साथ वा घोइसेह—

x	x	x	x	x
x	x	x	x	x

गोहन में कवनौ बघारि पाडु बेगोन्ह (घणैर ?) होयत इहै जंव नगारा पर
लिपिके अतवार मंगर के बजाइ देव



Subject:—पृ० १ से पृ० ५० तक—तापों की चिकित्सा, घटारह प्रकार
के शूल व सन्निपात को औषधियां, बुबार के अन्य भेदों की चिकित्सा, दस्त
तथा पांख आदि को औषधियां, कुपच आदि को औषधियां ।

(२) पृ० ५१ से पृ० १४० तक—शीतला, वायु, आदि की औषधियां,
सुपारो पाग, पुष्टि का माजून, बटुमूत्र, नमई, तथा सूजाक को औषधियां,
मांडा फुलो का इलाज, प्रमेह का इलाज, स्तंभन का इलाज, पीनस तथा मुंह के
फफोलों की औषधियां, शरीर के दर्द को औषधि ।

(३) पृ० १४१ से पृ० २०० तक—कुष्ठ, कान से कम सुनने, पांडु, रीर
संघर्षो, जलन, खुजली, शीतला पेट में बाव, कुत्ता काटने आदि को औष-
धियां । बम्हीवटो के गुण पांख, सिर दर्द, दशमूल आदि को ठरकोब ।

(४) पृ० २०१ से पृ० २८० तक—रांगा मारने की विधि, मर्म रहने, नमई, पुष्टि,
अर्ध प्रकार के तापों की औषधि, शीत वायु, पित वायु, खांसी, बुबार आदि

को औषधियां, लाक्षादि तैल, सुदर्शन चूर्ण, शीघ्र गिरने की औषधि । पेट सबन्धी रोगों का इलाज, सुरमा बनाने की विधि, बशीकरण मंत्र, बवासीर का मंत्र, सुन्नत व ज्वरों की औषधियां,

(५) पृ० २८१ से पृ० ३०६ तक—रक्तविकार संबंधी औषधियां, जुलाब, धाव, शीघ्र, की औषधियां, भोजन बनाना, पन्द्रह हज़ार इजारा अंत्र । कुछ अन्य मंत्र ।

No. 586. (Unknown.) Leaves—134. Deposited with Rāmaprasāda Murān, Village Putavāvisāmadāsa, Post Office Pariyavā, District Pratāpagadhā (Oudh).

Beginnings:—अथ समुद्र फल के गुणों अनुपास से पाद ॥ ताको छेरो के मूत के पुट ७ ॥ गोमूत्र के ७३ ॥ घांवरे के रस के पुट ३ ॥ निर्गुंडी के रस के पुट ३ ॥ घतूरे के रस के १ ॥ पुट मांजी को पुट १ ॥ तब रोज सत्ताइस २७ सिद्धि होइ ॥ ताको अनुपास पाने वने ॥ मूठों से पाद तो घस्यंमनु होइ ॥ छेरो के मूत्र से पंजतु करै तो फुल्यो जाइ बात मिट जाइ ॥ छेरो के मूत से नासु दोजै तो आधा सोसो जाइ औ पाद तो घई जाइ ॥ ४ ॥ छेरो के मूत से पाद तो सूखो जाइ ॥ ५ ॥ वा रतौंद जाइ वा कपाल शूल जाइ । छेरो के मूत से पंजतु करे तो गेदन निकसे ॥ छेरो को क्वाक से पाद तो कहिलो जाइ ॥ घामरे के रस से पाद तो पित्त घस्येयम जाय ॥ वा काननि बहिरौ सुनै और वायु गोला जाइ ॥ गोबू के रस से पाद तो हृद फुटन जाइ ॥

×	×	×	×
×	×	×	×

Ends:—औषधि धातु पुष्ट की ॥ सेमर की क्वालि ॥ २५ ॥ मिथी दोनौ ॥ २५ ॥ ताल मषाने ॥ १२ ॥ सिघोर २५ कोंच के बीज तेज बल २५ उटंगन के बीज २५ चकरकरा २५ बहरै को बकुलो २५ लहसोर २५ गुलरि की क्वालि २५ गुणक २५ जल्लंडो २५ संबा हूनों २५ दुधौ २५ मिर्च १२ पीपरि १२ पांड १ बीठ ३ ॥ दुध ३ वजफरी २५ ॥ ॥ अथ जुलाब ॥ सोठि २५ निसोत २५ सनाह २५ नोन सोघो २५ पानो सोढिकोया बांधे ॥ ग्राम में सेकै टिकिया डुबे २५ इलाज्ज सोज चमता बंद की ॥ कसाद का ॥ छुहारे ५। मिथी ५। पाषाण भेद ५। दान इलायचो गुजरातो के १। १२ ॥ रूप रसु तेरे बडुव ॥ इकठौ ॥ छुदो छुदो पोसै ॥ चाधुसेर माद के दुध से तोरा १ भरिपाइ ॥ पुराक दुध चावर, मिथी डारि पाद ॥ इलाज्ज दूसरो ॥ अमिलो चौयको पाटो १। मोचरस २५ दार हट्यो २५ मैदा लकरी २५ गोषक २५ सुरवारै बी

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २.....तक ।

(२) पृ० ३ से पृ० ५४ तक—समुद्र फल और मूँदी के गुण तथा धनुषान, नाड़ी विचार, ज्वर का लक्षण, कुछ काढ़ों के सुसजे, नाना प्रकार के चूषे, कई प्रकार के तेलों के बनाने की विधि, खाज, दद्रु आदि चर्म रोग विनाशक औषधियाँ, कुछ रस तथा धातु विकार एवं घातु नष्ट संघर्षी औषधियाँ ।

(३) पृ० ५५ से १३५ तक—पुष्टिकारक औषधियाँ, नामर्दा दूर करने तथा ताकत बढ़ाने वाली औषधियाँ, मरहम, पाण, स्वरमेद औषधियाँ, मेतिश्याविन्द आदि नेत्र विकार संघर्षी औषधियाँ, घोटों तथा बैलें का इलाज, बुलबुल आदि दो चार पक्षियों का इलाज ।

(४) पृ० १३६ से पृ० २०० तक,—प्रमेह की औषधियाँ, सिव आदि के शोधने तथा ताँबे आदि के मारने की विधि, कुछ रस, सुस्ती का लेप, बन्धेज का इलाज, गर्भ सम्बन्धी इलाज, कुछ की औषधि, शोथला का इलाज, घातु विकार तथा प्रसूत बाधु आदि की औषधियाँ, कुछ लाभकारी चूषे तथा पुष्टि की औषधियाँ, इन्दी जुलाब,

(५) पृ० २०१ से पृ० २४४ तक—ज्वरदि की व्याधि दूर करने के जंत्र वर्माँ आदि का इलाज, चौदह विद्याओं, बारह आधुषणों सानह शृंगारों के नाम, साँप काटने का मंत्र, संग्रहणनेकात नामक रोगों तथा कुछ अन्य रोगों की औषधियाँ ।

(६) पृ० २४५ से पृ० २६८ तक—श्वास का इलाज, भजवाइन का फेके, घोनस आदि का इलाज, विविध रोगों की औषधियाँ ।

(७) पृ० २६९ से पृ०.....तक जुब ।

I-INDEX OF AUTHORS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I and II.

A							
Ādhāra Mītra	1			Bhaga vānādāsa Nirañjani ..	41		
Agravāla	2			Bhagavanta Bāya Khichi ..	42		
Agravāla	3			Bhagavatādāsa	43		
Agradāsa	4			Bhagavata Dāsa	44		
Āhmadā	5			Bhagavatādāsa	45		
Ājaba Dāsa	6			Bhagavatādāsa or Bhāiyā Bhagavati- dāsa	46		
Ākshara Ananya	7			Bhagavatādāsa Dvija	47		
Ālama Kavi	8			Bhāgīrathīprasad	48		
Ālama	9			Bhānu Mītra	49		
Āmara Sīkha	10			Bhāramalla	50		
Āngada Jī	11			Bhanna	51		
Āmlaka Kavi	12			Bhārṇadāsa	52		
Ānanda	13			Bhāvasīkha	53		
Ānanda Ghana	14			Bhikkhādāsa	54		
Ānanda Rama	15			Bhogī Lāla	55		
Ānanda Simha	16			Bhojī Nātha	56		
Ānanta Kavi	17			Bhādharamalla or Bhātharādāsa Khaḍgerawāla	57		
Ānanta Dāsa	18			Bhūpati (of Etāwāh)	58		
Ānātha Dāsa	19			Bhūpati Gurudatta Sīkha	59		
Ānanya Bālaka	20			Bhūbhaga	60		
Aranya Maṇi	21			Bhīrūmāla	61		
Ātanta Kavi	22			Bhīrūmāla	62		
Auserī Lāla	23			Bhīrūmāla Yajñika	63		
Ayodhyā Prasad	24			Bhīrūmāda	64		
				Bīrabala	65		
B							
Bairīdā	25			Bodhadāsa	66		
Bāthārāsa Jain	26			Bodhamalla Kāyānātha	67		
Bāthārāsa Chāturvedi	27			Brahma Kavi	68		
Bāthārāsa	28			Brahmarāyamāla	69		
Bāthārāsa	29			Brājābhāṇa	70		
Bāthārāsa Dāsa Janhavi	30			Brinda Kavi	71		
Bāthārāsa Prasad Avasthi	31			Brindābana	72		
Bāthārāsa Rama	32			Bulādāsa	73		
Bāthārāsa	33			C			
Bāthārāsa Dvivedī	34			Chāṇḍa Bārdī	74		
Bāthārāsa	35			Chāṇḍana Kavi	75		
Bāthārāsa	36			Chāṇḍa Dāsa	76		
Bāthārāsa	37			Chāturbhujādāsa	77		
Bāthārāsa	38			Chāturādāsa	78		
Bāthārāsa	39			Chetana Chāṇḍa	79		
Bāthārāsa	40			Chhādāsa	80		
Bāthārāsa	41			Chhādāsa	81		
Bāthārāsa	42			Chhādāsa	82		
Bāthārāsa	43			Chhādāsa	83		
Bāthārāsa	44			Chhādāsa	84		
Bāthārāsa	45			Chhādāsa	85		
Bāthārāsa	46			Chhādāsa	86		
Bāthārāsa	47			Chhādāsa	87		
Bāthārāsa	48			Chhādāsa	88		
Bāthārāsa	49			Chhādāsa	89		
Bāthārāsa	50			Chhādāsa	90		
Bāthārāsa	51			Chhādāsa	91		
Bāthārāsa	52			Chhādāsa	92		
Bāthārāsa	53			Chhādāsa	93		
Bāthārāsa	54			Chhādāsa	94		
Bāthārāsa	55			Chhādāsa	95		
Bāthārāsa	56			Chhādāsa	96		
Bāthārāsa	57			Chhādāsa	97		
Bāthārāsa	58			Chhādāsa	98		
Bāthārāsa	59			Chhādāsa	99		
Bāthārāsa	60			Chhādāsa	100		

D

Dādādayāla	81
Dalagati Niya	82
Dalucāma Agravāla	83
Dā Ayadāsa	84
Dantati Rāma	85
Deyānidhi	86
Dayārama	87
Devachandra	88
Devadatta or Deva Kavi	89
Devakinandana	90
Devanātha	91
Deva Sishu	92
Deva Sūmi	93
Devadāsa	94
Devīdāsa	95
Devīdāsa Bandakbādi	96
Devīdāsa Kīyastha	97
Devīdāsa	98
Dhanirāma	99
Dharamadāsa	100
Dharanidhara	101
Dhīra or Mahārāja Dhīrasimha	102
Dhīrajāma	103
Dhīrajasthāna Mahārāja	104
Dhīrdayāla Gīri	105
Dhīrdayāla or Kāshyapīya	106
Dhīrdayāla	107
Dhīrdayāla	108
Durgā Simha	109
Dyanata Nāya	110

F

Fakiradāsa Bābā	111
-----------------------	-----

G

Ganēśa	112
Ganēśa Śankara	113
Gadga	114
Gaṇḍīdāsa	115
Gaṇḍīprasaīda I	116
Gaṇḍīrāma Mītra (of Kapārkhalī)	117
Gaṇḍīrāma	118
Gaṇḍīrāma	119
Gaṇḍīrāma	120
Gaṇḍīrāma	121
Gaṇḍīrāma	122
Gaṇḍīrāma	123

Gīradhārī	124
Gīradhārī or Gīradhārīdāsa	125
Gīradhārī	126
Gīrijendra Prasāda	127
Gīrivarādāsa	128
Gokula Kīyastha	129
Gopālanātha	130
Gopāla	131
Gopāla Bakshi	132
Gopāladāsa Dvīja	133
Gopāladāsa	134
Gopīnātha Pāthaka (of Benares)	135
Govardhanadāsa	136
Govinda	137
Gulabārīya Kīyastha	138
Gulāla—Kīrti Bhāṭṭaraka	139
Gulāma Nābī	140
Gulāma Mītra	141
Gulāma Śrīvastava	142
Gulāma	143
Gurudāsa Śārapa	144
Gurudatta Śukla	145
Gwāla	146

H

Hanumāna	147
Harījimala	148
Hara Kṛishṇadāsa	149
Hariballabha	150
Haribhaktā Simha	151
Haribhāna	152
Haricharanadāsa	153
Haridāsa Sabaya	154
Haridāsa (of Vrindāvana)	155
Haridāsa	156
Haridatta	157
Hariprasāda	158
Harīrāma	159
Harīrāya	160
Harivallāsa	161
Harī Vyās Debajī	162
Harī Dvīja	163
Hemarāja of Viranapura	164
Himavanta	165
Hīrāṇya	166
Hīrāṇya	167
Hīrāṇya	168
Hīrāṇya	169
Hīrāṇya	170

I		
Ishobhārma	171	
Imamoddīna	172	
Iṭirādīna	173	
Iyara Nātha Garga	174	

J		
Jagaḥraṇḍāsa (of Kotwa)	175	
Jagannātha	176	
Jagannītha	177	
Jagataśrayāna Tripathī	178	
Jagata Śiṅha	179	
Jana Gopāla	180	
Janārdana Bhaṭṭa	180	
Jasāraṇa	181	
Jasavanta Śiṅha (of Jodhpur)	182	
Jasavanta Śiṅha Vyāghraṇḍī	184	
Javāhara	183	
Javāharāṇḍī	184	
Jaya Chandra	187	
Jayadajāla	188	
Jaya Gopāla	189	
Jayakṛishṇa	190	
Jhāmādīna	191	
Jhāmārāma	192	
Jitendrabhāshapa	193	
Jōḥarīpa Godī	194	
Jōḥūrāma Mīra	195	
Jugālādīna Kāyastha	196	
Jūvarāja Śiṅha Bīcra	197	

K		
Kaṭṭādīna	198	
Kāśāldhī	199	
Kāṭīna	200	
Kāṭkāprasthī	201	
Kāṭprasthī Śiṅha	202	
Kamāla	203	
Kaṣṭjadrīga	205	
Karana	204	
Kālī Hāja	205	
Kālīkama	206	
Kakavādīna	207	
Khaṅgaṇa	208	
Khamādīna	209	
Khumāna Kavi	210	
Khondā Chandra	211	
Kibora	212	
Kiborādīna Mahanta	213	
Kūprādīna	214	

Koka Paṇḍita	215
Kṛishṇa or Vāṇḍera	216
Kṛishṇa Chāttanya Nijadīna	217
Kṛishṇādīna	218
Kṛishṇādīna	219
Kṛishṇādīna Nimbārka Paṇḍī	220
Kṛishṇādīna	221
Kṛishṇa Kavi	222
Kṛishṇāṇḍāḍī Vyāṇḍera	223
Kṛishṇa Śiṅha	224
Kṛipāṇḍīna	225
Kṛipāṇḍīna	226
Kāṇḍakaraṇa Mīra	227
Kolapālī Mīra	228
Kumārāmagī	229
Kūra Kavi	230
Kutala Śiṅha	231

L	
Lachhīrāma (of Ayodhya)	232
Lachhīrāma (of Hatajura)	233
Lachhīrāma	234
Lachhīrāma Drivedī	235
Lala Bālā	236
Lālachanda Paṇḍe	237
Lālacharāma Alāṇḍā	238
Lālādīna	239
Lālajīta	240
Lālādīna	241
Lālā Kavi	242
Lālā Kavi	243
Lālā Kavi	244
Lālāṇḍī	245
Lālā-Kīlōrādīna	246
Lākharāja	247
Loktāna Bābā	248
Lōṇādīna	249

M	
Madana Gopāla	250
Madhāṇḍāṇḍīna Mithura	251
Madhāṇḍā Bājpyī	252
Mahipālī	253
Madhavādīna	254
Madhava Prasthī	255
Madhava Śiṅha Kachhāṇḍī	256
Madhōṇḍā Agaihotī	257
Madhōṇḍā Kāyastha	258
Mālīka Muhammad Jāyāl	259
Māna	259
Mānārāṇḍīna	260

Māna Simha	261
Māna Simha Dvijadaya	262
Māna Simha Avasthi	263
Manandha-Sigara	264
Maplana	265
Magi Kantha	266
Manirama Mīra	267
Mani Rāma Sukla	268
Mani Rāma (of Kāśā).. ..	269
Maniyara Simha	270
Manoharadāsa (Khandolevala Bani)	271
Manoharadāsa Niranjanī	272
Manoharīma	273
Manodina Śukla	274
Mathurāda Kavi	275
Mattirāma	276
Mejallāla	277
Meṣha-Muni	278
Miharaśūradāsa	279
Mohana	280
Mohanaśāsa	281
Moti Lāla	282
Motirāma Mīra	283
Muhammad or Malika Muhammad Zāyati	284
Mukunda	285
Munnālāla	286
Muralidhara Yāduvandī	287
Muralidhara Mīra	288

N

Nabhidāsa	289
Nāgara	290
Nāgaridāsa	291
Naina (Nayana) Śukla	292
Nisaka Guru	293
Nandadāsa	294
Nandachvara	295
Nandalāla	296
Nāṣyaṣa	297
Narayanadāsa	298
Nārṣyaṣa Śrīmi	299
Narottamadāsa	300
Narāladāsa	301
Nandhara	302
Nawāṣa	303
Nidhana Kāhite	304
Nidhādāsa	305
Nīpaga Nīradāsa	306

P

Padmakara	307
Pahalyānadāsa	308
Paramalla	309
Paramānadāsa	310
Paraharīma	311
Parvatadāsa	312
Pathanadāsa	313
Patitadāsa	314
Phambharadāsa	315
Prāgana	316
Prāgachanda Chanchāsa	317
Prāgnātha	318
Prāgnātha Bhettā	319
Prāgnātha Trivedī	320
Pratāpa	321
Pratapa Simha	322
Priyadāsa	323
Purāsa Pratāpa	324
Purushottama	325

R

Raghunātha.. ..	326
Raghunātha Dāsa	327
Raghunāthadāsa Rāma Saṁcīti	328
Raghunātha Simha	329
Raghunātha Simha Mahārāja	330
Raguvardha Valabha	331
Raguvardhāsa Kiyātha	332
Raguvardhāsa	333
Raghuvārāśaraṣa	334
Raghuvāra Simha	335
Rājārāma	336
Rāma	170
Rāmachandra	337
Rāmachandra Jaina	338
Rāmacharanadāsa (of Ayodhyā)	339
Rāmacharanadāsa (of Dīdarāsa)	340
Rāmadattā Brahman	341
Rāmadāsa	342
Rāmadhara Dhārāsa Bani	343
Rāma Kavi (of Vikrama Nagara).. ..	344
Rāma Kavi	345
Rāmanātha Pradhāna	346
Rāmarātana	347
Rāmārāma	348
Rāmasāhaya	349
Rāmasāhaya Śaṁkīmi	350
Rāma Sakha	351
Rāmasāhaya Simha	352

Raṅgalā	353
Raṅganātha	354
Raṅghāṇi	355
Raṅghīri	356
Raṅghāṇi	357
Raṅghāṇi	358
Raṅghāṇi	359
Raṅghāṇi	360
Raṅghāṇi	361
Raṅghāṇi	362

S

Sabalaśāstra Chaudhā	363
Sadānanda	364
Sadānanda	365
Sahabodhinā	366
Sahajārāma	367
Sahaj—Fahā	368
Sahajārāma	369
Sahajārāma	370
Sahajārāma	371
Sahajārāma	372
Sahajārāma	373
Sahajārāma	374
Sahajārāma	375
Sahajārāma	376
Sahajārāma	377
Sahajārāma	378
Sahajārāma	379
Sahajārāma	380
Sahajārāma	381
Sahajārāma	382
Sahajārāma	383
Sahajārāma	384
Sahajārāma	385
Sahajārāma	386
Sahajārāma	387
Sahajārāma	388
Sahajārāma	389
Sahajārāma	390
Sahajārāma	391
Sahajārāma	392
Sahajārāma	393
Sahajārāma	394
Sahajārāma	395
Sahajārāma	396
Sahajārāma	397
Sahajārāma	398
Sahajārāma	399
Sahajārāma	400

Somanātha (of Mathura)	401
Sribhāṇi or Sribhāṇi	402
Sribhāṇi	403
Sribhāṇi	404
Sribhāṇi	405
Sribhāṇi	406
Sribhāṇi	407
Sribhāṇi	408
Sribhāṇi	409
Sribhāṇi	410
Sribhāṇi	411
Sribhāṇi	412
Sribhāṇi	413
Sribhāṇi	414
Sribhāṇi	415
Sribhāṇi	416
Sribhāṇi	417
Sribhāṇi	418
Sribhāṇi	419
Sribhāṇi	420
Sribhāṇi	421
Sribhāṇi	422
Sribhāṇi	423
Sribhāṇi	424
Sribhāṇi	425

T

Tajanātha	426
Thakura	427
Thakura	428
Thakura	429
Thakura	430
Thakura	431
Thakura	432
Thakura	433
Thakura	434
Thakura	435
Thakura	436
Thakura	437
Thakura	438
Thakura	439
Thakura	440

U

Udayachanda Chanda (of Agra)	441
Udayachanda	442
Udayachanda	443

V

Vajra	444
Vandana or Vandana	445
Vandana	446
Vandana	447
Vandana	448
Vandana	449
Vandana	450

Vikroji	441	Vinda or Brinda Kavi.. ..	445
Vishnudatta	442	Vindhana or Brindhana ..	447
Vishnudatta Mahipatra	443	Vindhana Saragadeva ..	448
Vishnupuri Paramahansa	444	Vysadeva	449
Vishvanatha Sakhya	445	Vysa Mitha	450

II—INDEX OF BOOKS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I, II and III.

A				
Adhāi Dwīga Pāṇa Pātha ..	186	Anakīrtha Māṇjari ..	204(b)	
Adhyātma Prakāśa ..	412(a)	Anakīrtha Nāmamālā ..	304(3)	
	412(b)	Adhyaśaṅga ..	275	
	412(c)	Adhyaśaśa ..	318	
	412(d)	Antarīya ki Kathā ..	277	
	412(e)	Anurāgaśaṅga ..	104(a)	104(b).
Adipurāṇa ..	120(a)	Anurāga Rām ..	209	
Adipurāṇa ki Pālābhāṣā Bhāṣā ..	82(a)	Anurāga Śāgara ..	186(b)	
Adityavāra Kathā ..	3	Anyakīmā ..	104(3)	
Agas Vināśa ..	170(a)	Āraṇ ..	170(c)	
	170(b)	Āraṇ Jagajyāna ..	330	
Ajābhāṣa ki Jābhāṣa ..	6(c)	Āraṇ ..	451	
	6(d)	Arjuna Gītā ..	347(a)	
Ajādhya Vināśa ..	28	Arjuna—Vilāsa ..	230	
Ākāśa Pañchami ki Kathā ..	211(a)	Aśvatthāmā Rāhasya ..	225	
Ākhaṇḍī ..	118(a)	Aśvatthāmā Vedānta ki Bhāṣā ..	432	
Ālāma ke Kavita ..	9(3) 9(c)	Aśvatthāmā (Devā) ..	38(a)	
Ālankāramahodadhī ..	202		39(b)	
Ālankāra Muktaśālī ..	102		39(c)	
Ālankāra Pradīpa ..	50		39(d)	
Ālankāra Ratnākara ..	82(a)		39(e)	
Ālankāra Ratnākara (Bhāṣā- bhāṣaṅga ki Tīkā) ..	62(b)	Aśtāyama (Nabhā Dāsa) ..	252(a)	
Ālankāra Sūti Darpaṇa ..	170(a)	Aśtāyama Prakāśa ..	122	
Ālankāra Śiromuṇi ..	38(c)	Āstuti Mahābhāra ṇi ki ..	173(f)	
Ālankāra (Śāha Imāmuddīn) ..	172	Āvachikīrṇā (Śālihoṭra) ..	90(a)	
Ālankāra (Bājāna Śāha) ..	437	Āwamedha Chapatikā ..	433	
Āmarakosha Bhāṣā (Śiva Prasad) ..	304(a)	Āwavinoda ..	77(b)	
Āmarakosha Bhāṣā (Rājā Śiva Bhāṣa) ..	307(a)	Āwavinodī ..	77(a)	
	307(b)	Ātriyādeva ki Kathā ..	454	
Āmara Vinoda ..	10(a)	Ānandhī Rāggraha ..	153(a)	
	10(b)	Ānandhī Śaṅgraha ..	456(a)	
Āmrīta Śāgara ..	322(a)		456(b)	
Ānanda Raghunāndana Kīrtana ..	445(a)	Ānandhī ..	456	
	445(b)	Ānandhīyā ki Nuakha ..	17	
Ānanda Rāsa ..	387	Ānandhīyā ki Puṣṭaka ..	437(a)	437(b)
Ānanda Śāgara ..	324		437(c)	
Ānanda Vardhina ..	111(a)	Āvadhā Vilāsa ..	229(a)	229(b)
Ānandaprakāśa ..	71(a)		229(c)	
Ānakīrtha ..	204(a)	Āvadhāna Bhāṣaṅga ..	90(a)	
Ānakīrtha Bhāṣā ..	204(a)	Āva Padā ..	458	
	204(b)	Āvadhāna Gītā ..	254	
	204(c)	Āvadhāna Śikāra ..	24(a)	

B			Bhāgavata Bhāṣā (Daśama Skandha) 903(a)
Badhārinoda	200(a)		907(b)
Bāgavīlāsa	200(b)		Bhāgavatagītā ki Palāśadhini Tīkā 431
Bāhuka Prākāśikā or Tulāśīkrīdā—			Bhāgavatagītābhāṣā (Daśama Skan-
Hansamācāhikūṭi ki Tīkā ..	116		dha) 246(a)
Bāhuk Vyāghra Samvāda ..	201		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bāttālī Pāchisi	202		15(b)
Bāttālī Pāchisi	203		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bālahodhanī	116		15(c)
Bālakānda Rāmāyana Para Tīkā	339(c)		15(d)
Bākrasi Vīlāsa (Brahma Vīlāsa)	36(a)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bāndhya Prākāśa	143		15(e)
Bāndi Mochana	361(a), 361(b)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bānī or Sūktī	375(a)		15(f)
Bānī Rāma Cheraṇa-jī ki ..	340(a)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bārāha Khari	442		15(g)
Bārāha Mīsā	439(d)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bārāhamāsā Rādhakṛishṇa ..	206		15(h)
Bārāha Rāsi ko Janma	455		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bārāha Kumāra Charitra ..	106		15(i)
Bāravadhī Vinoda	200(e)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bāravā Nāyikā Bhoda	276(e)		15(j)
Bāravā Rāmāyana	434(a)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
	432(b)		15(k)
	431(c)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bāsanta Rājyā utiṣṭha	304		15(l)
Bhāgavāna ko dīśad Avatāra ..	403		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Aṣṭama Skandha) ..	212(b)		15(m)
Bhāgavata (Chaturtha Skandha)	212(d)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Daśama Skandha) ..	50		15(n)
Bhāgavata (Daśama Skandha Bhāṣā)			Bhāgavatagītā Bhāṣā
	124(a)		15(o)
Bhāgavata (Daśama Skandha) ..	212(j)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Daśama Skandha) ..	305		15(p)
Bhāgavata (Daśama Skandha) ..	363(c)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
	363(d)		15(q)
	363(e)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
	363(f)		15(r)
Bhāgavata (Dvītiya Skandha) ..	212(b)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Dvādaśa Skandha) ..	212(i)		15(s)
Bhāgavata (Ekaśata Skandha) ..	76		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Ekaśata Skandha) ..	212(k)		15(t)
Bhāgavata (Navama Skandha) ..	212(f)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Pañcama Skandha) ..	212(e)		15(u)
Bhāgavata (Prathamā Skandha) ..	212(a)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Saptama Skandha) ..	212(g)		15(v)
Bhāgavata (Shashtha Skandha) ..	212(f)		Bhāgavatagītā Bhāṣā
Bhāgavata (Tritiya Skandha) ..	212(c)		15(w)
Bhāgavata Bhāṣā	363(g)		Bhāgavatagītā Bhāṣā

		C	
Bhāṣāṭīkā	..	397(e)	31
Bhāṣā Vārtā Manjari	..	397(d)	110
Bhāṣa Pañcālika	..	440(a)	148
Bhāṣa Vilāsa	..	397(f)	437
		397(j)	320(a)
		397(k)	121(a)
Bhāṣā Charitra Bhāṣā	..	142	403
Bhāṣaragita	..	395	153(b)
Bhāṣa Priya	..	403	162(c)
Bhāṣa Prāsa	..	393(a)	163(b)
		393(b)	163(c)
		393(c)	130
Phramaragita (Pragana Kavi)	..	316(a)	967
		316(b)	55(a)
		316(c)	55(b)
		316(d)	55(c)
		316(e)	80(a)
Bhramaragita (Sardasa)	..	416(a)	413(f)
		416(b)	432(a)
Bhūgola	..	465(a)	412(e)
		465(b)	8(a)
		465(c)	432(y)
Bhūpati Satsai	..	60(a)	365
		60(b)	335(a)
Bhūṣaṇa Karmudi	..	334(a)	103
Bhūṣaṇa Māla	..	41	113
Bhūṣaṇa Satsai (Bhūṣaṇa Lāla)	..	80(a)	203
		82(b)	469
		82(c)	
		82(d)	
		82(e)	
		82(f)	
		82(g)	
Bhūṣaṇa Satsai (Kṛishna Kavi)	..	323(a)	310(a)
Bhūṣaṇa Satsai (Sobhakarana)	..	403	31
Bhūṣaṇa Satsai ki Tika (Sūratī Māla)	..	413(a)	427
Bhūṣaṇa Satsai ki Tika	..	400	98(a)
Bhūṣaṇa Satsai..	..	111(b)	34(a)
Bhūṣaṇa Satsai	..	330(p)	127
Bhūṣaṇa Satsai	..	181	127
Bhūṣaṇa Satsai	..	44	310(a)
Bhūṣaṇa Satsai	..	403	310(b)
Bhūṣaṇa Vilāsa	..	39(a)	310(c)
Bhūṣaṇa Vilāsa	..	71(a)	310(d)
Bhūṣaṇa Vilāsa	..	70(a)	310(e)
		70(b)	310(f)
Bhūṣaṇa Vilāsa	..	214(b)	310(g)
Bhūṣaṇa Vilāsa	..	170(a)	310(h)
		170(b)	310(i)
		170(c)	310(j)
		170(d)	310(k)
		170(e)	310(l)
		170(f)	310(m)
		170(g)	310(n)
		170(h)	310(o)
		170(i)	310(p)
		170(j)	310(q)
		170(k)	310(r)
		170(l)	310(s)
		170(m)	310(t)
		170(n)	310(u)
		170(o)	310(v)
		170(p)	310(w)
		170(q)	310(x)
		170(r)	310(y)
		170(s)	310(z)
		170(t)	310(a)
		170(u)	310(b)
		170(v)	310(c)
		170(w)	310(d)
		170(x)	310(e)
		170(y)	310(f)
		170(z)	310(g)
		170(a)	310(h)
		170(b)	310(i)
		170(c)	310(j)
		170(d)	310(k)
		170(e)	310(l)
		170(f)	310(m)
		170(g)	310(n)
		170(h)	310(o)
		170(i)	310(p)
		170(j)	310(q)
		170(k)	310(r)
		170(l)	310(s)
		170(m)	310(t)
		170(n)	310(u)
		170(o)	310(v)
		170(p)	310(w)
		170(q)	310(x)
		170(r)	310(y)
		170(s)	310(z)
		170(t)	310(a)
		170(u)	310(b)
		170(v)	310(c)
		170(w)	310(d)
		170(x)	310(e)
		170(y)	310(f)
		170(z)	310(g)

Dhanyakumara Charitra	311(b)	Gandā Kathā	282(b)
Dharama Parikshā	371	Gandā Māhātmya Vratā	332(d)
Dharamarāja Gītā	338(c)	Gandā Purāṇa Bhāṣā	338(c)
Dharama Samvāda	321(b)	Gandā Vratā Kathā	477
Dharama Samvāda	473(a)	Gaṅgābharaṇa	343
.. ..	473(b) 473(c)	Garbha Gītā	478(a)
.. ..	473(d) 473(e)	478(b)
Dhruva ki Kathā	185(b)	478(c)
Dhyanā Mañjarī (Agradhāra)	4	Gargasaṅghita	198
Dhyanā Mañjarī (Balakrishṇa)	32	Garudabāhā	199(a)
Dhyanā Mañjarī (Vijayānanda- Saraṇa -dava)	448	Garuda Purāṇa	479
Dilligāna Chikitsā	389	Garuda Purāṇa Bhāṣā	480
Dinadayalā Gītā ki Kāṇḍaliyā	101(a)	Garuda Purāṇa Sādhā	481
Dohā Kavita Ādi	338(b)	Ghṛṇā ki Ilāja	452
Dohā Sāra	478	Gītā (Bhagavadgītā)	150(a)
Dohāvalī	108(a)	Gītā Gadyānuvāda	483
Dohāvalī (Tulā-dāsa)	432(A)	Gītā Māhātmya	42(b)
.. ..	432(b) 432(j)	Gītā Māhātmya Padmapurāṇa	42(a)
Dohāvalī (Tulā-dāsa)	432(b) 3	42(c)
Dohāvalī (Rādhā)	76(a)	Gītā Nāma Ratna	221
Draṣṭānta; Sāra	474	Gītāvalī Rāmāyaṇa	42(f)(3)
Dyāntāntā Bodhikā	319(b)	432(3)
.. ..	339(c)	432(m)
Dyāntānta Tarānginī	104(f)	432(n)
.. ..	104(g)	Gobardhanadāsa ki Pāṭal	135
Droṇa Parā	333(A)	Gokulachanda Prabhāva or Udhā Charitra	437(a)
.. ..	369(a)	Gomatacāra ki Samakā Jāṇa	420(a)
Durgā-Sāta	443	Chandrikā Nāma Tīkā	146(c)
Dūshana Bhāṣa	526(a)	Gopī Sāgar	226
Dvādasa Rāsi Viśāra	475	Gosakha Ganda Gosāthī	381(b)
Dvādasa Jāda	108(d)	Govinda Chandrikā	171
E		Grahāṇa ki Pothī	484
Ekādāśī Māhāphala	476	Grahāṇa ki Pustaka	493
Ekādāśī Māhātmya (Hidhant)	107	Gutikā Chandrodāya	141(a)
Ekādāśī Māhātmya (Sadarāṇa)	108	Guna Sāgar	345
Ekādāśī Māhātmya (Sāraja Dāsa)	417(b)	Guru Mahimā	176(a)
Ekādāśī Vratā Kathā	251	176(b)
Ekotārā Samirana	176(c)	176(c)
F		Guru Paramparā	338(b)
Falaka Prākāśa	300(a)	H	
.. ..	300(b)	Hanumāna Charitra (Chāmpā)	414
Falaka An Prākāśa	412(m), 412(n), 412(o)	Hanumāna Ji ko Kavita	43
G		Hanumāna Nāthābhāṣa	310
Gadī Parva	303(j), 303(k)	Hanumāna Nāṭaka	169
Gadā Viśāra	303(k)	Hanumāna Pāñja (Sundara Kāṇḍa)	244
Gadā Chāṇḍī ki Kathā	282(a)	Hanumāna Panchaka	439(c)
..	Hanumāna Stuti (Hanumāna Vākya)	432(c)

Hanumanā Tīkṣā	431	Janakī Nāma Charitā Nāṭaka ..	159(a)
Hanumanā Vākya	432(g)	Janakī Vijaya ..	421(a)
		432(o)		421(b)
		432(r)	Janmasūkti ..	11
		432(u)	Jantra Mantra ..	404
Haricharitra (Chaturahatadās) ..	76(8)		Japāvallī ..	485
Haricharitra (Lālecharita) ..	105		Japañ ..	113(a)
Haridāsa Ji ke Padana ki Tika ..	515(a)		Jātivarṇana (Pravāḥ) ..	80(a)
Haridāsa Ji ki Bānī ..	153		Jātivilāsa ..	80(f)
Harikrishṇasāra ki Bānī ..	119			80(m)
Harināma Samirani ..	523(a)		Jagurī Rādhi Kṛishṇa ..	429(a)
Harirādha Vilāsa ..	230		Jyeshthachārā Bhāshā ..	54
Harivaṅśa Purāna Bhāshā Vacha-			Jānanabodha ..	7(s)
nika	55(b)	Jānanachandrodaya (Dohā Viśay-	
Hartāla Sodhana	436	pada) ..	267
Hastarekhā Vichāra	487	Jānanalipikā Bhāshā ..	419(c)
Hisāba	138	Jāna Patiri Jogamata ..	298
Hitopadeśa	297(d)	Jāna Mahodadhī ..	181
Hitopanala	433	Jāna Madhūrī ..	278(e)
Hitopadeśa Bhāshā	297(a)	Jāna Prabhā ..	412(ph), 419(f)
		297(c)	Jāna Sambodha ..	1281(f)
Hitopadeśa (Rājasthī)	297(b)	Jāna Samudra ..	415(a), 419(b)
Hori	429		419(c)
Hridaya Prakāśa	420	Jāna Sarovara ..	801(a)
Hridaya Vinoda	146(s)	Jāna Swaroḍaya ..	299(h)
Kulān ka Akhaṭka	170(b)	Jāna Tilaka ..	103(g)
	I		Jāna Vachana Chārṇikā ..	273(h)
Indrajāla	491	Jānavivēkamoha Samvāda ..	339(e)
Indrajāla (Ānanda)	17(p)	Jānasoyoga Tatvaprāsa ..	114(s)
Indrajāla (Manuvārali)	422	Jānacaryā ..	127(n)
Indrajāla (Bajārām)	399	Jogalālā Vichāra ..	406
Indrajāla Vidya	493	Jogalarāma Madhusū ..	398
Ikāchagmanā	290	Jyotisha ..	497
	J		Jyotisha Chakra ..	449
Jagadashetana	101(a)		K
		101(b)	Kabira Bijak ..	108(i), 108(j)
Jagata Mohana	307(b)	Kabira Devadāta Ganth ..	126(k)
Jagata Prabhā	177(c)	Kabira ki Kathā ..	18(s)
Jagata Vimochana	316(e)	Kakharā ..	308
Jagata Vinoda	307(e)	Kakharā ..	493
		307(f)	Kakharā (Nyāya Nirūpaṇa) ..	40
		307(h)	Kālā Chakra ..	499
Jaimini Śāramedha (Kūra bavi)	230	Kālā Jāna ..	340(b)
Jaimini Śāramedha (Purnahottama)	326(a)		340(c)
Jaimini Paripa	378	Kālī Kālā Varṇana ..	500
Jaimini Pūras	380	Kālī Avalāra ..	323
Jaina Siloka	55	Kapota Lila ..	331
			Karpibharaga ..	197
			Karṇad Parva ..	322(m)
				322(n)

[illegible]

M				
Māhāvāṇsala Kāmakāṇḍalī ..	8	Mahurta Manjarī ..	321(d)	
Mādhvānanda ki Kuṇḍalī ..	338	Mahāmāla ..	31(a)	
Mādhuṛī Prakāśa ..	246	Monikwara Kalpataru ..	333	
Mahābhārata ..	303(g)	Mosabika Prāśna ..	519	
Mahābhārata Atwamadhya Parva		N		
(Jaimini Purāṇa) ..	573	Nagaridāsa ji ki Bānī ..	391	
Mahābhārata Bhāṣā ..	863(e)	Nāḥī Prakāśa ..	520	
Mahābhāra Kāvya ..	314(f)	Nahachhura ..	108(d)	
Mahābhāra ki Senti ..	108(e)	Nalchadha ..	111(b)	
Mahādeva Gorakha Gorakhi ..	331(c)	Nakha Śikha (Gullima Nabī) ..	140(a)	
Mahādeva Vīrāha ..	310	Nakha Śikha (Gwāla) ..	140(b)	
Mahākāraṇa ..	82	Nakha Śikha (Hannumāna) ..	147	
Mahapadma Purāṇa ..	81(e)	Nakha Śikha (Jagata Singha) ..	179(d)	
Mahāvāṇī Ashṭa Kīla Sawāṇkha	149(a)	Nakha Śikha (Kālā Nidhi) ..	192	
Mahāvāṇī Siddhānta Sukha ..	1 2(f)	Nakha Śikha (Kālīkā Prāsāda) ..	201	
Mahātma Bhāṣā ..	63	Nakha Śikha (Muralī Dhara) ..	290(a)	
Mahārta Vichāra ..	511	Nakha Śikha (Santabakha) ..	274	
Mānasa Manjarī ..	294(e)	Nakha Śikha Rāṭhī jō ko ..	419(b)	
Mānasa dipikā ..	327(a)	Nakha Śikha Varma ..	28	
	327(b)	Nakshatra Prakāśa ..	521	
Mānasaambodha ..	331	Nakshatra Rāṭhī Gharāṇa Kuṇḍalī		
Mānasa Śānti-wāli ..	438	Phalāphala ..	314(e)	
Mānasa-vikāta-Karapa Guṇī Kāsāra	74(f)	Namadevaki Kathā ..	18(b)	
	74(g)	Nāma Mālā ..	394(f)	
Mangala Rāmāyana (Jūnaki Man-			394(g)	
gala) ..	479(e)		394(h)	
Manihārīna Bhasa ..	512		394(i)	
Manohara Kāṇāni ..	513	Namerāsa Lakṣaṇa ..	522	
Mantra ..	514	Nānī Artha Nava Saṅgrahāvalī ..	2 74	
Mantra ki Pustaka ..	510(a)	Nanda ji ki Vāṇḍavālī (Kāraṇādāsa) ..	214(a)	
	517(b)	Nanda ji ki Vāṇḍavālī (Sadānanda) ..	365	
Mantra Prayoga ..	315	Narandra Bhāṇḍāra ..	152	
Mantra Saṅgraha ..	26	Nāstaka Garuḍa Purāṇa ..	48(a)	
Mantra Saṅgraha ..	516(a)		48(b).	
	516(b)	Nāstakatopākhyāna ..	48(c)	
Manushya Vichāra ..	498(i)	Nāṭaka Samaya Sāra ..	38(b)	
Mārḍana Rasāṇava ..	412(e)	Navarasa Tarāṅga ..	49	
Matirāma Sāṭhālī ..	376(d)	Nāyabāṇḍāra Sikkhānāṭha Nakha-		
Meḡha Prakāśa Jyotiṣha ..	273	śikha ..	179(d)	
Mithyāśra Kṣaṇḍāna Nāṭaka ..	25	Nāyikābhāṇḍa ..	122	
Mohamarda Rājā ki Kathā ..	177	Nomināṭha Purāṇa ..	108(b)	
Mohaulī-dipikā ..	197(b)	Nirguṇa Prakāśa ..	35	
Mohavivēka Samvāda ..	130(a)	Nivāṇāna Purāṇa ..	331(d)	
Moksha Mārga Prakāśa ..	423(f)	Nirvāṇa Kāṇḍa ..	47	
Moshibānā ki Jhagapī ..	518	Nīlābhājana Tyāga Vrāta Kathā ..	51(a)	
Mohurta Chaitānāni Bhāṣā		Nityāṇḍa ..	163	
(Mahurta Manjarī) ..	371(b).	Nityavibārī Jugalā Dhyāna ..	20	
	371(c)	Nitya Rāghava Mūṇa ..	331	
		Nyāya Nirṇaya (Kāṇḍāra) ..	45	

O

Onāmasī Bīrabhakṣaṇī 523

P

Paśchādī 213

Padamibharaga 307(e)

Padmīnata 231(e)

Padmīnata 524

Padmīnati Kathā 234(f)

Padarīkha 227(f)

Padāwālī 339(f)

Padmanabhi Charitra 139

Pakṣī Vilāsa (Gaṇī Rāma) 122

Pakṣīvilāsa (Gurudatta) 145(a)

14 (b),

Pañcha Kalpāśaka 447

Pañchāṅga Darapaga 525

Pañcha Paramaṇṇī Bhāṣā Pāṇi .. 83

Pañcha Yajña Vidhi 526

Pāṇḍava Yāskandha Chandrikā .. 423

Parakṣabodha 59

Parama Grantha 170(e)

Paramānanda Prabodha 15(e)

Paratūṅga Samvāda 306

Phala Nāma 527

Phoṭakara Saṅgraha 113

Pīṅgala Bhāṣā (Vṛtti Vichāra) .. 412(g)

412(i)

Pīṅgala Chhanda Vichāra (Chintā-

maṇi) 80(e)

Pīṅgala Chhanda Vichāra (Sukh-

deva) 413(f)

Pīṅgala Chhandaśloka 201

Pīṅgala Chhotamāṇi 80(d)

Pīṅgala Himmata Shikha 412(h)

412(k)

Pīṅgala Nāmāṅga 353(e)

Pīṅgala Pīṇḍha 388(b)

Pīṅgala Rāmāyaga 192

Pīṅgarāgāśaśi Nī Kī Bāṇī 315(b)

Pīṅga Pravaṇa 526

Poṭhi Prakāśa 529

Poṭhi Ramala Beguna 530

Poṭhi Sarvagaya 531

Pradyumna Charitra 2

Prabhāṣa Charitra (Devachinḥa) .. 54

Prabhāṣa Charitra (Durga Sūtra) .. 109

Prabhāṣa Charitra (Jagadgopala) .. 180(d)

Prabhāṣa Charitra (Lokāśa) 248(d)

Prabhāṣa Charitra (Sahajārām) .. 207(b)

267(e)

Prājña Vilāsa 75(e)

Prāthama 239(a)

Pratna Chaura 521

Pratnaphala 530

Prasannaśhaktārāja 531

Pratāpa Vinodā 31(b)

31(c)

Pranabodha 535

Prana Prabodha 533

Prana Chandrikā 62(e)

62(f)

Prana Pañchāśika 197(a)

Prana Ratna 259

Prana Ratnākara 56(b)

Prithirāja Rāso (Keśava Samaya) .. 72(a)

Prithirāja Rāso (Mahobā Samaya) .. 72(a)

Prithirāja Rāso (Paramā Samaya) .. 72(c)

Prithirāja Rāso (Iṭhāna Khanda) .. 72(d)

Prabodha Chandrodaya Nāṭaka 69

Pūjārāga Kathā 338

Pūṇa Vīdhāna 537(a)

537(b)

E

Eṭhākrishna Vilāsa 220

Eṭhānāma Mādhari 536

Eṭhāwami 539

Eṭhikā Sataka 163

Eṭhā Kalpadama Nityakirtana

Saṅgraha 225

Eṭhā Ratnāvalī 24(e)

Raghunātha Sataka 236

Raghunātha Sūtra 24(b)

Raghurāja Chandraśekhara 227(e)

Raghurāja Sūtra Nī Padāvalī 330(b)

Rahāśa 269

Rahasya Māṇḍala 124(b)

Rāja Nīti Kavita 346(a)

Rāja Rīpī Nī Katha 13(c)

Rājayoga 7 (b)

7 (c)

Rajula Paṭhā 540

Rāma Chandra Chandrikā 179(f)

Rāma Chandra Charitra 307(f)

Rāma Chandra Hanumāna

Nāmāvalī 30(1)

Rāma Chandra Nī Bārahmaṇḍa 70

Rāma Chandra Nī Bārahmaṇḍa 541

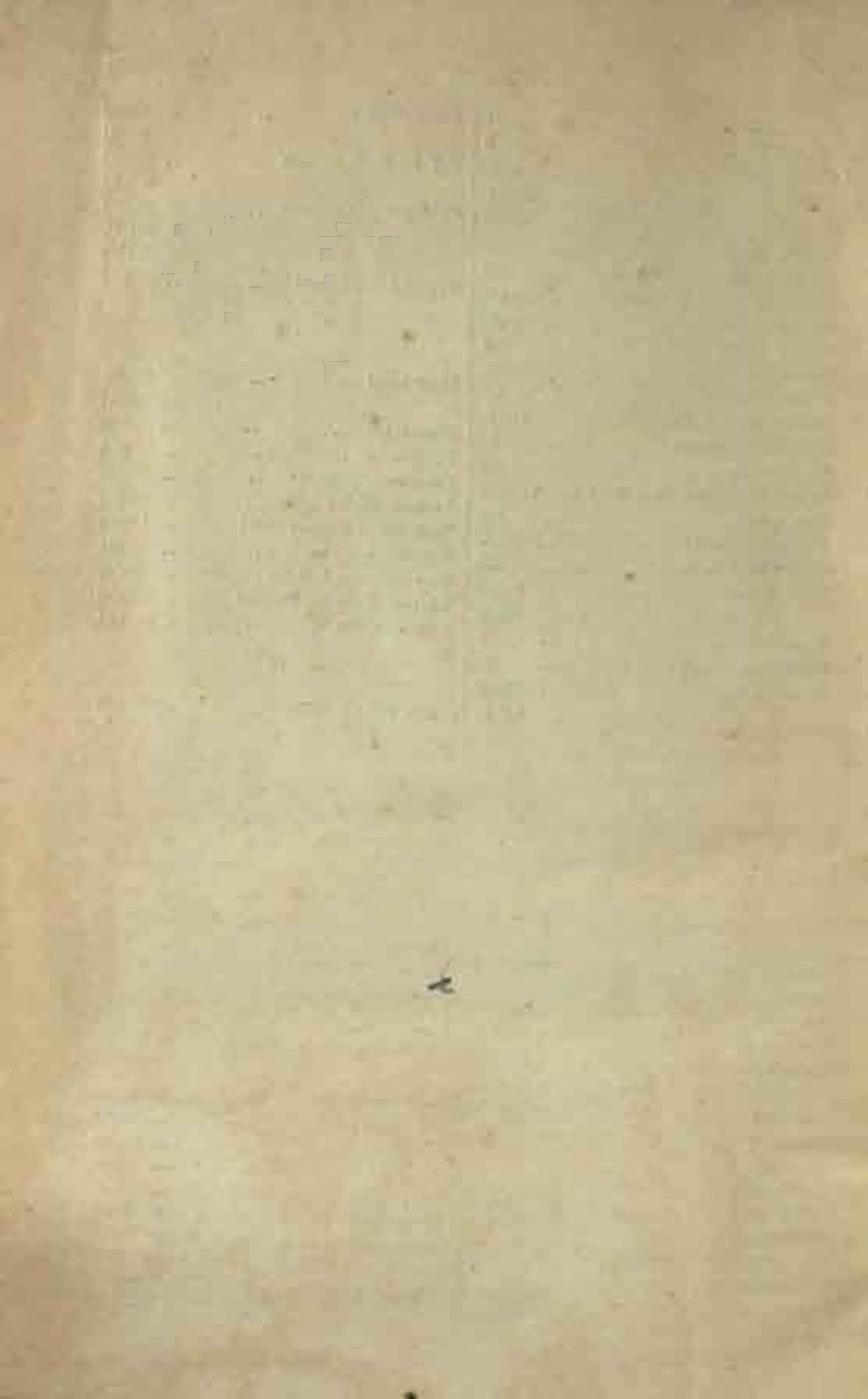
Rāma Chandrikā	207(d)	Rāma Vinoda Bhāṣā	337(a)
	227(e)	Rāmāyana	370
	207(f)	Rāmāyana Ayodhyā Kāṇḍa para Tika 389(f)	
	207(g)	Rāmāyana Bālakāṇḍa	27
	207(h)	Rāmāyana Bālakāṇḍa	437(g2)
Rāma Chandrikā ki Chandrikā ..	179(g)	Rāmāyana Bālakāṇḍa	439(g2)
Rāma Charitra (Chaturbhojādāsa) 75(c)		Rāmāyana (Uttara Sundara and	
Rāma Charitra (Nabhādāsa) ..	220(c)	Kishkindhā Kāṇḍa)	437(g2)
Rāma Charitra	422(b)	Rāmāyana Uttara Kāṇḍa ..	439(g2),
Rāma Charita Mānasa ki Tikā			439(g2)
(From Itanaya Kāṇḍa to Uttara-			
Kāṇḍa)	123	Rāmāyana Mahātma	134(b)
Rāma Charita Vrita Prakāśa ..	227(d)	Rāmāyana Nāṭaka	317
Rāmāgītā	133(a)	Rāmāyana Śuka Sāmudā ..	549
Rāmāgītā ki Tikā	542	Rāga Bhūṣaṇa	174
Rāmāgītā Mālā	237(a)	Raga Brihatī	393(a)
Rāmāgītāwālī	432(e)	Rāga Chandrodāya	433(a),
	432(g)		433(b)
Rāmāinī	105(a)	Ragadīpa	50(c)
Rāmājānma	417(c)	Rāga Kallālā	204
Rāmājyā	432(d)	Rāga Kāmudī	217
	432(f)	Raga Maṇjari	150(b)
Rāma Kālavā (Paravata Dāsa) ..	314(a)	Raga Mṛgaṅga	176(b)
	312(b)	Raga Nīrūpa	550
Rāma Kālavā (Rāma Nāṭha) ..	540(c)	Rāgīyāśa Nidhi	392(a),
	540(d)		392(b)
	540(e)	Rāga Prabodha	140(b),
Rāmala	543		140(c)
Rāmala Prastava	544	Rāga Prema Paṭhā	393(b)
Rāmalaṣaṅga	545	Rāgarahasya	228(a),
Rāmala Sakunavahā	547		228(b), 228(c)
Rāmala Sāra	115	Rasarāja	276(f),
Rāmala Sāra Phalaṇḍī	548		276(g), 276(h), 276(i)
Rāmala Sāra Prastāvālī	545(a)	Rasaratnā	303(b)
	545(b)	Rasaratna	50(d)
Rāma Muktiwālī	432(e2)	Rasaratnāgāra	303
	432(e3)	Rasa Ratnākara (Bhaṇḍa) ..	32(a),
Rāmāpurāṇa (Champābhaṇḍa) ..	211(c)		32(b)
Rāmāśāyana Pīṇḍa	49	Rasaratnākara (Devā)	32(c)
Rāmāratna Gītā	347(b)	Rasa Sadgraha	258(a)
Rāma Saṁdāwālī	191(b)		258(d)
Rāma Śalīhā	432(d)	Rasatara	327(a)
	432(e2)	Rasasārimā	32(f),
	432(g2)		32(g)
Rāmāśhīta	263(b)	Rasavālī	112
Rāmāśvamedha (Haridāsa Sabhāṇḍa) 154		Rasavilāsa (Beni Kavi) ..	35(a)
Rāmāśvamedha (Madhucāṇḍaṇḍa) 251(a)		Rasavilāsa (Devā)	32(u)
	251(b)	Rasavinoda	2
Rāma Svargārōhaṇa	240	Rasa Vīṇḍa	40
Rāmavinoda	337(b)	Rasikadāsa Ji ke gada ..	337(b)
		Rasika Mohana	326(e),
			326(f)

Hasika Priyā..	..	207(f)	Sakti (Tobāwall)	..	108(a)
Hasika Priyā Tilaka	179(b),	Sakti Jñānakānda	200(a)
		179(f),	Sakti Chintāmani	30(c)
		179(f)	Sakuna Kusaguna Prākāśa	..	656
Hasika Rasāla sa Saṅgraha	..	229	Śakuntalā Nāṭaka	108
Ratna Jñāna..	..	301(b)	Śālihotra	89(b)
Ratna Mañjarī Hoka	179(f)	Śālihotra	228
Ratna Mubūritā	153	Śālihotra	258
Ravi Kathā	581	Śālihotra	304(c)
Ravi Vrata Kathā	420			304(b)
Rāsvinoda	144	Śālihotra	313
Rohinivrata ki Kathā	164	Śālihotra	342(g)
Rukmāṅga ki Kathā	Ekādāśī		Śālihotra	490
Mahātmya	417(a)	Śālihotra Prākāśikā	401(a)
Rukmiṇī Parinaya	320(a)	Śālyā Parva	269(d)
Rukmiṇī Virāha and	Śodāśī				268(r)
Charitra	415(e)	Samañtasāra Vaohanāvali	..	564
Rūpadīpa	190(e),	Samarasāra	557
		190(b)	Samarasāra Bhāṣā	428
			Samaya Prabandha (Biharinadāsa)	..	64
			Samaya Prabandha (Pitāmbaradāsa)	..	315(c)
Śabda	74(A),	Samayāsāra Bhāṣā Rachanikā	..	187(A)
		74(f)	Śambhu Paśchī	..	49
Śabdasaṅgāra (Jagajīvanadāsa)	..	175(g),	Rāmudrika	553
		175(A)	Rāmudrika	423
Śabda Sāgara	415(d)	Saṃyukta Kāmudī Bhāṣā	..	191
Śabda Saṅgāra	89(e)	Saṅgita Darpaṇa	150(e)
		89(g)			150(f)
Śabbhāṣitā Jyotiṣa	342(e)	Saṅgraha	114
Śabbhāṣitā Rāmānand	342(d)	Saṅgraha	559
Śabbhāṣitā Rāmudrika	342(e)	Saṅgraha	186(e)
Śabbhāṣitā Rāsvaṇī	342(b)	Saṅgraha of Ātma and Śakha't		
Śabbhāṣitā Vaidyaka	347(f)	Kavita	9(d)
Śabbhā Parva	369(f)	Santānāsa ki Bānī	375(b)
		369(g)	Śanta Rasa Vedānta	506
Saguna Mālā	434	Santa Sumitranī (Nal)	..	299(g)
		(42)	Śānti Purāṇa	384
Saguna Navan Dīpā ko	512	Saptadeva Stuti	117
Saguna Parikha	519	Saptaka	432(UT)
Sagunanti	518	Sapta Vyāsana	558
Sagunavali	519	Sata Gītā	360(a)
Saguna Vilāsa	435			550(b)
Sahaja Rāmechandrikā (Kavīpriyā					550(c)
ki Tīkā)	344	Sāraṅgadharma	561
Sahitya Sudhānandī	179(a)	Sāraṅgadharma Bhāṣā Madhyama		
		179(e)	Kāroda	155(f)
Sahityasudhānī pāra	24(d)	Saracandāsa Ji ki Bānī	375
Sakhi	375(a)	Sāraṅggraha	559
Sakhi	432(f)	Sarīrabhogaṇa Gītā	314(f)
Sakhi Dana Pataṅka ki	..	434			

Basurāṭi Paṭhāṭi	50(3)	Śrīgīrā Lalitā	323
Balāśama	223(f)	Śrīgīrā Nīrṇaya	323(3), 323(7)
Balapañcha Chaupāī	432(v2)	Śrīgīrā Paṭhāṭi Tilaka Sameta	122
Balasambatsaraghalā	363	Śrīgīrā Saṅgrahā	375
Baṭi Vilāsa	411	Śrīgīrā Śīromāṇī	124(a) 124(b) 124(c) 124(d)
Baṭya Prabhā	273(a)	Śrīgīrā Sudhikara	21(d)
Bhāṇḍārya Lakṣaṇī	270	Śrīpāṭa Cāritra	330
Bavāiyā	353	Srī Rādhā-Kṛishṇa ki Bārāha		
Bawara Mantra	381	Māhā	123
Bawaka Pānī	420	Srī Rāma Akṣaya Kavita	334
Bawākhī ki Pānī	369(a)	Srī Swāmīnī Jī Thābura Jī ke Bawāiyā		345
Bhāṭa Chaturā Bhagīnī Rāhasya	314(f)	Śrīrā Pañchamī Kāthā	68
Bhāṭakarmapadaka Ratnamālā	237	Śrīrā bodha Bhāṭā	327(h)
Bhāṭa Rāhasya	315(c) 315(f)	Śrīrā Bhawānī ki	411
Bhāṭkī Parāṇa	381(c)	Śrīrā Himawantī Jī ki	105
Bhāṭhās	320	Sabhaśhita Dohā	162
Bhāṭhānta	365	Sadāmā Cāritra (Gīradhārī)	124(c)
Bhāṭhānta Jaga	303	Sadāmā Cāritra (Narottamastāsa)		200(a) 200(b)
Śāghabodha	337	Sadāmā ki Bārāhakharī	407
Śāghabodha Varāṇa	73(b)	Sadhaṇvā Kāthā	223(b) 223(c)
Śāghara Māhātmya	264	Sajana Vlonde	14
Śāgharāṭī-dhā	308	Sākhābhāṭarī	369
Śāṭa Kāthā	31(3)	Sakhamani	223(c) 223(d)
Śāṭāra Sukha-Sāgara Tarāṅga	39(w)	Sakhasāgara Kāthā	301(e)
Śāṭāraṇa Bāṭī (Vikrama Bāṭī)	302	Sakhasāgara Tarāṅga	30(p)
Śāṭa Cāritra	332	Sāmasāgara	34
Śāṭāraṇa Bīnaya Dohāvalī	173(c) 173(d)	Samirasa Pāthī	100(c)
Śāṭāpurāṇa (Pārvārdha)	252(a)	Samirasa Sāthitā	125(a)
Śāṭāpurāṇa (Uttārārdha)	242(b)	Sāndarādāsa Jī ke Aṣṭaka	416(a)
Śāṭāraja Bhāṭhāṇa	61(a) 61(b)	Sāndarādāsa Kṛitā Bawāiyā		413(c) 413(h)
Śāṭa Segūṇa	31	Sāndara Kāṇḍa	337(d)
Śāṭānī	167	Sāndara Śākhā	21(a)
Śāṭa Simha Seroja	348	Sāndara Vilāsa	413(f)
Śāṭa Vinaya Paṭhāṭi	22	Sāndara Cāritra	7(a)
Sadhaka Patala	337	Sāradāsa ke Vistara Pada	413(d)
Sphoṭa Kāvya	421(c)	Sāradāsa Kṛitā Kāthā	416(f)
Srāvakśhāṇa	71	Sārāja Purāṇa	423(v2) 423(v3) 423(v4)
Srī Ananda Prabhā	10			
Srī Jñānāvīra Bīnaya	173(e)			
Srī Jagadī Sātaka	40(b)			
Srī Jagadīśata ki Bīnī	400(c)			
Śrīrādhābhāṭīkāṇṭika Kāṇḍī	333(d)			
Śrīmadā Bhāgavata Purāṇa	301(f)			
Śrīmadā Bhāgavadgītā Bāṭīkā	10(a)			
Śrīgīrā Cāritra	30(d)			
Śrīgīrā Kavita	263			

Sārasagara	416(f)	Umasālo Kala	422(d)
.. ..	416(g)	Umasālo Vrīṣṭāntara	422(e)
.. ..	416(h)	Ushā Charitra	427(a)
.. ..	416(i)	Ushā Charitra	811
Sārasagara (Dakṣiṇa skandha) ..	416(j)	Uttama Charitra (Durgābhāṣa) ..	7(d)
Sārasāṅga Pārvādhā Tika ..	404	Uttama Charitra (Durgā Mahātma- ya)	7(f)
Sarotarāma ki Bānī	419	Uttama Charitra	7(g)
Sāta Saunaka Samvāda (Kāṇḍa Khanda)	211(a) 211(b)	Uttama Mañjari	179(e)
Sāta Saunaka Samvāda Uttarardha (Śatyapākhyana)	241(c) 241(d)	V	
Śatgārohani	470	Vaidya Durgana	219(a) 219(b)
Śatgārohani Parva	303(a) 303(e)	Vaidyaśrīvāna Bhāṣā	304(b)
Śaradāya	343	Vaidyaka	73(e) 373(b)
Śaradāya	371	Vaidyaka	39(f)
Śaradāya Manabodha	53	Vaidyaka Bhāṣā Śāra Saṅgraha ..	119
Śvapnādhyāya	224	Vaidyaka Chittabodha	333(e)
Śvrodāya (charapādāna)	74(f) 74(g) 74(h) 74(i) 74(j)	Vaidyaka Guṇikā	166(-)
Śvrodāya (Udaya Chandra)	434	Vaidyakapharādāna	374
T		Vaidyaka Ratna	151(e) 151(f)
Teraha Dīpa Pūjāna Pāṭha ..	340	Vaidyaka Ratna Śāra	166(g)
Tikā ki Rājya ke Tithāna	373	Vaidyaka Sāda	333(f)
Tirjā ki Sākhī	155(e)	Vaidyaka Śāra	373
Traṭṭokya Dīpaka Śāra	303	Vaidyaka Śāra	419
Trikāna Śāra	419(e)	Vaidyaka Śārangadhara Bhāṣā ..	166(f)
Tulsi Charitra (Dakṣiṇa Dāna) ..	54	Vaidyaka Śāngraha	376
Tulsi Charitra (Raghubar Sūtra) ..	323(b)	Vaidyaka Vāna	37(e)
Tulsiśāna-ke Saṅgama	432(f)	Vaidyaka Yoga Saṅgraha	1(a) 1(b)
Tulsiśāna Kṛti Begonāwall ..	432(g)	Vaidyaka Yoga Saṅgraha Dvitiya khanda	135(e)
Tulsi Kṛti Hanumānabāhuka ki Tika	198	Vaidya Manasava	222(a) 222(b), 222(c), 222(d), 222(e)
Tulsi Sabdartha Prākāśa	139	Vaidya Prākāśa	355
Tulsi Satamī	136	Vairāgyadīpāna	104(h)
Tulsi Satamī	432(a)	Vairāgya Śāntaka	69(z)
U		Vaishnava Vairāgi Samvāda ..	155
Udyoga Parva	353(f)	Vaishya Vaidāvallī	371(g)
Ugragītā	199(g)	Vaishya Pañchī	371(h) 371(i)
Ugragītā	199(g)	Vaṇadurgā Vināī Stotra	195
Upakhyāna Vireka	303	Vandī Mochana Kāṭhā	377
Upamāntaka Kāṭhā Sūtra	34(b)	Vārāha Samhitā	337(e)
		Vartamāna Chāndī ki Pūjā	200
		Vedānta Bhāṣā	272(e)
		Vedānta ke Prāma	373

Vidhara Māla	10	Vidhivichāra	412 (s)
Vidhara Vichāra Khandana	570		412 (t)
Vidvāna Mada Taranginī	430 (s)	Vyākṛānta Vaidyaka	870 (a)
Vijāna Gita	207 (f)		310 (b)
	207 (A)	Vyāṅgārtha Kaumodī	331 (a)
Vijāna Yoga	7 (s)		331 (3), 331 (s),
Vikrama Rāttinī	111		331 (d)
Vikrama Vāhila Samvāda	121	Vyavahāra Darśana	561
Vikrama Vilāsa	57		
Vinaya Bihāta	860		Y
Vinaya Patrikā	433 (s)		
Vivaha Bhāgata	377	Yantṛavali	553 (a)
Vishankumāra ki Kathā	420 (A)		553 (b)
Vishanupadī Pachhā	30	Yantṛavidhī	553
Vishan Vilāsa	143	Yakshaharī	38 (b)
Vistāra Rāmāyana (Bāla Kāṇḍa)	492 (d)	Yasodhara Charitra	23
Vivachāsa	360	Yajña Samādhi	198 (r)
Vivachāsa Būmata	360 (A)	Yogasāra (Vaidyaka Sāra)	100 (A)
Vivachāsa Anubhava	130	Yogasandhānidhī	374
Vraja Moshī	354 (a)	Yogavāishṛṇṭha Bhāṣā	197 (d)
	354 (b)	Yogavāishṛṇṭha Uttarārṇha	197 (e)
Trinda Satasai	440 (b)	Yudha Dipaka	154
Vṛindāvana Bhāṣya	590		
Vṛita Taranginī	347 (a)		W
	347 (b)	Work without name	1,850-600





D.G.A. 80.
CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY
NEW DELHI

Issue record.

Call No.— 091.49143/E.P.S-8755

Author— Hira Lal.

Title—Twelfth report on the search of
Hindi MSS. for years 1923, 1924, 1925.

Borrower's Name	Date of Issue	Vol. 2.
		Date of Return
Sh. H. Datta	28-1-67	31-1-67

P.T.O.

See Vol I

